B. S





The Twelfth Report on the Search

OF

Hindi Manuscripts

FOR THE YEARS

1923, 1924 and 1925

BY

The Late Rai Bahadur Dr. HIRALAL, B.A., D.Litt., M.R.A.S.

VOLUME II

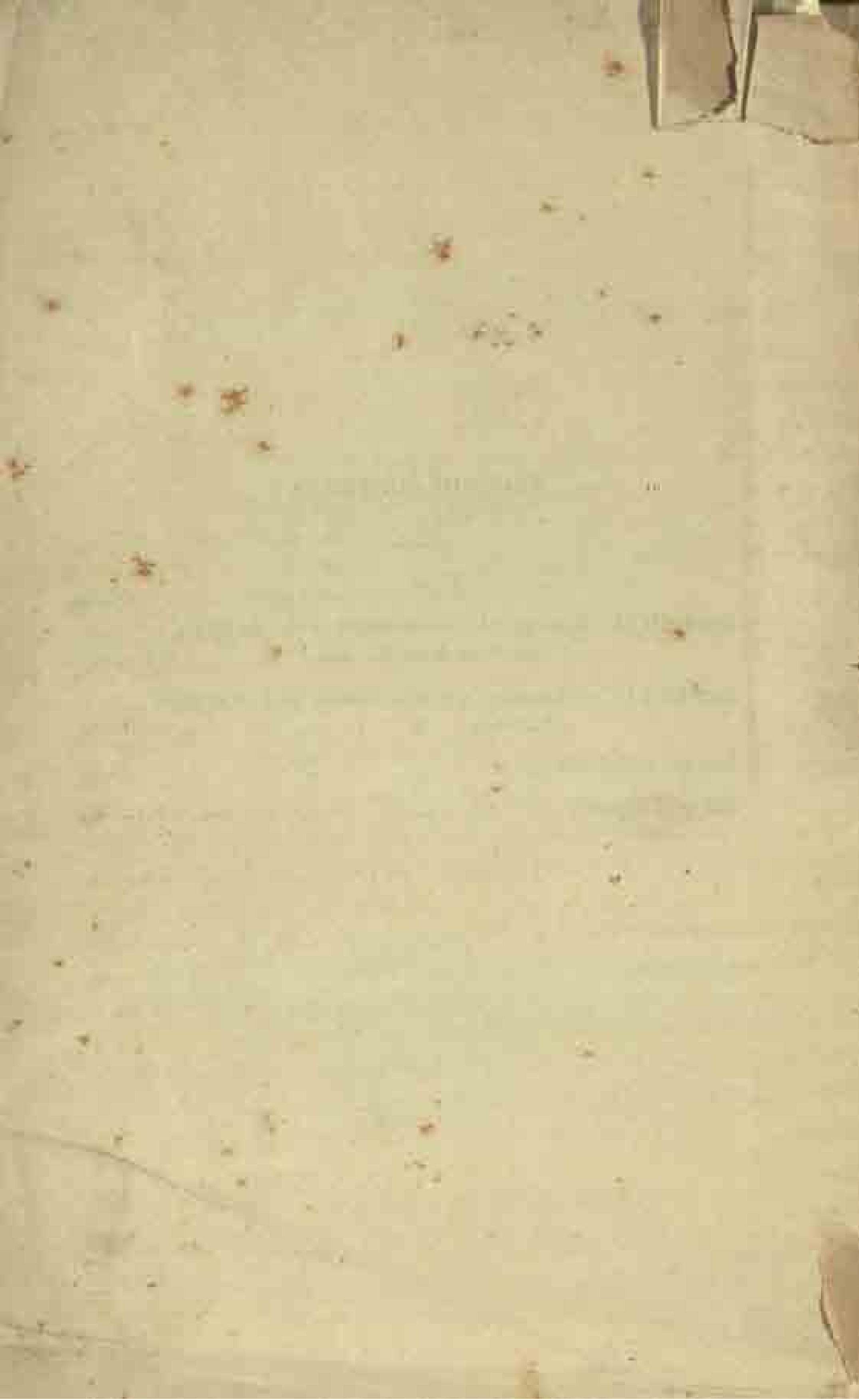
Prepared under the auspices of and published by the Nagari Pracharini Sabha, Benares, under the patronage of the Government of the United Provinces





ALLAHABAD:
Superintendent, Printing and Stationery, United Provinces, India
1944

TABLE OF CONTENTS



2(a) Śivapurāṇa Pūrvārdha by Mahānanda Vājpeyī
nau (Rae Bareli). Substance—Foreign blue paper.
—720. Size—12½ × 8 inches. Lines per page—28.
—18,900 Anushṭup Ślokas. Appearance Old. Char-
Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1927 or A. D.
Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Siṁha,
Kāṇṭhā, District Unao (U. P.).

ning.—श्री गणेशायनमः ॥ ॐ श्रीगौरी शंकरायनमः ॥ श्री गुरु
भ्यांनमः ॥ अथ शिवपुराण भाषा लिख्यते ॥ यस्मायाऽखिल कर्म
ग्मादि यद्विश्वतस्संबंधे तट तीर्थे विस्खलयम स्तैनैच्युता योखिलं ।
ादि पुरुषो यत्सत्यतो दृश्यते । मिथ्या भूतमयी दमश्च अमंदं-
॥ वामांगे यस्य गौरी विलसति रवि विध्वाग्नि नैत्रं ललाटे ।
ुत्रं शिरसि शुभकरी जन्हुकन्याऽथहंसी ॥ यत्कण्ठे देवेह मुग्ध
देहं महेशं ॥ कर्पूरानंद दंतं स्वजन सुखकरं पद्मतां प्राम
न पूरयितु चकल्य कुरुहं मे शत्रु नाशे शनि । विद्या वर्द्धन एव
यं सुरैः ॥ नाना भूषण भूषितं सुखकरं शर्वो विभुं सर्वदं ।
न शरणं शमोन्य था नो गति ॥ ३ वंदे विधि हरौ देवौ
यत्कृपा तो निजां तस्यं पश्यन्ति पुरपा शिवं ॥ ४

अव नुति करि सब मुनि देवा । कीन्हेहु बहुविधि प्रभु को
सेवा ॥ भे प्रस... ...तिनको तुति सुनि । दीन्हें तिन कहं वर वर हित गुनि ॥
। लहि वरणे निज घर तेहि सेदं ॥ काशी जनहु भये
शिव निज पुर गे सब सुर तेहिलहि परम सकामा ॥ तहं थित रहु शिव लिंगहु
निज धामा । सेइ शिवहि ... होई ॥ कंदुकेश सोइ लिंग बखाना । जेहि सेवत
सोई । तेहि सेवत इत उत सुख ...त कहा हम गाई । सब विधि सब को पर सुख
मति पद निर्वाना ॥ इमि शिव चर...वे । सो इत उत परमानंद पावे ॥ शुद्ध खंड
धाई ॥ जो यहि चरितहि सुनहि सुना... सब सुख करणा ॥ पढ़ि पढ़ि चितलाहि
यह हम मुनि वरणा । शिव जस गुंफित...ापा ॥ लहहिं सकल सुखइत उत भूरे ।
सब पापा । व्यापहि कबहुं न त्रिविधहु दुष्ट सतावहिं ताहो । लाहि मुक्ति अन
पवित्रन गहहिं सुसंपति पूरो ॥ कबहुं न...विलासे महानारद संवादे पंचम खंडे
...ाहीं ॥ इति श्री शिवपुराणे ...ो नाम षट् पंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५८ ॥
...ला सुर वध शिव चरित्र ॥ लिखितो पं० कंदा प्रसाद शुक्ल ॥ संवत
...चम खंड समाप्त
...ं ॥

Subject.—प्रथम खंड शिव महिमा नोमषार में सैानका
कलि में कल्याण मार्ग पूछना, सूत का कलि दशा वर्णन, शंभु का
विधि नारद संवाद शिवसमाधि, मदन जारन उल्लेख चौर नारद को
खंडन, शीलव्रत राजा की कन्या के विवाह में असफलता तथा शि
विष्णु को श्राप देना। शिव का निर्गुण सगुण रूप व महिमा, शिव
विराट रूप कथन, शक्ति वर्णन, शिव-शक्ति विचार व सृष्टि रचना, ब्रह
से उत्पत्ति, विष्णु को शिवा के वाम अंग से उत्पत्ति तथा
नाम करण व कार्य वर्णन, विष्णु और ब्रह्मा संवाद, तेज समूह का
विष्णु और ब्रह्मा का नीचे ऊपर क्रमशः उसका अंत लेने को
का हंस रूप से तथा विष्णु का वाराह रूप से खोज करना, १०००
उसका अन्त न मिला तब दोनों का लौटना और आकाशवाण
करने को कहना, पुनः शब्द से अ, उ, म, की उत्पत्ति, उन्हीं से
तथा भिन्न भिन्न सृष्टि का पैदा करना। शिव स्वरूप वर्णन
व विष्णु से सृष्टि उत्पादन करने को कहना, लिंग पूजन का
सृष्टि संचालन को कहना, ब्रह्मा का ऋषियों को पैदा क
रचना, शिव का ब्रह्मा के यहाँ अवतार लेना, शिव स्तुति
नामः (मन्यु, मनुमहिन, महान शिव, ऋतुध्वज, उग्र, रेत, भव
व्रत) रुद्राणी के ११ नाम (धी, वृत्ति, उशना, उमा, नि
इरावति, भवानी, सुधा, सुदीक्षा) और भद्र सेनानी
वर्णन। राक्षस, त्रिजग आदि योनियों का उत्पादन, आठ व प्रम
का निरूपण, मानसिक व दैहिक सृष्टि वर्णन, स्त्री उत्पादनार्थ ब्रह्मा का तप
करना, अर्धनारीश्वर के रूप में दर्शन देना, स्तुति वर्णन, स्त्रीरूप होने का वरदान
देना, मैथुनी सृष्टि का होना, मनु का तप करना, शिव का वरदान देना, मनु के
दो पुत्र व ३ कन्या होना, प्रियव्रत व उत्तानपाद पुत्र हुए जिनसे ऋषभ और ध्रुव भक्त
हुए, कन्याओं व उनकी सन्तानों का वर्णन, लोकों का वर्णन, विष्णु रमा का
वर्णन, विष्णु का शिव स्तुति करना, स्वामि कार्तिक व उनके लोक का वर्णन,
शक्ति लोक का वर्णन, शिवा स्तुति वर्णन, दंपति धर्म वर्णन, शिव का कैलाश
पर आना, द्रुपदपुरी व काम्पिला का वर्णन, यज्ञदत्त का वर्णन, यज्ञदत्त के पुत्र
गुणनिधि की उत्पत्ति, गुणनिधि का कुसंग में बिगड़ना, विवाह होना, धन ल
देना, शिव मंदिर में जाना, लौटते हुए भय से भागना व मारा जाना,
का यमदूतों से छुड़ा कर लेजाना, दीपदान फल, वैश्रवन भक्त
अलकापति का तप कर वरदान पाना, तथा कैलास वा
सब देवों का कैलास आना व शिव से गणपति

श्रम बूंद भूमि पर गिरना, बूंद से बालक का होना, भूमि का स्त्री रूप से पालन करना, भौमनाम होना, पृथ्वी का मतापी नाम पड़ना, भौम का तप करना, शिव का वर देना व मंगल ग्रह होना, हिम गिरि के तप से मयना के गर्भ में पार्वती का आना, देवताओं का स्तुति करना, पार्वती का जन्म होना, गिरि की शोभा अनुपम होना, पार्वती की बाललीला, विद्याध्ययन व प्रौढ़ावस्था में सौंदर्य, मैना व हिमगिरि का विवाह चिंतन करना, देवताओं का आगमन व विवाह की इच्छा करना, विष्णु का भी आगमन, पार्वती के स्वयंवर में आना, मंचों पर यथा स्थान बैठना, पर्वत, समुद्र, नदी आदि का भी नर रूप में उपस्थित होना, सखी का सब देवों व राजाओं के समीप जयमाल लेकर गिरिजा को लेजाना और सब का वर्णन करना, विष्णु के भी समीप जाना, अन्त में शिव के गले में माला पहिनाना, शिव का बाल रूप होना, सब देवों का क्रोध करना व थंभन होना, हरि, ब्रह्मा, शक्रादि का स्तुति करना, बरात की तय्यारी, अगवानी आदि, शिव-शिवा विवाह वर्णन, पुरोहित का पार्वती के लिये वर खोजना, सब लोकों में जाना, अंत में शिव के पास आना व विवाह स्थिर करना, विष्णु व पार्वती के कथन से पुरोहित का शिव के पास जाना और तिलक करना, नाई का अप्रसन्न होना, हिमांचल द्विज संवाद व संतोष वर्णन, शिवा-शिव विवाह की तय्यारी, लग्न भेजने आदि का वर्णन, बरात की तय्यारी, वृद्ध रूप सिंहादि भूत प्रेत का आना, सब का दुःखित होना, पार्वती का विजया सखी को समझाना, हिमगिरि का विषाद वर्णन, पार्वती का शिव के पास विनय पत्रिका भेजना, शिव की महिमा वर्णन, शक्ति परिचय, भोजन समय शुक्र-शनि शक्ति वर्णन, हिमाचल असमंजस वर्णन, पुरोहित का गिरिजा कथन वर्णन, माता का संतोष होना, शिवा-शिव लीला व सती वर्णन, अवधूत रूप का कारण कथन, सब का शिव का प्रताप जानना व स्तुति करना, शिव की बरात का वर्णन, इन्द्र, विष्णु, ब्रह्मा सब का समाज वर्णन, अगवानी, जेवनार आदि क्रियाओं का वर्णन, गिरि मयना का कन्यादान देना, विवाह मंगल होना और कैलास गमन, ऋषियों से हिमगिरि का कन्या के लक्षण ज्ञात करना, गिरिजा के शुभ लक्षणों व महेश से विवाह का उल्लेख करना, मैना-हिमगिरि को बाल लीला से आनन्द प्राप्त होना, गिरिजा का तप के लिये स्वप्न देखना। गिरीश का गि..की सेवा में जाना, शिव का विवाह निषेध, अन्त में गौरी को स्वीकार करना, गौरी का तप करना, शिव का अखंड समाधि में होना, इन्द्र का कामदेव को शिव की समाधि जगाने को भेजना और उसका भस्म होना, दिति से ४९ पवनों की उत्पति, इन्द्र का ४९ खंड करना, हिरण्याक्ष व हिरण्यकश्यप कथा, दिति का फिर तप करना व कश्यप से वीर पुत्र होने का वर मांगना, वज्राङ्ग

की उत्पत्ति व इन्द्र को ताड़न देना, उसका तप कर राक्षस भाव त्याग का वर मांगना, वज्रांग की स्त्री का इन्द्र वैर शोधन की आकांक्षा करना, तप कर वर पाना, तारक का जन्म होना व तप करना, शिव का अजेय रहने का वर देना, तारक का असुर दल संघटित करना, कुंभ, कुंभम, महिष, कुंजर, कालनेमि, निमिमेष, कथन, आदि १० वीरों को एकत्र करना, तारक, नमुचि आदि का देवताओं से युद्ध करना व जीतना, विष्णु का देवताओं को समझाना व तारक की सेवा करने को कहना, तारक का तीनों लोक का राज्य करना, दुखी हो कर देवों का ब्रह्मलोक में जाना, असुरों का देवों पर अत्याचार वर्णन, ब्रह्मा का उपाय बतलाना कि शिव पुत्र इसे मारेगा, इन्द्र का कामदेव को शिव के समीप भेजना, काम प्रताप वर्णन, शिव को वाण मारना व नेत्र खोल कर क्रोध युक्त देखने से काम का भस्म होना, रति का विलाप वर्णन, देवों का शिव स्तुति करना। रति को अतनु पति देना और पार्वती से शिव विवाह वर्णन व नारद का तप करने को कहना, पार्वती का तप के लिये माता पिता से आज्ञा लेना व समाधान करना, शिवा का उग्र तप प्राणायाम आदि करना, भूतों का बाधा पहुंचाना, गिरि वंश का भाग्य वर्णन, वन में सब का स्वाभाविक वैर त्याग वर्णन, देवताओं का शिव समीप जाना व प्रार्थना करना, शिवा से विवाह करने को कहना। विष्णु का शिव प्रशंसा वर्णन कि समय समय पर उन्होंने गौतम इन्द्र आदि के दुःखों को दूर किया और राक्षसों का वध किया, देवों को विदा करना और सप्त ऋषियों को बुलाना और पार्वती की परीक्षा लेने भेजना, सप्त ऋषि पार्वती संवाद, शिवा का दृढ़ व्रत रहना, शिव का द्विज रूप में शिवा की परीक्षा लेना, विष्णु की प्रशंसा कर विवाह करने को कहना, पार्वती का दृढ़ व्रत रहना, शिव का साक्षात् रूप होना और शिवा को वर देना, देवताओं का शिवा की स्तुति करना व गृह को आना। शिव का हिमगिरि के द्वार पर जाकर शिवा की भिक्षा मांगना, उनके क्रुद्ध होने पर अपने रूप में विष्णु, ब्रह्मा, गणपति, शिव आदि रूप दिखलाना, देवों का वृहस्पति को हिमगिरि के समीप शिव निन्दार्थ भेजना व गुरु का समझाना, शिव का वैष्णव रूप में हिम शैल पर जाना, शिव निंदा व विष्णु प्रशंसा वर्णन, हिमगिरि को संभ्रम करना, शिव का सप्त ऋषियों को बुलाना, उनका स्तुति करना, शिव का तारक के वध का वर्णन करना, कुंभज [illegible] व अरुंधती का मैना से संवाद व शिव गुण वर्णन, ऋषियों का हिमगिरि को समझाना, सब देव, ऋषि, ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्रादि को निमंत्रण देना व सब का आगमन, शिव गणों का तय्यारी करना, विष्टंभ, कंदुक, पिप्पल आदि का ससैन्य भारी तय्यारी करना। पिंगलाक्षादि का वर्णन, बरात की तय्यारी, हिमगिरि का

निमंत्रण, नगर सजावट, गौरि पूजनादि वर्णन, बरात, अगवानी, हिमगिरि को राजमद होना, तब शिव का ब्रह्मा विष्णु से भिन्न भिन्न मंडल बना कर चलने को कहना, मंडल के विषय में मयना का नारद से ज्ञात करना और उनका प्रत्येक मंडल का वर्णन करना, सब देवों का भिन्न भिन्न वर्णन, शिव सेना देख कर मयना को मोह होना, व दुखित होना, ब्रह्मा का समझाना, हिमगिरि का भी समझाना, सब का शिव स्तुति करना, पार्वती का भी शिव वन्दना करना, विष्णु का मयना को समझाना, सब बरात में शिव की स्तुति गान व प्रभाव देख पड़ना, बरात का द्वार पर आना, मयना का आरती करना व शिव महिमा वर्णन, जनवासे का वर्णन, अनेक प्रकार की जेवनार का वर्णन, शुभासन व चरण प्रक्षालन, विष्णु आदि समेत वर्णन, चढ़ावा वर्णन व विवाह आगमन, मंडप शोभा वर्णन, शाखोच्चार वर्णन, गिरि का शिव से गोत्र ज्ञात करना, संभ्रम होना, शिव की नाद से उत्पत्ति का वर्णन, कन्यादान होना, ध्रुव-दर्शन, परिछन, मंगल, विनती आदि वर्णन, सरस्वती, लक्ष्मी, सावित्री, सची, लोपा-मुद्रा, अरुन्धती, अहल्या, तुलसी, रोहिणी, शतरुपा का शिव से हास्य करना, शिव का समझाना, रति का विनय करना, काम को प्रगट करना, शिव-शिवा वर्णन, शिव का जनवासे में आना, हिमगिरि का शिव से अपनी त्रुटियों के लिये निवेदन करना, देवताओं का हिमगिरि की प्रशंसा करना, कलेवा वर्णन, गाली वर्णन, चौथे दिन सर्वाहुति करना, संस्रव प्राशन करना, गिरिजा के सिर अभिषेक करना, लहकौरि करवाना, कंकन उतारना, पांचवें दिन विदा मांगना और सानंद विदा करना, व प्रेम से विह्वल हो जाना, बरतौनी होना, गिरिजा को विदा करना, मयना का विह्वल चित्त गिरिजा को विदा करना व उपदेश देना, नारि धर्म वर्णन, पतिव्रत भेद वर्णन, गिरिजा का प्रेम सहित विदा होना, शिव का कैलास जाना, व देवताओं का गृह प्रवेश कराना, आनन्द मनाना, शिव से विदा हो कर शिव स्तुति कर के निज घर को जाना।

चतुर्थ खंड।

शिव के पास विष्णु आदि का जाना, शिव का सुरत में निरत रहना, देवों का स्तुति करना, शुचि का शिव वीर्य को कपोत रूप में ग्रहण करना, पार्वती का देवों को बांझ रहने से शाप देना, अग्नि को भी शाप देना, देवों को गर्भ रहना व घबड़ाना, शिव स्तुति करना व रेतस को उलटवा देना, अग्नि से भी निकलवा देना, ऋषि पत्नी अग्नि तपने को गयीं, अरुंधती ने मना किया पर कृत्तिका के अंग से स्पर्श हो गया, उसने हिमगिरि में छोड़ा, फिर अमरनदी में डाला गया, देव नदी ने किनारे पर सरपत में डाल दिया, गिरिजा के कुचों में दूध का आ जाना, विश्वामित्र का बालक के समीप जाना, बालक का ऋषि से कर्म करने

को कहना, विश्वामित्र का ब्रह्मपुत्र न होने से निषेध करना, पुनः पुत्र मानना, कुमार को अग्नि का सांग देना, कुमार का पर्वत में मारना और उसका फट जाना व बहुत से दैत्यों का मरना, शैल के कथन पर इन्द्र का बालक को मारने के लिये उद्यत होना, एक दिव्य पुरुष का रक्षा करना, इन्द्र के वज्र मारने पर भी बालक को चोट न आना, इन्द्र का शिवा की स्तुति करना, कृत्तिका का उस पुत्र को लेने की इच्छा करना, बालक ने स्वयं षट्मुख कहा और वाद मिटाया, कुमार का इन्द्र के यहां जाना, इन्द्र का ज्ञात करना, तेज देख कर सभा का भयभीत होना, देवों का कार्त्तिक को गिरीश पर ले जाना, शिव-शिवा प्यार वर्णन, देवों की स्तुति, विष्णु का शिव से आज्ञा दिलाना, कुमार को तारक मारने के लिये, ब्रह्मा का स्वामिकार्तिक का निवास बनवाना, देवों का माला इत्यादि देना, नारद का अश्वमेध करना, वरुण का कार्तिक को बकरा भेंट करना, नारद का यज्ञ के लिये पकड़ना, अज का खुल जाना और सातों द्वीपों को जीतना, नारद का कार्तिक की शरण आना, और उनका अज को पकड़ कर ला देना, पुत्रार्थ झगड़ने पर कार्त्तिक का माताओं को समाधान करना, विधि-हरि हर को सांत्वना देना, तारक का देवों पर चढ़ाई करना, नारद का समझाना, नारद का इन्द्र को समझाना, दोनों ओर युद्ध की तय्यारी होना, युद्ध वर्णन, मुचुकुंद तारक युद्ध वर्णन, वीरभद्र युद्ध वर्णन, असुरों का हारना, तारक वीरभद्र युद्ध वर्णन, कार्तिक का युद्ध के लिये सन्नद्ध होना, कार्त्तिक तारक युद्ध वर्णन, तारक का मारा जाना, देवताओं का कार्त्तिक की स्तुति करना, बाण दैत्य का क्रौंच पर्वत में उपद्रव करना और युद्ध क्षेत्र से भाग जाना स्वामिकार्तिक द्वारा बाण का ससैन्य वध वर्णन। क्रौंच का स्तुति करना। त्रिलिंग की स्थापना करना, युद्ध से भाग कर प्रलंब का १० करोड़ साथियों सहित शेष लोक में विध्वंस करना, शेष पुत्र कुमुद का स्वामिकार्तिक की शरण आना, सांग द्वारा उसका वध करना, सब का स्तुति गान करना, कार्तिक का विमान पर चढ़ कर कैलास जाना और ब्रह्मा विष्णु इन्द्रादि का वाहनों पर चढ़ कर साथ साथ चलना, शिव शिवा का कुमार को प्यार करना और देवों का स्तुति करना, गिरिपति का दानादि देना और सब देवों का विदा होना, स्कंद उत्पत्ति का पुनः वर्णन, शिवा को क्रोधित देख सान्त्वना देना, पार्वती का पुत्र की याचना करना, शिव का गणपति पूजन बतलाना, गणपति महिमा वर्णन, गणेश को मोटा देख चन्द्र का उपहास करना, गणेश का शाप देना, मोक्षार्थ चतुर्थी व्रत वर्णन, चौथ चन्द्रमा दोष निवारणार्थ द्वितीया दर्शन वर्णन, पार्वती का व्रत करना, शिव का प्रसन्न हो विहार स्थल निर्माण करना, गणपति का द्विज रूप में आना, पुत्र वर देना और स्वयं बाल रूप में शिवा के पलंग

पर आना, शिव-शिवा का उत्सव मनाना, विष्णु आदि देवी देवताओं का आशिर्वाद देना, शनि का आगमन, कर्म महिमा वर्णन, निज स्त्री (चित्ररथ की कन्या) की कथा व श्राप वर्णन, शनिदृष्टि से गणेश का शिर छिन्न हो जाना, सब देवों आदि का विलाप करना, शिव के कहने से विष्णु का उत्तर ओर जाकर गज शिशु का शिर लाना, शिव का प्रणव मंत्र से बच्चे को जिलाना सब का आशीष देना, शिवा का शनि को श्राप देना, रवि कश्यप का शिवा पर क्रोध करना, हरि का समझाना, गणेश नाम रख कर सब देवों का बालक को भेंट देना, पृथ्वी का चूहा देना, गणेश स्तोत्र वर्णन, कल्प भेद से गणेश की दूसरी कथा का वर्णन, शिवा के स्नान करते समय नंदी का द्वारपाल होना, शिव का जाना, शिवा को लज्जित होना, फिर मैल का पुतला बना जीवदान दे द्वारपाल करना, शिव का आगमन, द्वारपाल का रोकना, शिव गण और गणेश युद्ध वर्णन, शिवगणों का भागना, शिव का ब्राह्मण को समझाने भेजना और गणेश का न मानना व युद्ध में देवों को हराना, विष्णु-गणेश युद्ध व विष्णु का हारना, शिव का त्रिशूल से शिर काटना, सब देवों का स्तुति करना, शिवा का काल शक्तियों द्वारा देवों का नाश कराना व देवों का शिवा से प्रार्थना करना, शिव का गज शिर लाकर जिलाना और शिवा को शान्त करना, शिव का आशीष देना, गणेश का शिव को प्रणाम करना, सब देवों का शिव की स्तुति करना, कुमार गणपति में श्रेष्ठता वर्णन, पृथ्वी के प्रदक्षिणार्थ दोनों को भेजना, पूर्व आने वाले का ब्याह व सम्मान करने को कहना, गणपति का चिन्ता करना और माता पिता की पूजा कर प्रदक्षिणा देना, माता पिता पूजन महिमा वर्णन, शिव जी ने गणेश का विवाह किया और श्रेष्ठ माना, गणेश के दो पुत्र क्षेम व लाभ का होना, गणेश पूजन महिमा व पूर्णिमा दर्शन महिमा वर्णन।

पंचम खंड।

शिवादि स्तुति, तड़ित्माली, तारकाक्ष, कमलाक्ष राक्षसों का तप वर्णन, ब्रह्मा का वर देना, नगर रचना, विमानादि से पूरित होना और तीनों का अलग अलग राज करना, उनका आनन्द व वैभव वर्णन, देवताओं का क्लेश पाना और त्रिपुर नाश की प्रार्थना करना, ब्रह्मा विष्णु और शिव के पास जाना, सब का शिव पूजन करना, सब गणों का त्रिपुर में जाना और शिवार्चन देख लौट आना, विष्णु का एक गण उत्पादन करना और उसे शिक्षा दे कर्मवाद परक सिद्धान्त समझा त्रिपुर में प्रचारार्थ भेजना और नास्तिकता फैलाना, नारद का शिष्य होना जिसे देख त्रिपुरासुर भी मोहित हो गया व प्रतिज्ञा कर शिष्य बन गया, वंचक मत त्याग एक मत होने को कहना, जीव दया का प्रचार करना, चार दामों का

मुल्य बताना। रोगी को औषधि, भयभीत को अभय, भूखे को अन्न और विद्यार्थी को विद्या देना, शिवार्चन छुड़ाना, वेद मार्ग पर चलाना, देवार्चन आदि का छुटना, जैन मत का प्रचार होना, ब्रह्मा विष्णु संवाद वर्णन, जैन मत उत्पत्ति व त्रिपुर मोह वर्णन, शिव का पुत्र को देख आनंद मानना, शिव का कुंभोदर को भेजना। देवताओं का भयभीत होना, विष्णु का समझाना और शिव आराधना करने को कहना, शिवार्चन होना, और त्रिपुर नाशन को विनय करना, शिव का अमृत कुप पीने के लिये हरि को वत्स रूप और ब्रह्मा को गौ बना कर भेजना और अमृत कूप पीना। शिव गण, नंदी, गणेश, कुमार का प्रगट होना और शिव शासन बतलाना तथा देवों से उत्तम रथ तैयार करने को कहना, विश्वकर्मा का रथ व शस्त्रादि तय्यार करना, विष्णु का शिव से रथ पर चढ़ने की प्रार्थना करना, शिव का गणेश से प्यार करना व पूजना, प्रस्थान व विष्णु ब्रह्मादि का साथ चलना, शिव का नाद करना, त्रिपुर का एक साथ होना, देवों का प्रसन्न होना व शिव से त्रिपुर विनाश की प्रार्थना करना, शिव का बाण छोड़ना और त्रिपुर का विनाश होना, ब्रह्मा-विष्णु आदि देवों का स्तुति करना, शिव का शान्त होना, अरिहन्त का शिष्यों सहित आना और शिव को प्रणाम कर छल के पाप मोचन की प्रार्थना करना, शिव का कलि में प्रभाव दिखाने को कहना, मय का प्रार्थना करना और शिव का तलातल में रहने को कहना, कश्यप की स्त्री दनु से दानवों की उत्पत्ति, मयदानव का तप वर्णन, शिव का प्रसन्न होना, मय की स्तुति, शिव का वर देना, सुर-असुर को समान भाव से मानना, अपनी भक्ति रखने को कहना, विश्वकर्मा की उपाधि देना, जालंधर कथा वर्णन, शिव का भीम रूप धारण करना, हरि का शिव से बात करना, इन्द्र का भी बात करना, ब्रह्मा का बात करना, उत्तर न देने पर इन्द्र का क्रोध करना, वज्र मारना, शिव कंठ नीला होना और वज्र का जल कर भस्म होना, रुद्र का अग्नि रूप होना, इन्द्रादि का भयभीत होना, बृहस्पति का प्रार्थना कर क्रोध शांत कराना, शिव-तेज को दूर फेंक देना जिससे जालंधर की उत्पत्ति होना, बालक के रुदन से सब का भयभीत होना, सिंधु का ब्रह्मा को पुत्र देना। जालंधर का तप करना और कालनेमि की कन्या वृन्दा से विवाह करना। उसका प्रताप वर्णन, जालंधर के यहां राहु का आना, शुक्र से छिन्न शिर कथा ज्ञात करना, शुक्र का समुद्र मंथन कथा वर्णन, शिव का विष को पान करना, उत्तम रत्न हरि ने लिये, सुरा राक्षसों को दी, छल से अमृत देवों को पिलाया, राहु देवों के बीच में जा बैठा, अमृत पी लिया, परन्तु विष्णु ने शिर छिन्न कर दिया, जालंधर का इन्द्र के पास रत्न लेने को दूत भेजना और इन्द्र का पुरा राक्षस व पहाड़ों के पंख तोड़ने आदि की कथा कहना, विष्णु द्वारा शंबासुर का

वध, दूत का जालंधर प्रताप वर्णन, इन्द्र का न मानना, जालंधर का सुरपुर पर चढ़ाई करना, मरे देवों को बृहस्पति का दिव्यौषधि द्वारा जिलाना, मृत राक्षसों को शुक्र का जिलाना, देवताओं का हारना व जालंधर विजय वर्णन, देवों का विष्णु को शरण जाना, स्तुति वर्णन, विष्णु का युद्ध के लिये प्रस्तुत होना, लक्ष्मी का भाई का पक्ष ले मना करना, विष्णु-जालंधर युद्ध वर्णन, गरुड़ का घायल होना, विष्णु का युद्ध से प्रसन्न हो जालंधर को वर देना, उस के निज घर में विष्णु लक्ष्मी निवास होने की इच्छा करना, देवों से सब रत्नों का लेना, प्रजा का प्रीति से पालन करना, देवों का शिव स्तुति करना, शिव का आकाश वाणी द्वारा अभय वर देना, नारद जालंधर संवाद, शिवा के लेने के लिये शिव के पास राहु का भेजना, शिव का क्रोध करना व एक गण का उत्पन्न होना, दूत का भयभीत हो भागना, शिव का छुड़ाना, जालंधर का शिव पर चढ़ाई करना, वृंदा का समझाना, देवों का शिव से चढ़ाई का वर्णन करना, शिव का निज अंश होने से त्रिशूल से न मारने को कहना, देवों का निज तेज देना व शिव का शस्त्र बनाना, जालंधर का शैल समीप जाना, शिव का भी ससैन्य उतरना, शिव जालंधर युद्ध वर्णन, शुक्र का मृत राक्षसों को जीवित करना, देवों का शिवा से वर्णन करना, रुद्र का कृत्या उत्पन्न करना, शुक्र को चुरा कर ले जाना, असुरों का संहार होना, शुंभ, निशुंभ, कालनेमि आदि का युद्ध करना, नंदी, कुमार व गणेश का प्रबल युद्ध करना, असुर दल का विकल होना, वीरभद्र का असुर सेना नाश करना। शुंभादि का घायल होना। जालंधर शिव युद्ध वर्णन, नंदी का असुरों को मारना, जालंधर का शुंभादि को संग्रह करना, शिव का जालंधर के रथ ध्वजादि खंडित करना, उसका माया करना शिव का मोहित होना, जालंधर का शिव रूप में गिरिजा के पास जाना व जड़ होना, शिवा का अन्तर्धान होना, शिवा का हरि को उसके पुर में भेजना, शिव का मोह दूर होना, वृन्दा का पति मृत्यु का स्वप्न देखना, हरि का जाना, वृन्दा का वन में जाना व दो राक्षसों का देखना, भयभीत होना, तपसी के कंठ से लिपट जाना, मुनि का क्रोध करना, राक्षसों को भगाना, दो बन्दरों का आना, वृन्दा के सामने जालंधर का वध कर डालना, वृन्दा का रुदन करना, तपसी का जीवित करना, वृन्दा व जालंधर संयोग होना, एक बार विष्णु रूप रखना और वृन्दा का तप भंग होना और श्राप देना, विष्णु का समझाना, शिव महिमा वर्णन करना, राक्षसों का माया करना, गिरिजा को शुंभ निशुंभ का मारना व तंग करना, शिव का श्राप देना कि गिरिजा के हाथ से तुम्हारा वध होगा, जालंधर शिव युद्ध वर्णन, नंदी का भागना, शिव का चक्र से जालंधर का वध करना, देवों का स्तुति करना, सौमिनि, विमर्षण, चन्द्रसेन, आदि के उद्धार

का वर्णन, वृन्दा को देख विष्णु को मोह होना, देवों का स्तुति करना, त्रिभुज रूप को देख कर विष्णु का मोहित होना, विष्णु का शिव आराधना करना व तप में लीन होना, प्रसन्न हो कर शिव का विष्णु को चक्र सुदर्शन देना व उसकी महिमा का वर्णन, कश्यप की स्त्री दनु से विप्रचित्त का होना, उससे वृषपर्व की उत्पत्ति, उसका तप करना व प्रबल पुत्र मांगना, शंखचूड़ की उत्पत्ति, उसका तप करना व ब्रह्मा का वर देना, तुलसी का तप करना, शंखचूड़ संवाद व विवाह, देव-दानव युद्ध, देवताओं का पराजय, चन्द्रचूड़ का राज्य करना, चन्द्रचूड़ के पूर्व जन्म की कथा, राधा के श्राप से सुदामा का राक्षस होना, गोलोक वर्णन, सुदामा का राधिका को रोकने के कारण श्राप देना, विवाह वर्णन, वैकुंठ वर्णन व महेश महिमा कथन, कैलाश में देवों का जाना, शिव से शंखचूड़ को मारने की प्रार्थना करना, शिव का प्रसन्न हो वचन देना, शिव का पुष्पदन्त को शंखचूड़ के पास समझाने को भेजना, काल की महिमा का वर्णन, पुष्पदन्त का लौटना, रुद्र का युद्ध की तैयारी व ससैन्य प्रस्थान, वीरभद्र, नंदी, भृंगी आदि का चलना। भूत प्रेत सेना का विस्तृत विवरण, शंखचूड़ का युद्धार्थ गमन व दूत का शिव समीप भेजना, दूत शिव संवाद, शिव का समझाना, दूत का असुरों के संहारकारी पूर्व वर्णन कहना, देव दानव युद्ध, वृषपर्वा इन्द्र, गोकर्ण गणेश, कालंबिक अंशेश, कालकेय कुबेर, विप्रचित्त दिनेश, राहु सपेश, काश्य कुज, शुक बृहस्पति, मय विश्वकर्मा, वर्चस यम, दीप्तिमान अश्विनीकुमार युद्ध, वीरभद्र, नंदी, गणेश आदि का युद्ध में प्रवृत्त होना, शंखचूड़ से युद्ध होना, देवों को निर्बल जान तेज देकर कुमार को भेजना व सौ अक्षौहिणी सेना का नष्ट करना, शंखचूड़ कुमार युद्ध वर्णन, चन्द्रचूड़ वीरभद्र युद्ध, शिव का संतोष प्रकट करना, पुनः युद्ध होना, काली का गर्जन करना, शंखचूड़-कुमार युद्ध वर्णन, गरुड़ास्त्रादि चालन, शंखचूड़ का चक्र मारना, काली का रक्षा करना, काली-शंखचूड़ का युद्ध, आकाशवाणी का होना व काली से युद्ध निषेध, शिव द्वारा मृत्यु वर्णन, शिव शंखचूड़ युद्ध वर्णन, शूल का मारना, चन्द्रचूड़ का हृदय फटना व उससे एक पुरुष का निकलना व उसका सिर काटना, काली का असुर सैन्य भक्षण करना, जोगिनी का रण में फैलना व असुर सेना नष्ट होना, देवों का प्रसन्नता प्रकट करना, शंखचूड़ का माया करना, माहेश्वरास्त्र से शिव का नष्ट करना, आकाशवाणी होना कि कृष्ण कवच व सती स्त्री के कारण इसका नाश नहीं होता, शिव का हरि को बुलाना और उन्हें कवच मांगने को ब्राह्मण रूप में भेजना व उनसे मांग लाना, शंखचूड़ रूप से उसकी स्त्री का सतभंग करना, शिव का त्रिशूल से शंखचूड़ का वध करना, देवों का स्तुति करना व उसका सुदामा रूप में

गोलोक को जाना, विष्णु का तुलसी छलन कथा वर्णन, विष्णु का शाप से शालिग्राम रूप में होना, तुलसी का पतिव्रत भंग करना, विष्णु का समाधान करना, अंधक कथा, दिति का तप कर कश्यप से वर लेना, अंधक की उत्पत्ति, देवों का भयभीत होना व तप कर देवों को हराना, रत्नादि लेना, कश्यप का दैत्यों को समझाना व अंधक का शिव भक्ति व उग्र तप करना, देवों का शिव स्तुति करना व वर देने को अंधक को कहना, उसका शिव बिन अवध्य वर मांगना, अंधक का देवों को विजय करना व रत्न अप्सरादि लेना, देवों का विष्णु से निवेदन करना, विष्णु का चक्र चलाना, शिव का रक्षा करना, विष्णु का शिव स्तुति करना, शिव का समझाना, विष्णु का अंधक से वर मांगने को कहना, उसका शंकर भक्ति रहित होना और सब लोकों पर राज्य करना, देव-मुनि का दुःख पर विचार करना और मुनियों को शिव के पास भेजना, शिव स्तुति वर्णन, शिव का मंदार माला दे अंधक के यहां नारद को भेजना, नारद से माला की महिमा सुन कर युद्धार्थ अंधक का गमन, शैल का बाग की रक्षा करना, गणेश अंधक युद्ध, शुक्र का पकड़ ले जाना, देव दानव युद्ध, दैत्यों का प्रमथ को भयभीत करना, शिव का रथ पर चढ़ कर युद्धार्थ गमन, दैत्यों के यहां शुक्र को भेजना। असुर शिव युद्ध व त्रिशूल से अंधक को मारना, अंधक को ज्ञान होना, स्तुति करना व गणों में सम्मिलित करना, वाणासुर की उत्पत्ति का वर्णन, शिव भक्ति व तप से वरदान पाना व विजय करना, शिव विहार वर्णन, अप्सराओं का शिव गण व उषा का शिवा रूप में आना, शिव का जानना और स्वप्न में पति मिलने को कहना। वाण का युद्धार्थ शिव से कहना व शिव का कृष्ण से होने का वर्णन कर ध्वजा चिन्ह देना, उषा का स्वप्न देखना, चित्ररेखा का अनिरुद्ध को लाना व उषा-अनिरुद्ध विहार वर्णन, द्वारपाल का वाण से कहना, अनिरुद्ध से राक्षसों का युद्ध व बहुतों को मारना, वाण का पकड़ना व मारने को उद्यत होना, अनिरुद्ध का भर्त्सना करना, आकाशवाणी होना, नारद का कृष्ण को सूचना देना, कृष्ण का ससैन्य वाण पर चढ़ाई करना, शिव का वाण की सहायता करना, शिवकृष्ण युद्ध वर्णन, हरि-वाण युद्ध वर्णन, कृष्ण का शिव स्मरण कर वाणासुर की ४ भुजा छोड़ शेष काट डालना, कृष्ण का शिव स्तुति करना, शिव का कृष्ण और वाण से संधि कराना, शिव का वाण को गणपति की पदवी देना, वाण का स्तुति करना, महिषासुर वध होने पर उसके पुत्र गजासुर का दुखित होना व घोर तप करना, देवों का भयभीत हो ब्रह्मा के पास जाना, ब्रह्मा का गजासुर को वर देना, गजासुर का देव ब्राह्मणों को दुःख देना, देवों का शिव से प्रार्थना करना, शिव का युद्धार्थ सन्नद्ध होना व गजासुर वध वर्णन, गजासुर का

शिव स्तुति करना व इष्टगंधि वर पाना, मोक्ष होना, दुंदुमि निहादि का देव मुनियों पर अत्याचार करना, काशी में द्विजों को सताना, शिव का उसे वध करना।

Note.—शिवपुराण का महानंद वाजपेयी ने भाषाबद्ध छन्दों में अनुवाद किया है। इसके दो भाग हैं। पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध। इस पूर्वार्द्ध भाग में ५ खंड और २१९ अध्याय हैं। इसकी भूमिका ठाकुर शिवसिंह सेंगर ने अपने हाथ से लिखी है और उसमें उनका हस्ताक्षर भी है। भूमिका में रचयिता का नाम महानंद वाजपेयी लिखा है जो लखनऊ निवासी थे। सं० १९२६ से १०५ वर्ष पूर्व उनका देहान्त हुआ जैसा कि ठाकुर साहब ने उल्लेख किया है। ठाकुर साहब ने संशोधन करने का भी उल्लेख किया है जो शायद अन्य किसी प्रति में किया होगा। इसमें कोई चिन्ह संशोधन का नहीं है। ग्रंथ शिवपुराण बड़ा और काव्य रचना अच्छी है। काव्य रचना में भी महानंद का नाम आया है तथा कहीं कहीं खंड की समाप्ति पर भी दिया है। सेंगर जी को यह ग्रंथ सं० १९२६ में मिला था और प्रतिलिपि सं० १९२७ में करवायी थी। कांथा का भी वर्णन किया था। उनके पितादि का भी परिचय है। उन्होंने स्वयं वर्णन किया है:—

श्री वाजपेयि गुन गण निधान। विख्यात महानंद सब जहान॥
तिन्ह भाषा कीन्ही शिवस्तुति। दोहा चौपाई छंद वृत्ति॥

रोला छंद—वास भो कैलाश में नहि ग्रन्थ कीन्ह प्रकाश। विस्तार छत्तिस सहस भाषा ग्रंथ है अतिरास॥ यदपि चौबिस सहस हैं शिव कौ पुराण अनूप। तदपि भाषा ह्वै गयौ छत्तीस सहस स्वरूप॥ उन्नीस सौ छब्बीस सम्वत में लह्यौ हम ग्रंथ। हित सबै जनकौ ठानि कै करि दीन सलिल सुपंथ॥ अर्थात् उर्दू प्रथम उल्था छापि दीन्हौं याहि। जो चहै लेवै ग्रंथ कौं तिन काहि दुर्लभ नाहि॥ पुनः भाषा ग्रंथ में लखि छिद्र छुद्र अनेक। सुद्ध कीन्हौं तिन्हहिं जिय में धारि भूरि विवेक॥ पंड ग्यारह संहिता है सत यामे याम। कथा जाकी जान्हवी सम देत मुक्ति ललाम॥ लखनऊ ते कोस दस दक्षिन बसै एक ग्राम। महावीर विराजहीं जहं कहत कांथा नाम॥ दंश श्रृंगीशाख्ता जहं उर्वीपति साज। धर्मधर क्षत्री विराजै विधा से द्विजराज॥ करत रक्षा जनन की जहं शूलपाणि महेश। मम पिता हैं तहं भूमिपति रनजीत सिंह नरेश॥ धर्मकर्त्ता शत्रुहर्त्ता शास्त्रवेत्ता दानि। प्रजाभर्त्ता दयाधर्त्ता विजय जश को खानि॥ रिपु अप वनचारी सुखारी मित्र जाके सबै। संग्राम में जिन शत्रु कौ सब दूरि डार्यो गर्ब॥ मार्तण्ड द्वितीय ह्वै है प्रगट तेज अखंड। अनल से प्रज्वलित है भुजदंड चंड प्रचंड॥ यदपि सेवक मुख्य मन बहु रहत निस दिन पास। तदपि शिव पर पुष्प

शैलुष दूरि प्रर्वत वास ॥ श्रवन वेद पुरान को अमरन गौरी कन्त । रज त्यागि सत्याहि धरत निस दिन मनहुं योगी संत ॥ भक्ति भूसुर वृंद को गोबिद पद रति भ्राज । गाय गाय सुनावहीं अस गाय वंदी रोज ॥

कवित्त—मनलव दिलो ते लखनऊ ते खैरबादो लंदन ते खुलत विसाति बिना सकसे । भारभुज दंडन संभारे भुव मंडल को जाको धाक धाई धराधीश धकाधक से ॥ हांक सुने हालत हरीफ नाकदम होत कहै विश्वनाथ घरि गिरै जाके मकसे । कहांलौं सराहो तेरे उरकी उमाहो भूप रनजीत सिंह तेरे पातसाही नकसे ॥ १ ॥ देवन अदेव भूत भैरवादि बचि जात बचि जात जक्ष कूष्माण्ड को कटक ते । बचि जात हलहू त्रिशूलहू से बचि जात बचि जात सरप शूल सल को सपट ते ॥ बचि जात बाधि व्याधि घात हू से बचि जात बचि जात बर व्याल व्याघ्र को दपट तें ॥ बचि जात यमसों जमाति जोरि जमन को बचत न बरि रनजीत को झपट ते ॥ २ ॥

भुजङ्ग प्रयात :—प्रजा जासु फूलो फलो सुख भरी सो । मनो पाय रितु राज कानन हरी सो ॥ विराजै जहां शास्त्री शुक्ल बैनी । गुरु देव मम स्वर्ग को है नशैनी ॥ अभयजीव हैं है न रोगादि भीता । सुधा से लसैं मिश्र श्रीराम सीता ॥ बड़े ज्योतिषी राज मंत्री बलो हैं । मनो भाष्यकर गर्ग से संगलो हैं ॥ महाराज श्रीमान से मान पायो । रह्यो मान वाके न जो मान लायो ॥ त्रिपाठी मणिकलाल मोहन विराजै । जको देखि जेहि ज्योतिषी को समाजै ॥ गणित जासु को ब्रह्म लिपि लौं सही है । मनो देह मानुष्य धारै मही है ॥ ज्वलित ज्वाल अनु शेष दूजो विराजै । पुराणज्ञ श्री ईश्वरी शुक्ल भ्राजै ॥ पठे सर्व इतिहास अरु आयुर्वेद । लहे युक्ति सों काव्य कोशादि भेदै ॥ दिलो मित्र सब के धर्मो सौ कला मैं । मिथानाथ भोला गहे युग्म वामैं ॥ पठे संस्कृत आरबी फारसी हैं । सबै इल्म अंगरेज को पारसी है । रह्यो शेष जासों न विद्याश अंगा । यथवो हैं अभिधान विख्यात गंगा ॥

रोला—सर्व मन रंजन विभंजन दुःख सज्जन मित्र ।
दुष्ट दल गंजन गुणालय सर्व गुन को चित्र ॥
गर्वहर हरभक्त श्री गुरु वक्स मेरे भ्रात ।
मूर्तिमान त्रिदेव लौं है धरे मानुज गात ॥
ज्येष्ट श्रेष्ट दयाल मम भ्राता सहोदर तात ।
महीपति है नाम मानो मही रवि दरशात ॥
नाम मम शिव सिंह है शिवचरण रज को खोज ।
भद्रायु लौ सुख लहत निसुदिन पाय दिल को मौज ॥

(पन्ना ३२) बार कपिला तेहि पाग्राना। जोइ लांव होत बहुत सुखनाना॥
कपिलाश्रम जहं अघ गण हारी। लपतहि मुनिवर सब सुखकारी।
तहं एक विप्र भयो मखकर्ता। सोम याजि कुल मद कुल भर्ता॥
दीक्षित सो परि पूरण कामा। यज्ञदत्त शुभ तेहि कर नामा॥
सब विद्या महं परम प्रवीना। राजमान्य बहु धन नहि दीना॥

छंद—कछु काल बीते सु मुनि तिन के भयहु सुत शुभ कालही।
सब कीन जातक कर्म द्विज वर यज्ञदत्त स्वचालही॥
गुण नाम धरेहु विचारि गुण निधि बार चूड़ाकर्म हाे॥
उपनयन कीन्हेउ निगम संमत दीन दान सुधर्म हाे॥

No. 252(*b*). Śivapurāṇa (Uttarārdha) by Mahānanda Vājapeyī of Dālamaū (Rāe Bareli). Substance—Foreign blue paper. Leaves—688. Size—12½ × 8 inches. Lines per page—32. Extent—17,200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1928 or A. D. 1871. Place of deposit—Ṭhākura Nannihāla Simha Seṅgara, Kāṇṭhā, District Unāo.

Beginning.—श्री गणेशायनमः॥ श्री गौरीशंकरायनमः॥ श्री गुरुचरण कमलाभ्यां नमः॥

वंदे देवमुमापतिं गुणगतिं विष्णुवादि देवस्तुतं। मायाधीश मनोज्ञमाकृतिकरं मायापरं शंकरं। दीनोद्धार विहार कारमनिशं माया विदां मानदं। ब्रह्मज्ञान विशारदं पशुपतिं भक्तप्रियं सत्क्रियम्॥ १॥ वंदे महानंद विदां महेशीं दुर्गास्तु दुर्गांति हरां भवांयाम्। दीनोद्धरात्ताक् निमाति संदां भक्तप्रियां स्कंदप्रसुं सुरूयाम॥ २ वंदे स्कंदं च हेरंबं विष्णु ब्रह्माणमेव च। अन्यान् शिवजनान् वंदे स्वकृतेः पूर्तिं हेतवे॥ ३॥

दोहा—विनवहु गिरिजा शंभु पद पद्मुख गणपति पाद।
हरि विधि मुख सुर मुनि सकल वंदहु नशहि विवाद॥ ४

सुतउवाच—मुनि अंधकासुर नाश मंदर शैलगत शिव चरित हाे। मुनिनाथ नारद घात सो तव ठानि उर शंका कहो॥ हे तात विधि सुनि अंधकासुर नाश मम शंका भयो। सोइ पूछहुं सविवेक भाषहु हरहु शंका जो जयो॥

दोहा—कबहि भयो शिव मंदराचलहि त्यागि कैलाश।
सोइ कहहु शिव चरित हाे मोहि सुनबे की आश॥

End.—आइ गये तब सुभग विमाना। लेन सकति तेहि दैनिक माना॥ तब भे दंपति दिव्य सुदेहा। चढ़ि विमान तिन्हसे सुसनेहा॥ दिव्य भोग संयुक्त बनाई। शिव मंदिर गे गण गति पाई॥ शिवगण तेहि कर नायक भयऊ। स्नेहु मुदित नित दुख नसि गयऊ॥ सोइ नारद। सखि गिरिजा को। भे प्रनदिवह शुभाकृति जाको॥ यह हम कहेउ पुण्य आख्याना। पढ़त सुनत कहे सुखद बखाना॥ इह भुक्तिद उत मुक्ति दया है। सब विधि नाशत है दुखदा है॥ यहि ते बाढ़त बहु आयुर्बल। रोग न रहत लसत तन अरु वकल॥ सुर संपति धन धान्य विबर्द्धन। यह आख्यान सुमंगल साधन॥ त्रिय गत को सौभाग्य बढ़ावन। संतति प्रद बहु चेत सुहावन॥ उमा महेश्वर संज्ञक यह व्रत। यहि ठाने सुख उपजत अविरत॥ यह मुनिवर व्रतराज करावत। यहि कीन्हे जन सब सुख पावत। यह व्रत हवहि शिवा शिव प्यारा। यहि कान्हे सब नसत विकारा॥ यहि व्रत की महिमा सर्वोपरि। होति शिवा शिव रति यहि व्रत करि॥

इति श्री वाजपेयि, वंशोद्भव श्री ठाकुर प्रसादात्मज श्री ब्रह्मानंद विरचिते भाषा श्री शिवपुराणे शिव विधि दशमखंडे ब्रह्मानन्द संवादे उमा महेश्वर व्रत माहात्म्य वर्णनोनाम चतुर्विंशोऽध्याय॥ २४॥ सम्वत्सम शुभं भूयात्॥ चैत्र शुक्ल १८ लिख्यते॥ ललित किशोर वाजपेयिना॥ राम राम शिव शिव राम इति

Subject.—षष्ठखंड—शिव का काशी जाना और सब देवों का भी पहुंचना व शिव दर्शनादि व मणिकर्णिका स्नान करना। शिव—विष्णु संवाद वर्णन, शिव का काशी निवास व शासन वर्णन। गिरिजा का अन्नपूर्णा रूप में निवास। भैरव महिमा व विधि का पंचम शिर काटने का उल्लेख वर्णन व कपाल मोचन तीर्थ वर्णन। आनंद वन का वर्णन व हरिकेश का तप करते देखना। उसे दंडपाणि बनाना और वरदेना। विघ्न से शुद्ध व अगस्त्य का काशी से चले जाना, वश्य धनंजय का दंडपाणि का शासन मानना। रत्नभद्र पुत्र हरिकेश का चरित्र वर्णन जो यक्ष मुनि और धनी था। भैरव वर्णन, शिव भक्ति कथन।

दुर्ग असुर का वर्णन, शिवा के मारने से दुर्गानाम होना। दिवोदास कथा वर्णन, स्वायंभुव वंश में रिपुंजय का होना। काशी में तप करना, अकाल से धर्मराय होना। ब्रह्मा का रिपुंजय से राज्य करने को कहना व वचन लेना कि देव व नाग क्षिति पर न आवें।

मंदर गिरि का तप वर्णन, शिव का जाना और निज मूर्ति पर लिंग स्थापन करना, शिव का मंदराचल में निवास करना। अन्य देवों का भी जाना, रिपुंजय का काशी में राज्य करना। देवों का विघ्न करना और अग्नि का कार्य

करने से निषेध करना। राजा का संतोष देना और दिवोदास का शान्ति पूर्वक राज्य करना। दिवोदास प्रभाव वर्णन। देवों का ब्रह्मा के पास पास उनका विष्णु के और विष्णु का सब के साथ शंकर के पास जाना।

शिव का योगिनी गण को काशी में विघ्नार्थ भेजना व उनका असफल होना। सूर्य्य को विघ्नार्थ भेजना, काशी का प्रभाव वर्णन। १२ सूर्यों का चरित्र वर्णन और उनकी महिमा। काशी निवास वर्णन, कोई विघ्न न मिलना। शिव का ब्रह्मा को भेजना और राजा को यज्ञ करने को कहना। ब्रह्मेश्वर लिंग स्थापन कराना व ठहरना। शिव का दुःखित होना शंकुकर्ण महाकाल गणों को भेजना। उनका भी न टिकना। अन्य बहुत से गणों का भेजना व काशी का बसना। गणेश को भेजना और माया करना। विप्र रूप से सब को संतुष्ट करना। रानी लीलावती का विप्र को बुलाना और भविष्य ज्ञात करना, राजा का भयद कारण ज्ञात करना। गणेश का कारण बता कुछ दिन पीछे एक द्विज मिलने को कहना व राजा को छलना। गणेश का विलमना, विष्णु को भेजना, विष्णु के स्नान स्थान का पादोदक तीर्थ होना, आदि केशव, क्षीरोदधि, छलिका किय, शंखतीर्थ, अरि तीर्थ, गदा पद्मतीर्थ, रमा, गरुड़, नारद, प्रहलाद तीर्थ वर्णन। गणेश का विज्ञानोपदेश देना। राजा को निर्वेद होना और विप्र-राजा संवाद वर्णन। रणञ्जय का राजत्याग का निश्चय और पुत्र स्त्री आदि को बुलाना और विमान पर बैठ कर शिवपुर को जाना।

ज्येष्ठ पुत्र को राज देना। गणेश और विष्णु का कृतकार्य्य होना, गरुड़ को शिवजी के पास संदेशार्थ भेजना, शिव का काशी को प्रस्थान। हरि आदि का सादर लेना व स्तुति वर्णन। सब देवों से अंशरूप में टिकने को काशी में कहना। शिव जी का दिव्य रथ पर काशी में प्रवेश वर्णन। जैगीषव्य योगी का समाधि वर्णन, गण भेज कर पास बुलाना। गुहा का वर्णन व शिव का वरदान देना।

काशी से सुमेरु पर शिव के जाने पर ब्राह्मणों का सन्यस्त व्रत लेना और काशी के सम्पूर्ण तीर्थों में भ्रमण करना, शिवजी के लौट आने पर ब्राह्मणों का स्तुति करना और शिव का प्रसन्न होना, वर देना और बहुत संतोष प्रकट करना। विश्वकर्मा का विश्वेश्वर भवन निर्माण वर्णन, उसका ऐश्वर्य कथन, मयना का हिमालय से पार्वती से मिलने की इच्छा प्रगट करना। हिमालय का अपार सम्पत्ति व सामिग्री लेकर जाना, काशी की सम्पत्ति देख कर चकित होना। हिम का विंध समीप ठहरना, वरुणातट प्रासाद निर्माण, शिव-शिवा गमन। हिम का शिव स्थापन करना और लौट जाना, शिव-शिवा का वर देना, अनादि लिंग तीर्थ वर्णन जिसका शैलेश्वर रत्नेश्वर हुआ। त्रिलोचनादि तीर्थ वर्णन, शिव का

अभिषेक वर्णन, देव स्तुति कथन। शिव का विष्णु आदि को भक्ति वर देना, महानन्द विप्र की कथा, चाण्डाल दान लेना, तिरस्कार होना, ठगों का घेरना, छल से ठगों को मारना, उनका कुक्कुट होना और शिव भक्ति में रत हो मुक्त होना और कुक्कुट मंडप तीर्थ होना, घंटा रव होना, नंदी, शिव, गणप का जाना, शृंगार मंडप में विश्वनाथ लिंग स्थापन करना वेदादि का स्तुति करना।

खंड सप्तम।

शिव वंदना, ब्रह्मा का १०० अवतार कथा वर्णन। निराकार स्वरूप वर्णन। रुद्र, ब्रह्मा के पुत्र, चार शिष्यों के साथ शिव की उत्पत्ति, वामदेव अघोर स्वरूप, ईशान, वसु, सूर्य, चन्द्र, अर्द्धनारीश्वर, योगरचयिता, श्वेत तारदमन, होत्र कंकण, जैगीष, ऋषभ, भृंगी, अत्रि, बालि, गौतम, वेदशिर, धेनुकर्ण, दारुक, लांगुलि, त्रिशूली, नंदी और भैरव रूप होना। वीरभद्र, शरभ, हर, महाकाल के दशरूप व दस देवी पति होना। एकादश रुद्ररूप, गृहपति, वृषेश्वर, पिप्पला, अवधूत, हनुमान, शंभु, वैश्य, द्विजेश, भिक्षु उद्धारार्थ शंकररूप, हंस हो (नल-दमयंती का मिलाया) सत्यरथ के पुत्र को जिलाना। पार्वती परीक्षार्थ (जटिलरूप) साधु, अश्वत्थामा, किरात, गोरक्ष, शंकराचार्य, मिहिरमित आदि रूप वर्णन।

सौमिनि रूप से शबरो का उद्धार करना, भद्रायुध का अभिमान तोड़ना, भस्मासुर व कालनेमि वध कर्ता। शिव के अन्य बातों का उल्लेख, महिमा वर्णन। भूत प्रेतादि का प्रभाव। कैलाश वर्णन। लोहित शिशु व सुनंदादि ४ शिष्यों का वर्णन, कल्परक्त, वामदेव व विरजादि ४ पुत्र उत्पन्न करना। तत्पुरुष रूप होना, अघोर रूप धारण करना, पंचम ईशान रूप का वर्णन। इन सब रूपों ने सृष्टि उत्पादनार्थ ब्रह्मा को सहायता दी। अष्टावतारवर्णन शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपाल, ईशान और महादेव का वर्णन। स्थान-क्रमशः—पृथ्वी, जल, अनल, पवन, नभ, क्षेत्रज्ञ, सूर्य, शशि, कार्य-उत्पादन, नरोश्वरावतार वर्णन, ईथुनी सृष्टि कारण, ब्रह्मा का स्तुति करना। शंकर, विजगीष, श्वेतादि, विशोकादि, लोकाक्षि आदि २८ अवतारों का वर्णन, व्यास आदि का ज्ञान देने व योग सिखाने तथा सविता मंत्र देने के लिये दिवोदास व विजगीष तप वर्णन व शिव का काशी छोड़ सुमेरगिरि पर जाना, देवों को विदा करना, योगिनी आदि को भेजने का वर्णन, दिवोदास का शिवपुर गमन।

दधिवाहन रूप से व्यास को पुराण रचनार्थ ज्ञान देना। कपिल व आसुर रूप से ज्ञान विस्तार करना। ऋषभावतार से ४ शिष्यों के साथ व्यास को ज्ञान देना। ऋषभ चरित्र वर्णन, भद्रायुष नृप का उद्धार करना आदि। भृंग का अवतार ले भृगु को सहायता देना। भृंग के ४ पुत्रों का वर्णन। तप रूप से व्यास को कलियुग का मार्ग बतलाना। १९वें द्वापर में भरद्वाज को पत्नि रूप से रचनार्थ सहायता

देना । वाल्मि व गौतम रूप से श्रुति रचना में व्यास के सहायक होना । वेद शिर से व्यास को बोध देना, हिमगिरि मैना को समझाना । गोकर्ण रूप से धनंजय को सहायता देना । गुहावासी अवतार से व्यास को सहायता देना ।

अठारहवें द्वापर से २७वें तक १० अवतार वर्णन । शिखंडी, जटामाली, अट्टहास दारुक, लांगली महाकाय, शूली, दंडी मुंडीश्वर, सहिष्णु, सोमशर्मावतार वर्णन, प्रत्येक के चार चार पुत्र हो कर भिन्न भिन्न द्वापर में भिन्न भिन्न व्यास को सहायता देना । २८वें द्वापर में शिव अवतार में व्यास को सहायता देना । कृष्णावतार से द्वापर में राक्षसों का वध करना, फिर कृष्ण द्वैपायन व्यास का शिवाराधना करना, शंकर का अवतार ले मृत देह को जीवित करना व श्रुतिमार्ग व योग प्रतिपादन करना । नंदिकेश्वर जन्म वर्णन—शिलाद का तप करना, इन्द्र से अयोनिज अमर पुत्र मांगना, फिर तप करना और शिव का नंदी नाम से जन्म लेना । नंदी आदि अवाहित होना । नंदी का तप करना और शिव गण होना । स्कंद का मुनियों से भैरव कथा कहना, देवों का ब्रह्मा से सब से बड़ा देव (ब्रह्म) का ज्ञात करना, विष्णु ब्रह्मा का विवाद होना और निज को परमेश मानना, ऋगादि वेदों से ज्ञात करना और उनका भिन्न भिन्न रूप में शिव को परमेश वर्णन करना । शिव का मोह दूर करना । देव समाज में ज्योति रूप प्रकट होना व रुद्र की उत्पत्ति और शिव से आदेश मांगना । काल भैरव नाम देना और दुष्ट पद्मासन को शिक्षा देना तथा काशी का कोतवाल बनाना । ब्रह्मा का शिव की निन्दा करना और काल भैरव का पंचम शिर काटना, भैरव का ब्रह्म दोष निवारणार्थ कापालिक व्रत करना, शिव का वर देना, हत्या (भयंकर कन्या) की उत्पत्ति और काशी जाने पर भैरव से हत्या को दूर होने को कहना । भैरव का सब लोकों व तीर्थों में जाना । भैरव-विष्णु संवाद और काशी का वर्णन व काशी आना और हत्या छूटना ।

वीरभद्रावतार वर्णन—दक्ष यज्ञ में सती के भस्म होने पर गणों का यज्ञ बिगाड़ना, भृगु का रक्षा करना, गणों का मारा जाना, शिव का एक बाल से वीरभद्र का उत्पन्न करना, उसका सैकड़ों गणों के साथ यज्ञ विध्वंस करना, विष्णु आदि से युद्ध होना, विष्णु-वीरभद्र युद्ध वर्णन, विष्णु का चक्र चलाना, वीरभद्र का स्तम्भन करना । ब्रह्मा का विष्णु को समझाना । भृगु की दाढ़ी उखाड़ना, धर्म, प्रजापति, कश्यप आदि को लात मारना, यज्ञ का मृगरूप से भागना, वीरभद्र का शिर काटना, दक्ष का शिर भी कुंड में होम देना । यज्ञ विध्वंस वर्णन ।

देवों का स्तुति करना । शिव का प्रसन्न होना वीरभद्र को आशीष देना, यज्ञ पूर्ण होना । प्रह्लाद की भक्ति और हिरण्य कश्यप का विरोध वर्णन, विष्णु का नृसिंह अवतार लेना । हिरण्यकश्यप को वध करना । नृसिंह का क्रोध

करना, देवों का भयभीत हो शिव को स्मरण करना। शिव का वीरभद्र को बुलाना और नृसिंह को शांति करने को भेजना। नृसिंह वीरभद्र संवाद। शिव का शरभ अवतार ले नृसिंह तेज हरण। नृसिंह का शिव जी की स्तुति करना और शिव का प्रसन्न होना।

यक्षावतार वर्णन—समुद्र मथन पर देवों को अभिमान होना यक्ष रूप से शिव का देवों के बीच में आना और तृण तोड़ने को कहना, न टूटने पर आकाश वाणी होना और देवों का शिव प्रभाव विदित होने पर स्तुति करना।

शिव के दशावतार का वर्णन—काल, तार, भुवनेश, षोडश भैरव, छिन्न मस्तक धूमावती, बगलामुख, मातंग, कमलरूप धारण करना और शिवा के भी साथ साथ इन्हीं नाम से दस रूप होना।

रुद्र के ११ अवतार का वर्णन—देवों पर विपत्ति पड़ने पर कश्यप का तप करना और शंभु का उनके यहां ११ रुद्र रूप में अवतार लेना। देवों का स्तुति करना जिनके नाम—कपाली, पिंगल, भीम, विरूपाक्ष, विलोहित, शास्ता, अजपाद, अहिर्बुध्न्य, शंभु, भव, रुद्र ये ११ रुद्र हुए। असुरों को मार कर देवों को सुख देना।

दुर्वासावतार—अत्रि का तप करने जाना, त्रिदेव का आना और पुत्र नाम का वर देना, दत्तात्रेय का अवतार होना, दुर्वासा शिव के अवतार हुए। बहुतों की परीक्षा करना और सुमार्ग पर लाना। अम्बरीष की परीक्षा वर्णन। राम व पाण्डवों की परीक्षा वर्णन। राम की परीक्षा काल से बातचीत करते समय लक्ष्मण के द्वारपाल होने पर किसी के भीतर आने का निषेध वर्णन और दुर्वासा के पहुंचने पर शाप देने का भय दे लक्ष्मण को भेजना और उनका देहत्याग वर्णन। कृष्ण को पायस शरीर में लगवा कर रुक्मिणी सहित दुर्वासा के पास पहुंचने को कहना, दुर्वासा का प्रसन्न हो वर देना। मुनि का स्नान करना व कौपीन नष्ट होने से जल में रहना, पांडव स्त्री का स्नान करने आना और अंचल फाड़ कर फेंक देना जिसे पहन कर दुर्वासा का निकलना और वर देना। दुर्वासा का कुरूप हो स्नान करना, तीन गंधर्व कन्याओं का वहां आना और हंसना तथा दुर्वासा का शाप देना कि चाण्डाल कन्या बनो, स्तुति करने पर मलमास में पूजन से उद्धार होने का कथन।

गृहपति वर्णन—नर्मदा तट पर नर्मपुर नगर में विश्वानर मुनि शिव भक्त था। उसकी स्त्री शुचि का पति से शिव समान पुत्र मांगना। विश्वानर का काशी तीर्थ आना और घोर तप करना। वीरेश्वर के मार्ग में शिव लिंग में शिशु रूप में प्रकट होना और विप्र से प्रेम वचन कहना और प्रसन्न हो वर देना, विश्वानर का

स्तुति करना. शिव का शुचिष्मती के गर्भ से जन्म लेना, देवों का स्तुति करना व बालक का पालन तथा विद्याभ्यास करना। नारद का दिखाना तो १ वर्ष के भीतर गाज पड़ने को कहना। गृहपति का माता-पिता को संतोष दे मृत्युंजय जप करना। इन्द्र का वर देने जाना, उस का मना करना और इन्द्र का मारने को उद्यत होना, शिव का रक्षा करना, वर देना, दिक्पाल को दूसरा गृहपति वर्णन।

वृषभावतार—१४ रत्नों का वर्णन। देवासुर संग्राम वर्णन, हरि का नारि को देख मोहना और उनके बहुत से पुत्र उत्पन्न करना, उनका उपद्रव करना और लोगों को सताना, वृषभ रूप में शिव का कुतल में जाना और हरि पुत्रों का युद्ध को सन्नद्ध होना, श्रृंगों से उनको मारना, विष्णु से युद्ध होना और विष्णु का हारना तथा स्तुति करना।

पिप्पलाद अवतार वर्णन—दधीचि का हरि को जीतना, सुर सहित हरि को शाप देना। सुवर्चा का देवों को शाप देना। उसने पिप्पलाद का जन्म। वृत्रासुर से देवों के हारने पर दधीचि के पास जाने को कहना, वज्र के लिये अस्थि लाने को उस वज्र से वृत्र का मारा जाना। सुवर्चा के सती होने से आकाश वाणी द्वारा रोका जाना और शिव का पिप्पलाद रूप में उसके गर्भ से अवतार लेना। देवों का स्तुति करना, तीर्थ जाते पिप्पलाद को पद्मा का मिलना, उसके पिता से कह कर विवाह करना। पद्मा के पास धर्म का परीक्षार्थ आना। पिप्पलाद की निंदा करना, पद्मा का शाप देना, धर्म का निज रूप में स्तुति करना, चार चरणों का युगों में विभाग वर्णन। पिप्पलाद का १० पुत्र उत्पन्न करना। शनि पीड़ा से दुखित होना व तब से शांति हो जाना।

महेशावतार वर्णन—शिव विहार, भैरव का गिरिजा को कुभाव से देखना, शिवा का शाप देना, शिवा को भी भैरव का शाप देना। इन्द्र का सगण शिव के समीप जाना। अवधूत रूप में शिव का इन्द्र से वातचीत करना। इन्द्र का वज्र मारना व उसका जलना। देवों का भयभीत हो स्तुति करना, वृहस्पति का आशीष दे वर देना। जीव नाम होना।

हनुमत अवतार वर्णन—राम की सहायता करना, सीता खोज, लंकादहन, सेतुबंध, सजीवन लाना, अहिरावण वध। सनकादि का विष्णुलोक आना, जय विजय के रोकने पर राक्षस होने का शाप देना। जय विजय के तीन जन्मों का वर्णन। राम चरित्र वर्णन। अगस्त्य—राम संवाद, शिव महिमा वर्णन व माया का उल्लेख। शिव भक्ति से राम का कृतार्थ होना। राम का तप करना, शिव का परीक्षा लेना व शिव राघव संवाद व प्रसन्न हो वर देना, सब देवों का आना। प्रभंजन-अंजना संवाद, हनुमान जन्म, बाल चरित्र

वर्णन। बाल रवि भक्षण, इन्द्र का वज्र मारना, रुद्र कोप होना व देवों का शांत करना, हनुमत को वर देना। बाल समय में ध्रुव आदि को जाना, आकाश में उछलना, ऋषियों का उपद्रव देख बल भूलने का शाप देना व राम के मिलने पर शाप मोचन होना, विद्या पठन व वालि सुग्रीव से मिलना व राम को सहायता देना।

वैश्यनाथावतार—महानंदा वेश्या का वर्णन, शिव भक्त होना, वैश्यनाथ महादेव का अवतार होना। महानन्दा वैश्यनाथ संवाद वर्णन, रत्न कंकण के लेने की इच्छा करने पर वैश्य नाथ का देना और शिव लिंग देना। कुक्कुट का अग्नि में भस्म होना जिस पर वेश्या का अपार प्रेम था, वैश्यनाथ-वेश्या विहार वर्णन व अन्तर्धान होना। वेश्या को शिव पुर देना।

द्विजनाथावतार वर्णन—सुप्रताप राजा का वर्णन, ऋषभ प्रसाद पाना, उसको चन्द्राङ्गद राना से कीर्तिमालो कन्या की उत्पत्ति, भद्रायुष से विवाह होना। शिव-शिवा का द्विज रूप में उसके पास जाना और बाघ से रक्षा करने को कहना, राजा का बाण चलाना पर कुछ असर न होना। द्विज की स्त्री को खा जाना। द्विज का राजा पर क्रोध करना, राजा का दुखित होना। ब्राह्मण से जो चाहे मांगने को कहना, उसका स्त्री मांगना, राजा का देना, शिव का प्रगट होना। भद्रायुष को वर देना। पार्षद बनाना।

पतिनाथ अवतार वर्णन—आहुक-आहुकी भिल्ल भिल्लनि वर्णन। भिल्ल के आने पर शिव का पति रूप में भिल्लनि के पास जाना। वहां ठहरना। घर छोटा होने पर भिल्ल का बाहर रहना और हिंसक जंतु द्वारा मारा जाना। भिल्लनि का सती होने के लिये चिता रचना, उसका शीतल होना, शिव का प्रगट होना, और वर देना व निज हंस रूप से नल दमयन्ती का संयोग कराने की प्रतिज्ञा करना जोकि भिल्ल के अवतार थे।

कृष्ण दर्शन अवतार वर्णन—नभग का गुरुकुल पढ़ना और भाइयों का दाय भाग न देना। ज्ञात करने पर पिता के देने का उल्लेख करना। पिता मनु के पास नभग का जाना, पिता का शिव आराधना करने को कहना। आंगिरस के यज्ञ में जाना व दो सूक्त कर्म कथन करना, यज्ञ का पूर्ण होना और बहुत धन देना और शिव का कृष्ण दर्शन नाम से उसके पास परोक्षार्थ आना। शिव का उस द्रव्य को अपना बतलाना। दोनों का विवाद होना और उसकी पिता मनु को पंच बनाना। मनु का शिव का माल बतलाना और उनको विनती करने को कहना। नभग का प्रार्थना करना और शिव का उसे राजा बनाना व धन देना।

भिक्षुनाथ अवतार वर्णन—एक विदर्भ देश में सत्यरथ राजा का होना। शाल्व राजाओं का उसे रोकना। युद्ध होना व हारना, उसकी गर्भवती स्त्री का

भाग जाना । एक ताल पर पहुंचना । रानी के पुत्र होना व ताल में जल पीने जाना व ग्राह का भक्षण करना, शिव का भिक्षु रूप में पहुंचना । द्विज स्त्री का आना व पुत्र लेना । शिव का उसको पालने का आदेश करना । स्त्री का पुत्र के विषय में ज्ञात करना, शिव का कथन करना । शिव व्रत भंग करने से सत्यरथ का राज जाने का वर्णन । उसका पोषण वर्णन व स्वर्ण घट का पाना । नाम शुचि व्रत रहना । शिव भक्त होना । राज पाना ।

निरीश्वर अवतार वर्णन । व्याघ्रपाद मुनि के पुत्र उपमन्यु का शिव भक्त होना । उपमन्यु को दूध का लोभ होना व माँ से माँगना । जननी का कर्महीन होने का वर्णन, उपमन्यु को ज्ञान होना, उग्र तप करना । ब्रह्मा विष्णु कथन से शिव का वरदान देना । इन्द्र का शिव निंदा करना, और समझाना, व क्रोध कर भस्म डालना । सुरेश्वर रूप से शिव का वर देना व प्रसन्न होना ।

जटिलाख्य अवतार वर्णन—गिरिजा का तप करना, पितु आज्ञा से शिव विवाहार्थ और शिव का विप्र रूप से गिरिजा के पास जटाधारी हो कर जाना व शिव निंदा करना, शिवा का असन्तुष्ट होना व दर्शन देना ।

नर्तक नट अवतार वर्णन—हिमाचल के समीप नर्तकी बन कर जाना और विवाह में सुनाच जान प्रसन्न होना व हिमेश में उसे भड़काना, तब सप्त ऋषि को समझाने को भेजना । द्रोणाचार्य के तप से प्रसन्न हो कर शिव का वर देना, अश्वत्थामा अवतार लेकर पुत्र होना, बाण मच लन में दक्षता प्राप्त, पांडव पुत्र बध व अर्जुन का पकड़ना । अर्जुन का तप करके पाशुपतास्त्र पाना । परीक्षित को गर्भ में नाश करने को अश्वत्थामा का बाण भेजना, कृष्ण का रक्षा करना । द्रौणी को शरण में भेजना ।

किरातावतार—अर्जुन का बाण लेने के लिये तप करने जाना । पांडव कौरव द्रोह वर्णन । लाक्षा गृह, द्यूत, सभा आदि का वर्णन । पांडव वनवास वर्णन । शिव का अर्जुन से किरात रूप में शूकर के शिकार करने पर युद्ध करना व अन्त में प्रसन्न हो कर पाशुपति अस्त्र देना ।

१२ ज्योतिर्लिंग अवतार वर्णन—सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकाल, परमेश, केदार, भीमशंकर, विश्वेश्वर, त्र्यंबक, वैद्यनाथ, रामेश्वर, नागेश, घुश्मेश्वर अवतारों का वर्णन ।

गुजरात में दक्ष को शाप देने से मोचनार्थ सोमनाथ को स्थापन करना, चन्द्र कुंडतीर्थ का वर्णन, मल्लिकार्जुन—श्रीगिरि में, महाकाल—उज्जैन में दूषण राक्षस मारने के लिये । परमेश—विन्ध्याचल में प्रणवस्थल ओंकारेश्वर में प्रणव व परमेश्वर वर्णन । केदार—हिमालय के केदारनाथ में नर नारायण रूप धारण

करना। भीम शंकर—भीम को मारने के कारण लिंग स्थापन होना, वहाँ महानंद का स्थान था। (कम्पिला में) विश्वेश्वर—काशी में। त्र्यंबक—गौतम के यहाँ अवतार रूप गौतमी तट पर लिंग रूप में स्थापन। वैद्यनाथ—विहार में। नागेश—दारुक वन में स्थापन। रामेश्वर—सेतुबंध पर राम ने स्थापना की। देव गिरि में घुस्मेश्वर शिव का लिंग है। सुधर्मा द्विज घुस्मा स्त्री का पुत्र शिव भक्त था; उसे सौतेली मा ने मारा जिसे जिलाने से व उसके लिंग स्थापन से घुस्मेश्वर नाथ नाम हुआ।

षष्टम खंड।

१२ लिंगों का वर्णन—आसाम में भीम शंकर (डाकिनी थल में) महीसागर पर सोमेश्वर, रुद्र महोच में, शुचि मति दुग्धेश, कर्दमेश ताज में, भूतेश, भीमेश्वर, लोकनाथ, त्रिनयन, वैजनाथ, व्याघ्रेश, भूतेश्वर ये १२ उपलिंग हैं। अन्य पूर्व के शिवों के नाम वर्णन। चारो युगों के शिव स्थापन का वर्णन। चित्रकूट स्थान वर्णन। मत्त गयेन्द्र शिव वर्णन। चित्रकूट चारों दिशाओं में शिव स्थापन, चित्रकूट में अत्रीशा, कालिंजर में नीलकंठ, संकर्षण गिरि में कोटीश्वर, तुंगारण्य में पशुपति का स्थापन हुआ। अत्रि के तप से सब तीर्थों का आना व जल लाना। शिव का वर देना व शिव स्थापन होना। अत्रीश्वर महेश महिमा वर्णन। नर्मदा किनारे के सब शैल शिव हैं, वहाँ के शिवों का वर्णन। नंदिकेश्वर महादेव का वर्णन।

नोमसार में राम का लिंग स्थापन। हनुमान का रेवा तट पर शिव स्थापन करना और ब्रह्महत्या से छूटना। ब्रह्मा विष्णु को मोह होना व अपने को सर्वोपरि मानना, शिव को तुच्छ समझना। ब्रह्मा-विष्णु के आगे ज्वाला प्रगट होना, लिंग रूप से अनादि ज्योति का फैलना। सब का शिव लिंग की पूजा करना, किसी को उसका आदि अंत न मिलना। दोनों का अनेक देवी आदिका दिखाना और गर्व दूर होना। पृष्ठ २९०—३१९ तक।

द्रुपदपुरी में द्विजेश व कालेश्वर शिव स्थापन, पश्चिम ओर के शिव लिंगों का वर्णन व महाबलेश्वर शिव वर्णन, मथुरा में गोपेश्वर का कथन; द्वारकेश्वर स्थापन और गोकरण में महाबलेश्वर स्थापन होना। इक्ष्वाकु वंशी नृप को एक राक्षस द्वारा छलना और राक्षसी कर्म करना व द्विज वध से वंशनाश होना, महाबल शिव के पूजन से हत्या का दूर होना।

महाबल शिव महिमा वर्णन—उत्तर में ललिता देवी का ललितेश्वर महादेव का स्थापित करना रावण का शिर चढ़ाना व वरदान पाना। २ शिव लिंग पाना, मार्ग में मूत्र वेग होना, ग्वाला को मूर्ति देना, दो घड़ी लेने की प्रतिज्ञा कर पृथ्वी पर रखने से पताल लोक को जाना और फिर रावण से न उठना। चन्द्रमाल शिव महिमा वर्णन—पृ० ३२०—३२४।

उत्तर दिशा में पंच प्रयाग दक्षेश्वर लिंग नीलेश्वर, भद्रेश्वर, शंकर, होमेश्वर, चन्द्रेश्वर, चण्डीश्वर, लक्ष्मणनाथ तीर्थ में लक्ष्मण का क्षय नष्ट होने का वर्णन। शिव का लिंग रूप कारण वर्णन। सती शोक विछोह में मदनोत्कंठा वर्णन। गिरिजा के अंगों के पड़ने से तीर्थ बनना। हिरण्याक्ष पुत्र अंधक वध ने बड़ा तप किया था। फिर वर पा देवों को कष्ट दिया तब मारा गया व गण बनाया गया। वहीं अंधकेश्वर शिव लिंग स्थापित हुआ। दधीचि के पुत्रों का शिवव्रत भंग करने से शिव का शाप देना, दधीचि का तप करना और शाप छुड़ाना। वटुक होने का वर देना और विजयी बनाना। प्रजापति यज्ञ में भद्रक राजा की ध्वजा का गिरना, वटु का उसके भोज में उपस्थित होना और उनकी महिमा का बखान करना।

ज्योतिर्लिंग की कथा—दक्ष के पुत्रों को नारद का वैराग्य दिलाना। तब शाप देना और ६० कन्या उत्पादन करना, २७ कन्याओं से चन्द्र का विवाह होना। एक से प्यार करने और शेष को न चाहने से दक्ष का क्षयी होने का शाप देना। चन्द्र विनय पर ब्रह्मा का प्रभासक्षेत्र (गुजरात) में ज्योतिर्लिंग की आराधना करना व सोमेश्वर कथा कहना।

मल्लिकार्जुन कथा—षट्मुख का परिक्रमा कर लौटना। पर गणेश को प्रमुख बनाने से रुष्ट होना व मल्लिकार्जुन में जाना। सब देवों का उन्हें मनाना। शिवशिवा का जाना। सब देवों का शिवलिंग को स्थापित करना।

महाकाल—उज्जैन में एक ब्राह्मण के ४ पुत्र शिव भक्त थे, एक दूषण नामक राक्षस का दुख देना व तप करना। उसे वर देना। अंत में उसे नष्ट करना।

महाकाल स्थापन वर्णन। चन्द्रसेन की शिव भक्ति वर्णन व लिंग स्थापन करना, गोपी सुत की इच्छा पूर्ण करने का वर्णन। नर्मदा महिमा वर्णन, विंध्य का मद वर्णन व शिव का दूर करना, अमरेश्वर शिव स्थापन, शिव शोभा वर्णन। केदारनाथ में नरनारायण का तप करना, शिव स्थापन। बद्रीवन वर्णन, कृष्ण का तप वर्णन तथा वर लेना। पृ० ३३५—३७२ तक।

भीम शंकर लिंग वर्णन—सह्यपर्वत पर भीम का निवास जो विराध राक्षस का पुत्र था जिसे राम ने मारा था, उसकी माता का रावण की कथा वर्णन करना जिसे पुष्कसी ने उससे कहा था। भीम का बदला लेने को तप करना, शिव स्थापन करना, ब्रह्मा का वरदान देना, भीम का देवों व विष्णु से युद्ध करना और विष्णु का हार कर लौटना, भीम को देवों का कष्ट देना भीम का शिव की भक्ति करना और शिव से युद्ध करके भस्म होना। उस भस्म से औषधियों की उत्पत्ति, देव स्तुति वर्णन, भीम शंकर का स्थापन, विश्वेश्वर लिंग वर्णन, शिव

ब्रह्मा विवाद वर्णन और ज्योतिर्लिंग रूप में उत्पत्ति, काशी में शिव स्थापन, शिव शिर हिलने से कर्णों गिरने पर मणिकर्णिका तीर्थ होना, प्रलय में सब डूबना व काशी को त्रिशूल पर रक्षा करना, शिव का मुख्य स्थान काशी मानना, पतिव्रता का शिव दर्शन से अद्भुत फल प्राप्ति वर्णन। पृ० ३५४—४०० तक।

शैव कृपण संवाद वर्णन, शिव भक्ति वर्णन व विश्वेश्वर महिमा कथन व काशी के अनेक शिव लिंगों का वर्णन, ब्रह्मदत्त को फल प्राप्त होना। त्र्यंबकेश्वर माहात्म्य वर्णन, गौतम का तप कथन व वरुण की आराधना करना, जल अक्षय-भंडार मांगना, निज स्थान के लिये और वर पाना।

शिव महिमा लिंग स्थापन—गौतम को मद होना व शिव का दूर करना गणेश का उपदेश देना, शिव गंगा आविर्भाव वर्णन। त्र्यंबकेश्वर माहात्म्य वर्णन। पृ० ४०१—४२१ तक।

वैद्यनाथ माहात्म्य वर्णन—रावण का तप करना, दो शिवलिंग स्थापनार्थ लेना, मद होने पर लिंगों का ग्वाल के हाथ से पाताल जाना और रावण से न उठना व मद-चूर्ण करना, फिर शिव स्तुति करने पर उठ जाना, रावण का अत्याचार वर्णन, देवों का दुःख व निवेदन, राम का जन्म वर्णन, विवाह आदि व शिव कृपा से रावण वध वर्णन पृ० ४२२—४३२ तक।

नागेश लिंग वर्णन—दारुका राक्षसी का तप वर्णन, भवानी का वर देना, उसका देवों को कष्ट देना, उर्व मुनि का शाप देना। वैश्यपति की प्रार्थना पर शिव का उद्यत होना। वीरसेन का वर्णन, रामेश्वर वर्णन, स्थापन, माहात्म्य आदि कथन।

घुश्मेश्वर स्थापन, माहात्म्य वर्णन। घुश्मा का तप भक्ति व पुत्र वध वर्णन, शिव का उसकी रक्षा करने का वर्णन। पृ० ४३३—४४७ तक।

नवम खंड

शिव ब्रह्मांड रूप वर्णन व सप्त विवरण वर्णन। सुतलादि तीन लोक वर्णन, बलि पूर्व जन्म वर्णन, इन्द्राणी का कोप कथन व चिन्तामणि आदि का ऋषियों का पाना। तलातलादि पाताल तक वर्णन, उन लोकों में शिव प्रताप वर्णन। लोकों का विस्तार आदि वर्णन, नरक गति वर्णन। सप्त द्वीप वर्णन। भूगोल व जंबूद्वीप वर्णन। ब्रह्मराक्षस सद्गति वर्णन। चिता भस्म धारण फल, शबर, क्षत्रिय सद्गति वर्णन। भस्म माहात्म्य व भद्रायुष चरित्र वर्णन। दशार्ण देश के वज्रबाहु राजा की अनेक रानी थीं, बड़ी रानी के पुत्र होना व बहुत दुखित हो रोना, राजा का रानी व पुत्र को निकाल देना, पुत्र की मृत्यु, ऋषभ

का उसको रक्षा करना, भद्रायुष का जीवित होना, शिव आराधना व तप करना। पृ० ४४८—४९३ तक।

रुद्राक्ष महिमा वर्णन। त्रिपुंड व भस्म प्रताप कथन। श्रवण कीर्तन और मनन महिमा वर्णन, शिव का अन्य देवों से उत्तम होने का वर्णन। हरि-विधि विवाद वर्णन शिव अनुग्रह विवाद निवारण वर्णन पृ० ४९४—५२४ तक।

दशम खंड।

शिव नाम महिमा वर्णन, सोमिनि व इन्द्रद्युम्न की कथा का वर्णन जिसने शिव नाम जप कर भुक्ति—मुक्ति पायो। अर्थाचित्त सार्थक नाम उज्जैन के ब्राह्मण को अधोगति का शिव नाम से दूर होना। पंचाक्षर 'नमः शिवाय' की महिमा वर्णन, भस्म के तीन भेद, भस्म धारण महिमा वर्णन व विधि तथा रुद्राक्ष विभूति कथन, भस्म लगाने से ब्रह्मराक्षस को सद्गति होने का वर्णन। भूलोक वर्णन व शिव आराधना कथन। पृ० ५२५—५५८ तक।

भुवलोक में भूत प्रेत निवास व शिव आराधना वर्णन। विद्याधर आदि का कथन, रविलोक वर्णन। चन्द्र का शिव आराधना वर्णन, अत्रि आदि का कथन, नक्षत्रों का वर्णन। पंच ग्रह, शुक्र, बुध, बृहस्पति, शनि और मंगल ग्रह वर्णन। सप्त ऋषि का ऋषिलोक में आराधना वर्णन। ध्रुवलोक का वर्णन। महर्लोक व सत्यलोक का वर्णन। चतुर्दश मन्वंतर चरित्र वर्णन व शिव आराधन वर्णन। मनुवंश वर्णन, सूर्य के २ पुत्र व कन्या होना, सावर्णि का तप वर्णन। अश्विनी-कुमार उत्पत्ति वर्णन। मनुवंश के मित्रावसु का वर्णन, सोमवंश कथन, सगरवंश वर्णन, गंगा उत्पत्ति, भगीरथ आदि का तप आदि वर्णन, रघुवंश वर्णन। पितृलोक वर्णन, उनका माहात्म्य वर्णन, विभ्राज वर्णन। शिव भक्ति व स्तुति तथा महिमा वर्णन पृ० ५५९—६१० तक।

एकादश खंड।

शिवरात्रि व्रत माहात्म्य वर्णन तथा शिवरात्रि व्रत विधि और उद्यापन का वर्णन। मृग-व्याध संवाद और मृग का शिव आराधना वर्णन, व्याध को ज्ञान होना व शिवरात्रि व्रत माहात्म्य कथन। शिवरात्रि व्रत से चाण्डालिनी को सद्गति का वर्णन। मित्र सहराजा और मदयंती रानी की कथा का वर्णन और शिवरात्रि व्रत का प्रभाव दिखलाना तथा सद्गति का वर्णन। शिवरात्रि व्रत से विमर्ष को सद्गति का वर्णन। पृ० ६११—६२८ तक।

प्रदोष माहात्म वर्णन, चन्द्रसेन व श्रीकर का व्रत करने से उद्धार। चन्द्रसेन-श्रीकर प्रभाव वर्णन। प्रदोष व्रत से, सत्यरथ के पुत्र धर्मगुप्त का जन्म। धर्मगुप्त के व्रत से सुख वर्णन। प्रतिमास के प्रदोष की विधि का वर्णन।

एकादशी माहात्म वर्णन । अष्टमी शिवव्रत माहात्म वर्णन । भैरवाष्टमी व प्रणव वाक्य प्रभाव वर्णन तथा विधि कथन । सोमवार व्रत वर्णन व विधान कथन । सीमंतिनी विवाह—वैधव्य वर्णन ।

चंद्रांगद की कथा; तक्षक कथा । इन्द्रसेन व उसके पुत्र चन्द्रांगद का वर्णन । उसकी विद्या का प्रभाव । शारदा व्रत व उमा महेश्वर माहात्म्य । उमा महेश्वर व्रत । स्तुति ग्रोर प्रभाव कथन । पृ० ६२९—६८८ तक ।

No. 253. Rahasalīlā by Mahīpati. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—9×4 inches. Lines per page—16. Extent—252 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṁvat 1810 or A.D. 1753. Date of Manuscript—Saṁvat 1910 or A.D. 1853. Place of deposit—Ṭhākura Balabhadra Siṁha, Vansa kā Purawā, P. O. Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ ग्रथ रहस्य मंडल लिष्यते ॥ श्री कृष्ण रहस्य लीला लिष्यते ॥ गणनायक गैारी सुवन विघन हरन भगवान ह्वै प्रसन्न पुरवहु सकल तुम्ह सरवज्ञ सुजान ॥ बानी ठकुरायनी जननि जन पर होहु दयाल । चरित कहो जदुनाथ के दीजै बुद्धि विसाल ॥ ललिता मातु प्रसन्न ह्वै दीजिय सब सुष मोहि । मन कम बचन विनीत ह्वै महीपति जांचत तोहि ॥ सिया सहित सिव ध्याइये चरन कमल सिर नाइ । अभिमत फल सुभ तुरत ही संकर देत अघाइ ॥ मारुत सुत रघुवीर प्रिय तुम सम धन्य न कोइ । ह्वै प्रसन्न बर दीजिये ज्यहि ते सब सिद्धि होइ ॥ तुम कृपाल संकट हरन करन सकल सुषषानि । महिपत सेवक तोर है महाराज बरदानि ॥ रामदुलारे राम प्रिय राम दूत सुषकंद । महिपत सुमिरत तोहि अब दीजिय परमानंद । निर्गुण ब्रह्म सगुण भयो जदुबंसिन कुल ग्राइ । सो प्रभु चरित विचित्र किय निज मति बरनैा ताहि ॥

End—तैं तो सषी निरलज भई मन मोहन को चकई सी फिराई । तोहि कहा उनको ग्रब मोठि मैं केतो कहो बहुरो फिरि ग्राई । मोहि ग्रबै करि जानि परो कछु दीन्ह स्याम तुमको पहनाई ॥ सिंह के बीच ज्ये स्यार परे तिनहू ग्रपनी पति जानि गंवाई ॥ सुन्दर स्याम के है रटना ग्रब राधे जो राधे जो कंठ लगाई । तोहि बिना कछु नीक न लागै ज्यों बहु भोजन लोन बिनाई । हैं जो बेहाल परे नन्दलाल मिलैा तिनको चलिके सुषदाई । कैसो कठोर भई कब तें ग्रब ऐसी कहो ग्रपमान दोहाई ॥ मानिनि मान तजो उठि के सुनि दूति की बाति भजो सोहाई । मंजन के

तन पोष कसो पेशवरि भूषन धारि पचाई। कंचन थार संवारि के भारति ले जो चली पति को रिझवाई॥ माधो मिले मुसकाइ मनोहर हेत सो राधे को कंठ लगाई। करि कोड़ा गोपाल राधे सो पूछत भये कोन्हेउ बहुत बेहाल कहिय सो सुघ दानिय॥ कौन सी बात कहो हम सुन्दरि जा पर मान कियो तुम एतो। देषि बैठि रहे तुम्हरो अब सेरि सो राधिका आवे अनंद बढ़े तो॥ देषि बिलंब सषो पठई बेर तोन्हक दोन्ह घुमाइ तिन्हें तो। बात हिय की सबै कहिय मन मे जो चाउ भरो होइ जेतो॥ सुनै राधिका के बचन कृष्ण रहे मुरझाइ। षेल हांसी में हारि के धौरे बात चलाइ॥ मास मासे शुक्लपक्षे तिथौ ६ रविवासरे शुभ संवत १८१० रहस लोला समाप्त महोपति जन पोथी लिषा॥

Subject—इस रहस्य मंडली में श्री कृष्ण राधिका प्रति हास्य विलास का वर्णन है अर्थात् दानलोला, मानलोला आदि।

No. 254—Avatāragītā by Mādhavadāsa. Substance—Old foreign paper. Leaves—41. Size—$7\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—42. Extent—1,155 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Saṁvat 1898 or A.D. 1841. Place of deposit—Paṇḍita Ayodhyā Prasāda Miśra, Kaṭaila Chilavaliā, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ अवतार गीता लिष्यते॥ सालगराम चरित्र छंद॥ हे लंबोदर विनायकं सिद्धि दायकं। सुख प्रदयाकं दंतदंतो बदन धरनेत वेद वंदारिक सदा सुख कंद गिरिजानंद मम मति मंद तुम करुणा घनो मोहि देहु बुद्धि बिसाल बरनु राम कल कोरति घनो बंदौ मुकुंद पदारविंद मुनिंद मन मधुकर करे॥ मंदाकिनी मकरंद चललाम संतत शिरधरे॥ जे चरन पंकज परस पावन उपल ते प्रमदा करो। जलजात संत सुजान कर भव सिंधु विनु श्रम गहतरो॥ गुन षेल मर्दन मैन शंकर शूलपाणि त्रिशूल हा॥ जगदंबिका पति जक्त पति योगोश पति निर्जर महा॥ शशि भाल व्याल कपाल माल विभूत अंग सुहावनो॥ मोहि देहु मत प्रयदात बरनौं राम कोरति पावनो॥ करि दाह मत गुरु बचन पावक दोष दुख दारिद हिय। अज्ञान तिमिर नशाइ चरण सरोज रज अंजन दिय॥

End—छंद—करिहौं अनेक प्रकार चरित उदार सुनि सुनि जन तरे। तुम बशहु अब मम धाम तन तजि सकल सुख निधि पग परे॥ मन होहु सालिक राम शरिता गंडकी मह आइके। तुम जगत तुलसी बिटप होइ पुनि बसहु मम शिर आइके॥ जे संत पूजहि मोहि तोहि समेत अघ अवगुन मरे॥ ते जाइहैं बैकुंठ

मानहु कोटि जप तप मख करै ॥ यहि सुनित वृंदा अब रिपु पावक मई तुलसी पाइकै। प्रभु भये सालिगराम सब जग तरै पद परिक्षा नायकै ॥ दो०—योह इतिहास कहै सुनै छल तजि माधैादास। विन प्रयास भव निधि तरै करै विष्णु पुरवास ॥ ५६ इति श्री अवतार गीता प्रथम खंडे माधैादास विरचितं सालिग-राम चरित्रे शिव जलंधर संग्राम वर्णनो नाम षष्टमोऽध्याय श्री कृष्णाराधाय नमः ॥

Subject—मंगला चरण व कवि परिचय पृ० १ से ६ तक—

ब्रह्म व जीव का वर्णन अद्वैत वाद के रूप में-पृ० ६ से १२

जीव गति व भगवद्भजन से मोक्ष उपाय व नरकादि का वर्णन पृ० १३—१६

भगवान के चैाबीस अवतारों का वर्णन पृ० १६ से २२ तक

शालिगराम चरित्र व केशव भंग वर्णन, वृंदा की कथा पृ० २२ से २५ तक

देव व दानव युद्ध वर्णन व शक का जलंधर से हारना, रुद्र व जलंधर का युद्ध वर्णन—पृ० २६ से ३७ तक

विष्णु का देवताओं की रक्षा करना व वृंदा को वरदान देना। वृंदा का श्राप देना—पृ० ३७ से ४० तक इति

No. 255. Kavitta by Mādhava Prasāda of Teḍā (Unāo). Substance—Foolscap paper. Leaves—2. Size—7 × 4¾ inches. Lines per page—32. Extent—32 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgari. Place of deposit—Paṇḍita Vāṇibhūshaṇaji, Rāe Bareli.

Beginning—माधवप्रसाद के कवित्त ॥ गनेश ॥

नाम लेत जाको काम पूरन सकल होत गोत जुरैं सिद्धिन के टरत न टारे ते।
सिंधु को तरंगन सी बुद्धि की तरंगै उठैं सुख को समूह खड़े सदन सिहारे ते॥
माधव कहत महामंगल में राखैं सदा पारबती नंदन को बानि यहै वारे ते।
दहत कलेस लेस रहत न दारिद को मदन कदन सुत वदन निहारे ते॥ १
प्रथम मनावै जाको चार वेद गावैं ताको तीनि लोक ताको है पताको जस वेष को।
कल्पतरु कामधेनु कामना बिहारिन को बालक उमा को सुखदायक महेश को॥
चारु चंद भाल सोहै चन्दन विशाल माधो सरवस दायक सहायक सुरेस को।
बर बरदाता विद्या बुद्धि को विधाता शोभा सिद्धि को सदन सद वदन गनेश को॥२
सिद्धि निद्धि दानो चारि वेदन बखानो तुही शंभु ठकुरानी गहे कठिन कृपानो है।
जोहै निराधार ताके तैं ही है अधार एक मही में उदार तोसी दूसरो न जानो है॥
काली कमला तू माधो बानी विमला है सोस तारापति तारा तैं ही सारदा सयानो है।
दादि सुनि लीजे मोसों नेन करि दीजे सुनि पावक पसीजे तूही आदि महरानी है॥ ३

End—भजय भनोखे भनियारे बड़े बांके नए नीके नोकदार कर कहर करेरे हैं। पै न बादशाह के सिपाही सुर बीर दोऊ सामना परे ते किए घायल घनेरे हैं॥ माधो मखबूल खूबसूरत सकलदार देखि नटनन्द मजचंद भए चेरे हैं। कलमा कतल कर पढ़ जाहिल जहूर भए माहिल मजेदार माह नैन तेरे हैं॥ ७ रसके उकाेबे प नुकीले नैन तेरे बीर तीखे बिन अंजन हैं गंजन सरोज के। मीन मनमोचन सकोचन की सोम माने सहज सिकारी मारी खंजन की फौज के। माधो मनमोहन के मोहन को मोहनी प कुटुंब कुरंग पै लेवैया मनोरोज के। औाज से भरे हैं दोऊ मोज के करनवारे नायब हैं नेह के मुसाहिब मनोज के॥ ८

Subject—गणेश वर्णन के २ छंद
शक्ति के २ छंद
बसंत के २ ,,
माह नैन के २ ,,

Note—माधवप्रसाद—जाति के ब्राह्मण सुवंस के वंशज, टेढ़ा जिला उन्नाव के निवासी थे। मनसाराम, संगमलाल, शंभुनाथ और माधवप्रसाद सुवंश शुक्ल के वंशज थे। सुवंश और शंभुनाथ का कविता-काल ज्ञात हो चुका है परन्तु मनसाराम, संगमलाल और माधव प्रसाद का कविता-काल मालूम नहीं हुआ। माधवप्रसाद के केवल ८ छंद प्राप्त हुए।

No. 256. Devīcharita Saroja by Mādhava Siṁha Kachhavāhā, Rājā of Ameṭhī. Substance—Foreign paper. Leaves—64. Size—12×6 inches. Lines per page—48. Extent—1,920 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṁvat 1918 or A.D. 1861. Date of Manuscript—Saṁvat 1934 or A.D. 1877. Place of deposit—Ṭhākura Digvijaya Siṁha, Tālukedāra, Village Dikaulia, Post Office Biswā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ देवी चरित्र सरोज लिख्यते॥ श्री गणेशायनमः॥ मूल कवित्त॥ कंजन ज्यों विरचे सुवास के बरन औ विचित्र चित्त राचे गनेस भाव भारे की॥ रसना रसिक छितपाल हिये भूषन अनूपरूप वस्तु भापे प्रकृति विचारे की। सकलि सुसंग अंग लछना हमेस धुनि इच्छिति सुमन रीति पूरे प्रीति वारे की। चाहैं ठौक ठाठन ठिकाने वारो ठौर ताहि आठैा भुजा चाहैं छाहैं चार भुजावारे की॥ कवि मंगला चरन करे है। सो मंगला चरन तीनि रीति को एक नमस्कारात्मक। (२) आशीर्वादात्मक तीसरो वस्तु निर्देसात्मक॥ सो वस्तु निर्देस्त्मक कवि मंगलाचरन करै है॥ श्री गणेश जू को

कै कंज जोहै सुगंधत दवतदास के हृदय में वरन जो है प्रक्षर सो खिचे हैं ॥ प्रर्थालंकारनुप्रास प्रौ परमार्थजुक्त प्रौ विचित्र जे गन हैं ते चित में राचे हैं ॥ प्रर्थ मगनादिक प्रठ भारे भाल को रास विभावादिक राचे हैं

End—छप्पै ॥ भूप जाय निज गेह नेह जुत वीर बुलाये । सबकर कर सनमान देश पुन सुवस वसाये ॥ शत्रु प्रत्र धर जीति मीत प्रति पोषन कीने ॥ जो जेहि लायक देश भेष तिनके तस चीने ॥ पाले पवित्र बहु पुत्र पुन प्रंतकाल सुरपुर गयो यह चरित देववारो विमल प्रघ सलोकन लोकन भयो ॥ कवित ॥ वसु लिखि ब्रह्म प्रह रद गनेश साल जेठ सुदी दशमी छितिज वार जान कर ॥ पुरुष पुरान युक्ति जुक्ति के समेत रच्यौ देवी कैा चरित्र पुरभुर भक्ति मांगवर ॥ कछ कुल कमल प्रमेठी राजथान प्राय काशी में प्रकाश कीनो चीनो महादेव धर ॥ माधो सिंह महीपाल धाल प्रंबिका को सुष माल मान चाल भूर भजन प्रभाव वर ॥ सोरठा ॥ विगरो यामें होय जो कविताई सो सुकवि दोष न एको जोय प्रपनो जानि सुधारियो । इति श्री कच्छ कुल कमल कलश माधो सिंह महीप विरचिते देवी चरित सरोजे देवी महात्मे मेधरिषि सुरथ नरेश समाधि वैश्य संवाद प्रभय वरदान प्रवहि सोपाय राजा वणिक ग्रहे गमननो नामः प्रसंग संपूर्ण शुभ संवत ॥ १८३४ शाके १७९९

Subject—इस पुस्तक में प्रथम देवी की महिमा पुनः श्रंगार नख सिख वर्णन कर माहात्म कथा, सुरथ वैश्य संवाद विस्तार सहित वर्णन की गई है ।

No. 257. Ekādaśī Vrata Kathā by Mādhava Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—11. Size—8 × 5 inches. Lines per page—18. Extent—87 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Delapidated. Character—Kāithi and Nāgarī. Date of Manuscript—Saṁvat 1907 or A.D. 1850. Place of deposit—Paṇḍita Sudarśana Pāṭhaka, Purā Gaṅgādhara, Village Ṭikariā, Post Office Gorigañj (Sultānpur).

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री गुरुवेनमोनमः श्री हनुमते नमस्ते ॥ रामसोरठा राम । देहे मोहि वरदान गौरी सुत भव भय हरन । माधो मति प्रज्ञान एकादशी वरनन करैं ॥ दोहा ॥ पुनि बंदैा त्रिपुरारि पद ससि सेषर विकराल । पंचानन दस बाहु जुत मोपर होहु कृपाल ॥

प्रश्न करी भगवान सों धर्मपुत्र हरषाइ ॥ एकादसी चरित कहैा मोहि समुझाई ॥

End—सुनहि जे नर प्रठ नारि जान प्रजान निदान प्रति व्रत फल दायक चारि माधव तिन कह देत है माधो दास सुजान प्रग्निहोत्र कुलमो

भयो संस्कृत मत सो ज्ञान माया प्रकटो हरी कथा ॥ इति श्रीमद् अग्निहोत्री माधवराम विरचितायां एकादसी व्रत कथा समाप्तं शुभमस्तु ॥ दोहा ॥ सुकुल पक्ष वैसाख को षष्टी तिथि गुरुवार एकादसी उत्तम कथा पूरन भै सुखसार संवत १९०७ साके १७७२ सन १२५७ की साल मा

Subject—एकादशी व्रत की कथा।

No. 258. Madhō Rāma kī Kuṇḍalī by Madhō Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—90. Size—8½ × 5½ inches. Lines per page—28. Extent—1,260 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nagari. Date of Composition—1880 Saṁvat or A.D. 1823. Place of deposit—Lālā Tulasī Rāmajī Srivāstava, Rae Barelī.

Beginning—श्री गनेसायनमः श्री सरसुतेनमः श्री परमगुरुनेनमः यथा लिख्यते माधौ राम कुंडली।

सोरठा—करौ गजानन ध्यान जा महिमा जग अगमगो। होत बुध्य बल ग्यान संपत सहिति सरीर सुष १।

दोहा—जाके सुमिरे होत है निर्गुन तै गुनमान
ऐसे कृष गजबदन को करौ नित्य ही ध्यान २
है गनेस दायक अधिक देव गुढमति मोर
दया करौ चित लायकै हेरो मेरी वोर ३
घन गिरज सिवनंद तुम जिहि पूजत सुरसंत
होत कामना सिध्य है वेद पुरान भनंत ४
माधौ गनपत ध्याइ कै ल्यावो मन चित सुध्य
वै सब कारज करन है देन हार बल बुध्य ५
हैा अबूझ बूझो नहीं तुम लग मेरी दोर
गन नाइक वर देन कैा कलमै हो सिर मैार ६

End—सांगीत—भज रघुनंदन सहित जनक तन अलप निरंजन है भव भंजन जन हित कारन देह धरी जिन अधम उधारन पतितन पावन नाथ अनाथ न स्वामी त्रभुवन संकर के मन वसत निसैा दिन लंका दाहन असुर मथारन हरन भार महि सुरन उधारन कीन्ह महारन रावन सो तिन त्रिय गैातम तारन विपत बिदारन कालो नाथन कंस निकंदन संतन के प्रिय हेन भयैा क्रिम दीनन चंद गरीब निवाजनि निरधन के धन रूप बिनासन ते सुमरे तन जात पाप छिन माधौ तन सुप जपत गजानन कहत वेद गुन सेस सहस फन सुफल न जीवन हर के

भजन बिन। प्रभावती भजले मन राम नाम रघुपत रघुराई। दीन के दयाल ग्रैसे गनका गत पाई। रैदास सदन सैारी कुल कौन कुछ बडाई। सुमरे ते राम नाम कीरत जग छाई बानासुर रावन कंस कीन्ही ग्ररुलाई ग्रंतकाल तिनहु सायोज्य मुक्त पाई। ग्रन लखुता मन माई प्रहलाद ग्रवनाई तिहि भक्ति वछल द्वारे वल ठाढे जदुराई। जिन साचो लगन माधो हर पदन सैा लगाई तिन पाई प्रभुताई हर नाम सो बडाई। १ राम राम राम

Subject—१—२ गणेश स्तुति ग्रैार चित्र

देवी " " " पार्वती जी की स्तुति गंगा स्तुति, इंद्र स्तुति ग्रैार चित्र, चंद्र स्तुति ग्रैार चित्र, जमुना स्तुति ग्रैार चित्र, तुलसी जी की स्तुति ग्रैार चित्र, महादेव की वंदना ग्रैार चित्र, महावीर-स्तुति ग्रैार चित्र, गुरु वंदना। सीताराम की स्तुति ग्रैार निर्माण संवत, सूर्य देव स्तुति ग्रैार चित्र, धर्मराज स्तुति ग्रैार चित्र, चित्र प्रयाग राज्य का ग्रैार स्तुति, चित्रगुप्त की स्तुति ग्रैार चित्र, ब्रह्मा जी का चित्र, नर्मदा स्तुति ग्रैार चित्र, ग्रयोध्या की स्तुति ग्रैार चित्र, मथुरा जी की स्तुति ग्रैार चित्र, द्वारका जी की स्तुति, काशी जी की वंदना, जगन्नाथ की वंदना, शेष जी की वंदना, चित्रकूट की वंदना, काल्पी की वंदना ग्रैार कवि का ग्रपना निवास स्थान का परिचय, विष्णु की वंदना, राम लक्ष्मण का विश्वामित्र के साथ वर्णन, मत्स्य ग्रवतार का चित्र, कच्छप ग्रवतार का वर्णन, शूकर ग्रवतार का वर्णन, हिरण्यकश्यप ग्रैार प्रहलाद का वर्णन, बलि बावन का वर्णन, परसुराम का वर्णन ग्रैार चित्र, रावण ग्रैार राम का वर्णन, जैन ग्रवतार का वर्णन, श्री कृष्ण ग्रवतार का वर्णन, निष्कलंक ग्रवतार का वर्णन, तीर्थों की महिमा वर्णन, राम कृष्ण के ग्रवतारों की महिमा, मथुरा जी की वंदना, ग्रंत में राम में भक्ति रखने के लिए ग्राग्रह ग्रैार राम भजन की महिमा का वर्णन।

Note—निर्माण संवत ग्रैार निर्माण कारण।

No. 259—Hari Rādhā Vilāsa by Māna. Substance—Country-made paper. Leaves—42. Size—7 × 6 inches. Lines per page—11. Extent—210 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—1822 Saṃvat or 1765 A.D. Place of deposit—Ṭhākura Yadunātha Bābū Siṃhaji, Hariharapura, Post Office Chirwaliā, District Bahraich.

Beginning—नमो लसति पुरी ग्रति चारु। दिन दिन सुख के सदन को ग्रनत मनो दुवारु॥ ५ ता हरि हरपुर नगर को कुसल सिंह भो भूप। जा सुत

संपति से सुचित कीनो राज अनूप ॥ श्री कुसलेस नरेस के प्रगट भये सुत चारि। चारयो मैयन की अगति जग जाहिर तरवारि ॥ छंद हरिगोत-कुसलेस के सुत चारि देह धरे मनो फल चारि हैं। सब जोतबे कों जगतु नर रूपो किधों तरवारि है। वे राम लछिन पुनि भरत सत्रुघन चारों औतरे। कै चरन चारयों धरम के नर बरन के मिस उदगरे ॥८

End—हरि राधा के भेद को को कवि पावै पार। सकल जगत के तरन को भयो आइ अवतार ॥ रूपसिंह महिपाल के जय कारन कवि मान। सो कीनो ग्रन्थ यह लखि जानि है सुजान। इति श्री हरिराधा विलास ग्रंथ संपूरनं भवतु मितो सावन सुदी सतमी ७ गुरौ संवत् १८२२ ॥

Subject—राजवंश वर्णन—२-५ पृष्ठ

सभा का राधिका वर्णन कृष्ण से व्रज में गोपियों का वर्णन ६-१२

गोसाइन का वर्णन, राधिका का भेष बदल कर जाना कृष्ण मिलन और लौट कर सब के साथ जाना तथा संयोग होना, १३-१८

रहस लीला करना, मथुरा गमन व्रज में ऊधो को भेजना ऊधो व गोपी संवाद व उनका लौटना १९-२९

व्रजवासियों का कुरुक्षेत्र जाना और कृष्ण का सपरिषद् वहां आकर उनसे मिलना सत्यभामा राधा संवाद और सबका लौटना—३०—४२ इति।

Note—मान कवि हरिहरपुर (बहराइच) नरेश रूपसिंह रैकुवार क्षत्री के आश्रित थे यह जाति के ब्राह्मण थे और बैसवारे के रहने वाले थे सं० १८२२ में वर्त्तमान थे, मिश्रबंधु विनोद में इनका लिखा एक कृष्ण कल्लोल नामक ग्रन्थ बताया गया है। जिसका दूसरा नाम कृष्ण खन्ड भाषा है।

No. 260. Vartamāna Chaubīsī Pāṭha by Manraṅgalāla of Kanauja. Substance—Country-made paper. Leaves—201. Size—$9\frac{1}{2} \times 6$ inches. Lines per page—11. Extent—2,311 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of composition—Samvat 1887 or A.D. 1830. Date of Manuscript—Saṃvat 1959 or A.D. 1902. Place of deposit—Śrī Jaina Maṇḍira (Baḍā), Bārābaṅkī (Oudh).

Beginning—ॐ नमः सिद्धेभ्यः। अथ वर्तमान चतुर्विंशति जिन पूजा लिख्यते ॥ दोहा ॥ परम लखत सब जगत के, रखवारे रिषि नाथ। नाभि नंदन पद पदम छबि, तिन्हैं नवाऊं माथ ॥ १ ॥ सिद्धारथ कुल गगन के, पूरन निर्मल

चंद। असला प्राची दिग्गन में, सूरज तिमिर निकंद ॥ २ अकलंकित अंकित चरम, भरम भजावन हार। परम शेष बाईस जिन, नमहुं करम क्षय कार ॥ ३ ॥ तुमसे तुमही जगत में, उपमा काको देउं। ज्ञान कला दीजे तनिक, पद पूजन करि लेउं ॥ ४ वर्तमान प चौबीस सो करुणालय जिन देव। तिनको पूजन करत हो रहत न भव की ठेव। ५ तुम जैन पाल तुम जैन ईस। तुम जैन पती विसुवाहि चीस। तुम जयन पूज्य तुम जयन अंग। तुम जैनात्मा जीतो अनंग। ६ तुम पक्ष जीत तुम जीत काम। तुम जीत लोभ आनंद धाम। तुम रागजित तुमजीत द्वेष। जित शत्रुनाथ निर ग्रंथ भेष ॥ ७ ॥

End—इंद्र थके गणधर थके अरु भुजगेस थकंत। जस बरनत जिन वरतनो नर किम पार लहंत ॥ १८ ॥ सो मैं मंद धिया कछु पिंगल को अधिकार। ना जानों जिन भक्ति बस कीन्हों यह निरधार ॥ १९ ॥ भूल कहीं अक्षर अमिल अर्थ अनर्थ जो कोय। ताहि सुधारो चतुर जन तुम उपगारी होय। २० ॥ नाक विना बुधिना चतुर ना व्याकरण पढ़ंत। अलप मती मुझ जानिके क्षमो सकल मतिमंत ॥ २१ ॥

× × × ×

विषम खल सम होय शत्रु मित्रता विचारै। सुत अरथी सुत लहै निरधनी भरै भँडारै ॥ २२ ॥ रोगी होय अरोग्य सोग को भूमि विदारै। नीच कुली कुल लहै कुरुपी रुप सम्हारै ॥ २३ ॥ मन बच काय जो यह पाठ पढ़ै सुणावै सुनै नित। मनरंग लाल ता पुरुष कों देखि इन्द्र होवै चकित ॥ २४ ॥

× × × ×

इति श्री वर्तमान चतुर्विंशति जिन पूजन संपूर्णम्। लिखतं रामदयाल श्रावग पल्लीवार कन्नौज मिती अगसर सुदी ५ सम्वत् १९५९ ॥ लिखयित लाल लखपत राय के पुत्र कनहीलाल जैनी अगरवाल बारहबंकी नवाबगंज ॥

Subject—(१) पृ० १ से पृ० १० तक—समुच्चय पूजा तथा प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ पूज्य का विधान तथा मंत्रादि वर्णन।

(२) पृ० ११ से पृ० १८ तक—अजितनाथ द्वितीय तीर्थंकर की पूजा।

(३) पृ० १९ से पृष्ठ ६४ तक—संभवनाथ अभिनन्दन नाथ, सुमतिनाथ, पद्म-प्रभु पूजा तथा चन्द्रप्रभु पूजा वर्णन।

(४) पृ० ६५ से १०० तक—पुष्पदंत पूजा, शीतलनाथ पूजा, श्रेयांशनाथ पूजा, वासु पूज्य पूजा।

(५) पृ० १०१ से पृ० १५० तक—विमलनाथ पूजा, अनंतनाथ पूजा, धर्मनाथ पूजा, कंथनाथ पूजा, अरहनाथ पूजा, तथा मल्लिनाथ पूजा।

(६) पृ० १५१ से पृ० १९२ तक—मुनि सुव्रतनाथ पूजा, नामिनाथ पूजा, नेमिनाथ पूजा, तथा पार्श्वनाथ पूजा।

(७) पृ० १९३ से पृ० २०१ तक—महावीर स्वामी, अंतिम तीर्थंकर की पूजा का वर्णन।

ग्रंथकार का परिचय—अंतरवेद माहशुभ देश। सुवस बसै अति आनंद भेस। तामें कनवज नगर विख्यात। तामें बसें लोग बहु ज्ञात ॥ १ ॥

सो जानों सुभ थान हमार। तहाँ श्रावगी पल्लीवार। बसै इक्ष्वाक वंशतिन तना। कासिव गोत्र महा सोहना। २ ॥ मिरागक्ष धारी सब लोग। बलात्कार गन को संजोग। मूलसंघ धारी गुणवास। दिन अंबर धारी के दास ॥ ३ ॥

× × × ×

तेहि ठाँव बसत हुलासो राय। अगरैया गोत्री सुखदाय। श्रद्ध गोत्र आनौं यह लोय। कासिव गोत्र ठेठ को होय। नंदन जुगल भये तिन तने। अग्रज लाल कनौजी भने। अनुज नाम गोविंद परसाद। निशदिन करत रहत अहलाद। तीन कनौजीलाल के नाम देवकी नारि। दया मई मूरति मनों विधना करो विचार। ता कुक्षा में उपजे तीन। पुत्र सदा जिन पद लवलीन। प्रथम पुत्र मनरंग कहाय। दूसर नाम केसरी पाय। आनंद घन तीसर कह कहै। निशदिन जैन परायन रहै। इन बहुत मों मनरंगलाल। ज्येष्ठ पढ़े भाषा की चाल।

पाठ के बनाने का हेतु—

अब सुनहु पाठ को बनवन हेतु। तेहि नगर माँहि आनंद समेत। एक बसत सेठ खुशाल चंद। गोपालदास तिनके सुतय ॥ × × × ×

तिन हम सों कही बात बुझाय। कीजे कछु जाकर पाप जाय। सुनकर तिनकी बानी रसाल। चित धारि बहुत आनंद जाल। जिन वर्तमान चौबीस सार। तिन पायन को पूजा विचार। कीन्हो मैं नाना छन्दन ल्याय। आनंद सहित गुण गाय गाय।

निर्माण काल :—

संवत विक्रम राय को एक सहस सत आठ। और सतासी अधिक में पूरन भो यह पाठ ॥ मगसिर महिना चंद्रपक्ष तिथि दसमी गुरुवार। पढ़ौ पढ़ावौ अविकल जो पावैं भवपार ॥ इति।

Note—ग्रंथकर्त्ता कन्नौज निवासी मनरंग लाल कश्यप गोत्रीय, अगरैया वैश्य लाला कन्नौजी लाल का पुत्र था।

No. 261. Bahulā Vyāghra Samvāda by Māna (Simha) of Pawāra. Substance—Country-made paper. Leaves—19. Size—$8\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—16. Extent—288 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1835 or A.D. 1778. Place of deposit—Paṇḍita Rām avatāra, Village Nogahān, Post Office Shahmau (Rae Bareli).

Beginning—पृष्ठ १३ से प्रारम्भ।

बहु विधि गोपिन्ह सषिन्ह सिषावा, बहुला हृदै बोघ नहिं पावा। गोपो सषो भेंटि तब गाइ। बार बार उन वक्ष लगाइ। चलो धेनु तब व्याघ्र समोपा देषत सब पुर दुषित महोपा। गोपन्ह गहे वक्ष दष पाइ। गिर गिरि परत बिकल भकदाइ। बहुला हुंकरि हेकरि तब हेरै। सहत सोक भति सत्य न फेरै। छंद ॥ छिति वहन भगिनि भकास मारुत सुरन्ह नावत माथ है। मम पुत्र रक्षहु सकल दिग्पति जानि निपटि भनाथ है॥ कैस बैठ चिंता करहु भक्षहु व्याघ्र ते बहुलै कहा। यह देषि भद्भुत भतुल मृगपति परम चकित होइ रहा॥ दोहा॥ सत्य कीन्ह तुम्ह सरत देह प्रान भय त्यागि। धन्य धन्य धरमात्मा व्याघ्र बदत भनुरागि। यह भपुर्व कैातुक तुम्ह कीन्हा। भयउ कृतारथ मै तोहि चीन्हा। धन्य भूमि सो राज्य भवानो। सत्यवादिनी जह कल्यानी।

End—भीषम यह इतिहास सुनावा। भूप युधिष्ठिर सुनि सुष पावा। बारहि बार पितामह बंदे। मिटे नाथ मम पातक मंदे। पावन परम कहेहु भस पाइ। जासु कहे बिनु सुष संदेह। मान सिंह कवि द्विज भमिलाषा। देषि संस्कृत कीन्हे भाषा॥ दोहा॥ कान्ह बंस कवि सिंह है नगर पवारे वास। श्री छिति-पति भूप कुल भादिनाथ के दास। इति श्री भविष्योत्तर पुराने बहुला व्याघ्र संवादे इतिहास कथने सिंह विरचित भाषानुबंध सुभमस्तु॥ संवत॥ १८३५ भाद्र मासे सिते पक्षे दुतिया रवि वासरे॥ लिषिते रूप विप्रेन कास्ये ग्राम वासिनः पर्गेना कठवारख्य भष्ट ग्रामस्य माजरा। दक्षिणे सोभिते दुर्गे उत्तरे तु जला-श्रितः॥ १॥ राम राम राम राम राम राम राम राम राम।

Subject—गोपियों की सखियों का समझाना, धेनु का व्याघ्र के पास जाना भैार सबों का दुखित होना। बहुला का सत्य पर दृढ़ रहना भैार बिनती कर व्याघ्र से क्षमा मांगना। व्याघ्र का भपना मुनि श्राप वर्णन, धेनु क्षीर महिमा व्याघ्र का गंधर्व रूप होना भैार परिक्रमा करके भपने लोक में चले जाना। बहुला का भपने घर जाना। भीष्म का बहुला गुण वर्णन, युधिष्ठिर का भीष्म से सत्य धर्म पूछना, गणेश चैाथ पूजन विधि, कवि की गणेश स्तुति, बहुला स्तुति।

गो सिंह सम्वाद पढ़ने से संतान वृद्धि निरोग्यता ग्रोर धन धान्य की वृद्धि का होना । क्षेत्र में पढ़ने से ध्यान सिद्धि, गोष्टो में पढ़ने से गो ग्रोर दुग्ध की वृद्धि, गृह में पढ़ने से बालक की वृद्धि, युधिष्ठिर का भीष्म की वंदना करना ग्रोर कवि परिचय ।

No. 262. Śriṅgāra Latikā by Māna Siṁha (Dvija Deva) of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—102. Size—6 × 4 inches. Lines per page—28. Extent—3,570 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rajā Lālatā Baksha Siṁhaji Tālukedāra, Nilagāon, Post Office Nilagāon, District Sitāpur.

Beginning—श्री गणेशायनमः वसंत ग्रागम वर्नन ॥ ग्राजु सुष सोवत सलोनो सजो सेज पै ग्रशोक निसि बाकी रही पीछले पहर की । भड़कन लागो पैान दछिन ग्रलछ चारु चांदनी चहुंघा फिरि ग्राई निसि करकी । दिज देवकी सों मोहिने कहू न जानि परो पलट गई धैां कबै सुषमा नगर की ॥ ग्रोर मैन गति जति रैनि की सु ग्रोरै भई रति मति ग्रोरै भई नरकी ॥ ग्रवतरन प्रथम जाग्रति ग्ररु स्वप्न की संधि मैं जो भयो हाल है ताहि कहि वसंत के प्रथम ग्रागम मैं कछु कछु ललित भये पैान ग्ररु चांदनी तथा कछु कछु बाढ़े मनो विकार को कहै है ॥ टीका ग्राजु सुष ॥ पद १ ॥ ग्राजु सलोनो कहै ग्राछो साजो जो सेज है तापै सोवत पीछले पहर की एक घरी निसि बाकी रहि गई तो ॥ पद २ ॥ ताही समय दछिन को जो पैान है सो ग्रलछ ह्वै भड़कन लागो कहै डोलिवे लागो तुरंत ही वसंत को ग्रागम है ताते ग्रलछ कह्यो तैसेई निसि कर कहै । चंद की चांदनी पिलि गई सोवन समैं कछु नाहि जानि परत हतो ॥ पै न जानि परो कि कब कैान सी घरी का समैं मैं नगर को सुषमा कहां परम सोभा लुटि गई । रैनि को जाति कहै डोर कछु ग्रोरै ह्वै गयो ग्ररु मैन की कहैं काम की गति ह्व कछु ग्रोरै ह्वै गई ॥

End—चित चाहि ग्रबूझ कहै कितने छवि छीनी गयंदन की टटकी । कवि केते कहैं निज बुद्धि उदै यहि सोषी मरालन की मटकी । द्विज देव जी ऐसे कुतर्कन मै सब की मति योंही फिरै भटकी । वह मंद चलै किन भोरी भटू मग लाषन की ग्रंषियां ग्रटकी ॥ (टीका) ग्रव चलिबो वरनै है ॥ टीका ॥ चित चाहि ॥ १ पद वाकी मंद गति देषि कितने ग्रबूझ कहै हैं । कि यहि गयंदनि की कहै है हाथिन की छबि छीनि लीन्हो है ॥ २ पद ग्ररु केते कवि ग्रापनी बुद्धि के उदै सों कहै हैं कि यह मरालन का कहै हैं हंसन की सोषो है ग्रर्थ मरालन की गति यहि सोषी है ॥ ३ पद ॥ ऐसेई कुतरकन मैं सिगरे कविन

को मति योंही भटको फिरे हैं ॥ जो कहो इनकी गति नाहि ओपो तो यति ललित मंदताई याको गति मों कहां सो आई। तापै कहै है यह भट्ट मंद कैसे नाहि चलै वाके पगन मै तो लाखन को यांधें भटको हैं। यापिन के भार सों वाके पग मंद उठेई चहैं। यासो व्यंजित भयो कि वैसो जग मैं कौन है जो राधा जू के चरन को ध्यान मैं नाहि देयो करै है ॥

Subject—इस पुस्तक मे कवि द्विजदेव की कविता श्रृंगार रस टीका की गई है इसमें वसंत आदि ऋतुत्रों का वर्णन है श्रृंगार रस वर्णन है।

No. 263—Śālihotra, by Māna Siṁha. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—10½ × 5 inches. Lines per page—10. Extent—180 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1905 or A.D. 1848. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Siṁha, Kanṭha (Unao).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भाषा शालिहोत्र संग्रह लिख्यते ॥ चो० ॥ हर्र बहेरा आवरो आनै। जेठी मधु फिर वैद बखानै। दुइ दुइ पैसा भर सब लीजै कुटि पीटि कपर्से सब कीजै ॥ वासो पानी दीजै सानि। सात रैाज लों कही बखानि ॥ दोहा ॥ इतनो इतनो दीजिये सात रोज लैां प्रात। तुरतै लोहू मूतिबो मिटै कही मुनि बात ॥ अन्य चैापाई ॥ हरड़ इंद्रैारिन पीपर लीजै। दुइ दुइ पैसा भर इक कीजै। कूटि पीटि पानी मै सानै। देहि भोर उठि वैद बखानै ॥

End—ब्रह्म विष्णु शिव आदि दै जितने इह्य शरीर। नासहि को धावत सबै ज्यों बड़वानल नीर ॥ जित छै जैहै वासना तित ह्वैहै मन लीन। जग कहो कैसे करै जीव बापुरो दीन। मुक्ति पुरी दरबार के चार चतुर प्रतिहार। साधन को सत्संग अरु सम संतोष विचार। जब तब काछुह तुम रच्यैा कज्जल कलित अपार तामह पैठि जु नीसरै अकलंकित सो साथ ॥ भूलि गयो रूप निज विधि तन सैां गयो। लोभ मद काम वस मोह जब ही भयो ॥

Subject—लोहू मूतने की दवा, कांवरि की दवा, खांतिका इलाज, अप चिकित्सा, सकरोट, मसाने की दवा, वेली, रसवेलि और कुछ बढ्ढो की दवा। पृ० १—६ तक

निरोध की दवा, पेट फूलने की दवा, कुरकुरी, चांदनी, वमनी व मृगी, विद्रधि, बदअम भरे की दवा, थने की दवा, गिरे की दवा, पृ० ७—१२

तेज करने की दवा, जोग्गी खेल गेाािगरे की दवा, बरसात की दवा, मसा की, फूली की दवा, बतासा चूर्ण अन्त मे फुटकर कविता पृ० १३—१८

No. 264—Śikhara Māhātmya by Mana Sudhāsāgara. Substance—Country-made paper. Leaves—285. Size—11½ × 7½ inches. Lines per page—13. Extent—3,705 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—1914 Saṁvat or 1857 A.D. Place of deposit—Śrī Jaina Mandira (Baḍā), Bārābankī (Oudh).

Beginning—श्रों नमः सिद्धं ॥ श्री वीतराग जी सदा सहाय। अथ शिषर महातम ग्रंथ लिष्यते मनसा सागर कृत ॥ छप्पै छन्द ॥

श्री संसेवित चरण कमल जुग सब सुष लायक। श्री शिवलोक विलोक ज्ञानमय होत सुनायक ॥ अनमित सुष उद्योत कर्म वैरी घन घायक। ज्ञान भाग प्रकास जासु पद सब सुष दायक ॥ ऐसे महंत अरि हंत जिन सेवहु निसदिन भाव सौं। पावै प्रमान अविचल सदन वीतराग गुण चाव सौं ॥ १ ॥ दोहरा-अर्हंत प्रभु को सुमिर कें, सिद्ध चरण चित लाय। अष्ट कर्म मल त्यागि कें, अष्ट महा गुण पाय ॥ २ ॥ सवैया—ज्ञानावर्नी कर्म के गये ते सब ज्ञान होत दर्सना वरणि गये घट द्रव्य पेषिये। वेदनी के नासै निरावाध गुण होत सार मोहनी के नासै सुद्ध चारित्र विसेषिये ॥ आयु कर्म नासै आवागाहन सुथिर होय नामक कर्म नासै ते आमूरतीक देखिये। गोतकर्म नासे तें अगुर लघु गुन होत अंतराय नासैते अनंत विर्ज लेषिये ॥ ३ ॥ दोहरा—पंचाचार किया धरै गुण पट तीस प्रमान। सो आचारज नम्रन तै, पावै पद निरवान ॥ ४ ॥

End—सवैया—एक जिन राज शिव थान मन वच काय भाव सेती वंदै तेई सिव पद लहै है। सिषिर सुमेर सीस जिन सिव पद लह्यो और हु असंख्य मुनि सुष्वभाव गहे हैं। ऐसा क्षेत्र नरक तिर्यंचगति कौन नासै जाइ तेई जीव जे अचल पद जहे हैं। तातै इह जानि भव्य चित में विचारि अब सिषिर कौं वंद्य निज भव सुधार लीजे हैं। दोहरा। सिषिर महागिरि वंदियै जब लौं घट में प्रान। नर भव को इहलाह है जानि सुधी मण आनि। सिषिर महातम चरित वर पूरन भयो रसाल। हिरदै हरप बहु धारि कें लिष्यो सु मुन्नूलाल ॥ एक सहस नव सतक में चौदह अधिक प्रमान। ज्येष्ठ शुक्ल तेरसि सुदिन शुक्रवार शुभ जान। अपने पढ़ने अर्थ कों सिषिर महातम ग्रंथ। पढ़त सुनत आनंद बढ़ै सुष पावै अति संथ। श्लोकन गिनतो अनै मैं लिषियो यह जान। तीन सहस अरु एक सत बत्तिस अधिक प्रमान ॥ इति श्री काष्ठासंघे लोह आर्य विरचिते सिषिर महातम ग्रंथ मन शुद्ध सागरेना भाषा वर्णनं संध्यायः ॥ शिषिर महातम ग्रंथ समाप्तं ॥ लिषितं मुन्नूलाल श्रावक सोहनलाल पौत्र सुदयालचंद तस्य पुत्र, मुन्नूलाल

आपने पढ़न अर्थं लिखितं ॥ गजाधर लाल बेनाहरे वाले इन्द्रजीत के बेटे तिनकी पोथी पर देखि के लिखा। मनसा—सागर कृत ॥ श्री वीतराग जी सदा सहाय ॥

Subject—प्रथम पीठिकाधिकार मंगलाचरण, जिनादि वन्दनाएं, आग्रह के पट्दोषों का वर्णन, श्रेपन किया, सभा वर्णन, समोसरन वर्णन। तीर्थं माहात्म्य, कूटनाम, कुलकर नाम, स्वप्ननाम, स्वप्नफल, लौकांतिक स्तुति, प्रथम तीर्थंकर का सर्व सिद्धकूट ऊपर मोक्ष गमन। सिद्धकूट द्वितीय तीर्थंकर का मोक्ष गमन वर्णन। सिद्धकूट दत्त धवलोपरि संभव जिन मोक्ष गमन वर्णन। सिद्धकूट आनंद नामोपरि अभिनंदन जिन मोक्ष गमन वर्णन। सिद्धकूटो विचलोपरि सुमतिनाथ मोक्ष वर्णन। सिद्धकूट महनो पर पद्म प्रभु के मोक्ष प्राप्त वर्णन। सिद्धकूट प्रभासो परि सुपार्श्व-नाथ मोक्ष गमन वर्णन। सिद्धकूट ललित कुंभोपरि चंद्रप्रभ मोक्ष गमन वर्णन। सिद्धिकूट सुप्रभास पर पुष्पदंत जिन मोक्ष गमन वर्णन। सिद्धिकूट विद्युतनामो पर शीतल जिन मोक्ष गमन वर्णन। सिद्धिकूट सांकुली नामोपरि श्रेयांस नाथ जिनके मोक्ष गमन वर्णन। सिद्धिकूट मंदारयश्री परि वसुपूज्य जिन मोक्ष गमन वर्णन। सिद्धिकूट कुन भंजनोपरि विमलनाथ मोक्ष गमन वर्णन। सिद्धिकूट स्वयंभू पर अनंतनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन। सिद्धकूट दत्तवर धर्मनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन। सिद्धकूट प्रभासोपरि शांतिनाथ मोक्ष गमन वर्णन। सिद्धकूट ध्यान धरोपरि कुंथनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन। नाटक नामकूट पर अरहनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन। संवलकूट पर मल्लिनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन। मुनि सुव्रत चरित्र वर्णन। प्रभवकूट पर नेमिनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन। प्रकाश कूट पर नेमनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन। प्रभवकूट पर पार्श्वनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन। श्रीमहावीर स्वामी चरित्र वर्णन। शिखिर महागिरि की वन्दना का आदेश।

No. 265—Śṛingāra Karitta? by Maṇḍana. Substance—Foolscap paper. Leaves—8. Size—8½ × 5½ inches. Lines per page—32. Extent—192 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Kamalākāntā, Jimāso, District Rae Bareli.

Beginning—मानि सबै मनुहारि वधू मुसक्याइ हंसै अंगिया न उतारै। मंडन डोरि के छोरन हीं रिस के मिस ह्वै अंगुरी गहि डारै। लाल करै अपनो मन भायो छुरी मनकै अब हाथनि झारैं। कोकिल सी कुहकै वहकै ससकै सतराइ छुकै झिझकारै ॥ बातनि हीं कछु आजु सहेलिनु स्याम को रूप अमो-लिक आंक्यो। पैठें मैं मंडन बागो बनाइ कहू ते अटा चढ़ि आपुन झांको। उलहे सब अंग दुरावति प्यारी रहै न हियो हटक्यो अरु हांक्यो। उभै के हाथ उतै अंगि-रानि जंभाति इतै मुख चाहति डाक्यो ॥

End.—पटी मेरो कैाल को कली सी विकसति जब घुवरी बनाइ के तूं डारो सों कसति है। उघरत लसत विराजि रहै थांदो छवि मंडन जराय को फुंदो सो वहसति है। सीरो ठार जानि मेरे जान कामदेव जू को प्यारो पतो निसि जानि जाहो में वसति है। ऐसो कछु मोडो तेरो ठाडो है दहारि सी जु कबहुक पैठि दाठि नोठि निकसति है॥ जैान चंग देष्यो सो तो गढ़ि सो धरेरा है माई पैज पुरवनहार मंडन को साघ को॥ घरम घरम दीसै ऊपर को धर नीचे धर सो रच्यो है मनमथ के सराथ को॥ मंडन सुकवि तेई उपमा विचारि कहै जिनको भरोसो मति प्रगम प्रगाध को। छाती में उंचाई गरुग्राई ले ले ग्राई सब छांटि छांटि किया तेरा लांक टांक साधको। करो हो को सूंडि सो कहत घन देपे कवि एक कहै कदलि के रूपप है गोरे के। एक कहै हाथ को हथेरो को उतारि जैसो मेरे जान जानिए सुजान पन थोरे के॥ मंडन कहत है कै सरोके उमड़ि गए भोरे हैं × × × मनमथ गारे के। हैां पै कहों मेरी प्यारो तेरी जांघ देख करि सोन पंमा हैं दोऊ रति के हिंडोरे के।

Subject.—गर्विता, लज्जावती, प्रेम गर्विता, प्रेम खंडिता ग्रोर रूप गर्विता का उदाहरण। माननी मुग्धा, विरहिनी, मानिनी, ग्रोर पतिव्रता का उदाहरण। पतिव्रता का मान वर्णन, सैाभाग्यवती का वर्णन, शील वर्णन, मुख रूप वर्णन। ग्रांख ग्रोर भैांह को शोभा वर्णन, ग्रभिमान वर्णन, जोग वर्णन। मोह वर्णन, दानवीर वर्णन, कीर्ति वर्णन, दयावीर वर्णन। करुणा रस वर्णन, वीर रस वर्णन, वीभत्सरस वर्णन, रैाद्ररस वर्णन। हास्य रस वर्णन, भयानक रस वर्णन, शांति रस वर्णन। कुच वर्णन, ग्रज्ञात यैावना का वर्णन, लंक वर्णन, जंघा वर्णन।

No. 266. Baitāla Pachisī, by Maṇikaṇṭha of Āzampur. Substance—Country-made paper. Leaves—59. Size—9 × 6½ inches. Lines per page—20. Extent—1,500 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1782 or A.D. 1725. Date of Manuscript—Samvat 1894 or A.D. 1837. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhingā, Bahraich.

Beginning.—श्री गणेशायनमः॥ ग्रथ पोथी वैतालपचीसी लिख्यते॥ गैारो गिरि गनपति गिरिस गुरु पद पंकज रेनु। विनय सीस धरि होत सब कारज सिद्धि सुखेन॥ चैापैया छंद॥ है ग्राजमपुर विदित ग्राम। सुख संपति ग्रानन्द धाम॥ भूमि तिलक सम ग्रति उदार। वेद विदित बाढ़े प्रचार। जहां चारि वर्न निज धर्म धारि। रथ नेमि चलत जो पथ विचारि। जप जोग जज्ञ नित

करत दान। नित ही सुनत घर घर पुरान ॥ दोहा ॥ अगरवार के गोत सुभ तेहि पुर बसे अनेक। गर्गबंश घर एक है विदित धर्म को टेक ॥ २ धर्म धुरंधर सील जुत भए भवानी साहु। मुदित जगहि लखि हित सदा धरि उर उपजत दाह ॥ ३ ॥ तिनके सुत तहं तीन भे लहुरे निरतन लाल। रूप काम सम काम तरु दाता दीन दयाल ॥ ४

End.—दो०—साति सील के रुधिर को पिवत त्रिपित बैताल। उन दीन्हों बसु सिद्ध तब पाइ हरष भुपाल। इति श्री गर्गबंस अवतंस नीरतनलाल कृतौ बैताल पचीसी ग्रंथे पंचविसोध्याय ॥ २५ संमत १८९४ समै पौषमासे कृष्णपक्षे त्रये दसो गुरुवासरे समाप्तम ॥

दो०—पुर बढ़ावनों अतिरुचिर उदयंतसींघ अहं भूप। तहां बसत सेवक अतिथि सुख जुत परम अनूप। यह दसखत सोई लिख्यो सुमिरि राम सुख मुल। उत्तर दिसि गोमति निकट सई दखिने कूल ॥ श्रीराम इति

Subject.—कविवंश वर्णन

राजा का जोगी से मिलन राजमय और वेश्याओं का भेजना, योग भंग होना, राजा से बातचीत, विक्रम का तेलिया को मारना, योगी का कर्म

तेली की लाश का कथा कहना, पद्मावती की कथा वर्णन

मंदरावती की कथा

वीरवल की कथा

सुरसुंदरी कन्या की कथा

श्रीदत्त और जैश्री की कथा

हरिदास की कथा, रजक की कथा, त्रिभुवन सुंदरी की कथा, वीरमदेव की कथा, सोमदत्त की कथा, सुकुमारियों की कथा, वल्लभदेव की कथा, लावण्यवती की कथा, सुछोमिनी की कथा, शशिप्रभा की कथा, जीमूत वाहन की कथा, उन्मादिनी की कथा, विप्रगुनाकर की कथा, धनवती का कथा, रूपसेन राजा और विप्रकन्या की कथा, रूपमंजरी की कथा, ब्राह्मण के चार पुत्रों और विप्रनारायण की कथा, हरिदत्त की कथा, चंद्रावती की कथा।

No. 267. Chhanda Chhappani, by Mani Rāma Miśra. Substance—Country-made paper. Leaves—30. Size—8 × 5 inches. Lines per page—17. Extent—220 Anushṭup Ślokas. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1829 or A.D. 1872. Place of deposit—Rāmadeoji Brahma Bhaṭṭa, Village Nunara, Mauzā Lamhā, District Sultānpore (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ छन्द छप्पनी लिख्यते मिश्र मनोराम कृत। छन्द मालती सवैया। के परनाम कनौजुर कों गन आठ सरूप लगो लहि गाऊं।

मगन तीनि. गुरु (ऽऽऽ) लघुनगन (।।।) भगन आदि ग० ऽ।। ये लघु ०ऽऽ० लाऊं॥

जगन बीच गु० ।ऽ।० रगन ठोकहि ०ऽ।ऽ० सगन गो० ।।ऽ० लघु तगन ०ऽऽ।० पाऊं।

चारि भले मनिराम भयो मन ४ औ रस तो ४ नहिनो कवताउ॥ १॥

अथ मगनादि रूप वाम देवता फल कथनं। छन्द गंगोदक अथवा कथन्ते॥ यथा॥ तीनि गो मो धरा श्री मनोराम ला आदि यो भेवुई बुद्धि को मानिये। बीच लारो सुनै। वहि है मोच को अंत जोसो बयारी भ्रमं जानिये॥ अंत ह्वौं तो सु आकास सूने फलै मध्यगा जोरवौ रोग को दानिये॥ आदि गो भो शशी कीर्ति को देइला तीनि वोनाम आनंद को थानिये।

End.—दस पांउ सै उनतीस फागुन मास तेरस चंद कों। कहि छन्द को यह छप्पनी कवि थप्पनों आनन्द कों॥ इति श्री अंबाराना मिश्र कात्यायनी इच्छाराम तनय मनोरामवर्न कला विरचिता छन्द छप्पनी समाप्ता शुभ मस्तु॥ लिखितं दुवे शालिग्राम।

Subject.—(१) पृ० १ से पृ० ५ तक-गण भेद, गण फलाफल तथा देवता, गुरु लघु लक्षण, गुरु लघु संज्ञा छंदोभंग, दग्धाक्षर

(२) पृ० ६ से पृ० २४ तक—वर्णवृत्त वर्णन।

(३) पृ० २४ से पृ० ३० तक—मात्रावृत वर्णन।

No. 268. Śalihotra, by Mani Rāma Śukla. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—10 × 6 inches. Lines per page—44. Extent—495 Anushṭup Ślokas. Appearance old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1935 or A.D. 1878. Place of deposit—Mannū Miśra, Village Nilagāon, Post Office Nilāgaon, District Sītāpur (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः॥ अथ शालहोत्र लिख्यते॥ दो०। जै जै जै जग नयन रवि करैा कमल के बंधु। करो कद केसरी करुना मूरति सिंधु॥ १॥ विनती मैं कर जोरि कै करौं धरौं सिर नाइ। बसैा सदा मम हृदय मह वानो

होहु सहाइ । २ बिघन बिदारन बिपति के संपति के सुष दाय । मनोराम बिनती करै चरन कमल सिर नाइ । पढ़त हृदय मह ज्ञान घन सुनत होत चित मोद । मनोराम कछु करत है भाषा बाजि बिनोद । प्रथमहि तुरंग नाम उपलछन माह ॥ सवैया ॥ जेहि अस्व के बीच ललाट कै ऊपर भंवरो बराबरि जानि बहावहु । ताकहु मेड़नि सिंगो कहैं घर पावहु तो जब राज नसावहु । कोरति हानि करै कुल ध्वंस नहीं कबहू जुरि अंग धसावहु । पूछै कोऊ कबहू कवि ते मनोराम तहीं ततकाल बतावहु ॥ जा बाजी के होत है परो चरन मैं दोइ । अपने स्वामी को करै नास प्रान को सोइ ।

End.—अथ तुरंगानांगति बरनन । दोहा ॥ ताजू जंगला जानिए टांघन गौरो गुड़ । ताजू तुरंगी जानिए जंगला ताजी ऊढ़ । ताजतो टांघन कहो गुड़ जराई होइ । देसी तुगला जानिए संकर बरनो सोइ । चौ० । अचर संकर बरनो जानु । तैसा गोरो गदहा मानि । दो० । प्रथम चाल सहगाम जो तेज गाम है तुक । गाम गाम है तीसरो मड़वाल्ह अति मुक । पांचवा पंचई जानिये पर गा छठई होइ । रव को सतई कहत हैं जानत है सब कोइ ॥ जवन देस के नाम ये चालु कही ये सात । सालिहोत्र ने समुझि कै और कहत हो पात । प्रथम मयूरी नाकुश, दूजो तैतिरि तीनि । चौथो कहत कुरंग को पंचई कहत है चोनि । उष्ट्रो मेषो क्षाग को छठहो सतहो होइ । और मंडूको कहत गति यहि को जानी सोइ । गति येतो बरनन करो सालहोत्र मति पाइ । अति आदर कवि जन करें मनोराम गुन गाय । सालिहोत्रानुमते शुक्र मनोराम कृते एकादश बिनोद ११ समाप्तम् शुभमस्तु श्री संवत १९३५ शाके ॥ शाके १८०० आषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ सप्तम् शनि वासरे लिषितम् भोलानाथ पंडित ॥

Subject.—घोड़ों के भेद, उनके लक्षण और रोगों की औषधियां ।

No. 269. Saguna Pariksha, by Mani Rāma of Kāṇṭhā. Substance—Country-made paper. Leaves—124. Size—6 × 4½ inches. Lines per page—10. Extent—400 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Kaithī. Date of Composition—Samvat 1814 or A.D. 1757. Date of Manuscript—Samvat 1814 or A.D 1757. Place of deposit —Paṇḍita Yaśodānandana Tiwārī, Kāṇṭhā, District Unāo.

Beginning.—को चोर हरो धई ॥ को मरा सुत पैं । पथव भागो पनो बगरो चले जा पुरब बतो ॥ सनीचर के घरै बुधवार पावै ॥ सुभ होइ ॥ तो भलो खबर ले आवै कोई ॥ कौतन्हे के बेट होई ॥ जीव लाभु है ॥ रांगु टोपरा औ

विमरे तैानन्हे के वेट मरै ॥ को मत घरी सुनीपे। को मन्हे को फोरी घादो पावे। वांमरे तो कौउनो जारिक जुना कारो ॥ × × ×

End.—पंछो मोदास बोलई। देवान दास बोलई। १ घकाल बरब हाई। १ लमकुर न लहाई। २—लक्ष्मी कागम वतवहा। २ बरथ हनाक होइ। ३ मोस्तन भोजन लया ३ ककल बुध होइ। ४—चौत उपजावे। घसत्री मालप होइ। ने इखो कोने बोलई। घमरे वो कोने बोले। १—मोत्रा दरसन होइ १ मनुषी वागाक देखे। २ सुख संतोष होइ २ चोर घागिनि मई ३ पहुनो घावई ३ राज पूर रद होइ। ४ घरथल मवारक हइ। ४ घर घगोना मई। × ×

Subject.—ज्योतिष पर ग्रहों के संयोग से फल तथा शकुन परीक्षा।

No. 270. Saundarya Laharī, by Maniyāra Siṁha of Kāśī. Substance—Country-made paper. Leaves—46. Size—9¼ × 5 inches. Lines per page—9. Extent—466. Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1843 or A.D. 1786. Place of Deposit—Ṭhakura Naunihala Siṁha Seṅgara, Village Kāṇṭhā, District Unāo.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ श्रथ मंगलार्थं गणपतिम् प्रार्थयेत्। जोत्यैा जो त्रिपुर को स्त्रपहर हरा हरा सर्व स्वंदान वदराज को। कलो वलि वलो हलो घनुज्ञ कमल कलो पभय प्रभाव मैा विभव भव साज को ॥ सिंह मनियार महि मंडन घसेस सेस सीस धरो कह्यो सिद्धि सिद्ध मुक्ति काज को। पायो देवता नर घभीष्ट वरदान मुद मंगल विधान ध्यान गणाधिराज को ॥ १

मंगलार्थ भवानी शंकरौ वंदे—शिवे शिवजोति को उदोति को करनि होति तेरी कृपा दृष्टि सृष्टि रचना रचाय जाय। ता विनु सो सुमत्र: सुमतों रहत वातें घोर कहों होत तातें वातें न कहाय जाय। मनियार तोहि जपि प्रभो पालना प्रलय करत त्रिदेव भेव तेरो न जनाय जाय। पुन्य कोन नति मति मेरे मंद घति मंद के सके प्रनति कैसे गुन गति गाय जाय ॥ २

घथ श्री भवानीचरन रेणुका वर्णयति—तेरे पद पंकज पराग राजे राजेश्वरी वेद वंदनीय विरुदावली बढ़ी रहे। जाकों किनुकाइ पाइ धाता ने धरत्रि कियो जामैं लाक लोकनि को रचना कढ़ो रहै ॥ मनियार ताहि विष्णु सेवे सर्व पोषत सों होस है कै सदा सोस सहस मढ़ो रहै। सोई सुरासुर के सिरोमनि सदाशिव के भसम के रूप है सरीरनि बढो रहै ॥ ३

End.—घथ श्री भवानी संबोधनामे वर्णयति—निधे निधि सदने जै नित्य स्मित बदने निरवधि गुन जै नीत निर्मल निधाने हैं। निःप्रपंच निजानंद निर्भरे

निरामये जै निरज नयनिनि तिनि राधात ध्याने हैं ॥ मनियार निर्गत वचन निगमय निगमा गमामि मिवंदते निखिल सिद्धि दाने हैं । निल्ये निरात के निराकारे निर्विकल्प जैति निश्चल निशंके निष्कलंके निष्पमाने हैं । १०१

अथ श्री भवानी विनतो कृत्वा स्तुति पर्यंयति—जैसे वारि दीप दीप दीप को प्रकास कर भासकर मंडल को भारतो ठनत है । बरखे घनंद धमी बुंद चहूं चंद ताहि मंजुलि जलनि अर्थ रचना गनत हैं ॥ सिह मनियार संबरासि ते निकासि वारि वाहि धरपत निज भावना भनत हैं । तैसे जग जननी तिहारी वचनन है, तें वचन रचन को बड़ाई बरनत है ॥ १०२ ॥

अथ पुस्तकं पूर्णयति—रुद्रनैन सहित समुद्र वसु चन्द्रजुत संवत सुहात सुद्ध सर्व सुख खानी को ।

जेठ तिथि पूरन संपूरन दिनेस दिन महिमा बखानी सर्व सिद्धि फलदानी को ॥ सामसिंह सुत मनियार सिंह नाम कासी नगर निवासी विश्वनाथ राजधानी को । कामना कलपतरु फरो भरो वैभव ते ग्रंथ अवतरो श्री भवानी राज रानी को ॥१०३॥

इति श्री मनियार सिंह विरचितायां सौंदर्य लहरी टीकायां कवित्त निबंधे भाषायां संपूर्णम् ॥ शुभ मस्तु ॥ शिव भवानी दोहरा—सुंदरता लहरी भरो सकल सुखन को खानि । पढ़त सुनत तरिहैं सदा श्री विद्या वरदानि ॥ १

श्री गोविन्दाय नमो नमः ॥ इति ॥

Subject.—

गणपति वन्दना, भवानो शंकरो वंदना, भवानो चरण रेणु वर्णन, चतुर्वर्ग फल साधनार्थ भवानो वर्णन, सब देवताओं के फलार्थ चरण वंदना, मोहार्थे भवानो वंदना, कृपादृष्टि वर्णन, ध्यान वर्णन—छंद १ से ७ तक ।

मंदिर भवानी का वर्णन, सध्यक ध्यान रूपक वर्णन, कुंडली निरूपण ध्यान, चक्रोद्धारं जंत्रराज वर्णन, सौंदर्य वर्णन, कृपाकटाक्ष वर्णन, मातृका न्यास कला भेद वर्णन, सरस्वती रूप वर्णन, ललिता स्वरूपा ध्यान, कविता प्रदानार्थ ध्यान वर्णन, छंद ८ से १७ तक ।

निर्वाण, गणिका वशीकरण ध्यान, अर्धनारीश्वर, सर्पादि विष निवारणार्थ ध्यान, परमोदारता वर्णन, योग गम्य ध्यान, और प्रभाव वर्णन छंद १८—२४ तक भवानी चरण पीठ पूजा वर्णन, महा प्रलय समय में एकांतस्थली वर्णन, कर्म भक्ति भावे पूजा विधान, चरण कमल में भ्रमर रूप मन का निवेदन, भवानी अखंड सौभाग्य वर्णन, वैभव वर्णन, तंत्रराज प्रभाव कथन, मंत्र धारण कथन, भवानी शंकर एक रूप वर्णन छंद २५—३४ तक ।

जगदात्मा रूप वर्णन, आर्या चक्रे भवानी शंकर वर्णन, विशुद्ध चक्रे देह में वर्णन, अनाहत चक्र में सब देह के भीतर दोनों का ध्यान, स्वाधिष्ठान चक्र में वर्णन, मनिपुर चक्र देह में वर्णन, मूलाधारे चक्र देह में वर्णन, षट चक्र भवानी शिव नख ध्यान वर्णन। छंद ३५—४२ तक।

केश पाश वर्णन, मांग, अलकों का अग्र भाग, ललाट, भौंहें, नेत्र, और तीनों नेत्रों का वर्णन छंद ४३ से ५१ तक।

द्वैनेत्र वर्णन, फिर नेत्रों का विस्तृत वर्णन, भवानी की कृपा दृष्टि वर्णन, दृष्टि वर्णन, कर्ण भूषण वर्णन, दोनों कानों का वर्णन, नासिका और ओष्ठों का वर्णन छं० ५२—६२ तक।

दाँत वर्णन, महाप्रसाद वर्णन, वाणी चिबुक, ग्रीवा, कंठरेखा बाहु चतुष्टय, कराग्रभाग और स्तन मंडल का वर्णन, क्षीर धारा का वर्णन, त्रिवली वर्णन, रोमावलि, नाभि मंडल, कटि प्रदेश, नितंब, युगल उरु, जंघ व दोनों चरणाविंद का वर्णन, छंद ६३ से ८५ तक।

नमस्कारार्थ चरणाविंद वर्णन, पद पीठ वर्णन, चरण नख वर्णन, चरणोदक कथन, भवानी की गति वर्णन, समस्त नखशिख ध्यान वर्णन, पर्यंक वर्णन, पान पात्र वर्णन, ध्यान वर्णन, प्रभाव वर्णन, पतिव्रत वर्णन छंद ८६ से ९८ तक।

सर्वोपर तुरीय रूप वर्णन, भजन फल वर्णन, नाम संबोधन फल, स्तुति वर्णन, पुस्तक संपूर्ण रचयिता का स्थान, संवत, वंश परिचय वर्णन शिव भवानी का दोहा वर्णन छंद ९९—१०४ तक इति।

No. 271. Dharma Parīkshā, by Manōhara Dāsa Khaṇḍelawāla of Dharmapura. Substance—Country-made paper. Leaves—220. Size—$13\frac{1}{4} \times 6\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—11. Extent—3,327 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1705 or A.D. 1748. Date of Manuscript—Samvat 1870 or A.D. 1813. Place of deposit—Śrī Jaina Mandira (Baḍā), Bārābanki (Oudh).

Beginning.—ओं नमः सिद्धेभ्यः। अथ धर्म-परीक्षा भाषा मनोहरदास कृत लिख्यते ॥ सोरठा ॥ प्रणमो अरिहंत देव। गुरनि ग्रंथ दया धरम। भव दधि तारण एव ॥ अवर सकल मिथ्यात भाणि ॥ १। अरिहंत देव स्वरूप, जो नर जानि उमरा धरै ॥ सो नर मुक्ति अनूप ॥ वैर वेगि पंडित कहै ॥ २। गुरनि ग्रंथ महंत। जो नरपद पंकज नमै। सो नर करम दहंत ॥ मन वच काम संसै नहीं ॥३॥ जीव दया धर्म सार। और धर्म दुर्गति धरन। यह विन करनी छार। विविधि विषय पर सो करै ॥ ४

दोहरा ॥ देव गुरु सुधर्म वन्दिके जिन उपदेश कहंत । पढ़त सुनत उपजै सुबुधि । अनुक्रम मुकि लहंत ॥ ५ ॥ होनहार कारन मिल्यो । होरामनि उपदेश । कारन विना न भव्य जन काज न है लवलेश ॥ ६ ॥ पंच सकल प्रेरक भये जानहु मन वच काय । सत्य पुरुष भला भई श्री जिनराज सहाय । × ×

End.—ज्ञानिवंत वही कुलवंत वही सीलवंत वही वृतधारी हो वही के वचन सुमति है । वही धनधारी वही तपसी विवेक कारी वही भवतारी वही जगत को पति है ॥ वही ब्रह्मचारी वही कीरति को अधिकारी वही सत वही शुद्धमती है । वाको बराबरि न कोऊ है जगत माहि ताको उर निरमल सुभग समकित है । ५८ ॥ सकल सभा धर्म सुन्यो विचार । मन में हुष पायो अधिकार ॥ पवन वेगि सुधि करके हिया । श्रावक के वृत मन वच लिया ॥ ५९ ॥ भयो हर्ष अति अंगन माहि । कहै मनोहर मन वच काय ॥ पवन वेगि जिन मारग भयो । छांड्यो मिथ्या समकित लयो ॥ ६० ॥ मकहि लागै शुभ वचन अभव्या नहीं सुहाइ । मूगन सींभि कोउ ह सो मन काम जलाय ॥ ६१ ॥ रार सोमहू कहत हीं सो तुम कीजे याद । अंत फुरेगो माहिलो ऊपर सब बादि ॥ ६२ ॥ सोरठा ॥ वरषट उनन हजार । वांमन छांड़ि मिथ्यात्व को । भये सरावग सार मन वच काया शुद्ध करि ॥ ६२ × ×

इति श्री धर्मपरीक्षा भाषा मनोहर दास षंडेलवाल कृतं सम्पूर्ण ॥ छंद संख्या ३३०० मिती श्रावन वदी ७ संवत १८७० पोथी लिखो अवाहिर सोभाचंद के बेटे ॥

Subject.—पृ० १ से पृ० १२ तक—मंगलाचरण तथा वन्दनादि ग्रंथ निर्माण काल—सत्रह सै पंचोत्तरै, पौष दसै गुरुवार । शुभ वेला ग्रह शुभ लगन कियो महूरतसार ।

कवि वंशादि परिचय :—

कविता मनोहर षंडेलवाल सोनी जाति मूल संघी मूल जाको सांगानेर वास है । करम के उदैतें धामपुर वसन भयो सबसों मिलाप पुनि सज्जन को दास है । व्याकरण छंद अलंकार कछु जाने नांहि भाषा में निपुन तुच्छ बुद्धि को प्रकाश है । बाई दाहनो न कछु समझि संतोष लिये जिनको दोहो ईजा एक जिनजी को आस है । सज्जन तथा दुर्जन के लक्षण । मुनीश्वर धर्म वर्णन । वैजयंती नगरी की शुभ शोभा का वर्णन । विद्याधर के वैभवादि के वर्णन के साथ उसके पुत्रोत्पत्ति । प्रियापुरी नगरी के राजा पवनवेग के द्युति कारि का होना, पवनवेग का वन में जाना और वहां पर मनोवेग से मुलाकात होना । दोनों मित्रों में पवनवेग का मिथ्याती होना और मनोवेग का उसको सुमार्ग में लाने का उद्योग । पवनवेग का कारण वश अपने घर जाना और विलम्ब हो जाना । मनोवेग का अढ़ाई द्वीप में जिन पूजा करना ।

(२) पृ० १३ से पृ० २६ तक—कथा में जीव संबंधी वादानुवाद सुखदुख-विवेचन। जैन धर्म संबंधी अनेक सिद्धांतों का वर्णन। सम्यक् दृष्टि तथा मिथ्यातो का भेद निरूपण, प्रीति का वर्णन, अनेक प्रकार के धर्मोपदेश सुनकर मनोवेग का अपने मित्र के संबंध में भव्याभव्य का विचार कराना, मुनि द्वारा उसको परितोष देना और बताना कि यदि तू पुष्पपुर (पटने) में आकर उसे धर्मोपदेश करेगा तो उसे सम्यक् ज्ञान प्राप्त होगा। मनोवेग का अपने घर जाना।

(३) पृ० २७ से पृ० ३६ तक—दोनों मित्रों का सम्मेलन तथा पटना पहुंचना, पटने की शोभा और वशिष्ठ वाल्मीकि के अनुयायियों की सभा, मनोवेग का अपने बहुमूल्य मणियों के मुकुट पर तृण और कंटक रख कर वाद सभा में पहुंच जाना और वहां रक्खे हुए ढोल को बड़े ज़ोर के साथ बजा देना और सिंहासनारूढ़ हो कर निश्चिन्त बैठना। ब्राह्मणों का आश्चर्य विप्रों का सिंहासन पर बैठने का निषेध और मनोवेग का उतर पड़ना।

(४) पृ० ३७ से पृ० ५२ तक—ब्राह्मणों से वाद करते हुए मनोवेग 'षोडष मुष्टी न्याय की व्याख्या करना, उसकी न्याय संबंधी कुछ उक्तियां। मनुष्य और तिर्यंच का भेद। मूर्ख निन्दन, दस प्रकार के मूर्खों की व्याख्या के लिये दश कथाएं। रक्त पुरुष की कथा, मायाविनी स्त्री का चरित्र चित्रण और कामी पुरुष की दशा का दिग्दर्शन।

(५) पृ० ५३ से पृ० ५७ तक—दुष्ट पुरुष की कथा दुष्ट चित्त मनुष्यों की पराई सम्पत्ति न देख सकने वाली कुबुद्धि और हित वचन को छोड़ कर विपरीतता को ग्रहण करने वाले दुष्टों की दशा।

(६) पृ० ५८ से पृ० ६४ तक—मूढ़ पुरुष की कथा।

(७) पृ० ६५ से पृ० ६६ तक—क्षुद्र ग्राही मूढ़ की कथा।

(८) पृ० ६७ से पृ० ८० तक—पित्त दूषित मूढ़ पुरुष की कथा, आम्र मूढ़ की कथा, क्षीर मूढ़ की कथा।

(९) पृ० ८१ से पृ० १०२ तक—अगुरु मूढ़ की कथा, चन्दन त्यागी मूढ़ की कथा, चार मूर्खों की कथा। चारों मूर्खों की अन्तर्गत कथाएं।

(१०) पृ० १०३ से पृ० ११० तक—ब्राह्मणों का मनोवेग की बातों की अवहेलना करना, पुनः उसका पुंडरीक की कथा सुना कर एक दोष से सब गुण नष्ट होने का कथन करना, राम कृष्णादि अवतारों में दोषोद्भावना, ब्राह्मणों का हार मान लेना और निर्दोष देव के खोजने का अभिवचन देना। इस प्रकार पवनवेग का लौकिक सामान्य देव का विचार पूर्वक सुना कर संशय दूर करने के लिये छः कालों का यथा क्रम वर्णन सुनाना। वलि की सच्ची कथा

सुनाना। हिन्दू पुराणों का पूर्व विरोध से भरे हुए बताना, अन्य स्थान में व्याघ्र का रूप धारण कर के और अपने मित्र को मार्जार का स्वरूप देकर ब्राह्मणों से विवाद करना, और वस्तु का सत्यार्थ स्वरूप कथन करने का विचार प्रगट करना।

(११) पृ० १२१ से पृ० १२७ तक—ब्राह्मणों को मंडप कौशिक नाम के तपस्वी की कथा, उस तपस्वी का एक विधवा स्त्री से विवाह करके उससे एक अनन्य रूपा पुत्री उत्पन्न कर सपत्नीक तीर्थ पर्यटन को जाना और त्रिदेव, इंद्रादि अन्य देवता तथा मनुष्यादि में किसी का भी विश्वास न करके यमदेव को सौंप कर चला जाना, यम का उस कन्या में अनुरक्त होना, पुनः अग्नि का भी उस पर मोहित होना, यम का छाया को अपने उदर में धारण करना और एक दिन संयोग वश यम के स्नान आते समय पवन के साथ सम्भोग कर के छाया का उसे उदरस्थ कर लेना, ब्रह्मादि द्वारा अग्नि की खोज, पवन का उद्योग।

(१२) पृ० १२८ से पृ० १३६ तक—पुराणों में से ही दोषों की कल्पना कर ब्राह्मणों की उन पर अश्रद्धा कराना, जिन धर्मानुसार रुद्रादि वर्णन मनोवेग का नग्न मुनि का रूप धारण करके तीसरी पाठशाला में आना, ब्राह्मणों का विवाद के लिये उपस्थित होना मनोवेग की प्रस्तावना।

(१३) पृ० १३७ से पृ० १५० तक—अर्जुन के गांडीव धनुष द्वारा पाताल छेद कर दश कोटि सेना सहित कर्णादि का निकाल लेना, कुम्भज का समुद्र शोषण, राम का सीता को खोजना इत्यादि को असंभव और तुच्छ बता कर वैष्णव धर्म का खंडन किया जाना, समस्त पुराणों का पूर्वापर विरोधों से भरा हुआ बतलाना।

(१४) पृ० १५१ से पृ० १५६ तक—मनोवेग का ऋषि वेष धारण कर अन्य वादशालाओं में जाना। पनस आलिंगन से पनश फल की उत्पति और उसी से एक सौ पांडवों का उत्पन्न होना, सुभद्रा की चक्राव्यूह संबंधी कथा। 'यम' नामा मुनि की लंगोटी का तालाब में धोना और उसके मल की बुन्द पीने पर मेंढकी के गर्भ स्थिति की कथा, उस बालिका का भी पिता की लंगोटी के वीर्य गर्भ रहना, इन बातों से पुराणों में अनर्गल बातें दिखाना, व्यासोत्पत्ति रघुराजा की कन्या के गर्भ स्थापन की कथा।

(१५) पृ० १५७ से पृ० १८० तक—वैदिक ब्राह्मणों को निरुत्तर कर, जैन मतानुसार कर्ण राजा की उत्पत्ति की सच्ची कथा सुनाना, पांचवे द्वार से पटना में प्रवेश कर मनोवेग का अन्य वाद-शाला में पहुंचना, रामायण संबंधी कुछ आक्षेप, राक्षस और वानर वंशों की मीमांसा छठवें द्वार से प्रवेश कर अन्य वाद-

शाला में 'दधिमुख' वर्णन तथा रावण द्वारा बंगद के किये गये दो टुकड़ों का हनुमान द्वारा जोड़ा जाना, इत्यादि कथाओं को असंभव सिद्ध करना।

(१६) पृ० १८१ से १८८ तक—वेदों के अपौरुषेय होने में संदेह, यज्ञ का निषेध, दीक्षादि अन्य कार्यों का निषेध, श्राद्ध इत्यादि पर आक्षेप।

(१७) पृ० १८९ से पृ० २०२ तक—अन्यमतों की दुष्टता श्रवण कर उनके प्रचार का कारण पवनवेग द्वारा पूछा जाना (छहों कालों के इतिहास का सूक्ष्म वर्णन)।

(१८) पृ० २०३ से पृ० २०५ तक—दोनों मित्रों का जिनमति नामा मुनि के पास बैठना, और मुनि का स्वयं उसका परिचय दे देना, तथा उसके मिथ्यात्व दूर हो जाने का कथन करना।

(१९) पृ० २०७ से पृ० २१० तक—मुनि द्वारा श्रावकाचार में पांच अणु व्रत, तीन गुण व्रत, चार शिक्षा व्रत इस प्रकार बारह व्रतों के ग्रहण का वर्णन।

(२०) पृ० २११ से पृ० २१७ तक—द्वादश व्रतों के अतिरिक्त और भी कई प्रकार के नियम श्रावकों को भक्ति पूर्वक पालने का आदेश तथा वर्णन, ग्यारह प्रतिमाओं का वर्णन, सम्यक्त की विशदता का वर्णन पवनवेग के जैनव्रत धारण से मनोवेग का प्रसन्न होना।

(२१) पृ० २१८ से पृ० २२० तक—ब्राह्मणों का श्रावक होजाना, मूलग्रंथकार का परिचयः—

मुनि अभिमत गति जान सहंस कृत पूरव कही। वामैं बुद्धि प्रमान भाषा कीनी जोरिकें। काल—बिक्रम राजा कूं भये सत अधिक सुहजार। बरष तवै यह संसकृत भई कथा सुभ सार।

ग्रंथकार के निवास स्थान तथा वहां के निवासियों के विषय में कुछ कथनः—देस दादुरो परवत तलो। तहां आमपुर सोभा भलो। × × × तहां सरावग नीके सुखी। करम उदै काई है दुखी॥ × × × तिन मधि परचे दरवि आप जेठो साह। लेहि घन लाह॥

दुर्जन कोई धरनि धरै। करमन तें सोई विधिकरै।

धनो बात को करैं बड़ाइ। नगर सेठि है मन वच काइ।

दोहा—जेठ मल्ल सुत विघोचंद दाता दीन दयाल।
सज्जन भगता गुण अधिक दुर्जन छातो माल॥

× × × ×

बनारसी जेठ मति सागर प्रयो प्रसिद्ध कोटिन का धनो ताको पाप उदै आयो थो। सदन सो निकसि अजोध्या को गमन कियो अजोध्या के सेठि बहु उद्यम करायो थो॥ अपनी बराबरि करि नाना भांति सेतो दैकरि बढ़ाई निज थानक बनायो थो। ऐसे हम अस्व साह सबे निज वाह दै के कहै मनोहर हम पुन्य जोग पायो थो॥

दो०—सो तो पहुंचे सुभगतो वाजे सुभग बजाय। विधोचंद सुष भोगवै धर्म ध्यान चित लाइ॥

होरामनि उपदेश ते भयो शास्त्र शुभ सार। दुष्ट लोग कोऊ मति हसैा हिरदै धरिवु विकार॥ रावत सालि वाहन आगरे को बुधिवंत हिरदै सरल तिन ज्ञान रस पोयो है। जगदत्त मिश्र गौड़ हिसार को वासी सुभ विद्यावल जग मैं सार जस लोयो है। वेगराज पंडित ब्राह्मण मांहि जोतिष का पाठी सरस्वती वर दियो है। इतने सहायक भए दोहो जिन राज जु की तब ते विचार करि भाषा बुद्धि कियो है।

Note.—यह 'धर्म परोक्षा' नामक ग्रंथ सोनो जाति के खंडेलवाल वैश्य 'मनोहर दास जी की रचना है। यह मूल निवासी सांगानेर के थे और पीछे धामपुर में आकर रहने लगे और वहीं उन्होंने इस ग्रंथ की रचना की। यह मुख्य ग्रंथ संस्कृत में है और उसके रचयिता हैं मुनि 'अमित गति' इसको रचना उन्होंने (विक्रम राजा हू के भए सत अधिक सहस्र) १००७ वि० में की। कहा जाता है कि इस अनुवाद के अतिरिक्त इस ग्रंथ के तीन अनुवाद और भी हुए हैं—एक गद्यानुवाद जयपुर के चैाधरी प्रसन्नालाल जी ने किया है, एक मराठी में श्रीकृष्ण नन्दराव जोशी ने किया है। और तीसरा गद्यानुवाद पन्नालाल जी बाकलीवाल ने प्रचलित गद्य में किया है—इन महाशय ने भूमिका में प्रस्तुत ग्रंथ के संबंध में अपनी सम्मति दी है कि इसमें मनोहर दास जी ने अनुवाद करने में पूर्ण स्वतंत्रता से काम्य लिया है और कहीं कहीं अपनी ओर से भी घटा बढ़ा दिया है। ग्रंथ के अन्त में अनुवादक ने अपने मित्रों तथा सहायकों की भी एक सूची उपस्थित की है। जो यथा स्थान उद्धृत कर दी गई हैं। कविता साधारण श्रेणी की है। पन्नालाल जी बाकलीवाल ने मूल संस्कृत ग्रंथ का निर्माण काल—१०७० वि० बताया है—जो हो, इस ग्रंथ के अन्तिम पृष्ठ पर दिये हुए पद्यांश से तो १००३ ही प्रगट होता है। सम्वत् १८७० वि० में शोभालालात्मज 'जवाहर' नाम के किसी व्यक्ति ने इसे लिखा है। इति

No. 272(a) Jñāna Mañjarī, by Manōhara Dāsa Nirañjanī. Substance—Country-made paper. Leaves—22. Size—13 × 7½

inches. Lines per page—17. Extent—413 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1716 or A.D. 1659 Place of deposit—Ṭhakura Naunihala Siṁha Seṅgara, Kāṇṭha, Unāo.

Beginning.—श्री परमगुरुभ्योनमः अथ ज्ञान मंजरी लिख्यते। दोहा। आत्म के अज्ञान ते सबै उपजे जाग। ज्ञान भये ते लीन सब नमस्कार तेहि मान ॥ १ ॥ कवित्त ॥ प्रथम मुकत कहि दूसरै मुमुक्षु सोई। तीसरो विषई चौथो पामर विचारो है। चार पुरुष संसार माझ कहै निरधार बंधन मुकत दार मुकत तो न्यारो है। बंधन ते छूट्यो चाहै मुकत को जो उमा है। सोई तो मुमुक्षो चाहै मोक्ष निरधारो है ॥ भोग विषै सुष चाहै सोई तो विषई कह्यो है पामर सो पेट भरि मेहरा पियारो है ॥ २ ॥ प्रश्न दोहा ॥ वेद भावना कौन परि हम सौ कहि सो भाप। यथा अर्थ है वेद को गोप कछू जिन राष ॥ ३ ॥ उत्तर ॥ वेद सबै त्रैकांड है कर्म उपासना ज्ञान। मुकत परि कोउ कांड नहि सोहै ब्रह्म-मान ॥ ४ ॥ विषई परि नहि भावना। भोग को साधन नाहि। नासवंत सब भोग है। झूठे सुषता माहि। तात्पर्य सब वेद को एक मोक्ष परि जानु। भोग है लोक प्रलोक के तापरि नाहि बषान।

End.—गमाझ्क ये जो जिय ॥ ९५ ॥ संवत सत्रह से भयो वर्ष सोरहे माहि। बैसाष मासे शुक्ल पक्ष तिथि पुनो है ताहि ॥ ९६ ॥ सोरठा ॥ भाषा ग्रंथ कहि यह सबै वैषरी वाक है। परापश्यंति जेह मध्यिमा पीछे पाइय। ९७ ॥ कवित्त ॥ अपौरुषी बानी वेद। अद्वैत है ब्रह्म जामे। द्वैत तामे भेद नाही। एक रूप सब है ॥ ताके है स्वरूप परापश्यंति है मध्यमा सो। वैषरी अनन्त रूप चारि वेद जब है ॥ तामे है सो काम तीन कर्म उपासना सोई ॥ ज्ञान कांडनी जो ज्ञान पौरुष को तब है। रिषि बानी लिये ज्ञान तेई तो यहै प्रमान ज्ञान लिये ना बानी भेद कहो कब है ॥ ९८ ॥ दोहा ॥ त्वं पद देव त्रिज करिय ॥ नर किनर सब जान तत पद ईश्वर देव सब। त्वंतत्वत् त्वंममान ॥ ९ ॥ मनोहरदास निरंजनी ॥ सो स्वामी सो दास स्वामी दास भयो एक सो महाकाश घटाकाश ॥ १४७० ॥ इति श्री ज्ञानमंजरी नाम भाषा ग्रंथ कथनं। पूर्ण समाप्तम ॥ शुभं ॥

Subject.—वेदांत विषयक कर्म, उपासना, ज्ञान तीनो का वर्णन पृ० १

उत्तम मुक्षु, मध्यम मुक्षु मंद मुक्षु का वर्णन-पृ० २

ज्ञानी की श्रेष्ठता का वर्णन पृ० २—३

आत्मा की नित्यता, विविध वासनाओं का त्याग और उसकी अनित्यता का वर्णन प्रकृति वाक्य और वेदांत वाक्य का वर्णन अहंब्रह्म, तत्वमसि वाक्य का वर्णन पृ० ४—५

प्रकृति वाक्य का वर्णन, जीव, ब्रह्म के एकत्व से मोक्ष का वर्णन, वैराग्य, विवेक षट संपत्ति और मोक्ष की इच्छा की साधना का वर्णन पृ० ५—६

अभ्यास का महत्व और उसका वर्णन, अभ्यास का दृष्टांत, अराधता का दृष्टांत, अर्थवाद उतपत्ति, सिद्धान्त, संप्रज्ञात समाधि, असंप्रज्ञात समाधि, समाधि के षट भेद पृ० ६—१७

विकल्प अविकल्प भेद, हृदय के तीन प्रकार, बाहर के तीन प्रकार पृ० १७-१९

समाधि का फल, वृत्ति का वर्णन, तीन प्रकार की वृत्तियां। अजहत जहत और जहत अजहत लक्षणा का वर्णन। पृ० १९—२३

No. 272(*b*) Jñāna Vachana Chūrṇikā, by Manōhara Dāsa Nirañjanī. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—13 × 6½ inches. Lines per page—17. Extent—488 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhakura Naunihāla Siṁha Seṅgara, Kāṇṭhā, Unāo.

Beginning.—अथ ज्ञान वचन चूर्णिका लिष्यते ॥ दोहा ॥ रवि गुर दोय सम तुल्य पूज्य है तम अज्ञान करैं दूरि। जग उर में प्रकास करि बंदन की निज-मूरि ॥ १ ॥ जीवेश्वर चैतन्य में कहिए हैं द्वैनाम ॥ सर्वग्यता अल्पग्यपुनि संसारी सुष धाम ॥ २ ॥ कर्म सहित पुनि रहित है सहित कर्म कह्यो जीव। संसारी तातें भयो रहित भयो साई सीव ॥ ३ ॥ जीवेश्वर द्वै जगत में प्रगट कहै सब कोय। बाह्य दृष्टि विवेक बिन अंतर द्रष्टि न होय ॥ ४ ॥ वचनका। एक चैतन्य में अज्ञानी वास्तव मानै। जीव ईश्वर द्वै ज्ञानी उपाधि भेद ते मानै। जीव ईश्वर एक चैतन्य में द्वै ॥ दोहा ॥ उपाधि भेदते लघु दीर्घ। लघु दीर्घ मुष भास। दृष्टांत, चक्षु प्रतिबिंब दरपन महि मुष चैतन्य एक प्रकास ॥ ५ ॥ माया दर्पन सम भई। अविद्या चक्षुसाम जोय। चैतन्य मुष सम एक ज्यो भेद भास नहि होय ॥ ६ ॥ जीवेश्वर द्वैभास है माया अविद्या भेद भेद भास के बाधते। चैतन्य एक कहै वेद ॥ ७ ॥ एक मेवाद्वितीयं ब्रह्मेति श्रुतेः एक अनंत अपार है पूर्ण सुधा समुद्र ब्रह्म कह्यो ॥ इ आत्मा रह्यो न जननो उद्र।

End.—कर्ता नाहीं ॥ अध्य ज्ञान को अधिकरण अंतःकर्ण है। स्वरुप ज्ञान अधिष्ठान सर्व को है। ता स्वरुप ज्ञान को कोउ अधिष्ठान नाहीं। ताही ते विद्या अविद्या को प्रकाशी है। सो जीवन मुक्ति को स्वरुप है ॥ तातें स्वरुप में ज्ञान अज्ञान दोउ नाहो इति ॥ यह विद्या ज्ञान को अध्यकर्ता अरु अविद्या अज्ञान को अध्यकर्ता है सु येक अंतःकर्ण मांही मिल्यौ है चैतन्यता कौं जीव कहिये सु

अंतःकरण अज्ञान कौ कार्य है। सोई अज्ञान स्वरूप अज्ञानी कहिये॥ सु जाकौ स्वरूप कौ अज्ञान है ताही कौ विद्या ज्ञानवान चाहो जै। इति॥ स्वरूप है सो विद्या अविद्या कौ विरोधी नाही॥ सुवह्म कहिये। यह अज्ञान तें अतीपहत के हये अज्ञान ते उपहत जीव कहिये॥ सो जीव अज्ञानी। सो जीव अनो पहतता ज्ञानि वै के ज्ञानी।

Subject.—गुरु की वंदना, ईश्वर और जीव का भेद, ईश्वर और जीव की एकता, अनिर्वचनीयता, शक्ति के विशेषण और उसके दृष्टांत, उत्पत्ति (माया का तीनों शक्तियों के साथ मिलने से), जीव का त्रिगुणात्मक होना, काय प्रवेश से स्थायित्व, संक्लेश से संहार, ईश्वर कारण उपाधि जगत के करने का पृ० १—३

क्रियमाण कर्म का रूप, नित्य, नैमित्तिक और काम्य कर्म, प्रायश्चित कर्म निषिद्ध कर्म, उपासना, संचित प्रारब्ध और क्रियमाण तीन कर्म निष्काम कर्म वर्णन। पृ० ३—४

अष्टांग योग आसन, अष्टांग योग से ज्ञान और मुक्ति, पुन्य अपुन्य मिश्रित तीन कर्म जरायुज में चार प्रकार की प्रकृति अंडज उद्भिज में ईश्वरत्व पृ० ४—६

विद्या ज्ञान की उत्पत्ति, ईश्वरता की सिद्धि, कारण अविद्या, कार्य उपाधि, विद्या अविद्या का वर्णन—पृ० ६—९

ज्ञान की उत्पत्ति, कार्य और कारण की वाच्यता और विशेषण, उत्पत्ति काल कार्य प्रवेश पृ० ९—१२

सत और असत, विवर्तवादी, आरंभवाद, परिणामवाद, संघातवाद, पंचख्याति, आत्मख्याति असाधारणभूत अपंची कृत कार्य, समष्टिवाद, विष्णु, शिव तैजस प्रज्ञात पृ० १२—१६

कार्य कारण उपाधि, ज्ञानी की जीवन मुक्ति चिदाभास, जीवाभास, देहकृते अभ्यास की निविवर्त्ति दृष्टांत आदि पृ० १७—२०

No. 272(*c*) Vedānta Bhāshā, by Manohara Dāsa Nirañjanī. Substance—Country-made paper. Leaves—22. Size—13 × 6½ inches. Lines per page—17. Extent—538 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1777 or A. D. 1720. Place of deposit—Ṭhakura Naunihāla Simha Seṅgara Kāṇṭhā, District Unāo.

Beginning.—सच्चिदानंदायनमः॥ श्री गुरुभ्योनमः॥ कर्त्ता ग्रंथ करिवे में निर्विघ्न सुष चाहिहे॥ दोहा॥ मंगल दे मोहि देव गनेस। मंगल दे मोहि सरस्वती॥

मंगल दे मोहि देव महेस ॥ मंगल के मोहि पारवती ॥ ग्रंथ को प्रयोजन अरु विषय कहिय है। चैापाई। आत्मलाभ ते भोग न कोई। यह भाषत है मुनि सब सोई। लाभ अर्थ कवि करै वषांण। आत्म को ईश्वर करि जांण ॥ २ ॥ प्रश्नद्वारा ग्रंथ को अधिकारी दिषाइय है। प्रश्न शिष्य मनहि संसैयों आय। आत्म ईश्वर भिन्न सुभाय। आत्म अज्ञ ईश्वर सर्वज्ञ। कैसे एक है अज्ञ अरु तज्ञ। नियंता जग कर्त्ता है ईश। जीव अकर्त्ता सदा अनीश। क्यों आत्म परमात्म एक सो हमको कहि देउ विवेक ॥ ४ ॥ वचन का यह तात्पर्य विषय त्रिवे जीवेश्वर को भेद अर्थ ग्रहण करिकै आसंका करी सिष्यने। ताको लक्ष्यार्थ करिकै समाधान करिवे को उत्तर देते है गुरु उत्तर ॥ चैापाई ॥ समाधान करै गुरु देव। चैतन्य एक अखंड अभेव। महावाक्य तहां करै वषाण। आत्म को परमात्म जाण। वाक्य अर्थ अनुभव तहां होइ। जा अनुभव मैं नाहीं दोइ।

End.—मनोहर दास निरंजनी करो सुभाषा सार। थोरो सो विस्तार नहि अर्थ सवै विस्तार ॥ ८५ सगुन करो कवीस्वरो कवित कछु नहि सोय। जाकी बुद्धि विसाल है सब्द्धि ज्ञानी होय ॥ ८६ ॥ साधन कहिए है। कवित्त ॥ वार वार वूझै मन अर्थ सूझै सबै याकै। मुमुक्षु होइ सोई पावै गुर गमते। निंदा स्तुति तजै मानरु बड़ाई छेाांर कपट लंपट मार्ग चितै पथै समते ॥ विवेक वैराग्य दोय सम दम अेार सोय उपरति तितिक्षा सुस्रधा मैं रमते। समाधान मोक्ष मैं न अेार कछु समाधान ध्यान धरै रैन दिन रायै मन तमते ॥ दोहा ॥ संवत सत्तरासै महि सोरह वरष वीतोत। व्यूष सत्रहैमहि करी षट मास आदि वितीत ॥ ८७ ॥ आसैाज बदि है चतुरदसी कृष्नपक्ष अतिवार। भाषा पूरन सब भई मान एक हृतकार ॥ ८८ ॥ २८८ ॥ इति श्री वेदांत महावाक्य भाषानाम ग्रंथ कथिते मनोहर दास निरंजनी। संपूरण समाप्तम। श्रीरास्तु शुभम् श्रीपरमगुरुभ्येनमः।

Subject.—वंदना, ग्रंथ का प्रयोजन अेार विषय ग्रंथ का अधिकारी, शिष्य का प्रश्न अेार गुरु कृत उत्तर वर्णन किया गया है।

वेदान्त विषय बहुत स्पष्ट रूप से छंदो वद्ध कर के समझाये है ग्रंथ क्लिष्ट जान पड़ता है। वीच वीच मैं वेदांत के सूत्र दे कर उसका वाच्यार्थ स्पष्ट किया गया है।

No. 273. Kavitta by Manasā Rāma of Ṭeḍā, District Unao. Substance—Foolscap paper. Leaves—6. Size—7 × 4¾ inches. Lines per page—32. Extent—96 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Bāmabhūshaṇaji Śukla, Rae Bareli.

Beginning.—अथ मनसा राम के कवित्त ॥

काछे मोर पच्छन के मुकुट धरे है सीस काछे कछनी का किद नीका भेष नट का ।
चंद सा वदन चारु चन्दन को दोन्हे खौरि तैसा उर गुंजन का हार चारु चटका ।
"मनसा" सुनत मंजु बांसुरी सबद मेरी दैरा मन जातरी रहे न नेक हटका ।
हेरत हिये का हरि लेत हरि भांतिन सों वीर कहु का है वो अहीर पीतपट का ॥ १
नीरद नवीन स्याम तन अभिराम तापै बीजुरी सी छाजै छबि अंबर जरद की ।
सहज श्रृंगार गरे गुंजन का हार तैसी सुखमा अपार बढ़ी चारु गा गरद की ।
इंदु मुख मनसा गुविंद अरविंद नैन कीन्हो गति मंद मंद गति सों दुरद की ।
मंद मंद हंसि के अनंद हो सों नन्द नन्द हद रद कीन्हो चन्द चंद्रिका सरद की ॥ २

End.—साजि गज बद्दल महद्दल जुरत जब जीतवे परद्दल चढ़त अवधेस है ।
छलकत छोर निधि थलकत जल थल हलकत स्वरग सकात अलकेस है ॥
खंडन उछोर भारे घन से पुकारे कारे होत दिग्गदंतिन के मनसा कलेस है ।
मसकत मही मूल कसकत कोलकुल धसकत धराधर ससकत शेष है ॥ २१
वैरिन की नागरी नेवेली अलवेली भागी कंचन की बेली सी सहेली कोऊ संग ना ।
महाराज राम जू के डर ते डरानी बिल्लानी जिन्हें धावत में पावत तुरंग ना ।
परे बिछुआन कतरें जे पग छाल बड़े मनसा बिलोकि तिन्हें का का भयो दंग ना ।
माने कंज खंडन की पाखुरी अखंडन में खंडन समेत बैठी हंसन की अंगना ॥ २२

Subject.—कृष्ण भगवान के ३ कवित्त, कुब्जा के २, देवीजी के ३, चंद्रिका के २, राधिका के नैन के २, हरतालिका बतावली पर २, नायिका वर्णन के २, श्रृंगार रस के ३, होली का १ और वीर रस के २.

No. 274. Nānā Artha Nava Saṅgrahāvali by Mātādina Śukla. Substance—Country-made paper. Leaves—170. Size—8 × 6 inches. Lines per page—24. Extent—1,400 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1899 or A. D. 1842. Date of Manuscript—Samvat 1931 or A. D. 1847. Place of deposit—Ṭhākura Digvijaya Siṁha, Tālukedāra, Village Dikaulia, Post Office Biswān, District Sitāpur.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ संग्रहावली कवित्त लिख्यते ॥ शान्त रसः ॥ बालवादी करै बादि सदा पितु मातु तऊ भरै गोदन माहीं । कूर कसूर करै पशुभूरि तजै । तऊ पालक पालिबो नाहीं । है रघुनाथ तिहारे ही हाथ अनाथ हैां दीन कहीं केहि पाहीं ॥ मैं जड़िता बांध तोहि तज्यौं तजि मोहि बराबरि देहु

कृपाहौं ॥ १ ॥ पाहन ते तै कठोर नहीं शवरो गुह ते कहु कौन कुजातो । वानर गोध निशाचर तें जग मों नहिं ग्यान कोऊ जड़ जातो । देपि अहेतु दया इनपै तजि साधन वैठि रहौं दिन रातो । दीन अनाथ तजौ रघुनाथ तौ तो सम को बिसवास को घातो ॥ छन भंगुर अंग अभंग भरे तिय संग अनंग के रंग भरे । करि जंग तुरंग मतंग हरे रन जीति परे धन धाम धरे ॥ फिरि अंत असंग निहंग मरे हित के न कछू उपकार सरे । नहिं जानकी नाह को नेह करे जग मो जनम्यों जन नाहक रे ॥

End.—अथ मात्रोदिष्टः ॥ पृष्ट रूपकलामत्र पूर्वं युग्मांकमुल्लिखेत । लघुनाम परिप्राप्तो गुरुणांचाप्य पर्ययः ॥ गुरूणामुपरिन्यस्तैरंकैर्य्येनान्वि- तस्तथः कुर्य्यादन्त्याक्षरान्ताङ्कन शेषे संख्या विनिर्दिशेत् ॥ अथ मात्रामेरुः ऊर्द्धादधेस्तल द्वेद्वयं कोष्ट युगमद्वयन्तः प्रियुगमत्र चतुर्युग्म यावत्स्वेष्ट क्रमाद्विधैः ॥ कोष्ठेषु विषमे वाद्य वेकैमाहितः शिरोऽङ्कं तच्छिरोऽङ्काभ्यां मध्ये सर्व्वप्रपुरयेत एकः सर्वं लघुर्भेदस्त्वेकथादि गगा परे इति मात्रोदिष्ट विधिः ॥ ग्रह ९ ग्रहे ९ भ ८ भू १ युक्ते वर्षे पौष सिते तरे पक्षे कुहू तिथौ सूर्ये निर्म्मिता वृत्त दोपिका ममादौ मंगल श्लोके एकैकाक्षर कान्तरात वाचबोयं कमाचाम जातिर्द्दंशोपि भाषया । इति मातृदत्त कृतावृत्त दोपिका शुभमस्त्वग्रे संपूर्णम् मिती द्वेजा आषाढ़ बदि ७ चंद संवत १९२१ मुनींधिर नागर ब्राह्मणं शुभं भूयात ।

Subject.—पृष्ठ १ से ३७ तक भिन्न भिन्न प्रकार के कवित्त और सवैयों का संग्रह । ३८ से ७० तक रामायण माला में राम कथा का संक्षिप्त वर्णन । पृ० ७१ से ७६ तक रामाष्टक । पृष्ठ ७७ से ९० तक ज्ञान के दोहे । पृष्ठ ९० से १०६ तक नायिका भेद वर्णन । पृष्ठ १०७ से १३० तक तिथि पक्ष का वर्णन । पृष्ठ १३१ से १३० तक पिंगल संस्कृत ।

No. 275. Angrezjanga by Mathureśa Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—15. Size—8 × 5 inches. Lines per page—38. Extent—285 Anuhṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1915 or A. D. 1858. Date of Manuscript—Samvat 1942 or A. D. 1885. Place of deposit—Bhaiyā Hanumāna Siṁha, Village Vardahā, Post Office Khairi Ghāṭ, District Baharāich (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ संग्राम महाराज बलभद्र सिंह जी बहादुर का लिष्यते ॥ दोहा ॥ गनपति गौरी शंभु पद, बंदत हौं सिर नाइ । श्री बलभद्र महीप को वरणौ विजय बनाइ ॥ श्रीपाल महाराज को सुत भो श्री

बलभद्र । युद्ध विषै ऐसो भयो मानो गेरह्यै रुद्र । बहरायच्च बो बापसो बैसवारे के राज । आये सजि सजि सैन सब बादसाह के काज ॥ श्री हरिदत्त नरेश को बैाड़ो बेगम बास । हुकुम आप आए सबै बादसाह के पास ॥ लखत लखत अंगरेज सों रहे हजूरी फौज । छूटि गयो गढ़ लखनै मिटो मान को मैाज । सो अब ऐसो कीजिये दोबे थान कराय । हुकुम हमारो मानि के सोई करो उपाय ।

End.—सालि घठ बालि रैकवार भै प्रसिद्ध बड़े रैका ते आय करो उत्तर को ओर है । हरि हरिदेव तरवार को प्रकास कीन्हो कीन्हो जमादारो सबै जोरि इकठौर है । रैकवार बंश में सो भूप तो अनेक भए मारो भारो युद्ध करो सब सो मरोर है कहै मधुरेस इन सब सों अधिक भयो राजा बलभद्र सिंह कीन्हों जग जोर है । दोहा । साहब के अस बचन सुनि सुनि बलभद्र रिसान । भाजि गये सब भनटि वो हम करि है मैदान ॥ हमरे कुल में ना भई कबहू ऐसो बात । पांव न टारैं खेत सों करि हैं बड़ो अघात । छत्रिन को यह धर्म है धरैन पाछू पांव । अत्र धरैं हम समर में जगत धरावे नांव ॥ इति श्री महाराजा बलभद्र सिंह चहलारी के बंग्रज जंग नाम वर्णन समाप्तः । लिषा विष्णुदत्त पाठक संवत १९४२ कातिक मासे शुक्ल पक्षे रविवासरे ॥

Subject.—इस ग्रंथ में गदर के समय महाराजा बलभद्रसिंह तथा अन्य राजाओं का ब्रिटिश गवर्नमेंट से युद्ध करना और लखनऊ के नवाब को सहायता करना जिसमें राजा चरदा, बैाड़ो हरदत्त सिंह चहलारी व अकौना रेहुआ रैकवार राजाओं आदि को वीरता का वर्णन है । निर्माण काल का दोहा—संवत से उनईस है वर्ष पन्द्रह परमान । जूझि गयो श्रीपाल सुत अंग्रेजों मैदान ॥

No. 276 (*a*). Lalita-lalāma by Matirāma. Substance—Country-made paper. Leaves—70. Size—9×7 inches. Lines per page—17. Extent—800 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1870 or A. D. 1813. Place of deposit—Paṇḍita Sukhanandanaji Vājapeyi Kutub Nagara, Sitāpur.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ललित ललाम लिख्यते ॥

दोहा—सुखद साधु जन कैां सदा गज मुख दानि उदार । सेवनीय सब जगत को जन माया सुकुमार ॥ १ कवि मतिराम गणेश कैां सुमिरत सुख सरसात । श्रोन पैान लागैं विघन तून तून उड़िजात ॥ २ मद रस मत्त मलिंद गन गान मुदित गननाथ । सुमिरत कवि मतिराम के ऋद्धि सिद्धि निधि हाथ ॥ ३ ॥सवैया॥ सिद्धि बधू कच मंडल के मतिराम मनो मुकुता मन मोहै । पारबती के पयोधर

के पद जोति जगी अति उज्जल योहै ॥ हंस के सीप ससी सुर सिंधु पसी कुल पावन पाय विमोहै। साधुन की तुलसी करतार करी नृप के कर सो कर सोहै ॥ ५ ॥

End.—रुचिर अलप भूषण इते रचि आनत मतिराम। ताको वासों जगत में बिलसै अति अभिराम ॥ ३९२ छप्पय—जब लग कच्छप सेस सहस मुख धरनि भार धर। जब लगि आठौ दिसनि दिग्ग सोभित दिग्गज वर। जब लगि कवि मतिराम सकल सागर महिमंडल। [अनिल अनल जब लगि जोति मंडल आखंडल।] नृप सत्रुसाल नंदन नवल भावसिंह भुपाल मनि। जग चिरंजीव तव लगि सुखद कहत सकल संसार धनि ॥ ३९३। दोहा कंठ करै सो सभनि में सोभै अति अभिराम। सकल सार संसार हित कविता ललित ललाम ॥ ३९४। इति श्री मतिराम बिरचिते ललित ललाम अलंकार समाप्तः ॥

दोहा—संवत नय मुनि वसु शशी इनकी करो विचार। जेठ सुदी चैादस भली सूरज सुत को वार। १८७० ज्येष्ठ सुदी १४ ॥

जो देखौ सोई लिखौ यथा योग्य व्यवहार। अक्षर चुको होय तो सो तुम लेहु सम्हार ॥ टीकाराम के पढ़िबे को ॥ इति ॥

Subject.—अलंकारों का सोदाहरण वर्णन।

No. 276 (b). Lalita-lalāma by Matirāma of Banapura (Cawnpore). Substance—Country-made paper. Leaves—75. Size—8 × 6 inches. Lines per page—20. Extent—900 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Manuscript—Samvat 1934 or A. D. 1877. Place of deposit—Paṇḍita Krishṇa Bihāri Miśra, Editor, Madhuri, Lucknow.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥

दोहा ॥ सुखद साधु जन कों सदा गज मुख दानि उदार। वंदनीय सब जगत कौं जग माया सुकुमार ॥ १। कवि मतिराम गनेस कौं सुमिरत सुख दरसात। श्रीन पैान लागे बिघन तूल तूल दुरिजात ॥ २ मदरस मत्त मलिंद गन नाम मुदित गननाथ। सुमिरत कवि मतिराम के रिद्धि सिद्धि निधि हाथ ॥ ३

End.—छप्पय—जब लगि कच्छप कोल राखि सिर धरनि भार धरि। जब लगि आठौ दिसनि रहो सोभित दिग्गज वर ॥ जब लगि कवि मतिराम सकल सागर महि मंडल। अनल अनिल जब लागि जोति मंडल आखंडल ॥ नृप सत्रुसाल नंदन नवल भावसिंह भूपाल मनि। जग चिरंजीव तब लगि रहै यों कहत सकल

संसार धनि ॥ ३९८ दोहा—कंठ करै सो सभानि में सोहै श्रुति अभिराम। सकल नियम संसार हित कविता ललित ललाम ॥ ३९९ इति श्री कवि मतिराम त्रिपाठी कृत ललित ललाम ग्रंथ अलंकार समाप्त शुभं भूयात् ॥ भाद्र कृष्ण प्रतिपदायां भृगौ संवत १९३४ लिखितमिदं पुस्तकं बलदेव मिश्रेण ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ इति

No. 276 (c). Lalita-lalāma by Matirāma of Banapura (Cawnpore). Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—$9\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—16. Extent—800 Anushṭup Ślokas. Incomeplete Appearance—Old. Character-Nāgarī. Place of deposit—Bhagīratha Prasāda Dīkshita, Village Maī, Post Office Beteśwara, District Āgrā.

Beginning.—श्री गणेशायनमः अथ अलंकार ग्रंथ ललित ललाम लिख्यते ॥

दोहा ॥ तामें प्रतिबिंबित मनो संपति जुत सुर लोक। घर घर नर नारी लसैं दिव्य रूप के थोक ॥ चन्द्र मुखिन के भौंह जुग कुटिल कठोर उरोज। बानिन सों मनकों जहां मारत एक मनोज ॥ २ जहां चित्त चोरी करैं मधुर वदन मुसिक्यानि। रूप ठगत हैं हगनि कोंधार न दूजी जानि ॥ ३ ता नगरी कौ प्रभु बड़ो हाड़ा सुरजन राउ। रच्यौ एक सब गुननि कौं वर विरंचि समुदाय ॥

End.—जब लगि कच्छप कोल सहस मुख धरनि भार धर। जब लगि आठौं दिसनि दिपि सोहत दिग्गजवर। जब लगि कवि मतिराम सगिर सागर महि मंडल। अनिल अनल जब लगि जोति मंडल आखंडल। नृप सत्रुसाल नंदन नवल भावसिंह भूपाल मनि। जग चिरंजीव तब लगि सुखित कहत सकल संसार धनि ॥ ३६३। कंठ करै सो सवनि में सोभै अति अभिराम। सकल भयो संसार हित कविता ललित ललाम। ३६४ इति मति कृत ललित ललाम अलंकार ग्रंथ समाप्तः शुभं भूयात् ॥

No. 276 (d). Matirāma Satasaī by Matirāma of Banapura (Cawnpore). Substance—Country-made paper. Leaves—114. Size—$9\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—18. Extent—719 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bhagīratha Prasāda Dīkshita, Maī, Bateśwara, Āgrā.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मतिराम कृत सतसैया लिख्यते ॥ मो मन तम तोमहि हरैा राधा कैा मुखचंद। बढ़ै आहि लखि सिंधु लौं नंद नंदन आनंद ॥ १ ॥

मंजु गुंज के हार उर मुकुट मोर पर पुंज ।
कुंज विहारी विहारिये मेरेई मन कुंज ॥ २ ॥
रतिनायक सायक सुमन सब जग जीतन वार ।
कुवलय दल सुकुमार तन मन कुमार जय मार ॥ ३ ॥
राधा मोहनलाल को जाहि न भावत नेह ।
परियो मुठो हजार दस ताको आँखिन खेह ॥ ४ ॥

End.—भोगनाथ नरनाथ को रीझ्यो बोझ अनूप ।
होत भिखारी भूप हैं भूप भिखारी रूप ॥ ७०१ ॥
मुरलीधर गिरिधरन प्रभु पीताम्बर घनश्याम ।
बकी विदारन कंस अरि चीरहरन अभिराम ॥ ७०२ ॥
पीत झगुलिया पहिरते लाल लकुटिया हाथ ।
धूलि भरे खेलत रहे ब्रजवासिन ब्रजनाथ ॥ ७०३ ॥
तिरछी चितवनि श्याम की लसति राधिका ओर ।
भोगनाथ कों दीजिये यह मन सुख बरजोर ॥ ७०४
मेरे मति में राम हैं कवि मेरे मतिराम ।
चित मेरो आराम में चित मेरे आराम ॥ ७०५ ॥
इति मतिराम कृत सतसैया समाप्तः ॥

Subject.—विविध विषय के ७०५ दोहे का संग्रह ।

No. 276 (*e*). Barawā Nāyikā-bheda by Matirāma. Substance—Country-made paper. Leaves—34. Size—10 × 4 inches. Lines per page—6. Extent—204 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Manuscript—Samvat 1904 or A. D. 1847. Place of deposit—Paṇḍita Krishṇa Bihārī Miśra, 318 Mirjān Lane, Lucknow.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नायका भेद बरवा छंद दोहा लिख्यते ॥ कवित्त कहा दोहा कहा तुले न छप्पै छंद । विरचौ यही विचारि कै यह बरवा रसकंद ॥ १ ॥ वेधक अनियारे बड़े समुझै चतुर सुजान । सुनत जात चित चाव पै यह बरवै के बान ॥ २ ॥ मंगलाचरन बरवा बंदौ देवि सरदवा पद कर जोरि । बरनत काव्य बरैवा लगै न खोरि ॥ ३ ॥ स्वकीया लक्षन दोहा—लाजवती निसुदिन पगो निज पति के अनुराग । कहत स्वकीया सील में ताकी पति बड़ भाग ॥ ४ ॥ उदाहरन बरवा—रहत नैन के कोरवा चितवनि छाय । चलत न पगु पैजनिया मगु ठहराय ॥ ५ ॥

End.—शिक्षा करन—थके बैठि गौड़बरिया मोड़हुँ पाइ।
पिग्रत न पोय गगमिया बिग्रन डोलाइ ॥ १६३ ॥
उपालंभ—चुप ह्वै रहेसि संदेसवा सुनि मुसुकाय।
विष निज हाथ बिरचना दीन्ह पठाय ॥ १६४ ॥
परिहास – बिहंसत भौंह चढ़ाय धनुष मनोज।
लावत उर अपठनवा पेठि उरोज ॥ १६५ ॥

दोहा—लक्षन दोहा जानिए उदाहरन बरवान।
दुनौं के संग्रह भए रस सिंगार त्रिय मान ॥ १६६ ॥
यह नवीन संग्रह सुनौ जा देखै चित देइ।
बिबिधि नायका नायकनि जानि भलो बिधि लेइ ॥ १६७ ॥
इति श्री नायकादि भेद संपूर्णम् सम्वत् १९०४ जे० शुभम् ॥

Subject.—मंगलाचरण, स्वकीया, मुग्धा, अज्ञात यैावना, ज्ञात यैावना, नवोढ़ा, विश्रब्ध नवोढ़ा, मध्या, प्रौढ़ा, परकीया, ऊढ़ा, क्रिया विदग्धा, वचन विदग्धा, लक्षिता, अनुशयना वर्णन पृ० १—९ तक।

गुप्ता, मुदिता, कुलटा, सामान्या, अन्य संभोग दुःखिता, प्रेम गर्विता, रूप गर्विता, प्रोषित पतिका, खंडिता, कलहंतरिता, विप्रलब्धा, उत्कंठिता वर्णन पृ० १०—१९ तक।

वासक सेज्जा, स्वाधीन पतिका, अभिसारिका, प्रवत्स्यत्पतिका, आगत पतिका, उत्तमा, मध्यमा, अधमा, नायका सभेद, अनुकूल, दक्षिण, धृष्ट, शठ, उपपति, वैसिक, प्रोषित नायक, वचन चतुर, क्रिया चतुर, दर्शन, मंडन, शिक्षा, उपालंभादि वर्णन पृ० २०—३४ तक।

276 (*f*). Rasaraja by Mātirāma. Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—10. Extent—938 Anuṣṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1780 or A. D. 1723. Place of deposit—Paṇḍita Śasi Śekhar Śukla Kañjahī, Village Śivalālarāma, Paṇḍita-kā-purwā (Itauñjā Pachhima), Post Office Gaurigañja, District Sultānpur.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रसराज ग्रंथ लिख्यते ॥ दोहा ॥ होतु नायका नायकहि आलंबित श्रृंगार ॥ ताते बरनो नायका नायक मति अनुसार ॥ १ ॥ अथ नायका लक्षन ॥ दोहा ॥ उपजतु जाहि बिलोकि कै चित्त बीच रस भाउ ॥ ताहि बषानत नायिका जे प्रवीन कबिराउ ॥ २ ॥ उदाहरन ॥ सवैया ॥

कुंदन को रंग फीको लगै झलकै ऐसो अंगन चारु गोराई ॥ आंखिन को अल-सानि चितौनि में मंजु विलासन की सरसाई ॥ को बिन मोल बिकात नहीं मतिराम लहै मुसक्यानि मिठाई ॥ ज्यौं ज्यौं निहारिय नेरे ह्वै नैननि त्यौं त्यौं खरी निकसै सी निकाई ॥ ३ ॥ दोहा ॥ रंग लाल मन ह्वै कढ्यौ तिय तन दीपति पुंज । झिंझिया कैसो घट भयो दिनही में बन कुंज ॥ ४ ॥ तरुन अरुन एडीन के किरिनि समूह उदोत ॥ बेनी मंडल मुकुत के पुंज गुंज रुचि होत ॥

End.—जड़ता लक्षनं ॥ उतकंठा ते होत है अचल चित्त अरु अंग । तासों जड़ता कहत है कवि कोविद रसरंग ॥ ४०५ ॥ उदाहरनं ॥ सवैया सुवासु रहे रंगरागते उदास भूलि गई सुरत सकल पान पान को । कवि मतिराम एक घनमिव नैन बूझे कहति न बात बोर सुनति न कान को ॥ थोरे सों हंसनि नाह गोरी ऐसो हारि करि भोरी कहो गोरी तै किशोरी वृषभान को । तबते निहारो वह भई ॥ पषान कैसो जबते निहारो रुचि मोर के पषान को ॥ ४०६ ॥ दोहा ॥ घनमिव लोचन बाल यह यातो नंद कुमार ॥ मोचु गई जरि आंच ही विरह अनल की झार ॥ ४०७ ॥ समुझि समुझि स॰ रीझि हैं, सज्जन सुकवि समाज ॥ रसकनि के रस को कियो भयो सकल रसराज ॥ ४०८ ॥ इति श्री मतिराम कृत रसराज समाप्तं शुभ मस्तु ॥

Subject.—नायिका भेद वर्णन ।

No. 276 (*g*). Rasarāja by Matirāma. Substance—New paper. Leaves—50. Size—9 × 7 inches. Lines per page—24. Extent—900 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of Manuscript—Samvat 1896 or A. D. 1839 Place of deposit—Paṇḍitā Raghunātha Prasāda Chaube, Eṭāwah.

Beginning.—ध्यावै सुरासुर सिद्ध समाज महेशहि आदि महामुनि ज्ञानो । योग में यंत्र में मंत्र में तंत्र में गावै सदा छति शेष बखानो ॥ संकट मोचन आनन को द्युति सुंदर दंड उदंड सो जानो । ध्याय सदा पदपंकज को मतिराम तबै रसराज बखानो ॥ १५ दोहा ॥ श्री गुरुचरण मनाइ के गनपति को उर ध्याइ । रसिक हेत रसराज किय सुकविन को सुखदाइ ॥ २ कवितार्थ जानौं नहीं कछुक भयो मनबोध । भूल्यो भ्रम ते जो कछुक सुकवि पढ़ेंगे शोध ॥ ३ ॥ वरणि नायका नायकनि रच्यो ग्रंथ मतिराम । लीला राधा रवन की सुंदर यश अभिराम, ॥ ४

End.—दोहा ॥ देखि परै नहि दूबरो सुनियें श्याम सुजान । जानि परै परियंक मैं अंग आंच मतिमान ॥ २१ जड़ता लक्षण ॥ दोहा ॥ उत्कंठादिक ते जो है चपल चित्त यह अंग । तासो जड़ता कहत हैं जे प्रवीण रसरंग ॥ २२ उदाहरण—कवित्त—सुचैन सुवास रहे रंग रागते उदास भूल गई सुरति सकल खान पान की । कवि मतिराम इकटक अनमिष नैन बूझे न कहत बात यह समझे न आन की ॥ थोरी सी हंसनि ओट गोरी ऐसो डारि ठग बौरी करी गोरो तें किशोरी वृषभान की ॥ तब ते विहारी वह है भई बखान कैसो अब ते निहारी रुचि मोर के पखान की ॥ २३ ॥ दोहा ॥ अनमिष लोचन बाल के याते नंदकुमार । मोव गई अरि बीच ही विरहानल को भार ॥ २४ ॥ समुझ समुझ सब रीझिहैं सज्जन सुकवि समाज । रसिकन के रस को किया नयो ग्रंथ रसराज ॥ २५ ॥ इति श्री रसराज ग्रंथ समाप्तः ॥ सम्वत् १८९६

No. 276 (*h*). Rasarāja by Matirāma of Banapura. Substance—Country-made paper. Leaves—168. Size–8 × 5 inches. Lines per page—12. Extent—756 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Paṇḍitā Kṛishnā Bihārī Miśra, Sitāpur, Gandhaulī, Sidhaulī

No. 276 (*i*). Rasarāja by Matirāma. Substance—Country-made paper. Leaves—32. Size—15 × 6 inches. Lines per page—24. Extent—360 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1909 or A. D. 1852. Place of deposit—Lālā Bhāgawata Prasāda, Village Sadhuwāpur, Post Office Sisaiya, District Bahrāich.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ राधा कृष्णायनमः ॥ अथ रसराज लिख्यते ॥ श्लोक ॥ श्री कृष्ण मुरलीधरं गिरिधर पृथ्वीधरं सुंदरं ॥ विधु दशा सुवण पीत वसानं वृन्दावने क्रीडनं ॥ कालिन्दी तट गायन मुनिवर गोपी मनोरंजनं ॥ श्री राधा वल्लभं ललितं वन्दे सदा सुन्दरम् ॥

No. 276 (*j*). Rasarāja by Matirāma. Substance—Country-made paper. Leaves—51. Size—7 × 6½ inches. Lines per page—26. Extent—1,989 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—

Ṭhākura Basanta Siṁha, Village Udawā, Post Office Shāhmau, District Rae Bareli.

Beginning.—पृष्ट २ से प्रारम्भ ।
पति प्रीति सोहाई । तेरे सुसील सुभाय भट्ट कुल नागिन को कुल कानि सिषाई । तेही मनो पति देवता के गुन गैारि सबै गुन गैारि पठाई ॥ १२ ॥ दोहा ॥ जानत सैाति अनीति है जानत सषी सुनीति । गुरजन जानत लाज है प्रीतम जानत प्रीति ॥ १३ ॥ त्रिविधि सकिया वरनिये प्रथमहि मुग्धानाम । मध्या पुनि प्रौढ़ा गनैा बरनत कवि मतिराम ॥ १४ ॥ मुग्धा लक्षन वर्णन ॥ २ ॥ अभिनव यैावन आगमन जाके तन में होइ । तासो मुग्धा कहत हैं कवि कोविद सब कोइ ॥ १५ ॥ जथा ॥ नेक मंद मधुर कपोल मुसकान लागी नेक मंद गमन गयंदनि की चाल भो । रंच ऊंचो अंचल ऊरोजन के अंकुरनि बंक होठि नैन जुग नेसुक बिसाल भो ॥ मतिराम सुकवि रसीले कछु बैन भये वदन सिंगार रस बेलिय × × वान भो ॥ बाला तन जोबन रसाल उलहत हाल सैातिन के साल भो निहाल नंदलाल भो ॥

No. 277. Antariyā kī Kathā by Medailāla Awasthi. Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size—7 × 4 inches. Lines per page—12. Extent—153 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1905, or A. D. 1848 Place of deposit—Paṇḍita Tribhuwanadatta, Village Fakharpur, Post Office Baharāich.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अंतरिया कथा लिष्यते ॥ सोरठा ॥ गनपति कृपा निधान, बुद्धि रासि शुभ गुन सदन ॥ देहु मोहि वरदान कथा अंतरिया की कहैां ॥ १ ॥ उमा शंभु संवाद, परम रुचिर मंगल भवन, जेहि सुनि मिटै विषाद, दोष अंतरिया ना रहै ॥ २ ॥ दोहा ॥ संभु भवानी सरस्वती, उर गैारि माइ प्रसाद, दोष निवारन जगत हित कहब सकल संवाद ॥ ३ ॥ चैापाई ॥ परम रम्य गिरवर कैलासा ॥ सदा जहां सिव उमा नेवासा । सिद्धि परसिद्ध तप हित मुनि देवा । करै जोग जप तप हित सेवा ॥ पटमुख आदि संभु गन जेते ॥ हरिपद सेवत प्रेम समेते ॥ विपिन बाग मानस अति सोहै । बरनै छवि अस कवि जग को है ॥

End.—इति श्री मेड़ई लाल अवस्थी विरचितायां उमा महेस संवादे भैरैां निमित प्रसादे कथा अंतारा समाप्तम शुभमास्तु सवत मास कृष्ण पछे तिथैा

चैादसियो सनिबसरे श्री संमतु १९०५ लेषाक दीनदयाल कयेस्थ बसि सहिपुर ग्रंमे नाई आतार्ट तस्यां पात्मज बषतावर लाल लिषाते जा प्रति देषा सो लिषा मम दोषो नाहि शुभ मस्तु राधा कथ्य को जै रामचन्द्र सावामो को जै ॥ राम राम राम राम राम राम राम।

Subject.—अंतरिया यानी अतरा (इकतरा) रोग को कथा का वर्णन। इसमें महादेव पारवतो का संवाद है। एक व्यापारो बनिज को गया था उसकी स्त्री घर पर थी। उस व्यापारी का भेष बना कर एक प्रेत उसके घर में आकर रहने लगा। जब वह व्यापारी घर आया, ता अपने रूप का मनुष्य देख कर दुखी हुआ, स्त्री भी घबड़ाई, अंत में राजा के यहां न्याव के लिये गये। राजा भी न्याव न कर सका। तब न्याय के लिये गड़रिया बुलाया, उसने कहा कि चमड़े के छेद हाकर जा मसक में घुस जावे वही स्वामी है। प्रेत तुरंत ही घुस गया ओर गड़रिया ने उसे बंद कर दिया। मुख्य स्वामी अपनी स्त्री को लेकर घर चला गया।

No. 278. Megha-prakāsa Jyotish by Megha Muni of Phaguwārā (Punjab). Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—$8\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—40. Extent—870 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1817 or A. D. 1760. Date of Manuscript—Samvat 1895 or A. D. 1838. Place of deposit—Bābā Bhāgawatadāsa, Village and Post Office Jarwal, District Baharāich (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मेघमाला लिष्यते ॥ दोहा ॥ परम पुरुष घट घट रम्यो ज्योति रूप भगवान। सकल रिद्धि सुख देत प्रभु नमत मेघ धरि ध्यान ॥ वाहन जाको हंसासित ओर सिंह सिव तीय। सिवा भवानी सारदा सकल एक नांहं बीय ॥ चरनन मो गुन तासु के आगम वानी दाह। तिस प्रसाद इस ग्रंथ को रचैां सकल सुख थाह ॥ चैा० ॥ गुरु समान जग मैं नहिं कोई। मूरख पंडित करता सोई ॥ जिमि दीपक मंदिर तिमि नासे। गुरु ज्ञान अज्ञान बिनासै ॥ पटपद छंद ॥ सकल बस्तु को भेद ज्ञान अज्ञान बतावत। नरक स्वर्ग को बात ओर शिव पद दिखरावत ॥ ब्रह्मा विष्णु महेस ताहि गति कोउ न जानत। सो लहि है परसाद जु गुरु के वचन पिछानत ॥ तीन लोक ब्रह्मा रच्यो मृत्यु स्वर्ग पाताल रुवि सो गुरु की कृपा दिसै वदत मेघ त्रिय काल कवि ॥ दोहा ॥ ज्योतिष ग्रंथ अपार अग जानत इक जगदीश। मानव सुर जानत नहीं। ताते मोमति कीश ॥

End.—सोयल छंद ॥ मुनि शशि वसु को आन ग्रहो संवत इहु आयति कातिक सुदि गुरुवार मान पंचम तिथि भाषत ॥ उत्तराषाढ़ नक्षत्र दिवस में प्रकवि की जति। सो घटि अक्षर होइ ताहि कवि सुधि करि लीजति ॥ लीलावती छंद ॥ ए देश जलंदर शोभै सुन्दर नाम द्रावा ठौर कहियो। शुभदान पुन्य की ठौर यहां है मानौ सुर पुर थान रह्यौ पंडित नर। सो मैं कवि ते भारी गीत वजित्र रंग सियो गृह गृह मंगलचार जु होवहि तासंपुर इक इहु वसियो। सकल रिद्ध कर सोम है फगुवारा शुभ थाम । तहां मेघ कविता करी याकी विधि मन थान। चूहड़मल ये चैाधरी फगुवारे को राइ । चतुर सैन्य करि साभ है जिमि उड़गन शशि थाइ। सब कविता सो बेनती कहत मेघ कर जोर। करौ सुधि इस ग्रंथ का ग्रधिक कह्यो जिहि ठौर। बालक हठ ज्यों बात को पंडित करत विचार। कहौ ग्रशुद्धिहि होइ कछु लीजौ कविन सुधार ॥ गोता छंद ॥ कर सरव छंद मिलाइ इकठा कहो संख्या यासकी। द्वात्रिंस ग्रक्षर के हिसाबै ग्राठ से उनचास को। इन्द्र छन्द षट सत ग्रठ उनीसे कही कवि इहु मास को सजानु संख्या दोऊ जाते मेघ माल विलास को ॥ दो० ॥ कविजन कविता की सदा छिन छिन होइ ग्रानंद। बसैा ग्रंथ जग चिर लगी जौ लौ रवि थिति चंद ॥ इति श्री मेघ प्रकाश मुनि मेघराज विरचिते सगुन नाम चतुर्थोध्याय ॥ ४ ॥ लिषितं मिश्र गुलजारी पटियाले मध्ये पोथी ज्वाला गिरि योग्यः सं० १८९५ ग्राश्विन शुक्ल तृतीया भृगुवासरे समाप्तम् ॥

Subject.—परमात्मा की महिमा गुरु की महिमा, ग्रंथ रचने का कारण कातिक मास, दिवाली, ग्रगहन, पूस मास, माघ मास का फल, माघ, पूरन मास का फल, माघ वदी नैामी का फल, फालगुन मास का फल, होली विचार चैत्र मास का फल, चैत्र वदी पड़वा का फल, वैसाख मास का फल, जेठ मास का फल, जेठ वदी पड़वा का फल, ग्राषाड़ मास फल, ग्राषाड़ मास में कल्ला रोहनी का विचार, ग्राषाढ़ पूर्णिमा का फल ग्राषाढ़ सुदी पूनम की ध्वजा की पवन का विचार, सावन, भादों मास का फल, ग्रह नक्षत्र वर्षा लक्षण, चार थंम सवय का विचार, रोहणी चक्र, ग्रह राशि फल, मूसल जोग, खंगार जोग, मृत्यु जोग, ग्रह उदै फल, शुक्र उदय फल, शुक्र चन्द्र फल, पूस मास संक्रांति का फल, कर्क संक्रांति का फल, मीन संक्रांति का फल, संक्रांति सातो बैठी टाढ़ी का फल, संक्रांति वर्षा का फल, मास क्षय का फल, तेरह दिन के पाख का फल, पक्ष क्षय का फल, तिथि क्षय का फल, तिथि ग्रधिक का फल, ग्रधिक मास का फल, एक मास में पंचवार का फल, रवि शशि कुंडल पारवा का फल, दुकाल लक्षण, चन्द्रमा उदय का फल, चन्द चढ़े के रंग का फल, मंडलों का फल वायव्य मंडल का फल, वारुणी मंडल का फल, महेन्द्र मंडल

का फल, चारो मंडल के फल, संक्रांति समय मंडल मध्य राशि का फल, समय के राजा का फल, मंत्री का फल, ग्रहण विचार, भू कंपन लक्षण, ग्रह नक्षत्रो चार फल, ग्रहराशि विचार, गोल योग, वर्षा कुयोग, पर्वकांड, अर्थ संक्रांति कांड, बृहस्पति कांड, शनि विचार, नक्षत्र शनि कूर्म चक्र विचार यास्नो मतांत मुहर्रम के गुरें का विचार, वर्ष दिन बरते तिसका फल (इंगलिश में)। रविवारे गुरेर का फल, सोमवार, मंगलवार, बुध, गुरुवासरे, शुक्रवारे, शनिवारे गुरेर का फल, राशि स्वामी फल ग्रह स्थिति, उत्पात फल सगुन अध्याय, वर्षा लक्षण, इन्द्र धनुष का फल, छींक सगुन, अंग स्फुरण सगुन, रासभ वाक फल, जंबु वाक फल, दक्षिण फल, शिवा वाक दिन प्रथम ग्राम फल, किरलो सगुन का वर्णन, सातवार का फल, अंग फल, कविराज मेघ मुनि के ग्राम आदि का वर्णन।

No. 219(*a*). Vyādhinasa Vaidyaka by Meharwānadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—15 × 5 inches. Lines per page—18. Extent—1,140 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written Prose and verse. Character—Nāgari. Date of Manuscript—Samvat 1906 or A. D. 1849. Place of deposit—Kumāra Bachchā Sāheb Rais, Gudhuāpur, Post Office Chilwāriyā, District Baharaich (Oudh).

Beginning.—श्रीमते रामानुजायनमः अथ वैद्यक व्याधि नास नाम ग्रंथ लिष्यते ॥ दोहा ॥ श्री गुरु परमानंद प्रभु चरण कमल मन लाइ। मेहरवान दास प्रेरक परम परमातमहि मनाय। रक्षा मय सो जग रच्यो त्रिगुन भयो विस्तार कम काल माया विवस करि राष्यो संसार ॥ सतगुरु वैद मिले विनु कोइ न होत अरोग व्याधि असाधि बचै कबहु हानि लाभ भय सोग ॥ त्रिगुण त्रिदोष लख्यो जगत भिषक मिले गुरु जाहि। नाम रसायन पायो निरुजम यो निर्वाहि ॥ मंत्र जंत्र गुन गान प्रभु प्रगट्यो जीवन हेत ताहि विविध औषध जगो पावत होत सचेत ॥ दैहिक दैविक भौतिको लगो ताप त्रय जीव। मेहरवान दास भगवान विन सुमिरन विपति अतीव। संचित प्रारब्धक करम किया मान ये तीन। दुष सुष भोगवत जीव यह देह संग कतकोन ॥ आदि व्याधि लागो जगत जग जाको जाहेत। मेहरवान दास संसै मिटै मिल गुरु कारिन। आदि व्यथा है मानसी व्याधि सरीर संजोग। सुमिरन ते मन दुष नसै औषधि ते तन रोग ॥

End.—अथ दसमूल नाम कथन। उमय गुषक, पाढ़री अरनी स्वरन नाम विथवन बेलि कुम्हेर सोनापलो मूल दस ठाम। पंचछान नाम ॥ आंभरि पारो

विडकहैा सोचा सोचर सोई, लवन पांच ये सांच हैं घर दोये कै होइ ॥ अथ कुरा देषै कै विधि। बड़े सवेरे घरी भरि रात्रि जब बाकी रहै तब रोगी को एक बासन में मुतावै सो मूत जब घाम होइ तब घाम में धरै तब तेल में सींक बोरि के एक बूंद छोड़ै। जो तेल ऊपर रहै तो रोगी साध्य जानो जो बूंद डूब जाय तो रोगी मरै। अनुहो कार मूत्र बढ़ै तौ मूत्र दोष जानिये छनकार होय तो दोर्घ जीवो। मूत छूटि कै कई बूंद होई तौ बूंद गिनके मरे के दिन बताइ देउ। पीत वर्ण पित रोग सित वर्ण कफ रोग। कृष्ण बरण वात रोग, निला रंग त्रिदोष गंध आवै रोगी मरै निर्मल नोर सम मूतै रोग विमुक्त जानैा ॥ साध्य असाध विचार। एक चैाड़े बासन में जल भरै घाम में धरै रोगी को सूर्ज दिषावै सूर्ज संपूर्ण देषै तो रोगी साध्य सूर्ज न देष परै तो रोगी मरै सूर्ज के बोच छेद बतावै रोगी षठयें दिन मरै संपूर्ण सूर्य प्रकास देषै तो दान देइ बैद को खुस करै रोगी अच्छा होय।

इति श्री व्याधि नास नाम ग्रंथ मेहरवान दास कृत संग्रह समाप्त ॥ लिषतं रघुवर सषा मिर्जापूर निवासी संवत १९०६ श्री राम जी की जै ॥

Subject.—नाड़ी परीक्षा, तैाल प्रमाण, धातु शोधन मारण उपधातु शोधन आदि, ज्वर चिकित्सा काथ आदि का वर्णन, रसों का भली प्रकार वर्णन चूर्ण गोली तैल आदि, घृतादि औषधियों का संग्रह करना उनको पहिचान, आदि का वर्णन

No. 279 (*b*). Vyādhināśa by Paṇḍita Meharwānadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—121. Size—8¾ × 4½ inches. Lines per page—8. Extent—1,320 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1851 or A.D. 1794. Date of manuscript—1248 Hijri or A.D. 1870. Place of deposit—Rājyapustakālaya, Bhingarāja, District Baharaich.

Note.—विशेष No. 279 (*a*) में लिखा गया है।

No. 280. Kavitta Saṅgraha by Mōhana kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—6. Size—9½ × 5 inches. Lines per page—22. Extent—60 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Badarinātha Bhaṭṭa, Lucknow University, Lucknow.

Beginning.—अथ कवित्त मोहन के लिख्यते ॥

उससि उसासनि है वै सबै पवासु दहै वैरिन कौ वासु दहै परोवै। माननिन सौहनि तनैनो कै के मोहनि झुकति भांए मोहनि हो कैसे कै उर्जायें॥ नैननि लगनि हिरदै का हो लगनि तन विरह पगनि सिनगत बांत जरौवै। द्वै सिरमोहो ते ि शेष सब तेरहि पिये तेरे हिय माहां पै परखैया हो मरावे॥

End.—जियरोई आनत है जियरो रहत तन छिन छिन हियरो दरस दुष दाहिये। पेम लपटाय वेन नैननि हो समझे अलि नैनांन सुने जो वार कोटि अवगाहिये। तुम कह्यो हिरदे सु हम कहो परगट लोइन न नेह के निहारि नेकु ता हिय॥ इकटक चाहत हैं याते न प्रगट होहि चाहको चाहनो मुष चाहे हू न चाहिय॥ इति।

Subject.—१७ शृंगार के कवित्तों का संग्रह।

No. 281. Kapota—līlā by Mōhanadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—$8\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—9. Extent—51 Anushṭup Ślokas. Appearance—Ordinary. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Saṃvat 1833 or A.D. 1776. Place of deposit—Paṇḍita Śitala Prasāda, Village Fatehpur, District Bārābanki (Oudh).

Beginning.—श्री मतेरामानुजाय नमः॥ उद्धारावतो एकांत निवासा। हरि कौ पूछे उद्धव दासा। ज्ञान विचार विवेक सुनावौ। मेरे मन को तिमिर नसावौ। कौन पुरुष कैसो तेरी माया। कहौ कृपा करि त्रिभुवन राया। कैसो विधि प्राणी सुष पावै। काल व्याल भय दूरि बसावै॥ २॥ श्री भगवान कहें निज ज्ञाना। तत्व उपदेश सुनौ ठैकाना। सकल चराचर मो मैं लेषो। मोते भिन्न कछू नहि देषो॥

End.—सब परिहरि हरिसों रुचि कोनो। ताते मैं इनको बुधि लीनो। ज्यों सब नरपति त्यागेउ राजा। करि हरि भजन समारे काजा। अब मैं ज्ञान कह्यों नाना विधि। निज मन को सौपों अपनी अपनी निधि। श्री भगवान जू बोले वाणी। उद्धव को अंतरगत जानी। जो इह लीला सुने अरु गावे। ज्ञान विराग भक्ति उपजावे। शीव महेश पार नहिं पावे। मोहनदास यथा मति गावे। इति श्री दत्तात्रेय कपोतलीला मोहनदास कृत संपूर्ण॥

Subject.—उद्धव का ईश्वर से प्रश्न, पुरुष कौन है, माया क्या है, और मनुष्य सुख कैसे पा सकता है। ईश्वर का उत्तर, संपूर्ण संसार मुझ में है, जो अनन्य भाव से मेरी सेवा करे वह संसार से तर जावे। यदु का एक मुनि को देख कर शंका उपस्थित करना कि आप को संसार से विरक्ति कैसे हो गई, मुनि का अपने चौबीस

गुरु करने का कथन और उनको गुरु बनाने का कारण। उनको अपने गुरुओं के नाम इस प्रकार बताना (१) अवनि, (२) मारुत, (३) जल, (४) अग्नि, (५) आकाश, (६) शशि, (७) रवि, (८) कपोत, (कपोत कपोती का प्रेम व्यवहार, दोनों का घर बनाना, सुत उत्पन्न होना, उसको बोलो से प्रसन्न होना, बालक को भोजन के लिये कुछ लेने को जाने पर बालक का जाल में फंसना कपोतिनी का भी स्वयं फंस जाना, कपोत का भी फंस जाना) (९) अजगर, (१०) सागर, (११) भुंग, (१२) कुरंग, (१३) मतंग, (१४) पतंग, (१५) मीन, (१६) मधु मक्खी, (१७) पिंगलानारी, (१८) कुररी पक्षी, (१९) कुमारी की चूड़ी, (२०) बालक, (२१) भृंगी, (२२) सर, (२३) भुजंगम और (२४) सब सरकारों को देख कर चरण कमल से पृथक् न होना। उपसंहार में अपनी ईश्वर भक्ति का यही कारण बताना।

No. 282(*a*). Ganesa Chauthi ki Katha by Motilala. Substance—Country-made paper. Leaves—50. Size—7½ × 4½ inches. Lines per page—10. Extent—390 Anushtup Ślokas. Incomplete. Appearance—Ordinary. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1862 or A. D. 1805. Place of deposit—Pandita Bhawāni Baksa, Village Utārā, Post office Musāfirkhānā, District Sultānpur.

Beginning.—पृष्ठ २—कृपा सिंधु उर अंतर जामी × × × × बन कीन्हो चिरजीवन राजा ॥ जीति लोहउ मोहि राजि समाजा। अनुज समेत दुखनी सब लाय ॥ कानन फिरहु दुहु दुख पाय ॥ तेहि ते प्रभु विनवउ कर जोरी ॥ केहि विधि पाइ राज बहोरी ॥ कृष्ण कहा सुनि वचन नरेसा ॥ दुख हित लागि कहौं उपदेसा ॥ पूजहु गणपति कह चितु लाइ ॥ जेहि पूजे संकट संकट मिटि जाइ ॥

End.—गज बदन चरित्रं वोक्षण दंतं मुनि रंजन वरनत संतं। गणपति वरदायक सब सुखलायक सुर मुनिनायक भानु जुतं। सबही सुपकारी जग उपकारी। सिद्धि सुधारी शिव नंदा। जे व्रत मन लावहि हरिपद पावहि सुनत महामन सुखकंदा। गणपति उर दीजै सब सुख कीजै सुनहु धर्म सुत भूपा। तन मन सुख सालसा वरदाता गणपति को जे ध्यावहि सो नर परहि भव कूपा। दो०। गणपति को व्रत जे करहि ध्यान धरहि चित लाइ। ताके सर्व मनोरथ पुरवहि श्री यदुराइ। ५२ इति श्री वेदव्यास वानी मोतीलाल भाषा कृते गणेश चौथिनी कथा समाप्तं शुभ मस्तु संवतु १८६२ सन १२१३ कार शुक्ल पक्ष १५ लिषितं परवेहा लिया जो देषा सो लिषा।

Subject.—(१) पृ० १ से २ तक—धर्मराज का कृष्ण से वन से घर शीघ्र पहुंचने के निमित्त साधन पूछना

(२) पृष्ठ ३ से ४ तक—गणेश महिमा। पृ० ५ से १३ तक—उमा के घर नारद आगमन, उमा से नारद का कथन कि शिव मुंडमाल क्यों धारण किये हैं। जब उमा न बता सकी तो शिव से पूछने के लिये कथन। शिव के आने पर उमा का उनसे उक्त शंका करना। शिव का बताना कि यह तुम्हारे उन मुंडों की माला है जब तुम्हारा शरीरपात होता है। शिवा का कथन कि आपके अनेक जन्म क्यों नहीं, शिव कथन कि बीजमंत्र जानने के कारण। शिवा का भी बीज-मंत्र पूछना सब जीवों का भगाना, १२ वर्ष तक बीज मंत्र कथन, अंडे से तोते का श्रवण, पार्वती का सो जाना शिव जी का जान कर शुक के पीछे धाना। उसका व्यासाश्रम में जाना, शुकाचार्य्य का जन्म।

(३) पृ० १४ से २६ तक—शिव का उमा को निकाल देना, षडनन के पास पहुंचना तपस्या के लिये माता से प्रार्थना, गणेशोत्पत्ति।

(४) शिव गणेश युद्ध, गणेश शिरच्छेदन, उमा की प्रार्थना पर हाथी का सिर लगाना गणेश का बुद्धिमान सिद्ध होना।

(५) पृ० २७ से ४४ तक—गणेश पूजन करने वालों का इतिहास।

(६) पृ० ४५ से ५० तक गणपति पूजन विधि।

No. 282(*b*). Ganeśa Kathā by Motīlāla. Substance—Country-made paper. Leaves—13. Size—13 × 5 inches. Lines per page—24. Extent—450 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1910 or A. D. 1853. Date of Manuscript—Samvat 1940 or A. D. 1883. Place of deposit—Ṭhākura Chhatra Siṁha, Kaṭailā, Post Office Fakharpur, District Baharāich (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः अथ गणेश कथा लिख्यते ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ दोहा—बंदि चरण रवि दिज हरि हर गिरि मनुलाइ। सैल सुता सुत को कथा कहौं सुनो मनु लाइ ॥ रामकृष्ण भ्रातन सहित सिय रुकुमिनि तिय धाम। बुद्धि बढावै सकल मिलि पुनि पुनि करौं प्रनाम ॥ कथा कहौं गण-नाथ की पार उतार बलवीर। बुद्धि हीन निज जानि कै सुमिरौ तनै समीर। राख्यो बाच। एक समै बूझत भये हरिहि युधिष्ठिर राइ आनि महा संकट परे केहि उपाय ते जाइ। चौपाई ॥ सुनहु कृष्ण देवन के देवा। निगम शेष विधि पायो

न भेवा ऐसे प्रभु तुम दीनदयाला। सदा करहु दासन प्रतिपाला॥ बिपति हमारो बिलोकहु स्वामी। कृपासिंधु तुम अंतरजामी॥ छल कीन्हें जिरजोधन राजा। जीति लियो महि राज समाजा॥

End.—व्रत सो होम करै चित लाई। ताके बुद्धि होय अधिकाई॥ मास असाढ़ चैाथ अंधियारी। कंवल फूल कर लेइ बिचारी। अग्निक सहित होम चित लावै सो नर मन बांछित फल पावै। सावन कृष्ण चैाथि अब आवै। कुसुम सिहोरे केर मंगावै। सबलिहु सहित नैवृत सो मोदो। देव दैत्य ताके बसि होहो। दोहा। इहि विधि बारह मास करि कह्यो भूप समुझाई। विधि सो पूजहु गणपती सब संकट मिटि जाइ। चैापाई—यह सुनि धर्म तनय सिर नाये। हरि पद को रज नयन लगाये। यहि विधि कह्यो कृष्ण व्रत रीति। तेहि विधि राजै कीन्हो प्रीति॥ गणपति की महिमा अपारा। मारि सत्रु कीन्हें बैपारा। सुख सो राज महीपत कीन्हा। गणपति की दाया लिपि लीन्हा। जो गणपति को व्रत चित लावै। रिद्धि सिद्धि अणमादिक पावै। नारी पुरुष करै व्रत जोई। सर्व सिद्धि फल पावै सोई। जो यह कथा सुनै अरु गावै। ताके काल निकट नहि आवै। गणनायक की कथा यह संस्कृत मध्य भुपाल। जथा बुद्धि भाषा रची पंडित मोतीलाल। इति श्री मोतीलाल पंडित विरचितायां गणेश कथा समाप्तम् संवत १९१० कातिक बदी ११ गणेश कथा लिख्यते देवीदीन गुजवली सुभ गुरुवासे।

Subject.—गणेश की कथा

No. 282(c). Gaṇeśa Purāṇā Bhāshā by Motīlāla. Substance—Country-made paper. Leaves—19. Size—8 × 5 inches. Lines per page—22. Extent—318 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1893 Samvat or 1836 A.D. Place of deposit—Ṭhākura Mahesa Siṁha, Village Kohali Bichai Singh kā Puravā, Post Office Kesargañja, District Baharāich.

Beginning.—श्री गणेशायनमः अथ पोथी गणेश पुराण प्रारंभः॥ दोहा॥ एक रदन गज बदन को पगु बंदैा कर जोरी। कृपा करहु सिव संकर बुद्धि बढ़ै जेहि मोरि॥ ब्यास आदि कवि पुंगवा नारद आदी मुनीसा। दिनकर ब्रह्मा सेस गुरु सब कहं नावैा सीसा॥ चैा०। राजा जुधीष्ठिर उवाच। सुनैा स्वामी तुम मदन गोपाला। सदा करैा संतन प्रतिपाला। विपति हमारी बिलोकहु स्वामी। कृपासिंधु उर अंतरजामी छल कीन्हो जुरजोधन राजा। जीती लीन्हीं मोर राज समाजा॥ बन निकारि दीन्ह दुषदाई। कानन फिरैा दुसह दुख पाई। तेहि तो

प्रभु विनवौं कर जोरी । केहि विधि पावौं राज बोहोरी । कृष्ण कहा सुनु वचन नरेसा । तुम हित लागि कहौं उपदेसा । पुजौ गनपति मन चित लाई । जेहि पूजे सब दुख मिटि जाई । विघन हरन है जाकर नामा । तेहि पूजै पइहौ विश्रामा

End.—मास असाढ़ चौथि जब पावै । कमल फुल कर लेइ मंगावै । ख्रुगति समेत होम जो करई । सो प्रानी पुनि देह न धरई । सावन चौथी भुप जब पावै । कुसुर सेहथा केर मगावै । ब्राह्मन वालो होम घृत करई । दानो देव वाके बस होई । दोहा० यहि विधि बारमास को कहौ भूप समझाइ । विधि सो पूजै गनपती सकल कष्ट मिटि जाय । चौ० ॥ सुनि कै धर्म तनय सिर नावा । धन्य गोपाल यह कथा सुनावा । जो विधि कृष्ण कहा व्रत जेतो । तेहि विधि सो नृप कीन्ह प्रतीतो । गनपति भई जो कथा अपारा मारे जो सत्रु लगी नहि वारा ॥ सुप समेत राज तब कीन्हा । गनपति को दाया लखि लीन्हा । गनपति केरी व्रत चित धाई । जो मनसा करु सो फल पाई । सिद्धि रिद्धि संपति धन अपारा । धरनि धाम सुत संपतिदारा । नारी पुरुष करै व्रत कोई । सकल सिद्धि फल पावै सोई । जो यह कथा सुनै औ गावै । अंतकाल सुर पुर पहुंचावै । गनपत को कथा यह संस्कृत मध्य विसाल जथा बुधि भाषा रचेउ अइ प्रति मोतीलाल । इति गणेश पुराण सम्पूर्णम । लिषतं प्रताप सिंह ठाकुर संवत १८९३ ॥

Subject.—पृष्ठ १ से १९ तक वंदना, पार्वती शंभु संवाद । एक समय धर्मराज का राज्य जाता रहा । उन्होंने श्री कृष्ण भगवान से अपना राज्य प्राप्त करने का उपाय पूछा, तो भगवान ने बताया कि गणेश जी की मन कर्म वचन से पूजा करो । उदाहरण रूप से कहा है कि एक बार शिव जी अपने दोनों पुत्रों को लेकर श्री विष्णु की सभा को गए वहां इंद्रादि ३३ कोटि देवता बैठे थे, भगवान ने दोनों पुत्रों को बुला कर दो मोदक दिखाये और कहा कि जो पृथ्वी की परिक्रमा पहिले कर आवेगा वह लड्डू पावेगा, एक पुत्र रथ पर बैठ गया और गणपति जी ने भगवान की परिक्रमा कर मोदक मांगे अतः उन्हीं को मोदक मिले । इसी १२ मास की पूजा पृथक् पृथक् वर्णित है । अंत में पूजा का फल कवि का नाम और लिखने वाले का संवत आदि है ।

No. 282(*d*). Gaṇesa Māhātmya Vrata by Motīlāla. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size 8 × 4 inches. Lines per page—16. Extent—400 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1903 or A. D. 1846. Place of deposit—Ṭhakura Madhorāma, Village Nautala, Post Office Sisaiyā, District Baharaich (Oudh).

Beginning.—श्रीगणेशायनमः दोहा ॥ सुमिरन करि गनेस को गुरु चरनन सिर नाइ। सोकल चौथि को महिमा कहौं सुनहु चित लाइ। दोहा राम कृष्ण भ्रातन सहित सिय रुक्मिनि पिय धाम। बुधि बढ़ावहु सकल मिलि पुनि पुनि करौं प्रनाम ॥ कथा कहौं गननाथ को पार उतारौ बीर। बुधि हीन निज जानि के सुमिरौं तनय समीर। युधिष्टरो वाच। एक समय पूछत भये हरिहि युधिष्ठिर राइ। आइ महा संकट परा जाइ सो कहिय उपाइ। सुनहु कृष्ण देवन के देवा। निगम सेष चिंतिपावै न भेवा ॥ ऐसे प्रभु तुम दीन दयाला। सदा करौ संतन प्रतिपाला ॥ विपति हमारि बिलोकहु स्वामी। कृपा सिंधु उर अंतर जामी। छल कीन्हौं दुर्जोधन राजा। जीति लिये मोहि राज समाजा ॥ अनुज समेत जुवति संग लाए। कानन फिरौं दुसह दुष पाये ॥ तेहिते प्रभु विनवौं कर जोरो। केहि विधि पाइये राज बहोरो ॥ श्री कृष्णौ वाच। कृष्ण कहा सुनहु यावन नरेसा। तव हित लागि कहौं उपदेसा। पूजहु गनपति कहं चित लाई। जेहि पूजे सब दुष मिटि जाई ॥

End.—यहि विधि बारह मास के पवन ब्याहि समुदाइ। विधि से पूजै गनपती सकल ब्याधि मिटि जाइ। यह सुनि धर्म तनै सिर नावा। धन्य कृष्ण यह कथा सुनावा। यहि विधि कृष्ण कहा सो कीतो। तेहि विधि राजा कीन्ह प्रति प्रीतो। गणपति की भइ कृपा अपारा। मारि सत्रु कीन्हेउ पैकारा। सुष सो राज महो पर कीन्हा। गणपति को महिमा लिषि दीन्हा। जो गणपति को व्रत चित लावै। मन वांछित नर सो फल पावै। रिधि सिधि धन धेनु अपारा। बरनि धाम सुत संपति दारा। जो यह कथा सुनै अरु गावै। अंतकाल सुरपुर सुष पावै ॥ दोहा ॥ गन नायक को कथा यह संस्कृत मध्य विसाल। जथा बुद्धि भाषा रचित जड़ मति मोतीलाल। इति श्री गनेस पुरी श्री कृष्ण युधिष्ठिर संवाद गनेस महात्म व्रत कथा समाप्त ॥ शुभ मस्तु। संवत १९०२ सन १२५४ फसली कातिक मास शुक्ल पक्षे तिथि पंचमी वार सनिवार दसषत भागीरथ मुकाम चौबड़िया पोथी रघुवर नाथ कै श्री राम श्री जानुकी सहाई गनेस जी सहाइ। श्री राम श्री राम ॥

No. 283(a). Prarthana by Motirama of Kaṭaila. Substance—Country-made paper. Leaves—3. Size—9½×5½ inches. Lines per page—16. Extent—25 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Gajadhara Maharaja, Village Nakaṭi, Post Office Chulwāriā, District Baharaich (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः

सवैया । गनिका गज गीध अजामिल और सधन रैदास धना कुवरी । द्रुपदी अरु दुल्ल कपोत मृगी गजराज की वार न देर करी ॥ जन मोतीराम कहै हरि सों हरि हो कहं तै सब की सुधरो । तब तो तुम देर करी न हरो अब काहे को देर करो हो हरी ॥ १ प्रहलाद की वार पिता सुत सों लखि वैर तुरंत भये नृहरी । ब्रज वासिन केरि पुकार सुनी नघ धारि गोवर्धन दुख हरी ॥ अघ वत्स वकासुर चोंच धरो नृप कंस की मृत्यु न देर करी । तब तो तुम देर करो न हरो अब काहे की देर करो हो हरी ॥ अर्जुन के प्रभु सार्थी भए दुर्योधन सैन्य संघार करी ॥ मथुरा मगधाधिप गांठि लिए क्षण एक में सैन्य संघार करो ॥ द्विज दीन सुदामा को विपति हरी वलि सनुक बाहुक वृंद करी । तब तो तुम देर करो न हरो अब काहे की देर करो हो हरी ॥

End.—सिव चापक खंड करो क्षण में मिथिलाधिप की तनया यों वरी । भृगुराज को मान हरो नृहरी सब भूपन को सिर नम्र करी । कपि बालि को प्राण हरो छल सों खरदूषण को शत खंड करो । तब तो तुम देर करो न हरो अब काहे को देर करो हो हरी ॥ बलि भूप की भूमि हरी सगरी प्रभु वामन रूप तुरंत धरो । नख सों उकराइक भेद करो सब लोक कृतार्पित करी सुरसरी । महि छोरि कै इन्द्रहिं दीन हरी उठि भीरहिं दर्शन को भगरी तब तो तुम देर""""॥ धुव संकर नाथ को नास भयो वसुरंध्र कवित्त के जन्म भये से सब शत्रुन नाश करै पढ़वै हरिगो कृत संत सहाय पड़े से बंधुआ सब छूटि गये घर को जन मोतीराम की टेर किपते ॥ आठो सिद्धि नवौ निधि पावत पाठ कवित्त के पाठ किपते । इति श्री भट्टाचार्य मोतीराम नन्द रामात्मज चैन राम पुत्र मोतीराम कृत प्रार्थना संकट मोचन सम्पूर्णम् ॥

Subject.—विष्णु की स्तुति ।

No. 283(*b*). Rāmāshṭaka by Paṇḍita Mōtirāma Miśra. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—5¼ × 4 inches. Lines per page—12. Extent—25 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1894 or A. D. 1837. Date of Manuscript—Samvat 1925 or A. D. 1868. Place of deposit—Paṇḍita Gokarṇa Nātha, Village Kudai, Post Office Fakarpur, District Bahraich (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः हेराम राघव रमेश्वरदीन वन्धो । लक्ष्मीपते दशरथात्मज सत्य संघ । श्री लक्ष्मणादि भरतादिक सेविताङ्घ्रे । सीतापते मपि निधे कृपा कटाक्षम ॥ १ ॥ हे गधि सुत मख रक्षण ताड़कारि मारीच मर्दन

सुबाहु बिनासि वाहो । पाषाण तारण विदारण राक्षसांना सीतापते मपि निवेदि कृपा कटाक्षम ॥ अनंट कंद जन कारन जानकोस प्रोच्चंड शंभु धनुः मर्दन भूपतोत्र । श्री जमदग्न्य मद भंजन हृष्ट जाते सोतापते मपि कृपा कटाक्षम ।

End.—आरुढ़ पुष्पक सुपुष्प वृष्टे त्रलोक । मंगल सुभंग नाय कीर्त । संप्रास कोंसल सुकोसल राज्य तोते । सीतापते मपि निधे कृपा कटाक्षम् श्री नन्द नंन्दन पद पद्म पुरुडरीकं निर्यम्म रन्द मधु तुंदिनमात्रसेन रामाष्टक विरचितं वरमादरेण श्री योक्तिकेन कविना कवि नायकेन । इति श्री महाचार्य नन्दरामात्मज चंदन राम पुत्र मेतोराम विरचिता रामाष्टकं सम्पूर्णम् शुभमस्तु ॥

No. 284(*c*). Padmāvata by Malika Muhammad Jāyasī of Jāyas, District Rae Bareli. Substance—Country-made paper. Leaves—318. Size—12½ × 6 inches. Lines per page—11. Extent—4,770 Anushṭup Ślokas. Appearance—Good. Character—Nāgari. Date of Manuscript—Samvat 1858 or A.D. 1801. Place of deposit—Mahanta Guru Prasāda, Hargaon, Post Office Parvatapur, District Sultānpur (Oudh).

Beginning.—कोन्हेसि पुरुष एक निरमला । नाम मुहम्मद पूरन कला ॥ प्रथम जाेति विधि तेहि के साजो । उनहों प्रथम सृष्टि उपराजो । दीपक लेसि जगत कहं दीना । भा निरमल जगमारग चीन्हा । जाे न मुहोत पुरुष उजियारा । सूझि न परत पंथ अंधियारा । औार फिर अमल सुमारग लिषा । भय धरमी जिन पारसा सिषा । जिन नहि लीन्ह जनम वर नांऊं । तिनकहं दीन्ह नरक महं ठांऊं । अति वसीठ दीन दोइ कीन्हा । दोउ जग तरत नाम वहि लीन्हा ॥ दोहा ॥ गुन औागुन विधि पूछि हैं हुइ है लेषा जाेष । आगे जे विनवातिहि पावा गति मोष ॥ चौपाई ॥ चारिमति जाे महमद ठांऊं । चारिहु के जग निरमल नाऊं । अबावक्क साद़ीक सयाने । पहिले दीन पंथ के माने । दूजे उमर ख़िताब सुहाये । भा जग अदल दीन जाे आये । औा उसमान भय पंडित गुनो । लिषा पुरान जाे आपन सुनो । चौथे अली सेर वरियारु । कांपे धरती सरग पतारु । चारों एक मते इकबाता । एक औा एक संघाता । वचन एक एकन सुना जाे सांचा । भा परिमान दुयो जग बांचा ॥ दो० ॥ जाे पुरान विधि पठवा सोई पढ़त ग्रंथ । औार जाे आवत भूले, सो सुनि पावत पंथ । सेरन साह दिलो सुलतानू । चारिहु ´ड तपै जस भानू । अस वहछाज छात्र अरु पाटू । सब राजन भुंइधरा लिलाटू । जती सूर औा षांड़े सूरा । औार वलिहोन मति सब विधि पुरा । सुर अवर जाे नैायइ आय । सातव दीप वोनइ वनय । जहं लगि राजपर्ग वल लीन्हा । इस कंदर ज़ुल

करन जु कोन्हा। हाथ सुलेमां केरि अंगुठी। जग को चोन्ह दोन्ह तेहि मूठी। भुंइ पहार लहि सृष्टि संवारो। घस वर साह पुहिम पतिआरो। देहि असोस महम्मद जुग जुग भुजहुराज। पातसाह तुम जग के जग तुम्हार मुहताज। बरनहु सुर पुहुम पतिराजा। भूमिन सहै भार ओ साजा। × × सय्यद असरफ पोर पियारा। जिन मोहि दोन्ह पंथ उजियारा × × × एक नयन कवि मुहमद गुनो। सो कवि मोहे जो कवि सुनो। × × चारि मोत कवि महमद पाये। जोरि मिताई सिर पहुंचाई। मलिक इसफ बड़ पंडित ग्यानो। पहिले भेद बात उन जानो। पुनि सिलार कादो महिमाहीं। खड़ग दान ऊभ नित बाहा। मियां सलोने सिंह समानि। वोर खेत रन खरग जुझारे। सेष बड़े बड़ सिद्ध महाना। करिआदेश सिद्ध बड़ माना। जारस नगर धर्म अस्थानू। तब वासह कवि कोन्ह बखानू। कै.................

End.—एक पुरुष को एकहि थानू। एक चांद एकहि पुनि भानू। जो सब कर पर पुरुष अहई। एक ते एक रूप जा पुनि ताहीं। घह घह दीपक लेहु ग्याना। नाहीं तेल जरु अभिमाना। पांचहु मिलि के नाचहु ताहां। आइ पुरान पूर्वतम जाहां। जन्म मरन परहि जेहि थाता। वहि के रंग रहसि जो राता। नाहित जन्म जन्म पछिताहू। रहटिघरी अस फिरि फिरि आहू। बास पाइ वह बाजनि भूलहु। करि करि कवधि देहिं अन फूलहु ॥ दोहा ॥ सुष संवाद जनि भूलह हुइ है अन्त के छार। नाहीं ताे पछिताइ हैं वहि पांचो करि छार। इति श्री पद्मावत कथा मलिक मुहम्मद कृत सम्पूरन शुभ मस्तु—जा इदं पुस्तकं दृष्टावाहश्यं लिपि मया जदि शुद्धं अशुद्धा वा मम दोषो न दीयते सम्वत १८५८ चैत्रमासे कृष्णपक्षे पंचमायाम् गुरु वासरे मद्मावत ग्रंथ सम्पूर्ण शुभमस्तु।

Subject.—(१) पृ० १ से २४ तक—जन्म खंड। (२) पृष्ठ २५—२८ तक सरोवर खंड। (३) पृ० २९ से ३२ सुवा खंड। (४) पृ० ३३ से ४८ तक श्रंगार खण्ड। (५) पृ० ४९ से ६० तक जोगी खंड। (६) पृ० ६१ से ६४ तक पयान खंड। (७) पृ० ६५ से ६६ तक गजपति खंड। (८) पृ० ६६ से ८६ तक बसंत खंड। (९) पृ० ८७ से ९६ तक सैना खंड।। (१०) पृ० ९६ से १०२ तक बसीठ खंड। (११) पृ० १०३ से १३० तक विवाह खंड। (१२) बैराहर खंड पृ० १३० से १३६ तक। (१३) पृ० १३७—१५६ तक बारह मास पदुम। बारह मासा—१५६ से १६० तक—(१५) पृ० १६१ १५८ तक—जोगिनी चक्र खंड। १६० से २०८ राघौ चेतन खंड। (१७) पृ० २०८ से ३१८ तक सम्पूर्ण युद्धादि वर्णन सहित पृ० ३१८ तक

No. 284(b). Padamāvati Kathā by Muhammad. Substance—Country-made paper. Leaves—160. Size—$11\frac{1}{2} \times 7$

inches. Lines per page—40. Extent—5,600 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Manuscript—1275 Fasali or 1858 A. D. Place of deposit—Kunja Bihāri, Bihatā, Rae Bareli.

Beginning.—श्री गणेशायनमः अथ पोथी पदुमावती लिष्यते।

चैापाई ॥ सवंरा आदि एक करतारू—जेइ जिउदीन्ह कीन्ह संसारू कीन्हेसि पृथवी आति प्रगासू—कीन्हेसि नव पर्वत कैलासू कीन्हेसि अगिनि पवन जल षेहा—कीन्हेसि बहु तरंग पा रेहा कीन्हेसि धरनी सरग पतारू—कीन्हेसि वरन वरन औतारू कीन्हेसि स्याम सेत बरम्हंडा—कीन्ह भुवन चौदह नव षंडा कीन्हेसि दिन दिनकर ससि राती—कीन्हेसि नषत तराइन पांती कीन्हेसि धूप सीत पर छाहा—कीन्हेसि मेघ बीज जेहि मांहां कीन्ह सबै अस जाहिकर दुसरेह छाजै काइ पहिले टइउ नांउलै कथा करो परमाह॥

End.—एक पुरुष के एकै भानु—एक चांद एकै पुनि भानु जो सब कर पर पुरष आहो—एकते करु पूजा पुनि ताही ब्रहमह दीपक लेसहु ध्याना—नाहीं तेल जाउ अभिमाना पांचहु मिलि कै नाचहुं ताहां—भाइ पुरान पुरष तम आहां जनम मरन परै जेहि बाता—वहि के रंग रहसि जो राता नाहि तो जन्म जन्म पछिताहु—रह रह धरा अस फिरि फिरि जाहु बास पाइ इहु बाजनि भुलहु—कारि कारि कवच देहि जनि फूलहु सुष संवाद जनि भुलहु हो इहि पंत वेकार—नाहीं ते। पछिताउ है। यहि पांचो करु छार। इति श्री कथा पदुमावती सपुर्णम् सुभ मिती भादों बदी १३ सन १२७५ साल।

No. 285. Bhāwara-gita by Mukunda. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—11 × 5 inches. Lines per page—9. Extent—190 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1906 or A. D. 1849. Date of Manuscript—Samvat 1906 or A.D. 1849. Place of deposit—Paṇḍita Rāmaprapanna Mālaviya Vaidya, Sultānpur (Oudh).

Beginning.—ऊधै। का उपदेश सुनहु ब्रजनागरी। रूप सील लावन्य सबै गुन आगरी॥ प्रेम सुधा रस रूपनी, उपजावत सुष पुंज। सुंदर स्याम विला(सि)नी नव वृंदावन कुंज॥ सुनैा ब्रज नागरी॥१॥ कहो स्याम संदेस एक मैं तुम पै लायो। कहन समै संकेत कहूं औसरहि (न) पायो॥ सोचत ही मन मैं रह्यो कब पाऊं एक ठांउं। दै संदेस नंदलाल का बहुरि मधुपुरी जाउं॥ सुनैा ब्रज

नागरो ॥ २ ॥ सुनत स्याम को नाम ग्राम गृह की सुधि भूलो। भरि आनन्द रस हृदौ प्रेम बेलो द्रग फूलो ॥ पुलकि रोम सब अङ्ग भये भरि आये जल नैन। कंठ छुटे गदगद गिरा बोले जात न बैन ॥ ३ ॥ विवस्था प्रेम की ॥

End.—सुनत सखा के बैन नैन भरि आये दोऊ। बिव्हल प्रेम आवेस रही नाहिन सुधि कोऊ ॥ रोम रोम प्रति गोपिका ह्वै गई सांमरे गात। कल्प तरोवर सामरौ ब्रज बनिता भई पात ॥ उलहि सब अंग अंग ते ॥ ७३ ॥ ह्वै सचेत कहि भले सखा पठयो सुधि लावन औगुन हमरे आनि तहांते लगे दिखावन ॥ मो मैं उन मैं अंतराय एको छिन भर नहि। ज्यों देखो मो मांझि वे त्यों मैं उनही मांहि ॥ तरंग बारि ज्यों ॥ ७४ ॥ गोपी भाय दिखाय एक करि के बनमाली। ऊधौ को भर्म निवारि व्यामोह को आली ॥ अपनौ रूप दिखाय कै लीनौ बहुरि दुराय। जन मुकुंद पावन भयौ सो यह लीला गाय ॥ प्रेम रस पुंजनी ॥ ७५ ॥ इति श्री भवर गीत संपूर्णम् ॥ संवत १९०६ ॥ मिति कार वदि ॥ ६ ॥

Subject.—(१) पृ० १—८ तक—उद्धव तथा व्रज वनिताओं के प्रश्नोत्तर-उद्धव का जोग तथा निराकार वर्णन, सखियों का प्रेम ॥

(२) पृ० ९—१२ तक—गोपिकाओं का ध्यानावस्थित होकर उन्माद की सी दशा दिखाना और कृष्ण को उपालम्भ देना।

(३) पृ० १३—१६ तक—एक भ्रमर आगमन, उससे गोपियों का उलाहना देना और डाट डपट करना।

(४) पृ० १७—२० तक—गोपियों का एक दम मिल कर रुदन करना, ऊधव का प्रेम में निमग्न होना तथा आकर कृष्ण को समझाना। कृष्ण के प्रेम पूरित नेत्रों से अश्रु निकलना। ऊधव को गोपियों का तथा अपना एक रूप दिखा कर कृष्ण का भ्रम निवारण करना। ग्रंथ समाप्ति ॥

No. 286. Raghunātha Śataka by Paṇḍita Munnālāla. Substance—Country-made paper. Leaves—34. Size—9 × 6½ inches. Lines per page—16. Extent—580 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1931 or A.D. 1874. Place of deposit—Paṇḍita Rāmajiyāwanā Lāla, Village Daulatapura, Post Office Bilaharā, (Bārā Bankī).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ श्री आनन्द कंद रघुनन्दनाय नमः ॥ दोहा ॥ विधि हरि हर जाको सदा जपत रहत हैं नाम। बसहु निरंतर मोहि मैं सिया सहित सो राम ॥ १ ॥ सिया रमन के चरन हैं करन सकल मुद मूल।

कंज वरन असरन सरन सुषमा भरे अतूल ॥ २ ॥ ए मेरे मन मधुप तू तौ तिहि से कर प्रेम। सो कर हित सब लोक में जो चाहत निज छेम ॥ ३ ॥ सरनागत वत्सल नहीं ऐसो नायक और। ताते रघुनायकहि भजु सुखदायक सिर मौर ॥४॥ समाधान कवि कृत ललित लछिमन शतक निहारि। ताहि सोधि मुद्रित कियौ परम विचित्र विचारि ॥ ५ ॥ भई लालसा चित्त में ऐसेई अभिराम। करहु शतक रघुनाथ के रसकनि कों सुखधाम ॥ ६ जिन्हें सुनत रघुनाथ में उपजे पावन प्रीति। सत कवित्त ऐसे धरों तामें सुगम सुरीति ॥ ७ ॥ तब कवित्त सत कविन के ले द्विज मुन्नालाल। करत शतक रघुनाथ के सुखदायक सब काल ॥ ८ ॥

End.—अथ सवैया—सुत काजहि में पगिबो अतिही यह तैान भले जनको मगु है। सुत दारिन में भरिबो अति नेह भुजंगम पै धरिबो पग है ॥ हनुमान कहै भव सागर के तरिबे को या मेरो कहो डगहै। अपनो कछ राम सिया वर को अपनो न कोऊ सपनो जग है ॥ ५ ॥ सत संगति को करिके मन ते दुर बुद्धि के भाव भगावने हैं। गुरु जे उपदेश कियैा तिनको कहुं बैठि इकंत जगावने हैं ॥ हनुमान जिते कहैं बैन तिते छल छन्दन के नहि भावने हैं। विषयादिक सों रति में न चहों रघुवीर में प्रेम लगावने हैं ॥ ६ ॥ या जग जीवन को है यहै फल जो छल छांड़ि भजै रघुराई। सोधिकें संतत संतन हू पदमाकर वात यहै ठहराई ॥ कै रहै होनो प्रयास विना अनहोनो न कै सकै कोटि उपाई ॥ जो विधि भाल में लीक लिखी सु बढ़ाई बढ़ै न घटै हू घटाई ॥ ७ ॥

> वैस विलासिन जाति वही उमही छिन ही छिन गंग की धार सो।
> त्यों पदमाकर पेलनियां अजहूं न भजे दसरत्थ कुमार सो ॥
> वार पके थके अंग सबै मति मोच गरेही परी डुरि हार सो।
> देखै दशा किन आपनी तू अब हाथ के कंकन कों कहा आरसो ॥ ८ ॥

×   ×   ×   ×
×   ×   ×   ×

इति श्री हरनाथात्मज पंडित मन्नालाल कृत रघुनाथ शतक संग्रह समाप्त पाैष कृष्ण दशम्या १० शनौ संवत् १९३१।

Subject.—(१) पृ० १—१६ तक—मंगलाचरण, ग्रंथ निर्माण हेतु तथा उद्देश, रामजन्म, राम वाल क्रीड़ा, मृगया वर्णन, धनुष यज्ञ, जनकपुर की स्त्रियों के मुख से राम की सुंदरताई तथा उनके सभी भाइयों की शरीर सुषमा का वर्णन—राजकुमारों के वस्त्राभूषण तथा अंगरागादि का वर्णन। धनुष भंग के समय राम की छवि का वर्णन।

(२) पृ० १७—३४ तक—रावण से धनुष न टूट सकने का कथन, धनुष भंग होने का वर्णन। राम द्वारा की गई कुछ यज्ञ-वार्ताओं का वर्णन। राम की विविध कवियों द्वारा गाई हुई विरुदावली॥

No. 287. Jñānachandrōdaya (Dōhā Vishṇupada) by Śrī Murlidhara Jaduvaṁśī of Barasānā. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—$6\frac{1}{2} \times 3\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—5. Extent—66 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—1812 Saṁvat or 1755 A.D. Place of deposit—Paṇḍita Lakshaman Prasādaji, Village Bhiyā Mau, Post Office Haidargarah, District Bara-bankī.

Beginning.—श्री लाड़ली जी सहाय। अथ बरसाने के विष्णु पद और दोहा लिख्यते। क्षीर समुद बैकुंठ में वेद कहत निज धाम। सो मैं देख्यो जाइ कै बरसाने विश्राम॥ १॥ राग सोरठी-विष्णु पद। परवत पर राजत श्री ठकुरानी। नंद नंदन ललितादिक वनिता दरसन रहत लुभानी॥ निदत सरदचंद मुख शोभा रतिहु रहत लजानी। नेक कोर की कृपा कीजिये मुरली करत बखानी॥ २॥

End.—अथ ठाकुर ठकुरानी को सेज पर उठि बैठिबो वर्णन॥ राग विभास॥ विष्णु पद॥ भानु दोउ शोभित हैं अलसाने॥ कमल नैन पर मुकुलित देखियतु भ्रमर रहत भ्रमसाने॥ काक पक्ष विगलित पलकावलि करि नहि सकत पयाने॥ मुरलीधर मुखशोभा ऊपर भयो विभास हुलसाने॥ २०॥ अथ प्रात वर्णन। विष्णु पद॥ प्रात समय राधा हरि राजत॥ घूंघट में मन मथ मनु बैठ्यो बान कटाक्षन साजत॥ चंचल चारु नैन ता भीतर युगल मीन लखि लाजत॥ मुरलीधर विभास अलाप्यो मंद मंद धुनि बाजत २२॥ अथ विष्णु पद को दोहा वर्णन॥ दोहा॥ प्रेम द्विविंशति २२ भानु पठि चित्त में होत प्रकाश। रीझि समुझि नर कहत हो अघ तम होत विनाश॥ २३॥ इति श्री ग्राम बरसाने वासी यदुवंशावतंस श्री मुरलीधर विरचितायां ज्ञान चन्द्रोदय दोहा विष्णु पद समाप्तं शुभ मस्तु॥ पक्षि चन्द्र वसु चन्द्र १८१२ पुनि संवत्सर परिमान॥ एका-दशी कुजवार को कीन्हों प्रेम बखान॥ २४॥

Subject.—(१) पृ० १—बरसाने की प्रशंसा और लाड़िली जी की वन्दना। (२) पृ० २ से पृ० ३ तक—कुंवरि लड़ैती के बरसाने का वर्णन। (३) पृ० ४—संकेत से कदम खंडी और पाहर खंडी में होकर गहवर में जाना—सखी का मनोरथ वर्णन। (४) पृ० ५—अथ लाल को ललिता में सखी

भाव का लोला हाव वर्णन। (५) पृ० ६—७ तक—पूर्वाराग से लेकर विभास तक ठाकुर और ठकुरानी अकेले गहवर वन को गये तहां सखियों के जाने का वर्णन। (६) पृ० ७—९ तक—गहवर से राधा हरि के मंदिर के पाने का वर्णन। (७) पृ० ९—१० तक—बरसाने की आरती का वर्णन। (८) पृ० ११—१३ तक—भगवान के मंदिर में सुशोभित होने का वर्णन। (९) पृ० १३—१४ तक—लाड़िली की प्रीति का वर्णन। (१०) पृ० १४—१५ तक—लाल, लाड़िली का शयन बर्णन। (११) पृ० १६—१७ तक—सखी ठाकुर के उठाने का वर्णन। (१२) पृ० १७—१८ तक—प्रभात वर्णन। (१३) पृ० १९—२० तक—दोहा विष्णु पद।

No. 288(*a*). Nakha-sikha by Muralīdhara Misra of Āgra. Substance—Country-made paper. Leaves—16. Size—8½ × 5½ inches. Lines per page—26. Extent—200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1902 or A.D. 1845. Place of deposit—Paṇḍita Badarinātha Bhaṭṭa, Professor, Lucknow University.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नष शिष लिख्यते ॥ कोटि कोटि दामिन की दुति देखि वारि पति संवराई वारियत कोटि घन घोर को। जटित जराइ टीकौ सोहतु लिलाट नीकौ तैसे चारु चन्द्रिका विराजे माथे मोर को ॥ तिहू लोक भामा अंग अंगनि जगमगाति मुरलीधर तैसियै चितौनि चित चोर की ॥ कुंज के सदन सुख सरस वरसावत हैं वलि वलि जैये ऐसे जुगल किसोर को ॥ १ ॥

तीन लोक ठाकुर सदा दूलह नंद कुमार।
दुलहिन रानी राधिका नष शिष शोभ अपार ॥ २ ॥
व्याप रही सब जगत में जिनकौ जुगल स्वरूप।
वृन्दावन क्रीड़ा करत सदा सनातन रूप ॥ ३ ॥

End.—धन्य भाग व्रज के जहां लीयौ दुहिनि अवतार।
जगत कृतारथ कौ कियौ जिनिके प्रेम प्रकार ॥ ६० ॥
यह नष सिष पोथी रची मुरलीधर सुख कारि।
भूल्यो होहुं जहां कछु लोजो सुकवि सुधारि ॥ ६१ ॥

इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचिते नष शिष संपूर्णम् ॥ संवत् १९०२ कातिक कृष्ण १३ सोमवार शुभम् भवतु लिषतं गोविंद राम पठनार्थम् ॥ शुभं ॥

Subject.—छं० १—७ तक सुंदरता वर्णन—छंद ८—१३ अंगुली भू वर्णन। पड़ो, पिंडुरी, जंघा, नितंब, कटि वर्णन ॥ छं० १४—२७ तक पीठ, उदर,

उरोज, कंचुकी, कर, कुच, मेंहदीयुत कर भुज, ग्रीव, चिबुक, ठोड़ी तिल, कपोल वर्णन । छं० २८—४१ तक—कपोल, अधर, दशन, रसना, मुसक्यान, मुख, नासिका, नथ, नेत्र, बरुनी वर्णन, छं०—४२—५२ भृकुटी, भाल, श्रवण, केश, मांग, चंदन, पाटी, बेनी, सर्वांग, भूषण, छं० ५३—६१ तक । शृंगार रस चेष्टा, सहज शृंगार, स्वरूप, ऐश्वर्य—

No. 288(*b*). Piṅgala Piyūsha by Muralidharā Miśrā of Āgrā. Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size—$8\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—26. Extent—1,040 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1813 or A.D. 1756. Date of Manuscript—Samvat 1903 or A.D. 1846. Place of deposit—Paṇḍita Badarīnātha Bhaṭṭa, Professor, Lucknow University.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥

रघुवर पद पंकज सुमिरि गनपति के गुन गाइ ।
कह्यो चहत पिंगल कछू सेसौ कौ मत पाइ ॥ १ ॥

मत्त वरन के छंद कौं सोहत सिंधु अपार ।
धन्नि सेस जिन पैरि कै पायौ याकौ पार ॥ २ ॥

बड़े बड़े सत्कविन के सुनि सुनि विविध विचार ।
मुरलीधर छंदनि रचत अपनी मति अनुसार ॥ ३ ॥

विविध भांति के छंद ते गुरु लघुही ते होत ।
यातें लच्छन दुहुनि के पहिले करत उद्दोत ॥ ४ ॥

वक्र रेखतें गुरु लखौ सूधो ते लघु जानि ।
इनिके कहतु स्वरूप अब पिंगल कौ मतु मानि ॥ ५ ॥

End.—विधि ससि वसु ससि में लयौ संवत पौष सुमास ।
शुक्लपक्ष नवमी गुरौ कीनौं ग्रंथ प्रकाश ॥ ८५ ॥

बहुत करी मैं चाकरी अब सेवतु रघुनाथ ।
देई सुख सब लेत है पालत सब के साथ ॥ ८६

यह पियूष पिंगल रच्यौ कृपा पाइ रघुनाथ ।
लीजौ सुकवि सुधारि कै कहतु जोरि कै हाथ ॥ ८७

इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचितं पिंगल पियूष ग्रंथ समाप्तं ॥ संवत १९०३ ॥ कार्तिक कृष्ण नवमी ९ शुक्र वासरे लिषो गोविंद राम शुभमस्तु ॥

Subject.—पृ० १-८ तक छंद की प्रशंसा, मात्रा, गण वर्णन, प्रस्तार विधि, गणमैत्री, मेरु, मर्कटी, पताका आदि वर्णन—पृ० ९—१७ गाहू, गाहा, गाहा भेद, विगाहा, गाहिनी, साहिनी, दोहा, रोला, सभेद, छंद, चौपैया, उल्लाला,- पृ० १८—३४ छप्पय भेद, गंगनाम आदि, मद, मधुभार आदि पृ० ३५—७८ तक, वर्णवृत्त, चूड़ामनि, चित्रपदा, मानवक, दीपक माला आदि तक-छंद वर्णन, संवत् आदि पृ० ७९—८० तक।

No. 288(*c*). Rasa Saṅgraha by Muralīdhara Miśra. Substance—Country-made paper. Leaves—56. Size—8½ × 6¼ inches. Lines per page—20. Extent—1,120 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1819 or A.D. 1762. Date of Manuscript—Samvat 1865 or A.D. 1808. Place of deposit—Ṭhakura Jadunātha Baksha Siṁhajī, Hariharapura, District Bahāraich.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रस संग्रह लिष्यते ॥ सवैया ॥ संकर के सब लाइक हौ सुष दायक हौ सुमिरौ गुन तेरे। कीजै कृपा करिकै इतनो बुधिवानो मैं होहि विलास घनेरे। विघ्न विनासन हौ तुमहीं मुरलीधर काजकरौ बहुतेरे। चाहत हौं रस ग्रंथ रच्यौ गणनायक होहु सहायक मेरे ॥ १ ॥

दोहा ॥ पहिले मैं नव रसनि के रागे कवित बनाइ।
तिनकौ अब संग्रह करतु गनपति सीस नवाइ ॥
रस कहियतु है ब्रह्म को व्यापि रहौ सब ठौर।
नौ प्रकार सो जानियो कहत सुकवि सिर मौर ॥
प्रथम नाम सिंगार है दूजो हास गनाइ।
तीजो करुना कहत हैं चौथो रुद्र सुभाइ ॥
पुनि है वीर सु पांचवो, षट बीभत्स बखान।
भय को सतयों समुझियो अठयों अद्भुत मान ॥ ५ ॥

End.—नौहू रस के कवित को समुझि हिय समुदाय।
रस संग्रह या ग्रंथ को धरो नाम कविराय ॥ ३३ ॥
जो कोऊ या ग्रंथ कौं पढ़ै सुनै चितलाइ।
ताके मन में रस झलक झलकत है कछु आइ ॥ ३४ ॥
नृप वसु ससि अंकनि लखौ संवत फागुन मास।
असित पक्ष दसमी रवौ कीनो ग्रंथ प्रकास ॥ ३५ ॥

इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचिते रस संग्रह ग्रंथे सतै सा सर्ग संपूर्णम् चैत्र मासेकृष्ण पक्षे तिथौ एकादस्यां सोम वासरे संवत् १८६२ ॥ लिषि जिउराम्न सुक्ल शुभं भूयात् ॥

Subject.—पृ० १—६ तक गणेशवन्दना, ग्रंथ निर्माण, रस वर्णन, श्रृंगार वर्णन, हैलो, लीला वर्णन।

पृ० ७—८ तक विवाह समय वर्णन। तीज त्योहारो, दिवारी, वसंत, होरी, चांदनी आशिर्वादादि, संयोग श्रृंगार

पृ० ९—२२ तक वियोग श्रृंगार, पूर्वानुराग, उपालंभ मान, रसाभास, धीरा, धीराधीरा, सखीकर्म कथन, हास्य, दूतीकर्म, करुण विरह, उत्कंठिता, कलहंतरिता, वासकसज्जा, दशा, अभिलाष, स्मृति, गुण, उद्वेग, प्रलाप उन्माद, व्याधि, जड़ता वार्ता, संदेस, वात्सल्य।

पृ० २३—२४ तक हास रस कथन, स्वनिष्ट लक्षणादि परनिष्ट।

पृ० २५—२६ तक करुणा रस कथन, स्वनिष्ट पर निष्ट कथन।

पृ० २७—२९ तक रौद्र रस।

पृ० ३०—३२ तक वीर रस वर्णन, युद्धवीर, दानवीर, कीर्ति वर्णन, अस- दशरथ दान, दयावीर

पृ० ३३—३४ तक वीभत्स रस वर्णन।

पृ० ३५—३६ तक भयानक रस वर्णन पृ० ३७–३८, तक अद्भुतरस वर्णन।

पृ० ३९—५६ तक शांतरस, स्तुति वर्णन, जमुना, मथुरा, शिव, गंगा, अयोध्या भवानी, सूर्य, काशी, सरयू, रचना वर्णन।

No. 288(*d*). Rasa Saṅgraha by Muralidhara Miśra. Substance—Country-made paper. Leaves—33. Size—13 × 6 inches. Lines per page—12. Extent—1,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1820 or 1763 A.D. Date of Manuscript—Samvat 1893 or A.D. 1836. Place of deposit—Mahārāja Rājendra Bahādur Siṁha Bhingārāja, Bahrāich (Oudh).

Note.—शेष सब No. 288 (*c*) के अनुसार है।

No. 289(*a*). Ashṭayāma by Nābhā Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—175. Size—½ × 4½ inches. Lines per page—7. Extent—941 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—

Samvat 1890 or A.D. 1833. Place of deposit—Lalā Rāmādhina Vaidya, Bārābanki.

Beginning.—श्री जानकी वल्लभायनमः ॥ सोरठा ॥ राम कृपा को रूप बंदो श्री गुरुपद ॥ जिनको सुजस अनूप दशधा सम्पति प्रनद जिमि ॥ १ ॥ दोहा ॥ सिय पिय को आन्हिक चरित कहत सुकवि सकुचात । तहं ममगति अति पगम लषि छिन छिन अधिक रुकात ॥ २ ॥ नित्य श्री नृप मंदलौं अवधि अखंड विहार ॥ ज्येहि स्रवत चहुंओर नित प्रभुके सब अवतार ॥ ३ ॥ जानकि वल्लभ लाल को जीवनधन यहि धाम ॥ द्वादस रस लीला अमित गुन समूह विश्राम ॥ ४ ॥ कहं प्रगट ऐश्वर्य अति कहुं संयोग वियोग । जुगल संधि माधुर्य रति नित्य दिव्य सुख भोग ॥ ५ ॥ सज्जन उर प्रेरित गिरा रघुवर आज्ञा दीन ॥ सोवल मन अवलम्ब लहि वचन शोश धरि लीन ॥ ६ ॥

End.—(बरवा) सषि सुषमा सुष सागर सुंदर सोइ । राम कुंवर अनुहरिया लषेउ न कोइ ॥ १ ॥ मंद मंद मुष बिहसनि मधुर सुबोल ॥ राम कुंवर चितवनियां लीन्हेउ मोल ॥ २ ॥ बिनु देषें दोउ अषियां अति अकुलांहि । तलफत मोर जियरवा निकसत नांहि ॥ ३ ॥ हा रघुनंदन चंदन सीतल अंग ॥ विकल बाल विरहिनियां बिन पिय संग ॥ ४ ॥ अषिमन मोहन सोहन जोहन जोग ॥ छोहन जियत जियरवा भामिन भोग ॥ ५ ॥ ललित अंग सुष आमोद नामहिं देहु ॥ पीतमलाल पियरवा यह जसु लेहु ॥ ६ ॥ × × ×
× × × × × ×
सषि हम राम कुंवर कहं तन मन दीन ॥ सुर नर मुनि सब देषत हंसि हंसि लीन ॥ १२ ॥ संवत् १८९० ॥ मिति अषाढ़ शुक्ल द्वितीयायां ॥ बुध वासरे समाप्तं ॥ दोहा ॥ श्री मध अगर सागर सुमनि नाभा अलि रसलीन । अष्टजाम सियराम गुन जलधि कीन मन मीन ॥

Subject.—(१) पृ० १—१९ तक—गुरु वन्दना प्रस्तावना. कवि का नाम निर्देश—सोरठा ॥ नाभा श्री गुरुदास सहचर अग्र कृपाल को । विहरत सकल विलास, जगत विदित सिय सहचरी ॥ सीता जी की वन्दना, अवध की शोभा का वर्णन, उसके वैभव का वर्णन, चार दरवाजों का वर्णन, साकेत की सीमा, द्वादश वन वर्णन, वनो की शोभा, नगर के तीन ओर सरयू का वरनन, परिखा तथा कोट की शोभा, सिंह पैारादि शोभा, सिंह पैार के हाथी घोड़े इत्यादि का वर्णन, गान वर्णन, कोट के भीतर के पांच चैाकों का वर्णन, रानियों के महलों की शोभा, राज पुत्रा तथा उनकी स्त्रियों के निवास भवनों का वर्णन ।

(२) पृ० २०—४० तक—रानियों के समाज में तिरहुत से आये हुए पत्र का सानन्द पाठ । चार दंड रजनी अवशेष रहने पर बन्दीगणादि का आगमन । राम

को सखियों का गाना कर जगाना, राम के पलंगादि की शोभा, जल पात्रों का वर्णन, सखियों का गजरा तथा गंधादि पदार्थ लाना, स्नानागार इत्यादि की शोभा—एक अन्तरंग का जा कर राम को जगाना, जगने पर रति चिन्हों को मिटा कर प्रगट होना। नित्य कृत्य से निश्चिन्त हो स्नान करना, हास्य विलास पश्चात् महलों से चल देना।

(३) पृ० ४१—५६ तक—आर्तों को दान देना। सखियों का आरती उतारना, सखाओं का मिलन, नगर वासिनियों का अटारियों पर चढ़ कर राम की शोभा देखना। सब भ्रातादि के साथ राम का बैठना, उधर श्री सीता जी के यहां सम्पूर्ण सखियों का आगमन, परस्पर का प्रेम व्यवहार। प्रातःकाल की आरती। सखियों का अपनी इच्छानुसार राम के अंगों को देख कर संतुष्ट रहना, स्नान को गमन।

(४) पृ० ५७—६६ तक—प्रत्येक राजकुमार का अपने अपने स्नान के स्थानों में जा कर स्नान करना, सखियों की केलि, स्नान पश्चात् मुनियों का आशीर्वाद देना, दान इत्यादि, महलों को आना।

(५) पृ० ६७—७० तक—महलों में आकर सखियों द्वारा शृंगार। सबेरे के भोजन का वर्णन। सखियों का गान। एक याम गत लख कर अंतःपुर के द्वार पर कुछ क्षण व्यतीत करना।

(६) पृ० ७०—९१ तक—भोजन—नाना प्रकार के पूरी पकवान तथा अचारादि का वर्णन, दम्पति का भोजनों के साथ साथ हास विलास, चन्द्रकला का तिरहुत के पत्र का वर्णन करना, सखियों का भोजन, पानों की बीड़ी परस्पर खिलाना। राम का शयन करने के लिये जाना। नाना भांति के वाद्यादि सहित गान, सोना, सखियों की परस्पर की केलि, राम का उठना।

(७) पृ० ९२—१३३ तक—राम सभा गमन। पिता का भ्राता, मंत्रियों इत्यादि के साथ व्यवहार के विषय में पूछना, खेलने की आज्ञा पाकर जाना, शिकार का वर्णन, अवध की वीथिकाओं में राम के शुभागमन पर स्वागत, बाग में जाकर फलादि पदार्थ भोजन, लक्ष्मणादि का घोड़ों को फेरना, घूमते घामते सिंह द्वार पर आगमन, वहां से सभों को विदा करना, सब माताओं से मिलना, पतंग बढ़ाना, संध्या समझ सबको विदा कर संध्या वंदन करना।

(८) पृ० १३४—१५५ तक—सीता के यहां गुरु नारियों का आगमन, सीता का उनको सुश्रूषा करना, सीता का सासुओं के पास जाना, लौटते समय बीच में पड़ने वाले स्थानों को तथा याम की शोभा का वर्णन, ऋतुओं का वर्णन।

रस मंजरी द्वारा दम्पति का शृंगार। अर्द्धरात्रि पश्चात केलि वर्णन। द्वादश हाव वर्णन। नृत्यशाला का वर्णन।

(९) पृ० १५६—१७० तक—हिंडोले का वर्णन। सोने के लिये पलंग का सजाया जाना। अंग आभरणादि का संभाला जाना। परदा डाल देना। सखियों का गान। गुरु का परिचय।

(१) श्री अग्रदेव गुरु कृपातें बाढ़ो नवरस बेलि। चढ़ो लह तो लाल छवि फूलो नवल सुकेलि॥

कोल कुंज की शाभा—

(२) श्री अग्रदेव करुना करौ सिय पद नेह बढ़ाय × × × ×

ग्रंथ समाप्ति।

(१०) पृ० १७१—१७२ तक—अग्रसुमति का वंश।

(११) पृ० १७३—१७५ तक—उपसंहार।

Note—गुरु वंश वर्णन।

श्री रामनंद रघुनाथ ज्यों कियो सेतु बिस्तार। तेहि चढ़ि नर भव सिंधु तरि पहुंचहि हरि दरबार। तासु शिष्य अंष्टांग विद नाम अनंतानंद। ज्ञान भक्ति वैराग्य निधि गुरुकुल कैरव चंद।

चो०—श्री कृष्णदास अवतार सुहावन। तेहि के अग्र सुमति जन पावन॥ तेहि के विमल विनोदी जानो॥ तेहिते ध्यान दास सनमानों॥ चरनदास मंगल गुनखानों॥ सिय पद लाल कृष्ण रति मानो॥ श्रीसुधरामदास तेहि केरे॥ रसिक राम सेवक प्रभु केरे॥ केसव कुंज सिया वर दासा॥ श्री जानकी शरण सिय वासा॥ सहजराम सियराम हजूरो। जुगलचरन रति मति अति पूरी॥ अग्र सुमति को बंस उदारा॥ भलो भाव रति जुगल विहारा॥ जानकि वल्लभ टेकलाल को॥ जै जै जै सिय विदित बालको॥

No. 289(*b*). Bhaktamāla by Nārāyaṇadāsa (Nabhādāsa). Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—14 × 7 inches. Lines per page—24. Extent—1,620 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1916 or A.D. 1859. Place of deposit—Paṇḍita Sarjūprasāda, Village Mahru, Post Office Matera, District Bahrāich (Oudh).

Beginning.—अथ मूल भक्तमाल नारायण दास कृत लिख्यते ॥ दोहा ॥ भक्त भक्ति भगवंत गुरु चतुरनाम वपु एक। इनके पद वंदन करत नासै विघ्न अनेक ॥ मंगल आदि विचारि कै वस्तुन और अनूप। हरिजन को जस गावते हरिजन मंगल रूप ॥ सब संतन निरनै कियो मति श्रुति पुरान इतिहास। भजिबे को दोऊ सुघर है कै हरि हरि के दास ॥ श्री गुरु अग्रदेव आज्ञा दई भक्तन को जस गाव। भवसागर के तरन को नाहिन आन उपाव ॥ छप्पै ॥ जय जय मीन बराह कमठ नरहरि बलि बावन परसराम रघुवीर कृष्ण कीरति जगपावन ॥ बुद्ध कल्की व्यास पृथु हरि हंस मन्वंतर। जग्य रिषभ हयग्रीव ध्रुव वरदैन धनंतर ॥ बद्रीपति दत कपिलदेव सनकादि करुना करौ। चौवीस रूप लीला रुचिर श्री अग्रदास यह उरधरौ ॥ चरन चिन्ह रघुवीर के संतन सदा सहाइका अंकुस अंबर कुलिस कमल जव ध्वजा धेनु पद। संष चक्र स्वास्तिक जंबुफल कलस सुधाहृद ॥ अर्धचन्द्र षटकोन मोनबिंदु उर्धरेषा ॥ अष्टकोन त्रयकोन इन्द्र धनुष पुरुष विसेषा ॥ सीता पति पद नित बसत एतै मंगल दायका। चरन्ह चिन्ह रघुवीर के संतन सदा सहायका।

End.—फल अस्तुति साषी ॥ पादप पेड़हि सींचते पावै अंग अंग पोष। पूरब जाल्यो बरनते सब मानियो संतोष ॥ भक्त जिते भूलोक में कथे कौन पै जाय। समुद्रपान श्रद्धा करै कहा तिरिया पेट समाय ॥ श्री मूरति सब वैष्णव लघु दीरघ गुनन अगाधु ॥ आगे पाछे बरनतै जिन मानौ अपराध ॥ फलकी सोभा लाभतरु सोभा फल होय गुरु सिष्य की कीरति में अचरज नाही कोय ॥ चारजुगन में भक्त जे तिनकी पद की धूरि सर्वसु सिर धरि राषिहौं मेरी जीवन मूरि ॥ जग कीरति मंगल उदै तीनो ताप नसाय। हरि जन की गुन बरनते हरि हृदय अटल बसाय ॥ हरिजन को गुन बरनते जो करै असुया आय यहां उहार बाढ़ै बिथा अरु परलोक नसाय ॥ भक्तदास संग्रह करै कथन श्रवन अनुमोद सो प्रभु को प्यारो पुत्र ज्यों बैठे हरि की गोद ॥ अच्युत कुल जस एक वेर है जाकी मति अनुरागी। उनको भक्ति भजन सुकृति को निश्चय होय विभागी ॥ भक्त दास जिन जिन कथी तिनकी जूठनि पाय। मो मति सार अक्षर द्वै कीनो सिलो बनाय ॥ काहु को बल जोग जग कुल करनी की आस भक्त नाम माला अगर उर बस्यो नरायनदास ॥ इति श्री भक्तमाल मूल श्री नरायनदास कृत समाप्त इति श्री मूल भक्तमाल नारायनदास कृत लिख्यते अयोध्याप्रसाद महरु ग्राम संवत १९१६ अमावस्या वैसाष मासे कृष्ण पक्षे रविवासरे।

Subject—नाभादास कृत मूल भक्तमाल का छंदानुवाद

No. 289(*c*). Rāmacharitra by Nārāyaṇadāsa (Nābhadāsa). Substance—Country-made paper. Leaves—21. Size—15 × 4

inches. Lines per page—20. Extent—472 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1914 or A.D. 1587. Place of deposit—Ṭhākura Jagadeva Simha, Village Gujaulī, Post Office Baunī, District Bahraich (Oudh).

Beginning.—बहु ग्रति कोमल बिछे गलोचा । सुमनन को रचना बिच बीचा ॥ कहुं कंचन को चौको धरो । श्री सरजु जल भारो भरो ॥ रतन जड़ित बहु धरे कटोरा । बहु मेवा जुत स्वाद न थोरा ॥ पान दान बीरन ते भरे । बर्णनित भाँति सुरभि पद धरे ॥ पुनि ताहो पाछे परदा डारे । तहं नूतन लोप ईठि सवारे ॥ प्रेम चवर नव सु मंजरी पुनिताह तीस सहचरो ॥ तीन पीछे ब्यालन बहुराजे । निज निज सौ लिये सब भ्राजे ॥ कोइ ताम्बल लिये कोई भारो । कोई सुमनन सिंगार सवांरी रंग रंग के ग्रगरा लीन्हे पीतम मग चितवत चित दीन्हे ॥ कंतहपुर को धुनि सुनि पाई । निज निज थल तिन सेज बनाई ॥ कोइ एक समै परभाती लिये सुगंध ग्रनेकन भांती ॥

End.—चौपाई ॥ ग्राय पलंग बैठे रंग भीने । सैन करन को इच्छा हय कीन्हे ॥ पैड़ीलाल हयापद लालत । रस मंजरो चवर सिर डारत ॥ रस मंजरी चरन तब लागो । सोय ग्रस शिर धरि ग्रनुरागी ॥

॥ दोहा ॥ जब लगो दमपति सैन करि परदा दीन्ह झुकाय । निज निज वई चली सकल मीनं सख्य सुनाई ॥ यहि बिधि प्रभु ग्रनेक चरित कीन्हो जथा मति गाइ । चक छमा कोजो रुजन सुनिये प्रोति लगाइ ॥ इति श्री राम चरित्र नारायणदास कृत सुम समाप्त कातिक मासे कृष्ण पक्षे तिथि ग्रमावस बिच धारा संमत १९१४ ग्राम गुजवलि लिषित देविदीन मुसदी समस्त ॥

Subject.—श्री रामचन्द्र ग्रौर सीता जी का प्रेम ब्यवहार ।

No. 290. Iśkachamana by Nāgara (Sāmanta Simha). Substance—Country-made paper. Leaves—9. Size—6 × 5 inches. Lines per page—14. Extent—55 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1812 or A. D. 1785. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Simha Kānthā, Unao.

Beginning.—श्री इष्ट देवजो ॥ दोहा ।

इश्क उसी को झलक है ज्यौं सूरज को धूप ॥
जहां इश्क तहं ग्राप है कादर नादर रूप ॥ १ ॥

कहुं किया नहिं इश्क का इस्तामाल सँवार ।
सो साहब सो इश्क यह क्या करि सकै गँवार ॥ २ ॥
सरमिंदा होई इश्क सों सो देवै सब कोइ ।
निंदा सह दंनि सहै सोइ चुनिंदा होइ ॥ ३ ॥
दुनियादार फकोर क्या ऐ सब जितनी ज्ञात ।
बिगर इश्क मस्ती भरे सब की खिल्ली बात ॥ ४ ॥
सादे जे प्याले सवै जद्यपि घन्न अपार ।
इश्क अमल मस्ती लिये सो इस्तो असवार ॥ ५ ॥
सब मजहब सब अमल अरु सबै ऐश के स्वाद ।
श्रैार इश्क के असर बिनु ए सबही बरबाद ॥ ६ ॥

End.—खलक न मानै एक भी अबस किये बकवाद ।
खूब कमावै इश्क कें तब कछु पावै स्वाद ॥ ३९ ॥
मज़ा अजब है हुसन का चखै चशम ज़ुवान ।
इश्क चमन रक्खै सोई आबादान सुजान ॥ ४० ॥
चश्मों के चश्मा झरैं झरना आवै फिराक ।
इश्क चमन तब सब्ज़ रहै दिल ज़मीन हो पाक ॥ ४१ ॥
इश्क चमन आबाद कर इश्क चमन का मांव ।
नागर घर महबूब के इश्क चमन में आव ॥ ४२ ॥
जिगर चश्म जारी जहां नित लोहू की कीच ।
नागर आशिक लुट रहे इश्क चमन के बीच ॥ ४३ ॥
चले तेग नागर हरफ इश्क तेज की धार ।
श्रैार कटै नहिं धार सों कटै करै रिझवार ॥ ४४ ॥

इति श्री इश्क चमनना दोहरा संपूर्णम ॥ लिषितं गणेशो शंकरेण स्व पठनार्थम् मुकाम खिरपाई मिति दुति चैत्र सुदि २ सोमें संवत् १८४२ माह ॥ इति ॥

Subject.—इश्क सम्बन्धी पद्य ।

No. 291. Nāgarīdāsajī kī bānī by Nāgarīdāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—24. Size—8 × 7 inches. Lines per page—44. Extent—924 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābu Śyāma Kumāra Nigama, Rae Bareli.

Beginning.—श्री राधा रसिक विहारी जी ॥ अथ श्री नागरीदास जी को बानो लिख्यते ॥ दोहा ॥ चरण कमल रज केयहां मन वच क्रम वह आस ।

अपनो सर्बस जानि वलि जाइ नागरीदास ॥ १ ॥ है कर[वो] कोपीन कामरी कुंजनि कुल विलासि । तव मिनहि मोत मन मुदित विहारो विहारिनि दासि पवासि ॥ २ ॥ अति निरपेक्ष संगु संग्रह अनन्य आन गति नाहि । श्री विहारीदासि उपासि सुष संग बैठि महल मन माहि ॥ ३ ॥ नित्य विहारि सार सब के। अति दुर्लभ अगम अपार । अनन्य धर्म संधि समझे विनु माया कठिन किवार ॥ ४ ॥ यह उपदेश उपाइ श्री विहारीदासि कृपा तें जानै । नित्य सिद्ध विनु नागरीदास कहा कोऊ पहिचानै ॥ ५ ॥ गुन धनहीन सुदीन प्रेम उर राषत गुन गंभीरा । श्री नागरीदास यों वस्तु छिपावत ज्यों गूदर में हीरा ॥ ६ ॥ हीरा को ललचात लिवासी परचौं पंजो न मर्मा । श्री नागरीदास विहारै चाहत विनु अनन्य धन धर्मा ॥ ७ ॥

End—सवैया ॥ वजावत वीन प्रवीन पिया । मानो नृतत है दस चंद नष द्युति ह्वै कर काम प्रकास किया । चक चौंधि रहे हरि हेरि मनो तान तरंग के रंग जिया ॥ दासि श्री नागरी के गहि पाय रिझाय रसिक सु अंक लिया ॥ अति कोक कला गुन गांन सुजान वजावत वीन प्रवीन पिया ॥ ५ ॥

प्रानन के प्रान मेरे नैननि के तारे हो । सहज सनेह निजु धन धरि उर अंतर अपने प्रान राषि रषवारे हो । भलक पलक जिन अंतर अपने सुनहु सुजान मुष जीवत निहारे हो । अतिही व्याकुल कित काहे कौं कुंवर तुम तन मन मेरे अति प्रीतम पियारे हो ॥ दासि श्री नागरी हित तुही प्रिया मानि चित प्रानन के प्रान मेरे नैननि के तारे हो ॥ इति श्री नागरीदास जी को सवैया ॥ संपूरण ॥ इति श्री नागरीदास जी की वानी संपूरण ।

Subject—पृ० १ राधाकृष्ण स्तुति । पृ० २ गुरुवंदना और स्तुति ॥ पृ० ३ नागरीदास जी की साखी । पृ० ४ विहारिनदासि के प्रति नागरीदास की भक्ति वर्णन । पृ० ५-१० सिद्धान्त के कवित्त वर्णन । पृ० ११-१५ राधाकृष्ण रहस्य वर्णन पृ० १६—२०—राधाकृष्ण का विश्राम वर्णन । पृ० २१—२४—राधाकृष्ण शोभा और भक्ति के पद वर्णन ।

No. 292(a) Vaidya Manotsava by Nainasukha of Sarhind. Substance—Country-made paper. Leaves—70. Size—$9\frac{1}{4} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—10. Extent—437 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1649 or A. D. 1592. Date of manuscript—Samvat 1825 or A. D. 1768. Place of deposit—Paṇḍita Dewaki Nandana, Village Rawariyā, Post Office Aligañja Bāzār, Sultānpur.

Beginning—श्री सद्गुरुभ्योनमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः । श्री वीतरागाय नमः ॥ श्रीरस्तु ॥ अथ वैद्य मनोत्सव लिख्यते दोहा ॥ शिव सुतपद प्रनमौं सदा । रिधि सिधि नित देइ । कुमति विनासन सुमति करि मंगल सर्व करेइ ॥१॥ अलप अमूरति अलप गति । किन हिन पायो पार । जोर जुगल कर कवि कहै, देहि देव मति सार ॥२॥ और ग्रंथ सब मथिके । रचौज भाषा आनि दिषायो प्रगटि कर औषध रोग निदान ॥ ३ ॥ ममभति अल्प जु कहत हौं, कवि मति परम अगाध, सुगम चिकित्सा थित रचित षिमौ सबै अपराध ॥ ४ वैद्य मनोत्सव नाम धरि । दोषि ग्रंथ सु प्रकाश । केसराज हन नैनसुष । भाषा कियो विलास ॥ ५ ॥ प्रथम नसा लक्षन कहौं, देषि ग्रंथि मति सोइ । पुनि आनौ अनुभाव हो जैसो ममभति होइ ॥६॥

End—केशराज सुत नैनसुष कियो अमृत को कंद । सुभ नगरी सरिहंद में अकबर शाह नरिंद ॥ अंकवेद रस मेदिनी सुकल पक्ष मधुमास-तिथि द्वितीया भृगुवार सुनि पुहुपचन्द्र प्रमुकास ॥ मात्रा अंग सुवेध पुनि कह्यो अल्प मति सोय । कवि जन सबै सुधारियो हीन जहां कहं होय ॥ वैद्य महोत्सव ग्रंथ मह कह्यो सकल निज आनि । दुषकन्द पुनि सुष करन आनदि परम निदान ॥ अथ सोरठ ॥ कीयौ प्रगटि दृषि मंथि, औषध रोग निदान पुनि, सकल सुधा कर ग्रंथि, करयो समापित आदि अंत ॥ इति श्री नयनसुष विरचिते वैद्य मनोत्सवे ग्रंथि विद्या विनोदे समाप्तम सम्वत् १८२५ माघ कृष्णाष्टम्याम् लेषक पाठक जो जयतु ॥

Subject—पृ० १—७ तक—वैद्य मनोत्सवनाम धरि देषि ग्रंथ सुप्रकास । केसराज तन नयनसुख भाषा कियो विलास ॥ प्रथम उद्देश्य, नाड़ी परीक्षा, वात, पित्त, कफ निदान साध्यासाध्य लक्षण, काल चक्र । पृ० ८—२४ तक द्वितीय उद्देश्य—ज्वर, सन्निपात, अतिसार, संग्रहणी रोग प्रतिकार । पृ० २५—३१ तृतीय उद्देश—रस, भगंदर, गुल्म, आमवात कृमिरोग प्रतिकार । पृ० ३१—३५ चतुर्थ उद्देश्य—कापदिस्वास, कास मंदाग्नि विसूचिका रोग प्रतिकार पृ० ३५-४४ पंचमोद्देश-कुंरठ प्रमेहमूत्र, कृच्छ्रमूत्र, वेराधन, असरी कुंडू पामाव चविकालूत वोयत्दारु वा सस्त्रघात प्रतिकार पृ० ४४-५६ षष्टमोध्याय-सिर रोगादि प्रतीकार पृ० ५७—७० सप्तमोध्याय—वगल गंधादि प्रतिकार

No. 292(*b*). Vaidya Manotsava by Nainasukha of Sarhind. Substance—Country-made paper. Leaves—94. Lines per page—8. Extent—658 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Saṁvat 1649 or A. D. 1592. Date of manuscript—Saṁvat 1827 or A. D. 1770. Place of deposit—Paṇḍita Kūvarapālaji, Village Taramai, Post Office Śikohābād, District Mainpurī.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः ॥ श्री गुरुभ्योनमः वैद्यमनोत्सव लिख्यते ॥ शिव सुत पद प्रणवौं सदा। रिद्धि सिद्धि नित देह ॥ कुमति विनाशन सुमति कर मंगल मुदित करेह ॥ १ ॥ अलप अमूरति अलप गति नाहिन पावै पार। जोरि युगल कर कवि कहे देहु देहु मति सार ॥ २ ॥ वैद्यक ग्रंथ सब मथन कै रच्यौ सुभाषा आन। अर्थ दिखायौ प्रगट कर औषध रोग निदान ॥ ३ ॥ मम मति अलप सु कहत हौं कवि मति परम अगाध। सुगम चिकित्सा चतुर चित छिमैं सबै अपराध ॥ ४ ॥ वैद्य मनोत्सव नाम धरि देखि ग्रंथ सुप्रकाश। केशवराय सुत नैनसुख श्रावक धर्म निवास ॥ ५ ॥ प्रथम नसा लक्षन कहौं देखि ग्रंथ मति सोइ। पुनि आनौं अनभाव हो जैसो मम मत होय ॥ ६ ॥

End—बगल गंध कौ उपाय ॥ मोथा वेल हरोत को बीज अंवलो पाइ। लेप करै नर नीर सों बगल गंध सुपराय ॥ ४६ ॥ मुख दुर्गंधता कहु गुटका ॥ बेल काथ एलाइची जावित्री तज्जु लेय। गजकेसरि अरु जायफल ये औषधि सम देय ॥ ४७ ॥ गोली करहु मथीर सों सैन समै मुख धार। आनन की दुर्गंधता नास होइ ततकार ॥ ४८ ॥ दुर्गंधता कहु लेप ॥ गजकेसर पन्हो जड़ पाइ ॥ सिरस पत्र अरु लोद मिलाइ। जलसों मर्दन कीजै गात। अति दुर्गंधता छिन महिं जात ॥ ४९ ॥ सिर की दुर्गन्धता कौ लेप ॥ चन्दन मोथ अमावलो कह्यो रासु कचूर। जल सों पावहु सोस महं होइ दुर्गंधता दूर ॥ ५० ॥ परमत ग्रंथ समुद्र सम मम मत खोज अपार। औषधि रत्न सुते मूहो किये प्रगट संसार ॥ ५१ ॥ वैद्य मनुत्सव ग्रंथ महं कह्यो सकल निज्जु आन। दुख कंदन पुन सुष करन आनंद परम निधान ॥ ५१ ॥ × × × ×

मात्रा अंक सु छंद पुनि कह्यो अल्प मत सोइ। गुन जन सबै संवारियहु होन जहां कछु होइ ॥ ५५ ॥ सोरठा ॥ कियौ प्रगट इय मंथ औषधि रोग निदान पुनि। सकल सुधा सम ग्रंथ कह्यो सुम आद अंत ॥ इति श्री केशवदास पुत्रेन नैनसुख विरचिते वैद्य मनोत्सव स्त्री पुरुष रोग सम्पूरणम्। लिखा कालिका दयाल ने सोमवार के दिन कातिक बदी ५ संवत १८२७ वि० ॥

Subject——(१) पृ० १—१२ तक—प्रथम अध्याय।

मंगलाचरण, गणेशादि वंदना, प्रस्तावना, ग्रंथकार के धर्मादि विषय का अति सूक्ष्म परिचयः—

वैद्यमनोत्सव नामधरि, देखि ग्रंथ सुप्रकास।
केशवराय सुत नैनसुख, श्रावक धर्म निवास॥

नाड़ी परीक्षा, दूतादि शुभाशुभ लक्षण, शकुन, मूत्र परीक्षा, वात, पित्त और कफ का निदान, इन्हीं तीनों के लक्षण, इन तीनों का उपचार, काल ज्ञान साध्यासाध्य लक्षण, काल ज्ञान तथा काल चक्र।

(२) पृ० १३—३२ तक—द्वितीयोध्याय ।

पित्तज्वर लक्षण, कफज्वर लक्षण, वायु ज्वर लक्षण, काल ज्ञान तथा मलज्वर लक्षण, अजीर्णज्वर लक्षण, पेदज्वर लक्षण काल ज्ञानत लघु सुदर्शन चूर्ण, इष्टज्वर लक्षण, काल ज्ञानात कालज्वर लक्षण, ज्वर पर पक्कनाम दशा, ज्वर विमुक्त के लक्षण षोडषांग चूर्ण, रस मंजरी मतात महाज्वरांकुश । शीतज्वर का ज्वरांकुश, अंजनज्वर, पित्तज्वर का प्रतीकार, पित्तदाघज्वर का चूर्ण, काल ज्ञानात कफज्वर का चूर्ण, वायज्वर का चूर्ण, वृंद संघारात मल्लज्वर का क्वाथ, काल ज्ञानात रसज्वर का चूर्ण, काल ज्ञानात पेदज्वर का लक्षण, काल ज्ञानात इष्टज्वर का चूर्ण, वायु पित कफ का चूर्ण, शीतज्वर का चूर्ण, विषमज्वर का चूर्ण, वंद संग्रात त्रिताप स्वांस कास का क्वाथ, चतुर्थज्वर की धूनी, अवलेह, सारंग धरात ज्वर की औषधि, लघु लाक्षादि तैल, आनंद भैरव रस, सन्निपात का चिन्तामणि रस, कनक सुन्दरी रस, अष्टदशांग क्वाथ, सन्निपात का नास, उसी का अंजन, त्रिकंटकादि क्वाथ, उसकी औषधि, अतिसार लीलावती, वृद्धगंगाधर चूर्ण, लघुगंगाधर चूर्ण, अतिसार का लेप नागरादि क्वाथ, रक्त अतिसार का क्वाथ, अतिसार का गुटका, दमातिसार का चूर्ण, संग्रहणी रोग चिकित्सा, धानपंचक क्वाथ, संग्रहणी वायु-शूल का चूर्ण, अरुचिशूल संग्रहणी क्वाथ ।

(३) पृ० ३२-४२ तक—तृतीय अध्याय ।

अर्शरोग चिकित्सा रंग धरात सूरणि वटिका, बवासीर का चूर्ण, खूनी बवासीर की औषधि, रक्त बवासीर की औषधि, बवासीर का चूर्ण, अन्य भगंदर रोग प्रतिकार, भगंदर का लेप, भगंदर की औषधि, गुल्मरोग प्रतीकार, काष्टोदर की औषधि, उदर के सर्व रोगों की औषधि, आमवाद का चूर्ण, सर्व शोथ का क्वाथ, क्रमिरोग प्रतिकार, क्रमि का चूर्ण, शूल रोग प्रतीकार, शूल का हिंगाष्टक चूर्ण, शूल के लिये पंचसम चूर्ण, तुंबरादि चूर्ण, अन्य चूर्ण शूल पर, पांडु रोग, कमलवाय का उपचार, इसी रोग का अवलेह, कमलवायु की पोटली, इसी रोग का अंजन तथा औषधि, क्षय रोग का प्रतीकार, क्षय रोग का चूर्ण ।

(४) पृ० ४३—४८ तक—चौथा अध्याय ।

हिचकी रोग प्रतीकार, हिचकी का मनोरमा धूनी, क्षय रोग प्रतीकार, क्षय रोग का अवलेह, स्वांस रोग प्रतीकार, स्वांस का चूर्ण, कास रोग प्रतीकार गोली पंचमी, गोली षंड खांसी की, बटी षंद की, बड़ी कफ खंड की, मंदाग्निरोग प्रतीकार, मंदाग्नि का चूर्ण, क्षुधाकरण गुटका, मंदाग्नि की, गजकेसर चूर्ण विशूचिका रोग प्रतीकार, सूची बड़ी उपाय ।

(५) पृ० ४८—६१ तक—पंचमोध्याय।

कुरंगवाय प्रतीकार, पंडरोग चूर्ण, औषधि, पंड वृध को हित उपदेशात् उपाय, लेप, प्रमेह प्रतीकार, प्रमेह का चूर्ण, तथा औषधि, मूत्रकृच्छ प्रतीकार, पलादि काथ, मूत्रकृछ का चूर्ण, मूत्रशोधन प्रतीकार, मूत्ररोध का काथ, चूर्ण पथरी रोग प्रतीकार, पथरी का काथ, मृगी रोग प्रतीकार, पुष्परादि काथ, मृगी का नास, ब्राह्मी घृत, कुष्ट रोग प्रतीकार कुष्ट का चूर्ण, लघु मंजिष्टादि काथ, श्वेत कुष्ट लेप, श्वेत दाग का अन्य लेप, औषधि वृन्द संग्रह से, कंडू का चूर्ण, लेप पांव का लेप पाम दादु, लेप शंखादि कंडू का, लेप लूत का विम रोग प्रतीकार, लेप, नहरू प्रतीकार, शस्त्रघात का दारू।

(६) पृ० ६२—८० तक—षष्टमोध्याय।

वायु का चूर्ण, गुटका, त्रिपुर भैरों रस, वायु पीड़ा का, लघु विषगर्भ तैल अकड़ वायु का प्रयत्न, त्रियोदशांग गुग्गल, पित्त का प्रतिकार, दाघ विथा प्रतिकार, छर्दि रोग प्रतीकार चूर्ण, लेप, कफ रोग प्रतीकार, कफ का चूर्ण, गंडमाल रोग प्रतिकार, गंडमाला की औषधि, कचनार गुगल, मुखरोग प्रतीकार, दंत पीड़ा रक्त प्रवाह की औषधि, कोट पीड़ा दंत रक्त की औषधि, मुख पाक औषधि, मुखको लो की औषधि, झाँई की औषधि, लेप, नासिका रोग प्रतिकार, पीनस रोग की गुटका, पीनस का नास, नेत्र रोग प्रतीकार, नेत्र पीड़ा का रगड़ा, नेत्र पीड़ा का अंजन, रात्रि अंध का, अंजन रतौंध का अंजन, पड़वाल की औषधि, सबल वायु का अंजन, सबलवाय का रगड़ा, खोरा वायु का अंजन, औषधि कर्ण रोग की, कर्ण शूल पूर्व दुख पीड़ा की औषधि, सिर रोग प्रतिकार वात सिर्वर्त का लेप, कफ सिर्वर्त का लेप, पित्त सिर्वर्त का लेप, लेप त्रिदोष सिरवर्त का आधा सीसी का लेप नास, और अंत्र, उनका नास, केश बढ़ने की औषधि, सिर काकस की औषधि, इन्द्रलुप्त का उपाय, केशकल्प लिख्यते।

(७) पृ० ८१—९४ तक—सप्तमोध्याय।

स्त्री रोग प्रतिकार औषधि, पुहुप होने की औषधि, योनि शुद्ध होने की औषधि, गर्भ होने की औषधि, पुनश्च गर्भ धारिणी औषधि, कष्टी स्त्री का उपाय, पुनश्च गर्भ जाता हो उसकी औषधि, भगसंकोचन प्रतिकार, भग संकोचन औषधियां, इसकी गोली, योनि दुर्गंध विनाश, कुच कठिन करने की औषधि, औषधि थड़ होने की, पुनश्च, बाल रोग चिकित्सा, बालक का अवलेह, बालक अतीसार का काथ, बालक की गुदा पके की औषधि, पुरुष चिकित्सा, लिंग स्थूल का लेप, वृंद स्थूल का लेप, वृंद स्थूल का लेप, ठंडे का लेप, स्थंभन विधि, पुनश्च, मदन प्रकाश चूर्ण, काम

विलास गुटका, धातु वृद्धि का गुटका, दुर्गन्धता हरन औषध, दुर्गंधिता हरन औषधि, बगलगंध का उपाय, मुख दुर्गंध की औषधि, लेप, सिर की दुर्गंध का लेप ॥

ग्रंथकार का सूक्ष्म परिचय—केशवराज सुत नैनसुख कह्यो ग्रन्थ अभिकंद। शुभनगरो सिह चंद मैंह, अकबर साह नरिंद ॥ ग्रंथ निर्माण कालः— अंकवेद रस मेदनो (१६४९) शुक्लपक्ष शुचिमास। तिथि द्वितीया भृगुवार पुनि पुष चंद सुप्रगास।

No. 292(*c*). Vaidya Manotsava by Nainasukha. Substance—Country-made paper. Leaves—50. Size—10 × 6 inches. Lines per page—20. Extent—1,000 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1846 or A. D. 1789. Place of deposit—Ṭhakura Basanta Siṁha, Village Urab, Post Office Śāhamau, District Rāe Barelī.

Beginning—(पृष्ट ३ से प्रारम्भ)—भोर एक सादु पाइ कफ मिटै ॥ इच्छाभेदो रस ॥ पारोटंक २॥ सुहागा टंक २॥ गंधक टंक २॥ मिरचै टंक २॥ जैपाळ टंक १० आक के रस घरटै तातै पानो सो देइ ॥ अजमोदादि चूर्न ॥

End—अथ संन्निपात नाम जानिवो। संधिकः सांतिकश्चैवाः गुल्दाह चित्त विभ्रमै ॥ सीतांगः तंद्रका प्रोका कंठ कुचिजश्च कर्निका ॥ विष्यातो मग्र नेत्रश्च रक्तस्टीवो पलापकः। जिभकश्चेतु मिन्यासो सन्यपातः त्रयोदसः ॥ १३ ॥ टीका ॥ पोर अफर दाह सून पेट कफ मलु पसै जगै बहुत पसीना आवै जीभ सुवै तव्या सूवै जीभ पै काटे होइ, गरोह कै ॥ जथा प्रति तथा लिष्यते मम दोषो न दीयते ॥ वैशाष मासे शुक्ले पछे तिथैा दुतियायां चंद्रवासरे पोथी लिषितं पाडे मंसाराम नग्र उसहित ॥ परगने बदाउ ॥ पठनार्थे सुपजाल सिंघ वैद्य माले सुरतान नगर डोह संवतु १८४६ सनि फसलो ११९६ हरर शुन। ग्रीष्मे तुल्य गुडाशा सैंधव-युतां मेघावनिध्यं वरे। शर्करया शरद्विमल मा सुत्र्य तुषारागमे। पिपल्या शिशिरे वसंत समये क्षौद्रेण संज्ञोज्यनां राजन प्राप्य हरीत को मिदं गदानश्यं तितेन्भवः

ग्रीष्म	वर्षा	सरद	हेमंत	सिसरे	वसंत समये
दाप	सेंधोनोन	षाडकेस	सोंठि	पोपरि	सहत सो

Note—पं० केशवदास के पुत्र नैनसुख कृत वैद्यमनोत्सव नामक पुस्तक अपूर्ण है पृ० १, २, ८, ९, १०, ११, १६, १७, १८, १९, २०, २३, २४, २५, २७, २८, २९, ३१—३६ ३९—४३, ४८ नहीं है। देखने में पुस्तक पुरानी जान पड़ती है।

No. 292(*d*). Vaidya Manotsava by Nainasukha. Substance—Country-made paper. Leaves—9. Size—10½ × 8 inches. Lines per page—46. Extent—275 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1914 or A. D. 1857. Place of deposit—Ṭhakura Jagadmbikā Prasad Simha, Gudawāpur, Post Office Chilwaliyā, District Baharāich.

Beginning—श्री रामायनमः॥ बंदौं लम्बोदर चरन करहु सिद्धि सब काज। केसोराज सुत नैनसुख भाषा करो समाज॥ १॥ औषध रत्न सुते मही प्रगटि किये संसार। वैद्यमनोत्सव जगत में औषधि है निजसार॥ २॥

अथ ज्वराधिकारः—मोथा, सोंठि चिरायता पीत पापरा जानि। केरवार मिलोय पिप्पली ये सब पीसहु आनि॥ ३॥ यह चुरन प्रशस्त करि जलसों पीजे प्रात॥ अनल पित कफ दोषत्रय होइ सर्वज्वर घात॥ ४॥

End—अथ तौल संज्ञा॥ जवा चारि रत्ती है विमल चारि गुंज को बहि। आठ गुंज मासा कहो सुनौ तौल को गहि॥ मासे चारि टंक तू जानि। षट मासे तू गद बखानि। कर्ष एक मासे दस होइ। कर्ष चारि पल जानहु सोइ॥ १६१॥

इति श्री वैद्यमनोत्सवेन उन समुद्देसः सम्पूर्ण श्रेष्यतेम षंड कातिक मासे कृष्ण पक्षे त्रयोदस्यां गुरुवासरे संवत १९१४ साके १७७९ पोस्तक प्रति भय उमाराव सिंह नकल प्रति द्वितीया लीषते भैरोंपसाद ग्रामें गुदुवापुर सुभमस्तु॥ राम॥ राम॥

No. 292(*e*). Vaidya Śāstra by Nainasukha. Substance—Country-made paper. Leaves—66. Size—11 × 5⅛ inches. Lines per page—32. Extent—1,188 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1894 or A. D. 1837. Place of deposit—Bhaiyā Mahipāla Simha, Rais, Payāgapur, Post Office Payāgpur, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ वैद्यशास्त्र लिष्यते॥ दोहा॥ त्रियासंग अरु वोजना सोरे सलिल स्नान। भोजन मधु रस गंधिता करत कोप तहं

हानि ॥ तप्त उदक अरु दर्व्य पुनि मर्दन तेल शरीर। सुरापानि सेके दहन इन्हते जाइ सरीर ॥ अथ साध्य लक्षन ॥ सोरठा ॥ होइ त्रिषा जस हीन कर पद नासो तपत हो। सुहृद्द सरना परवीन। सुभ लक्षन ताके कहैं ॥ इन्द्रो अंगु नागि ॥ ३० नचो ६० निधि ९ नारिय १२० नमोक १५०, स्वासा उर्घाद्व दुवाद मिलाइ के गावत। आदि अकास समीर सिषी अपकुंमनि भिन्न व भिन्न बतावत ॥ मेदनि ते पुनि नोचहि धावत भांति हो मेधै तिनि ठामनि मै लव छावत ॥ हो कमले कदले नन धापद्दु ९०० मैनन रासि ७९,२०० दिनै निसि पावत ॥ ६४ ॥

End—जो वाज का जोंको लागो होइ ताका औषधि जो कैसेहुन मोच होइ ॥ पियरो गाइ का दूध औ माथा पानी भेरै के देइ तौ अच्छा होइ। और जो जानवर दुलतो काढत होइ ताका औषधि पियरो गाइ का दूध पानी मिलाइ के तांवा बोरि देइ देके चलता होइ चाहो कि अब पाया तांवा पचवैं तवहो चलै न दुलतो काढै ॥ जो जानवर कुरोच का वांधो तौ गाइ क मसका ताजा पानी से धोइ कै जेहि माठा न लाग रहै तेहि से तावा बोरि कै देइ तौ पर अच्छे आवहि और सिताव पर झारै कै जुगति वरैं का छाता गाइ के वोड मैं औटि के छाता निकासि डारैं वही मोंड मैं तावा बोरि कै देइ तौ पर सिताव झारै ॥ इति श्री नयनसुखेन बिरचिते वेद शास्त्र सम्पूर्णम्। मार्ग सुदी १ संवत १८९४ ॥

Subject—पृ० १—६६ तक औषधियों और रोगों के लक्षण तथा भस्म आदि बनाने की रीति और रोग परीक्षा आदि का वर्णन है।

No. 293(*a*). Japaji by Guru Nanakaji Mahārāja of Tilamadi Nanakānā (Punjab). Substance—Country-made paper. Leaves—21. Size—6¼ × 4 inches. Lines per page—7. Extent—160 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1820 or A. D. 1763. Place of deposit—Śrī Mahanta Nānak Prakāśa, Baḍi Saṅgati, Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ सति गुरु प्रसाद सति नाम कर्ता पुरुष निरभै निरवैर अकाल मूरति अजूनी सै भंगुर परसाद जप। आदि सचु जुगादि सचु। है भो सचु नानक होसो भी सचु ॥ १ सोचै सोचिन होवई जेसा चौलच वार। चुपै चुपन होवई जे लाभ रहालि वतार। भुखिया भुखन उतरी जेवनापुरी आभार। सहस सियाण पालष होहि ता एक न चलै नालि ॥ किव सचियारा होइ पे किव कूडै तुटै पालि। हुकमि रजाई चलना नानक लिखिया नालि। २

End—अमर तवेला सचुनाउं जपु जपो करि असनाम। हितु करि जपु को जे पड़ै सो दरजै पावै माम ॥ जनम मरण भव कटिए जो जपु संग लावै धियाम। जियो त्यिों करि जपु को पड़ै चौसर जीत निदाम। जो मनसा मन में धरै सो पूरण करै भगवान। अहिनिसि जपु जप तारि है दास नानक दोजै नाम दान। गुरु नानक निरंकारो। जिन सगली कला धारो। डंडोत अनेक वार सर्व कला समर्थ ॥ डोलंते राखैा प्रभु नानक दे कर हत्थ ॥ इति जप संपूरणं शुभम् ॥

Subject—पृ० १—६ तक ईश्वर सत्य है उसी की आज्ञा मानना चाहिये वह निर्गुणादि गुण वाला है, उसका जप पाप नाशक है, वह दुख को दूर करता है।

पृ० ७—११ तक ईश्वर के विशेषण, जप का फल और ज्ञान की मुख्यता।

पृ० १२—१७ तक परमात्मा अनन्त है और चेतन्यमय है इन्द्रादि उसी की प्रशंसा करते हैं और वह सब का रचयिता है।

पृ० १२—१७ तक जप की महिमा

No. 293 (*b*). Jñāna Swarodaya by Nānaka Dāsa (Ranajita) of Tilamadi. Substance—Country-made paper. Leaves—16. Size—12 × 5 inches. Lines per page—18. Extent—324 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1908 or A.D. 1851. Place of deposit—Ṭhakurā Balbhadra Siṁhaji, Raisa of Vansapurawā, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः परसोतम परमात्मा पूरण विस्वा धीस। आदि पुरुष अविचल तुही ताहि नवावैां सीस ॥ क्षर ऊं सो कहत हैं अक्षर सोहं जानि। निह अक्षर स्वांसा भई तू ताको मन आनि ॥ राति दिन सुरति लगावो। आपा आपु विसारो अब सीस नवावो ॥ नानिक मथि के कहत है अगम निगम का सीस। यही वचन विज्ञान को मानो विस्वा धीस ॥ ऊं सो काया भई सोहं सोहं मन होइ। निह अक्षर स्वासा भई कहि नानक मलि जोइ ॥ पैंचि मनु चलइ रावैा। अक्षर एक दुविद्ध अगन भावैा ॥ डार पात फल फूल मुल सो सबै निहारैा। जब दरसै एकाएक भेष पा सबै बिसारैा ॥ स्वासा ते सोहंग भयो सोहं ते ऊंकार। ऊं सो रा रा भयो साधू करो विचार ॥

End—भंवर गुफा त्रिकुटी नहीं ना अक्षर को जाप। नानिक दास समाज ते ब्रह्म अर्पाहत आप ॥ भेद स्वरोदय बहुत है सुगम दियो बताय। ताको समुझि

विचारि कै रहै सुरति लौ लाय। धरनि टरै गिरवर टरै टरै ससी अरु भानु। वचन स्वरोदय ना टरै कहि नानक परमान ॥ गुरु दाया अरु राम को साधु दया सो जानि। नानिक दास रंजोत है कहौ सरोदय ज्ञान ॥ तिलावडी मेरा जन्म है नाम नानिका कहायो। काल्ह को सुत जानि जाति बेदी पहिचानो। बाल अवस्था माहि बहुरि मैं भूलो लायो। कृपा करी जगदीस नाम नानिका धरायो। जोग जुगति हरि भगति करि ब्रह्म ज्ञान को ढोठ। लहो.......राम मनोरथ सत्य है हृदय भक्तो जो होई। इति श्री शुभ संवत १९०८ पोथी लिखा महीपतसिंह कंजामऊ निवासी सा जु तोर कातिक मासे कृष्ण पक्षे अष्टमयाम सुक्रवासरे शुभ संवत १९०८ साके १७७२ राम। पोस्तक लिपत आनंदित अति मायो संसाय सकल केस दुरि बहायो ॥ श्रीराम लक्षिमन सुपराम ॥

Subject—स्वरोदय का वर्णन।

No. 293(*c*). Sukhamani by Guru Nānakajī of the Panjāb. Substance—Country-made paper. Leaves—150. Size—6 × 5 inches. Lines per page—12. Extent—900 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1860 or A.D. 1803. Place of deposit—Paṇḍita Lallu Prasāda Dīkshita, Village Mai, Post Office Baṭeśwara, District Āgrā.

Beginning—........मन कामैं भुलाई॥ अमृत नाम हिर्दै माहि शमाई॥ प्रभु लो वसी साधु को रशन। नानक सनकाद दशनु दशन ॥ प्रभु कौं शिमिरहि शो धनवंते। प्रभु कौं शिमिरहि से पतिवंते ॥ प्रभु के शिमरहि शे सन परवान। प्रभु कौं शिमरहि शे पुरखु प्रधान। प्रभु का शिमरहि सेवे मुह तासे। प्रभु कौ शिमरहि शे शब के रासे। प्रभु का शिमरहि शे शुखवासी। प्रभु कौ शिमरहि शे शदा अविनाशी ॥ प्रभु शिमरन ते लागे लिन आप दयाला। नानक जनकी मगहिर वाला। प्रभु का शिमरहि शे पर उपकारी। प्रभु का शिमरहि तिन सदा बलिहारी।

End—धुर करम पायातु धूलिन के शेना महरि के लागे कहे नानक शुबहु आतित घर अनहद बाजे। आनंद शुनों वड़ भगिव शकल मनोरथ पूरे। पारब्रह्म प्रभु पाया उतरे शकल व शूरे। दुख रोग शंताप उतरिया शुनि शापो बानो ॥ शंत शाजन भये शर से पूरे गुरते जानी। कहद पुनीत शुनिदे पावत्र शत गुर रैहा भरिपूरे। विनिवंत नानक गुरु चरन लागे बाजे अनहद तूरे॥ आनंद सुनो बड़ भागियो शकल मनोरथ पूरे॥ शंवत १८६० माशोतमे भाद्र वदी १४ भौमवासरे

लिपि ग्रंथ सुखमनी शीतल संपूरन ॥ मनशाराम मिश्र राम जी सहाय बाबे नानक बकशि लेने ॥

Subject—ईश्वर का स्वरूप, निराकार उपासना तथा भक्ति का वर्णन।

No. 293(*d*). Sukhamani by Nānaka Guru. Substance—Foolscap paper. Leaves—18. Size—7 × 4½ inches. Lines per page—28. Extent—189 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit—Gokula Prasāda, Rātapura, District Rāe Bareli.

Beginning—पृष्ठ २ से आरंभ

तीन आवे ॥ काथो येके दरसु तुम्हारे। नानक उन संग मोहि उधारो ॥ १ सुषमनी सुप अमृत प्रभु नाम। भगत जना के मन बिस्राम ॥ रहाव प्रभु के सुमिरन गरभ ना बसै ॥ प्रभु के सुमिरन दुष जन नसै ॥ प्रभु के सुमिरन कालु पर हरै ॥ प्रभु के सुमिरन दुसमन टरै ॥ प्रभु सुमिरन कछु बिघन न लागै। प्रभु के सुमिरन अन दिनु जागै ॥ प्रभु के सुमिरन भव ना ब्यापै। प्रभु के सुमिरन दुष ना संतापै ॥ प्रभु कै सुमिरन साधु कै संग। सरवनि धान नानक हरि रंग ॥

End—अष्टपदी।

जेहि प्रसाद छत्तिस अमृत षाय। तिस ठाकुर को राषु मन माहि ॥ जेहि प्रसाद सुगंध तन लावे। तिसके सुमिरन परम गति पावे। जेहि प्रसाद बसहि सुष मंदिर। तिसै ध्याइये सदा मन अंदर। जेहि प्रसाद ग्रह संग सुष बसना ॥ आठ पहर सुमिरौ तिस रसना ॥ जेहि प्रसाद रंग रस भोग ॥ नानक सदा ध्याइये ध्यावन जोग ॥ जेहि प्रसाद पाट पटंबर पहावे ॥ तिसै त्यागि कित और लो भावे। जेहि प्रसाद सुष सेज सोइ जे ॥ मन आठ पहर ताका जस गवजे ॥ जेहि प्रसाद तुम्हे सुष को माने ॥ मुष ताको जस रसना बषाने ॥ जेहि प्रसाद तेरो रहित धर्म ॥ मन सदा ध्याइये केवल पार ब्रह्म ॥ प्रभु जो जपत दरगहि मान पावे ॥ नानक पति सेतो घर जावे ॥ २ जेहि प्रसाद अरोग्य कंचन देही ॥ लिव लावो तिसु राम सनेही ॥ जेहि प्रसाद तेरा ओला रहत ॥ मन सुष पावो हरि····

No. 293(*e*). Sākhi Jñāna Kāṇḍa by Guru Nanakaji of Tilamadī (Panjāb). Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—11 × 5½ inches. Lines per page—20. Extent—180 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Gurumukhi. Place of deposit—Paṇḍita Dhīraja Rāmaji Pujāri, Baḍī Sangati, Baharāich.

Beginning—साखी ज्ञान काण्ड महला १ ॥

तब संगत श्रीगुरु बावे नानक जी पास बेनती कीनी। गरीब निवाज सच्चे पादशाह ममता के घटावने और संसार के घटावने का जो मन्तर है सो कृपा करके समझाइये जो ॥ और संसार के घटावो और ममता के घटावने कर जो परमेसुर आधीन होता है सो कारण क्या और संसार का आराधना मानता है कि नहीं जो ॥ और देव देवी के स्थान की पूजा जो करते हैं तिनकी कौन गति है ॥
जो। ज्यों है त्यों समझाइये जो। तब गुरु बावे नानक बोल्या सुनो संगति अष्ट सिद्धि जो है सो कामना की देने हारी है। सो श्री ठाकुर जी देवतियों के हवाले कीती है। श्री महादेव देवी ने आदि लेके सो कामना के निमित्त संसारी जियाइन की पूजा करते हैं।

End—सिर विच रखणी लिख कर मरनी की गति कही न जाय। जे येइंदा ताप होई ता सो दरदी पैडी घड़ी लिख कर गल विच पाइनी जो किसी नो प्रतीसार होइ तां मुंडा संतोष जी पैड़ी लिख कर पियाउनी ॥

जो किसी दिवान पास जावे ता यह पैडी लिख कर जनम सतगुरु सत पुरुष यहां पैडी सिर विच रक्खे। जो स्त्री पड़ी होवे ता यह लिख कर देवे। काहे रे मन चितवहु उद्यम जा हर हर जिउ पड़िया यहां पैड़ी लिख कर लक नाल बंधनी ॥ तुरत छूट जाय ऐसे गुण मुझ में हैं दूसरे अंग। एक तो जप जो है गुरु का तिसकौ अर्थ नित प्रति ध्यान करिकै प्रीति करिकै नेम के साथ ॥ और दूसरे तप करै तो क्या तप करै कामना को त्याग करिके तप करे ॥ कामना का त्याग करै और इन्द्रियों को जीतै ॥ तीसरे हीं में इंद्रियां जो हैं दस तिनके प्रकृत है बुद्धि तिस को जीतै प्रज्ञानता तिसको ज्ञान के खड्ग कर प्रहारता रहै और ब्रह्मज्ञान के विषे हो मै पातुति। ज्ञान काण्ड सम्पूर्ण भया।

Subject—पृ० १ ईश्वर व देव देवी की पूजा में भेद, पृ० २ ईश्वर प्राप्ति के मार्ग, पृ० ३ धर्मराज व जीव की वार्ता, पृ० ४ नारद व धर्म संवाद, पृ० ५ से ७ तक लंगड़े व अंधे के मिलन की कथा, पृ० ८ पैंडी का विचार तथा फल।

No. 293(*f*). Satanāma by Nānaka of the Panjāb. Substance—Country-made paper. Leaves—12. Size—8 × 6 inches. Lines per page—16. Extent—200 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance.—Old. Character—Nāgarī Kaithī. Place of deposit—Bābu Amīra Chand Ḍākar, Manager, V. D. Gupta and Company, Chowk Bāzār, Baharāich.

Beginning—दोहा। सब सांचा पु नामक वरो चरन पर सोस। नानक तुम गुर देव जी पूरन विस्वावीस ॥ थाचारज जीवन जनम मरवो साचो ज्ञान। नानक भौसर जात है हर सो नाहि पहचान। जाम सरे थाजमपगा ज संग दानं मान। राम तजो जग सो रचो नानक नहचै हान। झूठा नाता जगत का झूठ है घरावास। यह जग झूठा देख कै नानक भये उदास॥ जब लग चावल धान में हुव लग उपजे थाप॥ जग छिलके कंड तज करा मुकत रूप हुई नाप।

End—कारा जीत कवल कली बीच भवरा टो मइ। गरजं वना वोरा घमंड घट वगाचो जब थाचीत देखा थो हाइ। केतीक सुद जड़गे तहां थाव सरा सिर थति रहे ध्यान लगाइ॥ भूपन भवन विचित्र सोहावन भारी पीतांवर वेनु वजाइ। को कौन क वह सुनता जग मोहात, हार जडात वहु भारो लइ। संत समाज देखो जबते सुरालोक चले प्रभु को गुन गाई। केतीक कुबव वसे जग मैं भगवंत वाना कै पंत नासाइ॥

Subject—संसार को अनन्यता, सत्य को महिमा, नाम महिमा, सांसारिक ईश्वर की महत्ता आदि पर फुटकर दोहे।

No. 293(*g*). Santa Sumirinī (Nāl) by Nānaka Guru. Substance—Foolscap paper. Leaves—16. Size—7 × 4½ inches. Lines per page—15. Extent—150 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Jugalakiśora, Devanandapura, District Rāe Bareli.

Beginning—सत्यनाम नाम करता पुरुष निरभव निरवैर थकाल मूरति थाजुनी सै भंगु गुर प्रसाद जप ॥ १ ॥ थाद सच्चु जुगाद सच्चु है भो॥ सचु नानक हासी भो। सच्चु सोचे सोच न होवई जेसो चो लखवार। चुपे चुप्प न होवई जो लाय रहा लिवतार॥

भुख्यां भुख्य न उतरो जे बना पुरियां भार। सहस सयाब पूत लख्य होहीं एक न चल्लै नाल॥ क्यो सचियारा होव वई क्यो कूडे तुहेपाल। हुकुम रजाई चलना नानक लिखियां नाल॥ १ हुकुमो होवन थाकार हुकुम न कहिथा जाई। हुकुमो होय न जीयां हुकुन मिलै वड़ि थाई॥ हुकुमो उत्तिम नीच हुकुमो लिखि दुख्ख सुष पाई॥ एक ना हुकुम मिलै वकसीस एक हुकुमी सदा भवाइये॥ हुकुमै थंदर सब को बाहेर हुकुम न कोय। नानक हुकुमै जा बुझै ताहे मैं कहे न कोय॥ २ ॥

End—जतु पहारा धीरज सुनियारु। थहेरण मंत वेद हथियारु। भोपखा थगिनी तप ताप। भांडा भाव थमृतु ततु धाल। घणो वे सब सांचो टकसाल। जिनको न दर करम तिनकार॥ नानक दरी न दर निहाल॥ ३८ श्लोक॥

पवण गुरू पाणी पिता माता धरती महंत। धोधु राति दुइदाई दाया खेलै सरबस सकल जगतु। चंगिया पिया बुड़ियां पियां वाचे धरमइ दूर। करमी आपु आपुणी केनेड़े के दूर। जिन्नी नामधि आइयां गये मशकति घाल॥ नानक ते मुख उजले केतो छुट्टी नाल॥ ३९॥

Subject—सत्यनाम की स्तुति, सत्य की महिमा, प्रभु का हुक्म ही सर्वोपरि है। उसके गुण अकथनीय हैं। गुणवान के प्रति नानक की श्रद्धा, गुरु महिमा, गुरु से ही सर्व पदार्थ तथा ईश्वर का अनुभव प्राप्त करना, दोष पाप नाशक वाणी का सुनना ही उचित है, भक्तों की वाणी से सब पदार्थ प्राप्त हो सकते हैं, निरंजन नाम महिमा, पंच का महत्व, निराकार महिमा, अनेक मतमतांतर और अनेक ग्रंथों द्वारा अनेक भांति की भक्ति मार्ग का वर्णन, प्रभु कुदरत जानने में सबों की असमर्थता, प्राणीमात्र की अलग मति है और प्रभु के जानने के सब अलग अलग उपाय रचते हैं परन्तु सच्चे प्रेम से कोई भी उस पर बलिहारी नहीं जाता, कर्म की प्रधानता, जीव का विचार, प्रभु का बड़प्पन, प्रभु ही सब बादशाहों का बादशाह है जो प्रभु के बड़प्पन को जानता है वही बड़ा है, प्रभु का अनेक प्रकार से गुण गान होना संसार का रचना, मन को वशीभूत करने से जय प्राप्ति ईश और प्रकृति की सत्यता, ऊंच और नीच का अभेद वर्णन, पंचतत्व से सृष्टि की रचना, देवी देवताओं का खंडन और केवल सच्चिदानन्द ही की सत्यता का वर्णन, प्रभु के अनेक रूप और करुणा का वर्णन केवल पंचतत्व का ही संसार में सब खेल है। जिसने प्रभु से ध्यान लगाया उसी का होना सफल है।

No. 294(*a*). Anekārtha Bhāshā by Nanda Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—10×5 inches. Lines per page—13. Extent—420 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1812 or A.D. 1755. Place of deposit—Paṇḍita Deokinandanaji, Village Khaniā, Post Office Aligañja Bazār (Sultānpur.)

Beginning—श्रीगणेशायनमः। दोहा। सु प्रभु जोति माया जगत कारन करन अभेव। विघ्न हरन प्रभु सुम करन नमो नमो गुरुदेव॥ १॥ एकै वस्तु अनेक है जग जगमगात जगधाम। जो कंचन ते किंकिनी कंकन कुंडल काम॥ २॥ उचरि सकत संसकृति नहि प्रकृत समरत्थ॥ तिन लगि नंद सुमति जथा भापने कत्थ॥ ३॥ सुर्भीनाम॥ सुरभी चंदन सुरभी मृग सुरभी बहुरि बसंत॥ सुरभि

चरावत बन सुनौ जो जग करता कन्त ॥ ५ ॥ मधुनाम। मधु वसंत मधु चैत नभ मधु मदिरा मकरंद। मधु जल मधु पय मधु सुदा मधुसूदन ॥ गोविंद ॥ ६ ॥ कलिनाम। कल कलेस कलि सूरिवा कलि निचंग संग्राम ॥ कलि कलियुग तहं ग्रौर नहि केवल केस्व नाम ॥ ७ ॥ धनंजैनाम। ग्रगिनि धनंजै कवि कहत पवन धनंजै ग्राहि। ग्रर्जुन बहुरि धनंजः कृष्न सारथी जाहि ॥ ८ ॥

End—कालिंदी नाम। जम ग्रनुजा रवि जा जमी कोस्न स्यामला ग्राय ॥ यह जमुना सम समद फिरि ग्रावत तुप परलाप ॥ २४७ ॥ तरंग नाम। भग तरंग कल्लोल पुनि विची उर्मि सुभाइ। लहरि हथ्थ पसार जनु जमुना पकरति पाइ ॥ २४८ ॥ उपकंठ नाम फुल पुलिन उपकंठ पुनि निकट रीय परवास तीरतो चलिजाइ वलि ग्रब ग्राये पिय पास ॥ २४९ ॥ वेतनाम। वेग्रर प्रवीद लरवो ग्र पथ पुष्क वानीर ॥ वंजुल मंजुल कुंज तर वैठे है वलवीर ॥ २५० ॥ कोकिला नाम। परभृत कलरव रक्त ईगपिक धुनित हुरस पुंज ॥ जानो पिय ग्रारत निरखि तोहि हेरति वलि कुंज। २५१। इंद्रीनाम। गो मको कप्पर करन गुन इंद्रव जो रसु पाइ। जो राधा माधव मिले परम प्रेम रसुपाइ ॥ २५२ ॥ माला नाम। माला ग्रक ग्रव गुनवती इह जु नाम की दाम। जु नर कंठ करि है सुन रहे हैं छवि को धाम ॥ २५३ ॥ जुगुल नाम जम लग जुगुल जुगंद्विद द्वै उभय मिथुन विवि वीय। जुग्लकिसोर वसहु सदा नंददास के हीय ॥ २५४ ॥ इति श्री नंददास कृत नाम माला समाप्त ॥ का० शु० ११ भृ० केसरी दुवे हित ग्रापने लिषेतु ॥ १ संवत १८१२ ॥

Subject—पृष्ठ १ से २८ तक—भिन्न शब्दों के ग्रनेकार्थ, विष्णुनाम, सुमेरु, मधु, कलि, धनंजै, मन, ग्रर्जुन, पत्र, पत्री, वरही, धाम, हस्ती, सदन, सुवर्ण, रूपा, सुक, कांति, मयुर, किरण सिद्धि, निधि, मुक्ति, राजा, इन्द्र, देवता, सेवक, दासी, ग्रन्तःकर्ण, ग्रंजन, हीरा, मंगल, शुक्र, माता, नमस्कार, पैकारि, सेज, उसेसा, कुसुम, केश, लिलाट, नेत्र, वंशी, श्रवण, रदन, बृहस्पति, मुख, कर, ग्रीव, किंकिनी, नूपुर, भ्रमर, सुक, दर्पण, वीणा, तांबूल, समय, जल, चरण, हरिद्रा, राधा, वचन छेम, नाम, जुवती, क्रोध सुंदर, ग्रर्जुन, युधिष्ठिर, गंगा, दीर्घ, शरीर, कमल, चन्द्रमा, काम, भ्रमर, दामिनी, सैन्य, मित्र, लता, प्रीतम, पुत्र, मनुष्य, योगेश्वर, वेद, शेष, धर्म कुवेर, वरुण, दुर्गा, गणेश, धूर्त, कुरंग, पाप, पाषाण, नौका, रुधिर, राक्षस, महादेव, सूर्य्य, मिथ्या, निकट, चंदन, मीन सागर, वानर, वलभद्र, पृथ्वी, वाण, ग्रग्नि, मुग्ध, ग्रभिज्ञ, ग्रपराध, प्रेम, पर्वत, सर्प, वन, राक्षस, संध्या, विष, पपीहा, रात्रि, ग्राकाश, संग्राम, नख, ग्रल्प, मकरी, मार्ग पत्र, पवन, दिशा, पिता, विवाह, मदिरा, स्वभाव, ग्रंधकार, वृक्ष,

पत्र, पवन, ध्वनि, प्रतिसप, मह, अल्प, दुख, अर्धरात्रि, वज्र, लज्जा, चरण त्राण, अटारी, मकर, चांदनी, बौंधिनी, वसंत, विहंग, पीपल, पाटल, पंच, मातुक, दाड़िम, केदली, श्रीफल, तमाल, कदम, किसुकी, बहेरा, नारि सुपारी, कवाक, मिरिच, पीपरि, हरैं, सोठि, पयारी, दाथ, केसरि, राजबांछ, चंबेली, पाहरिया, जूही, गंजा, लवंग, केतुकी, इलायची, सरोवर, नागलता, माधवी, कालिंदी, तरंग, उपकंठ, बेत, कोकिला, इन्द्री, माला और जुगुल शब्दों के अनेकार्थ हैं।

No. 294(b). Anekārtha Mañjarī by Nanda Dāsa of Mathurā. Substance—Country-made paper. Leaves—24. Size—$7\frac{1}{4} \times 5$ inches. Lines per page—14. Extent—378 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1898 or A. D. 1841. Place of deposit—Ṭhākura Yadu Nātha Baksha Siṁhaji, Rais, Hariharapura.

Beginning—श्रीगणेशायनमः। अथ अनेकार्थ लिख्यते॥

दोहा॥ जो प्रभु मंगल अकमय कारण करन अभेव। विघ्न हरन सब सुख करन नमो नमो तेहि देव। १ एकै वस्तु अनेक हैं जगमगात जग धाम। जिमि कंचन ते किंकिनी कंकन कुंडल नाम॥ २ उचरि सकत न संस्कृत और नहि समुझि समर्थ। तिन हित नंद सुमति जथा भाषा अनेका अर्थ॥ ३॥

End—इति श्री नंददास विरचिते नाम माला समाप्त सुभमस्तु कार मासे सुक्ल पक्षे तिथौ १४ संमत् १८९८ सन १२४९ हस्ताक्षरे सेष महबुब जो प्रति देखी तैसी लिखी।

No. 294(c). Anekārtha by Nanda Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—12. Size—9×5 inches. Lines per page—40. Extent—210 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Satyanārāyaṇa, Kaṭhagar, Rāe Barelī.

Beginning—श्री राधा कृष्णायनमः

जो प्रभु मंगल जगत मय कारण करण अभेव। विघन हरन सब सुख करन नमो नमो तेहि देव॥ १॥ एकै वस्तु अनेक है जगमगात जग धाम। ज्यों कंचन तें किंकिनी कंकन कुंडल नाम॥ २ उचर सकत नहिं संस्कृत प्राकृत बिन समरत्थ। तिन हित नंद सुमत यथा कह्यो अनेका अर्थ॥ ३ शब्द एक नाना अरथ मोतिन की सो दाम जो नर करि है कंठ सो है है रस को धाम॥ ४।

End—गुरु शब्द—गुरु गरिष्ट गुरु विरहस्पति गुरु जो बहुत गुन जाहि। सुखदाता माता पिता ए सगरे गुरु आहि॥ ४४ नंदन शब्द नंदन चंदन को कहत नंदन कहिये तात। नंदन बन पुनि इंद्र को नंद नंदन विख्यात। ४५ केतुकी शब्द॥ केतुकी नभ केतुकी कुसुम केतुकी सूर्य चंद। केतुकी कहत मनोज को केतुको बहुरों कंद। ४६ अनिमिष शब्द-अनिमिष कहिये देवता अनिमिष मी कहंत। अनिमिष काल कराल यह जाको कछु न अंत॥ ४७ कृष्णा शब्द-कृष्णा कालिंदी नदी कृष्णा पीपरि होय। कृष्णा बहुरों द्रौपदी हरि राखे पट गोय॥ ४८ स्नेह शब्द-तेल स्नेह स्नेह घृत बहुरों प्रेम स्नेह। सो निज चरनन गिरधरन नंददास को देह॥ ४९ जो यह अर्थ अनेका पढ़य सुनय नर कोय। ताहि अनेका अर्थ है पुनि परमारथ होय॥ ५० इति श्री अनेका अर्थ संपूरन।

No. 294(*d*). Anekārtha Nāmamālā by Nanda Dāsa of Vṛindāvana. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—8 × 5 inches. Lines per page—8. Extent—50 Anushṭup Slokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Yadu Nātha Baksha Siṁha, Hariharapura, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री गुरुचरणाभ्यांनमः

एक रदन गज बदन सु दीजे बुद्धि उदार। गजानंद रस ग्रंथ को बनत न लगी बार॥ १ जो प्रभु मंगल जक्त मय कारन करन अभेव। विघ्न हरन सब सुभ करन नमो नमो तेहि देव। २ ऐके बस्तु अनेक है जगमगात जग धाम। जिमि कंचन तें किंकिनी कंकन कुंडल नाम। ३ कह्यो जात नहिं संस्कृत औ समुझन सम हत्थ। तिन्ह हित नंद सुमति जथा भाषानेकारथ्य॥ ४

End—पतंग नाम। तरनि पतंग पतंग पग पावक बहुरि पतंग। सवज रंग पतंग है हरि येकै नव रंग। २६। पलनाम। पल आमिष को कहत कवि पद् उनजास पल होइ। पल जो पल कह रिषि च धरे गोविन्द जुग सत सोइ। २७ दल नाम। दल कहियो नृप............

No. 294(*e*). Mānamañjarī by Nanda Dāsa of Mathurā (Muttra.) Substance—Country-made paper. Leaves—39. Size—8½ × 5 inches. Lines per page—9. Extent—515 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—San 1237 Hijarī or A. D. 1859. Place of deposit—Rāja Pustakālaya Bhingā Rāja, Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ । मानमंजरी नाम संज्ञा जुक्त नन्ददास कृत लिख्यते ॥ दोहा ॥ जो प्रभु जोति मय जगत कारन करन अभेव । अशुभ हरन सम शुभ करन नमो नमो सो देव ॥ १ येकै वस्तु अनेक है जग मगात जग धाम । जिमि कंचन ते किंकिनी कंकन कुंडल नाम ॥ २ तं नमामिहं परम गुरु कृष्ण कमल दल नैन । जग करता तारन जगत गोकुल जाको ऐन ॥ ३

End—माला नाम—माला श्रक श्रज गुनवती माल्य नाम की दाम । जो नर करिहैं कंठ वह ह्वै है गुन के धाम ॥ ४०१ जुगलनाम । दुंदुभि जुग्म विवि द्वंद द्वै मिथुन उभै जम वोय । जुगलकिसोर सदा वसहिं नंददास केहोय । ४०२

इति श्री मानमंजरी पुस्तके नाम संज्ञा जुक्ते श्रीकृष्ण जु राधा जु मान वर्णन कवि नंददास विरचिते प्रेम पुस्तके समाप्तं शुभं मस्तु मि० भादौ शुदि १४ सन् १२३७ दसखत प्राग कुरमी के पाठार्थ अपने वास्ते ।

Subject—प्रार्थना १—६ छन्द तक, कृष्ण नाम ७—९, मान नाम १०, सखी ११, बुद्धि १२, सरस्वती १३, शीघ्र १४—१५, धाम १६-१७, सुवर्ण १८-२०, रूप—२१, उज्वल २२, शोभा—२३, दीप्ति—२४, किरण २५, मयूर २६—२७, सिंह २८—२९, अश्व ३०, हस्ती ३१—३२, सिद्धि ३३—३४, निधि ३५-३६, जुक्ति ३७—३८, मनोरथ ३९, राजा ४०, इंद्र ४१—४६, देवता ४७—५०, अमृत ५१, सेवक ५२, दासी ५३, अंतःकरण ५४, अंजन ५५, हीरा ५६, मुक्ता ५७, मंगल ५८, बृहस्पति, ५९-६०, शुक्र ६१, लक्ष्मी ६२—६३, माता ६४, नमस्कार ६५, सोटी ६६, बेनी ७१, पुत्री ६७, शय्या ६८, बलिस्ति ६९, पुष्प ७०, केस ७१, मस्तक ७२—७३, नेत्र ७४, श्रवन ७६, अधर ७७, सिर ७८, दशन ७९, ठोढी ८०, वदन ८१, ग्रीवा ८२, श्यामता ८३, कर ८४, उरोज ८५, किंकिनी ८६, नाभि ८७, पंक्ति ८८, नूपुर ८९, वस्त्र ९०, शुक ९१, दर्पण ९२, वीणा ९३, नाद ९४, ताम्बूल ९५, उर ९६, उदर ९७, समय ९८, जल ९९—१०२, चरन १०३, हरिद्रा १०४, कुटिल १०५—६, भृकुटी १०७, क्षेम १०८, नम्र १०९, युवती ११०—११, क्रोध ११२, राधा ११३—११५, ब्रह्मा ११६—११९, सुंदरता १२२, अर्जुन १२५, युधिष्ठिर १२६, गंगा १२९, दीरघ १३२, कमल १३७, कौंई १३८, कंथा १३९, चंद्र १४३, कंदर्प १४६, भ्रमर १४८, मेघ १५०, दामिनी १५२, सेना १५४, प्रिया १५५, लता १५६, गौतम १५७, पुत्र १५८, मनुष्य १५९, मनोहर १६०, आमी १६१, वेद १६२, शेष १६३, धर्मराज १६४—६६, कुबेर १६९, वरुण १७०, दुर्गा १७३, गणेश १७६, धूर्त १७८, कुरंग १८२, पाषाण १८३, नाव १८४, रुधिर १८५, राक्षस १८८, धूरि १८९, महादेव १९५, सूर्य २०१, मिथ्या २०३ निन्दा २०५, चंदन २०७, मौन २११, सागर २१४, बादर २१६, बलिभद्र २१९, उदासीन २२०, पृथ्वी २२५,

धनुष २२६, तरकस २२७, तीर २३०, अग्नि २३५, अग्नि कणा २३७, मूर्ख २३८ चित्र २३९, अपराध २४०, प्रेम २४१, परवत २४४, भुजंग २४९, घोड़ा २५०, वाटिका २५२, वन २५३, असुर २५५, संध्या २५६, विष २५८, द्रव्य २५९ गणिका २६१, पतिव्रता २६२, चातक २६३, रजनी २६६, आकाश २६९, मीच २७०, युद्ध २७४, नम्र २७५, सूक्ष्म २७६, मकरी २७७, मारग २८०, कृपा २८१, वक्र २८३, दिया २८५, नदी २८८, पिता २८९, विवाह २९०, मदिरा, २९३, स्वभाव २९५, अंधकार २९६, वस्त्र २९९, पल्लव ३००, पत्र ३०२, पवन ३०५, ध्वनि ३०७, आज्ञा ३०८, पति ३०९, समूह ३१०—३१६, अल्प ३१७, दुःख ३१९, रात्रि ३२०, वज्र ३२२, लज्जा ३२३, पनही ३२४, लघुभ्राता ३२५, महल ३२६, चांदनी ३२७, वीथी ३२८, उपवन ३२९, वसंत ३३०, खग ३३४, पोपट—३३५, आरक्त ३३६, पाडर ३३८, आम्र, ३४०, महुआ ३४१, चंपक ३४२, दाड़िम ३४३, कदली ३४४, बेल ३४५, तमाल ३४६, कदंब ३४७, किंशुक ३४९, बहेड़ा ३५०, नारियल ३५१, सुपारी ३५२, केवाछ ३५५, मरिच ३५६, पीपर ३५९, हर्रे ३६१, सोंठ ३६२, मूंगा ३६३, चकरंद ३६४, दाख ३६७, केशर ३६९, जुही ३७८, चमेली ३७३, सजीवनि ३७५, मालती ३७७, दुपहरिया ३७९, गुंजा ३८१, केतकी ३८२, लवंग ३८३, माधवी ३८४, इलायची ३८५, पान ३८६, सरवर ३८८, वरगद ३९०, जमुना ३९१, तरंग ३९२, उपकंद ३९४, कस्तूरी ३९५, कपूर ३९६, बेंत ३९७, कोपल ३९८, इन्द्री ४००, माला ४०१ जुगल ४०२ इति,

No. 294(*f*). Nāma Mālā by Nanda Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—44. Size—7½ × 4½ inches. Lines per page—10. Extent—385 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1853 or A. D. 1796. Place of deposit—Lālā Mahāvīra Prasāda, Village and Post Office Gaurigañja, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ नाम माला लिख्यते ॥ दोहा ॥ तं नमामि पद परम गुरु कृष्ण कमल दल नयन ॥ जग कारण करुणा रवन गोकुल जाके अयन ॥ नाम रूप गुन भेद कह सो प्रगटत सब ठौर ॥ ताबिन तत्व जो आन कछु कहे सो अति बड़ बौर ॥ समुझि सकत नहि संसकृत जानो चाहत नाम ॥ तिन लग नंद सुमति जथा रचत नाम को दाम ॥ ३ ॥ गुंथन नाना नाम को अमरकोस के भाइ ॥ मानवती के मान पर मिलै अर्थ सब आइ ॥ ४ ॥ छाती नाम । वत्स वक्ष उर पीय के निरखि आपना भाइ ॥ ताते बड़ो गुमान अति अवर तीय के माइ ॥ ५ ॥

End—माला नाम। माला व्रज सुग गुनवती यह जु नाम की दाम ॥ जे नर कारिहैं कंठ जग हुइ है कवि को धाम ॥ २५१ ॥ इति श्री नाम माला नंददास कृत समाप्तम्। संवत १८५३ श्रावण शुक्लपक्षे तु भौमि नंदन संज्ञ के गंगा विष्णु मिश्रेन लिखित्वा। वांचि सुधो रहो मित्र तुम पुस्तक लिखो बनाइ ॥ यह अस्तोस हमरो फले श्री गोपाल सहाय ॥ १ ॥ श्रीमते रामानुजायनमः

Subject—अनेक नाम—ज्ञानी, मान, सखी, प्रज्ञा, वागीश, शीघ्र, धाम, कंचन, रूप, उज्ज्वल, शोभा, किरण, मयूर, सिंह, अश्व, हस्ती' अष्टसिद्धि, सिद्धि मोक्ष, राजा, इन्द्र, देवता, अमृत, मृत्यु, अंतर्धान, अंजन, दासी, हीरा, मंगल, शुक्र, माता, वृहस्पति, मुक्ता, लक्ष्मी, नमस्कार, निःश्रेणी, सुता, शय्या, कुसुम, उसीसो, मुख, अलक, मस्तक, वक्र, लोचन, कर्ण, कर, वंशी, अधर, दशन, श्यामता, ग्रीव, उरोज, रोमराजी, क्षुद्रघंटिका, तर्कस, नूपुर, वसन, भान, दर्पण, वीणा, शुक, नीर, भय, हरिद्रा, क्रोध, समय, कुशल, नाम, स्त्री, ब्रह्मा, दीर्घ, अर्जुन, गंगा, शरीर, कमल, चन्द्रमा, मनोज, मेघ, विद्युलता, सेना, धनुष, मधुव्रत, प्रिया, बल्ली, प्रीतम, पुत्र, नर, वेद, ईश्वर, योगेश्वर, धर्मराज, कुबेर, वरुण, शेष, विघ्नेश, जन्म, वंचक, मृग, पाप, पाषाण, नौका, रुधिर, राक्षस, धूरि, महादेव, सूर्य, अनृत, निकर, चंदन, मीन, सागर, मर्कट, संकरषर्ण, पृथ्वी, रस, अग्नि, अन्न, अपराध, पर्वत, भुजंग, घोड़ा, वन, सुर, संध्या, विष, मनोहर, सुन्दर, धन, गणिका, पतिव्रता, पार्वती, कृपा, चोर, वर्ष, खड्ग, रजनी, आकाश, नख, संग्राम, सूक्ष्म, मकरी, मार्ग, दिशा, नंदी, वृक्ष, पत्र, पवन, दुःख, लज्जा, वज्र, पिता, मदिरा, स्वभाव, समूह, अति, आज्ञा, वेरि, पदत्राणि, उच्च, धाम, मकर, चांदनी, वीथी, अंधकार, वाग, वसंत, विहंगम, ग्रहण, पाडर, आम्र, चंपक, मधुप, दाड़िम, कदली, वेला, माल, कदंब, किंशुक, बहेरा, सुपारी, नारियल, केंवाछ, मरिच, पीपरि, हर्रे, सोंठि, विद्रुम, दाख, केसरि, स्वर्ण जुथिका, मालती, सजीवनी, कंद, बंद्रक, गुंजाफल, केतकी, लवंग, माधवी, नागलता, वट, सरोवर, कालिन्दी, तरंग, तीर, वेत, कोकिला, शब्द, इन्द्री, जुगल, रसनाम बोर मालानाम।

No. 294(*g*). Nāma Mālā by Nanda Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—21. Size—9 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—661 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1863 or A. D. 1806. Place of deposit—Paṇḍita Śiva Prasāda, Village Dhemani, Post Office Sisaiyā, District Bahāraich.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नाम माला लिष्यते । प्रनमामि परमं गुरं कृष्ण कमल दल नयन । जग कारन करुना अव गोकुल जाको अयन । नामरूप गुन भेदि कै प्रगट जो सब ही ठौर । ता बिन तत्त्व जो आन कछु रचै सो अति बड़ बौर । उच्चरति सकित न संस्कृत जानो चाहत नाम तिन हित नंद सुमति यथा रचत नाम के दाम ॥ ग्रंथन नाना नाम को अमरकोष के भाइ । मानवती के भाइ पर मिलै अर्थ सब पाइ । वस्त्र वक्ष उर पोय तन निरषति अपनी झांइ । वाके बाढ़े मान यह आनति जाके भाइ ॥ स्यामदर्प अंकार मद गर्व समै अभिमान ॥ मान राधिका कुंवरि को सब को करु कल्यान ॥ वैशासंधो यों सषी हित सहचरी आहि । अली कुंवर नंदलाल की चली मनावन ताहि ॥ हस्ती नाम । हस्ती दंतो द्विरद द्विप पद्मी बारन व्याल । कुंजर इभि कुंभो करति, बेरमजात उडाल ॥ सिंधुर नेकै नाम हरि गज समाज मातंग । अति गयंद झूमत रहत राजन नाना रंग ।

End—इलायची के नाम । चन्द्रकन्यका निःकुटी त्रकुछट पुलकीन बेलि । इत येलो पग परति वलि यह रंचक मुष मेलि ॥ माधवी के नाम । वासंती पुंड्रक सोइ अति मुक्ता फल नाउं । इत मधवी कहि पां परति तनिक चितै बलि जाऊं ॥ नागवेलि के नाम । तांबुल अहिवल्लरी द्विज पानो की वेलि । सरस भई तुव दरस ते बलि रंचक मुष मेलि ॥ सरोवर के नाम । ह्रद पुष्कर कासार सर सरसो ताल तड़ाग । यह देषैा वलि मान सर फूल्यो तुव अनुराग ॥ वट के नाम । जटी कपर्दी रक्तफल बहु पदन्न अन्य ग्रोध । यह वंसोवट देषि वलि सब सपि नर वधि रांध । जुगुल नाम । जमल जुग्म जम द्वंद द्वै उभय मिथिन विवि बोय । जुगुलकिसोर सदा बसो नंददास के होय ॥ माला नाम ॥ माला श्रकु श्रज गुनवती यह छ नाम को दाम । जो नर कंठ करिहै सुघर होइ है छवि को धाम । कल्पवृक्ष के नाम । हरि चंदन मंदार पुनि पारिजात संतान । कल्पवृक्ष कहि देवतरु पुंसिपंच इत जानि ॥ इति श्री नंददास कृत नाम माला सम्पूर्णम् संवत १८६३ माघे ।

No. 294(*h*). Nāma Mālā by Nanda Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—20. Extent—360 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1918 or A. D. 1861. Place of deposit—Paṇḍita Sidhinātha Vājapeyi-Keli, Rāe Barelī.

Beginning—नाममाला । श्री गणेशायनमः । जयति जयति श्री वृषभान नंदनी नंद को लाड़िलो श्री वृंदावन कुंज विहारी ।

तत्रमामि पर परम गुरु कृष्ण कमल दल नयन। जग कारण करुणा करन गोकुल जिनको चैन ॥ नाम रूप गुण भेद करि सो प्रगटत सब ठौर। ताबिन तत्त्व जो आन कछु कहै सो अति मति बौर ॥ समुझि सकत नहिं संस्कृत जानो चाहत नाम। तिन हित नंद सुमति यथा रचत नाम की दाम ॥ ग्रंथत नाना नाम को अमरकोश के भाय। मानवती के मान पर मिले अर्थ सब आय ॥ छातो के नाम। वत्स वच्छ उर पोय के निरखि आपनो छाय। ताते उपज्यो मान हिय आन तिया के भाय ॥ मान के नाम। अहंकार मद दर्प पुनि गर्वस्मय अभिमान। मान राधिका कुंवरि को सब को कर कल्यान।

No. 294(*i*). Nāma Mālā by Nanda Dāsa Substance—Country-made paper. Leaves—53. Size—5 × 4 inches. Lines per page—17. Extent—424 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṁvat 1928 or A. D. 1870. Place of deposit—Ṭhakura Dalajīta Siṁha, Village Zālimapurawā, Post Office Kesargañja, District Bahrāich (Oudh).

No. 294(*j*). Nāmā Mālā by Nanda Dāsa of Gokula. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—8 × 4½ inches. Lines per page—35. Extent—400 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābū Padma Baksha Siṁha, Lavedapur, Bhinagā Rāj, Bahrāich.

No. 295. Kokaśāstra by Nandakeswara Paṇḍita of Paṭnā. Substance—New paper. Leaves—198. Size—9½ × 7½ inches. Lines per page—17. Extent—1,262 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Written in Prose and Verse. Character—Kaithī. Date of Composition—Saṁvat 1675 or A. D. 1618. Place of deposit—Paṇḍita Rāma Prapanna Mālaviya Vaidya, Sultānpur (Oudh.)

Beginning—श्री सोताराम जी सहाय नम्हा। श्री गनेस जोव सहाय नम्हा। श्री पोथी कोकसासत्र। बरनो मनपतो बाघोनो घोनासा। जेहो सुमीरत मतो मतो प्रगासा ॥ सम दिन वंदो सरोसतो माता। बरनो शंकर सोधो बुधो दाता ॥ वंदो हरो ब्रह्मा के पाया। जन ज्ञापिता जाकर माया।

स्रम ब्रोतु पतालहि देवा। दस द्रीगपाल करही जे सेवा॥ बंदैा पांइ स्रु ज मन तारा। बंदैा गनपती जोती थपारा॥ दोहा (खंडित) सभ पंडीत के बेदी के बहु बोधो × × × ×। काम साख्र कछु भाखोः × × × ×॥ बंदैा कोस पछ रवोवारा। तेही दिन बोधी कथा अनुसारा॥ तोथो तीरोदसी हम होत पावा॥ हस्त नछत्र हमही मन लावा॥ सोधी जोग कर उपमा होइ। ऐही बोधी कथा सोधो पै होइ॥ साह सलेम जगत सुलताना। तेही पाछे पटना मोज थाना॥ दोहा॥ सोरह सै पचहतरः हम जो गीना दइ दोसः। सन दफतर म हम देखा एक हजार बतीसः॥ चैापाई॥ नंदकेसवर पंडीत ऐक भेउ। पहोले गरंथ के उन कहेउ॥ गुनीक पुत्र कबी पती माना॥ काम कलारस सभ उन जाना॥ उन्ह के मते ग्रंथ हम देखा। कीछु छनछेप बोचारो बोसेखा॥ कामकला कछु बरनो सोइ। सुनत रसाल रसिक बस होइ॥ रसोक कबौ नबो नरनाहा। कामकला रतो रस बैागाहा॥ दोहा॥ बहुत ग्रंथ बोचारी तेः होऐ बहुत दीन खेवः। बाल बैाध के कारनेः कीउ कथा छनछेपः॥ चैापाई॥ कामते तुमै कहैा बीचारो। लछन पुरुस जाती मैाचारी॥ सहसा श्रीगा बोरखम तुरंगा पावही नामक रसोक सुरंगा। पहिले कहैा ससा का लछन। कामकला प्रम बीछन॥ रतीरस रसोक बरनो मन हरइ। गावत पठत बोसु बस करइ॥ सत्य बचन दाता गुनवंता। सुख सब रूप अपोक धनवंता॥ दोहा॥ थप अंगुरो सरोस सुद्ध अंह सकल प्रधानः। बरनो ऐक पदुमिनी केः जाने रसिक सुजान॥

End—इलाज प्रमेव वो सुजाक का॥

आम का टीकोरा, वो तालमखाना वो तज वो मेदा वो माजूफला वो कुवार-कागुनी (माल) वो वरम्रडंडो मो सम बरावर ले सबुल खटाक दाल-चीनी पइसा भर, मुसली सोयाह पावः सतावर पावपाव चीजेंका पाचका थकर करावे सामरः वो चैाल चुरुवा पैसा भरः इन समो का जुदा जुदा पीसे साथ तीनो सेस कर तरो मिलावे बीच वखत सुबाह के एक तरह थी भर गाइका दवा साथ खाइः वो पानी ताजा साथ खाएः वो जब तक के खाय तब तक नजदीक श्रैारत के न जाएः वो तुरसो वो खटा बादी से परहेज करे जलदी से आराम होय। दुसरा दवा। रस कपूर आठ मासाः करन फल सताइस रद जायफल इगारह इस तरह सब दवाइ।

Subject—(१) पद्यात्म देवादि वन्दना, ग्रन्थ निर्माण काल ग्रैार लेखक तथा उसके अभिभावक का नाम निर्देश पृ० १—२। (२) पुरुष तथा स्त्री जाति के लक्षण, वसीकरण मंत्र सहित पृ० ३—२० तक। (३) काम निवास स्थान तिथियों के हिसाब से, मर्दन, चुंबन, नखक्षत तथा आलिंगन विधि २१ पृ० ३४

पृ० तक-(४) आसन तथा गंध पदार्थादि वर्णन, मुख शोभा तथा कामोद्दीपक अन्य इच्छित कार्यों के साधन, पुष्टाङ्ग, विधि, स्तम्भनादि विधि। पृ० ३५—५५ तक—(५) तावीज, उबटन, तिलक अंजन, मोहनो, गहन का, बसकरना, गर्भ पलटन, गर्भ रहना, पुत्र होने इत्यादि का साधारण वर्णन, पृ० ५६—६५ तक। (६) मोहक अंत्र, समुद्र फल गुण पृ० ६६—७२ तक। (७) बांझ की हिकायत, सात प्रकार की बांझों के लक्षण, बांझपन विनाश के उपाय। तावीज, दर्मे के इलाज, अन्य इलाज, सिर पीड़ा का तावीज, खांसी का इलाज, दाद का इलाज, पृ० ७३—८५ तक। (८) सगुनौती पृ० ८६—९० तक। (९) पुष्टादि की औषधियां, तांबा, रांगादि मारने की विधि और नाना प्रकार के मन्त्र हैं पुस्तक के अन्त तक अर्थात् ९१ पृ० से लेकर १९८ तक कितनोंही प्रकार की औषधियों का वर्णन।

No. 296. Bāraha Māsā Rādhā Kṛishṇa by Nandalāla. Substance—Country-made paper. Leaves—24. Size—8 × 6 inches. Lines per page—28. Extent—336 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Ṭhākura Jairama Simha, Mirzāpura, Post Office Mahamūdābād, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ राधा कृष्ण का बारहमासा लिष्यते॥ पति सुप्रष मुषदंत येकै कपिल बहु गुन नायकं॥ जग करन सब दुष हरन सुष करनं दायकं॥ बिघन हरन बिग्यान दायक सुर सहायक बिकट अति लंबोदरं। करिबर बदन सुष सदन बहु गुन भाल ससिबर सुन्दरं॥ धूमे ध्वज त्रिसून करि रिपु मथने सकल नसायकं। भुज चारि अद्‌भुत रुप सोहे बिबुध पति सब लायकं॥ यह बिनय मेरो सुनु बिनायक देहु बुधिबर दायकं। नंदलाल तुमरी सरन आयो सुमति सहायकं॥ दोहा॥ द्वादस नाम गनेस के सुने महा सुष होइ। सुफल करैं मन कामना जो सुमिरै नर कोइ॥ सुमिरि भवानी संकरहि औ गुरु चरन मनाइ। बारहमासा कहत हौं मोको होउ सहाइ॥ सारंग पानि सनेह बस सदा रहैं अनुकूल॥ बिन कारन जो जगत में ताहि न कबहूं भूल॥ जदुपति औ गोपी बिरह सो सब कहौं बषानि॥ मिलि है सब कहं आनि प्रभु। बात लेहु पहिचानि॥

End—छंद॥ समुझाइ सब मृदु बात कहि पितु मातु को बिनती करी। भये पुलक लोचन नीर बरषै॥ मनहु सावन की झरी॥ सुनु मातु मैं नहि उरिन

तुम सों जलम कोटिन हों घरों। अब जाउ तुम ब्रज लोग लैकै कर जोरि तव पायन परों॥ तब कहति जसुमति सुनौ जदुपति एक वर मोहि दीजिये॥ यह मधु मूरति बसै उर महं नाम निसु दिन लीजिये॥ तब धाय पितु के चरन परसे जोरि कर पुनि पुनि कह्यो। प्रतिपालि हमहि प्रवीन कीनो सुजस तुम्हरो होइ रह्यो॥ तुमरी अनुग्रह राव पायो भयो मैं त्रिभुवन धनी। करति दाया रहौ मोपर कहौ यह जदुकुल मनी॥ पितु विदा तुम मम होन आयो वेगि आयुसु दीजिये। गहि चरन हरि के नंद बोले तात यह सुनि लीजिये॥ अन जानि मैं नहि चरन परसे भूलि तव माया रह्यो। चरित अगम अपार तुमरो पार कवने लह्यो॥ जाहु घरहि कृपाल मेरे सुरति जनि विसराइयो। करि सुरति कबहुं आइ ब्रज मंह फेरि दरस दिषाइयो॥ दोहा॥ वार वार मिलि भेंटि कै विदा भये गोपाल। प्रभु पहुंचे द्वारावती गोकुल आये ग्वाल॥ इति श्री वारहमासा राधाकृष्ण संवाद नंद जू को संवाद सम्पूरन समाप्तः॥ इति श्री कातिक मासे शुक्ल पछे तिथौ अष्टम्यांम चन्द्रवासरे संवत १९२१ दसषत मोहनलाल गोयनो के।

Subject—श्रीकृष्ण और राधिका का प्रेम, श्रीकृष्ण का गोपियों को छोड़ मथुरा जाना, वहां से द्वारका जाना, गोपियों का विवाह फिर तीर्थ स्नान हेत श्रीकृष्ण का द्वारका से आना, इधर व्रजवनिता समेत नंद यशोदा जी का भी जाना, वहां श्रीकृष्ण से राधिका का गोपियों को साथ ले कर मिलना और नंद यशोदा का श्रीकृष्ण जी से मिलना आदि।

No. 297(*a*). Hitōpadeśa Bhāshā by Nārāyaṇa. Substance—Country-made paper. Leaves—58. Size—$10\frac{1}{4} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—19. Extent—1,275 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1877 or A. D. 1820. Place of deposit—Bābū Padma Baksha Simha, Lavedpur (Bahraich).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ सुहृदभेद कथा लिख्यते॥ दोहा॥ दिक्ष दयाल कवि कोविदनि मति प्रसाद सुषदानि। द्विरद माथ गननाथ के चरन सरन जिय आनि॥ १॥ चौ०॥ राजपुत्र बोल्यौ इमि फेरो। मित्र लाभ भाष्यौ द्विज टेरो। सुहृद भेद को कहौ कहानो। जाते राजनीति पहिचानो॥ दोहा॥ वृषभराज मृगराज कौ कहं बंध्यो अति प्यार। दगाबाज दंभी लुबुध सुष तोर्यो एक स्यार॥ २॥ चौ०॥ राजपुत्र बोले यह कैसो विष्णु सर्म भाषो है जैसो॥ है दक्षिन दिसि जग अभिरामा। नगरी एक सुवरना नामा॥

End—विष्णु शर्मोवाच ॥ जे देवन्ह के पाछे थाका । ते सारस को दीन्हे लोका ॥ विद्याधरी अप्सरा साथा । चवर डोलावत अपने हाथा ॥ जे कृतज्ञ भरता के भक्ता । सदा रहै प्रभु सो अनुरक्ता ॥ सूर समर को नीके मांडे । स्वामि हेत जीवित को छाड़े ॥ ते नर होत स्वर्ग के गामी । सुजस सकल पावै जग नामी ॥ मारि जाइ शत्रुन सो सूरा । सुप पर नेकु रहै पै नूरा ॥ कातर बोलन आपन भाषैसा । अमरावति को रस चाखै ॥ औार सकल सुख तुम कह होई । विग्रह करै न पावै कोई ॥ नीति मंत्र रिपु मारै जाही । बन बन फिरै मूल फल खाहीं ॥

इति श्री हितोपदेश विग्रहो नाम तृतीय कथा समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥ सम्वत १८७७ ॥

इति ।

Subject—सुहृद भेद, पृ० १-२४ तक । विग्रह, पृ० २५-५८ तक ।

No. 297(*b*). Hitōpadeśa (Rājanīti) by Nārāyaṇa. Substance—Country-made paper. Leaves—232. Size—6 × 4 inches. Lines per page—16. Extent—2,704 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1924 or A.D. 1867. Place of deposit—Ṭhākura Digvijaya Simha, Tālukedāra, Village Dikauliyā, Post Office Biswā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ हितूपदेश लिष्यते ॥ दोहा ॥ सिद्धि साधु के काज मे सो हद करौ कृपालु गंग फेन को लोक सी सिर ससि कला विसाल ॥ १ ॥ सुनो सहित उपदेस देत बचन रचनानि वेदन को बानो लहै राजनीति पहिचानि ॥ अजर अमर के हेत ते विद्या धनहि बढ़ाव । मीचु मनैा चोटी गहे देत विलंब न लाव ॥ विद्याधन सब धनन ते संत कहत सरदार । मोल बढ़ो ना घटत घर किये न पैइये मार ॥ विद्या देत विनीत करि विनै बढ़ाई देत । बड़े भये धन पाइये दान भोग धन हेत ॥ शास्त्र सस्त्र विद्याद्व चित्र धन औार धर्म न जाइ । बिरधाई पहिले हंसी दूजी सदा सोहाइ ॥ दारुन नृपति समुद्र सम विद्या नदी समान ॥ द्वै पहुंचावै नीचहू लाभ भाग परमान ॥ विद्यानदी नदीस नृप नीचहु मिलवै हाल । दारुन नृपति दया करै होइ जो भाग कृपाल ॥ प्रथमहि जाको नाम जो धरै न घट में आनि । बाल कथा छल कहत हैं राजनीति पहिचानि ॥

End—दोनों गये आपने राजा । सुप सो करत आपनो काजा ॥ विष्णुशर्म बालन सो कहो । आयसु करौ सुनै जो चहो ॥ राजपुत्र बोले जिय जानी । विष्णुशर्म को आदर मानी ॥ द्विज बर जो राजन को चहो । सोई कथा आप

यह कहो ॥ दूजो भयो जन्म अवतारा । सुनिये राज अंग व्योहारा ॥ भयो बहोरि फेरि अब भयो । सुष समूह पायो दुष गयो ॥ विश्नुशर्म तव दई असीसा । संचि करो शुभ घरो महीसा ॥ विपति दूरि साधन की जाई । दानन की रति सदा सोहाई ॥ नीति नई नारो लो जबै । चुंबन करै मित्र सुष लगै ॥ मंत्री मंत्र सदा मन धरै । महाराज सुष आपुहि करै ॥ दोहा ॥ जौलौं गिरि गौरीस की बढ़त जात नित नेत । जौ लौं लछिमि मुरारिधर प्रगट करत चौ मेत ॥ जौ लौं सुर गुर संग करि फिरि सूरज औ चंद । तौ लौ नारायन कथा सुनै सो मनहि अनंद ॥ हित छल वहु यामें अहे भूपन की वरनीति अरु उपाव बल बुद्धि की प्रिय चरित्र रस रीति ॥ मंत्र भेद सुदेस के जोर व फोर व संचि अरु अनेक गुन भेद हैं याहि कथा सो बंचि ॥ इति श्री हितुपदेश नारायन कृत समाप्तम् ॥ श्री संवत १९२४ माघ मासे कृष्णपक्षे तिथौ ४ ससि दिन लिष्यते वल्देव पंडित पैदापुर ग्राम निवासते ॥

No. 297(c). Hitōpadesa Bhāshā by Nārāyaṇa. Substance—Country-made paper. Leaves—41. Size—13 × 5 inches. Lines per page—12. Extent—600 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1927 or A.D. 1870. Place of deposit—Ṭhākura Dalajita Simha, Village Jālimasiṁha kā purwā, Post Office Kesargañja, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्रीमते रामनुजायनमः अथ राजनीति हितोपदेश भाषा लिष्यते ॥ दोहा ॥ सिद्धि काज साधु मैं सो हरु करै कृपाल । गंगा केतु कि लीक सिसिर ससि काल विलास ॥ सुनिहुत उपदेस यह देत वचन रचनानि ईवन्ह को बानी । लहे राजनीति पहिचानि । अजर अमर की भांति सो विद्याधनहि बढ़ाव । मीचु मनो झोठी गहे देत न वार लगाउ ॥

End—राजकुमार कथा सुनि बोले । एकहि वार सहस मुख ऐाले ॥ आनंद बड़ो हमारे भयो । उनको साथ छूटि नहि गयो । कुशल भांति अपने घर आयो हमरे मन आनंद बढ़ायो ॥ विश्वशर्मा उवाच ॥ राजकुमार एक सुनिये वाता । जो हौं तुम्हे असीसत गाता ॥ पावे साधु भ्रात सब लै कोय । लक्ष्मीवंत देस निज होय ॥ भूपति सब भूमिहि प्रतिपाले । धर्महि धरै न डोले हाले । अर्द्धचन्द्र चूड़ामणि जाके । सो कल्याण करै प्रभु ताके । इति श्री हितोपदेस प्रथम कथा मित्र लाभ समाप्तं । सुभ मस्तु । समै नाम माघ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ नौमी रविवारे संवत १९२७ दसषत दलजीत सिंह के ।

No. 297(*d*). Hitōpadeśa by Nārāyaṇa. Substance—Country-made paper. Leaves—48. Size—13 × 6 inches. Lines per page—16. Extent—960 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Mahipati Siṁha, Bhairampur, Rāe Barelī.

Beginning—पृष्ट २ से ।

दारुन नृपति समुद्र सो विद्यानदी समान । लै पहुँचावै नीचहूं लाभ भाग परमान ॥ विद्यानदी नदीस नृप नीचहु मिलवै हाल दारुन दानि दया करै होइ जो भाग कपाल ॥ प्रथमहि वाको नाम जो भरो नये घट हारि । वाल कथ छल कहत हो राजनीति सव झारि ॥ मित्र लाभ फिरि सुहद को भेद पो विग्रह संधि पंचतत्व सों ग्रंथ पढ़ि चारि कथा में वंधि ॥

End—रोग सोक संताप यह घरो पहर को संग । तातन कारन कैान नर करै पाप परसंग ॥ चल जल में ससि विंव ज्यों त्यों मन तन में प्रान समुझि इहै मन आपने कैान करै कल्यान ॥

तातें मेरे मन यह आई । तोसों वात कहैां मन भाई ॥
सत्य ये कहै भेदहजार । सत्यहि को दीजै फिरि भार ॥
जो लो गैारि गिरीस को वढ़त जात नित नेह ।
जो लो लछि मुरारि उर लागि तड़ित जो मेह ॥
जो लो सुर घर कनक गिरि फिर सूरज घरु चंद ।
तो लो नारायन कथा सुनै सुजान अनंद ॥
इति हितोपदेश भाषा नारायण कवि कृत समाप्त: ॥

No. 298. Gopīsāgara by Nārāyaṇadāsa. Substance—New paper. Leaves—38. Size—7½ × 4½ inches. Lines per page—48. Extent—1,140 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṁvat 1898 or A. D. 1841. Place of deposit—Paṇḍita Ajodhyā Prasāda Miśra, Kaṭail, Post Office Chilwalīyā, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वती मातु जी सहाई ॥ अथ गोपी सागर कथाः लिख्यते ॥दोहा॥ विघ्न विनासन भव हरन बुद्धि होत परगास । सुमिरन करो गणेश को होइ शत्रु को नाश ॥ चैापाई—श्रीगुरु श्रीगुरु श्रीगुरु देहु । जिनके मरम न जाने केहु ॥ जब उद्धव गोकुल कहं आये । गोपिन कह यह कथा सुनाये ॥

कुशल सिंह मूरख अज्ञानो । सो चरित्र भाषा रचसानो ॥ गुरु प्रसाद कहैा कछु जानो । नाहीं तौ पशु हैा अज्ञानी ॥ दुसरे साधु संगति बुद्धि पाई । सो कहा नीति राघव गुसाई ॥ दोहा ॥ गोपिन आगे उद्धव कथा जो कीन्ह बखान । गुरु दाया ते भायेउं हम पशु वा अज्ञान ॥

End—श्रवन संदेसा सुना हरि चित दाया प्रभु कीन्ह । नारायन दास प्रभु चरण कमल तन मन प्रीति दीन्ह ॥ चैा—गोपी सागर संपूर्ण भयऊ । कहत सुनत पातक सब गयऊ ॥ संत असंत सुनहि प्रापति होई । मोक्ष मुक्ति तेहि प्रापति होई ॥ गुरु की दया भवोपि स्वासा । तब एक कथा कीन परगासा ॥ दुसरे साधु संगति बुधि पाई विष गै उतरि सुरति चित आई ॥ नहि तै मैं पशु वा अज्ञानो । कत पाउं बरश अमृत बानो ॥ अधम करम कछु धरम न आहो । भु को भार भंज जैहां व्रज मांही ॥ दोहा ॥ गुरु दयाल भव कहा हम अधम जिव जाति । प्रथम कथा हरि सुरस की नीति की है अ ख्याति ॥ २२५

इति श्री पोथी गोपी सागर कथा सम्पूर्ण समाप्त । जो देखा सो लिखा मम दोषो न दीयते ॥ मिती पूष छैाद मास शुक्ल पक्ष तिथि ६ षष्ट संवत १८९८ वि० लिखा देवीदीन छावनी कर्नाल रजमटि ९ वाहर शोम्वार॥ राम राम ॥

Subject—स्तुति, कृष्ण का उद्धव को ब्रज में भेजना, उनका यशोदा और गोपियों से मिलन, (पृ० १—३)। व्यास अगस्त और नारद सम्वाद, उद्धव का गोपी को समझाना मारकण्डेय की कथा कहना, गंगा किनारे ऋषियों का एकत्र होना और अगस्त्य द्वारा मारकण्डेय का प्रलय में कृष्ण का सहायक होना, श्रृंगी ऋषि के यज्ञ का वर्णन, ध्रुव के विष्णु स्वरूप का वर्णन, गोपियों का विरह वर्णन और उद्धव को धिक्कारना, कृष्ण का बाल चरित्र, उद्धव के द्वारा कवि का कविता की प्रशंसा करना—(पृ० ४—१० तक)। उद्धव का प्रह्लाद चरित्र वर्णन, एकादशी कथा वर्णन, प्रह्लाद का इन्द्र होना और इन्द्र की परीक्षा लेना (पृ०—११—२२ तक)। द्विज की कथा, तुलसी माला का प्रभाव, विष्णु दर्शन और उनका गरुड़ पर सवार होकर लोकों में भ्रमण करना, लक्ष्मी का मोह और विष्णु का निवारण, नरक वर्णन, नाम महिमा, गोवत्स कथा, शिव से कृष्ण भक्ति की अधिक महत्ता (पृ० २३—३१ तक)। केवट की कथा, शिव महिमा, शिव का शक्ति से विवाद, गोपियों का उद्धव से विरह वर्णन, (पृ० ३२—३६ तक)। उद्धव का विदा होना और मथुरा गमन, कृष्ण का प्रेम वर्णन (पृ० ३६—३८)।

No. 299. Anurāga Rasa by Nārāyaṇa Swāmī. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—12 × 5 inches.

Lines per page—48. Extent—180 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1936 or A. D. 1879. Place of deposit—Rāma Śaṅkara Vājpeyi, Village Bahori kā Vājpeyi kā Purwā, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः ॥ अथ अनुराग रस लिष्यते श्री नारायण स्वामी कृत लिष्यते ॥ श्री वृन्दावन चन्द्र मध्ये ॥ अथ गुरु वंदना ॥ श्री गुरुचरन सरोज रज वंदौं वारंवार । नारायण भवसिंधु हित जे नौका सुष सार ॥ कृपा करौ मो दीन पै हरौ तिमिरि अज्ञान । नारायण अनुराग रस निज मति करुं बषान ॥ अथ श्री राधा गोपाल वंदना ॥ श्री राधा गोपाल पग कर प्रणाम उर धार ॥ बरनौं कछु अनुराग रस यथा बुद्धि अनुसार ॥ दयासिंधु अति सुष सदन सदा रहौ अनुकूल । नाथ न आनौ हृदय मे मो पामर की भूल । श्री वृन्दावन वंदना ॥ धनि वृन्दावन धनधाम है धनि वृन्दावन नाम । धनि वृन्दावन रसिक जन धनि श्री राधा श्याम ॥ जे वृन्दावन वास करि शाक पात नित षात । तिन के भागन को निरषि ब्रह्मादिक ललचात ॥ हम न भये ब्रज में प्रगट यही रही मन आस । नित प्रति निरषति जुगुल छवि करि वृन्दावन वास ॥ चेतावनी पुनि गुन दोष लक्षण ॥ बहुत गई थोरी रही नारायण अब चेत । काल चिरैया चुग रही निश दिन आयुष षेत ॥ नारायण सुष भोग में तूं लंपट दिन रैन । अंत समय आयो निकट देषि षोलि के नैन ॥ धन योवन यों जायगो जा विधि उड़त कपूर । नारायण गोपाल भजि क्यों चाटै जग धूरि ॥

End—नारायण जाको हियो विंध्यो श्याम दृग बान । जग के भावै जीवतो है वह मृतक समान ॥ सुष संपति, धन धाम को ताहि न मन में आस । नारायण जाके हिये निश दिन प्रेम प्रकाश ॥ नारायण जाके हिये प्रीति लगी घनश्याम ॥ जाति पांति कुल सों गये रहे न काहू काम ॥ नारायण तब जानिए लगन लगी यहि काल जित जित में दृष्टो परै दीषै मोहनलाल ॥ नारायण बृजचंद के रूप पयोनिधि मांहि डूबत बहुते एक जन उछरत रुको नाहिं । परा भक्ति अरु ज्ञान में तनक नहीं कछु भेद । नारायण सुष प्रेम है कहैं संत अरु वेद ॥ परा भक्ति वाको कहैं जित तित श्याम देषात ॥ नारायन सो ज्ञान है पूरन ब्रह्म लषात ॥ नंदलाल दशरथ कुंवर उभय एक सरकार । नारायण जे दो कहैं ते नर विना विचार ॥ जो घायल हैं दृगन के परे प्रेम के षेत । नारायण सुनि श्याम गुण एक संग रो देत ॥ नारायण सब एक है रंग रूप तिल रेष उनके दृग गंभीर हैं इनके चपल विशेष ॥ नारायण या बात सों अधिक और नहिं बात । रसिकन

को सतसंग नित युगल ध्यान दिन रात ॥ गुण मंदिर सुन्दर युगल मंगल मोद निधान। नारायण निज चरण रति यह दीजै वरदान ॥ इति श्री अनुराग रस नारायण स्वामी कृत सम्पूर्णम् ॥ संवत १९३६ लिषा कालिका प्रसाद ॥

Subject—गुरु वंदना, श्री राधागोपाल वंदना, श्री वृंदावन वंदना, चेतावनी, गुण दोष लक्षण, संत लक्षण, कृपा निधान की शोभा, प्रेम लक्षण का वर्णन।

No. 300(*a*). Sudāma Charitra by Narottamadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—26. Size—6 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1842 or A. D. 1785. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Siṁha, Post Office Kānthā, District Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री इष्टदेव तासु प्रसन्नास्तु ॥ सोरठा—गणपति कृपा निधान विद्या बुद्धि विवेक जुत देहु मोहि वरदान प्रेम सहित हरि गुण कहौं ॥ १ ॥ हरि चरित्र बहु भाइ सेस महेस न कहि सकैं ॥ प्रीति सहित चित लाइ सुनो सुदामा की कथा ॥ २ ॥ दोहा ॥ विप्र सुदामा बसत है सदा आपने ग्राम। भिक्षा करि भोजन करै हिय जपै हरि नाम ॥ ३ ॥ ताकी घरनी पतिव्रता गहै वेद की रीति। सुबुधि सुसील सुलज्ज अति पति सेवा सों प्रीति ॥ ४ ॥

End—कवित्त—कहूं सुपनेहू सुवरन के महल हुते पैारि मनि मंडित कलस कब धरते। नग्न जडित कहां सिंहासन बैठिबे को कब ये नवास खरे मोपै चैार ढरते ॥ देखि राजा सामां निज बामा सों सुदामा कह्यौ कब ये भंडार रतनन भार भरते। जो पै पतिव्रत तूं न देती उपदेश कहूं एती कृपा द्वारिकेस मों पै कब करते ॥ ७५ ॥ दोहा—विप्र सुदामा की कथा कहै सुनै चितु लाइ। ताकौं श्री जदुराइ जू सब दिन रहै सहाइ ॥ ७६ ॥ इति श्री नरोत्तम कृत सुदामा चरित्र संपूर्णम् लिषितं गवेणी शंकर ने स्वयं पठनार्थ श्री राधानगर षिपाइ मध्ये स्व प्रत्यं ॥

इति।

Subject—गणेश वंदना। सुदामा की दशा का वर्णन, सुदामा और उनकी स्त्री का संवाद, स्त्री का सुदामा से द्वारिका जाने को कहना, सुदामा का भिक्षा में संतोष मानने को कहना, (छं० १—९ तक)।

दीनता की हीनता वर्णन, भिक्षा मांगना निर्दोष कथन, वर्ण धर्म कथन, स्त्री का निज दुर्दशा वर्णन, शीतादि के कारण कष्ट वर्णन, सुदामा का फिर निषेध करना, स्त्री का कृष्ण की उदारता वर्णन, प्रह्लाद द्रोपदी आदि का उदाहरण देना। (छं० १०—१८)।

सुदामा का द्वारिका जाना स्वीकार करना, स्त्री का कृष्ण बंधुत्व की सुधि दिलाना, सुदामा का कृष्ण के। भेट देने के लिये कुछ मांगना, स्त्री का भेंट के लिये तंदुल मांग लाना और सुदामा के। प्रस्थान करना, सोते में गोमती तीर पर पहुंचना, द्वारावती में पहुंचना, पूछने पर एक व्यक्ति का कृष्ण पोरि पर पहुंचाना, नगर देख अचंभित होना (छं० १९—३१)।

द्वारपाल का सुदामा की दशा का वर्णन, कृष्ण का सुन कर जाना, प्रेम भाव से मिलना, आदर करना, चरण धोना, स्नानादि कराना, भेंट मांगना, कृष्ण जी का चावल भेंट का भोग लगाना, रुक्मिणी की तीसरी मुठी पर रोकना, सुदामा का भोजन करना—(छं० ३२—५३ तक)।

सात दिन निवास करना, कृष्ण का संपति देना और सुदामा से न कहना। महल आदि बन जाना, सुदामा का मन में कृष्ण प्रेम, आदर से कृष्ण का विदा करना, सुदामा का नगर में आना और झोंपड़ी न जान कर दुखित होना, स्त्री का ले जाना, कृष्ण महिमा वर्णन, सुदामा का प्रसन्न होना, कृष्ण सुदामा की मित्रता, कृष्ण महिमा कथन। (छं० ५४—७६ तक)।

No. 300(*b*). Sudāmācharitra by Narottamadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—26. Size—6 × 5 inches. Lines per page—24. Extent—312 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1912 or A. D. 1855. Place of deposit—Paṇḍita Saryū Prasādajī, Village Maharu, Post Office Materā, District Baharāich (Oudh).

Note—Other details as in no. 300(*a*).

No. 301(*a*). Jñānasarovara by Bābā Nawaladāsa of Dhanesā. Substance—Country-made paper. Leaves—326. Size—8 × 4½ inches. Lines per page—9. Extent—2,916 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1818 or A. D. 1761.

Place of deposit—Lālā Mahavira Prasāda, Village and Post Office Gauriganja, District Sultānpur.

Beginning—सम्वत् अठारह सै। पठारह, माघ पुरनमासिया। संक्राति सुन्दर जानि कै रवि माखि कथा प्रकासिया॥ निरमल सरोवर ज्ञान का असनान श्रोता जो करै, तरि जाइ पाप प्रगाह से, सुष मूल सागर मैं परै। ज्ञान सरोवर ज्ञान मैं ज्ञानी करत विचार॥ हिल मिल बाँचत सुनत नर उतरत भवजल पार॥ पश्चिम दिस है अवध से नवल रहे रटिनाम। कोसन जोजन पाँच पर ग्राम घनेसा नाम॥ सो०—अब कछु दोष न मोर। मै बाजन बाजेस तुम। गावैां प्रभु गुन तोर। प्रभु मोहि कछुक बानो मयो॥

End—दोहा—यह सब चरित पुरान के ज्ञान खानि अघहानि। दास नवल श्रोता तरै सुनै जो निश्चय मानि॥ तरै करै फिरि नहिं भरै श्रोता वक्ता होइ। दास नवल सोइ पाइहै श्रैार न पावहि कोइ॥ २५८॥ सोरठा॥ धन्य जन्म तिन्ह केर। श्रोता वक्ता जक्त के। तिन्है न भवजल फेर। जे जस ज्ञान प्रमान करि॥ इति श्री ऊधव माधव संवादे ज्ञान सरोवर भाषा कृते समाप्तम्॥

Subject—(१) प्रथम अध्याय पृ० १८—ज्ञानकांड ऊधव माधव संवाद। (२) दूसरा अ० पृ० २०—संत स्वभावादि। (३) तीसरा अ० पृ० ५२—(१) एक भक्त हंस की कथा श्रैार (२) योग भोग समता। (४) चतुर्थ अ० पृ० ६८—(१) दुर्वासा द्वारा द्रुपद सुता परीक्षा। (२) बालयती की कथा। (५) पंचम अध्याय पृ० ८८-ईश्वर के नामों में रामनाम की श्रेष्ठता। (६) षष्टम अध्याय-पृ० ११०-चन्द्रोदय राजा की कथा, कन्यादान की श्रेष्टता, पातिव्रत्य माहात्म्य, कबूतर की कथा, भावी की प्रबलता, (७) सप्तम अध्याय, पृ० १३०-ब्राह्मण माहात्म्य तथा नाम की महिमा। (८) अष्टम अध्याय-पृ० १५६ कुन्तल नृप की कथा, कर्मानुसार जीवोत्पत्ति तथा यमपुरी वर्णन। (९) नवम अध्याय—पृ० १७४—रामचन्द्रजी का बाल चरित्र।

(१०) दशम अध्याय—२००, काकभुशुंड की कथा। रामचन्द्र जी का बाल चरित्र। (११) एकादश अध्याय—पृ० २३०-(१) विभीषण हनुमान संवाद, मानादि वृथा कथन केवल रामनाम ही प्रधान, (२) अर्जुन, पवनसुत संवाद, कृष्ण राम की एकता।(१२) द्वादश अध्याय—पृ० २५४-भक्त मृग की रक्षा ईश्वर द्वारा मन्दोदरी उत्पत्ति। (१३) त्रयोदश अध्याय—२७६ हरिश्चन्द्र की कथा। (१४) चतुर्दश अध्याय—पृ० २९६ हरिश्चन्द्र की कथा (१५) पंचदश अध्याय—३२६—एकादशी उत्पत्ति।

No. 301(b). Ratna Jñāna by Bābā Nawaladāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—128. Size—15 × 6 inches. Lines per page—12. Extent—2,500 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1838 or A. D. 1781. Date of manuscript—Samvat 1852 or A. D. 1795. Place of deposit—Mahanta Guruprasādaji, Hargāon, Post Office Parbatapura, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः । सुमिरहुं प्रथम गणेश गोसाई । जो त्रिभुवन हित करत सहाई ॥ रिधि सिधि बुधि बकसत नहिं बारा । अमित अपतन पार उतारा ॥ अति बड़ि लंबोदर प्रभुताई ॥ जासु उदर सब जगत समाई ॥ जिन कर अगम अनंत प्रभावा ॥ सुर मुनिवर कोउ मरम न पावा ॥ जय जग बदन सदन बुधि ग्याना । जेहू कर शिव अति करत बखाना ॥ तुम त्रिभुवन पति गनपति नामा ॥ सुमिरत तुमहिं सकल सिद्धि कामा ॥ मैं मति रहित नाम नहि जाना । होइ प्रसन्न पिउ पुरुष पुराना ॥ दोहा ॥ कुमति हरन सिद्धि बुधि करन, सरन सम्हारनहार । दास नवल मतिमंद कहै कीजै भवजल पार ॥ सोरठा ॥ सत गुरु सांचे राम, सतदिन कर भ्रमतम हरन । हृदय करिय विश्राम, जग जीवन जग तारनै ॥.. । संवत अठारह सै अड़तीसा । कहियत नाइ भक्त पदसीसा ॥ माघ मास सुभ पूरन मासी । कृपा समुझि हरि परित प्रकासी ॥

End—हिन्दु तुरकन भयौ लराई । सो हमसन कछु बरनि न जाई ॥ प्रथमहिं करि मयदान अपारा । जूझे तुरुक भये सब कारा ॥ पुनि फिरि धरि गढ़ कीन लड़ाई । द्वादश दिवस कविहि कहि गाई ॥ तब तुरकनि चंद उर मारा । कीन्ह कविन सोइ जस विस्तारा ॥ हिन्दु कट्यो मिट्यो हिन्दुवानो ॥ कुचरय कीन देस तुरकानो ॥ दोहा ॥ लोन अमल कर देश महं तुरुक रहा सब छाइ ॥ जूझे राना देश के की सब सकल गनाइ ॥ २४३ ॥ इति श्री माधौ रत्न ज्ञान नवलदास कृत समाप्त सुभ मस्तु, आदर्शं पुस्तकं दृष्टा तां दृशं लिपितं मया यदि शुद्धं अशुद्धं वा ममदोषो न दीयते ॥ सम्वत १८५२ चैत्र मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदश्यां गुरुवासरे रत्नज्ञान समाप्तम् शुभम् भूयाद श्री जानुकी वल्ल भाजति ॥

Subject—प्रह्लाद, माधवानल इत्यादि भक्तों के उदाहरणों के साथ ज्ञानोपदेश ।

No. 301(c). Sukhasāgara Kathā by Bābā Nawaladāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—200. Size—7×6 inches. Lines per page—12. Extent—1,800 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1817 or A. D. 1760. Date of manuscript—Samvat 1890 or A. D. 1833· Place of deposit—Lālā Mahāvīra Prasāda Paṭwārī, Village Sarāi Khīmā, Post Office Rāmanagara, District Sultānpur.

Beginning—श्री गनेसाइनमः ॥ दे।० गुर गनपति सिव सक्ति सुर वंदैां रमा रमेस ॥ दास नवल हरि चरित रत करहु कृपा उपदेस ॥ सुख सागर सत जल विमल कलिमल दमन प्रमान, दास नवल अस्नान करु होइ सदां कल्यान ॥ वार वार बलि बलि गुरु चरना। दास नवल के संकट हरना ॥ मे सनाथ 'दूलन' खेमा। चेला अमित नाम के छेमा ॥ दे।० संवत् अठारह से सत्रह यह मैं कहो बषानि। जेठ मास × × × वंदैां चार मुक्ति श्रुति चारो। पुनिवंदैां गिरिराज कुमारो। धर्मराज पद गहैां तुम्हारे। जे सब न्याव विचारन हारे ॥ वंदैां सुरन समेत सुरेसू। वंदैां जल थल कमठ जो सेसू ॥ वंदैां पवन सहित हनुमाना ॥ धर्म भक्ति निसुदिन जिन्ह जाना ॥ × × ×

End—अति हरि चरित अगूढ़, को समरथ पारहि लयैा। दासनवल मति मूढ़, नरतन प्रेम प्रतीत विन ॥ कहत जुगल करि जोर, श्रोता वक्ता मित्र मम। दह लीजिये जोरि, मोहि भरोसा अहै बड़ ॥ मोहिन लायहु पोरि, वाजन वाजत नाथ कर ॥ सो वाजन मति मोर, जानै वहै बजावनो ॥ पाप हरनि पावन करनि श्रोता लेहु नहाइ ॥ सुखसागर भाषा किते मैं यकदसमोध्यायः ॥ इति श्री नवल दास कृत सुकसागर कथा संपूरन समाप्त सभै नाम जेठ मासे कृष्ण पक्षे गुरु वासरे संवंत १८९० सन १२९० फ० × × × ×

Subject—(१) प्रथम अध्याय। पृ० १—४ तक—ग्रंथ निर्माण कारण तथा समय (२) पृ० ४—७ तक—वंदनाएं—(३) द्वितीय अध्याय। पृ० ८—२१ तक—उमा की शिव से मौलि माला विषक शंका, शिव का समाधान करना, नाम का प्रभाव, शुक जन्मादि—(४) तृतीय अध्याय—पृ० २२—३३ तक—शुक व्यास आश्रम गमन। (५) तृतीय चतुर्थ और पंचम अध्याय पृ० ३४—६३ तक—शुक का जन्म, दर्शन इत्यादि वन गमन, शुक व्यास संवाद, शुक भजन—अ० ४, ५, ६ (६) सप्तम अध्याय—पृ० ६४—७३ तक—व्यास विलाप, राम दर्शन, विनय। (७) अष्टम अ०। पृ० ७४—८२ तक—शुक को

ईश्वर का उपदेश (८) नवम से त्रयोदश अध्याय पृ० ८३—१२१ तक—इन्द्र भय, शुक तपस्या भंग उपाय, रंभा का उद्योग भंग, नारदादि का काम मोहित होने का वर्णन। व्यास से शुकदेव गुरु उपदेश लेना तक। (९) चतुर्दश अध्याय। पृ० १२२—१३० तक—शुक का पिता से नाम उपदेश इच्छा, पिता का जनकपुर भेजना, उनका जाना, जनक का अपमान करके बारंबार उनके निकलवा देना तथा उनका फिर आजाना और दीन वचन कथन करना, सेवकों का इस अपमान का कारण समझा कर जनक का एक कटोरे में शुक को जल देकर यह कथन करना कि यदि एक बुंद भी जल गिरे तो दर्शन न पावोगे। (१०) पृ० १३१—२०० तक—नाम माहात्म्य वर्णन। कृष्णार्जुन संवाद वर्णन, चन्द्रहास इत्यादि वर्णन, माता के पास शुक का आना, पिता का विवाह हेत उपदेश, उनका भक्ति वर मांग कर विदा होना।

No. 301 (*d*). Śrimad Bhāgavata Purāṇa by Nawaladāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—646. Size—14 × 5½ inches. Lines per page—11. Extent—8,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Kaithī. Date of manuscript—Samvat 1831 or A. D. 1774. Place of deposit—Mahanta Guruprasāda, Hargāon, Post Office Parbatapur, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ सोरठा॥ सत गुरु सांचे राम तुम सुकति सत दरस प्रभु। हृदय करिय विश्राम जग जीवन जगतारनो॥ बरनैा सतगुरु रूप, दिन कर तम दुष दावनो। स्याम कमल जिमि रुप ताकर दाम सुहावनो, सेतहु ते जो सेत, ताहि माहि अति सेत छवि, घुलि पुरान कहि देत, अगम अगोचर गगन रह॥ वारिज वारिहि मांहि आसानाक पतंग कै। सतगुर गुर पदहि है विशेष अमल उदै पंचक भवन॥ ५॥ बोस मैं कारह नाक तहं सतगुरु, सत मन तिलक। वह सत सुमिरन पाक, सो जग जीवन जक्त प्रभु॥ दोहा॥ जग जीवन जगमगत हैं गगन महल महं वास, तेसत गुरु जग विदित प्रभु। दास नवल कह वास॥ हेरि भुवन दस चारि तैा रीझे सुर सिधि मुनि, कहत विचारि विचारि। जे गनपति गुन ग्यान घर॥ ८॥ भक्ति ज्ञान गुन दान शीलवंत सिन्धुर बदन। जै जै नव निधि जानि, करुणा सागर बुधि सदन॥ ९॥

End—प्रभु अस कहि निज वपु थल थाया। दरस हरत जग त्रिविधि कुतापा॥ छंद॥ थल थापि निज वपु निज बचन हरि हरषि वैकुंठहि गये। सुखदेव बरणत समुझि सब सुनि सुजन सब कारज भये। तरि गये परीछित राइ भाइ

समेत, जिन श्रवनहिं सुना। कृति सुनहिं जगत पतीति कर जनु अमर मन अमृत सुना। तिहुं लोक घट घट बसत प्रभु परबोध दरसन सगुना। पति सहज पावन अघ नसावन करत हित का उन रमन ॥ दरसन प्रतिहित बोध करत जो नर मन लाइ। दास नवल प्रतीत कह, सकल दुरि दुष जाइ। सोरठा ॥ चरित समुद अगाह, दस नवल कछु पार नहिं, धन्य धन्य नरनाह जिन हित मुनि कछु प्रगट कलि ॥ इति श्री हरि चरित्रे दशम स्कंधे महापुराणे श्री भागवते परायण कांडे हरि वैकुंठ गमन वर्णनो नाम उन्तीसवां अध्याय समाप्तम् संवत् १८३१ ॥

Subject—(१) पृ० १-२३० तक-आदि कांड (जन्म कांड)। (१—३०)-स्तुति वर्णन प्रथम अध्या० द्वि० अ० तृतीय। श्रीपति गर्भ वासन। चतुर्थ अध्याय—पृ० ४० कंस वृथा प्रबोध। पंचम अध्याय पृ० ५२ तक तृणावंत व्याख्यान छठों पृ० ६०—गोरस क्रीड़ा। सातवां पृ० ७०—श्याम सत्य स्वरूप वर्णन। आठवां अध्याय-८० यमलार्जुन वृक्ष उद्धार। नवां अ०—९० बाल क्रीड़ा। दसवां अ० १०४। ग्यारहवां अ० ।११४। बारहवां अ०। १२४। तेरहवां अ० १४० ब्रह्मास्तुति। चैादहवां अ० १५० काली सोच विमोचन। पन्द्रहवां अ० १६४ गोपी विरह। सोलहवां अ० १६४-नन्दागमन, ग्वाल हर्ष। सत्रहवां अ० १८४ गंधर्व शोच विमोचन। अठारहवां अ० १९४, जमुना प्रवेश। उन्नीसवां अ०, २०२। बीसवां अ० २१४ व ६ मुनि प्रबोध। इक्कीसवां अ०, २२२ कंस विध्वंस। बाईसवां अ०, २३० भक्त चरित्र वर्णन। (२) मध्य कांड २३१ से ३१७ तक। प्र० अ० २४३—कृष्ण स्तुति गुरु दक्षिणा हेत। द्वि० अ० २५१ गोकुल तृ० अ० २६३—अक्रूर हस्तिनापुर गमन। च० अ० २७३—जरासिंधु समर। गमन। पं० अ० २८३—गोमत सिखर समर। षष्ट अ० २९१ रुक्मिणी शृंगार छवि वर्णन। सप्तम अ० २९९ रुक्मिणी गिरजा महल गमन। अष्टम अ० ३०७ रुक्मिणी विवाह नवम अ० ३१७ सतगुरु विधि संवाद।

(३) पारायण कांड—३१८—६४६ तक

प्र० अ० ३२८। द्वि० अ० ३३८ रति प्रबोध। ३५० तृ० अ० मनमथ आगमन। चतुर्थ अ० ३५८ जामवंत समर। पंचम अ० ३६८। षष्ट अ० ३८० जामवंत उद्धार। सप्तम अ० ३९० सतधन्वा समर। अष्टम अ० ३९८ यमुना कृष्ण विवाह। नवम अ० ४१०। दशम अ० ४२२ कृष्ण द्वारावती आगमन नर्कासुर निपातन। एकादश अ० ४३४ मदनेट वज्र प्रसन्न करना। ४४८ द्वादश रुक्म बंधन त्रयो० अ० ४६४ बलि विनय। चतुर्दश अ० ४७८ बाणासुर वरदान। पंचदश अ० ४९२ अनरुद्ध समर। षष्टदश अ० ५०० नारद आगमन। सप्तदश अ० ५०८ बाणासुर समर। अष्टदश अ० ५१८ उषा अनिरुद्ध विवाह।

उन्नीसवां अ० ५३०—राजा नृग उद्धार । नंद यशोदा प्रबोध.........। बीसवां अध्याय ५४० शांबु विवाह । इक्कीसवां अ० ५५० पांडव निमंत्रण, प्रभु आगमन। बाईसवां अध्याय ५६० शिशुपाल वध । तेईसवां अध्याय ५७४ पांडव राजसूय यज्ञ, नारद व्यास सतसंग वर्णन । चौबीसवां अ० ५८६ । पचीसवां अ० ६०४ द्रौपदी स्वयंवर छब्बीसवां अ० ६१८ सुदामा चरित्र । सत्ताईसवां अ०, ६२६ षट बालक उद्धार । अट्ठाईसवां अ० ६३६ दसबालक आगमन, विप्र प्रबोध । उन्तीसवां अ० ६४६ हरिबैकुंठ गमन ।

No. 302. Basanta Rājajyotisha by Paṇḍita Nemadhara. Substance—Country-made paper. Leaves -75. Size—11 × 5½ inches. Lines per page—36. Extent—1.350 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1801 or A. D. 1744. Date of manuscript—Samvat 1907 or A. D. 1850. Place of deposit—Bhaiyā Mahipāla Siṁha, Rais, Payāgapura, Post Office Payāgapura, District Bahraich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ सुमिरौ आदि गणेश को पुनि प्रनवों सिरनाइ । जाको कोर कटाक्ष से अद्भुत दुति ह्वै आइ ॥ दोहा ॥ एक रदन दारिद हरन इन्दु विराजत सीस । चारि पदारथ देत हैं निति प्रमा वकसीस ॥ लम्बोदर असरण सरण दुषभंजन सुषसार । मदन कदन सुत गज वदन गणनायक सुभकार ॥ सोरठा ॥ मंगल रूप अपार सुषदायक घायक विघन । दाया दृष्टि निहार । करौ किपा मोपर अमित ॥ छंद ॥ एक रदन छबि छाजे इन्दु भाल पै विराजे माल पुहुप उर साजे सदा काटत कलेस हैं ॥ दीनन के रच्छपाल सोभित कंज कार सवाल दयावंत कृपा आल गुन बुधि के धनेस हैं ॥ लंबोदर कला निधान सुष सागर ज्ञान दान गैारी जी के जीव प्रान नित गावत अहेश हैं ।

End—पूजा विधान स्थपन ॥ दोहा ॥ असुभ दरसै सुपन के भय प्रगटै वहुतासु ताकी पूजा विधि कही करै अमंगल नास ॥ पूजा विधि अब कहत हैं जाहि कटैं सव पाप गायत्री के सहस दस प्रथम करावै जाप प्रथम करावै जाप सहस आहुति पुनि कीजै कै विप्रन को बोलि करै लक्ष मंत्र सुलंजे । घृत सुरभी के आन अछत चंदन पुनि पूजा ॥ छंद गीत ॥ पुनि गऊदान विधान ते तहा भोज इच्छा कीजिये तब दक्षिणा एक एक मोहर कै पुरट सास्रा दीजिये । जेहि शक्ति ना कछु होइ वृतमान दान बताइये । यह ग्रंथ न पारस बीच पंडित नेमधर द्रम गाइये । नेमधर पंडित विचार ग्रंथ वनाइ जानियो माया करि बुध नेम सुन पंडित

सुष मानिये । कहो सुमति अनुसार कवि कोविद मोपर करि किपा सुदास विचार जेहि भाषा आदर लई । शुभ पोथो अगमइ विदित सम्वत ताको जान अष्टादस प्रतम तापर एक बषान । मधु मासे तिथि पुर्नमा भा पूरन इतिहास ससि दिन सुभ थान सो परमेसुरो निवास । मंगल उपजे मोदप्रद सुष को करै प्रकास रघुपति नाम प्रताप ते दिन प्रति होत हुलास ॥ लिषा संवत १९०७ वैसाष मासे शुक्र पक्षे अमावस्यां शुक्र वासरे मुन्नू शुकुल रामानुज दास के दास ।

Subject—पृ० १—७५ तक—विचार अधिक मास, विचार दर्शन षंजन, विचार गातक, मनुष्य धेनु आदि पशु, विचार छोंक, विचार छिपकलो, गिर-गिट, विचार बानी काक, विचार हाक और रोदन सियार, विचार मातम पुरसो, विचार दर्शन नोलकंठ, विचार दर्शन चन्द्रमा चौथि, विचार कूप हम्माम के बनाने का । विचार ममापो पोपर आदि वृक्ष, विचार नहर व हौज व तड़ाग बनाने का । विचार परयंक विधान विचार शयन करण, विचार उसोसे का, विचार स्वास, विचार शयन करण, वर्षा ऋतु और षंजन पिरोजा, विचार श्रवण को विचार सूर्य्यग्रहण और चन्द्रग्रहण, विचार तुलादान, छायादान, भूषन आदि का धारण, स्त्रियों का क्षौर सर्प दर्शन, नक्षत्र तारादि, अंग फरकन, ग्रह दानादि, शुक्र अस्त, दीप बुझावन, पुरुष स्त्री कुम्हड़ा काटन, आयु मनुष्य, वृक्ष रोपन पुरुष स्त्री, गुन दोष तिथि गुन दोष नक्षत्र, भद्रा गुन दोष, चन्द्रमा घातिक, चन्द्रमा यात्रा समय, चन्द्रमा बांट तिथि व नक्षत्र योग, स्वासा समय, वास रवि आदि नक्षत्र, दिन रोगी स्नान, यात्रा विचार, विचार नक्षत्र, तिथि, वार, तारा वाहन, रवि आदि, परिपंड चक्र सूर्य्य, चन्द्र उत्तरायन, दक्षिणायन, शुक्रास्त, यात्रा चारो वरन, तारोष मनहूस, विचार योग यात्रा, पूजा विधान यात्रा, मास दिशा शूल गुन वाहन समय यात्रा त्यागन वस्तु विचार नकल मकान, विचार पत्रा, विचार सगुन, विचार जल वृष्टि यात्रा समय, विचार स्वर यात्रा समय, विचार गृह प्रवेश, विचार द्वादश रास विचार नौ रोज विचार गुर्ग मोहर्रम, विचार सूर्य्य चन्द्रमा मंडल, विचार स्वप्न आदि के विचार का वर्णन है । अंत में तिथि आदि रचयिता लेखक के लिखे हैं ।

No. 303. Śakuntalā Nāṭaka by Newāja of Āgrā. Substance—Country-made paper. Leaves—56. Size—$8\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—16. Extent—896 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1963 or A. D. 1906. Place of deposit—Bābū Padmabaksha, Siṁha, Tālukedāra, Lavedpur (Bahrāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शकुन्तला नाटक लिख्यते ॥ कवित्त ॥ राखत न सूरज ससी को परवाहि नित.........फुल्लित रहत येक वानो के। भानहू किये ते देत ज्ञान मकरंद वास.........कहैया जिनकी कहानी के ॥ कैसे और पानी के सरोज सरि करै सोचे.........जै शिव सीस सुरसरि पानी के। सिद्धि को सुगंध पाइ मेरे मन मधुकर.........करन पद पंकज भवानी के ॥ १ ॥ दोहा—नवल फिदाई खान को नंद मुसलेखान। फरुख सेर कों दै फतै भयो व आजम खान ॥ २ ॥ बखत बिलंद महाबलो आजम खान अमीर। ज्ञाता ज्ञाता धरमों माचो सुन्दर धीर ॥ ३ ॥ देखि खुस साहेब सकल जस जगते उठि आइ। हिम्मत आजम खान के हिय मे रह्यो समाइ ॥ ४ ॥

End—कवित्त—ऐसे नेवाज कवीश्वर पाइ सकुन्तला नाटक की करी भासा। सो बिगरो बहु कालकों पाइ जहां तहां याके भये पद नासा ॥ सोधि के सुद्ध करि येहि को दुरगा प्रसाद सो बुद्धि बिलासा। याहि जो लै पढ़ि है सुनि है तिनके घर होइ है आनंद वासा ॥ १ ॥ दोहा। याके पढ़िवे ते कवौं होत न सजन वियोग। बिछुरेहू बहु काल को पावै वेगि संजोग ॥ २ ॥

इति श्री सुधा तरंगि न्यास सकुन्तला नाटक कथा प्रसंगे चतुर्थ स्तरंग ॥ ४ ॥ दोहा ॥ आदो जैपुर देस के अव काशो मैं धाम। है दुर्गा प्रसाद पुनि यहि साधक कैा नाम ॥ समाप्त ॥ शुभम् ॥ माघ शुक्ल १ प्रारंभे फागुन कृष्ण १३ रवि वासरे संपूर्णम् ॥ संवत १९६३ शके १८२८ सन् १३१४ फसली ॥ ६ रविदत्त सिंह ॥

Subject—भवानी स्तुति, आजमखां वर्णन, शकुन्तला बनाने का विधान वर्णन—पृ० १—२ तक। विश्वामित्र का तप करना, मेनका अप्सरा का आना, शकुन्तला की उत्पति, कण्व का पालन करना, अनुसूया, प्रियम्वदा और शकुन्तला को क्रीड़ा, राजा दुष्यन्त का शिकार खेलने के लिए आना और मिलन वर्णन। पृ० २—१५ तक। तीनो सखियों का हास्य रस वर्णन, पुनः दुष्यन्त व शकुन्तला मिलन वर्णन। पृ० १६—२५ तक। शकुन्तला को दुर्वासा का श्राप, कण्व का शकुन्तला को उपदेश और दुष्यन्त के यहां भेजना, अंगुठी का खोजना, दुष्यन्त का शकुन्तला को ग्रहण करने से इन्कार करना। पृ २६—४२ तक। दुष्यन्त को शकुन्तला की याद आना और विरह व्यथित होना। इन्द्र को सहायता के लिये जाना, लौटते समय पुत्र भरत और शकुन्तला से भेंट और साथ लाना। संशोधनकर्त्ता का निवेदन वर्णन। पृ० ४३—५६ तक इति।

No. 304(*a*). Śālihotra by Nidhāna Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—21. Size—12½ × 5½ inches.

Lines per page—12. Extent—480 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1800 or A. D. 1743. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Siṁha, Saṅgara, Kāntha, Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ विघन हरन सब सुख करन लंबोदर वर दानि । करहु कृपा दीजै सुमति कहौं जोरि युग पानि ॥ १ ॥ संवत दस वसु से जहां उत्तर जानो मान । सालहोत्र भाषा रची नूतन सुकवि निधान ॥ शुक्लपक्ष तिथि पंचमी सहित सुभग बुधवार । माधव मास पुनीत अति भयो ग्रंथ अवतार ॥ ३ ॥ अथ राज्य वर्णन ॥ दोहा । सैयद है समरत्थ महि मंडन बुद्धि निधान । अकवर अली सभा अली विद्या विदित विधान ॥ ४ ॥ एक दिना सब कविन सों दीन्हों यह फ़ुरमाय । सालिहोत्र जो संस्कृत भाषा देहु सुनाय ॥ षटपदी—सरद जहां जग जानि सुजस भुव बीच समथ्यैा । अली मुतिजा खान दान करि थल रथ थप्पैा । फिरि सैयद महमूद ओचि तरवार वरी करी । मुकति धरनि दै पत्र को नेस सवाब धरि । पुर्हमसु सैद साषा सघन वादुल्ला षां सुमन हुव । देत सकल मन कामना अलि अरवर फल प्रगट हुव ॥

End—तें छप्पय—तेज वात अति प्रबल होइ शुभ सोल सुलक्षन । अति-चंचल गतिचारु साह सम सुमति विचक्षन ॥ कहै चलै रहिजाइ होक दिन चारि अंग । आनन तिलक विसाल भूषन सोभा संग ॥ अति सोतल मान सुभ अंग सरस ऐसे नृप वाजी चढ़त । भेजीति सकल अल दलन कैां तिनको जस दिन दिन बढ़त ॥ २१ ॥ अधर एक श्रवन एक तीन श्रवन तासु के । हीन दंत अधिक दंत तीन अंड तासु के ॥ एक अंड युग्म जोभि दंड पोठि पेषिये । ताहि भूल कै न लेहु वाजि जो विशेषिये ॥ २२ ॥ दोहा ॥ सालिहोत्र जो नकुल वर रच्यो सकल सिर मैार । ताते जाने वाजिके गुन औगुन सब ठैार ॥ २३ ॥ मैं प्रबंध कीन्हैां कछू पाण्डव मत अनुसार । मोमति अति लघु जानि कै लोजै सुकवि विचार ॥ २५ ॥ इति श्री सुकवि निधान कृतो भाषा सालिहोत्र चतुर्दशोध्याय ॥ १४ संवत् १९०० ॥

Subject—प्रार्थना, राजवर्णन, अश्व की श्रेष्टता वर्णन । पृ० १—२ तक । अश्व के हींसने आदि के लक्षन तथा शुभ चिह्न—पृ० २—४ । भैारी का चिह्न वर्णन । पृ० ५—६ । अश्व स्वरूप वर्णन, रसादि वर्णन, असाध्य रोग लक्षण, धातु परीक्षा । पृ० ७—१० । रुधिर का जांच वर्णन और आहारादि वर्णन पृ० ११—१३ । नासु विधि और पिंडाधिकार वर्णन और दवाई । पृ० १४—१७ घृत विधान, काथ विधान, उदर कृमि, गैाड़ी वाठनी, आदि की दवा पृ० १८—२१ ।

No. 304(*b*). **Salihotra by Nidhāna Dikshita.** Substance—Country-made paper. Leaves—71. Size—7 × 4½ inches. Lines per page—12. Extent—583 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1916 or A. D. 1859. Place of deposit—Bhaiyā Mahipāla Siṁha, Raisa, Payagpur, Post Office Payāgpur, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः। अथ सालिहोत्र लिष्यते। दोहा। पांडव पति कुल कमल रवि धरम तात धरमज्ञ। सत्य सिंधु धीरज धुरी जैत जुधिष्टर स्यज्ञ ॥ १ ॥ भीमसेन अर्जुन अनुज रुह सहदेव सुजान नकुल सकुल भूषन सकल तुरंग तंत्र गुरज्ञान ॥ २ ॥ ग्रंथ देषि सब मुनिन के कीन्हो नकुल विचार। सालिहोत्र संछेप सो रच्यो चारु लहिसार ॥ ३ ॥ अथ नराच छंद ॥ सपच्छ चारि हय सवै तुरंग चारु अंग सो। अकास पंथ में फिरैं सो किन्नरादि संग सो ॥ सचौ सजोग वाहने विचारि के तहो कहो मुनीस सालिहोत्र सो सवै भलो मतो लहो ॥ ४ ॥ दोहा ॥ मुनि तोका दुरलभ नहीं स्वरग उरग नरलोक। रथ वाहन कीन्हे तुरी। चले वेगि दिन छोक ॥ नेक न डोले चलत हू दसन टौह को सास जाहि देषि छोभित सदा पराचत दिकपाल ॥ ६ ॥ लहि सासन सुरराज को वाजी किय विपक्ष। मुनि तिन्ह को वरनन कियो दोष अदोष पलक्ष ॥ ७ ॥

End—छंद होरा ॥ अधर एक श्रवन एक तीनि श्रवन जासुके हीन दंत अधिक दंत तीनि अंड तासुके। एक अंड हुस्व ज्ञोभ दंड पाठि पेषिये। ताहि भूलि के न लेहु वाजि जो विसेषिये। दोहा ॥ सालिहोत्र जो नकुल वर रच्यौ सकल सिर मैार। ताते जाने वाजिके गुन अेागुन सव ठैार ॥ याका मनो विचार के कीन्हो सवै प्रमान। सालिहोत्र पूरन रच्यो दीक्षित सुकवि निधान ॥ मैं प्रबंध कीन्हो कछू पंडव मत अनुसारि। सो मति अति लघु जानवी लीजो सुकवि विचारि ॥ इति श्री नकुल मत भाषा सालिहोत्र नाम चतुर्थ दसोध्यायः इति श्री सालिहोत्र सम्पूर्णम् शुभ मस्तु अश्वनि मासे कृष्णपक्षे अकादस्यां तिथा शुक्रवासरे संवत १९१६ शाके १७८१ सन १२६७ श्रीराम श्रीराम ॥

No. 305. **Bhāgvata Daśama skandha by Nihāladāsa of Mirzāpur.** Substance—Country-made paper. Leaves—241. Size—13 × 9½ inches. Lines per page—15. Extent—9,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Gurumukhi. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Mahanta Rādhākṛishṇa, Badi Saṅgat, Bahrāich.

Beginning—रामजी ॥ रामजो सहाइ ॥ ॐ सति गुरु प्रसाद ॥ रामजी सहाइ ॥ रामजो ॥ अथ श्री भागवत दशमस्कंध लिप्यते ॥ दोहरा ॥ दो मत घट मे परसपर बोलत एक समान। एक गावत गुन श्याम के एक बरजे सुरज्ञान ॥ सुनहु सखो मत जस कहो चुपकरि आहुन बोल। निपट दोन तू दुबरी वह प्रभु बड़े घतोल ॥ कौन कोट मतहोन तू छिन छिन भूलनहार सेस न पावै पार को जाके बदन हजार ॥ चारवेद ब्रह्मा रटे थक्यो न पायो अन्त। ओर विवेकी थक परे अति अपार भगवंत ॥ सागर ते चोटी कहो केहि विधि उतरे पार। अति असंख लहरें उठ भूले प्रबल बयारि ॥ तू चोटी हरि जस अमिट किन्नु न पायो पार। जप निस दिन हरनाम को यहि विधि हिरदे धार ॥ दूजो मत बोलो तब सुनो सखो एक बात। रहो न हरिजि कहुंगो हदे न प्रेम समात ॥

End—दान देउ जग साजन हार। तुम सो तन बड़े पियार। जग की संगति ते छुटि काय। कृपा करो हे केशोराय। निपट चरन को देहु निवास। नित पग पूजै तुम्हरो दास ॥ पूजै सदा बनाय बनाय। गावै पड़े न नेक अघाय ॥ दृष्टि अगोचर होउ न श्याम। पूरन करो हमारो काम। अन्तरजामी जो कर करतार। मानहुं सेवक करो पुकार। ऐसो कृपा कृपानिधि करो। सबै पात तन मन ते हरो ॥ अंतर बाहिर तुमहों बसो। अंत समय तुम हमसों रसो ॥ जै जै जै करुणा भंडार। जन निहाल पग पर बलिहार ॥ १९१ ॥ इति श्री भागवते दशमस्कंधे महापुराणे नवे अध्याय सम्पूर्णम् समाप्तम सम्वत १९०० दसम लिखो साहब दास ने ॥

Subject—भागवत दशमस्कंध का भाषानुवाद।

No. 306. Śāntarasa Vedānta by Nipaṭa Nirañjana. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—14×7 inches. Lines per page—11. Extent—350 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhakūra Naunihāla Siṁha, Kānthā, Unāo.

Beginning—अथ निपट निरंजन को ग्रंथ लिप्यते शान्तरस वेदान्त ॥ श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वतैनमः सवैया ॥ जे उपजे ते विचारे पज्ञान है परज्ञा निरधार समानो। पै प्रज्ञान भयो पज्ञानो महा प्रज्ञान सु प्रज्ञान जानो ॥ ज्ञान निपट्ट निरंजन ज्ञानो न ज्ञान घने परज्ञान को बानो ॥ सो सरवज्ञ न सरवज्ञ सनो विज्ञान मोले ते विछे विज्ञानो ॥ १ ॥ मनहरन छंद ॥ मनन मनन मनोरथ को न उतपन मन मत नाहों उन मन मनसा दुरी ॥ बाचा को न लेस बाच्यारथ

को न परवेस वचन को वोध पै न वाचकता है पुरो। निपट निरंजन सुमौन है मौनो कोऊ महामुनि नाहिन मुनि सरता का पुरो ॥

बुधि को ननेम सुधि लेवे को विधाता जैसे चातुरी कैावा वानो थंमन अफीम सो। जोग काजें रुद्र औ वियोग काजें रामचन्द्र भोग को कन्हैया सब रोगन को नीम सो ॥ निपट निरंजन य विजया विज्ञान दाने वलिमान लेवे को पतोम सो ध्यान लागिवे को ध्रुव जागिवे को गोरख ज्यों सोइवे को कुंभकरन भोजन को भीम सो २४ ॥ तुमने पड़ोछे देव तो ताखानो नहिं वूड़िये तोसू तुम्हे तरसो। अपराध अवश्य धरै अमने अपराध विना अभया करसो ॥ मलिनाइदि शौतो निपट निरंजन ठाकुरताई यांतो ठरशों। प्रथमें कि—

Subject—ज्ञान की विशेषता, संसार की असारता, आत्मनिर्भरता वर्णन—पृ० १—४ तक। मनुष्य जन्म की महत्ता, ईश्वर की निरंजनता, मन की चंचलता, देह धर्म, भोग की निस्सारता वर्णन पृ० ५—१४। आत्मा और परमात्मा की एकता ईश्वर की सर्व व्यापकता, संसार की माया। संस्कृत ग्रंथों की कठिनता, ज्ञान की महत्ता वर्णन—१४-२४। संसार से छूटने का उपाय और विजय की प्रशंसा, पृ० २५—२७ तक।

No. 307(*a*). Jagat Vinōda by Padamākara. Substance—Country-made paper. Leaves—66. Size—9 × 5 inches. Lines per page—40. Extent—1,980 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1921 or A.D. 1864. Place of deposit—Rāja Ramanāthabaksha Siṁha Pustakālaya, Parseni Rāja, Post Office Parseni, District Sitāpur.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ जगतविनोद लिख्यते दोहा ॥ सिद्धि सदन सुन्दर वदन नंद नदन मुद मूल ॥ रसिक सिरोमणि सांवरे सदा रहो अनुकूल ॥ जय जय सक्ति सिला मई जय जय गढ़ आमेर। जय जय पुर सुर पुर सहस जो जाहिर चहुंफेर ॥ जय जग जाहिर जगतपति जगत सिंह नरनाह। श्री प्रताप नंदनवलो। रविवंसो कछवाह ॥ जगत सिंह नरनाह को समुझि सवन को ईस। कवि पदमाकर देत है कवित वनाइ असोस ॥ कवित्त ॥ छत्रिन के छत्र छत्र धारिन के छत्रपति छाजत छटान छिति छेम के छवैया हो ॥ कहै पदमाकर प्रभा के प्रभाकर दया के दरियाव हिन्दै हद के रखैया हो ॥ जागत जगत सिंह साहिवो सवाई सो श्री प्रताप नृप नंद कुलचंद रघुरैया हो ॥ आछे रहो राज राज राजन के महाराज कच्छ कुल कलस हमारे तो कन्हैया हो ॥

End—अथ सांत रस के दोहा ॥ सुरस सांत निरवेद है जाको थाई भाव । सत संगत गुरु तपोवन मृतक समान विभाव ॥ प्रथम रोमांचादिक तहां भाषत कवि अनुभाव । धृति मति इत्यादिक कहे सुभ संचारो भाव ॥ सुद्ध सुकुल रंग देवता नारायन है जान । ताको कहत उदाहरन सुनहु सुमति दै कान ॥ दंडक सवैया ॥ बैठो सदा सत संगहि मैं विष मानि विषै रस कोनो सदाहीं त्यौं पदुमाकर भूठ जितो जग जानि सुज्ञानहि के अवगाहीं । नाक की नोक मैं दोठि दिये नित चाहै न चोज कहूं चित चाहों संतत संत सिरोमनि है धन है धन वे जन वे परवाहो ॥ दोहा ॥ नभ वितान रवि ससि दिया फल भष सलिल प्रवाह ॥ अवनि सेज पंखा पवन अब न कछू परवाह ॥ अवहित तै विरकत रहत कछु न दोस के त्रास । विहित करत सुनि हित समुझि सिसु हित जे हरिदास ॥ जगत सिंह नृप हुकुम ते पदुमाकर लहि मोद रसिकन के बस करन को कीन्हों जगत विनोद ॥ इति श्री कूर्म वंसावतंस श्री मन्महाराजाधिराज राजा राजइन्द्र श्री सवाई महाराज जगतसिंह ग्यास मथुरा स्थान मोहनलाल भट्टात्मज कवि पदमाकर विरचिते जगत विनोद नामक काव्य सम्पूर्णम् सुभमस्तु लेपक गंगासिंह वैस परगने बैसवारे के थोड़िया खेड़ा ग्राम संवत १९३१ तिथो सप्तयाम रविवासरे फागुन मासे शुक्ल पक्षे ॥

Subject—रस निरूपण तथा नायक नायिका भेद उदाहरण सहित ।

No. 307(*b*). Jagat Vinoda by Padamākāra. Substance—Country-made paper. Leaves—78. Size—7½ × 6 inches. Lines per page—28. Extent—1,065 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1940 or A. D. 1883. Place of deposit—Bābū Nārāyaṇadayāla, Rāe Barelī.

Note—Details as in no. 307(*a*).

No. 307(*c*). Jagat Vinōda by Padamākara. Substance—Country-made paper. Leaves—27. Size -9 × 6 inches. Lines per page—24. Extent—1,000 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhingā Rāja, Bahrāich.

Note—Details as in no. 307(*a*).

No. 307(*d*). Jagat Vinoda by Padamākara. Substance—Country-made paper. Leaves—124. Size—10½ × 6½ inches.

Lines per page—19. Extent—1,326 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāma Nātha Lāla (Sumana), Kāśī.

Note—Details as in no. 307(*a*).

No. 307(*e*). Padamābharaṇa by Padamākara. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—10×6 inches. Lines per page 44. Extent—220 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1935 or A. D. 1878. Place of deposit—Ṭhākura Rāma Siṁha, Village Rāma Kola, Post Office Sitāpur, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पद्माभरण लिष्यते ॥ राधा राधावर सुमिरि देषि कवितन के। पंथ। कवि पदमाकर करत हैं पद्माभरण सुग्रंथ ॥ शब्दहु ते कहुं अर्थते कहुं दुहुं ते उर आनि। अभिप्राइ जिहि भांति जहं अलंकार सो मानि ॥ अलंकार इक थलहि मैं समुझि परै जु अनेक। अभिप्राय कवि के। जहां वहीं मुष्यगन एक ॥ जा विधि एकै महल में वहु मंदिर इक मान जो नृप के मन मैं रुचै गनियत वहै प्रधान ॥ वरनन कीजतु जाहि के। सु उपमेय चितु लाइ। जाको समता दोजिए सो उपमान गनाइ ॥ सम अर्थहि जे पद कहत ते सब वाचक देषि। इक सैाचर्य अवर्ग मैं धर्म धर्म सो लेषि ॥ अथ उपमालंकार ॥ उपमेयहु उपमान के। इक सम धरमु जु होइ। उपमा वाचक पद मिलै उपमा कहिये सोइ ॥ उपमा नरुवाचक धरम उपमेयहु जो कोइ। ये चारिहु पर सिद्धि जहं पूरन उपमा सोइ ॥ सुभग सुधाधर तुल्य मुष मधुर सुधा से वयन। कुच कठोर श्रीफल सदस अरुण कमल से नयन ॥

End—अर्थालंकार के। संसृष्ट ॥ वाके नामहि के। सुनत होत सैात मुष मंद ॥ चक्र चकोर कीजै सुषो लषि राधा मुष चंद ॥ त्रिविधि संकर ॥ अलि ये उडुगन अगिन कन अंक धूम अवधार मानो आवत दहन ससि लै निज संग दवार ॥ विहारी ॥ लष बड़ई वल करि थके करै न कुवत कुठार। आल वाल उर झालरी परी प्रेम तरु डार ॥ संदेहुत संकर भाषा भरणे ॥ यों भूलत कोऊ कछू राधै। हिये समान। भजै। मधुप तजि पद्म मनहि जान होत गत भान ॥ विहारी यथा ॥ कहाे हमारो चित धरी तजो लाल सब वात नैनन के। सुपदेत यह इंदु विवं सरसात सम प्रधान संकर भाषाभरणे ॥ विमल प्रभा निज ससि तजो मनै। वाश्नो पाय यह कारो निसि अंक मिस राधो अंक लगाई ॥ पुनः

यथा विहारी ॥ डर लीन्हे अति चटपटी सुनि मुरली धुनि धाइ। हैाँ हुलसी निकसी सुतौ गयो हूलसी लाइ ॥ इति सम्पूर्ण संकर। राधा माधव कृपा लहि लषि सुकविन को पंथ कवि पद्माकर ने कियो पद्माभरण सुग्रंथ ॥ इति श्री कवि पद्माकर विरचितायां पद्माभरण संपूर्णम् माद्र मासे शुक्ल पक्षे तिथै षष्ट्यांम सोमवासरे श्री संवत १९३५ श्री ठाकुर हेमंचल सिंह लिषो दरवारी लाल कायस्थ चुनहट वाले ॥

Subject—काव्य अलंकार।

No. 308. Upākhyāna Vīveka by Pahalawānadāsa of Bhīkhipur. Substance—New paper. Leaves—25. Size— × inches. Lines per page—12. Extent—300 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Persian. Place of deposit—Munshī Bindeshwarī Prasāda, clerk, Registration Department, Bārābaukī.

Beginning—का तजि भजन श्रोर सोइ जाना। द्विज मैाँरी कूकुर सम्भाना ॥ भीति पूजि यह दुनियाँ मरी। ढूँढ कुआ पत कैारन मरी ॥ राम छांड़ि कहु केहि को सुधरी। चले कितक दिन जनकी चुपरी ॥ जो आवा सो वेअई चला। भजन विना सुरति कहत न भला ॥ नरतन पाइ ज्ञान नाहि पाई। पाथर पड़ा जो मूड़ मुड़ाई ॥ पांच पचीस रात दिन अटका। सरग ते गिरा खजूरन अटका। चेत चेतका गाफिल मरे। मैं मैं कहत देश सब मरे ॥ अस जन जानि झूठ कछु अहा। सत्य वचन सतगुरु कर कहा ॥ जन्म पदारथ वादि खोई। बहता पानी हाथ न धोई ॥

दोहा—सत संगत में बैठ जा। होइ जैहै मन सोझ।
सात पांच की लाकड़ी। एक जनैं का वोझ ॥

End—आदि अंत रामहिं ते खेर। वसि दरियाव मगर ते वैर ॥

दोहा—अवहू झूठी लीन्हो कर। आगे अव है गाड़ ॥
बुढ़ि है कैान परोजन। चोर मुसैले ठाड़ ॥

सत गुरु सिद्धा कर बांधा जो अव सत मान। पहलवान दास जाने है सत गुरु परम सुजान ॥ नाम अनन्त अनन्त गुन, कीन्हों सोमति अनुदार। श्रोता वक्ता सज्जन जन, चोरी लूटन हार ॥ गुरु प्रसाद गुरु कीरत गुन, गुरु सुमिरन गुरु ध्यान। पहलवान दास गुरु वन्दना करे। सदा रहे कल्यान ॥

× × × × × ×

Subject—(१) पृ० १—२५ तक—नाम माहात्म्य, भजन करने का आदेश, भजन न करने वालों की निन्दा, भजन न करने से मनुष्य की हानि। भजन संबंधी अन्य उपदेश।

No. 309. Śrīpāla-charitra by Paramalla of Agrā. Substance—Country-made paper. Leaves—350. Size—11 × 3½ inches. Lines per page—11. Extent—3,146 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1651 or A. D. 1594. Date of manuscript—Samvat 1926 or A. D. 1869. Place of deposit—Śri Jaina Mandira (Baḍā), Bārābanki (Oudh).

Beginning—ओं नमः सिद्धेभ्यो ॥ ओं श्री जिनायनमः ॥ ओं श्री गणाधिपतेनमः ॥ अथ श्रीपाल चरित्र भाषा लिख्यते ॥ चौपाई ॥ प्रथमहि लीजै ओंमकार ॥ जो भव दुःख विनासन हार ॥ सिद्धि चक्र विधि केवल ऋद्धि ॥ गुन अनंत जाके फल सिद्धि ॥ १ ॥ प्रणवों परम सिद्धि गुरु सोइ ॥ भव्य संग जो मंगल होइ ॥ सिद्धि पुरी जाको सुभ थान ॥ सिद्धि पुरी आनन्द निधान ॥ २ ॥ प्रगट ज्योति त्रिभुवन में आहि ॥ अलप देव कोई लखै न ताहि ॥ अंजन रहित निरंजन मान। हीन बुद्धि को सकै बखानि ॥ ३ ॥ जय जिनंद आदि गुरदेव। सुन नर करत पद पंकज सेव ॥ जै अजिते सुरगुनहि निधान ॥ मान रहित मिथ्या तम भान ॥४॥ जय जिन संभव हरन विकार ॥ सुमिरत अभय दान दातार ॥ जय अभिनंदन आदन वीर ॥ गुण गरिष्ट भव भंजन भीर ॥ ५ ॥

End—श्लोक—उग्रं गोप गिरं च दुर्गम गढ़ रखा वरंभूषितं ॥ जं धीरं कृत मध्यरं मद गलं पाषान ऐरावतं ॥ तन्मद्धे श्रीमान सिंघवि पतं भूलोक संवक्षितं ॥ तं द्राज्यं सुरनाथ तुल्य गहितं तत्केन सं वसर्यते ॥ ३३ ॥ विद्वन्मंडल पूजितो च विसद्दो नामेन चन्द्र नयं। तत्पुत्रो गुरु राम दास विपलो भोकापि भोग्यं सदा ॥ तत्सूनो कुल दीपकस्तु प्रगटे नाम्रास कर्णो भिया ॥ तत्पुत्रो परि मल्ल धर्म सदनो ग्रंथं इदं क्रीयते ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ गोवर गुरु गिरि उत्तम थान ॥ सूर वीरता राजा मान। तासुत है चंदन चौधारो ॥ कीरति सब जग में विस्तारो ॥ ३५ ॥ जाति वरैया गुन गंभीर ॥ अति प्रताप कुल रंजन धीर ॥ ता सुत राम दास परवान ता सुत कुल मंडल गंभीर ॥ बसै आगरे परमल धीर ॥ ताको बुद्धि न उन मान ॥ तिन कीनो चौपाई बखान ॥ ३७ ॥ होइ अशुद्ध जहां पद हीन ॥ ताहि संमारो कवि मति लीन ॥ बारंबार जयौ करजोरी ॥ बुधजन मोहि देहु मति खोरी ॥ ३८ ॥

इति श्रीपाल चरित्र समाप्तम् श्री संवत् १९२५ सावन शुक्ल १४ वार रवि दिने लिषितं ॥ लाला श्री के पुत्र हीरालाल के प्रति से उतारी यनपतिराइ श्रावक गोपालचंद के पुत्र पैंतपुर के अपने पठन के हेत संवत् विक्रमादित्ये १९२६ वैसाष मासि कृष्ण पक्षे तिथौ ॥

Subject—पृ० १—६ तक—पंच परमेष्टी की स्तुति (अरहंत सिद्ध, आचार्य्य, उपाध्याय और सर्व साधु की स्तुति) (२) पृ० ६—२६ तक—ग्रंथारंभ, सरस्वती वन्दना, उसके गुणानुवाद के साथ। अति सूक्ष्म (ग्रंथ विवर्णित विषय संबंधी) सूची, ग्रंथ निर्माणकालः—संवत् सोलह से उनचास मास असाढ्यो प्रासो मास। वर्षा रितु को कहै बड़ाइ। दिवस अढ़ाई पहुंचो आइ॥ पक्ष उजारों आठैं जानि। शुक्रवार आगे परवानि॥ कवि परमल्ल शुद्ध कर चित्त। आरंभ्यो श्रीपाल चरित्त॥ राजा का वंश वर्णन:—

बब्बर वादसाह है भयो॥ तासुत साह हिमांयु भयो॥ तासुत अकबर शाह प्रवीन॥ सो तपु तप्यो मनहुं सो भीन॥ × × × × ताके राज कथा यह करी॥ कवि परमल्ल कथा विस्तरी॥ भरत क्षेत्र का वर्णन, राजा अरिमर्दन तथा रानी कुंदप्रभा का वर्णन। श्रीपाल के जन्म का वर्णन। रानी को स्वप्न दिखलाई पड़ना, राजा का फल स्वरूप यशस्वी पुत्र होने का कथन, गर्भ की दशा का वर्णन। वालकोत्पत्ति आनन्द प्रकाश ब्राह्मणादि वेद पठन पाठन वर्णन, दान वर्णन। आठ वर्ष को अवस्था में उसे गुरु के पास भेजे जाने का वर्णन। अनेक विद्या पढ़ जाने का कथन। जल में तैरना सीखना। इस वालक का नाम निमित्ती द्वारा श्रीपाल रखा गया, उसी को राजतिलक प्राप्त होना। राजा का देहान्त। पुत्र का माता को समझाना, श्रीपाल का अपने पराक्रम से चक्रवर्ती होना।

(३) पृ० २७—३७ तक—पूर्व संस्कार के कारण राजा का कुष्ट होना, उसके सहवासियों की भी यही दुर्दशा होना, दुर्गंध का सब ओर फैलना, नगर वासियों का दुःख, श्रीपाल का वीरदमन को राज्य देकर उद्यान को चला जाना, सात सौ साथियों का जो कुष्ठी थे, साथ जाना—प्रथम सन्धि समाप्त हुई।

(४) पृ० ३८—५९ तक—मालव देशान्तर्गत उज्जैन नगरी के राजा पहुपाल की पुत्री मैना सुन्दरी का वर्णन—राजा की दो पुत्रियों का वर्णन, छोटी मैना सुन्दरी का गुणज्ञा होना, बड़ी सुर सुन्दरी का शिवगुरु (कुगुरु) के साथ विद्याध्यन को जाना, छोटी का जैन चैत्यालय जाना, जैन मुनि से उनका अठारहों विद्या पढ़ जाना, कौशाम्बीपुर के राजा के साथ उसकी बड़ी बेटी का

विवाह होना, छोटो बेटो से राजा का विवाह संबंध में वार्तालाप, मैना सुन्दरो का लज्जित होना, पिता के साथ कर्म के संबंध में विवाद होना, राजा का क्रोधित होना, पुत्री को निकाल देना, पुरजन—जिन्होने उसे देखा—के मुख से उसका श्रृंगार वर्णन, कन्या का अपनी माता के पास पहुंचना, जैन धर्मानुसार सम्पूर्ण नित्य कृत्य करना। द्वितीय संधि। समाप्त

(५) पृ० ६०—९१ तक—राजा का शिकार को जंगल में जाना, कुष्टी श्रीपाल से उसको भेंट, उसको मित्र मान मिलना, मंत्रियों को घृणा, उससे राजा का पूछना कि मांगो क्या मांगते हो? उसका पुत्री मांगना, राजा का प्रथम क्रोधित होना परन्तु फिर रजामन्द हो जाना, मंत्रियों का विरोध, राजा का कर्म परीक्षा करना और लड़की से पुनः पूछना, उसका कर्म पर दृढ़ विश्वास दिखाना, राजा का उसी कुष्टी के साथ विवाह करना, विधिवत विवाह होना, लोगों का दिल्लगी करना, राजा का हठ पर मनही मन लज्जित होना, धन धान्य देकर विदा करना, श्रीपाल का पत्नी से पृथक रहने का कथन, उसका निषेध और पति के सौंदर्य का वर्णन करना, जन्म पर्य्यन्त सेवा करने का वचन देना, कर्म पर दोषारोपण और उसकी प्रबलता का कथन, दोनो का दिव्य वस्त्र धारण कर जिनराज को पूजा करके पति के कुष्ट दूर होने की प्रार्थना, अरहंत को पूजा विधिवत करने पर उसका कुष्ट दूर होना, भूप का मकरध्वज के समान रूप हो जाना—तृतीय संधि समाप्त हुई।

(६) पृ० ९२—१२८ तक—श्रीपाल की माता का विकल चित्त होकर जिनेन्द्र से पुत्र संबंधी—विनीत भाव से उन्हे पूज कर प्रश्न करना, जिनेन्द्र का हाल कथन करना, माता का जाकर अपने पुत्र के महल को देख कर किसी से पूछना उससे संपूर्ण समाचार श्रवण कर वहां पहुंचना, पुत्र और माता के तथा सास और बहू के मिलन का अनुपम कथन, पुत्री से उसके माता पिता के मिलने का वर्णन, उससे पूर्व भली भांति निश्चित करके उनको और भी सेवा करना, धन धान्य देना, जिस प्रकार वह अच्छा हुआ उसका सम्पूर्ण समाचार जानना, एक दिन श्रीपाल का वहां से कहीं जाने का विचार करना, उसको स्त्री को आपत्ति, माता का प्रलाप, अंत में दोनो का संतोष, उसका समय निर्दिष्ट कर के उसी समय आ जाने का वचन, मार्ग के संबंध में सजग रहने का माता द्वारा उपदेश, श्रीपाल का गमन, विद्याधर से उसका मिलाप, विद्याधर से मंत्र न सिद्ध होता था, उसका उपाय श्रीपाल द्वारा बताया जाना, इस उपकार के प्रत्युपकार स्वरूप विद्याधर का श्रीपाल को जलतारिणी और शत्रु निवारिणी दो विद्यायें देना। चतुर्थ संधि समाप्त।

(७) पृ० १२७—१५६ तक—श्रीपाल का चलकर एक निर्जन स्थान में पहुंचना । कैाशाम्बी के धवल सेठ का जहाज लाद कर चलना श्रोर एक स्थान पर अटक जाना, सेठ का शहर में आकर विद्वान से उसका कारण पूछना, उसका कथन कि एक बलि लेगा तब चलेगा, राजा से सेठ का बलि मांगना, राजा द्वारा बलि की खोज को सिपाहियों का जाना, श्रीपाल का पकड़ा जाना, सेठ तथा श्रीपाल का वार्तालाप, श्रीपाल के छूते ही जहाज का चल देना श्रोर सेठ का उनका बड़ा सम्मान कर अपने द्रव्य का दशवां अंश देकर पुत्रवत उनको मानना श्रोर साथ ले चलना । धवल सेठ को मार्ग में चोरों का मिलना श्रोर उनका सेठ जी को पकड़ लेना, श्रीपाल का चोरों को बांधना श्रोर अपने धर्म पिता से दंड विधान पूछना, उनका दया करके उन्हें छुड़ा देना चोरों द्वारा श्रीपाल को सात जहाज रत्नों का देना श्रोर उसका उपकार मानना । पंचमसंधि समाप्त हुई ।

(८) पृ० १५७ से २५५ तक—हंसद्वीप का वर्णन । (वहां के राजा) कनककेतु की स्त्री कंचन माला के दे। पुत्र चित्र विचित्र तथा रैन मंजूषा नाम तीसरी पुत्री का वर्णन । इस पुत्री के संबंध में राजा का मुनि से प्रश्न कि मेरी पुत्री का विवाह किससे होगा, ज्ञान द्वीप मुनि का कथन कि जो सहस्र कूटन चैत्यालय के फाटक को हाथ से खोल देगा उसी के साथ होगा । कालान्तर में श्रीपाल का वहां पहुंच कर उस कृत्य को कर राजकन्या का पाना, रैन मंजूषा को लेकर श्रीपाल का अपने सेठ के साथ चल देना, सेठ का रैन मंजूषा पर मोहित होकर श्रीपाल को समुद्र में गिरा देना श्रोर रैन मंजूषा को तरह तरह के प्रलोभन देकर वशीभूत करने का प्रयत्न करना । रैन मंजूषा के प्रस्ताव अस्वीकार करने पर बलात्कार की चेष्टा, रैन मंजूषा का ईश्वर से प्रार्थना करना, चार देवियों का प्रगट होकर सेठ को दंड देना, अन्य महाजनों की प्रार्थना पर रैन मंजूषा का धवल सेठ को छुड़ा देना, श्रीपाल का तैरते हुए कुंकुम द्वीप में पहुंचना, वहां के राजा की पुत्री गुणमाला के साथ—जिसके संबंध में मुनि ने बताया था कि जो पुरुष समुद्र तैर कर आवेगा उसी के साथ तेरी पुत्री का विवाह होगा—विवाह होना । सेठ का भी उसी नगर में पहुंचना राजा को भेंट देने को जाना, वहां पर श्रीपाल को देखकर चिन्तित होना, श्रीपाल का कुछ न कहना । धवल सेठ का भांड़ों द्वारा तमाशा करा के उसे भांड़ों का लड़का सिद्ध कर के मरवाने की आज्ञा दिलवाना गुणमाता का अपने पति से वास्तविक समाचार जानने की प्रार्थना, उसका उसके जहाज पर भेज कर इस संबंध में रैनमंजूषा से वार्तालाप करने को कहना, रैनमंजूषा के पास जहाज पर पहुंच कर गुणमाता का शुद्ध समाचार जानने के लिये अपने

पिता के पास ले माना, राजा का शुद्ध समाचार ज्ञान कर उसको छोड़ना, सेठ को राजा का बुलाना और फांसी की आज्ञा देना। श्रीपाल का दया कर उसको छुड़ा देना, तिस पर भी उसका हृदय फट कर मर जाना और श्रीपाल का सेठानी को समझाना, सेठानी का कहना कि उस पापात्मा के देहावसान होना ठीक ही हुआ। इस पर सेठानी को उसके घर पहुंचा देना।

(९) पृ० २५६—८९ तक—मुनिराज की भविष्यवाणी के अनुसार श्रीपाल का विवाह कुंडलपुर के राजा मकरकेतु की पुत्री चित्ररेखा के साथ होना। तत्पश्चात् कंचनपुर के राजा वज्रसेन की (९००) पुत्रियों से उनका विवाह होना। कुंकुमपट के राजा यशसेन की सोरह सौ पुत्रियों के साथ उनका विवाह होना—इनमें प्रधान आठ की दी हुई ग्रंथ में प्रस्तुत आठ प्रश्नों के पूर्ण करने पर विवाह सम्बन्ध होना—अन्य बहुत सी स्त्रियों से विवाह करके कुंकुमद्वीप में लौट कर आना। अपनी सम्पूर्ण स्त्रियों को सब स्थानों से लेकर अपनी प्रथम स्त्री मैना सुंदरी से किये हुए वचन को पूर्ण करने के लिये उज्जैनी को लौटना, स्त्रियों को इस लिये मार्ग में छोड़ कर कि उनको अवधि का अंतिम दिन है यदि वे न पहुंचेंगे तो उनकी पूर्व स्त्री तपस्विनी हो जायगी अकेले ही घर पर रात्रि के अन्तिम पहर में पहुंचना और अपनी स्त्री का माता से दीक्षा की आज्ञा मांगते हुए पाना। इनके प्रबोध पर और पहुंचने की प्रसन्नता पर उसका रुक जाना और प्रातः सब स्त्रियों को बुला लेना और मैना सुंदरी को सब से प्रथम पटरानी पद देना। भोग विलास करना।

(१०) मैना सुंदरी का अपने पति से कथन कि आप मेरे पिता को कंधे पर कुल्हाड़ी तथा कंबल ओढ़ कर अत्यंत दीन दशा से बुलाइये जिससे वह कर्म के फल को समझे और अपने आग्रह को छोड़े। इस पर उसके पति का विरोध, पत्नी का पुनः धर्म की दृष्टि से ऐसा करने का अनुरोध, इस बात को अबकी बार मान कर राजा के पास उसी प्रकार आने की आज्ञा दूत के द्वारा भिजवाना और उसका भयभीत होकर उसी दशा में आना। दम्पति का उसके पैरों पर गिर कर कर्म का प्रभाव कथन करना। राजा का लज्जित होना, आशिर्वाद देकर और कर्म के प्रभाव को समझ कर राजा का अपने नगर को लौटना। जैन धर्म को स्वीकार करना, श्रीपाल का सुख भोग करना—अष्टम प्रभाव समाप्त

(११) पृ० २९०—३११ श्रीपाल का आदर पूर्वक मैना सुन्दरी के पिता द्वारा अपनी राजधानी में बुला ले जाना, प्रजा की ओर से उसका हार्दिक स्वागत, कुछ दिवस पश्चात् उसका राजा से अपनी जन्म भूमि तथा पैतृक राज्य के उपयोग की अभिलाषा प्रकट करना, राजा का कथन कि आपको यदि राज्य

की ही इच्छा है तो मेरे राज्य को लीजिये और मुझे अपनी सेवा की आज्ञा दीजिये। जामात्र का श्वसुर को धन्यवाद देकर उचित कारण बताते हुए अपने प्रस्ताव की स्वीकृति के लिये पुनः आग्रह करना। प्रस्ताव का स्वीकृत होना, श्रीपाल का गमन, उसकी सेना की बढ़ाई, कई राजाओं को वशीभूत करने के पश्चात् उसका चम्पापुरी में पहुंच नगर को घेर लेना, नगर निवासियों की चिन्ता, दूत का भेजा जाना और उसका राजा वीर दमन को समझाना, उसका न मानना, दूत द्वारा श्रीपाल के वैभव का कथन, उसको श्रवण कर वीरपाल का क्रोध, युद्धारंभ, दोनो ओर के योद्धाओं का विध्वंस, मंत्रियों की सम्मति से युगल नृपतियों का मल्ल युद्ध, श्रीपाल की विजय, वीर दमन का उसे राज्य सौंप कर स्वयं जैन धर्म की दीक्षा लेकर वन को चला जाना। नवम् प्रभाव समाप्त।

(१२) पृ० ३१२—३५० तक—श्रीपाल की राज्य व्यवस्था का वर्णन। उसकी स्त्री मैना सुन्दरी से एक पुत्र—जिसका नाम धन्यपाल रक्खा गया। इसके बारह सहस्र एक सौ आठ पुत्रों के होने का कथन। राजा का बहुत दिनो तक राज्य का आनन्द उठाना, प्रजा को सब भांति से सुखी रखते हुए राज काज निर्वाह करना, राजा द्वारा विद्याधर तथा वनदेव का सत्कार किया जाना, एक मुनीश्वर का आना, राजा द्वारा उसका सत्कार किया जाना, और उसका जप तपादि की प्रशंसा के साथ ही साथ कर्म की प्रधानता का कथन करना, राजा का आदर पूर्वक अपने पूर्व कर्मों के संबंध में यथा—मैं कुष्टी क्यों हुआ? पानी में क्यों डूबा, इत्यादि—कुछ प्रश्न करना, मुनि का उसके पूर्व जन्म का संपूर्ण समाचार और उसमें किये गये कर्मों के अनुसार दुःख सुख होने का वर्णन सकारण समझा दिया। राजा का दीक्षित होकर वन को जाना, पुत्र को राज्य देना, उसका अपने को असमर्थ बतलाने पर कुछ उपदेश देकर आज्ञा मानने के लिये बाध्य करना, उसका राज्य स्वीकार कर लेना, राजा का वन गमन, रानियों इत्यादि का भी दीक्षित होना।

(१३) मुनिराज से भेंट होना, राजा का उनसे उपदेश सुनने की अभिलाषा प्रकट करना, उनका उपदेश देना, उपवास, दान, इत्यादि की प्रशंसा करना, राजा का तप करना, श्रीपाल का केवल ज्ञान या मुक्ति को जाना। कवि का कुछ वर्णन। ग्रंथ समाप्तिः।

No. 310(*a*). Dadhilīlā by Parmānanda Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—7 × 4½ inches. Lines per page—22. Extent—55 Anushṭup Ślokās. Appear-

ance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Śiva Nārāyaṇa Lāla, District Rāe Bareli.

Beginning—ॐ ॥ श्री गणेशाय नमोनमः ॥ अथ दधिलीला लीष्यते ॥

वोषमान सुता सुकुमारी । दधी बेचन चली व्रज नारी ॥
जह जुह कदम की छाहो । बेठे प्रभु तेहो मगु माहो ॥
सषी गेडुरी षेलत भाई । तब कौस्न जो मुरली बजाई ॥
दधी बेचन चली व्रजवाला । जहां बोच मोले नंद के लाला ॥
दे दे री गुजरी दधी दाना । गहो अंचल रोकै हो ना ॥

End—चौपाई ॥ जब देन लगी हसी दाना । तब प्रती इतरानेउ कान्हा ॥
प्रभु मवन साधि कै बैठेये । जोगी मुनो जंगम जैसे ॥

केतीक जुगती अनेक मनावै । प्रभु नेक न चीत डोलावै
तब राधे नीकट चली आई । सुनी लीजै वीनव गोसाई ॥
हम दासी अहनी तुम्हारी । तुम चरन सरन बनवारी ॥
धनी जीवन जनम हमारी । अब पावा दरस तुम्हारी ॥
यको बैठी बधारी डोलावै । यक वीरी पोली षोआवै ॥
जै चाहोये सो वठ लीजै । प्रभु क्रोपा आपनी कीजै ॥
हरी देषो गुजरी रतो मानी । हंसो बोले सारंग पानी ॥

छंद ॥ हंसी बोले सारंग पानी सुंदरी मानो रती रसा भै रही ।
करी केली कुंज कलोल कान्हा सहस रंग रस भरी रही ॥
कर्ते क्रोड़ा मदन मोहन कवन लोचन राजही ।
दास परमानंद सोभा सुनत कलामल भाजही ॥ इती श्री

दधीलीला संपुर्ण ॥ समाप्तम् ॥ श्री क्रीष्णु सहाई लीला ।

Subject—श्री कृष्णजी की दधिलीला ।

No. 310(*b*). Dānalilā by Dāsa Parmānanda. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—6 × 4 inches. Lines per page—18. Extent—110 Anushṭup Ślokās. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1899 or A. D. 1842. Place of deposit—Paṇḍita Śatrughnaji, Village Sikandarpur, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ दानलीला लिष्यते ॥ दोहा ॥ एक समै राधे जी बैठी सषिवन साथ। बेड़ा प्रेम उमगोहियो सुमिरि नाम ब्रजनाथ चलो सषी तहं जाइये ज्रहं बैठे ब्रजराज गोरस बेचन प्रेम रस एक पंथ द्वो काज ॥ चो० करि मंजन बोर श्रंगारा। पहिरे मुकन को हारा ॥ छवि बेंदो भाल बिराजे दसन दुति दामिनि लाजे ॥ मटुकी दधि से भरवाई। सषियां संग लोन लेवाई ॥

No. 311. Ushācharitra by Paraśu Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—114. Size—5 × 4 inches. Lines per page—10. Extent—962 Anushṭup Ślokās. Appearance—Old (letters spoiled by rain). Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1825 or A. D. 1768. Place of deposit—Paṇḍita Bhavānī Baksha, Village Ularā, Post Office Musāphirakhānā, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—राम स्वस्ति श्री गणेशायनमः ॥ अथ लिषतं उषा चरित्र ॥ चोपाही ॥ कम्र कवल लोचन सुषकारी ॥ अवधि भूप ईसर अैतारी ॥ जाको नाम सुनत अघ जाहीं ॥ सो प्रभु वस सदा घट माहि ॥ घट घट वसे लषे नाहि कोई। जल थल वसै सदा गोसाई ॥ जाको आदि अंत नहिं जानों ॥ पंडित पढ़त गुन गन वषानी ॥ प्रेम प्रीति निज सुष के दाता ॥ चहुंजुग येके कार विधाता ॥ दोहरा ॥ त्रभुवन पति नागर नवल ॥ जुगल कोसोर कोसोर।' तिहि को जुगत अपार है। कवि बरनुक बठो ॥

End—परसराम कि बिनती जो श्रवण श्रुन लेह ॥ प्रभु दयाल कृपा करै प्रभु इतने फलेह ॥ इति श्री उषाचिरीत्र समापितां ॥ संपुरणं ॥ मिति मार्गसीर वदि ६ बुधवार लिषतं नंदन दास संवत् १८२५ ॥

Subject—(१) पृष्ठ १ से २ तक—वन्दन व कृष्ण महिमा। (२) पृष्ठ ३ से १४ तक-कृष्ण रुक्मिणी विवाह। अनरुद्ध जन्म, स्वप्न में १२ वर्ष की कन्या का देखना। नख शिख। वाणासुर की पुत्री उषा का और अनरुद्ध का वियोगावस्था में मनस्ताप, (३) पृ० १५ से ४० तक—चित्ररेखा का उषा को समझाना, अनेकों चित्र बनाना, अनरुद्ध को उषा का पहिचानना, सखी का कुंवर को लाने के लिये आज्ञा मांगना द्वारिका में अनेकों प्रयत्नों द्वारा भी प्रवेश न पाना, नारद मिलन, नारद का गोधूलि समय में प्रवेश करने के लिये कहना नगर में जाना दरवाजे पर सखी का मिलना चित्ररेखा को माया जिससे उसे कोई न देखे, कुंवर को विरह दशा, कुंवर से वार्तालाप, उनको साथ लाना, उषा से मिलाना. प्रेमी तथा प्रेयसी का प्रेम वार्तालाप। (४) पृ० ४१ से ६० तक—कृष्ण के यहां अनरुद्ध के

गायब हो जाने के कारण चिता बाणसुर को रानी का सब हाल जान कर अपने पति को बताना, उषा का गृह घेरा जाना, अनरुद्ध का युद्ध करना, उन का नाग फांस फांसा जाना । (५) पृ० ६१ से पृ० ११४ तक—अनरुद्ध का राजा से अभिमान युक्त बातें कहना रानी का उसे कन्या देने के निमित्त राजा से प्रार्थना करना, नारद आगमन, अनरुद्ध का उनसे कृष्ण के लिये, संदेश भेजना दूती का राजा के निकट संदेश ले जाना, दूत का कुंवर से मिलना, दूत का लैाट कर कृष्ण से सब वृत्तांत कहना, कृष्ण का क्रोध करना, दोनों दलों का युद्ध, हरहरि मिलाप, बाणसुर का कृष्णराम को निमंत्रित करना, बाणासुर को पुत्री का बिदा करना, द्वारिकापुरी आना, बधाई ।

No. 312(*a*). Rāma Kalevā by Parvata Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—48. Size—6 × 4 inches. Lines per page—22. Extent—660 Anushṭup Ślokās. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1916 or A. D. 1859. Place of deposit—Paṇḍita Gayā Prasāda, Village Naipālapur, Post Office Sītāpur, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः । अथ श्री रामकलेवा रहस्य लिख्यते ॥ रागिनी काफ़ी । सुनिये रहस सिया सुष पानि । प्रातकाल रवि उदित भए सति नैावा जनक पठायो । चारो कुंवर राइ दसरथ के तुरत बोलि लै आयो ॥ आतुर नैावा गा जनवासे नृप दसरथ के ठाई । चारिउ कुंवर महां कैासलवर चले कलेवा आई ॥ सुनि नृप सषा अनुज सुत रामहिं आतुर लियो उर लाई । जाउ सकल मिलि आन कलेवा पठये जनक बोलाई । पितु अनुसासन पाइ कृपा-निधि चलिभे चारिउ भाई । सम वै राजकुमार छबीले ते सब चले लिवाई ॥ कोउ स्यंदन कोउ गज कोउ तुरंग आय रुचिर सुषपाला । अनुजन सहित लसत रघुनंदन कोटि मदन मद घाला ॥ स्यंदनादि सह बाजत अद्भुति परम चिचित्रित कोन्हे । जगमगात सब जरित जरायन दिनकर परत न चोन्हे । गो मुषादि दुंदुभी बजावत कलित पांडव सुरनाई ॥ आवत जानि राम को सषियन गली सुगंध सिचाई । येकै चढ़ी अटारिन देषै येकै सुभग दुवारा । येकै जुवति झरोषन झांकैं दरसन आस अपारा ॥

End—को वहु श्रुति सरवज्ञ कहै को सतानंद ते पायो कोऊ कहै परम कैातुकी नारद तिन यह भेद बतायो ॥ नपति कथा सुनि भूप कैातुकी आतुर तिन्है बोलायो ॥ चित्त चिन्ह ततकाल मिटै नहि यद्यपि धोइ छुटायो ॥ रचना देषि नृप

हंसे सभा सब मुनि सब सकल बराती ॥ मच्यो हास्य आनंद कुलाहल समुझि परै नहि बाता। यहि प्रकार आनंद दुहु दिसि परम विलास सोहावा ॥ सज्जन समुझि लेहु अपने मन जथा स्वमति मैं गावा ॥ जस मम हृदय प्रेरणा करि यह जस मम मतिह लषायो। परवत दास संत पद रज सिर राषि चरित यह गायो। दोहा। जे सुनिहैं करि प्रीति यह जे कहिहै करि भाउ। तिनका राम विलास यह करिहैं तुरत पसाउ॥ सीताराम रहस्य यह भक्त रसिक सुष मूल। ध्यान यह मन करिहै जेई तिन दंपति अनुकूल॥ भक्ति हास्य शृंगार रस त्रय रस मिश्रित स्वाद। जे पढ़हैं जनिहैं तेई सिय रघुवीर प्रसाद। कहैं सुनै जे ब्याह यह सावधान करि भाउ। सोति होई सर्वो असुभ दिन दिन मंगल चाउ। इति श्री रामचंद्र कलेवा रहस्य परम विलास परवत दास कृते सम्पूर्णम्। संवत १९१६ श्रावण मासे शुक्ल पक्षे तिथो दशमयाम चंद्रवासरे लेष्य कृष्णकुमार त्रिपाठी महमदपुर के लिषतं शिव शिव

Subject—राम ब्याह में राम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न इत्यादि का कलेवा करने के लिए जनक महल में जाना और वहां लक्ष्मीनिधि और सिद्धि सरहज से हास्य विलास के प्रश्नोत्तर।

No. 312(b). Rāma Kalevā by Parvatadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—27. Size—12 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—432 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1939 or A. D. 1882. Place of deposit—Ṭhākura Śriprakāsa Simhaji, Raisa, Hariharpur, Post Office Chilawariā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ रामिन काफो। परवतदास कृत ॥ प्रातकाल रबि उदित भए सत नौवा जनक पठावो। चारो कुंवर राय दसरथ के तुरत बोलि लै आवो। आतुर नौवा गा जनवासे नृप दसरथ के ठाई। चारिउ कुंवर महां कैासल वर चले कलेवा षाई। सुनि नृप सषा अनुज जुत रामहि लियो उर आतुर लाई। जाव सकल मिलि षान कलेवा पठयो जनक बोलाई ॥

End—तेहि विधि कहेउ भरत रिपुसूदन भाइ भक्ति बिलेषो। सो सुनि सषीं रहीं पुतरी सी लषनादिक मुष देषो। जो जो कहब करहु स्वै भारत तब छुड़ायबो छातो। नतु लहंगा पहिराइ छांड़िहैं हम अबला मद मातो। सषा सकल कर जोरि सषिन ते कहि अधोन मृदु बानो। राम सिया के दास पुत्र करि छाड़हु प्रान सयानी। इति श्री परवतदास कृत राम कलेवा समाप्त लिषा सो रंगनाथ संवत १९३९

No. 312(*c*). Shaṭ Rahasya by Parvatadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—29. Size—9 × 7 inches. Lines per page—32. Extent—580 Anushṭup Ślokās. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1912 or A. D. 1855. Place of deposit—Paṇḍita Śiva Nārāyaṇa Vājapeyī, Vājapeyī kā Purawā, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजाय नमः। अथ षट रहस्य लिष्यते ॥ प्रथम ज्योति रहस्य ॥ लाल इन देवी के लागी पाये। कर जोरी पद तोरि लाड़िले विनय कर सिर नाये ये हमरो कुल पूजि भवानी तुम्है उचित यहं आये। परमानंद हाेय दोनैा दिसि इनके पूज्य पुजाये ॥ नहिं रीझै जप तप संयम ना कछु गाये बजाये। केवल विनै मात्र कर जोरत द्रवतो सरल सुभाये। सर्वो चित्र प्रसान्त मोद प्रद कहति हवनि सत भाये। वेगि पांय पर दीन भाव धरि करि हैं कोप विलावाये। प्रभु हंसि कह कैसो है देवी बैठी वदन दुराये। कोप प्रसन्न जानि कस परि है बिना स्वरूप लषाये। ई हमरो यह गोचर माया द्रवहि न अंग दिषाये। दूर रहो अनि छुवेहु घोवेहु हो तुम बिना नहाये। बरबस राम गह्यो घुंघट पट हमरो पदप धोराये। इन देविन के भाग्य सराहै। द्रोपद लेत चढ़ाये। हमको काहु ठगी मृगनैनी तुम्है ठगन हम आये। जन पर्वत मुसकाय कहत भई लालन पढ़े पढ़ाये ॥

End—विहाग—हे दशरथ को पुतहु ह्यां कछु नेग हमारा ॥ मैं तुम्हरे पुरपन कै बंदिन विदित सकल संसारा ॥ जबते वशिष्ट पुरोहित भे तब ते मैं लीन्ह भटाई। केवल तुम्हरे हेत लाड़िली मैं यह वृत्त उठाई। यह इक्ष्वाक वंश मम भेरा अन्य भीष नहि थाऊं। तेहि पर अवसि अवध गादो तजि अैार कहु नहि जाऊं ॥ पिता तुम्हार बहुत कछु दीन्हों राउ बहुत कछु पावा। तुम सिद्ध रहो संपदा पाई अब यह कानन आवा ॥ अैार अैार के अैार नेग है हम एकै यहु पावैं। फिरि कबहुं न जाहि काहू के घर बैठे गुन गावैं। व्याहि प्रथम आवै जब दुलहिन हमैं नेग दे दासुन। तब भोगी सज्यादिक अैाषिन पुंछि लेब निज आसुन। सुनि परिहास अनर्गल अक्षर घुंघट विच मुसकानी। मनहु चार विधु झंपे सघन घन ऊपर प्रभा थहरानी ॥ तब तोन्यु रानी हंसि बोली सत्य कहै यह भाटिनि ॥ जो मागै सो देव प्रीति युत यह हमारि कुल पाटिनि। अब मैं पाइ चुकीउं ठकुरैन्यू जो हमको इन चीन्हा ॥ सुन्दर बदन सुकोमल नैनन मोदि चितै हंसि दीन्हा ॥ अब चाहिहौ तब मांगि लेहैं। मैं मोर कहुं नहि जाई। जस जस इनको वृद्धि होयगी तस बर बढ़ो सवाई ॥ सदा अचल अहिवात रहै अरु होई पुर धुर धारी। प्राण ते अधिक पतिन का प्यारो होइ असीस हमारी। जन परवत जो परम उपासक रसमाधुर्यहि

जाना रहसि ध्यान ते अनित पाव सुष होइ परम गल ताना इति श्री चतुर भगनी रहस्य समाप्त षट रहस्य संपूर्ण सुभ मस्तु ।

Subject—श्री राम जी का देवियों के पैर लगने के लिये सखियों का कहना, बच्चो मिलाना, लहकौरि खिलाना, कलेवा करना, ज्योनार, सखियों श्रोर राम का संवाद, हास्य विलास, राम गूढ़ वचन, भरत शत्रुहन लक्ष्मण का सखियों से संवाद, उर्मिला, मांडवी चादि चारों बहिनों का संवाद, सारिका संवाद, जनक राम संवाद, चतुर भगिनी व भाटिनि संवाद चादि ।

No. 312(*d*). Shaṭ Rahasya by Parvata Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—30. Size—12 × 6 inches. Lines per page—24. Extent—750 Anushṭup Ślokās. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1903 or A. D. 1848. Place of deposit—Ṭhakūra Jagapala Simha, Village Birapur, Parganā Akonā, District Bahrāich (Oudh).

Note—Details as in no. 312(*c*).

No. 312(*f*). Shaṭ Chatura Bhagini Rahasya by Parvata Dāsa. Substance—Country-made paper. Size—15 × 6 inches. Lines per page—24. Extent—750 Anushṭup Ślokās. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1911 or A.D. 1854. Place of deposit—Paṇḍita Lalatā Prasāda, Village Pāṇḍita Puravā, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Note—Details as in no. 312 (*c*).

No. 313. Śālihotra by Pāṭhaka Dāsa Dwija of Rukama Nagara. Substance—Country-made paper. Leaves—30. Size—12 × 5 inches. Lines for page—12. Extent—360 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1831 or A.D. 1774. Date of manuscript—Samvat 1879 or A.D. 1822. Place of deposit—Ṭhakura Naunihāla Simha, Seṅgara, Kānthā, Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सालिहोत्र लिख्यते ॥ दोहा ॥ गनपति गिरिजा ईस कौं प्रथमहि बन्दौं पाइ । भाषौं लक्षन तुरग के मोहि पर होहु सहाय ॥ सुमिरि राम के जलज पद विधि बंदौं कर जोरि । दोरघ पक्ष तुम्हार

प्रभु बुद्धि अल्प मति मोरि। अस्वारिपि के सुवन इक सालिहोत्र तेहि नाम। तिनके चरन कमल जुग लाला करै प्रनाम। ऋषि कीन्हीं आरंभ मख होम धूम रहीं छाइ। लाग्यौ लोचन रिषय के सलिल बुंद परे आय। वाम नेत्र ते अस्वनी दाहिने भयो तुरंग। भस्वो रिषि सो सुवन है को कहे प्रसंग।

End—अथ चासनो ॥ सुरभी दूध सेर दस लीजै। टांक दोइ.........भ तेहि दीजै। खीर करै गुर संधै बात। अस्वा बहुत पुष्ट होइ जात। ४ अथ सालहोत्र समाप्तं संपूरनं शुभ मस्तु। मिति पैाष सुदि शनिवार १ पुस्तक लिखो सुखनंद सुकुल समाप्तं संवत १८७९ ॥ राम रचयिता—लाला पाठकदास द्विज हकुमनगर में वास। भाषा कीन्हो अश्व हित सब कवि जन के दास। चन्द्राम वसु चन्द्र लिपि संवतसर परिमान। शुक्रमास वदि तीज को कान्हे ग्रन्थ बखान। पूरब.... ति देखि कै भाषा कीन्हीं येह। चूक होइ सो पूजिये जानि दास पै नेह। इति।

Subject—अश्व उत्पत्ति वर्णन, दांत लक्षण, शुभाशुभ विचार, पृ० १—५ अंग लक्षण रंग व भौंरो लक्षण, अशुभ सफेदी, अंजनो लक्षण, गोप, केस, वाटी, अमूसलो, कलमुखो, धनो, स्याम तालू लक्षण, पृ० ६—१०

असनशूल, बदशूल, मूत्र वदशूल गद व प्रशूल, लक्षण व उपाय, अन्यशूल वर्णन, पृ० ११—१६

ज्वर, वायु, नस्तर, लक्षण व उपाय, कनारा व प्रमेह, उपाय, पृ० १७—२८

मूत्र रोग उपाय, जैागिरायगिरा उपाय, गर्मी, पित्त, सुश्रकपाली, घोड़े के लिये रस वर्णन, जनुवार, छीवर, पोंछि लगे का उपाय, धारोसी, फूली, मेढुकी, सर्पीरि तरवा तुकहारी, सिसुचा सनी वर्णन पृ०—२३—३० तक

No. 314(*a*). Jñānayōga Tattvasāra by Patita Dāsa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—72. Size—5 × 3 inches. Lines per page—18. Extent—900 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1921 or A.D. 1864. Place of deposit—Śrī Krishṇajī, Village Sakhuāpur, Post Office Bahrāich, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः दोहा। पतितदास कृत बहु विधि लिख्यों विचारि विचारि। बूझि संमारे अर्थ को सो है गुरु हमार। ज्ञान जोग उत्पति सब पालन पद सत सार। इन्द्र देव ध्यान गुण चारों पद के उबार। ध्यानी कोविद सब मिलि मथि लियो सारासार। भक्ति ध्यान यह त्याग बहु कुर

कर्म गेरि मार । सो० मन मद यच्छ यपार ठोकर बहुत बचाइयो । मानो कही हमार । सत्य शब्द गहि लीजियो ॥ दो० सत गुरु मों पर कृपा करि दियो योग तत्त्वसार । पतितदास जग जानि कै जग मैं कियो पसार ॥ चो० दास पतित पति मन बुधि हीना । प्रभु रघुवर मोहि पायसु दीन्हा । शुभ सुन्दर संयम मंगवाई । तन मन धन हरि शरण लगाई । जाकर गुणानवाद पवगाहा । चारौ जुग कोइ पाव न थाहा । पहिले सुमिरौं श्री गुरु ईशा । जो मोहि विद्या दियोपदेशा । संकर सुवन भवानी के नंदन । गणपति देवनाथ जग बन्दन ।

End—लिख वद मैं लिय हारो कागद कलम सिरान । पेंचि पेचि कथनी करी नामै पर ठहराना ॥ चो० ॥ पति वह कहीं कहां ठौं गाई । याही मैं मैं पर्थ सुनाई । शहर लखनऊ बस्ती भारी । जन्म भूमि ता जाम्ब हमारी । नाम चकैाली ग्राम हमारा । भयो जन्म पघ हेत गंवरा । रमत रमत रघलपुर चाई । तहां मिल्यो गुरु देव गोसाई । दास पतित सम रस जिभावा । गुरु दयाल निज दास बनावा । दीन्ह जोग सब तत्व लषाई । भर्म त्यागि निज रूप देषाई । गोंडा मैं गिरधर पुर गाऊं । नीत धर्म कोई जानत नहि भाऊ । रामदत्त पांड़ेन मैं भयऊ । कुल के धर्म नेति चलि गयऊ । हेतु ताहि तहं वास हमारा । करहु जोग तव तजि ब्यावहारा । ताके वंश भयो पविवेकी । तजि सुभ पंथ कुमारग टेकी । देखि पनीति तजेऊ वह देसा । पवध मैं ग्राय कीन्ह परवेसा । दो०—पतित का मन महिमा मिलै भागे पवन समान । मन इन्द्री वस कीजियो हरि सों करि पहिचान । पंक ऊपर बिन्दी बढ़े बढ़त बढ़ि जाय । तरै पंक बिगरै नहि जीव पोज मिटि जाय । एकै प्राणायाम मैं कटैं कोटि पपराध । जप नाद जो नाम सम रहै नहीं भव बाध । सो०—कटैं कोटि पपराध, यहि विधि सुमिरन जो करै । दास पतित निज साच छूटि जाय भव दाप सब ॥ चतुराई मैं भूलिकै नाम न सुमिरन कीन्ह । दास पतित गति को कहै । जन्म प्रकारथ लीन । तवसार यह जोग है पातम सार विचार । पढ़ै सुनै जो नेम सो होवे सकल उबार ॥ इति श्री ध्यान जोग तत्वसार साधन । श्री स्वामी पतितनंद कृत सम्पूरन । शुभमस्तु । लिषा शिवानंद संवत १९२१ विजय दशमी ।

Subject—श्री गणपति की स्तुति, गुरु की महिमा, प्राणायाम द्वारा ईश्वराराधन पादि पन्त मैं ग्रन्थकर्त्ता की जन्मभूमि पादि का वृत्तांत ।

No. 314(*b*). Mahavira Kawacha by Patita Dāsa. Substance - Country-made paper. Leaves—5. Size—8 × 5 inches. Lines per page—16, Extent—85 Anushṭup Ślokas, Appear-

ance--New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1948 or A. D. 1891. Place of deposit—Paṇḍita Rāmāvatāra, Village Paṇḍita Purawā, Post Office Risiā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः। श्रीमहावीरायेनमः। ॐ हनुमन्ताय नमः। चौ०। जय महावीर धीर बलवंता। जासु चरन सेवैं सब संता। बली बीर तुम है। हनुमाना। तुव गुन गावै चतुर सुजाना। सदा तुम्हारो जै हनुमंता। जापर कृपा करैं भगवंता। बिन तुव किपा पार नहि होवै। तुम्हरो पास सबै कोई जोवै। राम पियारे सिया दुलारे। दास पतित का काहे बिसार। संकट सको केसरी नंदन। दास भानि काटै। भव बंधन। तुम बिन प्रवर कोइ नहि स्वामी। तू उदार उर अंतरजामी। अंजनि कुमार पवनसुत नायक। राम के दूत लषन के घायक॥ सुनहु न नाथ बड़ै कस मोरी। दास पति माथौं कर जोरी। संकट हर मंगल के दाता। जो सुमिरे तुव नाम बिधाता। हौं मैं कुटिल अधम अभिमानो। भाव भक्ति नेकहु नहि जानो। तुम प्रभु जानहु सब घट केरी। काहे न सुनौ नाथ अब मोरी। अब कहावों तुम्हरो दासा। तजि के काम जगत को आसा। दो०। हम पतित तुम समरथ नाथ कहौं कर जोरि। आई सरन मत त्यागहु देहु मोंहि जनि पेरि।

End—जब रघुनन्दन आज्ञा कीन्हा। लै मुद्रिका सीय का दीन्हा। दधि नाघत भयऊ रूप प्रकासा। राक्षस मारि दैपत करि नासा। सों पैरुष कहं गयऊ तुम्हारा। सुनौ न स्वामी बहुत पुकारा। अब मोरि लाज राषि प्रभु लीजे। जनके काज हरषि हिय कीजै। एक बार नित पाठ पुकारै। बैरी दुसमन ये सब हारैं। दुइ बार जो नित लावै सेवा। रोग छुड़ावै हनुमत देवा। बहु बिधि रक्षा करै कृपाला। छूटि जाय दुष सब जंजाला। त्रितावार करै नित पूजा। जप तप ध्यान भैार नहि दूजा। सांझ सबेरे धौम ध्यान। हित से सुमिरे निर्भै हनुमान। बीर जहां छै सबेरे भाई। दिन प्रति प्रीति करै मन लाई। सो महिमा सकौं न गाई। जेहि देपे अमदूत डेराई। ताको पाठ करौ नित भाई। करि बिसवास पाठ करै कोई। चारि बरन में जो कोई होई। कांपे जम के दूत सब, जम को कहा बसाय। दास पतित गोहराय कहैं जेहि महावीर सहाय। कवि बिसवास पुकारे पाठ नेम नित कोई। रोग दोष सब नासै धनमिनतिन सुष होई। इति श्री महावीर कंवच मंत्र अस्तुति दास पतित बरनन जो पढ़ै सुनै औ पढ़ावै। संका निकट ताहि नहि आवै। दः रामऔतार कुरसहा बाले ने लिषा जो प्रति देषा सो लिषा मम दोष नाहीं श्री संवत १९४८ क्वार मासे कृष्ण पक्षे तिथौ ६ षष्ट॥ दः रामऔतार समाप्तम् राम राम राम राम राम।

Subject—हनुमान जी की महिमा ।

No. 314(*c*). Nakshatra Rāshi Charaṇa Kuṇḍali phalāphala Jyotisha by Patita Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—32. Size—10×6 inches. Lines per page—60. Extent—1,620 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1940 or A. D. 1882. Place of deposit—Ṭhakūra Digavijai Simha, Taluqedāra, Village Dikauliā, Post Office Biswā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पोथी नक्षत्र राशि चरण कुंडली फलाफल ज्योतिष लिष्यते ॥ दे।० ॥ इन गंधर्व शारदा सरस्वती सब देव मनाय। नवैा नाथ सिद्धि चैारासी रिषि मुनि से भिक्षा पाइ। श्री गुरु व्यास जी सुषदेव वालमीक सिर नाइ। भृगु आदि कालिदास तप गुण मो पर होहु सहाइ। सोरठा ॥ हैा गुण बुद्धि ग्यान से हीन, करैा कृपा पावों वर यह। अक्षर अर्थ बनै प्रवीन ग्रंथ लिष्यो जीवन सुष हित ॥ चैा० ॥ दास पतित अज्ञान गंवारा। भक्ति भाव न भजन विचारा। गुण ज्ञानी से अरजिय मोरी। छेउ बनाय भूल सब थोरी। अब नक्षत्र फल कहि थोरो गाई। देउ गुण बरणे ग्रंथ सरसाई। चूवे चोला अश्वनी अथ पुनिः अश्वनी नैा देवता अक्षर आकारो वैस्य जाती हेमता अश्व स्यामा याही में भयउ पचास। घड़ी के उर्ध विष नाड़ी आयो तब आज्ञा करै माथ छै थाई। सर्व योर जाय सुष सुभ पाई।

End—अमृत सर्व अमृत बरसाई। चिंता सोच के सब रोग बहाई। दिन सत बीसही में गाई। लक्ष्मी हू वश्य सिधि कराई। मुसले कार्य देर दरसावै। अवसि तो हानि ही कार करावै। देव ससी सवी सें इष्ट भेंटी। रोदनं चिंता मर्म सोच लपेटी। श्वगद योगे सर्व बहुत दुष दाई। जलदिहि हानि दुष व्याधि रोपाई। मतंगे श्री चंत ही मिलाई। विसहे दिन काज सिधि प्रगटाई। राक्षस सो पीड़ा उपजावे। दिन सत्ताईस अफलावै। चार जोग में फल थोरो लाई विद्या बानी लाभ सिधि गनाई ॥ स्थिर जोगे सब सिद्धि ही देई। दिन साठि अश्व लाभं कार्य्यंही। पशु लाभे भलो बतावत। वृद्धि अति भले हेर देषावत। दिन अरसठ में बहु अदुराई। आनंद जोग सब के फल ये गाई। दे।०। दास पतित मति याही संक्षिप्त सोई गाई। चुक हमारी माफ कै सवैया या छेव बनाई। इति श्री नक्षत्र राशि चरण कुंडली फला ज्योतिष ग्रंथ संपुर्ण समाप्तं सुभमस्तु लिषतं गैारीशंकर भट्ट पैदापुर निवासी संवत १९४० ॥ इति श्री ग्रंथ समाप्तं ॥

Subject—ज्योतिष ।

No. 314(*d*). Śarira-bhoga-sāra Gītā by Patita Dāsa of Ayōdhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—6×5 inches. Lines per page—24. Extent—120 Anushṭup Ślokās. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript-Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lāla Gaṅgā Dina Bihārī Lāla, Village Ghulāmali Purā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ सरीर भोगसार गोता पतितदास कृत लिष्यते ॥ दे।० ॥ सत संगो के। विनय गुरु भेशी देस समाज । जोग भोग सुष दुष के त्याग मान सिरताज ॥ सोरठा ॥ दास पतित कहि बैन धन्य धन्य गुरु ग्यान के। गहे सकल सुष चैन सूक्ष्म कहै। करि गुप्त बहु । दास पतित का लेष यह साधन करत विचार । यहि मति जो गहि अमल करि तेहि राषै करतार ॥ बिना प्रेम साधन किए होत नहीं वैराग । चाह मान मद बिन तजे । किमि पावै अनुराग ॥ भक्ति बिना अनुराग नहि ॥ बिन अनुराग न त्याग ॥ त्याग बिना निर्द्वन्द नहि तो कहि का वैराग । पूर्व कमाई मई जो घर त्यागे कस मान ॥ दास पतित सतगुर कृपा तजि केर गुमान ॥ कोश द्रव्य परिवार बहु लागे जहर समान ॥ गुरु बानी रट लग रहौ तन मन ग्रैार न ध्यान ॥ सतसंग विद्या ज्ञान कछु परमहंस धरि रीति । पान पान अस्नान तजि अवधि मिलन की प्रीति ।

End—समै समै को जुन के। जो त्याग संग बनि आव । कीजे नहि सन्देह कछु दास पतित मत पाय ॥सोरठा॥ भ्रौन में है अस्थूल, अस्थूल में भ्रौन दिषावहो ॥ बड़ो अहे यह भूल सुझै तै। प्रभु की कृपा ॥ चै।० ॥ मिरधरपुर का अस अहवाला । कहै। विचार विवेक सवाला ॥ जहां विवेक राव व्रतधारी । तहं वह जोगो जोग संभारी ॥ राउ अधर्मी देस विचारी ॥ तंह वा सुष संगे गुष भारी ॥ जंह नृप देस अधर्मी दोऊ ॥ ग्यानी तहां न सपने कोऊ ॥ मूरष संग उपजे दुष नाना ॥ ग्यानी संग सुष सर्वस जाना ॥ तुलसीदास दोन परमाना । ग्रैार अनेकों ग्रंथ बषाना ॥ जोग विरोध भेद बहु होई ॥ बनै न एक कहेउ सब कोई ॥ भेद सोई तहं वा दिषराना ॥ लषि न परै कोउ अपन बिराना ॥ बरन विवेक रहित भे देसा । नरनारी भए क्रूर कुवेसा ॥ उच्च कर्म गहि चोर चमारा । उतम सब विधि गहे विकारा ॥ (यहां से आगे पृष्ट कोरे हैं इस कारण अपूर्ण है) ।

Subject—ज्ञान वैराग्य ।

No. 315(*a*). Haridāsajī ke Padan kī Ṭīkā by Pītāmbaradāsa of Bṛindābana. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—8×7 inches. Lines per page—40. Extent—540 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābū Śyāmakumāra Nigama, Rāe Bareli.

Beginning—श्री बिहारी जी ॥ अथ श्रीमत् पीतांबर दास जी टीका श्रीमत् श्रीस्वामी हरिदास जी के पदन की लिष्यते ॥ दोहा ॥ नमो नमो जय रसिक पद मम हिय करहु निवास। दुर्गम पद सुलभ करो श्री स्वामी हरि-दास ॥ १ ॥ चौपाई—श्रीहरि दासी करि आराधि। श्री विपुल बिहारिनि दासी साधि ॥ श्री सरस नरहरी के पद वंद। श्री रसिक कृपा सुं लहि रस कंद ॥ २ ॥ दोहा ॥ निमित श्री हरिदास करि कठिन रसिक रस देस। संसै पंडन कौ करै हियरै बिना प्रवेस ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ श्री गुरु के पद अतिसै गूढ़। समुझत नाहि नमो मतिमूढ़ अहो ॥ कहै को अतिसै प्रौढ़ संत रसिक सब ध्याना रूढ़ ॥ ४ ॥ अति अकुलाति समझना परै समझ बिनाना कार्य सरै ॥ सुनत कहत रस हियरो डरै इह संसै को निर्नय करै ॥ ५ ॥ दोहा ॥ नमो नमो जय हंस सनक नारद वंदु। श्री निंबादित्य प्रकास भाव रसिका आनंदु ॥

End—झूलत डोल निकुंजवर द्रुतिय घोर नवबाल राधे रहत न हसति अति पिया प्रान प्रतिपाल ॥ १०७ ॥ पद ॥ श्रीकुंज बिहारी झूलत डोल ॥ द्रुतिय घोर श्री रसिक स्वामिनी दोऊ मिलि करत कलोल ॥ मंद मंद झूलहु बाल त्यौं त्यौं हास्य करत अति प्रिय इति बोल ॥ श्री हरिदास कहत री प्यारी राषि लेहु पांव गहत कपोल ॥ ७ ॥ ६ ॥ राग नट ॥ दोहा ॥ रूप सघन बन डोलतें निकसे प्रिय सुकुवार। तन मन घन ज्यौं दामिनी सकल सुघन को सार ॥१०८॥ पद डोल सघन बनतें झुम आये। तन में तन मन में मन बिलसत घन दामिनि उपमा छबिछाये ॥ पीतम नित बरिषा रति चाहत मोरि चातकी पिक रट लाये ॥ श्री हरि दासि निरषि कित उपमा कुंज बिहारी अपने पाये ॥ १०८ ॥ इति श्री अनन्य नृपति श्री स्वामी हरिदास जु के पदन के अर्थ संछेप मात्र लिषितं पीतंबर दासस्य बिरचितं। श्री बिहारिनि बिहारी जू जयति ॥

Subject—पृ० १—श्री हरिदास जी तथा अन्य गुरुजन बंदना, सेज बर्णन, रूप वर्णन, आभों का सुख बर्णन। पृ० २—श्री कृष्ण के बदन की शोभा बर्णन, नूपुर ध्वनि बर्णन। पृ० ३—श्री कृष्ण के कौतुक वर्णन, श्री कृष्ण का मान बर्णन, श्री कृष्ण का गान बर्णन। पृ० ४—सखियों की विनय श्री कृष्ण प्रति, श्री राधा का मान बर्णन। पृ० ५—राधा का यौवन वर्णन

राजा का वशीकरन वर्णन, युगल छवि वर्णन। पृ० ६—युगल क्रीड़ा वर्णन, मुख शोभा वर्णन, नैन वाण वर्णन, युगल प्रेम वर्णन। पृ० ७—श्रीकृष्ण का वश वर्णन, श्री राधा की कृपा का वर्णन। पृ० ८—राधा का कंठ स्वर वर्णन, युगल प्रताप वर्णन, युगल हिंडोरा झूलन वर्णन। पृ० ९—राधा की चुनरी का वर्णन, चूड़ी का वर्णन। पृ० १०—श्री कृष्ण की मुरली की ध्वनि वर्णन, श्री कृष्ण चरण शोभा वर्णन। पृ० ११—राधा का कस्तूरी लेपन वर्णन, श्री कृष्ण का राधा से मान न करने का वचन लेना, १२—श्रीकृष्ण की दानलीला का वर्णन। नैन कटाक्ष वर्णन। पृ० १३—राधा की चतुरता वर्णन, युगल गान वर्णन। पृ० १४—श्री कृष्ण का राधा को मनाना। पृ० १५—श्री कृष्ण का राधा की वेनी गुंथना वर्णन। राधा कृष्ण का शतरंज खेलना वर्णन। पृ० १६—प्रातः काल उठने पर छवि वर्णन, युगल रति वर्णन, पावस का वर्णन। पृ० १७—रास वर्णन, वसंत वर्णन, सहचरि का युगल स्वरूप देखना वर्णन। पृ० १८—राधा की शोभा को श्री कृष्ण का देखना वर्णन, हिंडोरा झूलना वर्णन, वन भ्रमण और पावस का वर्णन। समाप्ति।

No. 315(*b*). Pitāmbara dāsa kī Bānī by Pitāmbara dāsa of Brindābana. Substance—Country-made paper. Leaves—64 Size—8 × 7 inches. Lines per page—38. Extent—1,672 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābu Śyāmakumāra Nigama, Rae Bareli.

Beginning—श्री बिहारी जी॥ अथ गुरु परंपराय नामावली लिख्यते॥ दोहा॥ श्री गुरु वर पर परम पद विधि हरि सिव सनकादि। सेवत सहचरि भाव नित नित्य विहार अनादि॥ १ दिव्य धाम बृंदा विपिन दिव्य गौर तन स्याम। दिव्य केलि क्रीड़त सदा दिव्य उपासिक वाम॥ २ स्वयं प्रकास बृंदावन धाम सनत कुमार आनि निहकाम। महल टहलनो धर्म दृढ़ायो। सो नारद बड़ भागन पायो॥ ३ आचारज नारद वपु धारयौ। पंचरात्र करि मत विस्तारयौ॥ तातें गुरु पद राधा स्याम दिव्य रूपतन वन अभिराम॥ ४ सोमत श्री निबादित्य गह्यो श्री निवासनें सोई लह्यो विश्वाचारज जो मत धारयौ पुरुषोत्तम विलास विस्तारयौ स्वरूपाचारज बड़े सुज्ञाता श्री माधव करि मत विख्याता आचारज बलभद्र प्रचंड पद्माचारज पावन पंड॥ ६ स्यामाचारज सब के स्वामी आचारज गोपाल सुधामी प्रगट कृपाल कृपा आचारज देवाचारज मत के धारज॥ ७ तिनके श्री ब्रजभूषन स्वामी श्री ब्रजजीवन तिनके अघ नामी श्री जनार्दन वैरागी भूव श्री जनार्दन वंशीधर वंशीधर रूप॥ ८ श्री हरिवल्लभ भूधरदेव श्री मुकुंद

के गुरु हरि सेव श्री ललितमान तिनके पट राजैं कन्हरदेव बहु संत समाज ॥ ९ वामदेव भए तिनकी गादी सुरति मान जोते बहु वादी पितांवर राजै तिहि ठौर चिंतामनि संतन सिर मौर ॥ १० जुगलकिशोर जुगल रस भीनौ दामोदर हरि अपनौ कीनौं कमल नयन तिनके मति धीर गोवर्द्धन तउ भये गंभीर ॥ ११

End—श्री पीतांबरदास आस इक रसिक उपासी।
अविलोकत रस सार विहार सु सुष की रासी ॥
महामूढ़ते अंध जीव तम जहां प्रकास्यौ।
द्रव्यौ प्रेमरस हृदै रसिक जन अद्‌भुत भास्यौ।
श्री हरिदास कुल विपुल विहारिनि मुष कमल।
श्री रसिक सिरोमनि कृपा अति मान उदै रस कौ अमल ॥ ३

सवैया—प्रेम के मोद को मूरति सूरति आनंद मैं नित्य आनंददैना। श्री हरिदास के वंश उजागर आगर रूप महा मृदु वैंना ॥ लाडिलो लाल लड़ावत भावत गावत रंग सुरंग को सैना ॥ पीव कहै प्रिये पाऊ पितांबर पिया कहै पिय है निज्ञु नैंना ॥ ४ इति श्री स्वामी पितांवर दास जूको प्रसंसा संपूर्णम्।

Subject—पृ० १—गुरु परंपरा नामावली। पृ० २—गुरु मंगल बंदना। पृ० ३—१५—सिद्धान्त के पद। पृ० १६—२० परम उज्वल शृंगार रस के पद। पृ० २१—२५ हिंडोला वर्णन। पृ० २६—वसंत वर्णन। पृ० २७—३० ब्रज होली वर्णन। पृ० ३१—३४ -झांझ वर्णन। पृ० ३५—३९—सिद्धान्त को साषी (राधा वल्लभी सम्प्रदाय) पृ० ४०—शृंगार रस की साषी (रा० व०) पृ० ४१—स्वामी हरिदास जी की बधाई। पृ० ४२—विट्ठल जी का समुदाय वर्णन। पृ० ४२—४४ विट्ठल विपुल जी की बधाई ॥ पृ० ४५—बिहारीदास जी की बधाई। पृ० ४६—सरसदास जी की बधाई ॥ पृ० ४७—४८—नरहरिदास जी की बधाई। पृ० ४९—रसिकदास जी की बधाई। पृ० ५०—श्री रसिक विहारिनि नव मंदिर मैं विराजे उस समय की बधाई। पृ० ५१—५४ स्वामी नरसिंह देव जी की प्रसंसा। पृ० ५५—५७—श्री कृष्ण की भक्तजनों द्वारा स्तुति। पृ० ५८—६३—स्वामी रसिक दास जी की वंदना। पृ० ६४—पीताम्बर दास जी की प्रसंशा वर्णन।

No. 315(c). Samaya Prabandha by Pitāmbardāsa of Brindābana. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—8 × 7 inches. Lines per page—38. Extent—475 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of

manuscript—Samvat 1801 or A. D. 1744. Place of deposit—Bābu Śyāmkumāra Nigama, Rāe Bareli.

Beginning—श्री बिहारिनि बिहारी जु जयति ॥ चौपाई ॥ नमो नमो महा मंगल धाम । वृन्दा विपिन सुषद विश्राम जैति प्रिया अति उत्तम ठाम (श्री) रसिक सिरोमनि तन अभिराम ॥ १ नमो जयति जमना निजु अंगो नमो सहचरी प्रान सुरंगो महा मंगल जै श्री हरिदासि । (श्री) वोठुल विपुल विहारनि पासि ॥ २ पुनि प्रनाम श्री सरस सहेलो । (श्री) नरहरि दसि प्रेम को वेलो ॥ धाम स्वामिनो सुरति भनौ । (श्री) रसिक विहारनि प्रगट वषानौ ॥ ३ ॥ वारंवार वंदन करं धरं रसिक होय ध्यान । अगम अगोचर अलष हे प्रगटे रसिक सुजान ॥ ४ अति दुरलभि दूरि ते दूरि । ते प्रगटे प्रभु निकरि हजुरि ॥ (श्री) रसिक सिरोमनि विनहि लषावे । निजु संगोते दरसन पावे ॥ ५ ॥ सोरठा ॥ (श्री) कुल अति विस्तार ध्यान करत वहु दिन चहै । तौ हू मिलत न पार नांउ लेत जैते निकट ॥ ६ ॥ निकट वृत्ति पते रहै इन कौ मेरे ध्यान गरीवदास गोविद जै वल्लभ श्री भगवान ॥ ७ ॥

End—सहचरि के भागनि सुषो रुप ले चलत सुभाय । दंपति संपति सुष सरस छिन छिन प्रति दुलराय ॥ ९६ यहे ग्रंथ हिय ग्रंथ नसावे श्री गुरु कौं सुष निश्चै पावे लंपट सठ के हिये न आवे सत संगति मिलि निर्भै गावे ॥ ९७ श्री हरिदासि विपुल सिरनावे विहारिन दासी दिन दुलरावे । सरस नरहरी सुष दरसावे श्री रसिक कृपा पीतांवर पावे ॥ ९८ समय प्रबंध ग्रंथ को नाव । कर विचार तासु वलि जाव है अविरुद्ध सुद्ध यह लहै चरण रसिक पीतांवर गहै ॥ २९९ विषै रहित रस रसिक उपासी तिनकी मति या मत मय मासी नीरस श्रवन सुनत नहि पावे रसिकन के हिय रस उपजावे ॥ ३०० रसिक कृपा पद जुग कमल मूरति जुगल किशोर पीतांवर के प्रान सुष रसिक राय सिर मौर ॥ ३०१ ॥ इति श्री समय प्रबंध संपूर्ण ॥ दोहा ॥ विपन नित्य नवकुंज मैं सहचरि के सुषदेन । (श्री) जुगल विहारी कीड हौ रसिक प्रियाहि समेत नवनिकुंज एकांत सुष कथा श्रवन मनमोद जो जो उपजत भाव रस रसिका नंद विनोद ॥ २ प्रथम वास्य (श्री) हरिदासि के पीछे विपुल विहार श्री गुर नागरि सरस जु (श्री) नरहरि रसिक अधार ॥ ३ धाम स्वामिनी सहचरी लयो निरंतर स्वाद बिनु जानें मत कीजियौ गुढ़ ग्रंथ विवाद ॥ ४ संमत सहचरि मिलि कियो अष्टादस सत एक । दुतीया मंगल लाड़िलो भजियौ सुघर विवेक ॥ ५ श्री वृन्दावन कुंज मैं (श्री) रसिक विहारी पासि । पीतांवर की प्रीति सौं लिषतं सो व्रज दासि ॥ ६ ॥ इति श्री ॥

Subject—पृ० १—वृन्दावन, श्री कृष्ण, यमुना और हरिदास जी तथा अन्य गुरुओं की स्तुति वंदना। गोविंद दास की वंदना और अन्य भक्तों की वंदना। पृ० २—गुरु महिमा वर्णन। सत्यता की महिमा। पृ० ३—विषय भोग की निंदा। पृ० ४—वैराग्य के लक्षण। सतसंग महिमा। पृ० ५—भक्ति की महिमा। पृ० ६—श्री कृष्ण का पावस में हिंडोला झूलना। पृ० ७—१०—गुरु उपदेश से ज्ञान की प्राप्ति और उसके अनुसार प्रेम से श्री कृष्ण की प्राप्ति वर्णन। संध्या समय आरती का वर्णन। पृ० ११—दीपमालिका की शोभा का वर्णन। राधाकृष्ण का प्रेम वर्णन। पृ० १२—प्रात समय शिष्य को गुरु वंदना का उपदेश। स्नान श्रृंगार करने का उपदेश। गान करके श्री कृष्ण को रिझाने का उपदेश। भोजन कराने का उपदेश। पौढ़ाने का उपदेश। पृ० १३—पतिव्रता स्त्री की भाँति श्री कृष्ण की पति समान सेवा करने का वर्णन। १४—शरद ऋतु में श्री कृष्ण का रास वर्णन। १५—राधा का नख शिख वर्णन। १६—राधाकृष्ण की केलि का वर्णन। प्रातःकाल की मंगल आरती। पृ० १७—१९—वसंत ऋतु में वृन्दावन शोभा और श्री कृष्ण राधा तथा अन्य सहेलियों के साथ रहस्य वर्णन। २०—ग्रंथ की प्रशंसा उसका नाम और समाप्ति। निर्माण संवत और प्रतिलिपि कर्ता का नाम वर्णन।

No. 316(*a*). Bhramaragita by Prāgana kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—54. Size—6 × 4½ inches. Lines per page—13. Extent—521 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1886 or A. D. 1829. Place of deposit—Paṇḍita Śivadānī Lāla Miśra, Village Muhammadpur Khālā, District Bārābanki (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भँवरगीत लिख्यते ॥ सिष निजु गाइ़ के गहियो पालागन दोऊ भैया को मैया सो कहियो ॥ हम हैं तिह्मारे पग के पोये सुरति काति रहियो ॥ जोग संदेस सुनाइ त्रियन को प्रीति रीति लहियो ॥ कहियो न कछु कटुक उनसो तुम कहैं सो सब सहियो ॥ सीतल बचन सोचियैा रसहा दहो न फिरि दहियो ॥ देषि दसा उनको हम को तुम दोष दियो चाहियो ॥ प्रागनि ब्रजवासिन के हिय को प्रेम सिंधु थहियो ॥ १ ॥ राग आसावरी ॥ आयसु दीन्हे सखा सुजानहि स्यंदन चढे सिधारे ब्रज को सुधि रावरे जानहि कैसे है जसुदा जननी जिन पालि किये परको मोहि अकुल वैतोत होहि जो पर पूतन आयोन ॥ गहियो पाइ नंदबाबा के

कहियो यहै संदेसो जो नम कियो महाकृत हम को मनन सकल गुन सो समाधान कीजो गो-धन को दीजो निर्मल ज्ञान ॥ कहियो जोग जुगति सों प्रागन त्रकुटी संजम ध्यान ॥ २ ॥

End—ऊधैा तोसो कहै निरंतर निज भक्तन मों रहतु हैां वेदातीत कोऊ नहिं जानत यहै हमारे मतु है हैा निरलोप निरंजन निर्गुन कारन ते वपु धारों ॥ कर्म रहित अपनी इच्छा ते प्रगटतु हैां जुगचारों ॥ देह अदेह तकत है मेरी जानि दृष्टि करि कोइ ॥ त्यागे देह बहुरि नहि पावै जन्म जगत मैं सोइ ॥ यह मत है देवनि को दुर्लभ गुप्त हिये मैां राखि ॥ प्रागनि तोसों बहुरि कहैां गो देउ यकादस साखि ॥ ५३ ॥

इति श्री प्रागन कृत भ्रमर गीत समाप्त सुभ मस्तु संवत १८८६ ॥ फाल्गुन मासे कृष्ण पक्षे पंचम्यां सुक्र वासरे ॥ राम राम राम राम राम राम

Subject—(१) पृ० १—५ तक—उद्धव का कृष्ण जी का संदेशा लेकर व्रज को जाना, अपनी माता यशोदा तथा नंद को अभिवादन कथन पर्यंत गोपियों की खबर मंगाना, ऊधो का सिधारना; व्रज में पहुंचना; गोपन का दैाड़ कर आना, जसोदा द्वारा उद्धव का सत्कार मैार श्याम की सुधि पूछना, नन्द बाबा का से आना, नंद का भी दोनों पुत्रों की प्रसन्नता का समाचार पूछना मैार उपालम्भ सुनाना (२) पृ० ६-१० तक—उद्धव का कृष्ण द्वारा माता पिता को भेजा हुआ संदेश यथवत् सुना देना, उन दोनों का कोरे शब्दों से ही समाधान न होना मैार रात भर इसी चर्चा में बिता देना । प्रातःकाल होते ही माता का उद्धव से कथन कि ज़रा वृषभान के घर चल कर गोपियों का समाधान ता कर आइये । उद्धव का गमन, गोपियों का मार्ग में ही मिल जाना, गोपियों द्वारा इनका नामादि पूछा जाना, उद्धव का नामादि बताना, गोपियों का प्रसन्न मैार प्रेम मदमद होकर अवधि तक जीवन रखने की बात कहना, उद्धव का असमंजस, (३) पृ० ११—४४ तक—गोपियों की उक्तियों को सुन कर मन में उद्धव का कथन कि "हरि को चुनैाती है, यहीं आकर इन से जीतें" । गोपियों का कथन कि "हमारे व्रज का ता मार्ग ही पृथक है—हमें ता कृष्ण के दे गुण, (१) उनकी सांवली त्रिभंगी सूरत मैार (२) उनकी चारु मुरलिका पसंद है मैार वही मूर्ति हमारे नैनों में बसी हुई है । कृष्ण कृत अनेक चरित्र सुना कर गोपियों का प्रेम में मग्न हो जाना, उद्धव का गोपियों द्वारा योग का खंडन सुनना मैार प्रेम का पाठ पढ़ कर मथुरा को लैाटना । मार्ग में चिन्तित होना कि आज्ञा तीन दिन की थी मैार लैाटना छः मास में है । (४) पृ० ४१—५४ तक—कृष्ण के पास उद्धव का पहुंचना, कृष्ण का उद्धव आगमन सुन कर किसी आदमी द्वारा

बुला भेजना, इसके पहुंचने के प्रथम ही दूसरे को भेजना उद्धव का आगमन, कृष्ण का माता पिता तथा गोपियों का समाचार पूछना, उद्धव का सब समाचार सुनाना, गोपियों का संवाद सुनाते सुनाते उनका मूर्छित होकर गिरना, कृष्ण का उनको सचेत करना और प्रेमवारि बरसाना, उद्धव को स्तुत ब्रज में जाने के लिये करना, कृष्ण का ब्रजवासियों का और अपना साम्य प्रदर्शित करना, कृष्ण द्वारा उद्धव को समझाया जाना, अपने में ही गोपियों को बता कर उन्हें वेदों की ऋचायें प्रमाणित करना। ग्रंथ समाप्ति।

No. 316(*b*). Bhramaragita by Prāgana. Substance—Country-made paper. Leaves—25. Size—6½ × 4½ inches. Lines per page—18. Extent—270 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1905 or A. D. 1848. Place of deposit—Rāj Pustakālaya, Bhinagā (Bahrāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ लिख्यते भ्रमरगीत राग बिलावल ॥ आयसु दीन्हो सखा सुजान नहि। स्यंदन चढ़ो सिधारे ब्रज के सिद्धि राखरे आनहि ॥ कैसे हैं जसुदा जननी जिन्ह पालि कियो परवीन। मोहि आकुल रूच होति होइगी पर पूतन्ह आधीन ॥ गहियो पांव नन्द बाबा के कहियो यह संदेसा। जो तुम कियो महा कृत हम सों गनि न सकत गुन सेसा ॥ समाधान कीजेहु गोपिन्ह कर दीजेहु निर्मल ज्ञान। कहियो जोग जागति सो प्रागनि त्रिकुटी सजग ध्यान ॥ १ ॥ सिख निजु गाढ़े करि गहियो। पालागन दोऊ भैया को मैया सों कहियो ॥ हम हैं तिहरे पय के पोषे सुरति करति रहियो ॥ योग संदेस सुनाइ त्रियन को प्रीति नीति लहियो ॥

End—ऊधो सो हौं कहत निरंतर निज भगतन में रहतु हैं। वेद अतीत ताको सुत को यहै हमारो मतु है ॥ हौं निर्लेप निरंजन निरगुन कारन ता वपु-धारी ॥ कर्म रहित में अपनो इच्छा प्रगटतु हौं तुम चारी ॥ देह धरेह नको मति कोऊ ज्ञान दृष्टि को कोऊ ॥ छांडे देह बहुरि नहि पै है जनमत जग में सोऊ ॥ यह मत है देवन कौं दुर्लभ गुप्त हिय में राखो। प्रागनि तो सों फेरि मिलौंगो दये एकादश साखी ॥

इति श्री प्रागनि कृत भ्रमरगीत समाप्तः ॥

बरवै कातिक शुक्ल एकादसि मंगलवार। बारह से अरु छप्पन सन तब आर ॥ शुभ मस्तु लिख्यते अर्जुन सिंह दाड़ा पठनार्थ पाड़े नैपाल राम के ॥ इति।

No. 316(*c*). Bhramara gita by Prāgana. Substance—Country-made paper. Leaves—45. Size—6½ × 5 inches. Lines per page—14. Extent—350 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1269 Fasli or 1852 A. D. Place of deposit—Śrī Ṭhākura Guruprasāda Siṁhajī Bisen, Guṭhawā, District Bāhrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ कृष्णे ना च गते नितान्त मधुना मृद् भक्षिता स्वेच्छया। सत्यं कृष्ण क एव माह मुषली मिथ्यांव पश्याननम् ॥ व्या- ददीति विदारिते च वदने दृष्टा समस्तं जगत् ॥ माता तत्र जगाम विस्मय पदं पायोत्स्तवः केशवः ॥ १ ॥

No. 316(*d*). Bhāwaragita by Prāgana. Substance—Country-made paper. Leaves—25. Size—8 × 4 inches. Lines per page—16. Extent—300 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1893 or A. D. 1836. Place of deposit—Ṭhākura Śiva Prasāda Siṁha, Village Kaṭailā, Post Office Fakharpur, District Bahrāich (Oudh).

No. 316(*e*). Bhramaragīta by Prāgana. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—9½ × 5½ inches. Lines per page—32. Extent—252 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1949 or A. D. 18.2. Place of deposit—Paṇḍita Kedāra Nātha, Uttarapārā, Rāe Barelī.

Beginning—प्रथम के पृष्ट नहीं हैं।

राषत हो कुसुमन पर कुलिसन विहित विचारत नाहि ॥
यक तो हम पर विरह व्यापि भो प्रानानि घगम घसूझ।
सो मूदत हो जोग जंत्र दे वाउ तुम्हारो बूझ ॥ १८ ॥
मधुकर यह विपरीत कहत हो।
हो तुम चतुर चतुर मथुरा पुर चतुर समाज रहत हो।
दोपक वरै वारि के नाये बुझै मनल घृत धार।
तब कबहु वृज की जुवतिन सों परै जोग बुत पार ॥

जागो जोग त्यागि रस भुगवे भोगो मन्मथ जगावे ।
तब हमहू जोगिनी वेष धरि अलष निरंजन ध्यावे ॥
निवहे नहि निरगुन नारिन सों सुनो मतो मत सोका ।
देषो सुनो कहू यह प्रानिन चलत नीर बिन नैाका ॥ १९ ॥

No. 317. Rāmāyaṇa Nāṭaka by Prāṇachanda Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—9 × 7 inches. Lines per page—32. Extent—2,880 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit—Nāgarī Prachāriṇī Sabhā, Bahrāich (Oudh).

Beginning—

लंका देषि पवन सुत आवहु । जियत जानकी आनि सुनावहु ॥
तेहि पाछे हम रचहि उपाई । अे करिहे सुग्रीव सहाई ॥
लंका दानो अति बल बोरा । क्रोध निवारि कियेहु चित धोरा ॥
आपनि रछ्या कियेहु संभारो । बाद वेवाद करेहु जनि मारो ॥

दोहा—सीता सें अस भाषेहु मन जनि दोहु अधीर ।
आवउ राम सयन रचि अेा लछिमन रनधोर ॥ १३३ ॥

पे अस कहेउ पज हम लीन्हा । रावन वध्या प्रतिज्ञा कीन्हा ॥
यह मिति प्रान रहै घट माहो । नत तुव मिलन कहां हम काहों ॥
तुम बिनु अस हों भयो वियोगो । परम तत्व जस चितवे जोगो ॥
सोभा तजि गे आठो अंगा । मांन गवाई जस फिरै भुअंगा ॥
अंधरे लकुटो मनहु बिसारो । अेा ढूढ़त फिरि हाथ पसारों ॥
धनिक गरुच के सब जग जाना । धनहि गये तृन तुल्य समाना ॥

End—हांक्यो रथ आगे कहा धनुक हाथ लै बान ।
सनमुष रहे न बांदर देषिय काल समान ॥ ३३०

आर भयो कपि दल सब पेलो । जैसे मंड सिधु कर केलो ॥
तब सुग्रीव दीन रन हांका । क्रोधवंत ह्वै रावन ताका ॥
रावन कीन्ह सो दिढ़ कै ठाना । कपि के हृदय लाग संधाना ॥
अंगद हृदे लाग जब बाना । भेदेहु बोस बान हनुमाना ॥
आठ बान मारेसि जमवन्ता । अेा मारेसि नलनील तुरंता ॥
तब रघुपति कहं मारै ताका । आगे दीन्ह भभीछन हांका ॥
देषि भिभीछन देत रिसाना । काल समान लीन्ह कर बाना ॥
बाल्यैा बान दहत परचंडा । लछमन काटि कीन्ह सतखंडा ॥

निफलबान भो दइत रिसाना । ब्रह्मक दत्त लीन्ह कर बाना ॥
तीक्षन बान आउ परचंडा । सो रघुनाथ कीन्ह सतखंडा ॥

दोहा ॥ जूझ भयेउ दुनहु दलन बरनत बरनि न जाय ।
प्रलैकाल जल बुत्तरें घन गरजै घहराइ ॥ ३३१ ॥

बर्षहि बुंदबान चहुँओरा । चमकि चर्म जनु बीजक जोरा ॥

Subject—हनुमान जी का सीता जी के खोजने के लिए समुद्रतट पर जाना और समुद्र का दोनों सिरों पर पहाड़ तयार कर देना, लंका निरीक्षण, सीता रावण संवाद । दोहा । १३२—१५२ तक । सीता हनुमान संवाद, और उनका अशोक वाटिका उजाड़ कर, लंकादहन कर लौट आना । दो० १५३-१७३ तक । हनुमान राम संवाद, विभीषण रावण संवाद, विभीषण का राम की शरण आना, सेतुबंध वर्णन । दो० १७४—१९७ तक । सुकसारन का सेतु निरीक्षण, अंगद रावण संवाद, दो०—१९२—२९२ मंत्री और रावण संवाद, मंदोदरी और रावण संवाद, बानरों की चढ़ाई, रावण का गुप्तचरों को राम की सेना की दशा देखने को भेजना, दोनो सेनाओं का युद्धारम्भ और मेघनाद का राम की सेना को नागफांस में बांधना । दो० २९३—३१४ तक । इन्द्रादि का घबड़ा कर रावण की शरण जाना । गरुड़ का आना और नागफांस का काटना, प्रहस्त और नीलयुद्ध और प्रहस्त का मारा जाना । दो०—३१५—३२५ तक । मंदोदरी रावण संवाद, महोदर अकंपन और कुंभकर्ण का युद्ध करना, लक्ष्मण को शक्ति लगना, राम का विलाप और हनुमान का औषधि लाना, फिर युद्ध होना और रावण का घायल होना, दो०—३३६—३५१ तक । कुंभकर्ण और राम युद्ध वर्णन । दो ३५२—४०० तक, हनुमान द्वारा त्रिशिरा, अकंपनादि वध, लक्ष्मण द्वारा अतिकाय वध, मेघनाद का सब को मूर्छित करना, मेघनाद वध दो० ४०१—४२३ तक । अहिरावण वध । दो०—४२४—४५१ ॥ तक दोनो सेनाओं का युद्ध । दो० ४५२—४५८ दोहे तक ।

संपूर्ण ।

No. 318. Añjira Rāsa by Prāṇanātha. Substance-Country-made paper. Leaves—452. Size—11 × 9½ inches. Lines per page—27. Extent—24,080 Anushṭup Ślokas. Appearance—Clean. Written partly in verse and mostly in prose. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1751 or A. D. 1694. Place of deposit—Amiruddaulah Public Library, Kaisarbāgh, Lucknow.

Beginning—नित नाम श्री कृष्ण जी ॥ अनाद अक्षरातीत ॥ सो तो अब जाहिर भये सब विधि वतन सहीत ॥ १ श्री देवचन्द जी सत छे ॥ सदा सब सुखना दातार ॥ बीन तड़ी प कथन मा भुज अगतानी: अविचार ॥ २ ॥ बाणी बाला जीतणो चलणो जे संसार । निराकार नेपारथी ॥ ते पारने वलो पार ॥ अंग उतकंठा उपनो मारे करवो एह विचार ॥ प बाणो मथी माहे थी तेवोछे सरव सार ॥२॥ इनसार माहे कै मन सुख ॥ तेह निरने करुं निरधार ॥ प सुख देउ माथ ने ॥ तोह अंगना नार ॥ ज्यारे ये सुख अंगमा आवसे ॥ त्यारे छुटो जाए विकार ॥ आयो आनन्द अखंड घर तणे । श्री अक्षरातीत भरतार ॥ ५ ॥ श्री श्री रास श्री किताब पंजोर की लिखी है ॥ जो बानी प्रवोध पुरी हबसा में उतरी है सो सुरू ॥

Middle—हरद्वार ठाये रे उठाये तपमो तोरथ ॥ गौ वध कै औ विघन ॥ ऐसा जुलम हुआ जग में जाहिर ॥ जग में जाहिर ॥ तो भी कमर न बांधी किन ॥ सुर ने केहे लापरे सेवा करें असुर को ॥ ज्यों दारु बाप उड़ावे देहु ॥ हिन्दु ना मेरे सिन्यातिन को होए बड़ो ॥ पसा कुलोप कोया के हेर ॥ १४ ॥ प्रभु प्रत मारे गज पाउ बांध के ॥ घसोट के खंडित कराए ॥ करम बांदीं ताको करके तापर मलक चलाए ॥ १५ ॥ असुरें लगायो रे हिन्दु पर जेजिया ॥ वाको मिले खान पान जो गरोब न दे सके जोजिया ॥ ताए मार करे मुसलमान ॥ साखों आवरदा कही कलयुग की ॥ चार लाख बतीस हजार ॥ काटे दिन पावें लिखा बोते साखों ॥ सो पाइए अरथ के विचार ॥ १७ ॥ सोलेसै लगेरे साका साल वाहन का ॥ संवत सत्र से पेंतीस बैठाने साकोर बिजोयाभिनंद का ॥ यु कहे साख पैार जोतोस ॥ १८ ॥ (पन्ना १४२)

कलजुगे चेत थंत के सब कोए ॥ लोक बतावे अजहर थंत ॥ अरथ अंदर का कोई ना पावे ॥ बारे अरथ बाहिर के ले डुबत ॥ ए बात सुनी रे बुंदेले छत्रसाल ने ॥ आगे आये खड़ा ले तरवार ॥ सेवाने लईरे मारो सिर खेंच के ॥ साईएकोया सिन्यापती सिरदार ॥

End—ए गत साहिबे छत्रसाल सें कहो ॥ घर ईमाम विळंदो कुता को दई ॥ ९-॥२३। ५२५ ॥ नोमो आगे अरफ़ा ईट कही । ले दसमी आग सब लीला भई ॥ मजले सब पापार होमच ॥ सो कहे कुरान विवेक कै विधि ॥ प पापारहो बीच बड़ी विस्तार ॥ प्रगटे बिलंद सब सिरदार ॥ सब न्यामतें सिफतें दई सितार ॥ उतरो यां आए तें उस्तेवार ॥ छिप्यां था बुजुरुक वखत ॥ जाहिर हुआ रोज दिखाए क्यामत ॥

पापारहो सुख ले चले सिरदार ॥ पोछे बारें में जलेब बदकार ॥ जिन पाई राह रोज क्यामत सो उठे फजर के नूर वखत फजर पोछे जब आया दिन तब

तो तोबा तोबा हुई तन तन ॥ तब तो दरवाजे मंद के गया। पीछे तो नफा काहू को ना भया ॥ सब जले जलवा थजाजोल जो प उठाया धसराफोल ॥ एक मर्ग उड़ा सके दोय ॥ दूसरे तेरे में काइम कोय ॥ यूं क्यामत हुई आहिर दिन ॥ महमदे करा उयत रोसन है ॥

६। २४ ॥ ५३१

Subject—इस ग्रन्थ में निम्नलिखित पुस्तकें सम्मिलित हैं:—

१—श्री रासलीला किताब बेजोर	पन्ना	१ से २४ तक		छन्द	९१२
२—श्री प्रकास (हिन्दुस्तानी अंबूर)	,,	२४ से ५७	,,	,,	११८४
३—षट ऋतु	,,	५७ से ६१	,,	,,	१७७
४—बारामासो	,,	६१ से ६४	,,	,,	५३
५—श्री कलस (तौरेत)	,,	६४ से ८१	,,	,,	७६९
६—श्री सनंधे	,,	८२ से १२३	,,	,,	१६०३
७—श्री कीर्तन (पुरानी वानी)	,,	१२४ से १८०	,,	,,	२०६८
८—किताब खुलासा की	,,	१८१ से २०७	,,	,,	१०१९
९—श्री खिलवत (गैब की सूरत)	,,	२०८ से २३६	,,	,,	१०७४
१०—श्री परिक्रमा बड़ो (अर्स की)	,,	२३६ से २९९	,,	,,	२४८०
११—साठो सागर	,,	३०० से ३२९	,,	,,	११२८
१२—बड़ा सिंगार	,,	३२९ से ३८७	,,	,,	२२१०
१३—सिंधी वानी	,,	३८७ से ४०१	,,	,,	५२४
१४—मारफत सागर	,,	४०२ से ४२७	,,	,,	१०३४
१५—छोटा कयामत नामा	,,	४२७ से ४३४	,,	,,	२१७
१६—बड़ा कयामत नामा	,,	४३४ से ४४७	,,	,,	५३१

विशेष विवरण के लिये इस रिपोर्ट के पृ० ४ से ९ तक देखो।

No. 319 (*a*). Vaidyadarpaṇa by Prāṇanātha. Substance—Country-made paper. Leaves—315. Size—13½ × 5½ inches. Lines per page—20. Extent—7,875 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1898 or A. D. 1841. Place of deposit—Paṇḍita Śivarāma Śāstrī, Kharagapur Kusha, District Rāe Bareli.

Beginning—श्री गणेशायनमः नमस्कृत्य गणेशानं महेशानं महेश्वरीं ॥ वैद्य दर्पन मापक्ष्ये वैद्यानां हित काम्यया। पिशानुभूता ये योगा ये च सद्वैद्य संमताः ॥ तथवात्र निगंद्यते न सर्वे वैद्य दर्पणे ॥ स्वर्णाद्या धातवो वेस्युः तथा

तदुप धातवः रसाश्चो परसाश्चैव आवंतो जगतीतले ॥ रत्नानि चोपरत्नानि वषास्युप विषा निच ॥ शोधनं मारणं तेषां वक्ष्याम्यादौ समासतः ॥ तैलपाक विधिश्चैव तथा तीस प्रमानकं ॥ युक्तायुक्त विवेकानि खंडे प्रथम प्र यहि ॥ तदुत्तरं ज्व रादीनां कथयामि चिकित्सितं ॥ तत्र धातूनां संख्या माह ॥ स्वर्णं रौप्यं च ताम्रं च रंगं यसद मेव च ॥ शिशं लोहं च सप्तेते धातवः कथिता बुधैः ॥ अथ सप्त धातूनां शोधणं ॥ तैले तक्रे च गोमूत्रे कांजि के च कुलथ्थके ॥ त्रिधा त्रिधा विशुद्धिः स्यात्स्वर्णादीनां समासतः ॥ केचि द्वदंति रंभाया मूलवारिणि सप्तधा । शुद्धं तिधातवाः सर्वे तत तस विवेचनात ॥ टीका ॥ एक तोले सुवर्ण के पत्र कंटकावेधी पाठ पत्र करै ॥ एही भांति रुपे के ॥ एही भांति तांबे के ॥ और लोहे के टुकरे कै लेइ ॥ सो आगि मां धौकि धौंकि बुझावै वार तीनि प्रथम तिल के तेल मा फेरि माठा मा फिरि गोमूत्र मा फेरि कांजी मा ॥ फेरि कुरथी के काढ़ा याके चित केला के पानी मा बुझावै सात वार तौ सातौ धातुइ शुद्ध होइ ॥

End—न कुर्य्यात्पंच कर्मांणि रक्त श्रावात दाहनम् ॥ पाचनं स्निहनं स्वेदं वमन शोधनं क्रमात ॥ इति श्री पारानाथ कृते वैद्यदर्पनो नाम ग्रन्थ समाप्तः शुभ मस्तु ॥ सम्वत १८९८ ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ द्वितिय वड्ड भृगवासरे ॥ जस प्रति देष तसि लिष मम दोषो न दियते ॥

Subject—पृ० १—सप्त धातु संख्या, सप्त धातु शोधन, सप्तधातु मारण । पृ० २—सप्तधातु पृथक पृथक मारण, स्वर्णगुण, रौप्य मारण । पृ० ३—ताम्र मारण । वंग मारण, रांगे को निरुत्थ भस्म किया । पृ० ५—जस्ता मारण, सीसा मारण, पृ० ६—लोहा मारण । पृ० ७—स्वयमाग्निसार को किया । पृ० ८—लोह कीट शोधन मारण । पृ० ९—मंडूर करण । सप्त उपधातु नाम शोधन, पृ० १०—कांस पीतल मारण, स्वर्ण माक्षिक, रौप्य माक्षिक शोधन, स्वर्णमाक्षिक मारण, पृ० ११—तूतिया शोधन । पृ० १२—सेंदुर शोधन, शिलाजीत शोधन, खपरिया शोधन । पृ० १३—पारद शोधन, ईंगुर से पारा निकालने की किया, पृ० १४—षड्गुण गंधक जारन विधि, पारा की पोठी बनाने की क्रिया, पारद मारण, पृ० १५—रसकपूर की क्रिया, पृ० १६—परसानाम शोधन मारण, गंधक उत्पत्ति शोधन । पृ० १७—गंधक अर्क पातन, हिंगुल शोधन, मारण, पृ० १८—हरताल शोधन मारण । पृ० १९—हरताल का सत्त पातन विधि । पृ० २०—२३ तक—मैनशिल शोधन मारण । अभ्रक शोधन मारण, पृ० २४—अभ्रक से पारा निकालने की क्रिया, चन्द्रोदय की किया, अभ्रक सत्त पातन विधि । पृ० २५—कैमुषा का सत्त निकालने की विधि । पृ० २६—सब सत्त निकालने की विधि, सत्त मारण, वराटी शोधन, रत्नोपरत्न शोधन । पृ० २७—वज्र शोधन, मारण, मूंगा

मोती मारण, वैक्रांत शोधन, विषोप विष शोधन मारण, सुमिल शोधन। पृ० २८—धतूरा शोधन, कुचिला शोधन, अफीम शोधन, उपविष शोधन, जमालगोटा शोधन, नख शोधन। हींग कपूर शोधन, घृत शोधन, पृ० २९—पुराना घृत माह। पुराना गुड़ माह, तैल शोधन, तैल द्रव्य पाक विधि, तैल मोस निर्णय। पृ० ३० - तैलपाकेत्पाटौ मूत्र निर्णय, देशव्यवस्था माह। पृ० ३१—परिभाषा तौल प्रमाण युक्तायुक्त विचार। पृ०—३२—भैषज्य काल माह, जोगनो मग, गजपुट प्रमाण, मध्य पुट, लघु पुट माह, पृ० ३३—यंत्र प्रकार वर्णन। अग्निक्रम वर्णन। भावनाक्रम वर्णन, सक्त बनाने को क्रिया, कांजी कलहंस कांजी वर्णन। पृ० ३४—सत्वन क्रिया, पृ० ३५—पंचामृत वर्णन, त्रिक्षार वर्णन, क्षाराके वर्णन, पंचलवण त्रिलवण वर्णन, त्रिजात चातुर्थ्यांत वर्णन, पंचपल्लव, पंचवल्कल, पंचकषाय वर्णन, दशमूल, पंच अम्ल वर्णन। मूल पंचाल पंचक वर्णन, पृ० ३५—हीनवीर्यो की औषधि. हीनवीर्य सेंदूर रस, नाग सेंदूर महा सेंदूर। पृ० ३६—स्वर्ण सेंदूर चन्द्रोदय, मकरध्वज रस, पृ० ३७—महाचन्द्रोदय, पृ० ३८—वागेश्वरी गुटिका, पृ० ३९—मृत वज्रस्य गुण। पृ० ४०—वज्रेश्वरी रस, पृ० ४०—वज्रधार रस पृ० ४१ हीनवीर्य कामदेव वटी। पृ० ४२—कामदेव रस। पृ० ४३—पूर्ण चन्द्रोदय रस, पृ० ४४—अनंग सुंदरी वटी, मदन मंजरी वटी, पृ० ४५—कामदेव चूर्ण। पृ० ४६ ४७ ४८ हीन वीर्योपाक। प्रथम खंड समाप्त।

पृ० ४९—नाड़ी, मूत्र परीक्षा, पृ० ५०—साध्यासाध्य लक्षण। पृ० ५१—५९ सर्व ज्वर सामान्य चिकित्सा। पृ० ६०—७४ तक। विशेष ज्वर चिकित्सा, वात, पित्त, कफ व्याधि चिकित्सा, पृ० ७५—८४ तक। त्रिदोष सन्यपात चिकित्सा। पृ० ८५—८९ तक, विषमज्वर चिकित्सा। पृ० ९०—९६ तक, जीर्णज्वर चिकित्सा। पृ० ९७ आगंतुक रोग चिकित्सा। पृ० ९८ भूतज्वर चिकित्सा। पृ० ९९—१०९ तक, अतीसार चिकित्सा, पृ० ११०—११३ तक, संग्रहणी रोग चिकित्सा। पृ० ११४—१२० तक, अर्शरोग चिकित्सा। पृ० १२१—१२३ तक, मंदाग्निरोग। चिकित्सा, पृ० १२४—१२५ तक, भस्मक रोग चिकित्सा। अजीर्ण रोग चिकित्सा। पृ० १२६—१२८ तक, विशूचिका रोग चिकित्सा। पृ० १२९ कृमिरोग चिकित्सा। पृ० १३० पांडुरोग चिकित्सा। पृ० १३१ कमलारोग चि०। पृ० १३२—१३५ तक, शोथ रोग चिकित्सा। पृ० १३६ मेदरोग चिकित्सा। पृ० १३७—१४० तक, कृशाङ्ग पुष्टि करण। पृ० १४१—१३५ तक, रक्तपित्त रोग चिकित्सा। पृ० १३६—१५१ तक, राजरोग चिकित्सा, पृ० १५२—१५३ तक। राजरोग भेद वर्णन। कासरोग चिकित्सा, पृ० १५४ श्वासरोग चिकित्सा, पृ० १५५ हिचकी रोग चिकित्सा। पृ० १५६—१५७ तक। स्वरभंग चिकित्सा, पृ० १५८ अरुचि रोग चिकित्सा।

चिकित्सा। पृ० २७२, कर्ण कीट चिकित्सा। पृ० २७३—२७५ तक। शिररोग चिकित्सा। पृ० २७६ गंडारोग चि०, पर्शविका रोग चि०। पृ० २७७—इन्द्रि लुप्त रोग चि०। पलित रोग चि०। पृ० २७८-२८१ तक, प्रसूत रोग चि०, लक्षण। पृ० २८३ प्रदररोग चि०, पृ० २८४ सोमरोग चि०, पृ० २८५ स्तनपाक रोग चि०। पृ० २८६ स्तन दृढ़ी करन औषधि। पृ० २८७ योनिकामद चि०। पुष्प रोग चि०। पृ० २८८ गर्भपात चि०, गर्भस्थिति चि०। पृ० २८९ शुष्क गर्भ चि०,। गर्भ निरोध, दग्ध, नष्ट चि०। पृ० २९० जन्म वंध्या, काक वंध्या, मृत वत्सा को चिकित्सा। पृ० २९१ रोमनाशन को पचियां। पृ० २९२—२९६ तक, बाल रोग चिकित्सा। पृ० २९७—३०० तक। पूतना विधान वर्णन, पृ० ३०१ विष चिकित्सा, पृ० ३०२ उपविष चिकित्सा, सर्व विष पर औषधि। पृ० ३०३—३०६ तक। मद्यविकार चिकित्सा, सर्व विष चिकित्सा। पृ० ३०७ कनखजूर विष चिकित्सा। पृ० ३०८ मसा, मक्षिका, श्वान, शृगाल, व्याघ्र काटे को चिकित्सा। पृ० ३०९—३११ वाजी करण औषधियां। पृ० ३१२—स्थूल करण चिकित्सा। पृ० ३१३—स्त्री द्रावन विधि। पृ० ३१३—३१५ तक। वमन, विरेचन, धावविधि समाप्त।

No. 319(*b*). Vaidyadarpaṇa by Prāṇanātha Bhaṭṭa. Substance—Country-made paper. Leaves—168. Size—8¼ × 6¼ inches. Lines per page—28. Extent—2,940 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Ishvari Nātha Vaidya, Uttarpārā, Rāe Barelī.

Note—शेष विवरण नं० ३१९ (a) के अनुसार।

No. 320. Kalakī Avatāra by Prāṇanātha Trivedī. Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size—10 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—1,280 Anushṭup Slokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṃvat 1760 (1762 ?) or A.D. 1703 (1705 ?). Place of deposit—Paṇḍita Bhagavatī Prasādajī, Village Thailiyā, Post Office Khairighāṭ, District Bahrāich (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः॥ अथ कलकी अवतार कथायां॥ दोहा॥ एक रदन करिवर वदन सिद्धि सदन सिवलाल। विघ्न विनासन विरद सिर मूषासन गुन माल॥ वारक वारन वदन कोह सूझत ज्ञान त्रिकाल। जैसे

दोपक देहरी भीतर बजिर सुकाल ॥ छंद जल हरन ॥ भवानि विघ्रवासनी उदंड पाप नासिनी सुबुद्धि सिद्धि को भरै ॥ करै महोप रंकते प्रमान मेरु पंकते हरै कि नास संकते कटाछते बहु ठरै ॥ जपै निसंक नाम को बड़ै विनोदधाम को पुजै समस्त काम को अगाध सिंधु हू तरै ॥ महागुमान गंजिनी विसाल सोक भंजिनी नमामि प्रान रंजिनी कृपाल पाहि किंकरै ॥ छंद ॥ भवानि तेज तारिनी अनंत रूप कारनी महा विमोह दारिनी धरे कृपान पानि मैं ॥ प्रचंद रूप चंडका अदेव वृन्द षंडिका त्रिकाल भेद मंडिका सुसिद्धि रिद्धि थान मैं करालरूप कालिका अनेक रोग दालिका विसाल मोद मालिका दयाल मोक्ष दानि मैं ॥ अमंत राति हंस सो विजै विभूति बंस सो सरोज जा प्रसंस सो नमामि प्रान जानि मैं ॥

End—बजत जोर महा भट मारे । परत मुंड करि रुंड निनारे ॥
हरि सनमुष वाजत करि रोषू । कटत जात पल पावत मोषू ॥

दोहा—कटत कटक भाड़त मद हरि सनमुष मिटि जात ।
जथा न पावत अवनि लौ तारे गिरत बिलात ॥

दोहा—रवि विरंच पल लोह सम पावक मिलि असिवान ।
जाय बतावत बात लषि जल सरूप भगवान ॥
सालि समर महा बलवाना । निज प्रभु सासन चलत सुजाना ॥
आइ गयो संमर मनि वोरा । बरषे वीर विसिष घन घोरा ॥
गहि बाल निकर पल बाजे । संभरेस के हरि सम गाजे ॥
केवल सालिम षान उबारो । अपर सीस काटे मलि झारी ॥
भट काटि साहि दिन मानि के भगवान सेष निमेष में कहि
बहुरि सालिम षान तट हरि चरित अलप अलेषि मैं ॥
साली मन तजु विन काज तनु तोहि राषि हौं केसव कहो
धन कुल विनासन ता सहित तू सो निकट सवेरा लहो ॥ अपूर्ण ॥

Subject—कलकी अवतार की कथा । देवी की प्रार्थना । म्लेच्छ और कलकी भगवान का युद्ध ।

No. 321(*a*). Vyangārtha Kaumudī by Pratāpa. Substance Country-made paper. Leaves—86. Size—11½ × 5½ inches. Lines per page—7. Extent 600—Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1916 or A.D. 1857. Place of deposit—Paṇḍita Rāmadeo Brahma Bhaṭṭa, Village Nunarā, Mauza Lāmhā, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—कौमुदो १ ॥ श्री गणेशायनमः ॥ अथ व्यंग्यार्थ कौमुदो लिख्यते ॥ दोहा ॥ गणपति गिरा मनाइ के सुमिरि गुरुन के पांइ ॥ कवित रीति कछु करतु हौं व्यंग अर्थ चितलाइ ॥ १ ॥ वाचक लक्षक व्यंज को सब तीन विधि मान ॥ वाच लक्ष अरु व्यंग तहं अर्थ त्रिविधि पहिचान ॥ इनके लक्षन लक्षि बहु रस ग्रंथन ठहराइ ॥ ताते हों बरने नहीं बढ़े ग्रंथ समुदाइ ॥ जहं शब्द हो महं अर्थ की होइ जो अधिक प्रवृत्ति ॥ चमत्कार अतिशय जहां जानि व्यंजना वृत्ति ॥ व्यंग्य जीव है कवित में शब्द अर्थ गनि अंग ॥ सोई उत्तम काव्य है बरने व्यंग्य प्रसंग ॥ करि कवितन सो बीनती सुकवि प्रताप सहेत ॥ को व्यंगार्थ कौमुदी व्यंग्य जानिवे हेत ॥ सूचनिका ॥ कहो व्यंगते नाइ कर पुनि लक्षना विचारि । ता पीछे बरनन करौं अलंकार निरधार ॥ व्यंजना लक्षण ॥ यथा :— वाचक के सन्मुख रहै अंतर औरै अर्थ ॥ चमत्कार निकरै जहां कही सो व्यंग समर्थ ॥ तिय कटाक्ष लौं व्यंजना कहत सकल कविराइ ॥ जहां शब्द ते अर्थ बहु अधिक अधिक दरसाइ ॥

End—अथ धृष्ट नायक-यथा-रितुराज के आगम लोग सबै सोगने गहवे बड़ भागन में ॥ इनके मत लैकै मलंद सदा चित आइ कै गुंजत आंगन में ॥ जिनके शुचि सुन्दर बोल सुनै मन होहि नहीं अनुरागन मे ॥ कत कोकिल कीर किये विधि ने सखि बोलें वृथा बन बागन में । व्यंग्य-नाइका को उक्ति कोकिल बन में बोलत है अह वृथा झूठे वचन बोलत है, द भंवर समान है तितही आंगन में आइ के अरे रहत हैं सो यह विधि नायक को धृष्टता जाहिर करो ताते धृष्ट नायक । नायक को निन्दा तिय कहै तहां धृष्ट नायक कवि कहै । कोकिल उपमान के वर्णन ते गौणी साध्यावसान अलंकार । कोकिल की निन्दा से नायक की निन्दा निकसी ताते व्याज निन्दा अथवा कोकिल का वर्णन प्रस्तुत ताते नायक को निन्दा प्रस्तुत प्रशंसा अलंकार ॥ दोहा ॥ सखि दूती दरसन दशा हाव भाव बहु और । याते नहि बरनन करै, बरनै कवि सब ठौर ॥ व्यंग्य अर्थ अतिशय कठिन को कहि पावै पार । मक्ष्मट मत कछु समुझि चित कीन्हों मति अनुसार यह व्यंग्यार्थ कौमुदी पढ़ै गुनै चितलाइ । ताको मत साहित्य को कछुक पंथ दरसाइ ॥ इति ॥

Subject—बंदना, वाचकादि का लक्षण, नायिका भेद, शक्ति लक्षणादि वर्णन, अलंकार । नायिकादि भेदों के साथ ही साथ व्यंग्यादि का वर्णन ।

No. 321(*b*). Vyangártha Kaumudi by Pratápa Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size—12 × 8 inches. Lines per page—70. Extent—814 Anushṭup Ślokas. Written in Prose and Verse. Character—Nágarí. Date of

manuscript—Samvat 1935 or A. D. 1878. Place of deposit—Ṭhākura Tribhuvana Siṁha, Village Saidapur, Post Office Nīlagām, Tahsīl Sidhauli, District Sitāpur.

End.—इति व्यंग्यार्थ कौमुदी प्रताप कृत सम्पूर्णम् ॥ अश्विन मासे कृष्णपक्षे तिथौ परिवायां गुरुवासरे श्री संवत १९३५ यह पुस्तक श्री ठाकुर हेमचल सिंह साहेब हेत लिषी दरवारीलाल कायस्थ निवासी चिनहट ॥

No. 321(c). Vyaṅgārtha Kaumudī by Pratāpa Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—40. Size—8 × 6 inches. Lines per page—40. Extent—800 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1882 or A. D. 1825. Place of deposit—Ṭhakura Lāyaka Siṁha, Village Bhagawānpur, Post Office Biswā, District Sitāpur (Oudh).

End—प्रसंसा ॥ अथ दोहा ॥ सषि दूती दरसन दसा हाव भाव बहु घोर याते नहि वरनन करे वरनै कवि सब ठौर ॥ व्यंग अर्थ अतिसै कठिन को कहि पावै पार ॥ मम्मट मत कछु समुझि चित कीन्हो मति अनुसार ॥ यह व्यंग्यार्थ कौमुदी पढ़ै सुनै चितलाय । ताको मत साहित्य को कछुक अर्थ दरसाय ॥ संवत ससि बसु बसु सुद्रे गनि अषाढ़ को मास किय व्यंग्यारथ कौमुदी सुकवि प्रताप प्रकास ॥ बिगरो देत सुधारि जे ते गनि सुकवि सुजान । बनो बिगारत जे सुघनि ते कवि अधम समान ॥ इति श्री व्यंग्यार्थ कौमुदी समाप्त ॥ श्री संवत १९५४ मार्ग शुक्ल प्रतिपदायां गुरुवासरे लिषितं मिदं पुस्तकं बलदेव मिश्रेण बैना भारो वासस्थाने श्री राधा कृष्णमनमः श्री राधावल्लभो जयति राम रामायनमः ॥

No. 321(d). Vyaṅgārtha Kaumudī by Pratāpa Kavi. Substance—New paper. Leaves—16. Size—7½ × 4½ inches. Lines per page—28. Extent—168 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābū Padma Bakhsha Siṁhaji, Lavedapur, District Baharāich.

Beginning—अनबानो रहै आठौ जाम बरन सनातन बराई आनि धरतो । रचि रचि बचन अलोक बहु भांतिन के करि करि अनख पिया को मन भरतो ॥ कहै परताप कैसे बसिए निकासिबे को भोन सुख कहिए तऊ न नेक टरतो ॥ निज निज मंदिर मे सांझ ते सवेरे पीय मोरे केलि मंदिर में दीपक न

धरतो ॥ ३१ ॥ अपरंच ॥ सरस सुगंधनि सों अंगनि सिचावै कप्पूर मय वातिनि सों दीप उजियारतो । रचि रचि वानिक बनाव रोस रोसन को हौंसन परोसिन के ज्ञानि जिय जारतो ॥ कहै परताप अति चतुर चवाइनी ए चरचि चवाइनी के चोजनि विचारतो । रेज करि सौतिनि मजेज सों निकेत मांझ परपति हेत सेज सांझ ते संवारतो ॥ ३२ ॥

End—अथ धृष्ट नायक यथा ॥ ऋतुराज के आगम होत सबै सो गनै गहर वद भागन मैं । इनको मतलैके अलिंद सदा नित आइ कैं गुंजत आगन मैं ॥ जिनके सुचि सुंदर बोल सुनै मन होहि नहीं अनुरागन मैं । कत कोयल कूक किए विधि ने सबो बोलै वृथा वन बागन मैं ॥ ७८ ॥

दोहा ॥

सखि दूती दरसन दसा हाव भाव बहु और ।
याते ना वर्णन कियो बरने कवि सब ठौर ॥ ७९ ॥
चित्र अर्थ अतिसै कठिन को क.................. ।

No. 322(*a*). Amṛita Sāgara by Mahārāja Sawāi Pratāpa Siṁha. Substance—Country-made paper. Leaves—248. Size—10 × 6 inches. Lines per page—48. Extent—8,928 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Himmata Siṁha, Mohallā Baḍā Kuwā, Rāe Bareli.

Beginning—पृ० ६० से प्रारम्भ ।

शस्त्र प्रहार से उपजो जो तृषा ताका जतन बकरा का रुधिर पीने से शस्त्र प्रहार को तृषा जाव १६ × अथवा बकरे के शोरबे मे सहत मिलाय खाय तो शस्त्र प्रहार को तृषा जाय १७ अथवा खीर में मिश्री मिलाय के खाय तो यह तृषा जाय १८ को ।

End—अथ इन छयों ऋतु मे वायु पित्त कफ का संचय प्रकोप और शांत लिखते ग्रीष्म ऋतु में वायु का संचय वर्षा ऋतु में वाय का कोप × × ऋतु में वाय को शांति १ वर्षा ऋतु में पित्त को शांति × × × वसंत ऋतु में कफ का कोप........तप में वाय पित्त कफ के प.........में होय है और ये विना सम........थवा वायु के कोप करने का.............र यह विना समय हुत को ।

Subject—पृ० ६०—६२ तक तृषा, मूर्छा, मोह भ्रम तन्द्रा की उत्पत्ति लक्षण जतन । पृ० ६३—७२ तक मदात्यय, उन्माद और मृगी उ० ल० ज० । पृ० ७२—८६ तक वात व्याधि का सर्व रोग शिरोग्रह, अल्प केशी, जंभाई अनुग्रह,

जिह्वास्तंभ, ईाले बोले, गूंगापन, जीभ का रस ज्ञान, त्वचा शून्य, छर्दि रोग, वातुक रोग, उर्द्ध वात रोग, अध्यमान रोग, प्रत्याध्यमान रोग, वातष्ठोला, प्रति तूनी रोग, खोड़ा पांगुला रोग, खल्ली रोग, अंतरा याम रोग, पक्षाघात रोग, निद्रा नाशक रोग। पृ० ८७—९१ तक—ऊरुस्तंभ आम वात पित्त कफ व्याधि रोगों के भेद उत्पत्ति लक्षण जतन। पृ० ९२—९८ तक वात रक्त शूल परिणाम उपद्रव जरन पित्त की उत्पत्ति लक्षण यत्न निरूपण। पृ० ९९—१०८ तक—हृद्रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न। पृ० १०९-१२२ मूत्र कृच्छ मूत्राघात, अस्मरी शर्करा, प्रमेह के भेद ल० उ० यत्न। पृ० १२३—१२७ तक मेद रोग, कार्श्य रोग, क्षीण रोग के भेद उ० ल० यत्न। पृष्ट १२८—१३४ शोथ रोग, अंमवृद्धि, अन्त्र-वृद्धि, गलगंड, कंठमाला अपचि ग्रंथि अर्बुद रोग के भेद उत्पत्ति ल० यत्न। पृ० १३५—१४८ तक—श्लीपद, विद्रधि, व्रण, शोथ, शरीर व्रण, वाय पित्त कफादिकों का आगंतुक व्रण शस्त्रादिकों का अग्निदग्ध व्रण ग्रंथि भग्न नाड़ी व्रण के भेद उ० ल० यत्न। पृ० १४९—१६१ तक भगंदर, उपदंश, लिंगर्श का रोग, कोढ़ के भेद उत्पत्ति ल० य०। पृ० १६२—१७२ शीत पित्त उदर्श कोढ़ उत्कोढ़, अमल पित्त, विसर्पया, वाला वोदरी औरो रोगों के भेद उ० ल० यत्न। पृ० १७३—२१०—क्षुद्ररोग मस्तक रोग, नेत्र रोग कान, नाक मुख ओठ, मसूड़े, दांत जीभ तालू गला कंठ इन सब के रोग और भेद उत्पत्ति लक्षण यत्न। पृ० २११—२१५—स्थावर जंगम विष मात्र के भेद उत्पत्ति लक्षण यत्न। पृष्ट २१६—२२४ तक प्रदर रोग भेद उत्पत्ति लक्षण यत्न। पृ० २२५—२३२ तक वालकों के रोग भेद उ० ल० य० पृ० २३३—२३५ नपुंसकपने के दूर करने के ल० य०। पृ० २३६—२३९—पुष्टाई के यत्न पृ० २४०—२४८ तक सब आसवों की विधि शिलाजीत शोधन विधि स्नेह विधि स्वेद विधि वस्ति कर्म हुक्के की आदि धूमपान की विधि, रुधिर छुड़ाने की विधि। छः ऋतु वर्णन।

No. 322(*b*). Bharathari Śataka by Sawāi Pratāpa Simha of Jaipur. Substance—Country-made paper. Leaves—116. Size—9×5 inches. Lines per page—9. Extent—650 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1908 or A. D. 1851. Place of deposit—Paṇḍita Badarīnātha Bhaṭṭa, Lucknow University, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ भरथरी सत नीति मंजरी लिख्यते छप्पय॥ जाको मेरे चाह वह है मोसों विरक्त मन। पुरुष और सों प्रीति पुरुष वह चहत और धन॥ मेरे कृत पर रीझि रही कोई इक और ही। यह विचित्र

गति देखि चित ज्यों तजत न ठौरहो ॥ सब भांति राज पशो सुधिक जार पुरुष कौ परम धिक । धिक काम याहि धिक मोहि धिक सब व्रजनिधि कौ सरन इक ॥ १ ॥ दोहा ॥ सुख करि मूढ़ रिझाइये प्रति सुख पंडित लोग । अर्ध दग्ध जड़ जीव कहं विधिहु न रिझवन जोग ॥ २ ॥ छप्पय-निकसत बाह तेल जतन करि काढ़त कोऊ । मृग तृष्णा को नीर पिये प्यासी है सोऊ ॥ लहत ससा कौ शृंग ग्राह मुख ते मणि काढ़त । होत जलधि के पार लहरि वाको तब बाढ़त ॥ रिस भरे सर्प कौ पुहुप ज्यों अपने सिर पर धरि सकत । हठ भरे महा सठ नरन कौ कोऊ बस नहिं कर सकत ॥ ३ ॥

End—छिन में बालक होत होत छिनहो में जोवन । छिनहो में धन होत होत छिनहो में निरधन ॥ होत छिनक में वृद्ध देह जर्जरता पावत । नट ज्यों पल्टत अंग स्वांग नित नये बनावत ॥ यह जीव नाच नाना नचत निचलो रहत न एक छन । कहिकैं कनात संसार को कौतुक निरखत रहत जम ॥ ९९ ॥ बहु भोगन कौ संग तहां इन रोगन कौ डर । धनहु को डर भूप अग्नि अरु त्योंही तस्कर ॥ सेवा में भय स्वामि समर में सत्रुन कौ भय, कुलह में भय नारि देह कौ काल करत क्षय ॥ अभिमान डरत अपमान सों गुन डरपत सुनि खल सब्द । सत्र गिरत परत भय सों भरे अभय एक वैराग्य पद ॥ १०० ॥ दोहा ॥ करो भर्तरीसतक पर भाषा भलो प्रताप । नीति मांहि रस गाथ में वीतराग प्रभु आप ॥ १ ॥ इति श्री मन्महाराजाधिराज श्री सवायी प्रताप सिंघ जी देव विरचितायो भर्तरी सत संपूर्णम् शुभं ॥ यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृसं लिपितं मया यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषं न दीयते ॥ लिखितं ब्राह्मन हरिदेव ॥ लिषायतं फौजदार जी साहब श्री व्रजवल्लभ जी मिति भाद्रपद वदी १३ संवत १९०८ ॥ श्री राम जी ।

Subject—नीति पृ० १—२१ तक, शृंगार पृ० २१–३७ तक, वैराग्य पृ० ३७—५८ तक ।

No. 323(*a*). Bhaktarasa-bodhinī (Bhaktamāla kī Ṭīkā) by Priyādāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—164. Size—8 × 6 inches. Lines per page—28. Extent—4,602 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1867 or A. D. 1810. Place of deposit—Ṭhākura Lachhiman Siṁha, Village Saidapur, Post Office Bhaṇḍihā Prānt, Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री गुरु गोविन्दो जयति ॥ श्री भक्तमाल लिख्यते भक्त रस बोधिनी टीका ॥ स्वयंगत टीका करता को मंगलाचरन

तथा पक्षा निरूपन ॥ कवित्त ॥ महाप्रभु कृष्ण चैतन मनहरनजू के चरन कौ ध्यान मै नाम मुष गाइये ॥ ताही समै नाभाजू के आज्ञा दई लै धारो टीका विस्तार भक्तमाल वो सुनाइये । कीजिये कविता छंद बंद अति प्यारो लगै जगै जगी मही कही वानीयवर आइये । जानौ निज मति पपै सुन्यौ भागवत सुक द्रुमनि प्रवेस कीयो पैसई कहाइये ॥ टीका को स्वरूप वर्नन ॥ स्वकवितांई सुषदाई लगी निपट सुहाई और सचाई पुनरुक्त मिटाई है । अक्षर मधुरताई अनुप्रास जमकाई अति छवि छाई मोद भरी लगो है ॥ काव्य को बड़ाई निज मुषन भलाई होत नाभा जु कहाई ताते पौढ़ कै सुनाई है ॥ हदै सरसाई जो पै सुनिये सदाई यह भक्ति रसबोधनी सुनाय हिम गाई है ।

End—रामानंद के अनंत नंद सदा प्रगटे पूरनचंद ॥ ताके कृष्णदास अधिकारी सब कोउ जानै दूधा धारी ॥ ताको अग्र आगरो प्रेमु लै नाभा यों सुमिरन को नेमु ॥ अग्र कै सीष विनोद दिपाई । ताते दास अनंतही गाइ ॥ ताही प्रसाद परचै भाषा । सुनौ संतजन सांचो साषा ॥ पै परचै कहै जो कोई । तासु सर्व सुष पावै सोई ॥ बकता श्रोता पावे सुष । नासै काम कर्म का दुष ॥ भगत को रीति लै सोजो भाई । जीवन मुगत सदा सुषदाई ॥ इतनी कथा कहै पोपा को ॥ जानै सुष संपति दीपा को तीरथ कोटि करै अस्नाना जहां तहां विधि सो देवै दाना ॥ जोग जग्य जप तप धर्म जेते । हरि की कथा नहि पूजै तेते । अर्व नामते भयो पारा साधु संत कहत विस्तारा ॥ यह मुक्ति को राह बताई । हरि को कथा सबहि सुषदाई । सुर नर मुनि ब्रह्मादिक गावैं पारब्रह्म को अंत न पावैं ॥ पोपा के गुन गाय सुनावै । सो वैकुंठ लोक निज पावै ॥ जो साधु जन गावैं कोई निहचै सब सुष पावैं सोई ॥ नरनारी गावैं जो कोई । भक्त मुक्त संसो नहि होई ॥ पोपा के गुन गावहीं सुनहि जो संत सुजान । अर्थ धर्म काम मोक्षापद ताहि देइ भगवाना ॥ इति भक्तमाल समाप्तं संपूर्णम् संवत १८६७ भाद्रावासुदी २ भृगुवासरे ॥

Subject—भक्तों को महिमा, और उनके नाम तथा नगर सहित वर्नन ।

No. 323(*b*). Bhaktarasa-bodhinī (Bhaktamāla kī Ṭīkā) by Priyādāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—113. Size—14 × 8 inches. Lines per page—26. Extent—3,673 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1769 or A. D. 1712. Date of manuscript—Samvat 1918 or A.D. 1861. Place of deposit—Paṇḍita Sarju Prasāda, Village Maharū, Post Office Metarā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—टीका करता को मंगलाचरन। अथ निरूपणम् कवित्त॥ महाप्रभु कृष्ण चैतन्य मनहरन जु के चरनन को ध्यान मेरे नाम रूप गाइये। ताही समै नाभा जु ने अज्ञा दई तेहि धरि टीका विस्तार भक्तिमाल को सुनाइये॥ कीजिये कवित बंद छन्द अति प्यारो लगै जगै जग माहि वानो वोर माइये॥ जानौ निज मति ऐसे सुन्यो भागवत सुक भ्रमोन प्रवेस कियो ऐसेही कहाइये॥ १॥ टीका को नाम स्वरूप वर्णन॥ रचि कविताई सुषदाई लगै निपट सुहाई औ सचाई पुनरुक्त लै मिटाई है। अक्षर मधुरताई अनुप्रास जमकाई अति छवि छाई मोद झरिसि लगाई है॥ काव्य की बड़ाई निज मुषन भलाई होत नामाजू कहाई ताते प्रौढ़ कै सुनाइये॥ हृदय सरसाई जो पै सुनिये सहाय यह भक्तरस बोधनो सुनाम टीका गाइ है॥ भक्ति स्वरूप॥ श्रद्धाइ फुलेल औ उवटनो श्रवण कथा मैल अभिमान अंगनि छुटाइये। मन वसुनीर अन्हवाइ अंग छाइ स्थान वनि वसन पन सौवौ लै लगाइये॥ अभरन नाम हरि साधु सेवा करनफूल मानसी सुमथ संग अंजन वनाइये॥ भक्ति महारानी को सिंगार चाह वीरो चारु रहैं जो निहारि लहै लाल प्यारी गाइये॥

End—कीनो भक्तिमाल सुर साल नामा स्वामी जु ने जिये जीव जात जग जन मान पोहनो। भक्ति रस बोधनो सु टीका मति सोधनी है वाचत कहत अर्थ लागै अति सोहनो॥ जो पै प्रेमलक्ष वाको चाह अवगाह पालि मिटे उरदाह नेक नैनन हु जोहनी॥ टीका और मूलनाम भूलिजात सुनै जब रसिक अनन्य मुष होत विस्वा मोहनो। नामाजू को अभिलाष पूरन लै कियौ मैतो ताको साषि प्रथम सुनाई नीके गाइ के भक्ति विस्वास जाके ताही सो प्रकास कीजे भीजे रंग हियो लीजे संतनि लड़ाइ कै॥ नारायन दास सुषरासि भक्तिमाल लैके प्रियादास दास उर बसै रहो छाय कै। संवत प्रसिद्धि दस सात सत उन्है तरा फाल्गुन मास वदि सतमी विताय कै अगिनि जरावो लैकै जल मैं बुड़ावो भावे भूलिये चढ़ावो धारि गल पिवयवो॥ विछू कटवावो कोटि सापल पठावो हाथी आगे डरवावो इति भीति उपजायवो। सिंह पै षवावो चाहो भूमि गड़वावो तीषी अंगनि विधवावो मोहि दुष नहि पायवो। अजजन प्रान कान्ह बात वह कठिन कारो भक्ति सो विमुष ताको मुषन देषायवो॥ इति श्री प्रिया दास जु कृत भक्ति माल टीका भक्ति रसबोधनी समाप्त सुभ चैत्र मासे कृष्ण पक्षे तिथौ अमास्या सौम वासो संवत १९१८ लीला भवन लिष्यते जानकी सरन अयोध्या मद्दे रामकोट॥

No. 323(c). Bhaktarasa-bodhinī (Bhakta māla kī Ṭīkā) by Priyādāsa. Substance—New paper. Leaves—137. Size—11½ × 6 inches. Extent—3,425 Anushṭup Ślokas. Appearance—

New. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1769 or A.D. 1712. Date of manuscript—Samvat 1937 or A.D. 1880. Place of deposit—Vidyārathi Jogendra, Christian College, Lucknow.

Note—आदि अंत No. 323 *(b)* के अनुसार

No. 323*(d)*. Bhaktarasa-bodhini by Priyādasa. Substance—Country-made paper. Leaves—300. Size 12 × 6 inches. Lines per page—12. Extent—3,265 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nagari. Date of Composition—Samvat 1769 or A. D. 1712. Date of manuscript—Samvat 1877 or A. D. 1820. Place of deposit—Ṭhakura Visvanatha Siṁha, Tāluqedār, Village Agaresar, Post Office Tirsaṇḍi, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री रामचन्द्रायनमः अथ भक्तिमाल टीका सहित लिषने। कवित छप छंदः ॥ टीका को मंगलाचरन। अथ आसि निरूपन। महाप्रभु कृष्ण चैतन्य मन हरन जू को चरन को ध्यान मेरे नाम मुष गाइये। ताहि समै नाभाजू ने आज्ञा दई लइ धारि टीका बिसतारि भक्तिमाल की सुनाइये। कीजिये कवित्त बंद छंद अति प्यारो लगे जगे जगमाहि कहि बानि बिरमाइये। जानो निज मति आपै मन्यौ भगवत सक्त दुमनि प्रवेस कियो अमैहिं कहाइये ॥ १ ॥ टीका को नाम रूप वर्णन। रचि कविताई सुषदाई लगै निपट सुहाई औ साचाइ पुनरुक्त लै मोटाई है। अक्षर मधुरताई अनुप्रास जमा काई अति छबि छाई मोद झरी सी लगाई है। काव्य को बड़ाई निज मुषन भलाई होत नाभाजू कहाई तातै प्रौढ कै सुनाई है। रहै सरसाई जो पै सुनिये सदाइ यह भक्ति रस बोधनी सुनाम टीका गाई है। २ ॥

End—फल स्तुति साषी। पाटप पेड़हि सींचिये पावै अंग अंग पोष। पू बजा ज्यौ बरन तै सब मानियो संतोष ॥ २०३ ॥ भक्त जितं भूलोक मै कथै कौन पै जाय। समुद पान श्रद्धा करै कहा चिरैया पेठ समाय ॥ २०४ ॥ श्री मूरत सब वैष्णव लघु दीरघ गुननि अगाध। आगै पीछै बरनतं जिनि मानो अपराध ॥ २०५ ॥
× × × काहू कै बल जोग जग कुल करनी की आस ॥ भक्त ॥ नाम माला अगर उर बसौ नरायन दास ॥ २१४ ॥ इति श्री भक्तमाल श्री नारायन दास जी कृत मूल समाप्तः ॥ नाभाजू को अभिलाष पूरन लै कियो मै तौ ताकी साषी प्रथम सुनाई नीकै गाइकै। भक्ति बिस्वास जाकै ताही सौ प्रकास कीजै

मोजै रंग हियो लोजै संतनि लड़ाइ कै ॥ संवत प्रसिद्ध सात सत उन्हत्तरि फाल्गुन मास। वादि सतमी चिताइकै नारायनदास सुषरासि भक्ति माल लेकै प्रियादास दास उर बसो रहो छाय कै ॥ ६२७ × इति भक्तिमाल भक्ति रसबोधनी टीक संपूर्ण शुभ मस्तु ॥ श्रारस्तु। लिषतं रामसुष ब्राह्मण संवत ॥ १८७३ ॥ अस्वन सुदि ॥ २ ॥ रविवासरे।

No. 324. Ānanda Sāgara by Pūraṇapratāpaji of Jamālapura, Pargana Hisāra (Punjab). Substance Country-made paper. Leaves—28. Size—8 × 5 inches. Lines per page—11. Extent—231 Anushṭūp Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nagari. Date of Composition—Samvat 1824 or A. D. 1767. Place of deposit—Paṇḍita Śambhū Dayala, Teacher, Vazidapur, District Bārā Banki.

Beginning—गुरु महिमा वर्णन लिख्यते ॥ दोहरा ॥ भ्रममोचन अघ तिमि हरन दाता भेव अभेव। परनम कर बाई सकल जै जै श्री सुषदेव ॥ १ ॥ चोपाई ॥ नमो नमो सत गुरु अविनाशी। चरण दास पूरण परगासो। भगवत धर्म पुनीत अपारा ताहि सुनत नासै भ्रम भारा। कलऊ सतजुग कर दरसायो। भक्ति अपार बीज फैलायो। महिमा अगम अपार तुम्हारी। गुन गावत मम रसना हारी ॥ निरालंब निरलिप्त निरारे। नाम रूप किरपा ते न्यारे। तुम किरपा निरभै पद पायो। मोह तिमिर ज्ञान प्रगटायो। निरविकार अघ गत दरसायो। दिव्य दृष्टि दे भर्म मिटायो। काग हंस गत दोऊ ठाई। जीव ब्रह्म की गांठि मिटाई ॥ २ ॥ दोहरा ॥ स्वात पलट मोती भयो बह गये विषम कलाप। चरन दास सतगुरु मिले हुवो पूरन परताप। ३ ॥ छन्दे। निराकार आकार एक पर ब्रह्म कहायो। वाकी लीला दुइ जास को भेद बतायो। उहो रूप को तेज सुतो यह ब्रह्म कहायो। वहो भयो आकार सकल ब्रह्मंड रचायो। आदि पुरुष वातें भयो प्रकृति रूप उपजाय। पूरन प्रताप चरणदास ने दोनों यो समुझाय ॥ ४ ॥

End—दोहा—या जग में नहि काम जो मोह दरसत है नाहि। सकल चाह मम रूप है मैं सब चाहन माहि ॥ ७५ ॥ तें विवेक मंत्री सुने वाको मानो भे। अब हमरे मंत्री सुनो भे होवे सब है ॥ ७६ ॥ चैापाई—पहले मंत्री हमरो नारी। जाके तीछन नैन कटारी ॥ ताने घायल करे सब जोधा। कहा सूरमा यै कहा योधा। और एक बात तोहि समझाऊं। ताकूं जग में खोलि दिखाऊं। विमल स्वरूप नारि हो कोई। रूचि उत्तम प्रति वाकी होई। काहू के मन वह जो भावै ॥ तन मन से वह आगि लगावै। वाको अगिन नाश बिन बुझे। जब वह मिलै तभी

दुख नसै। जीव जंतु तो हेत बताऊं। नारो तिनके संग दरसाऊं। सो बंधुवा मेरे तुम जानो। पूरन प्रताप साँच पहिचानो॥ ७७॥ दोहरा—अब मंत्रो सुन मोह के, क्रोध लोम मन मान। दंभ झूठ अह गर्व हरि, मत्सर अति बलवान।७८ चैापाई—तब हम सब इकठे हो चढ़ें। निहचै जान न हमसूं लड़ें।

Subject—(१) पृ० १ से ४ तक—गुरु महिमा।

(२) पृ० ५ से ७ तक—विनती तथा ग्रंथ पतिज्ञा और ग्रंथ चतुष्टय संबंधो कुछ बात चीत।

(३) पृ० ८ से ८ तक —कवि वंश परिचय :—

रामचन्द्र जू के भये पुत्र सु बालमुकंद।
पूरन प्रताप तिनको भयो कृपा करी नंदनंद॥
चरनदास गुरुदेव धर्‍यो कर ताके ऊपर।
है जमालपुर नाम ठाम निज उत्तम भूपर॥
सो हिसार को परगनो मत्री दानो ज्ञानचितु।
रच्यो ग्रंथ अति प्रीति सों मथुरा माँहि बसंत रितु॥

ग्रंथ निर्माण कालः—

ठारह से संवत कहे, बीस चारि और जान।
आनंद सागर नाम जिहि षट तरंग पहिचान॥

(४) पृ० ९ से पृ० २८ तक—प्रथम तरंग, राजाकौसि, ब्रह्म के आगे नट नटो काम और विवेक का स्वांग खेलना, निर्गुण स्वरूप, अवतार वर्णन, भक्त सहायक रूप, आकाशवाणी वर्णन, विवेकादि वर्णन। ग्रंथ समाप्ति।

No. 325(*a*). Jaimini Aśwamedha by Purusottama Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—21. Size—18 × 6 inches. Lines per page—16. Extent—483 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1890 or A. D. 1833. Place of deposit—Ṭhakura Dalajita Simha, Village Zālimasimha kā Purawā Post Office Kesargañja, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः पुरुषोत्तम जन चात्रिक राम कथा जलपान अवरहि काहि न लेषत तब श्री भगवान॥ चलेउ तुरंगम बाजन बाजा। पहुंचा जहां हंसध्वज राजा। पुरि चंडिका निर्मल देसा। चारिउ बरण मनोहर भेषा। तात जननि जस बाला पाला॥ तैसे नृपति देस प्रतिपाला। होम जग्य नित दान पुराणा। राम छांड़ि नहि आनहि आना। घर घर राज मंदिर अस लेषा। नारि

सकल पद्मिनी विसेषा। रोगी दुखो न देषिय लोगा। मनहि न देई इन्द्रासन भोगा। तहां तुरंगम पहुंचा जाई। दूतन नृप सन धाल जनाई। ग्रस हय देस कवहु नहि ग्रावा। चन्द्र विमल तन ग्रधिक सुहावा। कंचन पाठ लिखित कछु माला। ग्रति सुन्दर गज मोतिन माला। नृप तिन कंठ लै ग्राये तुरंगा। वाचिन पत्र पंथ है संगा। राजहि कहा कहां तुम पावा। देषव हरि जिय करब बधावा।

End—सैापि पंथ कहं ग्राप सिधाये। जहां युधिष्ठिर तहं हरि ग्रावा। राजा कर संतोष करावा। समाचार प्रभु सवहिं सुनावा। हंसाध्वज ग्रैा ग्रर्जुन वीरा। ग्राये सवै नगर रणधीरा। राजहि सब मन कहा बुझाई। जो रोवे तेहि राम दुहाई। सब मिलि करहु पंथ कै सेवा। कर गहि सैापि गये हरि देवा। कुंग्रर युद्ध सवहो मन भावा। सुन्य सुधन्वा हरिपद पावा। राजा वचन सुनत रनिवासा। गयो शोक जिय भयो हुलासा। सब वीरन के चरण पषारा। होइ लाग ग्रमृत जेवनारा। भाव भक्ति सब हो का कीना। हरि ग्राज्ञा सिर ऊपर लीना। धन गज पुर कंह दीन्ह पठाई। दिन पांच लगि भै पहुनाई। कहैा वाहि को जीते पारा जेहि के कृष्ण सदा रखवारा। तस वियोग नृपन विसारा ग्रर्जुन मनहि ग्रानंद। कहत दास पुरुषोत्तम सुनत कटै दुखफंद। इति श्री महा-भारते ग्रश्वमेध को पर्वणी चंडिकापुरी विजयनो नाम एक विंशतमोध्याय।

Subject—घोड़ा का चंडिकापुरी में पहुंचना वहां के राजा हंसाध्वज का ग्रश्व को पकड़वाना फिर ग्रर्जुन ग्रैार सुधन्वा ग्रादि का युद्ध होना पश्चात श्री कृष्ण का ग्रपनी लीला से मेल मिलाप करा देना राजा का सब सेना समेत ग्रर्जुन ग्रादि को पहुनाई करना ग्रैार भेंट ग्रादि देना इत्यादि केवल एक ग्रध्याय।

No. 325(*b*). Sudhanwā Kathā by Purushottma. Substance—Country-made paper. Leaves—32. Size—7 × 5¼ inches. Lines per page—13. Extent—442 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1887 or A.D. 1830. Place of deposit—Thākura Jadunātha Baksha Simha, Hariharpur, Village Chilandiā, Tahsil Kesargañja, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ग्रथ सुधन्वा कथा लिख्यते ॥ दोहा। गणनायक के चरन चरन सिद्धि वंदों वारहि वार। कर जोरे विनती करैां ······ ग्रनुसार। चो० ॥ चला तुरंगम वाजन बाजा।

नोट—शेष No. 325 (*a*) के ग्रनुसार।

Subject—प्रार्थना, सुधन्वा की पीड़ा, सुधन्वा पांडव युद्ध सुधन्वा वध सुरथ युद्ध, शिव विष्णु युद्ध, सुरथ वध,हंसध्वज का कृष्ण से मिलन, सब का जीवित होना।

No. 325(c). Sudhanwā Kathā by Purushottama Substance-Country-made paper. Leaves-37. Size—7½ × 6 inches. Lines per page—16. Extent—444 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1259 Fasli or A. D. 1842. Place of deposit—Nāgeśwara, Vaishya, Mathurā Bāzār, Post Office Khāsa, District Bahrāich.

No. 326(a). Dūshaṇa Bhūshaṇa by Raghunātha Bandījana of Kāśī. Substance—Country-made paper. Leaves—15. Size—7½ inches. Lines per page—20. Extent—300 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Mahārajā Rājendra Bahādur Simha of Bhinagā, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ दूषण भूषण लिख्यते।

दोहा। अलंकार सब काव्य के कहे शास्त्र परिमान। अब दूषन गुन लछन सब कहियतु है सुखदान। १। ज्यों मनुष्य के देह में हैं मूर्खादिक दोष। त्यों श्रुति कटु कहँ आदि है करत काव्य में पोष॥ २ अथ दूषन वर्णन—दोहा—दूषन सहित कवित्त मों होत सुरस की हानि। तातें वर्नन कीजियतु इन्है लेहु पहिचानि। ३ दोष लक्षण-शब्द अर्थ मिलि चित्त को सुख टारत हैं सोइ। श्रुति कटु आदि कवित्त में दूषन कहियतु सोइ॥ ४ दूषन नाम। श्रुति कटु अरु संस्कार हत अप्रयुक्त असमर्थ। निहितार्थ अनुचित अरथ अनौ और निरर्थ। ५ विविध भेद अस नोल के सुकविन दिये बताय। ब्रीड़ा एक जुगुप्सा एक अमंगल थाय। ६

End—कारज लक्षण॥ प्रस्तुत के व्यापार तें कारज को फल धाम। तासों कारज कहत हैं सकल सुमति के ग्राम। १२। उदाहरण—घन घटा गज तापै बिज्ज के छूटा निसान गरज नगारे भारे बाजत अचैन हैं। देषि रघुनाथ को दुहाई न खबर तोहि जुगनून आगें आयगी अमार्ग ऐन है। कोकिला कलापी झिल्ली दादुर पपीहा सोर इन्हैं मति बूझे और सुभट के बैन हैं। तेरो मान कोट ताके तोरैं कौन खोट घेरि हल्ला कियो चाहत मोहल्ला लेत मैन है॥ १३॥ इति लक्षण श्रीकवि रघुनाथ बंदी जन कासी बासी विरचिते जगत मोहने अल्पाक्षरादि लक्षण वर्णने लघुमंत्रः॥

Subject—दूषण वर्णन, दोष लक्षण, दूषण नाम, पद दूषण, वाक्य दोष, अर्थ दोष, श्रुति कटु, संस्कारहत, अप्रयुक्त, असमर्थ, निहितार्थ, अनुचित, निरर्थ, अश्लील, अमंगल, ग्लान, अवाचक १—३ पृष्ठ

संदेह, निकाय, क्लिष्ट, ग्रामीण, अविमृष्ट, विरुद्ध मति ४—५ पृष्ठ

न्यून पद, अधिक पद, कथित पद पतत्प्रकर्ष, प्रसिद्ध हत, अभवन पुनरात्त लक्षण, क्रमभंग, स्थान स्थेयपद, ५—७ पृष्ठ

अपुष्ट, कष्ट, व्याहत, पुनरुक्त, दुक्रम, ग्रामीण, निरहेत, अयुक्त, संप्रदाय विरुद्ध, शास्त्र विरुद्ध, अष्टा विकित, सहचर भिन्न, चाह युत ८—९ पृष्ठ

अविशेष, नेम अनेम, त्यक्त पुनः स्वीकृत, विधि अनुवाद, अर्थदोष, अश्लील निवारण, पुनरुक्त निवारण, १०—११

गुण वर्णन, मधुर, ओज, प्रसाद, संगति, अभिमान, हेत, प्रतिषेद, मिथ्याध्य वासित सिद्धि युक्ति, कारज १२—१५ पृष्ठ

No. 326(*b*). Jagata Mohana by Raghunātha Bandījana of Kāśī. Substance—Country-made paper. Leaves—204. Size—10½ × 5½ inches. Lines per page—12. Extent—3,213 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1911 or A.D. 1854. Place of deposit—Chhedī Lāla Brahmabhaṭṭa, Village Holapur, Post Office Haidargaḍh, District Bārā Banki (Oudh).

Beginning—वरन वृत्त के छन्द को इनते रचना होत। नागराज को पाइ मत कहे सुमति के पोत। ११ ॥ म य र स त ज भ न आदि दे इनको क्रम लखि लेउ। छिति जल अगिनो वाइ नभ रवि ससि पुनि इन देउ ॥ १२ ॥ मगन नगन सो मित्र हैं यगन भगन है भृत्त। रगन सगन अरिघ तगन जगन उदासो कृत्त ॥ १३ ॥ मगन तोन गुरु तीन लघु नगन यगन लघु आदि। भगन आदि गुरु कहत हैं पिंगल मत निरबादि ॥ १४ ॥ रगन मध्य लघु मध्य गुरु जगन कहत बुधिवंत। सगन अन्त गुरु कहत हैं कहत तगन लघु अंत ॥ १५ प्रस्तार विधि ॥ पहिले गुरु के निम्न लघु फिरि लिखि ऊपर पाँति। उबरे ऊपर दोजिये गुरु लघु रचि इहि भाँति ॥ १६ ॥ पर पूरुष होउ इष्ट है मित्र मित सुख दान। उदासोन ते भृत्य सुभ सेस मते परमान। १७ ॥ उदासोन अरि ये दोऊ असुभ अर्थ को देत। आदि मानुषो कवित के गन धरो करि हेत ॥ १८ ॥

End—दोहा ॥ दोइ नगन फिरि रगन जेतिक बाढ़त जाइ। दंडक को यह भेद है त्यों त्यों नाम बताइ ॥ ५१८ ॥ सात रगन को चंडविष्टि अर्ण पाठ को

जानि। वर्ण वाल्य नव रगन को दस को व्याल बखानि ॥ ५१९ ॥ ग्यारह को जीमूत कहि द्वादस लिला कर भाखि। तेरह को उद्दाम कहि चोदह को सख भाखि ॥ ५२० ॥ पन्द्रह को आराम कहि सोरह को संग्राम। विदित नाम फनपति कहे सत्रह को सुराम ॥ ५२१ ॥ बैकुंठ अठारह रगन को कहत सबै मति धाम। रगन उनइस को कहत सात कंठ यह नाम ॥ ५२३ ॥ बीस रगन को सार कहि एकइस को विस्तार ॥ बाइस को विस्तार है तेइस को संहार ॥ ५२४ ॥ चौबिस को नीहार कहि पचीस मंदार। छब्बिस को केदार हैं सताइस साधार ॥ ५२५ ॥ सत्कार अट्ठाइस रगन को बानतिस को संसकार ॥ सस कहे गरुड़ लहे छंदन के विस्तार ॥ ५२६ ॥ तीस रगन माकुंद है इकतिस को गोविन्द। बत्तिस को संदोह यह भाख्यो नाउ फनिंद ॥ ५२७ ॥ दोइ नगन मन तीन से तेतिस रगन बखान। सस कहै अमपति लहे दंडक को परमान। ५२८ × × ×
शुद्ध छंद के बरन को जो करता कवि होत। सुख सम्पति दिन दिन कात कवि के छन्द उदोत। ५२७ इति—श्री कवि रघुनाथ बंदीजन काशी विरचित जगत मोहन ने छंद शास्त्रे मात्रा वृत्त, वर्णवृत्त, मालावृत्त, दंडक, षष्टमोऽध्याय चतुर्थ लघु मंत्रः ४ ॥ शुभमस्तु

अष्टो के सारह वर्ण संख्या भेद विचार— ब्रह्मरूपा, गजतुरग, बानतो, भाव-मतो, सुचित्र, चपला, पंचचामर, ललिता, जयानंद, चित्रकला, सरमाला, मंगल मंगना, कोमल, लतिका, वर विलम्बित, मदनललितका, चकिता, गरुड़ मारुत, गंगाधर, लक्ष्मो पति, अचल धृति, सर्व लघु उदाहरण, प्रति अष्टो, पृथ्वी, वंसपत्र, मनहरिणी, मंदाक्रांता, करिहरि, कांता, त्रिलेखा भाराक्रांता, हारिणी, पद्मा, मालाधर, वसुधरा, धृति (१८ वर्ण) लघु धृति, नंदन, मुक्तामाला, वाचाल, कुसुमित लता, हरिणप्लुतता लक्षण, अश्वगति, हंस, देवमुनि शार्दूल, चपल, मणिमाला, पंकज, चक्र, शिवचक्र, सिद्धोर, हरिनियम, शार्दूलललित, मनहार, ललित पदा, कमलपदा, कमलधरा, श्रीकेश, मंजरा, केलीचंद्र, हरनी प्रिया, रसकोश, रस रास, अतिधृति (१९ वर्ण), मेघस्फुरित, छाया, चमर विमल पुष्पदास, विंद, मकरंदिका, मणिमंजरी, समुद्र, तरल लोला, भूपति मालती वासुदेव, शशिकला, शंभू शशिधर सुरसा, तुला, कृति (२० वर्ण) वंदना, गुंजित र, चित्रवृत्त, लोकराय, शोभा, सुलक्षण, मत्तइभविक्रीड़ित अश्ववार, कोमलता, उज्ज्वलमुद्रा पुट, गतागत, चित्रमाल मुनिशेषर

Subject—(१) पृ० १ पृ० ५ तक—गणागण भेद वर्ण, द्विगण विचार, प्रस्तारविधि शुभाशुभवर्ण देवता आदि का वर्णन है।

(२) पृ० ६ से पृ० १६ तक—आर्या प्रकरण। छन्दों के लक्षण:—विपुला, जघन पथ्य, चपलागाह, आर्या गाह, विगाहा, उगाहा, परजाय, गोती, उपगीती,

आर्य्या गीतो, आर्य्या गीतो गीतो, आर्य्योउद गीतोगीतो, गाहिनी, सिंघिन, पेवा, गाथा, विगाथा, चवगाथा, उपगाथा, मालगाथा, वैतालो, उपछंदसिका, अपातालिका, दक्षिनोतिका, दाक्षिनोतिकापरोति, दाक्षिनोतिका तृतोय भेद उदोच वृत्ति, द्वितोय तथा तृतोय उदोची भेद, प्राचवृत्ति, द्वितोय प्राच्य, वृत्ति, तृतोय प्राच्य वृत्ति, प्रवर्तक, द्वितोय, तृतोय, प्रवर्त्तक, वैतालिक, श्रौप छन्दसिक, अपतालिक, अपरांतिका, परांतिक, द्वितोय परांतिक, तृतोय परांतिक प्रवृतक परांतिप, द्वितोय परांतिक, तृतोय प्रवर्तक परांतिका, इति वैतालो समाप्त ।

(३) पृ० १७ से ५३ तक—पथ वक्र लक्षण, पथ्या वक्र, विपरीतादि वक्र, चपला वक्र जुग्म विपुला, सैतवो विपुला, भा विपुला, साता विपुला, मा विपुला, चरनाकुलक, उपचित्रा चित्रा, विश्लोक, वन वासिनो, मात्रा समक लक्षण, हावृत, दुखंड समाज, प्रथम अनंत, उत्तरदल माला, अंता लक्षण, अनंग कोड़ा, रुचिरा, द्रुवरा समाज, चरना, अभिजात, ह्रस्वर्प, चुलिआला, सोरठा, पंचा, नंदा, वरहंसा, अषाढ़, श्रवणसुधा, सुधा, चैवोला, गमक, रसवाम, कांता, मधुहार, दोपक, अहोर, उकछा, दसहाकिल, हारमुख, करो, जैकरो, पम्कलिगा, अरिल्ल, सतोस, मतोल, रतोल, गंधान, करिल्ल लघुदोपक, पवगम, मदन दोपक, महादोपक, निसानोल, होर छंद, रोला, काव्य, गमनंग, रामगोतो, हरगोतो, अनुगोतो, मन्दगोतो, दोवे, उल्लाला, मरहट्टा, चौपैया, लघुपद्मावतो, सवैया, धत्ता, धत्तानंद, द्वितोय धत्तानंद, त्रिभंगो, पदुमावतो, दंडक, अनहरना, द्रुमिला, लोलावतो, बरवीर, वीरवान, पंचवदन, झूलना, मैनहरन, मदनहरन, छप्पय, कुंडलिया, रड्डाभेद, नंदारड्डालक्षण, राडसेन, चारुसेन, भद्रा, तालंकिन, मोहनो, द्वितोय मोहनो, राजकुंडनो, घनाक्षरो, द्वितोय यति, चतुर्थ यति चरना घनाक्षरो ॥ इति मात्रा ख्यान

(४) पृ० ५४ से पृ० ६ तक—नाम सर्व गुरु सर्व लघु पर्यंत गाथा, दोहा, छप्पै, मंत्र ।

(५) पृ० ५५ से ८२ तक—वर्णवृत्त, श्रोछंद लक्षण, मुक्ती सार छंद, मध्या भेद, तालो सोनारो, समा मनोम्या, मृगो प्रिया, प्रवक सेना, मृगेन्द्र, इदमंदिर, दिग कमल, वत्सपरजापधारी, गिरा क्रोड़ा, ऋद्धि, सुमतो, सुगतो, सुमुही, मधु, वल्लो, पद्म, कंदलो, जति, प्रतिष्ठा, समोहा, पंक्ति, हारो, सतो, त्रिपतो, नंदा समतो, गायत्रो, सुमतो, विजोहा, शशिवदन, मैथानक, मुकुला, तनमध्या, सुमतो, उष्णिक, प्रथम गंधर्वा, हरिना परिपाप, सगुन विलास, सुजस प्रकाश, करहंच, मदलेखा, सता कुमारलतिका, हंसमाला, भ्रमर माल, कलिका, चित्रा, श्रुति, उष्णिक, अनुष्टुप, विद्युन्माला, मलिका, वितान, कमल, मानव क्रोड़ा, चित्रपदा, हंस रुरुण, नाराचिका, केतुमाला, क्षमा, मालतो सुंदरो, रूपमाला, मुग्धविलास,

पाटला, यमल कमल, भुजंग शशि भृता, भद्रकाय, बृहती, उत्सुक, अच्युता सुग्ला, महती, सुवसा

सुलक्षण, पंक्ति, योगी, मयूरशालिनी, संयोगी, रुक्मावती, मुक्तादीपक-माला, वक्ता, उपस्थिता, मनरंगा, बंधुकाय, अमृतगती, समुपस्थित, मौक्तिकी, पद्मिनी, सुसुमी, सुविरती, मालती, अमृतगती, सुमुखी, चपला, त्रोटक, मोटक, ग्राही, अच्युतसखा, दोधक, सुमती, मौक्तिकमाला, उपस्थिता, सैनिक, भद्रिका, वृता,

(६) पृ० १८३ से पृ० ८६ तक—स्वागता, भ्रमर विलासिता, सुश्री, माया, शालिनी, बंधुपासुमुखी, भंगमाला, सदा उपस्थिता वरमति, उपचित्रा, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा। इति प्रस्तार विधि।

उपजाति चतुर्दशनाम तथा उदाहरण—कीर्ति, वानी, माला, साला, हंसी, माया, जाया, वाला, भद्रा, भद्रा प्रेमारामा, ऋद्धि, बुद्धि, जगती भेद—विद्याधर, चंद्रवर्त्म, सुवंश्या, इंद्रवंसिका, कांती जलधरमाला, मौक्तिक दाम, तोटक, मोदक, कमलविलासिनी, द्रुतविलंबित, कुसुमविचित्रा, भुजंगप्रयात, स्राविणी, रानीवली, प्रियंवदा, मणिमाला, ललिता, चेटिका, प्रमिता, पुंडरीक, महेन्द्रवंशा, वंशस्थविका, पतिश्रुति, श्रुति, जलधार माला, नवमालिनी, मालती, गौरी, ललित, सुचित, द्रुतपदस्थिता, प्रहर्षिणी, रुचिरा, माया, मंजुभाषिणी, मंजुलक्षण, चंद्रलेखा, रुचिमोदक, रुचिलक्षण, नलिन लक्षण, निकुंड, नेमा, मनकनिका, विद्युल्लता, कौमुदी, तारक, कंद, पंकावलि, मृगेन्द्र, चंडाल, कलहंस, मानवक, द्वीपद, सर्वांगी, गौरीधर, वनलता, अनंदा, सुवर्त्तक, अलाला, रम्या, लक्ष्मी, असंबाधा, बाधा, अपराजिता, प्रहरणकलिका, वसंततिलका, इंदुवदना, लोला, अलोला, कल्लोला, मध्यक्षमा, कुमारी, प्रमदा, उपचित्रा, वासती, सामंत, नंदी, लक्ष्मी, भद्र, उचित, सुचित, चक्रपद, राजरमणी, मंजरी, चंद्रमाली, वसंत सुदर्शन, मणि कटक, दरदुर, कंचिठका, सारंगिक, मंडुका, तुन चामर लक्षण पंचानन, चित्तराज, निशुपाल, भ्रमरालसी, चन्द्रप्रभा, अरविंदक, मणिभूषण, ऋषभ, अमलिनी, मालिनी, चन्द्रलेखा, प्रभद्रकेश, पलाल, शुकमाला, सुदर्शन,

अतिकृति (२१ वर्ण) स्रग्धरा, मुनिवरा, चित्रलतिका, कांवीत, वन मंजरी, ललित तुरग पद सब, ललितविक्रम, गति कंद, महेश्वरी, नरिंद, आकृति, भद्रा, कला, मदिरा, महा स्रग्धरा, वनहंस, मदनसा-हंसी, केकनी, प्रदीपा, अमी प्रकाशमहाफल, विकृति (२३ वर्ण) वाजी वाहन, हंसगति, तारंगमालिका, कालिका, सबोसुधा, कामकला, शारदा, सुंदरी, वागीश्वरी, कामिना, मत्तकरी, ऊर्मि, सवगामी, दीपक संस्कृति॥ २४॥

(७) पृ० १८७ से पृ० १९० तक—सुतन्वी, दुमिला, किरीटो, हंसपदा, मदनश्रावक, वैकुंठ धाम, लवंगलता, कुमार घनाघन, भुजंगो, पति कांति, (२५) चंद्रिर कोचपदा, चांदिर, विशदपद, सुरेश्वर, परविदमुखो, कला कुशला, पला लक्षण, भारत्र लक्ष्मी पति, देव देवा, उत्कृति, (२६) भुजंग, विजृंभित, वाह, ऊर्म्मिलिनो, बनलतिका, मकरंद, मौक्तिक, किशोर, रत्नकांचो।

(८) पृ० १९१ से अंत तक—विकसितकुसुमा, कर, ललिता, त्रिभंगी, सिरोरत्न सालूर, मनि निकर, मुहित, भावविलास, ललितवित, कणिका, इन्द्रगन, लहरिका, विहारी, मनिवर ललित, चित्रमय, लीलावती, मालवृति सम्पूर्ण, अथ दंडक, पानी उदाहरण, वर्ण बख्या, दंडक विभेद लक्षण शुद्ध छन्द वर्णन को बड़ाई। ग्रन्थ समाप्ति।

No 326(*c*). Jagata Vimohana by Raghunātha Bandījana of Kāsī. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—11 × 5⅞ inches. Lines per page—10. Extent—280 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhinagā, District Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः प्रभु को आसिरवाद दै हरष भरी यह प्रीति। प्रभु आगे लाग्यो कहन राजनीति की रीति ॥ १

कौन देश है को समै को वैरो को मित्त।
यह विचार सब दिन करै होत भोर हो नित्त। २
सहसा काम न कछु करै करै तो करै विचार।
सो सगरे पासर परे जीतै सकै न हार ॥ ३
साम दाम अरु भेद जुध हैं ये चारि उपाय।
अति अडोल के चित्त में राखै सब दिन छाइ। ४
प्रति पालै कुल को धरम पालै द्विज अरु दीन।
कृपा सहित तिनसों मिलै आवैं जे परवीन। ५
विथा सुनै जन दीन को आपु श्रवन मन लाय।
वाको करै सहाय सुभ करिकै चारि उपाय ॥ ६

End—त्यागिवो त्यागवे जोग परै अरु संग्रह जोग तजो नहि जाई। प्रीति प्रतीति को भीति बढ़ी कछु रीति सनातन की चलि आई। पाहन पूरित देखि मराल चले तजि मानस द्वार राई। सो प्रगट्यो मुकता किन आपने हंस चुगै चलि दूरि ते आई। १। मानस सेइबे जोग सदा तुम सेव हंसन को समुदाई। जो हम दूरि बसे विधि के बस सो कछु भेद कह्यो नहि जाई। पाहन कंठ फंसे

कबहं वह सोचि सदा चब लौं डरपाई। सो प्रकटो मुकता किन चापने हंस चुनैं चनि दूरते चाई। २। चैन नहीं पल एक तजे नित मानस होत मराल कैा प्यारो। पीनस जोग वियोग तें चीनता होत सदा जिय माह विचारो। दानि सिरोमन दै मुकता हल चाश्रित की विपदा हटि टारो। सेइबो हंसनि को जो चहो तुम पाहन चापने दूरि निवारो। राम राम राम—इति

Subject—पृष्ठ १ से १३ तक राजनीति वर्णन, पृ० १४ से २४ न्याय वर्णन, पृ० २५ से २८ महाराज मानसिंह चैार द्विजदेव के कवित्त।

No. 926(*d*). Kāvya Kalādhara by Raghunātha Bandījana of Kāśī. Substance—Country-made paper. Leaves—131. Size—8¼ × 4¼ inches. Lines per page—10. Extent—2,600 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Mahārājā Rājendra Prasāda Siṁha, Bhinagā Rāja, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ श्री सीतारामाभ्यांनमः॥ कवित्त॥ चरथ धरम काम मोक्ष कहै रघुनाथ चारिदा पदारथ सहज ही में लहिए। रिधि सिधि बुधि की विरिध होत दिन दिन विद्या चैार बल बेवसाय जेता चहिये। संतति बढ़ति जग कीरति पढ़त मुख पानिप चढ़त चारु मोह महा गहिये। तरन के सुत की बिसाति है न कछु जहां गुर के चरन की सरन जाइ गहिये॥१ दोहा। प्रथम मंगलाचरन में गुरु को कीन्हो ध्यान। चब कीजत श्री कृष्ण को करता सब कल्यान। २ कवित्त चन्हाइ के चाइ खरो भयो तीर त्यैां फैलो समीर सुगंधन मे च्वै। गाइ न जात निकाई सरूप को पूरो प्रकास मही नभ को छ्वै। चैार कहां सैां कहैं रघुनाथ विलोक बिलोकनि वामन को वै। इन्द्र सैा च्चाज गोविन्द बन्यो री रह्यैा सिगरो चंग पांखि भई द्वै। ३ काछु कछे पट पीत की सुन्दर सीस धरे पगिया रंग राती। हार गरे विच गुंजन कैा झुलफैं छुटी छोर सो छै हरी काती। खेलत ग्वालन सों रघुनाथ ज्यैां डोलैं गलीन में री उतपाती। त्यैां रंग सांवरो होता न ईठ तो काहू को दीठि कहूं लग जाती। ४

End—चकित हाव के लक्षण—चागे पिय के भीत तें जहं मन भ्रम ह्वै जाय। चकित हाव तासों कहत सकल कविन के राय। उदाहरण—देत दोहनी तीय कर गहत मही हरि चाइ। चैांकि छांडि कर सों दई चक टक रही लगाइ। केलि हाव के लक्षण-जहं तिय खेलै पीय संग केलि हाव सो जानु। कहे हाव भरतादि इमि कवि कुल बुद्धि निधानु। उदाहरण—घनस्यामै घनस्याम है राधा दामिनि रूप। चढ़े हिंडोले झूलत पावस किय चनूप। बोधक हाव लक्षण-

गुप्त भेद करि भाव जहं करै क्रिया मन मांह। बोधक तामों कहत हैं सकल कबिन के माह। उदाहरण—ले श्री फल कल धौत कर तियहि देखायो स्याम। भानु चित्र मसिबुंद दै रही मौन ह्वै बाम। इति श्री कवि रघुनाथ बंदी जन कासी बासी विरचिते काव्य कलाधरे हाव बर्ननं षोडसो मयूष ग्रंथ काव्य कलाधर समाप्त शुभ मस्तु दस्तखत श्री भैया कालीप्रसाद सिंह

Subject—१—५ पृष्ठ वन्दना, राजवंश वर्णन, काशी वर्णन,

पृ० ६—३० रस वर्णन, दूती वर्णन, आलम्बन, उद्दीपन, ज्येष्ठा, कनिष्ठा, मुग्धा, मध्या प्रौढ़ादि वर्णन,

पृ० ३१—५२ नायका भेद, मुग्धा मध्या प्रौढ़ा भेद, क्रिया विदग्धा, वचन विदग्धा, ज्ञात यौवना, सुरत आदि वर्णन,

पृ० ५३—६६ गर्विता वर्णन, खंडिता, अन्य संभोग दुखिता, मानस भेद वर्णन, स्वकीया धीरा, अधीरा, वर्णन,

पृ० ६७—७३ परकीया, धीरा अधीरा, मुग्धा मध्या प्रौढ़ा वर्णन, सामान्या वर्णन उपेक्षा अन्य संभोग दुखिता वर्णन

पृ० ७४—९४ मुग्धा स्वाधीन पतिका, सामान्या, अभिलाष, प्रोषित पतिका, चिन्ता, प्रलापादि व्याधि, उद्वेग, उन्माद, जड़ता, आगत पतिका,

पृ० ९५—१०० अनुकूल, दक्षिण, शठ धृष्ट वैसिक, धीर, ललित, धीरोदात्त,

पृ० १०१—१३१ रोसब, क्रियावचन, लक्षिता, विदग्ध नायिका भेद वर्णन, भाव, अनुभाव, सभेद, हाव वर्णन सभेद।

No. 326(*e*). Rasika Mohana by Raghunātha of Kāśi. Substance—Country-made paper. Leaves—81. Size—8 × 4½ inches. Lines per page—16. Extent—960 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1796 or A. D. 1739. Place of deposit—Babu Padma Baksha Simha, Tāluqedār, Lavedapur, District Bahraich.

Beginning—श्री गणेशायनमः। विसेश्वरो षीजते॥ गनपतेनमः॥

दोहा—सुफल होत मन कामना मिटत विघन के दुंद। गुन सरसत बरसत हरष सुमिरत लाल मुकुंद॥१॥ कवित्त अरथ धरम काम मोक्ष कहैं कवि रघुनाथ चारित पदारथ स.ज हो भै लहिए। रिधि सिद्धि बुद्धि को विरिधि होत दिन दिन विद्या ओर बल वेवसाव जेतो चहिए। संतति बढ़त जग कीरति पढ़त

मुख पानिप चढ़त चह मोह मद्य नहिए। तन के मुन को बसाति है न कछु गुरु के चरन को मरन जहँ रहिए। २ दोहा—प्रथम मंगलाचरन मैं गुरु को कीन्हों ध्यान। अब कोजत श्रो कृ ग को करता सब कल्यान। ३ कवित्त-न्हाइ के श्रंग बरेर भयो तोर सो फैलो समीर सुगंधनि मैं ब्वै। गाइ न आनो निकाई मदन को पूरो प्रकास मह्यो नभ को छ्वै। प्रोर कहां लैाे करौं रघुनाथ विलोकि बिलोकनि बामनि को छ्वै। इंदु सो आज गोविन्द अन्यो री रह्यो सिगरो अंग पांवि मई है। ४

End—प्रहर्षन लच्छन—उत्कंठा जो अर्थ है बिना जतन जो सिद्धि। सुकवि प्रहर्षन कहत हैं अलंकार मैं सिद्धि। १७१। उदाहरन—बासर बास के तोरथ को रघुनाथ सुनैा अबकी लखि भारो। गांउ के लोगन संग सबौ सिगरो परिवार लै सासु सिधारो। आपु अकेलो रहो दुलही कहिए अब भाग को बात कहा री। जोव को भावतो देवर जो घर मैं रह्यो जो घर को रखवारो। २४६ द्वितीय प्रहर्षन लच्छन—जहं मन वांछित अर्थ सो अधिक परापति होइ। द्वितीय प्रहर्षन कहत है बुद्धिमान सब कोइ। १७२ उदाहरन—आज अन्हात मैं देखो कहं मन मैं मदनमोहन को रूप बसायो। प्रेम पगे पति आजु रहो घर चातुर एक बसीठ पठायो। हे रघुनाथ कहा कहिए मनमोहन हू मनमोहन पायो। बातें लगायो सपा लखिको उनसो मिलिवे को संदेसोई आयो।

त्रितीय प्रहर्षन॥ जतन करत जहं सिद्धि को लाभ होइ साच्छात्। कहत प्रहर्षन तीसरो भेद सुमति अवदात। १७३

Subject—पृ० १ से ७ तक—प्रार्थना, शृंगार वर्णन, विषय अलंकार वर्णन, राजा व कवि का वर्णन,

पृ० ८ से १६ तक—उपमा, अनन्वय, उपमानोपमेय, प्रतीप, रूपक, परिनामालंकार वर्णन,

पृ० १७ से ३३ तक—उल्लेख, स्मरण, भ्रान्ति, सन्देह, अपन्हुति, उत्प्रेक्षा, अपन्हुति, अतिशयोक्ति वर्णन,

पृ० ३४ से ४२ तक—तुल्य योगिता, दीपक, प्रतिवस्तूपमा, दृष्टान्त, पदार्थावृत्ति, निदर्शना, व्यतिरेक, सहोक्ति वर्णन,

पृ० ४३ से ५३ विनोक्ति, समासोक्ति, परिकर, परिकरांकुर, श्लेष, अप्रस्तुतप्रशंसा, प्रस्तुतांकुर, पर्यायोक्ति, व्याजोक्ति, आक्षेप वर्णन,

पृ० ५४ से ६५ तक—विरोधाभास, विभावना, विशेषोक्ति, असंभव, असंगत, विषम, सम, विचित्र, अधिक वर्णन,

पृ० ६६ से ८१ तक—सूक्ष्म, अन्योन्य, विशेषोक्ति, व्याघात, कारमाला, एकावली, मालादीपक, सार क्रमिक, पर्याय, परवृत, परिसंख्या, विकल्प, समुच्चय, कारकदीपक, समाधि, प्रत्यनीक, काव्यार्थापत्ति, काव्यलिंग, अर्थान्तर न्यास, विकस्वर, प्रौढ़ोक्ति, संभावना, मिथ्याध्यवसित, ललित और प्रहर्षण का वर्णन।

No. 326(*f*). Rasika Mohana by Raghunātha of Kāśī. Substance—Country-made paper. Leaves—42. Size—12 × 6 inches. Lines per page—48. Extent—1,260 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1803 or A.D. 1746. Date of manuscript—Samvat 1834 or A.D. 1777. Place of deposit—Ṭhakūra Digvijaya Siṁha, Tālluqedār, Village Dikaulia, Post Office Pisawq, District Sītāpur.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ रसिक मोहन ग्रंथ लिख्यते॥ दोहा॥ विघन हरन दुरमति दरन करन सकल कल्यान। शिव शुभ श्री गननाथ को सब सुषदायक ध्यान। श्री गुरुदेव मुकुंद की लहि कै कृपा सहाइ। करिबे को पाई सकति ग्रंथनि को समुदाइ। ब्रह्मा को सुत मानसिक गौतम परम प्रसिद्ध। ताके कुल को दमि सिर प्रगट भयो तप सिद्धि। वेद कंठ चारो करे अट्ठारहो पुरान उपनिषदौ षट शास्त्र सब औ सब कला निधान। बरनि कहां लगि कीजिये करामाति समुदाइ। धोती लिये अकास में जाकी सुरवन वाय। कुल में कोट मिश्र के उपजे मंसाराम। जापै राषत निज कृपा आपु राम सुष-धाम। कवित। आजु महि मंडल में कहै कवि रघुनाथ जेते राजपूत राज पदवी धरत हैं। आपनो सभा में आपु आपने मुसाहेब सो बैठे आठो जाम ऐसो भांति उचरत हैं॥ वषत बिलंद ऐसो कौन पदमो पै भूप गौतम गुमानो के जो समता करत हैं। चाहैं जोई राम सो करै मंसाराम आजु चाहैं मंसाराम सो रामजु करत हैं।

End—हेतु अलंकार लछन। हेतु सहित जहं बरनिये हेतुवान गहि रीति। हेतु अलंकृत सुकवि सब तहां कहैं गहि प्रीति। उदाहरण। महत महातिम की पंचकोशी जात्रा कहै रघुनाथ मुनि मनि बचन महासो के। हरष पागे अनुरागे बड़भागे लोग नगर बसैया सबै जोग भोग निर्भय बिलासी के। गंदसे तागुन में फिरत पास पास भये मालाकार युवा वृद्ध बालाबाल काशी के॥ अपरं॥ परम असंक लंकपति मेरो बिनै सुनौ पू पारावार कोप हारिन भय भयो। आवत बसंत ज्यों ज्यों बन उपवन सब रघुनाथ हरो भयो फूलि कै करो भयो। करिबे जो है सो अब कीजै मंत्रि मंत्रिन सो नगर बसैयन के त्रास को दूरो भयो। तोछिन विपति के हरैया राम ताके आगे उबराइये छन अभोछन परो भयो। इति

श्री रघुनाथ बंदोजन काशी वासी विरचिते काव्य रसिक मोहने उपमादिक अलंकार वरननं संपूरनम। किलो रसिक मोहन सुमग ग्रंथ सुकवि रघुनाथ। चित्र चित्र काशी नृपति के कहे विशद गुन गाथ। अलंकार लछन सहित लछ सहित सुविचार। करि कवित्त रसिकन लिये दये सुफल निधारि। इति॥

No. 327(*a*). Mānasadīpikā by Raghunāthadāsa Vaishṇava. Substance—Country-made paper. Leaves—118. Size—16 × 12 inches. Lines per page—44. Extent—6,490 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1909 or A.D. 1852. Place of deposit—Paṇḍita Rama Shankara Vājapeyī, Village Bahorikā Vājapeyī kā Purawā, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ मानसदीपका संकावली लिष्यते॥ तत्रादो मंगलाचरणम्। दोहा। परशुवरनि संपति भरन अघ दर दरन गनेश। विघन हरन मंगलकरन राषहु शरन हमेश॥ एक रदन करिवर वदन सिद्धि सदन मुद दानि। मदन कदन नंदन जपहु जगवंदन जिय जानि। सिंदुर सह सिंधुर वदन रदन विशद द्युति भांति। ईश्वर कवि कवि वो निरषि रवि पवि छवि दवि जाति॥ अथ संक्षेप तो राजवंश वर्नन॥ हरिपद छंद॥ परम तपस्वी तेजस्वी वर किट्टू मिश्र उजागर। हुते वेद वद वंदनीय शुभ रूप्य सुयश के सागर॥ गोतम गोत्र सुपात्र पोपपद पंकज में सिर धरिकै। दये ग्रामवसु विशति जिनको नृपवनार छल करिकै॥ क्यों छल कियो कैान थल कैसे कैान लह्यो फल भारी। बहुरि मिश्र जु को प्रभाव अरु वंशावली सुधारी॥ यह सब कथा कहाँ लगि कथिये सुनहु सुजन सुषदानी॥ काशिराज चंद्रिका ग्रंथ में सद विस्तार बषानो॥

End—नाम प्रताप सदोदित जागा। जाके डर कलि को तम भागा। चाहत देव चरन अनुरागा। जाको जस श्रुति गावा बहुत जन्म इत्यादि लिखि आये। जीव के जन्म नाहीं होत। या चारि अवस्था में जन्मरूप भेद पाया जाता है॥ जैसे बाल वृद्ध इत्यादि॥ कोई केवल लड़िका देषे होइ फेरि दूसरी अवस्था में जो देषे सो नहिं पहिचानैगा ओर जन्म संस्कार का नाम है ओर चारो जुग का जो भेद कहते हैं सो प्रमान तो समान जानव। याही ते धर्मन में विरोध भासै है जैसे सामान ओर विसेस सो सब मतन में सामान्य विसिष्ट पायो जात है ओर विसिष्ट में अनेक विरुद्ध देषो परे है जैसे मांस भक्ष में विंध के दक्षिन वासीन को आज्ञा उत्तर वासी पतित होत हैं हनन धातु तो जीव में चरितार्थ नाहीं होत

जैसे घट मठ आकास का नाम पावत है याही ते जीव व्यापक जान्यो जात है और जन्म सूक्ष्म स्थूल सरीर करके बहुत भासत हैं जैसे चौरासी लक्ष योनि जन्म परमित कियो सो संसार और काल को धर्मनि को मुख्य जानिवो साम पायो। दो०। मान जुक्त मानस सुपद संका रहित उदार बोध रहित निज मोहवस संका करत अपार॥ मानस मान अनेक जुत मानो मन मम नाहि मम साहस संकावली क्षमव साधु महि माहि॥ इति सप्त कांड संकावली संक्षेप शुभ मस्तु॥ लिखत नन्दकिशोर॥

Subject—तुलसीकृत रामायण सातों कांडो पर संक्षेप से शंका का समाधान और अंत में कठिन शब्दों का कोष।

No. 327(b). Mānasadipikā by Raghunāthadāsa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—115. Size—$13\frac{1}{2} \times 7\frac{1}{3}$ inches. Lines per page—32. Extent—4,600 Anushṭup Ślokas. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1914 or A.D. 1857. Place of deposit—Bhaiyā Jadunātha Siṁha Raisa, Rahuā, Post Office Bauṇḍī, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—No. 327 (a) के अनुसार।

End—गुहने विचार कियो कि बैर भाव ते जातु हैं यातें ज्ञाति लोगन को बोलाइ कै कहत भयो भरत ते संग्राम करि चांदनी की नाई जस ते चौदहों भुवन सपेद करि हों॥ वहां सगुनियन कह्यो है कि रारि न ह्वै हैं भरतजू रामचंद को मनावने जातु हैं तब गुह भरतादि ते मिलि परमानंद पायो। अरु कौशिल्यादि मातु असीस देय सत लाख वर्ष जीवे को भाव कि किरति जुग जुग रहो॥ अरु निषादहि लागू निषाद के कांधे पर हाथ धरे भरत जू गंगा तट पहुंचे स्नान भय सी कृत विस्तार बरषे छंद श्री काशी पितु को आज्ञा पाइ धो। गजराज कथनिसम मेल मेलाइ चौपाई सरल अरथ आखर की थोरो। सहित प्रभाव सांत रस बोरो दुर देस टरसावन वारो ऐन कसम बिधु बिमल तमारो॥ इति श्री जानकी पति पदारविंद मकरंद मिलिंदाय मान मानस रघुनाथदास कृत मानस दीपिका वा विश्राम अंग सप्तम प्रकाशः॥ ७॥

No. 328(a). Harināma Sumiranī by Raghūnathadāsa Rama Sanēhi of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—26. Size—12 × 5 inches. Lines per page—40. Extent—780 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—

Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Rāma-Śaṅkara Vajapeyi, Village Bahorikā, Vājapeyī kā Purawā, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री महाराज महंत रघुनाथदास रामसनेही कृत हरिनाम सुमिरनी ग्रंथ लिष्यते ॥ दोहा ॥ राम नाम को वंदना करौं प्रथम सिर नाय जासु कृपाते सिद्धि सब भये सुषद समुदाय ॥ श्री गुरु देवादास के चरण कमल धरि माथ । श्री हरिनाम सुमिरनी बरनत जन रघुनाथ ॥ कुंडलिया ॥ प्रथम जो हरि भजन करो वैष्णौ पंथ प्रकाश । सोई पकरो रघुनाथ के श्री गुरु देवादास ॥ श्री गुरु देवादास वास रह्यो अतिथ गंज में विप्र वपुष मद त्यागि भये अच्युत परज में । रंज परे नर बहुत होत त्यागो पुर सुत में । किरकत सोई सुष परद तजे जो विभोके पंथ में प्रथमहि रामप्रसाद के रहे सिष्य में सिष्य । रामसनेही संत मिलि राम नाम दियो लिष्य । राम नाम दियो लिष्य नाम परभाउ दिढ़ायौ रहत बढ्यो विस्वास वस्तु सब ताते पायो । ताते तिन्है रघुनाथ मिन्यो सतगुर संश्रित मैं । दत्तात्रै को रीति रहनि निज तजो न प्रथमै ॥

End—दोहा—सिकत करै कोई षांड़ को धरै न मुष अभिराम । लहै स्वाद रघुनाथ किमि तिमि सुमिरन बिन राम ॥ संकेतन परिहास युत अस्तोभन हेलन्त जपै नाम रघुनाथ सोउ दलै पाप अमितन्न ॥ सोई ग्यानो ध्यानी सोई दाता सूर सुजान । अति पवित्र रघुनाथ सोइ जो सुमिरै भगवान ॥ सठ असिष्य विष पाठ को तिन्है न कहिये येह । राम उपासिक सो कहो जो सुनि उर धरि लेह ॥ श्री हरिनाम सुमोरनी मधि कछु हरिका ध्यान । बरनत जन रघुनाथ निज उकि सहित अनुमान ॥ दीर्घ कुंडला छंद ॥ सीस स्याम गिरि श्रृंग सम मुकुट सरिस द्रुम दिव्य । मेचक कच उतरे मनहुं अहि के छौना सिष्य ॥ अहि के छौन सिष्य चन्द्रमुष अमृत हेता । सिषि सम कुंडलोत रवि रहे मग सकुचि सचेता ॥ सोहत मोति रघुनाथ दंत मनि मनहुं भकोरा अरुण फूल जुत कियो किधौं उर प्रभु वोरा ॥ प्रभु के लोचन चपल मनहुं जुग षंज न लरहीं । बीच घ्रान सुक मफन बैठ जनु धर हरि करहीं ॥ विद्याधर कर लोभ रह्यो तकि तेहि दिसि थोरा । किधौं मुक्त मनि भौम भनत कछु उडुपति तोरा ॥ कमल कोस मुष मध्य रसन जुत दसन सोहावै । मनु वज्रन जुत तड़ित परत तलपि जब मुसक्यावै ॥

Subject—राम नाम की महिमा और राम जी के रूप का उपमा सहित वर्णन ।

No. 328(*b*). Dohā Kavittaādi by Raghunāthadāsa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—54.

Size—$7\frac{1}{2} \times 3\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—14. Extent—380 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1949 or A.D. 1892. Place of deposit—Bhaiyā Ṭhākura Jadunātha Siṁha, Raisa of Rehuā, Post Office Baunḍi, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री रामौ जयतिः अथ श्री रघुनाथ दास जी कृत दोहा कवित्त आदि लिष्यते ॥ डों तन मन ते रघुनाथ जन जानि लेहि रे नीच मीच रही मड़राय शिर राम रर्राहि हिय बीच ॥ १ ॥ अस सहजै वनि जात जस छंद प्रबंध कवित । तस न रहत रघुनाथ कश रामचरन वश चित्त ॥ २ ॥ मन हमार रस एक अस रहत रोज पर रोज । पद सरोज रघुनाथ जन जप तप और न प्रोज ॥ ३ ॥ जप तप संजम नेम व्रत जोग जाग वैराग । फल सब कर रघुनाथ मल रामचरन अनुराग ॥ ४ ॥ जन रघुनाथ हमार मन रहि रहि अति अकुलाय । पाय हाय ऐसेहु जनम राम भजन विन जाय ॥ ५ ॥ राम नाम रसना रसनि फसति अपन करि लेति छन छन जन रघुनाथ मन मढ़त राम सन हेत ॥ ६ ॥

End—कलिकाल कराल में आठौ जाम रहे पलते मन वो दहि रे । सिया राम कथा न जहां व तहां है सब शास्त्रन में वकवादहि रे । रघुनाथ निरंतर काहे न लेत हो राम के नाम को स्वादहि रे ॥ कोसन जात पयादेइ पांव विना पद् त्राण लिए सिर मोटें । रामकृपा गजवाजि अनेक चढ़े अब द्वार पगारन लोटें । द्वारहु होत न देत घढ़े सबते अब पाय के पायन लोटें ॥ जन रघुनाथ गरीवन संग करो त्यों करो दशरत्थ के ढोटें ॥ सोय राम कथा को कहा करें रटें अपरें अपरें कछु और न भावै जो जौनु कहै सो तौनु कहै तौनु उठाय धरै सब ताखै सोवत जागत के अपनेम अहहि रघुनाथ महहिं अभिलाषै ॥ अवलोकत आठो जाम रहैं करुना कर राम कृपाल को आखें ॥ इति श्री श्री महाराज रघुनाथदास जी कृत दोहा कवित्त सम्पूर्ण लिखा संवत १९४९ जानकी शरण ग्राम मुजावलि ॥ इति ॥

Subject—राम भक्ति सम्बन्धी दोहे और कवित्त

No. 329. Karichikitsā by Raghunātha Siṁha. Substance—Country-made paper. Leaves—40. Size—8×6 inches. Lines per page—36. Extent—720 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1883 or A. D. 1828. Date of manuscript—Samvat 1920 or A. D. 1863. Place of deposit—Paṇḍita Janārdana, Village Bhiṭaurā, Post Office Biswā, District Sitāpura (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ करी को चिकित्सा लिष्यते ॥ दे॰ ॥ गणपति गुर गंगा गिरा गोविंद के पद ध्याय। कहौं चिकित्सा करी की औगुन चाउ चढ़ाइ ॥ गुन वसु वसु ससि भाद्र सित चतुर्दसी रविवार। करी चिकित्सा ग्रंथ के भयो तवहि औतार ॥ प्रथम जाति औ भेद कहि लच्छन रुप विचार। रुज निदान औषद सवे कहैा नकुल अनुसार ॥ चै॰ ॥ प्रथम जाति बंगाला जानैा। पेदा वारह तहां वषानैा। भातू गाछ आदि में कहिये। औ सोलोत दूसरा लहिये ॥ चित फाल्गुन तीसरे जाने। पत्रक चैाथ कुञ्जर मानैा ॥ मोरंग छठो सातवां ढाका। चीता नाम आठवां भाषा ॥ नव वारेका आटा जानि। औतिपाल दसशवां मनि मानि। फंदह लागं रहे पाला। है वर हैा माहो बंगाला ॥ दोहा ॥ मलेवार घनासिरो पैगु औ सौलान। कोह मेदिया जानिये दुगला फंद वषानि ॥ कहेउ नील नाम वहुरि वो गजपाल से गाथ। छै गज होय प्रधान मत वरनत है रघुनाथ। द्वादश बंगाला विषे औपट दछिन जानि। कहो अठारह जाति ये ग्रंथन को मत मान ॥

End—हथिनी को भूष की दवा हरिगीता छंद ॥ कुटकी पपदनि हींग होरा तुनु सुतो का लहैा ॥ औ वाइ घुंमा फूल मिर्चे सांवरी इन्द्रजव कहैा ॥ छाछि षीरासार गंधक पाव पाव यतो गनो असगंध नगैारी गुर मुलो मे पाव ये हैं द्वै मनो ॥ दोहा ॥ येक सेर जल षोरि गुड़ डारि कराह चढ़ाइ। तामें आटा उर्द को आधु सेर चुरवाय। फिरि सव औषद पोस कै डारि कराह उतारु। गोलो मासे सात को करि वरतन में धारु ॥ हथिनी को यह निसदो निन्ने मुषहि षवाव। भूप वढ़ै औ वलवढ़े रहै चढ़ाये चाव। हरि गीता छंद ॥ वत्तीस पहिले दूसरे छाछठि तिजे चैावन गिनैा। चैांतीस चैाथे मे कहे यकतालिसै पंचये भनैा ॥ वनचास छठयें सातयें चोवन अठें पत्तालिसा वेतालिसा नवये प्रकासा छंद हैा सुष जानिसा ॥ दोहा ॥ रिषि ससि विधि भुष छंद है नवप्रकास गुन गाथ करी चिकित्सा ग्रंथ में हरषि किये रघुनाथ ॥ इति श्री रघुनाथ सिंह कृते करी चिकित्सा ग्रंथे हाथी के दंत का रोग वथा के औ भूष करन पुष्टि करन ग्रंथ समाप्तः संवत १९२० लिषतं गनेस पंडित कृष्ण पक्षे तिथैा नवम्यां शनिवासरे समाप्तं ॥

Subject—हाथियों के रोग श्रैार उनकी श्रैाषधियां।

No. 330(*a*). Rukmiṇi Pariṇaya by Mahārāja Raghurāja Siṁha of Rewah. Substance—Country-made paper. Leaves—314. Size—$13\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—60. Extent—3,533 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—

Nagari. Date of Composition—Samvat 1907 or A. D. 1850. Date of manuscript—Samvat 1910 or A. D. 1853. Place of deposit—Mahārāja Bhagawān Baksha Siṁha of Amethi, Post Office Rāmanagar, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री रुक्मिणो वल्लभो विजयतेतराम् ॥ सोरठा ॥ जय केसव कमनोय चेदिय मागध मद मथन ॥ जय रुक्मिनो सु पोय जदुकुल कुमुद मयंक जय ॥ १ ॥ पंगु चढ़ै गिरि श्रंग, जासु कृपा मूकहु वदहिं। श्री मुख पंकज भृंग, सो माधव रक्षक रहैं ॥ २ ॥ वसहि रमा उर जासु वाणीसा मुष में रहें ॥ ध्यावत पूजहि जास जदुपति होहि प्रसन्न सो ॥ ३ ॥ छप्पय ॥ विघन हरन सुष करन दुष छरन ताप घरि। वन्दौं श्री गननाथ जोरि जुग हाथ माथ धरि। वन्दौं सरसुति सुमति देन कुलि कुमति विनासनि ॥ जगत जननि जन कृपा करनि परब्रह्म प्रकासनि ॥ अै। वन्दौं वारम्वार मैं पद पंकज सुषदेव के ॥ जेहि मुष निर्गत हरि चरित सब दुष काट्यो नर देव के ॥ ४ ॥ दुषित जगत के जननि लषि प्रगट्यो करन उधार ॥ श्री मुकुंद हरि गुर चरन वन्दौं वारहिवार ॥ ५ ॥ जासु कृपा पालहु मोह सम पायो परम विवेक ॥ हरि गुरु पितु विद्यानाथ पद वन्दौं वार अनेक ॥ ६ ॥ जो जग प्रगट पुरान वहु रच्यो करन जन पुत। व्यासरूप हरि को सदा वन्दन करौं अकूत ॥ ७ ॥ मम गति नहि ग्रंथन रचन पै कछु मति अनुसार ॥ वरन्यो रुकमिन परिनयो लहि गुरु कृपा अपार ॥ ८ ॥ सोरठा ॥ हरन हेत भुविभार प्रगट्ये हरि वसुदेव गृह ॥ कोन्है। चरित अपार गाइ गाइ जिहि जन तरत ॥ ९ ॥ × × × × ×

End—व्यास हिय आल वाल वोये वोज नारद जो वृह्म तत्व रूप पोय वाढ़गो यों सुहायो है ॥ अगम निगम शुद्ध संहिता पुरान पत्र द्वादश प्रशाखन ते फैलि छिति छवि छायो है ॥ भाषै रघुराज ज्ञान जोग आदि फूले फूल प्रेम फल पाके पुनि पक्षिव छुभायो है ॥ कामना पुजायन को हरि के मिलायन को जीवन को कल्पतरु भागवत भायो है ॥ २ ॥ चारिहु वेद पुरानन को मत संहिता अै। षट शास्त्रन पासे ॥ ग्यान अै। भक्ति विरागहु जोग जिते शुभ साधन को श्रुत भासै ॥ भाषत है रघुराज हुतै सिगरे उर आवत है अनयासे ॥ श्री मद भागवतै सुनतै भगवान करैं हियरे हठि वासे ॥ मूढ़ विहाल परे जगजाल डस्यै। कलिकाल भुजङ्ग कराले ॥ व्यापि विषै विषगो प्रतिरोम थके गुनि आकरि अैाषधि जाले ॥ भाषत है रघुराज सुनो न चले कछु अंत्रनि मंत्र न माले ॥ गारुड़ी भागवतै सुनतै उतरै विष वीसविसे ततकाले ॥ सोरठा ॥ मैं निजमत अनुसार रुक्मिन परिनय को करगो सज्जन करि सुविचार समुझि सुधित इह है सदा ॥ दोहा ॥ अति संक्षेपत भागवत जो मैं कियो उचार ॥ कहहि सुनै समुझइ जु कोउ तेहि नहि

यह संसार ॥ सोरठा ॥ उनईस सै। घरु सात भादैं। सित गुरु सतमी ॥ रच्यो ग्रंथ अवदात, रुक्मिन परिनय नाम जिहि ॥ इति श्री मन्महाराज कुमार श्री युवराज बाबू साहब रघुराज सिंहजू देव कृत रुक्मिणी परिणय संक्षेप भागवत वर्णनो नाम एक विंशोध्याय ॥ समाप्त ॥ मिती कुआर सुदी ६ संवत १९१० ॥

Subject—(१) पृ० १—१८ तक—प्रथम अध्याय । जरासिंध से युद्ध करने के पश्चात् कृष्ण का मथुरा निवास । (२) पृ० १९—३२ तक—द्वितीय अध्याय—कालयवन वध, और द्वारिका प्रवेश । (३) पृ० ३३—४८ तक—तृतीय अध्याय—द्वारावती वर्णन । (४) पृ० ४९—६१ तक—चतुर्थ अध्याय—बलभद्र प्रणय । (५) पृ० ५२—७१ तक—पंचम अध्याय । रुक्मिणी विवाह मंत्रणा । नारद गमन । (६) पृ० ७१—८३ तक—षष्ठअध्याय—कृष्ण गुणरूप चरित्र वर्णन । (७) पृ० ८४—९४ तक सप्तमोध्याय—रुक्मिणी द्वारा कृष्ण के पास विप्र का संदेशा देकर भेजना तथा उसके द्वारा अपनी स्थिति समझाना । (८) पृ० ९५—१०४ तक—अष्टमोध्याय—रुक्मिणी नखशिख—(९) पृ० १०५—११९ तक—नवमोध्याय—कृष्ण का कुंदनपुर आगमन । (१०) पृ० १२०—१३८ तक—दशमोध्याय—कुंदनपुर बलदेवागमन—(११) पृ० १३९—१५७ तक—एकादश अध्याय—रुक्मिणी हरण । (१२) पृ० १५८—१७० तक—द्वादश अध्याय—संकुल युद्ध वर्णन । (१३) पृ० १७१—१९२ तक—त्रयोदश अध्याय—द्वंदयुद्ध वर्णन । (१४) पृ० १९२—२०७ तक—चतुर्दश अ०—बलभद्र विजय वर्णन । (१५) पृ० २०८—२३१ तक—पंचदश अ०—कृष्ण विजय वर्णन । (१६) पृ० २३२—२४७ तक—षोड़स अ०—द्वारका गमन, रुक्मिणी विवाह वर्णन—(१७) पृ० २४८—२५८ तक—सप्तदश अ०—प्रथम रास वर्णन—(१८) पृ० २५९—२६९ तक—अष्टादश० महारास वर्णन । (१९) पृ० २७०—२९० तक—एकोनविंशत अ० षट्ऋतु वर्णन । (२०) पृ० २९१—३०० तक—बीसवां अ०—रुक्मिणी परिहास । (२१) पृ० ३०१—३१४ तक—इक्कीसवां अध्याय—संक्षेप भागवत वर्णन ।

No. 330(*b*). Raghurāja Siṁha kī Padāvalī by Rājā Raghurāja Siṁha. Substance—Country-made paper. Leaves—50. Size—12 × 6 inches. Lines per page—12. Extent—825 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rājā Bhagawān Baksha Siṁha, State Amethī, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ लिख्यते हजूर कृत पदावली ॥ होरी ॥ मोहन जोहन जोग मचोरी खेलत होरी ॥ बरसाने वारी पकरि लई

वाकी बीच सांकरी खोरी ॥ चलो नहि कछु बरजोरी ॥ कौनि प.त पट सारी साजो दामिनि रचो मुकुट सिर छोरी ॥ पेंचि बुलाक नाक नथ दोनो मारग रचो सिर सेंदुर बोरी ॥ मयो नृप सुंदरि गोरी ॥ कुचि काछनो विरचि कंचुकी पहिरायो घांघरो बड़ोरी ॥ सुंदर कंठ गुलूबंद गयो करि के मुकत मालको चोरी ॥ दुहूं दिशि दै दै हथोरी ॥ श्री वृषभान दुलारी के ढिग ल्याय करी चस विनय निहोरी । ठकुराइन यह दोनहि नवल देहु दया कर निज कर छोरी ॥ करो नहि अब बरजोरी ॥ ४ ॥ वेद पुरान विज्ञान विरति तप मेरो मन सिगरो विसरोरी ॥ श्री रघुराज सकल जग को कवि वारहु वाहि बहोरि बहोरी ॥ सांवरो नंदको छोरी ॥ ५ ॥

End—अवलोकी सखि भूपति भवनम् ॥ चारु कुमार जनित नृप शालित सघन नगर नर गमनम् ॥ लसित पताक कनक तोरन पट शीतल सुरभि सुपवनम् ! श्री रघुराज दान कृत मोदन महिसुर कारित हवनम् ॥ १२३ ॥

छैलन छाइ छुअन नहि पैहे लीजे गोरिन जोरी ॥ श्री रघुराज आज बलदाऊ आये खेलन होरी ॥ अब फागुन बोल्यो जात आलो कैसे करों । मूढ़ मत्वके के मोहि रोकत क्यों कारिके निकरों ॥ श्री रघुराज कहो करये तो मैं तोरि पैयां परों ॥ ल्याइ गुलाल लाल करतं लुकि मैं उर मांहि धरों ॥

Subject—विविध गीतों में राधाकृष्ण सम्बन्धी होली आदि लीलाओं का वर्णन ।

No. 331. Manasambōdha by Raghuvaṁśavallabhadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—114. Size—6½ × 5 inches. Lines per page—22. Extent—1,881 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1912 or A.D. 1855. Date of manuscript—Samvat 1912 or A.D. 1855. Place of deposit—Lālā Lakshmī Nārāyaṇa Mārwārī, Rāe Barelī.

Beginning—श्री सीतारामो जयति अथ श्री मन संबोध लिख्यते दोहा ॥ बंदो श्री गुरुपद परम सीयराम हिय ध्याइ प्रेम भक्ति अानन्य रत परमानंद अधिकाइ ॥ १ ॥

श्री गुरुदेव वशिष्ट जू तुम सब विधि समरथ्य ।
पुरवहु रुचि लघुबाल लखि सिय वहुबरि सिर हथ्य । २ ॥
बंदो श्री मद्भरत पद नाम सत्य कह आपं ।
राम भक्ति दै पाल मोहि हरहु जगत संताप ॥ ३ ॥

नाम लेत अरि होत है बहुत प्रताप अपंड।
बंदो श्री रिपुदवन पद दलु मम सत्रु प्रचंड। ४

End—जा पदार्थ मनचाह जेहि करै रेष सोइ ध्यान।
लहै सकल फल वांछि जो साधन क्रम ले मान। ३६
रेषरंग उतपत्ति सव साधन परम जथार्थ।
स्वारथ मनदायक सुषद प्रेमभक्ति परमार्थ ३७॥
सीयराम पद ध्यान यह कह कछु मनहित सोच।
संत मते सद मत निरषि जो ध्यावे लहवोय ३८॥
मन रंजन गंजन ममहि भंजन जगत विकार।
सुहृद नेमवर प्रेमदा जीवन प्रान अधार ३९
द्रग ससि पंच सु ब्रह्म भो फागुन सित रविवार।
दशमो तिथि प्रथमो पहर रच्यैा ध्यान पद सार ४०।

इति श्री मन संबोव चरन चिन्ह रेष उत्पत्ति बरननो दशमो विलासः

Subject—पृ० १—११ तक। गुरु पद वंदना और सीताराम की स्तुति। वशिष्ट सहित चारो भाइयों का प्रताप वर्णन। पवनसुत की स्तुति महिमा, शंभु शिवा पद वंदना, मन का शिक्षा, मनुष्य तन की महत्ता और राम भक्ति की मन को शिक्षा। प्रथम विलास में ११६ दोहों में मन बोधार्थ, मनोद्देश, (सीताराम की भक्ति से प्रेम वर्णन) पृ० ११—१२ तक द्वितीय विलास में ११६ दोहों में राम नाम अर्थ वर्णन। पृ० २२—३९ तक तृतीय विलास में १७७ दोहों में राम लक्ष्मण का नख सिख रूप श्रृंगार वर्णन और ग्रंथकर्ता की विनय। पृ० ३९—५६ चतुर्थ विलास में १९१ दोहों में लीला गुण संक्षेप से वर्णन। पृ० ५७—७० तक—पंचम विलास में १४१ दोहों में परम धाम की प्राप्ति और अखंड स्थिता का वर्णन, गुण लक्षण नाम, प्रपन्नत्व गुण। पृ० ७१ से ८१ तक प्रोति निष्ठकत्व गुण निर्भरत्व गुण, उपाय सून्यत्व, परतंत्रत्वगुण, अपाकृतत्व गुण, एकांतकत्व, नित्यरंगित्व गुण, परमेकांतकत्व संबंधज्ञातत्व, शेषत्वत्व गुण, शेषत्वज्ञ परत्व गुण, मुमुक्षुत्व गुण, परकाष्टा गुण, उपायादि स्वरूप बोधत्व, आत्मारामात्व, कृपालत्व, अकृत द्रोहत्व गुण, तितिक्षत्व गुण, सत्य सारत्व गुण, ममत्व गुण, सर्वोपकारत्व, निर्हमत्व गुण, अकामत्व गुण, अमानित्व, अकिंचनत्व, अनीहत्व, अमित भोक्तत्व, अस्थिरत्व, मत्सरनत्व, अप्रमतत्व, गंभीरत्व, धीरजत्व, करुणत्व गुण, करुना गुण, मित्रत्व गुण, अमानित्व मगुदनत्वता, षष्ठ विलास में ११८ दोहों में संतगुण महिमा वर्णन। पृ० ८२-९२ तक आठवें विलास में ११५ दोहों में ब्रह्म और जीव सजाति वर्णन। पृ० ९३—१०२ तक—नवम विलास में १४१ दोहों में अजों

पृ० १०३—११४ तक चरण रेखा वर्णन, स्वस्तिक, ऊर्द्ध रेखा, अष्टकोण, महालक्ष्मी रेख, छत्र रेख, मुसलरेख, हलांघ्रि, सर्परेख, वानांघ्रि, नभरेख, कमल घ्रांघ्रि, स्यंदनांघ्रि, वज्ररेख, जवरेख, कल्पवृक्ष, अंकुस रेख, ध्वजरेख, मुकुट रेख, चक्ररेख, दंडरेख, नररेख, चमररेख, सिंहासन रेख, जयमाल रेख, मीनांघ्रि, ध्वो रेख, गोपदरेख, सुधाकुंड रेख, त्रिवली रेख, पूर्णचन्द्र रेख, अर्धचन्द्र, सक्तिरेख, विंदुरेखा, जंबुफल, पताका, संखरेखा, षट्कोण, गदारेख, जीवात्मा रेख, वीनरेख, वेनुअंघ्रि, धनुषरेख, तूनरेख, सरजूरेख, हंसरेख, चन्द्रकांघ्रि, दसमें विलास में १४० दोहों में चरण चिन्ह वर्णन।

No. 332. Śighrabodha by Raghuvaradāsa of Ayōdhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—42. Size—12 × 6 inches. Lines per page—26. Extent—1,092 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1911 or A. D. 1854. Date of manuscript—Samvat 1937 or A. D. 1880. Place of deposit—Ṭhākura Śiva Pratāpa Siṁha, Kablā, Post Office Jailā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ जेहि को भासा जगत सब भासि सहेउ रस एक। तिन्हके पद वन्दन करौं नासत विघ्न अनेक ॥ १ ॥ रोहणी तीनो उत्तरा रेवती मूल विचारि। स्वाती मृगसिरा मघा अरु अनुराधा उरधारि ॥ २ ॥ हस्त सहित ये नषत सब ग्यारह मंगल मूल। समै विवाह के कहे जाति सबै अनुकूल ॥ ३ ॥ इति विवाह ॥ माघ मास में धनपती फागुन सुभगा होइ। वैसाषे अरु जेठ में पति को क्षय है सोइ ॥ ४ ॥ कहि असाढ़ कुल वृद्धि सो अन्य मास नहि लीन। मार्गशीर्ष इच्छा सहित कोइ आचार्य मत कीन। इति विवाह मास॥ अमावस रिक्ता तिथी वेलावार विचारि ॥ जन्मभंग गंडांत पुनि क्रूरवार निरधारि ॥ ६ ॥ ग्रहन सहित परित्याग करि कहिगे पंडित लोग। नव सब कारज के मिले सुन्दर यह संजोग ॥ ७ ॥ नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णा तिथि यह जानि। तीनि वृत्त यहि क्रमहि से प्रतिपद ते पहिचानि ॥ ८ ॥

End—वर्ष चढ़ाई शनि कह पड़ै पड़ै राहु औ केतु। ग्रह भुक्ति ये कहि गये पंडित जानन हेत ॥ सूर्य चंद्र नक्षत्र करि जो संख्या गनि ठीक पीठ देयक श्रा कहत हस्त चारि मृत्यु नीक ॥ बाहु आठ सुभ पद कहे गर्भ पाच सुप नाश। भुज दे। भोग विचित्र कहि चरण दोय है त्रास ॥ चुल्हौ चक्र विचित्र यह वरन्यौ रघुवर दास निज बुधबल करतव्य नहि गर्भ उक्ति प्रकाश। ज्योतिष वक्ता विवुध जन तिन सो कहौं बहोरि चूक चपलता मेटि कै देव दोष नहि मोर ॥ नोच जात

अरु नीच मति कलयुग विनसत संग। नहि विद्या अभ्यास कछु जेहि ते होइ उमंग ॥ क्वांर मास तिथि द्वादशी शुक्र पक्ष सुभ बंद १९११ संवत्सर कहै जन रघुवर आनंद ॥

इति श्री रघुवरदास विरचिते शीघ्रबोध भाषायां रघुवर मनोरमाख्यं चतुर्थ प्रकरण समाप्त शुभम् ॥ राम राम राम राम राम श्री हनुमान जी की जय ॥ श्री श्री श्री श्री श्री।

Subject—ज्योतिष ग्रह आदि के शुभ अशुभ लक्षण।

No. 333(*a*). Dharamarāja Gītā by Raghuvaradāsa of Mirzāpur, District Bahrāich. Substance—Country-made paper. Leaves—7. Size—10 × 6 inches. Lines per page—24. Extent—170 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1903 or A.D. 1846. Place of deposit—Biṭṭhaladāsa Mahanta, Mirzāpur, Post Office District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री रामचन्द्रायनमः ॥ अथ धरमराज गीता लिख्यते ॥ सोरठा ॥ गुरुपद पंकज धूरि बंदन सो चितधरि करै। लहै सुमंगल भूरि रघुवर दास विचारि कह ॥ चै॰ ॥ बन्दैां गुरु गनेस गड़ुरासन। बन्दैां सारद कुबुधि विनासन। बन्दैां देवजक्ष अरु अहिपति हरहु कुमति अति देहु सुमति सति ॥ बंदैां सिवसंग उमा विलासिनि। जेहि सुमिरे मति होति सुपासिनि ॥ बंदैां कागभुसुंडि उदासी। रहत सदा उत्तर दिसिबासी ॥ बालमीक नारद अरु जानो। सुक सनकादि व्यास विधि ज्ञानी। बंदैां संत चरन अघमोचन। जेहि रज परसत होत सुलोचन ॥ मात पिता कर बंदन करहू। तव प्रसाद भवसागर तरहू ॥ जहं लगि अपर होहि जग ज्ञानी। सब कहं बंदत वचन प्रमानी ॥ दोहा ॥ बंदैां ससि उडगन विमल भानु सहित कर जोर तव प्रताप महिमा सुजस हरै तिमिर मति मोरि ॥

End—दोह सम पुनि सिरन काटत गहत अति अधिकाइ। दीर्घ चोंच पंछी यक आइ नेत्र लिहिसि कढ़ि आइ। कहत अब तुम सुनहु नृप कीन्ह तुम्हरे आइ ॥ साधु कह जो आंधि काढ़े सोई नेत्र कढ़ि जाइ रवरवा एक महानर्क है तेहि पर है गये घिराय। रौरव तब कहत बातें सुनो हो जमराइ। ये पापी बड़ पाप कीन्हों मोमे नाहि समाय। कारिके सुद्ध दारु याको कहत हैां सिरनाइ। अग्नि कुंड महं सोधि ताको तप्ततेल नहवाइ। रौरव में डारु दीन्हेसि कोइ न भयो सहाइ। सोस निकसत गीध ठोकहि जन उपल मारहि धाइ। अति कठिन क्रम

कराल यामे तब आंजर क्रोहदनि गनाइ ॥ ठाल मारति संतजन कोउ सुनत मुख नाहि जोव याहो महा पापो कहेन पतिआइ । दोहा ॥ या विधि अमपुर को कथा कहेउ मुनेउ कविराइ राम भजहि ते वचहि गे मंगल मुक मोहि बनाउ ॥ ओजन रघुवर नाम को जपै सदा हिय लाइ रघुवर ते मंगल कहेउ ते जमते बचिजाइ ॥ इति श्री धरमराज गीता रघुवर दास समातम संवत् १९०३ ॥

Subject—पापियों को दंड और धर्मात्माओं को आनंद प्राप्त होने का वर्णन । उदाहरण दिया है कि एक पापी की स्त्री पतिव्रता थी पति की आज्ञा पालन अपना धर्म समझती थी, उसका पापी पति पाप कर्म करता और वह उसकी आज्ञा मान कर उसमें सम्मलित होती रही जब पापी को यमराज लेने आये ता पतिव्रता स्त्री के सन्मुख उस पापी को न ले जा सके । पतिव्रत धर्म को मुख्य बताया है ।

No. 33?(*b*). Guruparamparā by Raghuvaradāsa of Mirzāpur, District Bahrāich. Substance—Country-made paper. Leaves—3. Size—7 × 4 inches. Lines per page—24. Extent—40 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1907 or A. D. 1850. Date of manuscript—Samvat 1928 or A.D. 1871. Place of deposit—Mahanta Biṭṭhaladāsa, Village Mirzāpur, Pāhi Sūrjapur, Post Office Bahrāich, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—ॐ श्रीरामायनमः ॥ ॐ सन्य सुन्य के महासुन्य महासुन्य के मूल प्रकृति । मूल प्रकृति के बीज ओंकार । बीज ओंकार के महातत्व । महातत्व के आदिमूल । आदिमूल के । नारायण । नारायण के महालक्ष्मो । महालक्ष्मी के इच्छा स्वरुप । इच्छा स्वरुप के भुभु जुग सयनं । भुभु जुग सयनं के । उदास मुनि । उदास मुनि के ज्ञात मुनि । ज्ञात मुनि के लोक मुनि । लोक मुनि के प्रगट मुनि । प्रगट मुनि के गंभीर मुनि । गंभीर मुनि के इग मुनि । इग मुनि के अचल मुनि । अचल मुनि के प्रकास मुनि । प्रकास मुनि के नारद मुनि । नारद मुनि के कष्ट मुनि । कष्ट मुनि के जामुन मुनि । जामुनि मुनि के हरिनाथ । हरिनाथ मुनि के पुंडरीकक्ष पुंडरीकक्ष के कृपाल मुनि कृपाल मुनि के गोपाल मुनि । गोपाल मुनि के रत मुनि । रत मुनि के धोर्ज मुनि । धोर्ज मुनि के संतोष मुनि । संतोष मुनि के दया मुनि । दया मुनि के तुलसी मुनि ॥

End—याचार्य । स्वाव आचार्यों के गमासुर । गमासुर के द्वारा नंद । द्वारा नंद के सुतानंद । सुतानंद के अच्युतानंद । अच्युतानंद के सच्चिदानंद ।

सच्चिदानंद के पूरनानंद । पूरनानन्द के दयानन्द । दयानन्द के श्रयानन्द । श्रयानन्द के हरियानन्द । हरियानन्द के द्रियानन्द । द्रियानन्द जी के राघवानंद । राघवानंद जी के रामानन्द । रामानंद के अनन्तानंद । अनन्तानन्द के कृष्णदास कोहारी । कृष्णदास कोहारी के टीला जी महाराज टीला जी महाराज के अंगद परमानन्द दास जी । अंगद परमानन्द दास जी के गंगाधर रामदास जी भागीरत दास जी भागीरत दास जी के पेमदास । पेमदास जी रामदास जी राम दास के छबीलदास छबीलदास के गोवर्धन दास । गोवर्धन दास जी के जानकी दास जानकी दास के रुजराम दास । रुजराम दास जी के बाबा जी मंगलदास । बाबा जी मंगलदास के बाबा जी रघुवरदास । बाबा जी रघुवरदास जी के बाबा रघुवर दास मिर्जापुर निवासी लिखा विट्ठल दास संवत १९२८ में । प्रकाश किया रघुवरदास हरि मंदिरे मिर्जापुर संवत १९०७ ॥

Subject—रामानुज संप्रदाय के गुरुओं का वर्णन ।

No. 333(*c*). Krishṇacharitāmṛita Gītā by Raghuvaradāsa of Mirzāpur, District Baharāich. Substance—Country-made paper. Leaves—29. Size—15 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—406 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1890 or A. D. 1833. Date of manuscript—Samvat 1907 or A. D. 1850. Place of deposi.—Mahanta Biṭṭhaladāsa, Village Mirzāpur, Pahī Sūrjapur, Post Office Bahrāich, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः छंद गजल षटपदी ॥ बचा मानो या न मानो कृष्ण नाम है सच्चा ॥ वेद और पुरान शास्त्र ग्रंथ में जच्चा । कुंडल किरीट मुकमाल सुमन सोहे । चटक मटक चालु देषि मेरा मन मोहै ॥ कुबरो के यार बन छोड़ि दोनो गोपिका ॥ रघुवर हरि नाम रटो राति दिवस ज्यों पिका ॥ १ ॥ बचा वेद की यह बात कृष्ण रुप है सच्चा । पूतना लगाइ गोद कहो मेरा बच्चा । कपट भक्ति कीन्हो हरि दीन्हो फल पैसा । जाचि मरै जोगी मुक्ति पावै नहीं तैसा ॥ राधिका के बड़ी प्रीति छोड़ि दीन्हो कुल मे । कुबरो है नीच जाति बसी कृष्ण दिल में ॥ २ ॥ बचा देषिये विचारि कृष्ण नाम है पलीता । करौं दल भस्म भए पर्जुन ने जीता ॥ कृष्ण कृष्ण रटति भई गोपिका । पुनीता कृष्ण चरण प्रीति नहीं काह पठत गीता । भनक भनक भागे दधि षाए वीरनियां रघुवर के हिए लुके संतन सुष दनियां ॥ ३ ॥

End—हरे कृष्ण कहो कृष्ण जेते बृन्दावन वासो। ऊधो प्रनाम कीन्ह सब के सुषद रासी। हाथ जोरि बिदा मांगि मधुबन मै जैहें। महाराज कृष्ण जो ते जथा हाल कहिहौं॥ मेरे कछु कहिबे मे भेद नहीं जानियो। कृष्णचन्द्र मालिक है हिय आपु मनियो॥ नैनन में नीर भरे नन्द बिदी कीन्हीं। रघुबर सषा परम मधुर जसुदा है लीन्हो॥ ३३॥ हरे कृष्ण कहो कृष्ण ऊधो मधुबन में। पहुंचे देषे कृष्णचन्द्र सषा हिय में। अति सकुचे बूझो कुसलता पिता मातु मेरी कैसी। गोपी सब प्रेम रूप कहो कुसल जैसी॥ ऊधो षट मास तुम्हे बिन्दावन बीतो। मेरे हिय सोच होइ पावे पथिक मीतो॥ मधुकर के नैन में नीर हरकि आवा। रघुबर सषा जोग ध्यान मोरा मैहो पाया॥ ३४॥ हरे कृष्ण कहो कृष्ण ऊधो रोइ रोइ बोले। गोपी सब दास प्रास मिलि हो न जोले॥ हाइ लाल हाइ लाल प्यारे कहि लोटे। देषे षट मास नित्य लगी मोहि चोटैं॥ आप की बताय बात ज्ञान बहुत भाषा। वे समुझै न कोई बात स्याम रूप चाषा॥ भक्ति को स्वरूप सबै प्रेम धार डूबो। रघुबर सषा ऊधो सराहत है पूबो॥ ३६॥ इति श्री कृष्ण चरितामृत गीता रघुबर सषा विरचित समाप्तः।

Subject—जन्म से लेकर अंत तक कृष्ण का चरित्र।

No. 333(*d*). Śrikṛishṇacharitāmṛita Kuṇḍī by Raghuvara Sakhā of Mirzāpur (Bahrāich.) Substance—Country-made paper. Leaves—44. Size—14 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—802 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1900 or A. D. 1843. Date of manuscript—Samvat 1905 or A.D. 1848. Place of deposit—Mahanta Biṭṭhaladāsa, Village Mirzāpur, Post Office Bahrāich, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः॥ राम जै धुनि॥ जै जै गुरु देव तिहारो सरना॥ दीन्हो संष चक्र गरे तुलसी को माला प्रभु ऊर्द्ध पुंड श्री तिलक मस्तक पै धरना। जम को त्रास छूटि गई सुनत श्रवन है सुमंत्र हिय में बसाइ दीन हरि चरना॥ बेदह पुरान शास्त्र सब को बात सुनी मैंने राम रूप गुरु मेरो शिष्य तरना॥ पाहि पाहि रघुबर सषा सरन स्वामी तेरे हुजिये दयाल नेक नजरि फेरना॥ धरा गुरु बानी धरे नहिं धीर बसुमति गई सरन बिधिना के पाहि पाहि हरिए मेरी पीर कालनेमि करि मंस कंस षल प्रबल पातकी अधम सरीर॥ चारि बदन लै सकल देव संग छोर समुद्र तरगान गंभीर। सद्य रूप में कहा महाप्रभु गोकुल जन्म होइ बनो अभीर। जमुना तट बृन्दावन बासी बहुतक सुरन दुम धरो सरीर। रघुबर सषा गोलोक निवासी देवकी गर्भ बसे बलबीर॥

End—कहन लागे ऊधौ गम्भरि आयो। जोग संदेस गावरे भेजे राधे सुनित रिसायो। हाहाकार कोन हति उर सखियन रुदन मचायो वसि पट मान कहो मैं बहु विधि उलटि सो ज्ञान लषायो॥ लै उपदेस राधिका जी को मैं इति फिरि चलि आयो सुमिरन भजन बसो उर मूरति एक टक पलक न लायो। स्वासन सबै उठै हरि हरि धुनि लालन किन बिलमायो। मातु पिता अति दुखित तुम्हारे नैन मलोन बतायो। रघुवर सखा अखिल सब ब्रज जन पावन प्रास जिआयो॥ १९०। सुनतै हाल विकल भै लाल॥ हा राधा राधा प्रिय लाड़िल कंपित गात गिरे ततकाल। मुरछित होत अचेत छिने एक मगन भए हिमवन बेहाल। धरि धीरज कह हमैं राधिका तन दुइ प्रान एक कर ख्याल। तुम जनि बिलग जानियो ऊधो मो राधे हिय बसे बेसाल। जो राधे को सखी सकल मिलि रास थलो जिन रचो इसाल। ते सब लीन होइगो मोमैं ऊधो कछु कवितन ते काल। नन्द जसोधा कीन्ह तपस्या सो पूरण कीनो वनिपाल। रघुवर सखा अनंदित गाथा प्रेम लक्षण कर यह ताल॥ कृष्ण चरितामृत कुंडो रघुवर सखा विरंचति प्रेमधार सागर संपूर्ण संवत् १९०५ लिषी रंगनाथ।

No. 333(*c*). Vaidyaka Chittahulāsa by Raghuvaradāsa of Mirzāpur, District Bahrāich. Substance—Country-made paper. Leaves—124. Size—14 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—1,860 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1902 or A. D. 1845. Date of manuscript—Samvat 1905 or A. D. 1848. Place of deposit—Ṭhakura Biṭṭhaladāsa Mahanta, Village Mirzāpur, Post Office Bahrāich, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ वैदक चित्त हुलास लिख्यते॥ दोहा॥ नमस्कार गुर देव जी तुव पद मुझे भरोस। आपद हिय मैं ध्याय के लषो ग्यान को कोस॥ १॥ सरस्वती पद व्यास के भयऊ अनेक सुजान। वाणी मातु विचित्र करु सत्र ग्रंथन परमान॥ रघुवर दास विचारि कहै यह वैद्यक ग्रंथ हुलास। जाके पढ़वैया अधिक जगमें करै विलास। देषि देषि बहु ग्रंथ श्लोक अनेक सुजास। सो भाषा या हुलास है सुनि मानै विश्वास॥ पित्त कहीं अरु कफ कहो बहुरि कहीं जुवात। तीनो के लक्षण सुनैा सद् ग्रंथन विख्यात॥ पित्तज्वर के लक्षण॥ दोहा॥ कटुक वदन कृत प्यास अति भ्रम मुर्छा प्रलाप। पित्त कोप ते जानिए आवत नर को ताप॥ अथ अश्लेष्मा ज्वर के लक्षण॥ मुष मोठा निद्रा नहीं कास स्वांस अति होय। तृपति कहुं नहि अरुचि अति कफज्वर लक्षण सोय॥

End—महा कल्पादि चूर्ण। इंगुर सोधा १।, सिलाजीत सुद्ध १।, पारा मारा १।, सोना मारो १।, सीसा मारा १।, रांगा मारा १।, तांबेश्वर पुराना १।, लोहा मारा १।, चन्द्र गुलाबी १।, मरो चांदी १।, तीनि छार, जवाषार, साजीषार, सोहागा भुना सुद्ध, जुगछार, इमली की मुरच, राषी लट जीरा, को राषो छार षार चार चार तोला, सेंधो सोंच रसा षरोढांका ये षट्ठ पाचों चार चार तोले लेइ मट्टी के पात्र में करि दिया धरि के कपरौटी करै गजपुट भस्म करै। सोठि मिरच पीपरि चार चार तोला सब चूर्ण इक दिल कर षरल में घोटै कपड़ छान करै जमीरी नीबू का रस गारी कपड़ छान लेइ जोना भरि मृगांक १ भाग भा तो चारि चारि अंस अंस अधिक गुन करै। मट्टी की कराही में चूर्ण घोरै चूल्हे पर धर आंच देइ। मंद मंद करछुली काठ की चलावै जब रस सूखै तब निकारि कै षरल करै मिट्टी के पात में नीबू रस घोटै मंद आंच दे सुखै इसी तरह २१ बार सुखै ता पीछे चना को अोस माघ फागुन को लेवै चूर्ण कराही में घोरि मंद आंच देवै इसी प्रकार सात भावना देइ चूरन जरने न पावै तब सिद्धि होइ। दुइ रत्ती चूरन दुइ रत्ती लोन भोजन किए पर षाइ भोजन पचै। इति समाप्त शुभ मस्तु ॥

Subject—वैद्यक। हर प्रकार के रोग, उन के लक्षण और औषधियों का वर्णन तथा धातुओं के भस्म बनाने की रीति।

No. 333(*f*). Vaidyaka Sadā by Raghuvaradāsa of Mirzāpur, (Bahrāich.) Substance—Country-made paper. Leaves—7. Size—15×6 inches. Lines per page—12. Extent—84 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1901 or A. D. 1844. Place of deposit—Mahanta Biṭṭhaladāsa, Village Mirzāpur, Post Office Bahrāich, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री रामायनमः ॥ अथ वैद्यक सदा लिष्यते। (एक) वैद्यराज श्री चित्रकूट के काशी के पढ़ने वाले द्रावड़ देश तोतादर नगरी (श्रीगुरु) महाराज के धर्मसाले। साधु संत जहं बहुत विराजे पान पान आनंद करै राजा राव बहुत से चेले धन दै दै भंडार भरै ॥ (जै) विष्णु कांची मैं जन्म हुआ श्री रामानुज सब कोउ कहै ॥ साधु भक्त को जर उनहिन ते वेद सास्त्र सब सत्य लहै ॥ तिनके वंस उजागर जन्मे नाम व्यंकटाचार्य भद्दे तिनके चेले चेले हैं रघुवर दास कहैं सो कहैं कथा पुरान बहुत से जानै ज्ञानाज्ञान विचार करै परमहंस की विति गहे हैं दरसन ते दुख दूर करै ॥ जो दुषिया दुष अपन बखानै

तिनको तस उपदेस करैं। धरमसोल को वात वपानैं दुष हरैं सुष भूरि भरैं ॥ वेद पढ़े ज्ञानी बड़ कविता टोना जादू दूरि करैं। रोगो दोषी भूत संतोषो संमुष वैठत जाय जरैं।

End—लाक्षादि तेल ॥ षजुरी फुंसिया दूरि वहावे ॥ सिर को दरद तुरत मिटि जावै ॥ गरमी पाई धुनि मिटि जावै। गिरत गर्भ नारी थम जावै। सवन वात को दुष यह मेटै। विसफोटक ज्वर तुरत झपेटै ॥ वालक को उदवेग मिटावै वह लाक्षादि तेल वतावै ॥ मस्तक पीर मिटावै भैया ॥ होय घनंद रामगुन गैया ॥ रघुवरदास का सचा षेल यह षड़विन्द नाम है तेल ॥ सोढ मिटाव वादो जावै तन दुति घावै नारि सुहावै ॥ गरमी मेटै तेलहि भेटै ॥ रघुवर दास कहै सुनु भैया सुगंधराज यह तेल वनैया॥ भग संकोचन होयरे माई लिंग वढ़ावन दवा वताई ॥ स्त्री के कुच ढीले होय ये ताको पुष्ट करेंगे गोय ॥ रागी होय राग मल गावै गंधर्वा धुनि तान उठावै विद्या पढ़ै अधिक अधिकाई। वालक मूरष रहै न पाई सरस्वती घर तेल वनावो वालक मूरष वेद पढ़ावो ॥ स्त्री कहै वेद को वातै सरस्वती चूरन के घातै रघुवर दास साधु सो भैया घनभौतिक जो वात वतैया ॥ संग करै सेवा मन लावै मनको मनसा पुर करावै साधु गुरु घर वैद्यक विद्या है गुनदायक लायक सद्या ॥ इति श्री रघुवरदास विरंचिते वैद्यक सटा सम्पूर्ण ॥ संवत १९०१ ॥

Subject—कुछ औषधियों का वर्णन यथा लाक्षादि तेल, शंख द्रव चूर्ण, मिरचादि तेल, सुगंधराज तेल, सरस्वती घर तेल जो विद्या वर्द्धक है इत्यादि। एक एक औषधि कई रोगों में काम आ सकती है।

No. 334. Śrī Rāma Ākheṭa Kavitta by Raghuvaraśaraṇa. Substance—New paper. Leaves—5. Size—5 × 3½ inches. Lines per page—24. Extent—120 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bajaraṅgī Siṁha, Station Rupa Mau, District Rāe Barelī.

Beginning—श्री मत्सीताराम चरणे शरणं प्रपद्ये ॥ कवित्त ॥ केशरि सो भीनी अंग अंगरी ललित सोहो झुलत दुसाले छोर मुक्ता सुगाथ के। वनमाला सुन्दर सुमाल मै तिलक रेष धनु शर विचित्र लीन्हें सषा सव साथ के ॥ नयन घरुणारे घुघुरारे केश कानन मे मुष सुषमा को सुष हेरत रतिनाथ के ॥ देषि ये सषीरी मुष वोरी थात भ्राजत है राजत दरोरी पाग सीस रघुनाथ के ॥ १ ॥ भद्र मृगमाते अंग ऐरावत जोरजंग महापद्म अंजन अनंत गजराज हों। पीकि पीकि धावै मानै अंकुशन जोर वारे मद मतवारे प्यारे पीलवान साजहों ॥ जलज

घमारो भारो भालरि भकोरनि मैं मनिमै विचित्र अंग अंग चति भ्रावहों। छंद घहराने कहराने चले भूमि भूमि रघुवंशी लाल के मयंद गन गाजहीं ॥ २४ । केसर को धोर भाले बोरज सो मुख लाले सोहैं सोस पाग लालें लालें जरतारी के। भृकुटो विशाल बांको देरन रसाले हाले कुंडल उदंड मार्तंड द्युतिकारी के ॥ कर करवालें बंधो पोठन पर ठाढे सोहैं ललित दुसाले उरमाले मोल भारो के। लषि लषि वार वार सपन समेत राम मगन विलोक छैल भरत असवारी के ॥ २ ॥

End—ललित लाड़ायो हरि गुमरन जात कहो समर सकत जा मंद मंद चाल सों। हरित हमेल लसै जटित जवाहिर के रत्न मणि मंजरी मरोर मणिमाल सों ॥ चूमि चुचकारें ग्रकुलात वायु मंडल को चित उरभानो सो छवीलो छवि जाल सों। बांग के उठाये राग रंग अंग अंग मायें मन मै मरोर रायें लखुवंसो लाल सों। २१ ॥ कमैं कोच काले भाले भाग कां न लेस कहूं कुमति कराले वाले कर तव पान है। केते घर घाले ते निराले साव सज्जन तें लोक वंद टाले जाले जानत जहांन है ॥ मन के मगाले ताले काम मग मीनन के करहित पाले वाले वल्लभ न घान है। छोड़ि रामलाल फिरें करत कसाले साले सब मतवाले मतवाले की समान है ॥ २२ ॥ इति श्री रघुवर सरन जु कृत श्री रामजु के सिकारी कवित्त ॥ श्री सीताराम सीताराम ॥

Subject—पाखेट समय श्री राम जी की शोभा का वर्णन, उनके हाथियें का वर्णन, राम भरत की सवारी, अस्त्र शस्त्र सुसज्जित पाखेट समय की शोभा का वर्णन, अश्व का वर्णन, लक्ष्मणजी की सवारी का वर्णन, शत्रुघ्न की सवारी का वर्णन, निमिवंश किशोरों की सवारी का वर्णन, शिकारी जानवरें का वर्णन, तिरहुत राज के राजाग्रों का वर्णन, देश देश के अन्य घोड़ें का वर्णन, राम समाज देखने के लिये सखियों की भीड़ का सरयू तट पर खड़े रहना घोड़ें की क़िस्म ग्रोर रंगों का वर्णन, घोड़ें की गति का वर्णन, ग्रोर उनकी सजावट व गहनों का वर्णन, राम जी की शोभा का वर्णन।

No. 335(*a*). Chikitsāmṛitārṇava by Ṭhakura Raghuvara Siṁha of Alipura (Daraunā). Substance—Country-made paper. Leaves—402. Size—9 × 8 inches. Lines per page—40. Extent—17,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṁvat 1890 or A. D. 1833. Date of manuscript—Saṁvat 1910 or A. D. 1853. Place of deposit—Ṭhākura Pratapa Siṁha, Umarava Siṁha, Village Alipur, Jaitapur Bāzār, Post Office and District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ चिकित्सा मृतार्णव लिष्यते ॥ सोरठा ॥ गोरि सुवन गणपाल चरण कमल रज शीस धरि। द्विजिय नाथ दयाल ज्ञान दैन गुण राशि शुभ ॥ हरिगीतिका ॥ एक रदन करिवर वदन शुभ के सदन दुःख विनाशनं। पुनि ईश सुत गणईश शीशनि योगधर्म प्रकाशनं। रिद्धि सिद्धि कारक दुर्मति हारक जोपि भजमन लाइ कै ॥ हरि विघ्न कारक ग्रंथ के करुं ग्रंथ पूरण पाइके। अथ दुर्मिला छंद ॥ गणपति श्री गिरजा सुवन सकल गुणन के रिद्धि। अमित तेज तुव अंग में सब विधि ज्ञान प्रसिद्ध ॥ सिद्धिद ज्ञानहि कथत्य कविजन मत्यत्य नमितहि हत्यत्य दुरिकरि मग्गआजस जेहि दिग्गगतम तेहि पत्थत्य भल ॥

End—ग्रंथ अंजन सबल वायु तिमिर धुंध आदि ॥ हरिगीतिका छंद। सिरम बीज सुचारि सुरमा स्वेत तोला दोइ सो। अंधारी सुरमा सोमु प्रथ के लेह तोला दोइ सो ॥ चषनादि तंदुल शुद्ध तुत्थहि मैन शोपो को गहे। प्रतेक मासे एक सो पुनि पत्र शीशा कराइये। पुनि काटि सूक्ष्म सुचरिन धरि सो अम्ल तिपतों लाइवे। गहि स्वरस सो महि विधि जब शीशा सब गलि जावई ॥ दोहा ॥ पुनि सब भेषज एक करि मर्दन करि दिन दोय। बटी बांधि सुखवाइ सो वासी जल घिस लेह। अंजन कोजे दृगन सों धुंध तिमिर सब लाइ। विथा दूरि दुति दृगन को सीसा समसो प्रगटाहि ॥ इति श्री मन्महाराज कलह वंशावतावस जयसिंहात्मज रघुबर सिंह भाषा विरचिते चिकित्सामृतार्णव नामा आयुर्वेद सम्पूर्ण शुभम् ॥ संवत १९१० राम राम राम राम राम ॥

Subject—औषधियों का वर्णन तथा यह रोगों की उत्पत्ति के कारण और उनकी औषधियां बनाने की विधि और अनुपान चीर फाड़ का कार्य भी भली भांति समझाया गया है।

No. 335(*b*). Tulasicharitra by Raghuvara Siṁha of Alipur, District Bahrāich. Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—12 × 6 inches. Lines per page—36. Extent—2,016 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1910 or A. D. 1853. Date of manuscript—Samvat 1955 or A. D. 1898. Place of deposit—Ṭhakura Haraśaraṇa Siṁha, Village Sarāya Ali, Post Office Kesargañja, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री तुलसी चरित्र प्रारंभ ॥ श्लोक ॥ महेशं रमेशं गणेशं दिनेशं निशेशं दिगेशं गुरुं मारुतं च ॥ सुभक्त्या प्रवक्ष्याम भाषा सुरम्या स्नेहं यथा थां तथा मोद दातारमा ॥ १ ॥ अथ प्रद्युम्न प्रहरों सरस्वती बुद्धि प्रदां कल्मष नाशिनीश मास्य आप सुमित्य सुखदां विद्यार्थीतान्ती मिमूर्द्धा शमबुद्धि हेतवे । तुलसी चरित्रं बहुवृत्ति युक्तं भक्तिप्रदं कल्मषदोष नाशकं आयुरहंसवंर संनिभिष्टं सिध्यान्ते सदास्ति गुरु प्रसादात ॥ तुलसीदास नमस्कृत्य रामाख्यं कारितं पुरः द्विज वंशावतंशेन भक्तानां भूषणं सदा ॥ सोरठा ॥ वारण मुख गणपाल सुमिर सिद्ध प्रगटावते गैारो सुवन कृपाल कृपा दृष्टि को कोर करि ॥ भुजंगप्रयात छंद ॥ नमो एक तुंडे कहंतं गणेशं नमो मोह भञ्जना नाशं दिनेशं नमो सुद्धि बुद्धि पती ईश जातं नमो कृष्ण पिंगाक्ष बुद्धि प्रदातं ॥ ६ ॥

End—इति श्री कलहंस वंसावतंस जयसिंहात्मज रघुवर सिंह विरचिते भाषायां तुलसी चरितामृते नाम षोष्ट षष्टमो चरित्र समाप्तम ॥ रोला छंद ॥ अधिक अश्वनिपक्ष कृष्णादि तिथि षष्टीजान वार बुद्ध उदार भाषत अक्षरोहिणो मान ॥ व्यतिपात सुयोग जानो करणते तिल होय । लग्न वृश्चिक उदय तेहि छिन दिन पहर गत सोइ । कहो वत्सर समुझिये अब बात बात विचार ॥ वहुरि गो विधु एक करिकै मानि १९५५ बुद्धि उदार ॥ बसत बैांडी ग्राम गुजवलि विदित है सब तोर ॥ बसत ब्राह्मण श्रोर क्षत्री सकल सो मति धोर ॥ बैांडी रजधानी पूरब बसत गुजैाली ग्राम ॥ विजै बहादुर सिंह नृप रजधानी प्रकाश कलहंस वंस अवतंस में रघुवर सिंह उदार तिनको सीताराम मम पहुंचे वारहिवार ॥ सोरठा ॥ जगवंत सिंह यह नाम जिनकी आज्ञा पाइ कै तुलसी चरित ललाम पाठार्थे तिनके लिखा पढ़ै गुणी मन लाइ भक्ति करै सियराम को मुद मंगल सरसाइ सीताराम प्रतापते ॥ दोहा ॥ लिखि रघुवर पूरन किया तुलसी चरित उदार । कृपा करत तिन पर सबै कवि पंडित सरदार ॥

Subject—मंगलाचरण गणेशादि वंदना । मारुत सुत मिलन, शिवदर्शन, विन्ध्याचल राजनक राजा की सुता सुलभा । मुरारीदास से विदा । हरिवानंदन संत, रामघाट मचान, द्विज दरिद्री को महानता प्रगट करना, सरयू स्नान, नाभा आगमन, दक्न देश (दक्षिण,) चतुर्दश चरित्र नन्दलाल आदि का । श्री गुसाईं जी का कुल जीवन चरित्र छंद, सोरठा, सवैया, कवित्त आदि में वर्णन किया गया है ।

No. 336. Indrajāla by Rājārāma. Substance—Country-made paper. Leaves—42. Size—13 × 8 inches. Lines per page—16. Extent—210 Anushṭup Ślokas. Incomplete.

Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Kaithī. Place of deposit—Paṇḍita Bhawānī Baksha, Village Dalarā, Post Office Musāfirkhānā, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—पृ० १—दोहा—कुमतो मोतो चबींद का नेअन को पा पासाराम। सुमती साला सुनो के श्री गुरु के पनाम ॥ एक देवस पर्जाप करो राजाराम ने वस इंदेमाल भाषा करो वैाखद रोगनो दवा।

पृष्ट ४—हावल बाझ केः—एक दोना हाजारातो सालेमान पेगंमरा नामत के ऊपर तब एक अवोरातो बाझने चाये के प्राज को चको पेगंमरा खाये सावाहेब हमरे लड़िका नाहो होता है सो इसका केय सावब है सो हमको बातावा तव पेगमर सेहेब बोले को हमको मलुमा पेह नाहो है तुम बेयेठो तो हम परोयेर को बुलाय के पुछियगे जेयसा होयेगा तैयेसा मालु मालुम होयेगा।

End—कुसुम के फूल सुखा लेवे तोला एक १ वाहेरा लेके तोला एक, आनार कलो लेवे तोला एक १, समा दवा के पोसो के पानी के साथ नास्‍या लेह दोना ७ तो नाक सो लेहु बंद होय जाय चट मोठा पिलावेये याद ॥

Subject—नं० १—३ तक—नाड़ो परोक्षा (२) पृ० ४—१६ तक—बांझ होने के कारण, निक्षत, औषधि तथा अंत्र। (३) पृ० १७—२६ तक—दवा समुंद फल को। (४) पृ० २७—२८ तक—दवाई ज्वर को। (५) पृ० २८—४२ तक—भूख को दवा तथा अन्य कई प्रकार को औषधियां ॥

Note—इस पुस्तक के अन्त के पृष्ट नष्ट भ्रष्ट हो जाने के कारण सन सम्वत् का कुछ भी पता नहीं चलता, किन्तु पुस्तक के कागज़ अक्षरों की बनावट इत्यादि से यह पुस्तक अठारहवीं शताब्दी से पीछे को लिखी हुई प्रतीत नहीं होती। बांझ के लक्षण तथा औषधियां प्रायः सुलतानपुर में प० रामप्रपन्न मालवीय जी के यहां से प्राप्त हुई "काकशास्त्र" नामक पुस्तक से हो मिलती जुलती हैं। ज्ञात होता है कि पुस्तक का बहुत सा भाग नष्ट हो गया है—पुस्तक का बृहदंश गद्य में है, कहीं कहीं दो एक दोहे भी लिखे गये हैं।

No. 337(a). Rāmavinoda Bhāshā by Rāmachandra Jaini. Substance—Country-made paper. Leaves—73. Size—10 × 4 inches. Lines per page—10. Extent—1,460 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1809 or A. D. 1752. Place of deposit—Ṭhākura Pratāpa Siṁha, Alīpur Daraunā, Post Office Jaitpura Bāzār, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री रामविनोद पुरुष लक्षण कथ्यते ॥ श्री धन्वन्तरि चरन जुग प्रथमहि धरि आनंद। रोगनसन सुभकरन सब जन सो सब सुषकंद ॥ विविधि सास्त्र का देषि कै सुगम करहु अधिकार रामविनोद जो ग्रंथ यह सकल जीव उपकार ॥ अथ पुरुष लक्षन कथ्यते ॥ दोहा ॥ चतुरबदन सुभ लक्षन सुन्दर रुप सुजान वैद बोलवे जो आवे मिष्ठ वचन प्रमान ॥ दोइ पुषे संग वैद के सगुन आग परमाइ। एक पुरुष संगै चलै वैद बोलावै जाइ लक्षन इस विधि ल करहु चिकित्सा जाइ ॥ अथ सुभ गुन कथ्यते ॥ चो० ॥ कन्या अष्ट वर्ष परमान। वृषभा जोरि दूसो परधान, मीन ऊराम दधिया के धोना। विप्र तिलक सुषबोलै बैना।

End—अवष का डकैलि कै पर्त चक्रवण के दूध मा भेवे तेहि पीछे घटा को थूको डारि देइ। पाछे एक माटी को दुइ धरिये के बीच धरि देइ घरिया बंद क कै फूंकि देइ ॥ अवष जब बैजनो रंग आवै तब जानिये कि सुधा है ॥ नाहिन ता दूसरि दफा फेरि बेस करै। द्वितीय प्रकारै तृतीय प्रकारै सिद्धि होइ ॥ इति श्रीराम विनोद बैद्यक शास्त्र सम्पूर्ण जेठ मासे सुकुल पक्षे तिथो हरि वासरे संवत १८०९ सन १२५९ जस पत्रा देषा तस लिषा ममदोष न दियेते ॥ सुध असुधि बुधिजन लेहि विचारि। जगंनाथ हरिचरन चित धरि वैदक लिषा बाचारि। सीताराम हनैमान स्वामी सहाइ सदै रहो राम राम।

Subject No. 337 (*b*) में देखो।

No. 337(*b*). Rāmavinōda by Rāmachandra (Padmarāga Śishya). Substance—Country-made paper. Leaves—212. Size—$10 \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—16. Extent—3,014 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1859 or A. D. 1802. Place of deposit—Lala Ramādhīna Vaidya, Nawabgañja, District Bārā Baṅki.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रामविनोद भाषा लिष्यते ॥ दो० ॥ सिद्धि बुद्धि लाइक सकल गौरी पुत्र गणेश। विघ्न विनासन सुषकरन हृदेधारि प्रणमेस ॥ श्री धन्वंतर चरण जुग प्रणमोधरि आनन्द ॥ रोग नसे जा नाम सों सब जन को सुषकंद ॥ विविध शास्त्र का देषि कर सुगम करो अधिकार ॥ रामविनोदहिं ग्रंथ इह सकल जीव सुषकार ॥ चतुर विचक्षन देषि नर सुंदर रूप सुजान ॥ वैद बोलायेन आवही मिष्ट वचन कहि आनि ॥ फल वस्त्रादिक लइ कर धरै जो वैद्य हजूर। रिक्त पानि नहिं जाइये दल गौरी तजि दूरि ॥

End—अथ मान प्रमान लिष्यते ॥ जुगुत मान जाने विना कबहु द्रव्य प्रमान । ता कारन यहु जो जान कहु मते अनुमान ॥ चौपाई ॥ जालंतरि गति द्रोस भान ॥ तिसमे सूक्ष्म रासु पिछान ॥ तिसका बषरातो समाजान । ग्यानी साख्र कहो प्रमान ॥ तिनु परिमानु का वंसो नाम ॥ षटवंसो इक मरी का नाम ॥ षटु मरीचो कराइ कराइ । तिहु राइ इक रुपं पथाय ॥ दोहा ॥ कुडव भंजल इक नाम ॥ दोनु कुडवे ससरावक है ॥ सरावक मानि कसाम ॥ दोइ सराव के कहो प्रस्थ है ॥ अंजलो टंक चोसठो कहाइ ॥ सरावक चाव बास सोथाइ ॥ दोसति षट पन प्रस्थ जगोस ॥ आढ़क सहस एक चोवोस ॥ तिहु आवक द्रोन प्रमान । दो सुप की दोनो इह भाषो ॥ तिहु द्रोगो इक षारो टाषि ॥ कुरा सहस्र पल छोनो-नुपरि ॥ इतनो भार मान पुनि चित धरि ॥ शत पथ सथा तुल प्रान ॥ रामविनोद कियो बषान ॥ सोरठा ॥ दोसि मनक को चार द्रोमन कहिये सुप को ॥ षारा सोल मन भार ॥ सेर एकतालिस द्रोग भनि ॥ माषहु तारा जेहु ॥ षारा परजंत लगिननु चतुर्गु ण गिनलेहु ॥ जथातरं तथा विधि ॥ रामानतनो परम.न ॥ सारंगधर सारियो कहो जाश अनुमान ॥ रामविनोद विनोद सो ॥ इति श्री रामविनोद समाप्त ॥ संवत १८५९ कातिक मास कृष्ण पक्ष दसमो तिथो वार गुरुवार लिष्यतं रूपचंद पांडे ॥ कासिव गोत्रे कलवार पाथम लाला पुनमल तस्य पुत्र नंदलाल ने लिषवाइ × × × ×

Subject—(१) प्रथम उद्देश्य—पृ० १—५ तक । पृष्ट संख्या—विवरण ।

गणेश वन्दना, धन्वंतरि वंदना, वैद्य को बुलाने को विधि । नाड़ी चेष्टा लक्षण, असाध्य लक्षण । मूत्र परीक्षा, पित्त कफ वायु के उत्पत्ति का कारण और निदान, ज्वरों के नाम और लक्षण, पित्तज्वर, वेदज्वर । वायुज्वर, कालज्वर, सीतज्वर, रक्ताप लक्षण, कामज्वर, ज्वर प्रमाण ।

(२) द्वितीय उद्देश्य—पृ० ६ पृ० २३ तक—

सर्वज्वर, पाचन, अजीर्ण, आहार-अपित्त, वेद, वायु, इष्टिक, कफ, रक्त, एकाहिक, दुतिय, तृतिय, नित्य, ज्वर, चतुर्थ ज्वर, सीतज्वर, जीर्णज्वर, विषम-ज्वर, द्वारिद्रक ज्वर, प्रमुखादि उपाय, चूर्ण उपाय, गुटिका, पूरा अंजन अवलेह, काथ प्रमुख ।

(३) तृतीय उद्देश्य—पृ० २४—५३ तक ।

द्वितीय अधिकार, वात पित्त, कफ प्रमुखादि निदान, उपाय, वायु, कफ, लक्षण, वायु कफ उपाय, तरह सन्निपात, उत्पत्ति, उनके नाम, तरह सनपात को परम आयु, लक्षण, औषधि, उपाय, काथ, गोली अंजन, चूर्ण औषध उपाय लेप

प्रमुखादि सर्वत्रिदोष, कोर्षाग, धनुष वात, कुबीवात, चौरासी वात के काय मुधीरा लक्षण, औषध, उपाय, मंत्र, सर्वविधि, बुधि, सुदर्शन चूर्ण।

(४) चतुर्थ उद्देश्य—पृ० ५४—९२ तक।

अतिसार निदान, लक्षण, वात पित वायु कफ श्लेष्मा, आम, अतिसार निवाहो, सर्व अतीसार चिकित्सा, ग्रहणी रोग निदान, लक्षण, चिकित्सा, अजीर्ण लक्षण, उपाय, कृमि का लक्षण, औषधि, रक्त, छर्द, चिकित्सा, रक्त मुख नासा, रुधिर पड़ता हो, रक्त श्रवे उसका उपाय, राज यक्ष्मा का लक्षण औषधि, कास लक्षण, उपाय, स्वांस निदान, लक्षण, उपाय हिक्का उपाय, स्वर भेद लक्षण, उपाय, अरुचि उपाय, छर्दि लक्षण, औषध उपाय, वात पित्त कफ छर्दि तृष्णा लक्षण उपाय, क्षयो के उपाय, मूर्च्छा निदान, उपाय, मद, विभ्रम उपाय, दाहन, उपाय, उन्माद निदान, अपस्मार उपाय, बंध कोष्ट।

(५) पंचम उद्देश्य—पृ० ९३—१३९ तक।

वायु उत्पत्ति, लक्षण, उपाय, औषधि, अंगहीन, कटि शूल, वायु उपाय, मस्तक, भ्रम, पोड़ा, अकड़ो, वायु की कांट शूल संधान, उदर पीड़ा, उर्द्धवातु, कंधन वायु, वायु गति, पुनः वात रक्त निदान, पुनः सुपतः मंडल कष्ट उपाय, गलित कुष्ट उपाय, स्वेत मंडल उपाय, कुष्ट उपाय, नर स्थंमनु उपाय, आमवात निदान लक्षण, उपाय, पुनः, शूल निदान, वायु शूल उपाय, पित्त शूल, वायु गुल्म निदान लक्षण, उपाय मूत्रकृच्छ निदान, लक्षण, पुनः रिंदे रोग निदान लक्षण, उपाय, पथरी, सुजाक, सर्व प्रमेह, निदान लक्षण उपाय, मेदा, लक्षण, उपाय, वातोदर, पित्तोदर, कफोदर निदान, उपाय, पुनः सोफोदर, लक्षण, उपाय, प्लीहा का उपाय, वातु साज, पित्त साज का उपाय, कफसाज निदान उपाय, त्रिदोष साज उपाय, जलोदर, कठोदर, सोफोदर उपाय, उदर विनमास चिहट का उपाय, उदग्रह आडा का उपाय, कोडी: नासर विसकंट उपाय पुनः कंडू के उपाय, विस्फोटक वरड़ो विसर्प श्रीपद उपाय पुनः छिद्र का उपाय, गंडमाला का उपाय, भूतदंभ का उपाय, अगरो उपाय, पिनास उपाय, कर्ण रोग, कर्ण पोड़ा का इलाज, सूर्य वात का उपाय—

(६) षष्ठ उद्देश्य—पृ० १४०—१७५ तक—

मृगी का उपाय, जादु या डमरू का उपाय, इह को स्वान प्रतिकार, सर्प विष उपाय, वृश्चिक विष उपाय, शास्त्र घातोपाय, मेहन उपाय, बालक अतीसार चिकित्सा, नाल पीड़ा का उपाय, अंडवृद्धि का उपाय, घाव फोड़ा, पाका, उसका उपाय पुनः बंध का गुटिका, निद्रा आने का प्रतिकार, मुख दुरगंध का उपाय, दंतारो मसो औषधि, केश कल्प उपाय, केश वर्द्धन उपाय, केश होने का उपाय,

चम्रिद्रव्य का कल्प का उपाय, नारायण तैल, विषगर्भ तैल, वृद्धि विषगर्भ तैल, माक्षादि तैल, मिरचादि तैल, क्षार तैलादिकार रोमनाश उपाय, कल्यान घृता-धिकार, त्रिफलादि घृत, ग्रमलादि घृत, सुंठी पाक, सुपारी पाक, नालेर पाक, गुखरु पाक, मूसली पाक, ग्रसगंध पाक, लहसन पाक, चन्द्रहास रस, सर्वरोग निवारण ।

(७) सप्तम उद्देश्य—पृ० १७६—२०७ तक—

मदनमोद कामेश्वर गुटका, काम कौतूहल गुटिका, ग्रमोघ थंभ गुटिका पुनवल वंधेज की बलवीर नाम गुटका, सिंह वाहिनी गुटका, धातु क्षीण का उपाय, नामर्दी का उपाय, मतवीर्य सवीर्य गुटका, हस्तकर्म का उपाय, वीर्य बंधेज का लेप, स्तंभन का लेप, लिंग दृढ़ करण लेप, लिंग पीड़ा का उपाय, भग संकोचन उपाय, कुच विलास्थ नेला स्त्री पुष्प ग्राने का उपाय, ऋतुगम माडन उपाय, संतान उपाय, गर्भ रहने का उपाय।

ग्रंथ समाप्त ।

(८) ग्रष्टम उद्देश्य पृ० २०८—२१२ तक ।

नाड़ी परीक्षा ।

No. 338. Punyāśrava Kathā by Rāmachandra (Keshavānanda Deva Muni ke Śishya). Substance—Country-made paper. Leaves—470. Size—$14\frac{1}{2} \times 7\frac{1}{2}$ inches. Extent—11,780 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1792 or A. D. 1735. Date of manuscript—Samvat 1914 or A. D. 1857. Place of deposit—Śrī Jaina Mandira (Baḍā), Bārā Bankī (Oudh).

Beginning—श्री वीतरागायनमः ॥ ग्रथ पुण्याश्रव कथा कोश भाषा लिख्यते ॥ श्री वीरंजिनमानम्य वस्तु तत्त्व प्रकासकं । वक्ष्ये कथा मयं ग्रंथं पुण्याश्रव विधानकं ॥ १ ॥ दोहा-बर्धमान जिन वंद्य के तत्त्व प्रकासन सार । पुन्याश्रव भाषा कहुं भव्य जीवन हितकार ॥ २ ॥ सुमजीवन को हित चहत करत पात्मा काज । सो गुरु मम हिरदे वसौ तारन तरन जिहाज ॥ ३ ॥ सोरठा ॥ प्रनमोसादर माय स्यादवाद लक्षन सहित । जिहि सेवत ग्रघ जाहि धर्म ध्यान वाढ़ै ग्रधिक ॥ ४ ॥ प्रथमहि पुजा को कथा कही ग्रष्ट विधि जोय । ताके सुनत सुजान कुं जिन पूजा रुचि होय । एक दर्व जिन पूजिया मालिन सुता ग्रयान । प्रथम स्वर्ग हरि की प्रिया भई पुन्य परवान ॥ ६ ॥ सकल बात ताको कहुं पुरव उक्त प्रमान । हिये हरष उपजे ग्रधिक सुनौ भव्य धरि कान ॥ ७ ॥

End—ध्यान अनल पर ज्वाल घातिया कर्म काठ सब बाला। केवल ज्ञान उपाय भविक परमोध गये सिव माला। निराकार निरंजन पद धर अष्ट महागुन लाधा॥ बाधा रहित कहत नहिं आवे आतमीक सुष साधा ॥ ६५ ॥ कवित्त छंद—इम उन अमिनि त्याव भनेटी पराधीन उर धरउ कंत। एक अकुलता तिह चित्त सेती दान दियो अनिवर इह अंत॥ गिरसे गिर जिन धर्म अधिष्टा देवी है विमल हो अनंत॥ जो स्वाधीन दान दै नित प्रति नहि संचय सुरराज लहंत॥ ६६॥ सोरठा छंद॥ पाचन देवो दान अरु दुषद क्षुधत जिवत॥ दया बुध हिय आन॥ दोनै जोव निगम मना॥ ६७॥ चौपाई॥ ऐसा जानि आनि जिनवान॥ दया दान कान उर आन॥ दोजै दान कृपनता भान॥ उत्तम मध्यम जघन्य निदान॥ ६८॥ दोहरा छंद॥ दान तना अधिकार यह॥ पूरन भया सुजान॥ चहु विधि कोजै सक सम॥ श्रीवर करै कल्यान॥ ६९॥ इति श्री पुन्याश्रव विधाने ग्रंथकर्ता केशवनंद दिव्य मुनि सिक्ष्या रामचंद्र विरचिते दान अधिकार समाप्तम्।

Subject—(१) पृ० १—८४ तक—प्रथम अधिकार। देव पूजन की आवश्यकता और उसका महत्त्व। आठ व्यक्तियों को पूजा करके उत्तम फल पाने के उदाहरण स्वरूप आठ कथाओं का संग्रह।

(१) माली की पुत्रियों का स्वर्ग प्राप्ति करने की कथा। (२) पोतांकर का एक राजा को देव पूजन करते हुए हर्ष मान कर उसका अनुमोदन करने के फल स्वरूप यक्ष होना। (३) नागदत्त का मेंढ़क हो जाना और एक मुनि के आदेश से उसकी रानी वरदत्ता का उसे ले आना और समन शरण आगमन समय उसको पूजा करने पर उसका बैकुंठ धाम पाना। (४) भरत नृप चरित्र कथन अर्थात् भूषण वैश्य के पुत्र के प्रभाव से भरत नृप होना। (५) रत्नशेखर चक्रवर्ती को कथा, पूजा के प्रभाव। (६) धनदत्त ग्वाल को कथा, जिन पद पर कमल चढ़ाने के प्रभाव से मर कर भूपाल होने का कथन। (७) वज्रदंत चक्रवर्ती की कथा। (८) श्रेणिक की कथा।

(२) ८५—पृ० १२८ तक—दूसरा अधिकार।

नमस्कार मंत्री की महिमा संबंधी ७ कथायें।

(१) सुग्रीराव की कथा। (२) बंदर समान भवधरि निर्वाण प्राप्ति कथा। (३) चारुदत्त सेठ की कथा। (४) धर्निंद तथा पद्मावती की कथा। एक नाग नागिनि के कान में नमोकार मंत्र पढ़ने के प्रभाव से उनका धर्निंद तथा पद्मावत होने का कथन। (५) हथिनी की कथा, ओंकार के प्रभाव से उसका सीता होना। (६) नमोकार के उच्चारण करने से एक चोर का सुर पदवी पाना। (७) एक अज ग्वाला का नमोकार उच्चारण द्वारा कामदेव की पदवी पाना।

(३) पृ० १६९—पृ० २०६ तक—तीसरा अधिकार। श्रुति श्रव फल संबंधी ७ कथायें।

(१) आगम कथन मन से सुनने के कारण सुर सुख पाये हुए बाल राजा की कथा। (२) मा मंडल का आगम श्रवण करने के कारण चक्री समान हो जाना। (३) आगम के श्रवण से जमराजा का मुनि पद ग्रहण, (४) एक चंडाली का श्रुति श्रवण करने के उपलक्ष्य में चौथे जन्म में सुखमाल होकर स्वर्गपद पाना। (५) भीमकवली की कथा। (६) चंडाल कूकरी की कथा (७) सुकोशल की कथा।

(४) पृ० २०६—२४४ तक—चौथा अधिकार। शीलाधिकार गुण वर्णन संबंधी कथायें।

(१) मेघेश्वर के शील की कथा। (२) कुमेर प्रिय शील की कथा। (३) सीता के शील की कथा। (४) प्रभावती के शील की कथा। (५) वज्रदत्त की कथा। (६) नीली बाई सेठि पुत्री के शील की कथा। (७) चंडाल के शील की कथा।

(५) पृ० २४५—३४५ तक—पांचवां अधिकार। उपवास संबंधी ७ कथाओं का वर्णन।

(१) नागकुमार, (२) भविष्यदत्त, (३) अशोक रोहिनी, (४) नंदमित्र (५) जाम्बवती कृष्ण पटरानी। (६) ललित घटा (७) और अर्जुन चंडाल की कथाओं द्वारा व्रत महात्म्य समझाना।

(६) पृ० ३४६ से ४६७ तक—छठी अधिकार। दान कथा संबंधी कथायें।

(१) शान्तिनाथ की कथा—एक जन्म में दान करने के प्रभाव से बारह जन्म तक सुख पाने और अन्त में तीर्थंकर पद पर पहुंचने की कथा। (२) जय-कुमार तथा सुलोचना की कथा—दान के प्रभाव से ऋषभ के कैवल्य ज्ञान होने के समय जयकुमार का गणधर पद पाना और सुलोचना की स्त्री लिङ्ग छेदन कर सुर पद पाना। (३) वज्र जंघ नृप की कथा। (४) सुकेत राय की कथा (५) आरम्भक द्विज की कथा।—दान के प्रभाव से मंडलीक पदवी पाना। (६) नल नील की कथा। (७) लौ अंकुश की कथा। (८) दशरथ राजा की कथा। (९) भा मंडल की दूसरी कथा। (१०) सुसीमा—कृष्ण पटरानी की कथा। (११) कृष्ण की पटरानी गंधारी भव की कथा। (१२) गौरी रानी-श्रीकृष्ण की पटरानी की कथा। (१३) श्रीकृष्ण की पद्मावती नाम धारिणी, पटरानी की कथा। (१४) धन्यकुमार का चरित्र वर्णन। (१५) सामशर्मा की स्त्री अग्निला की कथा।

Note—ग्रंथ निर्माणाद्देश्यादि।

आचारज ज़िय धरि अभिलाष। कीन्हो तास संस्कृत भाष ॥ तासु वचनिका रूप सुधारि। दैालतिराम कथा बुध सारि ॥ तासें भाव सिह निज छन्द। आरंभ कियो चैापाई बंद ॥ शील अधिकार ताई उन जोर। भेजि दियो लिखना हम ओर। मलो कथा लषि के हम लिखैा। तेते काल सिंह वह भष्यो ॥ भेरोंदास पुन्य परकास। देषा ग्रंथ अधूरा पास ॥ मोसों भना संपुरन करैा। आरत कछु न मन में धरैा ॥ मैं भाषा भाखूं सुख मान। जो कर लगै पुराण पुरान। तब उन कछुक समै में खोज। मोपै भेज दिया लहि चोज ॥ दोहरा—हूं थो कर्म संयोग से, पर सेवा मे लीन। जा छिन थिरता चित गहो, बित जुत रचना कीन ॥ ग्रंथ बड़ो मोमति तनुक ऐसा बना नियोग। हंस निवार सुधारियो, विनऊं पंडित लोग ॥ ग्रंथ निर्माण काल :—एक हजार सात सैा बानवे मानिये। चैत सुदी द्वितीया दिन नीका मानिये ॥ तादिन पूरन कीन ग्रंथ जियराजने। मंगल करो सकल समाज ने ॥

No. 339(a). Charaṇa Chinha by Rāmacharaṇa. Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—12 × 4 inches. Lines per page—18. Extent—252 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1910 or A. D. 1853. Place of deposit—Ṭhākura Adita Siṁha, Village Saraiyā Ali (Mevāsiṁha), Post Office Kaisargañj, District Bahrāich (Oudh.)

Beginning—श्रीरामानुजायनमः ॥ चंचरी छंद ॥ रामचरन्ह चिन्ह चिन्तु सब विधि सब सुख साजै। रघुबर के चरन कमल अंकन जुत निरषु अमल धारे पद चिन्ह राम संतन हित काजै ॥ रामचरण दाहिन स्वै सीतापद वाम चिन्ह विश चारि स्वास्ति काष्ट कोणश्री विराजै ॥ हल मूशल सर्पवान अम्बराष्ट पंचजान वज्र जव उर्द्ध रेष कल्प विर्छ छाजै। अंकुश ध्वज मुकुट चक्र सिंहासन दंड चमर छत्र पुरुष माल जव दक्षिण पद भ्राजै ॥ गोपद छिति घट पताक जंबुफल अर्ध इन्दु शेष षटकोण लगदाजि बिन्दुराजै ॥ सरजू शक्ति सुधा कुंड त्रिवली मीन पूरचन्द वीन वेनु धनुष तून हंस चन्द्रिकाजै ॥ सीयराम चरनो शुभ चिन्ह अष्ट चालीस नित चिन्तत शिवनारद सनकादिक अहिराजै रामचरण ध्यान करत गोपद इव जक्त निरत बिरति ज्ञान भक्ति भरत सजत संत समाजै ॥ १ ॥

End—चंचरीक छंद ॥ सीयराम चरन चिन्ह जिन्ह जिन्ह संतन मन भाई। जेते सब चिन्ह लसत जानकी के नयन बसत जासको कटाक्ष बिनु न मिलत प्रभु

गोसाई ॥ निगमागम विधि महेश नारद शुक सनक शेष रामचरण चिन्ह सदा नेति नेति गाई ॥ छोड़ि सोच रामचरण जो चत जो मोर सरन गुंजा को गहत मुढ़ पारस बिहाई ॥ दंपति पद पद्मरूप होइ रहु चित अलि अनूप चक पाषंड रहु विवेक कहु धनाई ॥ श्रुति उदार कहत ताहि दासो निज जानि मोहि जानको विहारु नेक चरण शरण लाई ॥ रामचरण मनवरोर मानत नहि कहा मोर मारवु मोहि बिनु गुनाह जानको दोहाई ॥ ५७ ॥ रामचरण सब पंक गुन एक सावे फल होइ । चित्रकूट चित मैं कसै जानि रहै कि सोय ॥ चित्रकूट चित पंक प्रभु लषत प्रेम को बाढ़ि । रामचरण तेहि संत को भक्ति गोद लिये ठाढ़ि ॥ इति श्री चरण चिन्ह सम्पूर्ण शुभ मस्तु लिख्यते रघुवर शरण पाठार्थ महावली के शुभ ॥

Subject—राम के चरणों की महिमा ।

No. 339(*b*). Drishṭānta Bodhikā by Rāmacharaṇa Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—21. Size—12 × 6 inches. Lines per page—16. Extent—336 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1895 or A. D. 1838. Place of deposit—Santāna Murau, Village Airiyā, Post Office Pipari, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ दोहा ॥ रामचरण दृष्टांत बिनु मन न लहै श्रुतबोध । सहज बात को बात एक कहीं ग्रंथ मत सोध ॥ रामचरण श्रीराम को वंदत सब सुख पाय ॥ जैसे सींचि मूलको डारपात हरियाय ॥ रामचरण प्रभुरूप बहु राम भजे सब पुष्ट । यथ असन मुखमें लिए । हाथ पाव सब पुष्ट ॥ रामनाम सुमिरत सकल राम मंत्र फल सोध । रामचरण जिन रतनते सकल दृष्टि को बोध ॥ रामरूप थिर ह्वै लषत ब्रह्मजीव लषिपाय । रामचरण रवि लषत हो मंडल धाम सुभाय ॥ रामचरण रवि प्रभा ते रवि मूरति लषि जाय । तिमि निजरूप प्रकास से रामरूप दर्साय ॥ रामचरण सतसंग बिनु नहि अवाहिरो होय ॥ तन मन वचन विलाय नहि रहत सदा सतसंग ॥ रामचरण फल एक में जथ छूट जल गंग ॥ रामचरण सतसंग में परा रहै नहि जाय । कबहुंक जो सुरसरि घड़ै जो जल लेय मिलाय ॥ रामचरण संतन परसि तीनिताप मिटि जाय । जिमि मलया तनु परसते विष भुजंग सितलाइ ॥

End—रामचरण जिय सकुचि बड़ि चहत मिलै रघुराय । जिमि विभिचारिन पति निकट पग पग चलत डेराय ॥ रामचरण जग पांच दैय चलु भागे हरि भानु । रामचंद्र को चंद्रिका निज स्वरूप पहिचान ॥ निज स्वरूप पर रूप लषि पग पग

चलत अनंद ॥ रामचन्द्र तब द्रवहिं प्रभु देपिचंद मनिचंद ॥ जगत तजे प्रभु भजे बिनु मिटहि न जिय को पीर । रामचरण बिनु धनुष के तजे लगै किमि तोर ॥ रामचरण जगवासना तब लगि सुद्धि न होय ज्यों मद के घट भरे कछु पावन किहि विधि होय ॥ लोकलाज अभिमान सुख तब लगि हृदय न राम । रामचरण नृप क्यों बसै जहां मलीन लघुग्राम ॥ लोक मान की अगिनि में धर्म कर्म जरि जाय । रामचंद रघुनंद की करुना नारि बुझाइ ॥ अस करुना करिहो कबहुं रामचरण पर राम । तब स्वरूप जल मीनमय मरों बिछोहत नाम । यह दृष्टांत सत बोधिक सतक बिरह को अंग । रामचरण तेहि समझि रहु राम न छोड़िहिं संग ॥ इति श्री दृष्टांत बोधिक बिरह अंग वरननोनाम पंचमो सतक । माघकृष्ण पक्ष तिथौ चतुर्दश्याम मंगल बासरे संवत १८९५ दसखत रामप्रसाद मुराऊ ग्राम बासी दहाय का पुरवा ॥

Subject—रामकृपा आदि को महिमा पर दृष्टान्त । पृ० १ से ५ तक विवेक लक्षण, पृ० ६—९ तक वैराग्य लक्षण, मर्यादा लक्षण, पृ० १०—१२ तक—शरण लक्षण, निश्चल, दया, सत्य, उदार, ऐश्वर्य, यश, १३—१७ तक रामनाम लक्षण, १८—२१ तक, बिरह के लक्षण ।

No. 339(*c*). Drishṭānta Bodhikā by Rāmacharaṇa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—$6\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—34. Extent—300 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1904 or A.D. 1847. Place of deposit—Śrī Mahanta Bābā Rāmacharaṇadāsa, Chandra Bhawana, Payāgapur, District Bahrāich (Oudh).

Note—Details as in No. 339 (*b*).

No. 339(*d*). Padāvalī by Rāmacharaṇa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—27. Size—$12\frac{3}{4} \times 6$ inches. Lines per page—20. Extent—1,485 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Nāgarī Prachāriṇī Sabhā, Kāśī.

Beginning—श्री अवध सरजू सीतारामाभ्यांनमः । श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ बाल विभूषन नील तन जग अधार कछु होय । रामचरन सोइ उर बसै बालरूप रघुनाथ ॥ १ ॥ महिसुर आरत देषि प्रभु कहो विधिहि दै बोध । अब मरि हों अवतार ले कौन्हेसि संत बिरोध ॥ २ ॥ सत स्वरूप दशरथ अवध तहं पैहो निज-रूप । रामचरन जय जय कहत गय निज भवन अनूप ॥ ३ ॥ राम राम ॥ हरिप्रिया

छंद ॥ राग रामकली ताल चकताला ॥ दसरथ चितत नित सदोनं । छिप्र भवन गुर भवन विलंबित नमित चलोवं बोल्यो गुर परवोन जै जै राम लला ॥ १ ॥ विधि हरि बंदन चंदन सिव सुष कंद ॥ निगमदक्ष मुनि रक्षि कक्ष महि दुष्ट निकंद ॥ सोइ सुत तव कुल चंद जै जै राम लला ॥ २ ॥ गुर नृप गक्षति सुखिति रंग बनाइ—चिप्र जननं सद स्वजनसु शृंगो रिषिहि बोलाइ ॥ सुत हित जग कराइ जै जै राम लला ॥ ३ ॥

End—रघुनंदन को यह बानि परो ॥ गलिय चलत मुसुकात छबोलो नयन के वान ते प्रानहरी । जहं देषो तहं पड़ोइ रहतु है मैं मयो लोक को लाज हरो । रामचरण सपि निरपु नयन भरि काज लाज सब भार परो ॥ राग श्री ताल चोताला ध्रुपद ॥ परम पुरुष परमेस्वर परब्रह्म परेस शुंदर अति श्री सीता रवन देषो नयन को फल सिव के हृदय वासनानि सब विधि सुजान सुष छवि भवन सुकसन कहतु मत ध्याइ जेहि न्वे नित पाय पद्म जोति इंद्रो होइ मवन असे रघुवर के चरण परे रहय ते सकल गुन निधि रामचरण दुष्टदवन पुस्तक पदवलो समाप्त पोथि लिषी श्री सीताराम राम पुस्तक पदावली शृंगार श्री गोसांई रामचरण कृते ॥

Subject—श्री रामचन्द्रजी के भक्ति विषयक स्फुट छंद ॥

No. 339(*e*). Bālakāṇḍa Rāmāyaṇa para Ṭikā by Rāmacharaṇadāsa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—1,562. Size—13½ × 6½ inches. Lines per page—11. Extent—19,525 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1877 or A. D. 1820. Date of manuscript—Samvat 1917 or A. D. 1860. Place of deposit—Tālukedāra Balabhadra Siṁha Sengara, Village Kānthā, Post Office Kānthā, District Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ विवेशा जगद पूर्ण नियत रसमयं सच्चिदानंदं सत्वं । कल्यानांअनंत दिव्यात्मक गुण विलसत्सवंतो मिश्र रूपं ॥ जीवानांमा नियंता रमति गुण मयाअचितय शक्ति परेशं । रामं कैशोर मूर्तिं विधुर गुणनिधि ज्ञानकोशं भजेम ॥ १ कृत्वा वै गुरु वंदनां त्रिमत मथ्या लक्ष्यवेद स्मृति पोराणं स्वधिया यथार्थ भणितं चा वैक्ष्य वै संहितां ॥ जीव ब्रह्ममयं त्रिकांड रचितं जिज्ञासु बोधोपमं ॥ सारं प्राप्य तपोअभिराम चरणो वेदांत चुडामणिम् ॥ दोहा—बंदौ श्रीकर जानकी रघुनंदन सुखदानि । रामचरण सममाज सुख सर्व सुमंगल खानि ॥ २ ॥

End—सर संतन की मनहंस जहाँ मुकुता गुनराम चुनै सुबसो। कवि कोविद को विसरामथलो सब शास्त्र सुमंगल मय सुखमो ॥ रघुवीर स्वरूप सदा दरसो सुख को सुखमो दुख को दुखसो ॥ जगजाल को राम चरंनन ग्रसो रघुवीर कथा तुलसी उरबसो ॥ ४ ॥ सब को मत एक करी तुलसी सिया-राम स्वरूप में ग्रानि धरो ॥ तेहि ग्रंथ को अर्थ किया मति जो यह सिंधु सुधा रस भूरि भरो ॥ सर मानस राम चरित्र तहां गुण कीरति दिव्य उठै लहरी। सिय-राम समीपहि वास करै जोइ रामचरंनन स्नान करो ॥ ५ ॥ दोहा—अवधपुरी पूरन भयो सुभग जानकी घाट। रामचरन शुभ तिलक कृत सत समाज को ठाठ ॥ ६ संवत अष्टादस सुभग सत्तरि अर्द्ध सपाद। १८७७। रामचरन तिथुराज तिथि पंच शुक्ल बैसाख ॥ ७ ॥ इति श्री रामचरित्र मानसे सकल कलि विध्वंसने बालकांडे श्री सीताराम विवाह श्री अयोध्या विश्राम परम उत्साहो परमानंद त्रैलोक्य मंगल वर्णनं नाम सप्तपंचासत सोपानः ॥ बालकांड समाप्त रामचरन तिल कृत मूल तिलक की संख्या १९२० ॥ श्री मन्नृपति विक्रमादित्य राज्ये गताब्दा १९१७ मार्ग शुक्ल पंचम्यां लिखित मिदं पुस्तको चितामणि ॥

Subject—रामचन्द्र की बाल्य अवस्था, सीता जी के साथ विवाह होने तक।

No. 339(*f*) Rāmāyaṇa Ayodhyā Kāṇḍa para Ṭikā by Rāma-charaṇadāsa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—696. Size—14 × 7 inches. Lines per page—12. Extent—10,440 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1881 or A. D. 1824. Date of manuscript—Samvat 1923 or A. D. 1866. Place of deposit—Tālukedāra Ṭhākura Balbhadra Siṁha Seṅgara, Village Kānthā, Post Office Kānthā, District Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री सीतारामाभ्यां नमः ॥ घनाक्षरी कवित्त ॥ तुलसीकृत मेघ स्वाति जोग धर्म ज्ञान सालि प्रेमनीर चातक मयूर चित्त मन हैं। कामधेनु दिव्य सोपि दुग्ध भाव प्रीति स्वाद तोष पुष्ट ओघ वत्स देव रामजन हैं। धर्मिन्ह कों धर्म सिद्धि जोगिन्ह को जोग सिद्धि ज्ञानिन्ह कों ज्ञान सिद्धि भक्त भक्तिधन है। रामचरन श्री मद्रामायण श्री राम पेन रामनाम सोना श्री रामसीय तन हैं ॥ १ ॥ क्षीर सिंधु अवध कांड पूरन पै भरत भाव सेस विज्ञान विष्णु रमा रामनाम है। विरह अथाह स्वरूप इंदु प्रेम सुधा राम रूप चिन्तामणि भक्ति धेनु काम है। भरत को जोग वैराग्य ज्ञान ध्यान तप आदि गुन

दिव्य भूरि जलचर को धाम है। रामचरन सरनागत सोय मेरो कृपा राम भारत तरंगी सोच उमगै सुदाम है। २ ॥

End—भरत भजन रवि उदै लोक त्रय भुवन चारि दस। मोह अविद्या निसा नास जागि जीव एक रस। काम क्रोध मद लोभ चार निसिचर गति नासो। ज्ञान जोग वैराग्य धर्म सर कमल प्रकासो। श्रीराम कराकं राजते पूरन नीति अनीति गई। श्रीरामचरन यद्यपि लघु राम चरन जेहि प्रीति भई ॥ १ ॥

इति श्रीरामचरित मानसे सकल कलिकलुष विध्वंसने श्री अयोध्या कांडे भरत के अवधि वैराग्य विवेक पट संपति पट सरनागत भाव भक्ति अखण्ड एक रस वर्नन नाम एकोनत्रिंशति स्तरंग ॥ २९ ॥

दोहा—ससी एक सन आठ दस संवत सावन पूर्व। अवधकांड को तिलक भो रामचरन रति रूर ॥ ३० ॥ संवत १९२३ सिसिर रितैा मासोत्तम फागुन कृष्ण षष्टम्यां बुधवासरे लिखित मिदं पुस्तकं मातादीन पांडे अस्थान जोगा। पठनार्थं गुरुप्रसाद राम त्रिवेदी ॥ स्वार्थं वा परमार्थं वा ॥ श्रीराम ॥

Subject—रामविवाह पश्चात् युवराज पद देने के समारोह से लेकर चित्रकूट में निवास और भरत का मनाने जाना और निष्फल लौट आने तक।

No. 339(*g*) Birahaśataka by Rāmacharaṇa. Substance—Leaves—12. Size—9 × 4½ inches. Lines per page—16. Extent—144 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Lālā Tulasī Rāma Srīvastāva, Rāe Barelī.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ रामचरण पचय सतक राम चरण रस देइ। लोह नाम्द ह्वै रज मिले ज्यों चुबक गहि लेइ ॥ १ ॥ रामचरण दृष्टांत यह जो समुझि मन लाइ। वर्साह राम हिय मग्न होइ मूक स्वाद जिमि पाइ ॥ २ ॥ रामचरण बिनु विरह प्रभु मिलु न कहा चलि जाइ। मलत सोहागा प्रथम जिमि तब कंचन मिलि पाइ ॥ ३ ॥ विरह अगिनि निसि दिन जरै सहै बान असिधार। रामचरण रघुबीर जन सतो सुर एक बार ॥ ४ ॥ राम विरह हिमि मन जरै मूल बीज सब जाइ ॥ रामचरण जो ज्ञान जग दावागिनि हरि आइ ॥ ५ ॥ चिता विरह को अग्नि हुइ रामचरण सो विचार। चिता जरावै मृतक को विरह जियत नितजार ॥ ६ ॥ रामचरण दुष मिटत है जो सर लगै शरीर। राम विरह सर हिय लगे तन भर कसकत पीर ॥ ७ ॥

End—निजस्वरूप पर रूप लषि पल पल चलत अनन्द।
रामचरन तब द्रवहि प्रभु देषि चन्द्र मनिचंद ॥ २६ ॥

जक्त तजे प्रभु भजे विनु मिटै न जिय की पीर।
रामचरण विनु धनुष के तजे लगै किमि तीर ॥ ९७ ॥
रामचरण अंग वासना तब लगि सुद्ध न होइ।
ज्यों मद के घट भरै कछु पावन केहि विधि होइ ॥ ९८ ॥
लोक लाज अभिमान सुप तब लगि हृदय न राम।
रामचरण नृप क्यों बसै जह मलीन लघुधाम ॥ ९९ ॥
लोक मान की अग्नि में धर्म कर्म जरि जाइ।
रामचरण रघुनंद की करुणा वारि बुझाइ ॥ १०० ॥
अस करुणा करि हो कबहुं रामचरण पर राम।
तव स्वरूप जल मीन मैं मरौ विछोहत नाम ॥ १०१ ॥
यह दृष्टांत प्रबोधिका सतक विरह को अंग।
रामचरण तेहि समुझि रहु राम न छाडहि संग ॥१०२ ॥

इति श्री दृष्टांत बोधिका का विरह अंग वर्णन नाम पंचमः सतकं ॥ राम राम राम राम राम राम राम ८

Subject—१—विरह शतक की महिमा, विरह शतक के दृष्टांतों की महिमा, राम विमुख रहने की हानि वर्णन। राम के भक्तों को उनके विरह में जो दशा होती है उसका वर्णन। राम भक्ति से दुखों की निवृत्ति, मद का वर्णन, सुरति वर्णन। विरह अंग का वर्णन। बधिर का वर्णन। धर्म सूर का वर्णन। धर्म की महिमा वर्णन। विरह की तीन दशाओं का वर्णन। राम के विना रामचरण की दशा राम के प्रति कवि की विनती राम विरह में मन का वर्णन। कुसंगति का फल वर्णन। राम के ध्यान का वर्णन। अहंकार का वर्णन। बुद्धि सुधरने के लिये कवि की राम से विनती। मन शुद्धि के लिये राम से विनती। सुरति की दृढ़ता का वर्णन। काम क्रोध और लोभ का भक्ति से रोकने का वर्णन। राम की शरण के लिए विनती। कानों को राम गुण गान सुनने में लगाने के लिये विनती। राम स्पर्श के लिए विनती, राम स्वरूप देखने में आंखों के लगने के लिए विनती, राम कार्य में हाथों के लगने के लिए विनती, राम रूपी तीर्थ में पगों के चलने के लिए विनती, राम के चरणों में सिर लगने के लिए विनती, मन क्रम वचन से राम के प्रति भक्ति का वर्णन। विषय के त्यागने और राम भक्ति का उपदेश, राम का वचन सिंधुतट पर शरणागत को तारने में भ्रम की निंदा। अपराधों की क्षमा के लिए प्रार्थना, राम विरह में कवि दशा का वर्णन, राम की लीला की महिमा वर्णन। राम की प्रतिमा का वर्णन। राम के मिलने की इच्छा का वर्णन। राम भक्ति विना संसार में जीना व्यर्थ है। राम के विना कवि की व्याकुलता का वर्णन। वसंत ऋतु में राम विरह में कवि

दशा का वर्णन। पति के बिना जो दशा पत्नी की होती है वही दशा राम विरह में रामचरण की है। राम शरण में आने में भय संचार का वर्णन। बिना राम भक्ति के शांति नहीं मिलती इसका वर्णन। राम के बिना जगवासनाओं की निवृत्ति नहीं होती। लोक लाज अभिमान और सुख की वासनाओं का तब तक ही हृदय में वास है जब तक राम विमुख हैं। रामचरण की राम के प्रति प्रार्थना, ग्रन्थ नाम वर्णन।

No. 340(a). Vānī Ramacharaṇaji ki by Ramacharaṇa. Substance—Country-made paper. Leaves—114. Size—4½ × 3¼ inches. Lines per page—18. Extent—1,260 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1852 or A. D. 1795. Place of deposit—Harbansa Rāi, Post Office Ṭikāri, District Rāe Barelī.

Beginning—अथ स्वामी जी श्री रामचरण जी की वांणी लिष्यं। नमोराम रमतो तत सो गुरुदेव सुस्वामी ॥ नमो नमो सवसंत नाव रटि भये सुनांमीं। जिन के चरणं हेठि रहो नित सास हमारा ॥ तन मन धन सब प्रांण करूं नवछावरि सारा ॥ राम संत गुरुदेव बिनि नही और आधारा ॥ रामचरण कर जोडि करि वंदूं वारंवार ॥ १ नमो रांम रमतो सकल व्यापक घण नांमीं ॥ सब पापं प्रतपाल सबन का सेवग स्वामीं ॥ करुणा मई करतार करम सब दूरि निवारै अगति बिछलता बिडद अगति ततकाल उधारै ॥ रामचरण वंदन करै सब ईसन के ईस जनपालक तुम जगत गुर जग जीवन जगदीस ॥ २ ॥

End—राम आरती ॥ आरति रमता राम तुमारी ॥ तुम सूं लागी सुरति हम री। टेक ॥ रमता राम सकल भर पूरा। सुचित चून तुमारा नूरा ॥ १ ॥ आरति सुमरण सेवा कीजै। सब निरदोष ध्यान गह लीजै ॥ २ ॥ ऐसी आरति ऐसा पूजा। राम बिना दरसत नहीं दूजा ॥ ३ ॥ सिव सनकादिक सेस पुकारै। यही आरति भौ सागर त्यारै ४ रामचरण दे आरति ताके। अठ सिधि नौ निधि चेरी जाके ॥ ५ ॥ आरती ॥ आरति अलप पुरस अविनासी। पूरण ब्रह्म सकल प्रकासी ॥ टेक ॥ रमता राम सुरति के स्वामीं। अनहद अमूरति अंतर जांमी ॥ १ ॥ सुरति मूरति आदि न अंता। सत सुखिव रति सब वरतंता ॥ २ ॥ चौदा तीनि लोक पतिसाही। अवत दोत नव षंड दुहाई ॥ ३ ॥ वार पार कहं थाहा न आवे। सुमरि सुमरि जन मद्धि समावे ॥ ४ ऐसा साहिब अवंद मेरा। रामचरण चरणां का चेरा ॥ ५ ॥ पद ॥ ४७ इती पद संपूरणं ॥ राम राम राम राम राम राम रामराम राम राम राम ॥

Subject—पृ० १—२ ॥ राम स्तुति, गुरु और अन्य संतों को बंदना। पृ० ३—६—राम को महिमा वर्णन। सूर वही जो इंद्रियों का दमन करे और काम, क्रोध, लोभ, मोह पर विजय प्राप्त करे तथा राम के चरणों में सदा भक्ति रक्खे ॥ ७-९। धर्म में दृढ़ता का उपदेश हंस, चकोर, चात्रक के गुणों का उदाहरण। और प्रह्लाद, नामा कबीरदास को दृढ़ता अर्थात् दुःख रूपी कसौटी पर कसने से जिसकी दृढ़ता पूरी उतरे वही सच्चा भक्त है। १०—१२ ॥ जिस प्रकार पतिव्रता स्त्री विभचारियों के बीच में पड़ी हुई भी सदा पति प्रेम में ही रत रहती हैं और अन्य पुरुष को तरफ़ निगाह उठा कर भी नहीं देखती उसी प्रकार सच्चा भक्त अनेक मत मतांतर से घिरा हुआ भी केवल अपने इष्ट ही का स्मरण करता है। १३—१५। जो लोग अनेक देवी देवताओं को पूजते हैं उनकी दशा व्यभिचारिणी स्त्री के समान है जिसको कभी शांति नहीं मिलती और जिस प्रकार व्यभिचारिणी की बुरी हालत होती है उसी प्रकार वह मनुष्य सदा भटकता रहता है। इस लिये अपने एक इष्ट ही में सदा लवलीन रहे ॥। १६। उसी मनुष्य को बुद्धि सदबुद्धि है जो राम में सदा लवलीन रहता १७—१८ दुर्बुद्ध मनुष्य वही है जो काम क्रोध लोभ मोह आदि संसार के झगड़ों में पड़ा रहता है और राम से विमुख रहता है। १९-२१। राम की सत्यता और उनसे सब वस्तुओं और परमपद की प्राप्ति तथा राम महिमा वर्णन ॥ २२—२४ प्रकृति और ब्रह्म का उपदेश इन गुण मायाजाल से अलग होकर केवल ब्रह्म में ही लवलीन रहना चाहिए। २५—२६। जिज्ञासु के गुण लक्षण २७—२८। साधु के लिए दया धर्म का उपदेश। २९—३५। माया का विस्तार से वर्णन। ३६—सुमिरण विधि ३७। साधु लक्षण। रामभक्ति करने से लाभ ३८—और विमुख रहने से हानि का वर्णन। ३९—४३। राम जपने का उपदेश। ४४—४५। दरिद्री, दुखी, निर्धन, निर्बल के केवल राम ही बल हैं—४६—५०। साधु संग का फल। राम की उपासना से ही जीवन लाभ है—५१—५३ गुरु महिमा वर्णन। ५४—६४। राम नाम का प्रताप वर्णन। ६५—८०। चेतावनी के छंद—८१—८४। दश इंद्रियों और मन का सम्बन्ध वर्णन और उनका कर्तव्य—८५—११४ भक्ति रस के गाने योग्य फुटकर पद।

No. 340(*b*). Kālajñāna by Rāmacharaṇadāsa of Ḍiḍavānā, Jodhapura Rājya. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—8 × 4 inches. Lines per page—14. Extent—68 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1794 or A. D. 1737. Place of deposit—Śrī Mahanta Gopāladāsa, Ḍiḍavānā, Jodhapura Rājya, Post Office Ḍiḍavānā, Rājputānā.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ काल ज्ञान लिष्यते ॥ दत्तत्रेयउवाच ॥ सावधान हरिदास रहाई । जो रैन दिना हरिसों मित्राई । मृत्युकाल को सदा विचारै । देषि उपद्रव वेगि संमारै ॥ जानि मृत्यु को पहिले ही राई । जोगेश्वर न्यारा होइ रहई ॥ देह गेह ममतादिक त्यागे । निरालंब होइ कहीं न लागे । लागे तहां जहां ते पायो । हो अलरक वेद भागवत गायो । पारब्रह्म सरिसो चलि जाई । जे अरिष्ट देषि सावधान रहाई । सो अरिष्ट तोहि कहि समझावत । जिनते मृत्यु को समै लषावत । जो शुक्र, अरुंधती ध्रुव नहि देषै । तथा देव मारग नहि पेषै ॥ अथवा ससि छाया ससि मांहीं सो वरसते ऊपर जीवै नाहीं ॥ जाहि किरण हीन सूरज दरसावै ॥ अग्नि सर्व समान लषावै ॥ सोतो जीवै एकादस मासा । विचारि पहले ही होइ उदासा ॥ जो छादै मूतै विष्टा-कराई, सो वन रूपै पै मन जाई । प्रतक्ष अथवा सपने माहीं । सो मास दस जीवै आगै नाहीं ।

End—इतो उपद्रव सदा विचारै । रात दिवस छिन छिन हिं समारै । ये घोर उपद्रव टरत जुनाहीं ॥ मत कोइ एक पुन्य करि टरि जाहीं ॥ किसहो एक टरि जाई ॥ परि हरि रति झूठो सत करि पुन्य केवल राई । कोई एक अरिष्ट जिस उपद्रव को जितनो परमाना । मास आवै । कालको गति लषो नाह जावै । रहै एक शुभ स्थाना ॥ निरालंब होइ सोवै दिवस पष तीनौ निदाना ॥ जब लग आवै । तब सावधान होइ वपु छिटकावै । ध्याना ॥ जब मृत्युकाल को अवसर सब से ले उलटाय । प्रेम प्रीति मरथावंत दोहा । वपु छिटकावै सावधान होइ । ज्ञान भाषा ग्रंथ संवत १७९४ कार्तिक मासे जोगी हरिसन हेत लगाय ॥ इति काल लिषतं जैपुर शुभ स्थानं लिपिकर्तायां गंगाराम शुक्ल पक्षे तिथि अष्टमी गुरु वासरे निरंजनी वैष्णव । पठनार्थं रूपदास श्री महंत जोधपुर राज्य ग्राम गद्दी डीडवाना शुभ भवतु ॥

Subject—मृत्यु का समय और उसकी परीक्षा । देखो No. 340 (c).

No. 340(c). Kālajñāna by Rāmacharaṇadāsa of Ḍiḍavānā. Substance—Country-made paper. Leaves—3. Size—$8\frac{1}{4} \times 6\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—26. Extent—60 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1794 or A. D. 1737. Place of deposit—Paṇḍita Nāgesarji, Post Office Fakharpur, Village Bunakapur, District Bahrāich (Oudh).

Note—Details as in No. 340 (b).

Subject—पृ० १—३ तक—काल का ज्ञान कराया गया है कि मनुष्य अपनी मृत्यु को किस प्रकार जान सकता है। जो शुक अरुंधती—ध्रुव, देव मारग चन्द्रमा के काले चिन्ह न देखे वह १ वर्ष से अधिक नहीं जी सकता। जिसको सूर्य में किरण न देख पड़े, अग्नि में गर्मी न जान पड़े वह ११ मास से अधिक नहीं जी सकता। जो स्वप्न में मल मूत्र या कै करै सोने रूपे पर मन आवै वह दस महीने से अधिक नहीं जी सकता। जो भूत पिशाच आदि देखै वह ९ मास से अधिक नहीं जी सकता। जो साधु असाधु न जाने जिसकी प्रकृति पलट जावे वह ८ मास जीता है। कपोत, काक, उल्लू, गृध जिसके सिर पर बैठें या काक पर मारें वह ६ मास जीता है। अगर अपनी छाया उलटी देखै तौ ४ मास जिन्दा रहता है। जो विना कारण दक्षिण दिश बिजली देखता है, इन्द्र धनुष जल में देखै वह दो मास जिन्दा रहता है, जो घृत, तेल आरसी में अपना सिर कंधे पर न देखै वह १ मास जीता है। जिसका स्नान समय पर हिरदा पहिले सूखै वह दस दिन जीता है। जिसको हवा अथवा गर्मी अच्छी न लगै उसकी मृत्यु ततकाल होती है। लाल वस्त्र पहिरे स्त्री गाती बजाती दक्षिण दिशि ले जावै उसकी मृत्युनिकट है। जो नग्न, श्वेताम्बर देखै अथवा हंसता देखै उसकी मृत्यु तत्काल जानिये। दांत में दांत घिसै अथवा खाते खाते न तृप्त हो जल विना नदी देखे दिन में तारे देखै उसका अल्प जीवन है जिसके नाक कान टेढ़े पड़ जावे अथवा बाया नेत्र बहे ऊंट गदहे पर सवार हो कान न सुने उसकी मृत्यु ततकाल है। जिसकी आंख की जोति घट जावे या अग्नि में गिरै या तलवार से मारे सो सात रात जीता है। गुरु ब्राह्मण की निन्दा करे या माता पिता की निन्दा करे या अपने पूज्यों की निन्दा करे उसकी मृत्यु आई समझना। जब मृत्यु निकट जाने तो दान पुण्य ईश्वराधन में लगै तो अरिष्ट दूर हो सकते हैं।

No. 341. Dāna Līlā by Rāma Datta Brāhmaṇa of Guñjaulī. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—6 × 3½ inches. Lines per page—10. Extent—70 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1855 or A.D. 1798. Place of deposit—Ṭhākura Jagadeva Siṁha, Village Guñjaulī, Post Office Bauṇḍī, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः

दोहा ॥ गणपति जो शुभ करन हो सुमिरत सब संसार। लीला गोपी कृष्ण की करौ नाथ विस्तार। १। जेहि सुमिरे संसै मिटै होत सदा आनंद। देवन हित अवतार धरि नंद कहवाते नंद। २। भुजंग प्रयात छंद। जबै प्रात सो कान्ह

जसुधा जगाये । सबै गोप गोपी मनो द्रव्य पाये । मंजन किये ध्यान पुत्रा मुरारी । वागेश जे संग सो चारु भारी । धरे मोह को मुकुट आनंद कंदा । भली भांति राजे मनो कोटि चंदा । भली भांति केशरि तिलक भाल राजे । कहूं लाल पेरी सो लोंके विराजै । श्रवण लोल कुंडल विराजे शो करे । मनो जुग द्रियाकर सबै भांति पूरे । अधर बिंब दाड़िम दशन बीच सोहै । हंसनि लेत मोहै करे काम मोहै ।

End—कोई चीर त्यागे चली नग्न बाला । वजे प्रेम वंसी मनो चित्र माला । कोउ मैान छाड़े न बालक निहारे । ठगी सी तकै वे कदंबन की डारे । कोई लोटे भू पर गिरे हैं अधोरा । फिरै कुंज कानन न जानै सरोरा । भई मान होनी सबै ब्रज की नारी । धरे ध्यान वंसी लगी तान भारी । जहां जाय मोहन ने वंसी बजाई । तहां ग्वालनी वे फिरै पछ धाई । किये मंद सर्वांसुरो वृज चंदा । थकी सी निहारैं परो काम फंदा । जोइ चित्त भावै । सोई कान्ह कीजै । हरित बांसुरी को हमैं शब्द दीजै । उतारो दही दान दीन्हो चुकाई । हंसी गुजरी कान्ह वंशी बजाई । दोहा ॥ रामदत्त सुमिरत सदा गिरधारी वृजराज । चरन कमल हृदै बसै दीजै विदुष समाज । सोरठा । पूरण पूर्ण इन्दु अब्द गते नृप विक्रमा । बान नक्र ख नग इन्दु । शाक मनित प्रवीन मति । सम्पूर्ण शुभं

Subject—श्री कृष्ण का गोपियों से दान मांगना ।

No. 342(a). Daya Vilāsa (Sabhājita) by Rāmadayā. Substance—Country-made paper. Leaves—126. Size—8½ × 3½ inches. Lines per page—24. Extent—1,725 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Good. Character—Nāgari. Place of deposit—Ṭhākura Mahābīra Baksha Siṁha, Tālukedār, Village Korethara Kalā, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा । एकदन्त सुत कंत हरहरा हरन दुष सोग । मेरी बुधि अज्ञात शिशु वृद्ध करन तिहि योग । १ ॥ रामदया जांचत तिन्हैं चरन कमल करि नेहु । कोविद के मन श्रवन को वाक अर्थ पिय देहु । २ ॥ सकल ग्रंथ को अर्थ ले महा बुद्धि को धाम । रामदया संग्रह कियो सभाजीत धरि नाम । ३ । सभाजीत जातें कियो रामदया चित लाइ । मूरख पंडित होइ है कि कीन्हैं कंठ सुभाइ । ४ ॥ सभाजीत यह ग्रंथ को नाम धरयो इहि रीति । समय समय के अर्थ कहि लेइ सभा सब जीति । ५ । मथि के नाना ग्रंथ को लही जहां जो उक्ति । सो सब भाषा मैं धरी कही अनुका युक्ति । ६ । बुद्धि ज्ञान चेतावनी धीरज धर्म सुदेश । नीति अनीति सबै कही भूपति को उपदेश । ७ ॥

पुष्प प्रतार प्रसिद्ध बन दंड अनुग्रह जाहि। धरि सासन नासन प्रजा प्रिय भूपति सो ग्राहि। ८॥

End—(४) राग माला खंडः—अथ सत सुरनाम। षड़ ऋषभ गंधार औ मध्यम पंचम जानि। धैवत बहुरि निषाद पुनि ये सुर सात बषानि। सात सुरन को समुझि चित सुरति होत बाईस। रामदया भाषा धरी जानि लेहु इकईस। अथ बाईस सुरति के नाम—कवित्त—निवा कुछैतो मुद्रा छंदोवनो रंजनी विचारि बुधि रति का विशेषिये। जानिये रउद्रा कोधो वज्र औ प्रसारिनो है प्रीतिमज्ञा ग्रति रिक्ता श्रुति चित लेषिये। संदीपनी आलापनी कहो रोहनी औ रम्या मंदनी सुउग्रा उमै रामदया पेषिये। सहित छोभ निकाये श्रुति कहो बाईस में सात सुरवा हंस-बहो की गति देषिये।

(५) वैदिक खंड—अथ नाटिका भेद चौबोला छंदः—दछिन कर अंगुठा की जर पर अंगुरी तोन धरि जै। प्रथम पित्त फिर कफ पुनि बाई क्रम हो तै लीष लीजै आदि आंगुरी लगै पित्त कफ दूजो अंगुरी कहिये। तीजी अंगुरी बाइ जानियै नारि लक्षन लहिये। भेडुक काग कुरंग चाल जो चलै पित्त की नारी। पंडुक मोर मराल नाटिका कफ की चलै विचारी। बाइ नाटिका चित दै देखो सांप जोंक गति जैसो तीतर लवा बटेर नाटिका सन्निपात की ऐसो होइ नाटिका अति हो चंचल ताप जानि ये हो मैं उपज़ै पित कफ बाइ जौन विधि सो सब भांति कहो मैं। १०

(६) शालहोत्र खंड—श्लेष्मज्वर लक्षनं। दोहा—तन ताती व्याकुल श्रवन नाक सिथलता नैन। अघर अचर से लो जल श्लेष्मज्वर को चैन। चौपाई॥ उपचार। मिरचै जीरा सेधो नोन चीता चाम सोठि लै तीन बच अतीस पीपरामूल मधु सो सानि सबै सम तूल पाव तीन बाज कहु देहु अश्लेष्मज्वर छुटै तेहु॥

Subject—(१) पृष्ठ १ से २१ तक—सर्वनीति प्रथम खंड।
(२) पृष्ठ २२ से ४१ तक—ज्योतिष भाषा।
(३) पृष्ठ ४२ से ५८ तक—सामुद्रिक खंड।
(४) पृष्ठ ५९ से ६६ तक—रागमाला खंड।
(५) पृष्ठ ६७ से ९९ तक—वैद्यक खंड।
(६) १०० से १२६ तक—शालिहोत्र खंड।

No. 342(*b*). Sabhājita Sarvanīti by Rāmadaya. Substance—Country-made paper. Leaves—11. Size—16 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—140 Anushṭup Ślokas.

Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lālā Bhagavat Prasāda, Village Sadhuwāpura, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः दोहा । एकदंत सुत कंत हरहरा हरन दुष सोग । मेरा बुधि अज्ञान सिसु बुद्धि करन तेहि जाग । १ ॥ रामदया जानत तिन्हे चरण कमल करि नेहु । कोविद के मन श्रवन को एक अर्थ प्रिय देहु । सकल ग्रंथ को अर्थ है महा बुधि को धाम । रामदया संग्रह सभाजीत धरि नाम । सभाजीति जाते कियो रामदया चित लाइ । मूरष पंडित होत जेहि काने कंठ सुभाइ । सभाजीति या ग्रंथ को नाम धरो यहि रीति । समय समय के भेद कहि लेइ सभा सब जीति । मथि के नाना ग्रंथ सब लहि जहां जो उकि । सो सब म षा में य गो कहि षजुका जुक । बुधि ज्ञान चेतावनी धोरज धारि सुदेष । नीति अनीति सबै कहा भूप । को उपदेस । उठत प्रात रति को प्रबल प्रति पालक परिवार । मुरत नहि जुरि समर मे कुरकुट समर बिचार ।

End—कबहु न निकरै जतन सो तेल पेरहु धूलि । मूरष को मन चोकनो होय न कबहु भूलि । एक बोज पर जाय रहु सहस पवन श्रुति चाक । भुजा देषि पछिताइये सुवा सेव मत जाक । मैं पहिले हो हो लपो निकरत मैं चक फुल । आतप तोप तुसार को श्रान न बहुत समीर । सुप सुषमा स्वारथ कहा वसे करोल हो कौर । मूरष सोपै सोष सो कुसल पायुहो जानि । तिहि लिषाय सकै पढ़ो मूक महा तनु ज्ञान । अटत पथिक सो पुरुष है अटित घटै गो देषु । उडगन इक सा रह शशो नसै बढ़ै परवेष । चिपे परै पर पुरुष को बिभा होय सुष जाल । अर्जुन सो पापनं हुँ फूले फले रसाल । भूषन भाजन भामिनी बिभा न भूलाल । सचि सचि मरै अनेक जनु भुगवे है भूपाल । संतत एक हरिचन्द नृप राख्यो। क्षितिज ससेत । सुर पुर गे नर नारि पसु मकुर स्वान समेत । इति श्री सभा जीति समय सारे सर्व नीति बरनन समाप्तह लिषा शिवचरण बाजपेई संवत् १९२१ पूस मासे शुक्लपक्षे तिथौ पंचम्यां मंगल वासरे लिषतं सीतलप्रसाद सधुवापुर के पठनार्थं ।

Subject—राजनीति और सभानीति ।

No. 342(c). Sabhājita Jyotisha by Dayārāma. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—16 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—220 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of

manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lālā Bhagavat Prasāda, Village Sadhuwāpura, Post Office Sasaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ भाषा ज्योतिष लिष्यते। परम पुरुष परमात्मा घट घट जाको वास। पूरि रह्यो तिहुं लोक मे जल थल भू आकास। ताको करत प्रनाम मैं लेत नाम मन काम। पूरन होत उदोत नित बाढ़त आठौ जाम। रामदया जाचत तिन्हें चरण कमल सिर नाय। जोतिष भाषा में रचो दोजे जुगुति बताइ। ग्रंथ संस्कृत देषि कै भाषा कीन्हो सोय। तिथि औ वार नक्षत्र सब योग करण गति होय। अथ तिथि नाम। परिवा दुतिया तृतोया कहौ। चौथी पंचमी षटी लहौ। सातै आठै नौमी वषानु। दशमी एका द्वादशी वषानु। तेरसी चौदसो मावस गनौ। कृष्ण पक्ष ऐसो विधि भनौ। पक्ष उजेर पूरणमासो। सोरह तिथि यहि भांति प्रकासो। अथ वार नाम। आदित सोम भौम बुधवार। जीव शुक्र शनि सातौ वार।

End—अथ ग्रह भोग। एक मास रवि भोगवै नषत सवा दुइ चंद। डेढ़ मास कुज बुध करैं एक मास आनंद। वेकै तेरह मास लौं शुक्र महीना एक तीस मास सो शनि रहै कहियो किये विवेक। रहै अठारह मास लौं राहु केतु जिय जानि। रामदया नव ग्रहन को भोग रासि सुषपानि। अथ नषत जानिवो। कुंडलिया कातिक सो दूनो करैं मास जिते गुनि लेइ। तिथि सब लोजै मास की एक आस पर देइ। एक आस पर देइ सबै मिश्रित करि गनिए। जेते गनित होइ नषत तेतो इमि भनिए। कहि रामदया यहि भांति होइ बुध बुद्धि सबतादिक। जानि लोजिये नषत मास दूनै कै कातिक। अथ रवि ग्रहन विचार। दोहा॥ महा नषत के सूर्य जेहि मावस लघु सुनु छत्र। परिवा कछु कछु संचरै सूर्य गहन गनि तंत्र। अथ चंद्रग्रहन विचार। पून्यो कछु परिवा कलित होहि भानु जिहि रासु। ससि सतये तिहि रासि सो चन्द्रग्रहन सो प्रकासु। इति श्री सभाजीत रामदया कृत ज्योतिष सम्पूरन लिषितं शिवचरण बाजपेई संवत १९२१ लिषा सोतला प्रसाद सधवापुर के पठनार्थं।

Subject—ज्योतिष।

No. 342(*d*). Sabhājita Rāgamālā by Rāmadayā. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—16 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—40 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lālā Bhagavat

Prasāda, Village Sadhuwāpura, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः । अथ राग रागिनी लिख्यते । गुरु गणपति को सुमिरि पद लाय प्रीति दृढ़ चित्र । राग रागिनी सुर श्रुति भाषा कहौं कवित्त । अथ सप्त स्वरनाम । षड्ज ऋषभ गंधार औ मध्यम पंचम जानि । धैवत बहुरि निषाद पुनि ये स्वर सात बखानि । सत स्वरन को समुझि चित सुरति होति बाइस । राम दया भाषा धरो जानि लेहु इकईस । अथ बाइस श्रुति के नाम । कवित—त्रिवाकु द्वैतो मुद्रा छंदोवती रञ्जनी विचारि बुधि रति को चिनषिये । जानिये २ उद्रा क्रोधी बज्र और प्रसारनी है प्रीतिमती घृति रिक्ता श्रुति चित लेषिये । संदीपनी अलापनी कही रोहनी औ स्याम दती सु उग्रा उभै रामदया पेषिये सहित छोभ निकाम श्रुति कही बाइस मैं सात सुर माह सब ही को गति देषिये । दोहा । जो न सुरन को लेइ श्रुति मिलै और जोग राग । राम दया क्रम सो कहै जानहु कुसल समाग ।

End—अथ आसावरी । अगर बरन मधु स्याम चंदन सो रचित सदा सो आसावरी बाम नाह नेह रातो रहै । मेघ राग लछन । स्याम रंग पठ पात वैस तरुन सुंदर सुघर । मेघ राग को रीति चित प्रसन्न ज्यावत जगत । मेघ राग को रागिनी टेक लछन । बिछुरी संग सो नाह छेति सांस मग्या परो । अति कलेस मन माहि बिरहत चेत नट कट के । अथ मल्लार । अति प्रवीन गहि बीन गान करत पिय गुन दुषित । यह मलार तन छिन बिरह भरी सुकुमार वहु । अथ गुजरी । शोभित श्याम शरीर बड़े बार सों गुजरी पहिरे भूषन चीर गान करत सेज्या धरो । अथ भूपाली । गोरथ सो सुभ अंग नष सिष सो कुमकुम रचित । दाहत देह अनंग भूपाली पिय सुधि करत । अथ देशकार । नैन कमल मुष चंद कुच कठोर कंचन बरन । हरत नाह दुषदंद देशकार सुकुमार रत । अथ सर्व को कवित । प्रथमहि बाइस जो विचारि जो धरी श्रुति मिलो तीन सुर सोऊ कहौं मैं प्रमान है । षट राग पंच रागिनी समेत धरे षाड़व षाड़ न आदि जाको जो बषान है । सब ही के यह सुर लछन रहे निश्चय बखान सुनायेउ बुध जानत न आन है । सात सुर हो मैं सब हो को गति रामदया ऐसी रीति कोऊ कवि जानत सुजान है । इति श्री सभाजीत राग रागिनी सम्पूर्णम् लिषितं शिवचरण बाजपेई संवत १९२१ पठनार्थ दीवान सीतलप्रसाद सधवापुर के ।

Subject—राग रागिनी स्वर आदि का वर्णन ।

No. 242(c). Sabhājita Sāmudrika by Rāmadayā. Substance—Country-made paper. Leaves—12. Size—16 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—260 Anushṭūp Ślokas.

Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṁvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lālā Bhagavat Prasāda, Village Sadhuwāpura, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ समाजीत सामुद्रिक लिष्यते। करौ कृपा श्री सारदा हरौ कुमति मति देहु। सामुद्रिक लक्षण कहौं चरण कमल करि नेह। लछन जेते सुभ असुभ सामुद्रिक के गूढ़। रामदया कीन्हे प्रगट पहिचाने अति मूढ़। रामदया भाषा किये सामुद्रिक यह जानि। बुरे भले नर नारि के लिए अंग पहिचानि। अथ पुरुष लछन॥ आयु प्रमाने। बामन अंगुलो मनुष वपु नृपति पुष्ट जो होय। आदर जग दिन दिन बढ़ै भिच्छा तजे न सोय। आठ दहाई आंगुरी नाप लेहु नर देह। क्रूर कुटिल कपटि महि भूलि न कीजे नेह। नब्बे अंगुर पुरुष की तीस बरष की आयु। पांच बरष प्रति अंगुरहिन नब्बे सो अधिकाय। असी बरष की आयु बल सैा अंगुर जो अंग। सात बरष सो ते अधिक प्रति अंगुर के संग। सो अरु दस आंगुर पुरुष बरष हेड़ सो आयु। आंगु पाछे बरष दस बीस से ले पाय। होय एक सैा बीस सो ऊपर मनुष पतंग। चिरंजीव सो जानिए होय न कबहुं भंग।

End—कपोल लछन। दोहा। होहि मसीले मंजु शुभ गोल गाल रंग लाल। सदा छपो धन तासु के भाषत कुसल रसाल। सिंघ बाघ गज सम विशो होहि जासु के गाल। भोगी सो सब रसनि को सेनापति ततकाल। गाड़ कपोलन मैं पड़ै हंसत कहत जो बैन। हैत चैत विन दिन अेसमैन कछु पैन। अथ कान लक्षण। छोटे मोट कान ना दीरघ पतरे नाहि नाहि। सुमिलि कान कहिए धनी सुजस लाभ जग माहि। सोरठा। दीरघ पतरे कान के राजा के सिद्धि सुभ। लछन होय न आन। छोटे मोटे कान दुष। अथ नास लछन। कीर करी सी नासिका ऊंची सुमिल सुढार। सो नर भूपति को धनी कुंजर झूमहि द्वार। मोटी चपटी पोल लघु कोंचित नासा होय। लटकि परै जो बदन पर दुषित जानिए सोय। दीरघ छेद कपाल का निचे परै जो मासु। नीलो बासो पाप बहु करै बीच को नासु। मुष लघु दीरघ नासिका कंठ बांबरे बैन। पापी कपटी दुष्ट बहु जानि लेहु निज नैन। इति श्री समाजीत सामुद्रिक सम्पूरन लिषा शिवचरन बाजपेई दीवान सीतलप्रसाद के पठनार्थ संवत १९२१।

Subject—सामुद्रिक के लक्षण और स्त्री पुरुष के हर एक अंग के पृथक् पृथक् शुभ अशुभ गुणों का वर्णन।

No. 342(*f*). Sabhājita Vaidyaka by Rāmadayā.—Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—16 × 6

inches. Lines per page—18. Extent—96 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lālā Bhagavat Prasāda, Village Sadhuwāpura, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः। अथ वैद्यक भाषा लिष्यते। दोहा॥ कै परनाम परमात्मा सुमिरों हिद् चितलाय। सोक मोह भ्रम कलुष दुष दुर्मति दूरि ह्वै जाइ। गणपति के पद सुमिरि के मांगों यह वरदान। वैद्यक भाषा मैं रचौ करो सुमति को ग्यान। रामदया चितलाइ कै सोधो वैदक ग्रंथ। सो विचारि भाषा कह्यो समुझि नाटिका पंथ। रामदया ने कहे भाषा नारी भेद। पढ़ै मूढ़ चित लाइकै होइ दक्ष बुध वैद। नारी लक्षण तीनि है क्रम सो दियो बताइ। प्रथम पित्त कफ दूसरो तीजो कहियत वाइ। जहां जासु को वास है कहो तहां सो ठौर। प्रथम वोध बुध आपनी जानि लेहु तव और। लक्षण साध्य असाध्य के पहिले लीजै जानि। तव ताको उपचार करु सोच लीजिये मानि। रोग समुझिये सुभ असुभ जैसे करले वीन। दक्षिण कर गहि नाटिका जानहु व्यथा प्रवीन।

End—अथ इन्द्री ढीली परी होय ताको इलाज। प्रथम चमेली के दल आनि। ताको कूट लेहु रस छानि। कूटि सोहागा तामें देहु। मानशिला सब सम करि लेहु। चारो डारो तिल को तेल। पांचो आटि कराही मेल। छानि तेल इन्द्री पर लाइ। सात दिवस मे नस जुरि जाइ। अथ गठिया वाइ का इलाज। मदार का दूध ऽ। छकरा का दूध ऽ॥ तेल तिल का ऽ१ सेर ताको चुरै के मेंडुकी का रस।ऽ भरि पमिलो वा रस ऽ। ले गुण चौरासो वायु नासै अथ वाई को दवा सिंगरफ तोला १८ लोलाथोथा परा तोला ६ गाइ का घिउ ऽ॥ मोम ऽ॥ कपड़ा मिही गिरह १२ पहिले कराही मों घिउ डारै तव मोम डारै तव इंगुर बूकि तुतिया डारै बूकि जब सब मिलै तव कपड़ा वोरै उतार लेइ मोम जमा होइ तौ वाती बनावै ६ः एकांत कोठरी मे एक वाती तपावै सकारे वा सांझ रहुते लार गिरै गह्रो हाथ पाव जो पसीना चढै लासा अस जव जानव नीक मनावै रोज तीनि ऊपर ते पिछोरा ओढ़ि कै आंच वाहेर ना आव वाउ नीक होइ। इति वैदक समाप्तम सुभ मस्तु संवत् १९२१ पौस मासे सुक्लपक्षे तिथौ पंचमयाम मंगलवासरे लिषतं पुस्तकं सीतलप्रसाद कायस्थ ग्राम सधवापूर के।

Subject—नाड़ी लक्षण, पित्त का उत्पत्ति, कफ, वायु की उत्पत्ति, पित्त लक्षण परोक्षा, कफ लक्षण परोक्षा वात पित्त कफ का उपचार, साध्य असाध्य

लक्षण चैार नारी परीक्षा। आठ प्रकार के ज्वरों के नाम, उनके लक्षण चैार उपचार व उनकी चैाषधि, धातु मारण विधि, गुप्त रोगों की चैाषधियां चैार कुछ मंत्र चादि ॥

No. 342(*g*). Śālihōtra by Rāmadayā. Substance—Country-made paper. Leaves—75. Size—9 × 4½ inches. Lines per page—8. Extent—525 Anushṭup Ślokas. Appearance—Good. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Viśvanātha Siṁha Raisa, Taluqēdār, Village Aganesa, Post Office Tirasuṇḍī, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः। दोहा ॥ प्रभु गुरु गणपति सारदा चतुर चतुर के पांइ ॥ बंदन करि बंदन रच्यो सालहोत्र के भाइ। १ गिरावान वाना सुभग प्रथम करयो रिषिराज। वहै न कुल न लोक में प्रगट करयो नर काज। २ नर भाषा सोई कह्यो रामदया यहि जान। लछन हय के असुभ सुभ लेहि चक्ष पहिचान। ३। गगन गैान सम पैान बल जल थल भू चाकास। तुरंग सुपक्ष सुदक्ष सो फिरत अभीत हुलास। ४। परम पराक्रम देषि के सुनासीर निज काज। आयो विन वाहन जहां सालहोत्र रिषिराज ५

End—अथ हडा को इलाज। मूली एक बड़ी लम्बी सो बीता डेढ़ को, भेड़ी को लीद आधा मन तेहि के आगि करै तेहि में मूरी को भर्त्ता करै अब नरम होय तब वैस हडा के उपर बांधि देइ घरी दुइ लो अधिक रहै तो हाड़ गलि जाइ तेहि ते घरी दुइ राखै फिरि छोरि डारै। इलाज कम खुराको मल को भरि गा होइ अंग बैठा होय छाती बंद होइ बूझि गा होइ तेहि के चैाषधकारी जोर आध सेर लहसुन आध सेर लाल मिरच आध सेर सब कूटै गोली बांधे पैसा दुइ भरे कै देइ रोग ७ फिर तीनि रोज न देइ वैसे तीन सात करै।

Subject—१—२२ बकसराय दसैाधी कृत सालिहोत्र।

(१) पृ० १ से पृ० ४ तक ग्रन्थ निर्माण कारण।
(२) „ ४ „ ५ „ चतुर्दश के हय वर्णन
(३) „ ५ „ ९ „ „ उत्पत्ति, वर्णभेद लक्षण स्वभाव
(४) पृ० १० से पृ० १२ तक सात रंग के शुभ अश्व, मिश्रित रंग, षट् अशुभ अश्व वर्णन, एकादश लक्षण।
(५) „ १२ „ १४ „ शुभाशुभ लक्षण
(६) „ १४ „ १८ „ उत्तम अश्व वर्णन। भैांरी शुभाशुभ लक्षण।

(७) पृ० १९ पृ० २० तक दंत परिज्ञान

(८) „ २० „ २१ „ उत्तम हय, देह प्रमाण वर्णन, वाह वर्णन वाह की भूमि।

(९) „ २१ „ २३ „ चाबुक विधान, सवारी विधान, धातु परीक्षा।

(१०) „ २३ „ ३२ „ रोग लक्षण, अग्नि परीक्षा, पित्तरक्त लक्षण औषधि, अन्य रोगों के लक्षण तथा उनकी औषधियां।

[गद्य] ३३—३६ पृ०—घोड़े के ३५ दोष, नकुल कृत प्रथम अध्याय।

३६—३८—द्विका लक्षण, अश्व के चार वर्ण।

३९—५०—अश्व के ७२ दोष १२ पेट में ६० देह में, पित्तदोष, उपचार षट् ऋतु।

५१—५८—मास-कुत्रिया चिकित्सा विधान।

५८—६२—वात की औषधि, असलेषमज्वर, कालज्वर, सन्निपात इत्यादि।

६३—७५—अन्यरोग तथा उनकी चिकित्सा।

No. 343. Svarodaya by Rāmadhana Dūsara of Āgrā. Substance—Country-made paper. Leaves—13. Size—12 × 6 inches. Lines per page—22. Extent 250 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1924 or A. D. 1877. Place of deposit—Thākura Rāma Siṁha, Village Ragunāthapur, Post Office Bisawā, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः। अथ सरोधा सार लिख्यते। मुंशी रामधन दूसर अकबराबादी ने बनाया स्थान मथुरा। वार्ता॥ प्रगट होय कि सरोधा ऐसी विद्या है जिसके द्वारा गुप्त मनोरथ प्रगट हो सके हैं और इस विद्या के जानने लोगों को बड़े लाभ होते हैं इस लिये अगले ग्रंथों से जिन बातों का आश्रा और जिन साधन का साधन आवश्यक है उनको चुनि चुनि के यह छोटा सा ग्रंथ लोगों के हित विचार हमने बनाया जो लोग इस विद्या में निपुन हैं॥ उनसे मेरी यह प्रार्थना है कि इस ग्रंथ में जहां कहीं भूल हो देवे उसको अपनी दयालुता सों सुधदेवें आश्रा चाहिये।

तत्व नाम	तत्व का रंग	तत्व की चाल का प्रमाण	तत्व की वाहना	तत्व की प्रकृति	तत्व का स्थान	तत्व का दरवाजा	तत्व का भोजन	एक एक तत्व में पांचो तत्व में भुगत है और उनके पकृति के न्यारे न्यारे भेद है
१	२	३	४	५	६	७	८	९

End—श्री पहिला मानसी सेवा जो मन करिके निम दिन अपने इष्ट देव के ध्यान में मगन रहे। और समय समय को सेवा में चित्त लगावे। जितनो सांची प्रीति से मन सुद्ध करके अर्थात ईश्वर को सब जीवों में व्यापक जाने यह मानसी सेवा में मन लगावेगा उतनोही जल्दी दिव्य दृष्टि हो जावेगी। दूसरा प्रतिमा सेवा इसमें मूर्ति का भाव न जाने साक्षात नंदकुमार जानके जैसे पांच वर्ष के बालक को माता पिता लाड़ लड़ावै तैसेही श्री ठाकुर जी को लड़ावै। यह मन वच कर्म करिके सेवा करे सेवा में चित्त लगाय राखे। काल ज्ञान की रीति प्रथम दाहिने हाथ की मुट्ठी बांधिके मस्तक पै लगा के पहुंचा पै दृष्टि कर लिया करै छः महीना पहिले मुट्ठी अरु हाथ न्यारे न्यारे दीखेगे दूसरे दाहिने हाथ की मध्यमा को मोड़े के अंगुरी को जड़ में लगा के बाकी रही अंगुलियों को धरती पै जमा के एक एक उठा के फिर जहां को तहां अस्थित करै दोपहर पहिले मृतकाल से अनामिका उठेगी तीसरे दाहिने स्वर मृतकाल से पहिले दो राति दिन १ वर्ष पहिले ५ दिन ६ महीना पहिले १५ दिन ३ महीना पहिले २० दिन २ दिन पहिले ३० दिन राति बराबर चलना रहै और एक वर्ष पहिले आकाश तत्व ३ राति दिन चलता है॥ दो० स्वासन स्वासन कृष्ण कहु वृथा स्वांस मति खोय। ना जानूं या स्वांस को आवन होइ न होइ इति श्री सरोधा समाप्त संवत १९२४

Subject—स्वरोदय का वर्णन अर्थात् उसके द्वारा हानि लाभ, गर्भ में पुत्र है अथवा बेटी, लड़ाई पर जाने से जय होगी या विजय, आदि का जानना।

No. 344. Sahaja Rāmachandrikā (Kavi Priyā kī ṭikā) by Rāmakavi of Vikramangara. Substance—Country-made paper. Leaves—392 Size—12 × 6 inches. Lines per page—6. Extent—3,675 Anushṭup Ślokas. Appearance—Good. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of Cmposition—Samvat 1834 or A. D. 1777. Place of deposit—Paṇḍita Rāma Deva Bhaṭṭa, Village Nunarā, Mauzā Lamahā, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—अथ नृप वंश वर्णनम् ।

विष्णुराम विख्यात विष्णुपुर नग्र बसायो । ठौन कर्ण सुरजकरन अनूप नृप सिंह सुजान सुजानिये । तेहि कुल जोरावर सिंह नृप पर दुख हरन बखानिये । दोहा । सोजो राव पाठ अब राजन भूप गजेश । दिन दिन दान उदारमति विलसत विभव विसेश । कवित्त ॥ गजै ना सकतु निरबल को सबल कोऊ भंजि न सकत बलो मानहु सुतन को । देव द्विज भाव माहा सरल सुभाव कहिये पूरन प्रभा वर है लक्ष्मी रमन कौ । कहै कवि राम जाको नाव नव खंडनि मैं सुजस अखंड महिमंडन वरन को । विक्रम नगर गजसिंह जु करत राज शत्रुन को साल प्रतिपाल है सरन को । दोहा । महाराज गज सिंह को नागर नजरि उदार । सहज राम जिहि नाम है सब बातनि रिझवार । कवित्त—दिन दिन दुनो महराज गज सिंह जू को सब तै सरस जिनि ऊपर महा है । नाजर सहजराम बुद्धि को उजागर है अति हित सागर है चित्त को सुघर है । कविन दाता गुन ज्ञाता बड़े ग्रंथनि को जिनको विधाता दीनो धन नृप बर है । कहै कवि राम भुव मंडल मैं ठाम सुजस को धाम कौन जाको सरवर है । ७ ॥ दोहा । नाजर निरमल गंग सो बसत हिये उपकार । कथा कृष्ण कीरति सुनत प्रीति रीति निरधार । सहज राम चित सहज ही यह उपज्यो उपजोग । कवि प्रिया अति कठिन है नहि समझत सब लोग । चतुर नरन के बचन ते बढ़ो चढ़ो चित चाह । चित्र श्लेषनि के अरथ नीके करो निबाह । १० । कवि सगति टीका करी रही संत कवि पास । सहज राम नाजर सुघर कीन्हें जगत प्रकास । ११ ॥ संवत अठ दस सत बरष चैातीसे चित धार । रची ग्रंथ रचना रुचिर त्रिजैदशमि शनिवार । १२ सहज राम कृत चंन्द्रिका धरगो ग्रंथ को नाम । पढ़त सुनत पंडित नरनि उर उपजत विश्राम ॥

End—दोहा—इहि विधि केशव जानहु, चित्त कवित्त अपार ।
वर्णत पंथ बताइ मैं, दीनो बुद्धि प्रसार । १९७

सुवरन जटित पदारथनि भूषन भूषित मानि । कविप्रिया है कवि प्रिया कवि संजीवनि जानि । १९८ । पल पल प्रति अवलोकि कै सुनिबो गिनिबो चित्त । कवि प्रिया मैं रखियो कवि प्रिया ज्यों मित्त । १९९ ॥ अनिल अनल जल मलिन ते विकट खलन ते मित्त । कवि प्रिया यों रखियो कवि प्रिया ज्यों मित्त । २०० ॥ केशव सोरह हाव शुभ सुवरनमय सुकुमार । कवि प्रिया के जानियो सोरहई श्रंगार । २०१ ॥ सुगम । सहजराम कृत चन्द्रिका शशि चन्द्रिका समान । देखत ही संसय तिमिर प्रति दिन करत पयान । २०२ इति श्री नाजर सहजराम विरचितायां कवि प्रिया सटीका षोडसह प्रकाश । १६ ।

Subject—(१) पृ० १ से पृ० २९ तक—प्रथम प्रकाश—राजवंश वर्णन।

(२) पृ० २९ से पृ० ३३ तक—द्वितीय प्रकाश कवि वंश वर्णन।
(३) „ ३४ „ „ ६६ „ तृतीय „ कवित्त दोष वर्णन।
(४) „ ६७ „ „ ७८ „ चतुर्थ „ कवि व्यवस्था।
(५) „ ७९ „ „ ९६ „ पंचम „ अलंकार वर्णन।
(६) „ ९७ „ „ १३८ „ षष्ठम „ वर्णालंकार।
(७) „ १३९ „ „ १६९ „ सप्तम „ सामान्यालंकार वर्णन।
(८) „ १७० „ „ १९५ „ अष्टम „ भूषण वर्णन।
(९) „ १९६ „ „ २१० „ नवम „ विशेषालंकार वर्णन।
(१०) „ २११ „ „ २२५ „ दशम „ विशेषज्ञेयालंकार „
(११) „ २२६ „ „ २७६ „ एकादश „ क्रमालंकार „
(१२) „ २७७ „ „ २९४ „ द्वादश „ उक्तालंकार „
(१३) „ २९५ „ „ ३०९ „ त्रयोदश „ समाहित दीपक परवृत्तालंकार वर्णन।
(१४) „ ३१० „ „ ३२५ „ चतुर्दश „ उपमालंकार „
(१५) „ ३२६ „ „ ३६२ „ पंचदश „ विशिष्टालंकार „
(१६) „ ३६३ „ „ ३९२ „ षोड़ष „ एकाक्षरादिकाब्द वर्णन।

No. 345. Guṇasāgara by Rāma Kavīra of Nandagrāma. Substance—Country-made paper. Leaves—16. Size—6×5 inches. Lines per page—16. Extent—120 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṁvat 1842 or A. D. 1785. Place of deposit—Ṭhakura Naunihāla Siṁha, Kānthā, District Unao.

Beginning—श्री इष्टा देवता सुप्रसन्नमस्तु। अथ गुणसागर को छप्पय लिख्यते।

जय जय जसदा नंद कंद नंदालय मंडन। जय जय""""ध्वनि कादिश कर चक्रानिल॥ कर चक्रानिल। जय जय मृदुकर जानु चाह""""कम हास लालस। जय पाणि संजीव मंजु सिंजित विमताम्ब॥ वि""ले अलालित चरण जय निज""भ विभिन्न भय। जय जय जनन्य दल सुख करण नवनीत प्रियानाथ प्रिय।१॥ जयसि वक्रो वक दनन जयसि पद सकट नितंक। तृणावर्त हर जयसि जयसि मल वत्स निवर्तक॥ अव विध्वंसन जयसि जय सिचर पुर पर दारण। शंख चुर जिञ्जयसि जयसि वृषभासुर मारण। हय रूप दनुज

गंजन जयसि जयसि मन्मथ सुत हरण। गिरि धरण जयसि गिरिधर जयसि जयसि जयसि गिरिधर धरण। २

End—जय युधि निर्जित दंतवक्र शिशुपाल जरासुत। जय रिपु रुक्मि विरूप करण जय नम्य बधू तुल। जय शादिद्यु ...सहस्र युवति जन वल्लभ। जय शको कृत रंक विप्र जय सर्व सुदुर्लभ। जय विप्र नष्ट तनया नयन निज गति विस्मापित विजय। जय मधु महीश जगदीश जगदेव द्वारा वतीश जय। २० वामदृशा भट मित्त वामहा वाम श्रुति कुंडल। वाम्न स्पृह काम पाल कामक...मंडल। श्री दाम विप्र दाम वि.......दुद्दाम यशस्कर। सौरिग्राम कृत धाम मावपल धाम तिरस्कर। सद्ग्राम सुखद संग्राम भट नंदग्राम सुखानुभव। रमतेऽभिराम चरितेऽभिरुचि जिष्णा रामोऽपि तव २१। श्री

Subject—२१ छप्पयों में श्रीकृष्ण की स्तुति।

No. 346(a). Rāja Nīti Kavitta, by Pradhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—7. Size—12×4 inches. Lines per page—36. Extent—158 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Rāmaśaṅkara Vājapeyī, Village Bahorī kā Vājapeyī kā purwā, Post Office Sisaiyā, District Bahraich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ राजनीति के कवित्त लिख्यते॥ भूप लक्षन॥ देव द्विज तोषै प्रजा प्रान सम पोषै चुक कीन्हे पर रोषै ना समोयै मान प्यार है। काहू को न लषै न्याव गैल मैं परेषै काम काजो पै विसेषै काम ईंषै बार बार है॥ भाषत प्रधान मान चाकर को राषै विना विगरेना भाषै कोऊ भाषै जो हजार है॥ साजिकै समाजै करै ऐसो राज काजै ताही जानो नर राजै यह राम अवतार है। १॥ ब्राह्मन पै भावै प्रीति मोहन सो राषै हेत विरचन को लाषै नेत माषै यही सार है॥ प्रजा द्वार रोवै आप रोऊ जून सोवै विनै कीनैं गुना होवै टेढ़ जोवै बार बार है। जाको नीक नारो जानै ताही को संकोच मानै भषत प्रधान आनै एको न विचार है। नीति नहिं पालै चलै याही रीति चालै ताही जानो जम घालै जान ढार महिपाल है। अथ देवान लक्षन॥ राजनीति जानै बड़ो छोट पहिचानै लाभ हानि अनुमानै काज ठानै सावधान है॥ तजिकै गुमानै विनती सुनै सब लोगन को दीन्हे विन दीन्हे भूरि राषै सनमान है। भाषै है प्रधान सेवा सहै नहि सेवक को रीझि खीझि दोऊ करिवे मैं बड़ो ज्ञान है॥ साचे स्वामी काजो राषै रैयत को राजी सदा ऐसे काम काजी नर राजी जहान है।

End—फूले फिरैं घैंडे गात सूघो वात में रिसात मारे जात लात पै बतात घैड़ दारी को ॥ डोमते निकाम काम कै के विढे लावैं दाम ताहू में गुनाम सा मानै पानिहारी को ॥ भाषत प्रधान घैसी पाजिने को बाढ़ो मान कहाँ लौं करौं बखानि तिन को मवारी को । कुटना कलंको घूत कौरहा कुकर्मी घूत कायर कुमत तेऊ मेरे बढवारी को ॥ करनी चमारन को संगति गंवारन को चान मरवाहन को ताहो में भुनान है । मापै मजबूतो बात रोजै चारि जूती सवै नीच करतूतो पै सपूतो को गुमान है ॥ भाषत प्रधान घैसे गोदर गुलाम जेऊ भाग्य बस पाय जात राज घर मान है । लालच के मारे चारि जुतिया साहैं तिन्हैं सज्जन सुजान लेखैं स्वान के समान है ॥ घादमी न चोन्है यह को है कौन लायक को सबरो सा बांधे फिरै गर्वहो को बाना है ॥ जानैं न मजार जानिबे को चारि वातैं झारि नाहक बनाये फिरै मूंड़े महताना है ॥ भाषत प्रधान रापै कपटै को हेल मेल ऊपर ते घापने घौर भौतर विराना है ॥ जेवैं जग जापै नर घैसेहो सुभाय कहिबे ही को मरद तिन्हैं जानिए जनाना है ॥ कौड़ो चारि पावैं तौ चमारहू छांड़ै जाति नाहि जाति की चोपाई चारो घोर निज गावहीं ॥ भंगो मतवारे पासे नंगा सरदार घागे पाछे न कंमार द्वार द्वार नित धावहीं ॥ भाषत प्रधान घैस नकटा निलज्जन को सज्जन सुजान सबै भांतिन बचावहीं ॥ चलनी के चाम घौ घोरे को लगाम घैसे सदा के गुलाम काम काहू के घावहीं ।

Subject—राजा, दोवान, सरदार, मुसद्दो, ब्यौहार, पंच, वैद, नारी, पापंडो, दंभी, पदैया, गुलाम, सांच, लबार, मीत घौर दरबारो के लक्षण ।

No. 346(*b*). Kavitta Rāja Nita by Pradhāna Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—9 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—128 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit—Lālā Narsimha Nārāyaṇa Shiwagarha, Rae Bareli.

Note—Details as in No. 346 (*a*).

No. 346(*c*). Rāma Kalēwā by Rāma Nātha Pradhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—30. Size—15 × 6 inches. Lines per page—14. Extent—420 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1902 or A. D. 1845. Date of manuscript—Samvat 1924 or A. D. 1867. Place of deposit—

Biṭṭhaladāsa Mahanta, Mirzāpura, Post Office Baharāich, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ अथ राम कलेवा लिख्यते ॥ छंद ॥ चैापैया ॥ जय गनपति गिरजा गिरजा पति जयति सरस्वति माता । जय गुरुदेव केसरीनंदन चरण कमल सुषदाता ॥ उनइस सै दुइ के संवत मे जेठ दसहरा काहीं । प्रिय कियो आरंभ अनूपम बैठि अयोध्या माहीं ॥ अहै प्रीति की रीति अटपटी मैं कै भांति बताऊं । ताते सानुज रामकुंवर को रहस कलेवा गाऊं ॥ जेहि विधि जनक सदन रघुनंदन कीन्हेउ रुचिर कलेऊ ॥ सुष दीन्हे सारिन सरहज कीं सो सब कहि हैं भेऊ ॥ ब्याह उछाह सिया रघुवर को मैं बरनौं केहि भांती ॥ कुल मह बीति गई सब रजनी रागे रंग बराती ॥ भोर भयो अपने कुमार के जनक वेगि बुलवायो । सुनि के पितु निदेस लक्ष्मीनिधि सचिन सहित तहं आयो ॥

End—राय रजाय पाय रघुनंदन अति आनंद उर छाये । सब कहि गये महल की बातें रघुवर सहज सुभाए ॥ सुनि विहसे महाराज समाजुत बरनि न जाय हुलासू । पुनि नृप दिये रजाय सुतन कहं गे सब निज निज वासू ॥ इमि आनंद जनक पुरवासी नित प्रति पालत लोगू । कोटिन इन्द्र नजारे नहिं आवत निरषत बहु सुष भोगु ॥ राम कलेवा रहस चरित यह लघु मति कवि किन गावै । सेस गनेश महेस सारदा तेऊ पार न पावैं ॥ जो कोउ प्रीति रीति उर चाहै सो ग्रंथहि यह वांचै, पूरन पावै प्रेम राम को पुनि जग नाच नचावै । राम कलेवा रहस ग्रंथ यह रसिक जवन अधिकारी । जाके श्रवन परत रस बातैं हिय न उठत बिकारी ॥ जेष्ट दशहरा ते अरंभ करि क्वांर दशहरा काहीं । राम कलेवा रहस ग्रंथ यह पूरन भो मुद माहीं ॥ दोहा निज पैंतालिस बरस को उमर जान परमान कियो कलेवा ग्रंथ यह रामनाथ प्रधान ॥ इति श्री रामनाथ प्रधान विरचित राम कलेवा समाप्तं लिः रघुवरदास वैसाष कृष्ण ५ संवत १९२४ सीताराम मज्जु ॥

Subject—रामजी का अपने भाइयों सहित कलेवा के लिये ससुराल में जाना और सालों सरहजों से हास्य बिलास करना ।

No. 346(*d*). Rāma Kalēwā by Rāma Natha Pradhāna of Ayodhyā. Substance—New paper. Leaves—16. Size—12×7 inches. Lines per page—4. Extent—480 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1902 or A. D. 1845. Place of deposit—Paṇḍita Bhagawāndīna, Inonā, Rāe Barelī.

Note—Details as in No. 344 (*c*).

No. 346(*e*). Rāma Kalēwā by Pradhāna Rāma Nātha of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—100. Size—9 × 6 inches. Lines per page—13. Extent—406 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1902 or A. D. 1845. Place of deposit—Rājā Bhagawān Baksha Siṁha, Riyāsata Amethī, District Sultānpur (Oudh).

Note—Details as in No. 346 (*c*).

No. 347(*a*). Arjuna Gītā by Rāma Ratna. Substance—Country-made paper. Leaves—100. Size—8 × 6 inches. Lines per page 18. Extent—731 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Kaithī. Date of manuscript—Samvat 1837 or A.D. 1780. Place of deposit—Paṇḍita Gayā Prasāda Tiwārī, Dostapur, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री पोथी लिषी पर्जुन गीता ॥

मातु भवानी सुमिरौं तोही । सुमिरत ग्यान बुद्धि देहु मोही ॥ सुमिरौं चंद सुरज दुइ भाइ । जेहि को जोति रहो जग छाइ ॥ सुमिरौं पवन पुत्र हनिवंत । जेहि सुमिरे बल होइ बहुत ॥ सुमिरौं गनेस जेन्ह विघिन संहार । जेहि कारज सों गावै संसार । सुमिरौं सकल लोक माही मंद । सुमिरौ नदी पठारह गंद । सुमिरौ प्रवता पवन पहार । सुमिरौ सकल लोक संसार ॥ सुमिरौं गुरु वामन के पावां । जेहि सुमिरे मेरो निरमल काया ॥ सुमिरौ गुरु यंत्र जो दीन्हा । जेहि प्रसाद में गोविन्दहि चीन्हा ॥ धनी गुरु विद्या जो दीन्हा । जेहि प्रसाद में पचार चीन्हा ॥ सुमिरौ सरस्वती अमृत पानी । जेहि पहि ज्ञान कीन्हा मनजानी ॥

End—जेतो का धरम तीहु लोक मो माही । गीता समान दुसरा कोइ नाहीं ॥ रामरतन गीता प्रभु भाषा । प्रमातंतु के परजुन राषा ॥ श्री पुष गीता संपूरन भयेऊ । परजुन कै संसै छुटि गयेऊ ॥

दोहा—श्री कृश्न पर्जुन मिलि गुरु कीन्ह पेका नाम ।
सो ग्रन्ह के तारन को भाखेय केवल नाम ॥

× × × ×
× × × ×

मदमातो जो पेही मारि कै मान भजै पक नाम ।
इतौ सब लोक को माया भाजहुना केवल नाम ॥

पतो श्री पोथो अरजुन गीत संपूरना समापाता जो देख सो लोख ममदोष दोजोये पंडोत जन सो बोनती मोरी टुटो अछुरा लेवै साव जोरी ॥ संमाता १८२७ को साल मह पोथा उतारा अरजुन गीता । प्रतध्वरा सातो मात समै नाम मस आसोम सुदो ९ वार सुकवार का काय उतरो जैसे पुरान दसपत सुमव सोध वयेसा भुमोवद्दा सव रामवरामपुरा पोथो उतार गुजरात महा श्री वारन सहये ।

Subject—(१) पृ० १—४ तक—वन्दनाएं, ।

(२) पृ० ५—९५—तक—श्रीमद्भागवत का पद्यानुवाद ।

(३) पृ० ९६—१०० तक—गीता पठन का फल ।

No. 347(*b*). Rāma Ratna Gītā by Rāma Ratna. Substance-Country-made paper. Leaves—100. Size-10¾ × 7½ inches. Lines per page—20. Extent—1,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Kaithi Muḍiyā. Date of manuscript—Samvat 1822 or A.D. 1765. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Simha Seṅgara, Village and Post Office Kāntha, District Unao.

Beginning—श्रीराम जो सहाई । श्री महादेव जो सहाई । श्री दुर्गा जो सहाई । श्री गनेश जो सहाई । श्री हनुमान जो सहाई । श्री सव देवता जो सहाई । श्री पोथो रामरतन गोता लोखते । श्री गुरचोसन कै चरन मनावो । जेहो परशाद गोविंद गुन गावो । श्री कोसन आरजुन रसवानो । गुर परशाद कहा केछु जानो । येक समो थो आदोराई । आरजुन संग भेट इक ठाई । धुप दोप ले आरतो कोन्हा । चरनोदक ले माथे दोन्हा । शंशै प्रभु आहे चित मोरे । कहत अ:र दुनो कर जोरे । तव हो कोसन बोले बोहसाइ । अरजुन सो कहो जदुराइ ॥ दोहा । तोनो लोक कै ठाकुर दोनबंधु नंदलाल । बोनती करो अधोन होई प्रभु भाखो वचन रसाल ॥ रामरतन गोता करः आरजुन कोन्हे अनुसार । संत सुनो सुचोत होईः मुकतो होत शंसार ।

End—येहो वोधो गुरु देआल जब को पउ । शंशै छुटो वोमल वुधि भेयउ । दोहा । गुरु देआल मो मोहोकः छुटेउ जोव कै भ्रम । रामनाम चोत लायउः घोर जानो भ्रम ॥ इति श्री रामरतन गोता श्री कोशन आरजुन शमादनो नाम उनइशमो अध्या ॥ १९ ॥ ईतो श्री रामरतन गोता समपुरन जो परतो देखा सो लोखा मम दोष नाहीं अने पंडोत जन सो मोनतो मोरो कटल अच्छर लेय सव जोरो मोतो पुस वदो ईकादसो रोज मगर पोथो लखा वाले

सुखलाल राम सरदार का मोकाम आचानक में लोखवो। संवत १८२२ शाल मोकाम है रामपुर का इंग्लीस में।

Subject—अध्याय १—२पृ० १—१०। गुरुवंदना, अर्जुन का भगवान की आरती और पूजन कर मुक्ति के हेतु प्रश्न करना। भगवान का चारोवर्ण और चारो आश्रम की श्रेष्टता का वर्णन करना और सब के परे भक्ति का महत्व और श्रेष्टता का वर्णन करना तथा सब योनियों में मनुष्य की श्रेष्टता का वर्णन किया गया है। अ० ३ पृ० १०—१४ अर्जुन का भक्त और भगवान में अन्तर का पूछना, भगवान का भक्त की बड़ाई और महिमा कहना तथा नाम जपने की महिमा का वर्णन। अ० ४—पृ० १४—२२—अर्जुन का गुरु की महिमा और गुरुमंत्र का पूछना, भगवान का गुरु की श्रेष्टता और गुरु मंत्र की गुरुता का वर्णन करना। अ० ५—पृ० २२—३०। अर्जुन का पाप के संबंध में पूछना भगवान का नाना प्रकार के पापों के नाम और उससे होने वाले कुफलों का वर्णन। अर्जुन का उनसे उद्धार का प्रश्न करना और भगवान का उनके उद्धार का यत्न कथन करना। अ० ६ पृ० ३०—३८। अर्जुन का धर्मों के बारे में पूछना और कृष्ण का धर्मों के संबंध में कथन करना, अर्जुन का अनेक प्रकार की हत्या जनित पाप का प्रश्न करना और कृष्ण का उत्तर देना। ऋण मारने का दोष और उसका समाधान करना-अ० ७—पृ० ३८—४४। भगवान का सब में अपना व्यापकत्व वर्णन करना। अर्जुन का धर्म और पाप की पैदाइश का प्रश्न करना तथा लोभ और काम का प्रश्न करना, अ० ८ पृ० ४४—५०। अर्जुन का चांडाल होने का पाप पूछना, भगवान का वर्णन करना तथा दान की विधि पूछना और उसका विस्तृत वर्णन करना, नाम जपने के लिये आसन का प्रश्न और उसका उत्तर। अ० ९, पृ० ५०—५६। माल की विधि और उसका फल तथा किसके छूने से किस प्रकार का दोष पूछना तथा भगवान का सब का उत्तर विस्तृत रूप से देना। अ० १० पृ० ५६—५८ पाप पुन्य का भेद पूछना और उसका उत्तर देना। अ० ११—१२ पृ० ५८—६३। ठाकुर और स्त्री का धर्म पूछना और उसका वर्णन अ० १३—पृ० ६३—६७। अर्जुन का ज्ञाना प्राप्ति का प्रश्न करना और उसका उत्तर कहना। अर्जुन का नासिका द्वारा स्वांस आने का प्रश्न पूछना और उसका उत्तर कहना। अ० १४-पृ० ६७—७८ अर्जुन का व्यास के जन्म का वृतांत पूछना और भगवान का पूर्वजन्म से उसका वृतान्त कहना। अ० १६ पृ० ८३—८७। भगवान का अपनी भक्तवत्सलता और उन भक्तों का नाम वर्णन करना। अ० १७ पृ० ८७—९० अर्जुन का विराट रूप का पूछना और भगवान का उसका वर्णन करना। अ० १८—पृ० ९०—९४। भगवान की अनन्त महिमा का वर्णन और भक्ति की श्रेष्टता का वर्णन। अ० १९, पृ० ९४—१००।

अर्जुन को अपना श्रेष्ठ भक्त स्वीकार करना और भजन तथा नाम जाप का उपदेश देना।

No. 348. Krishṇa-shataka by Rāma Ratna. Substance—Country-made paper. Leaves—26. Size—6¾ × 4½ inches. Lines per page—8. Extent—117 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Ayodhyā Prasāda, Deputy Inspector, Bikāner.

Beginning—भुज त्रिवली रुचिर बनी सुषदन की। कटि किंकिनी पीति पट छाजत चमकत तड़ित जथा जलदन की। जुगलजंघरां भावत राजत अति सोभा मतिजाल कदन की। राम रतन तजिलाज मटू मे हैान चहैा रज कुंजन पदन को ॥ ३ ॥ दोहा। श्री चंद्रवलि श्री प्रिया श्री ललितादिक जुट। श्री विलोकि श्री स्याम को श्री रत सरव समूह ॥ देषि लषो छवि नागर नट को। अतुल मनोर स्याम सुभगतन याहि विलोकि रहे को हटको। मोर मुकट मकराकत कुंडिल चंद्रवदन अलकावलि छुटको। भाल विसाल तिलक भ्रकुटी वरवंक विलोकनि मोमन अटको।

End—हांस मुसिक्याय दृगंचल फेरत श्रीवन कुंज दुरे चित टोहन कुम्हिलात वामलता सषि सोचत दरसन वारि हिया हित जोहन हिलिमिलि करत विहार आपनि महि मृतक सरार प्रान पुनि पोहन रामरतन लघुदास सरनि निज राधो भक्ति गाउ रस दाहन ॥ दोहा ॥ २० ॥ श्री निवास अस्टक पढ़ें श्री अनुराग समेत श्री वानो कीरति लहे श्री घनस्याम निकेत ॥ २१ ॥ जुगल उपासिक नारि नर जे न लहे रस पान जिनको जन सर्व ध्यान पुर विमुष सुनें नहि कान ॥ २२ ॥ श्री स्वामी सरवग्य श्री मयाराम महराज, श्री गुरु करुना ते कहो श्रीपति सभा समाज ॥ २३ ॥ इते श्री कृस्न ध्याना अस्टक संपूरनं सुभ मस्तु श्री।

Subject—श्रीकृष्ण और राधा के सुंदर स्वरूप का ध्यान ललित पदों में वर्णन किया गया है। शृंगार में नखशिख भी वर्णन किया गया है। तथा राधा कृष्ण के विहार का भी वर्णन किया गया है।

No. 349 (a). Vṛitta Taraṅgiṇī by Rāma Sahāyadāsa of Bhavānīpura (Benares). Substance—Country-made paper. Leaves—75. Size—2 × 4 inches. Lines per page—48. Extent—2,250 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1873 or A. D. 1816. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—

Paṇḍita Nawala Bihārī Misra, Braja Rāja Pustakālaya, Village Gandhauli, Post Office Sidhauli, District Sitāpur.

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ ॥ वृत तरंगिनो लिषते । मनहरन ॥ सिंदुर वदन एक रदन सदन बुद्धि सुंदर सुसुंड मध्य सिंदुर प्रभा लसै ॥ सुंडा दंड उन्नत कै कुंडलो के परसत प्रनवस रुप लषि विघुन महा नसै ॥ जातनु के ध्यान कीने छूटे जमजातन ते भाल बालचंद दोष पाप ताप त्रै त्रसै ॥ सिव जगदंब बारो उदर पलंब वारो तेरे हिय धाम राम ससिद्धि सदा वसै ॥ अपरंच ॥ कनक कमल मध्य वनक अमल लसै तीनि चष चंचलासो सुषमा प्रकासिनो । संष चक्र वर धरु अभय करनि बीच चंद्रकला कलित ललित छवि रासिनो ॥ राम भुज आभरन अंगद उर सिहार कुंडल श्रवन पग पायल विलासिनो ॥ अस्तुति सुरेन्द्र आदि करहि मयंक मुषो दुहवां मृगेंद्र सुषो ध्यावो विंध्यवासिनो ॥ दोहा ॥ सिद्धि करहि सो देव वर नित निज जन मन काम । असन अंग सिर गंग अरु चंदकला छविधाम ॥ सोरठा ॥ श्री गुरु ब्रह्म सरुप चिंतामन चिंता हरन । तिनके चरन अनूप नमो जोरि निज कर जुगल कविता की रचनानि को नेकु न जानौ भेद । श्री गुरुपद अरविंद को केवल मोहि उमेद । दायक नित्यानंद के श्री चिंतामनि चित सो मोपै अनुकूल अति याते रच्यो कवित्त ॥ सोरठा ॥ श्री चिंतामनि पाय चिंतामनि पायहि जीत्यों । चिंतत चिंता जाय जिहि सो नित मोचित वसै । संध्या सुधि सिधि विधु वरष १८ ३ गौरी तिथि सुदित जो सुराचार्य वासर सुपद अरु धरमैं गत सुजै ॥

End—कायस्थ रामसहाय सुत भवानीदास के नाती हुकुमचंद के वासी भवानीपुर कासी विषै वृत तरंगिनो की रचना करी सोरठा ॥ वृत तरंगिनो पूरचहु हरिता दुति गति सरल कामद परसु अहूर कालिंदो लौं को कहै ॥ दो० ॥ जब लगि रवि ससि सेस विधि सिव रमेस अमरेस तब लगि वृत तरंगिनो उमगत रहै गनेस ॥ वानो सरवानी रमा विधि हर हरि मन राय अरु गुरु कृपा कटाक्ष सों निति वृत्त धुनि उमगाय ॥ कोस छंद रस आभरन नारकादि साहित्य । या मैं दोजो सोधि कवि करि मोपै हित नित्य ॥ सोरठा ॥ रामसहाय बनाय जस हित वृत तरंगिनिहिं हृदय परम सुष पाय अरपन किय विश्वेश्वरहिं ॥ सवैया ॥ राम सहाय करै उनको नति जो गुन को तजि दोष निहारिहैं ॥ जो सपनेहु जिन्हैं नहि ग्यान अयान वने बरनानि बिगारि हैं । पावहि गे सुष सोई बिसेषि भलि विधि जो इहि विचारिहैं । है इतनो परतोति बनो अवनो कविता कवि साधु सुधारिहैं । सोरठा । दोष रहित कविता न जो ये निता को है छवा । याते कबि विद्वान सो उपहास न कीजियो ॥ दो० ॥ सुमति रसिक कवि काव्य निधि संवर वीर मृगांक । भामिलि वामे वामगति जानेहु संख्या आंक ॥

इति श्री भवानी दासात्मज रामसहाय दास कायस्थ प्रष्टाना वृत तरंगिनी समाप्तम् श्री संवत १९०० श्रावण कृष्णपक्षे द्वितियां गुरुवासरे लिषतं हीरालाल पाठक पमस्तिकुंड पर।

Subject—कविता के लक्षण और छंद निरुपण।

No. 349(b). Vṛitta Taraṅgiṇī by Rāma Sahāya. Substance—Country-made paper. Leaves—172. Size—10 × 4½ inches. Lines per page—10. Extent—1,075 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1873 or A. D. 1816. Place of deposit—Paṇḍita Rāmānandajī Miśra, Village Hiṅganā Gourā, Post Office Kadīpur, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ वृत तरंगिनी लिख्यते ॥ मनहरण ॥ सिंधुर वदन इक रदन सदन बुद्धि सुंदर भुसुंड मध्य सिन्दुर प्रभा लसैं सुंडा दंड उन्नत कै कुंडली के परसत प्रनव सरुप लखि चित्र महा नसै ॥ जातन के ध्यान कीन्हे झूठे जम जातन ते भाल बालचन्द देषि पाप ताप त्रय त्रसै ॥ शिव जगदंब वारो उदर प्रलम्ब वारो मेरे हिय धाम राम सखिचि सदा बसै ॥ १ ॥ × ×

× × × × ×

कविता को रचनानि को नेकु न जानो भेद। श्री गुरु पद अरविंद को केवल मोहि उमेद। दायक नित्यानंद के श्री चिंतामनि चित्त। सो मोपै अनुकूल अति याते रचौ कवित्त ॥ सोरठा ॥ श्री चिन्तामनि पाय चिंतामनि पायहि जिते, चितत चिंता जाय। जिहि सो नित मो चित बसै ॥ ७ ॥ दोहा ॥ संख्या सुधि सिधि विधु बरष (१८७३) मीरो तिथि सुदि पूज ॥ सुराचार्ज वासर सुषद प्रह घट गत सूझे ॥ ८ ॥ सोरठा ॥ मन मीरो सिव ध्याय षट गुरु के पद पद्म परि ॥ ता दिन राम सहाय वृत्त तरंगिनी रची ॥ तामें बरन तरंग इक मत इक लक्ष छंद को। एक बरन वृत धंग इक तुक भेद विचार है ॥ १० ॥ रोला ॥ लघु गुरु नव प्रस्तार बहुरि सूचोहि बषानौ ॥ तव पताल मिरि केतु नष्ट उद्दिष्टहि मानों। पुनि मकरी फल बरन छन्द पुनि राज जु भाषे ॥ बहुरि भनो तुक भेद सेस पद मान न राखे ॥ ११ ॥

End—कलम को लक्षण ॥ सुगंध कुसुम हियत्रहु द्विज वर वियन नन नन नन प्रिय सहित कलम किय ॥ ५२१ ॥ I.I. II. II II. IIII. III. III. III. III. III. II. अथा। उग्र कुच ललित कनक सरसिज जित सुबसन वलित कलित अमरन वर।

चितवनि कुटिल पयन सुनयन लखि सखि जदुवर हिय लगत मयन सर ॥ अध-रनि विहसति चति रस वरसति मन मनहर मति दरपन दरसति ॥ तकि छवि सकुचति छन दुति अरु रति अजिर ममति लहि कलम सरस गति ॥ ५३२ ॥ दो० ॥ काम तथा मनहरन अरु रुप घनाक्षरि संत ॥ भनत वरन मुक्तक इन्हैं दंडक मैं मति वंत ॥ ५३३ ॥ इति दंडक ॥ अथ समद्धि वृत्त तथादौ उदक छंद को लक्षन ॥ विप मन नल दस नानो ॥ ज्यौ मम उदक जानो ॥ ५३५ ॥. ॥.॥. ॥.ऽ.।ऽ.॥. ॥ऽ. जथा ॥ पलन कलन तप ते हैं ॥ जये ललन जवते हैं ॥ तिय चजहुं न पिय आये ॥ पयोदद्क भरिलाये ॥ ५३५ ॥ वार्ता ॥ दक और उदक जल को नाम है द को दक मुईति मेदिनी ॥ × × × ×

Subject—प्रथम तरंग—(१) पृ० १—३२ तक—मंगलाचरण देव गुरु वंदना, पुस्तक रचना काल: पुस्तक विषय की संक्षिप्त सूची, प्रस्तारादि प्रत्ययों के लक्षण, लघु गुरु कथन। (२) पृ० ३२—३५ तक—विश्राम संज्ञा कथन, संख्या की संज्ञा, मात्रा प्रस्तार का लक्षण, षट् कलादि की संज्ञा, प्रति स्वरुप संज्ञा, वर्ण प्रस्तार लक्षण, गण भेद, शुभाशुभ गण, द्विगन का विचार, मात्रा तथा वर्ण सूची, छन्दोभंग, मात्रिक तथा वर्णिक पाताल तथा मेरु, खंड मेरु दोनों प्रकार, पताका दोनों प्रकार की। वर्ण मात्रिक नष्ट तथा मर्कटी। द्वितीय तरंग—(३) पृ० ५६—८२ तक—छंद का लक्षण, मात्रा की भेद की संख्या का प्रमाण—सम विषय, समद्धि लक्षण, अनेक छन्द लक्षण—मात्रिक वृत्त समाप्त ॥ (४) पृ० ८३—१७२ तक—वर्णिक वृत्तों के लक्षण।

No. 350. Ārati Jagajīvana by Rāma Sahāya. Substance—Country-made paper. Leaves—2. Size—6 × 5 inches. Lines per page—18. Extent—18 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nagari. Date of manuscript—Samvat 1948 or A.D. 1791. Place of deposit—Iswarī Gaṅgādīna Murāwa, Village Udawāpur, Post Office Baranāpur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ आरती लिख्यते ॥ आरती प्रभु जगजीवन प्यारे। आदि साह जिन पंथ पसारे ॥ चारि वजीर की आरति गाई ॥ नाम ग्राम कहि भेद बताई ॥ दास गोसांई वालक माली। वेम दास हरि सकरो घेलो। सामवंस प्रभु दूलन दासा। धरम धाम जग विदित प्रकासा। देवीदास प्रभु गौर कहाये ॥ तजि लछिमनगढ़ पुरवा आये ॥ अब चौदह गद्दीधर गाइन। चरनवंदि कर विनय सुनाइन ॥ आवरा तीर सरदहा ग्रामा। प्रभु प्रह्लाद करे

निज धामा ॥ उदैराम हरिचंद पुरवासी । ऊमापुर प्रभु नैवल निवासी ॥ बहरे लाम भवानी दासा । घटवा मेहनदास प्रकासा ॥ ग्राम हथौधा माधौ दासा ॥ वे द्विज गुरुचरन को पासा ॥ पुनि सिवदास मंत्र दिढ़ पाये । चलि पंजाब म बढ़ी लाये ॥

End—साहब कायमदास पठाना । बसि रसूलपुर सब जग जाना ॥ प्रभु अनुप सत ग्रामहि आए । इन्द्रजीत अस नाम कहाए ॥ तिन्ह चौदह बहोतर गाइन्ह ॥ भक्ति भजन सतसंग दिढ़ाइन ॥ रामसहाय जन्म फल पावा । मगन दरस रस आरति गावा ॥ इति श्री आरती सम्पुर्णम् शुभ मस्तु संवत १९४८ विक्रमी ।

Subject—बाबा जगजीवनदास की आरती और उनके चेलों के नाम निवास स्थान सहित ।

No. 351. Nṛitya Rāghava milana by Rāma Sakhē. Substance—Country-made paper. Leaves—76. Size—6 × 4 inches. Lines per page—17. Extent—700 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1804 or A.D. 1747. Date of manuscript—Samvat 1949 or A. D. 1892. Place of deposit—Lālā Sūraja Prasāda, Village Tulasipur, Post Office Millipur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री सीतावल्लभो जयति । अथ नृत्य राघव मिलन प्रारम्भः ॥ दोहा ॥ करि उर ध्यान वसिष्ट गुर राम सखे मृदु शील । भनौ नृत्य राघव मिलन अद्भुत रंग रंगील ॥ विविध केलियुत प्रेमवर रूप द्रव्य भंडार । विमल नृत्य राघव मिलन रसिकन को अधिकार ॥ श्रुति संवत अरु युक्ति करि और अगम उनमान मुनि जिय ईश अखंड तन तामे निज विज्ञान । चौपाई ॥ प्रथम कहौ यह तत्व विचारा । ताकरि होय इष्ट प्रण भारा ॥ तत्व असी श्रुति वाक्य प्रमाना । तत्व अर्थे अष्टो उपाना । कहत झूठ जे जिय परिनामा । तिनके संग न करि विश्रामा जिय बिन ईश नाम नहि लहिये तो अनीशवादी वै कहिये वै जगरूप सेव न मानो उनकी कहि न कदाचिन मानौ ॥

End—ग्रंथ नृत्य राघव मिलन विना सुने जिय बंध जिय ईश्वर निजरूप को जाने कहा निबंध । पठन नित्य राघव मिलन करै कोउ नर नारि । पावत तहां सब तियन युत राम रटन तन धारि ॥ संवत अष्टादश चतुर शुक्र मधुर मधु तीज भन्यो नृत्य राघव मिलन दोहा इकशत तीस और २० पुनि चौपई हैस दश कुयालीस इति श्री रामसखे विरचितं नृत्य राघव मिलन ग्रंथ रसिक

ऐश्वर्य वर्ननो नाम अष्टादशमो प्रसंग छाप्पै छंद ॥ राघव संग रक सेज रमन नृप सखा वृष आंत तहां देषत मृदुरूप वढ़त रघुनाथ मिलन रति ॥ वन प्रमोद रसरास छके रस छंदन—सिंहेश। जिय ईश्वर निज रूप पाइ नित वदत द्वैत मत प्रभु ह्वै अदृष्ट जल कूप मधि तिनके हित प्रगटे निकट। सब रसिक मुकुट हरितन प्रघट रामसखे रघुकुल प्रगट वि० १९४९।

Subject—पृ० १—१८ तक-जीव और ईश्वर के अखंड स्वरूप का वर्णन। पृ० १९—२३—ब्रह्म राम एकत्व वर्णन। पृ० २४—२४ तक—ज्ञान वैराग्य भक्ति का वर्णन। पृ० २५—रसिक अनन्य रीति वर्णन। पृ० २६—२७—शरणागत धर्म का वर्णन। पृ० २८—३१—राम नाम की महिमा। पृ० ३२—३३ राम रूप गुण प्रताप धाम परत्व का वर्णन। पृ० ३४—३९ आश्चर्य लीला का वर्णन। ३९—४४ लोक अवध प्रमोद वन नित्य रास ध्यान का वर्णन। पृ० ४५—४७ राज माधुर्य ध्यान का वर्णन। पृ० ४८—राम आवर्त ध्यान। पृ० ४९—अवध आवर्त। पृ० ५०—६७ अवध जीव ईश्वर तथा विविध केलि का वर्णन। पृ० ६९—७० नव्र सखा रहस्य का वर्णन। पृ० ७१ रसिक गुरु जिज्ञासु शिष्य मिलन पृ० ७२—७४ रसिक लक्षण। पृ० ७५—७६ रसिक ऐश्वर्य वर्णन व लेखक का नाम संवत् आदि वर्णन।

No. 352(*a*). Bhūshaṇa Kaumudī by Raṇadhīra Siṁha of Siṅgarā Maū. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—12 × 6 inches. Lines per page—44. Extent—1,320 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Ṭhākura Digvijaya Siṁha, Tāluqedār, Village Ḍikauliyā, Post Office Biswā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भूषण कौमुदी लिष्यते ॥ दोहा ॥ विघन हरन गनपति वरन भरन सुमंगल आनि ऐसे गजमुष को भजै सकल मनोरथ दानि ॥ कवित्त ॥ कृष्ण जु ॥ अति अरुनारे छवि भारे भाल चंद नित माथे हैं उजारे तारे आंखिय सुधारे हैं ॥ बहत पनारे मदधारे गंड थाननि ते गंध मतवारे भृंगु गुंजत किनारे हैं ॥ करन हमारे मतवारे फल देन वारे वेद मुख धारे लंबोदर सुढ़ारे हैं ॥ अम्ब प्रियकारे हमतारे भव रनधीर एक रदवारे भारे विघन विदारे हैं ॥ अथा ॥ मंजुल सुरंगवर सोभित अचित रेष फल मकरंद जन मोदित करन है। अमित विराग ध्यान केसर अध्यक देस विरद प्रसेस जस यो सु प्रसरन है ॥ सेवित

मुनि मधुप समाधि हो कै रनधोर ध्यात द्रत ईछित भरन है ॥ रस तृदि मानस प्रकासत सदाई लसै अमल सरोज वर स्यामा के चरन है ॥ दे।० ॥ जन प्रन प्रतिपालो विसद् मथ धालो अवगाह ऐसो कालो के। सुजस धालो वरनै काइ ॥

End—सब्द अलंकृत बहुत है अक्षर के संजोग अनुप्रास षट विधि कहे जो है भाषा जोग ॥ टोका ॥ अक्षर के संयोग करिकै शब्दालंकार बहुत है परंतु जो भाषा के जोग है षट विधि को अनुप्रास सोई कह्यो है ॥ मूल ॥ याही नरकै हेत यह कोन्हो ग्रंथ नवोन। जो पंडित भाषा निपुन है अरु कविता विषे प्रवोन ॥ टोका ॥ जो पंडित भाषा में निपुन है अरु कविता विषे प्रवोन है ताही नर के हेत यह नवीन ग्रंथ जो है भाषा भाषाभूषण सो कोन्यो है ॥ मूल ॥ लछन तिय अरु पुरुष के हाव भाव रसधाम अलंकार संजोग ते भाषाभूषण नाम ॥ टोका ॥ तिय अरु पुरुष के लक्षन हाव भाव जो है रस को धाम कहे गृह अरु अलंकार इनके संजोग करिकै भाषा भूषण नाम धरयो है ॥ मूल ॥ भाषा भूषन ग्रंथ को जो देषै मनलाइ। विविधि साहित्य रस को अर्थ ताहि सकल दरसाय ॥ टोका ॥ भाषा भूषण जो है यह ग्रंथ ताको मनलाय कै जो देषैगो ताको विधि साहित्य रस को अर्थ सकल दरसाय कहे देषि परि है ॥ इति श्रीमन महाराज श्री सिरमैार वंसावतंस श्रीमन नृपति रनधोर सिंह विरचिते भूषण कैामुदो शब्दालंकार बरननम् षष्टमो प्रकाशः समाप्तः लिषतं गनेस सिंह जनवार मुकाम महिमापुर संवत ॥ १९३१ ॥

Subject-राजा यशवंत के भाषा भूषण नामक अलङ्कार काव्य की टीका।

No. 352(b). Kāvya Ratnākara by Raṇadhira Siṁha. Substance—Country-made paper. Leaves—134. Size—9¾ × 7 inches. Lines per page—22. Extent—2,575 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgari. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Siṁha, Village and Post Office Kānthā, District Unāo.

Beginning—जो कहियै को चारिहो रस मूल ना एक कह्यो पांच क्यैा नहीं कह्यो सो वीर, रौद्र, श्रृंगार, सान्त ये चारि सरोर को प्रकृति कहे स्वभाव है याते सरीर ते नित्य संबंध है वे पांचो विषे संजोग करि स्फुरित होतो है। ताते चारिहो रस मुख्य करि बर्न्यो ॥ दे।हा-कह्यो सात विधि प्रकृति ए धीर ज्ञितो ठहराय। प्रकृति विपर्यय दोष सों धीर धीर में न्याय ॥ ज्यैा बरनत पितु मातु को नहि सिंगार रस लोग। त्यो सुरतादिक दिव्य में बरनन लगै अजोग ॥ ऐहि

विधि वैरी आनबो अनुचित बरनन रीति। प्रकृति विपर्यय जानिये है रसदोष विगोत॥ (इति रसदोष कथन)। अथ दोषोद्धार वर्णनम्—

कहुं सब्दालंकार कहुं छंद कहुं तुक हेतु।
कहुं प्रकर्ष वस दोष हुं गनै अदोष सचेत॥

End—अथ दोषोद्धार वर्णनम॥

दोहा—कहुं शब्दालंकार कहुं छंद कहुं तुक हेत।
कहुं प्रकर्ष वस दोष हुं गनै अदोष सचेत॥
यहै अदोषै होत कहुं दोष होत गुन खानि।
उदाहरन कछु कछु कहौं सरल रीति उर आनि॥
यथा॥ हरि श्रुति को कुंडल मुकुत हार हिय को स्वच्छ।
नैननि देखो ज्यौ रहै हिय मो छाइ प्रत्यक्ष॥

टीका—स्वच्छ शब्द श्रुति कटु हैं प्रत्यक्ष शब्द भाषा हीन हैं। मुकुतहार अर्थांतर पदापेक्षो के ठौर हैं॥ सो वाक्य दोष है॥ औ श्रुति को कुंडल हिय को हार आंखिन को देखिवो अर्थ दोष मैं अपुष्टार्थ है॥ कुंडलहार देखिवो अनोद्दो कहिवो बाधार्थ को हो जातो है॥ जद्यपि तुक वसते श्रुति कटु भाषा हीन और छंद वसतें अर्थांतर पदापेक्षो औ छोकोकि वसते अपुष्टार्थ अदोष है॥ पुनः यथा—कवित्त॥ सिंह कटि मेखला सो कुंभ कुच मिथुन त्यौं मुखवास अलि गुंजै भो है धनुलोक है॥ वृषभानु कन्या मीन नैनो सुबरन अंगी उर कर्क कटाक्षन सो चाहिय॥.......

Subject—पृ० ३—१० तक—प्रयोजन कवित्त, सामग्री रस रहस्य वर्णन। व्यंग प्रधान उत्तम काव्य, मध्यम व्यंग, शब्दचित्र काव्य वर्णन, प्रस्तुत प्रशंसा वर्णन। शब्द अर्थ भेद कथन, वाचक लक्षण, काव्य प्रकाश का उल्लेख। रूढ़ि लक्षता का लक्षण, शुद्धा का भेद वर्णन, लक्ष-लक्षण कथन, शुद्ध सारोपा वर्णन, गौणी सारोपा कथन, गौणी साध्यवसाना वर्णन, व्यंजक कथन। पृ० ११—१४ तक—अभिधा मूलक व्यंग। लक्षणा व गूढ़ व्यंग वर्णन, अर्थ व्यञ्जक (काव्य निर्णय से) व्यक्ति विशेष वर्णन। प्रस्ताव, मिश्रित विशेषण, अभिधा—लक्षण—व्यंजना वर्णन। पृ० १५—२४ तक—अथ ध्वनि लक्षण, क्रम लक्षण, अनुमान वर्णन। सात्विक भाव कथन, संचारी भाव वर्णन, नव रस वर्णन, श्रृंगार कथन, संयोग और वियोग श्रृंगार वर्णन, सामान्य श्रृंगार कथन, संयोग में वियोग वर्णन, मिश्रित श्रृंगार वर्णन, हास्य, रौद्र, करुणा, भयानक, वीर भेद, वीभत्स, अद्भुत शांत रस वर्णन।

पृ० २५—३२ तक—नायिका भेद वर्णन। अवस्था भेद-मुग्धा, मध्या, प्रौढ़ा वर्णन। ज्ञात यौवना, अज्ञात यौवना, विश्रब्ध नवोढ़ा, मध्या, प्रगल्भा वर्णन। धीरादि भेद वर्णन। मध्या धीरा, अधीरा वर्णन। प्रौढ़ाधीरा, अधीरा, धीरा-अधीरा वर्णन। ज्येष्ठा-कनिष्ठा वर्णन। दृष्टि चेष्टा परकीया वर्णन। साध्या, वृद्ध बालवधू, ग्राम्यवधू, दुःसाध्या वर्णन, भूत-भविष्य-वर्तमान गुप्ता वाक्‌विदग्धा, कुलटा मुदिता, लक्षिता वर्णन। पृ० ४१—५० तक—सुरति लक्षिता, अनुसयना, तीन भेद वर्णन, कामवती, अनुरागिनी, प्रेम आसक्ता अन्य संभोग दुःखिता, रूप गर्विता, प्रेम गर्विता, मानवती परनारका भेद, स्वाधीन पतिका वर्णन। खंडिता-धीरा भेद कथन, खंडिता, विप्रलब्धा, वासक-सज्जा वर्णन। परकीया वासकसज्जा, उत्कंठिता, कलहंतरिता, अभिसारिका, कृष्णा अभिसारिका, शुक्लाभिसारिका, दिवाभिसारिका, प्रोषितपतिका, अपर नायिका वर्णन। आगतपतिका-परकीया आगच्छत पतिका, समकरि वर्णन। उत्तमा; मध्यमा, अधमा वर्णन, गणिका कथन। पृ० ३३-४० नायक-पति, उपपति, वैशिक वर्णन। अनुकूल दक्षिण, सठ, धृष्ट वर्णन, मानी, वाक चतुर, क्रिया चतुर, उत्तम, मध्यम, अधम वर्णन (नायक वर्णन) त्रिगुण, माधुर्य, ओज, प्रसाद वर्णन। उपमासभेद, लुप्ता वर्णन। अनन्वय, उपमेयोउपमान, दृष्टान्त, अर्थान्तरन्यास, सभेद वर्णन। तुल्ययोग्यता, निदर्शना, उत्प्रेक्षा।

पृ० ५१—५८ तक उत्प्रेक्षा भेद, अपन्हुति सभेद, स्मरण, भ्रमा, अन्योन्या, संदेह, व्यतिरेक, तद्रूप, अधिकोक्ति, अमाक्ति तद्रूपक, अभेद रूपक, रूपक सामाक्ति, उल्लेख। पृ० ५९—६५ तक-अतिशयोक्ति, भेदक, संबंध, योगायोग। जयलता वर्णन। उपमा, वस्तुक्ति, सापन्हुति, रूपक वर्णन। अधिक अल्प, अप्रस्तुत प्रशंस, प्रस्तुतांकुर, समासोक्ति, निन्दाव्याज स्तुति, स्तुति व्याज, आक्षेप, निषेध पर्य्यायोक्ति, पर्य्यायोक्ति, अन्योक्ति वर्णन। विरोध—विरोधाभास, विभावना, व्याघात, असंगत, विषय वर्णन। पृ० ६६—७२ तक उल्लास, अनुज्ञा, विचित्र, तद्गुन, अतद्गुण अनुगुण, मीलित, सामान्य, मालित, उन्मीलित, साम, समाधि, भाविका, प्रहर्षण, विषाद, संभव, समुच्चय, अन्योन्य, विकल्प, सहोक्ति, विनोक्ति।

पृ० ७३—८६ तक—विनशोभित, प्रतिषेध, विधि, काव्यार्थापत्ति, विहित, युक्त, गूढ़ोत्तर, गूढ़ोक्ति, मिथ्याध्यवसित, ललित, विवृतोक्ति, स्वभावोक्ति, हेतु व्याजोक्ति, परिकर, परिकरांकुर, प्रमाण अनुमान, उपमान, आत्मतुष्टि, अर्थापत्ति अद्वैत दर्पण वर्णन। लोकोक्ति छेकोक्ति, प्रश्नोत्तर, यथा संख्या एकावली, कारण माला, उत्तरोत्तर, रसनोपमा, रत्नावली, दीपक वर्णन।

पृ० ८७—९८ तक—आवृत्ति देहरो दायक, शंकरानंकार, संग्रह, श्लेष अनुप्रास वर्णन। लाटानुप्रास, यमक, वीप्सा, चित्रालंकार वर्णन। निरोष्ठ, मात्रा रहित, अद्भुत, वर्णचित्र, अन्तर्लापिका, बहिर्लापिका, नागपास, शृंखला, मह्लबंध। पृ० ९९—१३४ तक—गजबन्ध, चमरबंध, चौपिबन्ध, हारबंध, डमरुबन्ध, सर्वतो मुख वर्णन। दोष वर्णन। श्रुति कटु, संस्कारहत, अप्रयुक्त, असमर्थ, निहतार्थ, अवाचक, अश्लील, अमंगल, घृणा, ग्राम्य, अप्रतीत, नेयार्थ, क्लिष्ट अवमृष्ट, शब्ददोष दुतिकृत, विसंधि, न्यूनपद, अधिक, कथित शब्द, पतन प्रकर्षन, समाप्त पुनरात्त, असंभव, अस्थान अन्त, संकीर्ण, रसविरोध, भाव परक्रम, अपुष्टार्थ, कष्टार्थ, वाक्यदोष, दुक्रम, ग्राम्यार्थ, संदिग्ध, निरहेत, अनविकृत, अनेव, विशेष, साम्य प्रवृत्ति, साकांक्षा, अपक्व, विद्या-विरुद्ध प्रकाशित, विरुद्ध, सहचर भिन्न, अश्लील, व्यभिचारी, भाव व थायी भाव को सहाय्यता, वर्णन। रसदोष, प्रकृति विपर्यय वर्णन।

अपूर्ण।

No. 352(*c*). Piṅgala Nāmārṇava by Raṇadhīra Siṁha. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—10 × 6 inches. Lines per page—48. Extent—864 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1824 or A.D. 1767. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Viśwanātha Pustakālaya of Ṭhākura Maheśwara Siṁha, Village Ḍikauliyā, Post Office Biswā, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ पिंगल नामार्णव लिख्यते ॥ छप्पै छंद ॥ समुष एक रद कपिल चारु गज कर्ण प्रकाशित। लम्बोदर अरु विकट विघ्ननासन सुविकासित ॥ लसित विनायक धूम केतु तिमि गणाध्यक्ष गति ॥ भालचंद्र गजबदन द्विरस इमि नाम सुमद भनि ॥ कृत प्रथम चस्मरन श्रवन जो आरंभे विचारने ॥ जु विवाद प्रवेशे निर्गमे संकट विघ्न ब्रक घने ॥ कवित्त ॥ स्यामाजु तिहारे पद पंकज प्रभाव मुनि मत्यनि को काम दस दोइ वेद गायो है ॥ ताही ते ढिठाई करि विनय सुनाऊं मात भाया नाम अर्णव सु चाहत बनायो है ॥ जानि निज सेवक निवाहै जु अविघ्न ग्रंथ दीनबंधु जानि निज दीनता सुनायो है। तेरो जस मंडित अपंड भव मंडल मैं ब्रह्म विस्नु ईस अंते तेरो जस गायो है ॥

End—धनुधनाम पद्धरी छंद ॥ धनुकामैं करि संतापरेषि उद्यावास चाय भाषति विसेषि ॥ कोदंड जबै लेती पकुद्ध पल प्रस्त मान त्यागे विरुद्ध ॥ जुगल

नाम मालिनी छंद ॥ नगन नगन करनो तोय गानोप नाते। । विरति रचिय याठैं थोर साते वरानो ॥ सुमन गुनन लैके ह्वै रही डालिनी है । सरस सुरस हेली पालिनी मालिनी है ॥ जथा ॥ मिथुन जमल जुग मै द्वंद की साष्य रोतै । जुग जम बिय धारें द्वै उभे चारु गोतै ॥ जुगुल चरन स्यामा पाय तो विश्नु ईसै ॥ विधि पति-तल से है ज्यों त्रिवेनी सुदोसै । पुष्प रस नाम हरि लीला छंद ॥ सारंग ज्यों मधु मनै रस चारु मासै त्यो पुष्प सार मनि पुष्प रसै प्रकासै । स्यामा पदाब्ज मकरंद सुवंद देवै । ध्यानस्थ चित अलि ज्यों रलिनित्त सेवै ॥ मालानाम ॥ रूपमाला छंद ॥ राजी तो स्नु क गुनवती स्मि कोस रति प्रकास । दाम स्रज तिमि धोमतान पिपेषि करत प्रकास ॥ त्यागि जग आसार सार प्रकार माला ध्याइ । चिदानंद निरोह निल्या रूप माला ठाइ ॥ इति श्री श्री मन्महाराजा श्री सिरमौर वंसवतंस श्री मन रनधीर सिंह विरचिते नामार्णव समाप्तं सुभमस्तु संवत १९२१ लिषतं जवाहिर लाल पंडित पैंदापुरो स्थाने चैत्र शुक्ले चतुर्थ्यंा ॥

Subject—अनेक छंदों के नाम तथा उन्हों नाम के छंदों में सब ४५० नामों का वर्णन ।

No. 353. Sapta Vyasana by Rangalāla. Substance—County-made paper. Leaves—277. Size—11 × 6½ inches. Lines per page—12. Extent—4,075 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1937 or A.D. 1880. Place of deposit—Jaina Mandira, Daryābāda, District Bāra Banki.

Beginning—ॐ नमोसिद्धेभ्यः ॥ अथ भद्रबाहु चरित्र तथा सत विसन भाषा लिख्यते ॥ सवैया—श्री जिनदेव सिद्दारथ नंदन के जुगपाद सरोज निहारे । पोत भवोदधि के सुथरे जन जीव अनेकन पार उतारे ॥ अंतम तीरथ के करता मद मान महान विदारन वारे ॥ सो प्रभु सन्मति दायक (लायक ?) दूरि करो दुख दोष हमारे ॥ १ ॥ राजत नाभि नरेश्वर के घर में रंजनी कर श्रीकर नीके। निर्तत नष्ट निहार तिलोतम जानि विषै सुख लागत फीके ॥ फेरि मिथ्यात कुला-चल निश्चल नाथ भयो त्रैलोक महो के । आय तरे भव औरन तारत पाद सरोज नमों जिनहो के ॥ २ ॥ श्री विजयादिक पूरव मे गज चिन्ह धरे प्रगटे तिमि-रारी । जिन मिथ्यात महातम कैासिक छिप्त भयो निज पैारुष हारो । देखि परयो शिव मारग सुंदर होत भये भवि जीव सुधारी । भूं धत हीं भव-सिंधु परो अब बांह गहो अजितेस हमारी ॥ ३ ॥ ....

नंदन आय अनंदित कै पुनि नंदन और जन्यो न सुनंदा ॥ कोटि कलंकन सात लखे छवि सें प्रभु सीतल नाथ जिनंदा । तारि महा भव पिंजर मो अब

मेटि गरीब नेवाज कुफंदा ॥ जा सम चन्द दिवाकर की दुति होति न पूरन आनंद कंदा ॥ १० ॥ तिनि सुग्यान लहे जनमे सिर आंस जिनेश्वर आनंद धारी । जंगम थावर जीव सबै जगमें तिनके प्रभु रक्षक भारी । तीरथनाथ कहे सगरे जहं पाद परे तहं तीरथ जारी । हे करुनानिधि आनंद की विधि हे भगवंत नमो दुख हारी ॥ ११ ॥

End—अडिल्ल छन्द ॥ यह वृतांत सुनि सकल त्रिया दस मुख तनो । भई विकल ता रूप मोह मद को सनो । डगमगाय गिरि परत चलन इत आइके । रावन मृतक सरीर देखि दुख दायके ॥ आवत नारी दस मुख ऊपर गिरि परी । हा हा करत पुकार नयन जलसौं भरी ॥ कै एक नारी मुरछा आय पछार सौं । गिरी धरनि मे जाय भई विलल सौं ॥ ११ ॥ कै एक नारी पति को गोद उठाय के । मुख चूंब करि बोलो बैन उचारि के ॥ अहो नाथ क्या पौढ़े रन मैं आय के । सूनो सेज हमारी गे छुटकाय के ॥ १३ ॥ कै एक नारी पति के पाय पलोटती । कंकन माल उतारि वदन कौ कुटती ॥ कै एक नारी कूर सिरन को धाइया । तिन्ह सखी जन पकरि गोद बैठाय के ॥ × × ×

× × × × × ×

इन्द्रजीत की नारे सिया पति देखियो । मधु मधुर वच भाखत करुना पेखियो ॥ अहो दसानन—पुत्र राज्य करिये मिया ॥ हमे सिय। सो काम जाय वन वासिया ॥ १७ ॥ × × × × × ×

इति सप्त व्यसन शास्त्र सम्पूर्ण ॥ भादौं वदी ११ संवत १९३७ शाके

Subject—(१) पृ० १—११ तक—मंगलाचरनादि । चतुर्थ विंशति तीर्थंकर स्तुति, महाराज स्तुति, उपध्याय स्तुति । जैन वचन स्तुति, गुरु महाराज स्तुति ।

(२) पृ० १२—२१ तक—दश लक्षण रूप मुनि धर्म वर्णन । प्रथम क्षमा धर्म वर्णन, उत्तम क्षमा वर्णन, उत्तम मार्दव धर्म कथन, उत्तम आर्जव धर्म कथन, उत्तम शौच धर्म, उत्तम सत्यधर्म, नाम सत्य कथन, रूप सत्य कथन, सम्थापन रूप सत्य, प्रतीत सत्य, संवत सत्य, संयोजना सत्य, जिन पद सत्य, भाव सत्य, समय सत्य, उत्तम सत्य, उत्तम संयम धर्म कथन, ईर्जा सुमति, भाषा सुमति, पेषना सुमति ।

(३) पृ० २२– ३० तक—छियालीस दोष वर्णन । षोडष उदगम दोष दाता के आधीन, षोडष दोष पात्र के दोष वर्णन, बत्तीस अंतराय वर्णन, चौदह मलों का वर्णन, अदान निक्षेपन समिति प्रतिष्ठापन समिति, पंच सुमतिपूर्ण भाव शुद्धि, काय शुद्धि, ईर्जा पथ शुद्ध कथन, भिक्षा शुद्धि, भिक्षा के पांच भेद, गोचरी भेद,

पक्ष भूक्त भेद, उदराग्नि प्रशमन भेद, समाहार भेद, गति पूर्ण भेद, प्रतिष्ठापन शुद्धि, सेन शुद्धि कथन, वाक्य शुद्धि, उत्तम संयम धर्म कथन पूर्ण। (४) पृ० ३१—३५ तक—उत्तम तप धर्म कथन, ताप नाम, प्रथम अनशन तप भेद, अमोदर्य तप, व्रत परि संख्यान तप, रस परित्याग तप, विविक्त शैयोपासन, विविक्त शय्यासन तप, काय क्लेश तप। (५) पृ० ३६—५४ तक—प्रायश्चित तप, प्रकम्पित दोष, अनुमान दोष, दृष्ट दोष, बादर दोष, सूक्ष्म दोष, प्रछन्न दोष, शब्दाकुलित दोष, बहुजन दोष, तत्सवी दोष, विनय तप वर्णन, वैयावृत तप कथन, स्वाध्याय तप, व्युत्सर्ग तप, ध्यान तप, शुभाशुभ ध्यान वर्णन, धर्म स्वरूप वर्णन, आज्ञा विचय, अपाय विचय, विपाक विचय, संस्थान विचय, शुक्ल ध्यान, पृथक्त-वितर्क विचार, एकत्व वितर्क, सूक्ष्म क्रिया प्रतिपत्ति, उत्तम त्याग धर्म पूर्ण।

(६) पृ० ५५—५९—तक—उत्तम आकिंचन धर्म कथन, उत्तम ब्रह्मचर्य, यहां तक उत्तम दशलक्षणी रूपमुनि धर्म पूरा हुआ।

(७) पृ० ६०—८३ तक—एकादश प्रति माह्य। श्रावक धर्म कथन, पाक्षिक श्रावक धर्म, नैष्ठिक श्रावक धर्म, एकादश प्रतिमा नाम। सप्त व्यसन वर्णन, व्यसनों के नाम। प्रथम द्यूत व्यसन का वर्णन, उदाहरण स्वरूप कौरव पाण्डवों के उदाहरण को उपस्थित कर द्यूत-व्यसन संबंधी बुराइयों का वर्णन। (८) पृ० ८४—९३ तक—मांस व्यसन (२) का वर्णन। कौशाम्बी के भूप नाम राजा के पुत्र बकु के मांस भक्षी होने का वर्णन। उसके जैनी पिता का संताप कर दीक्षा लेना बकु का राजा होकर सूपकार द्वारा बारा मांस भक्षी होकर दुर्दशा को प्राप्त होना, अर्थात् बकु के पिता की आज्ञा कि हिंसा न हो—जिससे डर कर उसका रसोईदार एक बालक का मांस लाया और उसी को पका कर खाया, उसको जीभ को वह पसन्द आया। राज बालकों को चुरा कर खाने लगा। प्रजा को यह ज्ञात हुआ और उस नगर कोही छोड़ दिया पुनः—राजा का श्मशान में भ्रमण और वहां वसुदेव का प्राप्त होना और उनका पाटकि भू देना और बकु का नरक में पड़ कर दुख भोगना। इस उदाहरण को उपस्थित कर मांस भक्षण करने से क्या क्या बुराइयां होती हैं यह निष्कर्ष निकालना।

(९) पृ० ९४—१०७ तक—तीसरे व्यसन मद्य का वर्णन। श्री जिनेन्द्र मुनि का उज्जयंत गिरि पर पहुंचना और वहां उनके दर्शनों के हितार्थ यादवों सहित बलभद्र का पहुंचना, प्रश्नोत्तर द्वारा मदिरापान द्वारा यादव तथा द्वारावती नगरी के विनाश के समाचार श्रवण कर, अपने राज्य को लौटना और नगर में मद्यपान के निषेध का ढुंढेरा फेर कर सम्पूर्ण मद्यपात्रों को बाहर फिकवा देना, एक दिन वन क्रीड़ा के समय गये हुए यादवों का तृषाकुल होकर

उन पात्रों में भरे हुए बरसाती जल को पोकर उन्मत्त होकर पत्थरों को एकत्रित कर दीपायन नामक मुनि के पास रखना, उनके क्रोध से ज्वाला का निकल द्वारावती को भस्म करना, कृष्ण का जर्द कुंवर द्वारा विनाश वर्णन कर मद्यपान के दुर्गुणों का वर्णन किया है।

(१०) पृ० १०८—१२५ तक—चतुर्थ व्यसन, वेश्यागमन। चारुदत्त का चरित्र, उसका अपने मातुल की पुत्री से विवाह होना। काव्यादि ग्रंथों में विरत रहते हुए स्त्री का ध्यान न करना। उसकी सास का आकर पुत्री को देख कर और उसकी आंतरिक वेदना समझ कर दुःखित हो अपनी समधिन को यह व्यथा सुनाना। उसका अपने देवर से अपने पुत्र को कामकला में निपुण करने के लिये आदेश, उसका पुत्र को वसंतमाला की पुत्री वसंतसेना नाम्नी वेश्या के पास भेजना, उसका उसी में अनुरक्त होकर सम्पूर्ण धन धान्य उसी को दे देना, अंत में उस वेश्या की माता द्वारा तिरस्कार पाकर श्वसुर गृह को गमन कर वहां पहुंची हुई अपनी माता से मिलना, उसकी सहायता से अपने श्वसुर के साथ, देशाटन को जाना और वहां पर अनेक व्याधियों को भुगतना और अंत में अनेक विद्या और धन धान्य से सम्पन्न होकर अपनी नव-विवाहिता वधुओं सहित निज नगरी में आना, वहां व्रतधारिणी वसंतसेना को भी अपने घर में रखना, इस प्रकार वेश्यागमन से धन धान्यादि नष्ट होकर दुःख प्राप्तानुभव कथन।
(११) पृ० १२६–१३२ तक—वेश्यागमन का दूसरा उदाहरण। उज्जैनी नगरी के सुदत्त सेठ के संयोग से वसंतसेना को गर्भ का रहना, उससे एक पुत्र और पुत्री का उत्पन्न होना, दोनों का बाहर विरुद्ध दिशाओं में त्यागा जाकर बनजारे तथा समुदत्त द्वारा ले जाया जाना और इन भगनी तथा भ्राता का विवाह संबंध होना, किसी समय इसी वेश्या के पुत्र (धनदेव) का आकर उज्जैनी में अपनी माता वसंतसेना पर आसक्त होकर उसी के साथ से गर्भ रख पुत्र उत्पन्न करना, उसकी प्रथम पत्नी (कमला) के पूर्वभव समाचार जानने के पश्चात् उज्जयनी में आकर पालने में झूलते हुए बालक (वरुन) से अपने छै नाते निकालना, धनदेव संबंधी षट नातों का वर्णन। वेश्या सम्बन्धी घटनाओं का वर्णन। इस प्रकार अष्ट दस संबंध समन्वित वेश्या व्यसन का वर्णन कर उससे घृणा कराना।

(१२) पृ० १३३—१५० तक—पांचवां व्यसन चोरी वर्णन। शिव भूतनाम ब्राह्मण का जय सिंह नृपति के सिंहपुर नाम के नगर में अपने को सत्यवादी प्रसिद्धि करना, एक सेठ का उसके यहां चार लाल थाती रखना और प्रवास से लौटने पर उसे न देना। राजा इत्यादि का सेठ के प्रार्थना करने पर भी कुछ ध्यान न जाना, रानी द्वारा नीति से ब्राह्मण से उन रत्नों का निकलवा कर ब्राह्मण का दंडित होना और सेठ को अपने रत्नों का मिलना, ब्राह्मण का मर

कर सर्प हो राजा के कोष भंडार में वास करना और एक दिन राजा को डसना, माडड़ों द्वारा सर्प का विनाश तथा नारको हो कर भोग भोगना और तिर्यक योनि पाना।

(१३) पृ० १५१—१६२ तक—अहेरी व्यसन वर्णन। उज्जैनी के राजा ब्रह्म-दत्त का बड़ा भारी अहेरी होना, एक मुनि के तपोभूमि में आकर आखेट खेलने की इच्छा से आना और ४ दिन तक क्रमशः किसी प्रकार के शिकार का प्राप्त न होना, एक दिन मुनि का भोजन के निमित्त जाना। राजा का अपनी असफलता में मुनि को कारणभूत समझ कर उनके आसनवर्ती प्रस्तर खंड को तपा देना, मुनि का आकर और यह समाचार पाकर साहस पूर्वक उस पर बैठ कर नियमानुसार तप निरत होना। राजा का कुष्टी होकर मरना, और अनेक नरकों में पड़ कर यातनाएं सहन करना पुनः संसार में स्वानादि नीच प्रवृत्ति के पशुओं में जन्म लेकर, मर कर, एक धोबी के यहां पुत्री होना और सर्वांग रोग के कारण दुखी होकर बन जाना और वहां एक आर्यिका के समीप रह कर व्रत करना और सिंह द्वारा उसका खाया जाना पुनः सेठ की कन्या होना और सुदत्त सागरमती द्वारा अपने पूर्वभव का समाचार सुन कर दुखी होकर उनके बताये व्रत को धारण कर मर कर राजा के यहां जन्म पा, स्त्री शरीर से पुरुष शरीर में आ पुण्यकार्य कर स्वर्ग को जाना इस प्रकार इस व्यसन को दुर्व्यवस्था का दर्शन करा उससे बचने का आदेश।

(१४) पृ० १६३—२७७—तक स्त्री व्यसन। सातवें व्यसन स्त्रीगमन परस्त्री गमन का वर्णन। राम जनक सुतादि उत्पत्ति का वर्णन, राजा दशरथ द्वारा राजा जनक को राक्षसों से रक्षा करना, राम द्वारा इस कार्य में योग दिया जाना। राजा जनक को विजय पाने का वर्णन: और उसकी सीता को राम से विवाहने का कथन। इस पर एक राजा की आपत्ति जो सीता का भाई था। राजा जनक की धनुषभंग प्रतिज्ञा। राम की विजय, सीता का विवाह, राम का लक्ष्मण सीता सहित बन गमन, बन संबंधी सुख दुःखों का सविस्तर वर्णन। लक्ष्मण के कई विवाहों का वर्णन। रावण द्वारा सीता का हरण किया जाना। राम का सुग्रीव, हनुमानादि की सहायता से विजय प्राप्त करना, रावण का वध, सीता को लेकर राम का प्रसन्न होना, रावण का तीसरे नरक में पहुंचने का वर्णन। शील की महिमा, ग्रंथ सम्पूर्ण:।

इति श्री सप्त व्यसन शास्त्र संपूर्ण। भादोवदी ११ संवत १९३७ शाके।

No. 354(*a*). Vrata Mushṭí by Raṅganātha. Substance—Country-made paper. Leaves—6. Size—15×5 inches.

Lines per page—16. Extent—105 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1902 or A.D. 1845. Place of deposit—Paṇḍita Ayodhya Prasāda Misra, Village Kaṭhailaḍi, District Bahrāich.

Beginning—श्री मनेरामानुजायः नमः ॥ चैापाई ॥ घमव युगुल मुरति उर धारैा मुनि मत भाषित व्रतहिं विचारैां ॥ घमावेध परिवा नहि लोजै । घमावेध षट दंड कहोजै ॥ साठि दंड तिथि के व्रत होई । एकादसिय रहित सुभ सोई ॥ सुकुल पाष उदया परिमाना संत समाज सकल सुभ ठाना ॥ इति परिवा निर्णय ॥ परवेधो सुभ दुइज बषानै सावन स्याम पुर्व सुभ जानैा ॥ इति द्वितोया निर्णय ॥ दोहा । रंभा तंठ उजेरको पूर्वजता सुभ होइ चैार तोजि सब जानिये पर युत सुपदा सोइ ॥ इति त्रितोया निर्णय ॥ चैाथि सकल परवेधो पासी श्राका भाद्र स्याम विधु मासो ॥ भाद्र उजेर दुपहरे मानैा विधु दर्शन प्रति वेद बषानैा ॥ माघ धंधेर विधु उदय लेपो सुकुल चैाथि सांझै को पंपो ॥ इति चतुर्थी निर्णय ॥ चैाथि समेत पंचमो लेहु श्रावन सुदि परवेध कहेहु भादैां सुदि दुपहर को जानैा मुनि पूजा महं वेद बषानैा । इति पंचमो निर्णय ।

End—द्वान विधान संक्रमो होई । षोडस दंड पुर्व पर सोई ॥ षाधो राति पूर्व जैा लागै पुन्य दिवस पूरब पर भागै ॥ षाधो राति परे जो होई । पर दिन पुन्य कहैं सब कोई ॥ षाधो राति बीच संक्रमणो पुन्य दिवस दुनैा तब रमणो ॥ राति भरे यह संक्रम लागै कर्क पुन्य पूरब दिन जागै ॥ राति भरे मह मकरैा लागै पर दिन पुन्य वेद मत पागै ॥ संध्या तीनि दंड परमाना होइ रात्रि दिनहो कार ठाना ॥ संध्या माह संक्रमो होई तेहि समोप दिनहो में होई ॥ सिंह कुंभ वृष वृश्चिक कर्क । प्रादि दंड षोडस षति फर्के ॥ बीच माह घमेषा गावा । शेष गांस पर पुन्य बतावा ॥ इति संक्रांति निर्णय ॥ कोइ मुनि परक वार व्रत धारै ॥ दिन घलोन भोजन इकवारै । इति घर्क वार निर्णय ॥ दोहा ॥ व्रत मुष्टो शुभ ग्रंथ है रंगनाथ को जानि । मुठो में व्रत करत है जो करि है पहचान ॥ जो निरचय करि ग्रंथ यह पढ़ै सुनै नर कोउ । मनवांछित फल देहि तेहि सिय रघुनंदन दोउ ॥ इति श्रीमद् गर्ग वंसावतंस कवि कुलालंकार चुड़ामनि श्री रघुवर तनुज रंगनाथ रचिता व्रत मुष्टो समाप्ता । लिः रघुवरदास वैष्णव मिरजापुर हरि मंदिरे पैाष कृष्ण ७ संवत १९०२ ॥

Subject—प्रतिपदा से घमावास्या, पूर्णिमा, ग्रहण, संक्रांति मकर वारुणी घादि व्रतों के फलों का वर्णन ॥

No. 354(*b*). **Vrata Mushṭi** by **Paṇḍita Faṅga Nātha** of Akaraurā, Payagpur, District Bahrāich. Substance—Country-made paper. Leaves—13. Size—6 × 4 inches. Lines per page—14. Extent—105 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Paṇḍita Ayodhyā Prasāda Misra, Village Kaṭhailaḍī, Trilwaliā, District Bahrāich.

Note—Details as in No. 354 (*a*).

No. 355. Savaiyā by Rasakhāni. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—8¾ × 4¾ inches. Lines per page—16. Extent—280 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1909 or A. D. 1852. Place of deposit—Bhaiyā Santa Baksha Siṁha, Guṭhawā (Bahrāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सवैया लिख्यते ॥ या लकुटी अरु कामरिया हित राज तिहूं पुर को तजि डारौं । आठय सिद्ध नवो निधि को सुख नंद कि गाय चराइ बिसारौं ॥ रसखानि कवै इन नैनन तें ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं ॥ कोटिन्ह य कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं ॥ १ ॥

End—ब्रज को वनिता सब घेरो करैं तेरो टारयो बिगारयो जहां गमु री ॥ तूं हमकों रिपु काहे भई जोपै कान्ह लई तौ कहा रसु री ॥ रसखानि भनै विधि मान भौ बसने नहिं देत दिना दस री ॥ हम या ब्रज को बसबोइ तज्यौ बसुरी ब्रज बैरिनि तूं बसुरी ॥ ७४ ॥ बजी है तू बाज कलंक भरी सुनिकै वृषभानु कुमारि न औ है । न जो है कदाचित कामिनी कौंनु पै कान मैं जाइ अचानक पो है ॥ पी है बिदेस से देस न आवत मेरो ही देह कों मैन सजी है । सजी सु है मैन कहा बसु है ब्रज बैरिनि बांसुरी फेरि बजी है ॥ ७५ ॥

इति सुभमस्तु संमत् १९०९ पौष वदी ५ श्रीराम श्रीराम राम राम १

Subject—श्रीकृष्ण राधिका के प्रेम संबंधी फुटकर ७५ सवैया ।

No. 356. Vaidya Prakāśa by Rasālagiri. Substance—Country-made paper. Leaves—50. Size—9½ × 6 inches. Lines per page—20. Extent—1,240 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Place of deposit—Lālā Jaṅga Bahādura, Kundana Jaṅga, Rāe Bareli.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः ॥ श्री गुरुचरण कमलेभ्यानमः ॥ अथ वैद्यप्रकाश ग्रंथ लिख्यते ॥ दोहा ॥ शिवसुत पद वंदन करौं वहुविधि सीस नवाइ । वैद्यक ग्रंथ विचित्र अति रचो महासुष पाय । वैस वंस अवतंस अति गोवर्धन सुषधाम । ताके सुत अति ही सुभग तीनि महा सुष धाम ॥ गिरि रसाल अरु मोद की प्रीति प्रतीति रसाल । अति गति जति मति है सरस अद्भुत परम विसाल ॥ श्री मथुरापुर को गये मेह भीम के संग । तेहि लघु अनुज सुजान सो तब तहं भयो प्रसंग ॥ लेषराज तव मोहि कहि गिरि रसाल सुनि लेहु । औषधि सुभग समूह कैा ग्रन्थ मोहि रचि देहु ॥

End—उबटन ॥ मसूर की दाल चिरैाजी हलदी दारु हलदी लाल चन्दन इन सब औषधि को वरावर गाय के दूध में पत्थर पर चन्दन की समान घिस शरीर में लेप कर स्नान करने से झाई मुहासा और चमड़े के सब रोग दूर होंय ॥

अथ तालीसादि चूर्ण ॥ तालीस मासे २ नागकेसर मासे २ सोंठ मासे २ पीपरि मासे २ मिस्री मासे २ वंसलोचन तोले २ दाष तोले २ छुहारे तोले २ अनारदाने तोले २ जायफल मासे २ कचूर मासे २ अकरकरा मासे २ हरें बड़ी की वकली मासे २ जीरा सफेद मासे २ कंकोल मासे २ मिस्री सम मात्रा लेय ॥ नागेस्व ॥) सु एक धेला भर षाय जीर्णज्वर जाय ॥ इति शार्ङ्ग चूर्ण सम्पूर्ण शुभं ॥

Subject—गणेश स्तुति, कवि परिचय, आश्रय दाता का परिचय, नाड़ी विचार, ज्वर के भेद और लक्षण तथा औषधि, पेट पीड़ा की औषधि, कान पीड़ा की औषधि, खांसी की औषधि, गले की पीड़ा की औषधि, सिर पीड़ा की औषधि, सब प्रकार के ज्वरों की औषधि, अतीसार, मन्दाग्नि, सर्व रोग औषधि, धातु करन औषधि, प्रमेह की औषधि, क्षय रोग की औषधि, श्वास रोग की औषधि, नेत्र रोग की औषधि कमल रोग की औषधि, संग्रहणी रोग की औषधि, जलोदर रोग की औषधि, दांत मंजन, उबटन, तालीसादि चूर्ण ।

No. 357(a). Rasasāra by Rasikadāsa of Brindābana. Substance—New paper. Leaves—8. Size—6 × 4 inches. Lines per page—12. Extent—48 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Hansa Bahādura Vaishya, Bodhipur, Rāe Bareli.

Beginning-श्री राधा रसिक विहारी जी अथ रससार लिख्यते ॥ चैा० ।
श्री हरिदासी नर हरि दासि । स्यामा स्याम रहे मन भासि ॥
तिनकी कृपा रस सार वखानो तहं छवि अमित अपार अति जानो ॥१॥
कुंज केलि सहज प करें महा केलि न्यारे विस्तरें ॥

भौर भार तहं जात न कोई मुंहां चुहो ज्यों ल्यावत दोई ॥ २ ॥
जहं पंछी को नहीं प्रवेस मधुकर धुनि को तहां न लेस ।
निभृत कुंज की सुनौं अब कथा तहं सोभा को नाहो तथा ॥ ३ ॥
जहं सब रितु रहैं फूले फूल एकांत कुंज सब रस को मूल ॥
प्रथम चोक में घोस प्रकासै दूजो चोक सरद निसि भासै ॥ ४ ॥
तीजै चोक रेनि तम लगै स्यामा स्याम रूप जगमगै
पत्र मूल फल फूल हैं जिते राधा रुचि करि सो है तिते ॥ ५ ॥
ठौर ठौर जहं प्रिया जनावै धाइ धाइ स्याम कंठ उरलावै
भुजा पकरि प्यारी गहिरावै प्रेम मग्न अति मोहन दावै ॥ ६
अनुराग मूर्ति दोऊ तन बने गौर स्याम सोभा रस सने
प्यारी दृग स्याम हैं तारे और खेल पल नैन उघारे ॥ ७ ॥
ज्यों दर्पन में देखो झाई गोरो स्याम स्याम है काही
और खेल में चित्त न जाई मन की दसा रहै ठहराई ८
स्याम नैन गोरो की देह रूप दृष्टि चित सने सनेह
जो कहिये तो कहत न आवै नेही बिना भेद को पावै ॥ ९

End—नित्य सिधा जेती हैं सखी साधन सिधा न्यारी लखी
मुनि कन्या ऋषि कन्या जिती श्रुति कन्या साधन सिधा तिती ३७
नित्य सिधा गोप कन्या जानौ श्री कृष्ण अनादि तैसें ये मानौ
राधा कृष्ण सर्व को मूल तिन को और कौन समतूल ॥ ३८
चाह मूरति नित्य सिधा भई तिनतें और सखी सब लई
तत सुख सखी एक रस पागे तिनके भेद कहौं अब आगे ३९
तत सुख सखी की यहो रीति तन मैं रहै अपन यो जीत
प्रिया प्रीतम को निज सुख चाहै अपनो सुख नहीं मन चोगाहै ४०
पूछे सुखै सखीप लेहि चाह मैं चाह मिले मन देहि
तिनको परदा करै न कोई एकांत सेज जहां पौढे दोई ४१
भूषन वसन ए निकरि संवारै श्रमजल पोंछि पवन कर ढारैं ।
सो सुख सखी कहावै तोन स्याम के सुख को चाहै जोन ॥ ४२
अपने सुखे रहै जे राती कृष्ण सरूप सों रहैं जो माती
एकांत केलि जहां दोऊ करैं ये सखी न तहां अनुसरैं ४३
और कुंज क्रीड़ा जो करैं तहां तहां सखी संग सब फिरैं
सहज केलि करि सब सुख देहि तत सुख सखी सबै सुख लेंहि ॥ ४४
महाकेलि में जातन कोई निभृत कुंज सुख लूटैं दोई
महाकेलि को सकै बताई नहि कहिबे को परमति आई ॥ ४५

या रस को जो जानै मर्म तातो कहियो यह निज धर्म।
श्री नरिहरिदास को हेत निज जानों, श्री रसिकदास रससार बखानों।
इति श्री रससार संपूर्ण।
Subject—श्री राधा कृष्ण का प्रेम वर्णन।

No. 357(*b*). Rasikadāsaji ke Pada by Rasikadāsa. Substance Country-made paper. Leaves—28. Size—8 × 7 inches. Lines per page—48. Extent—1,176 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit—Babu Śyāma Kumāra Nigama, Rāe Barelī.

Beginning—श्री कुंज बिहारी जी॥ अथ श्री स्वामी रसिकदास जी के पद रस के लिषते॥ राग बिहागड़ो॥ दूल्हो दुलहनि अधिक बनो॥ पूजन चलो कल्पतरु सुंदरि मौरै ठान ठनो॥ किये सषनि मह जोर सवनि मिलि आगे धन पाछे जो धनो॥ गावत चलो गीत मंगल के सवै सुघर सजनी॥ ठनुक झुनक पग धरत धरनि पर छवि पावत अवनी॥ छिरक सुगंध मूल तरु पूज्यो फूलनि माल धनी॥ अंचल जोर यहै वर मांगत रहो यह प्रेम सनो॥ श्री रसिक विहार न होइ मान छक केलिकला कवनी॥ १॥ प्यारी जू तें मोहि मोलि लियो॥ तेरी कृपा मदन दल जोरयो तेरो जिवायो जियो॥ उमड़ो सेन महा मनमथ की तै अधरामृत दियो॥ श्री रसिक बिहारी कहत दीन ह्वै धनि स्यामा को हियो॥ २॥ स्यामा स्याम रूप रस चाषैं॥ कुंज महल अकेले दोऊ तहां न कोई झांकै॥ बैठी आप ठाढे लाल पकरि पकरि कर राषै॥ ठाड़े रहो किंकिनो संवारो मंद मधुर भाषैं॥ अंग अंग ललचाइ रहे मन उमगी उर अभिलाषैं॥ श्री रसिक बिहारी यह सुष विलसत निकट भये सुषदाषैं॥ ३॥

End—वहु विधि वेद पुरान प्रेमतत्व निज गावै। ध्यान धरैं। षोजे नित्य वृंदावन कौं अंत न पावै॥ तरुणी रूप मनसासक्त चेतन्य जाग्रत जानौ। वेद मुनि जो जपे सो अनंत कियौ बषानौ। सीत उश्न सुष दुष नहो निसवासर नहो तास। इंद्री मन कौं सुष नहो नष रवि जोति प्रकास। महा गोपितें गोप्य रहसि तें रहसि एकांत रस। बिनु जानैं रस रीति तिनसौं ना कहिये जस। पद्मासन यौं ध्यान सो नीके चित धरई। माया बंधन छोड़ि वास विपिन मैं करई। श्री वृन्दावन वास सुरनर मुनि नित चाहै। श्रुति धरैं जो ध्यान विधि संकर औगाहै। श्री हरिदास कृपा बिना क्यों मले ब्रज धूरि। श्री नरहरिदास बताई अपनो जीवनि मूरि। श्री नरहरिदास प्रताप तें भाषा कृत सो कीनौ। श्री रसिकदास कौं करि कृपा वास विपिन मैं दीनौ॥ इति श्री रसार्णव पटल श्रुति अनंत संवाद ध्यान लीला भाषा संपूर्ण॥

Subject—पृ० १—३—श्रृंगार रस के पद—पृ० ४—सिद्धांत की साखी। पृ० ५—सिद्धांत के पद। पृ० ६—७—रसिकदास जी का वृन्दावन निवास वर्णन। पृ० ८—भक्ति सिद्धान्त वर्णन। पृ० ९—पुण्य कर्म वर्णन। पृ० १०—पाप कर्म वर्णन, भक्ति कर्म वर्णन, अपराधों का वर्णन, साधु लक्षण वर्णन। पृ० ११—पूजा विलास वर्णन, सतगुरु लक्षण वर्णन, अछूत दोष वर्णन, पांच भाव वर्णन, उपासना भेद वर्णन, नित्यनेम वर्णन। पृ० १२—आसन की महिमा, बिना आसन दोष वर्णन। तिलक की महिमा वर्णन। पूजा विधि वर्णन। पृ० १३—सोलह सखियों का वर्णन, भोजन विधि वर्णन, शुद्धता का वर्णन, विश्वास का वर्णन, प्रगट पूजा वर्णन। पृ० १४—अन्य देवताओं का वर्णन, परिक्रमा फल, संध्या वर्णन, अपराध वर्णन, बिना अर्पण दोष वर्णन, पृ० १५—श्री कृष्ण कृपा का वर्णन, पृ० १६—कुंज कौतिक वर्णन। कुंज वर्णन। पृ० १७—विरह और उसके भेद वर्णन, कुंज केलि वर्णन। पृ० १८—२० गुरु मंगल यश वर्णन। पृ० २१—हरि कृपा वर्णन। पृ० २२—बाललीला वर्णन। पृ० २३—कल्पवृक्ष वर्णन। पृ० २४—मंडप वर्णन। पृ० २५—श्री कृष्ण ध्यान वर्णन। पृ० २६—श्री कृष्ण चरण चिन्ह वर्णन। पृ० २७—श्री राधा ध्यान वर्णन। पृ० २८—श्री राधाचरण चिन्ह और ध्यान वर्णन। समाप्ति॥

No. 357(c). Vārāha Saṁhitā by Rasikadāsa of Bṛindābana. Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—8×7 inches. Lines per page—38. Extent—466 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Śyāma Kumāra Nigama, Rāe Bareli.

Beginning—अथ श्री बाराह संहिता लिख्यते॥ चौपाई॥

श्री नरहरि दास चरन सिरनाऊं श्रीराधा कृष्ण सुमरि गुन गाऊं
मैं भाषा कौ कियौ विचार मति बुधि देहु करौं उचार॥ १॥
बन उपवन की कथा जु बरनौं सत आवर्ण कौं कीनौ निरनौं
निर्गुन सर्गुन कौ जुदौ विस्तार सबतें परें सुनित्य विहार॥ २॥
पछियात कोउ भेद लगावै श्रीबाराह पृथ्वी सौं गावै

श्री प्रथ्व्योवाच॥ श्लोक॥ अनंत कोटि ब्रह्मांडे तद्वाह्यांतर संस्थिते॥ विष्णु स्थान मर्त्तेषां प्रधानं प्रिय मुत्तमं॥ १॥ चौपाई॥

अनंत कोटि ब्रह्मंड हैं जिते बाहिर भीतर हरिपुर तिते॥ ३॥
विष्णु कौ प्रिय कौन स्थान सबके परें कौन प्रधान॥
कृष्णस्थान अद्भुत प्रिय होइ ताकें परें और नहीं कोइ
महाप्रभु कृपा करि मोसौ कहौ यौं सुष सुनि अनंद अति लहौ॥

श्री वाराहउवाच ॥ श्लोक ॥ गुह्यादगुह्यतमं गुह्यं परमानंद कारकं ॥ मत्यद्भुतं रहस्यांतं रहस्य परमं शिवं ॥ २ ॥ चौपाई ॥

End—कृष्ण वर्ण चारि हैं भुजा संख चक्रादि भूषि भुजा
दक्षिण द्वारपाल ए रहै श्री विष्णु स्यामवर्ण जो कहै

तत्र श्लोक ॥ कृष्णवर्ण चतुर्बाहं शंख चक्रादि भूषितं ॥ दक्षिणे द्वारपालं च विष्णु कृष्ण वर्णकं ॥ २ ॥

जुग औतार चारि ये कहे द्वारपाल ते बृज के लहे ॥ १५ ॥ इति सप्तम आवरण ॥

सप्तम आवरण उलंघ जो आवै महल कुंज बिहारी कौ पावै
श्री हरिदास करुना निधि रहि हैं । निज दासी महल को करिहैं ॥ १६ ॥
श्री नरहरिदास चरन उर आनें तब भाषा के पद करि जानें ॥
निज महल जो जान्यौ चाहौ तौ यह ग्रंथ नीकें अवगाहौ ॥ १७ ॥
बुद्धि उनमान यह जसु जु बखान्यौ सुद्ध अशुद्ध अपराध न मानौ
श्रीबाराह धरनी सौ भाष्यौ श्री रसिकदास भाषा करि राख्यौ ॥२१८॥

इति श्रीवाराह संहितायां धरनी वाराह संवादे श्रीवृंदावन रहस्य पटल समाप्तं ॥

Subject—पृ० १—गुरु २—वंदना, मथुरा की प्रशंसा । ३—द्वादश वन और उनके भेद अष्टदल वर्णन । ४—षोडश दल वर्णन । श्री वृंदावन ध्यान वर्णन । ५—प्रभु ऐश्वर्य वर्णन । बसंत वर्णन । प्रभु रज महिमा वर्णन । ६—यमुना जी का वर्णन । निज मंदिर वर्णन । ७—नवकिशोर ध्यान वर्णन । प्रभु महिमा वर्णन । ८—सौरभ वर्णन । श्री राधा प्रताप वर्णन । ९—राधा कृष्ण कैशोर आवेश वर्णन । अष्ट सखी वर्णन । १०—सखी ध्यान वर्णन । गोपकन्या का वर्णन और भक्ति श्रुति कन्या का वर्णन । ११—देव कन्या वर्णन । मुनि कन्या वर्णन । महल के चार दरवाजे के अधिकारियों का वर्णन । १२—प्रथम आवर्ण, द्वितीय आवर्ण, तृतीय आवर्ण, दक्षिण द्वार का वर्णन, पूर्व द्वार का वर्णन, चतुर्थ आवर्ण । १३—पंचम आवर्ण, चूड़ामणि मंत्र प्रताप वर्णन, षष्ठ आवर्ण । १४—अवतार वर्णन । सप्त आवर्ण । समाप्ति ।

No. 358. Jugala-rasa-mādhurī by Rasikagovinda of Bṛindābana. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—10 × 5 inches. Lines per page—10. Extent—200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1972 or A. D. 1915. Place of

deposit—Nimbārka Pustakālaya, Bābā Mādhava Dāsajī Māhanta ka Mandira, Nānpārā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री हरिशरणम् ॥ श्री भगवन्निम्बार्क महा मुनिन्द्रायनमः ॥ अथ युगुल रस माधुरी लिख्यते ॥ जय जय श्री हरि व्यास देव दिन विदित विभाकर । भ्रम तम श्रम अघ वोघ हरन सुख करन सुघर वर ॥ १ ॥ कृपासिंधु आनंद कंद दंपति रस भीने । मोसे मूढ़ अनेक पतित जिन पावन कीने ॥ २ ॥ जासु कृपा परसाद युगुल रस जस कछु गाऊं । सब रसिकन को हाथ जोरि पुनि सीस नवाऊं ॥ ३ ॥ श्रीवृंदावन सघन सरस सुख नित छवि छाजत । नन्दन वन से कोटि कोटि जिहि देखत लाजत ॥ ४ ॥ जहं खग मृग द्रुमलता वसत जे सब अविरुद्धि । काल कर्म गुन काम क्रोध मद रहित हित ॥ ५ ॥

End—निज सुख हित रस जुगुल माधुरी चरित बनायो । रसिकन हित सों दियो विमुख सो महा दुरायो । जे जन रसिक चकोर मीन चातक व्रत धारी । ते भले इहि मग चलै कोऊ नहिं अधिकारी ॥ जिनके यह रससार आनरस सुनो न भावै । ते नित ये सुख लहैं आन सपने नहिं पावै ॥ यह अगम अपार सुगम साधन किन होई । श्री गुरु श्री हरि व्यास कृपा बिनु लहै न कोई ॥ रसिक गुविन्द सखि चरन सरन दिन दरसन पावै ॥ जय जय श्री गुरुदेव यहै सुख हगन दिखावै ॥ जैसे पारस परस लोह तन कंचन धरई । ज्यों चंदन की पवन नींब पुनि चन्दन करई ॥ श्री गुरु की महिमा अनंत कछु कही न जाई । जिन धर सिर धरि वासुदेव लकरी पहुंचाई ॥ दोहा ॥ यह अगाध निधि मधुर रस छवि कछु कही न जाय । चटका चहै सब ही पियो पै इक बुन्द समाय ॥ यहै युगुल रस माधुरी सादर लख जु कोइ । प्रेम भक्ति सब सुख सदा श्री गोविन्द तिहि होई ॥ इति सम्पुर्णम् ॥

Subject—राधा माधव की स्तुति ।

No. 359. Premaratna by Ratanadāsa of Kāśī. Substance—Country-made paper. Leaves—51. Lines per page—17. Extent—850 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1844 or A.D. 1787. Date of manuscript—Samvat 1857 or A.D. 1800. Place of deposit—Bābū Padmabaksha Simha, Lavedapur, Bhinagā Raj, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ प्रेमरत्न लिख्यते ॥

सोरठा आंम गति आनन्द कन्द परम पुरुष परमात्मा ।

सुमिरि सुपरमानन्द गावत कछु हरिजस विमल ॥

पुनि गुरुपद सिरनाय उर धरि तिनके वचन वर।
कृपा तिनहि को पाइ प्रेम रतन भाषत रतन॥
अगम उदधि मधि आहि पंगु चहहि जिमि बिनु तरनि।
तैसिय रुचि मन मांहि अमित कान्ह जस गान को॥
पै मो मन विस्वास पुरवत पूरन काम प्रभु।
उर पुर सकल निवास निज जन को अभिलाष लखि॥
लीला अगम अपार बरन न पावै शेश शिव।
जासु स्वास श्रुति चारि तेहि गुण गण को कहि सकै॥
अमित चरित्र विचित्र यथा शक्ति गावत सकल।
निज मुख करन पवित्र भाषत हरि गुण गण विमल॥

End—सोरठा॥ निर्माणकाल ठारह से चालीस चतुर वर्ष जब विगत भो। विक्रम नृप अवनीस भयो भयो यह ग्रंथ तब॥ ३॥ महा माह के मांह मति शुभ दिन सित पंचमी। गायो परम उछाह मंगल मंगलवार वह। ४। कह्यौ ग्रंथ अनुमान त्रैशत अरसठ चैापई। तेहि अक्षर पठ जानि दोहा सोरठ सोरठा ॥ ५॥ कासी नाम सुठाम धाम सदा सिव को सुखद। तीरथ परम ललाम सुभद मुक्ति वरदाय सम॥ ६॥ ता पावन पुर मांहि भयो जन्म यहि ग्रंथ को। महिमा बरनि न जाय सगुण रूप जस रस भयो॥ ७॥ कृष्ण नाम सुख मूल कलिमल दुख भंजन भजत। पावहि भवनिधि कूल जाके मन यह रस रमहि ॥ ८॥ कुरुक्षेत्र सुभ थान व्रजवासी हरि को मिलन। लीला रसकी खानि प्रेम रतन गायो रतन॥९॥ इति श्री व्रजवासी हरि मिलन कथा प्रेम रतन कवि रतनदास कृत सम्पूर्ण सुभ मस्तु कातृक मासे कृष्ण पक्षे चतुर्दस्यां रविवारे सम्पूर्ण ॥ ५७॥ श्रीराम राधाकृष्ण गैारीशंकर॥

Subject—पृ० १—४ तक। प्रार्थना, कृष्ण जन्म वर्णन तथा कृष्ण का व्रज प्रेम वर्णन। पृ० ५—१७ तक। सूर्यग्रहण पर सब द्वारकावासी व कृष्ण का कुरुक्षेत्र नहाने जाना और व्रज से नंदादि का गमन वर्णन—पृ० ८—१० तक। एक ग्वाल को द्वारिकावासी से भेंट होना तथा कृष्ण को खबर पाना तथा गोपियों का संकल्प स्मरणादि विरह वर्णन—पृ० ११—१५ तक। व्रजवासियों का कृष्ण से मिलने जाना, वसुदेव देवकी कृष्णादि सब का प्रसन्न होना॥ व्रजवासियों के भाग्य की प्रशंसा करना, सत्यभामा का कृष्ण से हंसी और व्यंग करना। पृ० १६—२१ तक। कृष्ण का नन्द यशोदा व्रजवासी राधा ललितादि से मिलन। पृ० २२—२५ तक नंद यशोदा व वसुदेव देवकी से मिलन॥ पृ० २६—३० तक राधा आदि का रुक्मिणी सत्यभामा से मिलन और सत्यभामा की आलोचना। पृ० ३१—३३ तक। कृष्ण का रुक्मिणी से राधा का प्रेम वर्णन तथा राधा

को विरह व्यथा का वर्णन। पृ० ३३—३४ तक। गोपियों में कृष्ण का रहना तथा नन्द यशोदा व गोपियों का पूर्ववत् व्यवहार करना। पृ० ३५ से ३७ तक। कृष्ण से मिलने को ऋषियों का आगमन और वसुदेव देवकी का सत्कार करना। पृ० ३८। कृष्ण को ऋषियों का यज्ञ कराना और सब को वसुदेव देवकी का भोजन कराना। पृ० ३९—४९ तक। देवकी का कृष्ण को चलने को कहना, राधा और सत्यभामा का विवाद, कृष्ण का दो रूप धर व्रज व द्वारिका जाना। पृ० ५०—५१। ग्रंथ निर्माण वर्णन।

Note—यह प्रेमरत्न रत्नदास का रचा हुआ संवत् १८४४ का है। इसमें भूल से लेखक ने १२४४ कर दिया है। लिखने का संवत् ५७ दिया है स्यात् १८५७ होगा क्योंकि ग्रंथ पुराना लिखा हुआ है। राजा शिवप्रसाद ने इस में से कुछ भाग गुटका में उद्धृत किया है और उसे अपनी दादी रतनकुंवरि का रचा हुआ बतलाया है, यह राजा साहब की भूल प्रतीत होती है। इस प्रति में पृ० ३, ६, २२ व २७ नहीं हैं।

No. 360(*a*). Fatah Prakāsa by Ratana Kavi of Śrīnagara (Kamāun). Substance—Country-made paper. Leaves—134. Size—$10\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—9. Extent—1,300 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1910 or A.D. 1853. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Simha Seṅgara, Village Kānthā, District Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः।

थोंदि थरकोली भरकोली विधु कलभाल ढरकोली भौंहनि समाधि सरसति है। प्रानायाम सासन कलित कमलासन में विपति विनासन की वासना वसति है। सेंदुर भरी सुसुंड मंडल समीप गजवदन के रदन की दुति यों लसति है। संध्या श्रोन सरद के नीरद निकट मानों द्वेज के कलाधर की कला विगसति है। १। गंग उतमंग आधे तरल तरंग भरो आधे भरो मांग मुकुताहल सुढंग को। आधे कंठ कालकूट कालिमा कलित आधे नीलमनि की ललित लपक उमंग को। आधे उर केहरि को आधे निरवेद आधे हाव भेद पते राजत अभेद लीला शिवा शिव अंग को। २ अथ काव्य को प्रयोजन।

End—अतद्गुनालंकार दोहा—अप्रकृत गहै न प्रकृत जो गुन गहिरे अवगाहि। अलंकार कोविद सबै कहत अतद्गुन ताहि। २१९। यथा सवैया। नेह भरी अंखियान में राखें तऊ तुम रूखे रूखे बिलखे से। ताप तये हिय मांह दये

परि सोरे उसीर के नीर रखे से। काहे को ग्रोर को ग्रोर मिलावत ग्रोर को ग्रोर है। चाय चखे से। जो कुल चालि नये तुम्हें चाहि के चाहिये तासों रहो ग्रनखे से। २२० ॥ व्याघातालंकार। लक्षण दोहा। ज्यों ज्यों हों काहू कह्यो त्योंही ताहि सुजान। करै ग्रन्यथा कहत हैं सो व्याघात सुजान ॥ २२१। यथा कवित्त लाल बलि गई दई ऐसो क्यों करत गा हौ हों बलि गई सो तौ विकल चितौवो बाल। तनु तपो तवा सो दवा सो देहगो लौं भयो ऊंवा सो ग्रवासो भयो बिरह को ज्वाल जाल। रावरे रसाल उर धरैं उठि बैठो हाल बूझत हवाल बिहल भई तेही काल। कहा करौ प्यारे जू तिहारे बाढो हार हौं सों मैं करो निहाल हौं पै मदन करो बिहाल। २२२। इति श्रीनगर वासो फतेसाह नृपस्याज्ञया कविरतन विरचिते फते साहि प्रकाशे साहित्य ग्रर्थालङ्कार निरुपन नाम षष्टो द्योतक ग्रंथ संपूरन। संवत् १९१० बैसाख कृष्ण पंचम्यां गुरौ लिखितं ठाकुर प्रसाद त्रिपाठी स्वपठनार्थं यद्यार्पणमस्तु।

Subject—पृ० १ से ७ तक। गणेश वन्दना, शिवस्तुति, काव्य प्रयोजन, काव्य के कारण शक्ति, निपुणता ग्रोर ग्रभ्यास वर्णन, काव्य लक्षण, ग्रभिधा लक्षण, व्यंजना भेद कथन, तीनो का लक्षण ग्रोर उदाहरण वर्णन, ग्रभिधा मूलक व्यंग वर्णन, योग, वियोग, विरोध में नाक तथा बेसरि तथा कौशिक काक उदाहरण। काल ध्वनि वर्णन, चक्रवों का उदाहरण, देश सामर्थ्य संयोग्यता का लक्षण व उदाहरण।

पृ० ८ से १३ तक। लिंग का उदाहरण लक्षण, ग्रभिनय कथन, ग्रगूढ व्यंग्य लक्षणामूलक व्यंजना व्यंजक। व्यंग वर्णन शब्द व्यंजक है। ग्रर्थ व्यंजक वर्णन, देश काकु से भेद वर्णन। काक कथन करके उदाहरण। परसंनिधि विशेषण वर्णन, सब विशेष कथन देश विशेष का कथन, प्रस्ताव विशेष, वाच्य विशेष कथन में जयद्रथ का उदाहरण वर्णन, संदेह विशेष वर्णन, ग्रादि ग्रहणोत्सव चेष्टारथः ग्रर्थ व्यंजक चेष्टा वर्णन।

पृ० २१ से २९ तक काव्य भेद, उत्तम, मध्यम ग्रधम वर्णन उदाहरण वर्णन। चित्र काव्य वर्णन, दो वीर रस के उदाहरण हैं। इस उद्योत के ग्रंत में श्रीनगर वासी राजा फतह साहि मेदिनी साहि के पुत्र का उल्लेख है। उत्तम काव्य के भेद वर्णन, विवक्षितान्य पर वाच्य ध्वनि ग्रोर ग्रविवक्षित वाच्य, ग्रसंलक्षण क्रम विवक्षित ग्रन्य परवाच्य ध्वनि वर्णन, रस निरुपण-भाव, विभाव, ग्रनुभाव, व्यभिचारी भाव वर्णन, स्थायी भाव वर्णन, विभाव, ग्रालंबन उद्दीपन वर्णन, ग्रनुभाव, स्वेद, थंभ वैवर्ण्य, स्वरभंग, कंप, रोमांच, प्रलाप, ग्रश्रु, कटाक्ष वर्णन, निर्वेदादि ३३ व्यभिचारी भावों का वर्णन, रस भेद वर्णन, शृंगार, हास्य, करुणा, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, ग्रद्भुत रस वर्णन, शृंगार लक्षण व संभाग वर्णन, वियोग

सिंगार, भूत प्रवास को हेतु वियोग वर्णन, भविष्य प्रवास हेतु को वियोग वर्णन, भवतु प्रवास हेतु का वियोग, अभिलाष हेतु का वियोग वर्णन, विरह हेतु का वियोग वर्णन असूया हेतु वियोग कथन, शाप हेतु का वियोग, इति श्रृंगार रस वर्णन, हास्य रस लक्षण—शिव विवाह का उदाहरण, करुणा रस का वर्णन, रौद्र रस का वर्णन राम—रावण युद्ध वर्णन, वीर रस में रावण का वर्णन, भयानक रस वर्णन और फतहसाहि की प्रशंसा का छन्द वीभत्स रस, फतहसाहि के युद्ध का वर्णन, अद्भुत रस वर्णन में फतहसाहि की प्रशंसा वर्णन, शांति रस में शिव का ध्यान वर्णन।

पृ० ३० से ३७ तक। भावादि ध्वनिकथन—देव विषयक भक्ति वर्णन, मुनि विषयक रति, राघव विनोद वर्णन, गुरु विषयक रति वर्णन, नृप विषयकरति वर्णन, फतह साहि की प्रशंसा का वर्णन, पुत्र विषयक रति कौशिल्या का विश्वामित्र के प्रति राम ले जाने पर वर्णन, व्यंग व्यभिचारी वर्णन, रसाभास कथन, नीलकंठ का विकृत कवित्त—भावाभास वर्णन, भावोदय वर्णन, भाव सबलता वर्णन, भाव शांति कथन, फतह सिंह को नायिका का मान मोचन वर्णन, भाव संधि असंलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि, संलक्ष्यक्रम व्यंग ध्वनि वर्णन, शब्द, अर्थ और शक्ति से ३ भेद कथन, शक्ति भू प्रतिध्वनि, रूपकमालंकार ध्वनि वर्णन, शब्द शक्ति भू प्रतिध्वनि विरोधालंकार ध्वनि वर्णन, पदभेद विरोधालंकार ध्वनि में फतहसाहि की प्रशंसा।

पृ०—३८-४४ शब्द शक्ति भू प्रतिध्वनिरूप व्यतिरेकालंकार वर्णन—शिव भक्ति वर्णन, उपमालंकार वर्णन, शब्द शक्ति भू प्रतिध्वनिरूप वस्तुध्वनि वर्णन, इति शब्द शक्ति भू प्रतिध्वनि वर्णन, अर्थशक्ति भू प्रतिध्वनि वर्णन, सभेद स्वतः संभवो, प्रौढ़ोक्ति कविकृत, वस्तु अलंकृत, व्यंग के १२ भेद वर्णन, अर्थ शक्ति भू स्वतः संभवो वस्तु से वस्तुध्वनि, अर्थ शक्ति भू स्वतः संभवो वस्तूत्प्रेक्षा वर्णन, अर्थ शक्ति भू स्वतः संभवो वस्तु से व्यतिरेकालंकार ध्वनि वर्णन, अथ कवि प्रौढ़ोक्ति सिद्धि वर्णन:—शक्ति भू वस्तुना वस्तुध्वनि वर्णन, कवि प्रौढोक्ति सिद्धार्थ शक्ति भू वस्तुनालंकार ध्वनि वर्णन; उत्प्रेक्षा में कथन, कवि प्रोढ़ोक्ति सिद्धार्थ शक्तिना अलंकारेणालंकार ध्वनि वर्णन। काव्य लिंग से विभावना की उत्पत्ति वर्णन, कवि कृत वक्तृ प्रौढ़ोक्ति सिद्धार्थ शक्ति भू वस्तुनावस्तु ध्वनि वर्णन। वस्तुना विभावनालंकार वर्णन, उत्तरालंकार ध्वनि, कवि काव्यलिंग विशेषोक्ति वर्णन, शब्द अर्थ शक्ति भू ध्वनि वर्णन, संलक्ष्यक्रम विवक्षित वाच्य ध्वनि वर्णन; अविवक्षित वाच्य ध्वनि वर्णन; अविवक्षित वाच्य ध्वनि भेद मत वर्णन, अर्थान्तरगत वाच्य पुनरुक्ति, विशेष नायकत्व वर्णन; अत्यन्तारिका वाच्य वर्णन।

पृ० २४ से ५४ तक पद व्यंग से चलक्ष क्रम व्यंग वर्णन, उत्तम काव्य के ३५ भेदों का वर्णन। लक्ष क्रम व्यंग पद ध्वनि भेद मे शब्द शक्ति मूल से वस्तु ध्वनि वर्णन; लक्ष-वस्तु के वस्तु ध्वनि का वर्णन और अतिशयोक्ति कथन तथा विरोधा-लंकार वर्णन, फतहसाहि की प्रशंसा वर्णन। अलंकार ध्वनि वर्णन। स्वतः संभाव्य व्यंग के भेद चतुष्टय कवि प्रौढ़ोक्ति सिद्ध व्यंग काव्य लिगालंकारेण वस्तुना वस्तुध्वनि वर्णन, विरोधालंकार, कवि व्यंग, व्यतिरेकालंकार वर्णन, काव्य लिंगध्वनि वर्णन। अपन्हुति अलंकार ध्वनि वर्णन। अतिशयोक्ति चार संवाद वर्णन, पद विभाग रस के ५१ भेद वर्णन। मेदन मिश्र का सवैया, शृंगार रस वर्णन, व्यंग के भेद नाटक, भाव आदि वर्णन, संघटित वाक्यतर वाक्य समुदाय वर्णन शृंगार और फतहसाहि प्रशंसा। काव्य भेद शंकरादि वर्णन। संशय ध्वनि शंकर वर्णन, संसृष्टि अंगांगी भाव एक व्यंजक प्रवेश त्रितय वर्णन गुणी भूत व्यंग के ८ भेद—अगूढ़, विगूढ़, संदिग्ध, प्राधान्य, वाच्य, सिद्धांग तुल्य-प्राधान्य, काकादि असुंदर वर्णन।

पृ० ५५—६४ तक—अगूढ़ वर्णन, निगूढ़ व्यंग कथन, संदिग्ध प्राधान्य, राघव विनोद से मिश्र वक्तृक पद वाच्य गुणीभूत व्यंग वर्णन, तुल्य प्राधान्य गुणीभूत व्यंग वर्णन, काकादि गुणीभूत व्यंग वर्णन, अपसंग गुणीभूत व्यंग वर्णन। अपरांग व्यंग रसास्वत्सो अंग और व्यंग के भाव वर्णन फतहसाहि की प्रशंसा चित्र भेद वर्णन।

पृ० ६५—७३ तक। दोष सामान्य विशेष लक्षण। सामान्य दोष वचन दोष वर्णन, कर्णकटु, अवाचक, हितार्थ, अप्रतीत, अनुचितार्थ, नेयार्थ, अयुक्त, अश्लील निरर्थक, क्लिष्ट, ग्राम्य अच; विरुद्ध, संदिग्ध, अविमृष्ट, असमर्थ ये १५ दोष हैं, अवाचक दोष के तीन भेद वर्णन, वाचक पद शक्ति योग सापेक्ष्य वर्णन, वाचक पदशक्ति योग अनपेक्ष अवाचक दोष वर्णन, द्वितीय धर्म में वाचक पद शक्ति योग अवाचक दोष वर्णन, तृतीय धर्मदोष वर्णन, अप्रतीत दोष वर्णन, मंग सवैया वर्णन, अनुचितार्थ दोष व नेयार्थ दोष वर्णन; अयुक्त दोष कथन, अश्लील वर्णन, व ३ भेद वर्णन, लज्जा व्यंजक अश्लील, अमंगल व्यंजक व जुगुप्सा व्यंजक अश्लील वर्णन, क्लिष्ट दोष वर्णन, ग्राम्य दोष वर्णन, विरुद्ध मति वर्णन।

पृ० ७४—८४ तक। अलंकार वर्णन, उपमा—पूर्णोपमा, लुप्तोपमा वर्णन, समासादि पदलोपी वाचक लुप्तोपमा वर्णन, उपमान लुप्ता, धर्मवाचक लुप्ता, धर्म उपमान लुप्ता, फतहसाहि प्रशंसा कथन, धर्मवाचक उपमान लुप्ता, मालोपमा धर्म अभेद मालोपमा, रसनोपमा, धर्म अभेद रसनोपमा, अनन्वय लक्षण व, उदाहरण। उपमेयोपमा वर्णन, उत्प्रेक्षा, भेद, फल, हेतु, रूप वर्णन। संदेह

निश्चय पृ० ८५—९०, । दर्शन । रूपकालंकार वर्णन, समस्त वस्तु विषय, एक देशीय विवर्ति के दो भेद लक्षण उदाहरण वर्णन, फतह साहि की मजलिस वर्णन, मंगल रूपक वर्णन, परंपरित रूपक कथन, श्लेष वर्णन, फतह साहि की प्रशंसा वर्णन, राम प्रशंसा वर्णन, अपन्हुति वर्णन । दो भेद शाब्दो आर्थी वर्णन, सुंदर कवि का फतह साह की प्रशंसा में समासोक्ति वर्णन, निदर्शना व माला निदर्शना वर्णन, भूषण कृत फतह साहि की प्रशंसा वर्णन, अप्रस्तुत प्रशंसा वर्णन, ४ भेद सामान्य, विशेष, कार्य्य, कारण भेद से कथन, अप्रस्तुत प्रशंसा वर्णन, अतिशयोक्ति कथन, केवल उपमान वर्णन, श्रीनगर शोभा वर्णन, उपमान उपमेय वर्णन, अलौकिक अर्थ वर्णन, कार्य्य कारण से वर्णन, प्रतिवस्तूपमा, माला प्रतिवस्तूपमा, दृष्टान्त में फतहसाहि का यश वर्णन । दीपकालंकार वर्णन । एक कारक बहु क्रिया का दीपक, माला दीपक, तुल्य योग्यता, अप्रस्तुत तुल्य योग्यता, व्यतिरेकालंकार सभेद वर्णन । उत्कर्षापकर्ष व्यतिरेक के उदाहरण में फतह साहि की प्रशंसा वर्णन आक्षिप्तोपमा आक्षेपा- पृ० १०६—१३४ तक । लंकार वर्णन—विभावनालंकार, विशेषोक्ति, यथा संख्या, अर्थान्तरन्यास, में गढ़वार का वर्णन । विरोधालंकार, फतहसाहि वर्णन । सभेद वर्णन, स्वभावोक्ति, व्याज स्तुति वर्णन, फतहसाहि की विजय का वर्णन, सहोक्ति, विनोक्ति, परिवृत्त अलंकार वर्णन, काव्यलिंग में शत्रु स्त्रियों पर प्रभाव वर्णन । पर्य्यायोक्ति, उदात्त, सभा शोभा वर्णन, समुच्चय सभेद तृतीय में फतहसाहि के वैरियों का भयभीत होना वर्णन, पर्य्यायालंकार वर्णन विपरीत पर्याय वर्णन, उदारता कथन अनुमान अलंकार, फतहसाहि यश वर्णन, परिकरालंकार साभिप्राय विशेषण, काकोक्ति, परिसंख्या में शिवा की प्रशंसा, गढ़वार के राजा का वर्णन, ब्राह्मण भक्ति कथन, कारण मालालंकार वर्णन । अन्योन्या- लंकार, सूक्ष्म, सार के उदाहरण में फतहसाहि के सुजस का कथन, असंगति, समाधि, सम, विषम, उसके ४ भेद वर्णन, अधिक प्रत्यनीक मीलित, फतहसाह यश कथन, एकावली वर्णन स्मरण, भ्रांति मान, इसमें फतहसाह का आतंक वर्णन । प्रतीप सभेद वर्णन । सामान्यालंकार । विशेष बलि, विक्रम, हरिचंद से फतहसाहि को विशेष मानना, अन्यत्र कर्म व्यंग कथन, तद्गुणालंकार, अतद्गुन, व्याघातालंकार वर्णन । इति ।

N . 360(*b*). Fatah Prakāsa by Ratana Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—8 × 6 inches. Lines per page—14. Extent—1,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Mahāvīra Baksha Siṁha, Tāluqedār,

Village and Post Office Kotharā Kalā, District Sultānpur (Oudh).

Note—Other details as in No. 360 (*a*).

No. 361(*a*). Bandī Mochana by Raghuvara Siṁha of Alipura. Leaves—23. Size—8 × 7 inches. Lines per page—22. Extent—230 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1904 or A. D. 1847. Date of manuscript—Samvat 1920 or A. D. 1863. Place of deposit—Ṭhākura Rāmadaurā, Village Miṭhaurā, Post Office Keśargañja, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री देवी जी सहाइ । श्री पोथी बंदी मोचन लिष्यते । अस्तुति । आदि भवानी सुर कल्यानी असुर संघारनी नाम जी । तीनि भुवन जेहि मस्तक नावे, सो वरदायनी बाम जी आदि कुमारी सिंघ असवारी जाहि भजे श्री राम जी । सो वरदायनी त्रिभुवन दाता सिध करौ सब काम जी । महिमा बंदी अगम अपार मुष से बरनी नहि जाई जी ॥ गाढ़ परे बंदी कह सुमिरे निश्चै करे सहाई जी ॥ बंदी माई सुमिरौं मैं तोही सुमिरत गाढ़ छुटावहु मोही । नाम तुम्हार है बंदी माई । अपने जन पर होहु सहाई । तीन लोक सिरजा तुम जबहीं । नाम धराए बंदी तबहीं ॥ सुर गंधर्व नाग मुनि देवा सकल करै बंदी की सेवा । महिमा बंदी अगम अपारा । तीनो भुवन जासो उजिआरा ॥ जो बंदी कर धरै ध्याना । आइ कपूर सैा विलसै पाना ॥

End—तब प्रभु बहु विधि अस्तुति कीन्हा ॥ आसीरबाद बंदी तब दीन्हा ॥ बहुत सेवा तुम कीन्ह हमारी । लेउ अभै बर देउं विचारी । सुनहु नाथ एक बचन पुनीता । लेहु असीस जग होहु अजीता ॥ मोरो बचन सुनि लेहु हमारी । सो मैं कथा कहैां अनुसारी ॥ जहां परे प्रभु तुम कहं गाढ़ा । अस जानो तहइं हम ठाढ़ा ॥ इतनी अस्तुति कर रघुनाथा । जिनै देव सब भये सनाथा ॥ धन्य बंदी है गाढ़ उधारा ॥ अधम उधारे पतितन तारा ॥ जो यह कथा पढ़ै मनलाई ॥ ताकहं गाढ़ सकल मिटि जाई ॥ दोहा ॥ निश्चै गाढ़ उधार होई । धन्य तुम बंदी माई । जो यह कथा निसदिन पढ़ै सो बैकुंठहो जाई ॥ इति श्री पोथी बंदी मोचन कथा संम्पूरन समापतो पुस्तक लिषतं गंग नरायन पठनार्थ गिरधारी राम के जो कोई बांचे सुनै तिसको हमारी सीता राम । पंडित जन सो विनती मोरी । टूटा अक्षर बांचब जोरी । सुभ महीना सावन मासे किस्न पछे तिथ त्रियोदसी संवत १९२० लिषा बांसबरेली की छावनी सदर बाजार में ।

Subject—पृ० १—देवी की महिमा, पृ० २—वंदी माई का ध्यान। पृ० ३—वंदी देवी की संसार में महिमा भजन से इच्छा फल प्राप्ति। पृ० ४—९ तक—कमलावती राजा का उदाहरण जिसने स्थिर होकर वंदी जी का ध्यान कर सब प्रकार के सुख संपत्ति आदि प्राप्त किये राजा पुत्र न होने के कारण दुखी था से पुत्र पाकर पूर्ण रूप से सुखी हुआ। राजा ने दान पुन्य अधिक किया वंदी के दरबार में जाना नाना प्रकार से पूजन करना पृ० १०—१८ तक। राम जी को अहिरावन का ले जाना, स्नान करा देवी पर बलिदान करने की तैयारी करना, राम जी का देवी का स्मरण करना, हनुमान का आना, अहिरावण को मारना आदि का वर्णन। पृ० १९—२३ तक—भगवान रघुनाथ जी का देवी सेवा में लगना, देवी का प्रसन्न होकर वरदान देना।

No. 361(*b*). Bandī Mochana by Raghuvara. Substance—New paper. Leaves—32. Size—8 × 6½ inches. Lines per page—18. Extent—252 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Kaithī Muḍiyā. Date of manuscript—Samvat 1953 or A. D. 189[illegible]. Place of deposit—Paṇḍita Yaśodā Nanda Tiwārī, Village Kānthā, District Unāo.

Note—Other details as in No. 361(*a*).

No. 362. Sītācharitra by Rāyachandra (Kavi Chandra.) Substance—Country-made paper. Leaves—300. Size—10½ × 5½ inches. Lines per page—12. Extent—4,050 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1713 or A. D. 1656. Date of manuscript—Samvat 1862 or A. D. 1805. Place of deposit—Jaina Mandira (Baḍā) Bārābanki.

Beginning—श्री जिनायनमः ॥ दोहरा ॥ प्रनमौ परम पुनीत नर ॥ वरध मान जिनदेव। लोकालोक प्रकास तस करै सम कितो सेव ॥ १ ॥ तस गनधर गौतम प्रमुष। धर्मवन्त धन घात जिन सेवत भवि जन सदा। विडै मोह तम राति ॥ २ ॥ चौपाई ॥ कवि बालक यह कीन्हौ ख्याल। इसौ मानो बुधिवंत विसाल ॥ राम जानकी गुन विस्तार। कहै कौन कवि वचन विचार ॥ ३ ॥ देव धर्म गुरु कुं सिर नाइ। कहै चंद उत्तम जग मांइ ॥ पर उपकारी परम पवित्त। सज्जन भाव भगत के चित्त ॥ ४ ॥ समकरि आदि अंत अक्षरा। पर्यात आदि अक्षर करि परा। ए सुमिरौ परम्या दातार। सीता चरित चित करौ उदार ॥ ५ ॥ कर जुग जोरि नमौं जगदीस ॥ संतन के मन प्रतिहो अग्गीस ॥ पर उपकारी परम

दयाल ॥ परम पूज्य अति परम कृपाल ॥ ६ ॥ पंच परम गुरु परम प्रधान ॥ ए सुमिरो उर लक्षन आन ॥ जिन कै भव अति हो तुच्छ रहै गुरु के बेन हिये जिन ग्रहै ॥ ७ ॥ दोहा ॥ पंच परम गुरु कौ नमो। मंगलोक सिव लोक। आपु समान भगत कौं करै तुरत तहकीक ॥ ८

End—दोहाः—जो जाणौं निज आंखतीं वहै आत पर वांग। जाम पवाल्यौ जाणिये जाम पणौ परवान ॥ × × × ×
चौपाई—क्रिरिया करत करना सुष चितवै। सो बहु मन मै निकसै कित हूं। करणी करै अवस्यौ पूठा। तापर मोह भया कर तूठा ॥ करणो करै रकता जानै। जोग क्रिया माहैं चित ठानै ॥ रत मूढ़ ममता रस भोनैा। कवहूं आपन आपो चीन्हो ॥ अडिल्ल—सुनता है संतान परम सुधा धारको। करै सुगत परवेस न पहुंचे नानको ॥ यामै भायो नाहि जिनेसुर यौं कहै। तजै सकल परमाद निराश्रव सोल है ॥ पुनः ॥ कविवल कयो जानकी यौं यह ध्यान है। हसो मतो बुध कोरे जु बुधि विस्तार है ॥ यह अपनो अरदास्य मनोपा पास है। जेहै परम सुजान जिनौ को दास है ॥ चौपाई ॥ संवत सतरै तेरा तरै। सुग सिर ग्रंथ समापत करै। सुकल पष तिथि है पंचमी ॥ तादिन सरस कथा यह भणी ॥ ४३ इति श्री सीता चरित्र भाषा संपूर्ण ॥ संवत १८६२ ॥ मितो पौष कृष्ण १३ बुधे ॥

Subject—(१) पृ० १—१४ तक—सीता का वनवास। मंगलाचरण गणधरादि वंदना। प्रस्तावना—राम सीता के शील गुणादि कथन द्वारा पाठकों का ध्यान कथा की ओर आकर्षित करना। सीता का स्वप्न देखना। रामद्वारा उसका फल कहा जाना। कुछ निकृष्ट फल से सीता का विह्वल होना। राम का आश्वासन। नगर में सीता रावण संबंधी मिथ्या अपवाद राम को इस विषय की सूचना। लक्ष्मण का इस सूचना द्वारा क्रोधित होना और सीता के सती होने का बार बार कथन करना। राम को उन्हें समझा देना। सेना पति द्वारा सीता का वन निर्वासन करना। (२) पृ० १५—२२ तक—सीता को वन बीती कथा—वन में सीता का विलाप। वज्रजंघ से उसका मिलाप, उसका सीता को अपने साथ ले आना और भगिनीवत् उसकी रक्षा करना। उसके वहां कुछ काल पश्चात् दो पुत्रों का उत्पन्न होना। एक क्षुल्लक द्वारा उनको युद्धादि विद्याओं में निपुण किया जाना। राजा वज्रजंघ ने यथा समय उनको अवस्था ब्याह योग्य समझ कर 'पृथ्वीधर' को उसकी कन्या के साथ इनके विवाह होने के लिये एक सम्मति पत्र भेजना, उसका क्रोधित होकर निषेध करना। दोनों दलों का युद्ध के लिये सुसज्जित होना। सीता पुत्र लवणांकुश का यह समाचार पाकर प्रथम से ही युद्ध कर शत्रु की सेना को पराजित करना। इस पर वज्रजंघ व सीता का संतोष।

(३) पृ० २३—८० तक—राम से सीता के युग पुत्रों से युद्ध। नारद का वन में सीता के पुत्रों से मिलना, उनका प्रणाम करना, नारद द्वारा राम लक्ष्मण का वैभव की साधारण चरचा करना, बालकों का उनसे उपर्युक्त सज्जनों का संपूर्ण चरित्र जानने की अभिलाषा प्रगट करना, उनका वर्णन करना, जनक भय निवारण तथा दक्खिन के महात्म्य सेन की कथा—जनकी स्त्री विदेहा से एक पुत्र और एक पुत्री का जुड़वा होना, पूर्वजन्म के वैर से एक देव का पुत्र को उठा ले जाना, फिर दया करके एक स्थान पर छोड़ देना, रथनूपुर के चन्द्रगति विद्याधर द्वारा उसका पोषण। एक दिन नारद का जनक के यहां आगमन, सीता का भय से घर में घुस जाना। इस पर नारद ने अपना अपमान समझ कर उससे बदला लेने के लिये सीता का चित्र खींच कर उसी बालक को-जो इसका भाई था और विद्याधर के यहां पाला गया था-दिखा कर मोहित करना, उसका सीता सीता रटना, विद्याधर का जनक से सीता का संबंध स्थिर करने के लिये प्रस्ताव, जनक का राम के साथ उसका विवाह करने का प्रण कथन करना, इस पर विद्याधर की धनुष प्रतिज्ञा, राम द्वारा उसका पूर्ण किया जाना तथा विवाह होना, 'भामंडल' को भी सीता का अपनी भगनी होने का ज्ञान होना, अपने पूर्व भव का स्मरण आने पर, भामंडल, जानकी और राम से प्रेम संयुक्त मिलाप होना, चंद्रगति राजा का भामंडल को राज्य देकर मुनि होना, राजा दशरथ का अपने दिए हुए कैकई के वर को काम में लाते हुए 'राम' को वनवास देना, भरत को गद्दी देना, राजा का मुनि होना, लक्ष्मण सीता का राम के साथ जाना, भरत का वन में आकर राम से मिलना, और लौटने की प्रार्थना करना, राम का उन्हें समझा कर लौटा देना, वहां से आगे को लक्ष्मण-सीता सहित राम का चलना, मार्ग में वज्रकर्ण राजा को सिंहोदर से अभय करना, लक्ष्मण के कई विवाह होना, बालखिल की कन्या से लक्ष्मण का विवाह।

(४) पृ० ८१—२५६ तक—रामचन्द्र लक्ष्मण का एक कृपणी ब्राह्मण की स्त्री के पास ठहरना, उसका इनके साथ प्रेम से व्यवहार करना, ब्राह्मण का कुपित होना, लक्ष्मण का उसे टांग पकड़ कर घुमाना, उसका भयभीत होना, राम का उसे छुड़ा देना और आगे चलना, एक देव का वन में राम से भेंट और उसके द्वारा राम का कुछ असम्मान, देव का अपने स्वामी से उनका सब समाचार जान कर उनकी सेवा करना उनके वर्षांत के निर्वाह के लिये एक उत्तम सा भवन निर्माण करना, वहां पर उस कृपणी ब्राह्मण का आगमन, राम का उसके साथ प्रेम निर्वाह, ब्राह्मण का मुनि होना, बीजापुर की कुछ बातें, विजय सिंह राजा का निमित्त से अपनी कन्या के संबंध में पूछना, उनका उसका लक्ष्मण के साथ विवाह होने की भविष्यवाणी, गुण माला—विजय सिंह की

पुत्री—का मुनि सुन कर कि मेरे पति लक्ष्मण वन में आवेंगे प्रथम से ही वन में वास करना और यथा समय वहाँ राम लक्ष्मण का आना और लक्ष्मण के साथ वनमाला का विवाह होना। वनमाला के पिता विजय सिंह के यहां राजा अनन्तवीर्य का भरत पर चढ़ाई करने के लिये सहायता मांगने का पत्र आना, यह जान कर राम लक्ष्मण का स्वयं राजा से कह कर उसकी सेना लेकर वहां जाना, राजा को हरा के भरत को उसको कन्या देने का प्रस्ताव करना, राजा का भरत को कन्या देना, रामचन्द्र का वीजापुर को लौटना, पद्मावती तथा लक्ष्मण विवाह, दंडक वन में रामचन्द्र का प्रवेश, एक मुनि द्वारा रामचन्द्र को ज्ञात होना कि ५०१ जैन मुनि कोल्हू में पेर डाले गये थे यही कारण इसके ऊजड़ होने का है; खरदूषण की स्त्री चन्द्रनखा का लक्ष्मण पर मोहित होना, रामचन्द्र और लक्ष्मण द्वारा उसको लज्जित किया जाना, राम लक्ष्मण से खरदूषण का युद्ध करके परास्त होना. सीता हरण। रावण का सीता से मन्दोदरी द्वारा प्रस्ताव करना. सीता का उसे इसके लिये धिक्कारना, उसका लज्जित होना, उधर राम को सुग्रीव से भेंट और उनके द्वारा साहसगती विद्याधर से उसकी स्त्री की प्राप्ति। अपनी विषय वासना में राम के कार्य्य का सुग्रीव को विस्मृत हो जाना, लक्ष्मण द्वारा उसका पुनः स्मरण दिलाया जाना, सीता की खोज को जाना, इतने जटी विद्याधर द्वारा उसका संपूर्ण समाचार पाना और ज्ञात होना कि वह रावण द्वारा हरी गई है। इस पर विद्याधरों का भयभीत हो कर राम से कहना कि सीता का ध्यान त्यागिये और जितनी चाहिये विद्याधर कन्याओं से विवाह कीजिये, राम का न मानना और कहना कि "अच्छा तुम कुछ सहायता न करो हमें केवल मार्ग बता दो हम अकेले उससे लड़ेंगे।" इस पर विद्याधरों का 'कोटि शिला' दिखा कर यह कहना कि जो इसे उठालेगा वही रावण को जीत सकेगा। लक्ष्मण का उसे उठा लेना। विद्याधरों का उनके बल का परिचय पाकर राम की सहायता करना; हनुमान द्वारा सीता की खबर पाना लंका पर चढ़ाई करना। लक्ष्मण रावण युद्ध, रावण का वध। सीता की प्राप्ति। उनका अयोध्या को गमन। उधर अयोध्या के लोगों का राम वियोग में दुखित होना। सीता को पाकर राम का जिन स्तुति करना। राम का विभीषण द्वारा अभिषेक किया जाना। यहां पर बहुत दिनों तक सानंद राम का राज्य करना।

(५) पृ० २५७—२८२ तक—एक दिन राम की सुधि करके कौशल्या का व्याकुल होना, नारद का वहां पर अकस्मात आना। दोनों का संवाद; नारद का राम का समाचार लेने लंका जाना, लंका में जाकर एक दिन 'रावण' का कुशल पूछने पर उनकी दुर्दशा होना और बंदी अवस्था में राम के निकट आना

पीछे नारद द्वारा माता के रोने पीटने का समाचार राम का सुनना और उन्हें का मोह उत्पन्न होना। विभीषण का राम मातु के पास उनके पुत्रों का समाचार भेजा जाना और अयोध्या आगमन की सूचना। माता की प्रसन्नता और दान। नगर में बधाइयां बजना। लक्ष्मण का राम से अपनी ब्याही हुई सभी स्त्रियों को बुलाने के लिये आज्ञा मांगना। राम का प्रसन्नता पूर्वक आज्ञा देना। दूतों द्वारा सभी स्त्रियों का बुलाया जाना। और इन सब के साथ अयोध्या आगमन। अयोध्या में भरतादि सहित सभी माताओं का आनन्द मनाना। अयोध्या की उस समय की शोभा का वर्णन। भरत का अपने को राजपाट से घृणा दिखाना, और भोग विलास से उन्मुक्त होने के लिये राम से प्रार्थना करना। राम तथा भरत संवाद। एक दिन राम के एक हाथी का बिगड़ना और भरत को देख कर उसका जाति स्मरण होना। दाना घास न खाना। कुल भूषण और देश भूषण मुनियों द्वारा राम को यह समाचार ज्ञात होना कि इनका और भरत का पूर्व संबंध है, इससे भरत को वैराग्य उत्पन्न होना। उनके वैराग्य की दशा, राम का विभीषण आदि को विदा कर सब को राज्य बांटना। शत्रुहन को मथुरा का राज्य दिया जाना। मधु की हार। नगर के कुछ अविचारी लोगों द्वारा सीता के अपवाद का समाचार राम पर पहुंचने और उनके वनवासादि की कथा सुनाना। सीता के दोनों बालकों का क्रोधित हो कर राम पर चढ़ाई करना।

(६) पृ० २८३—३०० तक—दोनों दलों में युद्ध होना। बालकों के विचित्र रण कौशल को देख कर राम लक्ष्मण का आश्चर्यान्वित होना। अन्त में पारस्परिक पहिचान होना। युद्ध की निवृत्ति सिद्धारथ द्वारा राम को सीता निर्वासन विषयक उपालंभ, राम का हंस कर उनके आदेश शिरोधार्य कर सीता को बुलाना। सीता का अयोध्या में आगमन। सीता के सतीत्व की अग्नि द्वारा परीक्षा। देव शक्ति से अग्निकुंड का तालाब हो जाना और उसका उमड़ कर बह चलना। दर्शकों के डूबने का भय होना। सीता से विनती करना, तब पानी का कम होना। सीता का जल से निकल कर विरक्त होना, राम का उन्हें इस कार्य्य से बहुत रोकना और उनका न मानना। अनेक ज्ञान-गर्भित वाक्यावली द्वारा लक्ष्मणादि सभी राम के सहयोगियों को उपदेश। सीता का आर्यिका हो जाना। कवि द्वारा सीता का कुछ गुणानुवाद। कवि का ग्रंथ का आधार वर्णन करते हुए कुछ थोड़ा सा अपना कथनः—

किया ग्रंथ रविसेन ने, रघुपुराण जिय जाण।
यहै अरथ इस में कह्यो रायचंद उर आण॥

कथा के पाठकों को फल प्राप्ति। ग्रंथ समाप्ति तथा लेखन काल।

No. 363(*a*). Bhīṣma Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size—8 × 5 inches. Lines per page—28. Extent—1,220 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1718 or A. D. 1661. Date of manuscript—Samvat 1919 or A. D. 1862. Place of deposit—Ṭhākura Umarāwa Siṁha, Village Mānikapur, Post Office Bisawā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ चैापाई ॥ ० गुरु गोविन्द के चरन मनावैां । जेहि प्रसाद उत्तम गति पावैां ॥ करि प्रनाम रघुपति के पायन ॥ चारि वेद जाके गुन गायन ॥ अवधनाथ सीतापति सुंदर । दीनबंधु रघुबंस पुरंदर ॥ शिव सनकादि अंत नहि पावै । नर मुष ते केहि विधि गुन गावै ॥ सुक सारद नारद से पाठक । हनूमान गावै गुन नाटक ॥ बालमीक रामायन कर्ता । राम चरित्र पाप के हर्ता ॥ अष्टादश पुराण श्री भारथ । भाष्यो व्यास ग्यान पुरुषारथ ॥ दोहा ॥ पारासर ते जन्म है व्यास देव रिषिराज । जा मुष ते भाषा प्रगट भा कवि कुल सिरताज ॥ चैा० ॥ गुन गनेस सारद के पायन । करैां प्रनाम होहु सुभ दायन ॥ संवत सत्रह से अट्ठारहि । तिथि पूर्णा मंगल के वारहि ॥ माघ मास मा कथा विचारी ॥ अवरंग साहि दिल्लीपति धारी । सब पुरान पर नायक भारथ । जामे कुरु पांडव पुरुषारथ ॥ व्यास देव भवभार निवारन । भारथ रचेउ जगत के तारन ॥ दो० ॥ जोगजुद्द रस मंत्र सब भारथ मोहै सर्व सबल सिंह चैाहान कहि भाषा भीषमपर्व ॥

End—पांडव मन आनंद दल जीति चले रन ठान । अर्जुन के रथ सारथी सुन्दर श्री भगवान ॥ चैा० ॥ गोधन सहस देहि जो दानहि जो फल सब तीरथ अस्नानहि जो फल संभुनाथ पद परसे । जो फल होइ साधु के दरसे ॥ जो फल ब्रत एकादसि कीन्हे । जो फल होइ धरनि के दीन्हे जो फल रन महं प्रान गवाये । जो फल होइ ब्रह्म के ध्याये ॥ जो फल कोटि विप्र पद परसे । सो फल भारथ कहे सुने से ॥ व्यास देव भारथ के करता । बाढ़ै पुन्य पाप के हरता ॥ दो० ॥ राम कृष्ण गोविंद हरि कीजिय सदा बषान । भाषा भीषम पर्व कह सबल सिंह चैाहान ॥ इति श्री महाभारते भीषमपर्वे भाषा कृते अष्टादसोध्याय १८ समाप्तं संवत १९।१९ शाके १७८४ माघ मासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां शनिवासरे लिष्यते इदं पुस्तकं गनेस पंडित श्रीराम चन्द्रायनमः ॥ श्री राधाकृष्ण जु सहाइ सदा ॥ श्रीराम ॥

Subject—भीष्म का युद्ध श्रीर उसकी महिमा आदि का वर्णन । अंत में महाभारत के गाने पढ़ने सुनने सुनाने का फल श्रीर लेखन काल ।

No. 363(*b*). Bhishma Parva by Sabala Simha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—52. Size—12 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—1,170 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1923 or A. D. 1866. Place of deposit—Ṭhākura Jaibaksha Simha, Village Miṭhaurā, Post Office Keśargañja, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ भीष्मपर्व लिष्यते ॥ चैापाई ॥ गुरु गाेविन्द के चरण मनैये । जेहि प्रसाद उत्तम गति पैये ॥ कहैा नाम रघुपति के पावन । चारि वेद जाके गुन गावन अवधनाथ सीतापति सुन्दर । दीनबंधु रघुबंस पुरंदर ॥ सिव सनकादिक अंत न पावहिं । नर मुषते केहि विधि गुन गावहिं ॥ महिमा निगम कहत नहि पावै । सेस सहस मुषते गुन गावै ॥ सुक सारद नारद से पाठक ॥ हनोमान गावत गुन नाटक । बाल्मीक रामायन कर्ता । राम चरित्र पाप के हर्ता ॥ अष्टादश पुरान श्री भारथ । माधेड व्यास ज्ञान पुरुषारथ ॥

End—पारथ नहि जीते अपने बल । जो नहि कृष्ण करै रन में छल । जहं भीष्म सर सय्या लीन्हों । तंबू एक बड़ो अड़ो कै दीन्हो । गंगासुत जय कीन्हो मैानहि धर्मराज आये तव भैानहिं ॥ दो॰ ॥ पांडव दल आनंद भे जीति चले मैदान । अर्जुन के रथ सारथी आप भये भगवान ॥ धन साहस्र देइ जो दानू । कासी बैठे सुने पुरानु । जो फल होई सिद्धि के दरसे । जो फल होइ संभु के दरसे । जो फल होइ एकादसि कीन्हे । जो फल होइ भूमि के दीन्हे । सो फल है रन प्रान गंवाये सो फल होई ब्रह्म के ध्याये ॥ सो फल कोटिन विप्र जिवाये । सो फल होइ अर्थ सुनि पाये । व्यास देव भारथ के करता । नासै पाप पुन्य के बढ़ता । दोहा कृष्ण विष्णु गाेविंद प्रभु कीजे सदा बषान । भीष्मपर्व भाषा रचो सबल सिंह चैाहान ॥ इति श्री महाभारथे भीषम पर्व भाषा कृते । अष्टादसोध्याय श्री श्री महापुराणे भाषा पर्व सम्पूर्णम् । फागुन मासे शुक्लपक्षे तिथैा परिवा संवत १९२२ लिषं जंगबहादुर रैकवार जो देषा सो लिषा मम दोष नाहीं । साध संत के वंदगी ब्रह्म के प्रनाम जो कोई बाचै प्रेम ते ताको सीता राम ।

Subject—महाभारत के भीष्म पर्व की कथा ।

No. 363(*c*). Bhishma Parva by Sabala Simha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—68. Size—10¼ × 6 inches. Lines per page—19. Extent—1,300 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of

Composition—Samvat 1718 or A. D. 1661. Place of deposit—Bābū Padma Baksha Simha, Lavedapur, District Bahrāich.

Note—आदि अंत के अवतरण No. 363 (b) के अनुसार। अंत में कार्तिक कृष्णपक्षे एकादश्यां तिथौ चन्द्रवासरे पुस्तकं समाप्तम् ॥ शुभ संवत् ॥ मासी ॥ शाके ॥ श्रीकृष्ण को जै। इति

Subject—पृ० १—९ तक—कौरव पांडव की सेना की तैयारी और अर्जुन का वैराग्य, कृष्ण का समाधान करना, फिर भीष्म से आशीर्वाद पाना।

पृ० १०—१६ तक—दोनों सेना का युद्ध वर्णन, अर्जुन और भीष्म के युद्ध का वर्णन।

पृ० १७—२२ तक। शंख का युद्ध के लिये तैय्यार होना। भीष्म शिखंडी युद्ध वर्णन। अर्जुन का कौरव सेना से प्रबल युद्ध करना। शंख और द्रोण का युद्ध वर्णन। युद्ध विश्राम।

पृ० २३—३२ तक। धृष्टद्युम्न और उत्तरा का द्रोण से युद्ध वर्णन। अर्जुन व भगदत्त युद्ध वर्णन। भगदत्त का वध।

पृ० ३३—५० तक। भीमसुत और अलम्ब युद्ध वर्णन। लाक्षागृह वर्णन। अर्जुन व भीष्म का युद्ध। भीष्म का सब को निश्शस्त्र करना। हनुमान व भीष्म संवाद।

पृ० ५१—६८ तक। भीष्म का कृष्ण को अस्त्र गहवाने की प्रतिज्ञा करना और उसका पूरा होना। अर्जुन का प्रबल युद्ध। धर्मराज और कृष्ण का भीष्म के समीप जाना और मृत्यु ज्ञात करना। शिखंडी व भीष्म का युद्ध। अर्जुन का बाण मारना और भीष्म का हत होना तथा अर्जुन का शरशय्या बनाना। कथा का फल वर्णन।

No. 363(*d*). Śalya Parva by Sabala Simha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—10 × 5 inches. Lines per page—11. Extent—265 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1902 or A.D. 1845. Place of deposit—Mahārāja Bhagawān Baksha Simha, Rājā of Amethī, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सैलपर्व ॥ दोहा ॥ व्यासदेव पद बंदिये जा मुख वेद पुरान ॥ सैलपर्व भाषा रचे सबलसिंह चौहान ॥ जूझे करन

जक जस पाये ॥ दुरयोधन पस वचन सुनावे ॥ हाता मित्र परम सुषदायक ॥ महा बुद्धि करवे के लायक ॥ क्षत्रीधर्म मित्र तुम पाला ॥ यह सव दोष हमारे भाला । वल से सके न पर्जुन मारन ॥ छल से वधे जगत के तारन ॥ पव काको सेनापति करिये ॥ जाके वल भारथ में लरिये ॥ कृतवर्मा तव कहेउ विचारो ॥ राजा सुनिये वात हमारो ॥ जव पंडौ निज देसै पाये । कै वसिष्ट जदुनाथ पठाये ॥ मांगे पांच गांउ नहिं दीन्हें ॥ सब विधि पांडु निरादर कीन्हे ॥ जदुपति कहेव न कीन्हेव राजा । तव श्रीपति यह भारथ साजा ॥ पव करुना कोजे केहि काजा ॥ सहसा सदा वूभिये राजा ॥ धीरमान नृप परम सयाने ॥ तिन कर गुन नहिं जात वषाने ॥ सदाधर्म पपने मन राषे ॥ सत्य छाड़ि पसत्य न भाषे ॥

End—पृथीपति दुरयोधन लक्ष क्षत्रवर साथ ॥ लक्ष्मी जाके कांध पर तेहि विधि कीन्ह पनाथ ॥ तव नृप मन महं कीन्ह विचारा ॥ पैरौ रुधिर जाउ पव पारा ॥ पत्र सनाह पोलि सव डारे ॥ लैकै गदा नृपति पगुडारे ॥ पहि विधि भारथ भयो महारन ॥ परी लोथि पर लोथि हजारन ॥ वार वार नहि सुझै काहू ॥ रुधिर नदी पति वहिय पथाहू ॥ पैरत नृप संका नहि मन मे ॥ वहुत लोथि पभिरत है तन मे ॥ कवहुंक केश चरन पभ्कावे ॥ पैरत थके थाह नहि पावे ॥ जहां द्रोग गड़े वड़ पंभा ॥ पभिरेव तहां धरे कर थंमा ॥ गहि के पंभा किये विश्रामा ॥ जिय मैं सोच जाउ किमि धामा ॥ पकरे लोथि वहुत मभिधारा ॥ वृद्धि जग्य सहि सकत न भारा ॥ विधि वस एक लोथि तव गहेऊ ॥ वूड़ो नहीं भार तिन सहेउ ॥ चलो लोथि सो रुधिर हिलोरति ॥ पभिरत मृत्यु गदा सिर फोरत ॥ वहुत कष्ट ते उतरेउ पारा ॥ तव पपने मन कीन विचारा ॥ दोहा ॥ कौन वीर की लोथि यह दियो निवहि निदान ॥ सैलपर्वे पहि विधि कहेव सवल सिंह चौहान ॥ इति श्री हरि चरित्रे महाभाथे सवलपर्वे भाषा कृत दुतियेमो पध्याय ॥ २ ॥ मिती वैशाष सुदी ॥ ६ ॥ संवत ॥ १९ ॥ २ ॥

Subject—महाभारत के शल्यपर्व को कथा।

No. 363(*e*). Śalya Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—New paper. Leaves—15. Size—$10\frac{3}{4} \times 6$ inches. Lines per page—18. Extent—200 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1724 or A.D. 1667. Place of deposit—Babū Padma Baksha Siṁha, Lavedapur (Bhinaga), District Bahrāich,

Note—पादि पंत No. 363(*d*) के पनुसार।

No. 363(*f*) Sabhā Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—35. Size—9½ × 8½ inches. Lines per page—20. Extent—1,750 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1727 or A. D. 1670. Date of manuscript—Samvat 1931 or A.D. 1874. Place of deposit—Ṭhākura Jadu Nātha Baksha Siṁha, Hariharapura, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सभापर्व कथा महाभारत लिख्यते ॥ दोहा ॥ सुमिरि व्यास गनपति चरन गिरिजा हरि भगवान ॥ सभापर्व भाषा रचो सबल सिंह चैाहान ॥ सत्रह से सत्ताइस संवंत सुध मनवास। नैामी गुरु पक्ष पक्ष सित भय यह कथा प्रगास ॥ चो० ॥ अथ नृप कथा सुनहु मन लाई। तव हित हेतु कहत मैं साेई ॥ कुरु पांडव सोहहिं दोउ भाछे। जस समाज बरनत मैं पाछे ॥ इन्द्र प्रस्थ दोउ बसे सुभागे ॥ मति दिन नंद राज्य अधिकारो ॥

End—लखि कुंभो कच भूप हय आतुर वाहन लाग। गजि गजि उचाट कर गयो नागपुर त्याग ॥ सबलसिंह सुनि कहि विदुर मुख को प नाथ हलवाल। होई उदास सकुचो करन बोलि लीन ततकाल।

इति श्री महाभारत सभापर्वे भाषा कृते पांडव वन गमनो नाम सप्तमोऽध्याय।

माघमासे शुक्ल पक्षे तिथै। प्रतिपदायां शुक्रवासरे लिख्य दुर्गाप्रसाद संवत् १९३२ राम राम।

Subject—पृ० १—१७ तक—निर्माण संवत्, प्रार्थना, शिशुपाल वध।
पृ० १८—सकुनि दुर्योधन संवाद।
पृ० १९—२०—कुरुओं को धृतराष्ट्र से भेंट।
पृ० २१—२४—जुआ होना और पांडव का हारना।
पृ० २५—२९—सभा में द्रोपदी आदि का संवाद।
पृ० ३०—३१—भीम प्रतिज्ञा।
पृ० ३२—३५—पांडव वन गमन।

No. 363(*g*). Sabhā Parva by Sabala Siṁha. Substance—Country-made paper. Leaves—55. Size—11 × 7 inches. Lines per page—24. Extent—1,485 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1727 or A.D. 1670. Date of manuscript—Samvat 1936

or A.D. 1879. Place of deposit—Ṭhākura Jai Baksha Simha, Miṭhaurā, Post Office Kesarāgañja, District Bahrāich (Oudh).

Note—उद्धरण व विषय No. 363 (*f*) के अनुसार।

तिथि—संवत १९३६ शाके १८०१ चैत्र मासे कृष्णपक्षे तिथा दुइज सोम-वासरे हस्त नक्षत्रे लिषतं दलजीत सिंह रैकवार के।

No. 363(*h*). Drōṇa Parva by Sabala Simha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—32. Size—12½ × 5¾ inches. Lines per page—22. Extent—1,100 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Bābū Padma Baksha Simha, Lavedapur, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ द्रोनपर्व लिष्यते ॥ चैापाई ॥ श्री गुरु चरन दंडवत करिये। जा प्रसाद भवसागर तरिए ॥ बन्दैा रामचन्द्र रघुनन्दन महावीर दसकंध निकंदन ॥ दीरघ बाहु कमल दल लोचन ॥ गनिका ब्याध अहिल्या मोचन ॥ ब्यास देव कलि पातक हरता। चारिवेद श्री भारथ करता ॥ श्रोता जनमेजय गुन सागर। महावीर कुरु वंस उजागर ॥ उत्तम नगर चंद्रागढ़ साजा। भूपति मित्रसेन तहं राजा ॥ दोहा ॥ रघुपति चरन मनाइ कै ब्यास देव धरि ध्यान। द्रोन पर्व भाषा रचत सबल सिंह चैाहान ॥ १ ॥ चै० ॥ तब भीषम सर सेज्या लीन्हेउ। दुर्जोधन तब अति दुष कीन्हेउ ॥

End—दीनबंधु जाके रथ सारथ। मारि सकै को रन मे पारथ ॥ कुरुपति लरत सैनबल कारन। मेरे बल तुमही जगतारन ॥ सो सुनि कृष्ण बहुत सुख माने। नृप कैां परम साधु करि जान्यैा ॥ दुर्योधन तब करन बुलाया। ....। तुम बल हम यह भारथ ठाना। मित्र सो समै आइ नियराना ॥ मुकुट बांधि सैनप ह्वै लरिए। ....। सो सुनि करन कहन अस लागे। दुर्योधन राजा के आगे ॥ नृप निरषहु मेरो पुरुषारथ। पंडो सैन बधैा रन पारथ ॥ दुइ दिन रन मेरो सिर भारा ॥ निहचै अर्जुन करैां संहारा ॥ सो सुनि दुर्योधन सुष पाया। सैनापति करि मुकुट बंधाये ॥ दोहा ॥ द्रोनपर्व भाषा रचैा सबल सिंह चैाहान। पंडव के रक्षक सदा भक्त बस्य भगवाना ॥ इति श्री महाभारते द्रोनपर्व भाषा कृते अष्टमो अध्याय ८ संपूर्ण मस्तु ॥ पुसमासे कृष्ण पछे द्वादस्यंग तिथै सम्बत् १९०० श्री राम ॥

Subject—पृ० १—१२ तक। भीष्म के मारे जाने पर द्रोण को सेनापति बनाना और चक्रव्यूह युद्ध व अभिमन्यु वध वर्णन।

पृ० १३—३७ तक—अर्जुन को जयद्रथ के मारने की प्रतिज्ञा, दुर्योधन से सलाह, द्रोण का रक्षा करना, कृष्ण का छाया कर धोखा देना और अर्जुन का जयद्रथ के मारना। युधिष्ठिर का कृष्ण को स्तुति करना।

No. 363(i). Drōṇa Parva by Sabala Siṁha. Substance—Country-made paper. Leaves—54. Size—12 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—1,136 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1727 or A. D. 1670. Date of manuscript—Samvat 1932 or A. D. 1875. Place of deposit—Ṭhākura Jaya Baksha Siṁha, Village Miṭhaurā, Post Office Kesaragañja, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—अथ द्रोनपर्व लिष्यते ॥ चो० । श्री गुरुचरन दंडवत करिये। जेहि प्रसाद भवसागर तरिये। बन्दैा रामचरन रघुनंदन महावीर दसकंध निकंदन। करि कर वाह कमल दल लोचन। गनिका व्याध अहिल्या मोचन॥ व्यास देव कलिकल्मष हर्ता। चारि वेद श्रो भारत कर्त्ता। श्रोता जन्मैजै गुण सागर। महावीर कुरवंस उजागर॥ नृप सोइ पाइ रिपेसुर ग्यानो। भाषत महा सुधा समवानो॥ सत्रह सै सत्ताईस जानो। सो संवत यहि भांति बषानो। शुक्ल पक्ष अश्वनि के मासहि। तिथि षटो कियो कथा प्रगासहि। उत्तम नगर चंद्रगढ़ छाजत। भूपति मित्रसेन तहं राजत। रघुपति चरन मनाइ कै व्यास देव धरि ध्यान। द्रोणपर्व भाषा रचो सबल सिंह चैाहान॥

End—चो० । सो सुनि द्रोन पुत्र कियो कोधहि। पांडो सहित बंधु सब जोधहि॥ धृष्टद्युम्न मारो मैदानहि। तो पित्रहि देहैां जलपानहि॥ यह कहिकै कछु मासठ वैनहि॥ काल्हि करन सेनापति सैनहि॥ दुइ दिन करन सेन के रच्छक। महामारु करिहैं। परतच्छक। सुरपति सकति लियो या कारन। करन योर अरजुन कर मारन। जो अर्जुन को देषन पैहै। वज्र फांसते कैान बचैहै। दोहा॥ धर्मराज यहि विधि कही कहिये आनंद स्याम। पांडो संकट परे अब तुम रच्छक सुषधाम॥ चो०॥ दीनबंधु जाके रथ सारथ। मारि सकै को रन मैं पारथ॥ कुरुपति करत सैनबल कारन। मेरे बल तुमहो जगतारन॥ सो सुनि कृष्ण बहुत सुष मानो। नृप को वचन साधु करि जानो। दुर्जोधन तब करन बोलाये। करि आदर आसन बैठाये। तब बल मैं भारथ रन ठानो। सिर सो समै आइ नियरानो। मुकुट बांधि सेनापति हूजै। प्रातहि जेत पत्र नृप लोजै॥ सो सुनि करन कहन यह लागे। दुर्जोधन राजा के आगे॥ नृप देषो मेरा पुरुषारथ। पांडो सैन वधैां नृप

पारथ ॥ दुइ दिन रन मेरे सिर भारहिं । निहचै अर्जुन करौं संहारै ॥ सो सुनि दुर्जोधन सुष पायो सैनापति के मुकुट बंधायो ॥ दे।० ॥ द्रोनपर्व भाषा रचो सबल सिह चोहान पांडव के रक्षक सदा भक्तवस्य भगवान। इति श्री महाभारते द्रोन पर्व भाषा कृते सप्तमोध्याय सम्पूर्णम् लिषा दलजीत सिंह रैकवार संवत १९३१ सावन मासे कृष्णपक्षे तिथौ द्वादस्यां गुरुवासरे शाके १७९५ राम राम।

Subject—महाभारत के द्रोण पर्व की कथा।

No. 363(*j*). Gadā Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—9½ × 8½ inches. Lines per page—15. Extent—250 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1727 or A. D. 1670. Date of manuscript—Samvat 193 or A.D. 1874. Place of deposit—Ṭhākura Jadunātha Baksha Siṁha, Hariharapura, District Bahrāich.

Beginning—चैा० ॥ गदापर्व अब करत बखाना। दुर्योधन मन में अनुमाना ॥ अंधकार में गयो न चीन्हा। मुकुट चोय मुख निरखै लोना ॥ लछन कुंवर चीन्हि जब पायो। करुना करत नृपति मनलायो ॥ जूझे पुत्र हमारे कामहि। कहो कहां आये कहि धामहि ॥ ऐसे तुम सपूत संसारा। मुष परे मोहि पार उतारा ॥

End—भारत सुने अंत फल सके। कहो नहि जाय। अंत बास बैकुंठ लहि दरस देहु जदुराइ ॥ इति श्री महाभारते गदापर्व भाषा कृते सबल सिह कृता समाप्तम् शुभ मस्तु बैशाख मास शुक्लपक्षे तिथा चतुर्दश्यां गुरुवासरे लिखितं दुर्गा पाठक कुंगपुरवा के यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया। यदि शुद्धम् मशुद्धम वा मम दोषो न दीयते ॥

Subject—भीम का जरासंघ की जंघा तोड़ना और धृतराष्ट्र का भीम से मिलने के लिये कहना और कृष्ण का बचाना।

363(*k*). Gadā Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—New paper. Leaves—7. Size—10¾ × 6 inches. Lines per page—18. Extent—100 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābū Padma Baksha Siṁha, Lavedapura, Bhinagā Rāja, (Baharāich).

Note—आदि अंत No. 363(*j*) के अनुसार।

No. 363(*l*). Udyōga Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size—$9\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—16. Extent—2,240 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1931 or A.D. 1874. Place of deposit—Ṭhākura Jadunātha Bakhsha Siṁha Tāluqēdār, Hariharapura, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ विधि हरिहर गणपति गिरा सुर गुरु पाइ नियोग । सबल सिंह कहि भनत पर्व उद्योग ॥ १ ॥ चौ० ॥ कह रिषि राइ सुनहु कुरुकेतु । कथा सुभग मुद मंगल हेतु ॥ २ ॥ जब हरि धर्मराज पहं आये । मिलत हृदय अति आनंद छाये । गहे चरन भीमादिक भाई । बैठे अति प्रसन्न अतुराई ॥

End—करौ अकौरौ भूमि सब छत्र परो तब शोश ।
बचै न संकर सत मोहि जो राखै अज ईश ॥
भये मुदित मन धर्म सुत सुनि हरि गिरा प्रमान ।
भनित पर्व उद्योग यह सबल सिंह चौहान ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वे भाषा कृते तु सप्तमोऽध्याय ॥ ३० ॥ वैसाख मासे शुक्लपक्षे तिथौ सप्तम्यां शुक्रवासरे श्री संवत् १९३१ शाके १७ ॥ राम राम ।

Subject—महाभारत के उद्योगपर्व का अनुवाद ।

No. 363(*m*). Karṇa Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size—13×5 inches. Lines per page—22. Extent—440 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1724 or A. D. 1667. Date of manuscript—Samvat 1893 or A.D. 1836. Place of deposit—Ṭhākura Dalajita Siṁha, Village Jālimasiṁha kā Purwā, Post Office Kesargañja, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ कर्णपर्व लिख्यते ॥ प्रथमहि कीजै गुरुहि प्रनामा जेहिते होइ सिद्धि सब कामा । बंदौ रामचन्द्र के पाया । सीता पति रघुबर कै दाया । महिमा अगम कोऊ नहि जानही । परम भक्ति बंदौ हनूमानही ॥ सुर गुरु चार कार को माथा । तिथौ एकादसी कथा प्रकासा ॥ रघुपति चरन मनाइ के व्यासदेव धरि ध्यान । कर्नपर्व भाषा रची सबल सिंह चौहान ॥

गुरु द्रोन जूझे मैदानही। दुर्जोधन तब आप बषानही॥ द्रोनो करन आलोच्छे झूझो। और अनेक चड़े डिग अजो। अब केहि के डिग मुकुट बंधैये। जेहन जीते अत्र बोधो पैये॥ दीन पुत्र कहो नृप सुन लोजे। आप सोच केहि कारन कीजै॥ को मेरे सिर दीजे भारा। नाहि तै करौ करन सिरदारा॥ रवि सुत करन महाबल भारी। अर्जुन के समान धनुधारी॥ गुरु सुत दोनो करो प्रनामा। तब राजा यहि भांति बषाना॥ कहो करन कुरुनाथ भुवरहो। जो मोकहरन सैापतो भारहो॥

End—करन का बाण उड़ाना जबहीं। कौरव निज दल पाये तब ही॥ पांडव पाये रवि सुत पासा। छातो ठोंकत ऊभो स्वांसा। राय युधिष्ठिर अंक मैं लाये। सहदेव नकुल अब बंधव पाये। अर्जुन कहो संग मैं जरिहै। भीम कहो जीके का करिहै। अन दाढ़ो मुंह खोजै भाई। करन के चिता समारहु जाई॥ बासदेव सुत हेरन सब आये। बिन दग्धो छिन कतहुं न पाये। देषा हेरि सकल भुहारी कहो बसुधा न रही बिनु जारी॥ सब पांडव कारन करहि कौन कुमति विधि दीन करन बीर अरु बंधु यह मारि कौन गति कीन्ह॥ भीम हथेरी चिता बनायो। करन दाह लै तहां दिखायो। रोवहि अरनो और अकासा। रन बन रोवत रोवत तासा॥ रोवहि सब पशु पंषो ब्याला। कहिये काह दई के ब्याला॥ रन मैं करन नाउ कै लोना। अमर मतो पहिले पहिले जिउ जोना॥ एकहो संग अमेर सुभ स्वर्गलोक तिन लीन। करन बीर अस बंधु वा जनम सुफल करि दीन। इति श्री महाभारते करनार्थ भाषा कृते चतुर्थो अध्याय समाप्त संवत १८९३ माघमासे शुक्लपक्षे लिषो नैामियं चंद्रवासरे॥

Subject—कर्ण का अर्जुन के हाथ युद्ध में मारा जाना, पांडवों का रोना, अर्जुन का यह कहना कि हम कर्ण के साथ जल मरेंगे, भीम का यह कहना कि अब जीना व्यर्थ है। श्री कृष्ण भगवान का समझाना, भीम का बिना जली भूमि कर्ण की चिता के लिये खोजना और उसका न मिलना, अंत में अपनी हथेली पर चिता बनवा कर कर्ण को जलाना, उसकी स्त्री का सती होना आदि।

No. 363(*n*). Karṇa Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—$12\frac{1}{2} \times 5\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—20. Extent—400 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābū Padma Bakhsha Siṁha, Lavedapur, District Bahrāich.

Note—शेष No. 363 (*m*) के अनुसार।

No. 363(*o*). Svargārohaṇa Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—36, Size—

9½ × 8½ inches. Lines per page—20. Extent—700 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1931 or A. D. 1874. Place of deposit—Bābū Jadunātha Siṁha, Hariharapura, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ स्वर्गारोहण पर्व लिख्यते ॥ पार्वती सुत सुमिरौं तोही । ज्ञान बुद्धि बल दीजे मोही । सुमिरि शारदहिं सुमति बिचारी । करहु कृपा जाहुं बलिहारी ॥ निसु दिन मैं गुरु चरण मनावौं । आज्ञा करु पांडव गुन गावौं ॥ पर्व अठारह भारत भयऊ । तापर अंत कथा यह ठयऊ ॥

End—बैाध रूप है यहां मुरारी । सुनु जनमेजय कथा विचारी ॥ जुधिष्ठिर राजा दुर्योधन राई । यहि विधि हरि पुर की ठकुराई ॥ वैशंपायन जनमेजय आगे । कथा रमान ज्ञान के पागे ॥ जो यह कथा सुनै अरु गावै । हरि पुर बसै इहां नहि आवै ॥ इति श्री स्वर्गारोहण कथा समाप्त शुभ मस्तु आश्विन मास शुक्लपक्षे तिथै। षष्टम्यां रविवासरे श्री संवत १९३१ लिपि दरबारी लाल कायस्थ ।

Subject—महाभारत के अंत मे स्वर्ग के। जाना ।

No. 363(p). Svargārohaṇa Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—33. Size—8½ × 4 inches. Lines per page—16. Extent—400 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1734 or A.D. 1676. Date of manuscript—Samvat 1932 or A. D. 1875. Place of deposit—Ṭhākura Jayabaksha Siṁha, Miṭhaurā, Post Office Kesargañja, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गनाधिपतयेनमः ॥ अथ कथा सर्गारोहिनि लिष्यते ॥ अति उदार मंथन मदन दलन प्रबल दुष द्वंद । सबल स्याम आनंद घन प्रभु बृन्दा बन चंद ॥ चौ० ॥ कलि कराल आवन जल देषा । रहिहहि न कतहूं धर्म कै रेषा ॥ सब विचारि सम मंत्र दिढ़ाया ॥ कलो प्रभाव सम प्रभुहि सुनावा ॥ बान तरंग कलि अस्तुति कीन्हा । अम्या पाइ पशु मंगल दीन्हा ॥ ब्यास देव जाना सब भेऊ ॥ अलष निरंजन है अमरेऊ ॥ दो० ॥ बलभद्रहि उपदेसि प्रभु चले द्वारिका आहि । कंचन महल विचित्र अति लुप्त भये जग माहि ॥ कथा अरंभ कीन तब ब्यासदेव उपचार । परिक्षित सुत उपदेस सुनि कहौ हेवार विचार ॥ सुन राजा पांडव कुर षेता । एक एक नृप अहहि सचेता । महाबली मारेउ कुर षेता । सत सात

दुर्जोधन मारे । अष्टादस छोहनि संहारे ॥ वधे भीष्म । द्रोन भगदंता । जुझे कर्ण आदि सावंता ॥

End—कृष्ण बहोरि सारथी बोलाये । दिव्य विमान साजि तब लाये जादु नर्क दुर्जोधन राजा । आनहु बेगि सुभ साजि समाजा ॥ मैान बेगि चलि जमपुर आये । चलहु भूप जदुनाथ बोलाये ॥ चल्यो हर्षि तब संन्दन पाये । आये उत जहं मुनि समुदाये ॥ दे।० ॥ हरि पग रेनु चढ़ाइ सिर । मुनिन्ह दंडवत कीन्ह । सत भ्राता जहंवा रहे तहां नृप आसन दीन्ह ॥ धर्मराय बोले बिलषाता कर गहि बांह उठे जन भ्राता ॥ देषहु बंधु द्रोपदी नारी । अपर चरित्र देषु बिस्तारी ॥ करन द्रोन अरु देषु गंगेऊ । जुत जुझे देषो सब केऊ ॥ दे।० ॥ देषा सबहि जुधिष्ठिर पुजो मन के आस । अधिक सनेह कीन्ह सभा उर मह भये हुलास ॥ सबहि भेंटि मिलि राजा बंधु सहित मुनि पास सब । भ्राता दुर्जोधन बैठि करहिं कविलास ॥ सर्गारोहनि कथा यह पांडव गै हरि पास । यह चरित्र जे। भाषै बसै कृष्ण के पास ॥ सर्गारोहनि कथा जे। गावै । से। बैकुंठ परम पद पावै । ईश्वरदास महा कवि भारी । यह चरित्र बर्णन बिस्तारी ॥ जेठ मास कवि बार दिन मृग नछत्र तिथि त्रै जानि । कथा समात कीन्ह लिषि । धर्मसील की पानि ॥ सं० १८३२ कुवार मासे किस्न पछे ४ जैसो प्रति पाई तैसो लिषो ॥

Note—संवत १७३४ में इस लेख में दिये हुए जेठ मास कविवार दिन मृग नक्षत्र तिथि तृतिया शुक्रवार हो के तारीख़ ४ मई सन १६७५ के पड़ा था । उस दिन मृग नक्षत्र चालू था ।

No. 369(q). Mahābhārata by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—130. Size—8½ × 5½ inches. Lines per page—16. Extent—780 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī and Kaithī. Date of manuscript—Samvat 1833 or A. D. 1876. Place of deposit—Rāmanātha Lālā, Kāśī.

Beginning—माता सरशती कंठ जो फुरइ । जोग जुगुती अक्षर जुरइ । प्रनवो आदि पुरुष को साषा । शंवो मातु पीता गुरु पाषा ॥ प्रनवो देव तैतीसो कोरी । छोज पाप न लागै षोरी ॥ कोठो को रानी प्रनवो दुइ कर जोरी । ज्ञान पंथ कर बिग्रह गावो सुरुवारो तोही ॥ नवे शकार देव कर देसु । परीकत पाय करार नरेसु । गंगा जमुना गावो शरीरा । वशी पर्थ गावहु मति धीरा । पर्व पक्षीम उतर के वारी । पाय मेठो बसै पुरवारी । पूरब कासी पछिम पयाग । तहवां धार गंग जल लाग । दछिन बिंद से। राज पहारा । उत्तर सवानाव

गोड़वारा । पहुठ कोटो मन्ठोका गाउ । तहा के ठाकुर ठकुरे नाउ । सारद मातु जे सपने देखावा । गैारो पुत परतछोहो पावा ॥

End—छुड़ो नाहि मार मम सोहो । चलैा लोथो गहो कथोरहि हैरत । समोरत श्रोतु कागद गै फेरत । बहुतक सैा हतरोर पारहो । बहुतक बुडो धार मझ धारहो । यहि विधि धर्मराज घर पाये । जुग्डोधन तब मजन सीधारे । कुनो दल नोजो नोश्रो मन धारे लागे करन लोग वोसरामा हो ॥ दोहा ॥ पेहो थोथो जुधो मथा करः को वो सल्य वलवान । एक देवस पुरसारथ सवल सिह चोहान । इसनो श्री महाभारथे सल्य पव संपुर्न ॥ एक देवस जुधो—जे देखा सो लोष मम दोष न दीयते ॥ मिती कुयार सुदी २ के पत्र लोषा वार सोमवार । दसखत सीभु काएथ संवत १९३३ सन ११८४ ।

Subject—पृ० १ से ९६ तक-कर्णपर्व—कथा महात्म, अर्जुन कर्ण पुरुषार्थ, भीष्म, द्रोण कर्ण आदि के युद्ध को दिन संख्या, दुर्योधन का स्वप्न, कर्ण से उसका उद्धार पूछना, कर्ण का महा कठिन संग्राम को प्रतिज्ञा करना । शल्य का कर्ण से अर्जुन का अजेय कहना, कर्ण का अपना उत्कर्ष वर्णन, श्रीकृष्ण का कर्ण के पक्ष से चिंतित होना, छल से कर्ण के प्रचण्ड शस्त्रों के ले लेने का विचार करना । कृष्ण का कुंती के पास जाना, कुंती से पुत्रों के प्रति प्रश्न करना, कुंती का पांच पुत्रों का उत्कर्ष कहना, कृष्ण का उसके पुत्रों का भेद बतलाना, शल्य और कर्ण के जन्म को कथा कहना, कर्ण का परशुराम के पास पहुंचने को कथा का वर्णन । कालकूट धनुष का वर्णन । कर्ण का परशुराम से आशीर्वाद और श्राप पाना । कर्ण और दुर्योधन को भेंट, युद्ध, दुर्योधन का कर्ण को मित्र बनाना, कर्ण का विवाह, राज्य और मान तथा सेना आदि का पाना । कृष्ण द्वारा सब समाचार जान कुंती का प्रसन्न होना । कर्ण से मिलने के लिये उत्कंठित होना, कृष्ण का कुंती से कर्ण को प्रतिज्ञा और उसके पुत्रों को मृत्यु कहना और चुपके से कुंती को रहस्य समझा कर कर्ण के पास भेजना, पांच बाण मांगने को कहना, कुंती का कर्ण के दरवाजे जाना, प्रतिहारी से कर्ण के पास संदेशा भेजना, कर्ण का कुंती के यहां आने का विश्वास न करना, कर्ण का द्वार पर आना, कुंती को शिरनवा अभिवादन करना, भाव भक्ति से स्वागत करना, कुंती के आने का कारण पूछना, कुंती का कर्ण का जन्म वृतान्त कहना, कर्ण का दान देने को प्रतिज्ञा करना, पुत्र होने में अविश्वास करना, कुंती का क्रोधित होना, स्वप्न में मरने का शाप देना, कर्ण का चिंतित होना, कर्ण का कुंती से अपनी गया गाथा का वर्णन करना, ग्लानि युक्त होना, मरने को ठानना, सूर्य का पिंडा मांगना, कर्ण को अपना पुत्र बतलाना । कर्ण का सूर्य से माता को पूछना, सूर्य का अग्निपट देना, उस पट को धारण करने

वालो को कर्ण को माता कहना, अनेक स्त्रियों का उसके धारण के लिये आकर जल मरना, कुंती का वस्त्र मांगना, कर्ण का अपयश से डरना, कुंती का निश्चय दिलाना, वस्त्र का मंगाया जाना, कुंती का धारण करना, स्तन से दूध को धार बहना, कर्ण को पीकर अमर होने को कहना, कर्ण का पुत्र रूप से पीने को दौड़ना, कृष्ण का ब्राह्मण वेष में छिपे रह कर पीने से मना करना, कुंती का सिंहासन पर बैठना, सब का हर्षित होना आनन्द के बाजे बजना, कर्ण की स्त्री का हर्षित होना, अनेक प्रकार का दान करना, कुंती का कर्ण को पांचो भाइयों से मेल कर राजसिंहासन पर बैठने का उपदेश करना और पांचो बाण मांगना, कर्ण की स्त्री का विकल होना, कुंती का उदास हो कर्ण से बोलना, कर्ण का कुंती को सान्त्वना देना, अपने को बड़भागी जानना, अंगार सती का आंसू डारने का हेतु कहना, कुंती से प्रार्थना करना, कुंती का कोधित होना, कुंती की बात सुन कर कृष्ण का प्रसन्न होना, कर्ण का बाण पर हाथ जाना, बाणों का कर्ण से पराये हाथ देने से मना करना, कर्ण को बाणों का उपदेश देना, कर्ण का बाणों को उत्तर देना, पांचों बाणों का कुंती को देना, कुंती का प्रसन्न हो बाणों को लेना, कर्ण का छल कर कुंती को उसके पास भेजने का भेद पूछना, अपनी कौरव पांडव प्रति प्रतिज्ञा का कहना, कुंती का आंसू डार कर रथ पर चढ़ कर चलना, कुंती का कृष्ण से अर्जुन को समझा कर कर्ण से मेल करने को कहना, मेल न होने पर वध का पापभागी कृष्ण को कहना, कृष्ण का अपनी प्रतिज्ञा का स्मरण करना, कुंती और कृष्ण का वार्तालाप। कुंती का कंपायमान होना, कृष्ण से अग्नि लगाने को कहना, बाण का जलाया जाना, कुंती का कृष्ण से पांचो बाण जलाने के लिये मांगना, कृष्ण का दूसरे पांच बाण लाकर देना, कर्ण के बाण को छिपा कर रखना, कुंती को सुभद्रा के पास रखना, कृष्ण का अर्जुन को जगाना, सोने के लिये फटकारना, निश्चिन्त सोने और न सोने वाले का वर्णन करना, अर्जुन का लड़ाई के लिये नाद घोष कराना, कर्ण के मारने की प्रतिज्ञा करना, कृष्ण का अर्जुन से कर्ण के बलका वर्णन करना, अर्जुन का कृष्ण के भरोसे अपना बल वर्णन करना, कर्ण की निन्दा करना, अर्जुन का उत्कर्ष वर्णन, रथ का रणक्षेत्र में आने के लिये घोष के साथ बाहर आना, शल्य का कर्ण के पास आना, लड़ाई के लिये उद्यत होने के लिये कहना, कर्ण को प्रतिज्ञा का स्मरण दिलाना, कर्ण का रणविजय के लिये पुनः प्रतिज्ञा करना, कर्ण का स्नान करना, डुबकी लेते समय कृष्ण का अर्जुन कर्ण का सगा भाई कहना, कुंती की आज्ञा का पालन करना, अर्जुन का कृष्ण से कारण पूछना, कृष्ण का वर्णन करना, अर्जुन का विरक्त होना, कृष्ण का अर्जुन का उत्कर्ष बढ़ाना, अर्जुन विश्वसेनी

का युद्ध, अर्जुन का वाण प्रहार करना, विश्वसेनी का पांडव दल पर बाण वर्षा कर सब को विकल करना, कृष्ण का गरुड़ का आवाहन करना, गरुड़ का अमृत लाकर सब को जिलाना, पांडवों का क्रोधित हो लड़ाई करना, अर्जुन और विश्वसेनी का घोर युद्ध वर्णन। अर्जुन का विश्वसेनी का सिर काटना, शिर का धड़ में पुनः जाकर लगना, कृष्ण से कारण पूछना, कारण बताना, विश्वसेनी के मरने की युक्ति बतलाना, अर्जुन का मारना, विश्वसेनी का शिर मोर द्वारा कर्ण के पास भेजना, कर्ण का देख कर दुःखित होना, अंगारमती का बिलखना।

शल्यपर्व—पृ० ९७ से—१३० कर्ण के मारे जाने पर दुर्योधन का विलाप करना, कृतवर्मा का धर्मोपदेश देना, शकुनी का दुर्योधन को समझाना, शल्य को सेनापति बनाना, शल्य का प्रतिज्ञा करना, लड़ाई के लिये मैदान में आना, पांडवों का मैदान में आना, दोनों सेनाओं का युद्ध वर्णन, शल्य का बाण वर्षा वर्णन, अर्जुन का बाण वर्षा वर्णन, अन्य योद्धाओं का परस्पर युद्ध वर्णन। अर्जुन शल्य का परस्पर युद्ध वर्णन, अर्जुन द्वारा सारथ और रथ का विनष्ट किया जाना, शल्य का क्रोधित हो अन्य रथ पर जाना, बाण वर्षा कर पांडव दल को विकल करना, भीम और द्रोणी का घोर युद्ध वर्णन, कृतवर्मा और नकुल का युद्ध वर्णन, घोर युद्ध वर्णन; भीम का गदा लेकर आना, पांडव दल की अधिक सेना का मारा जाना, घोर युद्ध वर्णन, दोनों दल का पैदल युद्ध वर्णन, पुनः रथ की लड़ाई अनेक प्रकार का असगुन होना, धर्मराज (युधिष्ठिर) का शल्य पर शक्ति का प्रहार करना, शल्य का मारा जाना, पांडवों का घर आना, दुर्योधन आदि का घर जाना, लेखक का नाम, लिखने का संवत।

No. 363(r). Mahābhārata Bhāshā by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—160. Size—$9\frac{1}{4} \times 8\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—40. Extent—5,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī and Kaithī. Date of manuscript—Saṁvat 1834 or A. D. 1777. Place of deposit—Paṇḍitā Rāmasundara Misra, Village Kaṭāgharī, Post Office Akaunā (Bahrāich).

Beginning—पोथी महाभारत के।

दोहा—व्रत फलंग अस भेद करी जत फलं गऊदान। तत फलंग भारथ कथा सबल सिंह चौहान ॥ १ ॥ पाइउ वादे होइ यम आगम निगम पुरान। भारथ कथा सुनंमे यत कासी स्नान ॥ २ ॥ श्री दुरजोधन वाच ॥

साजहु तुरित जाइ सब कटक असंख समूह। सजि ह्वै जल्दी आवहू मत हस्ती गज जूह॥ ३॥ चौ० ॥ सुनि कै द्रोन कही बिहसाई। सहसैन मंत्रन्ह भय अनुआई॥ सकुनी क मंत्र सदा तुम लेहू। हम पाचन्ह कहं दोष न देहू॥ पांडव पांचउ मानिजे आउ। लाहा गृह तुम आग लगाउ॥

End—भारथ कथा सुनहि अरु गावै। ताके निकट पाप नहि आवै॥ जे फल सबै तीरथ स्नाना। जे फल कोटिन्ह कन्या दाना॥ जे फल जग्य धरम के कीन्हे। जो फल लक्ष गाय के दीन्हे॥ जो फल होइ सरन के राखे॥ जो फल सदा सत के भाखे॥ जो फल पिंड गया महं दीन्हे। सो फल यहि भारथ सुनि लीन्हे॥ दोहा—भारथ सुनै अनंत फल सो तऊ कहा न जाइ। अंत बसहिं वैकुंठ महं दरस देहि जदुराइ॥ ४८४॥ महाभार्थ पूरन कियो सुद्ध बनाइ बिचारि। पंडित जन सो बिनय करि आखर पदय सुधारि॥ ४८५॥ इति श्री महाभारथ संपूर्ण किया जो प्रति मैं देखा सो लिखा मम दोषो न दीयते संवत १८४४ मिति कुआर सुदी नवमी ९ वार सुक्रवार के संपूरन॥ लिखा सीताराम उमर के सो जानबे सुभमस्तु श्री रस्तु॥

Subject—पृ० १—१३ तक—अभिमन्यु युद्ध वर्णन।

" १३—१६ " उद्योगपर्व वर्णन

" १७—६१ " भीष्मपर्व वर्णन

" ६१—१०५ " द्रोण पर्व वर्णन

" १०५—१४२ " कर्ण " "

" १४२—१५० " शल्य " "

" १५१—१६० " गदा " "

No. 363A(a). Bhāgawata Bhāshā, Daśama Skandha by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves —230. Size—8½ × 7 inches. Lines per page—36. Extent —6,480 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī and Kaithī. Date of Composition—Samvat 1726 or A. D. 1669. Date of manuscript—Samvat 1810 or A. D. 1753. Place of deposit—Paṇḍita Rāmasundara Miśra, Village Kaṭāghari, Post Office Akaunā, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ भाषा भागवत लिख्यते॥ श्री राधा कृष्णायनमः॥

श्लोक—बालं नील तनुं सरोज नयनं लावण्य कोटि स्मरं दीप्ति चारु मुखे विलास कुशलं वंसादि वदिस्तवं ॥ गोपाल धृत भूधरं जन हितं च विश्वंभरं माधवं। गोपीनां नयनं चकोर शशिना वंदे जसोदा सुतम् ॥ १ सरत पद्म वक्रं, लसत भृंगकेशं, तड़ित पीत वस्त्रं घनश्याम वेशं ॥ वलित भूषणं चारु गुंजा वतंसे जनेसं सुरेशं रमेशं हि वन्दे ॥ २ ॥

दोहा—अति उदार मंगल सदन दलन प्रबल दुखदंद। सबल स्याम सेवक सुखद प्रभु वृन्दावन चन्द्र ॥ १ ॥

End—छंद—हरिचरन पंकज पतित पावन जगत जीवन जानिए। तजि मान पति निर्वान नाम प्रमान करि हित मानिए ॥ ब्रह्मादि सुर सनकादि नारद जासु पद रज सेवहीं। को कहे जड़ मति मूढ़ मानव मान मानत देव हीं ॥ दोहा—सबल स्याम भव भय हरन पावन परम उदार। कृपासिंधु सरनद सुपद व्यापक जगदाधार ॥ ८६५ श्लोक—कथनं करोति करवानं केस कुंडल केसरी। कालिन्दी कूल कल्लोले कोलाहलं कुतूहलं ॥ इति श्री हरिचरित्रे दशम स्कंधे महापुराने भगवते परम रहस्यां वेलासि भाषा सबल स्याम कृतौ चौरानवे खंड कथा लिखितं रामबकुस रैकवार मौ० नन उपरा के जस देखी वैसी लिखी मम दोस न दियते कथा समाप्तं सुभ मस्तु ॥

संवतु १८८० समै नाम असाढ़ सुदी दुइज रोज सुकवार ॥

Subject—पृ० १—२३९ तक—भागवत संस्कृत दशम स्कंध का भाषानुवाद ॥

Note—निर्माण काल तथा कारण:—

संवत सत्रह से सोरह दस । कवि दिन तिथि रजनीस वेद रस ॥
माघ पुनीत मकर गत भानू । असित पक्ष ऋतु सिसिर प्रमानू ।
प्रथमहिं बरनौं नृप नृप देसा । तब हरि कथा करौं परवेसा ॥
रचेउ बिरंचि नगर एक पोढ़ा । तासु नाम जग विदित अमोढ़ा ।
अवध नगर तें पूर व सोहै । निरखि रूप सुर मुनि मन मोहै ॥
तहं रह वीर सिंह धरणी धर । तरनि बंस अव तंस नृपति वर।
बरनौ बहुरि भूप कर साजू । नगर समाज सहित जुवराजू ॥
मति अति विमल भक्ति रस पागो । वीर सिंह हरि पद अनुरागो।
सहित सनेह कृपा अधिकाई । पुनि हरि भक्त जानि लघु भाई ॥
कहेउ दसम हरि कथा बनावहु । सगुन रूप कर भेद सुनावहु।

No. 363A(b). Bhāgawata Bhāshā Daśama Skandha by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—

265. Size—12 × 4 inches. Lines per page—12. Extent—4,372 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1818 or A. D. 1761. Place of deposit—Ṭhākura Dalajita Siṁha, Village Jalima Siṁha kā Purawā, Post Office Kesargañja, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः मातु दीन्ह मैं तुमहि जनाये। मानुष देह यानि नहिं पाये ॥ दोहा। पुत्र भाव करि दम्पती ब्रह्म भाव जिय जानि। परम प्रेम बस समुभि मोहि मम गति सुलभ सयानि ॥ यह कहि निज माया हरि हेरी। सोइ प्राकृति शिशु भयऊ बहोरी ॥ रोवन लगे बाल भय हारी। जगमोहनी प्रकृति बिस्तारी। कह देवकी सुनहु प्रिय प्राणा। चहत होन यह प्रगट बिहाना। यहाँ तुम्हारण सहज सहाई। जहं राषिय यह तनय छिपाई ॥ देषहि जबहि कंस यह बारा। बधहि वेगि नहिं करहि विचारा। गोकुल नंद गोप हितकारी। तहं रहि है यह तनय सुकारी ॥ लै तहं जाहु वार जौनि लावहु। सुतहि सैापि तुरत तुम आवहु ॥ सुनि प्रिय वचन गोपाल उठाये। पुनि वसुदेव अंक लै धाये ॥ लै तव त्वरित चले वनवारी। घन तम मैं घनो अंधियारो उघरे वज्र कपाट निहारे। प्रभु प्रभाव मोहे रषवारे ॥

End—यहि कहि प्रेम विवस भइ भोरी। दीन वचन फुनि कहेउ बहोरी। कृष्ण कृष्ण भव भंजन भारा। सरणद अखिल लोक करतारा ॥ पाहि पाहि प्रभु त्रिभुवन पालक। कठिन कलेस सहित सह बालक ॥ तव पद तजि नहिं सरण कृपा कर। जन मन कंज प्रकास प्रभाकर ॥ परम उदार चरित फल दायक। विधि श्रुति शक सेइवे लायक ॥ दोहा ॥ कृपासिंध भव भयहरण सुपदाय भगवान ॥ मायापति निर्मांण पति सरणद सील निधान ॥ यहि विधि समुभि स्वजन धन स्यामहि। जपत अखिल जग जन येहि नामहि ॥ देत कर्म फल करत विभागा ॥ करत प्रवेस सहित अनुरागा ॥ वन्दैा तासु चरण रज पावन। जग निवास अघ अखिल नसावन ॥ नृप मति समुभि महामति माना। विदा भयउ सिर नाइ सुजाना ॥ सुहृद वर्ग पहं मांगि रजाई। पवन गवन रथ त्वरित चलाई ॥ मथुरा भयऊ महां वन माली। कहो सकल कुरुराज कुचाली ॥ छंद ॥ कुरुराज कुमति कुचालि प्रभु पहं दान पति सब विधि कहो। सोइ सुन्यें सम्यक वचन कृपानिधान हरि मान्यो सही ॥ प्रभु हृदय धरि हित पांडवन प्रमुदित जिन गृहको गये। चढ़ि व्योम यानि विमान कीरति विबुध बुध गावत भये ॥ सबल स्याम आरति हरण दीनबंधु भगवान। सुनहु राम कुरुवंस मनि हरि तजि सरण न आन ॥ इति श्री हरि चरित्रे दसमस्कंध महापुराणे भागवते परम रहस्ये संहितायां वयासिक्या

भाषायां सबल स्याम कृते पूर्वार्द्ध समाप्तं संवत् १७३३ समय फालगुन सुदि एकादस्यां रविवासरे तरक तारके ताले। लिषा संवत १८१८ ठाकुर प्रताप सिंह ॥

No. 363A(c). Bhāgawata Daśam Skandha by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—81. Size—13×6½ inches. Lines per page—28. Extent—3,360 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—1875 Samvat or A. D. 1818 Place of deposit—Bhaiyā Santa Baksha Simha, Guṭhawārā (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री गुरवेनमः ॥ सर्वं देवायनमः ॥ गुंजा पीत पवीत चारु युगलं पाणौ च पंकेरुहं। मुक्ताहार किरीट कुंडल युतं स्यामं प्रफुल्लाननम् ॥ गोविंदं परितः परीत मखिलं गोपीजनै सेवितं। नीत्वा वत्स प्रवत्स कान्त अगतं वंदे यशोदा सुतं ॥ दोहा—सबलश्याम प्रभु कमल पगु भव भयहरन विधान। बंदौं चरण सरोज द्वै करत अखिल कल्यान ॥ १ ॥ चौ० ॥ कह मुनि सुनिय भूप मति माना। कथा पुनीत करौं सो गाना ॥ अस्ति प्राप्ति द्वौ सब गुन खानी। कंस महीपति कै पटरानी ॥ निज पति निधन देखि दुख भारी। गई पिता गृह परम दुखारी ॥

End—जन्म देवकी गर्भ तुम्हारा। है यह वादमात्र संसारा ॥
थिर चरवृजिन हरन प्रभु कैसे। तिमिर तोष कहं रविकर जैसे ॥
व्रजपुर रमनि परम सुखदायक। पद श्रुति सक सेइवे लाइक ॥
भवनिधि जान चरनसुभ पावन। हरन पाप त्रै ताप नसावन ॥

छंद हरिगीतिका—हरि चरन पंकज पतित पावन जगत जीवन जानिए। तजि मान पति निर्वान नाम प्रमान करि नित मानिए ॥ ब्रह्मादि सुर सनकादि नारद जासु पग रज सेविहीं। को कहौं जड़मति मूढ़मानव यान मानत देवहीं ॥ १ ॥ दोहा—सबल स्याम भव भयहरन पावन जन्म उदार। कृपासिंधु सरजद सुषद व्यापक जगदाधार ॥ ४२७ ॥

इति श्री हरिचरित्रे महापुराने भागवते दसमस्कंधे समाप्त सुभमस्तु ॥ जेठ सुदि १० को पुस्तक प्रारंभ किया आषाढ़ सुदि १३ को संपूर्ण भई ॥ पुस्तक लिषित शिवप्रसाद कायस्थ बलरामपुर के वासी पाठार्थ श्री महाराज कुमार भैया उमराव सिंह जीव के संवत १८७५ सन् १२२५ मोकाम भिनगा कोट ॥ ॥

Subject—पृ० १—७ तक—प्रार्थना, जरासंध युद्ध। मुचुकन्द द्वारा यवन वध वर्णन। पृ० ७—१६ बलभद्र विवाह, रुक्मिणी विवाह पृ० १६—२० सम्बरासुर

वध, स्यमंतक हरण, जामवती विवाह वर्णन और सत्यभामा विवाह वर्णन। पृ० २०—३५ तक—सतधन्वा, सत्राजित वध, रानियों का उद्धार, नरकासुर वध, कृष्ण रुक्मिणी, अनिरुद्ध ऊषा सम्वाद। पृ० ३५—४४ तक—नृगोप वर्णन। बलदेव विजय जमुना कर्षण। पौड्रक वध, द्विविद वध, साम्ब विवाह, जोगमाया दर्शन वर्णन। पृ० ४४—५४ तक—इन्द्रप्रस्थ में कृष्ण गमन, जरासंध वध, पांडव राजसूय यज्ञ वर्णन। भगवान नारद संवाद, दुर्योधन मानभंग। पृ० ५४—६४ तक—साल्व युद्ध वर्णन। सौभराज वध, बलदेव तीर्थ यात्रा वर्णन, बदब्रुल वध, कृष्ण सुदामा सम्वाद वर्णन। पृथु उपाख्यान वर्णन। पृ०—६५—८१ तक। रुक्मनी अष्टधानी संवाद। वसुदेव नंद सम्वाद, मोक्ष वर्णन। भृगु मुनि दर्शन व द्विज कुमार वर्णन।

No. 363A(*d*). Bhāgawata, (Daśama Skandha) by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—194. Size—14×8 inches. Lines per page—60. Extent—6,500 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1726 or A. D. 1669. Date of manuscript—Samvat 1888 or A. D. 1831. Place of Deposit—Mahārājā Rājendra Bahādur Siṁha, Bhinagā Rāj, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ बालं नीलतनुं सरोजनयनं लावन्य कोटिसरं। दीर्घं चारु मुखं विलास कुसलं वस्या दिवा पेतरम्॥ गोपालं धृत भुधरं जन हितं विस्वंभरं माधवं॥ गोपीनां नयने चकोर शशिनं वंदे यसोदा सुतम्॥ १॥ सरद पद्म वक्रं लसद भृंगकेसं। तड़ित पीतवस्त्रं घनस्याम बेसम्॥ चलत दृषणं चारु गुंजा वतंसं। अनेसं सुरेसं रमेसं हि वंदे॥ दोहा॥ अति उदार मंगल सदन दलन प्रबल दुख द्वंद। सवलश्याम सेवक सदा प्रभु वृन्दावन चंद॥ १

सोरठा—गुरु पद पंकज धूरि प्रथम सीस निज राखि कर।
प्रभुजस बरणौं भूरि सुखदायक सब दुख्ख हरन॥ २॥
वंदौ वंदनीय अविनासी। वंदौ शिव कैलाश निवासी।
वंदौ गिरा गणेश षड़ानन। वंदौ सुर सुरेस सहसानन॥
वंदौ नारद श्रुति चतुरानन। वंदौं भूमि गगन गिरि कानन॥
वंदौ देवन दीन दयारी। वंदौ चंद तिमिर तम हारी॥

End.—छंद हरगीतका।

हरि चरण पंकज पतित पावन जगत जीवन जानिये।
तजि मान पति निर्वान नाम प्रनाम करि नित मानिय॥

ब्रह्मादि सुर सनकादि नारद जासु पग रज सेवहीं।
को कहै जड़ मति मूढ़ मानव मान मानत देवहीं ॥

दोहा—सबल स्याम भव भयहरन पावन जन्म उदार।
कृपासिंधु सरनद सुपद व्यापक जगदाधार ॥

इति हरि चरित्रे महापुराणे भागवते दशमस्कंधे पारमहंस संहितायां वैयासिक्यां भाषायां श्री सबल सिंह कृतौ चतुर्नवतितमोऽध्यायः दशमस्कंध समाप्त शुभ मस्तु अषाढ़ मासे शुक्लपक्षे नौम्यां चंदवासरे संस्कृत भाषा सम्पूरणम् संवत् १८८८ सन् १२३८ साल ॥ पुस्तकं लिषितं ॥ गंगाप्रसाद कायथ ॥ टिकुइया ग्राम के बसैया वासं पाठार्थं ॥ लाला दाऊलाल देवान भिनगा के श्रोता पढ़ैकों सत्यनाम ॥ जो प्रति पाया सो लिषा मम दोसो न दीयते ॥ इति ।

No. 363A(*e*). Bhāgawata Daśama Skandha by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—570. Size—8½ × 7 inches. Lines per page—15. Extent—6,680 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Kaithī. Date of Composition—Samvat 1726 or A. D. 1669, Date of manuscript—Samvat 1871 or A. D. 1814. Place of deposit—Śītala Prasāda Nigama, Village Saidpur, Muhallā Potidārān, District Bārābankī (Oudh).

No. 363A(*f*). Bhāgawata Daśama Skandha by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—170. Size—13 × 6½ inches. Lines per page—20. Extent—3,825 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1726 or A. D. 1669. Place of deposit—Bhaiyā Santa Baksha Siṁha, Guṭhwā, District Bahrāich.

No. 363A(*g*). Bhāgawata Bhāshā by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—138. Size—14 × 6 inches. Lines per page—20. Extent—3,795 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1726 or A. D. 1669. Place of deposit—Paṇḍita Murlīdhara Tripāṭhī, Mailā Sarāya, Post Office Bauṇḍī, District Bahrāich.

No. 364(*a*). Bhagwantā Rāya Rāsā by Sadānanda Kavi of Asothara. Substance—Country-made paper. Leaves—11. Size—$7\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—24. Extent—180 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1797 or A. D. 1740. Date of Manuscript—Samvat 1798 or A. D. 1741. Place of deposit—Śri Mān Mahārāja Rājendra Bahādura Simhā Sāhaba, Bhingā Rāja, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रासा भगिवंत सिंह जीवक ॥ दोहा ॥ एक दिवस भगिवंत जू प्रति अनंद सो लोन । कोड़ा जहानाबाद की हुकुम कूंच को दीन । छंद पद्धरी ॥ सज्जे सुवीर बज्जे निसान । लज्जे सुरेस भज्जे गुमान ॥ फुट्टे सुमेरु टुट्टे अगाति । कुट्टे कितेक लिहे नसाति ॥ दोहा ॥ थाइ जहानाबाद मे कवत मुलुक को गौर । सोचत वाम अवाम सब लखि कै ठौर अठौर ॥ साह महम्मद छत्रपति दान कृपान जहान । सुवा कोन्हों अवध को विदित सहादति खान ॥ करे जे रक्षित बाहुबल दोन्हे नृपति निकारि । राखे जे धर्मेश प्रति सकल विचारि विचारि ॥

End—कंध्यै छोक अवलोकि सोक मय जहं तहं वज्यौ । लषि चरित्र विधि हरिहर हिय अनुराग उपज्यौ ॥ प्रेरित मन चलि वेगि समर अवनी महं आयो । कहि प्रसंग कर जोरि अमिय मय वचन सुनायो ॥ अप्सरि सुचारु चहुं दिसि चमर चापु ढरत आनंद भयो । राजाधिराज भगवंत जू चढि विमान सुर पुर गयो ॥ १०३

दोहा ॥ संवत सत्रह सतानवे कातिक मंगलवार ।
सित नौमी संग्राम भौ विदित सकल संसार ॥ १०४ ॥

इति श्री कवि सदानन्द विरचिते भगिवंत सिंह सौचरि सो नवाब सहादति खान जुद्ध बरननो नाम सुभ मस्तु सुभं भूयात् ॥ लिखी मिती सावन वदि अष्टमी ८ सन १२५७ हि० बारह सै सत्तावन मा लिखा ॥ इति ॥

Subject—पृ० १—२ तक । राजा भगवन्त सिंह का कोड़ा जहानाबाद पर चढ़ाई करना और यवनों को भगाना सत्रादत खां का नूर मोहम्मद को तहसील के लिये भेजना और भगवंत राय का लूट करना, नवाब का चढ़ाई करना और दुर्जन चौधरी से मिलना ।

पृ० ३—४ नवाब का अजुदे पहुंचना और सेना का वर्णन ।

पृ० ५—६ मंत्री से राजा भगवन्त सिंह का सलाह करना, रानी का युद्ध के लिये निषेध करना और युद्ध की तय्यारी का वर्णन।

पृ० ७—८ सयादत खां व बुरात खां से खीची का युद्ध वर्णन—

पृ० ९—११ तक। भवानी प्रसाद व दीनमोहम्मद का युद्ध वर्णन। शेरअली और जयसिंह का युद्ध वर्णन। भगवन्त सिंह खीची का युद्ध वर्णन और वीरत्व को प्राप्त होना। निर्माणकाल व युद्धकाल वर्णन।

No. 364(*b*). Bhāgawantā Rāya Rāsā by Sadānandā. Substance—Country-made paper. Leaves—7. Size—10 × 8½ inches. Lines per page—32. Extent—225 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1797 or A. D. 1740. Date of Manuscript—Samvat 1936 or A. D. 1879. Place of deposit—Ṭhakura Chitra Ketusiṁha, Nārāyaṇapur Taparā (Hariharpur) Post Office Chilwaliā (Bahrāich).

No. 365. Nandaji kī Vaṅśāvalī by Sadānaṅda Dāsa. Substance—New paper. Leaves—4. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—30. Extent—60 [Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Babū Śyama Kumāra Nigama, Rāe Barelī.

Beginning—अथ वंसावली नंद जी की सदानंद दास कृत ॥
श्री गुरुचरण प्रतापहि लहीं कृष्णवंश उद्भव कछु कहीं ॥ १ ॥
तीन प्रकार गोप की जाति वैस अहीर गुजर वर जाति ॥ २ ॥
उत्तम वल्लव गोप कहाये जदुवंशी वेदन में गाये ॥ ३ ॥
हित सो गोधन ठाट चराये छत्री ते ते वैस कहाये ॥ ४ ॥
वैस सुद्रिका ते जो होई शुद्ध अहीर कहावे सोई ॥ ५ ॥
गुजर कछु इनते लघु वरने पौन वंस ऊंचे सुष करने ॥ ६ ॥
व्रज के निकट सो विधि सों वसै अजा आदि पशुधन सों लसै ॥ ७ ॥

दोहा—माथुर पुरोहित विमलकुल गर्ग गुरु इनके निकट अवास।
वेद पुरानन में निपुन हिये विष्णु परगास ॥ ८ ॥

सवे धाम व्रज मैं रहैं हरि सेवा सुष हेत। पांच कहे परिवार ए हरि जु कों सुष देत ॥ ९ ॥ अब वरनो गोपन के नाम जाहि सुमिरे सब पूरन काम ॥ १० ॥

प्रथम गोपर्जन्य बखानौ । ताको त्रिया वरेयसी जानौं ॥ ११ ॥ प्रथम सुते उपनंद बखानो । ताको प्रिया सुनंदा जानो ॥ १२

सुत सुभद्र तनया तुंगीनव । उत्तम गुण ताके मन उद्भव ॥ १३ ॥
सरसगौर अभिनंद बखानो । ताको त्रिया पीवरी जानौं ॥ १४ ॥
सतु कुंडल घद नंद सुता । कुल पुनीत गावैं पतिव्रता ॥ १५ ॥
धरानंद ताको प्रिय परमा । किंकिनि सत तनया शुभ करमा ॥ १६ ॥
कंचन तन ध्रुवनन्द बखानो । ताको त्रिया सुदेसो जानो ॥ १७ ॥
सुत विलास तनया मन सीला । गावत रहत कृष्ण गुण लीला ॥ १८ ॥
महानंद को तिय हितकारी । सुता सुसीला सुत मन धारी ॥ १९ ॥
सुनो सुनंद त्रिया मन लेखा । सुत उत्तम तनया रुचि भेषा ॥ २० ॥

End—सोमवंश हरि जीव के। बरनै लै छै नाम । ससि के बुध बुध के पुर जो परम संत निहकाम ॥ ७५ ॥ तिनके आयु नहुष नृप तिनके नृपति जजाति । तिनके जदु इनके हरि सैयो बरगात ॥ ७६ ॥ क्रोष्टवान वज नृपति जु स्वाहि तिनके पुत । तिनके दस आहुत भये व्योम नृपति जस तुत ॥ ७७ ॥ इनके शशविंद पथजू किये परम सुख कर्म । ताके ऊसना ताके रुचि किए परम सुधर्म ॥ जाम-घताके के तास विदर्भ विलक्षन गुनमान । ताके पुत्र प्रगट भए कथ जु किये ग्रंथ बहु दान ॥ ताके कुत विष्ट सुत सुंदर ताके नरिवत पुत । ताके दश आहित सुत व्योम नृपति जस नूत ॥ जीव सुत ताके विकत्र भीम सुरथ भुनमान । नरथ ताके दशरथ के सुत सकनी सुर जजात ॥ नृपति करंभिक भये ताके सुत भये देव रतिराज । भए देवरति देवक्षत्र सुत मधु नृप सतत सिरताज ॥ कुरु वंस ताके अंतु नृप के सुत गेोहित सुजान । ताके सुचित ताके अंधक ताके नृप भज मान ॥ ताके नृपति विदरथ ता सुत सुर नृपति बरजान ॥ ताके सुनि भजि मान नृपति सु ज्ञानवंत धनवान ॥ ताके सुचित सु भोज नृप ताके नृपति हदीक । देवमीढ़ तिनके कुल प्रगटे तिन प्रगटकरी जसलोक ॥ कुसानो वैश्यानी इनके पत्नी दोय । कुसानी के सूरसेन जिन राख्यो जग भोय ॥ वैश्यानी के पर्जन्य प्रगट भये तिनके प्रगटे नंद । तिनके प्रगट भए मनमोहन व्रज के पूरनचंद ॥ इह वंशावली बखानी दांड़ी इयैं वल्लव राज । श्री सदानंद प्रानन वारत रंग भोनी सकल समाज ॥ इति संपूर्ण शुभ ॥

Subject—नंद जी की वंशावली

No. 366. Chhattis Akshari by Sahabadinadāsa of Tiparī, Ramapur. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—8 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—128

Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1921 or A. D. 1864. Date of Manuscript—Samvat 1950 or A. D. 1893. Place of deposit—Bābā Bhāratamahañta, Village Datauli, Post Office Phakharpur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ छत्तीस अक्षरी लिख्यते ॥ ॐ ओंकार अपार आगे घर आदिब अंत पसारा है। ब्रह्मा विष्णु महेश गणेशहु सुर्ज किरन उजियारा है ॥ पंच उपासन तत्व प्रकीरति याते सब बिस्तारा है ॥ गति साहब दीन कहैं कहलौं सब रोम रोम ओंकारा है ॥ मा ॥ नाम निरंजन सब दुख भंजन सुमिरन किये कलेश मिटै। मन मस्त उमंगै उठै तरंगै सुनि दुष्टै हिय हरो फटै ॥ जो नाम पुकारै कबहु न हारै कलिकराल जंजाल कटै ॥ जन साहब दीन सोइ पूरा जो हरदम हरिका नाम रटै ॥ मा ॥ मन को बूझे तब गति सूझे त्यागि कपट दलालो है। वृन्दावन तन रच्यो बिन्द सों मगन मूल प्रतिपालो है ॥ बाग लगाय क्यो नहि अनैावा तिन बागन आलो है ॥ साहब दीन सदा अनुभव गति बाग माझ बनमालो है ॥ सा ॥ सहित सनेह गुरुपद पूजै ध्यावै ध्यान समाधू है। सुमिरै ररंकार निअक्षर तका मता अगाधू है ॥ राम नाम दम दम पर खोचे मिटै व्याधि अपराधू है ॥ साहब दीन सफल मत बूझै तिसको कहिए साधू है ॥

End—॥३ ॥ इसक सिंधु में मगन सदा दुख मरम शर्म सब खोई है। जो कुछ काहि आवै नास मान अरु आसत मान सुख सोई है ॥ सता स्मा॥ साजै सदै बस एक विषम नहि कोई है। आस साहब दीन विचार लीन्ह ईश्वर जन जगमें सोई है ॥ उ ॥ ऊजर बोझ नहक मत बोवो रहे यके हड़तासो है। मन में भरम भूल न लावै आनंद हृदय हुलासो है येके सर पूर जग देखे दिल को दिल को दुविधा नासो है साहबदीन रहन अस जाको तिस्को कहा उदासो है ॥ ऐ ॥ ऐ संसार बजार ठगों की चिन भेदी तुम आवोगे। मोन आनंद अमोल अजूबा अद्यो भाव भंजावोगे ॥ खोल कपट को गांठ सवेरे जौहर न परखावोगे। साहबदीन मुरशद के जुग जुग भटका खावोगे ॥ श ॥ शपत स्वर्ण को सीस तिलक दे त्रिगुना बुंदा भेलो है। बीज मंत्र अजपा की सुमिरत पीत बसन रंग रेलो है ॥ पांच कली पांचै रंग टोपी अजब रीति अलबेलो है। सोहत साहब दीन मठे बिच पांच दत्त की सहेली है। इति छत्तीस अक्षरी समाप्तः लिखी संवत १९५० कार्त्तिक सुदी चतुर्दशी ॥

Subject—पृ० १—४ तक ३६ अक्षरों पर ज्ञान उपदेश ईश्वर भजन पर कविता की है।

No. 367(*a*). Kavitāvali by Sahaja Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—46. Size—9 × 6 inches. Lines per page—11. Extent—348 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Rāmajiāwana Lāla, Village Daulatipur, Post Office Bilhara, District Bārā Banki.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सहज राम जी की कवितावली लिख्यते ॥ कवित्त ॥ गैारि गिरा गननायक के पदपंकज की रज सीस चढ़ावैा। पवन को पूत सपूत बड़ो तिनके पद पंकज को शिर नावैा ॥ श्री गुरु दीनदयाल पड़े पद पंकज को अनुशासन पावैा। राम चरित्त कवित्त की माल बनाय गिरा के गरे पहिरावैा ॥ १ ॥ ब्रह्मादिक ध्यान धरैं जिनको सनकादिक जोग समाधि को साधे। संकर नाम जपैं जिनको पदुमा पद पंकज को अवराधे ॥ नैामी सुकुला मधु मास पवित्र नक्षत्र पुनर्बसु वासर आधे ॥ राम को जन्म भयो सहजू हरपे सब देव दशानन बाधे ॥ २ ॥ संख चैार चक्र गदा सरसोरुह चारि भुजा लखि मातु त्रसो है। कुंडल लोल कपोल विमंडित आनन देखि लजात ससो है। सुंदर कोट जड़े मुक्ता सुखमा लपि कै (× ×) उमान बसो है ॥ भाल विशाल विलोचन लोहित कैास्तुम कंठ ललाम लसो है ॥ ३ ॥

End—आपनी बड़ाई लरिकाई रामचन्द्र जी की निरखि परस पानि जानि के सकात है। क्षत्रीन को छोना जो कृपावै ग्रो बचावै कोऊ ताहू को मारै न विचारै ग्रैार बात है ॥ पाई न मेराई न बधाई बाजी अंगन में सखिन समेत सीता व्याकुल बरात है। सहजू महीप महिदेव की लराई कैान केतेऊ कुजोग आजु वा जिवाये तात है ॥ ९८ ॥ पिता समीत जानी लीन्हें हैं धनुषवान भ्रातन समेत राम स्याम गैार गात हैं। मुनि को प्रनाम कीन्हे बालक विचित्र चीन्हे थके मुनि नयन बैन धावत न बात है ॥ रामचन्द्र चन्द्रमा चकोर कीन्हे नैन दोऊ मैन की समान रूप देखे न अघात है। सहजराम देखि के विदेह विदेह भये परसराम राम को स्वरूप देखि कामहू लजात है ॥ ९९ ॥ आशिष दै द्दग दैाना किये छवि पुंज पियूष पियो जनु है। करिसायक चाप निषंग कसे सरनागत पालक को प्रनु है ॥ चारि कुमार मनो मखुमार मो प्रेम सिंगार धरो तनु है। भृगुनन्दन को मन भूल्यो फिरै सहजू हरि सुन्दरता वनु है ॥ १०० ॥

Subject—पृ० १—७ तक—मंगलाचरण, राम जन्म, उनके जन्म पर उल्लास, उनकी शोभा का वर्णन। राम-माता का युक्ति सहित चतुर्भुज रूप छिपाने का प्रस्ताव। नगर में आह्लाद, मंगल बधाई इत्यादि। दशरथ का दान, बाल बिनोद।

(२) पृ० ८—१२ तक—राम का मृगया के निमित्त अपने सहयोगियों सहित वन में आना। चारों भाइयों के घोड़ों के विभेद का वर्णन। मृगया में सफलता प्राप्ति। उनका लौटना।

(३) पृ० १३—२४ तक—दशस्यंदन के समीप आकर कुश नन्दन का राम को मख-रक्षा के लिये मांगना, राम नाम महत्ता पर मुनि का छोटा सा व्याख्यान। राजा का इस प्रस्ताव पर खेद। वशिष्ट का समर्थन वशिष्ट द्वारा राजा को संतोष होना। संदेह भंग पश्चात् राम लक्ष्मण को मुनि के साथ भेजना।

(४) पृ० २५—४० तक—मार्ग में गौतम पत्नी उद्धार इत्यादि कार्य करते हुए राम का जनकपुर गमन। राम के स्वरूपादि पर नगर निवासियों का आश्चर्य तथा प्रेम। धनुष यज्ञ वर्णन। जनक की दुर्वोक्ति पर लक्ष्मण का क्रोध। राम का धनुष भंग करना। रामादि विवाह वर्णन। (५) पृ० ४०—४६ तक—बारात इत्यादि की शोभा के वर्णन के साथ ही साथ जनक के द्वारा उसके सम्मानित होने का वर्णन। बारात का विदा होना। परशुराम आगमन। परशुराम की आकृति तथा वेष भूषा का वर्णन। परशुराम तथा राम में समझौता॥

No. 367(*b*). Prahalādacharitra by Sahaja Rāma. Substance—New paper. Leaves—22. Size—8×6 inches. Lines per page—32. Extent—352 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of Manuscript—Samvat 1955 or A. D. 1898. Place of deposit—Lāla Tulasi Rāma Srivāstava, Rāe Bareli.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ ॐ श्री गुरुभ्योनमः॥ अथ प्रहलाद चरित्र लिषते॥ दोहा॥ गनपति सुमिरौं सारदा बंद कमल कर जोरि बरनत सीताराम गुण विमल करौ मति मोरि॥ एक समै कैलास में बैठे शिव भगवान पारबती तहं प्रश्न कर सुनिये कृपा निधान॥ बोलौ गिरिजा वचन वर संकर सिला निधान। चरित सुभग प्रहलाद को मोसन कहो भगवान॥ ३॥ चौपाई॥ प्रश्न उमा को सहज सोहाई सुन महेस बोले हरषाई॥ सुनहु उमा यह कथा रसाला। सुंदर सुषद विचित्र विसाला॥ येक बार मन अति सकुचाये सनकादिक बैकुंठ सिधाये। देषा जाइ हरि लोक अनूपा। बसत जहां श्रीपति सुर भूपा। पांच पदुम जोजन विस्तारा जोजन सहस्र उतंग प्रगारा। हरिदासन के मंदिर जेते। सुर सुरभि सुर स्यामद जेते॥ जहांन राज जन्म दुख भोग। जहांन व्याधि नहि मानस रोग। पुन्य छीन जह कबहु न होइ। जहां गये फिरि पावै न कोइ॥

End—अन नर हरि तन धारन कीन्हा। जन प्रहलाद बिपति हर लीन्हा॥ भय कृपाल अस आयुस होई। सादर करिये मान सिव सोई॥ बोले बचन बिहसि असुरारी। कहा कहिये बिधि बात तुम्हारी॥ बर बिचार नहिं सुरै दीन्हा। अखिल लोक पाल व्याकुल कीन्हा। भसमासुरै संभु बर दयऊ। पलटि महा दुख भाजन भयऊ। सहित धरा धन सैन समाजू देउ देव पहलादै राजू॥ सुनि सुरेस सिंगासन दीन्हा। तिलक लिलाट कमल भव कीन्हा॥ दोहा॥ और लिये दिगेस की लिये हाथ हथियार आरति करत इन्द्रावती व्रत घट दीपक वारि॥ सहज राम पहलाद की सिर परसि पंकरुह पान। अंतर हित नर हरि भय निज सेवक सुखदान॥५३॥ इति श्रीरामायण बालकांडे तुलसीकत इतिहासे महादेव पारवती संवादे प्रहलाद चरित्रे नरसिंह अवतारे कथा समाप्तं शुभं कलम गंगाराम ब्राह्मण गौड॥ शुभ संवत १९५५ वैसाष कृष्णपक्षे तिथि ४ रविवार पुस्तक तुलसीराम को॥

Subject—१—गणेश और शारदा स्तुति, पारवती का शंभु से प्रहलाद चरित्र सुनने के लिए आग्रह करना, शंभु द्वारा वैकुंठ का विस्तार और शोभा वर्णन, हरि स्वरूप वर्णन, सब देवताओं का हरि की स्तुति करने का वर्णन। दक्ष मुनि का बिना द्वारपाल की आज्ञा के हरि के निकट जाने का वर्णन, द्वारपाल का हरि के प्रति मुनि की शिकायत का वर्णन, मुनि की क्रोध दशा का वर्णन, मुनि का श्राप देना, कमलापति की शोभा वर्णन और शिल नख, पीठ की शोभा वर्णन, भाल की शोभा वर्णन, कुंडल की शोभा वर्णन, कपोलों की शोभा वर्णन, कटि की शोभा वर्णन, भृकुटी की शोभा वर्णन, नासिका की शोभा वर्णन, दशन की शोभा वर्णन, भुजाओं की शोभा वर्णन, कंठ की शोभा वर्णन, संख, चक्र, गदादि का वर्णन, मुनि का भगवान से भेंट होने का वर्णन। विप्र के अपमान का फल वर्णन, भगवान की लीलाओं का वर्णन, द्वारपाल के श्राप को क्षमा करने के लिए भगवान का मुनि से कहना, हरि सेवक होने के लिए मुनि का अनुग्रह, राम का अपने अवतारों का वर्णन, दनुजराज का भगवान से बर पाने का वर्णन, दनुराज के पुत्र प्रहलाद का जन्म, पिता का पुत्र वध किस दोष से हुआ, प्रहलाद को अपने कुल गुरु को सौंपना, प्रहलाद का गुरु से राम भजन फल पूछना, गुरु द्वारा विद्या की महिमा का वर्णन, गुरु का राजविद्या के लिये प्रहलाद से कहना, प्रहलाद का हठ राम भजन के लिए, गुरु का राजा से प्रहलाद की शिकायत करना, पिता का अपने प्रहलाद को समझाना। प्रहलाद का राम भक्ति के लिए फिर हठ करना, प्रहलाद का अन्य बालकों को राम भक्ति का उपदेश अध्यात्म विषयक उपदेश जिसमें मनुष्य की गर्भावस्था से लेकर पालन पोषण बालकाल युवावस्था वृद्धि अवस्था और मरणावस्था का वर्णन, कर्म की

प्रधानता का वर्णन, संसार के नाते और सम्बन्धों पर आलोचना, राम भक्ति से रहित इंद्रियों का सुख निरर्थक है, राम भक्ति बिना आहार निद्रा, भय मैथुन आदि में पशु और मनुष्य की समानता का वर्णन, अन्य बालकों का प्रहलाद से यह पूछना कि तुमने भक्ति कहां से सीखी, प्रहलाद द्वारा अपने पिता को पूर्व तप कथा का वर्णन, नारद का प्रहलाद की माता को उपदेश और वहां से भक्ति का अंकुर पैदा होना, राजा का प्रहलाद की परीक्षा लेना, प्रहलाद द्वारा राम की महिमा का वर्णन, राजा का प्रहलाद को राम विमुख होने के लिये समझाना, प्रहलाद का हठ करना और राजा हिरन्यकश्यप का तलवार लेकर मारने के लिए उद्यत होना तथा मंत्रियों द्वारा राजा को समझाना, प्रहलाद को हाथी तले कुचिलवाना, माता का प्रहलाद को समझाना, अन्य पुरवासियों की शिकायत उनके बालकों को बिगाड़ने का कारण प्रहलाद को बता कर अपराध लगाना, राजा का पुनः क्रोध कर प्रहलाद को पहाड़ से गिराना इसके पश्चात समुद्र में फिकवाना और वहां से भी राम राम जपते हुए प्रहलाद का निकल आना। फिर प्रहलाद का अग्नि में डाला जाना इसके बाद में सर्प बिच्छू आदि से कटवाना और अंत में खंभ से बंधवाना और राजा का तलवार लेकर मारने के लिये उद्यत होना और हरि का प्रगट होना। राजा और भगवान का युद्ध होना और राजा का उदर चीरा जाना, प्रहलाद का भगवान को प्रणाम करना और उनका आशीर्वाद देना और वरदान देना और भगवान द्वारा प्रहलाद का राजतिलक होना और भगवान का अंतर्धान होना।

No. 367(c). Prahalāda Charitra by Sahaja Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—2. Size—8¼ × 3¼ inches. Lines per page—14. Extent—320 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bhaiyā Santabaksha Simha, Guthawā, District Bahrāich.

Beginning—·····················कन कैसे तरनि आदि अम्बुज मह जैसे। गदा एक कर रिपु मदहारी। देखि महामुनि भये सुखारी॥ लीला कमल एक कर लीन्हे। भ्रमन करत मुनि मन बस कीन्हे॥ भाल तिलक श्रुति कुंडल लोला। फलकत पुनि पुनि मंजु कपोला॥ रतन किरीट विमंडित शीसा। कहि न सकहिं छवि अज अरु ईसा॥ कमल विलोचन लोल सुनासा। भृकुटी कुटिल मनोहर हासा॥ श्री सुरभी मुनिपद जनु चक्छा। उर श्रीवत्स कहे कवि दक्षा॥ दो॰—कंबु कंठ कौस्तुभ लसै उर तुलसी को माल। चरन चलावति श्री मंजु सुमिरि सवतिया साल॥ ५॥

End—दनुज राज लषि रूप षरारो। चला सकोप गदा कर धारो॥ है हरि कुहुक तोहि मैं जाना। छल करि बधेउ बंधु बलवाना॥ अब नरहरि तन धरि मम नेरे। आवहु कठिन काल के प्रेरे॥ अस कहि कीन्हेसि गदा प्रहारा। हरि धरि भूपर पटकि पछारा॥ मरै न भूपर विधि बर दीन्हा। ऊरु उदर विदारन कीन्हा॥ उदर विदारि रुधिर करि पाना। खोजत जन प्रहलाद समाना॥ रूप भयंकर दशन कराला। पहिरे उर अंतावरि माला॥ शोणित सद्य भरी मुष मोंछै। रसना अधर कपोलन पोछैं॥ दे।०—नारदादि सनकादि शिव ब्रह्मादिक सुर भूरि। निकट न जाहि सभीत अति। विनय करहि सब दूरि॥ ४३॥ कमला सन कमलासन भाखे। निकट जाहु कर कानन्ह राखे॥ हम यह रूप कबहुं नहि देषा। रहत रहित हरि संग विशेषा॥ तब प्रहलाद निकट सुर आये। करि विनती विधि हृदय लगाये॥ धन्य तात तुम साधु सुजाना। प्रेम ते प्रगट किये भगवाना॥ शिव विरंचि सुर मुनि दिगपाला सनमुख होइ न सकहि यह काला॥ तुम प्रहलाद जाहु प्रभु पाही। हम सब देव विलोकि हे............

No. 367(*d*) Sundara Kānda Sahaja Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—54. Size—8 × 6 inches. Lines per page—38. Extent—1,028 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Saṃvat 1926 or A. D. 1868. Place of deposit—Viśwanātha Pustakālaya Ṭhakura Maheśwara Siṁha, Village Dikaulia, Post Office Bisawaṅ, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेसायनमः॥ अथ सुंदर कांड लिष्यते॥ श्री गुर श्री रघुवंश मणि पद सरोज सिर नाइ। सुंदर सुंदर की कथा कहौं जथा मति गाइ॥ चै।०॥ तिहि औसर मारुत सुत बीरा। देषा लवन पयोध गंभीरा॥ सीताराम रूप उर लायो बोले पवन तनय बल मायो॥ मैं अब करौं गगन पथ गवनू। निदरौं बैन तेज मन पवनू॥ देषहु सकल भालु कपि वैसे। नाधौ जलदि धेनु पद जैसे॥ सोधौं जनक सुता सब ठाऊं। यहि विधि आज पुरटपुर जाऊं॥ जो न लहौं पुनि सिय सुधि लंका। सपदि जाउ सुरलोक असंका॥ जो सुरलोक न सिय सुधि पावौं। रावन अधम बांधि लै आवौं॥ ताते सत्य कहौं तुम पाहीं। प्रभु प्रताप बल निज बल नाहीं॥ दे।०॥ अस कहि भुजा पसारि दोउ चला गगन पथ कोस। पंच पंच फन सहित जनु जोहत जुगल फनीस॥ चले साथ कपि नाथ के कुसुमित सुतरु सुरंग॥ चले पठावन लोग जिमि गुरु हरिजन के संग॥

End—उछरि उछरि जल चहेउ अकासा। नभ सरि जलद मनावन प्रासा॥ सरित प्रवाहु वहेउ जल उलटा। विपति परे मति त्यागहिं कुलटा॥ मगि मरि जीव रहे उतराई। कुल मूल कछु चले पराई॥ छिटक छीट को परी गढ़ लंका। सुनि रव घोर सुरारि ससंका॥ सबल सुवेल नाघि जल गयऊ। लंका नगर कोलाहल भयऊ॥ पांच दिवस महं बाधेउ सेतू। हरषे निरषि भानुकुल केतू॥ जोजन चारि सेत चकलाई। भति अनूप कछु बरनि न जाई॥ भालु कपिन को अद्भुत करनो। सेस सहस मुख सकै न बरनो॥ दो० ॥ श्री रघुबीर प्रताप ते उपल भए जल जान। सुजस भयो नलनील को जानहि संत सुजान॥ पवन तनय को पीठि पर भए चरढ़ रघुराव। मुये जिये जल जंतु सब हरषे दरसन पाउ॥ बालि तनय को पीठि पर लषन भए असवार। सुमिर सिवा सिव पुत्र को गवने राजकुमार॥ चलो भालु कपि सयन सब को कवि बरनै पार। सहज राम सुरपुर मचो जय जय जयति पुकार॥ उतरि पार डेरा किए सबल सुवेल समीप। उतरे वानर भालु कपि जय दिनकर कुलदीप॥ इति श्री रघुबंश दीपक सहजराम कृत सुंदर कांड समाप्तः दस्तषत मोहनलाल के संवत १९२५ पूसवदी अमावस्यां।

Subject—इस ग्रंथ में श्रीरामजी का हनूमानजी को सीता खोज के लिये भेजना रामजी के समीप हनूमानजी का समाचार लाना, नलनील का पुल बांधना और राम लक्ष्मण सहित बानर रीछ आदि का पार होकर लंका जाना वर्णन है।

No. 368. Rasaratnāgara by Siyad Pahāra of Kasi Substance—Country-made paper. Leaves—96. Size—11¼ × 4¾ inches. Lines per page—11. Extent—2640 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Manuscript—Samvat 1940 or A. D. 1883. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhingā, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ हजरत गोस श्री अबदुल हू॥ अथ स्तुति ॥ दोहा ॥ अलष निरंजन एकु है अरु दूजो नहि कोइ। यह काहू कीन्हों नहीं रहि कीन्हों स चकोर॥ १॥ चो० ॥ मुहम्मद नाव जगत उजियारा। ताके हेत रचौ संसारा॥ पुनिता मत चारि विधि दये। पंथ दिखावन को निर्मये॥ पुनि विधि रचे मोहम्मद गोस। जाके सुमिरन रहै न होस॥ इतनो तासु बड़े विधि किया। जासम को महि औार न हुया॥ विद्या गुण के सरे सुजान। सुंदरता के मदन समान॥ सब ही विधि के जेता गुणो। सेवा करै तिधो सुर मुनो॥ एक सम

विचिना घापुन लहै। तिन के गुण प्रगट के कहैं ॥ सेवा करो नरायण साइ। गहे पाइ रे सेवा पाइ ॥ एकहि नाम नमैं यह भई। जानि बेगि कै घाज्ञा दई ॥

End—घष्ट शेष के देइ सिराइ। काथ देत त्रिदोष नसाः ॥ पीपरि के पुक्षेप सों कही। रोगु जाइ जो सुपक्ष रहो ॥ घथ पुनर्रवार ॥ घथ ईगुरादि वरो ॥ ईगुर तेल चुपरो क्षेना के पंगरा पर धरै जब धुघा निकसि जाय तब उठाइ लेइ घावरासार गंधक टंक १ घकरकरा टंक १ मिरच टंक १ पीपरि टंक १ घभ्रक टंक १ फुलगे सुहागा टंक १ मिठै टंक १ जीरा टंक २ फुंजि लोजै तब घाट जे काज हसी मह सो वरो वांध जो मिरच प्रमान तब घाइ सन्निपात कों दीजै घादे के रस सों सचिकोला कैाया तोला दोजै ॥ इति श्री सय्यद पहार संपूरनं ॥ शमत्त १९४० मिति माघवदी १ एक मंगलवार समातम् ॥ लिपितं काशी विश्वरंजी काशो मध्ये गंगाजी राम जो नमोनमः कालभैरव काशी के कोटवाल

Subject—पृ० १—२ प्रार्थना कवि वर्णन। पृ०—३—८ तोल वर्णन। घभ्रक वर्णन। गंधक, सज्जी, रंगविधि, पारा, हड़ताल, सोनामाखी, ईगुर, नैानिघा शोधन, मुर्दाशंख, शिलाजीत सोधन। पृ० ९—१५ घभ्राभ्रारो, वंग विडंगादि, यंत्र विधि। पृ० १६—२६ धातु गुण घैागुण, मारन विधि, नाग विधि, धोने की विधि, हीरा कुंद, तांवा, वंग विधि। पृ० २७—३२ घभ्रक हरताल, मकरध्वज रस, गंधक पाट, शीशा रांगा, पारा, सिंदुर, कपुर। पृ०—३३—४२ गंधक तेल, कनक सुंदरी, मुनि वल्लभ, वंग रस, कुसुम भुवंग, चन्द्रकान्ति, संखिया, ब्रह्मघपरेश्वर, भस्मसूत, कुष्ट हरताल, धातु हलादल, तिरोरदा, कंठोरस। हेम रस, हसो जंगाल, ज्वराज, रसाराजस, मदनसुंदरो। पृ० ४३—५७ नागेश्वर, मृगांक, गौरी, गनेस रसं, कल्यान गुटका, मदनपाल गुटका, चंद्रद्रयारस, रामवाण, मुक्ता विधि, हरताल, धूनो, मरहम, उवटन, महातैल, दिनाई उपचार, संकोचन, थंभन, पृ० ५८—६९। वायु का उपचार, गंधक तैलादि, सैाभाग्य सोंठि, ज्वरांकुस, प्रमेह, कर्णरोग, त्रिकुटा, घवलेह, मूंगा बनाना, मेघनाद रस, नारायण वटी, ववासोर का इलाज। मृगी का नास, तिजारो, कायाकल्प, बांझ विधि, भृंगराज रस। पृ० ७०-८१ काथ, गुटिका, ईगुर विधि विषादि चूर्ण, चिरायता, पाताद्राव, थंभन विधि, काथ, जोगराज, मंजोष्टादि, उदै भास्कर, कोट विधि, घरस भुवंगम रस, गर्भ पातन पृ० ८२—९६ काकवंध्या, कुरंड विधि, जोरकादि वटो, खांसी, सैाभाग्य सोंठि, काढ़ा, तावे घादि का घनुपान। मंदारी रस, प्रताप लंकेश्वर, सूरज रस, कालाग्नि, ब्रह्मभैरों, सुनादि रस, मदनमोदक, पर भैषज, काढ़ा, इंगुरादि वटी।

No. 369. Vinaya Bihāra by Sukhapunja (Nandagopāla) of Gaṅgāpura (Kāshī). Substance—Country-made paper. Leaves—9. Size—12 × 5 inches. Lines per page—10. Extent—220 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1819 or A. D. 1762. Place of deposit—Rāja Pustakālaya Bhingā, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ विनय विहार लिख्यते ॥ दोहा—गौरि तनै सुमिरे बनै सनै सनै सब काज। करनधार बल उदधि ते जेहि विधि तरत जहाज ॥ १ ॥ कवित ॥ वारन बदन हैं विदारन विघन घन मोह मन मारन हैं तनय गनेस के। कारन हैं सुख के कलुष ते उधारन हैं दीन जन तारन हैं वारन कलेस के ॥ सभै पद दायक हैं सभै विधि लायक हैं देव गननायक सहायक सुरेस के। चंदन हैं सुर के असुर के निकंदन हैं सुख पुंज वंदत हैं नंदन महेश के ॥ २ ॥ दोहा ॥ श्री गुरु दीनदयाल गिरि पद वंदौ सुखदानि। जासु कृपा कवि रीति मो भई प्रीति पहिचानि ॥ ३ ॥

End—दो०—गंगापुर काशी निकट रजिधानी कसिवार। लछिमी नारायण तहां वसत सहित परिवार ॥ ५५ ॥ कायथ कुल श्री वास्तव नंदन नंद गोपाल। बन्दन कीन्यौ गौरि पद कंदन दुख मो जाल ॥ ५६ ॥ कविताई मे नाम निज गुरु प्रसाद वर पाय। भाषत हैं सुख पुंज कहि जगदंबहि शिरनाय ॥ ५७ ॥ भगति सुमन सुधि नति गुनन भोमन मालाकार। ईस प्रिया पद सीस धरि विरच्यौ विनय विहार ॥ ५८ ॥ प्रेम घ्रानते सूंघिहैं जे नर परम सुगंध। तेहि ढिग कबहुं न व्यापि है दुरगति की दुरगंध ॥ ५९ ॥ नि० का०—अंक मही ग्रह सिद्धि ससि संवत मै यह ग्रंथ। १९१९ आस्विन सुदि रस कवि दिवस भयो सुमति का पंथ ॥ ६० ॥ इति श्री विनै विहार गिरिंद तनया चरनारविंद स्तव सुषपुंज कृत संपूर्णम ॥ शुभ मस्तु सिद्धि रस्तु मि० कार्तिक शुदि ७ ॥

Subject—छन्द—१—२ गणेश वन्दन।

छं० ३—४ गुरु वन्दना। छं० ५, ६, ७, ८, ९। गौरी शिव वंदना।

छं०—१०—५४ गौरी प्रार्थना। छं० ५५—५९। कवि वंश वर्णन।

छं०—६० निर्माण काल।

No. 370. Rāmāyana by Samaradāsa of Magaraurā, District Sitāpur near Kalyāni. Substance—Country-made paper. Leaves—265. Size—10 × 6 inches. Lines per page—36.

Extent—4,790 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1900 or A. D. 1843. Date of Manuscript—Samvat 1927 or A. D. 1870. Place of deposit—Ṭhakura Durgā Siṁha Raīs, Dikauliā, Post Office Biswāñ. District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ बाल कांड लिष्यते ॥ भजन ॥ गनपति सुमिरौं सिद्धि निद्धि दायक । लंबोदर गज वदन सदन सुष कृपासिंधु सब सिद्धि से लायक ॥ विघन हरन सुष करन उमा सुत आदि देव समर्थ गननायक । मंगल करन दहन दुष दारुन संकर सुनु जगत गुन भायक ॥ सुनहु अर्ज यह गर्ज समर की कहौ राम अस होहु सहायक ॥ रागनी भैरवी ॥ ध्यावौं आदि सक्ति महरानी । ब्रह्मा विस्नु रुद्र जेहि ध्यावैं तुम्हरी गति अद्भुत जगरानी । जगत तेज चौदहौं भुवन मे वेद सेस नहि सकत बषानी ॥ रक्तबीज सम कोटिन दानौ निषि षिन दुष्ट बध्यो है भवानी ॥ समर चहत राम जस बरनन करौ सहाय देवी वरदानी ॥ सो० ॥ तुम गुर ग्यान निधान मैं अग्यानी अधम हों । जानौ मोहि अजान करहु समर निस्तार प्रभु ॥

End—राजा रघुवर के वंस महं राम अवतरे आय उनको सुजस अपार है समर कह्यो नहिं जाय । ध्यान करत ध्यानी थके ग्यानी करते ग्यान । पार न पायो जग कोई का कहै समर अयान । बहि रघुकुल मैं जन्म है समर राम को दास । तीस कोस पश्चिम दिसा अवधपुरी ते वास । सरजू जहं कलि विष हरन और अनंदहि देत । राम अवतरे हैं जहां ताहि न भजसि अचेत ॥ जे पढ़िहैं सुनिहैं समर राम चरित मन लाय । भवसागर तरिहैं सही दिन दिन सुष सरसाइ ॥ मगरौड़ा ग्राम है कल्यानी के तीर । समर इमि रास तजि सुमिरो श्री रघुवीर ॥ कोविद कवि सुर साधु ने अर्ज समर सिर नाय । बनी न होवै सोइ छम्यो जान्यो सेवक प्राय ॥ संवत सत उन्नीस से औ पावस के माहिं । सुक्ल पक्ष तिथि सप्तमी नषत मैत्र गुर ताहि ॥ इति श्री रामचरित्रे मानस सकल कलिकलष विध्वंसने विमल वैराग्य तुलसीदास दासस्य समरदास कृत उत्तर कांड समाप्तः ॥ लिषतं विश्वनाथ पांडे संवत १९२७ पठनार्थं दुर्गा सिंह के ॥

Subject—इस पुस्तक में बाल, अयोध्या, किषकिंधा, सुन्दर, लंका उत्तर—सातकांड हैं और सातो में तुलसीदास जो की भांति भजन दोहा चौपाई, सोरठा आदि में राम जो की लीला वर्णन की गई है ।

No. 371(*a*). Kavitta by Śambhunātha of Terā, Unao. Substance—New paper. Leaves—3. Size—$7 \times 4\frac{3}{4}$ inches.

Leaves per page—32. Extent—48 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgari. Place of deposit—Paṇḍita Banibhushana Ji, Rāe Bareli.

Beginning—श्री शम्भुनाथ के कवित्त ॥ सांप सबै सरके हर देह ते श्रृंगन मैं सुनि मोर को वानो ॥ बैल भजो लखि सिंहन को गन गोदत हो गिरि की रजधानो ॥ द्वार मैं काहि ले घावै लिवाइ वरात तो पोछे फिरो घररानो। वाहर ठाढ़ो हंसै लखि शम्भु गई पुर ते जुरि जो अगवानो ॥ १ ॥ सैल की गैल यो बैल को सिंह दरोन मो देखि परो निज नेरे। पुछ गहे गन जात चले डरि भाजि चलो न फिरे फिरि फेरे ॥ घागे ह्वै छेन चले वर को ते हंसै सिगरे यह कैातुक हेरे। द्वारे को चारु रह्यो कहि शम्भु वरात चली फिरि दूलह घेरे ॥ २ ॥ माल कराल कपाल को माल कसे कटि व्याघ्र को खाल डरारो। देह मैं खेह धरे वह शम्भु धरे विष रेख भयंकर कारो ॥ रोचना देन लिलार लग्यो तव तोछन घांच लगी दृगवारो। पेचि कै हाथ पचेत गिरो दुज देखि हंसै सव कैातुक मारो ॥ ३ ॥

End—खेलत फाग सुहाग भरी जिन पै सुर अंगना डारतीं वारि है। जैये चले मंडिलैप उतै इतै कान्ह खड़ो वषमान कुमारि है ॥ शंभु समूह गुलाब के मोसन को रंग केसरि डारि वेगारि है। पामड़ो पामड़े होत जहां तहं को लला कामरी पै रंग डारि है ॥ १३ ॥ वालम के विछुरे बढ़ी बाल को व्याकुल विरहा दुख दानिते। चैापरि घानि रची कवि शम्भु सहेलिन साहिविनी सुखदानते ॥ दू जुग फूटै न परी भटू यह काहू कहो सखिया सखियान ते। कंज से पानि ते पांसे गिरे घंजुवा गिरे खंजन सो चखियान ते ॥ १४ ॥ सोए लोग घर के डगर के केवारे खोलि जिय जानि वोति जुग जाम गई जामिनी। चापे पद चुप चाप चोरी चोरा चितवत चली हितू पास चित चाह भरी मामिनी। पैठत सकेत के निकेत के निकट शम्भु कैसी वन वोथिन विराज रही कामिनी। चामो कर चोर जानो चंपलता मोर जानो चांदनो चकोर जानो मोर जानो दामिनी ॥ १५ ॥

Subject—हास्य रस के ८ छंद, करुणा रस के—२ छंद, वीर रस के १ छं० होलो—२ छंद, विरहिनी का वर्णन—२ छंद

No. 371(*b*). Muhurta Chintāmaṇi Bhūshā (Muhurta) Manjari). Name of author—Śambhunāth Tripāthi. Substance—Country-made paper. Leaves 72. Size—10 × 6 inches. Lines per page—40. Extent—1,440 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1803 or A. D. 1746. Date of Manuscript—Samvat

1903 or A. D. 1846. Place of deposit—Pustakālāya Rājā Lālta Bhaksha Simha Ji Talukédara Nilgama, Post Office Nilaganva, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मुहूर्त चिन्तामनि भाषा लिष्यते ॥ सघन अनघ के दलन को तुव समान को होहि । हरज विनायक को हरै विघन विनायक तेहि । छबि कदंब लखि अंब के उमड़त मोद अषंड ॥ कलरव करि करि बदन फेरत सुंडा दंड ॥ अति सुदेश मम आचरन देसन को सिरताज । सब सुष करि बसि सिर जहां बेश भूप को राज ॥ अमल चरित तेहि देश को ज्यों सुरसरि को सोतु । जहां धरम अ चरन सुष दिन दिन दूनो होत ॥ प्रगट भये तेहि देश में जाके बेश प्रभाव । अरि कुल मरदन सुष सदन मरदन नर या राव । तेहि मरदाने राय के प्रगट भये अचलेस । जाके गुन गन को कथा बरनि सकै नहिं सेस ॥ जयति पत्र जग जिन लयो सत्रु समूह नसाइ । निज वश करि तुरकान दल कस्यो मही में आय ॥ सभा मध्य बैठे हते एक समय अचलेस । तिन कवि शम्भुनाथ को कीन्हो यहै निदेस । जैसे जातक चंद्रिका करि दीन्ही करि नेह । त्यों मुहूर्त चिंता मन्यो भाषा में करि देहु ॥

End—घनाछरी ॥ अथ ग्रहप्रवेश ॥ तानिय वितान मुकतान सो समेत गान मंगल के कानन सु सासो पीजियतु है ॥ वेद धुनि सुनत न बड़े सुर पूज गुरजन पुरजन सो आसीस लीजियतु है ॥ गनिका चितेरे बौ लोग जे अनेरे नेरे जो हित पुरोहित न दान दीजियतु है ॥ विहसत बदन सुमन दुरजन चढ़ि नूतन सदन को गमन कीजियतु है ॥ इति श्री मन्महाराज कुमार श्री अचल सिंह आज्ञा त्रिपाठी शंभूनाथ कृत निमितायां मुहूर्त मंजर्य्या ग्रहप्रवेश प्रकर्णं इति मुहूर्त मंजर्य्या समाप्त शुभ मस्तु ॥ घनाक्षरो ॥ जौ लौं कोल नायक कलानिधि कलपतरु कमठ को पीठि में निवास जौलौं सेस को । देव मुनि मनुज दनुज गंधर्व जौलौं मन में अग्र माल पूजत गमन साको ॥ तौलौं हिमगिरि परा गिरिजा संभुता संभु जौलौं अमरावती अमरेश को । मान सरवर जल प्रफुलित के जौलौं तौलौं राज राजै राजवंशी अचलेश को ॥ इति श्री मुहूर्त चिंतामणि भाषा समाप्तम् । लिषतं गंगा गणेश संवत् १९०३ श्रावण मासे शुक्ल पक्षे तिथौ चतुर्दश्यां ॥

Subject—मुहूर्त चिंतामणि ज्योतिष विद्या की पुस्तक का भाषा किया गया है, इसमें मुहूर्त आने जाने व्याह यज्ञोपवीत यज्ञ आदि के वर्णन किये गये हैं उनके लाभ हानि भी लिखे हैं ।

No. 371(c). Muhurta Chintāmaṇi by Śambhūnātha. Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—15 × 5

inches. Lines per page—30. Extent—2250 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1803 or A. D. 1746. Date of Manuscript—Samvat 1911 or A. D. 1854. Place of deposit—Chhatra Siṁha Ṭhakura, Katailā, Post Office Phakharpur, District Bahrāich (Oudh).

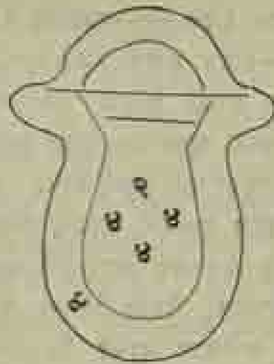
No. 371(*d*). Muhurata Mañjarī by Śambhūnātha Tripāthī of Baksara (Rāe Barelī). Substance—Country-made paper. Leaves—62. Size—$11\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—20. Extent—1550 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1803 or A. D. 1746. Place of deposit—Paṇḍit Achyutakumār Uttarpārā, Rāe Barelī.

Note—ग्रादि No. 371(*c*) पर लिखा गया है।

End—घनाक्षरी—सूरज नषत ते कलस वृष दीजै एक ताते कहू पानिन की ज्वाला ते जरतु है। चारि चारि नषत विचारि बहु दिसन्हि में दीजै फल ताको तैान टारे न टरतु है ॥ उदवस लाभ लक्षिमी कलह बहुरि मध्य वेद मे धरे तौ प्रानु प्रानंनि हरतु है ॥१०॥ (एक चरण नहीं है) तानिए वितान सुकतान सो समेत ज्ञान मंगल के कानन सुधा सी पीजियतु है। वेद धुनि सुनत नगर सुर पूजि गुरजन सो असीस लीजियतु है। विहसत वदन सुमन द्विरदन्ह चढ़ि नूतन सदन को गमन कीजयतु है ॥ ११ ॥

उत्तर	[illegible]	[illegible]	वृष लग्ने रविः	[illegible]
पश्चिम	[illegible]	[illegible]	वृष लग्ने रविः	[illegible]
दक्षिण	[illegible]	[illegible]	वृष लग्ने रविः	[illegible]
पूर्व	[illegible]	[illegible]	वृष लग्ने रविः	[illegible]

॥ कलह ॥



१ लक्ष्मी

वद्धन

विनास

॥ लाभ ॥

श्रीं ॥

Subject—पृ० १ गणेश स्तुति, आश्रयदाता का परिचय, ग्रन्थ रचना का आरम्भ। पृ० २—निर्माण सम्वत, तिथि वर्णन तिथि ह्रास, ककच योग वर्णन, पृ० ३—दन्तधावन विचार, तिथि मिलन, नक्षत्र शून्य और नक्षत्र तिथि मिलन शून्य वर्णन। ४—तिथि, वार, नक्षत्र मिश्रित दोष, आनंद योग वर्णन—५—सिद्धि योग, और कुयोग परिहार वर्णन। पृ० ६—कुलिक योग वर्णन और रव्यादिक वार दुष्ट मुहूर्त वर्णन। पृ० ७—रव्यादीनां मुहूर्त दोष वर्णन, भद्रा विचार और लोक वास वर्णन। पृ० ८—सिंहस्थे गुरौ परिहार त्रय, वक्र अतिचारे परिहारः, वार प्रवृत्ति और काल होरा वर्णन। पृ० ९—मन्वादयः और युगादयः वर्णन, शुभाशुभ प्रकर्ण समाप्त, नक्षत्र नाम ध्रुवादि संज्ञा वर्णन। पृ० १०—अधोमुखादि नक्षत्र, नारी भूषण परिधान, वस्त्रचक्र, मद्यारंभः, मद्यक्रय विक्रय, पशुस्थापन वर्णन। पृ० ११—हाट मुहूर्त, विक्रय मुहूर्त, गजवाजि कर्म, आभूषण बनाने का मुहूर्त, सूची कर्म वर्णन। पृ० १२—शस्त्र धारण मुहूर्त, पंथादि नक्षत्र ज्ञान, थाली धरने का मुहूर्त, राज सेवा मुहूर्त और सेवा चक्र वर्णन। पृ० १३—हलकर्म, बीज बोने का मुहूर्त, खेत काटने और धान्य लेने का मुहूर्त। पृ० १४—रुधिर निकलवाने का मुहूर्त, शांति कर्म, अग्नि निवास, आहुति विचारनाम, नौका, रोगी स्नान, और शिल्प कर्म मुहूर्त वर्णन। पृ० १५—संधि मुहूर्त, सुवर्णादिक के मुहूर्त, रोगो त्पत्ति विचार, विषरोगोत्पत्ति, विषधर नक्षत्र, पंचक विचार, ईंधन धरने का मुहूर्त वर्णन। पृ० १६—त्रिपुष्कर योग, नारायण बलि, मूलविचार, मूलवास, मूल वृक्ष, मूल घड़ी बीतने का विचार वर्णन। पृ० १७—अग्न्यादि स्वरूप, देव जला-शय प्रतिष्ठा वर्णन २ प्रकरण। पृ० १८—संक्रांति चक्र, उत्तरायन दक्षिणायन विचार। पृ० १९—कर्क ज्ञान, सुतादि ज्ञान, वाहरिणादि विचार वर्णन। पृ० २०—मलमास विचार, ३ संक्रांति प्रकरण समाप्त। पृ० २१—गोचर वर्णन।

पृ० २२—तारा विचार, विरुद्ध तारादान वर्णन। चंद्रमा की १२ अवस्था; गुरु विरोध औषधि स्नान विचार वर्णन। पृ० २३—रव्यादि दान, अन्य सर्वेसा दान, चतुर्थ प्रकरण गोचर। पृ० २४—स्नान मुहूर्त, गर्भाधान, स्तनपान, सती स्नान मुहूर्त प्रथम मास दंतोत्पत्ति फल, दोला रोहन, पुंसवन सीमंतकर्म जातकर्म वर्णन। पृ० २५—निक्रमन, अन्नप्राशन, स्नान जल पूजा मुहूर्त, भूमि प्रवेश, तांबूल भक्षण मुहूर्त। पृ० २६—कर्णवेध, चूड़ा कर्म मुहूर्त वर्णन। पृ० २७—२८—अक्षरारंभ, गुरु शुक्र बाल वृद्धित्व, विद्यारंभ, पृ० २९-व्रतबंध वर्णन, ५-प्रकरण संस्कार समाप्त। पृ० ३०-विवाह प्रकरण। पृ० ३१-वर रक्षा मुहूर्त, चूड़ा व्रत विवाह के अंत। पृ० ३२—वर्ण विचार, तारा विचार, जोनि विचार ग्रहाणां मित्र विचार। पृ० ३३—गण विचार, रासिकूट, परिहार, नाड़ी विचार, नक्षत्र कूट विचार। पृ० ३४—अष्टवर्ग, परिहार, अन्य विचार, रासि ईश, षटवर्ग द्रंष्कालः; सप्त मासा विचार। पृ० ३५—नवांशा विचार, द्वादशांश, त्रिशांस विचार। पृ० ३६—दिन के १५ मुहूर्त, रात्रि के मुहूर्त, विवाह नक्षत्र, पंच शालाका। पृ० ३७—सप्त शलाका, पंचक विचार वर्णन। पृ० ३८—रोग, एकार्गल, पाजूरक, क्रांति साम्यं, दग्ध तिथि, दशयोग विचार। पृ० ३९—ग्रहण दृष्टि विचार तत्काल विचार, अंधादि पंगुलग्न विचार। पृ० ४०—विश्वावल विचार वर्णन। पृ० ४१—चक्र वर्णन। पृ० ४२—विवाह प्रकरण समाप्त ६, वधू प्रवेश। पृ० ४३—द्विरागमन, अग्नि स्थापन मुहूर्त वर्णन। पृ० ४४ राज्याभिषेक, यात्रा प्रकाश। पृ० ४५—जीवपक्ष मृतपक्ष, कुलाकुल विचार। पृ० ४६—पथिराड, तिथि चक्र वर्णन। पृ० ४७—घात चन्द्र वर्णन। पृ० ४८—योगिनी विचार, काल वास परिधि विचार, अयन सून, सुक विचार वर्णन। पृ० ४९—अंधशुक्र विचार, द्विगोला, ललाटी योग विचार। पृ० ५०—५१—प्रस्थान विधि। पृ० ५२—भाग्य योग, कल्यान योग, विजय योग, चिंतामणि योग, सिद्ध योग, मृत्यु योग, केन्द्र योग, परावर्त योग, पिनाक योग, मृत योग, संजीवन योग, भयंकर योग, अभय योग, कुंडवर योग, पाप कंचुकी योग, आनंदार्णव योग वर्णन। पृ० ५३—जात्रा समय अंगादि स्फुरण सकुन वर्णन। पृ० ५४—उत्पात दोष, प्रवेश निर्गम विचार, यात्रा विधि, अश्वन्यादि नक्षत्र दोह दानि, दिन दोह, वार दोह, चलने की विधि वर्णन। पृ० ५५—प्रस्थान स्थान विचार। पृ० ५६—शकुन विचार, असगुन विचार वर्णन। पृ० ५७—प्रवेश निर्गम, यात्रा समय दोष वर्णन, यात्रा प्रकरण समाप्त। पृ० ५८—गृह प्रकरणः—द्वार विधि वर्णन। पृ० ५९—ध्वजादि मुख विचार, ध्रुवादि शाला, मास भेद, गृहद्वार विचार वर्णन। पृ० ६०—गृहारंभ मास विचार, तिथिपक्ष से गृह मुख विचार। वृष चक्र, दिशा नक्षत्र विचार वर्णन। पृ० ६१—राहु मुख जानने की विधि, शाला विधि,

वदानि, चैापट विचार, वास्तु प्रकरण समाप्त। पृ० ६२—सूर्य विचार, कलस चक्र विचार, प्रवेश विधि वर्णन।

No. 371(c) Vaitalapachisi by Śambhū Kavi (Śambhūnātha Tripāthi) of Bakasar. Substance—Country-made paper. Leaves—292. Size—9 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—2,956 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1809 or A. D. 1752. Date of Manuscript—Samvat 1885 or A. D. 1828. Place of deposit—Lālā Mohana Lālaji Halnāī, Nawabganj, Bārā Bankī

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वैताल पचीसी कथा लिख्यते ॥ दोहा ॥ तव सन्मुष ज्वाला मुषो उरज्वाला मिटि जात ॥ कलि कलुष प्रापिल जथा सुरसरि वारि नहात ॥ गनमुष सन्मुष होतहो विघन विमुष ह्वै जात ॥ जिमि पशु परत पराग मग पाप पहार विलात ॥ दोहा ॥ छवि कदंब लखि चंद्र के उपजत मोद प्रचंड ॥ कलरव करि करिवर बदन फेरत सुंडा दंड ॥ कवित्त ॥ एक समै गिरिजा को नंदनि आइ अन्हाइ कडु सरसोते ॥ भासुर भाल दिये दल भानन तैा छवि को छवि ओते ॥ सो हठि लीवे को सुंडि पसारि तहा गन नायक आइ अमोते ॥ चाहि के चोप सो दोरि मनोहरे लत सुधा अहिराज ससोते ॥

End—कहि देवो यह वचन प्रधान ॥ तुरित ह्वै गई अंतर ध्यान ॥ वचन प्रमान देषिके भये ॥ दुवो पुरुष नृप घर ठै गये। आयो तव वेताल के पास ॥ महाराज हिय सहित हुलास। प्रेम सहित वरस्यो नृप पाई ॥ करी विनै बहु सीस नवाइ ॥ जो तू सिःष मोहि नहि देतैा। तो मम प्रान याजु वह लेतैा ॥ जो तुम मेरे भये सहाई ॥ जिय से बचो सिद्धि मैं पाई ॥ जीवत रहैा जक्त मे जैालो ॥ किपादास पर कीजे तैालो ॥ यह सुनि वचन देव हिय हरषो ॥ सुमन समूह भूप पर वरषो ॥ कह्यो अचल ह्वै कीजै राज ॥ विजइ होहु सदा महाराज। जो तेरे अनहित को करै ॥ विना मीचु यह प्रानी मरै ॥ दिन दिन राज तिहारो बढ़ै। सुजस दिवस विदिसन मैं मढ़ै ॥ लछिमी तजै न तेरो धाम ॥ पूरन सदा रहै मन काम ॥ जीवत रहैा भूप बहुकाल ॥ यह कहि वचन गयो वैताल ॥ कथा संपूर्न सुभ मस्तु पैाष मासे किस्न पच्छे नैामी तिथिऊ भोमवासर सवत ॥ १८८५ का साल ॥

Subject—पृ० १—५ तक ज्वालामुखी तथा गणेश की वंदना, वैश्य वंश वर्णन । ग्रंथ निर्माण काल । हरिगोतिका छन्द ॥ द्विजराज कुल वन कुमुद को मुद दानि पूरन इन्दुभो ॥ निज वंस वारिज को दिनेस तिलोकचंद नरिंद्र भो ॥ पुनिभो आनंद कंद प्रिथवी चंद न्रिप ताके तनै ॥ भुज जोर सो जुरि जंग मैं जमराज हू को नहि गनै ॥ पुनि भयैा ताके अजैचंद अरिंद कुल दल जेन्ह हन्यो ॥ तिनके भये पुनि देव राय प्रचंड गैया राउ है ॥ इनरंग निरखत चढ़त जाके चोगुनो चित चाउ है ॥ पुनि भयैा भैरो सो उदंड प्रचंड भैरोदास है । हरि साहिबो अरि बरन्ह को गिरि दरिन्द दीन्हों वास है तिनके धराधर धरन को न्रिप भयो ताराचंद है ॥ निज कर अकंटक भू करो हरि प्रजन को दुखदंड है ॥ संग्राम राउ भये बली संग्राम दुलह ताहिके ॥ अति धवल कमल समान जस अगि मनि रची जस जाहि के ॥ पुनि कनिक सींह नरिंद्र प्रिथम भानु सो जेन्ह के भयैा ॥ तिन को समर भट भीर न पसु पछ्रो गयो ॥ पुनि भयो प्रिथिराज प्रिथु कैसो कियो ॥ जस जुह जेहि जगमें लयो वनवास वैरिन्ह को दयो ॥ तिनके पुरंदर सो प्रबल अगंदा पुरंदर राउ है ॥ जिनको महा मै मानिकै न्रिप के इन परस्यो पाउ है ॥ करवाल जब कर लइ तै रिपुकाल कहि कहि सब भनै ॥ रन होइ सनमुख सुभट को जमराज हू जो नहि गनै ॥ पुनि भयैा अरि मद कदन मरदन सिंह रैया राउ है ॥ जेहि पाइ पति वसु मति हिये दिन दिन बढ़त चित चाउ है ॥ कल कुंगन काेउ पति हो सक्यो तेहि देव सते डेरि डेरन्ह सों । तजि त्रास डरे मन मुदित ह्वो फुलो फिरै चहुं चरन्ह सो ॥ जगचंद अनंद कंद चंद कुटुंब केरव को भयो ॥ रनधीर बीर गंभीर निरमल सुजस जेहू जगमें लयो ॥ जरिजत जासु प्रताप पावक तेज तें अरिवर घनो ॥ तिन्ह के भयो सुरनाथ सो रघुनाथ जू अखिलेस धनी ॥ दोहा ॥ सभा मध्य बैठ्यो हुतो येक समै रघुनाथ । वीर धीर बद भट सुभट सुतन बंधु जन साथ ॥ कह्यो किया करि संभु सन जिया मैं मानि सनेह । यह बैताल कथा हमहि भाषा मेंकरि देहु ॥ नंद व्योमवसु जानि कै संवतसर कवि संभु ॥ माघ अध्यारी द्वेज को कीन्हों तव प्रारम्भ ॥

(२) पृ० ६—२३ तक—प्रस्तावना—राजा विक्रम का जन्म, पंडितों द्वारा उनके उच्च ग्रहों का वर्णनन, उसी घड़ी एक तेली तथा एक कुम्भकार के पुत्रों का उत्पन्न होना, योगी बन कर कुम्भकार का जप, तेली को धोखे से मारना, विक्रम को भी धोखा देना, अपने साथ में अंधेरी रात्रि में ले जाना, मार्ग में भूत पिशाचादि दर्शन, मुर्दे को ले कर चलना, अपने मित्र बेताल द्वारा मार्ग में राजा का कहानियां श्रवण करना ।

(३) पृ० २४—४९ तक—प्रथम कहानी—मंत्री की कथा, काशी के राजा प्रताप मुकुट के पुत्र मुकुट शेखर और मंत्री के पुत्र मतिसागर की मित्रता होना,

दोनों मित्रों का शिकार को जाना, रात्रि हो जाने पर एक शिव मंदिर में निवास, वहां पर नारियों का आगमन, एक स्त्री पर राजकुमार का मोहित होना, छल बल से उसे ले आना, इस पर विक्रम का हेंद्रक नगर के विप्र चंद्रसेन की कथा सुनाना, उस ब्राह्मण के बालकों का सर्प द्वारा खाया जाना। पाले हुए नकुल द्वारा उस सर्प का विनाश तथा ब्राह्मणी द्वारा उस नकुल का हनन पुनः ब्राह्मणी के पश्चात्ताप का वर्णन, मुर्दे का उसी डाल से लग जाना जिसे राजा लाया था।

(४) पृ० ५०—६३ तक—द्वितीय कथा—तीन वरों की कथा—एक ब्राह्मण की रूपवती कन्या को वर न मिला, अनायास ही तीन वरों का घर पर आजाना, ब्राह्मण का संकोच कि किस को कन्या दें? दैवात् उस कन्या को सर्प का काटना, उसका मरना, एक वर का उसके साथ जल कर मर जाना, दूसरे का उसकी भस्म की रक्षा करना तीसरे का तीर्थ यात्रा को निकल जाना अंत में एक पोथी पाना जिससे जला हुआ मनुष्य जीवित हो जावे। कन्या का जीवित होना, बेताल का प्रश्न कि कन्या किसे मिले; विक्रम का सकारण उत्तर, मृतक का उसी डाल पर चला जाना।

(५) पृ० ६४—८९ तक—तृतीय कथा, शुकसारिका की कथा, (रूपसेन) भागवति रानी के कंत का अपने मित्र शुक द्वारा 'सुर सुन्दरी' का समाचार पा उससे विवाह करना, राजा रानी के अनेक भोग विलास के पश्चात् शुक—सारिका को भी—एक पिंजड़े में पहुंचा देना, सारिका का तोते से विमुख रहना तथा एक साहूकार के पुत्र को—जिसने अपनी स्त्री को मारने की चेष्टा की थी—कह कर पुरुषों से घृणा प्रगट की तथा तोते ने एक सेठ की पुत्री की कथा—जिसके मित्र द्वारा उसकी नाक काटी गई थी—अपने पति का नाम लगाने का अपराधी बता कर घृणा प्रगट करने का वर्णन।

(६) पृ० ९०—९९ तक—चतुर्थ कथा। जंबूद्वीप के अंतर्गत धारानगर के राज के मित्र हरिदास की कन्या महादेवी के लिये वर की तलाश विप्र का राजा की आज्ञा से विदेश गमन और वहां से एक गगन में उड़ने वाले विप्र बालक के साथ आना और उसे अपनी कन्या देने का निश्चय करना, घर आकर ज्ञात करना कि एक त्रिकालदर्शी विप्र बालक स्त्री द्वारा और दूसरा उसके पुत्र द्वारा और लाया जा चुका है। शंका उठना कि किसको कन्या दी जाय। नगर निवासियों का निश्चय कि प्रातःकाल देखा जायगा। रात्रि को विप्र कन्या का हरण, ब्राह्मण का पश्चात्ताप, त्रिकाल दर्शी बालक द्वारा समाचार पाकर रथ पर आरूढ़ हो तीसरे शक्तिशाली का जाकर राक्षस को मार के कन्या को ले

माना, परस्पर विवाद होना. वैताल का प्रश्न राजा से कि किसको कन्या ब्याही जावे ? राजा का सकारण उत्तर देना कि वह कन्या लाने वाले को हो दी जाय, उत्तर सुन कर मृतक का फिर उसी डाल पर लटक जाना और राजा का पुनः उसके लेने के लिये जाना।

(७) पृ० ९९—१०८ तक—पंचम कथा नर्वदा नदी के तट पर एक राजा का देवी का मन्दिर बनवाना, एक रजक पुत्र का देवी के कुंडों में स्नान कर उनको पूजा करके निकलना और एक रजक कन्या को देख कर उस पर मोहित होना और देवी से वर मांगना कि यदि यह पत्नी मिले तो तुम्हें पर अपना शीष चढ़ा दूंगा। पिता के उद्योग से उसे पत्नी के पिता का अपनी पुत्री को देने का वचन, रजक पुत्र का अपने मित्र सहित जाकर उस कन्या का लाना, मार्ग में देवी का मन्दिर मिलना देवी पर रजक पुत्र का शीष चढ़ा देना। पीछे उसके मित्र का जाना और उसका भी शीष का चढ़ा देना। पुनः उस रजक कन्या का मंदिर में जाकर वैसा ही करने का इरादा देख देवी का दया करना और कहना कि उनके शिरों को उनके धड़ों पर रख कर तू बाहर निकल जा वह जीवित हो जावेंगे। शीघ्रता में एक का शीश दूसरे के धड़ पर रख जाना, दोनों का परस्पर घर आकर पत्नी के लिये झगड़ा, वैताल का प्रश्न कि वह स्त्री किसको मिले, राजा का उत्तर कि जिस पर उसके पति का शीष है उसी को मिले यह सुन कर मृतक का वहीं पर पुनः पहुंच जाना। राजा का पुनः जाना।

(८) पृ० १०९—११५ तक—षष्ट कथा—चंपापुर के नृपति की रूपवती कन्या के लिये वरों का खोज करना और प्रत्येक के गुणादि अंत में उसी को उसे सुनाना न रुचने पर पुनः लोगों को भेज कर उसके योग्य चार नृपालों का आना, एक पंच वस्त्र उपराजने वाला (नित नये), दूसरा शास्त्र धारी, तीसरा शस्त्रपाणि चौथा पक्षियों की बोली पहिचानने वाला, वैताल का प्रश्न कि किसको कन्या मिले, राजा का सकारण उत्तर कि शस्त्रपाणि वाले को सुनते ही मृतक का पुनः चला जाना।

(९) पृ० ११६—१२६ तक—सातवीं कहानी। एक राजकुमार का दल बल सहित एक नृपति की राजधानी में आकर नौकरी की इच्छा प्रगट करना, राजा का उनको रहने की आज्ञा दे देना, उसका नित्य प्रति ढाल तरवार लेकर राज दरबार में कुछ द्रव्य पाने के लिये हो आना किन्तु राजा का न मिलना, यहां तक कि उसके सब साथी भी भाग गए और वह सब कुछ बेच कर खा गया। अन्त में राजा से साक्षात्कार होना, उसे राजा का एक स्थान के प्रबन्ध

के लिये भेजना, मार्ग में उसे एक मंदिर में पूजन करते एक रूप यौवन सम्पन्न युवती के दर्शन होना, उस पर मोहित होना, राजकुमार का कुंड में स्नान करते ही अपनी इच्छानुसार राजा के पास पहुंच जाना, राजा का उसी स्थान पर आना, उस सुन्दरी का राजा पर मोहित होकर आज्ञा मांगना, उनका कथन कि मेरे सेवक के साथ विवाह करो, स्त्री का आज्ञा पालन, बैताल का प्रश्न कि उक्त राजकुमार और राजा में कौन अधिक सत्यवान गिना जाय और क्यों?—राजा का उत्तर कि राजकुमार अधिक सत्यवान है, इस पर मृतक शरीर का फिर उसी डाल पर लटक जाना और विक्रम का पुनः सकोच उसे लेने को जाना।

(१०) पृ० १२७—१४५ तक—आठवीं कथा—एक साहुकार का मरते समय अपने तकिये में सम मूल्य के चार रत्न बता कर अपने चारों पुत्रों को एक एक ले लेने के लिये कहना, छोटे का उसमें से एक रत्न चुरा लेना। उन चारों का एक काज़ी के पास न्याय के लिये जाना, उसकी न्याय में असमर्थता दिखलाने पर एक राजा के पास जाना और उसके बतलाने पर एक राजकुमारी के पास जाना। राजकुमारी का एक एक को बुला कर एक कहानी (जिसमें शपथ के अनुसार वणिक पुत्र ने अपनी पत्नी को अपने मित्र राजकुमार के पास भेज दिया था, राजकुमार ने उसे माता के सदृश बुला कर विदा कर दिया था, यह देख कर मार्ग में मिलने वाले चोरों ने उसके आभूषण न लिये थे) सुना कर पूछना कि उन तीनों में कौन अधिक सत्यवान है, तीन राजकुमारों का उन सभी को सत्यवान बताना, किन्तु छोटे का उन सभी को बेइमान बताना। अंत में उसी को चोर ठहरा कर वह रत्न निकलवाया जाना। विक्रम से बैताल का प्रश्न राजा का चोरों को सकारण अधिक धर्मात्मा बतलाना, मृतक का पुनः उसी डाल पर पहुंच जाना और राजा का पुनः उसे लाने का उद्योग।

(११) पृ० १४६—१५१ तक—नवीं कथा—बैताल का राजा से प्रश्न कि एक रानी के पैर पर कमल गिरने से उसका पैर टूट गया, दूसरी के शरीर पर सूर्य की किरण पड़ने से छाला पड़ गया और तीसरी को पड़ोसिन के धान कूटने का शब्द सुन कर हाथों में पीड़ा हो गई, बताइये इनमें कौन अधिक सुकुमारि है, उत्तर में तीसरी का सुकुमारि सुन कर मृतक फिर उसी डाल पर पहुंच गया। राजा पुनः लेने गया।

(१२) पृ० १५२—१६० तक—दसवीं कथा—एक राजा का अपने मंत्री को राज काज सौंप कर विषय भोग करना। मंत्री का तीर्थ को जाना, वहां एक विद्याधर कन्या को जल में देखना और रत्न जटित वृक्ष समेत डूब जाना, यह कथा उसका लौट कर राजा को सुनाना। राजा का वहां पहुंच कर उसके

साथ डूब कर पाताल पहुँचना, उससे विवाह की अपनी इच्छा करना, उसका कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को विवाह करने का वचन देना, उस दिन कन्या का एक राक्षस द्वारा निगला जाना, राजा का उसे मार कर उसका निकालना और उसको अपने साथ लाना। कन्या को अपने पिता से मिलने की आज्ञा लेकर जाना किन्तु मनुष्य स्पर्श के कारण वहां न पहुंच सकना और फिर राजा के पास ही लौट आना। राजा का आनन्द मनाना यह देख कर मंत्री की मृत्यु, इस पर बैताल का प्रश्न कि मंत्री की मृत्यु क्यों हुई। विक्रम का उत्तर कि "उसकी मृत्यु इस लिये हुई कि राजा विषय वासना में फंस कर राज्य कार्य को विस्मरण कर देगा" सुन कर मृतक का फिर उसी डाल से जा लगना और विक्रम का उसे पुनः लेने आना।

(१३) पृ० १६०—१६६ तक—ग्यारहवीं कथा—एक ब्राह्मण का अपनी हरण की हुई स्त्री की खोज में निकलना, क्षुधातुर हो कर एक ब्राह्मणी से भोजन पाना, एक तड़ाग में स्नान करने जाना अपना भोजन एक वृक्ष के नीचे रख जाना, वृक्ष पर रहने वाले सर्प के श्वासोच्छ्वास से भोजन में विष मिलना, ब्राह्मण का खाकर नशा हो कर ब्राह्मणी का यह दोष बतला कर उसी के द्वार पर पड़ रहना, ब्राह्मण का ब्राह्मणी को दोषी समझ घर से निकाल देना, इस पर बैताल का पूछना कि कौन पापी है, राजा का उत्तर 'बिना विचारे पाप लगाने वाला' सुनकर मृतक का उसी डाल पर लग जाना और विक्रम का पुनः उसे लेने आना।

(१४) १६६—१७२ तक—बारहवीं कथा किसी राजा का एक चोर को सूली का दंड देना, एक सेठ कन्या का उसे देख कर मोहित होना और अपने पिता को उसके बचाने की प्रार्थना करके राजा के पास भेजना, यह सुन चोर का हंसना, रोना, नृप के न मानने और चोर के सूली पर चढ़ने के पीछे सेठ कन्या का जलने का साहस देख कर उसके पति को जीवित कर देना, राजा विक्रम से बैताल का प्रश्न कि वह चोर क्यों हंसा और क्यों रोया? राजा का उत्तर कि हंसा इस लिये कि पिता पुत्री का इतना साहस है और रोया इस लिये कि इसका बदला कैसे चुकाऊंगा। मृतक का पुनः चला जाना।

(१५) पृ० १७३—१८७ तक—तेरहवीं कथा—एक विप्र का एक नृप कन्या पर मोहित होना एक ब्राह्मण के गुटका देने पर उसका षोडषी बन कर कपट से राज कन्या के पास रह कर गुटका प्रयोग से रात्रि में पुरुष और दिवस में स्त्री बन कर विषय भोग में फंस कर छै मास रह कर, राज कन्या के गर्भ रखा कर, राज महिषियों के साथ वजीर के घर गया वहां वजीर पुत्र का उस पर

मोहित होना राजा द्वारा उस ब्राह्मण के न माने और वज्रीर की प्रार्थना पर यह कन्या मंत्री सुत को भाँसा देकर उसका तीर्थों को भेजना और उसकी स्त्री के साथ वही आचरण करना जो राजपुत्री के साथ किया था। मंत्री के पुत्र के आ जाने पर गुटका प्रयोग से पुरुष बन कर उसका निकल आना। ब्राह्मण से आकर सब सुनाना। ब्राह्मण का राजा से आकर और अपने पुत्र को साथ लाकर उस कन्या को मांगना, राजा का सब समाचार बताने पर उसको पुत्री का मांगना, राजकन्या के लिये दोनों विप्र कुमारों का झगड़ा बता कर राजा से पूछना कि वह किसे मिले? राजा का उत्तर कि "वह मूलदेव के पुत्र को मिले" पुनः मृतक का भाग कर वृक्ष पर लटकना।

(१६) पृ० १८७—१९९ तक—चौदहवीं कथा—कल्प वृक्ष के वरदान से एक राजा का उत्तम पुत्र पाना, उसका बड़ा होकर विद्रोही भ्राताओं का वशीभूत करना, राजा (अपने पिता) के कथन से उनका अपराध क्षमा कर पिता सहित विरक्त वनवासी होना, वहां आकर भी एक राजा की सुंदरी कन्या से उसका विवाह होना, घूमते हुए उन सर्पों की हड्डियां देखना जो गरुड़ द्वारा भक्षण किये जा चुके थे, उस दिन शंखचूड़ की बारी आने पर स्वयं गरुड़ का भक्ष बन जाना, इस पर शंखचूड़ का गरुड़ को भूल से सूचित कर स्वयं उसका भक्ष्य बतलाना, गरुड़ का प्रसन्न हो कर दोनों को छोड़ देना, और वर देना, राजकुमार का सर्पों को जीवित कराना, इस पर बेताल का प्रश्न कि कौन अधिक सत्यवादी है, राजा का साधारण उत्तर कि 'शंखचूड़' सुन कर मृतक का उसी डाल पर लग जाना।

(१७) पृ० २००—२०८ तक—पन्द्रहवीं कथा, विजयपुर नगर के धर्मशील नामक राजा के राज्य में रत्नदत्त नामक एक वैश्य को अपनी लावण्यवती पुत्री 'उन्मादिनी' को राजा के लिये देने की प्रार्थना, राजा का उसके स्वरूप शीलादि की परीक्षा के लिये ब्राह्मणों को भेजना, राजा के विषय वासना में फंसने तथा प्रजा के दुःख के भय से ब्राह्मणों को उसके लक्षण ठीक न बताना, राजा का वैश्य की प्रार्थना का अस्वीकार करना, वैश्य का उस कन्या को सेनापति को देना, दैवात एक दिन उस कन्या को देख कर राजा का मोहित होना, और ब्राह्मणों का छल प्रगट होना, सेनापति का अपनी स्त्री राजा को देने का प्रस्ताव, राजा का धर्म भय से उसे अस्वीकार करना, और वियोग में मर जाना, सेनापति का यह देख कर जल जाना, और उसकी स्त्री का सती हो जाना, इस पर बेताल का प्रश्न कि कौन अधिक सत्यवान है? "राजा" यह उत्तर सुन कर मृतक का पुनः उसी डाल पर पहुंच जाना।

(१८) पृ० २०९—२१२ तक—सोलहवीं कथा—ब्राह्मण के एक क्वांरी बालक का घर से निकल कर एक योगी को पाना, उसकी कृपा से एक यक्षिणी का आकर उसे भोजन देकर भोग विलास कर प्रातःकाल चला जाना विप्र बालक का मोह विवश हो जाना; योगी के मंत्र को जल तथा क्रिया से उसे जपना, यक्षिणी का न आना योगी के मंत्र जपने पर भी न आना। बैताल का राजा से पूछना कि वह स्त्री क्यों न आई। उत्तर पाते ही मृतक पुनः उसी डाल पर चला गया।

(१९) पृ० २१३—२२२—तक—सत्रहवीं कथा—एक सेठ के मर जाने पर उसका संपूर्ण द्रव्य राजा द्वारा हरा जाना; सेठानी का अपनी पुत्री सहित जंगल को निकल जाना, वहाँ सूली लगे एक चोर का मरते समय अपना संपूर्ण द्रव्य देकर सेठ कन्या से विवाह करके मर जाना; संपूर्ण द्रव्य का उन दोनों द्वारा लाया जाना, ऋतुकाल में एक ब्राह्मण द्वारा सेठ कन्या का गर्भधारण करना; स्वप्न में एक दैवी पुरुष के कथानुसार द्रव्य सहित उस पुत्र का राजा के द्वार पर रख आना, बालक का गद्दी पर बैठ कर गया में पिंड दान करना, तीन करों का निकलना, बैताल का विक्रम से प्रश्न कि वह बालक किस के हाथ में पिंड दे राजा का उत्तर कि "चोर के हाथ में" यह सुनते ही मृतक का फिर उसी डाल पर पहुंचना।

(२०) पृ० २२२—२२८ तक—अठारहवीं कथा—एक राजा का शिकार के लिये जाना, एक ऋषि कन्या से उसका विवाह होना; मार्ग में एक राक्षस का उस कन्या को भक्षण करने का विचार, सातवर्ष के एक बालक को बलि देने के लिये राजा को उद्यत करके रानी को न खाना, मंत्री की सम्मति से एक स्वर्ण का पुतला देकर एक ब्राह्मण का बालक खरीदा जाना, सातवें दिन बलि की तैयारी नृप के मारते समय बालक का हंसना, राजा का नीची निगाह डालना और राक्षस का दयावान होना, इसका कारण बैताल ने राजा से पूछा; उत्तर पाते ही मृतक शरीर पूर्वस्थान पर जा लटका।

(२१) पृ० २२९—२३३ तक—उन्नीसवीं कथा—एक ब्राह्मण के चार कुमार्गी पुत्रों का शिक्षा द्वारा सुधार होकर उनका बाहर जाकर विद्या सीखना, उस विद्या की परीक्षा के लिये एक का सब हड्डियां इकट्ठी करना, दूसरे का चमड़ा लगा देना; तीसरे का पूरा रूप बना देना, चौथे का उसमें जान डाल देना, क्षुधातुर सिंह का चारों को खा जाना, बैताल का पूछना कि कौन सब से मूर्ख था। विक्रम का उत्तर "जान डालने वाला" सुन कर मृतक का पुनः अपने स्थान पर चला जाना।

(२२) पृ० २३४—२४० तक—बीसवीं कथा—एक सेठ कन्या का विप्र पर मोहित होना, जब तक सखी विप्र के यहाँ गई तब तक वियोग में उसका शरीर त्यागना। विप्र का यहाँ पहुंच कर यह देखने पर अपना शरीर त्याग देना, इतने में स्मशान में इनको जलता देख उसके पति का चिता में कूद कर जल मरना, बैताल का राजा से प्रश्न कि कौन अधिक कामांध था "जल मरने वाला उसका पति" सुनकर मृतक का फिर उसी वृक्ष पर चला जाना।

(२३) पृ० २४१—२४२ तक—इकोसवीं कथा—एक ब्राह्मण के तीन चतुर बालकों का बैताल द्वारा विक्रम से न्याय करना कि कौन अधिक चतुर है, एक ने भोजन में रक्त की बदबू बतला दी, दूसरे ने स्त्री के मुख से बकरी के दूध का संबंध बतला दिया और तीसरे ने तूल की उत्तम परीक्षा की, राजा ने तीसरे को अधिक चतुर बताया, उत्तर सुनते ही मृतक का चला जाना।

(२४) पृ० २४२—२६१ तक—बाईसवीं कथा—बीरबल नामक व्यक्ति का नौकरी के लिये एक नृप के पास पहुंचना, राजा का उसे रख लेना, एक दिन किसी रोती हुई स्त्री का शब्द सुन कर राजा का उसे भेजना, परीक्षा के लिये स्वयं उसके पीछे जाना, वहाँ जा कर राजकुमार का उस स्त्री से वार्तालाप कर यह जानना कि वह राजलक्ष्मी है और राजा के मरने का दिवस जान कर रुदन कर रही है, प्रयत्न पूछना और अपने बालक की बलि देना, उस की स्त्री तथा स्वयं उसका बलि वेदी पर चढ़ जाना राजा का यह आचरण देख राजलक्ष्मी का सब को जीवित कर वर देना। बैताल का प्रश्न कि किसका कार्य्य अधिक सराहनीय है। 'राजा का' यह उत्तर सुन कर मृतक का पुनः भाग जाना।

(२५) पृ० २६२—२६४—तक तेईसवीं कथा—एक विप्र के पुत्र की अकाल मृत्यु हो जाना, उसके स्मशान में ले जाने पर एक योगी का उसे सुन्दर पा उसके शरीर में प्राण डालना, अपना शरीर छोड़ते समय रोना—बैताल का प्रश्न कि योगी क्यों रोया ? राजा का उत्तर कि शरीर के सम्बन्ध को स्मरण करके, यह सुन कर मृतक का फिर भाग जाना।

(२६) पृ० २६४—२८० तक चौबीसवीं कथा—एक राजा का तेरह विद्या सीख कर चौदहवीं चोरी को सीखने की इच्छा प्रगट करना खपरा को बुला कर उसके साथ जाना, दो और चोरों का मिलना, अपने अपने गुण प्रगट करना, खपरा का रत्न चुराना, दो चोरों का पकड़ा जाना, खपरा द्वारा उनका छुड़ाया जाना, उन चोरों में सब से अधिक गुणवान का हाल राजा से बैताल द्वारा पूछा जाना, उत्तर में सगुन वाले चोर को बड़ा सुन कर मृतक का पूर्वोक्त स्थान पर पहुंच जाना।

(२७) पृ० २८०—२८७ तक पचीसवीं कथा—एक राजा का शत्रुओं द्वारा विनाश, उसकी रानी तथा पुत्री का वन में गमन, वहां पर एक राजा और राजकुमार को प्रार्थना पर उनके साथ जाने उद्यत होना, पिता पुत्र में यह निश्चय हो जाना कि छोटो पैरवाली पुत्र को और बड़ी पैरवाली पिता को मिले, बड़े पैर-वाली राजकन्या थी। कुछ दिन पश्चात दोनों के पुत्र हुए, सब साथ साथ खेलते हैं। बैताल का पूछना कि राजा और उनका कौन रिश्ता है। इस पर राजा का उत्तर न दे कर यह कहना कि अनेक रिश्ते हैं।

(२८) पृ० २८८—२९२ तक—उपसंहार-में बैताल द्वारा उस कुम्हार के बालक का सब समाचार जान कर उसी की सम्मति से उसका देवी को बलि दिया जाना, देवी का राजा को वर देना। कथा समाप्तिः—लिखने का काल सम्वत् १८८५

No. 371(*f*). Vaitāla Pachchisi by Śambhūnātha Tripāthi. Substance—Country-made paper. Leaves—154. Size—8½ × 7 inches. Lines per page—36. Extent—2772 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1809 or A. D. 1752. Date of Manuscript—Samvat 1869 or A. D. 1832. Place of deposit—Ṭhakura Basanta Simha, Village Uḍawa, Post Office Śāhamau, District Rāe Barelī.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ छवि कदंब लषि अंब के उमड़त मोद अखंड। कलरव करि करि बर बदन फेरत सुंडा दंड ॥ १ ॥ कवित्त। एक समै गिरि राज को नंदिनी आइ कन्हाइ कहूं सरसोतं। आतुर भाल दियें दल कोल को आनन सों छवि की छवि जोतं ॥ सो हठि लेवे को सुडि पसारो तहां गननायक आइ अभोतं। चाहि के चाप सों दौरि भनौ हरे लेत सुधा अहिराज असोतं ॥ २ ॥ राजवंस वर्नन ॥ हरिगीता छंद ॥ भुव धरन धन दल मलन जिन आचरन इतयुग के किए। सनमान दान कृपान जस विधान के जग जस लिए। द्विजराज कुल वन कुसु''' कामुद दान पूरन इंदु भो। निजवंश वारिज को गनै पुनि लोकचंद नरेश भो। पुनि भयो आनंद कंद पृथ्वीचंद नृपता को तनै भुज जोर सो धुरि अंग में जमराज हू जो नहि गनै। पुनि भयो ताके अजय चंद अरिंद कुल दल जिन हुने जग मगत जाके जस पत्रौं सुर असुर मुनि गवत जनु मने ॥ ४ ॥

End—वचन प्रमान देखिकै करे, दुवौ पुरुष नृप भीतर धरे।
आयो बहुरि मित्र के पास, महाराज हिय सहित हुलास ॥ २०१

नमे पेम सहित परसे नृप पाइ , करो विनै बहु सोस नवाइ ॥
जो यह सीष मोहि नहिं देता , तो मोहि मारि राज यह लेतो ॥ १०२
जो तुम मेरे भये सहाई , जिय सो बच्यो सिद्धि मैं पाई
जीवन रहौ जगत में जो लौ , कृपा दास पर कीजै तौ लौ १०३
सुनिए वचन देवहि यह रच्यो , सुमन अनूप भूप पर बरष्यो ।
कह्यो अचल ह्वै कीजै राजु , बिजई होउ सदा महराजु ॥ १०४
जो तेरे अनहित को करै , बिना मीचु वह मानो मरै ।
दिन दिन राजु तिहारो बढ़ै , सुजसु दिसनि बिदसनि तव बढ़ै १०५
लक्षिमी तजै न तेरो धाम , पूरन रहैं सदा मन काम ॥
जीवत रहो भूप बहु काल , ए कहि बचन गयो बेताल ॥ १०६

इति श्री मन्महाराज कुमार श्री मद्राय रघुनाथ सिंघाज्ञाय त्रिपाठी शंभुनाथ कृते पंच विंशति कथायां बेताल पंच विंशति कथा समाप्त शुभमस्तु ॥२५॥ मिति अाषाढ़ सुदि ॥ १५ वार बृहस्पति । संवत ॥ १८८९ ॥

No. 371(*g*). Vaishya Vaṅśavali by Śambhu Kavi of Kānthā, District Unāo. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—$13\frac{1}{2} \times 9\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—16. Extent—160 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Date of Manuscript—Samvat 1916 or A. D. 1859. Place of deposit—Ṭhakura Raghu Nātha Siṁha Seṅgarā, Kānthā, District Unāo.

Beginning—इति बंसावली बैस लिख्यते ॥ एक है रदन गज बदन बिराजै जाके माथे जाके चन्द्र चान्दनी समाने को। पूजे लोकपाल दिगपाल सुरपाल सबै पढ़ै बादि रिचा सुभवानी को। गुननकौं बखाने को सारदा महेस सेस पावै नहि अन्त संभु अकथ कहानी कौ। गुनन कौ नायक है बुद्धि सरसायक है चारिउ फलदायक सुत गिरिजा महारानी को ॥ १ ॥

गननायक कौं सुमिरि कै निजमति के अनुसार। चारिउ जुग के नृपन को करौ बंस बिस्तार ॥

छप्पय—महाप्रलय के अन्त रह्यौ अवसिष्ट एक हरि। क्षीरोदधि मैं सोइ रह्यो अति सुखरूप धरि ॥ हरि नाभी में कमल एक जनम्यौ अति अदभुत। तहाँ चतुरानन प्रगट भए सुभ बेदन सों जुत ॥

सिष्टि करन कौं हुकुम तेहि दीन्हों दीन दयाल हरि।
सत बरष तासु जीवन परम होत भले जब लौ सुदरि ॥

End—बहुरि सालिवाहन भये रतो भानु के पुत्र।
जाके समदानो नृपति देखो जान न कुत्र ॥
ताके परगट जानिये अंगद राय देवान।
महाबली दुसमनन कों जिन जीतो मैदान ॥
तासु बंधु लाल साहि। सूरबंद मैं सराहि ॥
जासुदान के विधान। कौन कै सकै बखान ॥
अंगद राम देवान के हैं त्रय सो सुत चारि।
जेठे तेज हमीर हैं लघु हिम्मति सिंह विचारि ॥

कवित्त—बरजोर मितानि सिंह हिन्दू सिंह उदोत सिंह बलो बखतावर सिंह जु सुतचार भये वैस बरजोर खानि है। कहै कवि शंभु महाबली परताप बली भानु के समान भयो दूसरो मितान॥ हिंदुन को हद को रखैया हिन्दू सिंह बड़ो दवे को दान जाके पड़ो एक बानि है। जाको जस काहे को उदोत कवि गोत करैं नाम है उदोत सब गुननि को खानि है॥ दोहा॥ हिन्दू सिंह के परगट पुनि विमल भये सुत चारि। तिनके गुन बरनन करौं मिश्र कवित्त बिचारि १ चन्द्रिका बकस २ गंगा सिंह ३ इन्द्रजीत ४ आदि बकस॥ ताके भये बच्चकुमार नाम। जो है महाविक्रम तेज धाम॥ लीन्है सबै सत्रु समूह जीतो। गावै सबै जाको कवि लोग कीतो॥ ताके श्रोपकुमार पूरनमल, जगतपति राना परमल देव, मानिकचंद मलदेव, जसवर देव, राने होरिल देव॥ कृपाल साहि सातन चन्द्र हिन्दूपति राजसाहि, परमलसाहि रुद्रसाहि, विक्रमसाहि, नृप संतोष छत्रपती जगतराय केसो राय॥

Subject—पृ० १—गणेश बंदना, सृष्टि उत्पत्ति, ब्रह्मा ग्रोर कल्प संख्या, स्वायंभुव—सतरूपा जन्म, प्रियव्रत, ध्रुव पृथु जन्म वर्णन। पृ० २—सूर्य्य वंश वर्णन, सुद्युम्न का कन्या होना गौरी के श्राप से। राम वंश वर्णन। पृ० ३—क्षत्रियों की ३६ कुरियों की उत्पत्ति तथा वर्णन। अभयचंद को अर्गल राजा का कन्या देना, चिल्लो का राना बनाना। पृ० ४—अभयचंद को दायज में बैसवार मिलना। अभयपुर राजधानी बनाना। अभयचंद्र के पुत्र विक्रमचंद, उनके रनजीत, उनके रायतास ग्रोर उनके पुत्र सावन, उनकी वीरता वर्णन, बादशाह के पुत्र से युद्ध करना कालिंजर को राजधानी बनाना। पृ० ५—चैाहान पुत्र को मारना, ग्रोर बादशाह पुत्र को घायल करना, अभयचन्द्र ग्रोर निर्भयचंद भाई भाई थे, अर्गल की रानी को छुड़ाना राजपुर में चैाहानों से। पृ० ६—चोहान व रामतास का युद्ध वर्णन। सातना नरेश बैसवारे में तिलोकचंद हुए। उनके राना हरिहर देव हुए। उनके भाई पृथ्वीचंद थे। पृ०.७—हरिहरदेव के छोटे भाई ने राज लिया तब दिल्लीपति ने उन्हें बड़ा

इलाका दिया, उनके खेमकरन जिन के सकतसिंह, बरियान, समान, जोगाजीत हुए। सकत सिंह के तीन पुत्र डोमन देव, रुद्रसाहि भैार भालमसाहि हुए। इन सब के ८ पुत्र हुए। रतिमान जेठे थे, इन्हों में शालिवाहन रतीमान के पुत्र हुए। पृ० ८—उनके अंगदराय भैार लालसाहि हुए, अंगदराय के ४ पुत्र हुए, हमीर सिंह, हिम्मत सिंह, हिन्दु सिंह व उद्दोत सिंह थे। शंभू कवि के येही स्यात् भाश्रय दाता थे।

No. 372. Kavitta by Sangama Lala of Teṛha. Substance—Foolscap paper. Leaves—3. Size—7×4¾ inches. Lines per page—32. Extent—48 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit—Paṇḍita Baṇi Bhushanaji, Rāe Bareli.

Beginning—समैं का जानैं सोच काहू को न मानैं मान नाहक ही ठानै तू भजानी भई जात है। संगम मनावें सखो हित को सिखावें सोच जा विन न भावे भैान ताहो सों रिसात है। पोछे पछितैये टेक तेरो छूट जैहै बात ऐसो तू न पैहै भबै टेढ़ी तनी जात है। मोसों सतरात विनकाज सोंह बात प्यारी तू तो इतरात उतै रात बीतो जात है। १ भालनब स्याम ताह कंजा कल जिह्वा जैान पेचापांउ काडी पांउ जबम मनोजिये। बाड़ी दुम बालमड़ो भारु कस झोंकदार यश मटि खोरे पर नजर न कोजिये। संगम कहत टेढ़े दांत का दुरद दान देवे को पताल देतो दिल में न कोजिये॥ राज सिरताज राजसिंह महराज सुनैा ऐसे गजराज कविराज का न दोजिये॥ २ दीजे दान दुरद दतीले दुमदार देखि दीहिन के दिलको उठावे हूक हारि है। मरदि यहो का सीस गरद चढ़ावे सुंड नीर भरि लावे भैा हरावे ढेरि वारि है। संगम कहत पावें ऐसे जा मतंग ता करज को गरज गुदारि डारैं गारि है। मारि डारी दिकवलो विपति बिदारि डारैं फारि डारैं फिकिर दबाइ डारैं दार है॥ ३

End—कहत भुलानो मुख वैरिन का पानो जब अंग थहरानो है भुलानो धरि साज को। सोनित सो सानी भई भकह कहानो रन मानो पगलानी ठकुरानो जमराज को। सब जब जानी भाइ भरिन भवानी विष पानी सो बुझानो है जिठानी मनोगाज को। संगम बखानो शंभुरानी है रिसानो कैधैां कैधों है कृपानो राजसिंह महराज को॥ १२ वेदो ग्वालबाल हैं विसाल तरु जाल वेदो वेदो है तमाल ख्याल भैार कछू ह्वे गयो। छायगो उदासी व्रजवासी मनहांसी भई जब ते विधासी वोस गांसो मारि कै गयो॥ संगम भकूर क्रूर वैरी जन्म पोछले का कोन्हो ना कसूर कछू हाय हरिले गयो। साली रहे सल सो कुचालो भकूरवली बिना बनमाली यहां बालो भज ह्वे गयो॥ १४

Subject—रति विरह नायिका वर्णन १ कवित्त, राजा राजसिंह और व्रजनाथ के गजराजों का वर्णन ५ कवित्त

वर्षा वर्णन	२ कवित्त
वसंत वर्णन	२ कवित्त
सिंहावलोकन	१ कवित्त
कुब्जा वर्णन	१ कवित्त
राजसिंह की तलवार का वर्णन	१ कवित्त
करुणारस	१ कवित्त

No. 373(*a*). Satyā Prakāsa by Santa Baksha of Narahī, District Lucknow. Substance—Country-made paper. Leaves—48. Size—10×6 inches. Lines per page—22. Extent—860 Anushṭup Ślokas. Complete. Appearance—New. Written in Prose and Verse. Date of Manuscript—Samvat 1921 or A.D. 1864. Place of deposit—Paragi Dāsa Murāu, Village Jādavapur, Post Office Varnāpur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री सत गुरु साहब सहाय। अथ सत्य प्रकाश लिख्यते। प्रथम बंदना॥ प्रथम आदि देव श्री गणेश जी स्वामी के। जिनके सुमिरन से सब काज लोक व परलोक के सिद्धि होते हैं। बहुत भांति विनय के साथ बारबार दंडवत करि के उस पारब्रह्म परमेश्वर निरगुण व सगुण सरूप सर्वत्र व्यापक भक्तवत्सल कृपासागर दयासिंधु दीनबंधु जन सहायक के चरण कमल की बंदना करत हूं तुम्हारी महिमा अगम अथाह है श्री ब्रह्मा जी चारो मुख से व शेष जी और सारदा निरंतर वर्णन करते हैं और पार नहीं पाते सो मैं पतित कामी औगुनन को खान बुद्धिहीन किस प्रकार कहि सकौं॥ आपने गनिका व अजामिल आदिक अनेकों पापियों को इस भवसागर से पार उतारा और निजधाम दिया सो जानि परत है कि पतित तारन आप का स्वभाव है। सो हे पतित तारन दीनदयाल इस पापी को भवसिंधु से पार उतार कृपा करके हृदय में वास दीजिये॥

End—दोहा—जगजीवन के पंथ का जो कोइ जानै हीन। राजा होय कि छत्रपती दिन दिन होय मलीन॥ जगजीवनदास की निंदा जो कोउ करै चोराय। जीवत सुख पावै नहीं मरे नरक मां जाय॥ जो सतनामी सतगुरु साहब के बाना को निंदा करते हैं वह महा रोगी व दरिद्री हो जाते हैं अंतकाल उनको महा-

घोर नरक होता है सत्तनामी जनों के नशा गांजा व भंग अफीम का ग्रहण अनुचित है औ मुख वाचि है। दोहा—गांजा भंग व पोस्ता संत लोग नहिं खांहि जगजीवन दास सांचो कहैं खांहि तो नरकहि जांहि ॥ समर्थ गिरिवर दास की बानी ॥ सतनाम के पंथ मां भांग खाइ जो कोइ जगजीवन गिरिवर कहैं ताको मुक्ति न होय ॥ सत्तनाम के पंथ में खाय जो गांजा भंग जगजीवन गिरिवर कहैं ताको मत ह्वै भंग ॥ सत्तनामी को बैंगन व कुंदरु अवश्य वर्जित है श्रीमत गिरिवर दास साहब ने कैथा भी वर्जित किया है सो सत्तनामी को गुरु वचन परमान उचित है। गुरु का वचन न मानै जोई। अवश नरक तेहि प्रापत होई ॥ इति श्री सत्य प्रकाश समाप्तम् लिखा सतगुरु प्रसाद संवत १९२६ जेठ मासे कृष्ण पक्षे द्वितीयायां श्री राम।

Subject—इस ग्रंथ में गणेश जी, भगवान, हनूमान जी, शंकर, आदि बाबा जगजीवन दास आदि की वंदना की गई है, पश्चात बाबा जगजीवन दास जी का जीवन चरित्र दिया है। आप पहुंचे हुए महात्मा थे, भूत, भविष्यत, वर्तमान तीनों काल के जानते हैं, अपने मृत्युकाल में जलालो दास को बुलाकर शरीर का दाह कर्म मना किया इस पर कुछ लोग अप्रसन्न हुए और मरने के पश्चात् दाह का कार्य ठहरा, परंतु जलालो दास ने न माना तब सबने कहा कि अगर तू सच्चा है तो बाबा जी फिर कहैं लोगों का विचार था कि बाबा जी के मरे देर हो गई किस प्रकार कहेंगे। परंतु जिस समय जलालो दासने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की बाबा जी उठ बैठे और कहा मेरा शरीर न जलाया जाय समाधि दी जावे तब सब को बाबा जी का महत्व प्रगट हुआ और उनके कथनानुसार समाधि दी गई।

No. 373(*b*). Kotawabandan by Santa Baksha Mahañta of Narahī (Lucknow). Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—14 × 5 inches. Lines per page—44. Extent—1,144. Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1929 or A.D. 1872. Place of deposit—Parāgīdāsa Murāu, Village Jadavapura, Post Office Baranapur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—अथ कोटवा बंदन लिख्यते ॥ दोहा ॥ कोटवा वंदन ग्रंथ यह। श्री सतगुरु ध्यान। इन्द्र दवन जे भक्त हैं तिनके उर परमान ॥ प्रभु जग जीवन शुभ करौ भावै सतमत ग्यान ॥ अति कोटवा की वंदना परगट करौं बखान ॥ कथा

भई आरंभ तव जब प्रभु दाया कीन्ह । बैठा घट मो आय के सत्त शब्द कहि दीन्ह ॥ तुम हो ता बानी कहत मैं कछु जानत नाहिं । गुन ता एकै है नहीं सब औगुन मोहि माहिं ॥ जब तुम्हारि कृपा भई कथा प्रगट भई सोइ । आपहि ता सब कहत हैं और न दूजो कोइ ॥ जन्म लियो सरदहा में संतन के आधार । नाम कहायो जगजीवन जगन्नाथ अवतार ॥ चो० ॥ प्रभु जगजीवन जगत अधारा । लियो सरदहा मा अवतारा ॥ गति तुम्हारि कोइ जान न पावै । जेहि जस कृपा सो तस कहि गावै ॥ आइ सरदहा कीन्ह निवासा । जगजीवन जग विदित प्रकासा ॥ प्रभु जगजीवन नाम कहाए । मारग सो सतनाम चलाये ३

End—छंद ॥ सरन मे समरथ तुम्हारी और नाम न आनऊं ॥ कहत हैां करजोरि साईं दूसरो नहि जानऊं ॥ चरन परि मैं करत विनती नाथ मोहि अप-नाइए । फिरत हूं मैं भरम भूला कृपा कर के छुड़ाइए ॥ छोड़ि तुम तजि जाऊं कहंवां दृष्टि में आवै नहीं । चरन तुम्हरों तक्यों जब से और कछु भावै नहीं ॥ सर्वे मैं तुम अहो व्यापक और दूजा कोई नहीं । जानि मोहिं का परत यहि विधि नाथ तुमही सब कहीं ॥ थिर रहैां नहि भटकैां भरम को परदा फटै । करैां अंतर नाम सुमिरिन तिमिरि आंखिन को कटै । दीनबंधु दयाल तुम सम नहिं दूसर देषहूं ॥ समरत्थ प्रभु जग जीवन साहव सत्त मन महं लेषहूं ॥ दोहा ॥ बलिहारी गुरुचरन की जिन मोहिं दीन्हो नाम । तेहि सुमरैां चितलाइ कै ये मन आठौं-याम ॥ चो० ॥ संतों कथा सुनैां चितलाई । गुरु जग जीवन दियो लषाइ ॥ बैठि गयो आपहिं घट माहीं कहत कीर्ति मैं जानत नाहीं ॥ मोरि बुद्धि यामें कछु नाहीं । आपुहिं बैठि कहो घट माहीं ॥ जाऊं सदा चरनन बलिहारी । जिन यह कथा कह्यो अनुसारी ॥ इति श्री कोटवा बंदन सम्पूरन संवत १९२९ वैसाख पुर्नमा ब्रहस्पति लिषतं संतबक्स महंत ।

Subject—इसमें बाबा जगजीवन दास और स्थान कोटवा की वंदना की गई है । कोटवा और बाबा जगजीवनदास की महिमा का साथ ही साथ वर्णन किया गया है ।

No. 374. Nakhaśikhā by Santa Baksha Bandijana of Holapur. Substance—Country-made paper. Leaves—12. Size—8 × 5 inches. Lines per page—15. Extent—101 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bajaranga Balī Brahmabhaṭṭa, Village Holapur, Post Office Haidargarha, District Bārā Bankī (Oudh).

Beginning—मुकुट वर्णन ॥ मणि माणिक मंडित मौलि रह्यो अनुराग विराजि रह्यो अलपै। तेहि ऊपर मोतिन की कलंगी विचवीच कुसुम्भ कली दलपै ॥ कवि 'संत' कहै दिये दीपन लौं उपमा तिहुं लोकन को कलपै। रघुवीर के ऐसे किरीट लसैं मानों भानु उदै उदयाचल पै ॥ बार वर्णन ॥ मखतूल के तार सिवार से हैं उपमा लखि कै सरि कौन गनै। अति कारी बलाहक से दरसै भरे सौरभताई सनेह सने ॥ कवि संत कहै लटकारे छबीले लजीले मनोभव देखि बने। किलकैं दुति मेचकताई धरे रघुवीर के केस सुवेस बने ॥ भाल वर्णन ॥ जोत को पत्र लिख्यो है विरंचि किधौं लिखो देवल को प्रतिपाल है। जंत्र औ तंत्र वसीकर मंत्र सु मोहै त्रिलोक हृदय सदा अरिसाल है। संत कहै जन पालिवे हेत को देर न लाय दया करि हाल है। भागो भरो निसि द्योस रहै शुभ श्री रघुवीर को भाल विसाल है ॥ भृकुटी वर्णन ॥ भौंहैं सरासन कैधौं धरे जुग सुंदरता अति है अनियारी। वैठि दुरे फणि को अवली किधौं मर्कत रेख लसै जुग न्यारी ॥ कैधौं अनंद के कंद को देन को संतन सो करियै हितकारी। काम को शोभा जुटी है किधौं भृकुटी है बनी रघुवीर तिहारी ॥ नेत्र वर्णन ॥ गोल अमोल सुडौल कपल लौं चंचल कोर चुभे चित चैन हैं। लखि तुरंग कुरंग दुरै वन मीन सो दीन भये दिन रैन हैं ॥ सो उपमा उपमेय बखानत संत कहै सुखमा वर ऐन हैं। कंजन खंजन गंजन हैं सदा शोभित श्री रघुवीर के नैन हैं। नाक वर्णन ॥ निन्दित है शुक तुंड विलोकि के फूल तिली को दिलो मैं उदासिका। चारु सुधारि विचारि पितामह मोद भरे मन कीन्हे हुलासिका ॥ सो छवि देखि कहैं कवि संतजु तेस सदा धरे ध्यान प्रकाशिका। राजत आनन अंबुज पै शुभ सुंदर श्री रघुवीर की नासिका ॥ कपोल वर्णन ॥ दाडिमपाल के बाल भरे किधौं पत्र पुरैन के सुन्दर गोल हैं। सिद्धि मनोरथ हो को करैं तुला तौलिवे हेत के नेत अलोल हैं ॥ संत समान विचार करैं केहि संपुट सैनि के अमोल हैं। आरसी हैं की सुधांशु की हैं किधौं श्री रघुवीर के गोल कपोल है ॥

End—नख वर्णन—प्रात सरोज पै कैधौं परी मकरंद के बुंद के भांति भला के। सोने की लेखनी पै मुकताकनो सोहत चोगुनो छोर कला के ॥ संत कहै जगी जोति अखंड दिये जग मैं जैसे छंद कला के। पाती नक्षत्रन की दरसै नख शोभित श्री रघुवीर लला के ॥ छाती वर्णन ॥ कंचन नील के पत्र किधौं वनमाल विराजि रही बहु भांती। केसरि खौरि पितामबर राजित वज्र किधौं है मर्दि को घाती ॥ संत कहै फलदायक चारि को रिद्धि और सिद्धि की वृद्धि बढ़ाती। चोकनो चौरी चरचित चंदन वीर भरी रघुवीर की छाती ॥ जंघ वर्णन ॥ अति पीन भरे कलधौत के दंड उदंडता धारि समाय रहे। करके सरके कर क्यों उपमा सुखदाय रहे ॥ वर विक्रम उन्नत चोप लहै जुग जानु विसालता छाजि

रहे। मणि खंभ भजे दुतिरंभ लजें रघुवीर को जंघ विराजि रहे ॥ चरण वर्णन॥ तरनि तरन घर बरन वर घर बरन घरन भरे सुखमा हसोर के। करन हरन करुणा कृपाल कोर चितै भरन मरन भौ हरन भय भोर के॥ जाहिर तरनसम मंगल करन चारु आरन फले के ये उधारन अघोर के। दारिद दरन अघ ओघ के हरन परिजात के करन सो चरन रघुवीर के॥ शिख नख वर्णन ॥ भृकुटी और लिलाट कपोलन कुं सुख कोयन लोयन देखि भरे। चिबुका धरि ग्रीव उरोजन पै पुनि नाभी सरोवर में लहरै॥ कवि संत कहे जुग जंघन में मोरवानि हिये बिच ध्यान धरै॥ रघुवीर पदांबुज से सुनिये मन मेरो मधुव्रत गुंज करै॥ २०॥ सर्व अंगतोरथ वर्णन ॥ पदस्याम सरोज कलिंदी लसै सुखमा चलिहौ सुख साजत है। हिय मोतिन माल बिसाल लरै लखि निम्नगा बेनिहि भ्राजत हैं॥ कवि संत कहे अधरान की लाली गिरा अनुराग समाजत है। नखते सिख लौं रघुवीरहिं के तन तीरथ राज विराजत हैं॥ २१॥ कोरति वर्णन॥ नारद पारद सो दरसै औ सुधाकर सो लसै चन्दर चूरसो। विष्णु सो कंबु कमोदनि का शशि चौवर से जल गंग को धूरि सो॥ संत कहैं सित भौंडर सो नखतावलि सो गजदंत के नूरसो कोरति श्री रघुवीर को राजति कुंदकलो करका कपूर सो ॥ २२॥ बेनी लखे तिरबेनी लजै मुख देखि छपा कर छोम छलो के। गोल कपोल बिलोकि के आरसो लोचन लोल सरोज दलोंके॥ संत कहै सारे दंतन को सखी निंदित दाड़िम कुंदकली के। मोह मई तम क्यों न मिटै मन ध्यान धरै मिथिलेश लली के॥ २३॥ कैधों कोल पाखुरी पै रवि की किरनि प्रात कैधें इन्द्र वधू काम करत निहोरो के। कैधों गुंज बिम्बा फल बन्धु जीव लालो कैधों दाड़िम कुसुम्ब रंग भई मति भोरी के। कहे कवि संत कुरु बूंदन की कोन गनै दुखक पतंग पौ गुलाल दुति थोरो के॥ जावक मनोज पै ईंगुर बरन ऐसे चरन बिसाल राजे जनक किशोरी के॥ २४॥ कास ते अधिक वक दास ते अधिक घन सार ते अधिक लसै मुक्ताहार हीर को। सोय ते अधिक चून फेन ते अधिक गजदंत ते अधिक लखु लागै गंग नीर को॥ दुग्ध ते अधिक वर बुद्धि ते अधिक सत्त्व गुण ते अधिक शांत रस धरि धीर को। छत्र ते अधिक श्री नक्षत्र ते अधिक इन सब सो धनिच जस राजै रघुवीर को॥ २५॥ इति—लेखक परमेश।

Subject—(१) पृ० १—९ तक—रामचन्द्रजी का नखशिख वर्णन। मुकुट, केश, भाल, भृकुटी, नेत्र, नाक, कपोल, श्रवण, अधर, दशन, मुख, भुज, अंगुरी, नख, छाती, जंघा, चरण वर्णन।

(२) पृ० ९-१० तक—सिखनख वर्णन, सर्व अंग तीरथ वर्णन, कीर्ति वर्णन।

(३) पृ० ११-१२ तक—सीता जी का नख शिख, बेनी, पैर और रघुवीर का यश वर्णन।

No. 375(a). Bāni or Sākhi by Sañta Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—56. Size—4½ × 3¾ inches. Lines per page—18. Extent—630 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Manuscript—Samvat 1852 or A.D. 1795. Place of deposit—Harvaṅśa Rāi, Village Tekāri, District Rāe Bareli.

Beginning—राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम । अथ स्वामी जी श्री संतदास जी की वाणी ग्रंथ मे लिप्यते ॥ अथ गुर देव का अंग । सतुति ॥ ग्रंथ मै पद परकास के ॥ दाइक सत गुर राम ॥ अनत कोटि जन साहिका ॥ ताहि करू परनाम ॥ १ ॥

अंग ॥ सत गुरु का ऐको सबद मनि कोई लेवै मानि ।
तो सहज होत है संतदास मुसकलि सू आसानि ॥ १ ॥
सतगुर कीन्हो संतदास मुसकलि सं आसानि ।
रामनाम को हो रही रंम रंम निज ध्यान ॥ ३ ॥
संतदास तिहूलोक मैं येह सिरोमणि संत ।
पूरबजनम का बीछड्या सोही मिलाया कंत ॥ ४ ॥
सतगुर मेल मिलाइया ॥ सरित सबद का अंग ।
अब छूटत नाहीं संतदास लगा करारो रंग ॥ ५ ॥
सत गुर बर पधारयो असो देह बणाइ ।
अरीया मुलक छुड़ाइ कें अधर मुलक ले जाइ ॥ ६ ॥

End—निरगुण नाँव हिरदे धरै निरगुण पहरै भेष ।
संतदास वा संत सूं कहीये आप अलेष ॥ २२ ॥
फकर तारै जगत कूं निरगुण नांइ मिलांहि ।
मकर ले बूडे संतदास भो लिधि का दह माहिं ॥ २३ ॥
चली जात है सुरसुरी अपणै सहज सुभाइ ।
प्यासा होइगा संतदास सो पीवेगा आइ ॥ २४ ॥
संत सुरसरी राम जल कोई पीवै प्रीति लगाइ ।
वो भरम करम को संतदास प्यास न उपजै ताहि ॥ २५ ॥
संत निवासी संतदास सब कूं देत निवास ।
सांच झूंठ निरणं कीयां झूठा होत उदास ॥ २६ ॥

इति स्वामी जी श्री संतदास जी की साषी संपूरण ॥

Subject—पृ० १ गुरु स्तुति- पृ० २-१४ गुरु महिमा पृ० १५। गुरु सामर्थ्य पृ० १६-३०, ईश्वर सुमिरन विधि ग्रोर भेद पृ० ३१—३३ईश्वर नामें का भेद, उनका निर्णय, ग्रोर सर्वोपरिनाम वर्णन; पृ० ३४। जीव निर्णय, पृ० ३५-३६। ईश्वरनाम सुमिरन की सामर्थ्य—पृ० ३७, ईश्वरनाम की महिमा, पृ० ३८-५४। संतदास की चेतावनी भक्ति के लिये। पृ० ५५-५७ साधु की महिमा, लक्षण ग्रोर साधु ग्रसाधु निर्णय, समाप्ति।

No. 375(*b*). Sañtadāsa kī Bānī by Sañtadāsa of Sahipurai. Substance—Country-made paper. Leaves—2262. Size—5½ × 4 inches. Lines per page—13. Extent—29,406. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1830 or A.D. 1773. Date of Manuscript—Samvat 1870 or A.D. 1813. Place of deposit—Paṇḍita Devīduttaji Śarmā, Village Fatahapur, District Bārā Baṇkī (Oudh).

Beginning—ग्रथ स्वामी जी श्री संतदास जी की वाणी ग्रलभे लिख्यते ॥ प्रथम गुरु देव का ग्रंग लिख्यते ॥ स्तुति ॥ ग्रलभे पद परकास के ॥ दाइक सत गुरु राम ॥ ग्रनंत कोटि जन साहि की ॥ ताहि करुं परनाम ॥ १ ॥ ग्रंग ॥ सत गुरु कारो का सवद मनि कोइ लेवै मानि ॥ तो सहज होत है संतदास ॥ मुसकिल सूं ग्रासानि ॥ १ ॥ सत गुरु किन्हो संतदास ॥ मुसकिल सूं ग्रासानि ॥ राम राम को होइ रहो ॥ रोम रोम रज ध्यान ॥ २ ॥ संतदास हम कुं कीया ॥ सत गुरु कभ्रई सानि ॥ देह छूटां छूटै नहीं ॥ परब्रह्म सूं ध्यांन ॥ ३ ॥ संतदास तिहुंलोक मैं ॥ रोह सरोभं निसंत ॥ पूरब जनम का विछड़या ॥ सोहो मिलाया कंत ॥ ४ ॥ सत गुरु मैं ला मिलाइया ॥ सुरति सवद का संग ॥ ग्रब छूटत नांही संतदास ॥ लगा करारो रंग ॥ ५ ॥ सत गुरु वड परमारथी ॥ ग्रैसो देह वणाइ ॥ धरी या मुल कछु भाइ करि ॥ ग्रघर मुलुक लेजाइ ॥ ६ ॥ चैारासी धरोया मुलक ॥ तामैं सुर नर रहे समाइ ॥ ग्रधर मुलक है रांम नांम ॥ जहां जन पहुंच्या जाइ ॥ ७ ॥ तीनलोक सूं ग्रलघ सुप ॥ लाघन नांही कोइ ॥ सत गुरु लाया संतदास ॥ ८ ॥ सत गुरु मिलीया संतदास कटी भरम की पासि ॥ मा सत गुर वोग ॥ चैारासी का संतदास ॥ मिटि गया ग्रावंण जांण ॥ १० ॥ सत गुर वाह्या वब भारि ॥ सुषम प्रेम का सेल ॥ निज मन तो घाइल भया ॥ ग्रवरहं मकता पेल ॥ ११ ॥

End—कांम दुष क्रोध दुष पावै ॥ लोभ दुष कछु कहत न ग्रावै ॥ माया मोह दुषी संसारा ॥ तातैं जागैं राम पियारा ॥ ८६ ॥ माता नास पिता सुनि

भयौ ॥ वंस सादर थापन गयौ । पुत्र कलित्र दुष सकल पसारा ॥ तातें आगै राम पियारा ॥ ८७ ॥ परख परख हाथी चढ़ घोरा ॥ भैामि मंफारन बिमो थोरा ॥ बांधि मूंदि देषत ही वारा ॥ तातें आगै राम पियारा ॥ ८८ ॥ करि उपदेस गयौ रिषराई ॥ राजा को मन प्रीति बढ़ाई । डेरा छाड़ि गए बन वासा ॥ गुरु गोबिंद से वाढ़ो पासा ॥ ८९ ॥ मन ही मन राजा यूं जानो ॥ क्रिपा करी है सारंग पांनो ॥ बनपासै गुरु मिलीया पाई ॥ प्रेम प्रीति हरि सूं ल्यौ लाइ ॥ ९० ॥ दुहा ॥ भाग बड़ेही पाइयै साधन को सतसंग ॥ जन गोपाल जगदीस कौ तन मन लागै रंग ॥ ९१ ॥ इति श्री ग्रंथ जड़भरत संपूरण ॥ महाराजाधिराज पूरण ब्रह्म जी दया का सागर जी रामनिवास साहिपुरै बिराजमान तोस मेरो पुस्तक लषी कृते संवत १८७० वर्षे मितो भाद्रपद शुक्लपक्षे पुनि तिथौ ३ शनि वासरायां ॥ लिपि कृतं ब्राह्मन गुजर गौड़ दासानुदास चरणार्विंद को रज हव राम वाचे विचारै ज्यां सूं रांम रांम ॥ संत गुलम तासकै नाम ब्राह्मन तुलछी राम बांच वीचारै ॥

Subject—पृ० १—१३ तक—स्तुति सत गुरु राम जी को, सत गुरु को महिमा का वर्णन, सत गुरु के दिये हुए ज्ञान के लाभ ॥

(२) पृ० १४—३१ तक—सुमिरण का अंग, माला जाप, राम नाम का महत्त्व, राम नाम निर्णय, जीव निर्णय, नाम को सामर्थ्य, साखी ।

(३) पृ० ३२—५६ तक—विनती का अंग—स्तुति । साखी नाम में लगन का वर्णन । प्रेम प्रकाश, परिचय ।

(४) पृ० ५७—९९ तक—पतिव्रता वर्णन, व्यभिचारिणी वर्णन । टेक, विश्वास, साधु, साधु महिमा, साधु पारख, साधु परमार्थ, साधु संगति, विरक्तता, निवृत्ति, प्रवृत्ति, विचार, कुविचार, सार असार, रस, पंथ वेहद, सजीवन, जीवित मृतक, हठयोग, अवगुणग्राही, भक्त द्रोही, मन मुषी, मन, उपदेश, अभ्यासी, कादर, सूरातन, सती, गुरु शिष्य पारख, सोजना ।

(५) पृ० १००—१४२ तक—गुरु वे मुख, सन्मुख, विमुख, राम विमुख, काल, चेतावनी, वोही पारंभी, माया, कामी नर, वाचिक ज्ञानी, सांच, भ्रम विध्वंस, भेष, चाणक्य ।

रेखता

(६) पृ० १४२—१४४ तक-रेखता । (७) पृ० १४४-१५० तक—ब्रह्म ध्यान, (८) पृ० १५१—१६७ तक—भ्रम तोड़ । (९) १६८—१७२ तक—पद, भारती, संतदास जी का निर्वाणकाल सं० १८०६–अठारै से षट वष में संक भये निरकारो ॥

राम चरण जी की बाणी ।

(१०) पृ० १७३—२२५ तक—निरंकार स्तुति, गुरुदेव का अंग—गुरुदेव स्तुति, साखी, गुरु सामर्थ्य, सरण, विरह, ज्ञान विरह, हैरा, प्रेम—प्रकाश, पीव पहिचान, परिचय, पतिव्रता, व्यभिचारिणी, समर्थ ता, विनती, विश्वास, बरकत, निवृत्ति, साधु, असाधु, साधसंगत, कुसंगत, बेअकिल, विचार, बे विचार, निहिचै, जीवन, मृत संजीवन, सारग्राही, अवगुण ग्राही, अज्ञानी, राम विमुख, काल चेतावनी, उपदेश, जिज्ञासु, गुरु पारख, सिष पारख, गुरु सिष पारख, सन्मुख, बेमुख, गुरु विमुख, चितकपटी, देखा देखी, कांदर, सूरातन, टेक, देव पोति, कस्तुरिया मृग, मन, सती, बेहद, भक्ति, निरपष, पंथ, रस, सुधी मारग, सुमरन, दया, माया, कामीनर, जरणां, रहनी, सहज, बेहद्द बांझी ठेभीनर, चासावेली, निद्रा, मुरकी, निन्दा, साच ।

चंद्रायण अंग—(११) पृ० २२६—३४० तक—चन्द्रायण सरण, नाम सामर्थ्य, चन्द्रायण वीनती, विरह, परिचय, साअन, साधु संगत—बरकति, गुरु पारख, सिषपारख, गुरु, गुरु बेमुख, सन्मुख, विमुख, मन मुषी, अज्ञानी, काल, चेतावनी, सूरातन, विचार, साच, तृष्णा ।

सवैया—(१२)—पृ० ३४१—३५९ तक—गुरुदेव अंग, सरण, नाम महिमा, परिचय, विचार साधु, साधुसंगति, बरकत, विश्वास, तृष्णां, ठेभीनर, अज्ञानी, काल चेतावनी, सन्मुख, विमुख, गुरु बेमुख, अवगुणग्राही, व्यभिचारी, व्यभिचारिणी, कायर सूरातण, कामीनर, सांच ।

झूलना—(१३) पृ० ३६०—३६८ तक—गुरुदेव अंग, सरण, विचार, साध, साधसंगति, उपदेश, बरकत ।

(१४) (कवित्त) पृ० ३६९—४५१ तक—गुरुदेव अंग, सरण, नाम सामर्थ्य, परिचय, पतिव्रता, व्यभिचारिणी, विनती, अविश्वास, तृष्णा, निरपक्ष, निर्गुण उपासना, साधु असाधु, साधुसंगति, कुसंगति, साधु पारक, साधु महिमा, वाचक ज्ञानी, लक्षक ज्ञानी, अज्ञानी, भक्ष व वेष, काल, चेतावनी, मन, मनमुखी मनसुख, कायर, सूरातण, उपदेश, जिज्ञासु, सिषनिर्णय, सिष पारख, टेक, निर्णय, विचार हठयोग, भक्ति महिमा, माया, कामीनर, रहनी, जरणा, सांचा, माला, सांच ।

(१५) कुंडलिया—पृ० ४५२—४७७ तक—गुरुदेव अंग, गुरु परमारथी, लोभी गुरु, स्मरण, विनती परिचय, पतिव्रता, व्यभिचारिणी, कायर, सूरातण, विश्वास, बे विश्वास, विश्वास निरपेक्ष, बरकत, निर्गुण उपासना, साध, साध पारख, साध गति, साधसंगति, कुसंगति, अदया, उपदेश, जिज्ञासु, गुरु शिष्य,

शिष्यपारख, गुरु विमुख, राम विमुख, सन्मुख विमुख, अज्ञानी, विचार, निर्णय, विचार, कामीनर, काल, चेतावनी, मन, हठयोग, माया, कामीनर, निद्रा, साँच।

रेखता (१६) पृ० ४९८—६१० तक—गुरुदेव को अंग, भेषधारी, स्मरण, प्रेमप्रकाश, परिचय, विचार, सूरातण, सारग्राही, चेतावनी, असाधु, कामीनर, साँच, भेष, चाणक।

(१७) गुरु महिमा, नामप्रताप, शब्द प्रकाश, चेतावनी, मनखंडन।

(१८) शब्द समास पृ० ६११—६६६ तक—गुरु शिष्य गोष्ठी, ठग की परीक्षा, ज़िंद परीक्षा, पंडित, समाधि, लक्ष्य—अलक्ष्य, साचलक्ष्य, बेहुगति, काफरबोध।

गाने के पद

राग भैरव इत्यादि, गाने के भक्ति संबंधी पद, (१९) पृ० २६७—७३६ तक राग भैरव, रागललित, रागविभास, बिलावल, जैजैवंती, रागआसा, गौड़—ध्वनि इत्यादि सहित, वसंत, काफी, आसावरी, कल्याण, कनड़ी, कनड़ा, राग बहाग, मंगल, पंजाब, राग गिरनारी, राग सुवा, सोरठ, मारु, जैतश्री, धनाश्री, राग केदारी, जोग धनाश्री, आरती।

(२०) धर्मम विलास। पृ० ७३७—७५९ तक—धर्मम विलास ग्रंथ, गुरु शिष्य संवाद, संग महातम, संग पारस, सतपुरुष, असत पुरुष, मुक्त जन परीक्षा, जिज्ञासा साधु लक्षण।

(२१) सुखनिवास—पृ० ७६०—७८७ तक—ग्रंथ सुखनिवास, दातास्या, रचना, अभिमान, माया, मोह, सर्वज्ञ, उत्तम इत्यादि शब्दों की परिभाषाएं राम विमुख का निर्णय, राम विमुख का लक्षण, अपारम, कपटी और कुबुद्धि।

(२२) पृ० ७८८—८१३ तक—दादसमो प्रकरण, डरें क्यों, जतन क्या, जाल क्या, दुखदाई, विह्वल काल कब आवेगा?। वैराग्य बरकत ठीक क्या, अशुद्ध व्यवहार।

(२३) पृ० ८१४—८३४ तक—सूरापण, जिज्ञासु, संबोध, आत्म प्रबोध, सूर कायर।

(२४) पृ० ८३५—८५९ तक—ग्रंथ विश्वास बोध, आत्मशोध भवितव्य और विश्वास निरूपण।

(२५) पृ ८६०—८८६ तक—ग्रंथ जिज्ञासुबोध, आत्म प्रबोध, गुरु स्तुति और ग्रंथ संख्या निरूपण।

(२६) पृ० ८८७—९१६ तक—विश्रामबोध, सुध संबोध, ग्रंथ संख्या निरूपण।

(२७) पृ० ९१७—१०७४ तक—राम रसायन ग्रंथ, गुरु शिष्य पारख निरुपण ग्रानन्द प्रबोध सरूप, स्मरण ज्ञान धारण निरुपण, ग्रकिल, धारक, लक्षित सकार स्वर्ग प्रेम, ग्रध्यात्म ज्ञान, भोगत सकार, ग्रकिल विचार, चंचल तात सकार, विनति, सोनिकाज साख्या, ऐसा साख्या वाचिक तक सकार, ग्रसलाकी ग्राशा मुखो, कुदिशा, दोइ ग्रासे मिले, सो भेष दरसन मति, रोम, तृष्ण, संतोष, मुतलब सकार, हंस्यात सकार, दया, उपदेश, चेतावनी हारवीत, ग्रर्थात् माया मतलब हंस्या लोभ खंडन ग्रैार उपदेश चेतावनी, काम खंडन तिमिसंग, सुरापन, गुरु महिमा ग्रैार संग्या निरुपण। रामचरण की वाणी संपूर्ण।

राम जनजी की वाणी।

(२८) पृ० १०७४—११८४ तक—स्तुति, ज्ञान प्रबोध, प्रकाशबोध निरुपण, साधु लक्षण, साधु संग, गुरुशिष्य पारख भक्ति योग ग्रंत निरुपण, नाम महात्म्य वर्णन, वैराग्य विधि निरुपण, उत्तम भक्ति योग, ग्रद्वैत ज्ञान, प्रलय निरुपण, युग, वर्तमान युग, धर्म, नाम ग्रैार दृढ़ता, कुसंग त्याग, निज वैराग्य, गुरु महिमा निरुपण, ज्ञान प्रबोध ग्रंथ संपुर्ण।

(२९) पृ० ११८५—११९६ तक—ग्रंथ ध्यान बगोचो।

(३०) पृ० ११९७—१२६४ तक-सुमिरण सिद्धान्त, गुरु ध्यान की परिभाषा, स्मरण भेद, समता, मनजेर, मन उपदेश, राम गुरु से विनती, तीन गुणों से पार होने का साधन भक्ति, प्रीति, प्रगिभाव, उत्तम विचार, जगत प्रभाव चेतावनी, साधु लक्ष्य, उपदेश, जिज्ञासु मति, कुसंग, कुवचित सकार, फोकटक (करनी बिन कथन), गुरुकृपा, शिष्य दीनता, सुमिरण सिद्धान्त पूर्ण।

(३१) पृ० १२६५—१८८८ तक—ग्रंथ श्रवण सार—स्तुति, गुरुदेव स्तुति, विचार माला, संत स्तुति (पहला विधान), गुरु मिलाप महिमा, गुरुदेव की विशेषता, एकादशा का प्रसंग (दूसरा विधान) गुरु लक्षण निरुपण (तीसरा विधान) गुरु कसोटी, शिष्य शुद्धात्मा, गुरु सामर्थ्य, शिष्य ग्रशुद्धता, कृतज्ञी, मनाधीन, शिष्य प्रतापीक, (चैाथा विधान-शिष्य परीक्षा); सहकाम भक्ति निरुपण (पान्चवा विधान) किसको किस रूप की भक्ति करनी चाहिए (छठा विधान)। निर्गुण निजमूल भक्ति निरुपण (सातवां विधान)। नवधा भक्ति वर्णन श्रवण, कीर्ति स्मरण पादसेवन, ग्रर्चन, वंदन, दासभाव, साख्य भाव, नैवेद्य, ग्रापा ग्रर्पण किया उसका भेद (ग्राठवां विधान)। विकार, सुमिरण नाम निरुपण, रामनाम की सर्वोच्चता, स्मरण टेक, पतिव्रत निरुपण (दशवां विधान) नाम महिमा निरुपण, (ग्यारहवां विधान)। सुमिरण नाम माहात्म्य निरुपण (बारहवां विधान) उत्तम भक्ति ज्ञान निरुपण (तेरहवां विधान)। बंध, मोक्ष, ग्रशुम वासना

निरुपण, (चौदहवाँ विधान)। जग दूषण, वैराग्य निरुपण, (पंद्रहवाँ अध्याय)। धजाचोक वैराग्य, अभ्यारी भवरवृत्ति निरुपण, (सोलहवाँ विधान)। संन्यास योग, शुद्ध वैराग्य निरुपण (सतरहवाँ विधान), लक्ष्य अलक्ष्य वैराग्य वेष निरुपण (अट्ठारहवाँ विधान)। भेष की आड़ में भिक्षा मांगने वालों की गति, कदरज स्वरूप, निंदित धन से उत्पन्न अग्रह अनर्थों का वर्णन (बीसवाँ विधान) सतसंग महिमा निरुपण, साधु लक्षण निरुपण (इक्कीस व बाईसवाँ विधान)। संत प्रसाद—महिमा निरुपण, जीव दया निरुपण, (तेईसवाँ विधान)। अधर्म कार्य, दास लक्षण (चौबीसवाँ विधान) राम विचार कुसंग त्याग निरुपण (पच्चीसवाँ विधान), कुसंग लक्षण निरुपण (छब्बीसवाँ विधान) परधन परत्याग, त्याग, कर्म-धर्म निरुपण (सत्ताईसवाँ विधान)। काम खंडन निरुपण (अट्ठाईसवाँ विधान) शील, सुधर्म निपरूण (उनतीसवाँ विधान)। माया खंडन आशा लोभ निरुपण (तीसवाँ विधान)। माया खंड तत अतत निरुपण (इकत्तीसवाँ विधान), चेतावनी काल की गति, गृह कूप का वर्णन, (बत्तीसवाँ विधान)। मन प्रसंग (तेतीसवाँ विधान)। बाहरी भ्रम, भूमि भेद निरुपण (चौतीसवाँ विधान), भ्रमभेद खंडन, मनसा तीर्थ निरुपण (पैंतीसवाँ विधान)। साधु महिमा निरुपण (छत्तीसवाँ विधान)। साधु पारख निरुपण (सैंतीसवाँ विधान)। लक्ष्य अलक्ष्य पंडित परीक्षा निपरूण (अड़तीसवाँ विधान)। योगी लक्ष्य, अष्टांग योग, विचार परीक्षा, वमक परीक्षा, शील परीक्षा, संतोष परीक्षा, निरवैर परीक्षा, सहज परीक्षा, शून्य परीक्षा, समाधि, सिद्ध, अणिमादि के लक्षण, जोगी के गुण (उनतीसवाँ विधान—दर्शन लक्ष्य निरुपण)। रोजा व्रत निषेध, भूत खंडन, महंत का लक्षण, राम नाम महिमा (चालीसवाँ विधान)। निज वृत्त भेद (इकतालीसवाँ विधान)। अर्वंग सार ग्रंथ संपूर्ण।

(३२) साधुवर दूलह राम जी के फुटकर शब्द।

पृ० १८८९—१९७१ तक स्तुति (निरंजन स्तुति) गुरुदेव स्तुति, साखी गुरु देव का अंग, स्मरण का अंग, नाम महात्म्य, नाम सामर्थ, विनती जीवन का अंग, सारग्राही का अंग, विश्वास का अंग, जन देह जीव का अंग, साधु संगति का अंग, कुसंगति का अंग, ज्ञानी अंग, अज्ञानी का अंग, निर्वासन का अंग, पतिव्रता का अंग, व्यभिचारिणी का अंग, सूरातन का अंग निश्चय का अंग, सती का अंग, बेहद का अंग, अदली का अंग, मृतक का अंग, निर्पक्ष का अंग, टेक का अंग, रस अनरस का अंग, अकल का अंग, चंदरायण गुरु देव का अंग, (गुरु देव का अंग संपूर्ण)। स्मरण, चन्द्रायण विनती का अंग जन कुजस का अंग, विरह का अंग, प्रेम प्रकाश, विचार, साथ, वरकन, पतिव्रता

व्यभिचारणी, विश्वास, अविश्वास, संतोष, साध संगति, कुसंगति, असाध का अंग, दया का अंग, ज्ञानी, टेक, उपदेश अहंता, काल, चेतावनी, सांच, भरम विध्वंस, (सवैया गुरु देव का अंग) । सरण विनती, सरअंग, वरकत, विश्वास का अंग, चेतावनी का अंग, काल का अंग, (झूलना) गुरु देव का अंग गुरुमहिमा, सरण, नाम महिमा, प्रेम प्रकाश, वरकत, निवृत्ति-प्रवृत्ति, साधु महिमा, साधु साषी भूत का अंग, सत संगति का अंग, उपदेश का अंग, मन का अंग, चेतावनी का अंग, काल का अंग, सकलि का अंग, वे सकलि का अंग, दया अदया, फुटकर, मन हरण और कुंडलिया इत्यादि ।

(३३) पृ० १९७२—१९८६ तक—ग्रंथ राम पद्धति, गुरुवन्दना, गुरु की मेघ से समता, गुरु द्वारा ब्रह्मोपदेश वर्णन, रामनामोच्चार महिमा, शरीर की सजावट का खंडन ।

(३४) पृ० १९८७—२०१९ तक—ब्रह्म समाधिज्ञान योग ।

(३५) पृ० २०२०—२०५३ तक—नवल सागर—स्तुति, उपदेश, गुरुदेव का उपयोग, कलयुग निरूपण, नाम का निश्चय, नाम का प्रताप, रामनाम में प्रीति, भक्ति, सार असार विचार, भजन का प्रभाव ।

(३६) पृ० २०५४—२१३६ तक—यथार्थ बोधः—वंदना—जगन्नाथ की, रामचरण की महिमा, तीको ब्यौरा, विप्रलक्षण राजा लक्षण, आत्म कथा—अठारह सै सत्रह की साल, ऐक ऐको विकत हाल ॥ देव करण ताहां दरसण पायौ ॥ सुनिजन वचन मोद मन आयो ॥ पाखंड निषेध, जर्गा मन गति, नारि लक्षण, काम गति, सन्मुख विमुख, अस्ताइक, विश्वास, पद्गलि, भक्ति, आखिरै लोभ करै सो गति, व्यभिचारिणी, हित पदार्थ, नव संध्या का लक्ष्य, चेतावनी, निंदक की चाल ।

(३७) पृ० २१३७—२१६७ तक—गोपाल कृत प्रहलाद चरित्र—हिरण्यकश्यप को सनकादि का श्राप, उसके पापों से पृथ्वी का कंपित होना, सुर असुरों में बैर होना, हिरण्यकश्यप का तपस्या को जाना, इन्द्र को उसकी स्त्री का हर लेना, नारद का आदेश, इन्द्र का कथन कि इसके गर्भ के बालक का वध किया जायगा, इसका नहीं । इस पर नारद का कथन की इसके गर्भ में भक्त है, ऐसा मत करो, इस पर इन्द्र का अविश्वास, नारद का उपदेश, साधु लक्षण, इन्द्र का उसकी स्त्री को नारद के थान में रखना, नारद का उसे उपदेश सुनाना । बच्चे को प्रबोध, हिरण्यकश्यप का वरदान लेकर घर लौटना, उसकी स्त्री का भी आगमन, प्रहलाद जन्म, पिता द्वारा उसका पढ़ने को भेजना, उसका भक्ति की ओर मन होना, पिता का कोप, भक्त को नाना प्रकार के कष्ट, नरसिंह अवतार, प्रहलाद का भक्ति वर मांगना, नरसिंह का तथास्तु कथन ।

(३८) पृ० २१६८—२१९९ तक—जगन्नाथ कृत, मोहामरद राजा की कथा—नारद का भ्रम, परमात्मा द्वारा उसका निवारण, मोहामरद नृप की कथा सुनना, साधुओं की बड़ाई, ईश्वर द्वारा स्वयं साधुओं का ध्यान करने का कथन, नारद का मोहामरद नृप के दर्शन के लिये गमन, नारद के वहां पहुंचने पर मुनि का योगमाया उत्पन्न करना, और उसके मोहजित होने की परीक्षा, नारद का परिचय लेना और नृप के पुत्र का मृतक होना, दासी का उपस्थित होकर राजा के पास चलने की प्रार्थना, इस पर मुनि का उनके घर में शोक बताना, दासी द्वारा उसका खंडन, पुनः रानी का मुनि के पास आना और चलने की प्रार्थना और मोह खंडन के विषय में कुछ उदाहरण उपस्थित करना, मुनि का नृप के पास आना और पुत्र शोक के कथन में उदाहरण उपस्थित करना, राजा का मोह खंडन करना, सत्यादिक नृप की कथा सुनाना, चार भाइयों की कथा सुनाना, दो कुत्तों की कथा, एक कुम्भकार के पुत्र की कथाओं द्वारा पुत्र कलत्रादि का मोह खंडन, नारद की तृप्ति, नारद का उस लड़के की स्त्री के पास आना, उसका शिष्टाचार, नारद का उसके पति के मृतक होने का प्रसंग छेड़ना, उसका ज्ञान कथन और सीतादि के उदाहरण देकर कर्म की प्रधानता बतलाना, नारद का नृप की वंदना करना और ईश्वर के पास जाकर उनकी स्तुति करना।

(३९) पृ० २२००—२२०८ तक—राम सागर ग्रंथ, नैमषारण्यक तीर्थ में सौनिक का सब मुनियों से प्रश्न करना कि कहां हरि कैसे मिलते हैं? सब का चुप रहना, नारद आगमन, सौनिक का नारद से भी वही प्रश्न करना, मुनि का शिव जी द्वारा सुना हुआ राम नाम का महत्त्व बताना, जो शिव जी ने कभी पारवती को सुनाया था।

(४०) पृ० २२०९—२२२० तक—कृष्ण उद्धव संवाद—कृष्ण का कथन कि श्राप के अनुसार यदुकुल का विनाश होना है, मैं भूमि के भार को उतारही चुका अतः मैं भी अंतर्धान होऊंगा, तुम मोह मदादिक को त्याग ईश्वर भजन में संलग्न रहना, उद्धव का कथन कि महाराज यह मोहजाल क्योंकर दूर होगा? इस पर कृष्ण का दत्तात्रेय और यदु का संवाद सुनाना, यदु का प्रश्न कि महाराज आप में इतना ज्ञान कैसे उत्पन्न हो गया, अवधूत का उत्तर कि मेरे बहुत से गुरु हैं—क्रमशः गुरुओं के २४ नामों को लेकर प्रथम आठ की कथा सुनाकर उनसे गुण ग्रहण करने का कथन (धरनी, पवन, गगन, पानी, अनल, चंद, रवि, कपोत)।

(४१) पृ० २२२०—२२२७ तक—सूकर, कूकर, अजगर, सागर, मधुकर, हस्ती, मधुमाखी, मधुहरा, पिंगला (वेश्या) सबह गुरुओं की कथा।

(४१) पृ० २२२८—२२३२ तक—कदर पंछी, बालक, साँप, स्त्री, मकड़ी भृंगी कीट, चौबीस गुरुओं की कथा सुना कर शरीर का नश्वर सिद्ध कर परमात्मा में स्नेह लगाने का वर्णन।

(४३) पृ० २२३३—पृ० २२४६ तक—भिक्षुक गीता कथन—भागवत के आधार पर—एक ब्राह्मण का विरक्त होकर के भिक्षुक होना, लोगों का उसे तंग करना और उसका ज्ञानोपदेश।

(४४) पृ० २२४७—२२५३ तक—ऐलव गीतव व्याख्यान। इन्द्र का उर्वसी के विरह में दुखित होना, फिर अपने अज्ञान पर मोहित होकर ज्ञान उत्पन्न होना।

(४५) पृ० २२५४—२२६२ तक—जड़भरत की गाथा—राजा भरत का विरक्त होकर बन में चला जाना। वहाँ पर एक हिरन-शावक के साथ दया के संसर्ग से शरीर छोड़ कर मृग हो जाना, पश्चात मृग शरीर के त्यागने पर एक ब्राह्मण के यहाँ जन्म लेना, पिता के पढ़ाने लिखाने पर न पढ़ना, उनका नाम जड़ भरत पड़ना, भरत का देवी को बलि दिया जाना, देवी द्वारा भरत की स्तुति और बलि को न ग्रहण करना, एक राजा का मोह दूर कर भरत का उसे ज्ञान देना ग्रंथ की समाप्ति।

No. 376. Sarasadāsaji ki Bani by Sarasadāsa of Vṛindāvana. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—8 × 7 inches. Lines per page—48. Extent—336 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit—Babū Śyāma Kumara Nigama, Rāe Bareli.

Beginning—श्री कुंज विहारी जी। अथ सरस दास जी की बानी लिख्यते ॥ कवित्त ॥ रसिक सिरमौर श्री हरिदास स्वामी ॥ विविधि वर माधुरी सिंधु में मगन मन बसत बृंदा विपुन वर सुधामी ॥ महल निजु टहल में महल पावै न कोऊ छत्र पतिरंक जिते करमकामी ॥ रसिक रस रीति की रीति सों प्रीति निति नैन रसना रसत नामनामी ॥ हदै कमल मधि सुख सेज राजत दोऊ ॥ रसिक सिर मौर श्री हरिदास स्वामी ॥ १ ॥

अनन्य मति धनि श्री हरिदास स्वामी ॥

जमुन कलकूल कलकेलि कलकल्प तरु तीर छवि और बसे वर विश्रामी ॥ मंजु नव कुंज सुख पुंज गुंजै सुनत सरस अनुराग गुंनराग धामी ॥ पछि लखि लखि जे अलखि लखन सुलछ निरपि निरपेछ लता ललित नामी ॥ नैन पुतरीनि ऊपर सुख सेज कोड़त दोऊ ॥ अनन्य मति श्री हरिदास स्वामी ॥

End—मदन दवंत सुष पुंज गुंज पनि हुंजन बेन बल्यो सुषदाई । भूषन बसन व्यसन प्यारे प्यारे मिलि करत केलि मन भाई ॥ अंग अंग सौ अंग रंग छवि उपजति मानौं सुरंग बोड़नी दुरंग उढाई ॥ करत विहार विहारी विहारनि सरसदासि सेवत सुख ध्याई ॥ ३७ ॥ विमल पुलिनि मंडल मधि राजत नागरी किशोर मोर मुकुट भूषन दुति काछनी बनाई ॥ नृतत रास रंग भरे उरपति रव सुलप लेन ताल सचित लाग डाट पति गति मन भाई ॥ अपने अपने रंग गावति मिलिवत तान तरंग बहु सुबल्यो सनमुष सुष भृकुटी नैन नचाई ॥ करन सौं कर जोरत हंसि हंसि रीझि उर लागे लटकत तन मन मगन सरस दासिनि सुष्दाई ॥ ३८

भूलें कुल डोल दोऊ फूल भरे ।
फूल बसन फूल आभूषन हंसनि दसन ये फूल झरे ।
फुलयो फूल मनोज मोज रति कसि कसि अंगन चोज करे ॥
अलिगुन गावै फूल बढ़ावै रीझि भोज सरस रीति दरे ॥ ३९ ॥
इति श्री सरसदास जी की बानी रस की संपूरन ॥

Subject.—१—हरिदास जी के प्रति वंदना ।
२—नागरीदास प्रति भक्ति वर्णन ।
३—श्रीकृष्ण के भक्ति विषय के स्फुट पद ।
४—सिद्धांत के कवित्त ।
५—७—श्रीकृष्ण के कोमल भाव परम उज्वल शृंगार का वर्णन ।
८—श्रीराधाकृष्ण का विलास वर्णन ।

No. 377. Virahasāgara by Bābā Sarajudāsa of Kotawā (Bārā Bañki). Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—8 × 6 inches. Lines per page—20. Extent—125 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of Manuscript—Samvat 1938 or A. D. 1881. Place of deposit—Paragidāsa, Village Jadawāpur, Post Office Baranāpur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—जैसे घन नामी सुनो सतनामी अंतरजामी सत साई ॥ सब सुनलायक रुचि फलदायक प्रगट जन ताई ॥ बहु बालक साथे महिरज हाथे लावत माथे वंदि छोरा ॥ पायन पैजनियां पहिरे कौधनियां सोहत करधनियो कत लोरा ॥ सतगुरु अंगनाई बैठे यकठाई पेलत साई रंग नीला ॥ मचल पसारो तकि महतारी सुनी मल्हारी करि लीला ॥ बालक अयिमति रूप किरति अनूपा अघ हरना ॥ प्रभु कीरति पावन सत मन भावन जग कलुष नसावन है तारन

तरना ॥ हरिजन कारन असुर संघारन पतित उधारन सत सामो ॥ संतन अभि-लाषत कीरति भाषत जन मन राषत निहकामो ॥ सव बालक संगा चढ़े तुरंगा फिरत उमंगा कर क्रीड़ा ॥ जेहि दुषिया जानत सरनै आनत तेहि सनमानत दै घोड़ा ॥ करै प्रतिपाला बकसि दुसाला दीनदयाला छिन माहीं ॥ भक्ति नाम रसाला भै मतवाला नैन कराला कछु भै नाहीं ॥

End—दोहा ॥ रोवैं जिव जंतु पंछी पसु संवरि संवरि गुनगाथ । आपु समान्यो सुन्य मा मोहि करि गयो सनाथ ॥ सोरठा ॥ सो मंडफ बनवाइ दीन्ह छोटानो दास तव । चरन कमल मन लाइ हिरदे मा विस्वास करि ॥ त्रोटक छंद ॥ संतन को दाया तव कहि गाया यह धरजो । सुने नर नारी कहउं पुकारी ले मरजी ॥ भक्तन पर दाया किहे रहैं छाया अस परतापी रहे साई । मै कृपा निधाना अंतर ध्याना अवहुं हरै तन अघ भाई ॥ वह देषि समाधी तरै अपराधी तजि मोहमदा ॥ वह्म द्वारो धाये दरसन पाये तरे तुरत रहे पाप लदा ॥ जे करि कामन धावै ते तुरतै फल पावै अस परतछ समाधी ॥ जे जगत भुलाने ते आइ तुलाने कटिगे तेहि भव ब्याधी ॥ दोहा ॥ अवहुं तवहुं किरपा किहिनि वैसे कृपा निधान । सरजू का यह दीजिये गुन भजे धरि ध्यान ॥ दोहा ॥ इन्द्रदवन गुर साहेब भये प्रगट जगत धरि देह । प्रभु सनमानि लघु तात तेहि दीजे नाम सनेह ॥ चौ० कोटवा धाम सत गुर मन भावन । अवर न टट वट छांह सुहावन ॥ कूप कुटी वन विटप सोहावे । मेला हाट देषि मन भाए । मंडप दरस पूरि अभिलाषा । पछिम द्वार बैठि तहं भाषा ॥ इति श्री विरह सागर बानी सरजू दास को संपूरन सुभमस्तु पैाषमासे शुक्लपछे तिथै ११ श्री संवत १९३८ जो प्रति देषा सो लिषा लेषक परमानंद कवि वसत सरैयां ग्राम । जो प्रति देषा सो लिषा सिद्ध करै श्री राम ॥ राम राम राम—

Subject—इस पुस्तक में बाबा जसकरन दास का मृत्यु काल वर्णन है । इसमें उनके गुणों का स्मरण करके विरह प्रगट किया गया है ।

No. 378. Mahābhārata Aswamedha Parva (Jaimini-purāṇa) by Saraju Rāma of Awadha. Substance—Country-made paper. Leaves—308. Size—$12\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—14. Extent—8,085 Anushṭupa Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1805 or A. D. 1748. Date of Manuscript—Samvat 1885 or A.D. 1828. Place of deposit—Paṇḍita Śyāma Bihāriji Miśra, Golāgañja, Lucknow.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ संतज्जीलो लसति वारिद रम्य गात्रं, विद्युत प्रभावर विभूषितमम्बुजाक्षं। कंदर्प्प कोटि सुभगं व्रज सुंदरीणां, नेत्रोत्सवं भजतु नंदकिशोरमीशं ॥ १ ॥ मज्जे मुनो प्रमतिभिर्मुनिभिर्विचित्रं, माख्यान मद्भुत तरंग दितंजपूर्वं तद्भाषया सत्सुराम प्रसिद्धिनामा, धर्मास्वमेध मिहरम्यतमं तनोति ॥ २ ॥ सोरठा—गुण गन ज्ञान निधान मंगल मय सुखमा सदन। कलि विष तुल कृसानु एक रदन करिवर बदन ॥ ३ ॥ जाहि प्रमंगल मूल सुमिरत गणपति गौरि सुत। जरहि व्याल जिमि तुल विघ्न व्याधि संकट सकल ॥ ४ ॥ छंद—नमो गौरिजा ज्ञान रूपं गनेसं। नमो मोह मज्ञान नासं दिनेसं ॥ नमो धूम्रकेतुं गनेसैक दंतं। नमो विघ्न छेदं धरं परसु हस्तं ॥ नमो बुध्यकांतं नमो गौरि पुत्रं। नमो निर्विकारं नमो चारु वक्र ॥ नमो बुध्य बुध्यं नमो संत रूपं। नमो ज्ञान गोपार सिध्यं सरूपं ॥ भजेहं गणेशं गुणं ज्ञान गेहं। नवोनार्य वर्णं सुभं सुभ्र देहं ॥ करि-न्दाननं सोभितं इन्दु भालं। चतुर्बाहु कंठं चलं चारु मालं ॥

End—छंद—सुख पाइहै सुनि सुनत श्रोता जिन्हे प्रिय हरि जस महो। परसिद्ध जैमुनि की कथा प्रति कूर कविता की कहो ॥ बल बुद्धि विद्या हीन हनि मति मज्ञ प्रौगुन मय महा। श्री गुरु कृपा यह चरित कछु निर्मित सो नियमित कर कहा ॥ दोहा—विशिष व्योम वसु बुध्य सुकुल षष्टमी फाग। पुरन भइ श्री गुरु कृपा कथा युधिष्ठिर राज ॥ (निर्माणकाल सं० १८०५ वि०)। इति श्री महाभारथ पुराणे अश्वमेधि पूर्वं सूत सौनिक संवादे जैमुनि पुराणे जज्ञ कुनो राजा युधिष्ठिर समाप्तं षट त्रिंशतमोऽध्यायः ॥ दोहा—वन रिपु ता रिपु तासु रिपु तारिपु रिपु असवार। सो तोरी रक्षा करै घरी घरी सब बार ॥ मिदं पुस्तकं लिख्यतं ललितादीन पाण्डे स्वयं संवत १८८५ वि० भाद्रमासे कृष्ण पक्षे पार्वणि त्रियोदश्यां चंद्रवासरे शुभम् ॥ तैलं रक्षे जलं रक्षे रक्षे शिथिल बंधनम्। मूर्ख हस्ते न दातव्यं मेते वदति पुस्तकम् ॥ राम राम राम ॥ इति ॥

Subject—पृ० १—५ तक प्रार्थना, मंगलाचरण, विष्णु, गणेश, देवी, शिववन्दना, वाणी, गुरु स्तुति वर्णन। पृ० ६—११ तक भीष्म, युधिष्ठिर और व्यास संवाद, युधिष्ठिर का वैराग्य होना, और व्यास का समाधान करना तथा उसके लिये विधि बतलाना। पृ० १२-१९ तक यज्ञ मंत्रणा करना कृष्ण आदि मिल कर पृ० २०-३१ तक। भीम और अर्जुन का धन और घोड़े के लिये यात्रा करना, जीवनाश से मैत्री होना और घोड़ा लाना। पृ० ३२—३८ तक। यज्ञ को तय्यारी होना, जीवनाश सम्मिलन और हस्तिनापुर आना। पृ० ३९-४७ तक। भीमसेन का द्वारका जाना और श्रीकृष्ण जी के साथ देवकी यशोदादि को लाना। पृ० ४८—५७ तक अनुसाल का षड्यंत्र रच कर युद्ध करने का प्रयत्न करना, और घोड़ा

छुड़ाना, और युद्ध होना, वृषकेतु का अनुसाल को पकड़ना। पृ० ५८—६३ तक घोड़ा छोड़ना, अर्जुन, अनुसाल, जीवनाथ, वृषकेतु आदि का साथ होना पृ० ६३-७० तक महुरा के राजा नीलध्वज के यहाँ जाना और उसका घोड़ा पकड़ना नीलध्वज का युद्ध वर्णन, अर्जुन का अग्निदेव की स्तुति करना, अग्नि का नीलध्वज को कन्या से विवाह वर्णन पृ० ७१-७३ तक। नीलध्वज का युद्ध वर्णन वभ्रुवाहन की कथा। पृ० ७४—७८ तक। एक स्त्री को मुनियों का भोजन शूकर को देने से शापवश पत्थर हो जाना और प्रार्थना पर अर्जुन के पद छू कर तरने का वरदान देना, शिला से घोड़ का चिपकना, अर्जुन का छुड़ाना—पृ० ७९—८७ तक—घोड़ा का हंसध्वज के यहाँ पहुँचना, सुधन्वा के सत्य की परीक्षा तप्त कड़ाही में कूदना, द्विजों का समाधान होना पृ० ८७—१०० तक—सुधन्वा पांडव संग्राम वर्णन, वध होना। पृ० १००—१०७ तक सुरथ पांडव युद्ध वर्णनम् व वध होना, पृ० १०७—११० तक। एक सरोवर पर जा कर घोड़े का सिंह होना, अर्जुन को प्रार्थना पर फिर घोड़ा बन जाना वर्णन पृ० ११०—११४ तक। प्रमिला का घोड़ा पकड़ना, उसका युद्ध को प्रस्तुत होना, अर्जुन के हार को प्रतिज्ञा पर घोड़ा छोड़ना, पृ० ११४—१२० तक भेषण राक्षस से युद्ध व वध वर्णन और माया का नाश करना—पृ० १२०—१३६ तक—घोड़े का मनिपुर में जाना अर्जुन का पुत्र वभ्रुवाहन राजा था, चित्रांगदा मा थी, वभ्रुवाहन का युद्ध वृषकेतु प्रद्युम्न आदि को युद्ध में हराना, अंत में अर्जुन का पुत्र मानना और वभ्रुवाहन का अपमान जो अर्जुन ने किया भूल जाना, पृ० १३७—१४० तक। लवकुश कथा वर्णन। पृ० १४१—१४८ तक जानकी वन गमन वर्णन। पृ० १४९—१५९ तक। लवकुश जन्म कथा वर्णन व विद्याध्ययन शिक्षा वर्णन। पृ० १६०—१७३ तक लवकुश का अश्व पकड़ना और शत्रुघ्न से युद्ध होना पृ० १७४—१८६ तक। लवकुश का लक्ष्मण, सुग्रीव अंगद विभीषण सब से युद्ध वर्णन। पृ० १८७—२०० तक लवकुश का भरत से युद्ध वर्णन। पृ० २०१—२१४ तक। लवकुश सीता का राम से मिलना, सब का जी उठना और सीता जी का अयोध्या में कुमारोंसहित आना, पृ० २१४—२२४ तक। अर्जुन और वभ्रुवाहन का युद्ध होना तथा अर्जुन का वध वर्णन। पृ० २२४-२३३ तक—चित्रांगदा का दुःखित होना और पाताल से अमृत लाने को कहना, वभ्रुवाहन का जाना और नागों से युद्ध होना—पृ० २३४—२४० तक। सिर का खो जाना, वभ्रुवाहन का संजीवन रत्न लेकर आना कृष्ण का कुंती, भीम आदि समेत आना, अंत में दुःखित हो वभ्रुवाहन ने अपना सिर दे दिया तब श्रीकृष्ण ने सब को जीवित कर दिया। पृ० २४०—२४७ तक। ताम्रध्वज का घोड़ा पकड़ना, मयूरध्वज का सेना सहायतार्थ भेजना व अर्जुन का मूर्छित होना। पृ० २४८—२६० तक कृष्ण जी का विप्र भेष से मोरध्वज की

परीक्षा करना और वरदान देना और सत्कार पाना—पृ० २६१—२६७ तक। चंदेरी के चन्द्रहास राजा के यहां आना, घोड़े का तैर जाना, सेना का पीछे रह जाना, अर्जुन को नारद का मिलना, नारद का चन्द्रहास की कथा कहना और कुलिंद के यहां कुमार का आना—पृ० २६७—२७६ तक। चन्द्रहास की वीरता व उदारता का वर्णन। पृ० २७७—२८९ तक। चन्द्रहास की कथा व इतिहास तथा तप वर्णन पृ० २९०—२९४ तक घोड़ा का जयद्रथ के पुत्र के देश में जाना, अर्जुन का नाम सुनकर मर जाना, और कृष्ण का जिलाना वकदालभ्य का सम्मिलन वर्णन—पृ० २९५—३०३ तक—अश्वमेध यज्ञ में राजाओं का आना और आनन्द पूर्ण होना। पृ० ३०४—३०८ तक। वकदालभ्य को दान देना, सब को बिदा करना, युधिष्ठिर का कृष्ण की स्तुति करना—विप्रों को दान देना—

No. 379 (a). Kavitta Ratnākara by Senāpāti. Substance—Country-made paper. Leaves—31. Size—10 × 7 inches. Lines per page—72. Extent—1,674 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character - Nagari. Date of Composition—Samvat 1706 or A. D. 1649. Date of Manuscript—Samvat 1884 or A. D. 1827. Place of deposit— .

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ कवित्त रत्नाकर लिष्यते ॥ परम जोति जाको अनंत रहि रही निरंतर। आदि अंत अरु मध्य गगन दश दिशि बहि अंतर॥ गुन पुराण इतु साह वेद वंदीजन गावत। धरत ध्यान अनुवरन पार ब्रह्मादि न पावत। सेनापति आनंद घन रिद्धि सिद्धि मंगल करन। नायक अनेक ब्रह्मांड को एक राम संतन सरन॥ कवित्त॥ पाई जो कविन जल थल जप तप करि विद्या उर धरि परहरि रस रोसा है॥ ताकि कविताई को सुजस सुपग्रु चाहतु है सेनापति जानत जो अक्षर न घोसा है॥ पाय कं परस जाके शिलाहू सचेत भई पायो बोध सार सारदाऊ को भरोसा है॥ और न भरोसा जिय परत परोसा ताही राम पद पंकज को पूरण भरोसा है॥ भूप सभा भूषन छिपायो पर दूषन को बोल एक दूषन कहेन देह पार के॥ राज महराजनि पूरे सकल कलानि सेनापति गुलषानि औरहू को गुणदार के॥ तुमही बताई कछु कीन्हीं कविताई तामे होइ जोगताई दुचिताई के सुभाइ कै॥ बुद्धि कै बिनायकै गुसाई कवि नायकै सो लीजिये बनाय के कहत शिरनाइ कै॥

End—अथ गूढ़ार्थ—ज्योतिस ताते पाइये संतति नीको होइ। सेनापति जो तप करै संतति पावे सोइ॥ सेनापति जो काभिनो अंधी कछू लषैन॥ कवि नव माने कौल से ताही तोके नैन॥ सेनापति बल्यो तुरंग उरग दमन को माइ। तीन

पाइ को भांति ज्यों चलत चारह पाइ। पाइ एकसी साठि है तिनमें एक चलैन। ताको समवाजो चले सेनापति हारैन॥ चो० ॥ आदि अंत जाके है आदि न अंत न जाके सोचे आदि देह विनाह होतह जात निशि दिन सोचि कहीं और बात॥ दोहा—जिन घाटी सिर धार है कोन्हो धरो अनूप॥ सेनापति धारद धरी त्रिय पालका स्वरूप॥ संवत सत्रह से छमें १७०६ सेइ सियापति पांय सेनापति कविता सजी सज्जन सजी सहाइ॥ कवित्त॥ पूरो पंडिताई कविताई परवीनताई पाई शुभ साधुताई कीजो अब मानिहै॥ अति गुणवान शीलवान सब संतन को पति पर निंदा को सुहाति है सुहानिहै॥ कहा कहां जैये काहि काहि समुझैये॥ आप सुनो है गुनीन सनमानि है सो मानिहै॥ यथै कवि चित्र सेनापति के कवित्त जानि आनिहै सो आनिहै न जानि है न आनिहै इति श्री कवित्त रत्नाकर सेनापति कृते चित्र काव्य वर्णन नाम षष्ट स्तरंगः॥ संवत १८८४ चैत्र शुक्ल सप्तम्यां भौमे लेषि वकसोराम कान्यकुब्ज पुरे॥

No. 370 (*b*). Kavitta Ratnākara by Senāpati. Substance—Country-made paper. Leaves—63. Size—9×6 inches. Lines per page—30. Extent—1,418 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Prose or verse—Verse. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhakura Ganesha Siṁha, Village Karailā, Post Office Phakharpur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ लिषितं कवित्त रत्नाकर सेनापति कृत॥ सुरतरु सार को सवारो है विरंचि पंचि कांचन षचित चिंतामनि के जराइ को॥ रानो कमला को पिय आगम कहन हार सुरसरि सषो सुष दैनो प्रभु पाइ को॥ वेद में बषानो तिहुं लोकन की ठकुरानी सब जगजानो सेनापति के सहाइ को। दुष दुख दंडन भरत सिर मंडन वे वंदो अघ षंडन पराऊं रघुराइ को॥ १॥ पाइ औ कविनु जल थल अनु तपु करि विद्या उरधरि परिहरि रस रोसा है॥ ताहो कविताई को सुजस्यु यसु चाहतु है सेनापति जानतु जु बहुक न पेसा है। पाइके परसु जाको सिलाउ सचेत भई पायो बोध सार सारदाहू को धरोसो है और न भरोसा जिय आवत परोसो ताहो राम पद पंकज को पूरन भरोसा है॥ मुडन को समन सुमन एकताको जाको तोछन विमल विधि बुधि है अथाह की। कोई है अमंग कोई पदु है सभंग सोधि देपे सब अंग सम सुधा के प्रवाह की आदि॥

End—वारन लगाहो पुकार एक बार ताको वारना लगाई रछि पार मगनन को। सिव सिरताज तुम आपु महाराज बैठि रहे तजि लाज काज मो गरीब जन के॥ सेनापति राम भुअपाल आपु जानि जिय हूजिये सरन असरन के।

आइ हरि राइ ह्वै सहाइ आइ दुरि करो त्रास लछिमन सु भैया लछिमन के।
आदर विहीन ताहि परद्वार दीन जाइ होतु है मलीन बात सुनि पनवात की।
सदा सुख दीत राम नाम सुनि लीन रहै कोइ चित चिंतन करत प्रान गात को॥
आसर मोर कैा करत काहू ठौर को जु सेनापति एकु हरिराइ छया तको।
जाके सिरपर आजु गजबु है महाराज ताहि कहो कसो परवाहि कैान बात को॥
तुम करतार जग रछा के करन हार सज्जन हार मनोरथ चित चाहे के।
यह जिय जानि सेनापति हो सरन आयो हजिये सरन महापाप ताप दाहे के॥
जो कहु कहो कैसे क्रूर मन तैसे हम पातक हैं सुकृति भगति रस लाहे के॥
आपने करम करिहै। हो निरवहै गे। यहो हे। करतार करतार तुम काहे के॥

No. 380. Jaimini Purāṇa by Sewadāsa of Nawaranga Nagar. Substance—Country-made paper. Leaves—540. Size—$10\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—8. Extent—3,240 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1700 or A. D. 1643. Date of Manuscript—Samvat 1855 or A. D. 1798. Place of deposit—Paṇḍita Bhawānī Bhiruji, Village Uttaragāma, Post Office Aliganja Bāzāra, District Sultānpur.

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री गुरु चरणकमलेभ्योनमः ॥ गोविंदाय-नमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः ॥ अथ जैमुनि पुराण लिख्यते ॥ दोहा ॥ बंदो ॥ गणपति सरस्वती पुजैा गुर के पाय ॥ संतन पद रज शीशधरि भाषैा कथा सुभाय ॥ १ ॥ चोपाई ॥ जन्मेजै पूछै कर जोरी ॥ जैमुनि रिषि सुनु विनती मोरी ॥ पूर्व कथा कछु मोहि सुनाया तिन्ह कर रिषि कछु करहु बखाना ॥ बंधुन सहित राज बस कीन्हा ॥ विप्रन कंचन दान बहु दीन्हा ॥ जग मा अस्वमेध जस कीन्हा। सो राजा कहो कैसे सो दीन्हा ॥ दोहा ॥ राजनीति जगधर्म की सकल कहो समुझाय ॥ मम मन धर्म सनेह बहु कृपा करो रिषिराय। जैमुनि उवाच ॥ चो० ॥ धन्य धन्य जन्मेजै राई ॥ जो तुम्ह जैसी बुधि उपाई ॥ धर्म पुनीत कथा हितकारी ॥ सो नृप तुम्ह मोहि कहो विचारी ॥ × × ×

End—जैमुनि कहै जन्मेजै राजा। परम पुनीत कथा यह राजा ॥ पूरन हम तुम्है सुनाई ॥ अधिक प्रेमते तुम सुनि पाई ॥ कलयुग अश्वमेध नहि काजा ॥ यहि प्रकार फल कीजिए राजा ॥ दोहा ॥ अश्वमेध जग्य की कथा भद्र पूरन सोय ॥ अंतर शुद्धि चित्त देइ सुनै अश्वमेध फल होय ॥ चो० ॥ जो कोई साधु संत जग मांहि ॥ तिनकी पद रज सेवा दास ॥ कवि जन कैा बोले कर जोरी ॥

चूक अचूक वकसिये मेरो ॥ अस्वमेद सह सक्त लियाहो ॥ सो हम श्रवण सुनि कछु नाही । बातन कछु कछु सुनि पावा ॥ तुम मिलाय के ग्रंथ बनावा । सेरठा कछु अंश आवै ॥ ताते कवि जन ठौर बतावै ॥ भद्रावति नग्र के पासा ॥ जो जग हेड़ कवि को बासा ॥ नवरंगाबगर जब सिवपुर तहाँ को सुवमने नेवासा ॥ कान्ह राम के सामने बसत है सेवादास ॥ संवत सत्रह सै नवऊ कातिक मास सोते पक्षे द्वादस्यां चन्द्रवासरे गुरु आनवदनधाया पुस्तकं लीषितं मया ॥ लिषितं ब्राह्मण रुद्र त्रिपाठि त्रिवस सम्वत् बुध्या के सतत् मया ॥ वसतं ग्राम पेड़ोर जस्य विदितं क्षति जगत्र ख्तिं इति श्री महाभारते अश्वमेधे पर्वाणि जैमुनि कृत—संवत १८५२ ॥

Subject—कुल अध्याय । (१) पृ० १—१४—यज्ञ उपदेश । (२) १५-२६—हस्तनापुरी आगमन । (३) २७—३६—भीमसेन गमताबोगा । (४) ३७—४८—श्यामकरण हरण । (५) ४३—५० जोवनाश विषकेतु युद्ध । (६) ५१—५३—भीम युद्ध । (७) ५७—६२-जोवनाशादि युधिष्ठिर मिलन (८) ६३—६६-धर्म निरूपण । (९) ६७—७१ भीम द्वारिका गमन । (१०) ७२—७६ कृष्ण हस्तनापुरी गमन । (११) ७७—८० कृष्ण हस्तनापुर आये । (१२) ८१—८७-शल्य घोड़ा हरण । (१३) ८८—९६ भामा संबोध । (१४) ९७—१०८-नीलध्वज तुरंग हरण । (१५) १०९—११६ नीलध्वज वर्णन । (१६) ११७—११९-उद्यालक स्त्री शाप विमोचन । (१७) १२०—१२६-सुधन्वा प्रतिज्ञा वर्णन । (१८) १२७—१३०-सुधन्वा युद्ध । (१९) १३१—१३५-सुधन्वा वध (२०) १३७—१४३-सुरथ वध । (२१) १४४-१५२ कृष्ण और हंसध्वज मिलन । (२२) १५३—१५८-प्रभाला रानी युद्ध । (२३) १५९-१६९ घोड़ा मानिकपुर आगमन ।(२४) १७०—१८३—बभ्रुवाहन युद्ध । (२५) १८४—१८८-बभ्रुवाहन युद्ध (२६) १८९—१९७-रामाभिषेक, (२७) १९८-२०६ सीता लक्ष्मण वर्णन । (२८) २०७—२१४-सीता वाल्मीकि आश्रम प्रवेश (२९) २१५—२२१-लव घोड़ा बंधन । (३०) २२२—२३० लव मूर्छा (३१) २३१-२३७ शत्रुहन मूर्छा (३२) २३८-२३९ लक्ष्मण सेना वध (३३) २४०—२४१ लक्ष्मण मूर्छा (३४) २४२—२४७-भरत आगमन (३५) २४८—२६० रामचन्द्र लवकुश, सीता वाल्मीक मिलाप वर्णन (३६) २६१-२६७ वृषकेतु वध (३७) २६८—२८४-अर्जुन वध । (३८) २८५—२९५—श्रीकृष्ण मानिकपुरी आगमन । (३९) २९६—३०२—बभ्रुवाहन विजै वर्णन । (४०) ३०३—३०७ मोरध्वज अर्जुन समागम । (४१) ३०८-३१३-मोरध्वज जुध्य बभ्रुवाहन मूर्छा । (४२) ३१४—३२१-सुचेत युद्ध (४३) ३२२—३२८-कृष्णार्जुन नग्र प्रवेश । (४४) ३२९—३३४—मोरध्वज ब्राह्मण समागम । (४५) ३३५—३४९ मोरध्वज कृष्ण मिलाप । (४६) ३५०—३५५—मालिन कन्या राजा वीरवर्मा संवाद । (४७) ३५६—३६२ धर्मराज रोग वर्णन । (४८)

३६३—३७० वीरवह्मा उपाख्यान। (४९), ३७१—३८० चन्द्रहंस उत्पत्ति (५०) ३८१-३८६-चंद्रहंस विद्याध्ययन (५१) ३८७-३९६ मदनवती गमन।(५२) ३९७-४०१ चन्द्र कौतुलपुर आगमन। (५३) ४०२—४०८ चंद्रहंस विवाह (५४) ४०८—४०८ चन्द्रहंस विवाह। (५५) ४०९—४१६ चन्द्रहंस विषय वर्णन (५६) ४१७—४२७—चंद्रहंस राज प्राप्त (५७) ४२८—४४०-चन्द्रहंस राज वर्णन। (५८) ४४१—४४९—चंद्रहंस मिलाप (५९) ४५०—४६६—कृष्णावक तालमुनि मिलाप, (६०) ४६७—४७३—जयद्रथपुर गमन, (६१) ४७४—४८०—अर्जुन हस्तनापुर आगमन (६२) ४८१—४९३ यज्ञारंभ श्यामकरण स्नान वर्णन (६३) ४९४—५०८—यज्ञ वर्णन। (६४) ५०९—५१९ ब्राह्मण भोजन वर्णन। (६५) ५२०-५३०—वाक्पति ब्राह्मण कथा। (६६) ५३१—५३५—नैवणा मोक्ष (६७) ५३६—५४० जैमुनि पुराण पढ़ने के फल, कवि का अपना परिचयः—भद्रावती नगर के पास—वहां से डेढ़ योजन नवरंग नगर। सेवादास नाम। रचना काल सं० १७०० लिखी १८५८

No. 881(*a*). Dayābodha by Devidāsa of Ḍiḍwānā Jodhapura Rāja. Substance—Country-made paper. Leaves—2. Size—10 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—28 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1794 or A.D. 1737. Place of deposit—Śrī Mahanta Ḍiḍwānā, Rājā Jodhapurā, Post Office Ḍiḍwānā, Rajputānā.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ दयाबोध लिख्यते॥ गोरषनाथ गुरु आवो सिद्धो खोज बताऊं। आदिनाथ का पुत कहाऊं। जोगारंभ की याही बाणी।सब घट नाथ एक ही करिजाणी। जोगारंभ हृदय मैं माड़ी। दया उपावो जूतो छोड़ो। नागा पाचा जो नर मुवा। ताका कारज पहिले हुवा। आप स्वारथ घालै घई। तामैं चोटी केती मुई॥ तजो कहरि नजरि अभूत। बटवा फाउड़ो जिन लेउ हाथ। ऐसा आरंभ परि हरौ सिद्धो। यों कथंत जती गोरषनाथ॥ माघ चलंता धरणि दिष्ट जो लागै। ताके कांटा कढ़न लागे। पहिले आरंभ हम भी करते। जीव जंतु बहुतेरे हतते। आरंभ तजो गुदड़ी चलायो। निरति सुरति अविनासी सों लायो। अविनासी पुरुष का लागा रंग। रिद्धि सिद्धि ताही के संग॥ रिद्धि छांड्या सिद्धि पाइये। सिद्धि शंकर के हाथ॥ छांड़ो सकल अकल को ध्यावो। यों कथंत जती गोरषनाथ॥ आसन तजि अनंत जिन जावो। अलष भिक्षा बैठा पावो॥ तहना पांच घर चितायवा।

End—घड़ा देवरा घोपड़ देव । तहां जोगेश्वर लाम्या सेव ॥ पंच चेला मिलि पुरानाद । घरति गगन विच भई घावाज ॥ दीपक एक घपंडित विन बातो । तहां जोगेश्वर थापना थापी ॥ ता दीपक के चरण न पिंड । सिपा न नैन सोस नहिं हाथ । सो दीपक देष्या जती गोरखनाथ ॥ ता दीपक के डाल न मूल । ता दीपक के कली न फुल ॥ ता दीपक के रंग न रूप । ता दीपक के छांह न धूप ॥ ता दीपक के सबद न स्वाद । ता दीपक के विद्या न नाद ॥ ता दीपक के मोह न माया । सो दीपक सुनै सुन समाया ॥ इति दयाबोध सम्पूर्ण लिखतं गंगाराम निरंजनी वैष्णव जैपूर मध्ये संवत १७९४ ॥ पठनार्थ रूपदास महंत डीडवाना गद्दो वाले के । कातिक मासे शुक्लपक्षे तिथि नवम्यां शुक्र वासरे ॥

Subject—इस में साधुयों के लिये दया का ज्ञान वर्णन है ।

No. 381(*b*). Gorakha Gaṇeshā Goshṭhi by Sevādāsa Mahanta of Ḍiḍwānā (Jodhpura). Substance—Country-made paper. Leaves—5. Size—8 × 5 inches. Lines per page—14. Extent—80 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1794 or A.D. 1737. Place of deposit—Śrī Mahanta Ḍiḍwānā Rāja Jodhapur, Post Office Ḍiḍwānā, Rājputānā.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ घथ गोरष गणेश गोष्टी लिष्यते ॥ गणेश पूछे गोरख कहिए । तुम स्वामी कहां ते घाये । कहा तुमारा नाम ॥ हम निरंतर घाये जोगी हमारा नाम ॥ स्वामी जोगी ताते बोलिये । जिन एता मेर मेघला रचा । तुम कैाण जोगी । घहे निरंजन जोगी । घतिथि गुरु चेला स्वामी । घतिथि ते कैाण जाणिये । रहति जाणिये शब्द प्रमाणिये स्वामी रहतिते क्या बोलिये ॥ शब्द ते क्या बोलिये । शब्द बोलिये घवधू सबते विवर्जित । रहति बोलिये त्रिगुण तैा स्वामी सब ते विवर्जित ते क्या बोलिये । त्रिगुणते क्या बोलिये । सब ते विवर्जित ते बोलिये ते बोलिये घवधू सूच्छिम त्रिगुण बोलिये सत रज तम । तैा स्वामी सूच्छिम ते क्या बोलिये । सत, रज, तमसे क्या बोलिये । सूच्छिम ते बोलिये घवधू दृष्टि देषै न मुष्ट मावै ॥ सतगुण बोलिये पवन । रजगुण ते बोलिये पाणी । तमगुण ते बोलिये घयघुतामनी रूपी पंचतत्व पचीस प्रकृति का घादम । एता एक त्रिगुण बोलिये । तैा स्वामी पंचतत्व से क्या बोलिये पचीस प्रकृति ते क्या बोलिये । पंचतत्व बोलिये घवधू । पृथ्वी, घाप, तेज, वायु, घाकाश । एक एक तत्व संयुक्त पांच पांच प्रकृति बोलिये ॥

End—वायु का कौण घर कौन द्वार कौण आहार, कौण व्यवहार। तेज का कौण द्वार कौण आहार कौण व्यवहार। आप का कौण घर कौण द्वार कौण आहार कौण व्यवहार। पृथ्वी का कौण घर कौण द्वार कौण आहार कौण व्यवहार। तौ अवधू आकाश का घर ब्रह्मांड, भ्रवनद्वार सुनैं सो आहार उमया अंह व्योहार। वायु का घर नाभी नासिका द्वार वासना आहार अहं कोध लोभ व्योहार। तेज का घर पोत्ता चक्षुद्वार दृष्टि आहार प्रीति मोह व्योहार। आप का घर लनाट, इन्द्री द्वार स्त्री आहार, मैथुन व्योहार। पृथ्वी का घर कलेजा गुदाद्वार खाय सो आहार लोभ लालच व्योहार। तौ स्वामी पृथ्वी का कौण गुरु, जल का कौण गुरु, तेज का कौण गुरु वायु का कौण गुरु। आकाश का कौण गुरु। तौ स्वामी पृथ्वी का गुरु गनेश देवता। वाचा स्वरूपी॥ आपका चन्द्रमा देवता बुद्धि स्वरूपी, तेज का गुरु सूर्य देवता अग्नि स्वरूपी, वायु का गुरु ईश्वर देवता अनादि स्वरूपी, आकाश का गुरु गोरष देवता अविगत स्वरूपी। तौ स्वामी पंचतत्व की कथे उत्पत्ति कथे अपंति। तौ अवधू अविगत उत्पना आकाश, आकाश उत्पना वायु, वायु उत्पना तेज, तेज उत्पना तोयं। तोयं उत्पना मही॥ मही ग्रासंति तोयं॥ तोयं ग्रासंति तेज, तेज ग्रासंति वायु, वायु ग्रासंति आकाश॥ आकाश ग्रासंति अविगीत। ये पंचतत्व पचीस प्रकृति भेद बोलिये। निरंजन देवता पाणी का जामण अग्नि की पुट, पवन का थंबा सुरति निरति साधि सुन्य मैं समाया अविगत स्वरूपी॥ इति गोरष गणेश संवादे पठंते श्रुते पापं श्रुत्वा मोक्षदायकं योगारंभ भवेसिद्धा आवागवण निवर्तते उचारं विचारं पापक्षयं जायंति ॐ नमो शिवाय ॐ नमो शिवाय गुरु मछिन्द्रनाथ को पादुका नमोऽस्तुते इति गोरष गणेश संवादे योगशास्त्र सम्पूर्ण समाप्तं॥ लिपतं गंगाराम निरंजनी वैष्णव जैपुर मध्ये पठनार्थं बाबा रूपदास महंत कार्तिक शुक्लपक्ष तिथि दस्म्य शनिवासरे संवत् १७९४॥

Subject—इसमें सिद्धान्त संबंधी प्रश्नोत्तर हैं।

No. 881 (c). Mahādeva Gorakha Goshṭī by Sevādāsa of Ḍidwānā, Jodhapura Rāja. Substance—Country-made paper. Leaves—2. Size—8 × 5 inches. Lines per page—25. Extent—70 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1794 or A.D. 1737. Place of deposit—Śrī Mahantā Ḍidwānā Mandira Haridāsaji Rāja Jodhapurā, Post Office Ḍidwānā, Rājputāna.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ महादेव गोरषगोष्टी लिष्यते॥ ईश्वरोवाच॥ ॐ अविगत उत्पने इच्छा। इच्छा उत्पने आकाश। आकाश उत्पते वायु,

वायु उत्पते तेज. तेज उत्पते तोयं, तोयं उत्पते महो, पविगत इच्छा इच्छाते आकाश, आकाश नाम स्याम वरण दसवें द्वार वास, दाहिने पैसार, वामे श्रवण निकास, नाद सुनै सो आहार, दंभ बड़ाई व्योहार राग द्वेष हर्ष शोक मोहादिक ये पांच प्रकृति आकाश का बोलिए ॥ इन आकाश मारग जीव अनुसरै तौ स्वेत रज खानि भोगवै ॥ आकास ते वायु नाम नीलवरण नाभिवासा इला पैसार पिंगुला निकास, गंध वासना, आहार क्रोध व्योहार, गावण धावण चलगण संकोचण, पसारन ये पंच प्रकृति वायु को बोलिए. इन वायु मारग जीव अनुसरै तौ अंडरज खानि भोगवै । वायु ते तेज नाम रक्त वरण त्रिकुटी वासा दाहिने नेत्र पैसार वामें निकास दृष्टि देखै सो आहार मोह व्योहार, क्षुधा तृषा निद्रा आलस कांति ये पंच प्रकृति तेज की बोलिये, इन तेज मारग जीव अनुसरै तौ रज खानि भोगवै ।

End—अर अजपा द्वार निःकाम पैसार संतोष निहसार मकरंद आहार अगम व्योहार इन चित मारग जीव अनुसरै तौ स्वरूप मुक्ति भोगवै ॥ परम ध्यानं न अहंकार नाम अवरण वरण त्रिपत्री वासा लयवर नृत्यामोक द्वार अगम पैसार अगोचर निसार अजराहार, अगाध व्योहार इन अहंकार मारग जीव अनुसरै तौ सालोक मुक्ति भोगवै।प्राण अंतःकरण नाम अवरण अस्थिति वासा औरज घर अक्ष द्वारा ज्ञान पैसार विज्ञान निसार अमरा आहार अबंध व्योहार इन अंतःकरण मारग जीव अनुसरै तौ महा मुक्ति आत्मा परमात्मा भवंति जोगेश्वर जीव सीव एक भवंति परम सुन्य भवे स्थिति पारब्रह्म भवे लीनं सत्यं सत्यं च वदाम्यंहं तत्व ज्ञान श्री शंभूनाथ अकथ कथितं ॥ सुनौ हो गोरष अवधूतं परम जोग संजानि जोगी ईश्वरो कथितं महाज्ञान इति ज्ञान इति ज्ञान इन्द्रादि बोलिए इतिज्ञान पटल द्विनीयोध्याय इति गोरष महादेव संवादं पढंते हरंते पापं श्रुत्वा मोक्ष लाभते जोगारंभ भवे सिद्धा आवागमन निवर्तते पठंते करंते गुणंते कथंते पापं न लिप्यते पुन्येन न हारते ॐ नमोशिवाय ॐ नमो शिवाय गुरु मछिंद्रनाथ जी का पादुका नमोस्तुते इति श्रीमहादेव गोरष संवादे योगशास्त्रे ग्रंथ संपूर्ण समाप्त । लिषतं गंगाराम निरंजनी वैष्णव जयपुर मध्ये कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे एकादस्याम रविवासरे संवत १७९४ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

No. 381(*d*). Niranjanapurāṇa by Sewādāsa of Ḍiḍwānā Jodhapur Raj. Substance—Country-made. Leaves—4. Size—9 × 6 inches. Lines per page—44. Extent—176 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1794 or A.D. 1737. Place of deposit—Sri Mahanta Ḍiḍwānā, Raja Jodhapura, Post Office Ḍiḍwānā, Rajputānā.

Beginning—ॐ ॥ अथ निरंजन पुराण लिख्यते ॥ ॐ गोरष शिष्य विचार सिंगार । वंदितं वंदि ऊंकार शिवशक्ति न सृष्टि विचार । अधंड धुन होता धुंधकार । नाती कुल माई न बाप । स्वयंभू निरंजन आपहो आप ॥ वरण न चिन्ह न रूप न रेष । मूरति बिहुना अगम अलेष । अर्धे न उर्ध न अद्दे न ग्राम । सर्वत्र विवर्जित अतोत अनुपाम ॥ धरतो न गगनं चन्दं न सूरं । बाहिर न भीतर नेरे न दूरं ॥ उत्पति अछै आवो न बाणो । असंष जुगे जुग जोग ध्यानो ॥ ब्रह्मा न विष्णु देवो न महादेव । संभू निरंजन अलष अभेव ॥ भेदा न भेदो दर्शन न भेष अगम अगोचर मूरति एक ॥ अलष किया सुचि नावों न भ्रांति । उत्तम न मध्यम जोते न ञोतो ॥ वेद न शास्त्र न पुस्तक पुराणं ॥ हिन्दू न कोई मुसलमानं ॥ अनिठे न नोल निरंजन राया । ते सर्व सूक्ष्म सुन्य को काया ॥ सुने सुन्य निरंजन राया । सुनि निरालंब होतो निरंजन को काया ॥ काया माया निरालंब होतो । पाप न पुन्य नहीं तहां छोतो ॥ सुन्य से हुआ सर्व स्थूलं । अनाहद धुम रचिले सृष्टि का मूलं ॥

End—बाबा आदम रसूल का भया । एक मसोन दस दरवाजा ॥ तहां चिन्ह तहां अलष पुरुष का वासा ॥ एतो एक दसोंध बाबा को कबूल थी दस औरत एक औरत । दस पुंगड़िये एक पुंगड़ो । दसे पुंगड़ो पुंगड़ा । दसे ग्रामे ग्राम । दसे हस्ती एक हस्ती । दसे घोड़े घोड़ा ॥ दसे बैले बैल । दसे थैलिये थैली ॥ दसे छेलिये छेली । दसे घुथड़े घुथड़ा ॥ दसे पुदड़े पुदड़ा । दसे रुपइये तो रुपइया । दसे टुकड़े टुकड़ा ॥ दसे मयुरे मयुर । दसे पथड़े पथड़ा ॥ दसे निवाले निवाला ॥ जोगो जती का नाथ सन्यासो का पंथ । वैष्णव का दर्शन । मुल्लां को बांगि । दरवेस सोफो को बांगि एते दरसण सुणि मुसलमान षाना षात्रो तो सुवर षाय ये सुनि हिन्दू षाय तो गऊ का मांस षाय ॥ पहिले पूरो पत्र पोछे पूरो कांसा ॥ कांसा का गुरु तिषारु । पत्र का गुरु अलेष रहिमाण ॥ निरंजन पुराण रहा भरपूर । धर्म न आवे नेड़ा पाप न जावे दूर ॥ श्रुत्वा के हरते पावं वक्ता मोक्ष लाभ ते इति श्री निरंजन पुराण पठंत हरंत पावं श्रुत्वा मोक्षदायकं जोग-रंभ मवे सिद्धा आवागमन निवर्तने ॐ नमाशिवाय ॐ नमोशिवाय श्री शंभूनाथ का पादुका नमोस्तुते इति श्री निरंजन पुराण ग्रंथ सपूर्ण ॥ लिषतं गंगाराम निरंजनो पठनार्थं बाबा रूपदास महंत कार्तिक शुक्लपक्ष एकादस्याम संवत १७२४ वि० श्री श्री श्री श्री श्री ॥

Subject—इस में पृथ्वो और मनुष्यों का बनना और हिन्दू तथा मुसलमानों का अलग अलग बनना बतलाया गया है ॥

No. 381(e). Śhrishtipurāṇa by Sewadāsa of Ḍiḍwānā Jodhapur Rāja. Substance—Country-made paper. Leaves—2. Size—10×6 inches. Lines per page—14. Extent—24 Anushṭup

Ślokas. Appearance Old. Character—Nāgari. Date of Manuscript—Samvat 1794 or A.D. 1737. Place of deposit—Sri Mahanta Ḍiḍwānā Rāja Jodhapura, Post Office Ḍiḍwānā, Rajputana.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सृष्टि पुराण लिष्यते ॥ ॐ एक उपरांति लेखा नाहीं । दोय पावे सृष्टि नाहीं । गुरु पावे ज्ञान नाहीं । काया उपरांति क्षेत्र नाहीं । आत्मा उपरांति देवता नाहीं ॥ सिद्धि उपरांत ब्रह्म नाहीं । माया पावे परचा नाहीं ॥ शील उपरांति व्रत नाहीं । चक्षु उपरांति दृष्टि नाहीं । निर्भय उपरांति अभय नाहीं । संयम उपरांति सुचि नाहीं । संतोष उपरांति सुष नाहीं । अमर उपरांति सिद्धि नाहीं अभय उपरांति करामात नाहीं । माता उपरांति जन्म नाहीं ॥ गर्भ उपरांति नरक नाहीं । बलंत उपरांति हानि नाहीं । चित्त चंचल उपरांति रोग नाहीं । वृद्धा उपरांति मृत्यु नाहीं ॥ काल उपरांति बैरी नाहीं ॥ नासिका उपरांति रूप नाहीं । दया उपरांति धर्म नाहीं ॥ ध्यान उपरांति ग्रंथ नाहीं ॥ चंदन उपरांति काष्ट नाहीं ॥

End—वैकुंठ उपरांति स्वर्ग नाहीं । चन्द्रमा उपरांति शीतल नाहीं । सूरज उपरांति तप्त नाहीं । काया उपरांति रतन नाहीं ॥ सांच उपरांति शास्त्र नाहीं । बुद्धि उपरांत व्याकरण नाहीं ॥ स्वासा उपरांति वेद नाहीं ॥ पराधीन उपरांति बंधि नाहीं ॥ स्वाधीन उपरांति मुक्ति नाहीं ॥ चाह उपरांति पाप नाहीं । अचाह उपरांत पुन्य नाहीं । कर्म उपरांति मैल नाहीं दोष उपरांति कुबुद्धि नाहीं ॥ निर्दोष उपरांति सुबुद्धि नाहीं । सृष्टि उपरांति पोष नाहीं । अजपा उपरांति जाप नाहीं । अघोर उपरांति मंत्र नाहीं नारायण उपरांति इष्ट नाहीं ॥ निरंजन उपरांति ध्यान नाहीं ॥ इति सृष्टि पुराण ग्रंथ समाप्तम लिषतं गंगाराम निरंजनी वैष्णव जैपुर मढे श्री बाबा रूपदास के पठनार्थ माघ वदी त्रयोदशी संवत १७९४ सोमवासरे इति श्री श्री श्री श्री श्री ॥

No. 382. Karuṇa Viraha by Sevādāsa Pāṇḍay of Ajodhya. Substance—Country-made paper. Leaves—75. Size—8 × 4 inches. Lines per page—28. Extent—1,075 Anusṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1822 or A.D. 1765. Date of Manuscript—Samvat 1889 or A.D. 1832. Place of deposit—Paṇḍita Baldeo Prasāda Awasthi, Village Bannwāpara, Post Office Jaitapur Bāzār, District Bahraich (Oudh).

No. 383. Bāgavilāsa by Sewaka Rāma of Aswani. Substance—Country-made paper. Leaves—84. Size 8×6 inches. Lines per page—36. Extent—1,890 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgari. Date of manuscript—Saṃvat 1921 or 1864 A. D. Place of deposit—Ṭhākura Anirudha Siṃha, Assistant Manager, Nilgāma, Post Office Nilagāma, District Sitāpura.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ बाग विलास लिष्यते ॥ दो० ॥ गजमुष सुरसुति गुरु चरन प्रफुलित कमल मनाय । रस स्वरूप रंग देवता भेद कहत सुष पाय ॥ अथ रस स्वरूप कथनम् ॥ सवैया ॥ थाई के कारन कारज औ सहकारी जिते कवि सेवक गावैं । ते हिय भावै विभावित औ अनुभावित औ वभिचार करावै ॥ नाट्य औ काव्य में ताते विभाव अनुभाव संचारिहु नाम को पावै ॥ व्यक्त है सो इनसो सुष रूप भये परिपूरन सो रस गावै ॥ अस्यार्थो वार्ता ॥ मम पितुः काव्य प्रभाकरे लोक में रहित्यादि के कारन जो श्री चंद्रोदयादि है औ कार्य (यह सवैया) काव्य प्रकाश के चतुर्थोल्लास के इन श्लोकों के भावार्थ अवंच जान पड़ता है कारणन्यथा कार्य्याणि सहकारिणी यानि च इत्यादिः स्थायिनो लोके तानियन्नाट्य काव्ययो ।

End—प्रलाप यथा ॥ करिन सो पूछै कबौ हरिन सो पूछैं राम केहरिन पूछिवे को प्रीति परसी गई । भ्रमन सो पूछैं कबौ सुमन सो पूछै जाय तटनी तरंगिनि तिहारी तरसी गई ॥ कंजन की मालन मरालन सो पूछै दई व्यालन को सेवक विलोकि हरि सी गई ॥ वैरभाव तजि कै दवाय दुष पाय घाय दीजिये बताय सिव हाय हरि सी गई ॥ पुनर्यथा ॥ पीतम को जैबो याके तापन तैबो इतै मेघन को ऐबो वन कूकै कंठ मोलैरो । भई तन पीन परै सेज पै लपीन दीन जल सो बिहीन जैसे मीन परसोलैरो ॥ वेदन को सेवक निवेदन करै को दई होत हिय भेदन बिलोकि अंग डोलैरो ॥ मूंदे नैन मोहनी कहत राधे राधे आधे पोलै मृदु बोलै श्याम सांवरे छबीलैरो ॥ अथ व्याधि लक्षन ॥ जहं पिय के अन मिलन ते करै काम अति छीन । तासो व्याधि बषानही विरह विकल अति दीन ॥ यथा ॥ भरती रहे है पुनि ढरती निसाहु ग्रोस धरती न भेद सुठि सिंधु में परी मनो । उर बरियार में सुरति मोगरो की मारि काम बरियार दार करनि धरी मनो ॥ आह की अवाज निकरैरो न परैरो वाज सेवक जु राधे लागे डरनि डरी मनो । हेरे सब तंत्र कोऊ लागत न मंत्र भई आधे परतंत्र जलजंत्र को घरी मनो ॥ इति श्री बाग विलासे सेवक राम अस्वनी निवासी विरचिते नायका

भेदादि वर्नन समासम् ॥ संवत १९२१ आषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे तृतीयाम भृगुवासरे ॥

Subject—इस ग्रंथ में नायिका नायक भेद एवं शृंगार रस का वर्नन है।

No. 384. Śantipurana by Sevārāma of Dewagarah. Substance—Country-made paper. Leaves—568. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—14. Extent—7,952. Anushṭup Ślokas. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṃvat 1834 or A. D. 1777. Date of manuscript—Saṃvat 1892 or A. D. 1835. Place of deposit—Jaina Mandira (Bara), Bārā Bankī (Oudh).

Beginning—श्री वीतरागदेवानमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः ॥ श्री गुरुभ्यो-नमः ॥ अथ शान्तिपुराण भाषा, सेवाराम कृत लिख्यते ॥ प्रणम्य परमानंदान ॥ देव सिद्धान्त सद्गुरुन ॥ शान्तिनाथ पुराणस्य ॥ भाषा सहित नौम्यहं ॥ १ ॥ दोहा ॥ नमोशांति जग शांति कृत ॥ परम शान्ति दातार ॥ कर्म समूह विनाश हर ॥ भरन संपदा सार ॥ २ ॥ जो षोडस मो तीर्थपति ॥ अमर निकर सरनाय ॥ त्रिभुवन भयहर प्रथित पद ॥ भये जलधि जललाय ॥ ३ ॥ फुनि पंचम निधिपति भयो ॥ प्रगत वचन रतिवान ॥ हुय षष्टम रति पति जयो ॥ लसो सुधोदधि थान ॥ ४ ॥ तास शान्ति जग भान्तिहर ॥ नमो शान्ति पद देय सकल ललित नच्छिन कलित ॥ मंगल कारक होय ॥ ५ ॥ नमो वृषभ पद वृषभ के ॥ वृषभा ग्रक्षन वान ॥ वृषपति वृष द ता जगत ॥ वृषभ तीर्थ वृषभान ॥ ६ ॥ वृषभेश्वर वृष विस्तरो ॥ शिवसुख करन महंत ॥ वचन किरन तम छेदि तसु ॥ बंदों शिव तिय कंत ॥ ७ ॥

End—नमोदेव अरिहंत सर्व तत्वारथ भासी। नमो सिद्धि अविकार ज्ञान मूरति अविनासी ॥ नमो सूर उवझाय साधुनि ग्रंथनि मो सिर। येई पद वर पंच नमत भागी अघ को गिरि ॥ बंदों जिनेस भाषत वचन धर्म दशावन सर्वदा। ये परम सार तिहुंलोक में करो खेम मंगल सदा ॥ ९१ ॥ दोहरा ॥ पंच मास कछु सरस से, लगे रचत अधिकार। मतियोरो थिरता अलप, ताते लखो प्रचार ॥ ९२ ॥ काव्य—लोकालोक विलोक स्वच्छ नयने सादर्श निर्मलं ॥ जस्य ध्यान अनंत ता प्रविद्यात्सर्वात्मनां बोधकां ॥ वच्छर्कांघघिवक्षरोन विमला विश्वस्य श्रेष्ठारनो ॥ यत् सौख्यं विमता मयांसि जिनयो सांति प्रशांतिः क्रयात् ॥ ९३ ॥ दोहरा पढ़ें सुनै या ग्रंथ को ते पावें सुखठाम। सुख सों कियत भव वन विषै। फेरि गये शिवधाम ॥ ९४ ॥ जिनवर धर्म प्रभाव सों परम विस्तरो ग्रंथ। ता सेवन

पैये सदा नाक मोष को पंथ ॥ ९५ ॥ इति श्री शांति पुराणाचार्य्य श्री सकल कीर्ति विरचितां भाषा विचिंतात् लघु कवि सेवारामेनं तस्यां जिन ध्यानोत्पत्ति धर्मोपदेश विहार समय निर्वान गमन निरूपन नाम पंचदशमोधिकारः ॥ १५ ॥ इति श्री शांतिनाथ पुराण भाषा संपूर्ण ॥ समाप्तं ॥

Subject—(१) पृ० १—४४ तक—मंगलाचरण तथा वंदनादि सहित ग्रंथ निर्माण हेतु इत्यादि का वर्णन। ग्रंथ निर्माण में सहायता करने वाले का कथनः—मित्र खुस्याल सहित मनलाय। शांति पुरान रच्यो सुखदाय ॥ वक्ता तथा श्रोताओं के गुण वर्णन। कथा लक्षण, सुकथा और कुकथा निर्णय। स्वयंप्रभा विवाह वर्णनोभिधान ॥ (२) पृ० ४५—७० तक—अनन्तजटी प्रजापति अर्ककीर्ति निर्वाण। अमित तेज राज विजै विघ्न विनाश वर्णन। (३) पृ० ७१-९० तक—अमित तेज सम्यक्त ग्रहण करण वर्णन। (४) ९१—११२ तक—श्री सेन इत्यादि भवों का वर्णन। (५) पृ० ११३—१३७—अविचल देव, बलभद्र नारायण तथा नारद का वर्णन। (६) पृ० १३८—१६८ तक—अनन्तवीर्य का श्वभ्र (नरक) गमन तथा उसको बल से इन्द्र-पद प्राप्त होना। (७) १६८—१९८ तक अनन्तवीर्य सम्यक्त लाभ तथा वज्रायुधचक्र-पद भव प्राप्ति वर्णन। (८) पृ० १९९—२३१ तक—वज्रायुध, सहस्रायुध तथा अहमिन्द्र पद-प्राप्ति वर्णन। (९) पृ० २३२—२६७ तक—मेघरथ का वर्णन। धनरथ के विरक्त होने तथा मेघरथ के राज्य-भोग का वर्णन। (१०) पृ० २६८—३०२ तक—मेघरथ वैराग्योत्पत्ति तथा दीक्षा ग्रहण वर्णन, मेघनाथ सुत राज्य ग्रहण वर्णन। दृढ़रथ तथा अन्य सात सौ नृपतियों के साथ मेघरथ का जिन मत साधन करना। (११) पृ० ३०३—३६८ तक—अपने भ्राता दृढ़रथ सहित मेघरथ का घोर तप साधन करना, जप, तप, तथा अनशनादि व्रत धारण करना। जिन शांति-गर्भावतारा-भिधान वर्णन। (१२) पृ० ३६९—४१६ तक—रानी का सोलह स्वप्नों का देखना और राजा से उन स्वप्नों के फलों के संबंध में प्रार्थना करना। राजा का फल कथन करना, और उन सोरहों स्वप्नों के फल स्वरूप उनके गर्भ से तीर्थंकरोत्पत्ति तथा उनके महत्वों का कथन। तीर्थंकर शांतिनाथ का गर्भ से जन्म लेना और देवादि द्वारा उत्सव मनाया जाना। (१३) ४१७—४६० तक—श्री शांतिनाथ जन्माभिषेक तथा राज्य लक्ष्मी और उनकी कीर्ति का वर्णन, उनके सात चैतन्य और सात अचैतन्य रत्नों का वर्णन, उनके सम्मुख नाटकादि द्वारा मनोरंजक कार्यों का होना। (१४) पृ० ४६१—५१२ तक—जिन दीक्षा निष्क्रमण कल्याण वर्णन। हस्ती घोड़ा इत्यादि सांसारिक वस्तुओं के मिथ्यात्त्व का विस्तृत वर्णन। सोलह वर्ष तक शांति जिननाथ का छद्म मस्तक रहना। पुनः अविकार घातक कर्मों का घात करना। शांतिनाथ को कैवल्य—ज्ञान होना।

(२५) पृ० ५२३—५६८ तक—जिन ज्ञानोत्पत्ति, धर्मोपदेश विहार समव निर्वाण गमन निरुपण, जिनके पिछले भवों का अति सूक्ष्म वर्णन। ग्रंथ समाप्ति, कवि दैन्य वर्णन। ग्रंथ निर्माण हेतु :—

पूरव चरित विलोकिकैं, हम कवि बुद्ध सयान।
भाषा ग्रंथ प्रबंध यह, रच्यो अनंदित वान॥

× × × ×

मो आनंद अपार धरि, तजि कलमल अधिकाहि।
भाषा रच्यो प्रमोद धन, रसतरंग मन नाहि॥

ग्रंथकार का परिचय—देश महा मालव सुभग, काठल सहित सुढार। तामै नगर नरेश जुत, 'देव—दुर्ग'-अधिकार॥ मल्लनाथ मंदिर विषै, रच्यौ पुरान महान। अति प्रमोद रस रीति सो, धर्म बुद्धि उर आन॥ वासी जयपुर तनौ, तो हर मल्ल कृपाल, ता प्रसंग कों पाय के गह्यो सुपंथ विशाल॥ गोमट सारादिकन मै, सिद्धांत नये सार। अवरबोध जिनके उदै, महाकवी निरधार॥

× × × × × ×

देश दुराहर आदि दै, संबोधे बहु देश। रचि रचि ग्रंथ कठिन किये, तो हर मल्ल महेश॥ तिनहो के उपदेश लहि, सेवाराम सयान, रच्यो ग्रंथ सुख पाय के, हर्ष हर्ष अधिकान।

ग्रंथ निर्माणकाल:—संवत अष्टादक शतक, पुनि चैाबीस महान। सावन कृष्ण वराष्टमी, पूरो कियो पुरान॥

स्थान—अति अपार सुख सों बसै, नगर 'देवगढ़' सार। श्रावक बसै महा-धनी, दान पूज्य मतिधार॥

नृपति वर्णन:—ता नगरी मैं भूपती, सूरवीर चोभेष।
करो राज्यपुर पुन्य सो, सावंत सिंह नरेस॥

ता सावंत नर राव के, द्वै श्रावक मुमत्यार। इक राघव रघुनाथ पुनि धर्म धुरंधर सार॥

No. 385(*a*). Sewāsakhī kī Bānī by Sevāsakhī of Vrindābana. Substance—Country-made paper. Leaves—84. Size—6½ × 4 inches. Lines per page—7. Extent—349 Anushṭupa Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṃvat 1825 or A. D. 1768 Place of deposit—Paṇḍita Rāma Bali Dubay. Village Bhiṭaurā Lakhan, Post Office Jaidpur, district Bārābankī (Oudh).

Beginning—श्री राधावल्लभो जयति ॥ दो॰ अथ वैराग्युद्दीपन लिख्यते ॥ (चौ॰) करि सत संगति चाह मन सकल कपट तजि मोह ॥ श्री राधावल्लभ नाम रटि सखी भाव पति छोह ॥ १ ॥ अचह चाह हरि भक्ति बिनु जानो दुख को रूप॥ सेवा सखि हरि आसरे होउ सुख परम अनूप ॥ २ ॥ मन को सब मन मैं पदै बुधि के बहुत विचार। चित्त वासना पिय मिलै सेवा सखि निरधार ॥ मनपरीक्षा ॥ अति दुर्लभ सुलभ भयो मानुस देही पाय ॥ भजले राधावल्लभहिं जन्म जो बीतो जाइ ॥ १ ॥ बाल कुमार पत्र गंडा किसोर जुवा जरा को देह॥ सेवा सखि दुख सुख भोग है अंत खेह को खेह ॥ कर्मज्ञान इन्द्री दसौ मिले देह को नाम ॥ इन्हैं भिन्न कै देखिये नहिं नामी को नाम ॥ २ ॥ मन बुधि चित अहंकार जो जीव की इन्द्री होइ ॥ इन्हैं भिन्न कै जानिये जीव नाम नहिं कोय ॥ ३ ॥ गुरु दीपिका—सर्व परे गुरु जानिये गुरु पर और न कोइ ॥ सब मिलि गुरु को नमत हैं गुरु नाम अस होइ ॥ गुरु गोविंद नारायन गुरु हरि मम कृष्ण गुरु कीन्ह ॥ गुरु के पद आधीन मन गुरु चरणन्ह चित लीन्ह ॥ २ ॥ नाम अनंत नामी अनंत दह भवसिंधु अपार ॥ बिनु गुरु बूड़े भव धार मैं गुरु मति उतरे पार ॥ ३ ॥

End—अरील सोरठा रूप्द दोहरा मंगल छन्द विश्राम । महामंगल परिचय लिख्यते ॥ सेवा सखि सहजानंद के लखि सहज अंग विज्ञान ॥ सहजानंद मग्न अनुरूपन यह अरिल है ॥ होय जाग्रत सपियाइ सुनि कै जो ग्रहै ॥ सत गुरु के उपदेस तारतम मानिये ॥ अलो हां हां सेवा सखि सहजानंद के सहजा ही जानिये ॥ राग गौरी ॥ अरोरी मुरली बजाइ हरो मन मोहन गृह आगमन सुहाइ ॥ बन सुनत सुधि भई है कंत की छूटो जग चतुराई ॥ छूटो लोकलाज कानिकुल तन पट तजि उठि धाई ॥ प्रेम मगन सेवा सखि बिरहनि जिन पिय को सुधि पाई ॥ १ ॥ राधाकृष्ण राधाकृष्ण कुंज विहारी गोपीनाथ गोपाल मोहन बनमाली ॥ मुरलीधर पीतांबर धारी ॥ त्रिभंगी मूरति आनंदकारी मोरमुकुट कुंडल छवि भारी ॥ चितवन में मोही बृजनारी ॥ नंदनंदन वृषभान दुलारी ॥ जुगल किशोरी पर सेवा सखी वारी ॥ १ ॥

Subject—(१) पृ॰ १—१४ तक—वैराग्योद्दीपन ॥ सतसंग और सखिभाव की भक्ति का आदेश । नाम प्रताप । शरीर के पंच तत्त्वादि से बनने का वर्णन । इन्द्रियों का वर्णन । ईश्वर द्वारा गर्भ में रक्षा होने का वर्णन । सेवा तथा भक्ति की महिमा । प्रीतम के अनुराग वर्णन । अभिमान त्याग कर ईश्वर भक्ति करने का आदेश । माया का वर्णन । जीव ईश्वर संबंध वर्णन । अहंकारादि रोगों का वर्णन । नाम रटने का आदेश ।

(२) पृ॰ १५—२२ तक—मनकी परीक्षा । जुवादि अवस्थाएं । मन, बुद्धि चित अहंकारादि को वृथा बता कर भगवत भजन का उपदेश । मन की प्रबलता

का वर्णन। मन को स्थिर करने के नियम। सेवा में मन को देने का लाभ। मन देने के कारण हरिण की दशा। पिय की आज्ञा मानने का आदेश।

(३) पृ० २२—३२ तक—गुरु दीपिका—गुरु करने का लाभ, गुरुज्ञान की प्रधानता। नित्य, अनित्य, निमित्त, और गुरु की एकता। गुरु के लक्षण, गुरु के सात स्वाभाव, शिष्य के लक्षण, गली गली फिरने वाले गुरुओं की बुराई॥

(४) पृ० ३४—४२ तक—प्रकरण—एक ब्रह्म का वर्णन। सहजानंद का ही ब्रह्म-कथन, ठकुरानी के आनंद रूप होने का वर्णन। सहजानंद की परिभाषा, माया तथा ब्रह्म का रूप, पिय प्यारी द्वारा ही उद्धार होने के कारण सखी भाव की महत्ता का वर्णन। अंग अंगी संतपिय की भक्ति।

(५) पृ० ४३—४५ तक—दूसरा प्रकरण—जाग्रत चोह्नने का वर्णन, कार्य्य कारण तथा कर्त्ता का वर्णन। वाम दाहिने अंग का वर्णन। सखी सेवा का महत्त्व।

(६) पृ० ४६—५८ तक—महामंगल परिचय—सहजानंद के अंगों का वर्णन। सहजानंद की शक्ति, दाहिने तथा वामें अंग का (पिय, प्यारी) का वर्णन। राधा के अंगों की सेवा करने वाली सखियों की महत्ता। ईश्वर के सब में होने का वर्णन। रास इत्यादि का वर्णन। बायें तथा दाहिने अंग की सखियों का प्रभाव। कृष्ण के रूप में सखी का मिल जाना, सेवा की बड़ाई॥

(७) पृ० ५९—७१ तक—दाहिने बायें अंगों से सृष्टि का उत्पन्न होना। साढ़े तीन कोटि सखियों तथा उनकी ही उनकी सहचरियों सहित हास-विलास तथा लीलादि का वर्णन। हित हरवंस जी को उसका परिचय होना। (गद्य में)।

(८) पृ० ७१—८४ तक—मंगल आरती—सब मंगल पदार्थों के साथ ही साथ कृष्ण की आरती कृष्ण की मूर्ति इत्यादि का वर्णन करके उनपर अपनी भक्ति प्रदर्शित करना। ग्रंथ समाप्ति।

No. 385(*b*). Vivekasāra Surata by Sewāsakhī of Vrindābana. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—8¾ × 4¾ inches. Lines per page—10. Extent—200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhingā Rāja, Baharāich.

Beginning—अथ विवेक सार सुरत लिख्यते॥ दोहा॥ श्री गुर कृष्ण सुंदर वर वंदौं इनके पंद। जिह मोहि दीन्हों धर्म वैस्नव की भक्ति दृढ़ाइ॥ १॥ सर्व सिरोमनि भक्ति धर्म है इन समान नहिं आन। इनकी महिमा को कहैं जाके

वसि भगवान ॥ २ ॥ सर्व परे भगवान ते इन पर थौर न कोइ । कार एक अनेक विधि लीला ताको होय ॥ ३ ॥ कथा कथान्तर कल्पान्तर में चित्त ते वस्तु विचार । सर्वान्ते ते जानिये जासो सर्व विस्तार ॥ ४ ॥

End—सेवासखी अगायऊ आगो नयना सोय । पच्चै मूल स्वरूप की जानु आगनो होय ॥ विनु जानै चैारासी माही । भूली सखी खेलते ताहीं ॥ चैारासी माया खेल में खेलत सखि जिय संग । लीला शक्ति पेलावही सो सुरति मन के रंग ॥ सो मन सब सखि आपन होई । माया खेल खेलारी जोई ॥ जब लगि हम नहि सुरति जाना । दुष में खेलत सुख के माना ॥ दुख सुख को यह खेल है देखा खेल वनाव । आगो नयना नींद गइ मिलि सुरति सेवा सखि पाय ॥ इति विवेक सार सुरति संपुरनम् ॥

Subject—गुरु वंदना, धर्म महिमा, सृष्टि उत्पत्ति—पृ० १—३

राधा महिमा पृ० ३—४ ।

ब्याह वर्णन राधा कृष्ण का पृ० ५—९ ।

लीला माहात्म्य—पृ० १० । इति ।

No. 386. Sidhadāsa jī kī Śabdāvalī by Sidhadāsa of Haragāma. Substance—Country-made paper. Leaves—114. Size—9 × 6 inches. Lines per page—12. Extent—600 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṃvat 1800 or A. D. 1743. Place of deposit—Mahanta Gurūprasādajī, Haragāma, Post Office Parabatapur (Sultanpur).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ साषो ॥ श्री जगजीवन जक्त गुर दूलन दानि उदार सगुन सरब हित जानि सुभ सिद्धा नाम पचार ॥१॥ नयन के भीतर चैन है मयन कोटि छवि जासु ॥ तासु चरन तर मन बस्यो सिद्धा निरषि हुलास ॥ २ ॥ नाम चैन है राम को दीप संत करि जाना । ताहि नयन बिच रैनि दिन करि सिद्धाम नियाना ॥ ३ ॥ बजै रैन दिन बांसुरी धरै कदम तर ध्यान ॥ सिद्धा ताको का करै करम कोट परमान ॥ ४ ॥ सिद्धा भव जल अक सर तामें माया जार ॥ मीन जीव सब जानि कै पेलत काल सिकार ॥ ५ ॥ नाम भजन ते जीव यह जल सरुप होइ जाइ । जाल बीच आवै नहीं काल देषि पछिताहि ॥ ६ ॥

End—सिद्धा यहि संसार में कंत निरषि पहचानि ॥ चहै निरंतर पास ही अपने मन दृढ़ ज्ञान ॥ सिद्धानाम जिक्रि ते चैासठि घड़ी बिताउ । कंत दरस की लालसा छिन छिन बाढ़त ढांउ ॥ बिरह सत्य यह पोथी पहर जयनपुर कीन ।

सिक्षा विरहि पहिचानि मित्र चरनन तर सिर दीन ॥ अष्टादस सै समै दस बारन मास पुनीत ॥ सिक्षा देरत आयु मैं परे पठ पावत मीत ॥ इति विरह सत सम्पूर्णम् ॥

Subject—पृ० १—२५ तक—साखी—दोहों द्वारा शिक्षायें।

(२) पृ० २६—९४ तक—शब्दावली—नाम की महिमा का ज्ञान।

(३) पृ० ९५—११४ तक—शब्द साखी—कवित्त सवैयों द्वारा हरिनाम का उपदेश। विरह, सत-गुरु ज्ञानादि कई विषयों का रूपकों द्वारा मनोहर वर्णन।

No. 387. Ānanda Rasa by Śīlamaṇi. Substance—Country-made paper. Leaves—26. Size—6 × 3½ inches. Lines per page—14. Extent—256 Anushṭupa Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṃvat 1949 or A. D. 1892. Place of deposit—Bhaiyā Jadunātha Siṃha ji Ṭhākura, Raisa, Rehuā, Post Office Baurī, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ सरसत बरसत रंगवर रामनाम सुख कंद शीलमनी जन जान है युगुल वरन युग चंद ॥ १ ॥ रामनाम रस रूप हैं रस वरणत वरवेद भावभेद १ शभेद बहु नामी नाम अभेद। २ वत्सल सख्य सिंगार रस दास्य शांतमय नाम शीलमनी हिद मैं वसौं राजिव लोचन राम ॥ ३ ॥ रामनाम वर वरन पर परमतत्व नर रूप रस मूरति माधुर्यमय ईश ईश के भूप ॥ ४ ॥ रामनाम ही होत हैं सब रवतार सुरेश शीलमनी परतत्व कवि मनत मुनीश महेश ॥ सरल सुखद वर वरन युग विशद र शाल विशाल महिमा व्यापक शकल जग जन जीवन रघुलाल ॥ मधुर मनोहर सुधा से गौहर गहू उदार। अशल सुतारक ताल मंव अद्भुत अगम अपार ॥

End—रसमय मूरति रामसीय की हिय मैं राजत मोरे हैं। जीवन प्रान किशोर अनूठे मीठे श्याम सुगोरे हैं ॥ अतिसै रूप अनूप मोहनी अंग अंग रस बोरे हैं। शीलमनी मन हरन विलोकनि अरुनारे हग कोरे हैं ॥ हरित अरुन रंग सख्य सुधा कर राग सरूप सदाई हैं। परनै प्रीति प्रतीति प्रेम रति अति विश्वास समाई हैं ॥ निश्चय ज्ञान सनेह लगन वपु चतुराई मधुराई हैं। शीलमनी रस सख्य रसीलो राम रंगीला पाई हैं। हास्य भयानक करुना अद्भुत वीर विभत्स रुद्रा हैं रस सिंगार सख्य रस वत्सल सांत दास कर मुद्रा हैं। स्याह अरुन रंग सोन सेत रंग चित्र शील मति फुंद्रा है ॥ इति श्री शीलमनी कृत आनंद रस सम्पूर्ण ॥ दोहा ॥ मार्गसीर्ष तिथि तीनि दश शुक्ल पक्ष भृगुवार वत्सर ज्ञान पुनि गोक्ष कहि आठ गुणवली अपार ॥ लेषक जानकी शरण संवत १९४९ ॥

Subject—रामनाम की महिमा और भक्त का प्रेम।

No. 388. Vivekasāra by Śitaladāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—33. Size—8¼ × 4½ inches. Lines per page—8. Extent—200 Anushṭupa Slokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Saṃvat 1903 or A. D. 1946. Date of manuscript—Saṃvat 1908 or A. D. 1851. Place of deposit—Paṇḍita Rāmānānda ji Miśra, village Hinangaurā, Post Office Kādipur District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरु गणपति शारदा कमलापति सिव हनुमान ॥ जन सीतल सुमिरन करै देहु सुमति सतज्ञान ॥ १ श्री गुरुचरण सरोज रज हिय धरि पर उपकार ॥ विवेक सार बर्नन करै सीतल तत्व विचार ॥ २ ॥ तत्व विचार विवेक जुत वेद सास्त्र मतसार ॥ ग्रंथन नाना भांति ते जथा सुमति अनुसार ॥ ३ ॥ गुरु शिष्य संवाद बरनत विविध प्रकार ॥ अर्जुन ऊधौं सों कह्यो कृष्ण यही निरधार ॥ ॥ ४ ॥ गुरु सों पूछत शिष्य यह कह्यो विवेक को सार। सो विवेक काको कहो कहो नाथ विस्तार ॥ ५ ॥ गुरुवाच हंस विवेकी एक मति छीर नीर करै न्यार ॥ नौ बेकार पानी तजे छीर ब्रह्म सोइ सार ॥ ६ ॥ काम क्रोध मद लोभ रज तम तृष्णा अहंकार ॥ मत्सर नौ तजि संत सो पानी जानि विकार ॥ × × × × ×

End—दयासिंधु दाया प्रभु दीनबंधु सुपरास तासु दास सीतल भनै सदा चरन कि आस ॥ ९७ ॥ सीतल अपरंपार गति वेद न पावत पार। निज मति सम बरनन कहौ नाम विवेक है सार ॥ ९८ ॥ यहि नहिं दीजै धूर्त को अरु निंदक अभिमानि। राम अभिलाषी संत जाति नहि देव हित जानि ॥ ९९ ॥ संवत बोनइस से अधिक तीनि पौष बुधवार। असित सतमी कीन तब विवेकसार बिस्तार ॥ १०० ॥ इति श्री सीतलस्य विरचितायां विवेकसार संपूर्ण संवत १९०८ बोलि को वाकजने भेद पसव मह होई मरइ पेलो के बोले क बोली जनोह बल मौलि उइ बोले तौ सुजन अन मोले तोनो बोले तब कोइ धरक अदमो मोले मटइ दवाइ के चारि बोलो बोले तब जानी को कोइ क मरन भ अपन धरार कहंद देपो लेई ॥

Subject—(१) १—४ तक—विवेकसार कथन।

(२) पृ० ५—५ तक—नवधा भक्ति।

(३) पृ० ६—१४ तक—ब्रह्म, माया तथा जीव के भेद। रामनाम महिमा का कथन, जीव अवस्था विचार। वेदांक चार फल और उनको क्रिया।

(४) पृ० १५—२० तक—वेद का रूपक, द्वादश यम वर्णन। नेम वर्णन। तितिक्षा, यज्ञ तथा जप तपादि लक्षण।

(५) पृ० २१—२२ तक-इन्द्रिय वर्णन।

(६) पृ० २३—३० तक—पंचतत्व, पंच प्रकृति, पंच वायु इत्यादि वर्णन के पश्चात् रामनाम महिमा।

No. 389. Dillagana Chikitsā by Sītārāma. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—40. Extent—1080. Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1846 or A. D. 1789. Place of deposit—Paṇḍita Martaṇḍa Datta, Vaidya, Rāe Bareli.

Beginning—पृ० ३ से प्रारम्भ। अथ नाड़ी-परीक्षा। सुंदर हाथ कवल दल नैनी मुलंगुष्ठ सुहाई। नाड़ी के घर तुझे बताऊं जानत पंडित राई॥ पहिलें पित्त समुझिये बाला काक गती मलबेली। टीका मोर की कौन लई है मृग गति पाय नवेली॥ दुजे कफ की चाल कबूतर ठुमुक ठुमुक पग धरने॥ है सिंगार निपुण सुनि प्यारी कविता श्लोकर बरने॥ वाय तीसरो पलकवान धौर बांकी भवें कमानें गति नागिन की प्रीति भामिनी वैद्य शिरोमणि जाने॥ कबहूं मंद चले क्रम नाड़ी कबहूं वेग जुहाई॥ द्वंदज दोष कंवल दल नैनो ताको विथा बताई॥ चाल चलै तीतर की अथवा लवा बटेर सयानी। सन्निपात तिरदोष है ताको आई काल निसानी॥

End—ये नाजुक तन प्यारी तुमने कहो कहां ते पाई। देख मधुरता अधरन की सों अमृत गयो छिपाई॥ रत्नज्योति के छानि नीर में डारे अग्नि औटावे। चार सेर जल छानि भामिनी षट पल तेल मिलावे। तेल बराबर सुघर कायफल पीस लाव सुभ नैनी। धरे अगनि में तेल रह जावै छाने सुन सुख दैनी॥ करके फोहा × × सो तेल का कुच ऊपर जो परसे। नोबूवत दिल्लगन पियारी कुच कठोर सी दरसे॥ ३८॥ इति श्री दिल्लगन चिकित्सायां हुटी सिंह सुत सीताराम विरचितायां त्रयोदशो शृंगारः १३ पुस्तक लिखी छेमराज पठनार्थं संमत १८४६ आगरे मध्ये सुभं भूयात इति॥

Subject—नाड़ी परीक्षा, पित्त, कफ, वायु जुराज, पित्त निदान, उपचार, कफ वायु उपचार, साध्य असाध्य लक्षण, मूत्र परीक्षा, प्रथम शृंगार समाप्त। पित्तज्वर प्रतीकार, वातज्वर, वातपित्त, पित्तश्लेष्मज्वर चिकित्सा, मूलज्वर, स्वेदज्वर, विषमज्वर चि०, ज्वरांकुश रस, त्रिदोष भंजन, द्वितीय

श्रृंगार समाप्त। कर्णशूल चि०, सन्निपात उसके भेद, संध्यक, पंतक, रूग्दाहक, चित्तभ्रम, शीतांग, तंद्रिक, कर्णक, भग्ननेत्र, रक्तष्टी, प्रलाप, जिह्वक, अभिन्यास, सन्निपात की चिकित्सा, तृतीयो श्रृंगार स०, अतीसार चिकित्सा, वातअती-सार, पित्त अतीसार, श्लेष्म अतीसार चिकित्सा, बृद्ध गंगाधर चूर्ण, लेप अतीसार, दाड़िमाष्टक चूर्ण, गृहन्यावलेह, अरसरोग। चतुर्थ श्रृंगार समाप्त, अजीर्ण विशुचिका चि०, विलंबिकार्यो चि०, कृमि चि०, हलीमक पांडु कमालिया पांड रोग चि०, रक्तपित्त चि०, पेठा पाक विधि राज छई चि०—पंचमो श्रृंगार। कास स्वास चि०, हिका प्रतीकार, स्वरभेद चि०, अरुचि चिकित्सा, छई चि०, तृषा चि०—षष्टो श्रृंगार। मदम्र उपचार, चरण बिवाई, दाह चि०, उन्माद चि०, वात-व्याधि चि०, वातारी तेल, पक्षाघात त्रि०, सतमो श्रृंगार। वातरक्त चि०, अग्निवायु चिकित्सा, आमवात चि०, सूच चि०, अष्टमो श्रृंगार। वमन करन, जुलाब विधि, पेट अफारा चि०, गुल्म त्रि०, हद्रोग चि०, मूत्र कृच्छ चि०, मूत्रघात चि०, मूत्ररोध प्रतीकार, पथरी चि०, प्रमेह चि०, पांडु रोग चि०, कंठमाला चि०, स्लीपद कंडु, घरौला शोथ चि०, भगंदर चि०, मंद बुद्धि चि०, शीत प्रसूत चि०, दशमो श्रृंगार। जलोदर चि०, कुष्ट चि०, श्वेत कुष्ट चि०, क्षय रोग चि०, अम्लपित्त चि०, दाद चि०, खाज चि०, एकादश श्रृंगार। क्षुद्ररोग चि०, कंठ रोग चि०, मुख दुर्गंध चि०, दंत रोग चि०, स्याह मिस्सी, अरुण मिस्सी की विधि, दाद चिकित्सा, अधर चि०, कर्ण प्रतीकार, परवाल चि०, अंजन हारी चि०, आंख वन्हो को चि०, शिरोवर्त्त चि०, द्वादशो श्रृंगार। स्त्री चि०, प्रदर रोग चि०, भगशूल चि०, भग संकोचन विधि, गर्भ निवारण, गर्भ धारण चि०, स्त्री प्रसव कष्ट चि०, कुच कठोर करण।

No. 390. Krishna Datta Rāsā by Śwadina of Bilgrāma. Substance—New paper. Leaves—17. Size—$8\frac{3}{4} \times 6\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—20. Extent—600 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṃvat 1901 or A. D. 1844. Place of deposit—Śrimān Mahārājā Rājendra Bahādura Sinha Sāhaba, Bhingā Rāja, Baharaich.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ कृष्णदत्त रासा लिष्यते॥ दोहा॥ शिव सुत के पद बंदि क गौरी गिरा मनाय। करत विनय शिवदीन कवि दीजै ग्रंथ बनाय॥ १ जे गुरु चरण सरोज रज अंजन लोचन धारि। ते दर्शौं त्रयकाल के कहत पुराण विचारि॥ २॥ छप्पय॥ ब्रह्म सहित नभ खंड चंद्र संवत परि-मानो। बहुरि राग रस दीप मातमा धाके आनो॥ कियो समर नरनाह विदित

विश्वेन वंशवर। उदित देश परदेश सुजस रूस छायो घर घर ॥ लखि कवि शिवदीन विचारि चित करत ताहि वर्नन सुघर। करजोरि विनय कवि कुल करौं बिगरो वर्ण संभारि सब ॥ ३ ॥ दोहा ॥ नाजिम महमूदली खां वली सुजान विचार। दियो हजारे यवनपति सुमन देश शरवार ॥ ४ ॥

End—पायो नवाब जब हुक्म साह। दै खिलत खास बीरा सुचाह ॥ दीनो बसाय भिनगा नरेश। भरि रह्यो भूरि आनंद देश ॥ नरनाह बांह को छांह पाय। जन सधन अभय पुनि बसे आय ॥ घरउमाह मंगल सु होत। दे रहे आशिषा द्विजन गोत ॥ दोहा ॥ देत आशिषा भूपतिहि कवि कोविद के जाल। जोली मंदर मेरु महि तैाली अचल भुवाल ॥ इति श्री मनमहाराजाधिराज विश्वेन वंशावतंश भूप शिवसिंहात्मज सर्वजीत सिंह तनुज कृष्णदत्त सिंह हेत विरचिते कृष्णदत्त राइसो कवि शिवदीन बंदीजन बिल्लुल ग्रामी विरचित नाजिम महमूद अली खां को युद्ध समाप्तम् शुभमस्तु। इति।

Subject—प्रार्थना, महमूद अली खां के नवाब ने शरवार देश हजारे में दिया, प्रथम कुकरावल में, जो कि लखनऊ के उत्तर एक नदी है, वास किया फिर बहराइच घाट पर बसे, कलहंसों के बहराइच में जीता और खिलअत ली—पृ० १—२—पांडे गोड़ा के महमूद अली से मिल गये और रामदत्त पांडे भिनगा पर उनके चढ़ा लाये। फिर करेंदा (गोड़ा) में आये फिर रावती के किनारे चैाकाघाट पर आये, और इनीफ से नैाखा (भिनगा) पर आये, राजवंश वर्णन तथा शासन विधि वर्णन। कृष्णदत्तसिंह के चचा उमरावसिंह का वर्णन तथा उनके दूसरे चचा कालीप्रसाद सिंह का वर्णन, तथा पृथ्वी सिंह के पुत्र क्षेत्रपाल सिंह और हरिभक्तसिंह का वर्णन तथा उमरावसिंह के पुत्र युवराजसिंह का वर्णन। क्षत्रपाल सिंह के अर्जुन सिंह हुए। त्रयोदशी सोमवार के शत्रुओं ने हमला किया। पृ० ३—६ तक राज की सेना की तय्यारी, दूत का भेजना, युद्ध वर्णन, महमूद अली खां के साले का मारा जाना और सेना का भागना, राज यश वर्णन तथा दीवान का वर्णन—पृ० ७। पुनः युद्ध की तय्यारी, नाजिम की तोपों का वर्णन तथा राजकीय तोपों का वर्णन, ७ दिन तक युद्ध का होना, फिर रमना (बाग) में युद्ध होना—पृ० ८—१०। नवाब का पुनः सेना भेजना और नाजिम के भाई का युद्ध करना। गर्गवंशियों की सहायता से युद्ध करना और भिनगा नरेश का भागना। पृ० ११—१४ तक। तुलसीपुर के पहाड़ी राजा ने बादशाह के सहायता दी और नंदप्रसाद के साथ सेना भेजी परन्तु फिर उनको भी हराया। गोंडा-नरेश ने भिनगा-राज को मेल करने के लिये पत्र लिखा उस समय गोंडा में अमान सिंह बिसेन राजा थे मेल होने पर फाैजी सरदारों के साथ पहाड़ में शिकार खेलने चले गये फिर बाद

चमली होने से नवाब ने नाज़िम को कैद कर दिया और कृष्णदत्त सिंह को राजा बनाया । इति ।

No. 391. Pingala Chhandobodha by Śiva Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—8 × 6 inches. Lines per page—40. Extent—900 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṃvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Thākura Jairāma Siṃha, Village Mirjāpur, Post Office Mahamudābād, District Sitapura (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ शिव कवि कृत पिंगल छंदो बोध लिख्यते ॥ दोहा ॥ श्री गजमुष मुष कहत हो रज हत विघन अमंद । ज्यों गिरीस गिरिजा भजत भजत सकल दुष दंद ॥ चारगे चारो देन फल सुमिरन हो के साथ । सीता सीतानाथ अरु राधा राधानाथ ॥ संकर भूषन भूमिधर धवल रूप मति धाम । श्रीपति सैनद सहसमुष शिव कवि करत प्रनाम ॥ सकल सिद्धि आवै निकट ध्यावत श्री गुरु संभु । नयो नयो नयो परै हिये त्रुक्ति आरंभ ॥ सुमिरि गिरा सेसादि मत करि के बहु विधि सोध । सुगम रीति भाषा रचत शिव कवि छंदो बोध । जो बानी छंदो मई पद्यांसा पहिचानि । होइ जो तासों रहित सो गंधा लोजै जानि । ॥ जामें मात्रा बरन की संख्या कीन्ही होइ । शिव कवि पिंगल के मते छंद कहावै सोइ ॥ पद्यावानी द्विविधि कर जाति वृति पुनि जानि । संख्या जामें कलनि की जाति सो कहै बषानि ॥ संख्या जामे वर्न की वृत्त ताहि पहिचानि । केदारादिक के मते वृत छंद सब जानि ॥

End—मोमदोन अजमेर पीर गढ़ संभारै ॥ उपम कहि कै कौन मकनपुर साह मदारै ॥ बहिराचच सलार या रथो बडो पैदाई । दिल्ली तोपे कुतुप तास की करी बड़ाई ॥ सुमिरै हसन हुसैन जिन कुपुर मारि कीन्हो ध्वजा । मन बचस कर्म स्यहि कहै पंपे पीर मेहति सदा ॥ थकित पौन रहै जात सिंधु नहिं लहर संभारत फनिपति फन नहिं कढत कूर्म नहिं वक्र निकारत ॥ घट पद भ्रमा भम्यो विमल नरपति नहिं सारद ॥ सवितारथ रहिजात वेग भ्रमि रतन मारथ ॥ दल मलित धरनि धतंक मय जस उदित टोपायुत जव जुलफ केर करि कै समार है सर कराट दुदुल चढ़त कनतषन परनग जाड़े सब जवाहिर झलक मोतियों वरिस्त लता है विराजै मुकुट पर नूर का तज्ञ लालोपा भाल ऊपर ॥ इति श्री शिव कवि कृते पिंगल छं'' बोध समाप्तः ॥ श्री संवत १९२१ वैसाष मासे अधिक मासे शुक्ल पक्षे तिथौ पूर्णमायाम चंद्रवासरे इदं पुस्तकं लिषतं विश्वनाथ पांडे मोचके ।

Subject—छंदों का वर्णन है।

No. 392. Singāsanabatisī (Vikramabatisī) by Śivanātha of Asanī (Fatahpur). Substance—Country-made paper. Leaves—52. Size—$10\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—7. Extent—775 Anushṭupa Ślokas. Appearance—New paper. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṃvat 1861 or A. D. 1804. Date of manuscript—Hijarī 1256 or A. D. 1878. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhingā.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ विक्रमबतीसी लिख्यते शिवनाथ कवि कृत ॥ दोहा ॥ गौरीनंदन गजवदन भागिवंत गुन माल। कृपा करो मो दीन पर बरनो ग्रंथ विशाल ॥ १ ॥ बानीजु दानी सदा मानी सकल जहान। तोनो पुर रानी कही मोहि देत बरदान ॥ २ ॥ है पेसो बलरामपुर दाता ज्ञाता लोग। पूरबदिशि विज्रुलेश्वरी दुरि करैं तन शोग ॥ ३ ॥ नदी रापती कोस भर उत्तर दिशा सुहात। देखैं ते पातक कटैं पुन्य अधिक सरसात ॥ ४ ॥ सात कोश पटनेश्वरी राजैं दिशा इशान। अवध पचोसै कोस है दक्षिण को परमान ॥ ५ ॥ तवन सहर में भूप हैं नवल सिंह जनवार। तिनके द्वै सुत दानिया कवि लोगन पर प्यार ॥ ६

End—इति,श्री सिंहासन बतीसी मुकनन पुतरी कथा द्वात्रिंसमः समाप्तः ३२ श्री महाराजकुमार श्री भैया अर्जुन सिंह हेत कवि शिवनाथ विरचिते अर्जुन प्रकास ग्रंथ समाप्तम् ॥ दोहा ॥ भाषा कीन्ही जानिकै अर्जुन सिंह के हेत। बानी संस्कृत में रही सुख कथा सिरनेत ॥ महापात्र शिवनाथ कवि असनी बसै हमेस। सभा सिंह को सुत सदा सेवक चरन महेश ॥ जोरैं में कर कविन्ह सों चूक परी जो होइ। ताको देखि सुधारियो परजो जानो सोइ ॥ इति श्री सिंहासन बतीसी समाप्तम् शुभमस्तु सिद्धिरस्तु श्री महाकाली देव्यैनमः श्री सरस्वत्यैनमः ॥ सर्व देवायनमः। सन १२६५ साल श्री।

Subject—प्रार्थना व राजवंश वर्णन—पृ० १—२। विक्रमादित्य-उत्पत्ति कथा, गंधर्व का इन्द्र के श्राप से लोक में आना, भर्तृहरि और विक्रम २ पुत्रों का जन्म भर्तृहरि व विक्रम दोनों का क्रम से राज पाना—पृ० ३—११ तक। राजा भोज का सिंहासन पाना—१२—१४। प्रथम पुतली पंज मंजरी की कथा—१५—१६। चन्द्रावती पुतली और जयवंती की कथा, पृ० १७। चंपा, मंजुघोषादि की कथा—१८—२३ तक। रोमा, कपिलावती, चित्रिश्रा की कथा—२४—२९ तक। मदन सेना, मदपिंडरी, गंगा की कथा—३०—३१ तक। रतन मंजरी,

मानवती, चन्द्रमुखी की कथा—२२—२५ तक। चन्द्रमोहनी, कमलावती, अनंगध्वजा की कथा—२६—२८। मंगलावती, सुभद्रा, सुभग पिंजरी की कथा। ३९—४० तक। चंद्रिका, कमलमुखि, दुतोही की कथा—४१—४२ तक। रूप सागरी, नवमेघा, चंद्रकला, विचित्रा की कथा—४३—४७। घोषा, सोम पिंजरी, मुकनल की कथा—४८—५१ तक, कविवंश वर्णन—५२ पृ०। इति।

No. 393(a). Rasa Brishṭi by Śiva Nātha of Puwaya. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—10 × 6 inches. Lines per page—50. Extent—1,535 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṃvat 1942 or A. D. 1885. Place of deposit—Paṇḍita Avadhesa Panday, Village Khamahariha, Post Office Baranāpur, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः॥ अथ रस वृष्टि ग्रंथ लिष्यते॥दोहा॥ श्री गणपति पद वंदि कै उर धरि शिव सुप धाम॥ शारदादि महिदेव कवि करि करजोरि प्रणाम॥ सब मिलि मोहि कृपा करौ देहु विमल हिय दृष्टि॥ राधा हरि शृंगार सुप कियो चहौं रस वृष्टि॥ वारिज नैन सोहै पकई रदन जाके सुषमा सदन सो सहाय करि रति के*॥ सब सुषसागर उजागर गुनाकर है बुद्धिवर नागर देवैया शुभ गति के। विमल करन ज्ञान ध्यान धरि शिवनाथ संकट हरन ये चरण गणपति के*॥ दारिद दहन सुरतरु को ग्रहण सोहै मूषक वाहन विहुगन पलमति के॥ २॥ जै वाणी गुन पानि मातु अघ हानि करनि तुव॥ जै अंबिका भवानि दानि कल्याण करण ध्रुव॥ जयतनाम तव दास वास संतोष ज्ञान ध्रुव॥ वांछित फलदातार सकल संसार चरण छुव॥ चारि पदारथ कर बसे दुवि दरिद्रादि नाशनो॥ करिये कृपा शिवनाथ पर विदित बहुपुर वासनो॥

End—अथ कृष्ण जु को शांत रस वर्णन॥ दोहा॥ और कछू न सोहाय पद पकहि रस अनुराग॥ सो सम रस' बरनत सुकवि उर उपजत बैराग॥ सवैया॥ दाड़िम दाषन ऊषन भूषन माषन चाषन को बिसराई॥ कंदन मंदन गंदन कंचन चंदनि चंपकि चंद निभाई॥ जो अधरा मधु माधव चाषि लगो रद लाल अमोल मिठाई॥ तादिन ते शिवनाथ उठाइ उठाइ धरो वसुधा को सुधाई॥ राधे जू को शांत रस॥ कवित॥ जादिन ते पोरोसो पिछौरी ओढ़े देष्यो तुम्हे तादिन ते बिना देषे पीरोतन परि गई। अंगनि अंगोठो सों अंगराग को रूपै ताहि सपिन सों बोलि चालि पेलिबो बिसरि गई॥ लगी झकझको बकबको टकटको लाल मूरति तिहारी प्यारी प्राणन मे भरि गई॥ आसन बसन वास चंदन ते चंपक ते चन्द्रमा ते चांदनी ते बैगुनक जरि गई॥ काम कोध लोभ मोह दंभ नित भाषत है॥

आगुण कहानो कहै चोपें घटे रस को ॥ करै तलवार धोर नेक ना धरत उर विषय को बड़ाई करि गावें नर जस को। साधनते चरचा न करै रो जातें हरै अघ बोलत कुचाल वाक जाइ पाप बस को। रसना हठीलो हठ छोड़ि शिवनाथ कवि कबधौ परैगो तोहि रामनाम चसको ॥

Subject—इसमें नवरस, हाव-भाव, नायक नायिका-भेद आदि का वर्णन है। उदाहरण में श्री कृष्ण और राधिका का प्रेम वर्णित है।

No. 393(*b*). Rasa Ranjana by Śiva Nātha. Substance—Country-made paper Size—24×7 inches. Lines per page—48. Extent—72 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit—Ṭhakura Naunihāla Siṃha, Kaṇṭhā, Unāo.

Beginning—अथ रस रंजन सिंगार आदि नौ रस को ग्रंथ शिवनाथ कवि कृत से संग्रह कुछ करत हैं। अथ तीनो नाइका को भेद ॥ दोहा—त्रिगुण महामाया भई तीन भेद परकास। स्वीया परकीया कही पुरजोषिता विलास। तीनौ के भेदनि रहे तीनि लोक परिपूरि। इनहीं ते उपजत जगत यही सजीवनि मूरि ॥ २ ॥ स्वर्ग मनुज पाताल फल तीनौ कौ जिय जानि। देव मनुष अरु नारकी जीव तीनि मन मानि ॥ ३ ॥ सत गुन रज गुन तम गुनौ तीनौ के तन जानि। सेत लाल अरु स्यामहू रंग कियो हू मानि ॥ ४ ॥

End—सवैया—जुवती गन मे तट कूप पै ठाढ़ो जबै नंदलाल पै दीठि करै। उत्साह सो बोलि उठै हंसि हाथ सहेली के हाथ धरै ॥ सब लोगनि की तजि लाज तहां निज नाह तिहीं दिसि लै हगरै। भरिकै धरिकै अपनी गगरी अरी और सखीनि कौ पानि भरै ॥ २ ॥ आठौ गांठि सठ नायक मे यथा—विहंसनि मनसा कर्मना चितवनि वाचा चाल। चातुरता मे आतुरो आठ गांठि ये लाल ॥ १ ॥ हे लाल ये तिहारे संग मैं आठ गांठि जे बांठि गठीलो नाइका होइ तिन सों तुमसो ठीक जोर बनि है ॥ हम गठीलो नाहीं हैं ताते हम से तुम से नाहीं बनैगो जारो ॥ अनभिज्ञ नायका को सवैया—

नारि कछू दिन की अरु आय बहिक्रम योगिहो होई।
काम को भेद न जाने कछू दुल ही तन हेरै प्रतिकूल गोई ॥
रैन दिना लरिकान को संगति खेलन कौ रहे खेलन कोई।
बारन जानि सुजान कहै अनभिज्ञ मनोहर नायक सोई ॥ ३ ॥

Subject—नायक के तीन भेद वर्णन। ३ लोक, ३ गुण, ३ देव, ३ कर्म वर्णन। स्वकीयादि वर्णन का दोहा बारन कृत रसिक विलास से वर्णित। उत्तमा, मध्यमा, अधमा नायका वर्णन। पृ० १

मुग्धा नायका वर्णन, हाव-भाव-लक्षण बर्णन, उद्दीपन व आलंबन वर्णन, आठ भांयी भाव वर्णन, चेष्टा वर्णन, शठ नायक में आठों गाँठि वर्णन—पृ० २

No. 394(*a*). Amarakōsha Bhāshā by Śiva Prasāda Kāyastha of Bhingā (Baharāich). Substance—Country-made paper. Leaves—137. Size—$13\frac{3}{4} \times 5\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—22. Extent—3,740 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1874 Samvat or A. D. 1817. Date of manuscript—Samvat 1876 or A. D. 1819. Place of deposit—Bābū Padamabaksha Simha Lavedpur (Bhingā), Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ वंदो श्री गुरुचरन जुग हरन सकल भव त्रास। जा आने सुर सिद्ध मुनि किये ब्रह्म में वास ॥ १ गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु सिव गुरु गणेश गुर राम। गुरते दूजो श्रैार नहि सहित शक्ति अभिराम ॥२॥ ताते गुरु पद बंदिये भव बारिधि को पोत। पोत सरित तरिवो करै यह भव तारन होत ॥ ३ ॥ अमरकोष भाषा किये लीजै सुकवि बिचारि। सुरबानी बुध लोग को भाषा अबुध निहारि ॥ ४ ॥ छंद अधिक बहु ग्रंथ में है पढ़िवो अति क्लिष्ट। ताते है अति सरल लषि पढ़त सबै करि इष्ट ॥ ५ ॥ चोपाई श्रो दोहरा ये द्वै छंद प्रसिद्ध। हैां याही में ग्रंथ किय है दोहन की वृद्धि ॥ ६ ॥

End—अमर तीसरे कांड मों आठ वर्ग को देषि। चारि वर्ग भाषा विषे आवत काज विशेषि ॥ १ ॥ सो मैं भाषा करि कह्यो दोहा छंदहि माह। भाषा विषे प्रवीन सो पढ़िहै जो करि चाह ॥ २ ॥ चारिवर्ग जो लिंग के भाषा मो नहि होइ। स्त्री पुंस नपुंसकहि इक्लिन पुंसक सोइ ॥ ३ ॥ ताते भाषा नहि करो नाम-मात्र को काज ॥ संस्कृत शब्द जु होत हैं आवत जे व काज ॥ ४ ॥ लिंग भेद भाषा विषे बिन कारज को पेषि। ताते छाड़ो चारि ये स्वार्थ रहित कों देखि ॥ ५ ॥

पैाष मासे शुक्ल पक्षे तिथि पूर्णमास्यां विवस्वद्वासरे शिवचरेण लिखत सम्वत १८७६ ।

Subject—प्रार्थना व निर्माणादि वर्णन। स्वरादि कांड, प्रथम सर्ग वर्णन-पृष्ट १—२९ तक। पर्वतादि श्रोषधि नदी वृक्षादि नाम तथा सिंहादि जीव संज्ञा वर्णन—पृ० ३०—६० तक। स्त्री वर्ग श्रैार रोगादि नाम वर्णन, शरीर नाम, गहनों के नाम, सुगंधित वस्तुश्रों के नाम, वस्त्र वस्तुश्रों के नाम वर्णन। पृ० ६१—८३ तक। पालतू जानवर, राजा, व्यवहारिक वस्तुश्रों तथा कारबारियों के नाम वर्णन। पृ० ८४—१०० तक। गाय के अंगादि नाम, रंगों के नाम, सुवर्णादि के नाम,

शराब, जुवा आदि व्यसनों के नाम द्वितीय काण्ड—पृ० १०१—१०९ तक। विशेषणादि ४ वर्ग का अनुवाद वर्णन। पृ० ११०—१३७ तक। इति।

No. 394(*b*). Vaidya Jiwana Bhāshā by Śiva Prasāda. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—10¾ × 5 inches. Lines per page—11. Extend—600 Anushṭupa Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhinga.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा—फागुन सुदि को पंचमी गुरु वासर सुभ पाइ। शिवप्रसाद भाषा रचत लोलिम राज बनाइ॥ श्लोक एक प्रति भाषा में छंद एक है॥ छंद मत्तगयंद सुंदर गात सुभावहिते अह प्रीति रमा हिय मात्र रुदाई। धाम अहै किमि स्यामल देत सुमंगल को सबही कह आई॥ रक्त सरोरुह सो पद लोलहि राषत है यह वेदन गाई॥ वंदत हैं हर मौलि जटा करि गंग तरंग सु निर्मल ताई॥ पुनर्यथा॥ वाम सवै मह रत्न सुदी सत द्रष्टि सदां सुख कवि लिखोई। श्रंग सुसत सुयाम अहै अस पाप अठारह बाहुते होई। सो शिव भक्ति भजे करि भक्ति घरी शत पाद्य अमो यक रोई॥ है घट अदवनि तो परदक्ष दनोदत्त सर्व सुधाघर सोई॥ २

End—छप्पय छंद॥ वेद अथर्वन वाक्य रहा जो काल विचारो। कहै परम परमान धनंतरि केवल भारो॥ मरजादा जो मान दिवाकर पंडित जानो। शशि सो प्रगट्यो पुत्र सुधानिधि सम अनुमानो॥ अति बड़ी काव्य जिन प्रगट किय सभा भूपति भूषन गनित। वह तिया उक्ति जीवन व पद लोलिमराज सुकवि भनित॥

इति श्री वैद्य जीवने लोलिमराज कृत वैद्य शिवप्रसाद कायस्थ भाषा विरचितायां सप्तमोल्लासः॥ समाप्तम्॥ इति॥

Subject—प्रार्थना छंद १—६ तक। वैद्य-लक्षण, ज्वर का काढ़ा, सन्निपात का काढ़ा, तिजारी और चौथिया का काढ़ा, शीतज्वर, विषमज्वर, ज्वरप्रतिकार छंद ७—७८। अतीसार ज्वर, महागंगाधर चूर्ण। संग्रहणी प्रतीकार। छंद ७९—१०५ कास स्वास मतिकादि प्रतिकार। छंद १०६—१४७। छर्दि रोगान्त कफादि प्रतिकार। छंद १४८—१९२। मदन उत्पात प्रतिकार, अतिकशता, रति पुष्टि, विदवताप-हरन, अतीसार, पंचामृत पर्पटी रस, विस्वासिनो वल्लभ रस। छंद १९३—२१६—इति।

No. 395. Kakaharā by Śiva Prasāda of Saraiyā, Baharāich Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—8 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—90 Anushṭupa

Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṃvat 1924 or A. D. 1867. Place of deposit—Gangādīna Iswari, Village Udawāpur, District Baharāich, Post Office Baranāpur (Oudh.)

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ ककहरा लिष्यते ॥ सहर सरैयां वास करो जगवाजगी बजारा । सिवप्रसाद गरीब के एक रामनाम अधारा ॥ अपनी अपनी कछु ना चलै सतगुरु होउ सहाय ॥ चौपाई ॥ कका कासी जानु सरोरा । गुरु उपदेस तें करमन थोरा ॥ कबहुक चोला वास करु भाई । गुरु उपदेस बसै तहं जाई ॥ खखा खरच करो दिन थोरा । आगे का कुछ होइ उजेरा ॥ बादि गया दिन आवहि न चेता । बीज ऊसर लै बोयऊ षेता ॥ गगा गरबित भयऊ अचेता । तासे चिरियां चुनि गई षेता ॥ बहु प्रकार सब बिधि समुझावा ॥ तबहूं न मूढ़ ज्ञान कछु पावा ॥ घघा घरहिं परी सब भूला । बिनु गुरु ज्ञान फिरै जग भूला ॥ जो तुम सार सब्द पहिचानौ काहेक इत उत भटका मानौ ॥ दो० ॥ चरन ग्रसे दस साहस बोरत गहिरे कुंड अरधनाम जब टेर करो परकरि निकारे सुंड ॥

End—अपनो जन जानिय प्रभु मोहि राषिय सरना गयो धातो मंगल चार जुग जुग देहु मैं वर मांगतो ॥ जेहि नाम मनसा बचन धरो कछु कारत चीर गुन पारसो ॥ ग्यान सकल अपधूत मारग दीन कर मोहि आरसो ॥ सिव प्रसाद गुर चरनन परे आधीन होई ईश्वर मग ते जेहि जब्स होइ साचित टिढ़ मत राम गुन सोइ त्रासते ॥ दो० ॥ सब संतन की दया ते लिया ककहरा गाइ । भूल भटक जो होइ कछु सतगुर सेठ बनाय ॥ लालन की यह हाट है भला कहै कोइ कुर । तापर चित ना दीजिए अपुरा है भरपूर ॥ सत गुर हंस काज कै दीना । अमी सजीवन हंसा लीना । छुघ दस मारग को गति पावै । छिन मैं आवै छिन मैं जावै ॥ सिवप्रसाद चरनन के चेरे । राम रसाइन पिये सवेरे ॥ दोहा ॥ संत रंगोले राम हैं राम रंगोले संत ॥ सिवप्रसाद रंगोले संतन चरन परसत गुर कौन महंत ॥ इति श्री ककहरा सिवप्रसाद कृत संपूरन सुभ मस्तु दसषत । रघुवर दास संवत १९२४ अगहन मासे कृष्ण पक्षे तिथौ द्वितीयाम शुक्रवासरे ।

Subject—ककहरा में उपदेश के दोहे और सतगुरु को महिमा तथा उनको सेवा का फल वर्णन है ।

No. 396. Kriṣṇa vilāsa by Śivarāja Mahāpātra—Substance—Country-made paper—Leaves—140. Size—9 × 5¼ inches. Lines per page—12. Extent—1,417 Anushṭupa Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date

of Manuscript—Samvat 1800 or A. D. 1742. Place of deposit—Rājā Bhagwān Baksha Simha, Rāja Amethi, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—पृ० १ से—तत्र मुग्धा लक्षन ॥ दोहा ॥ नूतन जोबन की झलक जा तिय के तनु होय ॥ ताको मुग्धा कहत हैं कबिवर पंडित सोय ॥ यथा ॥ खंजन की सुघराई कछु बिन अंजन नैननि आनि हई है ॥ पूरन चन्द सों चारु कछू मुख को छबि सोभित थान भई है ॥ थोप भई उर थोरे मट्टू गति मंद गयंदनि को जो लई है ॥ मैन महीपति जोबन को बसिबो तिय के तन सोध दई है ॥ दोहा ॥ मुग्धा के दो भेद ये कबिजन करत बिबेक । एक कहत अज्ञात है ज्ञात यौवना एक ॥ तत्र अज्ञात यौवना लक्षणम् ॥ दोहा ॥ निज तनु यौवन आगमन जो नहि जानै नारि । ताहि कहत अज्ञात है लक्षण सुकबि बिचारि ॥ यथा ॥ सवैया ॥ जाय जनी सों कहो अरि कै यह कैसो कछूक उपाधि भई है ॥ रोजहि रोज बढ़े उर मैं दिन द्वैक सों रो यह रीति नई है । बात कहे ते हसों तुम्हरो यह तोहि दई किन सोध दई है ॥ नाहि करै कछु याको इलाजहि आपने काजहि भूलि गई है ॥

End—लीजै सकल बिचारि जो बुधिबल करि करि चेत ॥ कह्यो है मैं संक्षेप सों-बालबोध के हेत ॥ बनौं नहीं जहं बनैने लक्षण लक्ष्य बिचारि । कहत जो कबि शिवराज हैं लीजो सुकबि सुधारि ॥ ऊंचे तरुवर फरन को बालक हाथ पसारि । ताही बिधि या ग्रंथ मैं बरनौं मति अनुसारि ॥ गनत औगुन को कबहूं बड़े जु नर जग कोइ । करत सदा उपकार को यह कैसो जो होय ॥ छमियो मो अपराध है बिनय करत कर जोरि । ढिठई करि भाषो यहां ग्रन्थ बड़ो मति थोरि ॥ भानुदत्त मत बूभि कै, चन्द्रालोक बिचारि । बरनों कृष्ण बिलास है यथा बुद्धि अनुसारि ॥ ७३७ ॥ इति श्री कृष्ण बिलासे शिवराज महापात्र बिरचिते अभिधा उत्तम मध्यम अधम काव्यध्वनि बर्णनं नाम दशमोल्लासः समाप्त मासोत् ॥ सम्वत् अठारह सौ सुपद वा ॥

Subject—(१) पृ० १ से × पृष्ट तक—प्रथम उल्लास (लुप्त)

(२) पृ० × से १८ पृ० तक—द्वितीय उल्लास—धीरादि भेद—बर्णन ।

(३) पृ० १९—३१ तक—तृतीय उल्लास—स्वकीयादि भेद—बर्णन ।

(४) पृ० ३२—५० तक—चतुर्थ उल्लास—अष्ट नायिका भेद—बर्णन ।

(५) पृ० ५१—६४ तक—पंचम उल्लास—नवमो नायिकादि सखी इत्यादि लक्षण—बर्णन ।

(६) पृ० ६५—७६ तक—षष्ट उल्लास—नायक-भेद—बर्णन ।

(७) पृ० ७७—८० तक-सप्तम उल्लास-सात्विक भेद लक्षण लक्ष्य बर्णन ।

(८) पृ० ८१—१०० तक—अष्टम् उल्लास—स्थायी भाव, रस श्रृंगार लक्षण, लक्ष्य, दश दशा दर्शन, हाव वर्णन।

(९) पृ० १०१—१२६ तक—नवम् उल्लास—व्यभिचारी नवरस, रस विरोध, रस सबलता, भाव सबलता, भाव-शांति, भाव-उदय, रात्र विपर्यादि-रतिरसाभास और रीति चतुष्टय।

(१०) पृ० १२८—१४० तक—दशम् उल्लास—व्यंजना, लक्षणा, अभिधा, उत्तम, मध्यम, अधम काव्य, ध्वनि वर्णन।

Note—यह 'कृष्ण विलास' नामक रीति-ग्रंथ महापात्र शिवराज जी ने, भानुदत्त के मतानुसार चन्द्रालोक को पढ़ कर लिखा है। इसमें नायक-नायिका-भेद, रस, रसों के अङ्ग और काव्य के भेदों को समुचित व्याख्या की गई है। उदाहरण भी उत्तम दिये गये हैं। लेखक की असावधानी से कहीं कहीं अशु-द्धियां हो गई हैं। पुस्तक के प्रथम के ८ पृष्ट लुप्त हो गये हैं, अंत के पृष्ट का भी पता नहीं है। इस पुस्तक के प्रस्तुत अंतिम पृष्ट के भाग से पुस्तक का सम्वत् १८०० के लगभग लिखा जाना प्रतीत होता है। संवत् "१८ सै सुखदत्त" से यही निष्कर्ष निकलता है कि यह १८१२ या १८२२ की लिखी हुई है। यदि यह 'बा' 'बार' का प्रथमाक्षर है, तब यह १८०० में लिखी गई होगी। पुस्तक में कवि ने अपना तथा पुस्तक कालादि का विशेष परिचय नहीं दिया है। संभव है पुस्तक के आदि के लुप्त पृष्टों में कुछ इस विषय का उल्लेख हो।

No. 397(*a*). Amarakosha Bhāshāo by Rājā Śiva Siṃha of Bhinagā. Substance—Country-made paper. Leaves—291. Size—8½ × 4 inches. Lines per page—20. Extent—5,100 Anushṭupa Slokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—1874 Saṃvat or A. D. 1817. Place of deposit—Mahārāja Rajendra Bahādura Siṃha Mahōdaya, Bhingā.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ बंदौं श्री गुरु चरन युग हरन सकल भव त्रास। जा जाने सुर सिद्धि मुनि किया ब्रह्म मे बास ॥ १ ॥ गुरु ब्रह्म गुरु विष्णु शिव गुरु गनेश गुरु राम। गुरु ते दुजा और नहि सहित सक्ति अभिराम ॥ २ ॥ ताते गुरु पद बंदिए भव बारिधि को पोत। पोत स नित तरिबो करै यह भव तारन होत ॥ ३ ॥ अमरकोष भाषा किया श्री सिवसिंह विचार। सुर-बानी बुध लोग को भाषा अबुध निहारि ॥ ४ ॥ छंद अधिक बहुग्रंथ मैं है पढ़िबो अति क्लिष्ट। ताते हैं अति सरल लखि पढ़त सबै करि इष्ट ॥ ५ ॥ चौपाई औ

दोहरा ये द्वो छंद प्रसिद्ध । द्वो याही में ग्रंथ किय है दोहन को वृद्धि ॥ ६ निर्माण काल ॥ (१७८४) वेद सत घन श्रष्ट कहि पुनि ससि संवत जान कृष्णपक्ष नम शुक्र लषि तिथि तेरस पहिचानि ॥ ७ ॥

End—अमर तीसरे कांड में आठ वर्ग कीं देखि । चारि वर्ग भाषा विषें आवत काज विशेष ॥ १ ॥ सो मैं भाषा करि कह्यो दोहा छंदहि मांह । भाषा विषे प्रवीन सो पढ़िहैं जो करि चाह ॥ २ ॥ चारि वर्ग जो लिंग के भाषा में रहि होइ । स्त्री पुरुष नपुंसकहि इ ख नपुंसक सोइ ॥ ३ ॥ ताते भाषा नहिं करो नाममात्र को काज । संस्कृत शब्द जु होत जहं आवत तहवां काज ॥ ४ ॥ लिंग भेद भाषा विषें विन काज कों पेखि । ताते छोड्यो चाहिये स्वार्थ रहित कों देखि ॥ ५ ॥

वर्ग आठ हु का प्रमाण ॥

विशेष्य निघ्न वर्ग १	संकीर्ण वर्ग २	नानार्थ वर्ग ३	अव्यय वर्ग ४	स्त्री लिंग विशेष वर्ग ५	पुल्लिंग विशेष वर्ग ६	न० पु० लिं० लिं० व० ७	स्त्री० पु० लिं० व० ८	तृतीय कांड वर्ग ८
३०२	१२८	५१५	५५	+	+	+	+	१०१२

प्रथम कांड वर्ग ११	द्वितीय कांड वर्ग १०	तृतीय कांड वर्ग ८	अमरकोष कांड ३ वर्ग २९
५७८	१६४५	१०१२	३२३५

इति श्री महाराजकुमार विशेनवंशावतंस वरियंड सिंहात्मज रुद्रदवन सिंह तनूज शिवसिंह कृते अमरकोष भाषायां तृतीय खंडः ॥ इति ॥

Subject—अमरकोश प्रथम खंड—पृ० १—५७ तक ।

द्वितीय खंड—पृ० ५८ —२१४ तक ।

तृतीय खंड—पृ० २१५—२९१ तक ।

No. 597(*b*). Amarakōsha Bhāshā by Rājā Śiva Simha, of Bhingā Rāja, Baharāich. Substance—Country-made paper Leaves—196. Size—13 × 5½ inches. Lines per page—21.

Extent—4,620. Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character Nāgarī. Date of Composition Saṃvat 1874 or A. D. 1817. Date of manuscript Samvat 1875 or A. D. 1818. Place of deposit—Bhaiyā Santa Baksha Siṃha Guthawar, Baharāich.

No. 397(c). Bhakti Prakāmśa by Rājā Śiva Siṃha of Bhingā Rāja Baharāich. Substance—Country-made paper. Leaves—71. Size—$6\frac{1}{4} \times 4\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—30. Extent—1,050. Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition Saṃvat 1852 or A. D. 1795. Place of deposit.—Mahārājā Rājendra Bahādur Siṃha Jī, Bhingā Rāja, Baharāich.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ कवित्त—वारन बदन पै रदन एक छवि छाजै राजै तिहुँलोक को निकाई सुखकंद को। आनंद स्वरूप भरौ सेंदुर सुसुंड ऐसो सोभित परमचारु काटै दुखदुंद को ॥ कामना को कल्पतरु चारयो फल देत जानि मानि जन आपनो सु मेरे भवफंद को ॥ जगन को पालक सकल अघ घालक भजु आनंद को कंद पारबती पति नंद को ॥ १ ॥ जपत रहत जे वे पावत परम पद सकल समूह सुख आनंद विस्तारे हैं। विपति विदारि तारि केते पाप पुंजनि ते दीन्हो है निवास बैकुंठनि विहारे हैं ॥ केते दोष दुसह अजेय कौरा आदि देखि कीन्हों तू अरोष पंड खंड महिडारे हैं। मैं तो मन बच क्रम ऐसो इक आनत हौं चंडी के चरन भवसिंधु के नयारे हैं ॥ २ ॥

दोहा—जहं दोहा विपरीति करि सोई सोरठा नाम।
ग्यारह तेरह मत्त पद बरनहु अति अभिराम ॥ ३ ॥

सोरठा—रघुवर कथा अपार गुन समुद्र बरनो कहा।
को नर पावै पार नाथ रावरे कृपा बिनु ॥ ४ ॥

End—अथ स्तुति कवित्त—जाको चतुरानन सहित पंच आनन सहस्र मुख गानन करत गुन नाम को। पावत न अंत संत देवता सुरेस मुनि ध्यावत रहत नित जाके रूप धाम को ॥ जन सिवसिंह सोई जगत को पालक है घालक है बोध अघ सोई नाम राम को। दीजै मोहि जानि जन भक्ति अम्बिका के पाइ बसे चित आइ कै अचल सुख धाम को ॥ ५३८ ॥

दोहा—जाके गुन गन को नहीं पावत अन्त अनन्त। सो अति लघुमति पाइकैं क्यों बरनौं भगवन्त ॥ ५३९ ॥ इति श्री भक्ति प्रकाश श्री रामचन्द्र चरित्र वर्ननं समाप्तम् शुभ मस्तु ॥ सिद्धिरस्तु श्रीराम ॥ श्रीमहाकाली जी को सरन हौं श्री ॥

Subject—गणेश व देवी वंदना वर्णन—छंद—१—२। सोरठा तथा दोहा के लक्षण और उदाहरण वर्णन, निर्माणकाल वर्णन, छं० ३—१०। हरिगीतिका लक्षण उदाहरण, तोमर छंद लक्षणादि वर्णन छं० ११—१६ तक। प्रमानिका या नगस्वरूपिनी, त्रोटक, सोमराजी, रोला, ससिवदना, धनाक्षरी, संजुता, कुंडलिया, मायविका लक्षण वर्णन—छं०—१७—४८ तक। छप्पय, हीरा, पादाकुलिक, सुखस्वर, नाराच, चामर, तिलका, सुंदरी, मौक्तिक माला, मत्त मातंग, लक्षण और उदाहरण छं० ४९—९१ तक। लक्ष्मीधर, भुजंगप्रयात, तारक, रामायण, दोधक, बंधु, माया, संख नारी, मालती, अक्षर पंक्ति, कमला, सवैया लक्षण उदाहरण वर्णन, छंद—९२—१३९ तक। मदन मनोहर, सुलक्षण, मोदक, मोहन, तारक छन्द, कंद, स्वागत, हंस, तनुमध्य और मल्लिका लक्षण और उदाहरण वर्णन—छं० १४०—२०७ तक। चंचला, चित्रांगदा, तामरस, डिल्ल, मालती सवैया, भ्रमरावली, सुंदर, नागस्वरूप, समानिका, हारी, उपस्थित लक्षण और उदाहरण वर्णन छं०—२०८—२९२ तक। तुंग, मंटिका, द्रुत विलंबित, सम्पिणी, चौपैया, पद्नील, प्रमिताक्षरा, हरिनी, ब्रुत, पंच चामर, तोनी, कीड़ा दुमिला, मुक्ता और किरीट के लक्षण व उदाहरण—छं०—२९३—३४८ कमला, चौपाई, इन्द्रवज्रा, चंचरी, सुंदरी, सारवती, त्रिभंगी, लक्षण व उदाहरण। छं० ३४९—४६० तक। विजय, चंद्रकला, लक्ष्मीधर, मानवबंध, मोहन, और स्तुति वर्णन—छं० ४६१—५३८ तक। इति ॥

No. 397(*d*). Bhāshā Vritta Manjarī by Mahārāja Śivasimha of Bhingā Rāja (Baharāich). Substance—Country-made papers. Leaves—29. Size—6¼ × 4¼ inches. Lines per page—28. Extent 392 Anustup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit.—Mahā Rāja Rājendra Bahādura Simha, Bhingā Rājā (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ गौर·······य सुमिरि चितलाय गौरी नन्द अनन्द मयं।·······भाषा कहौं बनाइ मत पिंगल अवलोकि कै ॥ १ ॥ दोहा ॥ भाषे नाग अनेक विधि छंद विविधि विधि नाम। सो मत लै कविजन कियो ग्रंथ वृत्त सुखधाम ॥ २ ॥ तिनको मत लै कहत हौं कछु छंदन की रीति। नाम तासु वृतमंजरी कवि जनको जो प्रीति ॥ ३ ॥ अथ गुरुविचार ॥ संजोगी के प्रथम को बरन दुमत्त समेत। कहि दीरघ अनुसार जुत कहुं चरनान्त उपेत ॥ ४ ॥ अथ लघु को विचार ॥ सुद्ध एक कल लघु कहत कहुं दीरघ लघुमानि। भा·········क विधि सो संक्षेप बखानि ॥ ५ ॥

End—बत्तीसाक्षरी कवित्त रूपक घनाक्षरी छंद यथा ॥ विपति विदारन है मुक्ति के·······रति है कोटि छवि वारन है तारन जगत नित । पव को विदारन है कामना संवारन है विपति विदारनि है निखर निकर जित ॥ पलनि को पालक है दैत उर सालक है गनवर दालक है मेरे सो बनत चित ॥ अंबिका तिहारे पांय कोटि कोटि छवि छाय मेरे मन वच काय राबरे सरन हित ॥ १० ॥ इति श्री भाषा वृत्तमंजरी दंडक छंद वर्णनं नाम षष्टमः ६ ॥ समाप्तम ॥ शुभमस्तु सिद्धिरस्तु श्री महाकाली जीव को सरन हौं ॥ श्रीराम ॥ इति ॥

Subject—गणेशवंदना, नाग कवि के पिंगल का आधार वर्णन । गुरु लघु विचार, व्योममाला छंद, दीर्घ लघु उदाहरण वर्णन पृ० १—२ । गण, देवता, फल विचार, दग्धाक्षर, मित्र सत्रुगण, मात्रावृत्त छंद, वर्णवृत्तछन्द वर्णन पृ० ३-७ तक । गाथा छंद, गीति छंद, उपगीति, दोहा, दोहा—भेद, रोला छंद, छप्पय सभेद, पृ० ८-१४ तक । कुंडलिया, चौपैया, त्रिभंगी, अभिराम छप्पय, अमृतध्वनि वर्णन, पृ० १५—१६ तक । दुमिल सवैया, लीलावती, सुमग, मरहठा छंद पृ० १७—१८ तक । श्रीछंद, उक्का श्रीछंद, नारी छंद, प्रिया, माया, प्रमदा, मधु छंद, मही छंद, सवास छंद, व्योममाला, पद, हरिनी, बंधु, मोटनक, अनुकूल, सुंदरी, मोहन, तामरस, मनि, मालती छंद वर्णन पृ० १९—२१ । पंकज वटिका, हरिलीला, रामायन, सुप्रिया, विशेषिका, शिषरनी, क्रीड़ा, चंदु, गीतिका, स्रग्धरा, विजय, मत्तगयंद, चन्द्रकला, मनोहर, मदनमनोहर, भुजंग, विजृंभत छंद वर्णन पृ० २२—२७ तक । दंडक, सर्वतोभद्र छंद, सालूर, अनंगशेखर, घनाक्षरी, रूपक घनाक्षरी—पृ० २८—२९ । इति ।

No. 397(*b*). Bhāshā Britta Ratanawali by Mahārāj Śhiva Simha of Bhingā (Baharāich). Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size—6¼ × 4¾ inches. Lines per page—30. Extent—210. Anusṭupa Ślokas. Complete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Mahārājā Rājendra Bahādur Simha Mahodaya Bhinga Raja (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ शुभग वृत्त रत्नावली छन्द शास्त्र सुखानि । सो ताको भाषा कियो गिरिजा पद नुति ठानि ॥ १ ॥ अथ अष्ट गण नाम ॥ मय रस तज मन अष्टगन पिंगल नाम बखानि । बरन एक उचारतें लीजे क्रम सों जानि ॥ २ ॥ मनगल तीनों होत हैं भय मल आदि कहंत । रजलग भधि सो जानिए सतलग भाषत सन्त ॥ ३ ॥ अथ गण देवता फल विचार ॥

मन माहि सुर्य औ सुषद् भव शशि अलजस वृद्धि । रजपावक रवि मृत्युहत सतकव गमन न सिद्धि ॥ ४ ॥ अथ गुरु विचार ॥ संयुक्ता दिग बिंदु युत पुनि बिसर्ग फल होइ । स्वर दीरघ गविकल्प लग चरन अंत गल होइ ॥ ५ ॥ अथ लघु विचार ॥ जो विभिन्न गुरु गहत कवि एक मात्र लघु जानि ॥ ह्रस्व दीर्घ इन सब्द के आदि कहं लघु मानि ॥ ६ ॥

End—अथ एक त्रिसाक्षर कवित्त कामः ॥ कीजै एकतीस आनि वर्न प्रमान ठानि षोडसे विराम पद लषि परमानिए । भाषते फनीस मत कवीस ऐसे पिंगल बषानि सो कवित्त काम ठानिये ॥ कहैं कविलोग गुरु चरन विराम लषि कीजै पद जमक विलोकि इमि जानिए । वेद पद गाय सो सकल सुख भाय रचि विमल सोहाए ऐसो छंद पहिचानिए ॥ ९६ ॥ दोहा ॥ गुरु लघु लक्षन जो कहै यामैं विविध विचार । उदाहरन ताको कियो पद छंदनि सुष सार ॥ ९७ ॥ इति श्री भाषा वृत्त रत्नावली समाप्तम् शुभमस्तु सिद्धिरस्तु श्री महाकालो देव्यैनमः ॥ श्री राम श्री ॥ इति ।

Subject—गणेश वंदना छं० १ । गणनाम वर्णन—छं० २—३ गणदेवता फल विचार और गुरु लघु विचार छं० ४—८ तक । वर्ण वृत्त छंद—हंस, गुरु लघु संज्ञा, छंद लक्षण वर्णन और चक्र वर्णन, छं०, ९—१७ । तारी छंद तोनों, वारि, पंक्ति शशिवदना, सोमराजी, मदलेषा, मधुमती, विद्युन्माला, नागस्वरूपिनी, छन्दों के लक्षण और उदाहरण छं० १८—२८ । चित्रपदा, मानव छंद, अनुष्टुप छंद, कमला, मनिबंध, रूपमाली, पंचकला, सारवती, अमृतगति, हंसी, सुंदरी, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति—छंद लक्षण और उदाहरण वर्णन छं० २९—४३ । रथोद्धता, स्वागता, दोधक, मालिनी, हरिप्लुता, द्रुत विलंबित, तोटक, प्रमिताक्षरा, स्रग्विनी, भुजंग प्रयात, वंशस्थ, इंद्रवंशा, उपजाति, कुसुम विचित्रा, छंद लक्षण और उदाहरण पृ० ४६—५६ । पुष्पिताग्रा, प्रभावती, प्रहर्षिनी, वसंततिलका, मालिनी, भ्रमरावली, चामर, नाराच, पृथ्वी, हरिणी, शिखरणी, मंदाक्रान्ता, चित्रलेखा, शार्दूल विक्रीड़ित, शोभा स्रग्धरा, सवैया तरंगता, मदिरा, मालती, चित्रपदा, मल्लिका, माधविका सवैया के लक्षण और उदाहरण वर्णन—छं० ५७—७८ । दुमिल, तन्वी, कमला, भुजंग विजृंभित वर्णन—छं० ७९—८२ । अथ मात्रा वृत्त—गाथा, उपगीति, दोहा, रोला, छप्पय, कुंडलिका, चौपैया, त्रिभंगी छंदों का लक्षण उदाहरण वर्णन छं० ८२—९१ । अथ दंडक वर्णन । सर्वतोभद्र छंद, चन्द्र वृष्टि प्रयात, मत्तमातंग, अनंगशेषर, कवित्त कामः लक्षण उदाहरण वर्णन—छं० ९२—२७ तक । इति ।

No. 397(*f*). Kāvyadukhana Prakāśa by Mahārājā Śiva Simha of Bhinga (Baharāich). Substance—Country-made

paper. Leaves—26. Size $6\frac{1}{4} \times 4\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—28. Extent—275 Anusṭupa Ślokas. Appearance—Old. Character Nāgarī.—Place of Deposit—Mahārāja Rājendra Bahādura Siṃha of Bhingā Rajā (Baharāich).

श्री गणेशायनमः ॥ छन्द बरवा ॥ गौरी सुवन शुभ वदनै रदन विचारु। विघुन हरन विधि कोधौं यह संसार ॥ १ ॥ वारिज जात षडानन श्रानन अंक। सिद्धि सदन गज मुख लषि श्रपदन संक ॥ २ ॥ सुकवार षष्ठमि तिथि सिति वैसाष। प्रगट करयौ यह ग्रंथे करि अभिलाष ॥ ३ ॥ नाम धरयौ या ग्रंथे वरनि विचारि। काव्य दुषन परकासै सुकवि सुधारि ॥ ४ ॥ लषि दूषन उल्लासें कवि बियान। सो संचित करि बरनै अति हित मानि ॥ ५ ॥ नहिं समरथ करिवेको जुक्ति नवीन। याते सुकवि छंदै पदजुत कीन ॥ ६ ॥ अर्थ पदारथ वेई बरनै सोइ। छंद भेद करि भाषे नाम मिलोई ॥ ७ ॥ नाम प्रगट करि बरनै कवि निज सर्व। हैा कैसे करि भाषौं मति अति षर्व ॥ ८ ॥ ताते प्रगट न भाषत राषि छिपाइ। सुकवि सुमति लपि आनै चोर न कोई ॥ ९ ॥ कौन बरन मंगल अन करि रिपु कौन। सो बरनै या ग्रंथे लषि कवि तौन ॥ १० ॥ अथ दूषन बर्नन तत्र प्रथम अप्रउक्ति दूषन बर्नन ॥

End—चैापाई ॥ यह पहेलिका जाने विमल। सुधे..........उलटे अमल ॥ ५० ॥ सान। यह प्रहेलिका कहाे अनुठो। सुधे सीतल उलटे झूठो ॥ ५१ ॥ पाला। सुनो सबै प्रहेलिका हाल। सुधे नभ बसि उलटे लाल ॥ ५२ ॥ तारा—छंद बरवा—करि प्रकास दीपक जहं लघु लषिछेन। त्याें दूषनन दुरन कछु यह कहि देत ॥ ५३ ॥ लखि विरोध कछु यामें क्षमि अपराध। हैा लघुमति कवि गुरु मति परम अगाध ॥ ५४ ॥ इति श्री काव्य दूषन प्रकास विरचितायां प्रहेलिका वर्णन नाम त्रितीयोऽध्याय ॥ ३ ॥ समाप्तम् शुभ मस्तु सिद्धिरस्तु श्री महाकाली जीव की सरण हैा ॥ इति ॥

Subject—गणेश वंदना, निर्माण तिथि, ग्रंथ नाम, रचयिता का नाम वर्णन पृ० १—२। अप्रयुक्त दूषण वर्णन, अंध दूषण वर्णन। अमित, बधिर, अगतापंगु, नाम वाक्य, नाश, हीन रस, मृतक दूषण, असमर्थ, जतिभंग, ग्रामीण। व्यर्थ, वायस पांति, मरालिका, अपार्थ वर्णन। कायर स्थूल कृष्ण दूषण और क्रमहीन दूषण कथन पृ० ३—५ तक। क्लिष्ट, कर्णकटु, अनुचोक्षण, पुनरुक्ति, पतत्प्रकर्षन, देश विरोधी, पात्र दुष्ट, काल विरोध, नक्षानक्ष, लोक विरोधी, नेमानेम, न्याय आगम विरोधी, बालमति, अन्न पक्ष, रसहत वृत्ति, पिंड वाक्य विरोधी, वरन वाक्य विरोधी, अवस्था वाक्य विरोधी, भेष वाक्य विरोधी,

दूषन, द्वेश वाक्य विरोधी, वरन अपक्षापक्ष, समय सिंगार विरोधी दूषण वर्णन पृ० ६—१० तक। कवितालंकार वर्णन। कामधेनु लक्षण, कंकण बंध, कमल बंध, धनुष बंध, गोमूत्रिका, अश्वगति, कपट बंध लक्षण वर्णन, पृ० ११—१५ तक। निरोष्ठ लक्षण, मात्रा रहित, बहिर्लापिका, अन्तर्लापिका, सासनोत्तर लक्षण वर्णन, पृ० १६—१९ तक। पहेलिका लक्षण, वर, सांड, जूता, चना, बंदूक, जाल, यशोदा, कुच, नौका, मराल, खटिया, खाट, राज, मोहर, जर, सर, वारन, कपि, नर, बाग घोड़े को, गज, मन, पगड़ी, वरनद, सुमा, सीतल, बाजू, ढाल, सारस, वरद, बादर, छुरी, काम, चकरी, चोर, घाम, दादुर, धाम, मकड़ी, नींद, बेसर, बोरा, बोरकानेकी नारि, नक्षत्र, सुधाकर, नगर, सान, पाला और तारा आदि पहेलिकाओं का वर्णन है, पृ० २०—३६ तक।

No. 397(g). Rāma Chandra Charitā by Mahārāja Śiva Simha of Bhingā Rāja (Baharāich). Substance—Country-made paper. Leaves—7. Size—6¼ × 4¾ inches. Lines per page—30. Extent—100 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1857 or A. D. 1800. Place of deposit—Mahārāja Rājendra Bahādura Simha, Bhingā Rāja (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा। जो करता हरता सदां पालनता संसार। तापद बंदन कीजिये रहत सबनि तें पार ॥ १ ॥ यदि वेस्य मुनि मत निरषि वरने कथा विचारि। रामचन्द्र के गुन कछु अति अपूर्व सु निहारि ॥ २ ॥ छंद हरिगीतिका—पूरब हिरन्य कसिप भयो दिति तनय दैतनिराज है। नरसिंह रूप धरयो हरी तिन हयो देवनि काज है ॥ विश्रवा सुत पुनि सो भयो नकता चरो सों थाइ है। तिहि नाम रावन जानिए त्रय लोक को दुखदाइ है ॥ ३ ॥ कवित्त—ताहि वधिवे को दसरथ सुत भयो हरि लीन्हो अवतार नाम राम जग जानिए। तोरयो हर धनुष विदेह धाम राम जब पंद्र वर्ष रस सीय उमिरि प्रमानिए ॥ द्वादस बरस पुनि अवध बितायो धाम त्यागि बनवास वेष तापस बखानिए। रामनन नप सीय छुति वर्ष जानि मन देखिये वाहि भाम विपिन वास जानिए ॥

End—छंद गीतिका—पुत्र दै श्रीराम को पुनि सोय वास धरा किए। ताहि सों गनि लीजिए अपदि गुन इंदुहि लै दिए ॥ अंक लपि परिमान वर्ष सुराज पुनि रघुवर कहे। फिर दई पुत्रन्ह अनुज पुरजन सहित सुरपुर को लहे ॥ ४१ ॥ दोहा—मासवार तिथि सम प्रभू जो कछु कीन्हे कर्म। त्यागि और सोई कहे यामे कछ्रु न भर्म ॥ ४२ ॥ रघुवर चरित प्रकास कर वरने ग्रंथ

विचारि। रामचन्द्र आनन्द जन चंद फंद अवतारि ॥ ४३ ॥ निर्माणकाल :—
वेद ससी अग कुसल तिथि सप्तमि सित गुरुवार। मास माद्रि है योच लखि
संपूरन सु विचार ॥ ४४ ॥ पुनि बरन कल्यान पद धर्द द्विदल रिपु साल। वे
पूरन निज्ञ नाम त्रिहि कियो ग्रंथ हित साल ॥ ४५ ॥ इति श्री रामचन्द्र चरित
संपूर्णम् शुभः ॥

Subject—प्रार्थना, निर्माणकाल कथन, अवतार के कारण वर्णन।
छं० १—४ तक—

राम विवाह वर्णन, वन गमन, सूर्पनखा का नाक कान छेदन, सीता-हरण,
सुग्रीवमिलन, सेतु-बंधन का तिथियों सहित वर्णन। छं० ५—१९ तक।

अंगद रावण संवाद, मेघनाद का नागफांस में बांधना, धूम्राक्ष-वध, प्रह-
प्रहस्त, कुंभकर्ण वध, अतिकाय वध, नारान्तक वध, अकंपन वध, लक्ष्मण-
शक्ति मेघनाद-वध-वर्णन तिथियों सहित। छं० २०—२७ तक—

महापार्श्वादि वध, रावण-युद्ध, रावण वध, विभीषण को राज तिलक,
राम का अयोध्या गमन, भारद्वाज के आश्रम में आना, राम-भरत भेंट, राम
का सीता को परित्याग, लवकुश उत्पत्तिः सीता जी का पयस्थान, राम का
राज्य को बांटना, राम का सपरिवार स्वर्ग जाना, निर्माणकाल और
कवि वर्णन तिथियों सहित। छं० २८—४५ तक।

इति।

No. 397(*h*). Srutibōdha Bhāshā by Mahārājā Śiva Simha of Bhingā Rāja (Baharāich). Substance—Country-made paper. Leaves—7. Size—6½ × 4½ inches. Lines per page—32. Extent—200 Anusṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit—Mahārāja Rājendra Bahādura Simha Mahodaya, Bhingā Rāja (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ सोरठा ॥ गनुरन लघु मन आनि
प्रणत गौरि हर विमल पद। कहे सुकवि पहिचानि छंद सबै श्रुति बोध के ॥ १ ॥
दोहा ॥ आदि मध्य पुनि अंत गो भजसा लेहु विचारि। यरता लो पहिचानिय
मन गज सुकवि निहारि। दीरघ बिंदु विसर्ग गो संयुक्ता दिग चक। चरन अंत
लग बरन गो कहि फनि नादि विकल्प ॥ ३ ॥ अथ छंद लक्षण छंद आर्या
यथा ॥ प्रथम तीसरे आनो रस दो मत्ता विचारि के ठानो। दूजे अंक दुआनु पद
चौथा आर्या तिथि मानु ॥ ४ ॥ गीति छंद यथा ॥ विषमे मान करीजै ॥ सब पद
मत्ता अंक है दीजै ॥ या विधि सों आहं कीजै। गीति छंद सोई नाम कहीजै ॥ ५ ॥

End—अथ ऊन विंसाक्षर शार्दूल विक्रीड़ित छंद ॥ यथा ॥ आदौ दो पुनि तीसरो रस वसु गो द्वादसो जानिता। आदित्यौ सम येक चौदह वसू है दीर्घ सो मानिता ॥ त्योंही सत्रह ऊनविंस गुरु विश्रामो तहां आनिता। भाषे सेस भुजगु मेरु सुमगो सार्दूल विक्रिड़िता ॥ ४२ ॥ एक विंसाक्षर स्रग्धरा छंद यथा ॥ चत्वारो जासु वर्ना प्रथम नु गुरु कै षष्टगो सप्त मो है। कोजै गो चौदहो सो तिथि रिषि दस है भूतिः विंशो जुगो है ॥ एको विस्राम यानो विरति हयदसो छंद मे सो कहो है। गाय माई कवी सो सकल गुन जुतो स्रग्धरा नाम सो है ॥ ४३ ॥ इति श्री श्रुत बोध समाप्तम् शुभ मस्तु सिद्धि रस्तु ॥ श्री महाकाली जीव को सरन हों ॥ श्रीराम ॥ इति ॥

Subject—गणेश गौरि हर वन्दना वर्णन—छं० १। गण व दीर्घ ह्रस्व वर्णन—छं० २—३। आर्या छंद, गीति, उपगीति, ह्रीति छंद लक्षण उदाहरण वर्णन-छं०—४—७। पंक्ति छंद, ससिवदना, मदलेषा, अनुष्टुप श्लोक, मानव क्रीड़ा, नाग स्वरूपिणी, विद्दनमाला, मणिबंध लक्षण व उदाहरण वर्णन छं०—८—१५। पंचकमाला, मंदाक्रांता, हंसी, सालिनी, दोधक इन्द्रवज्रा उपेन्द्रवज्रा, उपजाति छंद लक्षण व उदाहरण—छं० १६—२३। विपरीति पूर्वा, रथोद्धता, स्वगता, तोटक, भुजंगप्रयात, प्रमिताक्षरा, द्रुत विलंबित, हरिनीप्लुता, वंशस्थ, इन्द्रवंशा, प्रभावती छंद के लक्षण व उदाहरण वर्णन, छं०२४—३५। प्रहर्षिनी, वसंततिलका, मालिनी, हरिनी, शिषरनी, पृथ्वी, शार्दूलविक्रीड़ित, स्रग्धरा छंद के लक्षण व उदाहरण वर्णन। छंद—३६—४३ तक। इति ॥

No. 398. Śiva Siṃha Sarōja by Śiva Simha of Kānthā, Unao. Substance—Country-made paper. Leaves—490. Size—8 × 6 inches. Lines per page—56. Extent—9,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṃvat 1931 or A.D. 1874. Place of deposit—Ṭhākura Digvijaya Siṃha, Tālukedāra, Village Dikaulī, Post Office Bisawañ, District Sitāpur.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सिवसिंह सरोज लिख्यते ॥ अकबर कवि श्री मोहम्मद जलालउद्दीन अकबर बादशाह। शाह अकब्बर बाल की बांह अचित गही चलि भीतर भौने। सुन्दरी द्वार ही दृष्टि लगाय के भागिबे की भ्रम पावत गौने ॥ चौंकत सौ सब ओर विलोकत शंक सकोच रही मुष

मैाने। यों छवि नैन छबीले के छाजत मानो बिछोह परे मृगछौने ॥ १ ॥ शाह पकब्बर एक समै चले कान्ह विनोद बिलोक बालहि। पाहट ते पबला निरख्यो चकि चैांकि चली कर पातुर चालहि। त्यों बलि बेनी सुधारि धरी सुभई छवि यों ललना पहलालहि। चंपक चारु कमान चढ़ावत काम ज्यों हाथ लिये पहि बालहि ॥ २ ॥ केलि करै बिपरीति रमै सो पकब्बर क्यों न रतो सुष पावै। कामिनि की कटि किंकिनी कान किधौं गन प्रीतम के गुण गावै ॥ बिदु छुटो मन में सो लिलाट ते यों लट मैं लटको लगि पावै। साहि मनोज मनोचित मैं छवि चंद लए चक डोरि मिलावै ॥

End—(१) हरीराम प्राचीन ॥ संवत १६८० । इनका नख सिख पति सुंदर है। (२) हिमाचल राम कवि ब्राह्मण भटैाली जिला फैजाबाद सं० १९०४ सीधी सादी कविता है ॥ (३) हीरालाल कवि ॥ शृंगार मैं बहुत उत्तम कवित्त हैं। (४) हुलास कवि—पैजन ॥ (५) हरचरण दास कवि। इन्होंने एक ग्रंथ भाषा साहित्य में महा सुंदर पद्भुत पपुर्व ब्रहत कवि वल्लभ नाम बनाया है इस ग्रंथ में पपने ग्राम सन संवत पादि का पता नहीं दिया है। (६) हरिचंद्र कवि बरसाने वाले ग्रंथ बहुत सुंदर बनाया लेकिन सन संवत नहीं। (७) हजारी लाल त्रिवेदी विद्यमान हैं। नीति शांति संबंधी इनको काव्य सुंदर है। (८) हरिनाथ ब्राह्मण काशी निवासी १८२६ संवत इन्होंने पलंकार दर्पण नामक ग्रंथ बनाया। (९) हिम्मत बहादुर नवाब ॥ बलदेव कवि ने सत-गिरा विलास में इनके कवित्त लिखे हैं ॥ संवत १७८५ वि०। (१०) हिम्मतराम कवि मदन कवि ने इनको प्रशंसा की है। (११) हरिजन कवि ललितपुर निवासी संवत १९११ राजा ईश्वरी नारायन सिंह काशिराज के यहां रसिक प्रिया को टीका की ॥ (१२) हरिचंद कवि बंदीजन चरखारी वाले। राजा छत्रसाल चरखारी के यहां थे ॥ (१३) हुलास राम कवि सालिहोत्र भाषा में बनाया। इति श्री शिव सिंह सेंगर कृत शिव सिंह सरोज समाप्तं संवत १९३१ लिषतं गौरीशंकर ॥

Subject—इस शिव सिंह सरोज में लगभग १००० कवियों के नाम पुस्तक नाम उनकी कविता का कुछ नमूना निर्माणकाल निवास स्थान का पूरा पता आदि भली भांति वर्णन किया है। पुस्तक उत्तम है।

No. 399(*a*). Rasapiyūsha Nidhi by Soma Nātha of Mūttra. Substance—Country-made paper—Leaves—148. Size—12 × 7½ inches. Lines per page—30. Extent—2,775 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1794 or A.D. 1837. Date of

manuscript—Samvat 1941 or A.D. 1844. Place of deposit—Pandita Syāma Vihāri Miśra, Golāganja, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रसपीयूष लिख्यते । छप्पय—सिंधुर बदन अमंद चंद सिंदुर भाल धर। एकदंत दुतिवंत बुद्धि निधि अष्ट सिद्धि वर ॥ मद जल श्रवत कपोल गुंजरत चंचरीक गन ॥ चंचल श्रवन अनूप थोंदि थिरकति मोहति मन ॥ सुर नर मुनि बरनत जोरि कर गुन अनंत इमि ध्याइ चित । ससिनाथ नंद आनंद कर जय जय श्री गननाथ नित ॥ १ ॥ कवित्त—अमल अनंत नव नीरद बरनवंत प्रगटे अवनि पै अनादि निरधारे हो । असुर बिदारे दुख पुंज निरवारे कोरि सकल सुधारे काज गूढ़ गुन भारे हो ॥ जहां जेहि ध्यावे तुम तहां ठहराये आइ रूप उजियारे सोमनाथ उरधारे हो । जै श्री रघुराइ कह्यौ चारौ फल दाइक दुलारे दसरथ्थ के हमारे प्रान प्यारे हो ॥ २ ॥ कंचन के रंग अंग आनन अदन राजै उद्धत फंदैया नीर सागर दुरंत के । श्री कौ महामंगल संदेसा पहुंचैया और लंक बिनसैया औ फिरैया सब संत के ॥ सोमनाथ बरनै समीर के सपूत सांचे सेवक समीपी रघुबीर बलवंत के ॥ कंत अवनी के है अनंत सुख पावै गुन गावैं नर ऐसो जो हठीले हनुमंत के ॥ ३ ॥

End—सवैया—सागर सील उजागर कीरति आनन्द के उपजावन हारे । आदि अनादि सरूप निरंजन इन्द्र कौं आछे भिजावन वारे ॥ मोहन श्री ससिनाथ महाजन कौं घने खेल खिलावन हारे । लाज हमारी है रावरे हाथ ऐ नंद को गाय चरावन वारे ॥३०४॥ निर्माणकाल—सत्रह से चोरानवे संवत जेठ सुमास । कृष्णपक्ष दसमी भृगी भयो ग्रंथ परकास ॥ ३०५ ॥ छंद—श्री रघुनंद आनंद कंद हिय में ध्याइ सुख सरसाइये । ३०६ ॥ इति श्री मन्य महाराज कुंवर प्रताप सिंह हेत कवि सोमनाथ विरचिते रस पीयूष निधो अर्थालंकार संश्टष्टि शंकर अलंकार वर्नन नाम एक विंसति मस्तरंगः २१ ॥ श्री रस्तु शुभ मस्तु श्री संवत् १९४१ श्रावण शुक्ल प्रतिपदायां बुधवासरे लिखित मिदं पुस्तकं बलदेव मिश्रेण श्री कृष्णाय नमोनमः ॥ श्री शिवायनमः ॥

Subject—मंगलाचरण पृ० १—२ । राजकुल वर्णन—पृ० २—४ । सभा वर्णन—पृ० ५ । कविकुल वर्णन—पृ० ५—६ । पिंगल, पस्तार, मर्कटी, पताकादि वर्णन—पृ० ७—१२ तक । मात्रावृत्त छंद वर्णन—पृ० १३—२० । वर्णवृत्त छंद वर्णन—पृ० २१—२४ । काव्य सामिग्री लक्षण—अभिधा, व्यंजना आदि का वर्णन—२५—३२ तक । ध्वनि भेद वर्णन—पृ० ३३—३६ । शृंगार रस भेद तथा स्वकीया नायका सभेद वर्णन—पृ० ३७—४६ तक । परकीया तथा गणिका नायिका सभेद वर्णन—पृ० ४७—५० । अन्य संभाेग दुःखिता तथा

मानिनी नायिका सभेद वर्णन—५१—५२। स्वाधीनपतिका, खंडिता, कलहंतरिता, विप्रलब्धा, उत्कंठिता, वासकसज्या, अभिसारिका, प्रोषितपतिका, प्रवत्स्यत्पतिका, आगमथ्यति पतिका, नायका भेद वर्णन—पृ० ५३—६८ तक। उत्तमादि नायका तथा सखी भेद, उपालंभ, परिहास, दूती कर्म वर्णन- पृ० ६९—७२। नायक निरूपण, सखा, दर्शनादि भेद वर्णन पृ० ७३—८२। हाव भेद वर्णन—पृ० ८२—८६। वियोग श्रृंगार तथा दश दशाओं का वर्णन—पृ० ८७—९०। हास्य रस, करुण रस, रौद्र, वीर भेद, भयानक, बीभत्स, अद्भुत और शांत रस का वर्णन—पृ० ९१—९६। भाव ध्वनि वर्णन—९७—१०२। मध्यम काव्य गुणीभूत व्यंग के आठ भेद सहित वर्णन—१०३—१०६। काव्य के दोष वर्णन, वाक्य दोष, पद असमर्थ दोष, अश्लील, क्रमहीन, व्याहत, पुनरुक्ति आदि का वर्णन—पृ० १०७—११२। काव्य गुण वर्णन। माधुर्य, प्रसाद, ओज वर्णन—पृ० ११३—११४। चित्र काव्य और अनुप्रास वर्णन—पृ० ११५—१२०। अर्थालंकार निरूपण, पृ० १२०—१४७ तक। संसृष्टि और संकर अलंकार वर्णन तथा निर्माण संवत कथन—पृ० १४७—१४८। इति।

No. 399(*b*). Rasapiyusha Nidhi by Soma Nātha. Substance—Country-made paper. Leaves—76. Size—12 × 5 inches. Lines per page—28. Extent—4,332 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition Samvat 1794 or A. D. 1737. Date of manuscript—Samvat 1948 or A. D. 1891. Place of deposit—Ṭhakura Digviyai Simha Tālukedāra, Village. Dikauliyā, Post Office Bisawān, District Sitāpur.

No. 400(*a*) Śrī Jugalasat kī Ādi Bāṇī by Śrī Bhatta. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—12 × 6 inches. Lines per page—48. Extent—600 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1893 or A. D. 1841. Place of deposit—Paṇḍita Ganeśjī, Village Rakabā, Post Office Sisaiyā, District Baharāich, Tahsil Kesarganj (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ श्री लाड़िली लाल को जय। श्री निंबादित्यायनमः श्री आदिवाणी जुगुल शत श्री भट्ट जी महाराज कृत लिख्यते संवत १८९८ माघ मासे कृष्ण पक्षे शुभ दिन॥ दूहे॥ कल्प विटप श्री भट्ट प्रगट

कलि कल्मष । दुष दूरि कर जे नर पावे साथ ता । अथ तिनको हरखो तन दरसो ते होहि हस्त जा मस्तक धरहों गुन निधि रसिक प्रवीन भक्ति दसधा के आगर । राधाकृष्ण स्वरूप ललित लीला रस सागर कृपा दृष्टि संतन सुषद भक्ति भूप द्विज वंशवर कल्प विटप श्री भट्ट कलि कल्मष दुष दूरि करि ॥ अथ आदि वाणी श्री जुगुल शत तत्र प्रथम सिद्धांत सुष लिष्यते ॥ पद आभास दोहा ॥ राग केदारो ॥ चरण कमल की दीजिए सेवा सहज रसाल घर जायो मुहि जानि के चेरो मदन गोपाल ॥ पद इकताला ॥ मदन गोपाल सरन तेरो आयो । चरन कमल की सेवा दीजे चेरो करि राषौ घर जायो ॥ धनि धनि मात पिता सुत बंधु धन जननी जिन गोद खिलायो । धनि धनि चरन चलत तीरथ को धनि गुरु जिन हरि नाम सुनायो । जे नर विमुष भये गोविंद सो जन्म अनेक महादुष पायो । श्री भट्ट के प्रभु दियो है अभय पद जम डरपो जब दास कहायो ।

End—तुम हमरे घर के हो पुरोहित लगों तिहारे पाई । यह बालक चपला सों न चोके तैसे करी उपाई ॥ श्रावण शुक्ल पक्ष एकादसी गोप मिले सब आई । बोले गर्ग विचारि मंत्र को सुत बनो भलो नंदराई । पच रंग पाट को दाम रचवौ नाना रतन लगाई ॥ आगम निगम मंत्र सो नीके रक्षा करी बनाई ॥ श्री ब्रजराज आचरज सो मुनि तैसेई करवाई ॥ मंत्र पवित्राश्याम कंठ मैं गर्ग दई पहिराई ॥ मानो घन थिर कीन्हो दामिनि सोभा लगन सुहाई । बाढ रोम गल सब ब्रजपुर में श्री भट भई मन भाई ॥ श्री लाल जी की बधाई लिष्यते ॥ आभास दोहा ॥ भागवती जसुमति अति भई । प्रफुलित लषि लाल गोकुल मंगल आज्ञु लषि बाढ़ी बिसद बिसाल । पद तिताला । गोकुल मंगल आज्ञु बधाई । रानी जसुमति के प्रगट है सुन्दर कुंवर कन्हाई । गोपी थापी थार लिये कर रवि छवि दषि लजाई ॥ गावत आवत धावपावत मूरति लगति सोहाई । दौर देषि मुष स्याम सुन्दर को अंग अंग सचुपाई ॥ भागवती जसुमति रानी अति सुतजायो सुषदाई । नृत्यत कीरति मुषिया जिन मुंह कमला करत बड़ाई । कर सनिमान सबन को तैसे जो जैसे मन भाई ॥ नंद सदन में दुध दही को गोपिन कीच मचाई ॥ आगन गोप ग्वाल गन नाचत आनंद मगन महाहो । माग सराहत श्री जसुमति को भाषत भूप भलाई ॥

Subject—इसमें श्री कृष्ण राधिका की छवि ब्रजलीला वर्षा बहार, लालजी को बधाई, पवित्रा आदि का वर्णन है ।

No. 400(*b*) Śri Jugulasataka by Śri Bhaṭṭadeva. Substance—New made paper. Leaves—20. Size—10 × 6 inches. Lines per page—40. Extent—650 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—

Samvat 1652 or A. D. 1595. Place of deposit—Śrī Nimbārka Pustakālaya Maṇdira Bābā Mādhavadāsajī Mahanta, Nānpārā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री राधा सर्वेश्वरो विजयतेतराम्। श्री निम्बार्क दीनबंधु सुनि पुकार मेरो। पतितन में पतित नाथ शरण आयो तेरो। तात मात भगिनी भ्रात परिजन समुदाई। सब ही संबंध स्वामि पायो शरणाई। काम क्रोध लोभ मोह दावानल भारो। निशि दिन में जरौं नाथ लीजिए उबारी। अंबरीष भक्त जानि रक्षा करि धाई। तैसेई निजदास जानि राखौ शरणाई। भक्त वत्सल नाम नाथ वेदन में गायो। श्री भट्ट तव शरण आय अभयदान पायो॥१॥ रसिक वृन्दा विपिन निहार। यद्यपि मिलैं कोटि चिन्तामणि तदपि न हाथ पसार। विपिन राजसों याके बाहर हरिहू को न निहार॥ जय श्री भट्ट धरि धूसर तनु यह आशा उर धार॥२॥ दोहा॥ सेव्य हमारे हैं सदा वृन्दा विपिन विलास। नंद नंदन वृषभानु जा चरण अनन्य उपास॥

End—अथ फल अस्तुति लिख्यते। श्री भट प्रगट युगुल शत पढ़ै कंठ तिहुं काल। युगुल केलि अवलोकतें मिटै विषय जंजाल। नयन बाण पुनि राग शशि गनौ अंक गति वाम प्रगट भयो श्री युगल शत यह संवत अभिराम॥ १६५२ संवत। एक छप्पय १ दोहा आदि अंत मधिमान। शत पद आभासन सहित युगुल शत हद परमान॥ छप्पय रूप रसिक सब संत जन अनुमोदन याको करौ। दस पद हैं सिद्धांत बीस अट बृजलीला पद सेवा सुख सोलह सहज सुख एक बीस हद। पाठ सुरत इक उनबीस उत्सव लहिए अद्भुत श्री भट देव रच्यो शत युगुल जु कहिए निज भजन भाव कंचित किये इते भेद यह उर धरौ रूप रसिक सब संत जन अनुमोदन याको करौ हस्ताक्षर किशोरीदास।

No. 401(*a*). Sālihotra Prakāsikā by Rājā Śrīdhara of Kheri Substance—Country-made paper. Leaves—160. Size 10/6 inches. Lines per page—44. Extent—5,280 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1896 or A. D. 1839. Date of manuscript.—Samvat 1920, or A. D. 1863. Place of deposit.—Thākura Durgā Simhajī, Dikauliyā, Post Office Biswān, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ सालहोत्र प्रकासिका लिख्यते॥ श्री गणपति गौरी गिरा हरि हर के पद ध्याय। श्रीधर विरचित ग्रंथ को हय कुल को सुखदाय॥ छप्पै छंद॥ सिर पर लसत किरीट भाल पर तिलक विराजत।

कुंडल कानन माभ्र गरे बनमाला छाजत ॥ पीताम्बर कटि कसे हाथ दक्खिनता जनवर। स्यंदन में चाहद चस्व रसो वाये कर ॥ हिम पारथ सो मुसकात लचि मोपम कहो सैना दरै। गहि भेष गुविंद चनंद मय मंगल श्रीधर को करै ॥ छप्पै छंद ॥ ब्रह्मा के सुत पत्रि भत्रि के चन्द बषानैा। जल स्वरूप भो तासु तनय गुन ग्यान निधानैा ॥ तासु बंस में भए मुनिंद महीपति जानो प्रगट सालमल द्वीप तासु राजा डर चानैा ॥ तिन परसुराम सो युद्ध करि देह छोड़ि सुरपुर गये। सुत भूप भए वहि देस मों सकल उपद्रव बहु भए। दोहा ॥ तब रिपि चत्त विचारि गे परसराम के पास। भाष्यो वंस मुनींद्र को किहि विधि होइ प्रकास ॥

End—कफ को होइ मिजाज जेहि चना देहु तेहि चानि ॥ एक मिजाजहि मारदो भो परदावा को यानि ॥ टका तोन परमान सो कम दाना नहिं देइ ॥ टका तीन से के ऊपर दाना चधिक न लेइ ॥ या विधि दाना दीजिए कह पह भूप निहारि। जासा वाजी लघु रहै लीजै सवैा विचारि ॥ सारंगधर यह नकुल मत सालहोत्र को पंथ। सो बिचारि चनुसार मति भाषा कोन्हो ग्रंथ ॥ दीपि सरल हरषत सुकवि पल निंदत हैं ताहि। देपि दर्प ज्वर पाचरे कटु करात है ताहि ॥ सुकवि चतुर तिहुं लोक के तिन सब को सिर नाइ। विनती करत विनोत हैं सो सुनि ये चितुलाइ ॥ प्रभट प्रताप सुराबरो मेरो चूक विचारि। वाच चुक तुम पापु हो दीजे ताहि सवारि ॥ सोरठा ॥ पट चानन पद प्यार गैारि नंद गिरिजा गिरिस। हरि कुल को सुपदाइ श्रीधर कीन्हो ग्रंथ यह ॥ दोहा ॥ सालहोत्र प्रकासिका पढ़ै सुनै चितुलाइ ॥ वाजो ताके बहुत बढ़े गिरिजा होइ सहाइ ॥ इति श्री सालहोत्र प्रकासिकायां श्रीधर सुकवि विरचितायां ग्रंथ संपूर्णम् सुभ मस्तु मंगलं ॥ दिनचत मोहन केर गोचनो गाडे सो जानिये ॥ संवत १९२० मारग मासे कसन पछे तिथो तीजवां ॥

Subject—इस ग्रंथ में घोड़े की जाति, उत्पत्ति के देश ईम, शुभ चशुभ लक्षण, दाव, रोग, औषधियां सवारो की रीति बैठक, घोड़े के भोजन की रीति, घोड़ा रखने के स्थान, चादि का भली भांति वर्णन किया गया है।

No. 401(*b*). Vidwan Moda Tarangini by Raja Śridhara of Kheri. Substance—Country-made paper. Leaves—136. Size—8 × 6 inches. Lines per page—34. Extent—2,313 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1900 or A. D. 1843. Date of manuscript—Samvat 1910 or A. D. 1853. Place of deposit—Thakurā Mahaswara Simha, village Dikauliyā, Post Office Biswān, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ विद्वान्मोद तरंगिनी लिख्यते। कवित्त ॥ इतै सोन मुकुट विराजै सोस फूल उतै इतै माल वैारि उतै वेदो है पधान को। इतै श्रवि कुंडल चैावा उतै राजत है इतै बनमाला उतै माला मुकतान को॥ इतै पीतपट उतै सारी अरतारी सोहै दोऊ नेह भरे जागे मानैा एक प्रान को॥ श्रीधर को वानी वन्दै वर वरदान सदा नेह को किमार वो किसोरी वृष-भान को॥ सोरठा॥ सुधा जानियो नाम वपत पित को लघु तनय। द्विज मत है अभिराम श्रीधर कविता यो कह्यो॥ दें०॥ है कवित सब कविन के निज मति के अनुसार। विद्वन्मोद तरंगिनी सुभ संवत अवतार॥ प्रथम मंगलाचरन कहि कहो ग्रंथ को हेत। नवरस यामैं कहत हैं समुझो बुद्धि निकेत॥ कवित्त॥ कारन भाव के भाव को रूप नवोरस पूरन कै दरसायो। नायका दूतो रसो मिलि जात इन्हैं करि न्यारोई भेदवतायो॥ जन्म बिता अवरोध विरोध यो द्दष्टि सवै रस भांति जनायो॥ विद्वनमोद तरंगिनी श्रीधर आनद आनि बखानि बनायो॥

End—दोहा॥ एक बिनती मैं करत हैं कविजन सों करजोर। विनदो बरन संभारियो मोहि न दोजो योरि॥ राधिका कृष्ण को यामैं चरित्र विचित्र महा मुनि रोझि हैं ग्यानो॥ अंग उमंग सहेत न छो रस राजत है अति हो सुप-दानो॥ विद्वनमोद तरंगिनी श्रीधर आनंदरूप अनूप वखानो॥ याहि पढ़ै गुन आनंद कौरति बुद्धि औ सिद्धि मिलै मनमानो॥ कुंडलिया छंद॥ कविता या मैं लसत है सत कवि को अति चारु। विद्वनमोद तरंगिनी करो कंठ को हार॥ करो कंठ के हार चारु श्रीधर कवि बरनी। सब अंगन ते सदा विराजत है मन हरनी॥ हरनी दुष अरु दोष तिमिर कौर जैसे सविता। याको पढ़ि विश्राम लोग करि हैं वर कविता॥ दें०॥ नव रस जल मैं उमंग लहरि भाव भंवर से जानि। विद्वनमोद तरंगिनी श्रीधर कहो बखानि॥ भाव उदै आदिक कह्यो अनिमुष आदिक जानि। अलो रचो तरंग में श्रीधर कह्यो वखानि॥ इति श्री श्रीधर कवि विरचितायां विद्वनमोद तरंगिनी ग्रंथ संपूरन। मासे अगहन मासे कृष्ण पक्षे तिथौ नवमीयां बुधवासरे संवत १९०० लिषतं मोहनलाल शुक्ल संवत १९१० ॥

Subject—इस ग्रंथ में नवरस भाव विभाव नायका नायक भेद और लक्षण वर्णन कहे गये हैं।

No. 402. Sursataka Purvardha 'Tika' by Śridhara of Benares. Substance—Country made paper. Leaves 34. Size—12 × 6 inches. Lines per page—11. Extent—748 Anushtup Slokas. Appearance—Old. Written in Prose and

Verse. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1882 or A. D. 1825. Date of manuscript—Saṃvat 1921 or A.D. 1864. Place of deposit—Paṇḍita Rāma Shaṇkara Vājpai Village Bahori ka Vajpai ka Purwā, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गोपीवल्लभायनमः ॥ सूरदास जी का कूट लिष्यते ॥ श्री गणेशायनमः ॥ अथ सूरदास जी के कीर्तननि के संग्रह करिबे के प्रथम मंगलाचरन ॥ दोहा ॥ श्रीवल्लभ विट्ठल वदत बंदत विसद विचार । बहुत सुविद्या बुद्धिबल विलसत विकट विकार ॥ १ ॥ यह संसार असार में हरि कीर्तन सुषसार । कहत करत सब भजहुं लो चहड़े चवर विसार ॥ उपकारक हैं सबन के हेतु अर्थ समुझाय । ताते गाये भक्त जन भाषा सरल सुभाय ॥ सूरदास तिन में भए उमत ज्ञात ज्यों सूर । गायो सब विधि कर सुजस हरि लीला रस पूर ॥ जिनके पद में गुढ़ बहु अर्थ भाव रस व्यंग । सुभ पदै जेते तिते संग्रह कियो सुसंग ॥ श्रीमन श्रीगोपाल सुत श्री श्रीधर सुप दाय । जिनकी आज्ञा ते कियो भाव नगर में चाय । बाल कृष्ण की बीनती सुनिये रसिक सुपंथ । लीजै सुमति सुधारि कै सूर शतक यह ग्रंथ ॥

End—राग नट ॥ मूल ॥ सुनरी हरिपति आजु विराजें ॥ हरि गति चलत मंद भयो हरिबन बलकरि हरिदल साजे । हरि की चाल चलो चंचल गति हरि को हरि दुष छाजे ॥ सूरदास हरि को भज इक छिन विरह ताप तन भ्राजे ॥ अर्थ ॥ मानती नायका सों दूती की उक्ति मनाय के पधराय ले जात हैं ता समय को बरनत है ॥ सुनि री हरि तेरे पति आज विराजे हैं संकेत में अथवा हरि जो मृग तेरे नेत्र तिनके पति चन्द्रमा सो प्रियतम को श्रीमुष आज विराजे हैं ॥ प्रसन्नता सों ताते नेत्र को मिलावो । हरि गज को मंद गति चलत विलंब होत है हरि जो सूर्य को बल मंद भयो अस्त भयो बल करि के हरि जो इन्द्र ताको दल मेघन को घटा होय आयो ताते उतावल सो चलिबे को समय है अथवा सूर्य अस्त भयो अब हरि जो काम देवता को दल चन्द्रोदय पुष्पन को विकास त्रिविधि पवनादिक सब सज्ञ भये ताते बेग चलो ॥ अथवा तिहारे मनावत तो विलंब भयो अब चलिबे मेह विलंब होत हरि जो चन्द्रमा सो मंद भयो और हरि जो सूर्य ताको बल अरुनोदय की बिरियां भई ताते बेगि चलो ताते अब हरि हस्ता की गति चंचलताई से चलो ॥ अथवा हरि जो सर्प सो सर्प को परियाय दूसरो नाम उतावल को है सो उतावल सो चलो अथवा हरि जो पवन सो तोको तो पवन की नाई चलनो चाहिए ॥ काहेते जो हरि प्रियतम को हरि जो काम

ताको दुष है ताते अथवा हरि को दुष हैं सा तुम चलिके हरो ॥ हरि जो पिय-तम तिनको तिहारे भजतें सुरति किया तें विरह ताप तन के सब भाजेंगे ॥ ताते वेगि चलो अथवा सूरदास जी कहते हैं यह जो हरि जु को मान प्रसंग को लीला को भजन इक छिनु किय ते विरह ताप तन को भाजे ॥ इति शूर शतक को पूर्वार्ध संपूरन ॥ यह इतिहास सब पद को अर्थ भयो सुषदाय श्री गिरिधर महराज की अमित कृपा बलपाय संवत अष्टादस शतक अस्सी पर द्वै लेष मार्ग गिर बदि सप्तमी कवि कविता पथ देषि ॥ संवत १८८२ ॥

Subject—इस सूर शतक पूर्वार्ध में श्री श्रीधर महाराज ने सूरदास कृत कूट राग की टीका की है जिससे भली प्रकार पदों के अर्थ समझ में आ जाते हैं।

No. 403. Brahamavaivarta Purāna by Śri Govinda. Substance—Country-made paper. Leaves—33. Size—9 × 5 inches. Lines per page—14. Extent- -280 Anushṭup Slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1867 or A.D.1810. Date of manuscript—Samvat 1952 or 1895 A.D. Place of deposit—Paṇdita Bhagwān Dīnaji Miśra Vaidya, Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ब्रह्मवैवर्त्त लिख्यते ॥ षट पद ॥ गौरीनंद्र वश अलंकार कविता युवती को राज अर्थ अमि उक्ति वश्य कीन्हो जिन नीको ॥ यक्त ग्रंथ विच बोच फिरत जेहि दोहि नाम को ॥ तारि कोश कारक सो रहत कर सिद्धि धाम को ॥ जन जब गोविन्द मन कर्म वचन पंकज पद निज हिय धरत ॥ तब सगुण पानि निदान जगतो कलिन्द तिलकर धरत ॥१॥ कृपा अम्ब अवलंब आसकनि रलि विकसित कर। करस प्राण लहि सुरभि ताहि तन विकुच करसि वर ॥ यथा ॥ तथ्य सब निरषि पाइ हरि रूप जानि करि ॥ मेघा वरकर भान पदारथ पर्श पाइ धरि ॥ मृगमद विशाल राधारमण दुर्ज हृदै मम तब धरिय ॥ तेहि सुरभि उदै अस्तान्चल पिदिविभुवन वासित करिय ॥ २ ॥ छंद भुजंगप्रयात ॥ सुयो देवो पद्मालया चारु साहैं ॥ पदाब्जें लसैं भृंग नेत्राभि मोहै ॥ महामोह विध्वंश कै ध्यान मानो ॥ किधौं इश है के जगदीश जानैा ॥ ३ ॥

End—नंद अनंदहि पाइ पाइ सुत गोविंद श्री आधारा। विप्र वृंद सब पूजि पूजि कै दीन्हे दान अपारा ॥ ४२ ॥ मन हरन ॥ सुनत जगत ईश कनक प्रदान करि काम धुक काम दव अग पशु जानियो ॥ सुरतपि विधि द्विज रूप धरिउ चिंतामनि भाजियरो मोच हरि सब सुष दानियो ॥ विष्णु लखि हिय

धरि सागर निवाश करि सागर उदर ताप अति दुख दानिये ॥ दानि बराह लाज पाइ करि यह गतिदान प्रमान का विधि बखानिये ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ मह प्रकाश-वानो बहुरि कंशकाल वृजरावि ॥ कन्या नंदहि आनि बसु दई आपनो भाषि ॥ ४४ ॥ छन्द ॥ नंद नंद सुन्यो । नृप सीस धुन्यो ॥ जावको पठई । क्षण माह हई ॥ ४५ ॥ इति श्री गोविंद विरचिते राधाकृष्ण विनोदे राधाकृष्ण जन्म वर्ननो नाम तृतीयो सर्गः ॥ ३ ॥ ब्रह्मवैवर्त पूर्वार्द्धान्तरस्य गोलोक कथा प्रसंग सम्पूर्णम भादकृष्ण तिथो २ सेवा ॥ संवत १९५२ लिखित्वा शिवरत्न द्विजेन वासस्थान थहेल्या पाठनार्थ रामबिलास मिश्र वासस्थान लखनऊ चौक बाजार के द्वारा ॥ राम राम ॥

पृ० १—१२ तक—पुस्तक का नाम, कविका श्री कृष्ण राधिका से प्रार्थना करना, निर्माण संवत व ईश्वर की महिमा का वर्णन, पुनः श्री कृष्ण की महिमा आदि का वर्णन किया है । पृ० १३—२३ तक—पृथ्वी पर अधिक पाप होने के कारण पृथ्वी का गाय रूप में भगवान के निकट आकर प्रार्थना करना, प्रार्थना पर भगवान का पृथ्वी को धीरज बंधाना, जन्म लेकर पृथ्वी का भार उतारने का वचन देना आदि वर्णन किया है । पृ० २४—३३ तक—श्री कृष्ण राधिका का जन्म और उनके विहार तथा आनंद का वर्णन किया गया है । इसमें कृष्ण का जन्म और कृष्ण का राक्षसों को मारना, कंस को मारना, भक्तों की रक्षा करना, लिखने का संवत और लेखक का नाम आदि वर्णन है ।

No. 404(a). Kavya Saroja by Sripati of Kalpi. Substance—New paper. Leaves—66. Size—13 × 8 inches. Lines per page—28. Extent—790 Anushṭup Slokas. Incomplete. Appearance.Old—Character— Nāgari. Date of Composition—Samvat 1777 or A.D. 1720. Date of manuscript—Samvat 1943 or A.D. 1886. Place of deposit—Paṇdita Krishnabihari Misra, Editor, Sāmālochaka, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ काव्य सरोज लिख्यते सोरठा ॥ लसत बाल बिधु भाल चकन वसन मनिमाल उर । शंकर सुवन दयाल बंदत पद सुर असुर नित ॥ १ ॥ सेवक जन प्रतिपाल, एक रदन वारन बदन । विघन हरन ततकाल, विपति कदन मंगल सदन ॥ २ दोहा ॥ चलिसम स्वाद महान को जासों सुख सरसाइ । रचत काव्य सरोज सो श्रीपति पंडित राय ॥ ३ ॥ निर्माण काल संवत मुनि मुनि मुनि ससी, सावन सुभ बुधवार । असित पंचमी को लिखो रुचित ग्रंथ अवतार ॥ ४ ॥ सु कवि कान्पी नगर को द्विज मति श्रीपति राइ । जस सम स्वाद जहान को बरनत सुख समुदाइ ॥ ५ ॥

End—अथ वीर रस विभाव—युद्ध दान यह लघु दया यहँ उवै उत्साह। है विभाव रस वीर को प्रगट करै कवि नाह ॥ २० ॥ वीर युद्ध रसालंवन युद्ध कौं रावन आवत है जो सदा मुनि देवन कौं दुखदायक। अंग पराति कौं दंग दलो सुर वानर नाहि सकौ सहि सायक ॥ पुछि मदोरि विलोकि भुजा निज माधुरी हाथ हंसो रघुनायक ॥ २१ ॥ मघवा रिपु को रन आवत हो वर वंच प्रलय वहरान लगो। जिनतो तित भागि चले कपि कायर गातन मे थहरान लगो। कवि श्री पतिजू उत्साह नठौ हिय लच्छन के थहरान लगो। डगरे डग केहरि के अनुहारि सुमुच्छ वहां फहरान लगो ॥ २२

Subject—वंदना, कवि वर्णन, काव्य लक्षण, उत्तम काव्य, मध्यम काव्य, अधम काव्य, वाच्य चित्र वर्णन। पृ० १—४ तक शब्द निरुपण, वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ लक्षण सभेद, व्यंग सभेद, वाच्य सभेद, काकु, व्यंग के अन्य भेद, दोष वर्णन। अनर्थ, श्रुति कटु, गतागत विचार, यति भंग व्याहतार्थ, अप्रयुक्त, असमर्थ, उपहत, ग्राम्य, असंमत, भाषाच्युत, प्रतिकूल वर्ण। पृ० ५—२० तक। अर्थ दोष वर्णन तथा दोष निवारण। पृ० २१—३२ तक काव्य गुण कथन, अर्थगुन वर्णन, श्लेष, प्रसाद, ओज वर्णन, अलंकार वर्णन। पृ० ३३—५९ तक। रस—निरुपण। पृ० ६०—६५ तक।

No. 404(*b*). Kavya Saroja by Srīpati of Kālapi. Substance—Country-made paper. Leaves—34. Size—12 × 6 inches. Lines per page—56. Extent—1,666 Anushṭup Slokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1777 or A.D. 1720. Place of deposit—Thākura Bira Simha, Village Bhudarā, Post Office Biswān, District Sītāpur (Oudh).

No. 404(*c*). Kāvyasudhākara by Srīpati of Kālapi. Substance—Country-made paper. Leaves—15. Size—9 × 4 inches. Lines per page—14. Extent—200 Anushṭup Slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1777 or A.D. 1720. Place of deposit—Rājapustakālaya Bhinagā (Bahraich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ स्याम स्याम अमर विटप श्री गुरु पद जलजात। जांचत द्विज श्रीपति सुकवि देहु सुमति अवदात ॥ १ ॥ सवैया ॥ नेम विना निति आनन्द मे परतंत्र नहीं कछु पार न पावे। नै रस

यामें सवे मधुरे द्विज श्रीपति चाहि कहा जस गावे ॥ नेमु क नाहि डरै जम सों इन भांतिन के गुन केते गनावे। वानो मरं तिहुंलोक रच्यो कविराज विरंचि कों सीस नवावे ॥ २ ॥ कवित्त किय तें पाइयतु परम सुजस धनमान। रोगन सें अरु दुखन सों कहे सवे मति मान। ३। केसव अरु गंगादि को सुजस रह्यो जग छाय। यों वे म सुततें लह्यो धन मुकुंद कवि राय ॥ ४ ॥ अकवर वह दिल्लीस तें पायो मान अनूप। ग्वालहि में तव ह्वै गयो सुकवि वीर वर भूप ॥ ५ ॥ जगन्नाथ तें ज्यों नस्यैा कवि द्विनेस को रोग। मनीराम ज्यायो तनय जानत सिगरे लोग ॥ ६ ॥

End—दोहा—रसिक चकोरन कहं वढ़ै याते परम हुलास। काव्य सुधाकर रचित सो श्रीपति सुमति निवास ॥

भरत विवुध नर हनत दारिद्र दर, मिटत कलुष जर डरत अमम शर। लसत गरल गर भरत कनक भर, सुजस धरनि तर रटत कुलिस कर ॥ दहत बिरह धर रहत निगम कर लहत सुमति घर सतत कहत हर ॥

दोहा ॥ जमक लेष अरु चित्र महं कहुं धुनि के कन होत। सवै वहर महं अधम है कवि कोविद उद्योत ॥ मेरे मत श्लेष में कहुं अपर धुनि होय। ताकों दरसे हों सवे सहित ग्रंथ कवि लोय ॥ तामें मध्यम भेद है कहुं श्लेष देखाय। उत्तम भेदन ह्वै सकै कहैं महा कविराय ॥ कवित निरूपन पद कह्यो श्रीपति सुमति निवास। काव्य सुधाकर महं भई पहिली कला प्रकास ॥ इति श्री काव्य सुधाकरे निरूपनं समाप्तम् ॥ इति ॥

Subject—प्रार्थना, कविता की महत्ता व कवियों का उत्कर्ष वर्णन। पृ० १। काव्य गुण तथा कवि वंशादि वर्णन—पृ० २—३ तक। काव्य लक्षण, काव्य शक्ति—पृ० ४ उत्तम काव्य लक्षण, उदाहरण, मध्यम काव्य लक्षण व उदाहरण तथा अति काव्य मध्यम लक्षण व उदाहरण पृ० ५-६। मध्यम काव्य लक्षण व उदाहरण अधम काव्य लक्षण व उदाहरण—पृ० ७। अल्प मध्यम काव्य लक्षण व उदाहरण व उत्तम काव्य कथन—पृ० ८। अनुप्रास लक्षण व उदाहरण व उपपतिकादि उदाहरण—पृ० ९—१०। यमक लक्षण व उदाहरण, श्लेष लक्षण व उदाहरण। पृ० ११—चित्र काव्य सभेद। उदाहरण सहित—पृ० १२—१३ अक्षर लक्षण, षोड़स दल चित्र काव्य तथा अधम काव्य वर्णन। पृ० १४—१५ तक।

No. 405. Śringāra Saurabha by Śrī Rāma Bhatta. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—11½ × 7½ inches. Lines per page—32. Extent—432 Anushṭup Slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—

Samvat 1942 or A.D. 1885. Place of deposit—Paṇḍita Syamabihāri Miśra, Golāganja, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शृंगार सौरभ ग्रंथ लिख्यते ॥ मंगलाचरण कवित्त ॥ वृन्दा राजरानी आदि शक्ति जग जानी जहाँ अद्भुत सी द्वौ सिद्धि सेवनि ह्दोश को। दासो हरे मासो धो उमा सी है खवासो बासो पावत न जान जहाँ मनहु सचोस को ॥ बायें कर श्रोर श्रोर दाहिने नवीन वर कोटि मारतंड को प्रकास नव वोस को। बात बारि जात नव पात पारिजात पदजात नित ईश को कि सीस जगदीस को ॥ १ ॥

दोहा—कहो नायका नारिसों सुन्दर सुखद उदार। पिय हित रचति प्रवीनता रिझवावति रिझवार ॥ २ ॥ उदाहरण—लागत समीर लंक लचकि लचकि जात ललकि ललकि जात नगर निपातो है। विपुल नितंबन की उरज उतंगन की सिरज कदंबन की छबि छहरातो है। रामजी सुकवि अरविंद में चलिंद सम लोयन को बंदि बंदि मीन मुरझातो है। बनो वनितान में मसाल सो विशाल बाल श्रोर सकुचावो परो बावासो दिखातो है ॥

End—अथ परकीया आगतपतिका को उदाहरण। बेलि मनोहर चंपक को यह काम के कंबुक के तुलहो है ॥ स्वांस समीर लगै लचकै करि मध्य सगान कवीन कहो है ॥ बाल पटा पै चढ़ो मग देखत त्यों उचको कुचको सुलहो है। वायस बोलि परोस गयो मन हो मन आनंद सो उमहो है ॥ ६३ अथ सामान्य आगतपतिका को उदाहरण—अंगिया दरको हरषो मन में लरको लर मोतिन मालन की। .... हको सदको कुचहू बदको गति जासु मरालन को ॥ .... मोतिन के जालन गुंफित मालनदो है लालन को ॥ .... उमगो उमगै भरि है मनको गति .... ६४ ॥ इति श्री रामजी भट्ट विरचिते शृंगार सौरभे दस अवस्था भेद वर्णन नाम पंचमस्तरंगः समाप्तं ॥ शुभ मस्तु ॥ श्री संवत् १९४२ आषाढ़ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ चतुर्दश्यां शनिवासरे लिखित मिदं पुस्तकं बलदेव मिश्रेण श्रीमान् मिश्र जुगल किशोरस्यार्थं ग्रंथावली स्थानेषु ॥ श्री कृष्णायनमः ॥

Subject—मंगलाचरण, नायिका वर्णन, स्वकीया भेद, मुग्धा अज्ञात यौवना, ज्ञात यौवना, नवोढ़ा और विश्रब्ध नवोढ़ा वर्णन। छ० १-१३ तक।

वयःसंधि वर्णन, मध्या वर्णन, प्रौढ़ा वर्णन, प्रौढ़ा विपरीत रति व सुरत वर्णन। धीराधीरादि भेद वर्णन। छन्द—१४—३९ तक। परकीया वर्णन। ऊढ़ा, अनूढ़ा, गुप्ता कुलटा, लक्षिता, अनुशयना, मुदिता, विदग्धा सभेद, स्वयं दूतिका वर्णन छन्द ४०—७० तक।

गर्विता सभेद। मानवती सभेद, अन्य संभोग दुःखिता, स्वकीया, परकीया और सामान्या वर्णन। छन्द ७१—८४। अथ नायका भेद वर्णन—छन्द ८५—१४८ तक।

इति।

No. 406. Biharisatsai with Tika Anawar Chandrika by Subha Karana of Delhi. Substance—Country-made paper. Leaves—98. Size—9 × 5 inches. Lines per page—25. Extent—1,980 Anushtup Slokas. Appearance—New. Character—Nagari Date of Composition—Samvat 1771 or A.D. 1714. Date of manuscript—Samvat 1855 or A. D. 1798. Place of deposit—Pandita Śripala, Village Khajuri, Post Office Gouriganja, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ अनवर चंद्रिका लिख्यते॥ प्रभु वंश वर्णन॥ अनि सब फुलकद साहि साहि सर पुहो जानो। सालह साहि सुजान साह असगर पहचानो॥ अनवर साहि समत्थ मुनवर साहि परधसम॥ हासम साहि प्रचंड साह कासम जु अनुपम। कहि किसवर साह बिलंद दल कैसर साहि सुजान चित॥ पुनि मालिक अजादर साह हुव कुल मंडन जस किय अमित॥ २॥ अमित तपोवर चलन हुव जाहिर सब जगजानि। मरहेजी यह ख्याति जुत यूसफ साहि बखानि। ईसफ साहि बखानि सकल गुन गन जो जानै॥ विदित विलाइत सोन समुदयौं पहिचानै॥ पहिचानै बहु दिनन कवरते करन करगो नित लसत थान मुलतान भान सम सोहै जो अमित। अमित सोल मे अकबर मुअमर साह हुव पुनि अबदुल्ला साह। साहि अबदुला हाउ गनि साहि फरीद सुजान। सैद खां सुभट सिरोमनि, पुनि सैद मुबारिक खां प्रबल, तनय सैद साला अवनि पुनि सैद मुसताक जस जलधि सुत ससि अनवर खान भनि॥ + + + + +

दोहा—सांसि रिंब रिंक्ष ससि लिखि लिख्यो। सम्वत् सवम विलास। जामैं अनवर चंद्रिका कीन्यो विमल विकास॥

End—चढे जाहु ह्वां को करत, हाथिन को ब्यौपार। नहिं जानत इहि पुर बसत, धोबी मांड़ कुम्हार॥ विषय विषादिक को तृषा जिये मतोरन सोधि। अमित अपार अगाध जल, मास मूड़ पयोधि॥ यहि ईदो मोती सुगथ तुमनथ गरब बिसाक, जिहि पहिरे जग हग कसत लसति हंसति सो नाक॥ इति सत्युक्ति॥ इति विहारी सतसैयायां टीका समाप्तम्॥ सम्वत् १८५५ वैसाख सुदी २ शुभम् भूयात्॥

Subject—(१) पृ० ४ तक—प्र० प्रकाश, प्रभुवंस वर्णन।
(२) १०वें तक—द्वि० प्रकाश—साधारण नायिका वर्णन।
(३) २४वें तक—तृ० „ नख शिख वर्णन।
(४) २६वें तक—च० „ मुग्धादि त्रिविध नायिका।
(५) ४२वें तक—पं० „ दश विधि नायिका वर्णन।
(६) ४३वें तक—ष० „ प्रेम प्रशंसा।
(७) ५०वें तक—स० „ मानिनी वर्णन।
(८) ५२वें तक—अ० „ सुरत सुरतांत वर्णन।
(९) ९८वें तक—अंतिम प्रकाश गणना रहित—विविध विषय, रस हाव-भाव तथा ऋतु इत्यादि वर्णन।

Subject—यह पुस्तक बिहारी सतसई नामक अद्वितीय शृंगार ग्रंथ की टीका है। जो अनवर खां के नाम निर्माण की गई है। प्रारंभ मे ही प्रभुवंश वर्णन किया गया है जो प्रगट करता है कि यह कवि सं० १७७१ में दिल्ली दर्बार के आश्रित थे।

No. 407. Sudāmā kī Bāraha Kharī by Sudāmā. Substance—Country-made paper. Leaves—9. Size—6×4 inches. Lines per page—18. Extent—55 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Kaithī. Date of manuscript—Samvat 1880 or A.D. 1823. Place of deposit—Ṭhakura Ayodhyā Simha, Village Sadarapur, Post Office Gārāpur, paraganā Chāndā, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—कका कलजुग नाम पधारा। प्रभु सुमिरत भव उतरे पारा॥ साधु संग करि हरि रस पाजै॥ जीवन जन्म सुफल कर लीजै॥ खंखा जो सकल जहाना॥ जाको गावै वेद पुराना॥ निरभय नाम हरि को लीजै॥ चरन कमल को ध्यान धरीजै॥ गंगा गुन गोविंद के गावै। माया जास भूलि अनि जावे॥ जन जोबन तन रंग पतंगा॥ छिन मे छार होय यह अंगा॥ ३॥

End—हहा हरि गुन गावे पाप भोछन जाय॥ श्री गुरुचरन कमल परताप॥ जैसो इंद चहुंदिसि घेरा॥ प्रगट भान तव भयो उजेरा॥ ३॥ छेने को हरि को नामा॥ देने को नहि आन समाना॥ ३४॥ छाड़ो जे विष बंधन चहोवे॥ सत गुरु चरन सरन होय रहोय॥ नाम मधुर रस पीवो सुजाना॥ गर्भ वास नहि होय पराना॥ बारा खड़ी ग्यान गुन गाउ॥ दास सुदामा दीन प्रति गावे॥ गुरु देव चरन चीत लावे॥ ३६॥ इति श्री सुदामा कृत बारा खड़ी संपुरन समापत॥

Subject—पृ० १–९ तक—ककार से लेकर हकार तक क्रमानुसार छन्दों के आदि में अक्षरों का आना और प्रत्येक छन्द में ईश्वर भक्ति का हो कुछ न कुछ वर्णन।

No. 408. Ekādaśī Mahātmya by Sudarśana of Ambu. Substance—Country-made paper. Leaves—300. Size—12 × 4¼ inches. Lines per page—7. Extent—2,494 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1770 or A.D. 1713 Date of manuscript—Samvat 1922 or A.D. 1865. Place of deposit—Munsī Rāmajiāwana Lāla, Teacher, Town School, Fatehpur, Bārā-bankī (Oudh).

Beginning—श्री गनेशायनमः ॥ अथ लीषते येकादसी महत्तम ॥ दोहा ॥ कथा करी रघुवीर जव तव कवि किया विचार ॥ किया महातम एकादसी रचि भाषा संसार ॥ × × × × आरम यह परलोक की कथा सुनै नर जोइ ॥ गंगतीर को भजत है दरसन को चित होइ ॥ चौ० ॥ प्रथमहि भजो मातु मैं गंगा ॥ जेहि सुमिरे उपजै मति चंगा ॥ जे नर वसहि गंग के तीरा ॥ ते बैकुंठ वसहि बलवीरा ॥ येक चित होइ गंग अन्हावै ॥ ते नर सबै पदारथ पावै। धरै ध्यान गंगा को जोई ॥ सो नर दुषित कबहु न होई ॥ जो मानुष जग मैं चतुरंगा ॥ ते असनान करहि नित गंगा ॥ तिन के कलिमष होइ बिनासा ॥ ते नर सुरपुर पावहि बासा ॥ जे नर पीवहि गंग को नीरा ॥ तिन के रोग न रहै सरीरा ॥ ते नर बहु विधि रहै अनंदा ॥ तिनके वदियहि जस चंदा ॥ जे नर दूरि देस ते आवहि ॥ मनो कामना ते नर पावहि ॥ दोहा ॥ धंन बोरहि जे गंग मह ते नर चतुर सुजान ॥ आगे कथा प्रसंग मे सुनहु लोग दै कान ॥ जे नर निंदा गंग की करहीं ॥ सात जन्म कुष्टी अवतरहीं ॥ जे नर हंसहि गंग के जल को ॥ ते नर सदा दुषित रहि तन को ॥ × × × × ×

End—दान पुन्य तव नृप करो विधि समेत नृप सोइ ॥ जै जै जै जै सब करैं रंग रंग नित होइ ॥ चौ० ॥ कहेउ उमा तब बात बिचारी ॥ बात हमारि सुनहु त्रिपुरारी ॥ जैदेव अरु प्रभावति नारी ॥ केहि विधि मुक्ति हमर सिधारी ॥ भये परम पद के अधिकारी ॥ काल पाइ ते हमर संभारी ॥ मुक्ति भय सो होइगे कैसे ॥ बिस्नु सरुप बरनन जैसे ॥ येकादसी है मुक्ति को दाता ॥ पारबती सुनु ऐसी बाता ॥ बोरभद्र नृप सो करई ॥ रघुपति भक्ति हृदय मैं धरई ॥ बन मैं नृपति सिधारन कीन्हा ॥ राजा पुत्र इक सुन्दर दीन्हा ॥ नारद कल्प की कथा पुनीता ॥ पारबती सुनि भई सुचीता ॥ दोहा ॥ एकादसी व्रत ऐसा जो कोइ करै सुजान ॥

मुक्ति पदारथ पावै सो बैकुंठ समान ॥ सुनौ लोग दै कान बृत्त यह करौ येका-दसि। पावै पद निर्वान सुष संपति श्रौ जस मिलै ॥ इति श्री नारद पुरान कथा एकादशी महात्म्य समाप्तम ॥ (लिखिते दीन भगत)। दोहा ॥ श्रीगुरु संभु प्रताप पोथी भई तयार। जो जस देषा तस लिषा दोष न देव हमार ॥ मिति कुवार सुदी ४ वार इतवार ॥ सन् १२७३ ॥ संवत् १९२२ ॥

Subject—पृ० १—३ तक—ग्रंथ निर्माण कालः—"सत्रह सै सत्तरि संवत मे संसार। भादैा सुकुल सोवार को कथा लीन अवतार"—गंगा महात्म्य तथा उत्पत्ति। (२) पृ० ४—५ तक—कवि के नगर आदि का वर्णन। "श्रंबू नगर ग्राम को नाऊ ॥ सुदरस कवि बसै तेहि ठाऊं ॥ इत गंगा उत जमुन बहाई ॥ श्रंतरवेद सुदरसन रहई ॥
"ग्रैसो तेज नरेस को बसै सब सब देस ॥ नाम तै रामगुलाम है तेज स्वासि नरेस" ॥

(३) पृ० ५—२८ तक—अगहन शुक्ल एकादशी की उत्पत्ति, अर्जुन कृष्ण संवाद, मुर राक्षसों द्वारा देवताओं को कष्ट, देवताओं का भाग कर विष्णु के पास जाना, देवासुर संग्राम, सुरों की पराजय, विष्णु का गुफा में छिपना, स्त्री का गुफा से निकलना, राक्षस को मारना। विष्णु का अचंभा, उसका नामादि पूछना, एकादशी का सब वृतान्त कथन। विष्णु का वर देना। (४) पृ० २९—३६ तक—एकादशी अगहन कृष्ण पक्ष की उत्पत्ति वर्णन। हैहय देश के राजा का स्वप्न में अपने पिता को नरक में देखना, मुनि द्वारा इसका कारण जानकर एकादशी (अगहन कृष्ण) का व्रत करके उन्हें सुरपुर भेजवाना। (५) पृ० ३७—४४ तक—माघ की एकादशी व्रत का फल उसकी उत्पत्ति का इतिहास, चंपावती के महाजीत नामक राजा के पुत्र लम्भु का ज्वारी होना, पिता द्वारा उसका निकाला जाना। दशमी तथा एकादशी के दिन भूखा पड़े रहने पर एकादशी व्रत का फल प्राप्त होना। पिता के पास जाकर राज्याधिकार प्राप्त करना। (६) पृ० ४५ से ५३ तक—पैाष शुक्ल एकादशी का फल, व्रत की रीति, चंद्रावतीपुर के सुकेतु नामक राजा का पुत्र न होने पर वन को जाना। वहां भूख प्यास से व्याकुल होकर एक तालाब पर निकलना। वहां पर एक बैठे ऋषि के आदेश से व्रत करना और पुत्र पाना।

(७) पृ०—५४—६४ तक—माघ कृष्ण एकादशी के व्रत का नियम, उसका इतिहास—एक ब्राह्मणी की नारायण द्वारा परीक्षा, भिक्षा मांगने पर मिट्टी डालना, उसका स्वर्ग होना, केवल मिट्टी का घर मिलना, पूछने पर नारायण का खाली मकान देने का कारण बताना। किवाड़ देकर नारायण को

पास्या मे रहना, मुनि नारियों का उसे व्रतदान का फल प्रदान करना, उसके घर में सब कुछ हो जाना।

(८) पृ० ६५—७२ तक—माघ शुक्लपक्ष एकादशी के व्रत का नियम इतिहास—एक गांधर्व का इन्द्र के पखाड़े को पुष्पवती नामवाली अप्सरा पर मोहित होना, इन्द्र के अभिशाप से दोनो का पिशाच पिशाची होना। एकादशी के पश्चात व्रत से उनका उद्धार।

(९) पृ० ७३—८२ तक—फागुन कृष्ण एकादशी के व्रत का नियम-इतिहास—बग्दलभ्य द्वारा एकादशी महात्म्य सुनकर और वैसा ही करने पर राम को विजय का वर्णन।

(१०) पृ० ८३—९४ तक—फागुन शुक्ल एकादशी का नियम इतिहास-मानधाता-वशिष्ठ संवाद—चैतरथ राज के एकादशी व्रत द्वारा एक दुष्ट का तरना, सुरथ नामक एक राजा का एकादशी व्रत के कारण शत्रुओं से बचना।

(११) पृ० ९५—१०५ तक-चैत्र कृष्ण पक्ष की एकादशी व्रत का फल, मानधाता-लोमस संवाद, इतिहास-चैतरथ नृप का वन विहार, उसी वन में मेधावी ऋषि की तपस्या देख कर और इन्द्रासन जाने की आशंका से सुरराज का मंजुघोषा नामक अप्सरा का उसका तप भंग करने को भेजना, कामदेव की सहायता से अप्सरा की सफलता, मुनि के साथ ५७ वर्ष निवास, ज्ञात होने पर स्त्री को मुनि का अभिशाप। एकादशी व्रत से दोनों के कल्मष दूर होकर उद्धार।

(१२) पृ० १०६—११२ तक-चैत्र शुक्ल पक्ष एकादशी, नागपुर के ललित नामक पुरुष का अपनी पत्नी ललिता के एकादशी व्रत कर के उसका फल देने से ललित का शापमोचन और पिशाच से अपना वास्तविक रूप ग्रहण करना, एकादशी व्रत का फल कथन।

(१३) पृ० ११३—१२१ तक-वैसाख कृष्ण एकादशी का फल-इतिहास-रत्नपुर के राजा हरिसेन के एक चमार द्वारा एकादशी का फल प्राप्त करने पर एक गदहा बने हुए ब्राह्मण का उद्धार।

(१४) पृ० १२२—१३१ तक—वैसाख शुक्ल पक्ष की एकादशी व्रत का फल, एक सेठ के पापी पुत्र का जुआ इत्यादि कुकर्मों द्वारा घर से निकाला जाना, चोरी करने पर दंड देकर नगर से निकाला जाना। पशु पक्षियों का विनाश करना। कौडिन्य ऋषी द्वारा उसका एकादशी व्रत करके उद्धार होना।

(१५) पृ० १३२—१३८ तक—ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष की एकादशी व्रत का फल-इतिहास-वैसन को पुर्वां से एक अप्सरा का विमान नीचे गिरना, दासी जो एकादशी के दिन भूखी रही थी उसके फल से उसका आकाश पर चढ़ना, राजा का एकादशी व्रत नगर के स्त्रियों पुरुषों सहित करना।

(१६) पृ० १३९—१६० तक-ज्येष्ट शुक्ल पक्ष एकादशी महात्म्य, इन्द्र के शाप से एक गंधर्व का जिन्द होना, एकादशी व्रत का महात्म्य सुनकर उसका आचरण करने पर एक राजा का पुत्र होना। उस पुत्र का बड़ा होकर नन्दन वन को जाना, वहाँ जिन्द का उससे चिपट जाना, वर पाने पर एकादशी व्रत का फल पाने पर उसका उद्धार।

(१७) पृ० १६१—१६७ तक-आषाढ़ कृष्ण पक्ष की एकादशी। एक ब्राह्मण का कुबेर के अभिशाप से कुष्टी होना और मारकंडेय ऋषि द्वारा आषाढ़ एकादशी व्रत द्वारा उसका उद्धार, व्रत फल।

(१८) पृ० १६८—१७४ तक-आषाढ़ शुक्ल प० एकादशी—इस व्रत द्वारा राजा बलि को जो पाताल लोक के राजा बन गये थे—का नित्य ही भगवान के दर्शन पाना। व्रत का फल।

(१९) पृ० १७५—१७८-श्रावण कृष्ण एकादशी व्रत का फल। ब्रह्मा द्वारा नारद को बोध।

(२०) पृ० १७९—१८६ तक-श्रावण शुक्लपक्ष की एकादशी व्रत का महात्म्य, द्वापर में महिष्मती नगर के महीजीत नामक राजा का इस व्रत को करके पुत्र प्राप्त करना।

(२१) पृ० १८७—१९२ तक-भाद्र कृष्णपक्ष की एकादशी के व्रत का फल—इस व्रत के फल से राजा हरिश्चन्द्र का मृतक पुत्र जीवित होना।

(२२) पृ० १९३—२०० तक-भाद्र शुक्लपक्ष की एकादशी का फल—एक राजा के नगर में वर्षा न होना, उसका दुःखित होकर नगर परित्याग, वन में ऋषियों का आदेश पाकर एकादशी व्रत द्वारा जल बरसाना।

(२३) पृ० २०१—२०६ तक-आश्विन कृष्ण एकादशी व्रत महात्म्य—महिष्मती के राजा इन्द्रसेन के एकादशी व्रत से उनके नरक में पड़े हुए पिता का उद्धार होना। व्रत का नियम।

(२४) पृ० २०७—२१८ तक—आश्विन शुक्लपक्ष एकादशी व्रत महात्म्य कृष्ण द्वारा युधिष्ठिर से चार प्रकार की मुक्ति का कथन, व्रत के नियम तथा फल।

(२५) पृ० २१९—२३३-कार्तिक कृष्ण एकादशी व्रत का फल, मुचुकुंद की पुत्री चन्द्रभागा का विवाह सोभन के संग होना; सोभन का ससुराल आगमन, एकादशी व्रत का आना, मुचुकुंद की आज्ञानुसार सब नगर के साथ इनका भी व्रत होना, जामात्र का मरण होना, राजा का उसकी क्रिया करना, एक ब्राह्मण का तीर्थ को जाना, मार्ग में पड़ने वाले पर्वत पर सोभन का देखना, व्रत के महात्म्य से उसका राजा होने किन्तु अरुचि के साथ किये व्रत के फल से उस नगर के थोड़े दिन रहने की चर्चा कर अपनी पत्नी को सूचित करना

पत्नों के एकादशी व्रत के प्रताप से नगर का स्थित रहना। (२६) पृ० २३४—२३९ तक—कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी का महात्म्य—व्रत के नियम और फल।

(२७) पृ० २४०—२५८ तक—रुक्मांगद चरित्र—सत्यदास विरचित—राजा का व्रत करना, इन्द्र का घबराना, एक मोहनी स्त्री द्वारा राजा को धोखा देकर वन से घर लौटाना, राजा का एक ऊंटनी—जो शापवश इस रूप में परिणत हुई थी—द्वारा सचेत होने पर भी लौटना, मोहिनी द्वारा राजा से एकादशी व्रत फल मांगना अथवा पुत्र का शिर मांगना। राजा का असमंजस, रानी की सम्मति तथा पुत्र की अनुमति से सिर देने को उद्यत होना। ईश्वर का प्रसन्न होकर प्रगट होना, सब नगर सहित राजा का स्वर्गवास। (२८) पृ० २५९-३००-तक—जैदेव की कथा—एक ब्राह्मण की तपस्या द्वारा यह वरदान मांगना कि यदि मेरे प्रथम पुत्र अथवा कन्या होगी तो वह आप के अर्पण करूंगा और दूसरे को मैं ग्रहण करूंगा, उसकी मनोकामना पूर्ण होना, पुत्री को लेकर जाना, स्वप्न में ईश्वर का कथन कि यह कन्या जैदेव को दो, जैदेव के न ग्रहण करने पर बरबस कन्या को छोड़ कर ब्राह्मण का चल देना, जयदेव का उसे ग्रहण करना और धन धान्य की इच्छा से किंदुबिंद के नृपति के पास जाना, चोरों द्वारा उनका अंग भंग, राजा का आकर उन्हें ले जाना, अच्छा होने पर उन्हें दान का कार्य्य सौंपना, एक दिन चोरों का आ जाना उनका भयभीत होना जयदेव का अभयदान, उन्हें बहुत सा द्रव्य देकर विदा करना, उनकी स्त्री प्रभावती की ईश्वर द्वारा भेजी हुई सिद्धियों से रक्षा। चोरों को राजा द्वारा जयदेव का बहुत सा द्रव्य देकर दूतों के साथ विदा करना, घर के पास पहुंच कर चोरों का दूतों द्वारा राजा को संवाद, कि 'यह साधू नहीं है' हमारा साथी चोर है इसी कार्य्य में उसके हाथ पैर कटे हैं, इतना कहते ही चोरों का पृथ्वी में समा जाना, दूतों का जयदेव के पास आकर सब हाल सुनाना, जयदेव के हाथ पैर उगना, संपूर्ण समाचार राजा को ज्ञात होना, राजा का सेवा में उपस्थित होकर विनय पूर्वक सब समाचार जानना, प्रभावती आगमन, राजा का रणक्षेत्र में जाना और जय लाभ करना, सात संतों का युद्ध में मारा जाना और उनकी स्त्रियों का सती होना, रानियों का यह हाल प्रभावती को सुनाना, उसका कहना कि इससे क्या लाभ, रानियों द्वारा प्रभावती की जांच। जयदेव का सर्प से डसे जाने का मिथ्या समाचार, उसका सब समाचार जानकर मिथ्या बताना। रानी द्वारा दूसरा धोखा कि जयदेव की मृत्यु हो गई, यह सुनकर प्रभावती का शरीर त्याग। रानी का खेद, राजा को सब समाचार सुनाना। राजा का जयदेव से सब समाचार सुनाना, राजा का जयदेव से सब वृतान्त कहना; जयदेव का कथन कि अच्छा हुआ रघुवीर के पास गई, इसपर राजा का आग्रह, प्रभावती का

जोवित होना, एक मेले में राजा के साथ जयदेव का जाना, मेले में उनका खोजाना, द्रव्य लोलुपों द्वारा उनका पकड़ा जाना, उनके मारने का इरादा जान कर जयदेव का प्रश्न कि तुम लोग मुझे क्यों मारना चाहते हो। चोरों का कथन कि द्रव्य लाभ हेतु, जयदेव का शीस झुका देना, ईश्वर द्वारा लोगों का मत पलट जाना, जयदेव को छोड़ देना, राजा से उनका मिलना, राजा का सब समाचार जानकर खेद करना, घर लौटना, जयदेव से पद्मावती को पुत्र—इच्छा प्रकट करना, जयदेव का उसे एकादशी व्रत का उपदेश "गंगा उत्पत्ति का कारण" ब्रह्मा द्वारा नारद को बतलाया जाना, और एकादशी महात्म्य वर्णन—मनसुखदास कृत भक्त माल (कुछ अजामिलादि के तरण का बहुत ही सूक्ष्म वर्णन, अथवा नाम गिनाना) वर्णन। ग्रंथ समाप्ति।

No. 409. Bhishaja Priyā by Sudarasana Vaidya of Hamirpur. Substance—Country-made paper. Leaves—166. Size—7¼×5¼ inches. Lines per page—13. Extent—2,160 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nagari. Date of Composition—Samvat 1729 or A.D. 1672. Date of manuscript—Samvat 1865 or A.D. 1808. Place of deposit—Paṇḍita Rāmādhina Vaidya, District Bārābanki (Oudh).

Beginning—ओं श्री गणेशायनमः ॥ नमः सरस्वते ॥ अथ भैषज प्रिया लिख्यते ॥ दोहरा। लंबोदर गजमुख सुमन एक रदन जग बंद। विधु-बाल भाल बंदन सुमिरि हे गिरजानंद ॥ १ ॥ दोहरा ॥ धूम्रनयन सुभमति करन हरन दरिद्र समाज। असन बसन धन सुख वरन महादान गजराजि ॥ २ ॥ दोहरा। रिपुमर्दन संकट हरन करन सदा आनन्द। मूषक वाहन दरसते मिटत सकल दुखदंद ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ एक रदन फरसा कर लीन्हे। गज आनन सिंदुर सिर दीन्हे ॥ कुमति हरन शुभ मति वजावत। तुरत प्रवीन बुद्धिवर आवत। ४ ॥ धूप दीप मोदक कर पूजा। विधि वार अस देव न दूजा ॥ प्रथम गणेश पढ़तई जावे ॥ शुभ कारज मंगल त्रिय गावें ॥ ५ ॥ मदन कदन सत गुरु गननायक ॥ अष्ट सिद्धि दाता सुख दायक ॥ जा सेवत निर्धन धन पावत। महादीन को दरिद्र नसावत ॥ ६ भय संकट मह सदा सहायक। अतिवल विक्रम कौतुक लायक ॥ ७ ॥ दोहरा ॥ वानी जू को वदन विधु सुधा अमृत सुखकंद। सिव चकोर जिमि चितु बसत निह कलंक सुख चंद ॥ ८ ॥ दोहरा ॥ रवि प्रताप आनन ससि छवि दामिनि तन हेम। जग जननी दुख दरन को लियो सदा सिव नेम ॥ ९ ॥

End—चित्रिकादि चूर्न कफ हरन ॥ सेंधव लीजिए एक पल दो पल पीपरा मूर ॥ पीपर लीजिये तीन पल चारि तौ वाकौ मूल ॥ २१ ॥ चित्रक लीजे पंच

पल सुंठी षट पल लेउ ॥ हरे लीजिये सात पल सब चूरन करि देउ ॥ २२ ॥ टंक तीनि प्रमान यह जो रोगी को देइ । भूष अधिक पुनि मल टरैं सुनि भिषज यह भेउ ॥ २३ ॥ वड़वानल चूरनं ॥ अकरकरा केसरि कना लौंग इलाचो आनि ॥ पीपरि चंदन जाइफल सोंठि कंकोल बषानि ॥ २४ ॥ सुमित भाग यौषद सबै अफीम बराबरि जानि ॥ एकत सबै मिलाइ कै चूरन करौ बनाइ ॥ मासो येक प्रमान यह मधु मिलाइ कै षाइ ॥ बाढ़ै काम सा पुरुष के बाढ़ै रुचि अधिकाइ ॥ करभादि चूरन बीज अस्थंभन ॥ अजवाइन साजी को आनि ॥ पाढ़ा चीता कह्यो बषानि ॥ बाइविडंग तासु यह नाउ ॥ पंच लवन पुनि अ नि मिलाइ ॥ एला तगुरु लेह देवदारु ॥ मोथा बीज कचूर को डारु ॥ इन्द्रजवा अ धरे आनि ॥ २६ ॥ इति श्रीवास्तव्य कायस्थ कुल सुदर्शन वैद्य कृते भिषज प्रिया समाप्तम् ॥ संपूर्णम् ॥ × × × × ×

संवत् १८६५ मिती चैत्र तीज बुधवार के दिन लिखतं ॥

Subject—पृ० १—२५ तक—प्रथम उद्देश्य, वैद्य लक्षण, मंगलाचरण, गणेश तथा सरस्वती वंदना । ग्रंथ निर्माण परिचय, 'नाना मुनि के वचन सुनि ग्रंथ उक्त परमास । भिषज सुत भेषज प्रिया, भाषा करी विलास ॥ सार सार संग्रह कियौ सकल ग्रंथ मति मान । भिषजन कौ भेषज प्रिया, चित्त सुदर्शन ज्ञान ॥

× × × × × ×

ग्रंथ चतुष्टय । कवि कुल वर्णन :—उत्तर दिशि मिश्रीनगर, कियो बास कवि-लाल । कायस्थ उप प्रसिद्धि घर तिन मैनाम रिसाल ॥ वैद्य वृत्ति तिनकौं दई भक्त भवानी जान । मानहि राजा राइ सब सुख काटैं सुभ बान ॥ तब ते उदय करत यह बीति गये बहुकाल । एक दिवस पूछन लहे नैन पीड़ नृप बाल ॥ विह्वल मदिरा पान ते सुधि न रही मति धीर । अर्क छीर अञ्जन दियो राज रयन गई पीर ॥ बहु कालो मिर्वासपुर घट रवि को मूल । ताके पद अंजन किये नये दृगन को सूल ॥ बहु काली निर्वासपुर तब ते मदिरा पान को सतकरी पुरषान ॥ अब याको संग्रह कियो बुद्धिमंत जन हान ॥ २३ ॥ रामदमन परसुत दमन धनुष धन्वंतर रूप । एकते एक हैं गुन अधिक जिन्हैं सराहैं भूप ॥ २४ ॥ पंडित प्रगट प्रसिद्ध सब, हमीरपुर थान । पंच कोस तिहि बंस मैं वैद्य सुदर्शन जान ॥ जन्म भूमि है तासु को पुर पवित्र शुचि धीर ॥ अति प्रवीन नर जासु कै बसत वैतवे तीर ॥

राज बंसादि वर्णन :—गहिरवार कुल जगत जसु काशी सुर महिपाल कीन्हों राज कुड़ारगढ़ पगवल साह नृपाल ॥ कवि जन ताके बंश को कहाँ लगौं करैं बखान । प्रतापरुद्र सुत साधु मति उपजौ धर्म निधान ॥ सुख समूह सम्पति सहित निस दिन रहत अनंद । सुभग नगर निधि ओड़छौ मधुकर साहि नरिंद ॥

सब तै उद्यम करत यह बीति गये बह काल। एक दिवस पूछत भये सैन पीर नृप पाल॥ ताको पुत्र प्रसिद्ध नृप महि मतिवीर सिंह देव॥ जेते देस विदेस नृप करत भूप सब सेव॥ दान करत पारथ समर श्रुति पुरान परवान। महाराज बीर सिंह को दियो साह भुज रान॥ बुंदेलखंड भरतखंड में मध्य देस में देस। पहार सिंह महो को संकित सकल नरेस॥ तिहि कुल सुजान सिंह सुव करी धर्म सुत रीति। द्वापर जैसो कृष्ण सो कलि विश्वंभरि प्रीति॥ ताको परजा सब सुखी सब बसन धन धान्य। निर्भय राज सदा रहे अतिर्निस आठोजाम॥ × ×

ग्रंथ निर्माण काल:—संवत सत्रह सै भये लगी बास उनतीस। १७२९। रितु बसंत फागुन सुभग कृष्ण पक्ष व्रत ईस॥ सनि दिन सुभग चतुर्दसी सिद्धि जोग तिथि बार। प्रथम पहर आरंभ यह तादिन भयो विचार॥

वैद्य लक्षण, रोगी लक्षण, अवैद्य कथन, रोगी अंग अनुमान। परिचनु-कमन। दूत परीक्षा, शुभ शगुन लक्षण, अशुभ सगुन परीक्षा, बाम दक्षिण सगुन, स्वर परीक्षा, नाड़ी परीक्षा, मुख परीक्षा, नेत्र परीक्षा, दंत परीक्षा, जिह्वा परीक्षा, नख परीक्षा, श्लेष्मा परीक्षा, स्वप्न परीक्षा, मूत्र परीक्षा, मल परीक्षा, छाया परीक्षा, छाया विचार।

(२) पृ० २६—६५ तक—काल वेधादि, द्वितीय उद्देश्य। चतुर्दश परीक्षा लक्षण, सूर्य्य कालानल चक्र दूत आगम जानना, कान्ता चक्रम, चन्द्र कालानल चक्रम्, पताका चक्र, सलाका चक्र, द्वादश रासिका दान। नक्षत्र वार तिथि रोग निषेध, नक्षत्रादि दोष, वार वर्ग, नक्षत्र भेद, चन्द्र बल, नक्षत्र रोगावली चारो चरणों की, लग्न विधान, कालज्ञान लघु जातक, राशि फल। घात फल।

(३) पृ० ६६—९४ तक। तृतीय उद्देश। चिकित्सा दर्पण। साध्य लक्षण असीम भाव लक्षण, अष्ट ज्वर लक्षण—ज्वर की उत्पत्ति, स्वरूप, कोप, असाध्य उपद्रव, ज्वर प्रमाण, दोष प्रमाण, शुभ ज्वर लक्षण, दोष ज्वर लक्षण, चार प्रकार का लक्षण, सन्निपात त्रयोदश लक्षण, ऐतिक लक्षण, सन्दाह लक्षण, चित्त भ्रम लक्षण, अन्य सन्निपात भेद लक्षण, वंध्या गर्भ विधान, नष्ट पुष्प विधि, अश्वदंडी प्रयोग, वंध्या लक्षण तथा उसका उपचार, अन्य कफ वंध्यादि लक्षण और प्रयोग गर्भ चिकित्सा, गर्भ रक्षा, गर्भ कष्टी स्त्री का उपचार, द्वादश मास रक्षा करण विधि, गर्भ वर्जित गर्भ पतन उपचार।

(४) पृ० ९५—१११ तक—बाल चिकित्सादि। बाल चिकित्सा विधान, धाय परीक्षा, धाय लक्षण, फूलो लक्षण, जोगिनी लक्षण तथा उपचार, उनको शांति के मंत्र। बालादि जोगिनी वर्णन, बालक के बोलने की बात, दंत वर्णन—

अनूप देश तथा जांगल्य देश वर्णन, श्रोत्र देश वर्णन, अष्ट दिशा रोग वर्णन, षट् ऋतु वर्णन, ऋतु विधान, ऋतु रोग लक्षण, दिन रात पहर रोग राज वर्णन, तीन काल, वायु हेतु लक्षण, पित्त हेतु लक्षण, कफ कोप निदान, कफ हेतु निदान।

(५) पृ० ११२—११६ तक—वायु लक्षण निदान, पित्त लक्षण, कफ लक्षण, प्रशमन, वायु, पित्त कफ कोप। पञ्चमोद्देश।

(६) पृ० ११७—१३० तक—षष्टमोद्देशः—स्वरस क्रिया, अनुपान, स्वर, त्रिफलादि सुरस, निंब तथा गुरुच स्वरस, तुलसी तथा गुमा स्वरस, जंबू स्वरस, धात्रीफल सुरस, चतुर्विधि स्वरस, सतावर तथा स्वादि स्वरस, सुंठी स्वरस, ससा स्वरस मुंडी स्वरस, अद्यादि चतुर्विधि चूर्ण, गंगेरुवा स्वरस ख वातक, पुट पाक विधि, जवादि घृत, मंत्र विधि, जुसव विधि, कल्क करन।

(७) पृ० १३१—१५४ तक—सप्तमोद्देश—

क्वाथ कल्पना, अनुपान, काढ़ों के नाम, गुरुच्यादि काढ़ा, पंचभद्र पित्तज्वर, अमृताष्टक, सन्निपातज्वर दशमूल क्वाथ, अभयादि क्वाथ, कटफलादि क्वाथ, गुरवादि क्वाथ, अतीसार, संग्रहणी ज्वर वर्णन, अन्य त्रिफलादि क्वाथ, अतीसार संग्रहणी संबंधी मांड विधि, पानादि कल्पना, क्षीरपाक विधि, चतुर्विधि बल।

(८) पृ० १५५—१६६ तक—अष्टमोद्देशः—

चूर्ण विधि—अनेक प्रकार के चूर्ण—ग्रंथ समाप्ति।

No. 410. Bhakta Nāmāvalī by Sudhāmukhī. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—6¾ × 4¾ inches. Lines per page—20. Extent—120 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Gaṇeśa Prasāda, Village Danoj, District Rāe Bareli.

Beginning—श्री सीतारामाभ्यांनमः॥ अब मैं इन हरिजन कौ चेरो। है अनुकूल मूलवर दीजै हरि छूटै भव बेरो १। विधि नारद, संकर सनकादिक, कपिलदेव, मनु, भूपा नरहरि दास, जनक, भीषम, बलि, सुक मुनि, धर्म सरूप॥ २॥ विस्वकसैन, जय, विजय, प्रबल, नंद, सुनंद, सुभद्रा। चंड, प्रचंड विनीत, पुनीता, कुमुद, कुमुद दग, भद्रा॥ ३॥ सील, सुसील, सुषेन, गरुड़, कमला जानो हरि प्यारो। जामवंत हनुमान विभीषन, सबरी षगपति चारो॥४॥ विदुर सुकंठ, ध्रुव, उद्धव, अकुर, सुदामा, जानो। चित्रकेतु, अंबरीष गाह गज, चंद्रहास मन मानो ५॥ कौषारव, कुंती, विधु, पांडव, जोगेश्वर, श्रुति देवा। प्रथु अंग, मुचकंद परीछत, प्रियव्रत, सेस, सुसेवा॥ ६॥

End—रामभद्र, पूरन, परवोधा, जगदानंद भलाई। दास द्वारिका भट्ट लक्षमन, नाम गदाधर भाई—९४। श्री नरायनदास, दास भगवान, सुभग कल्याना, संतदास पुनि माधोदासा, सोभू, राम पमाना ॥ ९५ ॥ कान्हर, गोविंद, वासव सुत, श्री जगत सिंह जगजागे। दीप कुवँरि, जयसिंह ग्वाल गिरधर, हरिजन अनुरागे ॥ ९६ ॥ रामदास गोपाई बाई, रामराइ भगवंता, माधो रसिक, स्वरूप उपासिन, लालमती मनिसंता ॥ ९७ ॥ श्री नामा स्वामी माला सों गुरु संतन मुख आन्यैा। मति अनुरूप रची नामावलि सज्जन सुनिसुप मानैा ॥ ९८ ॥ भूल चूक सब छमा करो मम गम नहि जो सब भाषै। प्रातकाल नामावलि लीजै तैा हरिजन रस चाषै ॥ ९९॥ दसरथ सुत श्री जनकनंदनी रीझि तापर वेगी। भोर घोर मधुरे स्वर भाषै नाम सकल हुँ नेगी १०० ज्यों हरि आप सकल जग पावन नाम पुनीत पुनीता। त्यों हरिजन सच्चिदानंद है नाम लेत जग भीता ॥ १०१ ॥ नाम भक्त नामावलि याको जाको जाप करीजै। अनायास भव त्रास विगत सो होय जुगल पद लीजै ॥ १०२ ॥ हरि को अति प्यारे हरिजन जस जो जन मन मैं भावै। सील मती गुरु कृपा करी तब सुवा मुषी कछु गावै ॥ १०३ ॥

Subject—सुवा मुखी कृत भक्त नामावली अर्थात् नामा जी कृत भक्तमाल में जिन भक्तों के नाम आये हैं उनको संक्षेप रूप में काव्य में रचा है।

No. 411. Stuti Bhawanī kī by Sukhadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—8 × 4 inches. Lines per page—22. Extent—125 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1917 or A.D. 1860. Place of deposit—Ṭhakura Jagadewa Singh, Village Gujauli, Post Office Bauri, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अस्तुति भवानी की भाषा ॥ चैापाई ॥ गुरु गनेस के चरन मनावों। जेहि प्रसाद देवी गुन गावैं ॥ प्रथमहिं सुमिरैं वंदी माया। जेहि सुमिरे ते निर्मल काया ॥ सारा देवी आदि कुमारी। जेहि सुमिरे सिधि होइ हमारी ॥ सुमिरैं देवी मन चितलाई। दुष दारिद्र पाप छै जाई। अस्तुति करैं भवानी केरा। सुनैा संत कहैं मैं टेरा ॥ जा सुमिरे दुष भंजन होई। रोग भयानक रहै न कोई ॥ जा सुमिरे ते दुर्जन डुरई। काल कराल महा दुष हरई ॥ जल थल रन मह रछ्या करनी। सुमिरैं ताहि माह भय हरनी ॥ ताको अग्नि कभी नहिं जारै ॥ जब देवी को नाम पुकारै। संकट विपति दूरि तेहि भाजै। जहं देवी को सेवक गाजै। विषम उजारि दुर्ग मह जाई। तहां

भवानी आप सहाई ॥ कहं लगि प्रभुता कहौं बखानो। बार बार नर सुमिर भवानी ॥ आदि स्वरूप ज्योति तव लयऊ। ब्रह्मा विष्णु सब तुमते भयऊ ॥

End—ग्रस्त्र शस्त्र कोउ घाव न आवै। नित देवी की अस्तुति ध्यावै ॥ डंकनि संकनि प्रेत महामारी। तिन्ह से नाहीं होइ दुखारी। नवग्रह ताहि न सकैं सताई। पढ़ि अस्तुति सब दोष नसाई। धन अरु धान्य होइ अधिकारी। महा धनाढ्य होइ सो भारी। तीनि लोक माता कोऊ नाऊं। अस्तुति पढ़ै सदा तेहि ठाऊं। अल्प मृत्यु नहिं ताकी होइ। सौ सौ वर्ष जिये निज सोई ॥ उरिन होइ कछु रिन न रहाई। जब देवी की अस्तुति कहई। पुत्र पौत्र बाढ़ै परिवारा ॥ पढ़ु अस्तुति नित दूनौ बारा ॥ चंद सूर्ज औ जबलौं धरती। संत जनन की तब लग बढ़ती। कलयुग कल्मष जाय नसाई। अस्तुति पढ़ै सदा चितलाई। कोढ़ी पढ़ै कुष्ट छय जाई। दादु खाजु ना तन मैं रहई। जातो सुमिर होइ सो ज्ञानी अर्थ नाम होइ बड़ ज्ञानी। विद्यार्थी सो विद्या पावै। पुत्र आधिक को पुत्र मिलावै। जो जो मन मैं इच्छा लावै। सो इच्छा सम्पूरण पावै। दिन प्रति अस्तुति जो कोइ ध्यावै। कहि सुखदास परम पद पावै ॥ देवी की अस्तुति सम्पूर्ण शुभ मस्तु जेठ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ परिवा ग्राम, गुजलो दैवीदीन मुसद्दी लिख्यते संवत १९३७ राम राम राम राम राम राम राम।

Subject—पृ० १—८ तक-भवानी की महिमा का वर्णन किया गया है कि इस प्रकार शुंभ निशुंभ आदि को मारा। भवानी का स्मरण करने से पुत्र पौत्र धन बल आदि प्राप्त होता है, मनुष्य आनन्द से अपना जीवन व्यतीत करता है उसको किसी प्रकार का भय तीनो तापों का नहीं रहता है।

No. 412(a). Adhyātma Prakāsa by Sukhadeva Miśra. Substance—Country-made paper. Leaves—19. Size—9 × 7 inches. Lines per page—32. Extent—456 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1775 or A.D. 1718. Place of deposit—Paṇḍita Śiva Narayaṇaji Vājpai, Village Vajpai kā purwā, Post Office Sisaiyā, District Bahara ch (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ सच्चिदानन्दाय नमः ॥ कवित्त ॥ थावर जंगम जीव जेते जग भांतिन भांतिन भेष धरे हैं ॥ नामहि सत्य चिदानंद रूप सो आतम एक प्रकास करे है। १ बिन जानत सिंधु सो लागत जानेते गोपद तुल्य तरे है ॥ बंदत ताहि सदा सुषदेव जू ब्रह्म सदा सब ही ते परे है ॥ १ ॥ दोहा ॥ व्यास मथन करि वेद सब सूत्र निकारे सार। श्री गुरु शंकर देव जो कीन्हो बहु

विस्तार। तिन ग्रंथन को समुझि मत हिय धरि पर उपकार। भाषा कर सुषदेव यह रच्यो ग्रंथ अति चारु॥ जैसे रवि के तेज ते अंधकार मिट जाय। अध्यातम परकाश तें त्यों अज्ञान नसाइ॥ गुरु शिष्य को बाद अरु वेद वचन उपदेश। अध्यातम परकाश यह भाषा सरल सुवेष॥ अधिकारी जिज्ञासु अरु शिष्य कहावै सोइ। तप साबुन करि देह के पापनि डारौ धोइ॥

End—सांख्य॥ प्रकृति पुरुष अरु तनु को जाके होय विवेक। यहै मुक्ति सांख्यो कहै ज्ञान भये सब एक। आगम तंत्र पुरान पुनि पंच रात्र मत जानि। खैंचि आपने पंथ को जग में डारत आनि॥ बोरे साखन के मते परे जगत में आनि। कलपन लौं छूटै नहीं जन्म मृत्यु लपटानि॥ अपने मत यह वेद सिर सब त उत्तम जानि। ताही को विस्वास करि भूल और मत मान॥ सठ अरु धूरत नास्तिक वेद विरोधी और। तिन्हें न भूलि सुनाइये यह मत मत सिर मौर॥ जिनके उर हरि भक्त हैं अरु गुरु भक्ति निदान। तिनके आगे बोलिबो यह उपदेस निदान॥ वेद स्मृति स्रुति वचन को कह सुषदेव विलास। अध्यातम परकास ते अध्यातम परकास॥ सत्रह से बहत्रै कातिक मास बषानि। हरि बासर बुधवार को सुकुल पक्ष जिय जानि॥ इति श्री अध्यात्म प्रकाश सुषदेव मिश्र कृत पूर्ण॥

Subject—इस अध्यात्म प्रकाश में शिष्य गुरु संवाद है शिष्य ने मनुष्य शरीर पर व ईश्वर रूप पर व आत्मा आदि पर प्रश्न किये और गुरु ने उनके पृथक पृथक उत्तर दिये। इसमें सांख्य वैशेषिक पातंजलि आदि के उदाहरण दिये हैं और प्रकृत के रहस्य को उत्तम रीति से समझाया है।

No. 412(*b*). Adhyātma Prakāsa by Sukhadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—40. Size—9½ × 5 inches. Lines per page—8. Extent—360 Anushṭup Slokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1772 or A.D. 1715. Date of manuscript—Samvat 1845 or A.D. 1788. Place of deposit—Paṇḍita Chandrabhālaji, Village Parvatpur, Post Office Suratganj, District Bārābaṇki (Oudh).

Note—(I) आदि अंत No. 412. (a) पर लिखा गया है।

End—(II) इति श्री अध्यात्म प्रकाश सुषदेवेन कृतं वहि मुषांतं॥ दोहा॥ सकल धर्म कामादि तजि भज्जु निहचै करि मोहि॥ सब पापिन ते

मुक कर मोक्ष देहुंगो तोहि ॥ गोपाल वचनेोक्तं अर्जुने प्रति ॥ संवत १८५९ मितो भाद्रपद सुदो द्वादशो भृगुवासरे लिखितं भोलानाथ द्विवेदो स्वात्म पाठार्थम् ।

No. 412(c). Adhyatma Prakaśa by Sukhadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—30. Size—9×6 inches. Lines per page—24. Extent—540 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1755 or A.D. 1698. Date of manuscript—Samvat 1867 or A.D. 1810. Place of deposit—Thākura Rāmadaura, Village Mithaurā, District Baharāich, Keśaraganja (Oudh).

No. 412 (d). Adhyatma Prakāśa by Sukhadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size—8×5 inches. Lines per page—44. Extent—468 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1755 or A.D. 1698. Date of manuscript—Samvat 1921 or A.D 1864. Place of deposit—Mahanta Jawāhiradāsa, Village Narottamapur, Post Office Khairighāt, District Baharāich (Oudh).

No. 412(e). Adhyatma Prakāsa by Sukhadeva. Substance—New paper. Leaves—24. Size—9×6 inches. Lines per page—18. Extent—432 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1755 or A.D. 1698. Date of manuscript—Samvat 1946 or A.D. 1889. Place of deposit—Nāgarī Prachāriṇī Sabhā, Kāśī.

No. 412 (f). Piṇgala Chhaṇda Vichāra by Sukhadeva Miśra of Kampilā (Farrukhābād). Substance—Country-made paper. Leaves—29. Size—10×5 inches. Lines per page—11. Extent—750 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1907 or A.D. 1850. Place of deposit—Rāja Pustakālaya Bhiṇgā (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ गनपति गौरि गिरीस के पाइ नाइ निज सीस । मिश्र सुकवि महाराज को देत बनाइ असीस ॥ १ रजत खंभ पर मनहु कनक जंजीर विराजति । बिसद सरद घन मध्य मनहुं छन दुति छबि छाजति ॥ मानहुं कुमुद कदम्ब मिलित चंपक प्रसून तति । मनहुं मध्य घनसार लसत कुमकुम लकीर अति ॥ हिमगिरि पर मानहुं रवि किरनि इमि धन धरि धरवंस मह । सुखदेव सदासिव मुदित मन यों हिम्मत सिंह नरिंद कहं ॥ रतन जटित भू भाल को मनो बिभूषन वेष । जाहिर जम्बूदीप में सिरे अमेठी देस ॥ सपनेहु सुनिये नहिं जहां काहु को डर नाहि । सदा एक परलोक हो सिगरे देस डेराहि ॥ ४ ॥ रातौ दिन सुनियत जहां दुसमन ही को नास । सात्विक भाव ही में जहां अंसु अटोह उसास ५

End—अथे काक्षरात्पदारभ्य षड्रि शतिवर्ण पर्यंत पृथक पृथक नामान्युच्यते ॥ उक्ता अत्युक्ता बहुरि मध्या कहिये जानि । कहो प्रतिष्ठा बहुरि सुप्रतिष्ठा मन में आनि ॥ ४२ ॥ गायत्री उष्णिक बहुरि कहत अनुष्टुप जानि । बृहती पंगति कहि बहुरि त्रिष्टुप जिय में जानि ॥ जगती अति जगती कही बहुरि सक्करी जानि । अति सक्करी गनाइ पुनि अष्टनि अष्ट बखानि ॥ पुनि कहि धृति अति धृति बहुरि कृति पुनि विकृति बखानि ॥ बहुरि संस्कृत आनि पुनि अति कृति उत्कृति मानि ॥ ये क बरन प्रस्तार ते छब्बिस लौ ये नाम ॥ क्रमते कहत फनिन्द मुनि होत श्रवन बिश्राम ॥ वृत्तानि समाप्तम् ॥ शुभं भूयात् सावन मासे कृष्ण पक्षे ७ बुधवासरे सम्वत् १९०७ साके १७७२ इति श्री मन्महाराजाधिराज बाघेल गोत मनिराजा हिम्मत सिंह कारिते मिश्र सुखदेव कृते पिंगल छन्दो विचारे वर्ण वृत्तानि ॥

Subject—प्रार्थना, राजवंश वर्णन—पृ० १—२ । गुरु, लघु संज्ञा, प्रस्तार षटकल, अक्षर गन, गन विचार, उद्दिष्टादि । ३—५ । गाहा छन्द, विषमस्थान, बिगाहा, उगाहा, गाहिनी, सिंहनी, षंधा, वर्णभेद, दोहा भेद, व्याघ्र अविडाल, सुनक, उंदर । ६—९ तक । रसिका, रोला, उल्लाला, साम्लो संज्ञा भेद, काव्य दोष, छप्पय, डुटिका, अतिला, पादाकुलक, चौबोला, दंडा, पद्मावती, कुंडलिया, अमृतध्वनि, गगनांगन, दोवइ, ऊलना, संजा, सिखा, माला, चुलिआला, सोरठा, हाकलि, मधुभार, आभीर, देवकाला । ९—१३ । दीपक, सिंहावलोकन, प्लवंग, लीलावती, हरिगीत, त्रिभंगी, दुमिला, हीरका, जनहरन, मदनहरा, १४—१५ उव्वल, मोहनी, हरिपद, बरवै, सवैया, सुगति, काम, ताली, शशि, पंचाल, मृगेन्द्र, मंदरतोषा, कमल, तीर्णा, नगानिका, संमोहा, हारी, सेषा, तिलका, विमोहा, चतुर्वंसा, मंथान, संखनारी, मालती, समानका, सुवासक, करहंचो, सरप हयक, वसुमती, मदलेखा, विद्युन्माला, प्रमाणिका, मल्लिका, तुंगा—१६—१८ । कमल, मानवकोड़ा, मादंत, कमला, चित्र, तोमर, हलमुखी,

रूपमाली, मांधवंध, समुता, चंपकमाला, सुमुखाः, प्रमुताग़ति, बंधु, लुकाहि, दोधक, सालिनो, दमनक, सेनिका, मालती, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, स्वागता, रथोद्धता, भुजंग प्रयाग, लक्ष्मीधर, त्रोटक, मौक्तिक दाम, सारंग, मोदक, तरल नयन, सुंदरी, प्रमिताक्षरा, वंशस्थ, इन्द्रवंशा, माया, तारक—१९—२३। कंदु, पंकावली, वसंततिलका, चक्रपद, भ्रमरावली, सारंगिका, चामर, मनहंस, मालिनी, सरभ, नाराच, नील, चंचला, प्रमृत्यका, शिखरिनी, मंदाक्रांता, हरिणी, मंजरी, चंचरी, चन्द्रमाला, धवला, गीतिका, गीका, स्त्रग्धरा, नरेन्द्र, हंसी, मोहिनी, सुंदरी, चकोर, मत्तगयंद, दुर्मिल, किरीट, त्रिभंगी, सालूर—२४—२८। सौदाम, सुंदरी, पुष्पतारा, सौरभ, घनाक्षरी, रूपघना, शशी, वैदिक छंद—२९।

No. 412(*g*). Pingala Bhāshā (Vritti vichāra) by Sukhadeva Miśra of Kampilānagara. Substance—Country-made paper. Leaves—91. Size—8 × 4 inches. Lines per page—18. Extent—1,435 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1728 or A. D. 1671. Date of manuscript—Samvat 1915 or A. D. 1858. Place of deposit—Ṭhākura Jagadeva Simha, Village Gujauli, Post Office Bauri, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्रीरामानुजायनमः॥ अथ पिंगल भाषा लिख्यते॥ चौ० छंद॥ जय जय मोहन मदन मुरारी। कमल नयन केशव कंसारी॥ करुना कर केसो रिपु कृष्ण जय वसुधा धर बावन विष्णु॥ मनहरन छंद॥ विघन बिनासन है आछे आशु आसन है से ये पाक सासन है सुमति करन को। आपदा के हरन हैं संपदा के करन हैं सदा के धरन हैं सरन असरन को। कुंज कुल को है नव पल्लव जो है सरि सुषदेव सोहै धरे मदन वरन को॥ बुद्धि के विधायक सकल सुषदायक सुसेवो कविनायक विनायक चरन को॥ दोहा॥ मदन पाल कृपाल के कमल चरन चितलाइ। कियो सुकवि सुषदेव यह वृत्त विचार बनाइ॥ पिंगल नाम अर्गास्त कृत छंदो ग्रंथ अगाध। सार लियो तिन को कछु छमियो कवि अपराध॥

End—समुझि विचारि सु चारु मति दोहा अर्थ विशेषि भो। रघुवर दास अनंद जुत कवि पंडित जन तोष भो॥ होत मात करतव्य बात वश पिता मरन भो। विछि राम वन गमन वारुणी राज धरन भो सुवन केकई योग चतुर ब्रह्मा मोहि कीन्हा। नृपति तनय प्रभु बड़ापन नाहकै दीन्हा। बादि बड़ाई तेहि वंश तुम सब मिलि अब राज लय रघुवर दास ये कवित कहि राम चरन जुग हृदय धरि।

सवैया । आनंद कंद सुकोशल चंद अहै बलिहारी सुबाहु तुम्हारी । अगदे जेहि को जश दै अश्वेदन हु कहि नीति सुगाई । पार न पायो शारदे शेष गनेशहु आहि रहे सिर नाई । रघुबर दास सु आश यही कृपा करि के हमहु अपनाई ॥ इति श्रीरस्तु ॥

No. 412(*h*). Pingala Himmata Simha by Sukhadeva Miśra of Kampilā. Substance—Country-made paper. Leaves—44. Size—8 × 6 inches. Lines per page—32. Extent—792 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript.—Samvat 1920 or A. D. 1863. Place of deposit—Thākura Lāyaka Simha, Village Bhagawānpura, Post Office Biswāñ, District Sītāpura (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पिंगल हिम्मत सिंह को लिख्यते ॥ दोहा ॥ गणपति गौरि गिरीस के पाय नाय निज सीस ॥ मिश्र सुकवि महाराज कहं देत बनाय असीस ॥ छप्पै ॥ रजत पंभ पर मनहुं कनक जंजीर विराजति विसद सरद घन मध्य मनहु छन दुति छवि छाजति ॥ मानहु कुमुद कदंब मिलत चंपक प्रसून भति मनहु मध्य घनसार लसति कुंकुम लकीर अति ॥ हिम गिरि पर मानहुं मानहु रवि किरिनि इमि घन घरिय अरथंग महं सुकदेव सदासिव मुदित मन हिम्मत सिंह नरेस कहं ॥ दोहा ॥ रतन जटित भूपाल को मनो विभूषन वेस जाहिर जंबूदीप में पिरे अमेठी देस ॥ सपनेहु सुनियत जहां काहु को डर नाहिं । सदा एक परलोक हो सिगरे लोग डेराहिं ॥ रातौ दिन सुनियत जहां दुसमन ही को नास । सात्विक भावहि में जहां अंसुवा दोह उसास ॥

End—अथ गद्यस्योदाहरण ॥ जबर अरि जेर कर सेर समसेर समसेर बहादुर ॥ वैरि वर वानर विदारन सिंह सत्य ॥ हत्य अकृत्य बल पत्य समान महा ॥ वीराधि वीर समर धीर धरनि धुरंधर ॥ धराधीस धवल धाम धवल सुजस पुंज । विजित सुर धुनी धार धवलिम श्री महाराजाधिराज हिम्मत सिंह चिरंजीव ॥ अथै काक्षराद्यादारंभ्य षड्विंसति वर्ण पर्यंत पृथक पृथक नामन्युच्यते ॥ उक्ता अत्युक्ता बहुरि मध्या कहिये जानि । कहो प्रतिष्टा बहुरि सुप्रतिष्टा मन में आनि ॥ गायत्री उष्णिक बहुरि कहत अनुष्टुप जानि । वृहती पंगती कहि बहुरि त्रिष्टप जिय में आनि ॥ जगती अति जगती कहो बहुरि सक्करी जानि । अति सक्करी गनाइ पुनि अष्टति प्रष्टि बखानि ॥ धृत अति धृत कृत प्रकृत पुनि आकृति विकृति बखानि ॥ बहुरि संस्कृति जानि पुनि अभि कृति उतकृति मानि ॥ एक बरन प्रस्तार से छब्बिस लों ये नाम । क्रमते कहत फनिंद सुनि होत श्रवन विश्राम ॥

इति श्री मनमहाराजाधिराज हिम्मत सिंह कारते मिश्र सुषदेव कृते छंद विचारो वर्षे कृतानि निवृतानि संपूर्णम् सुभमस्तु ॥ श्री संवत १९२० शाके १७२४ कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे तिथौ द्वतीयायां मिदं पुस्तकं समाप्तम् लिष्यते गनेस पंडित पैदापुर स्थाने ॥

Subject—इस पुस्तक में पिंगल काव्य वर्णन है।

No. 412 (i). Pingala Bhāshā (Vritta vichāra) by Sukhadeva Miśra of Bigahāpura Kampilā. Substance—Country-made paper. Leaves—85. Size—12 × 6 inches. Lines per page—32. Extent—1275 Anushtup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1728 or A. D. 1671. Date of manuscript—Samvat 1939 or A. D. 1882. Place of deposit—Lālā Bhāgawatā Prasāda, Village Sadābāpur, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

No. 412 (j). Chhanda Vichāra by Sukhadeva Miśra of Kampilā (Farrukhābād). Substance—New paper. Leaves—50. Size—13 × 8 inches. Lines per page—22. Extent—620 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1943 or A. D. 1886. Place of deposit—Paṇdita Krishṇabihārī Miśra, Editor, *Mādhuri*, Lucknow.

Note—प्रथम पृष्ट खंडित है। शेष खंडित प्रति सहित पूर्ण विवरण सहित No. 412 F पर लिखा गया है।

No. 412 (k). Piṅgala (Himmata Simha) by Sukhadeva Mishra. Substance—Country-made paper. Leaves—33. Size—10 × 6 inches. L[illegible] per page—64. Extent—1,805 Anushtu Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1875 Samvat or A. D. 1818 Place of deposit—Siva Nārāyaṇa Vājpai, Village Vajpai kā purwā, Post Office Sisaiyā, District Bāharāich (Oudh).

No. 412 (l). Chhaṇdoniwāsa Sāra by Sukhadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—48. Size—13 × 6 inches,

Lines per page 10 Extent—600 Anushtup Ślokas. Appearance New. Character—Nāgarī Place of deposit.—Daughter of Paṇḍita Dwarikā Prasāda Trivédī, care of Devi Dīna Kuram, Numberdāra Village Lakshmaṇpura, Post Office Satarikha, District Bārābankī.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ मगन तीनि गुरु भूमि सुर सिद्धि करै ततकाल ॥ यगण आदि लघु नीर प्रभु सुख संपदा सुकाल ॥ १ ॥ भगन आदि गुरचन्द्र सुख पूजै मन की आस ॥ गोत सोरठा का विसव पूरन पूरण विलास ॥ २ ॥ भगन तीलहु शेसघन सुख संपति आनन्द ॥ कवित छंद दोहा करो फलो होइ सुख कंद ॥ ३ ॥ जगन मध्य गुरु होत है ताकर देव प्रकास होत सून्य फल देत नहि निःफल मन को आस ॥ ४ ॥ तगन अंत लघु जानिए पवन देवता मानि ॥ दुरि बहावै सर्वदा करै सबै हित हानि ॥ ५ ॥ रगन मध्य लहु देखि सो पावक इष्ट विचारु ॥ मृत्यु करै कवि तै कहत मति करु कवित सिगारु ॥ ६ ॥ सगन अन्त गुरु कहत है रवि ताको बलवान ॥ रोग बढ़ै आनंद घटै पंडित सुनहु सुजान ॥ ७ ॥

End—दोहा ॥ होइ हानि होते निपटि छाहे सुख को मूल ॥ बरनि शुद्ध कविराज यह कहो अगत अनुकूल ॥ ८ ॥ रस वर्णन—प्रथम सिंगार सुहास रस करुना बहुरि सुजान ॥ रौद्र वीर भुसयान कहि औ बिभत्स सुपचान ॥ ९ ॥ अद्भुत रस कविराज कहि नवरस कहियत और ॥ नवरस नाम प्रसिद्ध ये बरनत कवि सिरमौर ॥ १० ॥ परभाव अनुभाव के अरु विभाव के चित्त ॥ जो सुख उपजत आनि कै सो कहियत रस मित्त ॥ ११ ॥ कवित्त—कोटि उपाय के छिपाइ करै कोउ किन भीतर को उपराहि आनि उफनात है ॥ बोलत चलत चितन मे लखन पै ये नयन को नजीर बनाइ करामात है ॥ सुधरै न कूर औ कूरै न सुधर भावै ताको जैसो समुझि तैसो संगति सुहात है ॥ तैन तैन गुन के भवा के मनुषन के साहब को सगरो समुझि बातो जात है ॥ १२ ॥ इति श्री कवि कुलालंकार चूड़ामनि श्री सुखदेव विरचितायां छंदो निवास सार समाप्तम् शुभमस्तु सम्वत् १९२७ शाके १७८५ अषाढ़ शुक्ल १ बुध वासरे लिखित द्वारिका प्रसाद त्रिवेदीन ॥

Subject—(१) पृ० १—६ तक—गण भेद तथा गणों के फल । दग्धाक्षर पाठ (ह झ थ न घ र प भ) । दग्धाक्षर फल । गुरु लघु विचार, लघु के नाम । पादाकुल छन्द । रसिक छन्द, पादाकुलक, गाथा छन्द, दोहा लक्षण, मकर छन्द, रोला छन्द, रसिक छन्द, चौपैया छन्द, संधान छन्द, सुलक्षण, मदनहर

छन्द, घनानन्द, पादाकुलक, पलिल्लह, काव्य लक्षण, कुंडलिया, दुरती लक्षण, कोर छन्द के लक्षण।

(२) पृ० ७—२८ तक—उल्लाला, मोहन छन्द, राइ से विगत नंगा। चैाबोला, झूलना, शिष्यमा, चुलि माल, पद्मावती। दोवाइ छन्दा पंजा छन्द। प्रज्वलिय, हाकलि छन्द, भार छन्द, आभोर छन्द, कुकुभ छन्द, सरसी छन्द, दंडक छन्द, दीपक छन्द, सिंहावलोकन छन्द, दिग्पटा, प्लवंगम, लोलावती, हरिगोतिका, त्रिभंगी, दुर्मिला, महोर, अलहरन, मदनहर मरहटा, दंडक, अमृतध्वनि, श्रीछंद, व्याकुला, मही छंद, मधु छंद, सार, प्रतिष्ठा, हत छन्द, हरित छन्द, हंसी छन्द, जमक छन्द, गायत्री, शिवराज, डिल्ला, मालती, तनमध्या, चैारासी, शशिवदना, वसुमति, विज्जुहा, सामानिक, सुवस छन्द, करहंची छन्द, सिश्रुरूप, मदनलेखा, मधुमति, विद्युन्माला, प्रमानिका, मालिका छन्द, तुंगा छन्द, पंकमाला, कुमार ललित, चित्रपद, महालक्ष्मी, सारंगिका, पाइता छन्द, कमल छन्द, बिंब छन्द, तोटक छन्द, रूपमाला, संयुता छन्द, चंपकमाला, सारस्वती, सुद्याम छन्द, अमृतगति, नीलस्वरूप, सुमुपो छन्द, दोधक छन्द, मदनक छन्द, सेनिका छन्द, मालती छन्द, इन्द्रवज्रा छन्द, उपेन्द्र वज्रा, भुजंगप्रयात छंद, लक्ष्मीधर, तोमर छन्द, मारण छंद मुक्तिदाम, मोटक छंद तरलन मान, सुंदरी छन्द, द्रुतविलंबित छन्दों के लक्षण।

(३) पृ० २९—४२ तक—माया छन्द, तारक छन्द, कदंक छन्द, पंकावली बसंततिलका, चक्र छन्द, भ्रमराक्ष, रंगिका, चामर छन्द, त्रिभिपाल छन्द, मनहरन छन्द, मलिन छन्द, सार छन्द, नाराच छन्द, नील छन्द, चंचला छन्द, पृथ्वी छन्द, मालाधर, मंजीर छन्द, कोड़ा छन्द, चंचरीक छन्द, शार्दुल विक्रीड़ित, चन्द्रमाला, धवल छन्द, गीतका, दंडिका, स्रग्धरा, मंदिरा, छरी, पवित्राक्ष, गजेन्द्र गति, दुमिला छंद किरीटी, सवैया, त्रिभंगी, शाल्हूर, सुंदर छन्द, सुख छन्द, छप्पय, दोहा, मेदना, गनांगन देवता फल, नखमाव दग्धाक्षर फला, विचार, रस वर्णन, ग्रंथ समाप्त।

No. 412 (*m*). Fāzila Alī Prakāśa by Sukhadeva Miśra of Kampilā. Substance—Country-made paper. Leaves—62. Size—10 × 5 inches. Lines per page—32. Extent—1,116 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1733 or A.D. 1676. Date of manuscript—Samvat 1919 or A.D. 1862. Place of deposit—Paṇḍita Shivadāyalaji Village Jaunāpura, Post Office Biswān, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—ग्रथ फाज़िल ग्रलो प्रकास ग्रंथ लिख्यते ॥ दोहा ॥ कमल नयन करुना करना कमला पति करतार। करो कृपा कविराज को कामद कान्ह कुमार ॥ ग्रथ छेपकानुप्रास ताको लछन ॥ तुकसों तुक जोई मिलै चरन चरन सुर वृत्ति। ग्रक्षर के स्वर होंहि सम छेका कहति सुकति ॥ यथा ॥ जय जय गननायक सिद्धि सहायक बुद्धि विधायक भै हरनं जय ग्रघ दाहन विघन बिगारन मूषक वाहन जन सरनं ॥ जय जय गुन ग्रागर सब सुष सागर ग्रवनि उजागर दुवन दमों। जै जै जगवंदन कलिमल कंदन गिरिजा नंदन नमः नमो ॥ ग्रथ छंद त्रिभंगो ताको लछन ॥ पहिले कल दस पर पुनि वसु वसु पर बहुरि सुरसु पर बिरति जहां। फनि भाषित मानौ बुधिवल जानौ गुर यक ग्रानौ ग्रंत तहां ॥ कहुं जगनन ग्रावै कवि मन भावै श्रवन सुहावै गुनहिं गहै। तिरभंगी नामा छंद सुदामा ग्रति ग्रभिरामा किरति लहै ॥

End—ग्रथ तपतवद्ध कविता ॥ दरव ग्रति ग्रातंक बाढ़ो चढो चढ़ो फाजिल दुरद दरदु भारो पोठि कूरम भयो मुष ग्रति जरद ॥ दरज पाई भार धरती भयो भूधर गरद गहे गड़ सिर गिरे लै मिरे हरवै वरद ॥ ग्रथ प्रेम हेलिका ॥ नाम एक सब के मन भावै ग्रांक तोनि जामें बनि ग्रावै ॥ उलटि पढ़ेते पसु ह्वै जावै। जो जानै सो पंडित राइ। ग्रथ दव सरसो छंद ॥ तोको चलो तुहो चलि ग्रायो तोहि देषि रह्यो लुकाइ ॥ तू चलि जाहि तोहिलै ग्रावै मोवर साधु दिखाइ ॥ ग्रथ बारि ॥ सब काहू के प्रगट है घर घर कायर सिद्धि। द्वै ग्रक्षर द्वै ग्ररथ हैं एक नाम परसिद्धि ॥ ग्रासोर्वाद ॥ जब लगिवेद पुरान पुरुष पूरन नारायन। जब लगि भूधर भूमि भानु ससि घन तारायन ॥ जब लगि गौरि गनेस सेष सुरपति गुर सुनिये। जब लगि गंग समुद्र रुद्र व्यासादिक गुनिये ॥ कवि-राज राज फाजिल ग्रली महाबली कीरति लहै। संपति समाज दंपति सहित चिरंजीव जब लगि रहै ॥ दोहा ॥ दसमो रवि पूरन भयो फ़ाजिल ग्रली प्रकास। संवत सत्रह सै ग्रहो तेतिस कातिक मास ॥ इति नवाब इनाइत खांन ग्रात्मज महाबली मिरजा फाजिल ग्रली विरचिते फाजिल ग्रली प्रकासे संवत १९१९ साके १७८४ फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे तिथौ षष्टमायाम सोमवासरे समाप्तं लिषतं गनेस पंडित ॥

No. 412(*n*). Fāzila Ali prakāsa by Sukhadeva Miśra. Substance—Country-made paper. Leaves—58. Size —8½ × 4½ inches. Lines per page—10. Extent—1,160 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1733 or A.D. 1676. Place of deposit —Rāja Pustakālaya Bhiṅgā Rāja Baharāich).

Beginning—श्रीगणेशायनमः॥ फाजिल अली लिख्यते। प्रथम वृत्यानुप्रास ताके लक्षन॥ दोहा॥ पुरवै तुक इकै वरन चरन चरन जह आइ। कहै वृत्य अनुप्रास सो पंडित कवि समुदाय॥१॥ संशकतोपि आवृत्तिं वर्णनं संपूर्णं वृत्यानुप्रास लोकाद्वयः॥ दोहा॥ कमल नयन करुणा करन कमलापति करतार। करहु कृपा कविराज कहं कामद कान्ह कुमार॥२॥ छंद त्रिभंगी छेकानुप्रास इन दुहु का लक्षन॥ पहिले कल दस पर पुनि वसु वसु पन बहुरि सुरस पर विरति जहां फनि भाषत माना बुधजन जाना गुरयक अाना अंत तहां॥ कहुं जगनन आवै रुचि मनभावै अवन सुहावै दुनहि गहै। तिरभंगी नामा छंद सुधामा अति अभिरामा कीर्ति लहै॥३॥

End—सबद एक सबके मन भावै। अंकतोनि तामें गनिआवै॥ उलटि पढ़ै ताे पसु ह्वै जाइ। जो जानै सो पंडित राइ॥ दरवयति आतंक बाढ़ी चढ़ो फाजिल वृन्द। दरदु मोरो पीठी कूरम न ऐ मुख अति जरद॥ दरज आई भार-धरतो भये भूधर गरद। दर गहे गढ़ सिर गिरे अरि छै भरे हर वदर॥ ताे का चलो तुही चलि आयो रोहि कि रहो लजाइ। अवतू जाहि तोहि लै आवो मो घर सामु रिसाई॥ दोहा॥ पानो सब का प्रगट है घर घर कारज सिद्ध। द्वै अक्षर है अर्थ है एकै नाम प्रसिद्ध॥ इति श्री फाजिल अली ग्रंथ समाप्तम् संपूर्ण मस्तु॥

Subject—अनुप्रास सभेद, राजकुल वर्णन, कवि कुल वर्णन। पृ० १—३ तक, जयशब्द, पज्झटिका छन्द, छप्पय, मनहरण व्यतिरेकालंकार, रूपक, उल्लेख, यश व प्रताप वर्णन, यमक गण विचार गणदेवता, फल, दुर्गुण विधान, गोपाल छंद, वृत्ति विचार, दग्धाक्षर, वर्णविचार, गुरु लघुविचार। पृ० ४—८ रसनिरूपण भाव, संस्कृतेपि, रसतरंगणी नवरस कथन, शृंगार रस, संयोग सिंगार, माधव छंद, उत्प्रेक्षा, वियोग, अत्युक्ति, आक्षेप। पृ० ९—११ तक, नायका वर्णन, स्वकीया, जाति, नीलकालंकार, गोपाल छंद, दोहा, सरसी छंद, उत्प्रेक्षा, लुप्तोपमा, अम-शैशव मुग्धा, नव यैावन मुग्धा, सरसी छंद, अज्ञात यैावना, धर्मलुप्तोपमा, स्वभावोक्ति, नवोढ़ा मुग्धा, विश्रब्ध नवोढ़ा, यमक, दृष्टान्तालंकार विश्रब्धनवोढ़ा, मध्यमा, संदेहानुगत दृष्टान्तालंकार, प्रगल्भा, उत्प्रेक्षा, मध्याधीरा, वक्रोक्ति, संस्कृत्येपि, मध्याधीरा, प्रौढ़ाधीरा, अपन्हुति, प्रौढ़ाधीरा, यमक, प्रौढ़ाधीरा धीरा, ज्येष्ठा कनिष्टा, संस्कृतेपि, परकीया, अनूढ़ा, पादाकुलक, गुप्ता, व्याजोक्ति विदग्धा, ध्वनि, लक्षिता, अनुशयना, संकेत संदेहा, व्याजोक्ति सामान्या, अवंमोग दुःखिता, वक्रोक्ति, व्यतिरेक, रूपगर्विता, मान। पृ० १२—२८ तक। अष्टनायका—खंडिता अपन्हुति, प्रोषितपतिका, उत्प्रेक्षा, अत्युक्ति, शब्द रूपालंकार, अभिसारिका, भ्रान्तिमान, धर्म लुप्तोपमा, विप्रलब्धा, उक्ता, कलहंतरिता, स्वाधीनपतिका, वासकशय्या, प्रोषितपतिका, उत्तमनायिका, मध्यमा,

अर्द्धसमवृत्ति, अधमा, नायिका की जातियां, पद्मिनी, चित्रनी, संखनी, हस्तनी, सखी, शिक्षा, उलहना, परिहास, शृंगार व आभूषण, श्लेष, दूती, नायिका की दूती, विरहवेदन, विहार। पृ० २९—३७ तक, नायक लक्षण, पति, अनुकूल, दक्षिण, दृष्टान्त, शठ, धृष्ट, उपपति, वैशिक, उत्तम, मध्यम नायक, अनुमान अधम, प्रोषित पति, हस्कालंकार, प्रोषित वैशिक, मानी, चतुर, अनभिज्ञ, पीठ मर्द, वचन व क्रिया चतुर, विट, चेटक, विदूषक, भाव, थायी भाव, व्यभिचारी, अंतक, अनुभाव, हाव, लीला, ललित, विलास, विच्छित हाव, विसम, व्यतिरेक, गर्वित उत्प्रेक्षा, विहित, किलकिंचित, विब्बोक कुट्टमित, प्रत्यक्षदर्शन, स्वप्न, चित्र, अमला छंद। पृ० ३८—४९ विप्रलंभ, समीप, अभिलाषा, गुनकथन, सुमति, उद्वेग, प्रलाप, चिन्ता, जड़ता, व्याधि, उन्माद, पृ० ५०—५२ तक। रसनिरूपण, करुणा, रौद्र, वीर, दया, दान, युद्ध, भयानक, वीभत्स, अद्भुत, सम, मध्याक्षरी छप्पय—पृ० ५३—५६ तक इति।

No. 412 (*o*). Fāzila Prakaśa by Sukhadeva Miśra of Kampilā. Substance—Country-made paper. Leaves—63. Lines per page—32. Extent—1,008 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1753 or A.D. 1676. Place of deposit—Ṭhākura Śiva Prasāda Simha, Katelā, Post Office Fakharpur, District Baharāich (Oudh).

No. 412 (*p*). Jnāna Prakaśa by Sukhadeva. Substance—Country-made paper-Leaves—11. Size—7½ × 5½ inches. Lines per page—8. Extent—52 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1893 or A.D. 1836. Place of deposit—Rāmādhina Murāw, Village Badansarāya, District Bārābankī (Oudh).

Beginning—अथ ज्ञान प्रकाश लिख्यते ॥ दोहा ॥ दीन वचन ह्वै शिष्यने नमस्कार कियो आइ। बांध्यो मन संसार मैं छूटै कौन उपाइ ॥ १ ॥ द्वितीय प्रश्न पुनि कहत हैं नीके कहिये मोहि ॥ पंच कोश अपुतोनि की उत्पति कैसे होइ ॥ २ ॥ गुरु वचन ॥ सिष उत्तर सुनि गुरु कह्यो निश्चय करु उर माहि ॥ छूटै एक विचार ते दूजो साधन नाहि ॥ ३ ॥ ऐके ते जुदा भयो द्रष्टा सत्ता पाइ। पंच कोश करि रचित है कहौं तोहि समुझाइ ॥ ४ ॥ शिष्य ॥ ईश्वर तुम जुदा कह्यो चेतन सत्ता पाइ ॥ भिन्न भिन्न करि मोहि इन कैा कहो बुझाइ ॥ ५ ॥

End—हलन चलन भोजन किया ज्ञानिहु के घर होइ ॥ अहंकार करि रहित है ताते बंधै न कोउ ॥ ४६ ॥ अरिल्ल ॥ आतम उद्यत रूप सर्वगत जानु रे ॥ वेकल्प रहित साक्षप सुद्ध परमानु रे ॥ परारब्ध के योग दुख सुख भासहो ॥ आतम सुद्ध सरुप सुता परगासहीं ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ कहत सुनत सबही थके उभयो एक निरधार । ब्रह्म अग्नि परगट भई जक मयो जरि छार ॥ ४८ ॥ कोन्हीं ग्रंथ विचार यह निश्चै ज्ञान प्रगास ॥ श्रवन सुनत आनंद युत मिटै द्वैत जग त्रास ॥ ४९ ॥ गुरु सिष के संवाद यह जो सुनै चित लाइ समुझै अपने रूप को जक भर्म मिटि जाइ ॥

Subject—(१) पृ० १—४ तक—संसार में बंधे हुए मनके छुटकारे का प्रश्न पूछना (शिष्य द्वारा)—गुरु का ज्ञान द्वारा संसार से छुटकारा पाने का वर्णन, आनन्द कोश तथा कारण और सूक्ष्म शरीर का वर्णन । स्थूल शरीर का वर्णन, जीव का वर्णन, जीव को ब्रह्म का आभास कथन और ब्रह्म का निर्विकल्प ।

(२) पृ० ५—१० तक—तत्व तथा त्वं पदों के वाच्य तथा लक्ष्य अर्थ । देह और प्राण का पृथकत्व । माया का मिथ्या होने का वर्णन । ईश्वर को परिभाषा । अविद्यांधकार विनाश होने का समय ।

(३) पृ० ११—११ तक—ज्ञानी को सभी क्रियाओं का निरभिमानता से होने का वर्णन । निरभिमानी का क्रियाओं में न बंधने का वर्णन, दुख सुख भासने का कारण, अपने रूप के पहचानने से संसार के भ्रमों का विनाश ।

No. 412 (*q*). Jnāna Prakāśa by Sukhadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—27. Size—$6\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—34. Extent—459 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1755 or A.D. 1698. Date of manuscript—Samvat 1904 or A.D. 1847. Place of deposit—Śrī Bābā Rāmacharaṇadāsaji, Chandrabhawana Payāgapura, Post Office Payagapur, District Baharāich (Oudh).

Note—शेष सब No. 412 (*p*) पर लिखा गया है ।

End—नीति अनीति विवेक विचारो । राखो नीति अनीति विसारो ॥ उलटि आपु में सहज समावे । निज स्वरूप आपन तब पावे ॥ सांख्य ज्ञान मत दूजे सुखो । वर्णो करे ज्ञान गुरमुखो । पुनि वेदांतसार मत कहै जामे कहन सुनन नहिं रहै । पूरनब्रह्म निरंतर अहै कैसा नोति अनीति कहै ॥ ज्ञान प्रकाश कथन

सा कहे । सब में सोहं प्रकासो लहै ॥ वेदांतो पुनि प्रगट बषानै बल्लो साधुन ह्व सो जानै ॥ षटशास्त्र को मिश्र विचारा । तत्व विचार पुनि सब मत सारा ॥ जैसे एके गावन हारा । राग रागिनी बहु विस्तारा ॥ जोई जोई जाको भावै ॥ रीभि रीभि पुनि सोई गावै ॥ विधि निषेध कबनै सो कहैं । जैये के गावन हारा लहै ॥ बल्लो सर्व मत पूरन एका । अपने भावने भये अनेका । सबु बल्ली सुरसरी है । निर्मल अति उजियारी रहै ॥ तन में तन सो नियरे रहै । ज्यों जल में शशि तारे रहैं ॥ षट दरसन ब्राह्मन जोगी जंगम सेवरा संन्यासी दरवेस । बिना प्रेम पहुँचे नहीं दुर्लभ हरि को देस । चारि मनुज नौ ज़नज हैं ग्यारह पसु दस पक्ष । बोस महेह तीस अहि पह चौरासी लक्ष ॥ लिषितं गंगासिंह क्षत्रिय सं० १९०२ चैत्रमासे असित पक्षे षष्टीयां सनिवासरे ।

No. 412 (r). Maradāna Rasārṇava by Sukhadeva Miśra of Kampila. Substance—Country-made paper. Leaves—42. Size—10 × 6 inches. Lines per page—16. Extent—1,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1736 or A.D. 1679. Date of manuscript—Samvat 1834 or A. D. 1777. Place of deposit—Thākura Śiva Prasāda Simha, Village Katailā, Post Office Fakharapura, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ कानन टूटै विघन के जालन के यह ग्यान । कज आनन को जाति मिटि गज आनन के ध्यान ॥ बैस बंस अवतंस सम निर्गुन नन के दरियाउ । कनक सिंह जाहिर भयो । जग में रैया राउ । दिलोपति के काज जिन कोटिक करी फतूह । जस संगात जग पर बजो जाके जस के जूह ॥ जाहिर हिम्मत हद भयो सबहीं डुन को भेद । सुमूति जानि जग में करी प्रगट पुन्य को पेड़ । पृथ्वी पालन के भयो ताके पृथ्वीराज भोज देन को भोज सो बड़ो गरीब नेवाज ॥ महा वादुता के भयो ज्यों क्षीरधि ते चंद । भूमि पुरंदर सो लगी लपत पुरंदर नंद ॥ सेत करो पुहमो सकल । जाके जस को छोह । मानो छोर के सिंधु ते काढ़ो बहुरि बराह ॥ मरदानो ताके भयो मूदन रैया राउ जग जाको पवित्र न वचन धंमद कैसो पाउे ॥ मूदन कवि सुखदेव सो भाष्यो निपट सनेहु । कह्यो नाइका नाइकन बरनि ग्रंथ करि देउ । मूदाने के हुकुम ते मिश्र सुकवि सुखदेव कहत लक्ष लक्षन सहित न्यारे न्यारे भेव ॥

End—ऐसे नवह रसन के भेद कहे हम जानि । रस ग्रंथन को रीति यहि सबै आनि है जानि ॥ यह मर्दान रसार्नो पूरो कोन्हों ग्रंथ । याके माने मानि है रस ग्रंथन को पंथ ॥ इति श्री मिश्र सुखदेव कृतो रसार्णव संपूर्ण समाप्त मस्तु

मिश्र शिवदास दासेन श्री श्री श्री चौधरी देव सिंहस्य पठनार्थं मिती भादिवा कृष्ण पक्षे तिथौ पंचम्यां शनौ संवत १८३४ परगना गोलालपुर तिनके मध्य सुठाम। मिश्र सुकवि शिवदास तहं बसे लखीपुर ग्राम ॥ तिनपै करि कै बहु कृपा देवसिंह कह्यो इमै लिखिदेव यह लवै रसनि को भेव ॥ जौलों देस गनेश हैं ईस दिनेस छपेस देवसिंह दलसिंह सुत करै राज्य सब देस ॥ श्री दुर्गा देव्यैनमः श्री रामानुजायनमः चिरंजीव तब लौं रहै जबलों रवि रजनीस जाको यह पोथी लिखी ताको यहै असीस ॥ श्रीपूरब खैराबाद को परगना बिसवां नाम तामे बसै सु चौधरी देवसिंह सरनाम ॥ यह पुस्तक संवत १७३६ मैं मर्दानसिंह की भाज्ञा से रची गई।

Subject—पृ॰ नं॰ १—४२ तक—नायिका नायक भेद आदि कवित्त सवैया आदि छन्दों में वर्णन किये गए हैं।

No. 412(*s*). Vrittivichāra by Sukhadeva Misra of Kampilā. Substance—Country-made paper. Leaves—176. Size—9 × 5 inches. Lines per page—8. Extent—1,056 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1626 or A. D. 1569. Date of manuscript—Samvat 1851 or A. D. 1794. Place of deposit—Paṇḍita Rāmadulārē, Post Office Deva, Village Deva, District Bārābaṇki (Oudh).

Note—(1) आदि अंत No. 412 (*g*) पर लिखा गया है।

Subject—(१) पृ॰ १—४ तक—वंदनाएं—कृष्ण, बलेदा की, ग्रंथ का आधार, छन्द की परिभाषा।

(२) पृ॰ ४—१४ तक—कविवंश वर्णन। आश्रयदाता का परिचय तथा ग्रंथ निर्माणकाल।

(३) पृ॰ १५—२८ तक—दग्धाक्षर विचार, प्रतिवर्ण फल, पिंगल मतानुसार गुरु विचार, उदाहरण, टीका ३ ॥ गुरु का उदाहरण गुरु के नाम, लघुविचार, लघु के नाम, लघु के उदाहरण, सूचनिका प्रत्यय लक्षण, प्रस्तार लक्षण, पिंगल मत वर्ण प्रस्तार, अगस्त्य मत, प्रस्तार के तीन भेद, थान विपरीत, संख्या विपरीत, उभय विपरीत, प्रस्तार भेद ज्ञान, टीका, वर्ण सूची लक्षण, वर्णसूची कर्त्तव्यता, पाताल लक्षण, थान विपरीत, उदाहरण, संख्या विपरीत, उदाहरण, उभय विपरीत, मात्रा और सिंहन का प्रयोजन।

(४) पृ॰ २९—३२ तक—मर्कटी, वर्ण मर्कटी, पिंगल मत वर्ण मर्कटी, वर्ण मर्कटी का चक्र।

(५) पृ० ३२—४० तक—उद्दिष्ट लक्षण, अगस्त्य मत उद्दिष्ट, स्थान विपरीत को उद्दिष्ट, उदाहरण, वर्ण नष्ट, संख्या विपरीत उभय विपरीत, वर्ण मेरु।

(६) पृ० ४१—५० तक—लुप्त।

(७) पृ० ५१—५८ तक—समलक्षण, उदाहरण, अर्द्ध समलक्षण, उदाहरण, विषमवृत्त, उदाहरण, दंडक का लक्षण, उकादिको सूचिका, वर्ण प्रस्तको सूचनिका।

(८) पृ० ५९—८० तक—समवृत्त श्री छंद, उकी श्री छन्द, मही छन्द, मधु छन्द, ससी, रमन, पंचाल, मृगेन्द्र, मंदर, प्रतिष्ठा, धारी, नगानिका, पंचाक्षर प्रस्तार, संमोहा छन्द, कोर छन्द, हस्ति, हंसी, जमक छन्द, गायत्री षडाक्षर प्रस्तार, सुपारोगा छन्द, डिल्ल, ससिवदना छंद, वसुमति, विज्जोहा, मंथाना, सताक्षर प्रस्तार, उष्णिक छंद, सुवास, करहंच, सोरष, रूपका, मदलेखा, मधुभनी, अनुष्टप, अष्टाक्षर प्रस्तार प्रमाणिका, कमल, कुमार ललिता, चित्रपदा महोरी, वृहती, सारंगिका, पाइता, कमला, चित्रा, तोमर, रूपामाली, दशाक्षर प्रस्तार संजुता, चंपकमाला, सारवती, सुषमा, अनुगत, एकादशाक्षर प्रस्तार जगती नील सरूपा, सुमुखी दोधक, मदनक, सेनिका, मालिनी, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, वामछन्द के, चतुर्दश जाति का उद्दिष्ट ॥ नष्ट

(९) पृ० ८१—९२ तक—द्वादशाक्षर प्रस्तार, भुजंगप्रयात, लक्ष्मीधर छन्द, सारंग, मौक्तिक, गंगाधर, मोदक, तरलनयन, सुमुखी सुन्दरी, प्रमिताक्षरा, तारक, सुखदायक, कंदुक छंद, चारु छन्द, पंचचामर।

(१०) पृ० ९३—९७ तक लुप्त।

(११) पृ० ९८—११६ तक—मालिनी, सरभ छन्द, सारंगी छंद, भ्रमरावली, नराच, नील, चंचला, पृथ्वी छन्द, मालाधर, धृत, कीड़ा, चर्चरी, चन्द्रमाला, गीतिका, कृतिवृत्ति, दंडिका छन्द, स्रग्धरा, आकृत्ति, मदिरा, सवैया भेद, मोदक, विकृत, सुमुखी, वाम छन्द सवैया भेद, माधवी, गंगाधर, किरीटी, सुंदर छन्द, उत्कृत्ति।

(१२) पृ० ११७—१२१ तक—दंडक छंद, सुधाधर, महीधर, वसुधाधर, नीलचक्र, मनहरण, जलदहन।

(१३) पृ० १२२—१३६—गद्य विचार वर्णन मात्रा, प्रस्तार, भेद, स्थान विपरीत, संख्या विपरीत, उभय विपरीत, पंचकल टगन के नाम, ठ, ड, ढ, गण के नाम, मध्य गुरु के नाम, सर्व लघु चतुःकला के नाम, आदि लघु पंचकला के, आदि लघु त्रिकल के नाम, आदि गुरु त्रिकल, मात्रा सूची, कलापताल, कला

पताल का चक्र, अथ चारों प्रकार के उद्दिष्ट, प्रथमक्रम प्रस्तार, संख्या विपरीत प्रस्तार, उभय से विपरीत चारों कला प्रस्तार, स्थान विपरीत, मात्रा मेरु, खंड मेरु, मेरुचक्र, मर्कटी, मर्कटी चक्र, मात्रा पताका, मात्रा छंदों की अनुक्रमणिका।

(१४) पृ० १३७—१७८ तक। गाथा, दोहा, नंद, रोला, रसिका, चौपैया, मोथना, सुमना, सुलक्षो, पादाकुलक, अरिल्ल, काव्य कुंडली, उल्लाला, छप्पय, छप्पय दूषण, चौबोला, मनमोहन, सुगती, मृदु गति, शोभन, वसुमती, गोपाल, लीला, हरिप्रिया, अनुकूल, सुमाला, चुलियाला, परडवोन, साल, सोरठा, हाकिल, मधु भार, आहीर, कुंभ, सरसी, दंडकला, दीपक, जोतिधरा, निर्मला, सिंहावलोकन, पुलंगम, लीलावती, हरिगीता, त्रिभंगी, दुमिला, हरिसुजन, हरनाम, दोहरा, मरहट्टा, दंडिका, मागधी, ग्रंथ समाप्ति।

No. 412(*t*). Vritti Vichār by Sukhadeva Miśra of Kampilā (Farrukhābād). Substance—Country-made paper. Leaves—84. Size—8 × 6 inches. Lines per page—20. Extent—945 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1728 or A. D. 1671. Date of manuscript—Samvat 1933 or A. D. 1879. Place of deposit—Paṇḍita Krishṇa Bihārījī Miśra, Editor, Mādhurī, Lucknow.

No. 413. Vaidyaka Sāra by Sukhalāla of Gauṇḍāpur (Goṇḍā). Substance—Country-made paper. Leaves—92. Size—9 × 7 inches. Lines per page—16. Extent—2,200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1892 or A. D. 1835. Date of manuscript—Samvat 1892 or A. D. 1835. Place of deposit—Rājā Pustakālaya, Bhingā (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ श्री सरस्वत्यै नमः॥ दोहा॥ गनपति गिरा सु गुरु गवरि गिरिपति गोविंद गंग। गाइ गाइ गुन गन गनत गति मति होत अभंग॥ १॥ अवधपुरी सरजू नदी तीन भुवन विख्यात। गुरु वसिष्ट दसरथ नृपति सुमिरत सुख सरसात॥ २॥ अवधोत्तर दिसि में लसै गउडापुर अभिराम। बरन चारि चतुराश्रमी बसत जहां सुभ ठाम॥ ३॥ तापुर बंस बिसेन में भूपति भये उदार। सूर सुपूत सुसाहसी भक्त दीन दातार॥ ४॥ तिहि कुल प्रगट प्रसिद्ध भव श्री गुमान नरनाह। प्रजा अनंदित बसति है जाके जस की छांह॥ ५॥

End—सगुन सुभूप गुमान के बानी बुद्धि विवेक। लघुमति कवि सुखलाल की कहा कहीं मुख एक॥ संवत लोचन रंध्र बसु ससि मधुमास विचार। कृष्ण चतुर्दसि सौम्य दिन पूरन वैदक सार॥ श्लोक—तैलं रक्ष जलं रक्षे रक्षेत् मल बंधनात्। मूर्ख हस्ते न दातव्यं येवं वदति पुस्तकम्॥

इति श्रीमन महाराजाधिराज श्री महाराज गुमान सिंह जी बहादुर आज्ञा वैदक सार ज्योतिविद सुखलाल विरचिते गद्य मंजरी ग्रंथेनाम सुभमस्तु॥

Subject—मंगलाचरण—पृ० १। नाड़ी परीक्षा—पृ० २ मुख परीक्षा—पृ० ३। नेत्र परीक्षा—पृ० ४। मूत्र परीक्षा पृ० ५। वात् पित्त-कफ परीक्षा—पृ० ६। पित्त कफ लक्षणादि, वायु समांग, वैद्य लक्षण, साध्यासाध्य—पृ० ७। ज्वर भेद चिकित्सादि पृ० ८, सन्निपात पृ० ९—२२। जल भेद चिकित्सा, अतिसार पृ० २२। संग्रहणी—पृ० २३—२५। बवासीर—२६, भगंदर, २७। विशूचिका—२९—३०। अजीर्ण, विशूचिका ३१, कृमि, ३२। पाण्डुरोग ३३, रक्तपित्त लक्षण कास पृ० ३३—३५। श्वास पृ० ३६, हिक्का पृ० ३७, यक्ष्मा पृ० ३८ अरोचक पृ० ३९, तृषा, छर्दि पृ० ४०, मूत्र परिक्षा पृ० ४१, उन्माद, पृ० ४२। मेद, पृ० ४३, वात व्याधि पृ० ४४—४७ वातरक्त पृ० ४८, आमवात पृ० ४९ शूल पृ० ५०, गुल्म पृ० ५२, उदर रोग पृ० ५३, गुल्म जलोदर, हृदि रोग, मूत्र कृच्छ्र पृ० ५४। प्रमेह पृ० ५५, मूत्र रोग प्रमेह पृ० ५६। मेदा रोग पृ० ५८, शोथ पृ० ५८। अंडवृद्धि, श्लीपद पृ० ५९, व्रण पृ० ६०। गंडमाला पृ० ६०, पथ्यापथ्य उपदेश पृ० ६१। विसर्प पृ० ६३। कुष्ट रोग पृ० ६४, दद्रु पृ० ६६, उन्माद अम्लपित्त पृ० ६६। दूसरा रोग पृ० ६७। यर्द्धशोशो, केशवर्द्धन, केश स्याह पृ० ६८। नेत्ररोग पृ० ६९, जोबन पोड़ा पृ० ७१। मुख भाई संमोह, नासिका रोग पृ० ७१। कर्ण रोग, स्त्री रोग पृ० ७२। गर्भ रक्षा पृ० ७२। कुष्ट रोग सूतिका रोग पृ० ७४, योनि दुर्गंधि रगड़। गर्भ निवारण, क्षीर वृद्धि, कुच काठिन्य, बाल रोग पृ० ७५। मुख रोग लिंग शिथिलता पृ० ७७। वृश्चिक विषोपचार, खुजली, विष पृ० ८१। मुख दुर्गंधि हरण कल्पकर्म पृ० ८२। रेचन, वमन पृ० ८३ हरीतिकादि पृ० ८३। आशीर्वाद—८८।

No. 414. Hanumāna Charitra (Chaupāyi) by Sundaradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size—12½ × 6½ inches. Lines per page—12. Extent—1,440 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nagari. Date of Composition—Samvat 1616 or A. D. 1559. Date of manuscript—Samvat 1915 or A. D. 1558. Place of deposit—Jaina Mandira (Barā) Bārābanki (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ हनवंत चौपाई कवित्त लिख्यते ॥ स्वामी सुव्रत नाथ जिणंद। सुमिरत होइ सिद्धि आनंद ॥ नासै पाप भलो मति होइ। नमो सीस जोड़ि कर दोइ ॥ १ ॥ आदिनाथ जिण सेवा करौ। वाचा वनि काया चित धरौ ॥ अजित नाथ वन्दौं जोन सार। जहाँ ज्ञान पावौं शिव द्वार ॥ २ ॥ संभव नाथ जपौ मन लाय। बाढ़े धरम असुभ है जाय। नमो सीस अभिनंदन देव। सुर नर फणि मिलि आवै सेव ॥ ३ ॥ स्वामी सुमिति देहु तुम मोहि। राति दिवस मति राषौ तोहि ॥ पद्म प्रभु की सेवा करौ। जिमि संसारा बहु दिन परौ ॥ ४ ॥ हरित वरण जिन देव सुपास। नाम लेत सहु पुजै आस ॥ चन्द्र प्रभु जिण गुण हीन धान। सुमिरत होइ पाप क्षै मान ॥ ५ ॥

End—जो या कथा सुणै दै कान। काललबधि पावै निरवाण ॥ ६८ ॥ गांइ गांइ इहदु इष्ट न होइ। तेल सिंदुर जु पूजा कोइ। पवन पूत बैकुंठहि गयौ। सिधु सुष्य दई पाइयौ ॥ ६९ ॥ जे पेषे पूजे हनुवंत। तासु पावन विलामै अंत ॥ जोव बहुत तसु आगे मरे। पुजि कुदेव नरकि संचरै ॥ ७० ॥ जानैं भव्य बहुप आचार। मिथ्या देव तजै व्योहार ॥ दुष्ट देव शंका मति करौ। जैसे कर्म तोड़ि निस्तरै ॥ ७१ ॥ × × × × ×
स्वामी मुनि सुव्रत नरनाथ जिणंद। सुमिरत होइ सिद्धि आनन्द ॥ नासै पाप भलो मति होइ। नमो सीस जोड़ि कर होइ ॥ ७२ ॥ इति श्री हनवंत कथा चौपाई संपूर्ण। लिष्यतं गजाधर के पुत्र दोवरीका संवत १९१५ मिति आषाढ़ शुक्ला १—नवाबगंज में लिपी।

Subject—(१) पृ० १—१६ तक—मंगलाचरण—जैन तीर्थंकरादि वंदना, राजा प्रह्लाद के वैभव का वर्णन और उसकी रानी से पवनंजय कुमार की उत्पत्ति। महेन्द्र (विद्याधर) के अंजना कुमारी का उत्पन्न होना और समयानुसार उसके विवाह की चिन्ता, मंत्रियों से सम्मति, अंजना के पिता का राजा प्रह्लाद के पास आकर उनके साथ अपनी पुत्री का विवाह ठीक करना और उसका लौट आना।

(२) पृ० १७—२४ तक—राजकुमार पवनंजय अंजना के रूप लावण्य की प्रशंसा सुन कर विवाह के तीन दिन रह जाने पर हो उत्कंठित हो कर अपने मित्र प्रहस्त को लेकर अपनी ससुराल पहुँचना और अलक्ष्य होकर महलों में जाना और अंजना की सखियों का राजकुमार पवनंजय तथा इन्द्रजीतादि की प्रशंसा करना और अंजना का मौन होकर सुनना और इसपर राजकुमार का लौटना और फिर बहुत आग्रह पर विवाह कर लेना। अंजना का पति के अश्रद्धा के कारण अपमानित होकर एकांत वास।

(३) पृ० २५—२८ तक—रावण की सहायता को कुबेर के साथ युद्ध करने का पवनंजय को जाना। अंजना के द्वार पर होकर हो उनका निकलना, और पति का पल्ला पकड़ कर उसका बहुत गिड़गिड़ाना किन्तु उस पाषाण हृदय का न पसीजना, पवनंजय का मान सरोवर पर पहुंचना और वहां से चक्र वाक मिथुन की वियोगावस्था से विवश होकर विमान द्वारा अंजना के महलों में आकर उससे संयोग करना और पारस्परिक मनोमालिन्य दूर करना। अपना चिन्ह देकर विदा होना।

(४) पृ० २९—४२ तक—गर्भ प्रकाशित होना। अंजना के प्रमाण उपस्थित करने पर भी सास ससुर का उसे निकाल देना, उसका पिता के यहां गमन और पिता का भी उसकी सहायता न करना। एक महात्मा योगी के दर्शन और उनका भविष्य वाणी, पति सम्मेलनादि विषयों के संबंध में कह के अन्तर्धान होना, पुत्र जन्म, राजा प्रतिसूर्य (अंजना के मामा) का अंजना से सम्मेलन और उसे अपने यहां ले जाना। बच्चों का विमान से गिरना, और बच जाना, राजा प्रतिसूर्य द्वारा उसका नाम शिलाचूर पड़ना और घर आकर राजा का उत्सव करना और द्वीप के नाम पर उसका नाम हनुमान रखना।

(५) पृ० ४३—७१ तक—पवनंजय का युद्ध से लौटना और स्त्री को न पाकर बिना माता पिता की सम्मति के उसको तलाश करने को ससुराल जाना और उसका वहां भी न पाना और अंत में निज प्रियतमा का कुमार से मिलाप। पवनंजय का कुछ दिनों तक वहां रहना और हनुमान का वहां कोष, व्याकरण, न्याय छंदादि का पठन कर के पारंगत होना, हनुमान जी का कई युद्धों में रावण की सहायता करना। हनुमान का रावण की भगिनी शूर्पणखा की पुत्री अनंग पुष्पा और सुग्रीव सुता पद्मरागी से विवाह होना। रामचन्द्र के बनवास के समय महारानी सीता के अन्वेषण में और रावण के साथ संग्राम में बहुत कुछ सहायता दी और जीवन के अंत में इस संसार को असार समझ कर इससे विरक्त होना और इन्द्रिय दमन पूर्वक योग की चरम सोपान पर आरूढ़ हो आत्मा की शुद्धि कर परमात्मपद प्राप्ति।

(६) पृ० ७२—८० तक—हनुमान की पूजा का फल। कथा निर्माण कारण व समयः—ब्रह्मराय मल्ल मत करि हिये, इह कथा कीयो परगास॥ क्रियावंत मुनि सुंदर दास। भणो कथा मन में धरि हर्ष॥ सोलह से सोलह शुभ वर्ष। रित बसंत मास बैसाख॥ नवमी हानि अंधियारो पाख॥

No. 415(a). Jnāna Samudra by Sundaradāsa of Jaipura Rāja. Substance—Country-made paper. Leaves—32. Size—

$8\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—25. Extent—600 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Paṇḍita Badari Nathaji Bhaṭṭa, Lucknow University, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः। अथ ज्ञान समुद्र लिष्यते॥ मंगलाचरण॥ छप्पय॥ प्रथम वंदि परब्रह्म परम आनंद स्वरूपं। द्युतिय वंदि गुरुदेव दियो जिन ज्ञान अनूपं॥ त्रितिय वंदि सब संत जोरि करि तिनके आगय। मन वच काय प्रणाम करत भय भ्रम सब भागय॥ इहि भांति मंगलाचरण करि सुंदर ग्रंथ बषानिये। तहं विघ्न न कोऊ ऊपजय यह निश्चय करि मानिये॥ १॥

दोहा॥ ब्रह्म प्रणम्य प्रणम्य गुरु पुनि प्रणम्य सब संत। करत मंगलाचरण इमि नाशत विघ्न अनंत॥ २॥ उहं ब्रह्म गुरु संत वह वस्तु विचारति एक। वचन विलास विभाग येह वदन भाव विवेक॥ ३॥

End—सुन्दरज्ञान समुद्र कौ वारापार न अंत। विर्षा मागे झिझकि कें पैठे कोई सन्त॥ सुन्दर ज्ञान समुद्र कौ जो चल पावै नीर। देषत ही सुष ऊपजै निर्मल जल गंभीर॥ यहई ज्ञान समुद्र है यह गुरु शिष्य संवाद। सुन्दर याहि कहै सुनै ता के मिटहि विषाद॥

इति श्री ज्ञान समुद्रे अद्वैतादि हुं निरूपणं नाम पंचमोऽध्याय॥ गुरु शिष्य संवाद संपूर्ण॥

मिति कार्तिक वदी १४ शनिवार संवत् १९०० वि० इति।

No. 415(b). Jnāna Samudra by Sundaradāsa.—Leaves—34. Size—$11 \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—16 Extent—544 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍitā Gurucharana Vājpai, Bhaṇḍa, Rāe Bareli.

Note—I आदि अंत No. 415(a) पर लिखा गया है।

Subject—पृ० १—परब्रह्म तथा गुरु संतो को वंदना और मंगलाचरण, ग्रंथारंभ वर्णन। पृ० २—ग्रंथ गुण वर्णन, जिज्ञासु के लक्षण, गुरु देव की दुर्लभता का वर्णन, गुरु-महिमा वर्णन। पृ० ३—गुरु लक्षण और गुरु की प्रीति वर्णन, शिष्य की प्रार्थना गुरु के प्रति। पृ० ४—गुरु की प्रार्थना। शिष्य का जीव प्रकृति और आवागमन विषय पर गुरु से प्रश्न और गुरु का उत्तर। पृ० ५—भक्ति

विषय, भक्ति के ९ भेद वर्णन। दसवीं प्रेम लक्षण और उसके आगे पराभक्ति वर्णन। उत्तम, मध्यम और कनिष्ट भक्ति का वर्ण। पृ० ६—श्रवण, कीर्तन, स्मरण दास्यत्व और अर्पण भक्ति का लक्षण और उदाहरण। पृ० ११—प्रेम लक्षण के उदाहरण, पराभक्ति के लक्षण और उदाहरण इनमें पराभक्ति उत्तम, प्रेम भक्ति मध्यम और नवधा भक्ति कनिष्ट है। पृ० १२—योग विषय-यम वर्णन अहिंसा का लक्षण, सत्य का लक्षण, अस्तेय लक्षण, ब्रह्मचर्य का लक्षण, अष्ट प्रकार मैथुन के लक्षण, क्षमा लक्षण, धृति लक्षण। पृ० १३—दया लक्षण, आर्जव लक्षण, मिताहार लक्षण, शौच लक्षण। पृ० १४—नियम—वर्णन, तप लक्षण, संतोष लक्षण, बुद्धि आस्तिक लक्षण, दान लक्षण, पूजा लक्षण, सिद्धान्त श्रवण लक्षण, पृ० १५—ह्री लक्षण, मन लक्षण, जप लक्षण, होम लक्षण, पृ० १६-सिद्धासन का वर्णन, पद्मासन का वर्णन, प्राणायाम विषय—इड़ा, पिंगला और सुषमना नाड़ियों का वर्णन। पृ० १७—दस प्रकार के पवन का वर्णन—प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान, नाग, कूर्म, कर्क, देवदत्त और धनंजय का वर्णन। इन दस वायुओं के स्थानों का वर्णन। षट् चक्र वर्णन। प्राणायाम की क्रिया का वर्णन। पृ० १८—गोरष उक्त कुंभक नाम वर्णन। धुनि—दस प्रकार की धुनि का वर्णन। भंवर गुंजार, शंख धुनि, मृदंग, ताल, घंटा, वीणा भेरि, दुंदभि, समुद्र गरज, मेघ घोष। पृ० १९—मुद्रा नाम वर्णन प्रत्याहार वर्णन, पंचतत्व की धारणा का वर्णन। पृ० २०-ध्यान विषय—पदस्थ ध्यान वर्णन, रूपस्थ ध्यान, रूपातीत ध्यान वर्णन। पृ० २१—समाधि वर्णन। पृ० २२-सांख्य मतानुसार योग वर्णन। जीव प्रकृति विषय वर्णन। पृ० २३-पंचतत्व गुण वर्णन। पंचतत्व स्वभाव वर्णन। तामसाहंकार वर्णन और राजसाहंकार वर्णन। राजसाहंकार से दस इंद्रियों की उत्पत्ति वर्णन। पृ० २४-सात्विकाहंकार से उत्पन्न देवताओं का वर्णन त्रिविधि शक्ति सत्व रज, तम का वर्णन। स्थूल देह का वर्णन। पृ० २५-पंचतत्व पंच भूतादिक पदार्थ वर्णन और अन्यभेद वर्णन, कर्म इंद्रिय त्रिपुरी भेद वर्णन। पृ० २६-अंतःकरण त्रिपुरी वर्णन, पृ० २७-जाग्रत अवस्था, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्थाओं का निर्णय, तुर्या अवस्था का वर्णन। पृ० २८-तुरीयातीत वर्णन। पृ० २९—चतुरभाव वर्णन, प्रागभाव अन्योन्य। पृ० ३०-भाव वर्णन, पंचतत्व विकार वर्णन, प्रध्वंसा भाव। पृ० ३१—३३—अत्यंताभाव वर्णन, द्वैत अद्वैत का निर्णय। पृ० ३४—ज्ञान समुद्र ग्रंथ की प्रशंसा वर्णन।

No. 415(c). Jnāna Samudra by Sundaradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—34. Lines per page—16. Extent—612 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābū Chandrabhanajī, B.A., Aminābad, Lucknow.

No. 415-(*d*). Sabdasāgara by Śundaradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—3. Size—16 × 6 inches. Lines per page—26. Extent —90 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhakura Jagadeo Simha, Village Gujauli, Post Office Baundi, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ भूल्यौ फिरै भ्रमतै करत कछु पैार श्रार करत ना ताप हूरि करत संताप का। दक्ष भयो रहे मुनि दक्ष प्रजापति जैसे देत परदक्षणा न दक्षणा दे बाप का। सुन्दर कहत बैसे जाने न जुगति कछु पैार जाप जपै न जपत निज जाप का। बाल भयो जुवा भयो वय सीति वृद्ध भयो वय रूप होय के बिसरि गयो बाप का ॥ १ ॥ इन्दव छन्द ॥ पान उहै जो पीयूष पीवै नित दान उहै जो दरिद्रहि भाने ॥ कान उहै सुनिये जस केशव मान उहै कर बेसन माने। तान उहै सुरतान रिझावत् ज्ञान उहै जगदीसहि जाने ॥ बान उहै मन बेधत सुंदर ज्ञान उहै उपजै न चज्ञाने ॥ सुर उहै मन का बस राषै क्रूर उहै रन माहि लजै है ॥ त्याग उहै अनुराग नहीं कछु भाग उहै मन मोहत जै है ॥ तत्व उहो निज तत्वहि जानहि यत्र उहै जगदीसज जै है। रक्त उहै हरि सो रत सुन्दर भक्त उहै भगवंत भजै है। २

End—सावत सावत सोइ गयो सट रोवत रोवत कै वर रोयो। गोवत गोवत गोइ धरो धन बोवत बोवत लै विष बोयो। सुन्दर सुन्दर नाम भज्यो नहि टोवत टोवत बोझहि टोयो। दूषत दूषत सागर मैं पुनि बूझत बूझत बूझत पायो। सूझत सूझत सूझि परी सब गावत गावत गोविंद गायो। सोवत सोवत सुद्ध भयो पुनि तावत तावत कंचन तायो। जागत जागत जागि परो जब सुन्दर सुन्दर सुन्दर पायो ॥१०२॥ बैठत रामहि ऊठत रामहि बोलत रामहि राम रह्यो है। जेवत रामहि पीवत रामहि धोवत रामहि राम गह्यो है। जागत रामहि सोवत रामहि जोवत रामहि राम लह्यो है। देतहु रामहि लेतहु रामहि सुन्दर रामहि राम कह्यो है ॥ श्रोत्रहु रामहि नेत्रहु रामहि वक्रहु रामहि रामहि गाजै ॥ स्रोसहु रामहि हाथहु रामहि पांवहु रामहि रामहि साजै ॥ पेटहु रामहि पीठिहु रामहि रोमहु रामहि रामहि वाजै ॥ अंतर राम निरंतर रामहि सुन्दर रामहि राम विराजै ॥ भूमिहु रामहि आपुहि रामहि तेजहु रामहि रामहि वायु। रामहि व्योमहु रामहि चंदहि रामै सूरज रामहि शीत न घामै ॥ आदिहु रामै अंतहु रामहि मध्यहु रामहि पुंस न बामै ॥ आजहु रामहि कालिहु रामहि सुन्दर रामहि म्हामहि धामै ॥ द्वेषहु राम अद्वेषहु रामहि लेषहु राम अलेषहु रामै ॥ एकहु राम अनेकहु रामहि सेषहु राम

घटोपहु रामै ॥ मौनहु राम घमौनहु रामहि गौनहु रामहि भौनहु ठामै ॥ बाहिर रामहि भीतर रामहि सुन्दर रामहि है जग जामै ॥ दूरहु राम नजीकहु रामहि देशहु राम प्रदेशहु रामै ॥ पूरब रामहि पच्छिम रामहि दच्छिन रामहि उत्तर धामै । आगेहु रामहि पीछेहु रामहि व्यापक रामहि है वन ग्रामै ॥ सुन्दर राम दशौ दिशि पूरन स्वर्गहु राम पतालहु तामै ॥ आपहु राम उपावत रामहि भंजन राम संवरत रामै इष्टिहु राम अदृष्टिहु रामहि इष्टहु राम करै सब कामै ॥ वर्णेहु राम अवर्णेहु रामहि रक्त न पीत न स्वेत न स्यामहि । शून्यहु राम अशून्यहु रामहि सुन्दर रामहि नाम अनामै ॥ इति ।

Subject—ईश्वर की भक्ति सम्बन्धी शब्द ।

No. 415(*e*). Sundaradāsajī ke Ashṭāka by Sundaradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—46. Size—7½ × 9 inches. Extent—285 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1893 or A.D. 1836. Place of deposit—Rāmādhīna Murāo, Village Badausarāya, District Bārābankī (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सुन्दर दास जी के अष्टक ॥ दोहा ॥ अलख निरंजन बंदि कै गुरु दादू के पाइ ॥ दोऊ कर तब जोरि कै संतन को सिर नाइ ॥ १ ॥ सुन्दर तोहि दया करी सतगुरु गहिया हाथ ॥ माता तो अति मोह मै राता विषया साथ ॥२॥ छन्द ॥ त्रभंगी ॥ तोमें मत मात विषया राता बहिया जाता इनवाता ॥ तब गोते खाता बूड़त जाता तो होतो घाता पछिताता ॥ उन सब सुख दाता कारुण्य नाता आप बिधाता गहि लेना ॥ दादू का चेला चेतन मेला सुंदर मारग बूझेला ॥ ३ ॥ तो सतगुरु आया पंथ बताया ज्ञान गहाया मनभाया । सब कीर्तन माया यो समुझाया अलख लखाया सचुपाया ॥ हों फिरता धाया उन मन लाया त्रभुवन राया दत देला ॥ दादू का चेला चेतन मेला सुंदर मारग बूझेला ॥ ४ ॥

End—कहु कौन कहै कहु कौन सुनै वह कहन सुनन ते भिन्न हेरे । तहं सीत नहीं तहं घाम नहीं तहं धाम नराति न दिन हेरे ॥ तहं रूप नहीं तहं रेप नहीं तहं सुन्दर कछू न चिन्ह हेरे ॥ ६ ॥ नहि गोरास हेरे नहि नैन हेरे नहि मुख हेरे नहि बैन हेरे ॥ नहि नैन हेरे नहि सैन हेरे नहि गैन हेरे न पसेन हेरे ॥ नहि पेट हेरे नहि पीठि हेरे नहि काया हेरे नहि मोठ हेरे ॥ नहि दुःख हेरे नहि इष्ट हेरे नहि सुंदर दीठ अदीठ हेरे ॥ ७ ॥ नहिं शीश हेरे नहिं पांव हेरे नहिं रंक हेरे नहिं राउ हेरे ॥ नहिं पावन पीवन चाउ हेरे । नहिं हारन जीवन दाव हेरे । नहिं नार हेरे

नहिं नाव हेरे नहिं पाक हेरे नहिं भाव हेरे ॥ नहिं मैाति हेरे नहिं आयु हेरे नहिं सुंदर भाव अभाव हेरे ॥ ८ ॥ इति ज्ञान झूलना अष्टक संपूर्ण ॥ संवत १८९३ का

Subject—पृ० १—३ तक—गुरुदया अष्टक—गुरु के उपदेश से चैतन्य होने का वर्णन। अपने को दादू का चेला बताना। (२) पृ० ४—८ तक—भ्रम विध्वंस—माला तथा तिलकधारी इत्यादि पाखंडियों के भ्रम का वर्णन। (३) पृ० ९—१४ तक-गुरु कृपा अष्टक—गुरु के चरणों की महानता, गुरु की शिक्षा का फल। (४) पृ० १५-१९ तक—गुरु उपदेश सतगुरु वंदना, गुरु के शब्द बाण का प्रभाव, गुरु के गुण वर्णन, संसार को स्वप्न तुल्य मानकर उससे बचे रहने का कथन। अष्टक के पढ़ने का फल। (५) पृ० २०—२३ तक—गुरु की महिमा कथन के साथ ही साथ दादू को ब्रह्म स्वरूप मान कर वंदना करना। गुरु देव महिमा स्तोत्र। (६) पृ० २४—२७ तक—रामजी अष्टक—राम के एक रस होने का वर्णन। ब्रह्मादि उसी के गुणानुसार नाम होने का वर्णन। सृष्टि उत्पत्ति होने का वर्णन। विश्राम पाने की वन्दना। (७) पृ० २७-३२ तक—नामाष्टक—ईश्वर के कई नाम हरि ईश्वर, माधव, केशव, अज और मोहन का वर्णन कर के 'तू' शब्द मेंही सब का प्रवेश और उसी से उत्पत्ति और विनाश होने का वर्णन। (८) पृ० ३२—३५ तक—आत्मा अचल अष्टक—कुंआ के चलने, दीपक तथा अग्नि के जलने इत्यादि के अशुद्ध प्रयोग या लोकोक्ति के अनुसार अर्थ न हो कर भिन्न अर्थ होने का वर्णन करके आत्मा का अचल सिद्ध करना। (९) पृ० ३५—३७ तक—पंजाबी भाषा अष्टक—योगी, जपी, तपसी इत्यादि को उसके भेद न पाने का वर्णन। उदासी इत्यादि का संसार में बाहुल्य होना किन्तु उसके भेद पाने वाले विरले ही होने का वर्णन। ईश्वर के अगम अगोचर होने का वर्णन। (१०) पृ० ३८—४० तक—ब्रह्म स्तोत्र अष्टक—ब्रह्म के कुछ गुणों का वर्णन करके उस की कुछ स्तुति करना। (११) पृ० ४१—४४ तक—पीर मुरीद अष्टक—पीर की कृपा से ईश्वर (ब्रह्म) प्राप्त होने का वर्णन। नफ़स को मारने का वर्णन, पीर से राहे रास्त बतलाने का निवेदन। पीर का उसी के हृदय में ब्रह्म का होना बताना। (१२) पृ० ४४—४५ तक अजब ख्याल अष्टक—बंदे के हाज़िर होने में खुदा का हाज़िर होना, बंदगी के नियम और उपदेश (१३) पृ० ४५—४६ तक—ज्ञान झूलना अष्टक—ईश्वर का सब स्थानों पर समभाव से स्थित होने का वर्णन। बिना अनुभव के उसके ज्ञान न होने का वर्णन। उसी के सर्वस्व होने का वर्णन।

No. 415(*f*). Sundara Vilāsa by Sundaradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—12×6 inches. Lines per page—48. Extent—1.939 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Date of manuscr —Samvat 1940 or 1883 A. D. Place of

deposit—Ṭhākura Śivabaksha Simha, Village Basantapur, Post Office Payāgapura, District Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सुन्दर विलास लिष्यते ॥ प्रथम गुरु देव जी को अंग लिष्यते ॥ इंद्व छंद ॥ मौजकरी गुरुदेव दयाकरि शब्द सुनाय कह्यो हरि नेरो। ज्यौं रवि के प्रगटे निशि जात सु दूर कियो भ्रमभान अन्धेरो। कायक वायक मानस हू करि है गुरु देवहि वन्दन मेरो। सुन्दरदास कहै करजोर जु दादू दयाल को हूं नित चेरो ॥ पूरण ब्रह्म विचार निरंतर काम न क्रोध न लोभ न मोहै ॥ ज्ञान स्वरूप अनूप निरूपम जासु गिरा सुनि मोह न मोहै। सुन्दरदास कहै कर जोरि जु दादू दयालहि मारि न मोहै ॥ धीरजवंत अडिग जितेन्द्रिय निर्मल ज्ञान गह्यो दृढ आदू। भेषन पक्ष निरंतर लक्ष जु और नहीं कछु वाद विवादू ॥ शील संतोष क्षमा जिनके घट लागि रह्यो सु अनाहद नादू ॥ ये सब लक्षण हैं जिन माहि जु सुन्दर के उर है गुरु दादू ॥ भव जल में वहि जातहु ते जिन काढ़ि लिये अपने कर आदू। बहुरि संदेह मिटाय दिये सब कानन टेरि सुनाय के नादू। पूरण ब्रह्म प्रकाश किये पुनि छूटि गयो यह वाद विवादू। ऐसो कृपा जु करी हम ऊपर सुन्दर के उर है गुरु दादू ॥

End—जोगी थके कहि जैन थके ऋषि तापस थाकि रहे फल खाते ॥ न्यासी थके बनवासी थके औ उदासी थके बहु फेर फिराते। शेष महायक और उलायक थाकि रहे मन में मुसुकाते ॥ सुन्दर मौन गहो सिधि साधक कौन कहै उसकी मुष बातै ॥ इति आश्चर्य को अंग समाप्त ॥ सवैया। सुष धाम मनोहर अर्गल पुर निज कालिन्दी के कूल कहावै। सुर नर मुनि आदिक ध्यान धरैं तहो जग को प्रतिपाल करावै ॥ जिन किंचित हो जलपान कियो तिनके अघ ओघ को सोक बहावै अब केतिक बात कहौं प्रति अंग के जाहि लखे जमराज डरावै ॥ तहं हो बसि के निर्वाह करै द्विज राधा कृष्ण कहावत है। जेहि नाम शिरोमणि लेत सबै पुनि भक्तन के मन भावत है कर लेषक को उद्यम करि के यों आय उदर को दोयत है। परमारथ हेत बनै न कछु तातें अति हो जिय कांपत है। इति श्री सुन्दर दास कृत सवैया सुन्दर विलास ग्रंथ समाप्तः लेषक राधा कृष्ण ब्राह्मण ॥ संवत १९४१ वि०

Subject—इस ग्रंथ में ज्ञानोपदेश सवैया सब ज्ञानियों के लिये वर्णन किये हैं (१) गुरु की महिमा, उपदेश चिन्तामणि काल चिन्तामणि, देह आत्मा बिछोह, तृष्णा, धैर्य उराहनः विश्वास, देह मलीनता, गर्भ प्रहार, नारी निन्दा, दुष्ट जन, मनका अंग, चाणक्य का अंग, विपरीत ज्ञान का अंग, वचन, विवेक का अंग, निर्गुण उपासना, पतिव्रता का अंग, विरह, शब्दसार, भक्तिज्ञान, विप्र के शब्द, सरातन कर अंग, साधु का अंग, ज्ञानी का अंग, सांख्य ज्ञान, अपने

भाव का अंग, स्वरूप विस्मरण, विचार का अंग, निष्कलंक ब्रह्म, आत्मा अनुभव, निसंशय को अंग, प्रेम ज्ञानी का अंग, द्वैत ज्ञान का अंग, जगत मिथ्या का अंग, आश्चर्य का अंग, लेखक को सवैया आदि वर्णन।

No. 415(*g*). Sundaradāsa krit Savaiyā by Sundaradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—55. Size—15 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—880 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Biseśwara Siṃha Indrabaksha Siṃha, Village Hari. harpur, Post Office Chilwariyā, District Baharāich (Oudh).

Note (I) 'सुन्दरदास कृत सवैया' नामक ग्रंथ वास्तव में 'सुन्दर विलास' है।

(II) शेष सब विवरण No. 415 (*f*) पर लिखा गया है।

No. 415(*h*). Savaiyā Sundaradāsa kī by Sundaradāsa. Substance—Country-made paper Leaves—174. Size—10 × 4 inches. Lines per page—14. Extent—1,696 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Avadheśa Pāṇdey, Village Khambharihā Pāṇday kī, District Baharāich, Post Office Baranāpur (Oudh).

No. 416(*a*). Bhramaragītā by Sūradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—12 × 5 inches. Lines per page—28. Extent—4,200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript Samvat 1899 or A.D. 1842. Place of deposit—Swāmīdayāla Vājpaī, Swamidayāla kā purwā, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गोपीजन वल्लभायनमः ॥ अथ भ्रमरगीत लिख्यते ॥ मंगलाचरण ॥ राग कल्याण ॥ ताल जलद तिताला ॥ चरण कमल बंदों हरि राई ॥ जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अंधेरे को सब कुछ दिखराई । बहरो सुनै गूंग पुनि बोलै रंक चलै सिर छत्र धराई । सूरदास स्वामी करुणा मय बार बार बंदो तेहि पाई ॥ अथ भ्रमरगीत को प्रस्ताव ॥ श्री प्रभुजीके वचन उद्धव प्रति ॥ राग सारंग ॥ पहिले करि प्रणाम नंदराय सों समाचार सब दीजो और वहां वृषभान गोप सों

जाइ सकल सुधलीजा ॥ श्रीदाम आदि आदि सब ग्वाल बालनि मरा इत भेंटिवा। सुष संदेस सुनाइ हमारा गोपिन को दुष मेंटिवा ॥ मंत्री एक बन बसत हमारो ताहि मिले सचुपाइवा। सावधान ह्वै मेरे हूंता ताही माथे नाइवा ॥ सुंदर परम किसार वय कम चंचल नैन विशाल। कर मुरली सिर मोर पंष पितांवर उर बनमाल। जिन डारियो तुम सघन बन में ब्रज देवो रषवार। वृंदावन सा बसत निरंतर कबहुं न होत नियार। ऊधो प्रति सब कही श्याम जू अपने मन की प्रीति। सूरदास प्रभु कृपा करि पठये यह सकल ब्रज रीति ॥

End—राग सारंग ॥ देन आये ऊधो मत नीको। हित उपदेश करन ब्रज आये लिष हरि जीको। जोग जुगति निज मन उपदेसनि ग्यान सुनाइ जतीको। आवहुरी मिलि सुनहु सयानी लियो सुजस को टीको। तजन कहत अवर आभूषन देह गेह सतहीको। अंग भसम करि सीस जटा धरो सिववत निरगुन फीको। मेरे जान इहै युवतिन को देत फिरत दुष पीको। ता सराप ते भए स्याम तन तरुन गहन डर जीको। जाको कृपा परी री जोव तै सा सोचन भलो बुरी को। जौ लगि सुर व्याल डसि भाजै सुष नहिं होत अमी को। राग विहाग ॥ ताल इकतारा ॥ कृष्ण कृष्ण करत डोलु कृष्ण कहां मैं पाऊं। द्वारे ते दैाड़ आऊं तैा उन लाज लजाऊं ॥ तोहि छांड़ि और को मैं कौन को कहाऊं ॥ ऊधो जो तुम बेग जाया प्रेम पाती पठाऊं ॥ ढूढ़ि फिरी बन कुंजन माहिं स्याम स्यामा गाऊं। या बिधना नाहिं पंष दीनो उड़ि के द्वारका जाऊं। ऊधो जो तुम वेग जाया स्यामहीं वेग ले आऊं। सूर के प्रभु दरस दीज्यो हरि हंस कंठ लगाऊं। इति भ्रमर गीत संपूरन ॥ शुभ मिती वैसाष शुक्ल १३ रविवार संवत १८९९।

Subject—इस पुस्तक में श्री कृष्ण जी ने ऊधो को मथुरा ते ब्रज में ब्रज युवतियों को समझाने जोग आदि को शिक्षा देने के लिये पठाया था उसी की कथा पूर्ण रूप से वर्णन की गई है इसी में ब्रज युवतियों ने भी ऊधो जी से अपना संदेस कहा है और श्री कृष्ण जी को उलाहना दे भेजा आदि।

No. 416(*b*). Bhaṇwaragita by Suradāsa of Gaughāta (Runukta, Āgra). Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—10 × 7 inches. Lines per page—20. Extent—1,200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Badarī Nāthajī Bhaṭa, Professor, Lucknow University, Lucknow.

Beginning—श्रीराधाकृष्णायनमः ॥ अथ भौंर गीत लिख्यते ॥ ऐन ऊधैा वेगि तुम ब्रज जाहु। श्रुति संदेस सुनाइ मेटैा वल्लभनि कौ दाह ॥ काम पावक

तुल्य तन में बिरह स्वांस समीर। भसम नाहीं होत पावत लोचनन के नीर॥ भाहुलौं यहि भांति हैं वे कछुक स्वांस सरीर। इते पर बिनु समाचारनहिं क्यों धरैं तन धीर॥ बारबार कहा कहौं तुम सखा साधु प्रवीन। सूर सुमति बिचारिये जिय मनौं जल बिनु मीन॥

End—राग सारंग॥ हरि बिनु मुरली कौन बजावे। कमल नैन स्याम सुन्दर बिनु को मधुरे सुरगावे॥ ए दोउ श्रवन सुधाकौं पीपे को ब्रज फेरि बसावैं। ऐसा कियो निठुर मन मोहन जो एहि पंथ न आवे। छांड़ो सुरति नंद जसुदा को हमरो कौन चलावे। सुरस्याम कीं प्रीति पाछिली को अब सुरति करावे॥ ३॥ सुनियत मोहन व्याह सवोरो हम देखन नहिं पायो। आसा लगी रही मेरे मन क्यों नहिं बोलि पठायो॥ जद्यपि हो परतोतो कान्ह को कौने गुरु पढ़ायो। जननी जनम भूमि यह गोकुल नेकै बहुरि न आयो॥ बचनहु की माता नहिं भेटत जो नहिं जसुदा जायो। पछिली प्रीति बिसारि सूर प्रभु जा ले गोद बढ़ायो॥ ४॥ इति सुरदास जी कृत भंवर गीत संपूर्णम्॥

No. 416(c). Sūradāsakṛit Kabira by Suradāsajī. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—9 × 4 inches. Extent—27 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Rādhā Krishṇajīpuri Bhoja Tiwārī, Post Office Alipur Bāzār (Sultānpur).

Beginning—पृ० १—श्री गणेशायनमः॥ कबीर॥ शारी नील मोल मंहं छेको गोर गात छबि होति। मनहु नीलमनि मंडप मध्ये बरत निरंतर जोति॥१॥ निरखि छबि राधा नागरि प्यारी॥ कबीर॥ चोटो चारु तोनि सर राजित कुहु केतु अउ राहु॥ मनु हिलि मिलि एक संग हेमगिरि ससि मुष कीन्ह गराहु॥२॥ कबीर॥ मंजुल मांग मोति लर लटकत भटकत उपमा देत॥ मनु उडगन सब सिमिट एक होइ बीच करत ससि हेत॥ ३॥ निरषि छबि॥ भाल बिसाल तिलक अति राजत दिहे लाल रज बिंद॥ मनु बंधुप के सुमन आनि कै मनसिज पूजि मइंद॥ ४॥ निरषि॥ जुग आड ताटंक चक्र जुग भौं शृंगी मृग नयन मनु द्वै तिलक बाग नहि बैठे ससि रथ स्वारथ मैन॥ ५॥ निरषि॥ भौंहैं बिकट निकट श्रवनन्ह लग दृग षंजन अनुहारि॥ मनहु परसपर करत लराई कीर बचावत रारि॥ ६॥ निरषि॥ कबीर॥ नासा शुभग मोति बेसरि कैा बरनत होत सकोच॥ मानहु कीर फोरि दाड़िम फल बीज रहे गहि चोच॥ ७॥ निरषि॥ क०॥ पुष्ट कपोल चारु चिक्कन अति बरनत मन सकुंचात॥ मनु द्वै संष करत ससि तें मत मानि अनुज को नात॥ ८॥ निरषि॥ क०॥ अधर बिंब रंग सानि

सुधारस यह उपमन्ह को यंत ॥ मानहु उमिलित सीप रूप निधि मोति द१कि दुति दंत ॥ ९ ॥ निरषि ॥ क० ॥ ठाड़ो ठकुराइन को नोको मोलेचुंद मभार ॥ सालिग्राम मनु कनक संपुट मारहिगे तनक उद्धार ॥ १० ॥ निरषि ॥ क० ॥ केकी कंठ सुभग कंठ सरो या सरि को यवर न कांति। मानहुं कनक मुरति गंगातट निकट निपटि दिपि पांति ॥ ११ ॥ निरषि ॥ क० ॥ पहुचो पानि बाहु बाजु बंद

End—प्यारो ॥ कबीर ॥ यम्बुज चरण पावटो बुन्दा यह उपमा कहु यवर ॥ मधुर नाद गुंजार करत मनु उड़ि उड़ि बैठत भंवर ॥ २१ ॥ निरषि छवि राधा नागरि प्यारो ॥ कबीर ॥ कह सहचरो वेगि लै याई प्रभु तेरे हित लागि ॥ यव रस विलस विमल वृंदावन दंभ कपट छल त्यागि ॥ २२ ॥ निरषि छवि राधा नागरि प्यारो ॥ कबीर ॥ जेरो जुरी दोन सूरा प्रभु बढ़े रीतिरस रंग ॥ ठकुराइन श्री राधा मेरो ठाकुर नवल त्रिभंग ॥ २३ ॥ निरषि छवि राधा नागरि प्यारो ॥ इति सूरदास कृत कबीर समाप्त

Subject—पृ० १—४ तक—श्रीमती राधा रानी जी के नखशिख के वर्णन सहित कबीर कथन। राधा जी की साड़ी, चोटी, मांग, भाल तिलक, बाड़, ताटंक, युग भौंह, नयन, दो तिलक, दृग, नासा, कपोल, अधर, ठोड़ी का नीला बुंद, कंठसरी, पहुंची, बाजू बंद का फुंदना, सीप, सिपज का हार, चौकी, लालगुलाल हारावलि, चोली में कुच, रोमावली, नाभि, नीवी, नितम्ब, जंघा, और चरणों के पांवरे पर मनोहर उत्प्रेक्षाएं।

No. 416(*d*). Sūradāsake Vishunapada by Sūradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—15×5 inches. Lines per page—18. Extent—1,080 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1904 or A.D. 1847. Place of deposit—Biṭṭhaladāsa Mahanta—Village Mirzāpura, Post Office Baharāich, District Baharāich (Oudh.)

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ श्री सूरदास के विष्णु पद लिख्यते ॥ प्रथम राग धनाश्री ॥ जैगोविंद माधै मुकुंद हरि। कृपासिंधु कल्यान कंस यरि। कवन पाल दामोदर देव प्रति। कृष्ण कमल लोचन यगोत्त मति। रामचन्द्र राजीव नयन वर। सरन साद्द श्रीपति सारंगधर। वनमाली बीठल पावन नवल वासुदेव वंसी बृजभूषन तन परदुमन त्रिसिरा सिर मंडन चरन चिन्ह दंडक भू मंडन कालो दवन वंसि कुल पावन यघा दुष्ट धेनुक तन घातन। रिष

मथ दुवन ताड़िका ताड़न । बन बसितात वचन प्रतिपारन बको बदन बक बदन बदारन । वहन विषाद नंद निस्तारन । रघुपति प्रबल पिनाक विभंजन । जन हित जनक सुता मनरंजन । गोकुल पति गिरधर गुन सागर, गरुड़ध्वज स्वामी नटनागर करुनामय कपि कुल हितकारी बान बिनोद संकट मृगहारी । गोपी गोप गुपत व्रतकारन । मन वच क्रम सेवक प्रतिपारन सूरदास जानत प्रभु रघुवर । कीजै कृपा अनंत हरि जन पर ॥ १ ॥

End—माधौ मोंको अपनायो है । जन्म पाइ कछु जोगन साध्यो धर्यो न मन में मों सब सो कहत रीति जमपुर की मज पतीलिका ठौं पाप पुन्य को फल न बतायो दूयो नर्क को पौ । कौनपात पर कहीं किपानिधि कछु भक्ति मों भौं ॥ करुना सिंधु कृपाल कृपानिधि मजौं स्वर्ग को ज्यों हंसि बोले जगदीस जनन गुन बात तुम्हारी वौ बात करौ तो बहुत भूलोगे चरन कमल की सौं ॥ मेरो देह छुटत जम पठय जिने दूत घर मौं । वे ले चले तु साज आपने सान धराये स्यौं जिनके दासन दरसन होतें पतित करत ज्यों ग्यौं । ढुड़ि फिरे कोउ घर न बताबे सुपच कोरिया ठौं ॥ रिसि भरि गये परम राकस तब पकरे छिपे न कैसों । तब ले फिरे नगर ते बाहर जहां मृतक हौं हैं ॥ तारिस करि हौं बहुत मार्यो कहं लगि बरनि सकौं ॥ हाइ हाइ हौं करौं कृपन हैं रामनाम न आवैं ॥ ताल पखावज चले बजावत समचो सोभ कौं ॥ सूरदास को भलो बनो है ॥ भजो गई धौ पैं ॥ हां पतित सिरोमनि माधौ ॥ अजामेल तुम काटजु तारो जुतो जु मेरो आधो जुगजुग यहै बिरदि चलि आयो कहियत है अब ताते ॥ मोंहि छांड़ि तुम सबै उधारो हां घटि हौं अब काते ॥ कै अब हारि मानि प्रभु बैठो कै करि बिरद सहो । सूरस्याम जो योपो उपजै तो सोधियो वहो ॥ इति सूरस्याम के विष्णु पद ॥

Subject—इस ग्रंथ में सूरदास जीने श्री कृष्णजी की लीला यशोदा नंद का श्री कृष्ण पर प्रेम व राधिका कृष्ण का प्रेम व ऊधो का योग शिक्षा के लिये श्री राधिका के निकट आना व सूरदास के पद जो अंतिम में कहे हैं वर्णन हैं ।

No. 416(e). Rukminīvivāha and Sudāmā Charitra by Sūradāsa of Runukuta (Āgrā). Substance—Country-made paper. Leaves—5. Size—10 × 7 inches. Lines per page—20. Extent—50' Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Badari Nāthaji Bhaṭṭa, Professor, Lucknow University, Lucknow.

Beginning—अथ रुकमिनी विवाह कथा ॥ राग विलावल ॥ द्विज कहियो जदुपति सों बात । वेद विरोध होत कुंदनपुर हंस के अंस काग

नियरात ॥ जिन हमरे गुन दोष विचारै कन्या लिखो नीति करितात ॥ ताते यह द्विज वेगि पठायौ नेम धर्म मरजादा जात ॥ तन आत्मा समर्पौं तुमकौं पाछे अनुज परे कछु नात । करि सनेह पग धरौं तुम्हारे ऐसे कौं अति चित अकुलात ॥ कृपा करो रथ वेगि चढ़ौगे लगन समीप रची परभात ॥ सूरदास ससिपाल पानि गहि पावक परौं करौं तन घात ॥ १ ॥

End—राग सारंग ॥ ऐसे और कौन पहिचानै । सुनि सुंदरि हरि दीन-बंधु बिनु कौनु मिताई मानै ॥ हौं अति कुटिन कुटिल कुदरस भये जदुनाथ गुसाई । लियौ उठाइ अंक भरि माधौ उठि अर्जुन की नाई ॥ लै पर्जंक बैठारि परम रुचि निज कर चरन पखारे ॥ पूरब कथा सुनाय कृपा करि सब संकोच निवारे ॥ ३ ॥ लये छिनाय चोर ते तंदुल केते लै मुख मेले ॥ आवह कृपा करो सूरज प्रभु गुरु गृह चले अकेले ॥ इति सूरदास कृत सुदामा चरित्र संपूर्णम् ॥

Subject—रुक्मिणी विवाह कथा क्रं० नं० १—३ तक । सुदामा चरित्र वर्णन क्रं० नं० ४—९ तक । इति ।

No. 416(*f*). Sūrasāgara by Sūradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—275. Size—12 × 10 inches. Lines per page—56. Extent—19,250 Anushṭup Ślokas—Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1899 or A.D. 1892. Place of deposit—Paṇḍit Śiva Nārayana Vājpai, Vājpai ka purwā. Post Office Sisaiyā, District Baharaich (Oudh).

Beginning—श्री गोपीजन वल्लभायनमः ॥ श्री वल्लभ चरणकमलेभ्यो-नमः ॥ श्री विठ्ठलेशोजयतितराम ॥ श्री गिरधरो जयतितराम ॥ श्री कृष्णायनमः अथ श्री सूरदास जी कृत सूरसागर सारावली तथा सवालाख पद के सूचीपत्र श्रीकृष्ण नंद व्यासदेव राग सागर संग्रह कृत लिख्यते ॥ बंदौ श्री हरि पद सुख-दाई । बहिरो सुनै गुंग पुनि बोलै रंक चलै सिर छत्र धराई ॥ सूरदास प्रभु को शरणागत वारंवार नमो तेहि पाई ॥ राजनो काफो ताल जत ॥ खेलत यहि विधि हरि होरी हो होरी हो वेद विदित यह बात ॥ टेक ॥ अविगत आदि अनंत अनूपम अलख पुरुष अविनासी । पूरण ब्रह्म प्रगट पुरुषोत्तम नित निज लोक विलासी ॥ जहां बृंदावन आदि अजर जहं कुंजलता विस्तार । तहं बिहरत प्रिय प्रीतम दोऊ निगम भृंग गुंजार ॥ २ ॥ रतन जटित कालिंदी को तट अति पुनीत जहं नीर सारस हंस चकोर मोर खग कूजत कोकिल कोर ॥ ३ ॥ जहं गोवर्धन पर्वत मनिमय सघन कंदरा सार । गोपिन के मंडल मध्य राजत निसवासर करत विहार ॥

End—राग मलार ॥ कोउ ब्रज बाँचत नाहिन पाती ॥ कति लिखि लिखि पठवत नंद नंदन कठिन बिरह की कांती ॥ नैन सजल कागद अति कोमल कर अंगुरी अति ताती ॥ परसे जरे बिलोके भींजहु दुहु भांति दुख छाती ॥ क्यों ए बंचन सु बंक सुर मुनि बिरह मदन सर घाती ॥ मुख मृदु वचन बिना सोचव ओ बड़ो प्रेम रस भांती ॥ राग सारंग ॥ देन आयो ऊधव मत नीको। हित उपदेश करन ब्रज आये लाये मनोहरि जीको। जोग जुगति निर्गुन उपदेसहि ग्रान सुनाइ जती को। आवहु री मिलि सुनहु सयानों लिये सुजस को टीको ॥ तजन कहव वर आभूषन देह गेह सत हीको ॥ अंग भसम करि सीस जटा धरो सिखवत निर्गुन फीको ॥ मेरे जान इहै जुवतिन को देत फिरत दुख फीको ॥ ता सराप ते भये स्याम तन तउन गहत उर जीको। ज्यों लगि सुर बायल डसि भाजे सुख नहिं होत अमी को ॥ राग बिहाग ॥ ताल एकतारा। कृष्ण कृष्ण करत डोलु कृष्ण कहां मैं पाऊं ॥ द्वारते दौड आऊं तीऊ न लाज लजाऊं ॥ तोहिं छाडि घेर को मैं कौन को कहाऊं ॥ ऊधो जी तुम वेग जाओ प्रेम पाती पठाऊं ॥ ढूंढि फिरो बन कुंजन मारि स्याम स्यामा ध्याऊं ॥ या विधना नहि पंख दीनो उड़के द्वारका जाऊं ॥ ऊधो जी तुम वेगि जाओ स्यामहि वेगि ले आऊं ॥ सूर के प्रभु दास जो हरि हंस कंठ लगाऊं ॥

Subject—इसमें श्री कृष्ण की लीला जन्म से लेकर अंत तक वर्णन की गई है प्रथम बधाई, दान लीला आदि पूर्ण रूप से वर्णित है।

No. 416(g). Sūrasāgara by Sūradāsa of Runkuta (Gaughat) Āgrā. Leaves—168. Size—10×7 inches. Lines per—page—20. Extent—4,000 Anushṭup Slokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Badarī Nāthjī Bhaṭṭa, Professor, Lucknow University, Lucknow.

Beginning—सुनो ध्यान सो सुमिरन रहौ ॥ जैसे सुक कों व्यास पढ़ायो। सूरदास तैसें कहि गायो ॥ ३ ॥ श्री भागवत वक्ता श्रोता वर्नन ॥ राग बिलावल ॥ व्यास देव जब सुकहि पढ़ायौ ॥ मुनि के सुत सो हृदय बंधो ॥ सुक सोनिक सों पुनि कह्यो। विदुर मैत्रेय सों पुनि लह्यो ॥ सुनि भागवत सबनि सुखपायो। सूरदास सो बरनि सुनायो ॥ ४ ॥ अथ सूत सोनिक संवाद ॥ राग बिलावल ॥ सूत व्यास सों हरि गुन सुन्यौ। बहुरी तन तजि मन मैं गुन्यौ ॥ सो पुनि नीमषार मैं आयौ। तहां रिषिन कौ दरसन पायौ ॥

End—फिर ब्रज बसो गोकुलनाथ ॥ अब न तुम्हें जगाइ पठिवें गोधनन के साथ ॥ बरजे न माखन खात कबहूं दह्यो देत लुटाय। अब न देहिं उराहनो नंद

बरनि आगे जाइ ॥ नहिं देहिं दावर जोरि कैं औगुन न कहिहैं आनि ॥ कहि हैं न चरनन देन जावकु गुहन वेना फूल । कहिहैं न करन सिंगार बहुतर बसन जमुना कूल ॥ करिहैं न कबहुं मान हम हठिहैं न मांगत दान । कहि हैं न मृदु मुरली बजावन करन तुम सों गान ॥ देहु दरसन नंद नंदन मिलन को जिय आस । सूर प्रभु के दरस कारन मरत लोचन प्यास ॥ ४८८ ॥

इति ।

No. 416(*h*). Sūrsāgara by Sūradāsa of Gaughāta (Ágrā). Substance—Country-made paper. Leaves—334. Size—10 × 6 inches. Lines per page—10. Extent—2,925 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Badri Nathaji Bhaṭṭa. Professor, University, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री कृष्णायनमः इति बालतोक काहा सार ॥ अथ दसमस्कंध लिखितं सूरदास कृत श्री भागवत वर्णनं ॥ राग सारंग— व्यास कह्यो शुकदेव सों श्री भागवत बखान । द्वादस अस्कंध परम सुभग प्रेम भक्ति की खान ॥ नव अस्कंध नृप सों कह्यो श्री सुकदेव सुजान । सूर कहत अब दसम कौं उर में धरि हरि ध्यान ॥ ८६

राग विलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमरन करौ । हरि चरनारविंद उर धरौ ॥
जय अरु विजय पारषद दोई । विप्र श्राप असुर भये सोई ॥
दुई जनम ज्यों हरि उद्धारी । सो तो मैं तुमसों कहि उचारी ॥
बक्रदंत ससिपाल जो भयौ । बासुदेव होइ सो पुनि हर्यौ ॥
घोरी लीला बहु विस्तारं । कीन्ह जीवन कौ ज्यों निस्तारं ॥
सो अब तुमसों सकल बखानौ । प्रेम सहित सुनि हृदये आनौ ॥
जो यह कथा सुनै चित लाय । सो भव तरि बैकुंठे जाय ॥

End—राग कल्यान ॥ कीयौ प्रतिमान वृषभान बारो । देखि प्रतिबिंब पिय हृदै नारो । कहा यां करत है जाहु प्यारो ॥ मनहि मन देत अति ताहि गारो । सुनत यह बचन पिय बिरह बाढ़ो । कियो अति नागरी मानु गाढ़ो ॥ काम तन दहत नहिं धीर धारै । कबहु उठत बैठत बार बारै ॥ फेरि अति भये व्याकुल मुरारो । नैन भरि लेत जल देत ढारो । ३२ ।

राग विहाग ॥ जान कह्यो तिय बिन अपराधहि । तन दाहति बिन काज आपनो कहत रहहि न बादहि ॥ कहा रही मुख मूंदि भामिनी मोहि चूक कछु नाहि । झमकि झमकि क्यों चतुर नागरी देखि आपनो छांहि ॥ अजहु दूरि करौ

रिस डरते हृदये ज्ञान विचारो । सूर स्याम कहि कहि पचि हारे हठि कीन्हों जिय भारो ॥ ३३ । राग कल्यान ॥ काम स्याम तनः—

Subject—मंगलाचरण, भगवान जन्म लीला वर्णन ।

No. 416(i). Sūrasāgar by Sūradāsa of Gaughāta, Agrā. Substance—Country-made paper. Leaves—368. Size—13 × 7 inches. Lines per page—14. Extent—14,168 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit—Rājā Pustakālaya, Bhiṇagā, Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायमः अथ सूर सागर लिख्यते ॥ तत्र प्रथम परमारथ को कथा । हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरनारविंद उर धरो । हरि की कथा होइ जब जहां । गंगा हू चलि आवै तहां । जमुना सिंधु सरस्वति आवै । गोदावरी विलंब न लावै । सब तीरथ को बासा तहां । सूर कथा हरि को जहां । चरन कमल वंदों हरि राया । जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अंधे कैां सब कछु दरसाया । बहिरो सुनै गुंग पुनि बोलै रंक फिरै सिर छत्र धराया ॥ सूरदास स्वामी करुना मै बार बार वंदों तेहि पाया ॥ कीजे प्रभु अपने बिरद की लाज । महापतित कबहु नहिं आयो नेक तिहारे काज । माया प्रबल धाम अरु वनिता आयो हो या साज ॥ देषत सुनत सबै जानत हो नेक न आवत बाज । कहै श्रुति पतित बहुत तुम तारे श्रवन सुनी आवाज । दै नहि जात घाट उतराई चाहत चढ़न जहाज । लीजे पार उतारि सूर कहं महाराज ब्रजराज ॥

End—राग नट ॥ देखु सषी हरि बदन इंदुवर । चिक्कन कुटिल अलक अवली छबि कहि न जाय सोभा अनूप वर ॥ बाल भुजंगिनि निकसि मनों मिलि रही घेरि रस मनों सुधाकर । तजि नहि सकहि नहिं करहि पान को कारन कैान विचारि डरि डर ॥ अरुन बनज लोचन कपोल सुभ श्रुति कुंडल मंडित अति सुंदर । मनहुं सिंधु निज सुतहिं मनावन पठयो जुगल बसीठि बारिचर । नंद नंदन मुष सुंदरता छबि कहि न सकत श्रुति सेस उमावर । सूरदास त्रैलोक बिमोहन कपट रूप नर त्रिबिधि सूल हर ॥ काहु फिर न कहीं वे बातें । जो नर यहां सुकृत कछु करिगे बातन की कुसलातें । जैसे सती जरै पिय के संग बिरह प्रेम रस मातें ॥ ताको स्वाद पूछिये कातें सियरे आर कि तातें । जैसे सूर धसे रन भीतर अरु सनमुष करि घातें ॥ ताको स्वाद पूछिये कातें सहत सेल उर घात । सूरदास देही की या गति समुझि परी अब बातें ॥ या संसार बोल को बरिबो आयो गयो कहातें ॥

Subject—प्रार्थना ·································· २ पद

परमारथ वर्नन	३—१७६ पद तक	
भागवत प्रथम स्कंध की कथा	१७७—२५८	,,
द्वितीय स्कंध की कथा	२५९—२८८	,,
तृतीय ,, ,, ,,	२८९—३१८	,,
चतुर्थ ,, ,, ,,	३१९—३३०	,,
पंचम ,, ,, ,,	३३१—३३७	,,
षष्टम ,, ,, ,,	३३८—३४४	,,
सप्तम अष्टम स्कंध ,,	३४५—३५८	,,
नवम ,, ,,	३५९—४१७	,,
दशम स्कंध	४१८२—१०४	,,
एकादश स्कंध	२१०४-२११०	,,
द्वादश स्कंध	२११०-२१२४	,,

इति

No. 416(*j*). Sūrasāgara (Dashama Skandha) by Sūradāsa of Runakutā (Āgrā) Substance—Country-made paper. Leaves—103. Size—15 × 8 inches. Lines per page—32. Extent—5,300 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābū Padma Bakhsha Simhajī, Lavedapore, Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री कृष्णायनमः । मंजुमन नन्द नन्दन चरन ॥ यमल पंकज पति मनोहर सकल सुख के करन ॥ सनक संकर ध्यान ध्यावत निगम निवरन वरन । सेस सारद रिषे नारद संत चेतत चरन ॥ पग प्रयाग प्रताप दुर्लभ रमा वेहित करन । परसि गंगा भई पावनि तिहूं पुर धर धरन । चित्त चेतन करत कीरति अघ टरति नारिन मरन । गये तरि ले जाय केते पतित हरि पुर धरन ॥ जासु पद रज परसि गौतम नारि गति उद्धरन । सोइ कृष्ण पद मकरंद पावन पौर नहि सिर धरन । सूर मंजु चरनारविंदहिं मिटै जन्मी मरन ॥ १

चौपाई । श्री कृष्ण चरित्र सदा सुखदाई । जेहि गावत सुर नर मुनिराई ॥ श्री वसुदेव देवकी धामा । मथुरा प्रगटे पुरन कामा ॥ २

End—राधे उड़गन सुत पति दीन । तेरे भोन गौन हरि कीन्हो राहु गहन कस कीन्ह ॥ नौ ग्रह सात साजि के बेठी सारंग सुत कस दीन ॥ सारंग देषि बिदा भे सारंग ग्राह रिपु त्यागन कीन ॥ उडगन सुत धरहु आपनो सैल सुता

सत कोन । कदलो खंभ बने जन दोऊ नागारिपु कटि छोन ॥ सूरदास प्रभु मिलौ गोपालहि अंग अंग परबोन ॥ निसि दिन पंथ जोवत जाइ । जल सुधन सुत तासु वाहन विकल ह्वै अकुलाइ ॥ अंघ वाहन तासु सुत को बंधु बरनो भाइ ॥ दृगनि ते कब देंषि हौ अलि सकल दुष विसराइ ॥ गौ सुवन पति पति रिपु न मानत कानि मोहन राइ ॥ करि ततछन वेगि आवहु हृदै सालत घाइ ॥ बजै भष की हानि हय कौ दा को को सब काइ ॥ सूर के प्रभु कब मिलहिंगे परसिवे को पाइ । राम

No. 417(a). Rukmāngada kī Kathā Ekādaśī Māhātmya by Suryadāsa Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—8 × 4 inches. Lines per page—16. Extent—300 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1886 or A. D. 1829. Place of deposit—Paṇḍita Śatrughnaji Miśra, Village Sikandarpore, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ रुकमांगद की कथा लिष्यते ॥ चौपाई । प्रनवौ गुन गनपति के चरना । सिद्धि वद्धि दायक के करना । चरन मनावौं द्वौ कर जोरी । गनपति बुद्धि बढ़ावहु मोरी । मातु पिता गुरु बन्दौ पावों । जिन यह निर्मल ज्ञान लषावा ॥ सदाहि देवै बन्दौ स्वामी । गनपति हो सब अंतरजामी । सुर्जदास कवि बिनती करई । मोरे हृदय कपट नहि परई । अवध नगर के बरनौ पारा । जहं नारायन भये अवतारा । कनक कोटि फिरि चारहु पासा । उठे कंगुरा जनु कैलासा । पूरब पावरो विरजे अरिया । दछिन पवरो सोन सब मढ़िया । पछिम देषे होहु पहि नास । उत्तर दीसै देव को वास । चारिउ बरन बसैं सब जाती । परजा लोग बसैं बहु भांती । सब को सुष सबै सकुमारा । सब के कंचन पवन पगारा । सब के घरों बाधे हाथी, सब के तुरी रथन सारथी ॥

End—मनुष रूप तब देवन लीन्हा । तबहिं मोहनी काहु न चीन्हा । सैभावति तब दीन्हसि सरापा । डोमिनि हुइ कै भुगवहु पापा । पुहुप के बस छियेहु तुम जाई । कूकर के प्रसि तोरहु पाई । जग्य निरास हो गये परगाई । अपने लोक बैठे सो जाई । सिव कैलास बैठे सुरराई । निज निज डगर देवतन पाई । मोहनी भई श्राप को भेंडिये । घूमै लागि ग्राम के छेड़िये । विप्र साथ हरि मंगर लीन्हा । व्रत को महिमा कहं लगि कहियो ॥ एकादसी कीन्हे पाप सो कहं लगि व्रत करौं बषान । तिन्हहि सो लगि बड ठाना । सुर्यदास कवि भाषा रुकमंगद कैलास निरचै मन कैसे बहु कैसो चरन निवास । इति श्री एकादसो महातम सुर्यदास विरचिते भाषा रुकमांगद वादे बाढ़े इतिहास संपूरन लिष्यते

सेवा मिश्र सिकंदरपुर के सं० १८८६ साके १७५१ वैसाष मासे कृष्ण पक्षे तिथौ त्रिरोदस्याम शुक्र वासो जैसा देषा तैसा लिषा ममदोष नाहीं। समाप्त ॥

Subject—१—रुक्मांगद की कथा इस प्रकार है कि अयोध्यापुरी के राजा त्रेतायुग में हरिश्चन्द्र हुए उनके पुत्र रोहितास्व और रोहितास्व के रुक्मांगद हुए। रुक्मांगद न्यायी धर्मात्मा ईश्वर भक्त था। वह एकादशी का व्रत विधि पूर्वक करता था। उसके राज्य में कोई भी ऐसा न था जो एकादशी का व्रत न करता हो यहां तक कि हाथी घोड़े आदि को भी एकादशी के दिन दाना चारा न मिलता था। यमराज यहां से घबड़ा के भगे और इन्द्र के निकट सब समाचार सुनाया इन्द्र विष्णु के पास गए विष्णु अव इन्द्र के शंकर के पास गये वहां से मोहनी राजा को छलने के लिए भेजी गई। वह मोहनी राजा को बन में शिकार खेलते मिली राजा देखकर मोहित हो गया मोहनी और राजा का सूर्य चन्द्र की साक्षी में मेल हो गया और उसने एकादशी व्रत से सब प्रजा को राजाज्ञा से छुटाना चाहा जब राजा की रानी संध्यावती को यह वृतांत ज्ञात हुआ तो उसने मोहनी को श्राप दिया क्योंकि एकादशी व्रत वहां कोई भी न करने लगा। और मोहनी का रथ रुक गया कि एकादशी व्रत वाला अगर रथ छू देवे तो रथ चले राजा रुक्मांगद के राज्य में कोई भी न निकला केवल एक बुढ़िया जो अपनी पतोहू से लड़ कर दुख से एकादशी के दिन भोजन नहीं किया था निकली। उसने रथ छुआ और रथ चला तब राजा को अपने राज्य की दशा ज्ञात हुई कि मोहनी ने हमको छल कर एकादशी का व्रत राज्य भर में छुड़वाया। रानी के श्राप से मोहनी डोमनी हुई और प्रायश्चित्त रानी ने यह बताया कि जब तू एकादशी व्रत करैगी तब फिर अप्सरा होगी। इस प्रकार राजा रुक्मांगद की कथा एकादशी माहात्म्य के सहित वर्णन की गई है।

No. 417(*b*). Ekādaśī Māhātmya by Suryadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—24. Size—7⅓ × 4½ inches. Lines per page—35. Extent—475 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Date of manuscript—Samvat 1901 or A.D. 1844. Place of deposit—Paṇḍita Ayōdhyā Prasāda Miśra, Village Katailv, Post Office Chilawaliyara (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः

अथ एकादशी व्रत मारातम प्रारंभ्यतेः ॥

दोहा ॥ शंकर शरण प्रथमही पंकज सीस नवाइ। चरण कमल मैं मांगऊं श्री गुरुदेव लखाय ॥ १ चौ० राम लषण सुमिरौं दोउ भाई। नाम लेत पातक

बसि जाई। सुमिरौं पवन पूत हनुमंता। येहि सुमिरौ बल होइ बहुता॥ सुमिरौं चांद सूर्य दोऊ भाई। जिनकै ज्योति रही जग छाई॥

End—सूर्यदास विनती करै सुनहु हो संत सुजान। करहु ध्यान श्री कृष्ण कर होइ इन्द्र मान॥ ८० चौ० एकादशी जो सुनहि संपूरन। ते जानहु गंगा स्नान तन। सुनिकै कथा जो देइहि दाना। तेहि कहं होइ इन्द्र पयाना। एकादशी अमृत कै जानो। संत सुजान पियहि मन जानो। जमकै निशानो संतमन जाति कै घोरो। रसना अक्षर अक्षर कै जोरो। दोहा—कहै सुनै जो प्रानी अश्वमेध जग होइ। सूर्यदास कवि भाषै हरि सम अवर न कोइ॥ ८१ इति श्री एकादशी कथा संपुरणम् समाप्त सुभमस्तु। मि० भादैां मास कृष्णपक्ष १२ संवत् १९०१ लिषा देवी शिवदाश सागर मध्य रविवार।

Subject—स्तुति, नारद का पुष्प के लिये इन्द्र से कहना और इन्द्र का रंभा को पुष्प लेने रुक्मांगद के यहां अयोध्या भेजना पृ० १—२ रंभा का लिवा आना, रानी का आश्चर्य करना, रंभा का राजा को एकादशीव्रत का फल कहना, नगर में एकादशी रहनेवाले को ढूढ़ना और एक स्त्री मिलने पर उसके छूने से रथ इन्द्रलोक को जाना। पृ० ३ से ६ तक।

राजा का व्रत के लिये नियम करना और सब का स्वर्ग जाना। देवताओं का व्रत भंग करने का विचार करना और मोहनी को बनाना और रुक्मांगद के पास भेजना राजा का मोहित होना रानी का राजा को समझाना पृ० ७-१२ तक।

मोहनी का राजा के साथ अयोध्या आना बड़ी रानी का चिप्र भेज व्रत को याद कराना मोहनी का निषेध करना राजा रानी संवाद पृ० १३—१७ तक।

पुत्र को बुला कर उसका सीस देने को तय्यार होना पुत्र के आने पर राजा का दुखित होना कुंवर का समझाना और दान देकर सिर काटने को तय्यार होना विष्णु का आना और रक्षा करना मोहिनी का नरक में जाना पृ० १८—२४ तक।

इति

No. 417(*c*). Rāmajanma by Sūraja Dāsa Kavi. Substance—Foolscap paper. Leaves—78. Size—8 × 6½ inches. Lines per page—16. Extent—468 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Kaithi Mudiā. Date of manuscript—Samvat 1953 or A. D. 1896. Place of deposit—Paṇḍita Yaśyodā Nanda Tiwāri of Village Kānth, District Unāo.

Beginning—श्री गणेश जी सहाय नमः । श्री सुरसती जी सहाय नमः । श्री गंगा जी सहाय नमः । श्री महादेव जी सहाय नमः । श्री पाथी राम जनम लिख्यते श्री गुरु चरन सरोज रज नीज मन मुकुर सुधार । बरनैा रघुपति बीमल ज । जो दायक फल चार । बरनैा रघुपती बाथोना बतिस । रामरुप तुम पुरवहु चास । बरनैा सुरसती श्रमोरीत बानी । रामरुप तुम भली गति जानी । बरनैा चंद सुरज की जोती । रामरुप जस निरमल मोती । बरनैा वसुध धरी जोनर । राम रुप भये जगत पिग्रार । बरनैा मात पिता गुर पऊ । जीन मैाही नीरमल गोग्रान सोश्राऊ ॥ तुलसीदास कवी बरनैा परम नाथ जीव मोर । राम कथा कोछु भवहु कहत न लगै भोर ॥ वालमीक रामायन भाखा । तीनो भुवन जो भरी पुर राखा । राम के जनम सुनैा मन लाइ । सड़ेँ धरम पाप छुँ जाइ । चानंद मंगल सब कोइ करइ । सहसर होम सैादीन दीन करइ । होव्द मह ग्रोग्नेी कीन । कैाटीन गये ग्रापर कहि दीन ।

End—राम जनम सुनै मन लाइ । दुख दलिदर सम जाइ पराइ । राम के जनम सुनै जो कान । तेहो कर पुत्र होत कलोग्रान । राम के जनम मनोती जो गावै । सो नर भव सागर तरी जावैं । दोहा—राम जनम कथा जनम कथा बिमल पढ़ैं सो नर मन लाय । सो नर राम परताव से भो सागर तरी जाय । इती सीरी राम जनम पुरन जो पत्र देखा सो लोखा मम दोस न दोजिए पंडित जन सो बीनती मोर टुटल ग्रछर लेव सजैारी महीना फागुन दीन बुध सन १८९६ दस्तखत देवीराम के ।

Subject—राम जनम की कथा पढ़ने की महिमा वर्णन पृ० १—४

राजा दशरथ का ३०० रानियों से विवाह करना तीन पट रानियां । राजा का शिकार खेलने जाना वन में भूल जाना संध्या समय सरोवर पर ग्राना, धनुष बाण लेकर बैठे विचार करना—पृ० ४—५

श्रवण का जन्म होना, उसका विद्या पढ़ना, स्त्री का ग्राना, वादाविवाद होना, स्त्री का निकाला जाना पुनः ग्राना खट्टा मीठा भोजन बनाना, ग्रंधो, ग्रंधे को दुर्बल देख श्रवण का पूछना, समाचार जानकर फुलमती को उसके मायके भेजना । कांवरी बना कर माता पिता को लेकर घूमना, माता पिता का पिपासाकुल हो पानी मांगना, श्रवण का पानी के लिये जाना । पृ० ५—१४

सरोवर में कमंडलु का डुबोते समय शब्द होना, दशरथ का शब्द सुनकर शिकार का ग्रनुमान कर बाण मारना, श्रवण को लगना राम राम शब्द सुन कर दशरथ का वहां ग्राना, श्रवण का राजा से पूछना ग्रैार राजा का ग्रपना परिचय देना, श्रवण का राजा से माता पिता को पानी पिलाने के लिये कहना; राजा का उनके पास जाना, पानी देना, सब समाचार कहना, ग्रंधो ग्रंधे का

राजा को शाप देना और देह त्याग करना, राजा का अयोध्या आना, वशिष्ठ से पुत्र हेतु उपाय पूछना, यज्ञ करना और पुत्रों का होना । पृ० १४—२८

पुत्रों का यज्ञोपवीत होना, विश्वामित्र का अयोध्या आना, यज्ञ रक्षा के हेतु पुत्रों को माँगना, राजा का दुखित होना, विश्वामित्र का क्रोधित होना, देवताओं का दशरथ को समझाना, राजा का राम और लक्ष्मण को मुनि के साथ भेजना, दोनों भाइयों का विश्वामित्र के आश्रम में आना, राम का मुनि से गंगा का उत्पत्ति पूछना, मुनि का वर्णन करना पृ० २८—४७

मुनि से वार्तालाप कर के शयन करना, आधीरात को लुक कर आना, अनेकों प्रकार के उत्पात होना, राम का उसे मारना, ब्राह्मणों का सुखी होना, यज्ञ के लिये भगवान का मुनियों को आज्ञा देना, मुनि का राम को लेकर तिरहुत जाना विश्वामित्र को आया हुआ जानकर जनक राजा का आना, दंड प्रणाम करना, राजकुमारों को पूछना, परिचय पाकर प्रसन्न होना, पुरवासियों का राम लक्ष्मण को देख कर प्रसन्न होना, राम का धनुष यज्ञ देखना और धनुष का तोड़ना, जनक का अयोध्या को दूत भेजना, दशरथ का जनकपुर आना, जनक राजा का दशरथ को जनवास देना, चारों भाइयों की शादी पृ० ४७—६०

दशरथ का विदा होकर अयोध्या के लिये चलना, रास्ते में परशुराम से भेंट, नारायण धनुष राम को देना, राम का उसे चढ़ाना, परशुराम का वन गमन, राजा का पुर प्रवेश, परिछन होना, सासुओं का बहुओं का मुख देखना, गृह प्रवेश आदि वर्णन, राम जन्म पढ़ने का फल वर्णन—६०—६८

No. 418. Suratarāmaki Bāṇi by Sāddū. Substance—Country-made paper. Leaves—108. Size—$4\frac{1}{2} \times 3\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—18. Extent—1,215 Anushṭup Slokas. Appearance Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1852 or A. D. 1795. Place of deposit—Haravamsā Rāi Tikāri, Rae Bareli.

Beginning—अथ माथों सुरत राम जी को बांनी प्रगट लिख्यते ॥

प्रथम सतुति का कवित लिख्यते ॥

नमो रमईया राम निरगुनि तेरे आधारा । फिर नमो गुर संत सदा मोहि लगो पियारा ॥
तुमरे पदको सरनि रहो नितही मम सीसा । मैं हूं पांवर जीव आप स्वामी जगदीसा ॥
सुरत राम सरनैं सदा कर प्रनाम अनंत । तुम अपरमपार अपार हो मैं हूं तुमरो जंत ॥

अथ साषी गुरदेव को अंग लिष्यते ॥

प्रथम राम रामतोत जू सत गुर सब ही संत। जन सुरत राम बंदन करें बारं-बार अनंत। अंग ॥ राम चरण गुर तपत है सुरत राम के सोस। ग्यान भगति वैराग दे नांवकस्यो बकसोस। राम चरण हरि रूप है भगति भूप है सोइ। सुरत जाव उनसूं मिल्यो सब मिल नामै थोइ। सत गुर सब गुण मेट दे निरगुण करै निराट। जन सुरतराम सांची कहै देह मुकति तणीं वै बाट। ४ सत गुर का प्रताप सूं तोय प्रगटे थाइ। सुरत रासि पै लोक धन मेरे मन नहि आइ ॥ ५ मेरे मन भावै नहीं तोन लोक को धन। सुरत राम गुरदेव का चरणां लागे मन ॥ ६

End—पदराग आरती ॥ आरति तेरी राम अभंगो। घटि घटि चेतन आप असंगो ॥ टेक नहीं निराकार नहीं आकारा। राम जपे जपि राम संचारा ॥ १ सेस महेसुर पार न पावे। निति अनिति हो निगम बतावे ॥ २ आदि अंत मधि है इक सारा। सुरत राम सा राम पियारा ॥ ३ इती सावों सुरत राम जी को बांणीं आणभे संपूरणं ॥ गोट की संख्या को ब्योरा साषी ॥ ८०९ अर्च्चद्राइणं ॥ १०१ ॥ सवईया १३ किवतन सार ॥ १९ ॥ कुंडल्या १८ अररेषता १९ ॥ ग्रथ ६ ॥ पद वेताल ८७ ॥ ग्रंथ पद वेताल। सवद संता का मानूं सरव सवद को जोड़ ११३२ ही जानूं ॥ अनत ग्यान भरपूर है ताको नाहीं पार। साषी अर चंद्राइणां सवैया किवतन सारदुल ॥ सरब संता की महरि सूं सवद लिष्या है सार ॥ जो कोई वांचिति आरसो सो नर उतर पार तर ॥ जन सुरत राम परताप सूं लिष्यौ जैतहो राम ॥ रोड़पूरो निज गांव है राम दुवारो धाम ॥ २ ॥ संवत अठारा से सहो वष बावने ठाम ॥ भांदवां बुधि है। सतमी संत बिराजत थाठ ॥ ३ ॥ सोरठा ॥ संत विराजत थाठ, भगति मुकति दाता रहै। तव मन भायो अथि, मोहो जग कें पार है ॥ इती गोंसी संपूरण ॥

समाप्ति

No. 419(*a*). Kavi Priyā Tīkā by Sūrata Miśra. Substance—Country-made paper. Leaves—57. Size—10 × 4 inches. Lines per page—42. Extent—1 197 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in prose and verse. Character—

Nāgari. Place of deposit—Thākura Gyāna Simha, Village Mādhōpore, Post Office Bisawan, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ सोरठा ॥ गरुड़ पाय गिरिपाल गोरि गिरा मन प्रहय गुरु । ये जेहि रूप रसाल बंदो पद जेहि जुगुल के ॥ गज मुष अंमुष होत हो या दोहा को तिलक सूरत मिश्र करत हैं तहां प्रश्न कोई बादी करत भयो । गनेश जुके बरनन में चित्र को विमुष है सो कह्यो ग्रैार प्रयाग के बरनन में पापन को बिलाइबो कह्यो । बिमुष भजिबो को बिलात नासबो यह समता नाहीं ग्रैार प्रश्न जिन गनेश को बरनन तिन गनेश की ग्रस्तुति में न्यूनता है बिघन भाजि जात है यामें प्रयाग को ग्रधिकाई है ग्रो पाप बिलात हैं यानो नसि जात हैं ये दोऊ प्रश्न ॥ तहां उत्तर बिमुष को ग्रर्थ बिगत है मुष जिनको सोस कहि जात है यह प्रयोजन जब बिन सोस भयो तब बिलाइबो दोऊ ठैार सिद्धि भयो ॥

End—को कामी सदा है । ये कहिये है सषी तब उन उत्तर दीन्हो । को कहै हिय विषै कामी सदा सर्प भयो है । जेहि राह ताकी लीक बनो है ताको देषि करिकै सषी पूछत है यह लीक तुम हम पर कहउ ॥ कानो को है ग्रर्थात केहि पंचाई है तब यह उत्तर देत है कालो है कोधो, सर्प भयो है ताको लीक बनि रही है । यह जानिए पुनः कंठ बसत को सात कोक कहावतु चिचि कहै का कहिए सुरतात को कामो हित सुरत रस ग्रथ गतागत चित्र ग्रलंकार को लछन । सुधो उलटों बांचिए कहिए ग्रर्थ प्रमान । कहत गतागत ताहि कवि केशव दास सुजान ॥ गतागत को उदाहरन मासम सो हंस जे बनबोलत बोन बजे सद सोम समा मारल ताति बनावलि सारो रिसाति बनावलि ताल रमा । माल बनी बलि केशव दास सदा बसु केलि बनी बलमा । सुधो उलटो बांचिए ग्रैार पद पद ग्रर्थ एक सवैया में सुकवि प्रगटै होउ समर्थ ताको उदाहरन सैनन माधव ज्यो सर केसव देप सुवेष सुदेस लसै मैनव फो तम जो तमनो रुचि चोर सबै बिन काल फंसै । तै न सुनो ग्रस ग्रैार भरो घर चोर वरोति सु कैान बसै । मैन मनो गुन चारु चलै सुभ मानन में सरसो बिलसै ॥

Subject—केशव कवि प्रिया की टीका प्रश्न उत्तर सहित है ।

No. 418(*b*). Nakha Śikha Rādhājūkō by Surata Miśra of Āgrā. Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—9 × 5 inches. Lines per page—26. Extent—200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1853 or A. D. 1796. Place of

deposit—Ṭhākura Naunihāla Siṃha, Village Kāṇṭhā, Pargana Kāṇṭhā, District Unāo.

Beginning—सूरति मिश्र कृत नष शिष वर्णन ॥ श्री गणेशायनमः ॥

कवित्त—चरन चतुर्भुज के चिह्न ह्वै करत सेवा रमा के मुदम यहरूप सरसात है। आसन ह्व बिधिहि रिझायो पै न बनो विधि सूरति सुकवि याते जग मैं विख्यात है ॥ सुनिये हो लाल उहि वाल पग समता कों कीनों बहुतेरो पै न भार थार जात है। ऐसो कौन जाके हिय धीरज धराइ थाके पाइ देषे काहू के न पाइ ठहरात है। १

जावक वर्णन-किधौं सब जगत को अरुनाई हारो ताको थाइ के रजोगुन चरन अनुराग्यो है ॥ किधैं पद कंजन कों सेवत हैं गिरा बड़े पूर हित जाके देषे अवपुंज भाग्यो है। सूरति सुकवि जानि परो यह बात अब तोहि बूझिये न क्यों ह मान रिस पाग्यो है। जावक न होइ सुनि प्रानप्यारी तेरे यह प्रीतम को अनुराग आइ पाइ लाग्यो है। २

पद नष वर्णन-चदन अनुहारी छोनी रवि की अरुनताई ओते जोतिवंत स्वच्छ रूप बिलसत है। जेती जग नारि ते निहारि नारि नीची करैं सबही के प्रतिबिंब तिन में लसत हैं ॥ सूरत श्री वृन्दावन रानी की चरन संग पाइवे को बिब पाभावंत दरसत हैं : सांचो कहनावत इहां ही देषो लाल सबै जगत के रूप जाके नष में बसत हैं ॥

End—केस वर्णन-किधैं तम पानिप को सोहत सिवार पुंज किधौं चंद्र पाछो आइ घेरो तमझारि है। किधौं मन पक्षी गहिबे को मखतूल जाल मदन बनायो फांसि जाते को निकारि है॥ सूरति ए ऐसे वह सांवरो रसिक बड़ो देषिबे को जक लागे धीरजु न धरि है ॥ कारे सटकारे ए तूं बार बार छोरति है तेरे बार देषि काह मेरे बार परि है ॥ ३९

मांग वर्णन-किधौं जमुना के पुर बीच गंग धार बही किधौं तम फोरयौ रवि करि धाइ डारे तें। किधौं रसराज के सरोवर में चलो बग छौननि को पांति उत इत के किनारे तें ॥ सूरत छबीले छैल छके हैं छबीली देष धीर बसीकर कहा करिहौ विचारे तें। व्यापि जाय विन पंग वारो पंग आगमन राग सो हरत तेरो मांग के निहारे तें ॥ ४० बेनी वर्णन-त्रिभुवन पति के दरति दुष देषत हो सहज सुवास ऊंचो बास सोम रस है। नेह गुन सरसै पढ़ाई सुख सरसै वे तीनहू चरन को प्रगट सुदरस है। सब दिन एक सो महातम है सूरत यों नागर सकल सुष सागर परस है। एरी सुमनैनी पिकबैनी सुन दैनी अति तेरो यह बेनी त्रिबेनी ते सरस है ॥ ४१

इति श्री सूरति कवि विरचितं नख सिख बरननं समाप्तम् ॥ संवत १८८३ माघ वदी ९ नवमी मंद वासरे ॥ लिखित मिदं ।

Subject—राधा के चरन, जावक, पदनख एड़ी चरनांगुली, भूषन घमवट, नूपुर, पाइजेब वर्णन छंद १ से ८ तक ।

गति, कटि, त्रिबली, रोमराजी, उरोज, हाथ, कर भूषन, चूरी, भुजमूल, पीठि वर्णन । छंद ९ से १९ तक ।

ग्रीवा, तिल, मुख, अधर, दसन, रसना हँसी, वाणी और कपोल वर्णन छंद २० से २८ तक । नासिका, नथ, नेत्र, अंजन, नेत्रभाव, वरुनी, भृकुटी, श्रवण, भाल वर्णन छंद २९ से ३७ तक ।

अलक, केस, मांग और बेनी वर्णन तथा लिखने के संवत् का उल्लेख छंद ३८ से ४१ तक । चाँदनी वर्णन, अंधकार व शीत वर्णन के ३ छंद इसमें सूरत कृत और भी दिये हैं । इति ।

No. 419(c). Bihāri Satasaī ki Ṭikā by Surata Miśra and Isavi Khān of Āgrā. Substance—Country-made paper. Leaves—625. Size—$8\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—20. Extent—7,812 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Date of manuscript—Samvat 1973 or A. D. 1916. Place of deposit—Paṇḍita Śyama Bihari Miśra, Gōlāganja, Lucknow.

Beginning—विहारी सतसयी टीका ॥

सतसैया की टीका श्री मिश्र कवि सूरति कृत अमर चन्द्रिका व ईस्वी कृत टीका लिख्यते ॥ दोहा—मेरी भव बाधा हरौ राधा नागर सोइ । जा तन की झाईं परैं स्याम हरित दुति होइ ॥ १ सूरति कृत टीका—प्रथम मंगलाचरन यह कवि की विनती जानि ॥ प्रगटत अपनी अधमता अधिकाई सुनि आनि ॥ जितो अधम तितनो बड़ी भव बाधा यह अर्थ । उदि हरिबे को चाहिये कोऊ बड़ो समर्थ । नर बाधा कों सुर हरत सुर बाधा ब्रह्मादि । ब्रह्मादिक की व्याधि कों हरत जु स्याम अनादि । लखि राधा तिन स्याम को, बाधा हरत न कोइ । याते मो बाधा हरो राधा नागर सोइ ॥

End—अमर चन्द्रिका ग्रंथ कों पढ़ै गुनै चितलाय । बुद्धि सभा परवीनता ताहि देई हरिराइ ॥ ई० टी० इस जगह वाद के अर्थ वृथा के हैं । हेतार्थ दोहा को यह है कि अपने मत का झगरा वृथा है, क्योंकि जिनने सेवा है तिनने जानो नंद किसोर हो को सेवा है क्योंकि ब्रह्मा, सिव, सनकादिक, सब विष्णु हो है तो

जिनने जिसको पूजा मानो विष्णु को हो पूजा। अलंकार उपमा तिसको लक्षण। जहां वेद स्मृति पुरानादिक करि अर्थ पाइये सब ही को एक नंद नंदन लेइबो पुरानोक्ति है। जो परिसंख्या अलंकार है तो ताको लक्षण यह है कि एक थल को वरोज एक थल नंद नंदन को सेवन ठहरायो। यामें और देवन को अवज्ञा होइ। तातें परिसंख्यालंकार नहीं राख्यौ ॥ यद्यपि है शोभा घनो मुक्त में देष। गुहै ठौर को ठौर में तार में होत विशेष ॥ ७२७ निषेधालंकार ॥ जो संपति बहुतै बढ़ आनंद उपजै चित्त। यो दोनों न विसारिये हरि पद अपनो मित्त ॥ संभावनालंकार ॥ इति श्री अमर चंद्रिकायां अमर सूरति पद्मोत्तरे ईसवी कृत बिहारी सतसैया व्याख्यानो शत रस वर्नेनो नाम पंचम विलासः ॥ मिती पौष सुदी ५ संवत्, १९७३ विक्रमी ॥

Subject—विहारी के ७२७ दोहों की टीका है। सुरति मिश्र ने प्रथम पद्य में और कहीं कहीं अर्थ स्पष्ट करने को गद्य में टीका की है। उस पर ईसवी खां ने गद्य में टीका की है।

No. 420. Ravi Vrata Kathā by Surendra Kīrti of Gopachala (Gwālior). Substance—Country-made paper. Leaves—12. Size—12½ × 8 inches. Lines per page—22. Extent—662 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1740 or A. D. 1683. Date of manuscript—Samvat 1925 or A. D. 1898. Place of deposit—Sri Jaina Mandira (Barā), Bārā Banki (Oudh).

Beginning—अथ रविव्रत कथा लिख्यते ॥ चौपाई

प्रथमहि सुमिर जिनवर चौवास। चौदह से त्रेयत जु गुनोस। सुमिरौं सारद भक्ति अनंत। गुरु देवेंद्र जु कीर्त्ति महंत ॥ १ ॥ मेरे मन उपज्यो इक भाव। रवि व्रत कथा कहन को चाव। मैं तुक हीन जु अक्षर करौं। तुम गुण उर कवि मोके धरौं ॥ २ ॥ नगर बनारस उत्तिम थान। पारसनाथ जन्म कल्यान। सहस कोटि चैत्यालय बने। कंचन कलस जड़ित सो मने ॥ ३ ॥ वहै जु गंगा गहिर गँभीर। जिन कर गुन सम उज्जल नीर ॥ राजा के जो महल सोभंत। कंचन कलस दीपत्तजु महंत ॥ ४ ॥ हाट बजार भरे दीनार। देस देस के कोठी वार। पढ़ें सु पंडित वेद सुजान। बड़े ग्रंथ जसु धवल पुरान ॥ ५ ॥ बने बगीचा कूप विसाल। उपजै मेवा बहुत रसाल। चंपा पाडर करना जुही। पर फुल्लति बहु बागन बनी ॥ ६ ॥ निकल वेलि अरु मधवा जाइ। लता लवंग रही बहु छाय। नगर बनारस महिमा घनी। अमरापुर ते अतिही बनी ॥ ७ ॥ राज राज करै महिपाल।

बड़ी नोति सब के रछपाल। मति सागर तहँ सेठ ओहगे। जैन धर्म को टेक जु धरी॥ ८॥

End—रवि-व्रत तेज प्रताप गई लक्ष्मी फिर पाई। कथा करी धरनिन्द्र और पद्मावति माई। जहाँ गये तहँ रिद्धि सिद्धि सब ठौरन पाई। मिले कुटुम्ब परिवार भले सज्जन मन भाई। पढ़ै सुनै जो प्रात उठि, नर नारी अमु बुद्धि। धरनिन्द्र अरु पद्मावती होइ सर्वदा सिद्धि॥ वार वार अब कह कहैं, रवि व्रत फल जु अनंत। प्रभु धरनेन्द्र किरपा करी। दोनों लक्ष अनंत॥ दान मान जु करैं धरैं रवि व्रत जु ध्यान उर। जोग रोग भोग रस हित जपत उर माहि परम गुरु। सत सौच व्रत नेम जोग तीरथ फल पावै। रवि व्रत कथा कहंत सुनंत जो चित लगावै॥ सुरेन्द्र कीर्ति अब यों कहे रवि व्रत गुन रूप अनूप सार। पंडित सुत केशवदास कहि लीजो चूक सुधारि अब। १३५५ इति श्री रवि व्रतकथा सम्पूर्ण॥

Subject—(१) पृ० १ से पृ० ७ तक-मंगलाचरण। जिनादि बन्दना, काशी के राज्यान्तर्गत एक सेठ मतिसागर तथा उसकी सेठानी गुन सुंदरी के सात पुत्रों का होना और उनके वैभव का वर्णन। गुन सुंदरी का चैत्यालय जाकर मुनि से रवि व्रत लेना और घर आकर कहना। सेठ का व्रत की निन्दा करना सब द्रव्यों का नष्ट हो जाना, लड़कों का अयोध्या जाना सेठ जिनदत्त से आश्रय पाना, बालकों को भी व्यापारादि में क्रमशः हानि का ही होना। अंत में एक मुनि के आदेश से गुण सुंदरी सहित सेठ का पुनः व्रत साधन करना।

(२) पृ० ७ से पृ० तक—गुनधर (सेठ मतिसागर के पुत्र) की नागेन्द्र सेवा से धन धान्य की प्राप्ति और जिन मंदिर का निर्माण कराया जाना, उनके ऐश्वर्य से द्वेष करके उन्हें चोर बता कर अयोध्या नरेश से उनको शिकायत होना, राजा का भ्रम निवारण, राजा का अपनी प्यारी पुत्री प्रोतिमती का विवाह होना, अंत में राजा से आदर विदा लेकर काशी को लौटना और माता पिता से मिलना, व्रत के प्रताप से पुनः वैसे का वैसाही हो जाना बल्कि और भी अधिक धन तथा मान का होना, इस कथा के पढ़ने तथा सुननेवालों के फल का वर्णन,

कवि परिचय :—

अ—निवास स्थान, महोपाचल नगर भले शुभ थान बखाने॥

ब—वंश परिचय, देवेन्द्र कीर्तिमुनि राज भले तप तेज प्रमाने। तिनके पद सुरेन्द्र कीर्ति भट्टारक जाने।

स—ग्रंथ निर्माणकाल :—

संवत विक्रम जीत भलो सत्रह सै मानों। ता ऊपर चालीस जेठ सुदि द्वादश आनों। वार सु मंगल वार हस्त नक्षत्र जु पारियो। तम हर रवि व्रत कथा सुरेन्द्र कीरति शुभकारियो॥

८—महंत होने का वर्णन—

गर्ग गोत्र अग्रवाल ते हु नगर के जे हैं वासो। साह मह के पूत साद भाऊ बुध रासो॥ उनको बुद्धि मैं कौशिये वे पूरे गुनवंत। पंचम मिलि जो दया करी पायो पदज्ञु महंत॥

No. 142(*a*). Jānakī Vijaiya by Sūrya Kumāra. Substance—Country-made paper. Leaves—26. Size—8 × 6 inches. Lines per page—8. Extent—130 Anushṭup Ślokas. Appearance—Ordinary. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Rājā Bhagawāna Baksha Simhajī, Riyāsata Amethī, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनः अथ जानुकी विजय कथा॥ छन्द॥ जय जयति जय जगदम्बिका जननो अखिल जग जानकी॥ अति अतुल जासु प्रभाव गम्य नहि गति जानुकी। गुण तीनि पावरै तत्व माया त्रिगुण सगुण सरूप जो। प्रसिद्ध त्रिभुवन विभव भूषित अमित शक्ति सरूप जो। सोरठ॥ परत विषम भव कूप, सुर मुनि अहमित जोग मैं। चिदानंद मय रूप, जब लग जानि न जानकी॥ दोहा॥ जड़ अधि नासन जानकी राम वाम दिसि सोह। सुर नर मुनि सुमिरत सदा, होत विमल मद मोह॥ चरित नराकृत कीन्ह बहु सौम्य सुभग तनु धारि। जानको जिय मन मोह कछु जानि सु राजकुमारि। सत सिमित अस मन भयऊ सिय महिमा नहि जानि॥ विजय जानकी कथ करि कह्यो प्रसंग बखानि॥

End—छन्द॥ लीला अमित सिय राम यह अति गुप्त ग्रंथनि जो रहो। पावन करन हित (निज) गिरा परसिद्ध तुलसी कर कही॥ पदकंज जानुकि प्रीति युत जे सुनहि सादर गावहीं। सौभाग्य श्री संपति सदा कल्याण कोरति पावहो॥ सोरठ॥ श्री जानकि सुख धाम, तासु सदा मंगल भवन। कवि सुधाम श्रीराम तुलसी के प्रभु फल दवन॥ ० ॥ इति श्री जानुकी विजय रामायण सहस्र सो दिव्य रावन वध समाप्तम् सम्वत् १९०० शाके १७६५॥

Subject—इस में कवि ने रौद्र, वीर, भयानक तथा अद्भुत रस का उत्तम वर्णन किया है। रामचंद्र जी लंका को विजय करके सीता लक्ष्मण सहित अयोध्या को गमन करने को हैं; देवता तथा मुनीश्वर उनको प्रार्थना कर कृतज्ञता प्रकाश करके चले गये हैं। इतने हो में सब ऋषियों ने आकर रामचंद्र से उनके लंका विजयोपलक्ष में प्रशंसात्मक वाक्य कहे और जानकी जी को राजकुमारी बतलाया, सीता जो मुसकराई राम ने कारण पूछा, इस पर सीता ने बतलाया

कि अभी एक रावण सहस्र मुख का सात समुद्र पार वध करने को बाकी है, फिर क्या था राम ससैन्य उसके वध को चले। समुद्र स्वयं शुष्क हो गया। राम वहां पहुंच गए। राम की सम्पूर्ण सेना उस राक्षस ने उड़ा दी। केवल जानकी (सीता) तथा राम रह गये, राम से भी कुछ न हो सका अंत में सीता से प्रार्थना की उन्होंने उग्र रूप धारण कर राक्षस को नष्ट कर दिया। वह रावण मरते समय सीता जी में ही प्रवेश कर गया। अनेक शक्तियां जो उनके शरीर से ही उत्पन्न हुई थीं उन्हीं में प्रवेश कर गईं। इसपर सम्पूर्ण ऋषि मुनियों को सीता जी का प्रभाव ज्ञात हो गया। राम ने तो एक सागर को पार कर दस मुखवाले रावण को ही विजय किया था और यह उन्होंने सात समुद्र पार कर सहस्र मुख वाले रावण को नष्ट किया। इस प्रकार बड़े अच्छे ढंग से जानकी जी की विजय दिखलाई है। सब ऋषियों ने उनकी वन्दना की तब कहीं उनका उग्र रूप छिपा। पुस्तक संवत १९०० वि० शाके १७६५ सन १२५१ को लिखी हुई है।

No. 421(*b*). Janaki Vijaiya by Surya Kumāra. Substance—Country-made paper. Leaves—9. Size—8 × 6 inches. Lines per page 24. Extent—200 Anushtup Slokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1903 or A. D. 1896. Place of deposit—Paṇḍita Mahādeoji, Village Aurāhī, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशाय नमः अथ जानकी विजय लिख्यते। दोहा। चरित राम सत कोटि किय बिबिधि मुनिन्ह विस्तार। अद्भुत चरित विचित्र अति गुप्त प्रगट संसार॥ भरद्वाज मुनि सन कहत बालमीक इतिहास। नाम विचित्र रामायन विजय जानुकी जास। छंद॥ जय जयति जय जगदंबिका जननी अखिल जग जानकी। अति अमित जासु प्रभाव पावन गम्य नहिं मति ज्ञान की॥ गुन तीन पांचौ तत्व में सब सगुन निरगुन रूप जो। परसिद्ध त्रिभुवन विजय भूषित अमित सक्ति सरूप जो। सोरठ॥ परतपरम भव कूप सुरमुनि अहिमित जोग जे॥ चिदानंद में रूप जब लगि ज्ञान न जानकी॥ दोहा॥ जड़े विनासन जानकी राम बाम दिशि सोह। सुर मुनि सो सुमिरत सदा होत विगत मद मोह। चरित राम कृत कीन्ह बहु सौम्य सुभग तन धारि। जानकी जै मन मोह कछु जान सो राजकुमारी। सत विपिन भ्रम भयो अति सिव महिमा नहिं जानि। विजय जानकी ग्रंथ यह कहौं प्रसंग बखानि॥

End—दोहा—यहि विधि अस्तुति प्रेम युत बुध जन जयहि बखान। अभै दान दै देवि तब परम भयाकुल जानि॥ उग्र रूप जो त्यागि तो सौम्य सुभग तन

धारि। राम बाम दिसि बास हिय बहु विदेह कुमारि ॥ सुरगन बर्षहिं सुमन मन बाजहिं व्योम निसान। चले अवध प्रभु यान चढ़ि जय जय होति बखानि ॥ सिया राम राजत अवध जग अभिराम अपार। चरित चारु लखि लखि ललित करत अनेक प्रकार ॥ छंद ॥ लीला ललित सिय राम की यह गुन ग्रंथन जो रही। पावन कटक हित निज गिरा परसिद्ध भाषा कवि कही। पद कंज जानु विशेषि जुत से जे सुनहिं सादर गावहीं। यह लोक तजि बैकुंठ पैठे परम पदवी पावहीं। इति श्री हरि चरित्र मानसे सकल कलिकलुष विध्वंसनेनाम विमल वैराग्य पावनोनाम जानकी विजै कथा समाप्त शुभ मस्तु माद्रमासे कृष्ण पक्षे तिथौ चतुर्थ्याम चन्द्रवासरे संवत १९०३ शाके १७६८ सन् १२५४ लिख्यते ईश्वर सहाय रघुकुल के ॥ श्रीराम ॥

Subject—जानकी विजय में श्रीराम जी जब अयोध्यापुरी में रावण को मार कर आये और सिंहासन पर बैठे उस समय सब देवता और ऋषियों मुनियों ने पृथ्वी के भार उतारने की प्रशंसा की उस समय जानकीजी मुसकायीं श्रीराम जी ने मुसकराने का कारण पूछा तो कहा कि हजार सिर वाला रावण जब तक आपने नहीं मारा तो किस प्रकार पृथ्वी का बोझ उतारना कहा जा सकता है। श्रीराम जी ने उस रावण के निवास स्थान को सीता जी से पूछा। उन्होंने सात समुद्र पार बतलाया और उसकी बड़ी महिमा वर्णन की। श्रीराम जी तुरंत ही अपना कटक जो रीछों और बानरों व राजाओं का था लेकर पहुंचे परंतु महारावण श्रीराम जी से न मरा तब अपनी शक्ति की प्रार्थना की उस समय सीता जी ने सौम्य रूप को त्याग कर भगवती का रूप धारण कर और योगनी भूत प्रेत डाकिनी आदि लेकर महारावण को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। उस समय तीन लोक चौदह भुवन में बधाई बजने लगी देवताओं ने पुष्पों की वर्षा की और सीता जी (भगवती रूप) को सबने प्रणाम किया। इस प्रकार सीता जी ने विजय प्राप्त की। इसी का वर्णन इसमें किया गया है। कवि के नाम का छन्द नीचे दिया जाता है। प्रभु चरित्र अद्भुत किय सगुन रूप विस्तार। जानकि जिय मन मोर कछु जानि सबै कुमार।

No. 422(a). Jhagarā Rādhā Krishṇa of Suwaṁśa Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—19. Size—6 × 5 inches. Lines per page—12. Extent—180 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṁvat 1942 or A. D. 1885. Place of deposit—Ṭhākura Hanumāna Siṁha, Village Bardeha, Post Office Kherighāṭa, District Baharāich (Oudh).

Beginning—अथ टीका झगरा राधा कृष्ण का लिष्यते ॥ दोहा ॥ अमल कमल गनपति चरन सुमिरि सुवंस सुचित्त। करौं चकार हकार लौं दोहा सहित कवित्त ॥ सवैया ॥ आम्न पक लसैं हरि राधिका चंदन खोरि इतै उत रोरो ॥ मोर इतै सिर फूल उतै तन स्याम इतै उतै तन गोरो ॥ पट्टनि पीत पिछौरी इतै उत चोवरी चुनरि सो रंग बोरो। भाई सुवंस सुनो मन मोरे लषै निसि दोस मनोहर जोरो ॥ मसला ॥ भाई हतो हरि भजन को चोटै लगो कपास। दोहा। इत घनोषो ग्वालना उतै रसिक नन्दलाल। वरनौं रस झगरो सुनो चगरो परम विसाल ॥ सवैया ॥ इन्दु रजोलो लसै पद इन्दु मुषो सरिता घन मच जनु मेचक सारी। संभु समान उरोज दोऊ कटि केहरि दीठि मनो पनिधारी। भाषै सुवंस मरालन को गनै माते मतंगन को गति हारी ॥ जाति चलो दधि बेचन को लिय लेति जगाति जहां गिरधारी। म. इर्षा जानै पंरोसिन को निवाह कहौ कैसे।

End—हरषि हरषि हरि को चरित, जे सुनि है चित लाइ। ते जग मों सुष को करैं सकल संपदा पाव। हरि को हिय में धरि ध्यान कहीं यह है भव सागर को तरने ॥ सो ससि मैं ससि चंद्रक वार। हतो सित पक्ष चतुर्दस को मरनो महि नंदन वास सुवंस कहै दुष दोरघ दारिद को हरनो। नद नंदन पौ नव नागर को रस को अगरो झगरो वरनो ॥ मसला। हरदा के साथ कपिला का विनास ॥ दोहा ॥ कियो चकार हकार लौं जानै सबै सुजान। छंद दोहरा कवित सो यों प्रसन्न उपपान ॥ सवैया। छूटन सारो समुद प्रभेद सितारो सुन्दै बुधवंत न जानो। पोर उपाय न देषि परो तव वायु बुझावन को मत ठानो। ठेकि चलावै सबै मिलि कै यह जानि सुवंस प्रकासि वषानो ॥ याहि पढ़े सब पंडित मापत मारुत मंद बहै मन मानो। इति श्री ठेकि झगरो राधा कृष्ण सम्पूर्ण।

Subject—इस ग्रंथ में राधा कृष्ण का झगड़ा है दोनों रूपों की शोभा और श्रृंगार बताया गया है।

No. 422(*b*). Rāmacharitra by Suwansa Kavi of Terha (Unnao). Substance—Foolscap paper. Leaves—24. Size—9 × 5 inches. Lines per page—24. Extent—360—Anushṭup Ślokas. Complete or not—Complete. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1879. Place of deposit—Baba Banamaladāsa Gundā (Rāe Bareli).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥
रघुकुल के चरित की महिमा अपरंपार, का सुवंस कवि कहि सके सेस न पावत पार ॥ बरन्यौ राम चरित्र बोस तरा के छंद ते। सुनौ चाउ करि मित्र

तिन को अब लच्छन कहौं। रस गिरि वसु औ चन्द्रमत। संवत वरष विचार। अस्विन पषाढ़ एकादशी रामचरित अवतार॥ तपनि के विस्वामित्र मुनि वा कात्यायन सुत जय। त्यहि वंस में अवतंस कनवज मांहि चिन्तामनि भये। तिनके तनय अय राम अरु अनिरुद्ध केसोराम थे। कहं लों सुवंस बखानाई जिनके कलपतरु काम थे। सुत जुगुल केसोराम के भे हरी माधो अति लसे। ते पितु मोद बढ़ाइ दुनौ भाइ सुठि धाम बसे। प्रकट हरी के चार सुत जेठे गोवर्द्धन जानिए। अरु मारकंडे मनो भवन प्रसिद्ध सिद्धवर बानिए। भे मारकंडे मिश्र के सुत पांच लीला धर जसो गुनखानि कासीराम विद्यापति विराजे ज्यों ससी। सुखमै सुदामा परम पुरुष प्रकट रागेस्वर भए॥ सुत पांच लीलाधर मिसिर के जानु गुन मन छित छय। अनरुद्ध राजा राय जाहिर महामुनि मन मानिए। गुनगाथ जागेस्वर सुखद अति प्रेमनाथ बखानिए॥ ये तने राजाराम के भे छेदराम प्रथम कह्यो। मतिराम वे सोतल प्रसाद सुधर्म सुख पूरन लह्यो। सोतल प्रसाद सुबुद्धि के द्वै पुत्र भे तनु द्वै लसो। सुख दानि बाबो लाल औ रिषिनाथ साधु महाजसो॥ सुमति मिश्र रिषिनाथ के सुत भे साधोराम। कलियुग में निस दिन करत सब सतजुग के काम। साधोराम सुवंस पै जितनो करी सनाह। सोतो रसना एक सों कैसे बरनो जाइ। जासो बिन श्रम ही मिले चारि पदारथ मित्र मंगलाचरण एक श्लोक सोरा कह्यो बरनौ राम चरित्र। मंगल करन कृपाल विघनहरन दारिद्र दरन। करिवर दया दयाल लंबोदर करिवर बदन। जटाजूट सिर गंग भालचंद गर गरल अहि। आदि शक्ति अरधंग महादानि संकट द्रवो॥ चरन कमल गुरु के सुमिरि साधुन को सिर नाइ, राम कृपा ते राम को चरित कहौं सुखदाइ। अमित राम अवतार हैं अमित कथा विस्तार, मोहूं कहत हौं एक बिधि निज मति के अनुसार।

End—अब ते रघुनायक राज्य करो। जुग आदि को कीरति भवे बगरो। उत्पन्न धरा सब सस्या करैं। सब जीव सुखी न अकाल परैं। जल देत बला तक त्रिस चह्यो। वर वारि सदा परि पूरि रह्यो। सुरगो सम धेनु भई सगरो। अमरावति शील लसो नगरो। नर नारि उदार गुनाढ्य जसो। हढ़ संपति गेह न गेह बसो। उतसौ दिनहू दिन होन लगो। नर नारि सुधर्म सुनीति पगो। दारिद्र के दारिद्र भयो रोगहि के भो रोग। दुख के दुख भ्रम के भ्रमे सोकहि सोक संजोग। मातु पिता गुरु को करैं सेवा प्रेम बढ़ाइ। कहैं सुनै हरि हर कथा नर नारी मनुलाइ। धर्मवंत नृप को प्रजा साजति सब सुख साज। रीति तहां को क्या कहौं जहां राम महराज।

Subject—१—राम चरित्र वर्णन में कवि की असमर्थता का वर्णन। निर्माण संवत वर्णन।

२—साधो राय का कुल वर्णन।
३—मंगलाचरण आसुरी समय का वर्णन।
४—भूमि का गो रूप वर्णन।
५—शिव स्तुति।
६—माता का वात्सल्य वर्णन।
७—बालक्रीड़ा वर्णन।
८—बारात की शोभा वर्णन।
९—भोजन सामग्रियों का वर्णन।
१०—गारी गावन
११—लक्ष्मण परशुराम का वर्णन।
१२—सेवक धर्म वर्णन।
१३—जाति ब्रह्म धर्म वर्णन।
१४—भातृ भक्ति वर्णन।
१५—केवट प्रेम वर्णन, राम निवास स्थान वर्णन।
१६—भरत कैकेई संवाद वर्णन।
१७—लक्ष्मण का क्रोध, सैन सुरसरी का वर्णन।
१८—वृद्धा अनुसूया के सिर कंप, राम प्रतिज्ञा, पंचवटी का वर्णन।
१९—खरदूषण प्रलाप, मायामृग का वर्णन।
२०—जटायु युद्ध, दुःख के कारणों का वर्णन।
२१—राम बालि तत्वज्ञान महावीर का बल वर्णन।
२२—राम रूप, लंका दहन, रामदूत, रामकी उदारता वर्णन।
२३—रावण की सभा में अंगद का संवाद वर्णन महल्ला में हल्ला घन घोर युद्ध वर्णन।
२४—जगत में दुःख के कारण, राज्यश्री मद और राम राज्य का वर्णन।

No. 422 (c). Sphuṭa Kāvya by Suwanśa of Terho (Unāo). Substance—Foolscap paper. Leaves—30. Size—9 × 5 inches. Lines per page—22. Extent—330 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābā Banamāla Dāsa, Gunda, Rāe Barelī.

Beginning—श्री गणेशायनमः

राखे सदा जन को मन भीमते, पार करे प्रन पातक नाये। नाये कुरूप कुबुद्धि सुबुद्धि दै बोलत हैं हिय की वर चांखे॥ चांखे निहारत देव अदेव जे बेद

पुरान सदा गुन गावें । गावें सुबंस हिये धरि ध्यान गनेस कलेस को लेस न राखें ॥

जा हरि को चारि मुख चाउ सों विचारो करै धारा करैं ध्यान ध्यानो ध्यान में न पावहीं । जा हरि विधि मुनि मनन करत रहैं जा हरि को बन बीच तपी तन तावहीं ॥ जा हरि को गाठो जाम सुकवि सुबंस कहै धाम छोड़ि बीना लीन्हें नारदादि गावहीं । ता हरि को गोप नारी हंसि हंसि हेरि हेरि चारि पग चले चूमि कलिया लगावहीं । गुलुफ गुलुफ ते वे मन को कुलुक करो करतो बिहार तापै बारता सो ऊबरु । गुंथो मखतूल सों न तुलि है तरनि तेज फूल कर फूलो सदा मूल हरस गुरु ॥ सुकवि सुबंस कहै जटी नग जालन सों हरतो जंजाल हाल मोहैं मन भूबरु । मंदरव करतो मरालन के बाजन को मंद मंद बाजतो गुविन्द पांच घूंघरु ॥

End—दसन दिखाइ चरु उदर चलाइ बांधि मिथ्या के पबंध लघु लोगन को जांच्यो में । चरित लषे रस के गाइ के रिझाय मूढ़ झूठो मन जानि झूठो ठहरायो सांचो में । लोभ के बजाइ बाजा सुकवि सुबंस कहै यहि मता मैज अपमान कहौं बाच्यों में । भरत के भैया मेरो बिनति हरैया राम तोहि बिन जांचे तो अनेक नाच नाच्यो में ।

महुरे हरि के पद पंकज तू परि पूरो सिवाखन है महुरे । महुरे जग झूठो है देखु चितै हरिनाम है सांचो सोइ कहुरे ॥ कहुरे न कहुं पराइ की बात सुबंस कहै कोऊ तो महुरे । महुरे मन तोसों करौं बिनती रघुनाथ निरंतर को महुरे ॥ छोड़ि अनीति की नीति गहो हरु साधु को संग करो सब जामै होइ उजो हरि लीला सुनो पढ़ राखो सदा करुणा हिय थामें ॥ थामें वैठो सदा शिव लोक में ध्यावो सुबंस कहै सिय रामै । रैमन चंचल चीकनो चाहि चुमै मनि चंद मुखीन के चामै ॥

Subject—

पृष्ट

१—५ गणेश स्तुति, बालकृष्ण का वर्णन ।

६—१० बसंत और वर्षा ऋतु का वर्णन ।

११—भंग (विजया) प्रशंसा वर्णन

१२—१५ राजा रघुनाथ सिंह के शिष्यों का वर्णन ।

१६—१९ राजा रघुनाथ सिंह और सुदर्शन के घोड़ों का वर्णन ।

२०—राजा सुदर्शन की तलवार का वर्णन ।

२१—वीर रस वर्णन ।

पृष्ट
२२—दानवीर दयावीर के उदाहरण ।
२३—रौद्ररस के उदाहरण ।
२४—करुणा रस के उदाहरण
२५—हास्य रस ग्रोर भयानक रस के उदाहरण ।
२६—२७ वीभत्स के उदाहरण ।
२८—भक्ति भाव वर्णन ।
२९—गंगा महिमा वर्णन ।
३०—भक्ति उपदेश वर्णन ।

No. 422(*d*). Umarāo Koṡa by Suwamṡa Ṡukla of Bisawañ. Substance—Country-made paper. Leaves—92. Size—12×6 inches. Lines per page—44. Extent—2,530 Anushṭup Ṡlokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1862 or A. D. 1805. Date of manuscript—Samvat 1942 or A. D. 1885. Place of deposit—Paṇḍita Vipina Behāri Miṡra, Brijarāja Pustakālya, Village Gandauli Post Office Sidhaulī, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ उमराव कोष लिख्यते ॥ दोहा ॥ सिद्ध करन पसरन सरन दारिद दरन दयाल। मन मायक दायक सदा गो मायक गणपाल ॥ छप्पय ॥ करत दान कल्लोल केलि कनरव को करि करि। फेरत सु'डा दंड प्रतिछाया को धरि धरि। मुका से श्रव कंद परत आनन ते झरि झरि। सब शक्ति महिलोन सुते आनंद उर भरि भरि। उर लाय लनकि चुमति बदन यह सुवंस मान्यो परषि। सुपदेव नृपति उमराव को उमा उमा नंदनि हरषि। अथ राज थान वर्णन ॥ घना अरी ॥ जामे चारो वरन करन के समान देषे वे भरम चारो पाप धरन हंसत हैं। देवी देवता ले नर नारि नीति रीति गहै प्रीति देवता को दिन दिन सरसति है। सुकवि सुवंस कहै रतन घमोल जड़े मानो भूमि भाग को विभूषन लसत है। देश देश जाहिर नरेश यों बषानि करैं वेस पौध मंडल मैं बिसवां बसत है।

End—मोचा नाम। केरा समर ये दुवैा मोचा नाम प्रधान। भानु भेष पर्वत भयो य कवि कहत सुजान। इड़ा नाम। सनि बसुधा पुनि वाक गनि मदिरा घेरो नोर। इड़ा कहत पांचैा विषै जे कवि गुनी गंभीर। स्याम नाम निज धन घन पुनि जात गनि सुत निज वस्तु सिहारि। ये चारो को स्या कहैा सुकवि सुवंस विचारि। ककुद नाम। कोष पुष्प नृपचिन्ह अब इन्है ककुद है

नाम। कुंदकली तारा मघा मघा जुगल वुध धाम ॥ सत नाम ॥ साधु सत्य पुनि श्रेष्ठ गनि श्रौर प्रसस्त मन मानि। ये चारौ को सब कहौ सुकवि सुवंस बखानि॥ चै० वर्ग विशेष विप्र है मित्र। सहित अनेक अर्थ विचित्र। ऐसे छंद सत्ततरि। दार कांड तीसरे में है बुधिवर। युग रस वसु पह निशा पति संवत वर्ष विचारि। माघ कृष्ण प्रतिपदा को भयो ग्रंथ बैातार। ग्रंथ संज्ञा॥ वर्ग वोस श्रय कांड त्रय छिति रस वसु ससि छंद। भाषा शुक्ल सुवंस कवि करि के महानंद॥ इति श्री विश्वनाथ पुरा पंड मंडल धराधोस चैाधरी शिवसिंह वंसावतंस उमराव सिंह कारिते शुक्ल सुवंस विरचिते उमराव कोपे समाप्तम्।

Subject—एक शब्द के अनेक नाम दिए हैं।

No. 422(*e*). Umarao Vrittakār by Sawamśa Śukla Kavi of Viśwanāthapura. Substance—Country-made paper. Leaves—55. Size—8 × 6 inches. Extent—770 Anushṭup Ślokas. Appearance—Ordinary. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1898 or A. D. 1841. Place of deposit—Ṭhākura Mahābīra Baksha Simhaji, Raisa Tālukedār, Village and Pargana Kothārā Kalān, District Sultanpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः दोहा॥ गणपति गैारि गिरोश गिरि गुरु गोपालहि ध्याइ। कवि सुवंश उमराव को देत श्रसोस बनाइ॥ १॥ छप्पै॥ जब लगि गणपति गैारि गिरा गंगा गंगाधर। जब लगि गवूड़ जोन्हाइ गगन गुह्यक पति गिरिधर॥ जब लगि पन्नग राजपुरी श्ररु प्राग पुरंदर। जब लगि सातों सिंधु सिंधु की सुता सुधाधर। कहि सुवंस जब लगि ध्रुव चिरंजीव मुनि शंभु सुत। तब लगि राजा उमराव नृप करौ सकल संपति सुत॥ दोहा। गुरु लघु वष्ट उदिष्ट श्ररु मेरु पताका जानि। सहित मर्कटी चक्र ए प्रथमहि कहौं बखानि॥

End—श्रथ द्विंत्रिंश श्रक्षर प्रस्तार। दोहा॥ सोरह सोरह पै विरति गुरु लघु मेला मानि। बत्तिस श्रक्षर श्रंत लघु छंद जलहरन जानि॥ ७३॥

यथाः—जलधर सम स्याम तनु श्रभिराम राजै पारद जुगल पट बोजुरी सोहै बिसाल। काछनी कलित कटि तट मैं सुवंस कहै कर परवेनु चारु गोर मैं पुहुप माल। कुंडल कनक जड़ित मणि कानन मे सीस मैं किरोट श्ररु केसरि को श्रौरि भाल। पेरे मन मेरे ऐसा रुप हिये धारि कहौ श्राठो जाम कहौ गोपाल गोपाल गोपाल॥ इति जलहरन। श्रथ हरिगोत छन्द॥ जब लगि विधाता वेद हैं श्ररु शेष हरिजस को कहै। तब लगि विदित वसुधा विप उमराव वृत्ता कर रहै॥ श्रादि

के पढ़े ते श्रम बिना वर वृत्त को रचना करै। कविराज है हिय मे सुवंस कहै सदा सुष को भरै ॥ २७५ ॥ इति श्री विश्वनाथ पुरा पंड मंडल धराधीश चौधरी शिवसिंह वंशावतंस उमराव सिंह कारिते शुक्ल सुवंस विरचिते उमराव वृत्ताकरे वर्न वृत्त वर्ननोनाम पंचमोल्लास समाप्त संवत् १८९८ मिती पौष कृष्ण पक्षे त्रयोदस्यये रविवासरे पोथी लीषा ईसरी प्रसाद शुक्ल साकोन पोछौरा शुभ मस्तु ॥

Subject—(१) पृ० १ से पृ० ५ तक प्रथम उल्लास, गुरु लघु विचार मात्रा का प्रस्तार, मात्रिक गण, चतुष्फल नाम, त्रिकल नाम, गुरु नाम, लघुनाम, अक्षर गण, गण फलाफल। द्विगण विचार, द्विगण फलाफल, दग्धाक्षर, मात्रा मेरु, मात्रा मर्कटी।

(२) पृ० ५ से ६ तक —द्वितीय उल्लास, उदिष्ट, वर्ण मेरु, उदिष्ट नष्ट मर्कटी वर्ण तथा मात्रा दोनो के संबंध से।

(३) पृ० ७ से पृ० २४ तक—तृतीय उल्लास, छन्द लक्षण, समवृत, विषम वृत, उक्तादिक नाम, गाहा, उपगीति, गाहिनी, सिंहनी, अस्कंधक, हरिगीत वर्ण भेद, भ्रमर, सरभ, मंडूक कर्कट, करभ, मदकल, पयोधर, बलवानर, त्रिकल, कमठ, मच्छ, सिंह, अहि, बाघ, बिलाई, सुनक, सर्प, दोला, मंथानक, वृत्ता, उल्लाला, षट पद प्रकरण, पज्झटिका, धवल, पाधाकुलक, कुंडलिया, मधुलध्वनि, भूलना, सारठा, चकोर, सिंहावलोकिता, त्रिभंगी, दुर्मिला, मनहरण इत्यादि, छन्दों के लक्षण।

(४) पृ० २५ से पृ० ४० —तक—चतुर्थ प्रकाश, वर्ण वृत्ति वर्णन, छन्दों के नाम, ताली, शशी, प्रिया, पंचाल इत्यादि के लक्षण,

(५) पृ० ४१ से पृ० ५० तक पंचम प्रकाश २३ अक्षर तक का प्रस्तार। अंत मे अपने आश्रय दाता का परिचय कवि ने दिया है।

No. 423. Pāṇḍava Yaśendu Chaṇdrikā by Swarūpa Dāsa (Rasāla). Substance—Country-made paper. Leaves—197. Size—Lines per page—18. Extent—3,103 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1892 or A. D. 1835. Place of deposit—Paṇḍita Ganeśa Bihārī Miśra, Golāganja, Lucknow.

Beginning—श्रीगणेशायनमः अथ रसालकृत बाबनो पांडव येसेंदु चंद्रिका लिख्यते ॥ श्लोक ॥ गुणालंकारिणो वोरो ॥ धुनस्ता अविकारिणो। भूमारहारिणो वंदे नर नारायण बुभो ॥ १ ॥ दोहा ॥ ध्यान कीरत वंदना, त्रिविध मंगलार्चन।

प्रथम चतुसटप बीच सोई भये भिवा सुभ कर्न ॥ २ नमो अनंत ब्रह्मांड के सुर भूपन भूप। पांडुव येसंद चंद्रिका बरनत दास स्वरूप ॥ ३ ॥ स्वामी के पीछे रहे यादि होय उचार। नरनारायन सब्द कु दास स्वरुप विचार ॥ ४ ॥ घनाक्षरी ॥ गरल तै भीम कै सुज्वाला हू ते पांचहू कै ॥ द्रोपदी कै सभा थे। विराट वन तीन वार। किरीटी कै अपछर के श्राप ते युधिष्ठिर कृमा (इससे आगे पृष्ठ ढो और तीन नहीं हैं) पृष्ठ ४ ॥ कोसंवे पत्र हैं बरन्यो स्वरूप किरीटी के स्वारथी सहायवे कर हिये। १२ ॥ कि प्रयोजनं सवैयो ॥ पावैन करो गौन हरि दिस फेरिये पात्र चेले न चेले ॥ लोभ द्वेते करिवान हरि फिर दास स्वरूप हुले न हुले तेन श्रोते लघो रूप विराट को फिरये नैन पिले न बोले। श्रोन छेते हरि कोरति कुमुनि फिर ये श्रोन मिले न मिले ॥ १३ दोहा ॥ लाभ जिव का सुजस को पुनि परमारथ सांच विघ्न सांति परलोक कि सिद्धि प्रयोजन पांच ॥ १४ ॥ मेरे पांचो हैं मेरि जीवका हरि हरिदास कि तीन ग्रंथ कियों जास भो है पढ़ें गोजिनै कौं बुद्धि सुकर्म प्रातो परमारथ ग्रंथ विघे विघ्न सांतिः परलोक सिद्धि है हो श्री हरि कौ हरिदासन को मिश्रत यसः सांक लीन। करकंज निसा चंद्रन्यायेन ॥ १५ ॥ अष्टादस परब शुचि मंत्र प्रथम आदि पर्व शुचि ॥

End—श्लोक वैश्नवानां यथा शंभु देवानां गरुड़ध्वजः नदीनां च यथा गंगा साख्यानां भारती कथा ५० इदं भारत महाख्यानंमः पठे अनुयानरः पश्वमे-धाअधिकं पुन्यं लभते नात्र शंशयः ५१ इदं श्रुत्वा यथा शक्त्या ब्राह्मणान् भोजये-न्नरः हित्वासाय समूहं च हांते विष्णु पदं व्रजेत्। ५२ दुहा मोहि जस सुनो किना सुनों अनजस सुनो जहर पैसो श्रीमुप को वचन सुन्यो निकट यह दुख्द् ५३ ॥ फिर चाकर जस होन तै ठाकुर कौ अधिकार। दरसत यह विख्यात है पै का कहूं पुकार ५४ ॥ ताते कोनी चंद्रीका मेरो मति अनुमान। भक्त संग प्रह भक्ति कौ देहु कृपानिध दान ॥ पंगुल गुंगो रोज जुत वनिक क्षुधातुर जोय। मय जुत बाल नोव अचप सुनत अनाय सदोय। ५६ कवित—ज्ञान थे विराग दोउ पायन विना हुं पंगुः भक्ति सारे तेहों गुंग हो निहारोगे। त्रिधाता परोगी कर्म वानिज वनिक हं मैं भूपो दसधा को के ३ जन्म को विचारोगे। काल भीत बाल वुध आतमा है अबला थो अंच तत्व अंजन विनाडु नैक धारोगे। येक अंग के अनायः ताके विकै सुनै हाथः या पंत मैं अनाथ नायः क्यों विसारोगे ५७ छप्पैयः पंगु कुबज्या संमति गुंग जम जम लाछु न गावत रोगी माधवदास वनितर लोचन ध्यावतः क्षुधित सुदामा विप्रः भीत जुत व्रज को भा।

Subject—भगवान को वंदन को कथा। २ और ३ पृष्ठ नहीं हैं।

४—ग्रन्थ को महिमा वर्णन (अष्टादश रूपी मंत्र) प्रथम आदि पर्व सूची। जन्मेजय से लेकर भरत नल और पांडु आदि को जन्म कथा, लाक्षागृह,

हिडंब, बकासुर वध, द्रौपदी स्वयंवर अर्ध राज्य पाना, बनवास, अर्जुन सुभद्रा विवाह खांडवदाह, धनुष, सभा का वर्णन इसमें २२७ अध्याय और ८०,८४७ श्लोक अनुष्टुप हैं।

५—सभा सूची—नारद द्वारा सभा का वर्णन राजसूय यज्ञ का वर्णन, चारों दिशाओं की दिग्विजय, भीम द्वारा शिशुपाल वध, सभा में दुर्योधन का अपमान होना, जुवा खेलना चीर हरण, ससुर से वर पाना, पुनः जुवा खेलना, और बनवास वर्णन, इसमें ७८ अध्याय हैं २५११ श्लोक हैं, इसी प्रकार वन पर्व की सूची उसके अध्याय और श्लोक संख्या का वर्णन।

६—विराट पर्व की सूची, अध्याय और श्लोक—संख्या वर्णन, उद्योग पर्व की सूची अध्याय और श्लोक-संख्या वर्णन, भीष्म पर्व की सूची अध्याय और श्लोक—संख्या—वर्णन, द्रोण पर्व की सूची अध्याय और श्लोक संख्या वर्णन।

७—कर्ण पर्व की सूची। अध्याय और श्लोक—संख्या वर्णन। शल्य पर्व की सूची और अध्याय और श्लोक संख्या वर्णन।

८—सौप्तिक पर्व अध्याय और श्लोक संख्या वर्णन, स्त्री पर्व सूची अध्याय और श्लोक—संख्या—वर्णन, शांति अनुशासन पर्व सूची अध्याय और श्लोक संख्या का वर्णन, ९ अश्वमेध पर्व सूची अध्याय और श्लोकसंख्यावर्णन, व्यासाश्रम सूची अध्याय और श्लोक संख्या वर्णन, १०—मूसल पर्व सूची अध्याय और श्लोक संख्या वर्णन महाप्रस्थान, पर्व सूची अध्याय, और श्लोक संख्या वर्णन, स्वर्गारोहण सूची अध्याय और श्लोक संख्या वर्णन। ११—सम्पूर्ण महाभारत अर्थात् अष्टादश पर्वों के अध्याय और श्लोक संख्या वर्णन, अश्व सेना की संख्या सवार सहित वर्णन, १२—अष्टादश अक्षौहिणी सेना की संख्या और विवरण वर्णन। १३—१५—संस्कृत छंदों की नामावली, वर्णाष्टक छंद वर्णन, गुरु लघु का वर्णन, सम विषम छंद वर्णन, वृत्य छंद भेद वर्णन, वर्ण मात्रा और मात्रावर्ण का वर्णन। गणों का विचार और छंदों का वर्णन। १६—२२—साहित्य के छः अंग (छंदवृत्ति, २ नायिका, ३ अलंकार ४ रसशब्द, ५ पंचमारी तिमधा। ६ कन्यादि त्रिया) देववाणी, संस्कृत, भाषा, विभक्ति, समास, वचन, लिंग वर्णन, काल वर्णन, काव्यदोष वर्णन, रस वर्णन, भाव, विभाव, अनुभाव, आलंबन, उद्दीपन आदि वर्णन, शृंगार रस की प्रधानता वर्णन, संयोग वियोग वर्णन, हाव भाव वर्णन। २३—अनुप्रास वर्णन, नायिका भेद वर्णन, स्वकीया, परकीया, सामान्या इनके अन्य भेद वर्णन। दर्शन, स्वप्न, चित्र, साक्षात, दर्शन, वर्णन, प्रकृति, राजसी, तामसी, तालसुर और ऋतुओं का वर्णन। २४ आठ नगन से करैउ छंद, आठ जगन से जोवक, आठ रगन से बोधक, २५ दोहा, चौपाई,

वैताल, त्रिया छंद छंद वर्णन, नपुंसक छंद सोरठा, पद्धरी, पद्धाकुलक नरायनी, कवित्त, घनाक्षरी आदि का वर्णन, २६—अलंकार सूची उपमा सूची, अष्ट लुप्तोपमा वर्णन। वर्णधर्म उदाहरण, श्वेत उदाहरण, २७—कृष्ण उदाहरण, रक्त उदाहरण, पीत उदाहरण। २८—आकृति वर्णन, २९—गुण आकृति उदाहरण ३०—गुण उदाहरण, अनन्य अलंकार, अनुज्ञा अलंकार वर्णन, भाव सावल्य वर्णन। ३१—सम अलंकार, व्याज स्तुति अलंकार, व्याज निन्दा, अलंकार, एकावलि अलंकार, मुद्रिका अलंकार वर्णन, प्रहर्षण अलंकार, प्रश्नोत्तर अलंकार, विभावना ॥ अलंकार। ३३—अनुगुना अलंकार, एकान्हेकी अलंकार वर्णन, ३४—काकोक्ति अलंकार वर्णन, शापकालंकार, ३६—दोषादोष वर्णन। ३७—समास लक्षण, गीटिका उदाहरण, वैदर्भी लक्षण उदाहरण ३८—लाट लक्षण उदाहरण लाटानुप्रास, छेकानुप्रास रस सूची—शत्रु मित्र स्थायी स्वामी वर्णन। ३९—४१—सात्विक अंग वर्णन। ४३ तक शब्द से शृंगार, रूप से शृंगार रस से शृंगार, गंध से शृंगार वर्णन, महाभारत आरंभ—४४ से ब्रह्म, अत्रि, चन्द्र, बुध, पुरुरवा, नहुष, ययाति, पुरु, रौद्राश्व, कन्येयु, अनावृष्टि, मतिनार, तंसु, इलिन, दुष्यंत, भरत, भूमन्यु, सुहोत्र, हस्ति, अजमिढ, ऋक्ष, संवर्ण, कुरु, जन्मेजय, धृतराष्ट्र, देवापी, शांतनु, देवव्रत, विचित्रवीर्य, चित्रांगद पांडु, वाल्हिक, विदुर पांडव, कौरव आदि की उत्पत्ति क्रम से कथा सहित वर्णन। ४५ तक द्रोण की उत्पत्ति से लेकर भीष्म तक आने की कथा वर्णन।

४६—से ४९ कौरव पांडव का विद्यार्थी कथा का वर्णन, कर्ण का वन में मुनि से वर और शाप पाने का वर्णन और विद्या में निपुण होने पर परीक्षा के दिन तक की कथा का वर्णन, अर्जुन के यश से सुयोधन को ईर्षा द्वेष होना, और कर्ण का अर्जुन से लड़ने को तैयार होना परन्तु दासीपुत्र होने से अधिकारहीन बताना और सुयोधन द्वारा अंग देश का राजा बनाने का वर्णन।

५०—धृष्ट प्रद्युम्न और कृष्ण की उत्पत्ति कथा वर्णन। द्रुपद और कौरवों का युद्ध वर्णन, भीम को सुयोधन द्वारा विष दिए जाने का वर्णन।

५१—सुयोधन का पिता से राज्य अधिकार पाने के लिये कहना और पांडवों को वारणावत उत्सव देखने के बहाने भेजने का षड्यंत्र रचना। लाक्षागृह का निर्माण होना और विदुर द्वारा युधिष्ठिर का सचेत होना वर्णन।

५२—भीलनी और उसके पांचो पुत्रों का लाक्षागृह में जलने का वर्णन।

५३—हिडिंब वध और हिडिंबा के साथ भीम का ब्याह होना वर्णन।

५४—पांडवों का द्रुपद देश जाना, द्रौपदी स्वयंवर वर्णन, द्रौपदी का रूप वर्णन, अर्जुन द्वारा मीन बेधना वर्णन।

५५—सहदेव का माता से वस्तु प्राप्ति वर्णन। और माता का पांचों भाइयों के भोग की आज्ञा, युधिष्ठिर का यह जान धर्म संकट में पड़ना, व्यास द्वारा, पूर्व श्राप का वर्णन और द्रौपदी का विवाह वर्णन, सुयोधन का पांडवों को जीवित देख शोक करना वर्णन, और पांडवों के नाश करने का उपाय सोचना।

५६—विदुर का धृतराष्ट्र से पांडवों को आधा राज्य देने के लिये कहना, पांडवों को बुलाकर आधा राज्य देना, और कुछ दिन युधिष्ठिर का राज्य करना, नारद का आना और युधिष्ठिर को आशीर्वाद देना।

५७—द्रौपदी के भोगने का नियम वर्णन, एक ब्राह्मण का संकट में पड़ना, अर्जुन का शस्त्र लेने जाने के कारण नियम भंग होना।

५८—अर्जुन का वनगमन, उलोपी के साथ विवाह वर्णन, उससे पुत्र बभ्रुवाहन का होना, गिरि पर यदुवंशियों का मिलना।

५९—और अर्जुन का सुभद्रा हरण—वर्णन बलभद्र का क्रोध करना, और कौरवों का नाश करने का विचार करना, तथा श्रीकृष्ण द्वारा समझाना और दहेज देने के लिये कहना।

६०—खांडव में जमुना तट विहार श्रीकृष्ण और अर्जुन का वर्णन, अग्नि का ब्राह्मण भेष में आना और खांडव भस्म करने के लिये अपना अन्न होने का वर्णन, खांडव वन दहन और मय दैत्य की रक्षा, मय द्वारा सभा भवन निर्माण करना भीम को गदा देना और देवदत्त को शंख देने का वर्णन युधिष्ठिर से सब समाचार कहना, द्रौपदी से पांच पुत्रों की उत्पत्ति वर्णन सुभद्रा से अभिमन्यु का होना।

६१—सभामंडप की शोभा और विचित्रता वर्णन, अर्जुन आदि का दिग्विजय करके आना, श्रीकृष्ण को निमंत्रित करना, और जरासिंध का विजय न कर सकने का वर्णन, श्रीकृष्ण और भीम का जरासिंध से युद्ध करने जाना और भीम द्वारा जरासिंध वध तथा

६२—उसके पुत्र सहदेव को श्रीकृष्ण द्वारा राज्य देने का वर्णन, यज्ञकार्य भार सौंपने का वर्णन सुयोधन को भंडार कार्य सौंपने का वर्णन। यज्ञ समाप्त होने पर श्रीकृष्ण की पूजा पर शिशुपाल का क्रोध और कृष्ण द्वारा वध होना।

६३—सुयोधन का मय दानव की सभा देखने आने और भ्रम होने का वर्णन, नकुल और द्रौपदी के हंसने से अपमान समझ क्रोधित होने का वर्णन, सुयोधन का माता पिता से पांडवों के वैभव का वर्णन।

६४—पांडवों के समान वैभव पाने को सुयोधन का इच्छा का वर्णन, धृतराष्ट्र द्वारा विरोध न करने के लिये समझाना और सुयोधन का अपने पिता से अपना अपमान वर्णन तथा मरने के लिये उद्यत होना।

६५—शकुनि का जुआ द्वारा संपतिहरण करने का विचार वर्णन, युधिष्ठिर को जुआ के लिए बुलाना और शकुनि द्वारा संपत्ति, चारो भाई और स्वयं युधिष्ठिर तथा द्रौपदी को जीतना वर्णन।

६६—सभा में द्रौपदी को सुयोधन का बुलाना, द्रौपदी के सभासदों से प्रश्न, दुःशासन का द्रौपदी को सभा में लाना और द्रौपदी का पुनः सभासदों से प्रश्न करना और उत्तर न पाना सुयोधन का जंघा दिखाना।

६७— दुःशासन का चीर खींचना द्रौपदी का ईश्वर स्तुति करना।

६८—गांधारी का धृतराष्ट्र को समझाना भीम की प्रतिज्ञा का वर्णन, धृतराष्ट्र का द्रौपदी को वर देना द्रौपदी का पांचों पतियों सहित दासता छूटने और सशस्त्र घर जाने का वरदान मांगना, धृतराष्ट्र का वरदान देना, सुयोधन का पिता से पुनः जुआ खेलने की आज्ञा मांगना उसमें जो हारे वह १२ वर्ष वनवास भोगे और एक मास अज्ञात वास।

६९—अज्ञातवास में यदि अवधि से पहले जान लिये गये तो फिर १२ वर्ष वनवास होने का वर्णन, जुआ खेलना और फिर युधिष्ठिर का हारना तथा द्रौपदी सहित वनवास वर्णन। कुंती का मिलाप वर्णन, विदुर का सांत्वना देना वर्णन।

७०—सूर्य द्वारा पात्र पाने का वर्णन, वनवास की दशा वर्णन, श्री कृष्ण का वन में पांडवों के पास जाना, सुयोधन का दुर्वासा को पांडवों के पास श्राप देने के लिये भेजना, ८८ हजार ऋषियों सहित दुर्वासा ने युधिष्ठिर से भोजन मांगा। तब बड़े संकट में श्री कृष्ण का स्मरण किया और उनके आने से सब ऋषि गण तृप्त हो आशीर्वाद देकर चले गये।

७२—युधिष्ठिर को शस्त्रों के लिये तप करना वर्णन। कठिन तपस्या से इन्द्रादि देव प्रसन्न हुए और अनेक प्रकार के अस्त्र देने का वर्णन शिव का पांडवों की परीक्षा लेने का वर्णन, अर्जुन का शिव से युद्ध और पशुपति अस्त्र लाभ करने का वर्णन, अर्जुन का इन्द्रलोक में अस्त्र और संगीत सीखने का वर्णन।

७३—इन्द्र की आज्ञा से सिंधु में कालेसुर रिपु से युद्ध कर अर्जुन का आना और मुकुट तथा अस्त्र शस्त्रादि का प्राप्त करना वर्णन।

७४—उर्वसी को अर्जुन के इन्द्र द्वारा भेजना वर्णन।

७५—सुयोधन का सेना सहित पांडवों के मारने के लिये आना। इन्द्र का चित्रकेतु के। अर्जुन की सहायता के लिए भेजना चित्रकेतु का कर्ण से युद्ध और सुयोधन का बांधना।

७६—भीमादि द्वारा उसको छुड़ा देना सुयोधन का यज्ञ करना।

७७—पांचों पांडवों का यज्ञ में आना द्रौपदी-हरण वर्णन, जयद्रथ की तपस्या वर्णन शिव का अर्जुन छोड़ चारों भाइयों के जीतने का वर देना। वन में ब्राह्मण की पुकार सुनना और हिरन के पीछे पांडवों का दूर निकल जाना तथा प्यास से व्याकुल हो।

७८—एक एक का पानी लेने के लिये जाना अंत में युधिष्ठिर का जाना और चारों भाइयों के मृतक देख संताप। यक्ष का धर्मराज से प्रश्न करना, युधिष्ठिर का यक्ष के यथार्थ उत्तर देना, यक्ष का प्रसन्न होकर एक भाई के जिलाने के लिये कहना धर्मराज ने नकुल के जिलाने के लिये कहा अंत में सबों का जीवित होना वर्णन। यक्ष से अज्ञातवास निर्विघ्न समाप्त होने का वरदान वर्णन।

७९—शमी में अपने वस्त्र बांध कर राजा विराट के यहां पांडवों का द्रौपदी सहित अज्ञातवास करना भीम का जीमूत मल्ल से कुश्ती होना, और जीतना। कीचक का सैरिंध्री (द्रौपदी) पर आसक्त होना।

८०—कीचक की रति याचना, और द्रौपदी द्वारा अपमानित होने पर भी कीचक का अपनी बहिन से सैरिंध्री के उसके पास भेजने के कहना। रानी का द्रौपदी के भाई से मदिरा लाने के बहाने से भेजना

८१—द्रौपदी का उसकी नीच वृत्ति देखकर भागना तथा कीचक का लात मारना वर्णन, द्रौपदी का सब समाचार भीम से कहना। भीम ने द्रौपदी से उसे नृत्यगृह में भेजने का वर्णन वहीं भीम द्वारा कीचक का वध करना।

८४—सुयोधन के दूतों का आना, परन्तु पता न पाने पर निराश हो लौट जाना

८५-८७—सुयोधन का राजा विराट से युद्ध वर्णन।

८८—उत्तरा का अर्जुन के दसों नामों का पूछना और अर्जुन का उत्तर।

८९—अर्जुन का उत्तरा से अज्ञात की कथा का वर्णन करना।

९०—पांडवों का पराक्रम वर्णन, और विराट के उनके

९१—अज्ञात वास का पता लग जाना, राजा विराट द्वारा

९२—पांडवों का सत्कार वर्णन, राजा विराट का उत्तरा का विवाह करने का प्रस्ताव करना।

९३ से ९७-अभिमन्यु का उत्तरा के साथ विवाह। राजा विराट और कृष्ण की सम्मति से धृतराष्ट्र के पास अपना राज्य पाने के लिये पुरोहित का भेजना। भीष्म, द्रोण, विदुर, आदि का सुयोधन को समझाना, सुयोधन का हठ वर्णन।

९८-१०० अर्जुन और सुयोधन का भी कृष्ण को निमंत्रण देने के लिए जाना कृष्ण का प्रथम अर्जुन से मिलना वर्णन, अंत में श्री कृष्ण ने एक तरफ सेना और दूसरी तरफ स्वयं निःशस्त्र रख कहा जिसको जो इच्छा हो ले लीजिए। सुयोधन और अर्जुन ने श्रीकृष्ण को अपना सहायक बनाया।

१०१—१०२ पांडवों का पांच ग्राम मांगना, पर दुर्योधन का न देना, भीष्म द्रोण आदि का समझाना और विदुर का धृतराष्ट्र से राजनीति वर्णन।

१०३—धृतराष्ट्र और गांधारी का सुयोधन को समझाना,

१०४—श्रीकृष्ण का संधि के लिए जाना।

१०५—द्रौपदी का श्रीकृष्ण को सुयोधन के नीच कर्मों का स्मरण दिलाते हुए बदला लेने के लिए आग्रह करना।

१०६-१०९—श्रीकृष्ण का धृतराष्ट्र की सभा में जाकर सुयोधन और धृतराष्ट्र को बार बार समझाना; अंत में निराश होकर लौट आना। श्रीकृष्ण का कर्ण को पांडव पक्ष लेने के लिये कहना। कर्ण का क्षमा मांगना।

११०—कुंती का कर्ण से पांडव पक्ष लेने का प्रस्ताव वर्णन।

१११—कौरव पांडवों का विरोध वर्णन। कुरुक्षेत्र में दोनों ओर को ग्यारह अक्षौहिणी कौरव दल और सात अक्षौहिणी पांडव दल का इकट्ठा होना वर्णन।

११२—महारथी लक्षण, पांडवों के महारथियों के नाम वर्णन।

११३—सुयोधन के महारथियों के नाम वर्णन।

११४—अर्जुन का बीच में रथ खड़ा करना और सबों को अपना बंधु बांधव ही समझ कर धनुष बाण फेंक देना।

११५—श्रीकृष्ण का जीव शरीर का संबंध और आध्यात्मिक ज्ञानोपदेश वर्णन। पुनः भीम के विष, लाक्षागृह दाहन, द्रौपदी के अपमान, आदि का स्मरण करा के अर्जुन को युद्ध के लिए तैयार करना। युधिष्ठिर का भीष्म और द्रोण के पास जाना और आशीर्वाद पाना, और भीष्म तथा द्रोण के वध का उपाय जानना।

११६—दो दिन और युद्ध होने पर तीसरे दिन का वर्णन

११७—श्रीकृष्ण का भीष्म द्वारा परिघ शस्त्र पकड़ा देना।

११९—इसके पश्चात ५ दिन तक और युद्ध होने का वर्णन जिसमें अर्जुन और विराट के तीन पुत्रों का मरना तथा एक एक दिवस में दस दस हजार

सवारों का भीष्म द्वारा मारा जाना वर्णन। दसवें दिन शिखंडी को आगे कर अर्जुन ने युद्ध किया जिसमें भीष्म ने धनुष बाण छोड़ दिया और अर्जुन के बाणों से विद्ध हो शरशय्या पर पड़ना।

१२०—भीष्म का पानी मांगना और अर्जुन द्वारा बाण के आघात से पृथ्वी से जल निकालना वर्णन।

१२१—द्रोण का सेनापति होना वर्णन।

१२२—दो दिन द्रोण का घोर युद्ध वर्णन।

१२३—तीसरे दिन चक्र व्यूह की रचना का वर्णन

१२४—अभिमन्यु की प्रशंसा वर्णन

१२५—दुःशासन का मूर्छित होना, लक्ष्मण को मारना

१२६—अभिमन्यु वध और युधिष्ठिर का विलाप।

१२७—अर्जुन का संशप्तकों को जीत कर आना।

१२८ और अभिमन्यु के मरने का वृत्तान्त वर्णन।

१२९—अर्जुन का जयद्रथ वध करने का प्रण वर्णन सुयोधन का द्रोण से जयद्रथ की रक्षा करने को कहना।

१३०-१३५—अर्जुन का युद्ध प्रारंभ, द्रोण की गुरु परिक्रमा और प्रणाम कर अर्जुन का आगे बढ़ना

१३६-१३८—अर्जुन के बाणों से सेना का संहार वर्णन,

१३९-१४०—कृतवर्मा, दुःशासन आदि से युद्ध वर्णन,

१४१-१४२—सात्यकी भीम युद्ध वर्णन, भूरिश्रवा,

१४३—दुर्योधन दुःशासन, कृपाचार्य आदि का भागना वर्णन।

१४४—सुयोधन का द्रोण से कटु वचन कहकर जयद्रथ की रक्षा करने के लिये कहना।

१४५-१५०—द्रोण का युद्ध पराक्रम वर्णन

१५१—कर्ण का युद्ध वर्णन।

१५२—द्रुपद और विराट का वध वर्णन,

१५३—धृष्टद्युम्न का द्रोण से युद्ध वर्णन।

१५४—धृष्टकेतु और सहदेव का द्रोण से युद्ध वर्णन।

१५६—श्रीकृष्ण युधिष्ठिर से अश्वत्थामा के मरने का समाचार द्रोण से कहने के लिए आग्रह करना, युधिष्ठिर का झूठ बोलने पर राजी न होना। सबों के कहने पर युधिष्ठिर द्वारा अश्वत्थामा का मरण सुन द्रोण ने शस्त्र छोड़ दिए और द्रुपद ने उनका शिर छेद दिया। द्रोण मरण वर्णन।

१५७—अश्वत्थामा का युद्ध वर्णन, कर्ण का सेनापतित्व वर्णन।

१५८—१५९—भीम और कर्ण का युद्ध वर्णन।

१६०—भीम द्वारा दुःशासन का वध वर्णन।

१६१—१६८—कर्ण अर्जुन युद्ध वर्णन।

१६९—कर्ण का रथ पृथ्वी में धंस जाने का वर्णन।

१७०—१७१—कर्णवध वर्णन।

१७२—शल्य का सेनापतित्व वर्णन।

१७४—शल्य वध।

१७५—१८०—अश्वत्थामा युद्ध, दुर्योधन युद्ध और वध।

१८१—अश्वत्थामा को पकड़ लेना।

१८२—धृतराष्ट्र और गांधारी का युद्ध स्थल में आना, धृतराष्ट्र, गांधारी का युधिष्ठिर अर्जुन आदि के संवाद तथा गांधारी का विलाप वर्णन।

१८३—धृतराष्ट्र का भीम से मिलने की इच्छा करना और श्रीकृष्ण का भीम से न मिला कर धातु मूर्ति से मिलाना जिसे धृतराष्ट्र का चूर चूर कर देना।

१८४—युधिष्ठिर का सब का अंत्येष्ट कर्म करना। युधिष्ठिर का विलाप वर्णन।

१८५—युधिष्ठिर को भीष्म के पास लाना। भीष्म का युधिष्ठिर को ज्ञानोपदेश वर्णन, भीष्म का मरण वर्णन।

१८६—भीष्म का दाह कर्म करने का वर्णन, युधिष्ठिर का राज्य छत्र धारण करना। परीक्षित का जन्म वर्णन।

१८७—युधिष्ठिर के सुराज्य की कथा वर्णन।

१८८—१९०—कुंती, द्रौपदी, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव और युधिष्ठिर का अपनी पूर्व इच्छा का वर्णन करना।

१९१—१९५—युधिष्ठिर का सुराज्य वर्णन, परीक्षित को राज्य देना, पांचों भाइयों और

१९६—द्रौपदी का हिमालय जाना वर्णन, चारों भाइयों सहित द्रौपदी का हिमालय में अपना और युधिष्ठिर का स्वर्ग जाना वर्णन।

१९७—ग्रन्थ की प्रशंसा वर्णन।

No. 424. Sākhī Dasa Pātaśāha kī by Swarūpa Dāsa of Punjab? Substance—Country-made paper. Leaves—508. Size—13¼ × 10½ inches. Lines per page—36. Extent—15,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Good. Written in Prose and Verse. Character—Gurumukhi. Date of manuscript—Samvat 1897 or A. D. 1890. Place of deposit—Sardāra Budhela Siṁha, Mohalla Gudadi Bāzār (Baharāich).

Beginning—ॐ सत गुरुप्रसाद ॥

दोहरा ॥ श्री सत गुरु प्रकास ॥ साखी जनम जग पावत नित नीत । महिमा प्रकास तिह नाम पर लिख पोथी कोनो मीत । १ नमो नमो परमातमा सतगुरु कृपा निधान । पथ दंडन मंडन भगत चंदन जगत महान । पथ राज जनक प्रसंग पनिक जीवन नरक सों मुकाय सुगम पठवत भये । पर वचन भगत कोवा प्रथम चरन कलुहरि भगत पाथो पार होइ । सारठा ॥ कोटि छिन वै जीव मुकवाये नर को जनक । पर वचन भगत तेहि कोन तिहि ते हरि गुरु वपुधरा ॥

End—दोहरा हे गुरु कृपानिधान दास सरूप बिनती करै । गुरु चरनन मन ठानि हृदय नाम हर हर हरै ॥ ७१ ॥ पव दाजे मोहि दान जेहि विधि वलि वामन कहो । हुदै बसो भगवान जेहि विधि बलि द्वारे रहो ॥ ७२ साखो सम्पूरन भई दसो पातसाह को पढ़न्ते सुनन्ते मान मुकति लहन्त । श्री वाह गुरु मुख करो उचार । होइ दयाल कर लहु उधार । पाथो संपूरन संवत १८९७ विकमो पसोज सुदी ९ ॥ इति ॥

Subject—साखी पहले मुहल्ले को गुरु नानक का वर्णन पृ० १ से १७९ तक । साखी दूसरे महल्ले को गुरु अंगद का वर्णन पृ० १८० से २०४ तक । साखी तीसरे महल्ले का अमरदास गुरु का वर्णन पृ० २०५—२५६ । साखी चाथे मुहल्ले का गुरु राम का वर्णन पृ० २५७—२६५ तक । साखी पांचवें मोहल्ले को गुरु अर्जुन का वर्णन पृ० २६६—३०१ । साखी छटवें मुहल्ले को गुरु हर गोविन्द का वर्णन पृ० ३०२—३४४ तक । साखी सातवें महल्ले का गुरु हरराम का वर्णन ३४५—३७८ । साखी गुरु हरिकृष्ण जी को आठवें महल्ले को ३७९—३८८ तक । नवां मुहल्ला गुरु तेग बहादुर का वर्णन पृ० ३८९—४२७ तक । दसवां मुहल्ला गुरु गोविन्द सिंह जी का वर्णन पृ० ४२८ से ५०८ तक । इति ।

No. 425. Sāmudrika by Tejanātha of Sapahan Ganwañ. Substance—Country-made paper. Leaves—34. Lines per page—12. Extent—234 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old.

Character—Nagari. Date of manuscript—Samvat 1892 or A. D. 1835. Place of deposit—Ṭhakura Mahesa Simha Village Kohali Bechai Simha kā Purawā, Post Office Kesarganja, District Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ सामुद्रिक लिष्यते ॥ शेरसाह बहु दिलि सुलताना अनूप नाहि अनुमान । शमड़ो देश विमजन ठाऊ । तेजनाथ अस सपहा गाऊं । भल नहि अपन अस्तु करई । लोग हंसै निज पुन्यो हरई । गुन निर्गुन सब लोग कि भाषा । जस अपजस अपने हो राषा । दोहा भलमानुस पै जानिहि जस गुमाह हमार । साधु सकल गोविंद कह दुर्गन गुन अपकार ॥ तेजनाथ सामुद्रिक जानि । पाछा कर्म ते कहा वषानो । जेहि जाने सबके सुष होई । सर्व जानि माने सब कोई । लक्षण सब जहजस देष । नर नारी केरा करब विसेष । जानत कहि न ग्रंथ कर भेऊ । कहै तब जानै सब कोऊ । कहबे भेद भल बुझन हारा । अस मानुस बिरले संसारा । दो० केउ केउ बात विचक्षण केउ के ग्रंथ पहिचान । बाल गोल रहत पन एक ग्रंथै रहै निदान ॥

End—जेहि कामिनि मुष देत सुवेषा । विपम मोट पुनि बिरदै लेषा । संतत दुःख अह सुख न ताके । लहु समान स्वेत दंत मुख चाके । लंब ओठ पुनि होइ रोवारा । कामिनि निहचै याहि भतारा । पाकरि अर्गान कोट सम लेषा । चिकन रोम रहित शुभ देषा । पातर अरुन शुभग मनिआरा । से कामनि स्वामी सुखसारा । नक अगार लामि हो याके कोपिनि कामनि कहिहु तु ताके । नाक अगार जिस लघु होई । तेहि पर दासी कहि हो सोई । चिपटो नाक विधवा तुप देषो । सुवा टोंट सुमदायक होषो । ना अति छोटो ना बड़ि नासा । सम सुंदरि सोभो सुषवासा । पोत नयन तृपकज विचारी । शील रहित विधवा हो नारी । करंजो आषि विविचंचल नारी । निश्चय कुलटा कहेउ विचारी । जाके हंसत गंडा हो बाला । सो स्वामी घर बसै न वाला । दुइज चांद सम भौहैं जाके । सम नासा अंगुरी लघु ताके । कंत प्रीति तेहि ते अधिकाई । दिन दिन देह सपथ अधिकई । इति सामुद्रिक सम्पूर्णम् लिख्यतं प्रताप सिंह संवत १८९२ ॥ शुभमस्तु ॥

Subject—सामुद्रिक में हस्त रेषा. पद रेखा नेत्र नाक सिर थान, बाल आदि के द्वारा शुभ अशुभ फल वर्णन किए गये हैं ।

No. 426. Kūta Kavitta by Thākura. Substance—Country-made paper. Leaves—6. Size—6 × 5 inches. Lines per page—13. Extent—40 Anushṭup Ślokas. Appear-

ance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1842 or A. D. 1785. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Siṃha Kānthā, Post Office Kāṇṭha, District Unāo.

Beginning—कूट कवित्त लिख्यते—तथा

हरि हित नामै ये वचन सुनि मोहन के द्रुम रस भूषन सवारि चलु गेहरो। सुर यरि गुरु वर वाहन के परि परि तापन पिता कों रिपु दाहत है डेहरो॥ कैसे मन कैसे लगी सजहू ये मानतु प्यारो बेगिहो बिचारै को करौ नानामु नेहरो। दई सँवारो होतो वाम को कुमारो पाजकूं सो छवि वान वैवर देहरो॥ १ चलौ चलु प्यारो तोहि वातें बोलै खगपति पतिय कई वियोग मोन तेरे में जु पाई री। दादुर के रिपु रिपु ताको पति वाको तात वाको परि कारने निहारिहैं पठाई री। रवि सुत रिपु ताके पतिय गोपाल लाल ताके सुत सुताको धरनि होति माई री॥ कब कोहीं पाई मोहि टोजिये विराट सुत तेरो मुख इंदु रिपु ओढ़त कन्हाई री॥ २ सवैया—पंथु तनै हित नेक रह्यो तबतें तुम्हरे ढिग बैठो कुमारो। वाहनो ओन पितु हन जाम गई निधि भौन फिरो पनिसारो। तो पंथु भूप दिसान दई पग पार्थिप को जननो करि हारो। ओढ़त पैन सरोरुह नैन चलौ मघवा रिपु जादु विहारो॥ ३

End—पास पहार जो सिंह मरै कबहूं न मरै घर के वह खाये। कागद धूप दिखाये गरै कबहूं न गलै जल मांहि सड़ाये। निसि पाये से चन्द मनोन लगै कबहूं न मनोन लगै दिन पाये। मानुष सुधारस पीये मरै कबहूं न मरै विष के वह खाये॥ मोन मरै जल के परसे कबहूं न मरै वह पावक लाये। फूल जु फूले सिला महं कंज कबौ नहि फूले तड़ाग लगाये। बोलत सदं में कोकिल है कबहूं नहि बोले वसंत के पाये। दीप प्रकास करै दिन में कबहूं न प्रकास करै निसि पाये। ८ दादुर ग्रीषम बोलै कहूं नहि बोलत हैं बरषा रितु पाये। भानुहि राहु गहै कबहूं नहि घेरत है निज अवसर पाये। भोजन खायें ते जोव मरै कबहूं न मरै बिन अन्नहि खाये। ठाकुर चंद पताल उवै कबहूं न उवै जु अकासहि ठाये॥ ९

इति

Subject—इस पुस्तक में दृष्टि कूटक ९ कवित्त और सवैये हैं। जिनमें उलटी बात कही हुई जान पड़ती है जैसे—मोन मरै जल के परसै कबहूं न मरै वह पावक लाये।

No. 427. Dalela Prakāśa by Kavithāna Rāma of Naisawāra Daundia Kheda. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—12 × 6 inches. Lines per page—60.

Extent—1050 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1848 or A. D. 1790. Paṇḍita Bipina Bihāri Miśra, Brajarāja Pustakālaya, Village Gandhaulī, Post Office Sidhaulī, District Sitapur.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ छप्पै ॥ जै लंबोदर शंभु सुवन पंभोरुह लोचन । चर्चित चंदन चन्द्र भाल वंदन रुचि रोचन ॥ मुष मंडाल गंडान्त गंड मंडित श्रुति कुंडल । वृन्दारक वर वृन्द चरन वंदत सापंडल । वर अभय गदा अंकुश धरन विघन हरन मंगल करन । कवि थान नवासय सिद्धिवर एक दंत जै तुव सरन ॥ सरस्वती सुर मंडल महत है आसन कवल पंग भंवर चवल मुष चंद से । धवल रंग नवल चहत है । ऐसो मातु भारती को पारती करत थान जाको जस विधि वैसे पंडित पढ़त है । ताको दया दीठि लाष पापर निरापर के मुष ते मधुर मंजु आपर कहत है । गुरु देव छप्पै ॥ श्री गणेश गुरु देव वह्म गुरु देव विधाता । रमा रमन गुरु देव देव गुरु शंकर दाता । भुक्ति मुक्ति गुण ज्ञान दान नर अंतरजामी । भव बंधन ते मुक्ति करन गुरु त्रिभुवन स्वामी । चरणारविंद रजशीश धरि नयन भरि जोरे करन ॥ कवि थान नमित धरि भूमि सिर जै जै जै गुरु तुव सरन ॥

End—कमन वद्ध दोहा—

वार भार धर सार कर हर
हर रर वर चार । पार तार जर
मार सर वर घर डर तर डार

अथ चैाको वद्ध ।

न मान रावत दुषन को ले हाथ
कठिन कृपान न पाकृतमके
पंथ चरत दुरलेल भूप सुजान ।
न जासु गुन गन थाह पावत कहत
कवि पई थान न थार जाको
मिलत शोभा शील सुष सनमानि॥
इति श्री कवि थान राम विरचिते
दलेल पकासे चित्र काव्य वर्णनो
नाम ११ दसो उल्लासः

Subject—शृंगार रस नायक नायका भेद व चित्र काव्य वर्णन।

No. 428. Samara Sāra Bhāsha, by Tirtha Rāja. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—8½ × 4½ inches. Lines per page—20. Extent—560 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1807 or A. D. 1750. Date of manuscript—Samvat 1880 or A. D. 1823. Place of deposit—Paṇḍita Durgā Prasādaju Jigania, Pargana Hajoorpore, Police Station Hajoorpur, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः। अथ समर सार लिख्यते॥ श्री गणपति पद कमल बिनु तू छिन छिन पद छीन। रंगी श्याम रंग में फिरत मोमन चुंबक दीन।

छप्पय॥ जय जय जय गुण रूप भूप पद कुल दल मंडन। भक्त हेतु तन धरन दोह दानव बल खंडन। करि करि विनय अनन्त सन्त चिन्तित उर धरि धरि। ताको सब ब्रज नाम रूप पीवत दृग भरि भरि। कहि राज कौन ब्रजराज बिन भव बाधा संकट हरन। जय दीन बंधु गिरधर धरन राधा वर बन्दौं चरन॥ पैरत निशि दिन विषय नद मो मन मीनन होय। प्रेम डोर बंशी बिना क्यों पावै ब्रजनाथ। मो करनी करि मोन मन तुम हर नीरद रूप। बरसत सब पर एक रस गिरधर सर वर कूप।

End—अथ आशीर्वाद॥ जौलौं काम तन को उदारता बखानें कवि जौ लौं मन सागर कीरति सुहाति है। जौ लौं पंचवरन है विधाता के अखिल धन जौ लौं कमला को कला कलि में अघाति है॥ जौ लौं वसुधा में धाम धाम रान राम रहे जौ लौं बाम बाम धन मन के निभाति है। तौ लौं श्री अर्जुन सिंह धरणी में राज करें धरम धुरंधर पुरंदर को नाति है। ५२

इति श्री महाराज कुमार सिंहासया तीरथराज कृते समर विजये काव्य पुरुष दर्शन नाम सप्तम प्रकाशः समाप्तः शुभमस्तु॥

सोरठा॥ श्री अरजुन नृप हेतु समर विजय भाषा लिखा।
बैला ग्राम निकेत पढ़ै वीर सुख सो लहै॥

दोहा॥ सर गुण नग विधु मित शके सावन बदि शनि रोज।
रामदीन भाषा लिख्यो सो नीके नृप तोज॥

Subject—प्रार्थना—राजवंश वर्णन पृ० १—३ तक। नवाजय वर्णन पृ० ४—७ तक। पंच स्वर वर्णन पृ० ८ से १० तक। भूचल साधना वर्णन पृ० ११—

१६। अष्टदल चक्र, प्रश्न विचार, जुवा विचार, वर्णन पृ० १७—१९। कोट चक्र वर्णन पृ० २० —२३ तक। सर्वतो भद्र चक्र, सूर्य चन्द्र कला, जल छाया पुरुष विचार, आशीर्वाद पृ० २४ से २८ तक। इति।

No. 429(a). Gomata Sāra kī Samak Jnāna Chandrikā Nāma Tikā, by Todara Mala of Sawāyī Jaipura. Substance—Country-made paper. Leaves—1,904. Size—13¼ × 6½ inches. Lines per page—10. Extent—53,312 Anushṭup ślokas. Character—Nāgarī. Date of Composition—1818 Samvat or A.D. 1761. Date of manuscript—1826 Samvat or A.D. 1769. Place of deposit—Śrī Jaina Mandira (Barā), Bārābankī (Oudh).

Beginning—श्री जिनायनमः। अथ श्री गोमटसार को समग्यान चंद्रिका नाम भाषा टीका लिख्यते॥ दोहा॥

वंदो ज्ञानानंद कर। नेमिचंद गुनकंद॥ माधव वंदित विमल पद। पुन्य पयोनिधिनंद॥ १॥ दोष-दहन गुनगहन घन। अरि करि हरि अरहंत। स्वाभि भूति रमनीर मन। जग नायक जयवंत॥ २॥ सिद्ध शुद्ध साधित सहज। सुरस सुधारस धार॥ समय सार शिव सर्वगत। नमत होहु सुपकार॥ ३॥ जिन वानी विविध विध। वर्नेत विश्व प्रमान॥ स्यात पद मुद्रित अहित हर। करहु सकल कल्यान॥ ४॥ मैन मौन मन जैन जन। ग्यान ध्यान धन लीन॥ मैन मान विनि दान घन। दान हीन तन छीन॥ ५॥ यह चित्रालंकार युक्त है। इह विधि मंगल करन तें। सब विधि मंगल होत॥ होत उदंगल दूरि सब। तम ज्यों भानु उद्योत॥ ६॥ अथ मंगलाचरण कर श्री मद्गोमटसार द्वितीयनाम पंच संग्रह ग्रंथ ताकी देश भाषा मय टीका करने का उद्यम करो हौं। सो यह ग्रंथ समुद्र तें ऐसा है। जो सातिशय बुद्धिवल संयुक्त जीवनी करि भी जाका अवगाहन होना दुर्लभ है। थोर मैं मन्द बुद्धि हूं॥ × × × ×

End—सवैया—अरहंत सिद्ध सूरि उपाध्याय साधु सर्व अर्थ के प्रकासी मंगलीक उपकारी है। तिन को स्वरूप जानि राग तें भई है भक्ति तातें काम कीन मायस्तुत को उचारी है॥ धन्य धन्य तुम तुम हो ते सब काज भयो कर जोर बारंबार वंदना हमारी है। मंगल कल्यान सुप ऐसा अब चाहत हौ होहु मेरी ऐसी दशा जैसी तुम धारी है॥ ६३॥ इति श्री मद्द लब्धिसार वा क्षपणासार सहित गोमठ सार शास्त्र की समग्यान चन्द्रिका नामा भाषा टीका संपूर्ण॥ १॥ बसु संवत फुनि पक्ष धर युग रस वरस प्रमान। तिथि पड़िवा मंद वार दिन लिख्यो ग्रंथ हित मान॥ भग्न पृष्टीकटी ग्रीवा बद्धो दृष्टि रधो मुखं। कष्टे न

लिख्यते शास्त्रं यत्नेन परिपालयेत् ॥ २ ॥ यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिख्यतं मया यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥ लिखितं सीताराम जती स्वेताम्बराम्नाय स्वर तरगच्छे लिपो मध्ये नपचेउ ॥ लिखायतं लाला मौजीराम जी अग्रवाल वंशे वास्तव्य नवाबगंज श्री जिनालय मध्ये थापितं ॥ शुभं भवतु……… कल्याणमस्तु…………… श्रीरस्तु……………………………

Subject—

(१) पृ० १ से पृ० ७१ तक; पीठिका।

मंगलचरण । गोमठसार पुस्तक की टीका करने और हिंदी में ग्रंथ लिखने का कारण। शास्त्र अभ्यास का आदेश । सम्यक्ज्ञान की परिभाषा। शास्त्र अध्ययन के लाभ। तीन प्रकार के अनुयोगियों को सम्मतियां। शास्त्र के आदि में पंच परमेष्ठी की वंदना का विधान। संस्कृत टीकाकार का मुनीन्द्रादि की वंदना करना। जैनियों के अध्ययन योग्य ग्रंथों का कथन। शास्त्र अभ्यास के अंग। शास्त्र अध्ययन का समय मिलने की दुर्लभता का वर्णन। सूक्ष्म अनुक्रमणिका। संदृष्टि के अर्थ या कहे हुए अर्थों को संदृष्टि जानने को इस भाषा टीका में जुदा ही संदृष्टि अधिकार वर्णन। मूल शास्त्र व टीका में जहाँ संदृष्टि या अर्थ लिखा था वहाँ ही उन अर्थों का निरूपण कर के न लिखने का टीकाकार का संदृष्टि। अधिकार में वर्णन करने का कारण। टीका के परिचय के सम्बन्ध में कुछ उल्लेख । अधिकारों की सूची । लौकिक तथा अलौकिक गणित के सम्बन्ध में कुछ कथन। दोनों गणितों से सम्बन्धित परिभाषाओं का वर्णन तथा उनकी क्रियाएं और इसी के अंतर्गत शून्य परिकर्माष्टक का वर्णन।

(बीस प्ररूपण)

(२) जीव कांड (१) प्रथम अधिकार पृ० ७२ से पृ० १७७ तक—गुणस्थानाधिकार। गुणस्थान का नाम, और सामान्य लक्षण, सम्यक चरित्र, अपेक्षा और दृष्टिकादि संभव से भावनिका निरूपण, मिथ्या दृष्टि आदि गुण स्थान निन्दा वर्णन, मिथ्या दृष्टि में पंच मिथ्यात्वादिका, सासादन में काल व स्वरूप का वर्णन, मिश्र में उसके स्वरूपादिक का, देश संयत विषय उसके स्वरूप का वर्णन, प्रमत्त का कथन में पन्द्रह व अस्सी वा साढ़े सैंतीस हज़ार प्रमाद भेदनिका और वहाँ प्रसंग पाइ संख्या, प्रस्तार, परिवर्तन, नष्ट, समुद्दिष्ट कर, गूढ़, यंत्रों से अक्ष संचार विधान का कथन। अक्ष संचार विधान, अप्रमत्त के कथन में स्वस्थान और सातिशय दो भेद कह सातिशय अप्रमत्त के अधःकरण का कथन, उसके स्वरूप काल, परिणाम, समय, समय सम्बन्धी परिणाम व एक एक समय में अनुकृष्टिविधान, वहाँ संभवतः—चार आवश्यक इत्यादि का विशेष वर्णन।

श्रेणी व्यवहार रूप गणित का कथन। उसमें सर्व धन, उत्तर धन, मुख भूमि, चय, गच्छ, इत्यादि संज्ञाओं का स्वरूप और प्रमाण लाने के लिये सूत्रों का वर्णन, अपूर्व करण का कथन में उसके स्वरूपादि का कथन, सूक्ष्म साम्पराय का कथन में कर्म प्रकृतियों के अनुभाग अपेक्षा अविभाग प्रतिच्छेद, वर्ग, वर्गणा, स्पर्द्धका, गुणहानि, नाना, गुणहानिनिका, पूर्व स्पर्द्धक, अपूर्वस्पर्धक, बादर कृष्टि, सूक्ष्म, कृष्टिका वर्णन है। उपशांत कषाय, क्षीणकषाय कथन में उनके दृष्टान्त पूर्वक, स्वरूपका, संयोगी जिनको कथन में नव केवल लब्धि, आदिकका, अयोगी विषयक शैलेश्यपना आदि का कथन। ग्यारह गुण स्थाननिविषै गुण श्रेणी निर्जरा का कथन है। वहां द्रव्य का अपकर्षण करके उपरतनि स्थिति, गुण श्रेणी, आयाम और उदयावली विषय जैसे विवर्जित हुए है उनका व गुण श्रेणी आयाम के प्रमाण का निरूपण है। अंतर्मुहूर्त व भेदों का वर्णन। सिद्धनिका वर्णन।

(२) दूसरा अधिकार पृ० १७८ से २१६ पृ० तक, जीव समास अधिकार।

जीव समास का अर्थ। होने का विधान, चौदह, गुण तीस वा सत्तावन वा चार सौ छः जीव समासों का वर्णन। चार प्रकार के जीव समास, उसीके जीव समास वर्णन करते यहां स्थान भेद में एक एक आदि उत्पत्ति पर्यंत जीव स्थाननिका वा इनही के पर्याप्तादि भेद कर स्थाननिका वा अट्ठानवे आध्यादिसे छः जीव समासनिका कथन, योनि भेद विषै शंखा वर्तादि तीन प्रकार योनिका, और सम्मूर्च्छनादि-जन्म भेद पूर्वक नव प्रकार योनि के स्वरूप वा स्वामित्व का, और चौरासी लाख योनियों का वर्णन। चार गतियों के अन्तर्गत सम्मूर्च्छनादि जन्म वा पुरुषादि वेद संभवै है उनका निरूपण। अवगाहना भेद में सूक्ष्म निगोद, अपर्याप्त आदि जीवों की जघन्य उत्कृष्ट शरीर की अवगाहना का विशेष वर्णन है। उसमें एकेन्द्रियादिक भी उत्कृष्ट अवगाहना कहने का प्रसंग पाकर गोलक्षेत्र, शंख क्षेत्र, आयत चतुरस्र क्षेत्र का क्षेत्रफल करने का, और अवगाहनाविषय प्रदेशों की वृद्धि जानने के अर्थ अनंतभागादि चतुः स्थान पतित वृद्धि का अर इस प्रसंगमें दृष्टांत पूर्वक षट्स्थान पतित आदि वृद्धि हानिका, सर्व अवगाहना भेद जानने के अर्थ मत्स्य रचना का वर्णन है। फिर कुल भेद विषयक एक सौ साढ़े सत्तानवे लाख कोटि कुलानि का वर्णन है।

(३) तीसरा अधिकार, पृ० २१७ से पृ० २५८ तक—पर्याप्त नामा अधिकार।

मान का वर्णन, मान के दो भेद, लौकिक, अलौकिक, द्रव्य मान के दो भेदों में संख्या, संख्या मान में संख्यात असंख्यात अनंत के इकोस भेदों का वर्णन है, संख्या के विशेष रूप और चौदह धाराओं का कथन है, उनमें द्विरूप वर्गधारा, द्विरूप घन धारा, द्विरूप घनाघन धारा के स्थान में जेता जाते है उनका विशेष

वर्णन है। पल्टोवादाल, इकटी का प्रमाण, वर्गशाला का अर्द्धच्छेदनिकास्व-रूप, अविभाग प्रतिच्छेद का स्वरूप वा उर्क व ताया येोकरि अर्द्धच्छेदादि के प्रमाण होने का नियम, अग्निकाय जीवों का प्रमाण निकालने का विधान। दूसरा उपमामान के पल्यआदि आठ भेसे वर्णन है। व्यवहार पल्य के रोयों को संख्या लाने को पर मारानूते लगाय अंगुलपर्यंत अनुक्रम का तीन, प्रकार के अंगुल का, जिस जिस अंगुलिका से जिसका प्रमाण वर्णन करते हैं उसका कथन, गोलगर्त के क्षेत्रफल लाने का विधान, उद्धार पल्य से द्वीप समुद्रों को संख्या लाना, अद्धा पल्य, से आयु आदि वर्णन करने का विधान। सागर को सार्थक संज्ञा जानने को लवण समुद्र का क्षेत्रफल इत्यादि का वर्णन है। सूच्यंगुल, प्रतरांगुल, घनांगुल, जगत श्रेणी, जगत प्रतर जगत घन का प्रमाण लाने का विरलन आदि विधान का वर्णन है। पल्यादिक को वर्गशालाका। अर्द्ध पीछे पर्याप्ति प्ररूपणा। पर्याप्त, अपर्याप्त के लक्षण और छः पर्याप्ति के नाम, स्वरूप का, आरंभ संपूर्ण होने के काल का, स्वामित्व का वर्णन है। बहुरि लब्धि अपर्याप्त का लक्षण, उसके निरंतर क्षुद्रभवनिके प्रमाणादिक का वर्णन, नहीं प्रमाण फल इच्छा रूप त्रैराशिक गणित का कथन, सयोगी जिनके अपर्याप्त वना संभव नेका, लब्धि अपर्याप्त निर्वृत्ति अपर्याप्त पर्याप्त के संभव से गुण स्थानिका वर्णन है।

(४) चौथा अधिकार, पृ० २५९ से पृ० २६१ तक—प्राणाधिकार।

प्राणों का लक्षण, भेद, कारण स्वामित्व का वर्णन है।

(५) पांचवां अधिकार, पृ० २६२ से पृ० २६३ तक—संज्ञाधिकार।

चार संज्ञाओं का स्वरूप, भेद, कारण और स्वामित्व का वर्णन है।

(६) छठां अधिकार पृ० २६४ से पृ० २८६ तक—मार्गणाधिकार। मार्गणा का, निरुक्ति का, चौदह भेदों का, सातर मार्ग लाके, अंतरालका, प्रसंग तथा तत्त्वार्थ सूत्र के अनुसार नाना जीव, एकजीव अपेक्षा गुणस्थान विषयक, और गुण स्थान को अपेक्षा लिये मार्गणानि विषै कालका, अंतर का कथन करके छठा गति मार्गणाधिकार है। उसमें गति के लक्षण का, भेदों का और चार भेदों के निरुक्ति लिये लक्षणों का, पांच प्रकार तिर्यंच, चार प्रकार के मनुष्यों का, सिद्धों का वर्णन है। फिर सामान्य नारकी, अर्द्धमुर सात पृथ्वियों के नारकी, पांच प्रकार के तिर्यंच, चार प्रकार के मनुष्य, व्यंतर ज्योतिषी भवनवासी सौधर्मादिक के देव, सामान्य देवराशि इन जीवों की संख्या का वर्णन है। कटपय पुरस्थ वर्णं इत्यादि सूत्रों द्वारा ककारादि अक्षर रूप अंक या बिंदी को संख्या का वर्णन है।

(७) सातवां इन्द्रिय मार्गणा अधिकार, पृ० २८७ से पृ० २९४ तक—

इन्द्रियों की निरुक्ति लिये लक्षण का, लब्धि उपयोग रूप भावेन्द्रियका बाह्य अभ्यंतर भेद लिये निर्वृत्ति उपकरण रूप द्रव्येन्द्रिय का, इन्द्रियों के स्वामी का उनके विषय भूतक्षेत्र का, सूर्य के चार क्षेत्रादि का, इन्द्रियों के आकार का अवगाहना का, और अतीन्द्रिय जीवानि का वर्णन है। एकेन्द्रियादि का उदाहरण रूप नाम नाम बाहु कर उनकी सामान्य संख्या का वर्णन। विशेषपनै सामान्य एकेन्द्री, सूक्ष्म बादर एकेकी, सामान्यत्रस, बे इन्द्रिय, ते इन्द्रिय, चौइन्द्रिय, पंचो इन्द्रिय इन जीवों का प्रमाण और इनमें पर्याप्त अपर्याप्त जीवों का प्रमाण वर्णन है।

८—आठवां काय मार्गणा अधिकार—पृ० २९४ से ३१९ पृ० तक।

काय के लक्षण और भेदों का वर्णन, पंच स्थावरों के नाम, काय, कायिक जीवरूप भेद, और बादर सूक्ष्म पना का लक्षणादि, शरीर की अवगाहना, वनस्पति के साधारण प्रत्येक भेदों का प्रत्येक अप्रतिष्ठित प्रतिष्ठित भेदों का, उनकी अवगाहना को, एक स्कंध में उनके शरीर का प्रमाण। योनीभूत, जीवों में जीव उपजने का वहां अप्रतिष्ठित प्रतिष्ठित जानने को उनके लक्षण, साधारण वनस्पति निगोदरूप, उसमें जीवों के उपजने, पर्याप्ति धरने, मरने के विधान का निगोद शरीर की उत्कृष्ट स्थिति का, स्कंध, अंडर पुलवी, आवास देह, जीव, इनके लक्षण और प्रमाण, नित्य निगोदादि के स्वरूप, त्रिस जीवन और उनके क्षेत्र का वर्णन। वनस्पतीवत् औरों के शरीर में अप्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित पने का, स्थावर त्रस जीवों के आकार का, काय सहित काय रहित जीवों का वर्णन, अग्नि, पृथ्वी, अप, वात, प्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित प्रत्येक साधारण वनस्पति जीवों की और उनमें सूक्ष्म बादर जीवों, उनमें भी पर्याप्त अपर्याप्त जीवों की संख्या का वर्णन। पृथ्वी इत्यादि जीवों की उत्कृष्ट आयु का वर्णन, त्रस जीवों का, उनमें पर्याप्त अपर्याप्त जीवों की संख्या का वर्णन है। बादर अग्नि कायिक आदि की संख्या का विशेष निर्णय करने के लिये उनके अर्ध छेदादि का वर्णन। और दिवण छेदे मय हिद" इत्यादिक करण सूत्र का वर्णन।

९—योग मार्गणा अधिकार—पृ० ३२० से पृ० ३६५ तक—

योग के सामान्य लक्षण, सत्यादि चार चार प्रकार मन, वचन और योग का वर्णन, सत्य वचन का विशेष ज्ञान को दस प्रकार के सत्य का वर्णन, अनुभव वचन काके विशेष जानने के लिये आमंत्रण आदि भाषानिका, सत्यादिक भेद होने के कारण, केवली मन वचन योग संभव द्रव्य मन का आकारादि, काय योग के सात भेदों का वर्णन, औदारिकादिकों के निरुक्ति पूर्वक लक्षण, मिश्र

योग होने का विधान, आहारक शरीर होने का विशेषत्व, कार्माण योग के काल का वर्णन। युगवत् योगों की प्रवित्ति होने का विधान, योग रहित आत्मा का वर्णन। पंच शरीरों कर्मनो कर्म भेद, पंच शरीरों की वर्गणा वा समय प्रबद्ध विषै परमाणुनिका, प्रमाण वा क्रम से सूक्ष्मपना वा उनकी अवगाहना का वर्णन। विश्रसा पंचम स्वरूप, उनके परिमाणुओं के प्रमाण, कर्मनो कर्म का उत्कृष्ट संचय होने का काल और सामिग्री। औदारिक आदि पंच शरीरों का द्रव्य का वर्णन समय समय प्रबद्ध मात्र कह कर उनकी उत्कृष्ट स्थिति उसमें संभवती गुणहानि, नाना गुणहानि अन्योन्याभ्यस्त राशि, दोगुण हानि का स्वरूप प्रमाण कह कर कारण सूत्रादिक से उसमें चयादिक का प्रमाण लाकर समय समय पर संबंधी निषेकों का प्रमाण कह एक समय में कितने परमाणु उदयरूप हो कर निर्जरै केते सत्ताविषै अवशेष रहैं उनके जानने को अंक से दृष्टि की अपेक्षा, लिये त्रिकोण यंत्र का कथन। वैक्रियादिकों का उत्कृष्ट संचय किस के कैसे होय इसका वर्णन। योग मार्गणा में जीवों की संख्या वर्णन, वैक्रियकशक्ति का संयुक्त बादर पर्याप्त अग्नि कायिक, वात कायिक, पर्याप्त पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्यों के प्रमाण का, भोग भूमिया आदि जीवों को पृथक विक्रिया, औरों के अपृथ विक्रिया हो उसका कथन, त्रियोगी, द्वियोगी, एक योगी जीवों का प्रमाण कहि त्रियोगों में आठ प्रकार मन वचन योगी और काम योगी जीवों का। द्वियोगियों में वचन काय योगियों का प्रमाण वर्णन। सत्य मनोयोग। दिवा सामान्य मन वचन काय योगों के काल का वर्णन। काय योगियों में सात प्रकार काय योगिनो का जुदा जुदा प्रमाण, औदारिक और रिकमिश्र कार्माण के जीवों की संख्या उत्कृष्ट पनै युगवत् होने की अपेक्षा का वचन।

(१०) वेदमार्गणा अधिकार—पृ० ३६६ से पृ० ३७० तक।

भाव द्रव्य भेद होने का विधान, उनके लक्षण, भावद्रव्य भेद समान व असमान होवे उसका वर्णन, वेदानिका कारण, दिखा कर ब्रह्मचर्य अंगीकार करने का वर्णन। तीनों वेदों की निरुक्ति के लिये लक्षण का अवेदी जीवों का वर्णन। संख्या के वर्णन में देवराशि कह उसमें स्त्री पुरुष वेदोनिका, तिर्यंचनि में द्रव्य स्त्री आदि का प्रमाण कह समस्त पुरुष स्त्री नपुंसक वेदोनिका प्रमाण वर्णन। सैनी पंचेन्द्रिय गर्भजा नपुंसक वेदी इत्यादि ग्यारह स्थानों में जीवों का प्रमाण वर्णन।

(११) ग्यारहवां कषायमार्गणा अधिकार—पृ० ३७१ से पृ० ३८८ तक।

कषायनिका निरुक्ती लिये लक्षण का, सम्यक्त्वादिक घात के रूप दूसरे अर्थ में अनन्तानु बंधी आदि का निरुक्ति लिये लक्षण का वर्णन। कषायनि के एक, चार, सोलह असंख्यात लोकमात्र भेद कह क्रोधादिक की उत्कृष्टादि

चार प्रकार की शक्तियों का दृष्टान्त और फल की मुख्यता का वर्णन। पर्याप्त धरने के पहले समय कषाय होने का नियम है या नहीं इसका वर्णन। अकषाय जीवों का वर्णन, क्रोधादिक की शक्ति की अपेक्षा चार, लेश्या अपेक्षा चौदह आयुबंध अपेक्षा बीस भेद हैं। इनका और सब कषाय स्थानों पर प्रमाण कह उन भेदों में जितने जितने संभवैं उनका वर्णन। जीवों की संख्या के वर्णन में, तिर्यंच, मनुष्य गति में जुदा जुदा क्रोधी आदि जीवों का प्रमाण। उन गतों में क्रोधादिक का काल वर्णन है।

(१२) बारहवां, ज्ञानमार्गणा अधिकार। पृ० ३८९ से पृ० १४८९ तक।

ज्ञान का निरुक्ति पूर्वक लक्षण कह कर, उसके पांच भेद और क्षयोपशम के स्वरूप का वर्णन। तीन मिथ्या ज्ञानियों का, मिश्र ज्ञानियों का, तीन कुज्ञानियों के परिणामों के उदाहरण मतिज्ञान तथा उसके नामांतर। इन्द्रिय मन तें उपजने का और उसमें अवग्रहआदि होने का वर्णन, व्यंजन अर्थ के स्वरूप का, व्यंजन में नेत्र मन या ईहादिक न पाये जांय उसका वर्णन, पहिले दर्शन होइ पीछे अवग्रहादि होने के क्रम का, अवग्रहादिकों का स्वरूप अर्थ व्यंजन के विषय भूतवहु बहुविधि आदि बारह भेदों का, तहां अनिवृत्ति विषै चारि प्रकारचतेक्ष प्रमाणगर्भित पना आदि का वर्णन। मतिज्ञान के एक, चार, चौबीस अट्ठाइस और इनसे बारह गुने भेदों का वर्णन है। बहुरि श्रुति ज्ञान का वर्णन, उसमें श्रुत ज्ञान का लक्षण, निरुक्ति आदि का अक्षररूप श्रुति ज्ञान के उदाहरण वा भेद वा प्रमाण का वर्णन। बहुरि भाव श्रुत ज्ञान अपेक्षा बीस भेदों का वर्णन। पहिले जघन्य रूप पर्याय ज्ञान का वर्णन विषै उसके स्वरूप का उसका आवरण जैसे उदय होवे उसका, यह जिसके होवे उसका दूसरा नाम लब्धि अक्षर है उसका वर्णन। अथापि समास ज्ञान का वर्णन, षट स्थान पतित वृद्धि का वर्णन। उसमें जघन्य ज्ञान के अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण लाने को प्रक्षेपक आदि का विधान, एक बार, दोबारा, आदि संकल धन लाने का विधान। साधिक जघन्य जहां दूना होवे उसका विधान, पर्याय समास में अनंत भाग आदि वृद्धि होने का प्रमाण इत्यादि का विशेष वर्णन। अक्षर आदि अठारह भेदों का क्रम से दो वर्णन है। पर्याक्षर के स्वरूप का, तीन प्रकार अक्षरों का, शास्त्र के विषय भूत भावों के प्रमाण का, तीन प्रकार पदनिका, चौदह पूर्वान वस्तु प्राभृतनामा अधिकारानें के प्रमाण का इत्यादि का वर्णन। बीस भेदों में अक्षर अनक्षर, श्रुत ज्ञान के अठारह दो भेदों का और पर्याय ज्ञान आदि को निर्णास लिये स्वरूप का वर्णन, द्रव्य श्रुत का वर्णन में द्वादशांग के पदनिको, प्रकीर्णक के अक्षरों की संख्याओं का, चौसठ मूल अक्षरों का पांकया का। अपन रुक सर्व अक्षरों का प्रमाण वा अक्षरों में प्रत्येक द्विसंयोगी आदि भंगो

करि तिस प्रमाण लाने का विधान, सर्व श्रुत के अक्षरों में अंगों के पद और प्रकीर्णकनि के अक्षरों के प्रमाण लाने का विधान इत्यादि का वर्णन है। आचार राग आदि ग्यारह अंग, दृष्टि वाद अंग के पांच भेद, तिनमें परिकर्म के पांच भेद, तहां सूत्र और प्रथमानुयोग का एक भेद, पूर्व गत के चौदह भेद, चूलिका के पांच भेद, इन सबों के जुदा जुदा पदों का प्रमाण और इन में जो जो व्याख्यान है उनको सूचनिका का कथन। तीर्थंकर की दिव्यध्वनि होने का वर्णन। वर्द्धमान स्वामी के समय दस दस जीव अंतकृत केवली और अनुत्तर गामी हुए उनका नाम, तीन सौ त्रेसठ कुवादिन के धारकवि में कई कुवादियों के नाम, सप्त भंग का विधान, अक्षरों के स्थान प्रयत्नादिक, बारह भाषा, आत्मा के जीवादि विशेषण इत्यादि अनेक कथन। सामायिक आदि चौदह प्रकीर्णकों का स्वरूप श्रुत ज्ञान की महिमा, अवधि ज्ञान का वर्णन, निरुक्ति पूर्वक स्वरूप कह कर उसके भव प्रताप, गुण प्रत्यय भेदों का, और यह भेद किस किस के हों कौन आत्म प्रदेशों से उपजें उसका, उसमें गुण प्रत्यय के छः भेदों का उनमें अनुगामी अननुगामी के तीन तीन भेदों का वर्णन, सामान्य पने अवधि के देशावधिपरमावधि, सर्वावधि भेदों का, उनमें भव प्रत्यय, गुण प्रत्यय के संभवपने का, यह किस किस के होवैं, प्रतिपाती, अप्रतिपाती, विशेषका, इनके भेदों का प्रमाण का वर्णन। जघन्य देशावधि का विषय, भूत द्रव्य क्षेत्र काल भाव का वर्णन कर द्रव्य क्षेत्र काल भाव अपेक्षा, द्वितीयादि उत्कृष्ट पर्यंत क्रम से भेद होने का विधान द्रव्यादिक के प्रमाण का और सब भेदों के प्रमाण का वर्णन। ध्रुव, हार वर्ग वर्गणा गुण कार इत्यादि का वर्णन, क्षेत्र काल अपेक्षा उस देशावधि के उगणीस कांडकनि का वर्णन है। बहुरि परमावधि के विषय भूत द्रव्य क्षेत्र-काल भाव अपेक्षा जघन्य से उत्कृष्ट पर्यंत क्रम से भेद होने का विधान, वहां द्रव्यादि का प्रमाण वा सर्व भेदों का प्रमाण। संकलित धन लाने और 'इच्छि-दरासिच्छेदं'। इत्यादि दो करण सूत्रों का आदि अनेक वर्णन। सर्वावधि अभेद है। उसके विषय भूत द्रव्य क्षेत्र काल भाव का वर्णन, जघन्य देशावधि से सर्वावधि पर्यंत द्रव्य और भाव अपेक्षा भेदों की समानता का वर्णन। नरक में अवधिका और उसके विषय भूत क्षेत्र का वर्णन, मनुष्य तिर्यंच विषै जघन्य उत्कृष्ट अवधि होने का और देवो में भवनवासी, व्यंतर ज्योतिषी लोगों के अवधि गोचर क्षेत्र काल का सौधर्मादि दिकनि विषै क्षेत्रादिका का, द्रव्य का भी वर्णन है। मनः पर्याय ज्ञान का वर्णन उसके स्वरूप दो भेद, ऋजुमति के तीन प्रकार, विपुल मति के छः प्रकार, मनः पर्यय जिससे उपजतो है और जिनके होतो है उनका वर्णन। दो भेदों में विशेष है उसका जीव से चिंतया हुआ द्रव्यादिक को जाने उसका और ऋजु मति का विषय भूत द्रव्य का और मनः पर्यय

संबंधी व्यवहार का और विपुलमति के जघन्य से उत्कृष्ट क्षेत्र पर्यंत द्रव्य अपेक्षा भेद होने का विधान, भेदों का प्रमाण, जघन्य उत्कृष्ट काल भाव का वर्णन, केवल ज्ञान सर्वज्ञ है उसका वर्णन। यहां जीवों की संख्या के वर्णन में मति श्रुति मनः पर्यय केवल अवधि ज्ञानी का और चारों गति संबंधी विभंग ज्ञानीनि का और कुमति कुश्रुति ज्ञानीनिका प्रमाण वर्णन।

१३—तेरहवां अधिकार—संयम मार्गणा—पृ० ५०० से पृ० ५०४ तक

संयम मार्गणा का स्वरूप। संयम के भेदों का निमित्त। संयम के भेदों का स्व-रूप। परिहार विशुद्धिका विशेष, ग्यारह प्रतिमा अट्ठाईस विषय इत्यादि का वर्णन। फिर यहां जीवों की संख्या के वर्णन में सामयिक छेदोपस्थापन, परि-हार, विशुद्धि, सूक्ष्म सांपराय, यथा ख्यात संयम धारी, संयतासंयत और असंयत जीवों के प्रमाण का वर्णन है।

(१४)—चौदहवां अधिकार—दर्शन मार्गणा—पृ० ५०५ से पृ० ५०६ तक।

दर्शन मार्गणा का स्वरूप, दर्शन भेदों के स्वरूप का वर्णन, जीवों की संख्या का वर्णन। शक्ति चक्षुर्दर्शनी, व्यक्त चक्षुर्दर्शनी निका और अवधि केवल अचक्षुर्दर्शनी का प्रमाण वर्णन।

(१५) पन्द्रहवां अधिकार—लेश्या मार्गणा अधिकार—पृ० ५०७ से पृ० ५५५ तक।

द्रव्यभाव से दो प्रकार लेश्या का निरुक्ति लिये लक्षण और उससे बंध होने का वर्णन है, फिर सोलह अधिकारों के नाम हैं। निर्देशाधिकार में छै लेश्यानि के नाम। वर्णाधिकार में द्रव्य लेश्यानि का कारण का और लक्षण का, छहों द्रव्यलेश्यानि के वर्ण के दृष्टांत का, जिनके जो जो द्रव्य लेश्या मिले उनका व्याख्यान है। प्रमाणाधिकार में कषायन के उदय स्थाननि विषै संक्लेश विशुद्धि स्थाननि के प्रमाण का उनके संक्लेश विशुद्धि की हानि वृद्धि से अशुभ शुभ लेश्या होने के अनुक्रम का वर्णन। संक्रमणाधिकार विषयक स्वस्थान परस्थान संक्र-मण संक्लेश विशुद्धि का, वृद्धि हानि से जैसे संक्रमण होवे उसका, और संक्लेश विशुद्धि विषै जैसे लेश्या के स्थान होवें और तहां जैसे षट् स्थान पतित वृद्धि हानि संभवै उसका वर्णन। कर्माधिकार विषै छहों लेश्या वाले कार्य्य विषै जैसे प्रवर्त्तें उसके उदाहरण का वर्णन। लक्षणाधिकार विषै छहों लेश्या वाले निका लक्षण वर्णन है। गति अधिकार विषै लेश्यानि के छब्बीस अंश तिन विषै आठ मध्य अंश आयु बंधका कारण, आठ अपकर्ष कालों में हों उन अपकर्षनिका उदाहरण पूर्वक स्वरूप, यदि उनमें आयु न बंधे तो जहां बंधे उसका, सोपक्रमायुष्क निरुपक्रमायुष्क जीवों के अपकर्षणरूप काल का, आयुर्बंधनः विधान व

गति आदि विशेष का वर्णन। अपकर्षन में आयु बंधने वाले जीवों का प्रमाण, लेश्यानि के अठारह अंश विषै मरण हुय जिस जिस स्थान में उपजै उसका वर्णन। बहुरि स्वामी अधिकार विषै भाव लेश्या की अपेक्षा सात नरकनि के नारकियों में मनुष्य तिर्यंच विषै, वहां भी एकेन्द्रिय विकल त्रय विषै असैनी पंचेन्द्री विषै लब्धि अपर्याप्तक तिर्यंच मनुष्य भवनत्रिक देवसा सादन वालों में, पर्याप्त, अपर्याप्त भोग भूमि या विषै मिथ्या दृष्टि आदि गुण स्थानों में, पर्याप्त भवनत्रिक सौ धर्म द्विक आदि देवों में जो जो लेश्या मिले उनका वर्णन। उसमें असैनी के लेश्या निमित्त से गति में उपजने आदि का विशेष कथन। साधन अधिकार में द्रव्य लेश्या और भाव लेश्यानि के कारण। संख्याधिकार में द्रव्य क्षेत्र कालभाव मान कर कृष्णादि लेश्या वाले जीवों का प्रमाण वर्णन है। क्षेत्राधिकार में सामान्यपने स्वस्थान समुद्घात उपपाद अपेक्षा विशेष पनें दो प्रकार स्वस्थान सात प्रकार समुद्घात, एक उपपाद इन दस स्थानों में संभव संस्थानियों की अपेक्षा कृष्णादिलेश्यानि का स्थान वर्णन अर्थात् क्षेत्र का वर्णन है। वहां प्रसंग वश विवक्षित लेश्या विषै संभव संस्थान, उन २ जीवों के प्रमाण का केवल समुद्घात विषै दंड कपाटादिक को, लोक के क्षेत्रफल का वर्णन, स्पर्शाधिकार में पूर्वोक्त सामान्य विशेष पनें द्वारा लेश्यानि का वर्णन। तीन काल संबंधी क्षेत्र का वर्णन, मेरु से सहस्रार पर्वत सर्वत्र पवन के सद्भाव का वर्णन। जंबूद्वीप समान लवण समुद्र के खंड, लवण के सदृश अन्य समुद्र के खंड करने का विधान। जलचर रहित समुद्रों का मिलाया हुआ क्षेत्रफल के प्रमाण का, देवादिक के उपजने गमन करने का वर्णन। काल अधिकार में कृष्णादि लेश्या जितने काल रहै उसका वर्णन। वहां प्रसंग या येकेन्द्री विकलेन्द्री विषै उत्कृष्ट रहने के काल का वर्णन। भावाधिकार में छहों लेश्याओं में औदयिक भाव के सद्भाव का वर्णन। अल्प बहुत्व अधिकार में संख्या के अनुसार लेश्याओं में परस्पर अल्प बहुत्व का व्याख्यान है। इस प्रकार सोलह अधिकार कह कर लेश्या रहित जीवों का व्याख्यान है।

(१६) भव्य मार्गणा अधिकार—पृ० ५५६ से पृ० ५६७ तक।

भव्य अभव्य और भव्य अभव्य पने से रहित जीवों का स्वरूप। संख्या के कथन में भव्य और अभव्य जीवों का प्रमाण वर्णन। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भवभाव-रूप पंच परिवर्तननि के स्वरूप का, अथवा जिस क्रम से परिवर्तन होवे उनका वर्णन, परिवर्तनों के काल, अनादि से जैसे जैसे परिवर्तन हुए उनके प्रमाण का वर्णन है। उसमें गृहीतादि पुद्गलों के स्वरूप संदृष्टि वाला वर्णन। योग स्थानादिक का वर्णन।

(१७) सत्रहवां सम्यक्त्व मार्गणाधिकार—पृ० ५६८ से ६१६ तक

सम्यक्त का स्वरूप, सराग वीतराग के भेदों का वर्णन, षट् द्रव्य, नौ पदार्थ श्रद्धान रूप लक्षण। षट् द्रव्य का वर्णन में सात अधिकारों का कथन। उसमें नाम अधिकार में द्रव्य एक वा दो भेदों का वर्णन, जीव अजीव के दो भेद। पुद्गल का निरुक्ति लिये लक्षण। पुद्गल परमाणु के आकार का वर्णन पूर्वक रूपी अरूपी अजीव द्रव्य का कथन, उपलक्षणानुवादाधिकार छहों द्रव्यनि के लक्षणों का वर्णन, उसमें गति आदि क्रिया जीव पुद्गल हैं। उनका कारण धर्मादिक हैं उनका दृष्टांत पूर्वक वर्णन। वर्तनाहेतुत्व काल के लक्षण का दृष्टांत पूर्वक वर्णन मुख्य काल के निश्चय होने का, काल के धर्मादिक के कारण पाने का वर्णन। समय आवली और व्यवहार काल के भेदों का वर्णन, उसमें प्रसंगवश प्रदेश के प्रमाण का, अंतर्मुहूर्त के भेदों का, व्यवहार काल जानने का निमित्त का वर्णन व्यवहार काल के अतीत अनागत वर्तमान भेदों के प्रमाण व्यवहार निश्चय काल का स्वरूप स्थिति अधिकार में सर्व अपने पर्यायनिका समुदाय रूप अव-स्थान का वर्णन, क्षेत्राधिकार में जीवादिक जितना क्षेत्र रोकें उनका वर्णन। प्रसंगवश तीन प्रकार आधार व जीव के समुद्घातादि क्षेत्र का या संकोच विस्तार शक्ति का पुद्गलादिकों की अवगाहन शक्ति का वा लोक के स्वरूप का वर्णन। संख्याधिकार में जीव द्रव्याधिक और उनके प्रकाशों का वर्णन, द्रव्य क्षेत्र काल भाव मान का वर्णन है। फिर स्थान स्वरूपाधिकार विषैं द्रव्यों का वा द्रव्य के प्रदेशों के चल अचल पने का वर्णन। अणुवर्गणादि तेईस पुद्गल वर्गणाओं का वर्णन। उन वर्गणाओं में जितने जितने परमाणु मिलें उनके आहारादिक वर्गणा से जो जो कार्य निपजें उनका जघन्य, उत्कृष्ट प्रत्येकादि वर्गणा जहां मिले उसका वर्णन। पुद्गल के स्थूल आदि छै भेद—स्कंध, प्रदेश देश इन तीन भेदों का वर्णन है। फल अधिकार में धर्मादिक, का गति आदि साधन रूप उपकार, जीवों के परस्पर उपकार, पुद्गलों का कर्मादिक वा सुखादिक उप-कार, प्रश्नोत्तर सहित उनका वर्णन। कर्मादिक के पुद्गल ही हैं। कर्मादिक जिस जिस वर्ग, से उपजें उनका वर्णन, स्निग्ध रूप के गुणों के अंशों से पुद्-गल का संबंध। षट् द्रव्य का वर्णन, काल बिना, पंचास्तिकाय, नव पदार्थ जीव अजीव का षट् द्रव्यों में वर्णन। उपशम क्षपक श्रेणी वाले निरंतर अष्टसमयों में जितने जितने हैं। युगपत बोधिक बुद्धि आदि जीव जितने हों उनका वर्णन, सकल संयमियों के प्रमाण का वर्णन। सात नरक के नारकी भवनत्रिक सौधर्म-द्विकादिक देव, तिर्यंच मनुष्य यह जितने जितने मिथ्यादृष्टि आदि गुण स्थानों विषै पाये जावें उनका वर्णन, गुण स्थाननि विषैं पुण्य जीव पाप जीवों का भेद वर्णन। फिर पुद्गलीक द्रव्य पुण्य पाप का वर्णन, आस्रवबंध संवर निर्जरा मोक्ष रूप पुद्गल का प्रमाण वर्णन। षट् द्रव्यादिक का स्वरूप कह कर उनके श्रद्धान

रूप सम्यक्त्व के भेदों का वर्णन, क्षायिक सम्यक्त्व के भेदों का वर्णन। क्षायिक सम्यक्त्व होने के कारण के स्वरूप का वर्णन, उसको पाने से जितने भवों में मुक्ति होइ उसका वर्णन, उपशम, सम्यक्त्व का स्वरूप, कारण पंच लब्धि आदि सामिग्री का जिनके उपशम सम्यक्त्व होने उसका वर्णन, प्रसंगवश आयु बंध हुए पीछे सम्यक्त्व व्रत होने न होने का वर्णन। सासादन मिश्र मिथ्या रुचि का वर्णन है जीवों की संख्या के वर्णन में क्षायिक उपशम, वेदक सम्यग्दृष्टि, सासादन, मिश्र जीवों का प्रमाण, नव पदार्थों का प्रमाण। वहां जीव और अजीव में पुद्गल धर्म, अधर्म आकाश, काल और पुण्य पाप रूप जीव और आस्रव संवर निर्जरा बंध मोक्ष इनके प्रमाण का निरूपण।

(१८) अठारहवां संज्ञा मार्गणा अधिकार—पृ० ६१७ से पृ० ६१८ तक।

संज्ञा का स्वरूप, संज्ञी, असंज्ञी जीवों के लक्षण का वर्णन, और यहां संख्या के वर्णन में संज्ञी, असंज्ञी जीवों के प्रमाण का वर्णन।

(१९) उन्नीसवां अहार मार्गणा अधिकार—पृ० ६१९ से पृ० ६२१ तक

अहार का स्वरूप और निराकार और आहारक जिनके होवें उनका जहां प्रसंग है यहां सात समुद्र घातनि के नाम व समुद्घात के स्वरूप का और आहारक, अनाहारक के काल का वर्णन। आहारक जीवों का प्रमाण वर्णन है यहां प्रसंग-वश प्रक्षेप योगोद्धृति मिश्रपिंड इत्यादि सूत्र करि मिश्र के व्यवहार का कथन।

(२०) बीसवां, उपयोग अधिकार में—पृ० ६२१ से ६२२ तक

उपयोग के लक्षण, साकार, अनाकार भेद, उपयोग है सो व्याप्ति अव्याप्ति असंभवी दोष रहित जीव का लक्षण है उसका वर्णन, केवल ज्ञान केवल दर्शन बिना साकार अनाकार उपयोगों का काल अंतरमुहूर्त मात्र है उसका वर्णन, जीवों की संख्या साकारोपयोग विषै ज्ञान मार्गणावत् और अनाकारोपयोग विषै दर्शना मार्गणावत् का वर्णन।

(२१) इक्कीसवां आधादेश योग निरूपण अधिकार—पृ० ६२२ से ६३७ तक।

गति आदि मार्गणाभेदों में यथा संभव गुण स्थान और जीव समासों का वर्णन, द्वितीयोपशम सम्यक्त्व विषै पर्याप्त अपर्याप्त अपेक्षा गुण स्थानों का विशेष वर्णन। गुण स्थानों में संभव जैसा जी व समास पर्याप्ति प्राण संज्ञा चौदह मार्गणा के भेद उपयोग तिनका वर्णन। मार्गणा व उपयोग के स्वरूप का भी कुछ वर्णन, योग भव्य मार्गणानि के भेदनिका व सम्यक्त्व मार्गणा विषै प्रथम द्वितीयोपशम सम्यक्त्व का इत्यादि का विशेष वर्णन, गति आदि कई मार्गणानि विषै पर्याप्त अपर्याप्त अपेक्षा कथन।

(२२) बाईसवां अधिकार आलाप—पृ० ६३८ से ७५१ तक।

आलाप अधिकार में मंगलाचरण कर सामान्य पर्याप्त, अपर्याप्त कर तीन अलाप, अनवृति करण में पांच भागों की अपेक्षा पांच अलाप उनका गुण स्थान चौदह मार्गणा के भेदों में यथा संभव कथन है। उसमें गति मार्गणा विषै विशेष कथन है। गुण स्थान मार्गणास्थान में गुणस्थानादि बीस प्ररूपणा यथा संभव आलापनि की अपेक्षा निरूपण करनी। वहां पर्याप्त अपर्याप्त एकेन्द्रियादि जीवों के संभव से पर्याप्ति प्राण जीव सामासादिक का कुछ वर्णन कर यथा योग्य सर्व प्ररूपणा जानने का उपदेश है। बहुरि उनके जानने का यंत्रों द्वारा कथन। पहिले यंत्रों विषयक जैसे अनुक्रम हैं वह समस्या है वा विशेष है सो कथन। एक एक रचना विषै बीस बीस प्ररूपण का कथन स्वरूप छह से चउदह यंत्रों की रचना है उसमें कोई रचना समान जान बहुत रचनाओं की एक रचना है। फिर मन पर्यय ज्ञानादिक में एक होवे अन्य न होवे उसका वर्णन। उपशम श्रेणी से उतर, मरण हुए उपजने का सिद्धानि विषयक संभवसो प्ररूपणानिका निक्षेपादिक प्ररूपणा जानने के उपदेश का वर्णन है। फिर आशीर्वाद। टीकाकार के वचन

"जीव काण्ड नामा महाधिकार"

संपूर्ण

(२) अजीव कांड नामा महाअधिकार (पृ० से पृ० तक)

(१) प्रथम अधिकार—पृ० ७५३ से ७८५ तक।

समुत्कीर्तन अधिकार में-मंगलाचरण, प्रतिज्ञा, प्रतिज्ञा का स्वरूप, जीव कर्म का संबंध, उनका अस्तित्व, दृष्टांत पूर्वक कर्म परमाणु का ग्रहण, बंध उदय, सत्वरूप कर्म परमाणु, का प्रमाण, ज्ञान वर्णादिक आठ मूल प्रकृतियों के नाम। घाती अघाती भेद उनके कार्य। क्रम संभवने का वर्णन, दृष्टांत निरुक्ति लिये इनके स्वरूप का वर्णन, इनकी उत्तर प्रकृति का कथन, पंच निद्रा तीन दर्शन मोह होने के विधान, पंचशरीरों पंद्र भंगनिका विवक्षित संहनन वाले देव नरक गति में जहां उपजें उनका वर्णन, कर्म भूमि स्त्रियों के तीन संहनन आताप, प्रकृति के स्वरूप स्वामित्व। मतिज्ञान, वर्णादि उत्तर प्रकृति के निरुक्ति लिए स्वरूप का वर्णन। प्रसंगवश भव्य के केवल ज्ञान के सद्भाव विषै प्रश्नोत्तर। सात घात, सात उपघातु। अभेद विविक्षा जो प्रकृति गर्भित हो उसका वर्णन, बंध उदय सत्ता रूप जितनी प्रकृतियां हैं उनका वर्णन। घातिया में सर्वघाती देश घाती प्रकृतियों का वर्णन, सब प्रकृतियों में प्रशस्त अप्रशस्त विषै का वर्णन, प्रसंगवश संशय विपर्यय अनध्यवसाय को वर्णन। तीन प्रकार के श्रोताओं का कथन, प्रकृति के चार निक्षेप नामादि निक्षेप का स्वरूप कह नाम निक्षेप का भेद

तदाकार अतदाकार रूप दो प्रकार स्थापना निक्षेप का और आगमनो आगम रूप दो प्रकार द्रव्य निक्षेप का नो आगम के ज्ञायक तद्व्यति रिक्तरूप तीन प्रकार भूत, भावी वर्तमान रूप ज्ञायक शरीर के तीन भेदों का कथन च्युत च्यावित त्यक्त रूप भूत शरीर के तीन भेदों का त्यक्त के भक्त प्रतिज्ञा इंगिनी प्रायोपगमन रूप भेद भक्ति प्रतिज्ञा उत्कृष्ट मध्य, जघन्य रूप तीन प्रकार तद्व्यति रिक्त नोआगम द्रव्यकर्म नोकर्म भेदों का फिर भाव निक्षेप के आगमनो आगम भेदों का वर्णन। मूल प्रकृतिनि विषै इन कहि उत्तर प्रकृति विषै वर्णन है। और नो आगम-भाव कर समुच्चय रूप वर्णन है।

(२) दूसरा अधिकार—बंध उदय सत्वयुक्तस्तव नामा अधिकार—पृ० ७८१ से ९६८ तक

नमस्कार पूर्वक प्रतिज्ञा कर स्तवनादिक का लक्षण वर्णन बहुरि। बंध व्याख्यान विषै बंध के प्रकृति स्थिति अनुभाग प्रदेश रूप भेदों का और तिन विषै उत्कृष्ट अनुत्कृष्ट जघन्य अजघन्य पने का, इन विषै भोलादि अनादि ध्रुव अध्रुव संभवने का वर्णन। प्रकृति बंध का कथन विषय गुण स्थाननि विषै प्रकृति बंध के नियम का, तहां भी तीर्थंकर प्रकृति बंधन के विशेष का, और गुण स्थानों विषै व्युच्छित्ति बंध अबंध प्रकृतियों का, जहां भी व्युच्छित्ति के स्वरूप दिखावने कौं द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा का गति आदि मार्गणा के भेदों के विषै सामान्य पनै संभव मे गुणस्थान, यथोव्युच्छित्ति बंध अबंध प्रकृतियों के विशेष का, मूल उत्तर प्रकृतिनि विषै संभवते सादितै, आदि देकर बंध का, वहां अध्रुव प्रकृतियों में सप्रतिपक्ष निःप्रतिपक्ष प्रकृतिनिका, निरंतर बंध होने के काल का वर्णन। स्थिति बंध के वर्णन में मूल उत्तर प्रकृतियों के उत्कृष्ट स्थिति बंधका और उत्कृष्ट स्थिति बंध संज्ञक पंचेंद्रियकैं ही होय उसका और जिस परिणाम मैं वा जिस जीव के जिस प्रकृति का उत्कृष्ट स्थिति बंध होय उसका, वहां प्रसंग वा उत्कृष्ट ईषत् मध्यम संक्लेश परिणामों के स्वरूप दिखाने को अनु-कृष्टि आदि विधान का और मूल उत्तर प्रकृतियों के जघन्य स्थिति बंध के प्रमाण का जघन्य स्थिति बंध जिसके होय उसका वर्णन। एकेन्द्री बेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्री असंज्ञी संज्ञी पंचेन्द्री जीवों के मोहादिक की उत्कृष्ट जघन्य स्थिति के प्रमाण, प्रसंग पाइनिन के अबाधा के काल भेद कंडकनिके प्रमाण, भेद प्रमाण, गुणित कांडक प्रमाण की उत्कृष्ट स्थिति विषै घटाएं जघन्य स्थिति कर प्रमाण होने का वर्णन है। बहुरि एकेंद्रियादि जीवों के स्थिति भेदों को स्थापन करि तहां चौदह जीव समासनि विषै जघन्य उत्कृष्ट स्थिति बंध और अबाधा और भेदों के प्रमाण का और तिनके जानने का विधान वर्णन है। वहां प्रकृतियों का जघन्य स्थिति बंध जिनके होइ उसका, और जघन्य आदि स्थिति बंध विषयक सादि नैं आदि देकर

संभवपन को और विशुद्ध संक्लेश परिणामों से जैसे जघन्य उत्कृष्ट स्थिति बंध होय उसका, अबाधा के लक्षण, मोहादिक की अबाधा के काल का वर्णन, आयु की अबाधा के विशेष का तहां प्रसंग पाकर देव नारकी भोग भूमियां कर्म भूमियों के आयु बंध होने के समय का, उदीर्णा अपेक्षा, अबाधा काल के प्रमाण का प्रसंग पाकर अचला वली, उदया वलि उपरितन स्थिति विषय कर्म 'परमाणु' खिरने का उदीर्णा के स्वरूप का, आयु वा अन्य कर्मनि के निषेकनि के स्वरूप का अंक संदृष्टि निषेकनि पूर्वक विषै द्रव्य प्रमाण का तहां गुण हानि आदि का वर्णन है। बहुरि अनुभाग बंध का व्याख्यान विषै प्रकृतियों का अनुभाग जैसे संक्लेश विशुद्धि परिणाम निकरि बंधै है उसका और जिस प्रकृति का जाके तीव्र वा जघन्य अनुभाग बंधै है उसका यहां प्रसंग पाकर अपरिवर्तन मान, परिवर्त मानमध्य परिणामनि के स्वरूपादि का और उत्कृष्टादि अनुभाग बंध विषै सादिनै आदि देकर भेदों के संभवपने का वर्णन बहुरि घातियानि विषै लतादारु अस्थि शैल भाग रूप अनुभाग का तहां देश घाति वा सर्वघातिका मिथ्यात्व विषै विशेष है उसका वर्णन, जिन प्रकृतियों विषै जैसे प्रकार अनुभाग प्रवर्तै उसका वर्णन। अघातियानि विषै प्रशस्त प्रकृतियों का गुड़ खंड शर्करा अमृत रूप अप्रशस्त प्रकृतियों का, निंब कांजीर विष हलाहल रूप अनुभाग का और इन प्रकृतियों के तीन तीन प्रकार अनुभाग प्रवर्तै उसका वर्णन। प्रदेश बंध का कथन विषै एक क्षेत्र अनेक क्षेत्र संबंधी वा तहां कर्म रूप होने को योग्य अयोग्यरूप, तिन विषै भी जीव के ग्रहण की अपेक्षा सादि अनादि रूप पुद्गलों का प्रमाणादिक कह तहां जिन पुद्गलों को समय प्रबद्ध में ग्रहै उसका वर्णन। ग्रहे कर्मरूप परमाणू के प्रमाण उनको आठ वा सात मूल प्रकृतियों में जैसे विभाग है उनका हीनाधिक विभाग होने का कारण। उत्तर प्रकृतियों में विभाग का अनुक्रम; ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय में सर्वघाती, देशघाती द्रव्य का विभाग, मति ज्ञानावरणादि प्रकृति में सर्वघाती, देशघाती स्पर्द्धकनिका, उसमें अनुभाग संबंधी नाना गुण हानि, अन्योन्याभ्यस्त द्रव्य स्थिति गुण हानि का प्रमाण कह कर उसमें वर्गणा का प्रमाण ला उसमें जहां देशघाती, सर्वघातीपना पाया जाय उसका वर्णन। चार घातिया कर्मों का उत्तर प्रकृतियों में कर्मपरमाणुओं के विभाग का वर्णन, संज्वलन और नोकषाय में विशेषपना। नोकषाय के युगपत् बंध। उनके निरंतर बंधने का कारण। अंतराय की प्रकृतियों में सर्वघातीपना न होने का वर्णन। युगपत नाम कर्म की तेइस आदि प्रकृति बंधे उनका विभाग। वेदनीयादिक की एक एक ही प्रकृति बंध इससे इसमें जहां कहीं जाति बंध इससे यहां विभाग न होने का वर्णन। मूल उत्तर प्रकृतियों का उत्कृष्टादि प्रदेश बंध में सादि इत्यादि भेद संभवने का वर्णन। जिस प्रकृति का उत्कृष्ट जघन्य प्रदेश बंध जिसके हो उसका वर्णन। स्तोक वा एक जीव के युगपत् जितनो जितनो

प्रकृत बंधै उनका वर्णन। योगनिका का कथन। उपपाद एकांत वृद्धि परिणाम रूप होगनि के स्वरूपादि का वर्णन। योगनि अविभाग प्रतिच्छेदन वर्ग वर्गणा स्पर्द्धक गुण हानि नाना गुण हानि स्थाननि के स्वरूप प्रमाण विधान का योग शक्ति व प्रदेश अपेक्षा विशेष वर्णन है। योगनिका जघन्य स्थान से लेकर स्थाननि में वृद्धि के अनुक्रम तक वर्णन। सूक्ष्म निगोदिया लब्धि अपर्याप्तक का जघन्य उपपाद योग स्थान से लेकर ८४ स्थाननिका, बीच बीच में जिनका स्वामी (स्वामी) न मिले उनका, उनमें गुणकार के अनुक्रम का, जघन्य स्थान से उत्कृष्ट स्थान के गुण कार का वर्णन। तीन प्रकार योग निरंतर जितने काल प्रवर्तें उनका पर्याप्त त्रस संबंधी परिणाम-योग स्थानों में जितने जितने योग स्थान, दो आदि आठ समय पर्यंत निरंतर प्रवर्तें उनके प्रमाण लाने को कालयव मध्य रचना। पर्याप्त त्रस संबंधी परिणाम योग स्थाननि में जितने जितने जीव मिलें तिनके प्रमाण जानने को गुण हानि आदि विशेषता युक्त जीव यव मध्य रचना का और योग स्थानों से जितना जितना प्रदेश बंध हो उसका, उसका जघन्य से उत्कृष्ट स्थान पर्यंत बंधने क्रम का बीचि बीचि जितने अविभाग प्रतिच्छेद हों उनका वर्णन है। चार प्रकार बंध के कारणों का कथन। योग स्थानादिक के अल्प बहुत्व का वर्णन। योग स्थान श्रेणी के असंख्यातवां भाग मात्र उनका वर्णन। असंख्यात लोक गुने कर्म प्रकृतियों के भेदों के वर्णन में मतिज्ञानादिक के भेद। क्षेत्र अपेक्षा अनुपूर्वी के भेदों का कथन। उनसे असंख्यात गुने कर्म स्थिति के भेदों का वर्णन में मतिज्ञानादिक के भेद। क्षेत्र अपेक्षा अनुपूर्वी के भेदों का कथन। उनसे असं-ख्यात गुने कर्म स्थिति के भेदों का वर्णन, उनमें एक एक प्रकृति की जघन्य उत्कृष्ट पर्यंत स्थिति भेदों का कथन है। उनसे असंख्यात गुने स्थिति बंधाध्यव-सायनिका वर्णन, द्रव्य स्थिति गुण हानि निषेक त्रयादिक की स्थिति बंध का कारण परिणामों का स्तोकता। फिर उनसे असंख्यात लोक गुने अनुभाग बंधाध्यवसाय स्थाननि का वर्णन। उसके अन्तर्गत द्रव्य स्थिति गुण हान्यादिक अनुभाग का कारण परिणामों का स्तोकता कथन। उनसे अनंत गुने कर्म प्रदेशों का वर्णन। द्रव्य स्थिति गुण हानि नाना गुण हानि अव निषेकों का अंक संदृष्टि वा अर्थ करि कथन। एक समय मे समय प्रबद्ध मात्र पुद्गल बंधै, एक एक निषेक मिल कर समय प्रबद्ध मात्र ही निर्जरैं ऐसे होते स्यर्द्ध गुण हानि गुणित समय प्रबद्ध मात्र सत्त्व रहे उसका विधान जानने के लिये त्रिकोण येत्र की रचना। उदय के वर्णन मे उदय प्रकृतियों का नियम। गुण स्थानों व्युच्छित्त उदय, अनुदय प्रकृतियों का वर्णन। उदीरणामें विशेष कह गुण स्थानों में व्युच्छिति उदीर्णा अनुदीर्णा रूप प्रकृतियों का वर्णन। मार्गणा में उदय प्रकृतियों का कह गति आदि मार्गणा के भेदों में संभव संगुण स्थानों की अपेक्षा लिये व्युच्छित्ति

उदय अनुदय प्रकृतियों का वर्णन। सत्त्व के कथन में तीर्थंकर आहारक की सत्ता का, मिथ्या दृष्ट्यादि विषै विशेष और आयु बंध हुए पीछे सम्यक्त्व जत होने का विशेषत्व, क्षायिक सम्यक्त्व होने का विशेष कह मिथ्या दृष्टि आदि सात गुण स्थानों में सत्त्व प्रकृतियों का वर्णन। ऊपर क्षपक श्रेणी अपेक्षा व्युच्छित्ति सत्त्व असत्त्व प्रकृतियों का वर्णन है। मिथ्या दृष्टि आदि गुण स्थानों सत्त्व असत्त्व प्रकृतियों का वर्णन। उपशम श्रेणी विषै इकीस मोह प्रकृति उपशमा वने का क्रम। सत्त्व प्रकृतियों का कथन। मार्गणा में सत्ता असत्ता प्रकृतियों का नियम। गति आदि मार्गणा के भेदों में यथा संभव गुण स्थानों की अपेक्षा लिये व्युच्छित्ति सत्त्व असत्त्व प्रकृतियों का वर्णन है। इन्द्रिय काय मार्गणा में प्रकृतियों की उद्वेलना का इत्यादि अनेक वर्णन।

(३) तीसरा अधिकार—विशेष सत्ता—पृ० ९६९ से पृ० ९८९ तक।

एक जीव की एक काल प्रकृति मिलें उनके प्रमाण की अपेक्षा स्थान स्थान में प्रकृति बदलने की अपेक्षा भंग उनका वर्णन। नमस्कार पूर्वक प्रतिज्ञा कर स्थान भंगों का स्वरूप कर गुण स्थानों में सामान्यवत प्रकृतियों का वर्णन करके विशेष वर्णनों में मिथ्या दृष्टायादि गुण स्थानों में जितने जितने स्थान अथवा भंग हों उन को कह कर जुदा जुदा कथन में उनका विधान वा प्राकृतिक घटने बंधने बदलने के विशेष का बद्धायु अबद्धायु अपेक्षा वर्णन है। मिथ्या दृष्टि में तीर्थंकर सत्ता वाले के नरकायु ही का सत्व हो उसका वर्णन। एकेन्द्रिय आदिक के उद्वेलन्य का और सासादन में आहार सत्ता के विशेष का मिश्र में अनंतानुबंधी रहित सत्त्व स्थान जैसे संभवे उसका असंयत में मनुष्यायु तीर्थंकर सहित एक सौ छह-तीस प्रकृति की सत्तावाले के एक वा दो वा तीन ही कल्याण कहीं उनका अपूर्व करणादि विषै अपशमक क्षपक श्रेणी अपेक्षा का इत्यादि अनेक वर्णन है। बहुरि आचार्यों के मत जो विशेषत्व है। उसके कथन पर उसकी अपेक्षा को कथन है।

(४) चौथा अधिकार—त्रिचूलिका पृ० ९९० से पृ० १००४ तक।

नौ प्रश्नों द्वारा चूलिका का व्याख्यान। पहिले तीन प्रश्न करना और उनके उत्तर में जिन प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति से पहिले बंध व्युच्छित्ति युगपत हुई उसका वर्णन, फिर तीन प्रश्न कर के उनके उत्तर में जितना अपना उदय होते ही बंध हो उनका और जिनका अन्य प्रकृतियों का उदय होते ही बंध होने उनका वर्णन। फिर तीसरा तीन प्रश्न कर तिनके उत्तर में जिनका निरंतर बंध हो उनका और जिनका सांतर बंध हो उनका और जिनका सांतर निरंतर बंध हो उनका कथन। यहां तीर्थंकरादि प्रकृति निरंतर बंधी जैसे उसका और सप्रतिपक्ष निःप्रतिपक्ष अवस्था में सांतर निरंतर बंध जैसे संभव है उसका वर्णन है। दूसरी पंच

भाग हार चूलिका का व्याख्यान में मंगलाचरण कर उद्वेलन विध्यात अधः प्रवृत्त गुण संक्रम सर्व संक्रम इन पांच भाग हारन के नाम स्वरूप भाग हार जिन जिन प्रकृतियों में गुण स्थानों में संभवें ताकर वर्णन। सर्व संक्रम भाग हार गुण संक्रम भागहार उत्कर्षण वा अपकर्षण भागहार अधःप्रवृत्त भागहार योगों में गुणाकार, स्थिति में नाना गुणहानि पल्य के अर्द्धच्छेद पल्य का वर्गमूल स्थिति विषै गुण हानि आयाम, स्थिति विषै अन्योन्यभ्यस्त राशि, पल्य कर्म की उत्कृष्ट स्थिति, विध्यात संक्रम भागहार, उद्वेलन भागहार अनुमान विषै नाना गुणहानि, दो गुणहानि, अन्योन्याभ्यस्त इनका प्रमाण पूर्वक अल्प बहुत्व का कथन। तीसरी दश करण चूलिका के व्याख्यान में बंधन उत्कर्षण, २ संक्रम, ३ अपकर्षण ४ उदीर्णा, ५ सत्व ६ उदय ७ उपशम ८ निधत्ति ९ निःकांचना, १० इन दश करणनि के नाम स्वरूप जिन जिन प्रकृतियों वा गुण स्थानों में जैसे जैसे संभवें उनका वर्णन।

(५) फिर पांचवां बंध उदय सत्व सहित स्थान समुत्कीर्त्तन नया अधिकार पृ० १००५ से पृ० ११५३।

मंगलाचरण, एक जीव के युगपत् संभवतो बंधादिक प्रकृतियों का प्रमाण रूप स्थान या वहां प्रकृतियों के बदलने से हुए भंगनि का वर्णन। मूल प्रकृत के बंध स्थान। भुजा कारादि बंध विशेष का, भुजाकार अल्प तर अवस्थित अव कर्तव्य रूप बंध विशेषों का स्वरूप का वर्णन। मूल पद्धति के उदय स्थान उदीर्णा स्थान, सत्व स्थानों का वर्णन। उत्तर प्रकृतियों के कथन में दर्शनावर्णी मोहनीय नाम की प्रकृति विशेष हैं तहां दर्शना वरण के बंध स्थानों का वर्णन। गुण स्थान अपेक्षा भुजा कारादि विशेष संभव का दर्शनावरण के गुण स्थान बंध स्थान उदय स्थान सत्व स्थान मोहनीय के बंध स्थान। प्रकृतियां नाम जानने को ध्रुवबंधी प्रकृत का, कूट रचना आदि का। प्रकृति बदलने से हुए भंगियों बंध स्थानों में संभव से भुजा करादि विशेषों का भुजा करादि के लक्षण सामान्य अवक्तव्य भंगियों की संख्या, भुजा कारादि संभवन का विधान, गुण स्थान में चढ़ना उतरना, इत्यादि का विशेषत्व। मोह के उदय स्थान। उनकी प्रकृति का विधान। संख्या। मिलाई हुई संख्या। गुण स्थान में संभव से उपयोग, योग, संयम, लेश्या, सम्यक्त्व उनकी अपेक्षा। मोह स्थान का प्रकृतियों का विधान संख्या आदि का अनंतानुबंधी रहित उदय स्थान। मिथ्यादृष्टि को अप-र्याप्त अवस्था में न पाइये इत्यादि विशेष वर्णन, मोह सत्व स्थानिका वर्णन का वा तहां प्रकृति घटने का और वह स्थान गुण स्थानों में जैसे संभवें उनका, और अनिवृत्ति करण में उसका वर्णन। नाम कर्म का कथन में आधार भूत इकता-लीस जीव पद चौतीस कर्म पदों का व्याख्यान कर नाम के बंध स्थान का और वे गुण स्थानों में जैसे संभवे उनका और वे जिस जिस कर्म पद सहित बंध हैं उसका

और उनमें क्रम से नौ ध्रुव बंधी आदि प्रकृतियों के नाम का, तीस केव आदि दै कर नाम के बंध स्थाननि विषै जो जो प्रकृति जैसे जैसे हैं उनका वर्णन। प्रकृति बदलने से हुए भंगियों का वर्णन है। यहां प्रसंग या स्वयं भूरमण समुद्र परै कूणानि विषै कर्म भूमियां तिर्यंच बादर सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त अग्निकायिक आदि जीव जहां उपजै उसका सूक्ष्मनिगोदसे आव मनुष्य सकल संयमन ग्रह इत्यादि विशेष का अपर्याप्त मनुष्य जहां उपजै उसका वर्णन। भोग भूमि कुभोग भूमि के तिर्यंच मनुष्य, कर्म भूमि के मनुष्य जहां उपजै उसका वर्णन सर्वार्थ सिद्धि से लगाय भवनत्रिक देव जहां उपजै उसका वर्णन। च्यवन उत्पादक कह चौदह मार्गणा में गुण स्थान की अपेक्षा लिये जैसे जो जो नाम कर्म के बंध स्थान संभवै उनका वर्णन है। गति इन्द्रिय काय काय भोग वेद मार्गणा तो लेश्या अपेक्षा बंध स्थानों का कथन है। कषाय मार्गणा में अनंतानु बंधी आदि जैसे उदय होवै उसका या इनके देश घाती सर्व घाती, स्पर्द्धकनिका, सम्यक्त्व संयम घातने का वा लेश्या अपेक्षा बंध का स्थान कथन। ज्ञान मार्गणा में गति आदिक को यो अपेक्ष कर बंध स्थाननिका कथन है। संयम मार्गणा में सामायिकादिक के स्वरूप का अर संयता संयत विषै दो गति अपेक्षा, असंयम विषैं चार गति अपेक्षा बंध स्थानों का कथन है। निवृत्य पर्याप्त देव के बंध स्थान कहने को देव गति विषै जे जे जीव जहां पर्यंत उपजैं उनका वर्णन। सासादन में बंध स्थान कहने जो जो जीव जैसे उपशम सम्यक्त्व को छोड़ सासादन हो उनका कथन। दर्शन मार्गणा में गति अपेक्षा बंध स्थान। लेश्या मारगणा प्रथमादि नरक। पृथ्वी में लेश्या संभवने का जिस जिस संहनन के धारी जो जो जीव जहां जहां पर्यंत नरक में उपजें उनका नरकों में पर्याप्त निवृत्य पर्याप्त अवस्था अपेक्षा बंध स्थान का और तिर्यंच में एकेन्द्रियादिक के वा भूग भूमियां त्रियंच जो जो लेश्या मिले उनका जो जो जीव जिस जिस लेश्या द्वारा तिर्य्यंच में उपजें उनका वर्णन। उनके निवृत्य पर्याप्त अवस्था में बंध स्थाननिका शुभाशुभ लेश्या का परिणाम, कषायनिके स्थान। चौदह लेश्या स्थान। बीस आयुबंध स्थान वे लेश्याओं छब्बीस अंश। लेश्याओं के पलटने का क्रम। भूगोभूमि आदि तिर्यंचादि का वर्णन। मनुष्य गति में लब्धि अपर्याप्त, निवृत्य पर्याप्त दशाएं देवगति भव्य मार्गणा में बंध स्थानों का वर्णन। सम्यक्त मार्गणा तीर्थंकर सत्ता वालों के तद्भव अन्य भव अन्य भव में मुक्त होने का वर्णन। क्षायिक सम्यक्त्व विषै संभवतें बंध स्थानों का वर्णन। वेद सम्यक्त्व जिनके हो। प्रथमोपशम। द्वितीयोपशम सम्यक्त्व से जैसे वेदक सम्यक्त्व हो और तिनके जे बंध स्थान हो उनका वर्णन। सासादन मिश्र मिथ्यात्व जहां जहां जिस जिस द्रव्य संभवै और तहां जे बंध स्थान मिलें उनका वर्णन है। नाम के उदय स्थानों का वरन। कर्माण, मिश्रा शरीर,

शरीर पर्याप्ति, उच्छ्वासपर्याप्ति भाषा पर्याप्ति इनपंच कालों के स्वरूप प्रमाणादिक। प्रकृतियों के बदल कर संभव ते भंगनिका वर्णन। नाम के सत्व स्थाननिका वर्णन। जिन प्रकृतियों की उद्वेलना तिनके स्वामी इत्यादि का कथन। सम्यक्त्व देश संयम अनंतानुबंधी विसंयोजन, उपश्रेणी चढ़ना सकल संयम धरना, ए उत्कृष्टपन जितनी बार हों इनका वर्णन। इकतालीस जीव पदों में सत्व स्थान संभवें उनका वर्णन। त्रिसंयोगी ने स्थान वा भंगियों का वर्णन। मूल प्रकृति उत्तर प्रकृति। दर्शना वर्णन, वेदनीय वर्णन। गोत्र, आयु। आठ अपकर्ष में बंधने का वर्णन। बध्यमान, भुज्यमान आयु के घटने रूप अपवर्तन घात कदली घात का वर्णन। वेदनीय गोत्र आयु के भंग। मोह की स्थानानि की अपेक्षा भंग मोह का त्रिसंयोग, मोह के बंध उदय सत्व। नाम कर्म के स्थानोक्त भंग। गुण स्थानों और चौदह जो समासों में बंध स्थान वा सत्व स्थानादि का वर्णन।

(६) छठवां प्रत्यय अधिकार—पृ० ११५८ से ११६७ तक।

नमस्कार पूर्वक प्रतिज्ञा, चार मूल आस्रव, सत्तावन उत्तर आस्रवों का और जैसे स्थानों विषे संभवे उसका उसमें व्युच्छित्ति वा आस्रवों के प्रमाण नामादिक का वर्णन। पंच प्रकारों का वर्णन प्रथम प्रकार में एक जीव के एकै काल संभवे ऐसे जघन्यादि का वर्णन। दूसरे प्रकार में एक एक स्थान में आस्रव भेद बदलने से जितने प्रकार हों उनका वर्णन। तीसरे प्रकार में उन्हीं कूटों के अनुसार अक्ष संचारि विधान से जैसे जैसे आस्रव स्थानों के कहने का विधान रूप कूटोच्चारण। पांचवें प्रकार में उन स्थानों में भंगलाने का विधान। गुणस्थानों में संभवतः भानिकादि का वर्णन।

(७) सातवां भाव चूलिका नाम अधिकार—पृ० ११६८ से पृ० १२०६ तक।

नमस्कार पूर्वक प्रतिज्ञा करके भावों के गुण स्थान संज्ञा होने इस प्रकार कथन कर पंचमूल भावनिका, उनके स्वरूप का तेवन उत्तर भावनिका मूल उत्तर भावों में अक्ष संचार के विधान से प्रत्येक पर संयोगीद्विसंयोगी आदि भंग। जघादि संभवे भावों का वर्णन। एक जीव के युगपत् संभव से भावों का वर्णन। गुण स्थानों में मूल भावों के प्रत्येक पर संयोगी द्विसंयोगी आदि भंगनिका वर्णन। प्रत्येक त्रिसंयोगी, द्विसंयोगी आदि भंगलाने का गणित शास्त्रानुसार विधान। गुण स्थानों में मूलभाव। उत्तर भावों के भंग स्थान गत पदगत भेद से दो प्रकार। स्थानों की परस्पर संयोगी की अपेक्षा गुण्य गुणाकार क्षेपादि विधान से जैसे जिस जितने प्रत्येक भंग और पर संयोगी में द्विसंयोगी आदि का भेद। गुण्य गुणाकार क्षेपका प्रमाण। पदगत भंग के दो भेदों (१) जाति पदन व पदों का वर्णन। इन दोनों भेदों के स्वरूपादि का कथन। सर्व

पद बंध के दो भेद। उनके स्वरूपादि का वर्णन। तीन सैाचेसठ कुवाद के भेदों का वर्णन।

(८) आठवां त्रिकरण चूलिका नामा अधिकार—पृ० १२०६ से पृ० १२१६ तक।

मंगलाचरण करके कारणनिका प्रयोजन। अधकरण का वर्णन। उसके कालादि का वर्णन और यहां संभव से सब परिणाम, प्रथम समय संबंधी परिणाम। समय समय प्रतिवृद्ध रूप परिणाम वा द्वितीयादि समय संबंधी परिणाम व संबंधी परिणामों से खंड रचना कारि अनुकृष्ट विधान। खंडनि का वर्णन। अंक संदृष्टि व अर्थ अपेक्षा परिणामों का वर्णन समय समय प्रतिवृद्धि रूप परिणाम द्वितीयादि समय संबंधी परिणाम अनिवृत्ति करण में भेद नहीं इस लिये कालादि का वर्णन।

(९) नवमो कर्म स्थिति अधिकार—पृ० १२१७ से पृ० १२५४ तक।

नमस्कार पूर्वक प्रतिज्ञा करके अबाधा के लक्षण का व स्थिति अनुसार उसके काल का, वा उदीरणा अपेक्षा आबाधा काल का वर्णन है। कर्म स्थिति में निषेकनि का वर्णन प्रथमादि गुण हानि के प्रथमादि निषेकों वर्णन है। स्थिति रचना में द्रव्य, स्थिति गुण हानि, नाना गुण हानि, अन्योन्याभ्यस्त इनके स्वरूपादि का वर्णन। मिथ्यात्व कर्म को नाना गुण हानि अन्योन्याभ्यस्त जानने का विधान। 'अंत धरणं गुण गुणियं' इत्यादि करण सूत्रों द्वारा गुणाकार रूप पंक्ति के जोड़ देने का विधान। गुण हानि दो गुण हानि के प्रमाण का वर्णन। विशेष जो चय उसके प्रमाण का वर्णन। अंक दृष्टि व अर्थ अपेक्षा। मिथ्यात्ववत् अन्य कर्मों की रचना अंक संदृष्टि अपेक्षा त्रिकोण यंत्र, इस यंत्र का प्रयोजन। निरंतर सांत रूप स्थिति के भेद स्वरूपादि का वर्णन। स्थितिबंध का कारण। स्थिति के भेद। अनुकृष्टि रचना। आयु कर्म का विधान। खंडों की समानता असमानतादि के अनेक कथन। अनुभाग बंध का कारण। अनुभागाध्यवसाय स्थानों का वर्णन। उन सब का प्रमाण। मूलग्रंथकर्त्ता के किये हुए ग्रंथ की संपूर्णता होते हुए ग्रंथ के हेतु का चामुंड राय राजा के आशीर्वाद का उसके द्वारा बनाए हुए चैत्यालय वा जिन बिंब का वीर मार्तंड राजा को आशीर्वाद का वर्णन है। फिर संस्कृत टीकाकार अपने गुरु का वा ग्रंथ होने के समाचार कहता है, उसका वर्णन।

---

(३) संदृष्टि अधिकार (पृ० १२५५ से पृ० तक)

(१) संदृष्टि चूलिका—पृ० १२२५ से पृ० १४४४ तक।

सद्दृष्टि अधिकार में प्रथम मंगलाचरण, इस प्रकार का कारण, प्रकृति बंधाव पसरण, स्थिति बंधाव पसरण, स्थिति कांडक, अनुभाग कांडक, गुणश्रेणी फालि इत्यादि। कई संज्ञाओं का स्वरूप वर्णन करके प्रथमोपशम सम्यक्त्व होने का विधान। प्रथमोपशम सम्यक्त होने के योग्य जीविका, पंचलब्धियों के नामादिक कह कर उनके स्वरूप का वर्णन। प्रायोग्यता लब्धि में जिस प्रकार स्थिति घटती है और वहां चार गति अपेक्षा प्रकृति बंधापसरण होता है उसका, स्थिति अनु-भाग प्रदेश बंध का वर्णन है। करणलब्धिका कथन विषय तीन करणानि का नाम कालादिक कह उनके स्वरूप का वर्णन। अधःकरण में स्थिति बंधा पसर-णादिक आवश्यक होता है उनका वर्णन। अपूर्व करण में चार चार आवश्यक तिनमें गुण श्रेणी निर्जरा का कथन। आकर्षण किया हुआ द्रव्य को जैसे उपरि-तन स्थिति गुण श्रेणी आयाम उदयावली में दिया है उसका वर्णन है। उत्कर्षण और अपकर्षण किया हुआ द्रव्य का विक्षेप और अति स्थापना का विशेष वर्णन। गुण संक्रमण जहां संभव उसका वर्णन। स्थिति कांडक अनुभाग कांडक के स्वरूप प्रमाणादिक। स्थिति अनुभाग कांड कोत्करण काल का वर्णन—स्थिति अनुभाग सत्व घटाने का वर्णन। अनिवृत्ति करण में स्थिति कांडकादि विधान। अंतर करण करने का और प्रथम स्थिति का वर्णन। अंतर करण का कालपूर्ण हुए पीछे प्रथम स्थिति काल का वर्णन। अंतरा याम काल प्राप्त हुए उपशम सम्यक्त्व होने का वर्णन। उपशम सम्यक्त्व का विधान। प्रथमोप सम्यक्त्व में मरण के अभाव का वर्णन। सासादन होने का कारण। उपशम सम्यक्त्व का आरंभ व निष्ठापन में जो जो उपयोग योग्य लेश्या उनका और उपशम सम्यक्त्व के काल स्वरूपादि का वर्णन है। क्षायिक सम्यक्त्व के विधानादि का वर्णन। स्थिति कांडादिक का वर्णन। मिथ्यात्व मिश्र मोहनी सम्यक्त्व मोहिनी विषै स्थिति घटाने का कारण। संक्रमण होने का विधान वर्णन करके सम्यक्त्व मोहनी की आठ वर्ष प्रमाणस्थिति रहे अनेक क्रिया विशेष होने का वर्णन। गुण श्रेणी स्थिति कांडकादिक में विशेष हो उसका वर्णन। कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि होने का व वहां मरण होते हुए लेश्या वा उपजने व कृतकृत्या वेदक हुए पीछे जो क्रिया हो उनका वर्णन। क्षायिक सम्यक्त्व के विधान विषै संभव से तेतीस स्थानों में अल्प बहुत्व का वर्णन। क्षायिक सम्यक्त्व के स्वरूप का वा मुक्त होने इत्यादि वर्णन है।

(२) लब्धिसार चूलिका—पृ० १४७५ से १६२४

चारित्र लब्धिका स्वरूप और भेदों का कथन। देश चरित्र का कथन। वेदक सम्यक्त्व सहित देश चरित्र जो ग्रहे उसे दो कारणों का वर्णन। एकांत वृद्धि देश संयत के स्वरूपादि। अधः प्रवृत्त देश संयत का वर्णन। स्वरूप काला-

दिक । देश संयम में काल के अल्पत्व और बहुत्व का विवरण । जघन्य उत्कृष्ट देश संयम जिसके हो उसका वर्णन । देश संयम में स्पर्द्धक व अविभाग प्रतिच्छेद स्थाननिका, उनके पतिपात, प्रतिपाद्य पान अनुभव रूप तीन प्रकारों का वर्णन । सकल चरित्रं का वर्णन । उसके क्षायोपशमिक औपशमिक क्षायिक तीन भेदों का वर्णन । सकल संयत स्पर्द्धक का अविभाग प्रतिच्छेदों का कथन कर प्रतिपातादि का वर्णन । उपशम चरित्र का वर्णन । उपशम श्रेणी चढ़ने में द्वितीयोपशम सम्यक्त्वी की अवस्था । चारित्र मोह कर्म के उपशम करने में आठ अधिकारों का वर्णन । तीन करण का विधान बंधा पसरणादिक का रूप । उपशांत कषाय से पड़ने की विधि । उपशम श्रेणी चढ़ने वाले बारह तरह के जीवों की विशेष क्रियाओं का वर्णन ।

(२) क्षायिक चरित्र, पृ० १६२५ से १९०४ तक

चरित्र मोह की क्षपणा (नाश करने) का विधान । अधः प्रवृत्त करण का वर्णन । अपूर्व करण का स्वरूप । गुण श्रेणी का स्वरूप । गुण संक्रम का स्वरूप । स्थिति खंडन का स्वरूप । अनिवृत्ति करण का स्वरूप । स्थिति बंधाप सरण का क्रम । स्थिति सत्त्वा प्रसरण का क्रम । क्षपणा का स्वरूप । देशघाति करण का स्वरूप । अंतकरण का स्वरूप । अंतकरण का स्वरूप । संक्रमण का स्वरूप । अपगत वेदी की क्रिया का स्वरूप । अनुभाग कांड के घात होने पर जो अवस्था हो उसका कथन । कृष्टि क्रिया सहित अपूर्व कर्ष क्रिया होने में यति वृषभाचार्य की सम्मति । बादर कृष्टि करण का काल । पार्श्व कृष्टि का कथन । कृष्टि वेदना का कथन । संक्रमण द्रव्य का विधान । अनु समय अपवर्तन की प्रवृत्ति का कथन । स्वस्थान परस्थान गोपुच्छ रचना का विधान । दूसरा विधान । क्षीण वृषाय नामा बारहवें गुण स्थान का स्वरूप । पुरुष वेद सहित श्रेणी चढ़ने वाले का स्वरूप । स्त्रीवेद सहित चढ़े जीवों के भेदों का वर्णन । नपुंसक वेद सहित चढ़े जीवों का कथन । क्षीण कषाय गुण स्थान के अंत समय का कथन । सयोग केवली गुण स्थान का वर्णन । चार घातियों के क्षय से चार गुणों का प्रगट होना । दुःख का लक्षण । इन्द्रिय जनित सुख का लक्षण केवली के इन्द्रिय जनित सुख दुःख नहीं होने में हेतु । दूसरा हेतु केवली के आहार मार्गणा होने में कारण । समुद्घात में कार्य विधान । समुद्घात क्रिया के समेटने का क्रम । बादर योगों का सूक्ष्म रूप परिणमन होने की अवस्था । अयोग केवली का कथन । चौदहवें गुण स्थान के अंत समय से पहले में तथा अंत समय में पचासी प्रकृतियों का (कर्मों का) नाश करने का कथन । ऊर्ध्व लोक के ऊपर मोक्ष स्थान का स्वरूप । इष्ट प्रार्थना । ग्रंथकर्त्ता की प्रशस्ति । अंत मंगल ।

No. 429(*b*). Moksha Mārga Prakāśa, by Todara Malajī of Jaipura. Substance—Country-made paper. Leaves—588. Size —13½ × 6½ inches. Lines per page—11. Extent—3,702 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Śrī Jaina Mandira, (Bara) Bārābankī (Oudh).

Beginning—श्रों नमः सिद्धेभ्यः ॥ अथ मोक्षमार्ग प्रकाश नामशास्त्र लिख्यते ॥

दोहा ॥ मंगल मय मंगल करन वीत राग विज्ञान ।
नमो ताहि जाते भये अरहे तादि महान ॥ १ ॥
करि मंगल करिहों महा ग्रन्थ करन को काज ।
जाते मिलै समाज सब पावे निज पद राज ॥ २ ॥

अथ मोक्षमार्ग प्रकाशक नाम शास्त्र का उदय होय है। तहां प्रथम मंगल करिये है ॥ णमो अरहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्व साहूणं ॥ ३ ॥ यह प्राकृत भाषामय नमस्कार मंत्र ॥ सो महामंगल स्वरूप है ॥ बहुरि या का संस्कृत ऐसा होई ॥ नमो ह्तिभ्यः नमः सिद्धेभ्यः ॥ नमः आचार्येभ्यः ॥ नमः उपाध्यायेभ्यः नमो लोके सर्व साधुभ्यः ॥ बहुरि याका अर्थ ऐसा है ॥ नमस्कार अर्हंतन के निमित्त ॥ नमस्कार आचार्यन के अर्थ ॥ नमस्कार उपाध्यायन के अर्थ ॥ नमस्कार साधुनि के अर्थ ॥ ऐसा या विषय नमस्कार किया।

End—प्रश्न-जो कोई सम्यक्ति जीवन को भी मर्याइ गलांन आदि पाइ कर है ॥ अर कोई मिथ्या दृस्टोन के न पाइए है ॥ तातैंनिसंकता दिक अंग सम्यक कैसे कहे हो ॥ ताका उत्तर ॥ जैसे मनुष्य सरीर के हस्त पादाद अंग कहिए है तहां कोई मनुष्य वैसा भी कोई ताके हस्त पादाद विषय कोई न होई ॥ तहां वाके मुष सरीर तौ कहिए ॥ परन्तु तिन अंकांन विना वह सोभायमान सकल कार्यकारी न होई ॥ तहां वाके मुष सरीर तो कहिये परंतु तिन अंगनि विना वह सोभायमान सकल कार्य कारी न होय ॥ तैसे सम्यक के निस्संकि तादि अंग कहिये है तहां कोई सम्यकी वैसा भी होय ॥ ताके निस्संकतत्वादि विषै कोई अंक न होई ॥ तहां वाकै सम्यक तो कहिये परन्तु तिन अंकन विना वह निर्मल सकल कार्य कारी न होय ॥ बहुरि जैसे बांदरे कै हस्त पादादि अंग हो है। परन्तु जैसे मनुष्य के होंय तैसे नहि होई हैं कैसे मिथ्या दृस्टोन के भी विवहार रुपनिस्संकतादि अंक हो है। परंतु जैसे निश्चय। की सापेक्षा लियै संम्यकी कै होई तैसे न होय है। बहुरि सम्यक विषै पचीस मल कहे है। आठ संकादिक मल। आठ पद। षट अनायतन। इति

Subject—प्रथम अधिकार (पीठिका)

(१) पृ० १ से पृ २० तक—मंगलाचरण

अरहंतादि को नमस्कार, नमस्कार किये जाने वाले सज्जनों का स्वरूप वर्णन। आचार्यों द्विपदों की व्याख्या। पंचपरमेष्ठी पद की व्याख्या। २४ तीर्थंकरों को नमस्कार। अन्य विवादि को नमस्कार।

(२) पृ० २१ से पृ० ३८ तक विषय प्रवेश। सद् शास्त्रों की व्याख्या। श्रोता वक्तादि के गुण।

(३) पृ० ३९ से पृ० ४३ तक-उपस्थित ग्रंथ का सार्थकत्व। दूसरा अधिकार

संसार की अवस्था का निरूपण

(४) पृ० ४४ से पृ० ९० तक—कर्म बन्धन का निदान, जीव तथा कर्म सम्बन्ध का समय कर्मभेद, अनादि से धारा प्रवाह रूप द्रव्य कर्म व भाव कर्म की प्रकृति का वर्णन। नाम कर्म के उदय से शरीर होने का वर्णन। जीव तथा आत्मा का संबन्ध, जीव के चैतन्यादि गुणों का वर्णन। जीव की भिन्न भिन्न संज्ञाएं। चार प्रकार के कषाय का वर्णन। अनादि संसार संबंधी घातिया कर्मों के उदय के अनुसार आत्मा की अवस्था।

तीसरा अधिकार (संसार दुःख तथा मोक्ष सुख का निवम)

(५) पृ० ९१ से पृ० १४० तक—संसार के दुःखमय होने का वर्णन, दुःख का स्वरूप, उसका मूल कारण, इन्द्रियादि के सुख के मिथ्यात्व का वर्णन, दुःख का मूल कारण—इच्छा का होना। इच्छाओं की पूर्ति के लिये किये गये उपायों का मिथ्यात्व, दुःख तथा उसके कारणों के विनिष्ट होने का उपाय। संसार को छोड़ सिद्धि पद पाने का उपदेश।

चौथे अधिकार सेषष्ट अधिकार तक

(६) पृ० १४१ से पृ० १७० तक—संसारी दुःखों के बीज रूप मिथ्या दर्शन, मिथ्या ज्ञान तथा मिथ्या चरित्रों के स्वरूप का निरूपण। मिथ्या दर्शन के विशेषत्व का वर्णन। श्रद्धान को संसार के मोक्ष के बताए जाने का कारण अश्रद्धान का ही नाम मिथ्या दर्शन कथन। सब दुःखों का मुख्य कारण कर्म बन्धन का होना। मोक्ष की परिभाषा। संसारिक जीवन के मिथ्या दर्शन की प्रकृति के पाने का उपाय, मिथ्या दर्शन का स्वरूप, मिथ्या ज्ञान का स्वरूप। पदार्थों के इष्टानिष्ट न होने का कथन। जीव के राग-द्वेष का वर्णन।

सातवां अधिकार।

(७) पृ० १७१ से पृ० २५० तक—गृहीत मिथ्यात्वादिक का निरूपण। मिथ्या चरित्र की परिभाषा। इसी का विशेष वर्णन-ब्रह्म के अद्वैत को न मानते हुए

उस पर तर्क वितर्क। कर्त्ता का निषेध करते हुए वेदान्तियों के सृष्टिनिरूपण तथा अन्य कितने ही कार्यों पर आक्षेप करते हुए कृष्णादि के चरित्रों की आलोचना। मायादि की कल्पना को मिथ्या ठहराना। मुसल्मान तथा हिन्दुओं के केवल एक ईश्वर पर वाले सिद्धान्त को समता दिखाते हुए उसका खंडन, वेदान्तियों द्वारा किए गये तत्वों के पंचीकरण को मिथ्या ठहराना। शाक्त तथा शैवों पर आक्षेप। वेद पूजकों के अनेक भेद पंथियों द्वारा अनेक मत समर्थन करने पर संपूर्ण को मिथ्या निश्चित कर केवल जैन धर्म ग्रंथों ही का वर्णन। वीतराग भाव की महिमा का वर्णन। अन्य मतों ग्रंथों तथा सिद्धान्तों के अनुसार ही जिन धर्म की प्राचीनता के सिद्ध होने का वर्णन। हिन्दुओं के सर्व प्राचीन ग्रंथ वेदों से भी जैन मत प्राचीन तम होने का प्रमाण। वेदों के मंत्रों के कृत्रिम होने का कथन। जिन तीर्थंकरों की उत्पत्ति इत्यादि पर किये गये कुछ आक्षेपों का स्वयं ही उपस्थित कर उनका उत्तर देना।

(८) पृ० २५१ से पृ० २७८ तक—जैन धर्म की दूसरी शाखा के मानने वाले श्वेताम्बरियों द्वारा भगवान के स्वरूप आदि पर किये हुए कुछ आक्षेपों के उत्तर। आहार विहार संबंधी कुछ समस्याएं। भगवान द्वारा किये हुए उपदेशों तथा इन्द्र कृत समवसरण के विषय में कुछ न समझ सकी जाने की भली बातों का संबोधन कराना। श्रावक शब्द की व्याख्या। श्वेताम्बर धर्म की शास्त्र कल्पना को मिथ्या ठहराना। मुनियों की याचना के सम्बन्ध में कुछ सरणीय बातें। गुरु तथा धर्म का स्वरूप। सम्यक् दृष्टि आदि के कहे हुए रूपों में से कुछ का मिथ्यात्व। श्वेताम्बर संप्रदायवालों पर कई आक्षेप श्वेताम्बर मत के सकारण त्याज्य होने का वर्णन।

यहां पर अन्य मत निरूपण समाप्त हुआ।

(९) पृ० २७९ से पृ० ३११ तक—गंगा इत्यादि तीर्थों पर किये जाने वाले पिंडादि का निषेध। सूर्यादि की पूजा का भ्रम बताना। जिन धर्मानुकूल की जाने वाली पूजा का महत्त्व। मिथ्या भेष धारण करने का निषेध, मुख्य भेष निरूपण, गुरु सेवन निषेध कुयुक्ति द्वारा गुरुओं को स्थापित करने वालों के मत का निरूपण। गुरु का मुख्य स्वरूप। कुधर्म का निरूपण।

मोक्षमार्ग प्रकाश—शास्त्र विषयक कुदेवादि निषेध वर्णन।

(१०) पृ० ३१२ से पृ० ३५० तक—जो जैन होकर भी इस धर्म में श्रद्धा नहीं रखते उनके विषय में कुछ वक्तव्य। ज्ञान की सद्भावना सदैव मानना। वर्णादिक रागादिक से आत्मा के भिन्न होने का कथन। शास्त्राध्ययन। तपश्चरण इत्यादि के विषय में की गई कुछ शंकाओं के उत्तर। सम्यग्दृष्टि की सिद्धि के लिये

आध्यात्मिक शास्त्रों के अध्ययन की आवश्यकता आत्माचरण विषयक व्रतादिक के साधनों का कथन। ज्ञान विना तप की असिद्धि का कथन। हिंसादि के त्याग का कथन। प्रतिज्ञा रूप व्रत का कथन। वैराग्य व्याख्या। आत्मा के विषय में अनुभव करने का कथन। ध्यान की परिभाषा। पर द्रव्य-त्यागनोपदेश। पदार्थ सिद्धान्त कर मोक्ष में ध्यान लगाने का वर्णन। धर्मात्मा की परिभाषा, जिन आज्ञा मानना ही सच्चा श्रद्धान है। मिथ्या दृष्टि का वर्णन; उसकी पूर्ण व्याख्या।

(११) पृ० ३५१ से पृ० ३७७ तक—श्रद्धानी का लक्षण। किसी अभिप्राय विशेष के लेकर जो जैनी बन जावे उसके पापी होने के संबंध में शंका समाधान के साथ कुछ विचार धारा। विना समझे बूझे पूजा पाठ करने वालों के सम्बन्ध में कुछ कथन। इच्छा पूर्ति के लिये की जाने वाली भक्ति के रागरूप मानकर मोक्ष के लिये बाधक मानना और राग के उदय में भक्ति के न करने का उपदेश। मुनि का सच्चा लक्षण। मुनिभक्ति द्वारा शास्त्रभक्ति का निरूपण। तप तथा व्रत के ही मोक्ष मानने वालों की भूल और इस संबंध में कहे हुए जैन सिद्धान्त के ग्रंथों में कथित व्रतादि पर जिज्ञासु की शंका और उसका समाधान। सिद्धपने इत्यादि की तुच्छता सिद्ध करते हुए वीतराग भाव ही की प्रशंसा करना।

(१२) पृ० ३७८ से पृ० ४८१ तक—केवल व्याकरणादि के ग्रंथों के अवलोकन में आयु के व्यतीत न करके तत्त्व ज्ञान की शिक्षा प्राप्त करने का उपदेश। प्रतिज्ञा के संबंध में कुछ उपदेश। प्राप्त पद के अनुसार ही क्रिया करने का उपदेश। चरित्र के (स. राग, वीतराग) दो भेदों का वर्णन॥ निश्चयन का निरूपण। व्यवहार के संबंध में कुछ कथन। निश्चय व्यवहार-मोक्ष मार्ग का निरूपण। तत्त्वज्ञ का अन्य क्रियाओं के अतिरिक्त भी सम्यक होने का कथन। सम्यक होने के प्रथम पंचलब्धि का कथन। क्षयोपशमादि पंच लब्धियों की व्याख्या। किसी के यथात चरित्र के पाकर भी मिथ्या दृष्टि होने और किसी के अंतर्मुहूर्त में ही कैवल्य ज्ञान हो सकने का कथन करते हुए परिणाम बिगरने के ध्यान रखने का उपदेश। इस प्रकार यहां तक नाना प्रकार के मिथ्या दृष्टियों के कथन करने का उपदेश।

* जैन धर्मसहित अन्य धर्मावलंबी मिथ्या दृष्टि निरूपण पूर्ण *

(१३) पृ० ४८२ से पृ० ५१८ तक—मिथ्या दृष्टियों के मोक्ष का उपदेश। उपदेश का स्वरूप, उपदेश के चारों अनुयोगों का कथन। प्रथमानुयोग का प्रयोजन। इसी प्रकार अन्य तीनों अनुयोगों के प्रयोजनों का कथन। प्रथमानुयोग विषयक मूल कथा। अन्य तीनों प्रयोजनों के संबंध में कुछ कथा। इन अनुयोगों के

अनुसार उपदेश देने के प्रकारों का वर्णन। चारों अनुयोगों में दिये गये उपदेश, उपदेशों का जैन मतों से ही ग्रहण करने का विधान।

* मोक्षमार्ग विषय उपदेश स्वरूप प्रतिपादक नाम अधिकार पूर्ण *

(१४) पृ० ५२९ से पृ० ५८८ तक—मोक्ष मार्ग के स्वरूप का कथन, मोक्ष से आत्म हित होने का कारण। शरीरादि के साथ वृथा मोह सिद्ध कर संसार को दुःख का हेतु सिद्ध करना। मोक्ष अवस्था के हितकारी होने का कथन, मोक्ष के उपाय करने का कथन, मोक्ष का उपाय काल लब्धि भाग्य भवितव्य अनुसार बना है अथवा मोहादि का उपसमादि से बना है अथवा अपने पुरुषार्थ और उद्यम से बनता है। इस शंका का निवारण। मोक्ष के निमित्त क्रम से मोह के वध करने का कथन। उपदेश देने योग्य पुरुषों तथा उपदेशकों के कर्त्तव्य का कथन। मोक्ष का स्वरूप कथन। सम्यक् ज्ञान तथा ज्ञान चरित्र को एको भाव हो को मोक्षमार्ग बतलाना। आत्मा का लक्षण। सम्यक् दर्शनादि का सच्चा लक्षण। 'तत्त्व' तथा 'अर्थ' की व्याख्या। सातों तत्त्वों के यथार्थ श्रद्धान के आधीन मोक्ष के न होने का वर्णन। अरहंतादि के श्रद्धान के सम्यक कथन। आत्म श्रद्धान का मुख्य लक्षण। सम्यक्त के भेद। दोनों भेदों का स्वरूप। पुनः सम्यक्त के दश भेदों का कथन। फिर सम्यक के तीन भेदों का कथन। उन के स्वरूप। संजोजन विसंजोजन का कथन। सम्यक्त के विरोध तथा अभाव में कहे गये वचनों के उत्तर देकर सात प्रकृतियों के उपसमादिक से सम्यक्ति के उत्पन्न होने का कथन। सम्यग्दर्शन के आठों अंगों का वर्णन। उनके नाम तथा स्वरूप का वर्णन। पुनः अंत में सम्यक्त विषयक पचास गुणों का केवल कथन।

इति ग्रंथ समाप्ति।

No. 429(*c*). Triloka Sāra, by Todara Mala of Jaipur. Substance—Country-made paper. Leaves—814. Size—13½ × 6 inches. Lines per page—11. Extent—13,481 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1901 Samvat or A.D. 1844. Place of deposit—Sri Jaina Mandira (Bara), Bārābankī (Oudh).

Beginning—॥ ६० ॥ औं नमः सिद्धेभ्यः ॥ अथ त्रिलोक सार नाम ग्रंथ की भाषा टीका लिखिये हैं ॥ दोहा—त्रिभुवन सार अपार गुन ज्ञायक नायक संत। त्रिभुवन हितकारी नमो श्री अरहंत महंत ॥ १ ॥ तीन भुवन के मुकुट मणि गुण अनन्त मय शुद्ध। नमो सिद्ध परमात्मा वीतराग अविरुद्ध ॥ २ ॥ तीन भुवन तिथि जानि के आप आप मय होय। परते भये विरक्त यति नमो महा मुनि

साय ॥ ३ ॥ तीन भुवन मन्दिर विषे चैत्य चैत्य यह सार । ते सब बन्दों भाव जुत सुभकारन सुखकार ॥ ४ ॥ तीन भुवन मन्दिर विषे अरथ प्रकासन हार । जैन बचन दीपक नमों ग्यान करन गुण चार ॥ ५ ॥ ऐसे मंगल रूप सुव तिनके बन्दों पांय । अब कछु रचना कहत हों नाना विधि सुखदाय ॥ ६ ॥ मंगलाचरन करि श्री मत् त्रिलोक सार नामा शास्त्र की भाषा टीका करिये है । इस ग्रंथ की संस्कृत टीका पूर्व भई है सो वह संस्कृत गणितादिक के ज्ञान बिना तिस विषे प्रवेस होय सकता नहीं ॥ तातें स्तोक ज्ञान वाला कूं त्रिलोक के स्वरूप का ज्ञान होने के अर्थ । तिसही अर्थ कुं भाषा करि लिखिये हैं । जो मेरा कर्त्तव्य कछु है नाहीं । जो किछू क्षयोपसम ज्ञान के अनुसार तिस शास्त्र का अर्थ ज्ञात ॥ धर्मानुराग करि व्याख्या करें ॥

End—

कोई ऐसा जानैगा कै भगवान के तो इच्छा नाहीं । इच्छा बिन कैसे डगि भरै और कैसे उठै बैठै ॥ ताका उत्तर ॥ भगवान के इच्छा नाहीं इहां तो सत्य ॥ परंतु भगवान के सरीरादि चारि अघातिया कर्म बैठा रहै ताका निमित्त करि मनुष अन काय योग पाइये है । तासूं भगवान के मनुका पदेसा का चंचल पनो । वा बानी का खिसा ॥ वा सरीर का नेटना वर डग भरना संभवै है । यामैं दोष नाहीं ॥ ठौर ठौर ग्रंथन में कहा है । बहुरि मुनि अर्थ का श्रावक श्रावना । और मनुष्य वा तिर्यंच भूमि में गमन करै हैं ॥ और चारि जातिन के देव व विद्याधर आकास में भगवान के निकाद बाद्द राग मना करै हैं ॥ भावार्थ ॥ इन्द्रादिक केई देव निज भक्ति है ॥ तेतो भगवान के समीप भगवान को सेवा करता जाइ है । पर देवों का वृंद कहिये समूह घनो ॥ ताते भगवान ताईं पहुंचि सके नाहीं ॥ और कोई देव तो भगवान के ऊपर छत्र किया जाइ है ॥ केई देव चोपदार कीसी ना हाथी मेरु तन भई छड़ी वा आसा वा गुर्राज इत्यादि रिध्या निमित्त विनय संयुक्त देवांकूं घटा उठा करता चल्या जाय है केई देव स्तुति करता चला जाय है ॥ पर भगवान दिसा इच्छ दृष्टि करि हालता जाय है । इत्यादि अनेक प्रकार मंगलीक कीयें विहार समैं विषे बने है । ताका वर्णन करना समर्थ हम नाहीं ॥ और आगे इन्द्रादिक देव समो सरन अगाऊं पूर्वोक्त बे है । ताविषे भगवान जो स्थित करै हैं ऐसा विहार वर्णन जानना । ऐसे विहार सहित समोसरया का वर्णन संपूर्ण । ॐ नमः सिद्धेभ्यः संवत १९०१ ।

Subject—टीकाकार लिखित विषय ।

(१) पृ० १ से पृ० १० तक—भूमिका ।

(२) पृ० ११ से पृ० २४ तक—सूक्ष्म सूचनाकार विवक्षित विषय विभाग के अनुसार ॥

(३) पृ० २५ से पृ० ८२ तक—त्रिलोक सार का परिशिष्ट भाग—गणित ज्ञान रहित जीवों के निमित्त प्रयोजन मात्र शास्त्रोक्त गणित विधानों का कुछ वर्णन। मूल ग्रंथ में कथन किये गये नामों इत्यादि के समझने के लिये पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या। गणित के भेदोपभेद का सूक्ष्म वर्णन तथा पाठकों के व्याख्या के समझने में सहायक होने के अभिप्राय से अनेक उदाहरणों का समावेश।

(१) (मूल ग्रंथ प्रारंभ) लोक सामान्याधिकार।

(१) पृ० ८३ से पृ० २७५ तक—मूल शास्त्र का मंगलाचरण। पंच अधिकारों में विवर्णित विषयों की सूक्ष्म सूचनिका। सर्व आकाशों के अन्तर्गत लोकाकाश का वर्णन, लोक का स्वरूप तथा आकार। प्रसंगवश 'राजू' इत्यादि का वर्णन। उसके लौकिक मान के अंतर्गत संख्या मान के जघन्य संख्यातादिक इकीस भेदों का वर्णन। जघन्य परीत असंख्यात का ल्यावने को कुंडनिका क्षेत्र फल। सरसों प्रमाण बतलाने को घात क्षेत्रफल। सूची क्षेत्रफल सरसों का वेध इत्यादिकों का कारण करण सूत्र। श्रुत ज्ञानादिक के विषयों के प्रमाण का वर्णन। संख्या मान के विशेष ज्ञान के अर्थ सर्व धारादि चौदह धाराओं का वर्णन। उनके स्थान, अनुक्रम और जिस धारा के स्थान के वर्णन में जिसका प्रमाण आवे उसका और सब स्थानों के प्रमाणों का वर्णन। उनमें द्विरूप वर्ग आदि तीन धारा हैं तिनके स्थाननि का विशेष वर्णन। द्विरूप वर्ग धारा का कथन के अनंतर अर्द्ध छेद वर्ग शलाका जानने के कारण सूत्र और द्विरूप घनाघन धारा विषयक अग्नि कायक जीवों का विशेषतया प्रमाण कथन। उपमा मान के पल्यादिक आठ भेदों का वर्णन। पल्य के रोमों की संख्या जानने के लिये सूक्ष्म घात फल करने के कारण सूत्र का और रोम अंगुलादिक के प्रमाण की उत्पत्ति के अनुक्रम का वर्णन। अक्षर संज्ञा से अंक जानने का भाषा में उक्तं च सूत्र वर्णन। सागरोपम को सार्थक बतलाने के लिये लवण समुद्र के क्षेत्र फलादि का वर्णन। सूच्यं गुलादिक का वर्णन। उनके तथा अर्द्ध छेदादि के विधान के जानने को कारण सूत्र कहते हैं। लोक के व्यासादिक का और जहां जितना व्यास पाया उसका वर्णन। अधोलोक का आठ प्रकार का और ऊर्द्धलोक का पांच प्रकार का क्षेत्रफल वर्णन। लोक की परिधि का वर्णन। उसमें करणादिक जानने के कारण सूत्र। वात वलयनि का वर्णन है। उसी के अंतर्गत उनके करणादिक का और उनकी जहां जैसी मोटाई है उसका इनसे जितना स्थान रुका हुआ है उसका वर्णन। तनु वात वलय में सिद्धि के विराजने और अवगाहन का वर्णन। त्रसनाली के स्वरूप स्थान प्रमाणादिक का वर्णन। उसके अधो भाग में स्थित सात पृथिवियों का नाम वर्णन। प्रथम पृथ्वी के तीन भागों के नाम, मुटाई का प्रमाण, पहिले भाग में सोलह पृथिवियों के स्थित

होने तथा उनके नाम का और तीनों भागों के निवासी तथा छः पृथिवियों की मुटाई का वर्णन। पहिली पृथ्वी का तृतीय भाग और छः नीचे वाली पृथिवियों के अंतर्गत नारकियों के बिल होने का वर्णन। उन पृथिवियों में पटल, बिल, वहां के शीतोष्ण बिलों और इन्द्रादिक बिलों की संख्या का वर्णन। इन्द्र के बिलों के और उनके समीपस्थ जो श्रेणी-बद्ध हैं उनके नामों का कथन। श्रेणीबद्धों की संख्या लावने के कारण कुछ सूत्र। प्रकीर्णकों की संख्या। बिलों का विस्तार और बाहुल्य और अंतराल का वर्णन। पृथ्वी के अंत इत्यादि पटलों अंतराल और बिलों का तिर्यक अंतराल और आकारादि का वर्णन। वहां दुर्गन्धता का और उपजने के स्थान का और उन स्थानों के प्रमाण का वर्णन। उनके उपजने के स्वरूप का और वहां यदि उछलने के प्रमाण का और नवीन पुराण नारकियों का कर्तव्य कथन और उन बिलों में कूट पर्वत नदी इत्यादि जो पाये जाते हैं उनका और वहां के नारकियों की प्रवृत्ति का और बाह्य दुःख साधन का, उनके दुःख का आहारादि का और तीर्थंकर सत्ववालों का जब दुःख निवारण होता है उसका और नारकियों के दुःख भेद तथा मरण का वर्णन। नारकियों के अवधि क्षेत्र का वर्णन। नारकी निकल कर जहां उपजें और जो पद न पावें और जो जीव जिस पृथ्वी में उपजें उसका और उनके क्लेशाधिक्य का वर्णन। नरकों के वर्णन के पश्चात् लोक का वर्णन समाप्त हुआ।

(२) भावनाधिकार पृ० २७८ से पृ० २९६

मंगलाचरण। भवन वासियों के कुल भेदों के नाम। उनके इन्द्रों के नाम। उनकी पारस्परिक ईर्ष्या का वर्णन। असुरादि के चिह्न। चैत्य वृक्षों के भेद। प्रतिमा मान स्तम्भादि। उनके भवनों की संख्या, स्वरूप तथा स्थानों का वर्णन। देवों के इन्द्रादिक दश भेद। उनके संभव का वर्णन। भवन वासियों में इन्द्रादिक दश भेदों का वर्णन। सेना की संख्या लाने को गुणकार रूप जो स्थान तिनके जोड़ देने के कारण का सूत्र कथन। इन्द्र तथा अन्य देवों के प्रमाणादिक का वर्णन। भवन वासी देवगति की आयु का वर्णन। भवन वासियों के कुल और उनकी देवी, उनके अंगरक्षकादि की आयु का विशेष वर्णन। उन कुलों में उश्वास तथा आहारादि का अनुक्रम और उनके शरीर की ऊंचाई का वर्णन।

(३) व्यंतर लोक का अधिकार। पृ० २९७ से पृ० ३१७ तक।

उनके प्रकरण का नमित मंगल कर उनके कुलों का, उन कुलों के भेदों का वर्ण का, चैत्य वृक्ष का और वहां की प्रतिमा तथा मान स्तम्भादि का वर्णन। उनके कुल भेदों में जो भेद हैं, उनका, कुलों के इन्द्रों की देवियों के प्रमाण का, और कुल भेदों में जो भेद हैं और उनमें जो इन्द्र और इन्द्रों की महादेवियां हैं उनके नामों का वर्णन। इन्द्रों के नाम कथनोपरान्त उनकी गणिका महत्तरियों के

नाम और सामानिकादि देवों की संख्या और अनीक के विशेष वर्णन। इन्द्रों के नगरनि का स्थान नाम आयाम का और तिनके कोटादि का वर्णन। गणकार्यों के नगरनि का और कुल भेद अपेक्षा स्थानों का वर्णन। नीचोपपादादिवान व्यंतरनिका स्थान। नाम तथा आयु का वर्णन। व्यंतरनि के रहने के बिलयों के भेद का, व्यंतरनि के सर्व क्षेत्र का, निलय जिस प्रकार पाये जाते हैं उनका, निलियों के प्रासादि का वा स्वरूप का और व्यंतरनि के आहारा उश्वास का वर्णन। तृतीयोधिकार पूर्ण हुआ।

(४) ज्योतिर्लोकाधिकार पृ० ३१८ से पृ० ४८० तक।

ज्योतिष्क बिंबों का प्रमाण गर्भित मंगल करके ज्योतिष्कों के पांच भेद कह कर प्रसंग पाकर उनके आधार भूत कितने ही द्वीप तथा समुद्रों के नाम कह कर सर्व द्वीप समुद्रों की वलय व्यास सूची व्यास लाने के विधान तथा प्रमाण का और उनको बादर सूक्ष्म और बादर सूक्ष्म क्षेत्रफल लाने का, विधान प्रमाणादिक का जंबूद्वीप के समान औरों के खंड प्रमाण लाने का विधान; समुद्रों के रसादिक विशेष का और उनके विषै भोग भूमि, कर्म भूमि क्षेत्र के विधान का कर्म भूमि विषै उत्कृष्ट अवगाहना लिये एकेन्द्रियादिक जीवों के प्रमाणादिक का आयु वा वेदों का वर्णन। इन प्रासंगिक वर्णनों के पश्चात ज्योतिष्कनि का स्थान का, तारानि का अंतराल का; बिंबों के स्वरूप का, चौड़ाई मोटाई के प्रमाण का, किरणों के प्रमाण का, चन्द्रमा की वृद्धि हानि होने के विशेष बिंबों के चलाने वाले देवों के प्रमाण का, गमन करने के विशेष का, जंबू द्वीपादि में उनके प्रमाण का वर्णन। प्रसंग वश राम के अर्द्ध छेद पड़ने के स्थान कह कर सर्व ज्योतिष्कनियों के प्रमाण का वर्णन। एक चन्द्रमा के परिवार के प्रमाण का अट्ठासी ग्रहों के नाम का, जंबू द्वीप के तारों की विभाग का, चन्द्रमा सूर्य का अंतराल व चार क्षेत्र का और दिन रात्रि के परिमाण के हानि के विधान का, उसमें ताप तम फैलने का, और सूर्य देखने का इत्यादि अनेक वर्णन है। इसके पश्चात् चन्द्रमा सूर्य ग्रहों के नक्षत्र भुक्ति लाने का विधान। अयन तिथि मासादिक का विधान नक्षत्रों के तारा आकारादिक का वर्णन। चन्द्रमादिक के आयु का और देवियों का वर्णन है।

(५) वैमानिक लोक का वर्णन पृ० ४८१ से पृ० ५४० तक।

मंगल करने के पश्चात् स्वर्गादिक के नाम का स्थान और वहां स्थित विमानों की गणना, नाम स्थान और उनके विस्तारादि का प्रमाण; वर्ण आधार और इन्द्रियों का स्थान वा चिह्न इन्द्रियों का नगर प्राकारादिक और इन्द्रियों के स्वामान्यादिक दोनों कारण। और नगरों में विशेष रचना। इन्द्रादिक की देवी आदि का प्रमाणादिक और इंद्र वा देवांगनाओं के उत्पन्न होने का स्थान। वैमानिकों के

प्रवीचार क्रिया अवधि-ज्ञान, अंतराल और तहां उत्पन्न होने वाले जीव और उनकी आयु का वर्णन। लौकान्तिक देवों का स्थान, कुलादिक और देवियों की आयु, देवों के शरीर उश्वास, आहारादिक का प्रमाण और स्वर्ग में आने जाने वाले जीव, एका भवतारी जीव, शलाका पुरुषों की आगति। देवों के उपजने रहने का विधान फिर सिद्धों के स्थान स्वरूपादि अनेक वर्णन हैं।

(६) मनुष्य तिर्यग्लोक का अधिकार। पृ० ५४१ से पृ० ८१४ तक।

मंगल पश्चात् पंच मेरुओं का स्थान कह कर भरतादि क्षेत्र और हिमवान आदि कुलाचल और कुलाचलों के ऊपर, द्रह, द्रहनि में कमल, कमलों के ऊपर भेद मंदिरों में परिवार सहित बसती देवी और द्रहों ते निकली गंगानदी और नदी के पड़ने के कुंड और नदियों का गमन और समुद्र में प्रवेश द्वारादिकों का स्वरूप स्थानादिक का वर्णन। क्षेत्र कुला शलानि का प्रमाण। लाने का विधान कह कर मेरु गिरि और उसके वन और वनों में मंदरादिक तिनके प्रमाण स्वरूपादिक का वर्णन। परिवार सहित जंबू आदि दश वृक्षों का स्थान स्वरूपादि वर्णन। भोग भूमि तथा कर्म भूमि के विभाग और यमक गिरि और सीता, सीतोदा में वीसद्रह, और उनके निकट कांचन गिरि और दिग्गज पर्वत तथा गजदंत पर्वतों का वर्णन। विदेह क्षेत्र के दशों विभाग का और वक्षार गिरि विभंगा नदी देवारण्य वन तिनका वर्णन। विदेह क्षेत्र के गंगादिक उपसमुद्र और मागधादि तीन देव और तहां वर्षादिक प्रवृत्ति और तीर्थंकरादि होने की संख्या का वर्णन। प्रसंगवश चक्रवर्त्ति राजादिक, और तीर्थंकर की विभूति का वर्णन। विदेह देशों के नाम उनके षट खंड, विजयार्द्ध नदी तथा मंदिरों के स्थानादिक का वर्णन। विजयार्द्ध की श्रेणी में नगरादिक तथा म्लेच्छ खंड, विषै वृषभाचल होने का वर्णन। आर्य खंड में राजधानी के नगरों का वर्णन। भोग भूमि विषै तिष्ठते नाभि गिरिन का स्थान प्रमाणादिक और कुलाचलों के कूट और वनादिक का वर्णन। जंबूद्वीप के पर्वत, नदी की संख्या और उनकी वेदियों की संख्या का वर्णन। भरत ऐरावत विजयार्द्ध के कूट और गजदंतों के कूट और वक्षार गिरिन के कूटनिन का नाम, प्रमाण, स्थानादिक और उन कूटों के ऊपर बसने वालों के नामादि का वर्णन। पूर्व पश्चिम अपेक्षा मेरु आदि का व्यास वर्णन। धातुकी खंड पुष्करादि विषै मेरु भद्र शाल विदेह देश गजदंत हैं उनके व्यासादि का वर्णन। जंबूद्वीप विषै देव कुरु उत्तर कुरु और कुलाचल और क्षेत्र, भरत ऐरावत संबंधी विजयार्द्ध तिनका धनुः पृष्ठ बाण जीवा वृत्त निष्कंभ चूलिका पार्श्व भुजा का प्रमाण। अनेक प्रकार जीवादि लाने के कारण सूत्रों का वर्णन। भरत ऐरावत क्षेत्र में कालादिक पलटनि होने का वर्णन। और वहां जैसी प्रवृत्ति होती है उसका वर्णन, इस भरत क्षेत्र में इस अवसर्पिणी काल में

चौदह कुलकर, चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्त्ति, नव नारायण प्रति नारायण, बलभद्र और ११ रुद्र उनका नाम आयु आदिक का वर्णन। उन लोगों के होने का समय, तीर्थंकर का वेश धर्म का दुखमा काल में शक और कल्की होता है उसका और आदि अंत के कल्कियों के कर्त्तव्य। दुखमा काल के अंत में धर्मादि नाश होने का कथन। दुखम दुखमा काल की प्रवृत्ति का और उसके अंत में प्रलय होने का वर्णन। दुख समय किन्हीं युगल के बचने का और फिर दुखमा काल होवे उसके उसके अंत में चौदह कुलकरों और दुखम सुखमा काल विषें तीर्थंकर चक्रवर्त्ति नारायण प्रति नारायण बलभद्र होते हैं उनके नामादिक का और जहां जैसा काल प्रवर्त्तित है और म्लेच्छ खंड में जैसे काल पलटता है उसका वर्णन। द्वीप तथा समुद्रों के अंत में चौगिर्दा जो वेदी है उसका वर्णन। इस प्रकार जंबुद्वीप के वर्णन के पश्चात् लवण समुद्र का वर्णन है। वहां उसके अभ्यंतर पाताल हैं तिनका और उसके जल की ऊंचाई के बढ़ने घटने का वर्णन, उनके व्यास का, उसके जल का, चन्द्रमा सूर्य के अंतरालादिक का और पातालों के अंतराल का, उस समुद्र में वेलंधर नाग कुमार रहते हैं उनका और पर्वतादिक हैं उनमें देव रहते हैं तिनका और द्वीप है तिनमें वेलंधरन रहते हैं उनका, लोन द्वीप रहते हैं उनका उनमें रहने वाले मागधादि देवों का। द्वीपों में बसने वाली कुभोग भूमियों का, उनके स्थान नाम तथा प्रमाणादि का वर्णन है। धातकी खंड पुष्करार्द्ध का वर्णन। वहां चार इक्ष्वाकार पर्वतों का और वहां स्थित कुलाचलादिकों के प्रमाण कुलाचल क्षेत्रों के आकार और उन द्वीपों की परिधि का प्रमाण वर्णन कर कुलाचल क्षेत्रों के व्यास का, और विदेह देशादिक के आयाम का और कुरु वृक्ष तथा नदियों के गमन विशेष का वर्णन। मानुषोत्तर पर्वत के प्रमाणादिक का और उसके ऊपर कूट है जहां देवादि निवास करते हैं तिनका वर्णन। कुंडलगिरि, रुचक गिरि का स्थान प्रमाणादिक का और तिनके ऊपर कूट हैं उनका और उनपर बसे हुए जीवों का वर्णन। द्वीप तथा समुद्रों के स्वामियों का वर्णन। नंदीश्वर द्वीप में बावन पर्वत उनके ऊपर चैत्यालय, सोलहवा बड़ी तथा चौसठ वनों का वर्णन। उनके स्थान तथा प्रमाणादिक का वर्णन। देवों द्वारा वहां होने वाले अष्टाह्निक पर्व का महोत्सव और चैत्यालयों के जघन्यादि प्रमाण का वर्णन। चैत्यालयों की अनेक रचनाओं का वर्णन। जिन बिंब के अन स्वरूप का वर्णन। अंत में मंगल कर के कर्त्ता का नाम सूचन करके पंच परम गुरु से अभीष्ट फल की प्रार्थना करके ग्रंथ समाप्त किया जाना। अंत में कई समाचार कह कर ग्रंथ को समाप्त करना। ग्रंथकर्ता का नाम: —

इदि णेमिचंद मुणिणा अप्प सुदेणा भयणंदि वच्छेणा। रइयो तिलोय सारो खमंतु ते बहु सुदाइरिया॥

अर्थ—इस प्रकार करि अल्प श्रुत ज्ञान का धारी और अभयनंदि नामा सिद्धांत चक्रवर्तिकावत्स शिष्य ऐसा नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्य ताकरि यहु त्रिलोक सार नामा ग्रंथ रच्या है ताके बहु श्रुत धारक आचार्य हैं ते कहीं चूक भई होइ तहां क्षमा करो ।

No. 430. Śalihotra, by Trivikramaseta. Substance—Country-made paper. Leaves—40. Size—11 × 6 inches. Lines per page—20. Extent—600 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of Composition—1694 Samvat or A.D. 1637. Place of deposit—Plaṇḍitā Gaṅgā Sahāya Bājapai, Alīpore, Rāe Barelī.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ सालिहोत्र अश्व वर्णन लिख्यते । दोहा ॥ जद्यपि पंडित मंडलो मंडित सभा अनूप । बाल बोध तिन भाषहो कहै त्रिविक्रम भूप ॥ भानु तनै आये हदै नंदन तुमरे संत । करि प्रणाम विनती करो होहु प्रसन्न तुरत ॥ तुरंग देव पशु सब कहै तामे जो गुण दोष । ताहि प्रगट करि कहत हौं सुनहु संत तजि रोष ॥ चौपाई ॥ पाँठ पच्छवंत सब बाजी । चलहि व्योम गंधर्व समाजी । तीनि लोक मंह जो कछु अहई सो तुव आसहु भिन्न न रहई । देषा सक्र वेग जुत बाहा । सालिहोत्र मुनि ते तब काहा । विनती मोर चित्त महं धरहू । बाहन होय तुरग सो करहू । जब माहि पति दैत्य तुम्हारा । बारन ते नहि होय समारा । मुनि विनती वासव कै राषो दया छांडि काटो हय पांखा ।

End—सम्वत्सरे निगम नन्दु रस नु सुके वैशाष शुक्ल दसमो सुतिथा च पूरि हम्मीर सेन । तनयेन गुणान्वतेन श्रीमद् त्रिविक्रमसेन हयपरीक्षा ।
दोहा ॥ जुग नव रस ससि वर्ष भुग । दशमो माधव मास । शुक्लपक्ष विक्रम कियो तुरग चिह्न परकास । जयविक्रम हम्मीर सुत हर प्रिय सेवक भूप । तुरग वंश सुष हेतु लगि भाष्यो ग्रन्थ अनूप ॥

अश्व परीक्षाने माषा त्रिविक्रम सेन विरचित विरचिते द्वैसो तितिष्यय ।
दोहा—महाराज अर्जुन नृपति । सालिहोत्र रुचिमान । पंडित रामदयाल सों सुधवायो हितजानि । तेहि गंगाप्रसाद पुनि अति हर्षाई । दोहा छन्दै चौमदो दीन्हो सुलभ बनाइ । सोम दशमि बदि क्वार रहन भवसु वसु सोस सवर्ष । नकल ताहि प्रति तें कियो वंसोधर जुत हर्ष । सोरठा ॥ रच्यो त्रिविक्रम राय सालिहोत्र बरनन तुरग । पसोदोय अध्याय दोहा सत्रह पंच सत । इति शालिहोत्र समाप्तः

Subject—

पृष्ठ १—राम स्तुति, अश्वों की पर विहीन होने की कथा ।

पृष्ठ २—अश्वदेश उनकी प्रकृति और जाति परीक्षा।
पृष्ठ ३—अश्व शुभाशुभ लक्षण और अंग परीक्षा।
पृष्ठ ४—घोड़ों को भौंरी का वर्णन।
पृष्ठ ५—अश्व के रंगों का वर्णन।
पृष्ठ ६—अश्व के तिल, बुंदा, नाद, स्वभाव की परीक्षा विधि।
पृष्ठ ७—घोड़ों के उत्पात स्वेद गंध और अंगप्रमाण का वर्णन।
पृष्ठ ८—अश्व की आयु और दंत परीक्षा का वर्णन।
पृष्ठ ९-१०—अश्व को छः ऋतुओं में पोषण करने की विधि वर्णन।
पृ० ११—घोड़े के शिर दर्द की परीक्षा और उसकी औषधी—नस्य औषधि.
पृ० १३—गर्भवती घोड़ी की परीक्षा का वर्णन।
पृ० १४—वात पित्त कफादि उत्पत्ति और उनके प्रलेप का वर्णन।
पृ० १५—घोड़ों के मुख और नेत्रों की चिकित्सा।
पृ० १६— ,, तिमिर जल प्रवाह और रक्त आदि की चिकित्सा।
पृ० १७— ,, नेत्र पटल और मुंजा नेत्र चिकित्सा।
पृ० १८ ,, स्वांस, कास और सन्निपात रोग की चिकित्सा।
पृ० १९— ,, घोड़े के कृमिरोग और कर्ण रोग की चिकित्सा
पृ० २०— ,, पित्तकास और श्लेषकास की ,,
पृ० २१— ,, त्रिदोष और व्रण रोग की ,,
पृ० २२ ,, पित्त दोष की ,,
पृ० २३ ,, व्रण रोग और पद रोग की ,,
पृ० २४ ,, वात, पित्त और कफज्वर की ,,
पांव लंग की ,,
पृ० २५—अतीसार रोग ,, ,,
पृ० २६—शूल ,, ,, ,,
पृ० २७—कृमि और मूत्र ,, ,,
पृ० २८—पथरी, छत् और सोथ रोग ,, ,,
पृ० २९-३०—वात पित्त कफ मंड रोग की ,, ,,
पृ० ३१—वात पित्त कफ उदर रोग की ,, ,,
पृ० ३२—वातोत्कर्षी रोग की ,, ,
पृ० ३३—ग्रीवा रोग की
पृ० ३४—घोड़ों के उन्माद रोग की चिकित्सा
पृ० ३५— ,, अलंग
पृ० ३६ सोथ त्रिदोस दखुन सोपत्रिदोष रोग

पृ॰ ३७—विषसाधविषं साध्यालय को चिकित्सा

पृ॰ ३८—४० नाम पते वात पित्तकफ के अन्य रोगों को चिकित्सा।

No. 431. Hanumâna Tîkâ, by Tulasî. Substance—Country-made paper. Leaves—5. Size—7 × 4½ inches. Lines per page—20. Extent—60 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nâgarî. Place of deposit—M. Brajalâla, post Office Jagadîspur, District Râe Bareli.

Beginning—श्री गणेशायनमः हनुमन टोका लोषतेः ॥ तुलसीकृत रामदूत की जैः ॥ दोहा ॥

वन्दो भादौ भवानी जग मग्रा सुष धाम।
कोपा करो जन जानो कै होई सोध्य सव काम ॥ दोहा
वीर वषानो पवन सुत जनत सकल जहान।
धन्य धन्य अंजनो तनै संकट हरो हनुमान ॥
जै जै हनुमान अगंगो। जै जै महावीर वजरंगो ॥
जै जग वंदनो सोल अगारा। जै कपोस जै पवन कुमारा ॥
जै षदोवंत अमोल अवोकारी। अरो मरदा जै जै गोरधारी ॥
अंजनी वोद्र जग्र तुम्ह लोन्हा। जै जै सब देवन्ह कोन्हा ॥
वाजो दुंदभो गगन गंभोरा। सुर मुनी हर्षे अतुर मन पोरा ॥
कपे सीधु लंका संकाने। छुटो वंदो देवतन्ह आन्देः
रोषो समुह नोकर चलो आये। पवन तनै को पद सोर नयेः ॥
वीर वर अनो स्तुती करो नाना। नोरमल नाम धारा हनुमानाः ॥
सकल दोषे मोलो असमत ठानाः। दोन्ह वताई लाल फल षाना ॥
सुनि ववन कपो अति हरषाने। रवोरथ भासो लाल फल जानेः ॥
रथ समेतो कपो कोन्ह आहाराः। सोर भव तहा अभे कारा

End—ये वंचन को केतो वाता ॥ नाम तुमार सकल सुष दाता ॥
करो कोपा जै जै जगा सामो ॥ वरन अनेग नमामो नमामो ॥
भैाम वरै अदो करैई ध्याना ॥ दुष दोष नै वेदी सुजना ॥
मांगल दावेक को ले लाये ॥ सो नर तासु तुरत फल पावै ॥
वह्म वोस्न सींभु सुरसारो ॥ ईतो सुदमा जै जैतो गोसाई ॥
अंजनो तनै नाथ हनुमाना ॥ सो तुलसो के कोरा नोधाना ॥

दोहा—जै कपोस सुग्रीव जै अंगद हनुमान
राम लषन सोता जानकी सदा करै कल्यान। ईति

हनुमान टीका संपूरणो सामतं राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

१६	२	१२	महा
६	१०	१४	वीर
८	१८	४	तोस

सुर्यंति पसु पक्षीणं पठंतो सुक सरीकादृत सुपनोघ्रतो नच सुरान चयंडीता
अर्जुन ते कहा कोष्ठ जो सलोका कोष्ठ कोष्ठ कोष्ठ कोष्ठ

Subject—

भवानी स्तुति, पवन सुत वंदना, हनूमान का बल प्रताप वर्णन।
लंका जाने, सीता जी को धैर्य बंधाने राक्षसों को मारने, लंका को जलाने, रामचन्द्र के पास सीता का संदेश लेकर आने का वर्णन। इसके पश्चात् पुल बांधने में सहायता करना—युद्ध करना। सुखेन को गृह सहित लाना? सजीवन पर्वत सहित लाना, रामचन्द्र के साथ सदा रहना और उनमें भक्ति रखना, हनूमान के अन्य नाम, बल पराक्रम वर्णन, हनुमान से विनय करना, अंत में सब को जय जय

No. 432(a). Barwai Rāmāyana, by Tulasi Dāsa of Rājāpura (Bāndā). Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—14 × 5¾ inches. Lines per page—9. Extent—450 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit—Rājāpustakālaya, Bhinagā (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ बरवै रामायण लिख्यते ॥ छंद बरवै ॥

गन नायक बर दायक देव मनाय।
विघ्न विनासन कसक न होहु सहाय ॥ १
श्री गुरु पद रज अम्बुज हृदय संभारि।
बरनन करौं राम जस कृपा सुधारि ॥ २
श्री रघुबर यश सोभित अतुलित काम।
भगत चकोर पूर्ण विधु करौं प्रनाम ॥ ३ ॥
भरत भारती नायक छंद विधान।
बालमीक यह घट रहि करि गुनगान ॥ ४ ॥

End—यहि विधि चवध नारि नर प्रभु गुनगान।
करहि देव सनिसि तुलसी जात न जान॥ ३९३
भजन प्रभाव भक्ति बहु बरनेउ वेद।
तुलसी गायो हरि जस निमि भव पेद॥ ३९४
करन पुनीत हेतु निज वचन विवेक।
तुलसी ग्रयसेहु सेवत राघत टेक। ३९५॥
सीता राम लषन संग मुनि के साज।
तुलसी चित्रकूट बस रघु रघुराज॥ ३९६

इति श्री वरवै रामायण तुलसीदास कृत उत्तर काण्ड संपूरणम् शुभ मस्तु सिद्धिमस्तु॥

No. 432(*b*). Barvai Rāmāyana, by Tulasi Dāsa of Rājapura (Bandā). Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—$12\frac{1}{2} \times 5\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—21. Extent—440 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1901 Samvat or A.D. 1841. Place of deposit—Bābu Padma Baksha Simha, Lavedpur, Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ वरवै रामायण लीष्यते॥ वरवै छंद लिषिते॥

गन नायक वर दायक देव मनाय।
विघ्न विनास प्रकासक होइ सहाय॥ १
श्री गुरु पद रज पंकुज हीदय समारि।
वरनन करौं राम जस कृपा सुधारि॥ २
श्री रघुवर संग सोभित अतुलित काम।
भगत चकोर पूर्न बिधु करौं प्रणाम॥ ३
भरत भारती नायक छंद विधान।
वालमीक वह श्रटि रहि करि गुनगान॥ ४

End—यहि विधि चवध नारि नर प्रभु गुन गानि।
करहि दिवस निसि तुलसी जात न जानि॥ ३९३
भजन प्रभाव भक्ति बहु बरनेउ वेद।
तुलसी गायो हरि जस मिटि भव खेद॥ ३९४
करन पुनीत हेतु निज्ज वचन विवेक।
तुलसी पेसेउ सेवत राघत टेक॥ ३९५

सीता राम लषन संग मुनि के साज।
तुलसी चित्रकूट वसि रघुवर राज ॥ ३९६ ॥

इति श्री वरवै रामायन तुलसीदास कृत उत्तर कांड संपूर्ण शुभ मस्तु संवत् १९०१ शाके १७६७ फाल्गुणं मासे शुक्ल पक्षे पंचमं तिथौ गुरुवासरे पुस्तको संपूर्ण सन् १२५२ श्री राम श्री देवि।

No. 432(c). Barwai Rāmāyana, by Tulasī Dāsa of Rājapura (Bānda). Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—11 × 5¼ inches. Lines per page—9. Extent—80 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—1909 Samvat or A. D. 1852. Place of deposit—Paṇḍita Śyāma Bihārī Miśra, Golāganja, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः

अथ वरवै रामायण तुलसिदास कृत लिख्यते ॥
केश मुकुत सखि मरकत मनि मय होत।
हाथ लेत पुनि मुका करत उदोत ॥ १
सम सुवरन सुषमा कर सुषद न थोर ॥
सीय अंग सखि कोमल कनक कठोर ॥ २ ॥
सिय मुख सरद कमल जिमि किमि कहि जात।
निसि मलीन वह निस दिन यह बिलात ॥ ३ ॥
बड़े नयन कट भृकुटी भाल बिशाल।
तुलसी मोहत मनहि मनोहर बाल ॥ ४ ॥
चंपक हरवा अंग मिलि अधिक सुहाइ।
जानि परै सिय हियरे जय कुम्हलाइ ॥ ५ ॥

End—एकहि एक सिखावहि जप तनु आप।
तुलसी राम प्रेम कर बाधक पाप ॥ २२
मरत कहत सब सब कहं सुमिरहु राम।
तुलसी अब नहि जपत समुझि परिनाम ॥ २३
तुलसी राम नाम जपु आलस छांडु।
राम बिमुख कलिकाल को भयो न भांडु ॥ २४ ॥
तुलसी राम नाम सम मंत्र न आन।
जो पै चाहहु राम पुर तन अवसान ॥ २५
नाम भरोसो नाम वल नाम सनेहु।
जन्म जन्म रघुनंदन तुलसिहि देहु ॥ २६

जन्म जन्म जहं जहं तनु तुलसिहि देहु ।
तहं तहं राम निवाहिव नाम सनेहु ॥ २७ ॥

इति श्री बरवै रामायण उत्तर काण्ड समाप्त ॥ तुलसीदास कृत लिषिते सिव शंकर मिसिर संवत् १९०९ ॥ राम

इति

No. 432(*d*). Bhanwaragitā, by Śri Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—6 × 4 inches. Lines per page—22. Extent—400 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1916 Sambat or A. D. 1859. Place of deposit—Paṇḍita Gayā Prasad, village Naipālapura, post office Sītāpur, tahsil Sītāpur, district Sitapura.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ श्री तुलसीदास कृत भंवर गीता लिष्यते ॥ राग जैत श्री ॥ नंद जू हौं ठाढ़ो दस स्यंदन जू को नगर अवध ते आयो बतनो.कहि प्रति द्वारन हरि सों करि मेरा मन भायो ॥ महाराज ब्रजराज आजु जांकहुव येक दुवारे ॥ अवध राज रघुवंस नृपति गुन कीरति पढ़त पुकारे ॥ जो कहि कहि काकुत्स्थ भूप गुन अरु इक्ष्वाकु बड़ाई । अज दलीप रघु दसरथ राजा शुभतल कीरति छाई अजहुं बहुत कहत गुन उन करुनासिंधु सदाई ॥ मैं अज्ञान अनूप भांति मेरी कछु कहत न आई । यह सुनि नंद अनंद मान दै ततछन मोहिं बोलायो । आवसु पाइ आइ अंतःपुर । दै असीस सिर नायो ॥

End—कहा भयो कपट जुवा जोहारो । समर धीर महावीर पंचपति क्यों देहैं मोहि हीन उधारो । राज समाज सभासद समरथ भीषम द्रोण धर्म धुरधारो ॥ अबला अनघ अनौसर अनुचित होत हेरि करिहैं रखवारो ॥ यो मन गुनत दुसासन दुरजन तमकि गह्यो तकि कुहू कर सारो । सकुचि गात जोवत कमठी ज्यों हहरो हृदय विकल भइ मारो ॥ अपतिन को बिलोकि बल सकल आस बिस्वास बिसारो । हाथ उठाइ अनाथ नाथ सो पाहि पाहि प्रभु पाहि पुकारो ॥ तुलसी परषि प्रतोति प्रीत अति आरत पाल कृपाल मुरारी ॥ बसन बेष राष्यो विसेषि लषि विरदावलि मूरति नर नारी ॥ ६१ ॥ गहगहे गगन दुंदुभी बाजो बरषि सुमन सुरगन गावत जस हरष मगन मुनि सजन समाजो ॥ सानुज संगन सचिव सो जो धन भय मुप मलिन पाइ पल पाजो ॥ लाज गाज अब बनि कुचाल कलि परो बजाइ कहं कहुं बाजो ॥ प्रीति प्रतोति द्रुपद तनया की भलो भूरि भेममरित भाजो । कहि पारथ सारथो सराहत गई बहोरि गरोब नेवाजो सिथिल सनेह मुदित मनहो मन बसन बोच बिच बधू बिराजो सभासिंधु जदुपति

जलमय जनु रमा प्रगट त्रिभुवन भरि भाजो ॥ जुग जुग जग साकेन्ह सब ही के समन कलेस कुसाज कुसाजो ॥ तुलसी को न होइ सुनि कीरति कृष्ण कृपाल भक्ति पथ राजो ॥ इति श्री तुलसीदास कृत भंवर गीत । समाप्तं ॥ संवत १९१६ भाद्रमासे कृष्णपक्षे तिथौ षष्ठं भृगुवासरे लिषतं कृष्णकुमार त्रिपाठी महमदपुर ।

No. 432(*e*). Chhandāwali Rāmāyana, by Tulasi Dāsa of Rājāpura (Bāndā). Substance—Old, country-made paper. Leaves—20. Size—11 × 5 inches. Lines per page—8. Extent—120 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—1911 Samvat or A. D. 1854. Place of deposit—Paṇḍita Śyāma Bihāri Miśra, Golaganj, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः

अथ छंदावली रामायण तुलसीदास कृत

दोहा—दशकंधर घट कर्म अघ भार धरा दुष होइ ।
गई सभन गो देह धरि कहि सुरपति सों रोइ ॥ १

छंद चौपय्या—सुरपति गुरु बूझा सुरमति सूझा गे विधि लोक तुरंता ।
विधि सुर समझाये संग सिधाये जहं सोवत श्री कंता ॥
दशमुख को करणी बहु विधी वरणी धरणी जेहि विधि रोई ।
सुनि सारंग पानी भई नभ बानी विधि जाना नहिं कोई ॥
विधि बचन सुनाये सुर समुझाए तजहु सोच मन देवा ।
जो जन हितकारी प्रभु षसुरारी करहि पार सोइ षेवा ॥
वानर गो पूछा तन धरि रोछा बसहु जाहु महि मांही ।
अवधेश निकेता व्यूह समेता प्रभु आवत तुम पाहीं ॥ २

End—

नित प्रति सरित अन्हात बंधुन सहित प्रभु भोजन करैं ।
गज बाजि राज समाज लषि सब वन उपवन……फिरैं ॥
बैठे सभा मंह जाइ श्री रघुवीर दुख सब के हरैं ।
हरि न्याउ स्वान उलूक को लषि लोग सब विस्मय करैं ॥
मांडवी श्रुतिकीर्ति उर्मिला सबनि सुत द्वै द्वै जने ।
जानकी के सुत जुगल जाये सबन मन आनन्द घने ॥
सनकादिक नारद मुनिवर सकल अवधहिं आवहीं ।
लषि जाहि रघुवर के चरित सब विधिहि जाइ सुनावहीं ॥

एक बार कोउ महि देव को सुत सभा महँ आयो मरो ॥
गुरु बूझि तप ते मारि सद्वहि तबहि सो उठि जिय परो ॥
यहि भांति राम चरित्र परम पवित्र नित नूतन करें।
कहि दास तुलसी सुनत सब के वचन मन पातक हरें ॥

दोहा—सुनि सीता के जुगल सुत राम कीन्ह अनुमान।
लोक सिखावन देन हित बोले श्री भगवान ॥

इति श्री उत्तर कान्ड संपूरनम् ॥ लिखिते शिवशंकर मिश्र संवत् १९११ वि० राम राम राम राम"...........................

Subject—राक्षसों के बोझ से पृथ्वी का गै। रूप से देवलोक को जाना ब्रह्मा का विष्णु के पास ले जाना तथा अवतार के लिये आकाशवाणी होना और देवों को अवध में वानर व रीछ रूप में जन्म लेने को कहना छंद १—२

राम का अंशों सहित अवतार लेना और अवध में आनन्द होना छंद ३—४

राम का क्रीड़ा करना और यज्ञोपवीत व शिक्षा प्राप्त करना, विश्वामित्र के साथ ताड़का तथा सुबाहु वध करना, गैातम की पत्नी का उद्धार व जनकपुर आगमन और धनुष भंग तथा सीता का विवाह वर्णन और मार्ग में परशुराम मिलन वर्णन छंद ६—७

राम वन गमन, दशरथ का प्राण विसर्जन, राम का प्रयाग होकर चित्र-कूट आना भरत से राम की भेंट वर्णन छंद ८—९

जयंत का सीता जी के चोंच मारना और राम का उसे ताड़न देना, विराध वध, सरभंग से भेंट, राम लखन सीता का पंचवटी जाना, सूपर्नखा को नाक काट लेना, त्रिशिरा, खर दूषण वध, मारीच वध, सीता हरण गीध—रावण युद्ध, सबरी राम भेंट पंपासर पहुँचना और नारद से भेंट होना वर्णन छंद १०—११

राम से हनुमान और सुग्रीव से भेंट, वालि वध, सुग्रीव को राज देना और सीता को खोज कराना। छंद १२—१३

हनुमान का लंका में जाना सीता से भेंट तथा लंका जलाना, विभीषण के रावण का लात मारना और राम से मिलना। छंद १४—१५

राम लक्ष्मण व रावण, मेघनाद, कुम्भकर्ण से युद्ध वर्णन विभीषण को राज देना व सीता से भेंट छंद १६—१७

राम का अयोध्या आना भरत से भेंट व राजगद्दी होना देवतायों का स्तुति करना, स्वान, उलूक, व ब्राह्मण बालक के न्याय की कथा वर्णन चारों भाइयों के दे। दे। पुत्र होना वर्णन। छंद १८—२२

इति

No. 432(*f*). Chhandāvalī Rāmāyaṇa, by Tulasī Dāsa of Rājāpura (Bāndā). Substance—Old paper. Leaves—16. Size—10½ × 5¼ inches. Lines per page—8. Extent—136 Anushṭup ślokas. Appearance—Loose and old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1909 Samvat or A.D. 1852. Place of deposit—Paṇḍita Śyāma Bihārī Miśra, Golāganj, Lucknow.

Beginning—श्रीमते रामानुजाय नमः। अथ छंदावली रामायन तुलसी दास कृत लिख्यते। दोहा॥

दसकंधर घट कर्म अघभार धरा दुःख होइ। गई गंमंत गो देह धरि कहि सुरपति सो रोइ। छंद चौपया। सुरपति गुर बूझा सुरपति सूझा गे विधि लोक तुरंता॥ विधि सुर समुझाये संब सिधाये जंह सोवत श्रीकंता॥ दसमुख की करणी बहु विधि बरणी बरणो जेहि विधि रोई सुनि सारंगपानी भइ नभ बानी विधि जाना नहिं कोई॥ विधि बचन सुनाये सुर समुझाये तजहु सोच मम देवा॥ जो जन हितकारी प्रभु असुरारी करहि पार सोइ सेवा॥ बानर गो पूछा तन धारि रीछ बसहु जाइ महि माही। अवधेश निकेता व्यूह समेता प्रभु आवत तुम पाही। दोहा। यहि विधि विबुध विरोधि गे गे सुर निज निज धाम। कछु काल बीते अवध प्रगट भये श्रीराम॥३॥ शशि वदन छन्द॥ जन हितकारी प्रगट मुरारी। नरतन धारी छवि सुष कारी॥ मृदु भुजकारी धरि दल हारी॥ सुमुष निहारी वलि महतारी॥ अवध विहारी भव भय हारी॥ जपत पुरारी सब अघहारी॥ अवध उधारी यह प्रन भारी॥ तुलसी हितकारी शरण समारी॥४॥ हरि गीतका छंद॥ संभारि शरण विचारि तुलसी राम जस गावत लियो॥ त्रय ताप समन कलेश हरन को भोर नहिं श्रम मन वियो॥ जेहि गाइ जमन किरात षल हरि पुर गये करि सुधि हियो॥ रघुवीर जस सुनि हिमत हरष्यो पुरो तिन अपनो कियो॥

End—सिय सहित रघुकुलमनि विराजत सुभग सिंहासन परे॥ सुम सुमन बरषहिं हिये हरषहि ब्रह्मादि सब जय जय करैं॥ गहि छत्र चामर चमर असि धनुवीर तरकस के लये॥ भरतादि अनुज बिभीषनांगद हनुमित चरनन दये॥ मुनि सिया श्री रघुवीर को अविवेक पुनि उर में धरैं॥ कह दास तुलसी जन्म को सुष लहि जलधि विन श्रम तरैं॥ दोहा। नित नव मंगल अवधपुर करहि सकल नर नारि॥ लहहि चार फल अछत तन रघुवर रूप निहारि॥१९॥ छन्द। नित प्रत सरित अन्हात बंधुन सहित प्रभु भोजन करैं॥ गज वाजि राम

समाज लषि सब देवि वन उपवन फिरै ॥ बैठे सभा मह आइ श्री रघुवीर दुःख सब के हरै। हरि न्याव स्वान उलूक को लषि लोग सब विस्मै करै ॥ मांडवी श्रुतिकीरति उरमिला सवनि सुत द्वै द्वै जने ॥ जानकी सुत जुगुल जाये सवन मन अानंद घने ॥ सनकादि नारद आदि मुनिवर सकल अवचहि आवहो ॥ लषि जाहि रघुवर के चरित सब विधिहि जाइ सुनावहो। एक वार कोउ महि देव को सुत सभा मह आयो मरो ॥ गुरु बूझि तपते मारि सद्र हित वहि सो उठि जिय परो ॥ यहि भांति राम चरित्र परम पवित्र नित नूतन करै ॥ कहि दास तुलसी सुनत सब के बचन मन पातक टरै ॥ दोहा। सुनि सीता के जुगुल सुत राम कीन्ह अनुमान ॥ लोक सिषावन देन हित बोले श्री भगवान ॥ इति श्री उत्तर काण्ड श्री गोसाई तुलसीदास कृत छन्दावलि रामायनि समात। शुभ मस्तु० संवत १९०९ लिषित वै वैशम्वदास श्रीराम।

Subject—दशशीस, खर कंस आदि के पाप भार से पृथ्वी का दुःखी हो गो रूप धर इन्द्र के पास जाना, इन्द्र का वृहस्पति से परामर्श कर ब्रह्मा के पास जाना, ब्रह्मा का सान्त्वना दे क्षीरसागर में भगवान के पास जाना, राक्षसों की करनी भगवान से कहना, आकाशवाणी का होना, ब्रह्मा का सबको समझाना, वानर भालु होकर पृथ्वी पर जन्म लेने के लिये देवताओं को आदेश देना, भगवान का अयोध्या में जन्म लेने का संवाद कहना, काल पाकर भगवान का अयोध्या में जन्म लेना, बाल लीला वर्णन, ग्यारह वर्ष में उपनयन, विश्वामित्र का राम को मांगना, ताड़का वध, विश्वामित्र द्वारा यज्ञ प्राप्ति, सुबाहु वध, मख-रक्षा, अहिल्या तारन, मिथिला-गमन, धनुष-भंग, सीता-विवाह, अयोध्या-गमन, मार्ग में परशुराम से भेंट, धनुष देकर वन-गमन पृ० ३—४ बालकांड

राजा दशरथ का मुकुर देखना और बुढ़ापे का आभास पाना, राम को युवराज पद देने का करना संकल्प, केकई का भरत के लिये राज-पद मांगना, रामचन्द्र को वनवास देना, सीताराम लक्ष्मण सहित वन-गमन, गंगा प्रयाग होकर चित्रकूट जाना, भरत का शोकाकुल होना, भरत का वन जाना, केवट से भेंट, भरत का राम से मिलना, पादुका पाना, पादुका लेकर वापस आना और नियम धर्म से रहना वर्णित है पृ० ४—५ अयोध्याकांड।

जयन्त का जानकी-स्पर्श, उसकी आंखों का फोड़ा जाना, विराध-वध, सरभंग से भेंट, रामचन्द्र जी का पंचवटी आना, सूर्पनखा का नाक कान विहीन होना, खरदूषण-त्रिसिरा-वध, रावण का मारीच के पास जाना, मारीच का स्वर्ण मृग बनना, मारीच वध, मारीच का शब्द सुन लक्ष्मण का राम के पास

जाना, रावण द्वारा सीता का हरा जाना, राम का दुखी होना, सीता को खोजना, गृद्ध से भेंट, उससे समाचार पाना, सेवरी से भेंट, पंपासर आना नारद से भेंट सुग्रीव का राम को देख कर विस्मय युक्त होना, हनुमान को भेद लेने के लिये उनके पास भेजना सूत्र रूप से वर्णन किया गया है पृ० ५—६ आरण्यकांड।

हनुमान का राम को ले आकर सुग्रीव से मिलाना, सुग्रीव और राम को मित्रता का होना, सुग्रीव का कष्ट समाचार सुन कर राम का वालि के मारने का प्रण करना और सुग्रीव को राजा बनाना। सुग्रीव का सीता की खोज का प्रण करना, वालि का मारा जाना, सुग्रीव-तिलक, चौमासे का निवास, सुग्रीव का सीता की खोज के लिये बंदरों का भेजना, बंदरों का विवर प्रवेश एक स्त्री से भेंट, अदृश्य से समुद्र तीर आना सूत्र रूप से वर्णन किया गया है। पृ० ६—७ किष्किंधा कांड

हनुमान का सागर पार जाना, लंकिनी वध, हनुमान का छोटा रूप धर कर लंका में प्रवेश, सीता को खोजना, विभीषण से भेंट, हनुमान का सीता को देखना, रावण का आकर सीता को दुःख देना, हनुमान का मन में कोधित होना। मुद्रिका का सीता के आगे फेंकना उसे देख सीता का हर्ष विस्मय युक्त होना, हनुमान का प्रगट होना, फल खाने की आज्ञा मांगना, बगीचे में फल खाना, उत्पात मचाना, रखवालों को मारना, मेघनाद द्वारा हनुमान का मारा जाना, रावण की सभा में पूंछ का तेल पट से बांधा जाना, उसके द्वारा लंका-दहन, राम का ससैन्य लंका-गमन समुद्र का पैर पड़ना, नल द्वारा सेतु-बंध मंदोदरी का रावण को समझाना, रावण की मंत्रणा, विभीषण को लात मारना, विभीषण का राम के पास आना, अंगद का रावण के पास जाना, अंगद-पैज, लंका पर चढ़ाई, सूत्र रूप से वर्णन किया है। पृ० ७—१० सुन्दर कांड

राम और रावण की सेनाओं की लड़ाई, मेघनाद-वध, सुलोचना का सती होना, रावण का मारा जाना, जानकी का राम के पास आना, सैन्य समेत पुष्पक पर चढ़ अयोध्या प्रयाण, प्रयाग आना, हनुमान को भरत के पास भेजना संक्षेप में वर्णन किया गया है। पृ० १०—१३ लंकाकांड

भरत का हनुमान से राम आगमन की सूचना पाना, भरत का घर आकर समाचार देना, रामचन्द्र का भरत गुरु और प्रवासियों से भेंट, वशिष्ट और सुमंत्र द्वारा राज्याभिषेक का होना, भरतादिक भाइयों का अंगद हनुमान सहित सेवा का वर्णन, सब भाइयों के दो दो पुत्रों का होना, नारदादि का नित्य आना, अयोध्या का संवाद ब्रह्मा के पास जाकर कहना, रामचन्द्र का न्याय वर्णन, ब्राह्मण के मृतक पुत्र का सभा में आना, गुरु की आज्ञा से शूद्र यती को मारना ब्राह्मण के

मृतक पुत्र का जी उठना, सीता के दोनों पुत्रों का मिलना और लोक शिक्षा के लिये चरित्र करना। सूत्र रूप से वर्णन किया गया है। पृ० १३—१६ उत्तरकांड।

No. 432(*g*). Chhappaya Rāmāyaṇa, by Tulasi Dāsa of Rajapura (Bāndā). Substance—Country-made paper. Leaves—16. Size—9½ × 4½ inches. Lines per page—9. Extent—134 Anushṭup ślokas. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1910 Samvat or A.D. 1853. Place of deposit—Paṇḍita Śyāma Bihārī Miśra, Golāganja, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः। अथ छप्पै रामायन लिख्यते। छन्द छप्पै॥ श्री गुरुचरण सरोज बंदि गणनाथ मनावैा। जेहि प्रसाद शुभ होइ राम सो विनय सुनावैा। भारत भंजन राम नाम मुनि साधुन गाई। सुमिरत गाढ़े नाथ होत सब ठौर सहाई। अवति रघुपति अवध पति करौं नाम सोई जाप न। दौर दौर श्री रामचन्द्र मम हरहु सोक संतापना॥ १॥ रहो कपोतो स्वपति समेत बैठि तरु पासा। गगन उड़े सोचा भूमि तल देखैा प्रकासा। व्याध गहे करवान देखि लोचन जल मोचति पक्षी स्वमन महा सभीत दंपि दंपति उर सोचित। दुष्ट दलन करुणायतन राखि लेहु सरनापना। दौर दौर श्री रामचन्द्र मम हरहु सोक संतापना॥ २॥ उठे तत्छन मेघ वृष्टि जल अनल बुतानो। निकसि भुवंगम डसो बुद्धि व्याधो बिकलानो॥ निकसो वाको तीर जाइ संचानहि मारो। अस्तुति करत कपोत नाथ प्रनतारत हारो। सो प्रभु वेगि दयाल हो त्रिमि कपोत परदापना। दौर दौर श्री रामचन्द्र मम हरहु सोक संतापना॥ ३॥

End—गुरु अनुसासन पा सचिव साजि आरतो बनाई। राम सिंहासन दीन्ह राज गुरु मुनि समुदाई॥ भरत गहे कर छत्र चमर सियराम सिहारो। मुदित जन्म फल पाइ मातु आरतो उतारो॥ विदा होय सब नृपति करि भक्ति देहु रामापना। दौर दौर श्रीरामचन्द्र मम हरहु सोक संतापना॥ २९॥ इष्टदेव बंदि सब देव बिबुध कोटि तेंतीस हरषि कह। अस्तुति करत बनाय पुहुप जयमाल हरषि गह। शंभु आप अस्तुति करत बिबिधि भांति सियरामा। पाय रजाय सब चले देव सब निज निज धामा॥ विदा किये सब कै प्रभु देव जयति कह आपना। दौर दौर श्रीरामचन्द्र मम हरहु सोक संतापना॥ ३०॥ राम चरित अगाध सिंधु कोउ पार न पावै। शुक सारद निगमादि नेति कहि निज मुख गावै। शंभु उमा सुनि भरद्वाज सुनि जागबलिक मुनि। काग भसुंडि सुनि गरुड़ मांगि कह तुलसीदास गुनि॥ कहे सुने रति राम यह येक राज मति पापना। दौर दौर श्रीरामचन्द्र मम हरहु सोक संतापना॥ ३१॥ इति श्री

तुलसीदास को कृत्ये रामायन उत्तर काण्ड समाप्त सतगो सुपानः ॥ रावण नासवान ॥ ३१ ॥ सो यकतोप क्षे है। सेठा। १। रंग (२) फोक (३) पंद्य। ४। वचन। ५। गीसो। ६। संकट मोचनी रामायन पाठ करे तो रावण मरे सा मन है। चेतो तो सब काम सिद्धि होइ। वो तावरी करो तो पावो भव-सागर ते नर तन नाव है ॥ संव १।१९१० ॥ राम सीय।

Subject—गुरु चरण वंदना, कपोत के जोड़े को विपद, (वाज—व्याध और अग्नि से) उसका उद्धार, भगवान के अनेकों नामों की वंदना, ताड़का, सुबाहु का वध, मख को रखवालो, अहिल्या का शाप मोचन और वरदान, विदेह का प्रण रखना, धनुष भंग, परशुराम का सरासन देना, सीता विवाह और अयोध्या गमन का संक्षेप में वर्णन किया है। पद० १—५ बालकाण्ड।

वन गमन, केवट का पद धोना, चित्रकूट वास, कोल भीलों को तारना, भरत को चरणपादुका देकर तुष्ट करना, भरत का विनय करके पलटना वर्णन किया है। पद० ६—अयोध्याकाण्ड।

जयंत का शरण आना, एक आंख का फोड़ना, विराध खर दूषण, कपटी मृग (मारीच) कबंध आदि का वध, गिद्ध को सुगति, सेवरी को भक्ति देना, वालि के भय से सुग्रीव का पर्वत पर वास करना संक्षेप में कहा है। पद० ७ अरण्यकाण्ड।

हनुमान का भगवान के पास जाना, सुग्रीव की मित्रता, वालि का वध, वर्षा ऋतु में निवास, सुग्रीव को राज देना, हनुमान को मुद्रिका देकर भेजना, हनुमान का प्रसन्न हो खोज करने जाना, वानरों के साथ वन, पर्वत, खोह, ताल आदि का खोज करते हुए समुद्र तीर आना, संपाती से भेंट, संपाती का साक्षात होना, सीता का निशान बतलाना समुद्र को देख कर सब का हहर कर विलाप करना, संक्षेप में कहा है। पद० ८—९ किष्किंधाकांड।

जामवंत की बात सुनकर हनुमान का प्रसन्न हो समुद्र नाघने के लिये जाना, सुरसा से भेंट, सिंघि का वध, मैनाक स्पर्श, समुद्र का पार होना। लंकिनी को मुष्ठिका प्रहार, लंका में घर घर सीता का खोजना, निराश हो राम नाम जपना, विभीषण भेंट, विभीषण से युक्ति पूछ कर अशोक-वन में आना, पल्लव में छिपना, प्रगट होने की युक्ति विचारना, दशकंधर का स्त्रियों सहित आना, जानकी को डरवाना, जानकी द्वारा तिरस्कृत हो वापस जाना, सीता का व्याकुल हो आग माँगना, हनुमान का उसी समय मुद्रिका देना, सीता का उसे पाकर विस्मय हर्षयुत होना, हनुमान का प्रगट होना, जानकी से संदेसा कहना, सीता का व्याकुल होना, हनुमान द्वारा सान्त्वना पाना, हनुमान का बाग में जाना, फल खाना, वृक्ष तोड़ना, अक्षयकुमार आदि का मारा जाना, मेघनाद का आना,

उसके द्वारा हनुमान का बांधा जाना, पूंछ में तेल पट बांध अग्नि लगाना, लंका-दहन, विभीषण का घर जलने से बचना, हनुमान का समुद्र में कूद कर पूंछ बुझाना, सीता से चूड़ामणि ले बिदा मांग कर रामचन्द्र के पास आना, मधुवन का फल खाना, बंदरों से भेंट, सीता का विरह राम से कहना, मारीच, सुबाहु, कबंध आदि को याद दिलाना, चूड़ामणि देना, रामचन्द्र का कटक समेत समुद्र के किनारे जाना, विभीषण-भेंट, उसे अभय करना, लंकेश बनाना, रामेश्वर-स्थापना का संक्षेप में वर्णन है—पद १०—१९—सुंदरकांड।

भालू और बंदरों की सेना सहित समुद्र पार जाना, अंगद का वसीठो होकर जाना, युद्ध, कंप अकंप, महोदर, अतिकाय, मेघनाद महिरावण, कुम्भकरण, रावण आदि का वध सीता भेंट, देवताओं द्वारा रामचन्द्र जी की स्तुति, विभीषण का राज्य तिलक, पुष्पक पर चढ़ कर प्रयाग आना, हनुमान का भरत जी के पास भेजना, संक्षेप में वर्णन है—पद २०-२६ लंकाकांड।

हनुमान का भरत से संदेसा कहना, भरत का गुरु माता, मंत्री पुरवासी सब को खबर देना, रामचन्द्र का पुष्पक से उतरना, सब से भेंट करना, गुरु की आज्ञा से मंत्री का रामचन्द्र को सिंहासन पर बैठाना, भरत का चमर हाथ में लेना, माताओं की प्रसन्नता, देवताओं का स्तुति करना, कवि द्वारा रामचन्द्र की महिमा वर्णन कथा का उद्गम शंभु-उमा, भरद्वाज, याज्ञवल्क्य, काग, गरुड़ द्वारा वर्णन कर संक्षेप में कथा समाप्त किया है—२७-३१ उत्तरकांड।

No. 432(k). Dohāwali, by Tulasi Dāsa of Rājāpura. Substance—Country-made paper. Leaves—85. Size—$8\frac{3}{4}$ × $4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—7. Extent—740 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1249 Hijri or A.D. 1871. Place of deposit—Rajpustakālaya, Bhinagā (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः

दोहा ॥ राम नाम मनि दीप धरु जीह देहली द्वार।

तुलसी बाहिर भीतरौं जो चाहत उंजियार ॥ १

र २ ॥ मित परमातमा सह अकार सिय रूप।

दोरघ मिलि बिधि जीव इव तुलसी बदत अनूप ॥ २

राम नाम को अंक निधि साधनता सब सून्य।

अंक रहित सब सून्य है अंक सहित दश गुन्य ॥ ३

जथा भूमि सब बीज मय नषत नेवास अकास।

राम नाम सब धर्म मय जाचक तुलसीदास ॥ ४

End—बैठि सिंघासन राम जू सुर विमान बहु भोर ।
हरषित सुर बरषहि सुमन सो जय जय रघुबीर ॥ ९८
स्यामल गैार किशोर वर विहरत सरजू तीर ।
अस्वमेध कोटिन कियो सो जय जय रघुबीर ॥ ९९
यह साखी सिय राम जस सुमिरि करहु मनधीर ।
तुलसी बरनै कहां लगि सो जय जय रघुबीर ॥ १००
तुलसी चतुरे नरन ते बचै न उर को हेत ।
ज्यों शीशो रंग से भरी उपर देखाई देत ॥ १०१
इति श्रीराम चरित्रे दोहावली श्रीराम भक्ति संपादिनोनाम शतमो स्वर्ग ॥
सम्पूर्णम् शुभमस्तु मि: फागुन शुदी ११ सन १२७९ साल

No. 432(*i*). Dohāwali, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—49. Size—6 × 5 inches. Lines per page—22. Extent—750 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—1856 Samvat or A.D. 1799. Place of deposit—Ṭhākura Hanumāna Simhaji, village Vardaha, post office Kherighāt, district Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ दोहावली लिख्यते ॥ दोहा ॥ राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार । तुलसी बाहर भीतर जो चाहै उजियार ॥ राम नाम के। अंक लिखि साधनता सब सुन्य । अंक रहित सब सुन्य है अंक सहित दस गुन्य । दुगुने तिगुने चैागुने पांच षष्ट अठ सात । आठौ ते पुनि नैा गुने नैा के नव रहि जात ॥ नव के नव रहि जात तुलसी किये विचार । रामै राम जो जगत में नहीं द्वैत संसार ॥ जथा भूमि सब बीज मय नषत नेवास अकास । राम नाम सब धर्म मय जानत तुलसीदास ॥ तुलसी रघुबर परम निधि निसि दिन भजो निसंक आदि अंत प्रति पालिहैं जैसे नव को अंक ॥ हरि सो हिय यों राषिये कोटि किये उपचार । मिटै न तुलसी अंक नव नव को लिषित पहार ॥

End—ब्रह्मज्ञान जबही भयो तुलसी त्यागे व पाठ । कैान बतावै राम मै सुख लाग रे काठ ॥ तुलसी तुम ज्यों कहत हैा संगत ते सब होय । आम्र उपरी राम सर वाहिन कस रस होय ॥ संगति भई तो का भयो अंग स्वभाव न जाहि । फूल जंत्र यक दार मे पाता क्यों न बसाय ॥ ज्यों जल कंजी पत्र में ता धारो उर दार । तुलसी दास गनि गुन मुई तिन्हौ न पायो पार ॥ तुलसी राम प्रताप ते

मिटत करम को रेष। ज्यो हरदी जरदो तजे चूना रह्यो न सेस ॥ यक तो जल के मध्य है यक बभ्म की छोर ये दोनों एक ठौर कह तुलसी करत निहोर सत ताल सर बेधियो हत्य बालि महि बोर। द्यो राज सुग्रीव को जै जै जै रघुवीर ॥ बांध्यो सेत सिल तरो तरो कपि दल भोर कुटुम सहित रावन हत्यो जै जै जै रघुवीर ॥ इति श्री दोहावली तुलसी दास कृत समाप्तम सुभमस्तु दस्कत नीलकंठ कायस्थ घुंघा के संवत १८०६ भादों कृष्ण पष्ठमयाम सुक्रवासरे।

Subject—श्री रामचन्द्र जी की महिमा और उनका प्रेम वर्णन।

No. 432(j). Dohāwali, by Tulasī Dāsa of Rajāpura (Bāndā). Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—9 × 4½ inches. Lines per page—7. Extent—840 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1894 Samvat or A.D. 1837. Place of deposit—Paṇḍita Śyāma Bihārī Miśra, Golaganj, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥

अथ दोहावली लिख्यते ॥ तुलसी दास कृत ॥

दोहा—राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहरो जो चाहै उजियार ॥ १
राम नाम को अंक निधि साधनता सब सुन्न।
अंक रहित सब सुन्न है अंक सहित दस गुन्न ॥ २
दुगुने तिगुने चौगुने पांच षष्ट षट सात।
पाठव ते पुनि नव गुने नौ के नौ रहि जात ॥ ३
नौ के नौ रहि जात हैं तुलसी कियो विचार।
रम्यो राम जो जगत मैं नाहि द्वैत संसार ॥ ४

End—तुलसी राम प्रताप तें मिटत कर्म को रेख।
ज्यौं हरदी जरदी तजी चूनौ रहै न सेत ॥ ६१
एक तौ जल के मध्य है एक है नभ के पोर।
ये दोनों एक ठवर कह तुलसी करत निहोर ॥ ६२
सप्त ताल सर बेधियो हत्यौ बालि महि बीर।
राज दियो सुग्रीव कहं जै जै जै रघुवीर ॥ ६३
बांध्यौ सेत सिलातरो उतरो कपि दल बीर।
कुटुंब सहित रावण हतौ जै जै जै रघुवीर ॥ ६४ ॥

इति श्री दोहावली ॥ तुलसीदास कृत संपूरनम् ॥ संवत १८९४ ॥ शाके १७५९ ॥ चैत्र शुक्ल १५ लिषतंलाला कंमोद सींव कोंच के इति ॥

No. 432(*k*). Gitāwali Rāmāyaṇa, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—97. Size—6 × 12 inches. Lines per page—24. Extent—2,706 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1891 Samvat or A.D. 1834. Place of deposit—Paṇḍita Bhagwānadīnajī Miśra Vaidya, Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री गोसाई तुलसी दास कृत गीतावली साता कांड रामायण लिष्यते ॥ श्लोक ॥ नीलाम्बुजं स्यामलं कोमलांगं सीता समारोपित वाम भागं ॥ पाणी महाशायक चारु चापं नमामि रामं रघुवंश नाथं ॥ राग असावरी ॥ आजु सुदिन सुभघरी सोहाई । रूप शील गुन धाम राम नृप भवन प्रगट भए आई ॥ अति पुनीत मधु मास लगन ग्रह बार जोग समुदाई । हरषवंत चर अचर भूमि तरु तन रुह पुलक जनाई ॥ २ बरषहि विबुध निकर कुसुमावलि नभ दुंदभी बजाई । कौशिल्यादि मातु मन हरषित यह सुख बरनि न जाई । सुनि दशरथ सुत जन्म लियो सब गुरु जन विप्र बोलाई । वेद विहित करि कृपा परम सुचि आनंद उर न समाई । शदन बेद धुनि करत मधुर मुनि बहुविधि बाज बधाई । पुरवासिन प्रिय नाथ हेतु निज निज संपदा लुटाई ॥ मनि तोरन बहु केतु पताकनि पुरी रुचिर करि छाई ॥ मागध सुत द्वार बंदीजन जहं तहं करत बड़ाई ॥ सहज सिंगार किये बनिता चलि मंगल विपुल बनाई ॥ गावैं देहि असीस मुदित चिरंजीवो तनय सुखदाई ॥

End—राग रामकली ॥ रघुनाथ तिहारो चरित मनोहर गावत । सकल अवधवासी । अति भोदार अवतार मनुज बनु धरो ब्रह्म अज अविनासी ॥ १ ॥ प्रथम ताड़िका हति सुबाहु बधि राष्यो द्विज हितकारी ॥ देषि दुषित अति सिला श्राप बस रघुपति विप्रनारि तारी ॥ २ ॥ सब भूपनि गर्व हरो प्रभु भंज्यो शंभु चाप भारी । जनक सुता समेत आवत गृह परसराम अति मदहारी ॥ तात बचन तजि राज काज सुर चित्रकूट मुनि भेष धरयो ॥ एक नयन कीन्हो सुरपति सुत बधि बिराध ऋषि शोक हरो ॥ पंचवटी पावन राघो करि सूपनषा कुरूप कीन्हीं ॥ षरदूषन संहार कपट मृग गीधराज कहं गति दीन्हीं ॥ हति कबंध सुग्रीव सषा करि टारो ताल बालि मारो ॥ बानर रीछ सहाय अनुज संग सिंधु बांधि जस बिस्तारो ॥ सकुल पुत्र दल सहित दसानन मारि अषिल सुर दुष टारो ॥ परम

साधु जिय जानि विभीषण लंकापुरी तिलक सार्यो ॥ ७ ॥ सीता घरु लछिमन संग लीन्हे औरौ जिते दास आये ॥ नगर निकट विमान आवत सुनि नर नारी देषन धाये ॥ ८ ॥ मिले भरत जननी गुरु परिजन चाहत परम अनंद भरे ॥ दुसह वियोग जनित संभूत दुष राम चरन देषत बिसरे ॥ ९ ब्रह्मादिक सुर नारदादि मुनि अस्तुति करत विमल वर बानी ॥ चौदह भुवन चराचर हरषित आये राम राजधानी ॥ १० ॥ देषि दिवस सुभ लगन सोधि गुरु महाराज अभिषेक कियो तुलसीदास तब जानि सुबोसर भक्ति दान वर मांगि लियो ॥ ११ ॥ इति श्री रामायण गीतावलि सातो कांड समाप्तः शुभ संवत् १८९१ वैसाष मासे कृष्ण पक्षे दसम्यां सनिवासरे इदं पुस्तकं लिषित संपूर्नम शुभम् रामायनमः ।

Subject—इस पुस्तक में श्री राम जी की लीला सातो कांडों में पृथक २ वर्णन की गई है। अर्थात्

श्री राम जी का जन्म, ब्याह, ताड़का सुबाहु आदि का मारना मुनि के मख की रक्षा करना, गैातम नारी का उद्धार करना, भूपों के गर्व को दूर करना, परसराम का संवाद, अयोध्यापुरी जाना, फिर पिता वचन मान बन गवन करना, चित्रकूट में मुनि भेष धारण कर वास करना, जयंत को एक आंख फोड़ना, सुर्पणषा को नाक काटना, षरदूषन का संहारना, कपट मृग का वध करना, गृद्धराज को मुक्ति देना, कबंध को मारना, सुग्रीव से मित्रता करना, बालि को मारना, बानर और रीछों की सहायता से रावण का सवंश नाश करना, विभीषण को लंकापुरी का राज देना और फिर लक्ष्मण सीता सहित अयोध्या में वापस आना, नगर निवासियों का आनन्द आदि का वर्णन है।

No. 432(*l*). Gitāwali, by Tulasidāsaji. Substance—Country-made paper. Size—13 × 6 inches. Lines per page—12. Extent—1 Anushṭup sloka. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit—Paṇḍita Śiva Sahai, village Ulara, post office Musāfirkhānā, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—हौं है लाल कबहिं बड़े बलिहारी मैया ॥ रामलषन भावते भरत रिपुदवन चारु चारे मैया ॥ १ ॥ बाल विभूषन बसन मनोहर अंगति विरचि बनैहों । सोभा निरषि नेछावरि करि उरलाइ बारने जैहों ॥ २ ॥ छगन मगन अंगन षेलिहौ, मिलि ठुमुक ठुमुक कब धैहौ ॥ कल बल बचन तोतरे मंजुल कहि मा मोहि बुलैहौ ॥ ३ ॥ पुरजन सचिव राउरानी सब सषा सहेली ॥

जैसो लोचन लाहु सुफल लषि ललित मनोहर वेलो ॥ ४ ॥ जो सुषको लालसा रहै सिव सुक सनिकादि उदासो ॥ तुलसी तेहि सुष सिंधु कौसिला मगन प्रेम पुरवासी ॥ ५ ॥ ८ ॥

End—पृ० १२०—राग बसंत ॥ षेलत बसंत राजाधिराज । नम कौतुक देषत सुर समाज । सोहै अनुज सषा रघुनाथ साथ । चोलिन भरोर पिचकारि हाथ । बाजहि मृदंग डफताल वेनु । छिरकहि सुगंध परिमल परेनु । उत युवति यूथ जानकी संग । पहिरे पट भूषन सरस रंग । लिये छरी वेत सोहे बिभाग । चाचरि भूमक कहै सरसराग । नूपुर किंकिनि धुनि पति सोहाइ । ललनागन जब जेहि धरहि धाइ । लोचन षोजै फगुआ मनाइ । छाड़हि नचाइ हाहा कराइ । चढ़े षरन बिदूषक स्वांग सजि । करैं कूटि निपटि गई लाज भाजि । नरनारि परस्पर गारि देत । सुनहि सतराम भाइन्ह समेत । बरषहि प्रसून बर बिबुध बृंद । जय जय दिनकर कुल कुमुदचंद । ब्रह्मादि प्रसंसत अवधबास । गावत कल कीरति तुलसिदास ॥

No. 432(*m*). Gitāwali Rāmāyaṇa by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—400. Size—9 × 4½ inches. Lines per page—7. Extent—2,275 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Viśwanātha Siṃhaji, Raisa and Talukedāra, Agaresar, post office Tirsundi, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री जानकी विष्नु भोविजैजयत ॥ नीलांबुजं स्यामल कोमलांगं सीता समारोपित वामभागं ॥ पाणौ महासायक चारु चापं नमामि रामं रघुवंश नाथं ॥ राग असावरी ॥ आजु सुदिन सुभघरी सुहाई ॥ रूपशील गुनधाम राम नृप भवन प्रगट भै चाई ॥ अति पुनीत मधु मास लगन ग्रह बार जोग समुदाई ॥ हरषवंत चर अचर भूमिसुर तनरुह पुलक जनाई ॥ बरषहि बिबुध निकर कुसुमावली नभ दुंदुभी बजाई ॥ कौसिल्यादि मातु मनहरषिहिं यह सुष बरनि न जाई ॥ सुनि दसरथ सुत जनम लिए सब गुरजन बिप्र बुलाई ॥ बेद बिहित करि क्रिया परम सुचि आनंद उर न समाई ॥ सदन बेद धुनि करत मुदित मुनि बहुबिधि बाज बजाई ॥ पुरबासिन प्रियनाथ हेतु निज संपदा लुटाई ॥ मनि तोरन बहु केतु पताकनि पुरी रुचिर छबि छाई मागध सुत द्वार बंदि जन जहां तहां करत बड़ाई ॥ सहज सिंगार किए बनिता चलि मंगल बिपुल बनाई ॥ गावहि देहि असीस मुदित ह्वै चोरंजीवौ तनै सुषदाई ॥ बिथिन कुंकुम कीच अरगजा अगर अबीर उड़ाई ॥ नाचंहि बर नर नारि प्रेम भर देह दसा बिसराई ॥ अमित धेनु गजतुरंग बसन मनि जात रूप अधिकाई ॥ देत भूप अनुरूप जाहि जोइ सकल

सोचि ग्रह चारि ॥ सुखी भए सुर संत भूमि सुर खल मन मन मलिनाई ॥ सबहि सुमन विकसत रवि निकसत कुमुद विपिन बिलखाई ॥ जे सुधि सुकीत सोकहते सोच विरंचि प्रभुताई ॥ सोइ सुप ग्रवध उमांन रह्यो दसदिसि कौन जतन कहीं गाई ॥ जेरघुवर चल चितक तिन्हको गति प्रगट दिषाई । सबदिल चमल चनुप दृढ़ तुलसी दास कहाई ॥ १ ॥ जयति श्री० ॥

End—बालक सिय के विहरत मुदीत मन दोउ भाई ॥ नाम लवकुश राम सीय चनुहरत सुंदरताई ॥ देत मुनि मुनिष सोक हरी पंचवटी पावन राघौ करि सुपनेषा कुरुप कीन्हो ॥ षरदूषन संघारि कपट मृग गीधराज कह गति दीन्ही॥ हति कबंध सुग्रीव सषा करि भेद तालबालि मारयौ। बानर रीछ सहाई चनुज संग सींधु बिधि असु बिस्तारयौ ॥ सकुल पुत्र दल सहीत दशानन मारो चषिल सुर दुष टारयो ॥ परम साधु जीयजानि विभीषन लंकापुरी तीलक सारयोः । सीता चरु लछीमन संगलीन्हे धौ मिले दासंग प्रारा ॥ नागर निकट विमान चायो सब नर नारि देषन धाये सिव विरंच सुक नारदादी मुनि श्रस्तुती करत विमल बानी ॥ चौदह भुवन चराचर हरषीत चाए राम राजधानी मीले भरत जननी गुर परिजन चाहत परम चनंद भरे ॥ दुसह वियोग जनीत दारुनदुष रामचरन देषत विसरे ॥ वेदपुरान विचारि लगन सुभ महाराज चविवेक कौ वो तुलसीदास जीय जानि सुचवसर भगतो दान दरष मांगि लीवो ॥ इति पद गीतावली ॥

No. 432(*n*). Gitāwali, by Tulāsi Dāsa. Substance-Country made paper. Leaves—230. Size—7 × 3½ inches. Lines per page—26. Extent—2,970 Anushṭup slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1902 Samvat or A.D. 1845. Place of deposit—Ṭhākura Indrajitā Simha, village Atorar, post office Baondi, district Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री जानकी वल्लभायनमः ॥ अथ गीतावली लिष्यते ॥ नीलांबुजं स्यामल कोमलांगं सीता समारोपित वाम भागं । पाणौ महासायक चारु चापं नमामि रामं रघुवंस नाथम ॥ राग असावरी ॥ चाजु सुदिन सुभघरी सोहाई ॥ कहा कही चधिकाई ॥ रुप सील गुन धाम राम नृप भवन प्रगट भये चाई ॥ चति पुनीत मधुमास लगन ग्रहवार जोग समुदाई ॥ हरष-वंत चर अचर भूमि सुर तन रुह पुलक जनाई ॥ वर्षहि विबुध निकर कुसुमावलि नभ दुंदुभी बजाई ॥ कौसिल्यादि मातु मन हरषित यह सुष बरनि न जाई । सुनि दसरथ सुत जन्म लियो सब गुर जन विप्र बोलाई। वेद विदित करि क्रया परम

सुचि आनंद उर न समाई ॥ अदन वेद धुनि करत मधुर मुनि बहुविधि बजत बधाई ॥ पुरवासिन प्रिय नाथ हेत निज निज संपदा लुटाई ॥ आदि ॥

End—राग रामकली ॥ रघुनाथ तुम्हारे चरित मनोहर गावत सकल अवध बासी ॥ अति उदार अवतार मनुज वपु धरेउ ब्रह्म सोइ अविनासी । प्रथम ताड़िका हति सुबाहु बधि मष राष्यो द्विज हितकारी । देषि दुषित अति सिला श्राप बस रघुपति विप्र नारि तारी ॥ रुव भुवन को गर्भ हन्यो हरि भंज्यो संभु चाप भारो ॥ जनक सुता समेत आवत गृह परसराम को मदहारी ॥ पिता बचन तजि राज काज सुर चित्रकूट मुनि वेष धरयो ॥ एक नयन कीन्हो सुरपति सुत बधि बिराध रिषि सोक हर्‌यो॥ पंचवटी पावन करि राषो सुपनेषा कुरुप कीन्हो॥ परदूषन संघारि कपट मृग गीधराज कहं गति दीन्हो ॥ हति कबंध सुग्रीव सषा करि बधेउ ताल बालि मार्‌यो ॥ बानर रीछ सहाइ अनुज संग सिंधु बांधि जु बिलाग्यो ॥ सकुल पुत्र दल सहित दसानन मारि अषिल सुर दुष टार्‌यो ॥ परम साधु तिय जानि बिभीषन लंकापुरी तिलक सार्‌यो ॥ सीता लषन संग लीन्हे प्रभु औरो जेते दास आये ॥ नगर निकट बिमान आयो सब नर नारी देषन धाये । सिव बिरंचि सुक नारदादि मुनि अस्तुति करत विमल बानी ॥ चैादह भुवन चराचर हरषित आये राम राजधानी । मिले भरत जननी गुरु परिजन चाहत परम अनंद भरे॥ दुसह वियोग रोग दारुन दुष रामचन्द्र देषत बिसरे ॥ वेद पुरान विचारि लगन सुभ महाराज अभिषेक कियो ॥ तुलसीदास तिय जानि सुअवसर भक्ति दान वर मांगि लियो ॥ इति श्रीराम गीतावल्या उत्तर कांड समाप्तमो सोपान समस्त सुभं भुयात श्रीराम चंद्राय नमोनमः ॥ चैत्र मासे कृष्ण पक्षे भोमवासरे संवत् १२०२ ॥ लिष्येत मोहनलाल ग्रामवासी बासुरे के जो देषा सो लिषा मम दोष न दीयते ॥

No. 432(*o*). Rāma Gītāwalī, by Tulasī Dāsa of Rājāpura (Bāndā). Substance—Country-made paper. Leaves—43. Size—8 × 6 inches. Lines per page—36. Extent—900 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Kaithī. Place of deposit—Paṇḍita Rāma Sunḍara Miśra, village Katghari, post office Akaona (Baharāich).

Beginning—मागध सूत भाट नट जाचक जहं तहं करहिं बिचार ।
बिप्र बधू सनमानि सुआसिनि जन परिजन पहिराइ ।
सनमाने अवनीस असीसत इष्ट महेस मनाइ ॥

अष्ट सिद्धि नवनिधि बिभूति सब भूपति भवन कमाहीं।
समैा समाज राज दसरथ को लोकप सकल सिहाहीं॥
को कहि सकै अवध वासिन को प्रेम प्रमोद उछाह।
सारद सेस गनेस गिरोसहि अगम निगम अवगाह॥
शिव विरंचि मुनि सिद्धि प्रसंसित बड़े भूप के भाग।
तुलिसिदास प्रभु सोहिलो गावत उमगि उमगि अनुराग॥

End—किंकिनो कनक कंज अवली मृदु मरकत सिखिन मत्र मनुजाइ।
मानहु परम सोभित नमित मुख बिकसित चहुँदिसि रहो लोभाइ॥
भुज प्रलंब भूषन अनेक जुत बसन पीता सोमा अधिकाइ।
जज्ञोपवोत विचित्र हेम मय मुक्तामाल उरसि मोहि भाइ॥
अंबुद नहित चौच जनु सुरपति धनु निकट वलक पाँति चलि आइ।
कंबु कंठ चिबुक पर सुन्दर क्यैा कहो दसनन को सुचोआइ॥
कुंचित केस सुदेस वदन पर मधुपन को अवली चलि आइ॥
पदुम कोस..

No. 432(*p*). Rāma Giṭāwalī, by Tulasī Dāsa of Rājāpura (Bāndā). Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size—13½ × 6 inches. Lines per page—12. Extent—2,640 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1840 Samvat or A.D. 1783. Place of deposit—Rājapustakālaya, Bhinagā (Baharāich).

Beginning—श्री सीता रामायनमः।
स्वामी स्वामिन के सहित बन्दैा तुलसीदास।
करहु कृपा चित चरन ते कबहु न होइ उदास॥
आसावरी—आज सुदिन सुभघरो सुहाई कहा कहौं अधिकाई।
रूप सील गुन धाम राम नृप भवन प्रगट भये आई॥ १
अति पुनीत मधुमास लगन ग्रह बार जोग समुदाई।
हरषवंत चर अचर भूमि तह न नर पुलक जनाई॥ २
बरषहि बिबुध निकर कुसुमावलि नभ दुंदुभी बजाई।
कैासिल्यादि मातु सब हरषित यह सुख बरनि न जाई॥ ३

End—शिव विरंचि शुक नारदादि मुनि अस्तुति करत बिमल बानी।
चैादह भुवन चराचर हरषित आए राम राजधानो॥ १. मिले भरत जननो गुरु पुर-

जन चाहत परमानन्द भरे। दुसह वियोग जनित दारुन दुख रामचरन देखत बिसरे ॥ वेद पुरान बिचारि लगन शुभ महाराज अभिषेक कियो। तुलसीदास जिय जानि सुअवसर भक्तिदान तब मांगी लियो ॥ इति श्रीराम गीतावल्यां श्री गोस्वामी तुलसीदास कृत सम्पूरणम् शुभ मस्तु संवत १८४० माघ मासे कृष्ण पक्षे तिथि ४ बुधवार ॥

No. 432(q). Hanumāna Vāhuka, by Tulasī Dāsa of Rājapura (Bānda). Substance—Old country-made paper. Leaves—20. Size—7 × 4¼ inches. Lines per page—22. Extent—400 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Śyama Behārī Paṇḍey, Nāgarī Prachāriṇī Sabha, Kāśī.

Beginning—श्रीगणेशायनमः स्वर्ण सैल संकास कोटि रवि तरुण तेज तन उर बिशाल। भुज दंड मंड नख वज्र तन पिंगल नयन भृकुटी कराल ॥ रसना दशनानन कपिश केश कर्कस लंगुर खल दल बल मान। कह तुलसीदास सो जासु उर बसहि मारुत मूरति बिकट। संताप पाप तेहि पुरुष के सपनेहु नहिं आवत निकट ॥ सिंधु तरन सिय शोक हरन रवि बाल बरन तन उर विशाल। मूरति कराल कालहुक काल जनु गहन दहन × × ×
नहि संक बंक भुव × × × जातु धान बलवान मान मद दवन पवन सुव। कह तुलसिदास सेवत सुलभ माकर तुरत मूरति निकट ॥

End—पाइ होन पेट होन मुख होन बाहु होन सीस होन जन जानि सकल समीप होन भयो है। देव भूत पितर कर्म खल काल ग्रह मोहि इन्द्री वर मानिक से दई है ॥ हैं तो बिन मोल होन बिकानो बल रावरे हो तेरे घोट नाम को ललाट सीख लई है। कुंभज के किंकर बिकल बूड़े गो खुरन हाय हाय राम राइ ऐस कहि भई है ॥

बाहुक सुबाहु नीच लोचन मरीच मिलि पीडा है सुकेतु सो तो रोग जातुधान है। रामनाम जापि जागि कियो चाहौं सानुराग काल के दूत भूत कहा मेरे मान है ॥

सुमिरे सहाय राम लखन प्रखन दोऊ तिनके साके समूह जागत जहान है।

तुलसी समान ताड़िका संहारि मानो भर बचे बगद से कनाई बान बान है ॥

बाल पने सुधे मन × × × ×

No. 432(r). Hanumāna Stuti (Hanumān Vahuk), by Goswāmī Tulasī Dāsji. Substance—Country-made paper. Leaves—12. Size—5 × 8 inches. Lines per page—16. Extent—168 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1932 Samvat or A.D. 1875. Place of deposit—Ṭhākura Jaivaksha Simha, village Mithnora, tahsil Kesarganj, post office Kesarganj, district Baharāich (Oudh).

Beginning—अथ हनुमान स्तुति लिष्यते ॥ भिंधु तरण सिय सोच हरण रवि बाल बरन तनु भुजा विशाल मूरति कराल कालहु को काल जनु । गहन दहन निर्दहन लंक निःसंक बंक भुव ॥ जातुधान बलवान मान मद दवन पवन सुव ॥ कह तुलसीदास सेवत सुलभ सेवक हित संतत निकट गुण गन तने मत सुमिरत ग्रमत सनम सकल संकट विकट ॥ स्वरण सैल संक मकोटि रवि तरुन तेज घन । उर विसाल भुजदण्ड चंड नष वज्र बज्र तन ॥ पिंग नयन भृकुटी कराल रसना दसनान ॥ कपोस केस ककस लंगुर पलदल भानन ॥ कह तुलसीदास बस जासु उर माहन सुत मूरति विकट । संताप पाप तेहि पुरुष के सपनेहु नहि आवत निकट ॥ कवित्त ॥ पंच मुष छः मुष भृगु मुष भट असुर सुर सर्व सरिस समरत्थ सूरो । बंकुरो बीर बिरदैत विरदावली बेद बंदी बदत पैज पूरो ॥ जासु गुन गाथ रघुनाथ कह जासु बल विपुल जल भरित जग जलधि झूरो ॥ दुन दुष दवन कैान तुलसो सदै पवन को पूत रजपूत पूरो ॥

End—काल को करालता करम को कठिनाई कैधैं पाप के प्रभाव को सुभाय बाय बावरे । बेदन कुभांति सो सही न जाति राति दिन सोई बांह गही जौं गही समीर डावरे ॥ लायक तुलसी निहारो सो निहारि बारि सोचिये मलीन भो कुपीर ताप तावरे ॥ भूतन की आपनी पराई दै छपा निधान जानियत सब ही की रीति राम रावरे ॥ पाइ पीर पेट पीर बांह पीर मुष पीर जरजर सकल सरीर पीर मई है ॥ देव भूत पितर कर्म षल काल ग्रह मोहि पर दवरि मान कसी दइ है ॥ हौ तौ बिन मोल हो बिकानो बलि बार होते पोट राम नाम को ललाट लिष लई है ॥ कुंभज के किंकर विकल बूड़े गोपुरनि हाय राम दूत ऐसो नाहि कहुं भई है ॥ ताडुक सुबाहु नोच लोच मरीच मिलि पीड़ा है सुकेत सुता रोग जातुधान हैं राम नाम जप जाग कियो चाहै सानुराग काल कैसे दूत भूत कहा मेरे मान है । सुमिरे सहाइ राम लषन आपर दोऊ जिनके साके समूह जानत जहान है ॥ तुलसी संभारत ताड़का संभारि भारि भट बेधे बगद से बनाई बान मान है ॥ इति

No. 432(s). Hanumāna Vahuk, by Tulasi Dāsa of Rājāpura. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size 6 × 3½ inches. Lines per page—14. Extent—245 Anushṭup slokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—1929 Samvat or A.D. 1872. Place of deposit—Paṇḍita Baijnāthaji, post office Govindapura, district Rae Bareli.

Beginning—श्री गणेशायनमः

श्री रघुवरहि प्रणाम करि सहित लषन हनुमान ।
राषि हृदय विस्वास दृढ़ पुनि पुनि करौ प्रणाम ॥ १
भोमवार प्रादिक पढ़ै जो नर सहित सनेह ।
रुज संकट व्यारै नहो बाढ़ै सुष धन गेह ॥ २ ॥
सुचि सनेम पढ़ि है सुजन निरुज गात बल धाम ।
ह्वै है रत तुलसो सपद जस पैहैं सब ठाम ॥ छप्पै ॥
स्वर्ण सैल संकट सकोटि रवि तरुण तेज घन ।
उर विसाल भुज दण्ड चण्ड नष वज्र वज्र तन ॥
पिंग नयन भृकुटी करोल रसना दस ग्रानन ।
कपि सकेस कर कस लंगुर षल दल बल भानन ॥
कह तुलसिदास बसु जासु उर मारुत सुत मूरति विकट ।
संताप पाप तेहि पुरुष के सपनेहु नहिं ग्रावत निकट ॥ १ ॥

End—प्रसन बसन हीन विषे विषाद लोन हीन दोन दूबरो कहैया हाय हाय को। तुलसी ग्रनाथ को सनाथ कोन्हो रघुनाथ दोन्हो फल चारि चाह ग्रापने सुभाय को ॥ नीच यहि बोच सुष पाय पा{illegible} भह हाय छांडि हारि भजन बिसारो मन काय को। ताते यह तोर तन निसि दिन देषियत मानो। फूटि फूटि निकसति है लोन राम राम को ॥ ५२। दोहा

बाहुक सीता राम की हनुमत सरनहि ग्राइ ।
तुलसी राम नेवाजेउ कर गहि कोन्ह सहाइ ॥
भज तरु पोढर राम यहि बरबस कीन्ह प्रबेस ।
विहंग राज बाहन तुरत काटै मिटै कलेस २ ॥
निज ग्रैागुन गुण राम को समुझै तुलसीदास ।
होइ भलो कलि कालहु उभै लोक ग्रनयास ॥ ३
बाहु पोर को नाम पुनि हरन पोर संसार ॥
प्रगट कियो मम इष्ट गुरु रहित समस्त विकार ॥ ४ ॥

वैाहुक पोरा वांहुक हरन करन सकल कल्यान।
तुलसी पठ नित नेम सो यावन कवित्त प्रमान ॥ ५

इति श्री वाहुक स्तोत्र गासाई तुलसीदास क्रत समाप्तम् सम्वत १९२९

No. 432(*t*). Hanumāna Vāhuka, by Tulasī Dāsaji. Substance—Country-made paper. Leaves—Size—9½ × 4½ inches. Lines per page—7. Extent—125 Anushṭup ślokas. Appearance—Good. Prose or Verse—Verse. Character—Nāgari. Date of manuscript—1878 Samvat or A.D. 1821. Place of deposit—Paṇḍita Bhawāni Miśrāji, village Uttar Gāwan, post office Aliganj Bāzār, district Sultānpur.

Beginning—श्री गनेशायनमह ॥ श्री महावीर जी सहाय ॥ कवित्त दंडक ॥ कमट की पोष्टी जाको गाढि न को गाडे मांनो नाम कैसा माजन जल निधि को जल भो ॥ ज्ञातवान पावन परावन को दुर्ग भयो महा मोन वास तामे मोन को सुथल भो ॥ कुंभकरन रावन पयोविनाद श्यन भो तुलसी प्रताप जाको प्रवल यनल भो ॥ भीषम कहत मेरे मनुमान हनोमान सारिषे जो कास को त्रिलोक महा वल भो ॥ १ ॥ दुत रमारवन के सपूत पवंन के तु पंजनो के नंदन प्रताप भुरि भांन सो ॥ सीया सोक हरन दुरित दुखदरन सरन पाये पवंनि लषन प्रोया प्रान सो ॥ दसमुष दुसह दरिद दरबे को भयो प्रगट त्रोलोक योक तुलसी नीधांन सो ॥ ग्यान गुनवंत वलवांन सेवा सावधान साहेब सुजान उर पांन हनोमान सो ॥२॥

End—संकट हर मंगल करन महावीर गुनगांन ॥ मक्कर पद सब लीन रहु सुष संपति कल्यान ॥ है तुलसी के येक गुन पोगुनाधिक कह लो ॥ भलो भरोसो राम को रांम रीझवे जोग ॥ जह लघु तंह दीरघ कोहेउ दीरघ लघु को ठाउ ॥ मक्कर पद टूटे गदा छमिये सब कपि राउ ॥ महावीर की टेक ते लंकोनी को यल टूट ॥ तुलसीदास जो पहुंचे पवि बांह विथा सब छूट ॥ इति श्री समस्त संपूरन कथा वाहुक तुलसीदास क्रत जो पति देषा सो लीषा मम दोष न दीयते पंडित जंन सो विनती मोरि टूट मक्कर वाचन जोरि दसयत रामदास कयिक के लोषे संवत १८७८ मीती जेठ सुदीप मंगरवार सन १२२८ सीतराम ॥

No. 432(*u*). Hanumāna Vāhuka, by Tulasi Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size 7½ × 4 inches. Lines per page—7. Extent—170 Anushṭup ślokas. Appearance—Good. Character—Nāgari. Date of manuscript—1835 Samvat or A.D. 1778. Place of deposit—Paṇḍita

Bhāgirathi Paṇḍey, village Piparpur, post office Piparpur, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ पोथी हनुमान बाहुक ॥ तुलसीदास कृत ॥ कवे ॥ स्वर्न सपन संकास कोटि संकास कोटि रवि तरुन तेज घन ॥ उर बीसाल भुजदंड चंड नुष वज्र वज्र तन ॥ पींग नयन भ्रीकुटी कराल रसनारद् मानन ॥ कपिस केस कर्कसनगुर पल दल बल भानन ॥ कह तुलसीदास ब सू जस्फलव मारुति बीकट ॥ संता वाव बावरे ॥ बेदन कुभाति सो सहि न जात राति दीन सोइ ॥ वाह गहो जो गही समीर डावरें ॥ लापवतरु तुलसी तेहारे सो नोहारि बारि सी बी॰ ए मलान भवत पोहे तोहुत बरे ॥ भुतनी को चापने को साथ ते बढ़ो हो ॥ बाह बेदन कहो न सहि जाति हे ॥ पवुपद अनेक जंत्र मंत्र टोटकादि कोए बादि महा देवता मनाए चाचीकाति है ॥ करतार हरतार भरतार कर्म काल को है जंत्र जाल जो न मानत इतराति है ॥ बेहो तेरो तुलसी तु मेरो कहो रामहु तठोल ते हो महावोर पीरते पीराव है ॥

End—सीता राम दयाल है सुमिरत नाम उदार ॥ तुलसी ताको सुलभ है सदा मुक्ति को द्वार ॥ २ ॥ राम नाम जपते रहो सदा संत लवलीन ॥ तुलसी ते जान छुड है कबहो न होत मलि ॥ जन को पीर ॥ तुलसी को पव रापीए शरन सुषद रघुबीर साहब सीताराम हैं जानत जन को पीर ॥ सो हरन संसै दलन सरन सुषदरन चरि ॥ तुलसी राच हरि पद गहो पाप न रहै सरीर × ×
× × × है तुलसी वह एक गुन पोगुन नीवी वह छोग ॥ भवो भरोसा रावरो राम रो भवे जोग ॥ ९ ॥ इति श्री हनुमान बाहुक श्री गोसाइ तुलसीदास कृत संपुन शुभमस्तु श्री सीकरक्क ॥ संमत ॥ १८३५ भादों मासे कृस्त सप्तम्या सुकवासरे लेषीता चीतामनि दारा ॥ × × × ×

Subject—बाहु पीड़ा निवारणार्थ हनुमान जी की प्रार्थना सम्बन्धी ४४ छन्द और कुछ दोहे।

No. 482(v). Hanumata Panchaka, by Tulasī Dāsa of Rajāpura. Substance—Country-made paper. Leaves—2. Size—$5\frac{1}{2} \times 3\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—11. Extent—62 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1918 Samvat or A.D. 1861. Place of deposit—Thākura Naunihāla Siṃha Sengara, Raisa, village Kānthā, post office Kānthā, district Unão.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ हनुमत पंचक तुलसी कृत लिख्यते। बालि को त्रास कुमंत्र कुसंगति व्याकुल देह दसा बिसराई। बैठि बिचार करौ गिरि ऊपर चित्त न भावत एक उपाई। मन मैं अनुमानि तुम्हैं रघुनायक भेंट भये ते मिटी दुचिताई। या बिधि मोर कलेस हरौ हनुमान तुम्हें सियराम दोहाई ॥ १ ॥ नाथि पयोध पयोधि भिया अरु मेटि बिभीषन की दुचिताई। फेरि हवा सुत आनि कहौ सो समथ्य बिरंद सुता कुसलाई। रावन के मद मर्दन को पुनि कीन्हे। है हर्ष सुधा समुदाई ॥ या बिधि ॥ २ ॥

End—आनेहु मौन सुखेन समेत गहे गिर द्रोन दुरे दुतिनाई। बिप्र के साथ चले मति आतुर पुष्प बिमान मनो हलकाई। औषधि पाइ प्रमोदित ह्वै तब बैद सुखेन सुकीन उपाई। याबिधि मोर कलेस० ॥ ४ ॥ रोग बियोग बिदारन को प्रभु मातु के अंक मैं अंक बढ़ाई। पुत्र पौत्र सपा परिवार सुखी सब सागर सेत बंधाई। दारिद दंभ मिटै तुलसी हनुमान के पांच कवित्त पढ़ाई ॥ या बिधि० ॥ ५ ॥ पांच कवित्त को पंच कहि पढ़ें सुनै नर कोइ। सुख संगति पावन्द बुधि दिन दिन दूनो होइ। इति तुलसीदास कृत हनुमंत पंचक संपूरन शुभमस्तु ॥ सं० १९१८ ॥

Subject—पांच कवित्तों में हनुमान जी की स्तुति की गई है।

No. 432(w). Jnanadipikā Bhāshā, by Tulasi Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—31. Size—8 × 5 inches. Lines per page—18. Extent—384 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition—Samvat 1631 or A.D. 1574. Date of manuscript—1873 Samvat or A.D. 1816. Place of deposit—Ṭhākura Daljita Simha, village Jālima Simha Kā purwā, post office Kesaraganja, district Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ सुमिरत चरन गनेस के प्रथमहि सीस नवाय के। बुद्ध सिद्ध आते लहौ भाषौ ग्रंथ बनाइ। चौ० ॥ नहिं उपजै नहिं होइ बिनासा। तिहु लोक जाकर परकासा ॥ जाको लीला जगत भुलाना। नमो नमो ता प्रभु भगवाना ॥ दोहा ॥ सारद सुत नारद सुमिरि व्यास जनक के पाद। ज्ञान दीपिका रचत हौं। राम चरन चितु लाइ। चौ० ॥ सुनि मुनि बिबिधि संस्कृतबानी। भाषा कीन्ह चहौं रुचि मानी ॥ हरिहि मिलन के मारग पाये ॥ देहि बताय प्रगटहुत भाये। दो० ॥ ज्ञान दीपिका बरनि हौं भाषत जो तिहि पांच। उक्ति युक्ति सो ग्रंथ करि कथा पुरातन सांच ॥ अथ दीपक यथा ॥ दो० ॥

बुद्धि पात्र बाती उकत तत्व तेल को धार। ब्रह्म अग्नि करि लेसिये ज्ञान दीप उजियार ॥ संवत सोरह सौ भये इकतिस अधिक विचारि शुक्लपक्ष आषाढ़ को दुइज पुष्य गुरवार। तादिन उपजी दीपिका पोच ज्योति परधान धर्म ज्ञान अरु ब्रह्म पुनि प्रभु स्वरूप विज्ञान ॥

End—दो० ॥ मन मैं करियत छोभ कछु कैसे परै संभारु। यह विचार जन राषि निर देत हरन करतारु। सुमति भूमि अरु कुमति धनु सर करनी सब मीर ॥ मोग निसाना ताकि करि करत काम जन चोट। यह विचारि नहि पाप लिर थिर सकल प्रभार। करम चोट दुख सुख जगत सब भुगवत करतार। बुद्धि हीन जड़ता अधिक कहिय पापको मोट। राम साधु कै विरद सम टिक्यो दुहुन को चोट ॥ यह विचारि नहि मानिये अवगुन ता मति हीन। विरद समुझि प्रभु सरन लषि छिमा करेहु सु प्रवीन ॥ सोरठा। मतिवंधु कुल देस जप तप विद्यावेद विधि। रहै न इनकौ लेस नारि जो मुषहि लगाइये। कर्म सुभासुभ जानि, बिवना ताके कर गहे। जितहि टिकावति आनि, तितहि बसे मन कामना ॥ इति श्री ज्ञान दीपिकायां श्री स्वामी तुलसीदास कृत श्रीति पुरानतु मते सिक्ष्यामार्ग वर्ननो नाम पंचमोध्याय ॥ ५ ॥ सोरठा। श्री गुरुचरन प्रसाद पोथी लिपि पूरन कियो राम सहाइ सदाय श्री रघुबीर प्रतापते संपूर्ण जेष्ट वदि ५ भृगुवासरे संवत १८७३ श्री दर्योनमः ॥ राम राम राम ॥

Subject—पृ० १—४ तक—ईश्वर प्रार्थना। आदि दीपक की परिभाषा। धर्म मार्ग, अधर्म मार्ग, सुबुद्धि, कुबुद्धि, यमराज आदि का वर्णन। अर्थात् राम वशिष्ट, श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर का संवाद वर्णन किया गया है। पृ०—५—१० तक—ज्ञान मार्ग जो प्रबोधचन्द्र के मतानुसार है। इसमें काम क्रोध लोभ मोह तप क्षमा हिंसा आदि का अलग अलग वर्णन किया गया है। पृ० ११—१४ तक—श्री शंकराचार्य मतानुसार ब्रह्म और माया का निर्णय वर्णन है। पृ० १५—२४ तक भागवत, रामायण मतानुसार श्री रामचन्द्र जी व श्री कृष्ण के स्वरूप वय सहित ध्यानपूर्वक वर्णन किया है। पृ० २५—३१ तक—श्रुति पुरान मतानुसार शिक्षा मार्ग का वर्णन है। इसमें बताया गया है कि मनुष्य का क्या धर्म है और उसे क्या करना चाहिये ॥

No. 432(x). Mangala Rāmāyaṇa (Jānki Maṅgal), by Tulasi Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—16. Size —6 × 12 inches. Lines per page—16. Extent—256 Anushṭup ślokās. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—1861 Samvat or A. D. 1804.

Place of deposit—Paṇḍita Bhagwān Dinaji Miśra, Vaidya, Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मंगल रामायण लिख्यते ॥ गुर गनपति गौरि गिरापति ॥ सारद सेष सुकवि श्रुति संत सरल मति ॥ हाथ जोरि करि विनय सबहि सिर नावउ ॥ सो रघुवीर विवाह जथा मति गावउ ॥ सुभ दिन रचेउ सुमंगल मंगलदायक ॥ सुनत श्रवन हिय बसहि सिया रघुनायक ॥ देस सुहावन पावन वेद बषानइ ॥ भूमि तिलकसम तिरहुति त्रिभुवन जानइ ॥ तहं बसै जनक नगर नृप परम उजागर ॥ सिया लली तहं प्रगटी सब सुष सागर ॥ जनक नाम तेहि नगर बसै नरनायक ॥ सबगुन रूप निधान न पटतर लायक ॥ भये न ह्वै हैं हैन जनक सम नल मे ॥ सीय सुता भइ जासु सकल मंगल मै ॥

End—जनि छोह छोड़ब विनय सुनि रघुवीर बहु विनती करउ ॥ मिलि भेटि सहित सनेह बहुरि विदेह उर धीरज धरो ॥ सो समय कहत न बनै कछु सब भुवन भरि करुना रहो ॥ तब कीन्ह कौसलपति पयान निसान बाजे गहगहो ॥ मंगल ॥ तहहि मिले भृगुनाथ हाथ फरसा लिये । डाटत आंषि देषाइ कोप दारुन किये ॥ राम कीन्ह परितोष रोष रिस परिहरे ॥ चले सौंपि सारंग सुफल लोचन करे ॥ रघुबर भुजबल दषि उछाह बरातिन ॥ मुदित राउ लषि सन्मुष विधि सब भांतिन ॥ यहि विधि ब्याहि सकल सुत जग जस छायउ ॥ मग लोगन सुष देत अवध पति आयउ होहि सुमंगल सगुन सुमन सुर बरषहि । नगर कुलाहल भयउ नारि नर हरषहि ॥ इति श्री मंगल रामायण स्वामी तुलसीदास कृत समाप्त शुभमस्तु ॥ संवत् १८६१ फागुन मासे कृष्णपक्षे तिथै चतुर्थ्यां रविवासरे ॥ दसषत बेनी बकस के मंगल रामचरित्र फागुन बदि तिथि चौथ कहं आदित वार पवित्र ॥ ससि रस वसु ससि अंक ये सोई संवत जानु रामचरित्र अद्भुत रतन करसि सदा मन ध्यानु ॥ राम लषन अरु जानकी सहित भरत अरिहंत । सुमिरत मंगल सर्वदा श्री पवनज हनुमंत ॥ श्री जानकी वल्लभो जयति ॥

Subject—श्री जानकी जी का जनक जी के यहां जन्म व ब्याह व महाराजा दशरथ की बरात व भृगुनाथ का आना व श्री राम जी का भृगुपति का संतोष करना आदि का वर्णन ।

No. 432(*y*). Kavitāvali, by Goswāmi Tulasi Dāsa of Rājapura, Bāndā. Substance—Old, country-made paper. Leaves—58. Size—11 × 6½ inches. Lines per page—10. Extent—1,160 Anushṭup ślokās. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—1889 Samvat or A. D. 1832. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhinga Rāja (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ कवितावली रामायण कथा तुलसी कृत लिख्यते । चन्द्रकला पर्याय दुमिला छंद ॥ अवधेस के द्वार सकार गई सुत गोद में भूपति लै निकसे । अवलोकिहुं सोच विमोचन को ठगि सो रहि जो न ठगे धृग से ॥ तुलसी मन रंजन रंजित अंजन नैन सुखंजन जातक से । सजनी ससि में सम सील उभै नव नील सरोरुह से विगसे ॥ १

End—चाहैं न अनंग अरिये कौ अंग मागिबे को दियोई पै जानिये स्वभाव सिद्धि बानि सो । बारि बुंद चारि त्रिपुरारि पर डारि ये तो देत फल चारि लेत सेवा सांची मानिये ॥ तुलसी भरोसो महेस भोरानाथ कैा तो कोटिक कलेस करो मरैा धारि मानिसो । दारिद दमन दुष दोषदाह समन सो टोक तिहुं नाहीं दूजो रमन भवानि सो ॥ १५१ इति श्री रामायण कवितावली गोसाई तुलसीदास कृत उत्तर कांड समाप्त सुभमस्तु ॥ मिति आषाढ़ मासे कृष्णपक्षे सप्तम्यां चंद्रवासरे सम्वत १८८९ सन १२४० साल द० गंगाप्रसाद कायस्थ मु० टिकुइया ग्राम ।

No. 432(z). Kavitta Rāmāyana, by Tulasī Dāsa of Rajapura (Bāṇḍā). Substance—Old' country-made paper. Leaves—57. Size—$8\frac{1}{4} \times 5$ inches. Lines per page—22. Extent—1,232 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1850 Saṃvat or A. D. 1793. Place of deposit—Bābū Padma Bakasha Siṃha, Lavedpur, Baharaich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री जानकी रवन चरन कमलेभ्यो नमः ॥ अवधेस के द्वार सकार गई सुत गोद के भूपति लै निकसे । अवलोकिहौं सोच विमोचन कौं ठगि सो रही जे न ठगे धृग से ॥ तुलसी मन रंजन रंजित अंजन नैन सुखंजन जातक से । सजनी ससि में सम सील उभै नव नील सरोरुह से बिगसे ॥ १ ॥ पगनूपुर औ पहुंची कर कंजन मंजु बनी मन माल हिए । नव नील कलेवर पीत झगा झलकैं पुलकैं नृप गोद लिए ॥ अरविंद से आनन रुपमरंद अनंदित लोचन भृंग पिये । मन में न बसै अस बालक जो तुलसी जग में फल कौन जिए ॥ २ ॥

End—चाहै न अनंग अरिकौ अंग मागने को दिबोई पै जानि सुभाव सिद्धि बानो सो । बारि बूंद चारि त्रिपुरारि पर डारिये तैा देत फल चारि लेत सेवा सांची मानिसो ॥ तुलसी भरोस नमवेस भोरानाथ को तैा कोटिक कलेस करैा मरैा छार मानि सो दारिद दमन दुष दोष दाह समन सो टोक तिहुं नाहीं दूजो रमन भवानि सो ॥ २९८

दोहा—राम बाम दिसि जानकी लषन दाहिने वोर।
ध्यान सकल कल्यान मय सुर तरु तुलसी तोर ॥ २२९

इति श्री कवित्त रामायन सम्पूर्णम् ॥

सुचिमासि शुक्ल पक्षे पंचम्या सनि वासरे पुस्तकं लिषित्वा गजराजस्य सम्वत १८५० ॥

Subject—बालकांड वर्णन १ से २२ छंद तक
अयोध्या कांड वर्णन २३ से ४४ छंद तक
आरण्य कांड वर्णन छंद ४५ से ५० तक
किष्किन्धा कांड वर्णन छंद ५१ से ५२ तक
सुन्दर कांड वर्णन छंद ५३ से ९२ तक
लंका कांड वर्णन छंद ९३ से १४३ तक
उत्तर कांड वर्णन छंद १४४ से २२९ तक
इति

No. 432(a2). Kavitta Rāmāyana, by Tulasi Dāsaji. Substance—Old country-made paper. Leaves—228. Size—9 × 4⅓ inches. Lines per page—6. Extent—550 Anushṭup ślokas. Appearance—Ordinary and damaged. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1901 Samvat or A. D. 1844. Place of deposit—Thākura Viśwanātha Simha, Tālluködāra, village Agreser, post office Tirsundi, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री रामानुजाय नमः ॥ अथ कवित्त रामयण लिष्यते ॥ सवैया ॥ कवित्त ॥ अवधेश के द्वार सकार गई सुत गोद के भूपति लै निकसे। अवलोकि हौं शोच विमोचन कौ थकि सो रही जो न थकै थिक से ॥ तुलसी मन रंजन रंजित अंजन नयन सुखंजन जातक से। सजनो शशि में शमशील उयें नव नील सरोरुह से विकसे ॥ १ ॥ पग नेपूर औ पहुंची कर कंजनि मंजु वनी मणि माल हिये ॥ नवनील कलेवर पीत भगा झलकै पुलकै नृप गोद लिये ॥ अरविंद से आनन रूप मरंद अनन्दित लोचन भृंग पिये ॥ मन में न वसै अस बालक जौं तुलसी जग में फल कौन जिये ॥ २ ॥

End—देत संपदा समेत श्री निकेत याचकन भवति भवूति भंग वृष भव हतु है ॥ नाम बाम वामदेव दाहिनो सदा असंक संत सरथंगना अनंग को महतु है ॥ तुलसी महेश को प्रभाव भाव ह सुगम अगम निगम हू को जानिवो कहा कहै

कवि मुप शारदा लजानो जात गात श्वेत चंद जात रूप को लहतु है ॥ ३०० ॥ चाहे न अनंग अरि एको अंग मागने को दियोई पै जानिये सुभाव सिद्धि पानि सों। बारि बुंद चार त्रिपुरारि पर डारिये तौ देत फल। चारिलेत सेवा सांची मानि सो ॥ तुलसी भरे मन भवे शमेरारना। थको तौ कोटिकलेश करो मरो द्वार सानि सो ॥ दारिददयन दो दाहक शमन शोक लोक तिहुं नाहि दूजो रवन भवानि सो ॥ ३०१ ॥ इति श्री कवित्त रामायण ॥ सम्वत् १९०१ ॥

No. 432(b2). Kavitta Rāmāyaṇa, by Tulasī Dāsa of Rājāpura (Bāṇda). Substance—Country-made paper. Leaves—15. Size—$11\frac{1}{4} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—9. Extent—304 Anushṭup ślokās. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Nāgarī Prachāriṇī Sabha, Benares.

Beginning—सिला सत्र सोहत सागर जौं बल वारि बढ़े। करि कोप कहैं रघुबीर त्रिया सों कौतुक ही गढ़ कूदि चढ़े ॥ चतुरंग चमू पल में दलिकै रन रावण राज के हाड़ गढ़े ॥ ८९

घनाक्षरी—विपुल विशाल कपि भाल मानों काल बहु वेष धरे धावैं किरो करषा।

लिए सिला सैल साल ताल औ तमाल तोरी तोय निधि विविध समाज हरषा ॥

डुगे दिग कुंजर कमठ कोल कलमलै डोलै धराधर धनु धरा घक धरषा ॥

तुलसी तमकि चले राघौ की सपथ करैं को करै अटक कपि कटक अमरषा ॥ ९० ॥

End—सवैया। जाके विलोकत लोकप होत विसोक। लहैं सुरलोक सुरलोक सुगीनहि। सो कमला तजि चंचलता कर कोटि कला रिझवै सिर मौरहि ॥ ताकौ कहाइ कहा तुलसी तुल जाहि मांगत कूकर कौरहि। जानकी जीवन को जनु है जरि जाहु सो जीह जो जांचिय औरहि ॥ १६६

जड़ पंच मिले जेहि देहकरी करनी लघु धौंधरनी धर को। जन कौ कहु क्यों करि है न संवार जो सार करै सचराचर को ॥ तुलसी कहु राम समान को आन जो सेवक जासु रमा घर को। जग मैं गति जाहि जगत्पति की परवाहि च ताहि कहा नर को ॥ १६७

जग जांचिय कोउ न जांचिय जो जिय जा × × × × अपूर्ण।

No. 432(*c*2). Krishṇa Gītāwalī, by Tulasī Dāsa of Rājapura. Substance—Foolscap paper. Leaves—20. Size 7 × 4 inches. Lines per page—12. Extent—150 Anushṭup slokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Lālā Tulasī Rāma Agrawāla, Rāe Barelī.

Beginning—श्री गणेशाय नमः श्री कृष्ण गीतावली श्री कृष्णाय नमः

माता लै उछंग गोविंद मुख बार बार निरखै ।
पुलकित तनु आनंद घन छन छन मन हरखै ॥
पूछत तोतरात बात मातहि यदुराई
अतिसै सुख जाते ताहि मोहि कहु समुझाई
देव तुव वदन कमल मन आनंद होई
कहै कैान सुर नर मुनि जानैं काइ कोई
सुन्दर मुख मोहि देखउ इच्छा अति मोरे
मम समान पुन्य पुंज बालक नहि तोरे
तुलसी प्रभु प्रेम विवश मनुज रूपधारी
बाल केलि लीला रस ब्रज जन हितकारी ॥ १

End—गह गह गगन दुन्दभी बाजो

बरषि सुमन सुरगण गावत यश हरष मगन मुनि सुजन समाजो
सानुज सगन ससचिव सुयोधन भये मुख मलिन खाइ खल खाजो
लाज गाज उन बिन कुचालि कलि परी बजाइ कहूं कहूं गाजो
प्रीति प्रतीति द्रुपद तनया को भलो भूरी भय भरो न भाजो
कहि पारथ सारथिहि सराहत गई बहोरि गरीब निवाजो
सिथिल सनेह मुदित मनहीं मन बसन बिच बीच बधू बिराजो
सभा सिंधु यदुपति जय मय जनु रमा प्रगट त्रिभुवन भरि भ्राजो
युग युग जग साके केशव के शमन कलेश कुसाज सुसाजो
तुलसी के। न होइ सुनि कीरति कृष्ण कृपाल भक्ति पथ राजो । ६१

इति श्री राम गीतावल्यां कृष्ण चरितं समाप्तम्

Subject—१—श्री कृष्ण की बाल्यावस्था और यशोदा का प्रेम वर्णन ।

२—गोपियों का यशोदा से श्री कृष्ण की शिकायत वर्णन ।

३—श्री कृष्ण का गोपियों का उलहना झूठा बताना, जशोदा का श्री कृष्ण की तरफ़दारी करना ।

४—दधि लीला का वर्णन
५—श्री कृष्ण की मुख शोभा वर्णन
६—श्री कृष्ण जन्म से ब्रज का आनन्द वर्णन
७—श्री कृष्ण का पर्वत उठाना वर्णन
८—श्री कृष्ण का गौ चरावन वर्णन
९—श्री कृष्ण का गाना वर्णन, श्री कृष्ण शोभा वर्णन
१०—श्री कृष्ण का मधुवन जाने में वियोग वर्णन
११—कुबरी का स्नेह वर्णन
१२—श्री कृष्ण विरह में ब्रज दशा वर्णन
१३—ब्रजवासियों का ऊधो से शिकायत वर्णन
१४—श्री कृष्ण पर विरह में दोषारोपण तथा गोप ग्वालों की प्रीति वर्णन
१५—मधुप दूत से गोपियों का श्री कृष्ण वियोग में निज दशा का वर्णन।
१६—ऊद्धव की शिक्षा गोपियों को।
१७—गोपियों का ऊद्धव को उलाहना देना
१८—श्री कृष्ण का ब्रज में लाने के विविध उपाय वर्णन।
१९—द्रौपदी के चीर हरन में उसकी श्री कृष्ण से पुकार वर्णन।
२०—श्री कृष्ण की कृपा का वर्णन, अर्जुन और द्रौपदी का प्रेम वर्णन

समाप्त

No. 432(*d*2). Rāmājyā, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—34. Size—9 × 4 inches. Lines per page—7. Extent—406 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1871 Samvat or A.D. 1814. Place of deposit—Śrī Mān Mahārāja Bhagawān Baksha Simhajī, Rāja Amethi, district Sultānapura (Oudh).

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ बानि, बिनायक, अम्ब, हर, रवि, गुरु, रमा, रमेश ॥ सुमिर करय सब काज सुभ मंगल देश बिदेश ॥ १ ॥ गुरु सारद सिंधुर बदन ससि सुरसरि सुर गाइ ॥ सुमिरि करहु मंगल मुदित होइहि सुकृत सहाइ ॥ २ ॥ गिरा गौरि गुर गनप हरि मंगल मगल मून ॥ सुमिरत करतल सिद्धि सब होइ ईस अनुकूल ॥ भरत भारती रिपु दवन गुरु गनेस बुधवार ॥ सुमिरत सुलभ सुधर्मफल विद्या विनय विचार ॥ ४ ॥ सुर गुरु हरि सिव राम गुर राऊ गिरा उर आनि। जो कछु करिय सो होइ सुभ सुलहि सुमंगल खानि ॥ ५ ॥ सुकृति सुमिरि गुर सारदा गनप लषन हनुमान ॥ करिय काज सुभसाज भल

निबहै नीक निदान ॥ ६ ॥ तुलसी तुलसी राम सिय सुमिरि लषन हनुमान ॥ काज विचारहु सो करहु दिन दिन पद कल्यान ॥ इति प्रथम सप्तक ॥

End—हनुमान सानुज भरत राम सिया उर ष्यानि । लषन सुमिरि तुलसी कहत सगुन विचारि वषानि ॥ जो जिहि काजहि अनुसरै सो दोहा जब होइ ॥ सगुन समै सब सत्य फल कहब राम मत लोइ ॥ गुन विश्वास विचित्र मति सगुन मनोहर हार । तुलसी रघुवर भक्ति उर विलसति विमल विचार ॥ इति श्री तुलसीदास कृतं रामायण सामाज्ञा समाप्तं षष्ठोत्तर शत कमल फल मुष्टि तीनि परिमान । सत सत तजि शेष कैा राषहि सम विलगान । प्रथम सर्ग जो शेष रहै दूजे सप्तक होइ । तीजे दोहा जानि के सगुन विचारब सोइ ॥ श्री रामाय नमः ॥ सम्बत् १८७१ ॥

Subject—(१) प्रथम सर्ग—(१) पृष्ट १—२ तक—प्रथम सप्तक वन्दना तथा दशरथ का अंध मुनि के शाप देना, दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ करना ।

(२) पृ० २—३ तक—द्वितीय सप्तक । रामादि जन्म वर्णन ।

(३) पृ०३—४ तक—तृतीय सप्तक—चूड़ाकर्मादि के पश्चात राम का कैाशिक मुनि के साथ गमन, शिलातारन ।

(४) पृ० ५—६ तक—चतुर्थ सप्तक—सीय स्वयंवर वर्णन ।

(५) पृ० ६—७ तक पंचम सप्तक—राम विवाह वर्णन ।

(६) पृ० ७—८ षष्टम सप्तक—दशरथ अवध गमन ।

(७) पृ० १० तक—सप्तम सप्तक—अवध में बधाई ।

(२)—द्वितीय सर्ग ।

(१) पृ० ११—२० तक—सप्तक—विषय

(१)—राम वनवास ।

(२)—से (७) तक—बन के कार्य्य ।

मुनियों से मिलाप इत्यादि ।

(३) तृतीय सर्ग—२१—२९ तक—दंडकारण्य वास वर्णन ।

(४) चतुर्थ सर्ग—पृ० २९—३७ तक—

(५) पंचम सर्ग पृ० ३८—४७ तक—

(६) पृ० ४८ से पृ० ५७ तक—षष्टम सर्ग—

(७) पृ० ५७—पृ० ६८ तक—सप्तम सर्ग ।

No. 432(*b*2). Tulasidāsa Krit Sagunāwali, by Tulāsidāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—29. Size—8 × 4 inches. Lines per page—20. Extent—480 Anushṭup ślokas.

Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition —1655 Samvat or A.D. 1598. Date of manuscript—1906 Samvat or A.D. 1889. Place of deposit—Paṇḍita Rishi Rāma Dubey, Brāhmaṇa Tolā, post office Fakharpur, district Baharāich (Oudh).

Beginning—

१	२	३	४
५	६	७	८

No. 432(*f*2). Rāmajnā, by Goswāmī Tulāsī Dāsa of Rājapura. Substance—Country-made paper. Leaves—16. Lines per page—24. Extent—384 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1896 Samvat or A.D. 1839. Place of deposit—Rāja Kiśore Ṭhikēdāra, Harachandapura, Rāe Barelī.

No. 432(*g*2). Tulāsidāsa kē Saguna, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—22. Extent—668 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript —1879 Samvat or A.D. 1822. Place of deposit—Paṇḍita Ajodhyā Prasāda (Bhondū), Bārābāṇkī.

No. 432(*h*2). Saguna Mālā, by Goswāmī Tulāsī Dāsa of Rājāpura (Bāṇda). Substance—Country-made paper. Leaves —49. Size—9½ × 5 inches. Lines per page—10. Extent—500 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1856 Samvat or A.D. 1799. Place of deposit—Paṇḍita Kailās Nāth Vājpaiyī, Asanī, Fatehapura.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री जानकी वल्लभो विजयते ॥ वानि विनायक अंब रवि गुरु हर रमा रमेस। सुमिरि करहु सब काज सुभ मंगल देस विदेस ॥ १ ॥ गुर सर सइ सिधुर वदन ससि सुरसरि सुरगाइ। सुमिरि चलहु मग मुदित मन होइहि सुकृत सहाइ ॥ २ ॥ गिरा गौरि गुर गणप हनु मंगल मंगल

मूल। सुमिरत करतल सिद्ध सब होइ ईसु अनुकूल ॥ ३ ॥ भरत भारती रिपुदवनु गुह गनेस बुध वारु। सुमिरत सुलभ सुधरम फल विद्या विनय विचारु ॥ ४ ॥ सुर गुर गुरु सिय रामगन राउ गिरा उर आनि। जो कछु करिय सो होइ सुभ खुलहि सुमंगल खानि ॥ ५ ॥ सुक सुमिरि गुरु सारदा गनपुलपन हनुमान। काज विचारेहु जो करहु दिन दिन बड़ कल्यान ॥ ६ ॥

End—हनुमान सानुज भरत राम सीय उर आनि। लषनु सुमिरि तुलसी कहत सगुन विचारु बखानि ॥ ५ ॥ जो जेहि काजहि अनुहरइ सो दोहा जब होइ। सगुन समय सब सत्य फल कहब राम गति गोइ ॥ ६ ॥ गुन विस्वास विचित्र भनि सगुन मनोहर हारु। तुलसी रघुबर भगत उर विलसत विमल विचारु ॥ ७ ॥

इति श्री तुलसीदास कृतौ सगुन मालायां सप्तमः सर्गः ॥ ७ ॥ सुभमस्तु ॥ संवत १८५६ ॥ आश्विने शुक्ल पक्षे द्वादसी गुरु वासरे लोपीतं राम बकस कायथ सोनारपुरा मध्ये ॥

सर्ग							सप्तक							दोहा						
१	२	३	४	५	६	७	१	२	३	४	५	६	७	१	२	३	४	५	६	७

दोहा—कमल बीज सत अष्ट गनि तीन पुष्टि कर लेब।
पुनि गुनि दिन गुनि धातु गुनि सगुन सत्य कहि देब ॥

इति।

Subject—प्रथम सप्तक—देवों की स्तुति आदि वर्णन। पृ०—१

द्वितीय सप्तक—दशरथ राज सुख कथन, पुत्र जन्म वर्णन पृ० २—३

(३) राम आदि भाइयों की बाल क्रीडा, अहिल्या तारण पृ० ३—४

(४) सीय स्वयंवर वर्णन } पृ० ४—५,
(५) विवाह वर्णन }

(७) अवध आनंद वर्णन पृ० ६।

(१) राम बन गमन वर्णन, ग्रामवासियों से सम्मिलन, प्रेमभाव वर्णन। (२) सुमंत्र विलाप, दशरथ स्वर्गगमन वर्णन पृ० ७—१०। (३) नय चरित्र वर्णन। (४) भरत का पितृ कर्म करना। राम के पास जाना और लौटना, (५) चित्रकूट में साधु समाज वर्णन। (६) राम का पंचवटी वास। (७) मुनि यज्ञ, गृद्ध भेट कथन, पृ० १०—१३। (१) दंडक वर्णन। सूर्पणखा की नाक काटना, राक्षस वध वर्णन। (२) मारीच मृगरूप गमन। (३) सीता हरण, राम विलाप, गृद्ध युद्ध-वचन।

(४) चारोबंधु का स्मरण फल। पृ० १४—१६। (५) राम हनुमान भेंट और सुग्रीव मिलन। (६) बालि बध, सीय शोधार्थ सेना, (७) सीयशोधन पृ० १७—१९। (१) रामअवतार वर्णन। (२) संस्कार वर्णन चारो बंधु के। (३) राम के कारण अवध आनंद कथन। सीता जन्म, राम महिमा कथन। पृ० २०—२२। (५) विश्वामित्र का राम लक्ष्मण को प्राप्त करना। (६) मख रक्षा अहिल्या तारण। जनकपुर गमन। (७) धनुष भंग पृ० २३—२४ (१) राम नाम महिमा कथन। (२) हनुमान का लंका में जाना। (३) हनुमान सीता संवाद। (४) हनुमान भरत, शत्रुहन प्रशंसा वर्णन आदि। (५) अक्षवध, लंका-दहन, पृ० २५—२८, (६) विभीषण-राम भेंट। (७) रावण रावण युद्ध। इति पंचम सर्ग। (१) राक्षस-बध, सीताराम-भेंट, अवध गमन। (२) राम लक्ष्मण का माता गुरु आदि से भेंट। (३) भालु, कपि, राक्षसों की बिदाई—पृ० २९—३२। (४) अयोध्या में राजसुख वर्णन। (५) मृत बालक का जीवन वर्णन। (६) सीय त्याग, राम यज्ञ वर्णन। (७) लव कुश जन्म, सभा में यश-वर्णन, सीता का भूमि प्रवेश कथन—पृ० ३२-३६। (१) राम-राज्य सुख वर्णन (२) ग्रहों का फल। (३) रामपंचायतन-वर्णन (४) रामराज में कर्म-फल वर्णन। (५) बुरे भाग्य का फलना। (६) मंथरा और केकई का वर्णन, दुष्टता कथन। (७) सब देवों को प्रार्थना। चक्र व विधि सगनौती कथन। पृ० ३७—४२ तक।

इति।

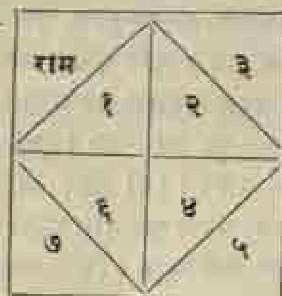
No. 432(i2). Rāma Śalākā, by Goswāmī Tulasī Dāsa of Rājāpura. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—4½ × 4 inches. Lines per page—20. Extent—400 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1265 Fasli or A.D. 1848. Place of deposit—Paṇḍita Ajodhyā Prasāda Miśra, Kālail, post office Chilwaliyā, district Baharāich.

NOTE—(1) शेष सब विवरण No. 422 (j) (1) पर लिखा गया है।

No. 432(j2). Rāma Śalākā, by Goswāmī Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—40. Size—8½ × 6 inches. Lines per page—18. Extent—405 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāmanātha Lāla, Kāśī.

No. 432(*l2*). Rāma Śalākā, by Goswāmi Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—58. Size—8 × 4 inches. Lines per page—14. Extent—406 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1910 Samvat or A.D. 1853. Place of deposit—Paṇḍitā Lālatā Prasāda, village Paṇḍitapurwā, post office Sisaiyā, district Baharāich (Oudh).

Beginning—



No. 432(*m2*). Rāma Mukātāwalī, by Goswāmi Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—58. Size—7 × 5 inches. Lines per page—14. Extent—254 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1726 Samvat or A.D. 1669. Place of deposit—Paṇḍita Govinda Rāmājī, village Amahat Purawā Gajādhar Tewārī, post office Sultāṇpur, district Sultāṇpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री मते रामानुजायनमः अथ राम मुक्तावली लिष्यते । सोरठा । बुझि देषि सब कोय ॥ राम नाम सम मंत्र नहिं ॥ बुधजन लेहु बिलोय ॥ निर्गुण शगुन बिचारि कै ॥ दोहा ॥ रूप कहौ निर्गुण कर सुनहु संत मन माह । निगम कहै तेहि व्याह जो सोहहि सबके नाह ॥ २ ॥ चैापाई ॥ षाषर मधुर मनोहर दोऊ ॥ बरन बिलोचन जन प्रिय जोऊ ॥ प्रथमहि निर्गुण रूप अनुपा । केवल जो तन दूसर रूपा ॥ नहि तव पांच तत्त्व गुन तीनो ॥ नहि तव शिष्टि बिधाता कीन्हीं ॥ नहि तव इन्दु तरनि परगासा । नहि तव पावक नीर निवासा ॥ नहि तव नषत रवानि उजियारा ॥ नहि तव येकौ सकल पसारा ॥ नहि तव वारिज सुत परवेसा । नहि तव बिस्नुन देव महेसा ॥ नहि तव गननायक न सुरेस । नहि तव गुरु सिष कर उपदेस ॥ देव तटनि नहि रवि सुत भयऊ इंदु सुता नहि संगम कियऊ ॥ नहि तव षरसाठ तीरथ पूजा । नहि तव देव दनुज नहि

दुवा ॥ दोहा ॥ तुलसी कहा विसेषते तब कछु कित्तम नाहि। निर्गुन रुप प्ररुप हरि रहहि निरंतर माहि ॥ ३ ॥

End—अब देषा कलि सब कर नाचा। तब मै पवन तनै यह जाचा ॥ कासोपुरी संभु पखाना। तहं मोहि धाइ मिले हनुमाना ॥ का मागहु तुम राम सेवक। जाको विभा देव के देवक ॥ तब मैं कहा सुनहु सुरनायक। करहु किपा मोपर सुषदायक ॥ सो पथ कहहु जो रामहि पावौ। बिनु प्रियास भवत्रास नसावौ ॥ तब पस हुकुम पवन सुत दीन्हा। वेद पुरान साम्र मत चीन्हा ॥ करहु राम मुक्तावलिजाई। सो सुनि पढ़ि नर पाय पराई ॥ तबहि राम मुक्तावलि भयऊ ॥ जब मोहि पवन सुवन बल दयऊ ॥ जोई मंत्र विरंचि हरि संभु रहे लवलाय। सोई राम मुक्तावली निगम कहो जेहि गाइ ॥ ४३ ॥ वैसो नाम सुथ देषिहौ ग्रंथन कह कहु होय ॥ पवन तनै को रायना पायौ सकल विलोय ॥ ४४ ॥ जो पढ़ैं दिन यो राति। चित दै के बहु भाँति ॥ वह सुनि नार जो कोय। सो राम पद कह होय ॥ सुनि है जो हिय धरि ध्यान। सो पावे पद निर्वान ॥ ताकह कलुष जो होय। तेहि संग रहै न सोय ॥ × × × × × दो० ॥ सब पुरान कर जीव यह कलि यो जो इतिहास। निगुन सगुन जो अजपा प्रगटेउ तुलसीदास ॥ ५५ ॥ इति श्री राम मुक्तावली श्री गोसाई तुलसीदास कित चरित्र सिव मानसे संपुर्न सुभमस्तु सिद्धिरस्तु ॥ मिति चैतहन सुदि जन्मराति मंगलवार। लिषित भवानी बकस पंडित जो प्रति देषा सो लिषा मम दोषो न दीयते ॥ सुभस्थाने डोमर सुनार के पुरवा।

Subject—(१) पृ० १—७ तक सृष्टि निरुपण (२) पृ० ८—१० तक—भृगु द्वारा त्रिदेव परीक्षा। (३) पृ० ११—१३ तक—राम भेंट के साधन, सगुण, निर्गुण वर्णन। (४) पृ० १४—१५ तक—नवधा भक्ति वर्णन। (५) पृ० १६—२३ तक—कलयुग में रामनाम महिमा। (६) पृ० २४—३६ तक—तीन प्रकार के पुरुषों के लक्षण। (७) पृ० ३७—४६ तक—शाक्त मत शरीर का रुपक नगर के साथ सादृश्य, अजपा जाप के भेद। (८) पृ० ४७—५४ तक नाम जपने का नियम, फल। (९) पृ० ५४—कलियुग में उत्पन्न हुए नृपों में निर्वाण पदाधिकारी। (१०) ग्रंथ—पाठ—महात्म्य, पृ० ५७ तक पृ० ५८ में रामनाम महिमा के दो कवित्त ॥

No. 432(*u*2). Rāma Muktāwali, by Tulasi Dāsaji. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—9 × 7 inches. Lines per page—24. Extent—300 Anushtup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1884

Samvat or A. D. 1827. Place of deposit—Paṇḍita Maṅgala-deva, village Rewalī, post office Baharāich, district Baharāich (Oudh).

No. 432(o2). Rāmāyaṇa (Bālakāṇḍa), by Goswāmi Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—864. Size—8 × 6½ inches. Lines per page—17. Extent—7,344 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1903 Samvat or A.D. 1846. Place of deposit—Ṭhākura Bindhyābakhsha Simhajī, village Tikarā, post office Dhanaulī, district Bārābaṇki (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः गुरुनारायणाय अतुलित वलधामं स्वर्ण शैलाव देहं दनुजवन कृशानं ज्ञाननामाग्र गण्यं सकल गुणनिधानं वानरानांधीशं रघुपति वरदूतं वात जातं नमामि ॥ १ ॥ मनोजवं मारुततुल्य वेगं जितेन्द्रिय बुद्धिमतां वरेष्टं ॥ वातात्मजं वानर यूथ मुख्यं श्री रामदूतं शरणं प्रपद्यं ॥ २ ॥ उल्लिघ सिंधो सलिलं सलीलयः शोकं वन्हि जनकात्मजाया ॥ अदायते नैव ददाह लंका नमामितं प्रांजलि राजनेयम् ॥ ३ ॥ गोः पदं कृतवारोशं मसको कृत राक्षसं ॥ रामायन महं माला रत्नं वन्दे निलात्मजं ॥ ४ ॥ वीर हनुमते नमः ॥ श्रीगणेशाय-नमः श्रीगुरुशरण ॥ वर्णान मर्थ संघानां रसानां छंदसामपि ॥ मंगलानांच कर्तारौ वन्दे वाणी विनायकौ ॥ भवानी शंकरो वन्दे श्रद्धा विश्वास रूपिणैा ॥ जिह्वा विना न पश्यंति सिद्धि स्वांतस्थमीश्वरे ॥ २ ॥ वंदे बोधमयं नित्यं गुरु शंकर रूपिणं ॥ जामाश्रितो हि वक्रोपि चन्द्रः सर्वत्र वन्दिते ॥ ३ ॥ सीताराम गुणग्राम पुण्यारण्य विहारिणैाः वन्दे विशुद्ध विज्ञानैा कवीश्वर कपीश्वरैा ॥४ ॥

End—सोरठा—भृ ; श्वारि सुखधाम पतिसुख प्रति निर्मल सुख शिवपुरी तहां देव विश्राम सो महिमा वरनैा कहा ॥ दोहा ॥ कहे सुने समुझे सकल सो प्रभु गुनगण गान । सीता पति रघुकुल तिलक सदा करहि कल्यान ॥ सोरठा—सिय रघुवीर विवाह जो सप्रेम गावहिं सुनहिं ॥ तेन कहु सदा उछाह मंगलयेतन रामजस ॥ दोहा ॥ कठिन काल कलिमल ग्रसित, साधन कछौ न होइ ॥ येह विचार विश्वास करि सुमिरहि बुध जन सोइ ॥ सोरठा—मनहरि पद अनुराग करहि त्याग नाना कपट । महामोह निसु जागु, सोवत बीते काल बहु ॥ इति श्री रामचरित्रे कलिकलुषविध्वंसने विमल वैराग्य संपादिनो तुलसीकृत बालकांड रामायण संपूर्ण शुभमस्तु कल्याण मस्तु मिति पोषमासे कृष्णपक्षे पंचम्यां सोम वासरे संवत १९०३ शाके १७६८ ॥ दसखत अजीत सिंह ॥ वास टिकरा ॥ पठनार्थं बलदेव बख्श सिंह ॥

Subject—(१) पृ० १—१७७ तक—हनूमान जी को वंदना, वाणी तथा विनायक को वंदना, भवानी शंकर की वंदना, गुरु को वंदना, कवीश्वर तथा कपीश्वर को वंदना, सीता की वंदना, रामायण की प्रस्तावना। गणेशजी की वंदना, तथा महिमा नारायण, शिव, गुरु के कमल चरण की वंदना, चरणरज की बड़ाई पद नख की शक्ति का वर्णन। सज्जन विनय, साधु चरित विसदता तथा उसके फल। खल वंदना, संगति का प्रभाव, देव दनुजादि सभी की वंदना। विविध विरान वर्णन के साथ ग्रन्थ चतुष्टय भक्त तथा अभक्त जनों का ध्यान। कवि की दीनता स्वमुख से, व्यास इत्यादि कवि जन की वंदना, कविता का वास्तविक रूप। चारों वेदों को वंदना, विप्र, सारद सरितादि वंदना, कथा का फल, अवधपुरी की वंदना, राम के माता पिता की वंदना, भरत हनुमानादि रामायण के अन्यपात्रों को वंदना। रामनाम महिमा, रामायण की कथा प्रथम किसने किससे कही, रामायण को कथा अपने गुरु से सुनने का वर्णन। राम गुणानुवाद विषदना, रामायण निर्माण काल। संवत सोरह सौ इकतीसा। करत कथा हरि पद धरि सीसा। भैाम नैामी वार मधु मासा॥ अवधपुरी यह चरित प्रकासा॥ इस ग्रंथ के रामचरित मानस नाम रखने का कारण, कथा की विषदता का वर्णन, त्रिविधि श्रोता वर्णन, संक्षेप में कथाओं की गणना, शंकर विप्र की कथा, कलयुग की दशा उसमें वर्णाश्रमादि की दुर्व्यवस्था का वर्णन, कलयुग के गुण वर्णन, हनूमान तथा तुलसीदास जी का मिलन, भारद्वाज, याज्ञवल्क संवाद, शिव तथा सती का संवाद, पारवती का जन्म, षट मुख जन्म, त्रिपुरा दनुज जन्म, गणेश का जन्म, रामसर शिव पारवती का संवाद, रामचंद्र के भजन की महिमा, राम के अवतारादि लेने का वर्णन।

(२) पृ० १७८—६५० तक—जालंधर की कथा, नारद मोह वर्णन, मनुसत्तरूपा की तपस्या, भानुप्रताप की कथा, मंदोदरी का जन्म, देवासुर संग्राम, रावण-जन्म, रावण लंका प्रवेश, मेघनाद तपस्या, अहिरावन का जन्म, इन्द्र-मेघनाद संवाद, मेघनाद का विवाह, गजादलोप की कथा, राजारघु की कथा, राजाअज की कथा, रावन-नारद संवाद, मनुसत्तरूपा का जन्म, सुमंत-मेघनाद (संग्राम) नेमाहित की कथा, दशरथ-कौशल्या का विवाह। सुमंत का विवाह, दशरथ-खरदूषण का संग्राम, केकई-सुमित्रा का विवाह, जानकी का जन्म, रावन चरित्र, बालि-सुग्रीव का जन्म, अंबरीष की कथा, लोमपाद राजा की कथा, श्रीरामचन्द्रजी की कथा जन्म, रघुवंशियों का वंश वर्णन, विश्वामित्र की कथा, ताड़का की कथा, सोनभद्र नदी की कथा, परशुराम का जन्म, गैातम-इन्द्र संवाद, राजानहुष की कथा, भस्मासुर की कथा,

पंजनी तपस्या, पंजनी विवाह, महावीर जन्म, महावीर-कुंभज संवाद, बलि-वावन संवाद, राजसागर का विवाह।

(३) पृ० ६५१—६८४ तक—अमर को यश, पद्मनाभ का राज्य, दलीप का राज्य, भागीरथ की कथा, नारद-ब्रह्मा का संवाद, रावन की कथा, गंगा जी की चारो धाराओं की कथा, जनक-विश्वामित्र संवाद। कुलकारी की कथा, परशु-राम संवाद, जनक तपस्या, धनुहा की कथा, श्रीरामजानुकी विवाह।

No. 432(*p*2). Rāmāyaṇa (Kishkindhākāṇḍa), by Tulasi Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—10 × 5 inches. Lines per page—10. Extent—600 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—1880 Samvat or A.D. 1823. Place of deposit—Paṇḍita Bisambhara Nātha Pāṭhaka, village Tikariyā Pura Gangadhar, post office Gauriganj (Sultāṇpur).

Beginning—श्रीगणेशायनमः॥ श्री सरस्वत्यैनमः श्री गुरुभ्यानमः॥ अथ किष्किंधा कांड प्रारंभ॥ श्री गुरुचरण सरोज रज निजमन मुकुर सुधारि बरनौ रघुपती विमल जस जो दायक फल चारी॥ चौपाई॥ सुनहु उमय विनिधी गुण-धामा। पंपासार ते चले श्री रामाः। अनुज समेत तहां चलो धाये। जहां प्रकशिक मुनि ध्यान लगाये॥ पुछा मुनहि नयन पद माथा। जदपि सब जानत रघुनाथा॥ सुनी प्रीय बचन मुनीस प्रवीना। भाग्य सराहि हरोष मति कीना॥ कर जोरी तब प्रीति दीढाई॥ प्रेम मोद न हृदय समाई॥ तदपि सुनौ तुम्ह कुल देवा॥ राम चहहि निज सुजस गवावा॥ मुनि सो कह प्रभु तुम को चहहुं॥ कठिन तपस्या केहि नित करहुं॥ सुनत वचन मुनि भये सुधारी॥ नयन खोलि प्रभु निकट निहारी॥

दोहा॥

नील जलज तन जटा शीर कटी तुनीर मुनी चिरा।
अरुण नयन शर चाप कर हरण भक्त भये भोरा॥

End—दोहाः—भव भेषज रघुनाथ जस सुनत जे नर नारि॥ तिन कर सकल मनोरथ सिद्धि करहि त्रपुरारि॥ नील तम तन श्याम कोम कोटि सोभा अधिक॥ सुनत तासु गुण ग्राम। जासु नाम अग अघ वधिक॥ ५२॥ इति श्री रामचरित्र मानसे सकल कलिकलुष विध्वंसने॥ × × ×॥ चतुर्थ कांड सोपान किष्किधा कांड सोपान॥ संवत १८८० शाके १७४५ आश्विन शुक्ल पक्ष सप्तमी॥ लिखितं रामचन्द्र रघुनाथ श्री पढ़ेरपुरकर।

Subject—तुलसी कृत रामायण एक कांड। विषय उसी के अनुसार है।

No. 432(*q*2). Rāmāyaṇa, Uttar, Sundar and Kishkindhā Kandas, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—300. Size—9×6 inches. Lines per page—15. Extent—1,650 Anushṭup ślokās. Incomplete. Appearance—Old. Character—Kaithī. Date of manuscript—1855 Samvat or A.D. 1798. Place of deposit—Paṇḍitā Sambhunāthajī, village Bāboorī, post office Aliganja Bazar, Sultāṇpura (Oudh).

Beginning—आरन्यकांड पृ० ४३ अन्तिमः—

छन्द—कपि संगन सैन संघारी निशि नारी सीतहि आनी हैः त्रैलोक पावन सु सुर मुनि नारद आदि बखानी है ? वास कहत गावत सुनत समुझत प्रभु पदन समाई हैः रघुबीर पद पंथोज मधुकर दास तुलसी गाई हैः भो भेषज रघुनाथ जस कहहि सुनहि नर नारि ॥ तिन्ह कर सुफल मनोरथ सिद्धि करहि त्रिपुरारी ॥ दोहाः बुधो बोसाप रावो उर मानस कहा समभ्यानः तुलसी सो नार पक्षत तनमा यहो पद नोर मानः इतो श्री माह पोथी किष्किंधा कांड रामाएन कोत गोसाई तुलसीदास जी कथ संपुरनंम सुभमस्तु समावतः जी परतो देखा सो लोखा मम दोषो न दोयते पंडोत जन सन बोनतोः मोरो टुटल अक्षर वाचब समझोरो सन १२०६ संवतः १८५५

End—उत्तर कांड—प्रथम पृष्ठः—श्री गनेसायोयनमह भवानी जीय सहाइः पोथी उत्तर कांड लोषाः दोहाः श्री गुरुचरन सरोजः रजनीज मन मुकुर सुधारोः बरनो रघुपती बीमल जस, जो दायेक फलचारोः चैापाईः—सीता लखन सहित भगवाना ॥ चले सकल सुरसाजि बेयाना ॥ पहुप बेयान तहा चलो आवा ॥ दंडक बन जहां परम सुहावा ॥ जहां करो मुनन्हि केर संतोषा। चला-बेवान तहाते चोषा ॥ अंतरीछ सो चला उड़ाइ ॥ अंजावलोपुर पहुंचे जाइ ॥ अंजावली देखा हनुमाना ॥ जनम भुंमी माता असथाना ॥ जाइ द्वार ठाढ़ प्रभु भयेउः ॥ हनुमान तब भीतर गयेउः ॥

Subject—(१) आरन्यकांड—८६ पृष्ट।

(२) सुन्दरकांड—१३० पृष्ट

(३) उत्तरकांड—८४ पृष्ट

No. 432(*r*2). Rāmāyaṇa Uttara Kāṇḍa, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—150. Size—9 ×

4½ inches. Lines per page—8. Extent—862 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1837 Saṃvat or A.D. 1780. Place of deposit—Paṇḍitā Bhawānī Bakhsa, village Ulara, post office Musāfirakhānā, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—आदि के पृष्ट नष्ट हो गये हैं।

× × × ×

× × × ×

पृ० १४—यह संशय प्रभु देह चुकाई। आज्ञु सैानक सरहेहु गोसाई॥ दो०॥ भरत अनुज के वचन सुनि लीन्ह शुचि कर सांसु॥ विरह दया के घुम हिय उमगिनयन वह आंसु॥ सोरठा॥ तिमि पर पंचहि जोसु दुन कहेउ कछु वचन हठि सिय मनसा पिय सोऊ सो तुम्हो करनोय अव॥ ६१॥

End—छन्द—पक्ष तानि समय चुकानि गमन मख वानी भई॥ द्वापर परितोखे मुनि मन पाखे तव तुम कुवि भाद पलई॥ प्रभु मनु सेवा पुयिसु देवा गति पावन तव तोहि दई॥ सुसार महानम प्रभु जो आतम नियकर पारि प्रसंसकई॥ पुनिक मज्जन पाय निखंडन गमन जो वानी मख भई॥ फल चारि दाता अभिष्ट अघाना मज्जन सरजू पुन्यलई॥ कवि मुदित वधाया तुलसी गाया मन अति मोद अनन्द भरे॥ यह चरित यो गावहि हरिपद पावहि युगल लोक परलोक करै॥ दो०॥ तुलसीदास सतसंग कह यो चाहसि सुख लोक॥ रसना राम कहह निति यो यह चहसि विसोक॥ १८५॥ इति लवकुसो संपूर्ण संवत् १८३७॥ वोयई कायस्थ लिखित॥

Subject—लंका विजय के पश्चात् अवध आगमन होने पर श्री सीता जी का वनोवास होना, लवकुशजन्म, अश्वमेध यज्ञ। अश्व का लवकुश द्वारा बंधन, लवकुश और रामदल से युद्ध।

No. 432(s2). Uttara Kāṇḍa (Rāmāyaṇa), by Goswāmī Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—107. Size—10½ × 6½ inches. Lines per page—28. Extent—1,498 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1897 Saṃvat or A.D. 1840. Place of deposit—Śaṇkara Prasāda, post office Chāndapura, district Rāe Barelī.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ उत्तर काण्ड लिख्यते॥ श्लोक॥ केकी कंठाभनीलं सुरवर विलसद्विप्रपादाब्ज चिन्हं॥ शोभाढ्यं पीतवस्त्र

सरसिज नयनं सर्वेदा सुप्रसन्नं ॥ पाणौनाराच चापं कपि निकर युतं बंधुना सेव्य मानं ॥ नैामीड्यं जानकीशं रघुवर मनिशं पुष्पकारूढ़ रामं ॥ १ ॥ कैाशलेंद्र पद कंज मंजुलैाकोमलाब्जमहेस वंदितै ॥ जानकी कर सरोज ललितै चिन्तकस्य मनभृङ्गौ ॥ कुंद इंदु वर गैार सुन्दरं ॥ अंबिका पतिमभीष्ट सिद्धिदं ॥ कारुणीक कलकंज लोचनं नैामिशंकर मनंग मोचनं । दोहा ॥ रहा एक दिन अवधिकर ॥ अति आरत पुर लोग ॥ जहं तहं सोचहि नारि नर ॥ कृशतन राम वियोग ॥ दोहा ॥ शकुन होहि सुन्दर सकल ॥ मन प्रसन्न सबकेर ॥ प्रभु आगमन जनावजनु ॥ नगर रम्य चहुंफेर ॥ दोहा ॥ कैाशिल्यादि मातु सब ॥ मन अनंद अस होई । आये प्रभु सिय अनुज युत ॥ कहन चहत अबकोई ॥

End—सुंदर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो ॥ सो एक राम अकाम हित निर्वान पद सम आन को ॥ जाकी कृपा लवलेश तें मतिमंद तुलसी दास हूं ॥ पायो परम विश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूं ॥ दोहा ॥ मोसम दीन न दीन हित तुम समान रघुबीर ॥ अस विचारि रघुवंश मनि हरहु विषम भव-भीर ॥ दोहा ॥ कामहि नारि पियारि जिमि लोभहि प्रिय जिमि दाम ॥ ऐसे होइ के लागहु तुलसी के मन राम ॥ इति श्री रामचरित मानसे सकल कलिकलुष ॥ विध्वंसने विमल वैराग्य सम्पादिनो नाम सप्त सोपान शुभ मस्तु सिद्धिरस्तु अथ ॥ उत्तरकांड समाप्तं अक्षर मोतोन पति मिलाय के सोधि के लीषा ॥ दसषत लोकनाथ गुरु शिवबकस दास कायस्थ कै पुत्र ॥ माचिनगर ॥ श्री शुभ संमत १८९७ भाद्र शुक्ल ३ ।

No. 432(*f*2). Sākhī Goswāmī Tulasī Dāsa kī, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—126. Size —9 × 5 inches. Lines per page—8. Extent—630 Anushṭup slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1868 Samvat or A. D. 1811. Place of deposit—Paṇḍitā Govinda Rāmaji, Purwa Gajādhara Tewarī, village Amahat, district Sultānpura.

Beginning—श्री गनेसायनमः ॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ राम सीता अथ मन को परिकर्न लिख्यते साषी गोसांई तुलसीदास जी की ॥ दोहा ॥ तुलसी मन पूरबहि सानि सिवासर ध्यावै ॥ पछिम दिसि पावै नहीं कैसे थिति पावै ॥ १ ॥ पछिम बसै जु प्रान पति हरन अनंत भवत्रास ॥ तुलसी ताहि बिसारि मन पूरब करै प्रकास ॥ २ ॥ बिन नैना बिन नासिका बिन स्रवनो चलि जाय ॥ बिन तुलसी रसना लुबुधि सकल स्वाद रस षाय ॥

End—यह देपै वांवु समजोइ ॥ वीवे वसे ज्यों भुवंगा जोइ ॥ तुलसी विना भगति निहिकाम ॥ तहा न राचै येकौ जाम ॥ १७ ॥ सदा उदासी नाही नेह ॥ कहा ग्रेह कहा दिव्य देह ॥ तुलसी राम भजि रहै सो न्यारा ॥ त्यागै कोकट प्रपंच पसारा ॥ १८ ॥ तुलसी वैसा सती जव होइ जनी जनन का संगी सोइ ॥ मनुवा चाहि हुँ असवार पहुंचे वेगि मोक्षि दरवार ॥१९॥ इति श्री सती जनको परिकरण संपूरन ॥ मिति पुस सुदि ॥ ४ ॥ संवत् १८६८ ।

Subject—(१) पृ० १—२८ तक १३० छन्दों में—मनका प्रकरण ।
(२) पृ० २९—४४ तक—७३ छन्दों में—योगका प्रकरण ।
(३) पृ० ४५—५२ तक—३७ छंदों में—साखी प्रकरण ।
(४) पृ० ५३—७२ तक—१०३ छन्दों में—गुरु प्रकरण ।
(५) पृ० ७३—८८ तक—७६ छन्दों में—सुमिरण प्रकरण ।
(६) पृ० ७७—९० तक—१३ छन्दों में—ज्ञान प्रकरण ।
(७) पृ० ९१—१०३ तक—६१ छन्दों में—परचैा प्रकरण ।
(८) पृ० १०४—११३ तक—५३ छन्दों में—चेतावनी प्रकरण ।
(९) पृ० ११४—१२१ तक—३७ छन्दों में—सत्संग प्रकरण ।
(१०) पृ० १२२—१२६ तक—१९ छन्दों में—सतीजन प्रकरण ।

No. 432(u2). Saptāka, by Tulsasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—48. Size—7 × 5½ inches. Lines per page—14. Extent—504 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍitā Raghunandana Prasādajī, village Tilawaya, post office Suratganja, district Bārābaṇkī (Oudh).

Beginning—अथ तृतीय सतक ॥ भूप भवन भाइन्ह सहित रघुवर बाल विनोद ॥ सुमिरत सब कल्यान जग पग पग मंगल मोद ॥ १ ॥ करन वेध चूडा करन श्री रघुवीर उछाह ॥ समय सुफल कल्यान मय मंजुल मंगल गीत ॥ २ ॥ भरत शत्रुसूदन लषन सहित सुमिरु रघुनाथ ॥ करहु सुमिरि सुजस बड़ मिलहि सु मंगल साथ ॥ ३ ॥ मुनि मषपाल कृपाल प्रभु चरन कमल उर आनि ॥ तजहु सोच संकट मिटहि सत्य सगुन सव जानि ॥४ ॥ राम लषन कौसिक सहित सुमिरु करहु पयान ॥ लच्छि लाभ जय जगत जसु मंगल सगुन प्रमान ॥ ५ ॥ हानि मोचु दारिद दुरित आदि अंत गत वीच ॥ राम विमुष षल आपने गयो निसाचर नीच ॥ ६ ॥ सिला शाप मोचन चरन सुमिरहु तुलसी दास ॥ तजहु सोच संकट मिटहि पूजहि मन की आस ॥ ७ ॥ इति तृतीय सतक समाप्त ॥

End—सुधा सिन्धु सुर तरु सुमन सुफल सुहावन बात ॥ तुलसी सीतापति भक्ति सगुन सुमंगल तात ॥ १ ॥ सिद्ध समागम संपदा सदन सरीस सुवास ॥ सीतानाथ प्रसाद सुभ सगुन सुमंगल वास ॥ २ ॥ कौशिल्या कल्यान मय सुमिरि बार तप नाम ॥ सगुन सुमंगल काज कियाकरी भसि राम ॥ ३ ॥ सुवन लषन रिपु सुदन पावहि पति पद प्रेम ॥ सुमिरि सुमित्रा नाम जग जोति भलेहि सुनाम

× × × × ×

राम वाम दिस जानुकी लषण दाहिनी वोर ॥ ध्यान सकल कल्यान मय तुलसी सुरतरु तोर ॥ ७ ॥

Subject—(१) पृ० १ नष्ट । पृ० २—८ तक—प्रथम सर्ग । प्रथम सप्तक और द्वितीय सप्तक नष्ट । तीसरा सप्तक—राजा दशरथ का शिकार को जाना तथा उनको शाप लगना, पुत्र यज्ञ तथा राम जन्म । चौथा सप्तक—कर्णवेध चूड़ कर्मादि संस्कार, मुनि मख रक्षा, सिला शाप मोचन । पंचम सप्तक—सिया स्वयंवर तथा विवाह । षष्ट सप्तक—विवाह के पश्चात् अवध आगमन । सप्तम सप्तक—राजप्रासाद तथा नगर में प्रसन्नता ।

(२) पृ० ८—१५ तक—द्वितीय सर्ग । प्रथम सप्तक—राम वन गमन, द्वितीय सप्तक—अवध मे शोक तथा मार्ग निवासियों का दर्शनों से मुग्ध होना । तृतीय सप्तक—भरत शत्रुहन आगमन, राजा का दाह संस्कार, षष्ट सप्तक—मंदाकिनी पर निवास, सीता को वस्त्र प्राप्त होना । काक-कुचाल, विराध-वध, सरभंग देह त्याग तथा मुनियों से मिलन । सप्तम-सप्तक—राम पंचवटी निवास ।

(३) पृ० १६—२२ तक—तृतीय सर्ग । प्रथम सप्तक—दंडक वन निवास, सूर्पणखा कुकृत्य, खरदूषण वध, द्वितीय सप्तक-सूर्पणखा को रावण से शिकायत । तृतीय सप्तक—सीताहरण । चतुर्थ सप्तक पंचम सप्तक—सुग्रीव मिलाप तथा बालि वध । षष्ट तथा सप्तम सप्तक—सीता को हनुमान का मुद्रिका देना और उनकी सुधि लाना ।

(४) पृ० २३—३० तक—चतुर्थ सर्ग । राम जन्मादि तथा राम बाल केलि वर्णन—राजा का दान देना चारो भाइयों के नाम जपने के फल । मुनि मख रक्षा करने का वर्णन । धनुष भंग तथा विवाह ।

(५) पृ० ३१—३८ तक—पंचम सर्ग-राम नामादि के कुछ-शुभादि उत्पत्ति-फलों का वर्णन । सुरसा कपि संवाद, त्रिजटा स्वप्न, हनुमान का मुद्रा डालना, रावन का बाग विनाश । चारों भाइयों के स्मरण के पृथक पृथक फल । लंका दहन, हनुमान का राम के पास पहुंचना, युद्ध का वर्णन तथा कुछ कुफलों का वर्णन ।

(६) पृ० ३९—४५ तक—षष्ट सर्ग । राक्षसों का नष्ट होना, बन्दरों का जीवित करना, सीता को राम के पास लाना । सीता की अग्नि परीक्षा, राम का

जानकी को अनुराग दिखाना। राज्याभिषेक। सुरों का प्रसन्नता प्रकाश। विभीषण को राज्य देना। राम के दर्वाज़े पर मृतक बालक के ब्राह्मण पिता का आगमन, बालक का जीवित होना। रामराज्य का सुख। सीता को कलंक, सीता का परित्याग, राम का पछताना, वाल्मीकि आश्रम में लवकुश का जन्म।

(७) पृ० ४६—४८—सप्तम सर्ग। प्रथम तथा द्वि० स०-राम इत्यादि रामायण के पात्रों के स्मरण के फल। शेष पांच सप्तक लुप्त हो गये हैं।

No. 432(v2). Sata Pancha Chaupāī, by Tulasī Dāsa of Rājāpura. Substance—New paper. Leaves—10. Size—7 × 5 inches. Lines per page—12. Extent—105 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Place of deposit—Lālā Tulasī Rāma Nigama, Rāe Barelī.

Beginning—श्री जानकी वल्लभायनमः ॥ अथ सतपंच चौपाई लिख्यते ॥ संभू मनु सतिरूप दरस समे बालकांड दोहा। नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्याम। लाजै तन सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम ॥ चौपाई ॥ सरद मयंक बदन छवि सींवा, चारु कपोल चिबुक दर ग्रीवा। अधर अरुन सुंदर रद नासा, बिधुकर निकर विनिंदित हासा। नौ अम्बुज अंम्बक छवि नीके, चितवन ललित भावती जी के, भृकुटी मनोज चाप छवि हारी, तिलक ललाट पटल दुतिकारी, कुंडल मकर मकुट सिर भ्राजा, कुटिल केस जनु मधुप समाजा, उर श्रीवत्स रुचिर बनमाला, पदिक हार भूषन मनि जाला,

End—ललित कपोल मनोहर नासा सकल सुखद ससिकर सम हासा ९९
नीलकंज लोचन भौ मोचन भ्राजत भाल तिलक गोरोचन १००
बिकट भृकुटी सम श्रवन सोहाये कुंचित कच मेचक छवि छाये १०१
पीत झीन झंगुली तन सोही किलकनि चितवनि भावत मोही १०२
नृप रासि नृप अजिर बिहारी नाचत निज प्रतिबिम्ब निहारी १०३
मोसन करैं बिबिधि बिधि क्रीडा बरनत चरित होत मोहि वोडा १०४
किलकत मोहि धरन जब धावैं चलौं भागि तब पूप देखावैं १०५
दोहा ॥ आवत निकट हंसै प्रभु भाजत रुदन कराहि
जाहुं समीप गहन पद फिरि फिरि चितै पराहि
सतपंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरै
दारुन अविद्या पंच जनित विकार श्री रघुबर हरै इति
सतपंच चौपाई संपूरन सुभमस्तु श्री सीताराम श्रीराम श्रीराम।

Subject—श्री सीताराम की नख शिख वर्णन।

मुख शोभा वर्णन पृ० १—२ तक
कपोल ,,
चिबुक ,,
ग्रीवा ,,
अधर ,,
दंत ,,
नासा ,,
भृकुटी ,,
तिलक ,,
कुंडल ,,
केश ,,
उर ,,
कंधा ,,
बाहु ,,
कर भुज दंडा ,,
कटि ,,
पद ,,
नैन ,,
शोभा वर्णन ,,
शंभु मनु सतरूप समय
अथ जन्म समय—
राम लक्ष्मण को छवि वर्णन नख शिख—२—३ तक

जनकपुर देखने के समय राम लक्ष्मण को नख शिख को शोभा वर्णन पृ० ३–५। विवाह समय को शोभा वर्णन पृ० ५—६। तक कोहबर समय को शोभा पृ० ६—७। भरत मिलाप समय शोभा पृ० ७। शिव मिलाप समय को शोभा पृ० ७। विभीषण मिलाप समय पृ० ८। लंकाकांड कुंभकर्ण वचन उत्तरकांड भरत मिलाप समय पृ० ८—१० तक काकभुसुंडि दरस समय। शत पंच चौपाई पढ़ने से अविद्या और पंच विकारों से रहित होना।

No. 432(w2). Surajapurāna, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size—14 × 4 inches. Lines per page—16. Extent—170 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1875 Samvat or A.D. 1818. Place of deposit—Paṇḍita Rāma Autāra,

village Paṇḍitapurwā, post office Rasiyā, district Baharāich (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसूर्यायनमः अथ सूर्य कथा लिख्यते ॥ दोहा ॥ एक समय गिरिजा सहित संभु रहे कैलास। उपजी अति अनुराग हृद सूर्य कथा प्रगास ॥ दोहा ॥ आदि भवानी संकरहि पूछे प्रेम दिढ़ाइ। सूर्य प्रताप जो काज है सो मोहि कहो बुझाइ ॥ दोहा ॥ श्री सूर्य की महिमा संकरहि वर्णे लीन्ह। कोटिन विप्र जिवांइ के दान सो बरन के दीन्ह ॥ दो० ॥ प्रथमै सूर्य मनाइ कै सिवु कीन्ह प्रनाम। अरघ दीन्ह कर जोरि के वर्णन लाग्यो नाम ॥ चौ० ॥ श्री सूर्य देवता सुमिरौं तुम्हही। सुमिरत ग्यान बुद्धि दे मोही ॥ जोति स्वरूप आदित बलवाना। तेज प्रताप तुम्ह अग्नि समाना। तुम्ह आदित परमेश्वर स्वामी। अलष निरंजन अंतरजामी ॥ बरनि न जाइ जोति कर लीला धरम धुरंधर परम सुलीला ॥ जोतिकला चहुंओर विराजे जगमग कानन कुंडल छाजे। स्वेत बरन छवि तुरंग सवारी ग्यान निधान धर्म व्रतधारी ॥ परम पुनीत आदित अविनासी। अछै अजीत सब घट घट वासी ॥

End—दक्षिण दिसि है कासी प्रयागा तहवां बहइ सरस्वती गंगा। दो० ॥ दक्षिण दिसि पुनीति है सुनहु उमा मनलाइ। आगिल अर्थ जस होइ है तस मैं कहौ बुझाइ ॥ कलौ के बीते बीत सब जाई। मानुष का तन मानुष पाई। तब अवतार प्रभु लेहैं अकलंकी। मानुस तन होइहि जिमि पंकी। दक्षिण दिसि तब उदइहहि जाई ॥ अति हित कथा कहौं समुझाई ॥ धर्म कथा होइहि दिनराती। नेम धर्म करि है बहु भांती ॥ विप्र अघाइ पाप तब अइ हैं जिस दिन कथा सूर्य की गइ है ॥ दक्षिण दिसि रवि लेई निवासा। धर्म कथा तहं होइ प्रकासा। मिथ्या वचन कोउ नहि भषि हैं। जिस दिन टेक सूर्य पर रषि है। धर्म विचार सूर्य तब करि हैं। द्वादस कला जोति तहं उइ है ॥ दोहा ॥ द्वादस कला होइ उइहि रवि तहं आइ ॥ जन्म जन्म का पातक हत्या कहत सुनत सब जाइ। सोरठा ॥ उमासंभु के संपदा यह भषावै। सूर्य को पढ़े सुनै मन लावै। पावै पद निर्मान इति श्री सूर्यपुराण लिषितं बस्तीराम मिश्रस्य शुभं भूयात संवत १८७५ समै पौष १५ दिन भृगुवासरे ॥ राम राम राम राम राम।

Subject—सूर्य की कथा और उसकी महिमा मय उदाहरण यथा-सूर्य भगवान का व्रत करने से अंधे को नेत्र, कोढ़ी को सुन्दर काया, निर्धन को धन और बिना पुत्र वाले को पुत्र प्राप्ति होती है।

No. 432(x2). Surajapurāna, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves 22. Size—7 × 4½ inches. Lines per page—20. Extent—275 Anushṭup slokas. Appearance—

Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—1906 Samvat or A.D. 1899. Place of deposit—Hazāri Lāla, post office Rahua, district Rāe Bareli.

Beginning—चें श्रीगणेशायनमः ॥ चें श्री सुरज जी सहाये नमः श्री हनुमान जी सहाये नमः ॥ श्री सुरासती जी सहाये नमः श्री तेतीस कोटी देवता जी सहाये नमः ॥ श्री गुरु जी सहाये नमः ॥ श्री सुरज पुरान लोषते ॥ दोहा ॥ बंदों चरननि उर घरी भक्ति प्रेम लवलोन । महिमा अगम अपार है साहेब ग्यान प्रवोन ॥ बंदो चरन जोगी कर श्रीपती गौरी गनेस । तुलसीदास करो वरनो वरानौ कथा दिनेस ॥ चौपाई ॥ श्री सुरज देवता सुमिरौ तोही । सुमीरत ग्यान सुधी देह मोहो ॥ जोती सरुप आदीत बलवाना ॥ तेज प्रताप न अंगोनो समाना ॥ तुम आदोन प्रमेस्वर स्वामी ॥ अलष नीरंजन अंतरजामी ॥ वरनोन जाइ जोति कै लीला ॥ वरन सुरंग प्रम सोसोला ॥ जोतिकला चहुँबोर विराजै ॥ जगमग कानन कुंडल छाजै ॥ नील वरन छवी सुरंग असवारो ॥ ग्यान नीधान धरम व्रतधारो ॥ प्रेम पुनीत आदीत अवीनासी ॥ घजै अनादी सकल घटवासी ॥

End—अथवा पीपर वटतर गावै । व्रत करै रविनाम कहावै । रोग सकल तन के सब जाही ॥ तेज मान रवि प्रवेश कराही ॥ पुत्र पउत्र संपदा ते पावही ॥ सो विसय करी स्तुती अस गावहो ॥ दिन दिन भक्ती करै अधोकाई ॥ तेहि पर आदित रहहि सहाई ॥ सुर दुर्लभ जग विविधो भोग करी ॥ अंत अवस्था सुर मुनी तन धरी ॥ रोषी प्रवास ताही कर होई ॥ रवि के भक्ती जाने श्रो कोई ॥ दोहा ॥ येह ईतिहास पुनित अती ऊमहि कहा समुझाई । व्रत कीये नामहि लोये सो रोषी लोकहि जाई ॥ इति श्री पदुम पुराने ॥ श्री सुरज महातमे ॥ उमा महेस संवादे पुजा पाठ असथाने वरनै नाम दवादसमो अध्याव ॥ १२ ॥ इति श्री सुरज महातमे मेहा पुराने ॥ सुरजा व्रत वियान वरनो नाम ॥ दवादस ॥ मो अध्याये ॥ इति श्री सुरज पुरान संपुरन समत ॥ सुभ मस्तु ॥ रामा राम राम मदनहद लोषतं गंगादिन । तेवारि जो प्रति देष सो लिषा ॥ संवत १९०६ महोने कुआर सुकल पक्षा तीथी १ पंचोमी ॥ दिन सुकवर

No. 432(y2). Surajapurāṇa, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—52. Size 9 × 6 inches. Lines per page—8. Extent—25 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1907 Samvat or A.D. 1850. Place of deposit—Śrimati Mahantā Lakshaman Dāsī, Kuti Bābā Jhāmadāsaji, post office Kesaraganja, district Sultānpur.

No. 432(z2). Surajapurāna, by Tulasī Dāsa. Substance--Country-made paper. Leaves--25. Size--9 × 8 inches. Lines per page--28. Extent--270 Anushṭup ślokas. Appearance--Old. Character--Nāgarī. Date of manuscript--1925 Samvat or A.D. 1868. Place of deposit--Ṭhākura Rāmdaura, village Mithaurā, post office Kesarganja, district Baharāich (Oudh).

No. 432(a3). Tulasi Satsai, by Tulasī Dāsajī Goswāmī. Substance—Country-made paper. Leaves – 31. Size—14 × 6 inches. Lines per page—50. Extent—902 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1830 Samvat or A. D. 1779. Place of deposit—Rāma Śhaṇkara Bājpai, village Bahorī ka Bājpai kā Purawā, post office Sisaia, district Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ नमो नमो श्री राम प्रभु परमातम परधाम। जेहि सुमिरत सिध होत हैं तुलसी जनमन काम ॥ १ ॥ राम वाम दिसि जानकी लखन दाहिनी ओर। ध्यान सकल कल्यान का तुलसी सुर तरु तोर ॥ २ ॥ परम पुरुष परधाम वर जापर अपर न आन। तुलसी सा समुझत सुनत राम सोई निर्बान ॥ ३ ॥ सकल सुखद गुन जासु सो राम कामना हीन। सकल काम प्रद सर्व हित तुलसी कहहिं प्रवीन ॥ ४ ॥ जाके रोम रोम प्रति अमित अमित ब्रह्मन्ड। सो देषत तुलसी प्रगट अमल सु अचल प्रचंड ॥ ५ ॥ जगत जननि श्री जानकी जनक राम सुभ रुप। जासु कृपा आति अघ हरनि करनि विवेक अनूप ॥ ६ तात मातु पर जासु के तासु न लेस कलेस। ते तुलसी तजि जात किमि तजि घर बन परदेस ॥ ७ ॥ पिता विवेक निधान वर मातु दया ज्ञुत नेह। तासु सुवन किमि पाइ है अनत अटन तजि गेह ॥ ८ ॥ बुद्धि विमे गति हीन सिसु सुपथ कुपथ नत जान। जननि जनक तेहि किमि तजें तुलसी सरिस अजान ॥ ९ ॥ मात तात सिय राम रुप बुधि विवेक परमान। हरत अषिल अघ तरुन तर तव तुलसी कछु जान ॥ १० ॥ जिन ने उदभव वर विभवब्रह्मादिक संसार। सुगति तासु तिनकी कृपा तुलसी वदहि विचार ॥

End—पीत सगाई सकल विधि वनिज उपाय अनेक। कल बल छल कलि मल मलिन डहकत एकहि एक ॥ दंभ सहित कलि धर्म सब छल समेत व्योहार। स्वारथ सहित सनेह सब रुचि अनुहरत अचार ॥ चातु वेधो निरुपाधि वर सद गुरु लाभ सुमीत। दंभ दरस कलि काल मह पोथिन सुनय सुनीति ॥ फोरहि सूरख सिल सदन लागे अटुक पहार। कायर कूर कपूत कलि घर घर सरिस डहार ॥

जो अनदोस तै। पति भला ज्यों महोस तें भाग। जन्म जन्म तुलसी चाहत राम चरन अनुराग ॥ का भाषा का संस्कृत विभव चाहिये सांच। काम जो आवे कामरो काले करिय कमाच ॥ बरन विसद मुका सरिस पर्थ सुत्र सम तूल। सतसैइया जगवर विसद गुन सोभा सुख मूल ॥ वर माला वाला समति उर धारै जुत नेह। सुख सोभा सरसाय नित लहै राम पति गेह ॥ भूप कहहि लघु गुनिन कहं गुनी कहैं लघु भूप। महि गिरि गत दोऊ लखत निमि तुलसी स्व स्वरूप ॥ दोहा ॥ चारु विचार चलु परि हरि वाद विवाद। सुकृत सोम स्वारथ अवधि परमारथ मरजाद ॥ इति श्री मद्गोसाई तुलसी दास विरचितायां सत शति कायां राजनीति प्रस्ताव वरननो नाम सतमः सर्गः लिखतं कालिका प्रसाद कायस्थ संवत १८३६ गुंजोली मध्ये ॥ श्री राम श्री राम श्री राम

Subject—राम की महिमा संत लक्षण राज नीति आदि के ७०० दोहे।

No. 432(*b* 3). Dohāwalī " Tulsī Satsaī ", by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made old paper. Leaves—106. Size—10 × 5 inches. Lines per page—8. Extent—931 Anushṭup ślokas. Appearance—Very nice. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1893 Samvat or A. D. 1836. Place of deposit—Ṭhākura Vishwanātha Simha Tālukedāra, village Agesar, post office Tirsundī, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री गोसाई तुलसी दास जी कृत दोहावली सतसई लिख्यते ॥ गुर गनपति गिरजा रोवे ॥ गौरा कपोश महेस ॥ वंदि वरन दोहावली। कृपा करहु अज ईस ॥ १ ॥ भाइ सकल सद्गुन सुमतिः ॥ बैठहु उर आन ॥ करहु दया मति विमल हैः ॥ कहौं गुन गान ॥ २ ॥ तासु सुजस को कहि सकेः जेहि उर राम निवास ॥ तेहि हनुमंतहि नाई सीरः ॥ भाषा ललित प्रकास ॥ ३ ॥ संसकोर्त के अर्थ को तुलसी शक संजोग ॥ अम वारा भाषा बोना ॥ हरि हे न लाय भोग ॥ ४ ॥ का भाषा का संसकृत ॥ प्रेम चाहिये सांचः ॥ काम जो आये कामरो ॥ काले करै कू मांच ॥ ५ ॥ मंगल मनि मर्याद मनिः ॥ सकल धर्म मनि धीर ॥ लाल हयमनि भूप आनद मनि रघुवीर ॥ ६ ॥ × ×

End—तुलसी वोरही वापुरो अपने भवन मझार पंथ नोहारै राम की पल पल वारंवार ॥ ६९६ ॥ कब मिलि है। कब भेटि है। कब देखौं वोइ पार ॥ जिन पाइन्ह ते वोछुरे बहु दीन गए वोहाई ॥ ६९७ ॥ जीय मे जोकर लगि रहो नोस वासर नीत सोई ॥ राम मीलन के कारने रही पपीहा होई ॥ ६९८ ॥ ज्यों मछली जल कीं चहै चातक घन को प्यास ॥ त्यों बीर होरि दरस कौं तलपि तरसाई

॥ ६९९ ॥ क्तो नेह कागद होय हुतो लखा यन टांक ॥ पांच घगे उघ सो सुवस से हुंड कैसो पांक ॥ ७०० ॥ इति श्री राम दोहावलो सतसई ग्रन्थ समाप्त ॥ शंवत ॥ १८९३ ॥ माघा ॥

× × × × × ×

No. 432(*c* 3). Vinaya Patrika, by Goswāmi Tulasidās of Rājāpura. Substance—Old paper. Leaves—280. Size—8 × 6 inches. Lines per page—11. Extent—1,950 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Nāgari Prachārinī Sabhā, Kāsī.

Beginning—"""""म चरण रति ॥ तुलसीदास प्रभुहरो भेद मति ॥ ७ ॥ देव बड़े दाता बड़े शंकर बड़े भोरे। किये दूरि दुःख सबनि के जिन जिन कर जोरे। सेवा सुमिरण, पूजिबो पाता खता थारे। गाडं वसो वामदेव मैं कबहु न नहोरे ॥ पधि भैातिक वाधा भई ते किंकर हैं तेरे। वेगि विलोकन वरजिये करतूति कठोरे ॥ तुलसो दलि रूध्यो चहै सठ शाक महोरे ॥ ८ ॥

End—कहो बिन रहिना परत कहे राम रसना रटत ॥ तुम से सुसाहिब को वोट जाइ खोटो खरो कालको कर्म को हू सासति सहन ॥ विचार सार पैवत हू न कछू सकल बड़ाई सब कहो ते लहत ॥ नाथ की महिमा सुनि समुझि पपनो वोर हेरि हारि हृदय दहत । पघन सुलेवकन सुतोयन प्रभु पाप मा पापु तुहो साची तुलसो कहत ॥ मेरो ते। थारी है सुधरैगो बिगरैऊं वलि राम रावरे सो रहो रावरी चहत ॥ २६६ ॥

दीनवंधु दुरि किया दीन कों दूसरो शरण। पापको भलो है सब पापनो कैा कोऊ—

Subject—इस ग्रंथ में राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सीता, हनुमान, शिव, पार्वती, शारद, पादि देवगणों की पाप मोचनार्थ पार रक्षार्थ स्तुति प्रार्थना की गयी है। यह ग्रंथ छप चुका है।

No. 432(*d* 3). Vistāra Rāmāyaṇ (Bāla Kāṇḍa), by Tulasīdāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—197. Size—8 × 6 inches. Lines per page—48. Extent—7,056 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1925 Saṃvat or A. D. 1868. Place of deposit—Viśwanātha Library, Maheśwara Siṃhaji, Rais, village Dikawliyā, post office Biswāṇ, district Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेसायनमः अथ बालकांड लिष्यते। श्लोक॥ वरणानामर्थ संघानां छंदसामपि मंगलानांच कर्तारौ वंदे बाणी विनयकौ॥ भवानी संकरौ वंदे श्रद्धा बिश्वासरुपिणौ याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः स्थोश्वरम्॥ वंदे बोधमयं नित्यं गुरुं संकर रुपिणं यमा श्रितोहि वक्रोपि चंद्रः सर्वत्र वंदिते सीता राम गुणग्राम पुन्यारन्य बिहारिणौ॥ उद्भव थिति संहार कारिणी क्लेस हारिणी॥ सर्वस्रेय करी सीता नताहं रामवल्लभां॥ नाना पुराण निगमागम संमतं यद्रा-मायणे निगदितं क्वचिदन्यतोपि॥ स्वान्तःसुषाय तुलसी रघुनाथ गाथा भाषा निबंध मति मंजुल मातनोति॥ सोरठा॥ जेहि सुमिरत सिधिहोइ गननायक करि-बर बदन॥ करहु अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभगुन सदन। मूक होइ बाचालु पंगु चढ़ै गिरिवर गहन॥ जासु कृपा सुदयाल द्रवौ सकल कलिमल दहन॥ नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन॥ करहु सो मम उर धाम सदा क्षीरसागर सयन॥

End—वामदेव रघुकुल गुर ग्यानी। बहुरि गाधिसुत कथा बषानी॥ सुनि मुनि सुजस मनहि अनुराऊ। बरनत आपन पुन्य प्रभाऊ। बहुरे लोग रजायसु पाई। सुतन समेत नृपति गृह आई॥ जहं तहं राम सुजस सबगावा। सुजस पुनीत लोक तिहुछावा॥ आये राम ब्याहि घर जबते। बसै अनंद अवधपुर तबते॥ प्रभु बिवाह जसभयो उछाहू। सकहि न बरनि गिरा अहिराऊ॥ कविकुल जीवन पावन बानी। राम सिया जस मंगल षानी॥ तेहिते मैं कछु कहा बषानी। करन पुनीत हेत निजबानी॥ छंद॥ निज गिरा पावन करन कारन राम जस तुलसी कहा। रघुबीर चरित अपार बारिधि पार कवि कैसे लहा॥ उपबीत ब्याह उछाह मंगल सुनि सो सादर गावहीं॥ बैदेहि राम प्रसाद ते नर सर्वदा सुष पावहीं॥ सोरठा॥ सिय रघुबीर बिवाह जे सप्रेम गावहिं सुनहिं तिनकहं सदा उछाह मंगलायतन राम जस॥ इति श्री राम चरित्रे सकल कलि कलुष बिध्वंसने बिमल बैराग संपादिनो नाम प्रथमो सोपान समाप्त सुभंभूयात इति श्री मोहन लाल शुक्ल गोयनी अस्थान संवत १९२५ मार्ग मासे कृष्न पक्षे तिथौ एकादस्याम भौमबासरे॥

No. 434. Swarodaya, by Udaya Chanda Chaube of Agrā. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—7 × 5 inches. Lines per page—17. Extent—270 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance—Old and damaged. Character—Nāgari. Date of composition—1830 Samvat or A.D. 1773. Date of manuscript—1834 Samvat or A. D. 1777. Place of

deposit—Paṇḍit Badari Nāthaji Bhaṭṭa, Professor, Lucknow University, Lucknow.

Beginning—कहत हैं सुनि चित्त दै गिरिजा, सहो ॥ ८२ पहिले.........नके सात दिन सूझै न मोहैं जानि हो। पांच दिन.........हि लै नदो से तारिका रामा.........दिन तीन तना सांझ सूझै एक दिन रसना रहो ॥ यह काल चक्र विचार के सु.........ये शिवा सो मैं कहो ॥ ८३ यह परम.........म गुप्त मारग दियौ तोहि बताइ कै। चारौ पदारथ कौं प्रगट जो कल्प वृक्ष...आइकै ॥ यह सुनत गिरिजा पति मुदित ह्वै जोरि कर अस्तुति करो। प्रसान वि.........कै संभु के चरनन धरो ॥ ग्रंथ स्वरोदय कियौ मैं कछु संक्षेप बनाइ। सकल सुकवि विनती करौं लोजै तोहि अपनाइ ॥ ८५ (अप) नोहो यह जा (निकै).......यहै विचारि। भूलौ होउ जहां (तहां) लोजौ सुकवि सुधारि ॥ ८६

End—जेठे पीतंबर दास। बहु गुनन कीन्ह प्रकास ॥
सुत जासु नंद किसोर। गुन लसत जिनमें कोरि ॥ २०२
तिनके सुदृजह राइ। हरि भक्त सुद्ध सुभाइ ॥
मध जासु दौलत राय। जग में लसत अभिराम ॥
लघु खेमचंद विलास। पुनि नाम व र लाल ॥
गुन लसत जिनमें वृद्ध। यौ जगत मांझ प्रसिद्ध ॥
जाके सुद्रै सुत जान। छोटो बरग मांन मान ॥
जेठो उदै है चंद। जिन कियो है यह छंद ॥

संवत् १८३४ ज्येष्ट कृष्ण एकादसी ११ चन्द्र वासरे लिषी कृ राम ॥ मिश्र उदैचंद जी लिषावित ॥ परोपकारार्थम् ॥ श्री स्तुम श्री शुभम ॥ श्री ॥ इति

Subject—ग्रंथ बहुत ही अपूर्ण और दीमक का खाया हुआ है १८ पृष्ठ में केवल ३ पृष्ठ शेष हैं।

No.435(*a*). Rasa Chandrodaya, by Udai Nātha (Kavīndra). Substance—Country-made paper. Leaves—19. Size—10 × 6 inches. Lines per page—50. Extent—832 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of maunscript—1913 Samvat or A. D. 1856. Place of deposit—Paṇḍita Awadheṣaji Pāṇde, village Khambhariha Pandenkī, post office Barhapurā, district Baharāich (Oudh).

Beginning—अथ धीरा ज्येष्ठा को उदाहरण ॥ दोऊ एक ठौर जहां बैठी है ललमुखी प्यारो तहां आयो धीरताई तकि नेह को। नेह सरसाई निरखाई

न कुपाई और समताई सुलह की। कहुक ज्यों मेह को भनत कवींद्र रंग भेद हो मैं अंग द्युति एक रंग देषि परी दुहुन की॥ देह की पीरो सारो है कै लाल एक वहराई पहिराई लाल सारो लाल सारा आसा नेह की॥ अथ अधीरा ज्येष्ठा कनिष्टा॥ दोऊ सिर साजें राजें चित्रित मदन मध्य बाग को बनक जहां जोहै जोहै जाल सों॥ भनत कवीन्द्र तहां कामहू ते अभिराम पाये सरसाये स्याम सुषमा विशाल सों॥ लाल वारो बेंदी वाल वारो पलसेदे पट घूंघट के लागे ते उघटि परी भाल सों॥ आरसो संवारि कै निहारि देन लागो एक नेह लागो तो लगि लपटि लागो लाल सों॥ धोरा धधीरा॥ धीरज अधीरज को नीरज नयन दोऊ एक ठौर बैठी आयो तितही रंगीनो है॥ पंचमी बसन्त की है सुमन गुलाबो यह ईश पै चढायवे कह्यो अबहीं नबीनो है॥ भनत कवीन्द्र कंत ऐसो मत कीनो है जोरि अंक अंक सों मरोरि कुच प्यारे लाल तो लौं बाल दूजी को परि रस लीनो है॥

End—अथ साक्षादर्शन॥ यथा॥ केसरि को षोरि भाल गरे धरे गुंज माल लाल कर लकुट मुकुट सीस सोह्यो है॥ पीत पट फेंटा कठि पेंठा को को कसेरी जहां निकसे रो तहां ऐसो भांति मोह्यो है॥ भनत कवीन्द्र गेह आंगन सोहात है न देषे बिना आंगन में बोरै रंग टोह्यो है॥ काहू सो कहौं तो हौं मैं लोक मैं न लहौं वाहि टोना डारि सांवरे ढोटौना मन मोह्यो है॥ प्रीतम के पट मैं लिख्यो चित्र निहारि छको तिय मोद मढ़ाये॥ ता पल मैं पल लागत ही सपने सुष तो अपने पिय पाये। बाल के आनंद बाढ़त हो परतीत भई कछु लाल के पाये॥ यों एक बार सितासित मै बढ़ो जाति विहार बिचार के न्हाये॥ शरद मयंक यो कलंक भरो पिय बिन दरद करद समेत हिय हूलकै॥ सौति को सहेली आय पाय कै अकेली आय बिरह दवारो बारि देति फूंकि फूलि कै॥ सुष के समाज साज दुषदाई लेप राज तापै ताप ताय तन पतन अतूलि कै॥ ऐसो घोर भोर समय आयो नाह वीर तोर कै है कौन धीर धीरे भाव तेलो भूलि कै॥

इतो श्री कवि कुल कुमदानंद वर्धने श्री गोपीजन वल्लभ रहस्ये उदयनाथ (कवीन्द्र) विरचिते काव्य चन्द्रोदय समाप्तः

Subject—नायक नायका भेद और हाव भाव वर्णन।

No. 435(*b*). Rasa Chandrodaya, by Ravindra Udai Natha of Bānapura. Substance—Country-made paper. Lines—11. Size—9×6½ inches. Lines per page—18. Extent—225 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Navanihāla Simha Sengara, Kantha, Unāo.

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ दूलह कवि के पिता कविन्द कवि कालिदासात्मज कृतो रस चन्द्रोदय ॥ लिख्यते ॥ मंगलाचरन वानी को ॥ कवित्त ग्रंथ परिपूरन के तूरन विघनहार मुकता के चूरन जवाहिर जुवान के। परा अपरा के वैखरी मध्यमा के प्रतिमा के भेद संधो अनुबंधो कवितान के ॥ भनत कविंद दि प्रति नये नये कहैं न्यारे न्यारे पुनि होइ रस के विधान के। वानी के बरन जुग परेते चतुर मुख होत हैं चतुर मुख वानी के समान के ॥ १

End-अथ भावो भयान भाव संका संकेता अनुसयना लक्षन ॥ दोहा ॥ जाके थान अभाव को संका उर सरसाइ। सो अनुसयना दूसरो कहत सकल कविराइ ॥ ६७ ॥ कवित्त ॥ वीच करि वल्लि को मालती की मल्लिका को एला को लवंग को अनेक न्यारी न्यारो है। चंपक को चन्दन को मौलसिरी वृंदन को वलित लतानि सों मिलित साथ सारो है ॥ भनत कविंद मति पेद करें मृग नैनी तेरे हेत लोनी हम पवरि पगारो है। यह यहां गुलवारी सुन्दर सुमन वारी तेरे सासुरे में सुनो कैधौ फुलवारी है ॥ ६८ ॥

No. 436. Sagun Vilāsa, by Udai Nātha of (Naimishāra) Sitāpura. Substance—Country-made paper. Leaves—13. Size—6 × 4 inches. Lines per page—26. Extent—270 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition—1841 Saṁvat or A. D. 1884. Date of manuscript—Samvat 1924 or A. D. 1867. Place of deposit—Ṭhakura Rāma Simha, village Raghunāthapura, post office Biswāṉ, district Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सगुनावली लिख्यते ॥ चौ० ॥ गुर पद सुमिरौं दोउ कर जोरी। देव बुद्धि मैं करौं निहोरी ॥ दो० ॥ जगत जननि गिरजहि सुमिरि बार बार सिर नाइ। राघहु प्रन जन जानिकै जेहितें संसय जाइ ॥ सिद्धि सदन गणपति चरन जो ध्यावै मन नाइ। फल चारिउ नर लहै सो अपदा कोटि नसाइ ॥ अमल सरोरुह गुरु चरन ध्याइय सब तजि काम। राम दाहिने होहि जेहि नित प्रति हित जेहि नाम ॥ नौमो हरहि करौ सिर नाई मंगल रूप सुमंगल दाई ॥ करहु सिद्धि शिव सगुन विलासा निज जन जानि पुरवहु ममआसा ॥ पुनि सुमिरौं मै हरि सिर नाई ॥ कस पावन सेत सुषदाई। मति लघ अलप बरनि नहि जाई। हर सारद नारद नहि पाइ ॥ फन सहस्र जानहि नहि भेवा। भामत प्रभाव संत गुन देवा। द्रोपदी आरत वेत पुकारी। वसन बाढ़ि प्रभु तुरत उबारी ॥

End—राहु बलो जाइ सरस खाई प्रतिकूल। ठोग करै पुनि नीक है वाम अंग मों सूल ॥ केतु कला चंचल बसै तुव मन अस्थिर नाहि पूरहि वेद मालिक सरस केहि विधि संसै जाहि ॥ जोगिन बल बड़देव है भू बल बलहि समान। जतन करहु रचि सुभट सब सुनु पच्छक दै कान ॥ नगन काल के मुखहि मों पच्छक रचना साजु। वेद विचारि होम करु तब तब पूरन काजु सिद्धि सयाने समुझि ले बाता घायल तोर होइ पराजय रिपु सयन छूटि जाय एक वोर ॥ विश्नु ध्यान जेहि करहि नर जे कारज हित होइ। उदयनाथ हरि भक्ति बिन सुख नहि पावै कोइ ॥ इति श्री उदयनाथ विरिचितायां सगुन विलास समाप्त ॥ श्री संवत् १९२४ शाके १७८९ कातिक मासे कृष्ण पक्षे, तिथौ चतुर्थं यां गुरु वासरे लिष्यते इदं पुस्तकं बल्देव पंडित पैदापुर ग्रामे निवासितः राम राम राम "सगुन विलास पोथा लिषो सब सगुनन को सारु ताहि विचारिय परषिये सगुन असुन विस्तार ॥ सगुन असुन विस्तार जानि पोथो मैं लिजै जैसा निकसै हाल जानि पुनि तै सो किजै। कह पंडित सुविचार जानि मन मे निज कोथो। सगुनन को सब सार नाम सगुनन को पोथो ॥

Subject—इस पुस्तक मे कार्य के सिद्धि होने न होने के प्रश्नोत्तर है ॥

No. 437. Alif Nāma, by Bajhana Śāha, Bārābaṇkī. Substance—English paper. Leaves—7. Size—$8\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—20. Extent—85 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Persian. Place of deposit—Chetana Śāha Sāhiba, Awaliyāpur, post office Safdarganj, Bārābanki (Oudh).

Beginning—अलिफ़ एक बहुरंगी सांई। हर घट में वासी परछाई ॥ जहं देखो तहं रूप है न्यारा। ऐसा है बहुरंगी प्यारा। बुझन कहं तो क्या कहं कुछ नहीं कहने को बात। समुद समायों बुंद में अचिरज बड़ो दिखात ॥ बे बिनु गुरु कोइ भेद न पावे। वस्तो से प्रकास लौं धावे ॥ पहिले प्रीति गुरु से कीजे। प्रेम नगर में तब पद दीजे ॥ बिनु गुरु वजहन लेत है जो कोई बसन रंगाइ ॥ ये निज कर तुम जानियो दोउ खोट से जाइ ॥ ते तब जान तिरावनि पइहे। जब यह बैरिन दुबिधा जैहे ॥ यहो तो मन मैं कपट को हाटो। जिन सब खेल किया है माटो ॥ सामन के मन ही मे रहे। सीर ते तें का बंधं तार ॥ जुझहन माह अवहो मिले तनिक न लागे वार। से सावित है ध्यान जो लागे ॥ आपुहि आप भरम सब भागै ॥ अजप जाप तू जपरे भाइ ॥ छूटि जाहि दर्पन को काई ॥ जुझहन कहैं तूं जाप कर बैठि रहु ध्यान लगाइ ॥ सुरति निरति दोऊ रखौ बिरथा सांस न जाहि ॥ जीम

जुगत मैं श्रैार बतैहैा । जो तोहीं श्रकला करि ऐहैा ॥ श्रवहीं यह संगी नहिं छूटै दिन दिन डुपहर पड़ा लूटै ॥ कहने को तो पांच हैं हैं वह पूरे तीस । इनहीं कारन ना मिलै श्रवहो लैां जगदीस ॥ हे हदमर यह भूल है तेरो ॥ एको बात न माने मेरो ॥ श्रव तक तू ऐसा हो जाता ॥ जैसे कोइ मला मदमाता ॥ कहां गई वह बुधि तेरी कहां गया था चेत । ऐसो काया पाय के हरि सों किया न हेत ॥ खे श्राबिद का कहीं है न्यारा ॥ मूंदि देखि तैं दसहु दुश्रारा ॥ सुनि परिहै श्रनहद का बाजा ॥ परजा से होइ जैहो राजा ॥ सभी तार तन में बजें मन मैं मचे हैं राग । बुझहन जाको सुनि परैं वाके बड़े हैं भाग ॥ दाल दया जो मन मैं रावें । प्रेम का रस कैसे ना चाखें ॥ बिनु मधु पिये होइ मतवारा ॥ निस बासर तु करै नजारा ॥ बुझहन जगत मैं श्राइ के करिये ना तू मान ॥ दया धर्म नहि छांड़िये जब लग घट मां प्रान ॥ जाल जो फल जब लैा नहि पावै । कितनैा चहै कोइ मन भटकावै ॥ हिरदै लगि न प्रेम को गांसो ॥ कैसे कै मिलहि कहो श्रविनासी ॥ जब लैां तन नाहीं जरै श्रो मन नाहीं मरि जाइ ॥ बुझहन मूरति स्याम की तब लैां कहा दिखाइ ॥ रे रियाज़ मैं ऐसा बोला ॥ जैसन कुछ मंसूर श्रा बोला ॥ ना सब सुने रहे तू पोरा ॥ श्रानि परी मति लै गये चोरा ॥ लाज का काजर तैं श्रपने नैनन नहि डारे धोइ ॥ बुझहन कैहै कैसे भला दरस पिया का लेइ ॥ ज़े ज़र देख तु भूला रहिये ॥ सबही बेस श्रकारथ जैहे ॥ प्रेम बटी का मद पिउ चोखा ॥ मिटि जैहै मन का सब धोखा ॥ हो से श्या काहि श्राये हियां किया का श्राइ ॥ झूठी माया देखि के कै सो रैहे भुलाइ ॥ सोन सहज का सोख ले लटका । काहे फिरत है इत उत भटका ॥ सोचन कर श्रबही है सवेरा ॥ तिरकुटी कोट करि दे डेरा ।

End—फे फरमान तलब का ऐहै । का मुख लैकर वहां को जैहै ॥ वादिन का कछु सोच न कीने ॥ हरि का नाम कबहु नहि लीने ॥ श्रागे तो कबहू ना सुने सो श्रबहू कहत हैं टेर ॥ इक दिन फिर पछितइबा जो चिरियां चुनि हैं खेत ॥ काफ कैान तेरा है झूठा ॥ श्रैार ढंग से उड़े श्रनूठा ॥ सुनत रहे साधुन की बानी ॥ तिहू पै श्रबलैं मंत्र न ग्यानी ॥ जो मति का हीना भयो तो वाको कैान हवाल । श्रागे का सोचत नहीं श्रो पीछे को पछतात ॥ काफ़ करम उन बड़ा है कीना । मानुष जनम जो ऐसा दीना ॥ श्रापु छिपाना तोइ उघारा ॥ यो तो मन मे सोच गंवारा ॥ वाको बदला एक है जो मैं देहु बताइ ॥ हरि हेरा जो चाहिये पहिले श्रापु हिराइ ॥ लाम लोभ को छोड़ि दे बातें ॥ जो मैं कहैां सोख ले श्रातें ॥ ऐसा लागत पिया तु तेरा । जैसा चांद को चहत चकोरा ॥ जो तू प्रेम के रंग मैं तन मन लेत रंगाइ ॥ देखि तो पहिले जोर मैं लाभ किधर को जाइ ॥ मीम मुहब्बत चाहिये मन मैं । घर मे रहे चहै रहै

वन में ॥ गले पड़े जो प्रेम की फांसी ॥ कहां का मथुरा कहां को कासी ॥ जाके हिरदे भजन है बुल्हन प्रेम का बान ॥ छुट जाइ सब तन मों प्राइ जाइ सब ध्यान ॥ नून नहीं दूजा कोइ जग में। आपुहि आप रहत है सब में ॥ हित चित से सुनि ले वह बैना ॥ खुलि जैहें तोरे हिया के नैना ॥ बुल्हन कहे तू बुझि ले अबहीं है यह बूझ ॥ एक दिन याही बूझ से होइ जइहै सब सूझ ॥ वाउ वही इक यार है तेरा ॥ तिहि को गलिन किया नहि फेरा ॥ दुरजन थे सो मोत बनाए ॥ समझा नहि मोरे समझाये ॥ मैं तो कहौं चतुर है तू है बड़ा नदान ॥ कितनौं मैं समुझावत रहौं किहे न एको कान ॥ हे दादो ऐसा तू पाये। उनहु से न अपना नेह लगाये ॥ ऐही सोच है मोहे कारो। देखो कहां गति होइ तिहारो ॥ हिया के हारे हार है हियहि के जोते जोत। बुल्हन कहै तू मान ले करि साहब सों प्रोति॥ ये यारो हरि से सब करना। ये अक्षर हिरदे बिच धरना। बनत बनत बनि जैहे ऐसा ॥ कोई दिन मंसूर था जैसा।

बुल्हन अक्षर ऐसे कहे साधुन के हथियार।

बिरहा के मैदान में पांत के राखन हार ॥

(३) पृ० १ से पृ० ३ तक—ईश्वर के हर घट में रहने का वर्णन, गुरु महिमा, अजपा जाप का महत्व, ५ इन्द्रियां और उनके पंचीकरण हो कर पूरे ३० हो जाने के कारण ईश्वर भजन में विघ्न होने का वर्णन, उत्तम मानवी काया पाकर ईश्वर भजन न करने पर घृणा। ईश्वर का अपने ही में होने का वर्णन। दया की महत्ता। मान का खंडन। बिना मन मारे ईश्वर मिलने का कथन। पिय दर्शन का मार्ग। झूठी माया में भूलने का वर्णन। त्रिकुटी में ध्यान रखने का आदेश।

(४) पृ० ३ से पृ० ६ तक—संसार के माया में भूलने का वर्णन। साधु के लिये संतोष का उपदेश। किसी से न मांगने और आसन पर दृढ़ रहने का वर्णन। नबी का नाम लेने का उपदेश। अली का ध्यान रखने का वर्णन। घट के अन्दर अवस्थित हरनगर ॥ जाने का मार्ग। गुप्त और प्रकाश में उसी के प्रकाश का वर्णन। प्रेम नगर की गहरी नदी का वर्णन। पूज्य और पूजक का एका कथन। प्रेम मार्ग की कठिनाइयां दुःखा में साहब के नाम जोतने का उपदेश।

(५) पृ० ६ से पृ० ७ तक। मृत्यु के दिन का ध्यान रखने का ध्यान। अभ्यासी होने का उपदेश। ईश्वर के साथ कृतज्ञता प्रगट करने का उपदेश। लोभ परित्याग का वर्णन। घर वन कहीं रहे उसमें प्रेम रखने का उपदेश। अयोध्या काशी इत्यादि का ईश्वर प्रेम के सन्मुख तुच्छ दिखाना। 'एक वही' का उपदेश देकर भजन में प्रवृत्त होने का वर्णन। ईश्वर भक्ति से 'मंसूर' के सदृश होने का उपदेश।—ग्रन्थ की बड़ाई

No. 438. Mānasa Śankāwalī, by Bandana Pāṭhaka of Mirzāpura. Substance—Country-made paper. Leaves—30. Size—15×7 inches. Lines per page—28. Extent—1,339 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Written in prose and verse both. Character—Nāgarī. Date of composition—1906 Samvat or A.D. 1849. Date of manuscript—1951 Samvat or A.D. 1894. Place of deposit—Santan, village Aria, post office Pipari, district Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री जानकी बल्लभो विजयते ॥ मानस संकावली लिष्यते ॥ दोहा ॥ श्री सीता श्री राम पद पदुम बंदि त्रय भ्रात ॥ धाम नाम लीला ललित श्री हनुमत अवदात ॥ श्री गिरजा पति पुत्र के बंदैा पद अभिराम । तुलसी तुलसी दास पद करि कै विविध प्रनाम ॥ श्री रामानुज मत प्रबल धारक तारक जीव । तुलाराम श्री गुरु चरण बंदैा बकता सीव ॥ श्री सीतावल्लभ रसिक हरीदास प्रय भाव ॥ जुक सदा माल भगत बसत महल नत पाव ॥ श्री मद्राम गुलाम के सिष्य सो चोपई दास । तासु सिष्य बंदन नमत श्री मिरजापुर वास । शिव प्रसाद पाठक विमल तासुत बेनीराम । तासु पुत्र लक्ष्मण लसत तासुत बंदन नाम । श्री काशी पति ईश्वरी नारायण नृप राज । तेहि के शुभग सनेह ते प्रगट ग्रंथ द्विज-राज ॥ श्रीमानस संका सकल रही विश्व मैं छाइ । ताके उत्तर बोध हित ग्रंथो-द्भव सुष पाइ ॥

End—पुनः संका तीनि इतो सुक्ष्म तीन कांड मैं अरि एक बाल कांड मैं एक अरन्य मैं १ लंका मैं यामे का हेतु है ॥ उत्तर यह तीनि इतो अनेक रामायन मैं अनेक रीति से हैं ॥ ताते सिद्धार्थ सुच्छम इति ३ देके इन्हने भी उनका मत दिढ़ राष्यो श्रैार आपनो कांड कर्म तैा विलक्षण ही कियो सो तैा स्पष्ट ही ग्रंथ मे है तैाते ग्रंथकार को सर्व मत रक्षक दृष्टि श्रैार श्री गोसाईं तुलसी दास जी को अगाध आशय है श्रैार ग्रंथ श्री मद्राम चरित्र मानस भी अगाध है ॥ मै स्वमति अनुकूल कह्यो है समुझि लेनो सन्देह नहीं है । इति श्री मानस संकावली समाधान जुक्त श्री मानसी बंदन पाठक कृत समाप्त ॥ संवत् रस नभ अंक शशि ऋतु बसंत मधुमास । शुक्लपक्ष नैामी सुतिथि संकावली प्रकाश ॥ श्लोक ॥ संकावली सुभग मानस मान दात्री श्री रामचंद्र पद पंकज भक्ति गाम्या ॥ श्री विश्वनाथ परि तोष कृते सुरम्या व्यक्ती कृता विमल बंदन पाठकेन । वाराणसी संस्कृते कमुद्रा यन्त्रानिक जने मुद्रितोयं शिला शर्मणे मन्नालाल ने शर्मणाय श्री संवत् १९५१ आषाढ़ मासे कृष्ण पक्षे अमावस्यांम भैामवासरे लिषी समाप्ते संकावली । बाल कांड मे ३० ॥ अयोध्या मैं ॥ १० ॥ आरन्य मे ॥ ९ ॥ किष्किंधा मे ११ ॥

सुन्दर में ६ ॥ लंका में १७ ॥ सर्व कांड को समिष्ठो १०४ ॥ नाम चतुर्गुन पंच-युत दुगुनो बस करि लेपु । तुलसी या संसार में दुइ अक्षर करि लेपु ॥ सुत कलत्र धन धाम तन मानस जस उमयंध । रामचरण ये मान मैं नेह करत ज्ञे पंथ ॥

Subject—इस ग्रंथ में रामायण के सब कांडों को मुख्य शंकाओं को समाधान है अंत में निर्माण और लिपि संवत है ॥

No. 439. Lilāwati, by Bilochana Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—77. Size—$10\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—8. Extent—513 Anushṭup slokas. Appearance—Good. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1891 Samvat or A.D. 1834. Place of deposit.—Ṭhākura Viswa Nātha Siṃha Sāhiba, Talukédāra, village Agresar, post office Tirsandī, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ लीलावती लीष्यते ॥ दोहा ॥ विघ्न हरन सब सुष करन हरन सकल अघलेस ॥ सुष संपति दायक सदा सोढी नाम गनेस ॥ १ ॥ जुक्ति उक्ति मन मे बढ़ै स्वर सति रसना बैठि । सुरनर मुनि सुमिरन करत कहति हिये मे पैठि ॥ २ ॥ देहु बुद्धि कीजे कृपा गुन प्रताप है भूर । ताते बरनि कहौं कछु करि नामा दस्तूर । इहौं बरनौ गनपति कृपा सीष्य संबाद के अर्थ को लेषन को मरजाद ॥ ४ ॥ गुरु सों पूछो शिष्य ने धरि चरनन पर सीस । अब निहि साव अनेक बोधि मोहि कहौ जगदीस ॥ ५ ॥ है हिसाब दीरघ दुनो मोहि लगत है गूढ ॥ जो नर है संसार मे बीना गुरु सब मूढ ॥ ६ ॥ + × × ×

End—गुरु बाचा ॥ येक सर को येक कर दूजौ तिगुनौ लष तासु चौगुन करि तीसरौ चौगुनौ चौथ बीसठा ॥ १०३ ॥ बार बार मन के करै आगे पाछे देइ जेतिक नौवा होय तौतरौ तौल करेइ ॥ १०४ ॥ ऐसे लेषे बहुत है कहत बढ़त बिस्तार, ताते संछेपहि कहे चारो षंड बीचार ॥ १०५ ॥ इतने लेषे पाइ कै सुरजन चढ़ै सुजान । गुनवंतौ सो कहाइ है मजलिस बैठ नीदान ॥ १०७ ॥ इति श्री मति बिरचिते अथर्वन भेद बरननो नाम चतुर्थ षंड ॥ ४ ॥ संपुर्ण समाप्तं श्री संवत १८९१ मासानाम मासोत्तमे मे मासे कुआर मासे कोसुन पछे पंच पांग सनीवारे समाप्तं छ छं ०

Subject—

(१) पृ० १ से १२ तक, प्रथम षंड तौलषंडो-विधि वर्णन ।

(२) पृ० १३ से २७ तक, द्वितीय षंड-नाप विधी वर्णन ।

(३) पृ० २८ से ५६ तक, तृतीय षंड, गिन्ती वर्णन ।

(४) पृ० ५७ से पृ० ७७ तक, चतुर्थ षंड, अथर्वन षंड ।

No. 440(*a*). Bhaktāmar Charitra, by Vinodī Lāla of Śahjādapur. Substance—Country-made paper. Leaves—444. Size—10½ × 6½ inches. Lines per page—14. Extent—5,439 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition—1746 Samvat or A. D. 1689. Date of manuscript—1883 Samvat or A.D. 1826. Place of deposit—Jaina Mandira (Barā), Bārābaṇkī (Oudh).

Beginning—श्री वीतराग जी सहाय ॥ अथ भक्तामर चरित्र भाषा लिख्यते ॥

दोहरा—ओंकार पद सबिन्दु है बन्दौं मन वच काय ।
नमो नमो पुनरपि नमो वसु विधि सीस नवाय ॥ १ ॥
जामै गर्भित तीन पद महामंत्र नवकार ।
ताको प्रनऊं प्रथम हो मुक्ति भुक्ति दातार ॥ २ ॥
मुनि जन जाके ध्यान ते पावैं पद निर्वान ।
चोर अंजना नै जप्यौ लह्यो अमर पद थान ॥ ३ ॥
शिव दायक लायक सकल नायक जिन मत माहि ।
तीस पांच अक्षर विमल मुहि बिसरत है नाहि ॥ ४ ॥
भव-भंजन तारन तरन सिद्धि बधू उर माल ।
अब चौबीस जिनंद पद बंदौं नमृत भाल ॥ ५ ॥

चौपाई—श्री रिषदेश्वर जिन राज पाइ । बन्दौं मन वच क्रम सिर नाइ ॥
बन्दौं अजित नाथ दूसरे । अजित जोति भवसागर तरे ॥ ६ ॥
बन्दौं संभव नाथ जिनंद । भव दुख हरन करन सुखकंद ॥
अभिनंदन बन्दौं जिन राय । आनन्द चन्द परम सुखदाय ॥
सुमति नाथ सुमति दातार । बन्दौं कुमति कुगति हर मार ॥ ७ ॥
बन्दौं पद्म प्रभु जिन तोहि । पद्मासन बैठे शिव मोहि ॥ ८ ॥

× × × × ×

End—कीनो कथा विचित्र बनाय । भक्तामर स्तवन गुन गाय ॥
श्री आदिनाथ की स्तुति गुनभरी । मान तुंग मुनिवर की करी ॥
ताको कथा संपूरन भई । भाषा बंद चौपई ठई ॥
दोहा छन्द अरिल्ल बनायो । कहु कुंडलिया सोरठा लायो ॥
संवत् सहस्र से सैताल । सावन सुदी दुतिया रविवार ॥

शुभ दिन कथा संपूरन करो । प्रथम जिनेन्द्र तनो गुन भरो ॥
जो यह पढ़ै सुनै चितलाय । सो नर सुख भुंजै सिव जाय ॥
जो मिथ्या तो निंदै कोय । अपने पल को पावै सोय ॥
जोरि कथा कवि दई असोस । षट दर्शन वृद्धै जगदीस ॥
श्री जिन बर तुम्हें होहु सहाव । आदि नाथ मंगल सुखदाय ॥

दोहरा—सकल कथा पूरन भई, बानी विमल विसाल ।
विश्व भूषन प्रति देखिके, रचो विनोदी लाल ॥
पढ़त सुनत आनंद बढ़ै, ज्यों दुतिया को चंद ।
पुन्य बढ़ै पातिग घटै, उपजै परम अनंद ॥
कही विनोदी लाल, सारद गुरु परतापतें ।
पूरन भई रसाल, अदभुत कथा सुहावनो ॥

इति श्री प्रथम जिनेन्द्र भूषणे श्री भक्तामर महाचरित्रे भाषा लाल विनोदी कृत चोपाई बंद संपूर्ण । संवत् १८८३ शुभ भुयात् ॥

Subject—(१) पृ० १ से पृ० ९ तक, वन्दनायें—जैन धर्मानुसार तीर्थंकरादि की स्तुतियां, कवि विनयोक्ति, कवितथा उसके समय के नृप का सूक्ष्म परिचयः—

(१) कौशल देश मध्य शुभथान । शाहिजादपुर नगर प्रधान ॥
गंगा तीर बसै शुभ ठौर । पटतर नहीं तासु पर और ॥
बसै महाजन बहु विधि लोग । अपने धर्म लोन संयोग ॥
श्रावक लोग बसैं जहं घने । जैन धर्म रत सत आपने ॥
चैत्यालय जिन बर के तीन । चित्र विचित्र रचित प्रवीन ॥
धर्म ध्यान सब विधि सो करै । जती बृती को अति आदरै ॥

(२) नौरंग साहि बली को राज । पातसाह सब हित सिरताज ॥
सुख निधान सक बंश नरेस । दिल्ली पति तप तेज दिनेस
अपने मत मैं सम्यक वंत । शील शिरोमणि निज तिय कंत
दोप दोप है जाको आन । रहै साह सब संका मान ॥
साहिजहां के वर फरजिन्द । दिन दिन तेज बढ़ै ज्यों चंद ॥
भयो चकत्ता ऊंस उदोत । सिंह बली बन जैसे होत ।

दो०—तप जप मंत्र तुरंग मन । ते त्यागो बुधिवान ॥
भुज बल साहस वेष बल । तखत लियो सुलतान ॥
छत्र धरयो सिर आपने, फेरी चहुंदिश आन ॥
आलम गीर महाबली, नौरंग शाहि सुजान ॥

(अरिल्ल) जाके राज सुचैन सकल हम पायो। ईति भीति नहीं होइ
सुजिन गुन गायो ॥

लाल विनोदी नाम सारदावर दियो। निस दिन देय असीस साहि जुग
जुग जियो ॥

(सोरठा) सुखी प्रजा सब कोय, नैारंग सह के राज में।
जो कोई दुःखित होय, सो सब अपने कर्म तें ॥

(३) ते पुर लाल विनोदी रहै। जैनधर्म को चर्चा कहै ॥
अगरवाल जैनी शुभवंस। गर्ग गोत्र प्रगट्यो सर हंस ॥

ग्रन्थ निर्माण हेतु इत्यादि चतुष्टय वर्णन, कथा संबंध वर्णनः—प्रथमहि
मान तुंग मुनि भये। भक्तामर रचना करिगये ॥

× × × × ×

मूल संघ भट्टारक दक्ष। विश्व भुवन मुनिवर परतक्ष ॥
ताकी अद्भुत टीका करी। विगत कथा सब की विस्तरी ॥
श्लोक बद्ध तिन संस्कृत करी। कसै करि समुझैं नर नरी ॥
ताकी अब मैं भाषा करूं। पंडित लोग हंसन ते डरूं ॥

(२) पृ० १० से पृ० ८६ तक—प्रथम कथा।

उज्जैनी के राजा सिंधु सुजान का निपुत्री होकर खेद प्रकाशित करना,
मंत्री का सान्त्वना देना, राजा तथा उसकी रानी रत्नावली का वन में सैर को
जाना, वहां पर एक हाल के बालक का प्राप्त होना, राजा का मंत्री की सम्मति
से उस अज्ञात गर्भोत्पन्न को निज बालक प्रसिद्धि कर देना ग्रैार उसे अपने पुत्र ही
की भांति पालना, उसका विवाहादि करना, सिंधु की रानी को गर्भ-
स्थित होना, उससे सिंधुल का जन्म, सिंधुल का परिपोषण ग्रैार विवाहादि वर्णन
सिंधुल के दे। पुत्र शुभचन्द्र तथा भरत का उत्पन्न होना, राजा सिंधु का
मुनिव्रत धारण करना ग्रैार मुंज को राजनीति का उपदेश देकर गद्दी का
स्वामित्व प्रदान करना। एक दिन एक तेली के गाड़े हुए कुदाल को किसी
योधा का न उखाड़ सकना, सिंधुल द्वारा उसका उखाड़ा जाना, सिंधुल
का पुनः कुदाल गाड़ कर सिंहनाद करते हुए उसे उखाड़ने की ललकार
देना, किसी से न उखड़ सकना, राजकुमारों द्वारा उसका उखाड़ा जाना,
राजा मुंज का द्वेष करके उनके मारने की चेष्टा, मंत्री की सम्मति से राजकु-
मारों का राज्य से निकल कर विरक्त होना, शुभचन्द्र का मुनि होना। भर्तृहरि
की सिद्धियों में लिप्त होना, दानों का सम्मेलन, बड़े भाई का छोटे को उपदेश

मंजु का सिंधुल से भी द्वेषकरा के संधा कराना, मंजु का पश्चाताप, भोजोत्पत्ति, राज-काज वर्णन, मंजु का विरक्त होना, कालिदास की कथा, धनंजय वर्णन, ब्रह्मचर्य्यादि वर्णन, ब्रह्मचारियों के आचार विचार भोज राजा की सभा में मान तुंग जैन मुनि का आगमन, सभा में पंडितों द्वारा मुनि का मान-भंग, कालिदासादि पंडितों की हार, भोज का मुनि व्रत लेकर जैन-धर्म साधन करना।

(३) पृ० ८७ से पृ० ११४ तक—भक्तामर स्तवन माहात्म्य, कथा संबंध का ब्यौरा, जुगल काव्य का कथन फल वर्णन, एक सेठ होने की कथा।

(४) पृ० ११५ से पृ० १२४ तक—"ॐ नमो अनंतोहि जिणाणं" मंत्र संबंधी कथा।

(५) पृ० २५ से पृ० १३१ तक—"ॐ ह्रीं अर्हंनमो कुट्ठ बुधिणं" मंत्र संबंधी चौथी कथा।

(६) पृ० १३१ से पृ० १४० तक—त्वत्संस्तवेन—इत्यादि काव्य संबंधी कथा।

(७) पृ० १४१ से पृ० १४७ तक "ॐनमोपदानु सारीन" मंत्र संबंधी मंत्र के फल का उदाहरण द्वारा समझाया जाना, उसकी सिद्धि से एक नृपति की मनोवांछा पूर्ण होना॥

(८) पृ० १४८ से पृ० १५३ तक—आस्तां स्तवन की कथा।

(९) पृ० १५४ से पृ० १६० तक—नात्यद्भुते काव्य की कथा।

(१०) पृ० १६१ से पृ० १७० तक—"ॐ ह्रींनमो स्वयंबुधाणं" संबंधी कथा।

(११) पृ० १७१ से पृ० १७८ तक—'ॐ ह्रीं नमो पत्तेय बुधानं' संबंधी कथा गुणशेखर का उदाहरण।

(१२) पृ० १७९ से पृ० १८७ तक—'ॐ ह्रीं नमो बोहिय बुधाणं' मंत्र का महत्व प्रकाशन संबंधी कथा।

(१३) पृ० १८८ से पृ० १९४ तक—चित्रं किमि त्र दिते का वृत्तान्त कल्याणी रानी की कथा।

(१४) पृ० १९५ से २०६ तक—ॐ ह्रीं नमो चौदासपवीने की कथा।

(१५) पृ० २०७ से पृ० २१४ तक—"ॐ ह्रीं नमो अष्टानि मित्त महामित्त महा निमित्त कुमलोणं" की कथा फल सहित।

(१६) पृ० २१५ से पृ० २२४ तक—रति मद्र की कथा। उसके मूर्ख से पंडित होने का वर्णन

(१७) पृ० २२५ से २३४ तक—ॐ ह्रीं अरहनमो पत्थान ॥ ॐ ह्रीं नमो योत्रा हरीणं संबंधो कथा।

(१८) पृ० २३५—२४६ तक "ॐ ह्रीं नमो चारणो सो धरगो"—मंत्र संबंधो फल को संसिद्धि के हेत उदाहरण रूप विष्णु दास की कथा।

(१९) पृ० २४७ से पृ० २५४ तक। 'ओं ह्रीं अरहन मेव' मंत्र सम्बन्धो व्रत कथा फल वर्णन। श्रीधर का उदाहरण।

(२०) पृ० २५५ से पृ० २६२ तक—"ओं ह्रीं नमो जिनतवानं" इत्यादि मंत्र संबंधो महीचन्द्र को कथा।

(२१) पृ० २६३ से पृ० २७२ तक —"ओं ह्रीं नमो जिनत वानं" इत्यादि मंत्र संबन्धो कथा।

(२२) पृ० २७३ से पृ० २७९ तक— धन मित्र को कथा।

(२३) पृ० २८० से पृ० २८७ तक—ॐ ह्रीं नमो तत्र तवाणं महा मंत्र संबंधो कथा।

(२४) पृ० २८८ से पृ० २९४ तक—ॐ ह्रीं अई नमो महा तवानं ॥ मंत्र संबंधी कथा।

(२५) पृ० २९५ से पृ० ३०२ तक ॐ ह्रीं अई नमो घोर तमानं ॥ मंत्र संबंधी कथा। इस मंत्र द्वारा जय सेना रानो के व्याधि—हरण की कथा।

(२६) पृ० ३०३ से पृ० ३१० तक—ॐ ह्रीं अई नमो घोर गुणाणं इत्यादि मंत्र संबंधो कथा का वर्णन।

(२७) पृ० ३११ से पृ० ३१९ तक—ॐ ह्रीं अई नमो घोर गुनवंभ पारीनं मंत्र संबंधो कथा।

(२८) पृ० ३२० से पृ० ३२८ तक—ॐ ह्रीं अई नमो सोषादीं इत्यादि मंत्रो को कथा।

(२९) पृ० ३२९ से ३३७ तक—ॐ ह्रीं नमो विघो साई पत्ताणं मंत्र के महत्त्व संबंधो कथा।

(३०) पृ० ३३८ से पृ० ३४६ तक— ॐ ह्रीं सवोहि पत्ताणं संबंधो कथा।

(३१) पृ० ३४७ से पृ० ३५५ तक—ॐ ह्रीं नमो वचवल्लोने संबंधो कथा।

(३२) पृ० ३५६ से पृ० ३६४ तक—ॐ ह्रीं नमो वय वल्लोणं। महामंत्र संबंधो देवराज को कथा।

(३३) ॐ ह्रीं नमो वीर सयोणं मंत्र संबंधी, दावानल उपसम होने को कथा पृ० ३६५ से ३७२ तक।

(३४) पृ० ३७३ से पृ० ३८४ तक—एक सती की कहानी जिसने जैन धर्म संबंधी मंत्र बल के प्रभाव से संपूर्ण लोगों को अपने धर्म का परिचय दिला कर और पति को रोग मुक्त कर जैन धर्म की महत्ता दिखाई गई है।

(३५) पृ० ३८५ से पृ० ३९५ तक—ऊँ ह्रीं नमो सवि चीणं ऊँ ह्रीं मुभ्भरस वीणं नामक मंत्र संबंधी कहानी, गुन वर्मा का सुर पद पाना।

(३६) पृ० ३९६ से पृ० ४०० तक—ऊँ ह्रीं नमो अमिस वोणं मंत्र संबंधी कथा।

(३७) पृ० ४०१ से पृ० ४२४ तक—ऊँ ह्रीं नमो घाइमो न महा नाणं॥ मंत्र संबंधी हंसराज की कथा। राजा हंसराज की कलावती के साथ भोग विलासादि का वर्णन।

(३८) पृ० ४२५ से पृ० ४३४ तक—ऊँ ह्रीं नमो बड़ माने मंत्र संबंधी कथा।

(३९) पृ० ४३५ से पृ० ४४२ तक—ऊँ ह्रीं अ नमो सर्व सिधा इत्यादि मंत्रों से संबंध रखने वाली गाथाओं के वर्णनों द्वारा जैन सिद्धान्तों का पटल बनाकर मान तुंग कालिदास को पराजित करना, राजा भोज का रनवास सहित जैन धर्म की दीक्षा लेना। इस ग्रंथ के पठन पाठन का फल।

निज सम्राट वंश परिचयः—

औरंग साहि बली के राज। पायौ कवि जन परम समाज॥
× × × ×
बाढ़ो साहि चकत्ता वंश। तिमिर लंग सम प्रगटो हंस॥
× × × ×
तिनके तखत बखत परचंड। बबर शाहि भये परचंड
× × × ×
ता सुत साहि हमाऊं भयो। जिनके राज दुख सब गयो॥
तिनके साहि अकब्बर भये। नाम लेत दुख दारिद गये॥
× × × ×
तिनके जहांगीर जग जए। साहि सलेम नूरदी भये॥
हिन्दू पति प्रगटयो जगमांहि। ताकी उपमा दीजै काहि॥
तिनके साहि जहां सुलतान। भए तेज जिमि ऊगत भान॥
हठ कोपनो हठीलो साह। भयो किरान सांनि जगमांहि॥
तिनके तखत बखत के जोर। बैठो औरंग साहि मरोरि॥
× × × ×

आलम गोर कहावे सोय। जाहि कारन आलम को होय ॥
अपने जोर छत्र सिर धरो। एक छत राज विधाता करो ॥
× × × ×
जाके राज परम सुख पाय। करी कथा हम जिन गुन गाय ॥
(४०) पृ० ४४२ से ४४४ तक। कथा निर्माणादि विषयक कथन शाहि-
जादपुर सहर मझार। रहो सदा जिनके आधार ॥
काष्टा संघ आदि जिन सनो। माथुर गछ्छजागर घनो ॥
पुष्कर गुन गनमे सार। जैन धर्म को परम अगार
कुमार सेनो मुनि कीनो आय। प्रगटयो अब का धर्म सहाय ॥
वैश्य वंश मे उदित महा। जैन धर्म करुनालय लहा ॥
तापर ज्ञाति महा गंभीर। अगरवाल गुन आगरधीर ॥
गर्ग गोत्र उत्तम गुन सार। अष्टादस गोतनि सरदार ॥
× × × ×
मिथ्या मत को नासन हार। प्रगटयो कुल को परम श्रंगार
मंडल को परपोता भलो। पारस पोता को लघु चलो ॥
द्रगाही मल को सुत गुन धाम। लाल विनोदी मेरो नाम ॥
ग्रन्थ समाप्ति कालः—
संवत सत्रह से सेतांल। सावन सुदि द्वितीया रविवार ॥
शुभ दिन कथा संपूरन करी। प्रथम जिनेन्द्र तनी गुनभरी ॥
पठन पाठन का फल--ग्रन्थ समाप्ति।

No. 440(*b*). Vishnu Kumāra kī Kathā, by Vinodī Lāla. Substance—Country-made paper. Leaves—22. Size—12½ × 8 inches. Lines per page—22. Extent—635 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1955 Samvat or A.D. 1898. Place of deposit—Srī Jaina Mandira (Barā), Barābaṇkī (Oudh).

Beginning—ॐ नमः सिद्धेभ्य ॥ अथ विष्णु कुमार की कथा

वात्सल्य अंग धारक कथा लिख्यते ॥ (अरिल्ल छंद) ॥ प्रथमहि प्रथम जिनेन्द्र चरन। चित लाइये। पंच महाव्रत धरन सुताहि मनाइये ॥ प्रथम महामुनी भेष सुधर्म धुरंधरो प्रथम धरम परकासन प्रथम तीर्थंकरो ॥ १ ॥ (गीत छंद) गुरु चरन वंदा सुधर्म केरे कथा अनुपम विस्तरों ॥ २ ॥ प्रथम तीर्थंकर सुमिर मन सारदा हिरदे धरो ॥ उपसर्ग पायो सात से मुनि आनि

जिनहू नै वार को। तुम सुनो भवि जन एक चित दै कथा विष्णु कुमार को ॥ २ ॥ दोहा ॥ वंदों विष्णु कुमार मुनि मुनि उपसर्ग निवारि। वात्सल्य अंग को कथा सुनहु भाविक जन सार ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ अब यह जंबूदीप मझार। भरथ क्षेत्र सोभित सिंगार ॥ देस अवन्ती उत्तिम ठौर। तेहि समान देस नहिं ग्रैार ॥ ४ ॥ वहां नगर उज्जैन समान। अवनी विषै न दीसै आन ॥ वन उपवन रंजित चहुं ग्रोर का शोभा बनो तिहि ठौर ॥ ५ ॥

End—नाक कान मुख वृथा भरो। ताको सवन कियो उपचरो। पद्यु कज्जल अरु सुरस आहार। बहु विधि पुन्य उपावन सार ॥ ९८ ॥ तब देवन मिलि पूजैां पाई। विष्णु कुमार भूमि मैं आई ॥ विनती कीय अनूपम दिये। करि प्रनाम सुर निज पुर गये ॥ ९९ ॥ विष्णु कुमार गये निज धाम ॥ सबन सुरन को करि सनमान ॥ फेरि जाय दीक्षा आदरी। इहि सो मुनि अपनो तप करो ॥ २०० ॥ सावन सुदि पुन्यो तिथि तनौ। कथा विचित्र अनूपम बनौ ॥ वात्सल्य अंग कथा यह करो। कथा कोस सम जो कछु लहो ॥ २०१॥

× × × × × ×

इति श्री विष्णु कुमार मुनि कथा संपूर्ण ॥ चैत्र मासे शुक्ल पक्षे तिथो ३ भृगुवासरे संवत् १९५५ ॥

Subject—(१) पृ० १ से पृ० ११ तक—उज्जयनी के राजा सिवाराम के चारो मंत्रियों की धूर्तता से एक जैन मुनि का अविनय होना—जिसने कितने हो ब्राह्मणों को अपने जैन मत के प्रभाव से हरा दिया था। मुनि के तप से उन चारों का कीला जाना, राजा को यह सब ज्ञात होना ग्रैार उनके प्राण दंड की आज्ञा दिया जाना, मुनि का उनके प्राण बचाना ग्रैार राजा से किसी अन्य दंड की प्रार्थना करना, राजा द्वारा उन को देश निकाला दिया जाना।

(२) पृ० १२ से पृ० २२ तक—चारों ब्राह्मण मंत्रियों का निकल कर हस्तनागपुर के राजा पदुम के यहां पहुंचना ग्रैार एक विशेष ढंग से उसके शत्रु को उसकी शरण में लाने के उपलक्ष्य में सात दिन का राज्य पाना। वहां पर उन्हीं मुनिवर का (जिनसे इन लोगों का प्रथम विरोध था) पुनः यज्ञ द्वारा अवज्ञा न करना ग्रैार विष्णु कुमार की सहायता से कष्ट से मुक्त होना। विष्णुकुमार का वामन रूप धारण कर के वलि मंत्री को (उन चारों ब्राह्मणों में मुख्य) को छलना। मुनिके प्रभाव से प्रभावान्वित होकर उन चारों का श्रावक व्रत धारण करना। विष्णु कुमार का प्रस्थान। कथा फल वर्णन। ग्रंथकार का परिचयः—विष्णु कुमार मुनिंद को कीनो कथा रसाल। सुनैं भव्य मन भाव सों कहै विनोदी लाल ॥

No. 441. Satī Vilāsa Biranji (wife of Sāhabadinā) of Newādā (Benares). Substance—Country-made paper. Leaves—6. Size—10¼ × 6 inches. Lines per page—21. Extent—903 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of composition—1905 Samvat or A.D. 1848. Place of deposit—Śrīmān Bābū Bhagwān Bakhsha Siṃhaji, Rājā of Amethi, Rājā Amethi, district Sultāṇpur (Oudh).

Beginning——अथ सती विलास लिख्यते ॥

दोहा सब कर पालक जवन प्रभु प्रज अनीह निर्वान ॥ वन्दौं तिन के पद कमल जापर अपर न आन ॥ गनपति सेस महेस विधि चंद सूर द्विज व्यास ॥ संत सती सारद सिवा पुजवहु मन की आस ॥ × × × ×
जीव विन जस देह मलीन वो नीर विना सर सूषित वैसे ॥ ज्ञान विहीन जतो क्षिति मैं हरि भक्ति विना नरदेह अनैसे । चंद मलीन पियूष विना ब्रह्मज्ञान विना कुल ब्राह्मन कैसे ॥ नारि विरञ्चि विचारिक है पिय भक्ति विना तिय सोहत कैसे ॥ ३ ॥ × × × ×
सूर्यवंस में रघुभये रघुवंसो श्री राम ॥ ता सुत द्वे लवकुस भये क्षिपित पुरन काम ॥ क्षिपितवंस उदित भये पुर्गवंस महाराज । तिलक जुक्त सुभ साभिजे सत्य धर्म कर साज ॥ अमरसिंह तेहि वंस मैं रामचन्द्र कर दास ॥ जाग जतन जप तप किये पुत्र होइ की आस ॥ सेवत वंस गोपाल के तेहि सुत साहिब दीन । सो प्रभुतक विचारि के रहत ब्रह्म मो लीन ॥ अब मार्पा माईक अवस कासी सुभ अस्थान ॥ जाके दरसन हेत हित वेव करहिं प्रस्थान ॥ विमलवंस रघुवंस के वसै बघालिस होइ । ग्राम निवादा मैं विदित ममपितु सीतल सोइ ॥ चौ० ॥ जिले जवनपुर मै गडवारा ॥ दुर्गवंस तहं बसहिं बोदारा ॥ तहां ज्ञान अनुभव हम पाये ॥ सो कहि प्रगट ग्रन्थ मैं गाये ॥ वान सुन्य पर अंक मिलाई ॥ तापर चंद देहु पुनि ॥ अंक होति संवत विख्याता ॥ जाति लेव इहि विधि बुध वाता ॥ × ×
सावन सिति पुन्यौं जब पाई ॥ तब मेरे मन हुलसत भाई ॥ गाये धर्म पतिव्रत केरा ॥ जेहते कह सब धर्म बसेरा ॥ × × × × ×

End—दुर्ग वंस अवतंस मोहि पिय भक्ति बता येव ॥ यह छिन उपजेव ज्ञान कंत सेवा मन लायेव ॥ अनुभव आतम जगे सतोसत्त ध्रुव पद भाषो ॥ दिन पति कह कल्यान मम गौरो पति साषो ॥ षोडस वर्ष को उमरि मे किमि भाषो मैं भक्ति पिव । एहते अवसर जानिये येह कौनो कृत्त संभु त्रिय ॥ सवैया ॥ साेन

सतो पद्र वंदि सोहावनि पावनि जे पिय संग सिधाए। पारवती जुत दंपति के पद वंदौं कृपा करि होहु सहाय ॥ कोटि करो विनती रिषि नारिको कीरति जासु सिया वर गाये ॥ नारि विरञ्चिपि यज्ञे पेढ़ो पेढ़ ग्रंथ पढ़े नर वांछित पाये ॥

× × × ×

भादौं तिथि भगवान की तादिन ते दुइ ग्रवर ॥ सत विलास भाषा कियो सकल धर्म को टवर ॥ × × ×

इति।

Subject—(१) पृ० १—१८ तक—प्रथम विलासः तिय भक्ति, देश धर्म शास्त्र मत वर्णन। (२) पृ० १९—२८ तक—द्वितीय विलास ज्ञान समुद्र नास केत वर्णन। (३) पृ० २९—३८ तक—तृतीय विलास, उपपुराण मतसे पति पूजन विधान वर्णन। (४) पृ० ३८—५०तक चतुर्थ विलासः शास्त्र मतसे शब्द ब्रह्मज्ञान देश आदि का वर्णन। (५) पृ० ५१—६२ तक—पंचम विलासः गोपी उपदेश वर्णन। (६) पृ० ६२—७३ तक—षष्ट विलास विष्णु द्विय संवामें गृही धर्म वर्णन। (७) पृ० ७३—८६ तक—सप्तम विलासः गृही धर्म प्रताप वर्णन।

No. 442. Bāraha Kharī, y Viṣṇudāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—6. Size—9 × 6 inches. Lines per page—20. Extent—165 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition—1851 Samvat or A.D. 1794. Place of deposit—Paṇḍita Krishṇa Kumāra, post office Bahādurganja, Rāe Barelī.

Beginning—अथ विष्णुदास जी की बारह षरी लिष्यते ॥ दोहा ॥ पहले गणपति ध्याइये पीछे कीजे काज। विघन हरन मंगल करन राषत जनकी लाज ॥ गणपति को सिर नाइके करो कीरतन रंग। राम भजो मुष बावरे काटे जम के फंद ॥ संवत अट्ठारह से इकावना सावन सुदि तिथि दुज। विष्णुदास बारह षरी कही देवता बूझ ॥ कही देवता बूझि विस्व भर भगवत नाम उचारौ। अरतिस अच्छर बरनन कीन्हो हिर दे भयौ उजारौ ॥ गुरु कौ ध्यान धरौ मन माहो माया मई अपारा। विष्णुदास द्विज दसम बषाने सुनिके भये निस्तारा

End—जितनी जनकी उक्ति थी उतनी कही बनाइ। नाम कथा सागर बड़ा किस पर पैरो जाइ ॥ किस पर पैरो जाय समद दर कुकरी मकरी बनाई। गुरु कृपा लदा चरन सो बेड़ा पड़ा बनाई ॥ विष्णुदास उमर—को वासी जिन ये कीरति गाई। दंडौ राम गुरु को किरपा सो जग विचि सोभा पाई ॥ इति विष्णुदास की बारह षरी भई समाप्त ॥

Subject—पृ॰ १—गणपति स्तुति, निर्माण काल और गुरु महिमा वर्णन, वसुदेव देवकी विवाह तथा आकाशवाणी का होना। पृष्ट २—कंस का डर जाना और देवकी को दुख देना, वसुदेव का पुत्र देने की शपथ करना और देवकी को लेकर घर आना।

पृ॰ ३—संतान उत्पन्न होने पर कंस को दे देना, वसुदेव और देवकी का बंदी होना, कृष्ण जन्म, कृष्ण को नंद गृह ले जाना यमुना का बढ़ना, वसुदेव की उस समय की दशा का वर्णन पृ॰ ४—वसुदेव का लौट कर वापिस आना, कृष्ण का पालने में झूलना, पूतना वध, गौ चराने की लीला का वर्णन।

पृ॰ ५—काली दमन, गोपियों की उस समय की भयभीत दशा का वर्णन। कंस वध वर्णन।

पृ॰ ६—कृष्ण विनय के पद और ग्रन्थ समाप्ति।

No. 443. Durgā Śtaka, by Vishṇudutta Mahāpātra. Substance—Country-made paper. Leaves—50. Size—8 by 5 inches. Lines per page—10. Extent—360 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Place of deposit—Ṭhākura Mahābīra Simhajī Talukédāra, village and post office Kothara Kalāṅ, district Sultāṇpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ दुर्गा शतकम्॥ कवित्त ध्यान॥ हीरन के खंभा जगमगि रहे मंदिर में धूपन के बास आस पास बगरे रहैं॥ मोतिन की झालरैं झलकि रहीं चहुंओर बादलान तासु के वितान पसरे रहे॥ सब देव मंडल मुनीस सीस पानि जोरे विद्रुम के पलिका जरावन जरे रहैं॥ बैठी तहां देवी विष्णवा सिनी चरन आगे मुकुट दिनेसन के लटके परे रहे॥ १॥ पुनः॥ कनक को मन्दिर सिंहासन रुचिर तामें बैठो जगदंबा गान किन्नर करे रहैं॥ नाचे देवतान की बधूटी भूरि भाव भरी बाजत मृदंग ताल नौबति झरे रहे॥ संकर रमेस वंस चवर डोलावै दोउ छत्र लीन्हे कर मैं निसाकर खरे रहैं॥ आसन को जीवै पाक सासन हमेसे आसु आसन के नीचे पंकजासन परे रहे॥

× × × ×

End—अत धूप तोम व्योम धावत जलद जैसे चहुओर फैलत नगारे की घहर है॥ विपन के मंडल जपत सिद्ध मंत्र जामें घंटा की धनक जामें आठौ पहर है॥ रुचिर दुकानन में पावन विविध वस्तु उत्तर दिशा में पुन्य गंगा की लहर है। चहल पहल होत महल महल बीच राजत विचित्र जगदंबा की सहर है॥

तैहो सत सागर कमठ शेष नाग तैहों तहों मेक दिग्गज कुबेर मघवान हैं। तैहो नव कानन पवित्र सुप्तिवर तैहो तैहों पुरी ग्राम तोनो पावत प्रधान है॥ तैहो गुन तोरथ प्रयाग में त्रिवेनो तैहो तहों जप तप जोग संजम विधान है। तैहो भूमि पावक सलिल व्योम मारुत है तैहो देवो सूरज मयंक अनुमान है॥ इति श्री दुर्गाशतके पुण्य स्तोत्रे महापात्र विष्णुदत्त कृतौ वागादि वर्णनो नाम दशमं दशक॥ इति दुर्गा शतक सम्पूर्णम्॥

Subject—(१) पृ० १—६ तक—प्रथम दशक, ध्यानवर्णन, (२) पृ० ६—९ तक—द्वितीय दशक, प्रभाव वर्णन, (३) पृ० १०—१५ तक—तृतीय दशक—पद, मुख, ग्रीवा, कर, भृकुटी वर्णन। (४) पृ० १६—२० तक—चतुर्थ दशक—दया दृष्टि वर्णन (५) पृ० २०—२५ तक—पंचम दशक, महिमा वर्णन (६) पृ० २५-३० तक—षष्ट दशक—स्तुति वर्णन। (७) पृ० ३०—३४ तक—सप्तम दशक, घंटा त्रिशूल वर्णन। (८) पृ० ३४—३९ तक अष्टम दशक—खड्गादि वर्णन। (९) पृ० ३९—४५ तक—नवम दशक, मदिरादि वर्णन। (१०) पृ० ४५—५० तक—दशम दशक—वाटिकादि वर्णन।

Note—यह पुस्तक सन् १९०६ ई० में मिरजा पुर निवासी रामधनञ्जय द्विवेदी के नाम से प्रकाशित हो चुकी है।

No. 444. Bhakti Ratānāwalī (Tókā), by Parama Hans Vishnu Purījī. Substance—Countrymade paper. Leaves—100. Size—13×6 inches. Lines per page—22. Extent—2,300 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Bhagawandīnajī Miśra, Vaidya, Baharāich.

Beginning—दशमें श्री शुक वाक्य॥ श्री कृष्ण सर्वोत्किष्ट हैं॥ कैसे हैं विवरूप त विश्वरूप हैं॥ वालोक निवास जाकौ। अंतरात्मा तें वा भक्तन को निवास हैं जानिये॥ श्री कृष्ण भाव स्पष्ट कहिये हैं॥ श्री देवकी विषै है जन्म प्रसिद्धि जाकी॥ व रक में जन्म नहीं हैं॥ श्रेष्ट यादव है सभा सेवक रूप जाके॥ चारि भुजनतें वा भुज रूप अर्जुनादिक तें दुष्ट दैत्यादिक कौं वध करिकै॥ अधर्म को दूर करत हैं॥ ऐसे समर्थ को मेरो विघ्न वारन के तौ कहैं॥ कछु नहि है विलास चातुरी॥ लावण्यादिक विनाई सम्बन्ध मात्र तें॥ स्थावर जंगम जे वृन्दावन के वृक्ष लता तृण॥ पक्षि के दुख हारो हैं॥ प्रेमाधीन कहिए हैं सुन्दर हास्य की शोभा हैं जानिये॥ ऐसो जो मुष तातें गोपिकन के कामदेव कौं वृद्धि करत हैं॥ काम वृद्धि को हेतु श्री कृष्ण विषै काम हैं। सो परमानन्द दायक होइ॥

End—कर्त्ता ग्रंथन ग्रंथ जो अपनो कर्म ताको भगवान को समर्पत हैं। हे भगवान हे लक्ष्मीकांत ये चांचल्य विषे अथवा सकल को विषय अथवा परमार्थ के निरूपण विषे तुम मोको तत्पर करो ॥ तहां बुद्धि के विभव तुल्य जो मेरे यत्न तिन करि भगवान तुम भक्तन सहित प्रसन्न होहु ॥ अपने ग्रंथ विषे सकल संपति को योग्यता कहैं हैं॥ भक्ति है प्रयोजन जिनको ऐसे जे साधू तिनको आदर पठन चिंतव को आग्रह या ग्रंथ विषे आयहि ते होइगो ॥ अरु युक्ति के विचार विषे हैं स्वाभाव जिनको ऐसे भक्तिहीन अस शब्दिक तिनको तो आदर होइगो ॥ मेरे श्रम को देषिकै कैसा है श्रम नाना प्रकारन के श्लोक को सम्बन्ध ते एकत्र लिषत ऐसो हैं। जो कोई प अनन्य की कृति हैं ऐसो जानि के निंदा करत है तिनको मैं याचत हौं प मैं रिक्तति कौं बारं बार देषि कै पोछे दुखन कोंहौं जो भक्ति की महिमा जान पर निंदा की वासना रहेगी तौ दुखन देवै ॥ ये ग्रंथ बारंबार देषत भगवान भक्ति उपजेगी। तब पर निंदादि दुर्वासना कहां उपजै आदि।

Subject—पुस्तक प्राचीन है परन्तु इसमें आदि का एक और अंत का एक पृष्ट नहीं है जिससे संवत आदि का पता नहीं चलता शेष पुस्तक पूर्ण है। पृ० १—३१ तक श्री कृष्ण की भक्ति का वर्णन है इसमें नारद जी, सूत जी, विष्णुपुरी, शुकदेव जी, कपिल देव की माता व कपिल जी आदि व ध्रुव प्रह्लाद आदि की भक्ति का वर्णन किया है। पृ० ३२—५२ तक आकाशवाणी नारद प्रति। भगवान की भक्ति करना और विषय भोग को त्यागना आदि का वर्णन है ॥ पृ० ५३—६२ तक क्षुधा, तृष्णा, क्रोध, लोभ, मोह, आदि से भक्त को दूर रहना उचित है इसी पर व्याख्या की गई है ॥ पृ०—६३—७३ तक हरिकीर्तन में तत्पर रहना सब दुखों का छुड़ाना है क्योंकि श्री भगवान के पद से गंगाजी ने प्रगट होकर संसार के पापों को दूर किया आदि वर्णन है। पृ० ७४—८४ तक जरासंध वध आदि की कथा वर्णन है ॥ पृ० ८५—९० तक श्री भगवान सांसारिक किसी वस्तु की इच्छा नहीं करते और सब से दूर रहकर संसार का पालन करते और दुःख हरते श्री राम वानर रीछ आदि के साथ रहे और उनको भक्ति देख उनको अपनाया आदि वर्णन किया है ॥ पृ० ९१—१०० तक श्री कृष्ण भगवान की महिमा का वर्णन किया है भक्ति और शत्रुरूप से जो उनको ध्यावते हैं सो सब उनको प्राप्त करते हैं और स्मरण मात्र से कृतार्थ होते हैं इसी प्रकार नारद आदि के वाक्य वर्णन किये गये हैं। फिर ग्रंथकार ने अन्त में अपनी प्रार्थना श्री भगवान कृष्ण जी से की है।

No. 445(a). Ānanda Raghunandana Nātaka, by Visva Nātha Simha of Rewā. Substance—Country-made paper.

Leaves—67. Size—13 × 6½ inches. Lines per page—13. Extent—1,750 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Written in prose and verse. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhingā, Baharāich.

No. 445(*b*). Ananda Raghunandan Nātākā, by Maharaja Viśwanātha Simhaji of Rewā. Substance—Country-made paper. Leaves—172. Size—14 × 7 inches. Lines per page—11. Extent—2,247 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Written in prose and verse. Character—Nāgarī. Place of deposit—Lālā Sukhi Lālā Rāma Prasāda Kaserā, Bāzāra, Nawābganj, Bārābankī.

Beginning—श्रीगणेशायनमः॥ अथ आनन्द रघुनन्दनं नाम नाटक॥ छंद शिखा॥ महारण शरण शरण दश मुख मुख दलन दलि है॥ अकरन करन करन धनु शर प्रण उचरत रन चलि चलि है॥ सद मन सदय सद कर कर जनन जनन पर रति है॥ जस जग गनत गुण गण गण गणप अहिय पशुपति हैं॥१ मृद पदु पदम पदुम महियन मन अलि अलि रहि रमि रमि है॥ चल चल चलनि करति बरबस सुबय बचन अमि अमि है॥ अति मद मर्दन सर सर सत रस पति तन है॥ जय जय जपन विबुध बुध कुन कुन मम पति पति त्रिभुवन है॥

End—सूत्रधारः प्रबंधः॥ जय जय रघुनन्द करुणा कर है॥ ताड़का तनुभंजन खल दल गंजन है॥ पिनाक खंडन जन रंजन है॥ सीता विवाहन सुभाव माहन है॥ त्रैलोक्यै दार्यादि कुन भाजन है॥१॥ रे ई सनि रेरे सनि सानिन्ति परवय्य मगरे सामय्य मम्मय्यय्य थप मथनि थव पाथो दिग दिग थोपि गदि गदि गति कत कत कत कथं तक थं तक नंग नंग नंग नंग नंग नंग नंग नंग तगुत्र थैया॥१॥ श्री रघुनन्दनः॥ मागु मागु॥ सूत्र धारः॥ भजन॥ छूटै मन मलोनता सारो कामादिक मिटि जाहीं॥ होय विवेक नसै दुख सिगरे गहै आप ममवाहीं॥ अति निर्मल चित है प्रभुपद में लगी सहित द्रुग भावै। परम प्रेमरघुनाथ आप को विश्वनाथ अप पावै॥१॥ जौलौ कीरति चलै तिहारी तौ लौ चलै नाथ यह नाटक॥ सुनि सब होहिं सुखारो॥ जो यह करै लहै धन धामहु अंत सुगति तिहि होवै॥ विश्वनाथ को प्रगट रहियतन सुमन तिहारो जोवै॥१॥ श्री रघुनन्दन दनः तथा सूत्रधारः प्रणम्य सहर्ष निष्क्रान्तः॥ इति श्री मन्महाराजाधिराज बैघवेश श्री महाराज विश्वनाथ सिंह जूदेव कृत आनन्द रघुनन्द नाथ के सप्तमाङ्कः॥ समाप्तम्॥ गुरुदत्त लेषित संवत १९२६॥

Subject—(१) पृ० १—२ तक-नान्दी, सूत्रधार प्रवेश, मारिष से सूत्रधार के नाटक खेलने की आज्ञा और उसका निषेध, सूत्रधार का मारिष से गुप्त बातों का कथन करना, पारिपार्श्वक प्रवेश, उसको नट से नाटक खेलने की प्रार्थना, उसका निषेध पुनः पारिपार्श्वक का स्मरण दिलाना कि गुरुओं—तेरे ही कथन के अनुसार अभिवाणी का आशीर्वाद मिल चुका है कि तुझे एक अपूर्व नाटक मिलेगा—इति प्रस्तावना (२) पृ० २—३ तक—सूत्रधार को एक चीठी मिलना उसका उसे पढ़ना, उसी में कवि का परिचय इस प्रकारः—श्री जै सिंह भुवाल विधिपति सुत विसुनाथ सिंह जेहि नाऊ सो नाटक आनन्द रघुनन्द भाषा रचि है आउ प्रहाऊ ॥—इति निः क्रांतः ॥ शिष्य प्रवेश, नट का गुरु को देख कर उससे पूजन की तय्यारी के लिये कहना, गुरु शोभा वर्णन, गुरु प्रवेश, प्रणाम पश्चात् गुरु को चिट्ठी आने का उनसे कथन और अपना नाटक पढ़ने की इच्छा प्रगट करना, गुरु की स्वीकृति। नट का कथन कि आप के प्रसाद से मुझपर नाटक आगया।

(३) पृ० ४—७ तक—नेपथ्य में कोलाहल, गुरु का ईश्वरावतार होने का सन्देह, अपराजिता नाम नगरी को गुरु का जाना। विष्कम्भकः—महाराज का आगमन, सूत मागधादि का वन्दन पाठ, नट का नटी से पुरहुत तथा दैत्यों का युद्ध बता कर कच्चे सूत पर चढ़ के आकाश गमन, वहां से उसके अंगों का गिरना, नटी का सती होना, पुनः नटका आ जाना, लोगों का आश्चर्य चकित होना, नट का नटी को पुनः बुलाना और उसका महलों से निकलना। विदूषक का नटी से हास्य।

(४ पृ० २—१९ तक—नृत्य होना, महाराज का कौशिल्या के महलों में जाना, रानियों को उपदेश, कुमारों का महलों से दरबार में बुलाना, मंत्री से राजकुमारों के विवाह की बातचीत, गुरु आगमन, राजा का गुरु से कथन कि विश्वामित्र ऋषि आनेवाले हैं और यह भी सुना है कि वे दोनों राजकुमारों को मांगेंगे। गुरु का वहां कुमारों के भेजने का उपदेश ऋष्यागमन, कुमारों का मांगना, राजा का कुमारों को दे देना, मार्ग पूरा करके उस राक्षसी के वन में पहुंचना—जो ऋषि का मख भंग करती थी, धनुष बाण चढ़ाना, गुरु से शंका करना कि स्त्री को मारने से कुल को कलंक होगा ऋषि का कहना कि ऐसी पापिनियों (भृगु की स्त्री और मंथरा को) मुरारी और नमारि ने मार कर यश लिया है। बहुत से राक्षसों का वध।

(५) पृ० २०—३३ तक मुनि का सीलकेतु नृप की कन्या के स्वयंवर में राजकुमारों सहित जाना, सत्यकर तथा दिशाबिरका वादाविवाद दिक

शिर का आकाशवाणी श्रवण करके भाग जाना, धनुष टूटना जयमाल पहनना, महराज अपराजित के चिट्ठी आना, उनका गद्गद् होकर पढ़ना और महिला से अपने पुत्र का विवाह होना सुनकर बरात सजा कर आना।

(६) पृ० ३४—४५ तक नियमानुसार विवाह का होना, मंत्री का राजा से पुत्र की विदा की प्रार्थना इस हेतु कि हर धनु भंग सुन रेणुकेय आ रहे हैं। गौतम के शिष्य का आगमन, राजा से बंग भाषा में मुनि का संवाद पहुंचना, रेणुकेय का आगमन, उनके भूषणादि का वर्णन, रेणुकेय का क्रोध, डोल धराधर से वादाबाद, रेणुकेय का उनको अवतार समझ तपस्या को चला जाना, राजकुमारों का अपने नगर को आ जाना, माताओं का हर्ष—

इति प्रथमोऽङ्कः।

(७) पृ० ४५—५१ तक आदि कवि के शिष्य का क्षीरवती तथा कलिंद जा द्वारा सुना हुआ संवाद सुनाना कि 'राजा' का देवलोक हो गया, इस पर मुनि का हर्ष शोक प्रगट करना, राजकुमारों का आदि कवि के आश्रम पर आना, उनके ठहरने को स्थान बनाना। अपराजिता की कथा पूछना, मुनि का उनकी प्रसन्नता का कथन करना।

(८) पृ० ५२—५९ तक दहदह जगकारी का घर आना, डोल धराधर का बन प्रवेश सुन कर शोक, दासी की ठोक पीट, कुशला मिलाप, अपने और सफाई देना कि डोल धराधर के बन भेजे जाने में मेरा दोष नहीं है, दहदह जगकारी का डोल धराधर के पास चला जाना। काग का महिला को चोंच मारना, सींक के बाण द्वारा उसको एक आंख फोड़ देना, सेना देखकर विस्मय करना, बड़े भाई से कहना कि यदि आज्ञा हो तो अभी इन दोनों भाइयों को पकड़ लाऊं। सब का आगमन, पिता मरण सुन कर रोदन। गुरु का समझाना, उनको पादुका देकर विदा करना।

इति द्वितीयाङ्कः।

(९) पृ० ६०—६९ तक मैत्र वरुण का गुरु को सूचित करना कि डोल धराधर (तुम्हारे इष्ट देव) आवत हैं। डोल धराधर का आगमन मुनि का अर्घ्य पाद द्वारा सत्कार करना, उनको मराठी भाषा में पंचवटी पर निवास करना कथन, हितकारी से वार्तालाप। दहदह जगकारी की कथा सुनाना, (दीर्घनखी) एक स्त्री का आगमन विवाह प्रस्ताव दीर्घनखी के नाक कान भंग करना, राक्षस प्रवेशः, हितकारी राक्षस युद्ध राक्षस तथा अन्य राक्षसों का मारा जाना, मैत्रा वरुण का प्रवेश तथा वन्दना।

(१०) पृ० ७०—८१ तक दिशशिर का मंत्री से समर्थ कैलाशादि उठा लाने का वार्तालाप, दोर्वनखी का रोते हुए पहुंचना, सब कथा कहना, दिशशिर का सोच करना, मंत्री का उनकी स्त्री के हरण की सम्मति देना, डोल धराधर की महिजा ने मृग देखकर उसके मार लाने का कथन, उनका गमन, डोल धराधर २ का शब्द सुनकर महिजा द्वारा हितकारी का भेजा जाना, महिजा हरण, जटायु युद्ध, जटायु परम गति, डोल धराधर का महिजा के वियोग में व्यथित होना। अनुरागिनी मिलाप, सुगलकंठ आश्रम को गमन।

इति तृतीयाङ्क।

(११) पृ० ८२—९३ तक सुगलकंठ और उसके मंत्री चेतामल्ल से मिलाप, महिजा संदेश कथन, वासिव (सुगलकंठ का अग्रज) वध, भुजभूषण को युवराज पद, वासिव का सुख भोग, हितकारी का वर्षा व्यतीत होने और शरद ऋतु आ जाने पर खेद प्रगट करना कि, सुगलकंठ ने अभी तक महिजा मिलाप का कोई यत्न नहीं किया; सुगलकंठ का देश विदेशों को वानरों को भेजना; द्राविड़ देश की एक पर्वत की गुहा निवासिनी स्वयं प्रकाशिनी तपस्वी तथा एक गृद्ध द्वारा वानरों का समाचार हितकारी को ज्ञात होना; गृद्ध द्वारा बनाई हुई राक्षस पुरी को चेतामल्ल का पहुंचना। गृद्ध का आज्ञा लेकर चलना।

इति चतुर्थाङ्कः।

(१२) पृ० ९४—१०६ तक चेतामल्ल का राक्षसपुरी में पहुंचना महिजा का समाचार लेना वाटिका विनाश; दिशशिर के पुत्र नयन का मारा जाना, चेतामल्ल का पकड़ा जाना, राक्षसपुरी दहन, चेतामल्ल का सम्पूर्ण समाचार हितकारी को आकर सुनाना उनका दिया चूड़ामणि हितकारी को देना। राक्षसपुरी को ससैन्य गमन। दिशशिर के लघुभ्राता (भयानक) का दिशशिर से आ मिलना। हितकारी का भयानक से समुद्र पार करने को सम्मति लेना, समुद्र का स्वरूप धारण करके आना, सेतु बांधना, शिवलिंग स्थापन।

इति पंचमाङ्कः।

(१३) पृ० १०७—१५१ तक राक्षसपुरी में वानर दल की चढ़ाई से हाहाकार, दिशसिर के यहां भुजभूषण का पहुंच कर उसे समझाना, उसका क्रोध करना, पद रोपण, संवाद, भयानक द्वारा राक्षसपुरी के प्रत्येक द्वार पर कौन कौन राक्षस स्थित हैं इसकी सूचना हितकारी को देना। कौन योद्धा किससे लड़ा इसका वर्णन, डोल धराधर के शक्ति बाण लगना। चेतामल्ल का औषधि लाना और उद्धद्ध अयकारी का समाचार सुनाना। डोल धराधर का सचेत होना, पुनः युद्ध, घट कर्ण तथा घननाद योद्धाओं का विनाश,

दिशसिर का मरन, महिला-मिलाप, भयानक के। राज-तिलक, पर्वाघ मे दोहो दिन रह जाने का स्मरण कर प्रवध के। चलने का विचार, भयानक का एक विमान देकर सुकंठ चेतामल्ल प्रौर भुज भूषणादि सहित प्रवध को चलना। हितकारो का यह कह कर कि मुझे याज्ञवल्क्य के शिष्य के प्राश्रम में कुछ विलम्ब होगा सो तुम प्राकर दहदहकारो के। सूचित करो।

इति षष्टमोऽङ्कः।

(१४) पृ० १५२—१७२ तक हितकारो के न माने पर दहदहकारो का शोक, चेतामल्ल का उनके प्राने का समाचार सुनाना। हितकारो का प्रागमन होते हुए विमानादि के शब्दों को सुनकर प्रवधवासियों का प्राश्चर्यान्वित होना प्रौर मेघादि शब्द की उत्प्रेक्षा करना, चेतामल्ल का उन्हें समझाना, हितकारो तथा दहदह जयकारी का मिलाप, मैत्रावरुनि प्रागमन प्रौर उनका प्राशिर्वाद देकर विदा होना, प्रप्सराप्रों का नृत्य गान प्रौर उनका नाम नायक भेदानुसार करना, गैारांग नर्तकियों का प्रंगरेज़ो गान, फ़ारसो गान, पर्बी तथा तुर्कियों का गान, महदेशी वारवधुप्रों का गान, गानेवालो स्त्रियों के। विदा कर हितकारो ने सब भाइयों के। कार्य्य सपुर्द किया, स्वर्युनो ब्रह्म कुंडला सम्बाद, भरत वाक्य-नाटक समाप्त। इति सप्तमोऽङ्कः।

No. 446(*a*). Bhāva Panchāsikā, by Vrinda Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—32. Size—6 × 4½ inches. Lines per page—8. Extent—260 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of composition—1343 Samvat or A.D. 1686. Place of deposit—Paṇḍita Ramadevaji, village Baburigām, post office Dhanauli, district Bārābanki.

Beginning—प्रथ भावप्रकाश पंचाशिका लिख्यते।

दोहा—प्रद्भुत प्रमित प्रनन्त प्रति प्रगम प्रपार प्रनूप। व्यापक ह्रदय प्रहृदय मय जय जय ज्योति स्वरूप ॥१॥ कवि लोगन के भाव सुनि। कछुक भयो चितचाव। करो भाव पंचाशिका वृन्द सुकवि धरि भाव ॥२॥ भाव सहित शोभा लहै, पूजा जप तप मित्र। याते वृन्द विचारि कै, कौने भाव कवित्त ॥३॥ बाजत ताल मृदंग उपंग महाधुनि तीनहु लोक छई है। वृन्द कहै सुर किन्नर भूत पिशाच पढ़ें जस उक्ति नई है। नाचत गैारि के। हेत लिये सित कंठ हिये प्रनुराग मई है। चारिहु प्रोर चराचर ऊपर मेघ विना जल वृष्टि भई है ॥४॥

दोहा—हरि तोको पायन धरो, यह कछु और प्रसङ्ग।
हर हु मैं राखों सदा, सिर पर तोकों गङ्ग॥

End—चित उदास न कोमल हास उसास भरे मुख छीने रहे रत। छीन समीन के संगन बैठन देखिये दीन कहै न सुनैयत॥ वृन्द कहै यह भाव कहा अति निन्दित है विधि को अपने मत याको न रोग न पीको वियोग न योग कलेश को ऐसो दसकत १०८॥ दोहा—करिहैं दिन चारि मे पिय परदेस पयान। सुनत भई ऐसो दसा समुझहु भाव समान॥

प्रानपती के पयान समै अति काम डरी भरी हिय मे घन। क्यों जिय धीरज कों धरि है कहा करिहैं उपचार स गोजन॥ × × × ×। यों तकि शंक नईक भई उनि सौंपि दियो मन मोहन को मन॥ दोहा। तिय मन दोनों पीय कों जब हो कियो पयान। अब उर कहा जु मोहि कों समुझहु बुद्धि निधान॥१११॥ कोने कवित मंजुम बरावरि तामें ब्रवाहर भाव भरे हैं। स्वच्छ सुदेश सुलछन पेखि महा निरदोष खरे सुथरे हैं॥ ताके दुराव कों तालो दयो समुझे बुदिवान दुराव धरे हैं। वृन्द कहैं पुनि ताके प्रकाश कों कुंची समाये दोहा करे हैं॥११२॥

दोहा—विभाव पंचासिका वृन्द सुभाव विचारि।
भूल चूक कवि कुल सबै मोतै समुझि सुधारि॥

Subject—(१) पृ० १—३ तक—ज्योतिस्वरूप परमात्मा को वन्दना। भाव पंचासिका के निर्माण का कारण। ग्रंथ निर्माण कालः—सत्रह सै तैतालोस सुदि, फागुन मंगल वार। चौथि भाव पंचाशिका, प्रगटी अवनि उदार॥ शिव जी के नृत्य से विना बादल जल बरसने का कारण। गंगाजी की बंदना।

(२) पृ० ४—७ तक—मानन्द सम्मोहिता नायका वर्णन। मानिनो नायकान्तर्गत शिवजी के शिर पर गंगा को देखकर पारवती का मान करना। रूप गर्विता का वर्णन। कुम्भज मुनि का विरही जनों की वेदना न जानने का कारण। नर, सुर, असुर, पयोनिधि, शेष और समुद्र को कोसने वाली छत पर पड़ी विरहिणी नायिका का वर्णन और उसका इन लोगों को कोसने का कारण 'चंद्रमा' को जो विरहियों को अत्यन्त दुखदाई है—उत्पन्न करना। विरहिणी नायका का विरहावस्था में कोकिलों को कूजने, भ्रमरों को गुंजारने और चंद्रमा को, निरद्वन्दता के साथ आलोकित होने की आज्ञा देने का कारण।

(३) पृ० ८—११ तक—रोहिणी का अपने पति चन्द्रमा के पास से राजकुमार की मृगया के भय से भागने पर उसे न पहिचान कर परिरंभन में आपत्ति

करना। पिय के हिय को छोड़ कर पीठ से आलिंगन करने वाली नायिका का वर्णन सकारण। वियोगिनी नायिका का कोकिलों के साथ केवल इसलिये कूकना कि वह मेरे कलरव से लज्जित होकर चुप हो जांय और मुझे विरह वेदना न हो।

(४) पृ० १२—१६ तक—भूत सुरति संगोपना नायका का वर्णन। इस सवैया के उत्तर में दो दोहों द्वारा सत और असत पक्षों का निरूपण। अन्य सुरति दुःखिता नायिका का वर्णन इसके अंतर्गत कवि के वचन तथा नायिका के विषाद का वर्णन। विरहिणी नायका का सकल शीतोपचार परित्याग पश्चात भी शीत करकारी चन्द्रमा का सेवन करना और उसका कारण किसी प्रोषितपतिका नायिका का बिना पति के मिले ही उन्हें जाने को कहना इसका कारण यह कि जिससे हिय से लगते ही कहीं प्राण पखेरू न उड़ जायं।

(५) पृ० १७—२० तक—वचन विदग्धा नायिका का वर्णन। संयोगावस्था के सम्पूर्ण सुखों के तिलांजलि देने पर भी वियोगिनी नायिका के मलयानिल पान का कारण (भुजंगों के विषयुक्त वायु के सेवन से वियोगावस्था में शरीर त्याग का प्रयत्न)। न्याय का पक्ष लेते हुए सत्य का निर्वाह करने वाले मनुष्य का हरि के हिय की सकल संपति पाने के अधिकारी होने का वर्णन। पति आगम सगुन प्रदर्शनकारी काग को भोजन देते समय करवलय के गिर जाने की आशंका अथवा इस भय से कि वलय के शब्द से कहीं काग उड़ न जाय, भीतर चुपचाप भोजन रख देने वाली आगतपतिका नायिका का वर्णन। मुग्धा नायिका तथा शठनायक का सम्मिलित वर्णन। प्रोषित-पतिका नायिका का टीका निकालने का वर्णन।

(६) पृ० २०—२२ तक—अपनी प्रेयसी का पत्र पढ़कर नायक को विषाद तथा हर्ष एक साथ होने का कारण। स्वभाव से ही विशालाक्षी नायिका के कजरारे नेत्र होने के कारण उसका प्रीतम से मिलने के लिये काजल के न लगाने और हृदय में अंतर पड़ जाने की आशंका अथवा उर में मदन गति होने के कारण हार न पहिनने का वर्णन। हरि-ललना के स्वरूप पर उत्प्रेक्षा। प्यासे विरही का पानी की खोज में जाने पर तालाब सूखने पर जल और जलज के अभाव में उसको मोद होने का कारण, ऊख के जलने पर नायिका को सफलता पाने का वर्णन। आगतपतिका नायिका का वर्णन—चेरी का बधाई मांगना और नायिका का उसे गाली देकर मारकर निकाल देने का कारण। प्रीतम के अपराध से कोपित होने वाली नायिका का वर्णन। क्रियाचतुर नायिका तथा नायका का वर्णन। वचन चतुरता—सखी के वचन नायिका से—सखी के वचन कुचों पर किये हुए नखक्षतों का गोपन करना।

(७) पृ० २३—२५ तक—सौत स्वरूप प्रारंभो नायिका का पति को अपने में अनुरक्त देखकर प्रेम प्रकाशित करने का वर्णन। सुरति संगोपना नायिका का वर्णन। चन्द्रमा के प्रकाशित होने पर चकवाक के पृथक पृथक न होने का वर्णन। केलि मंदिर में रति समय मुखचंद्र के छिपाने के चातुर्य का कारण। प्रौढ़ा नायका का वर्णन। स्वयंदिता नायका का वर्णन वचन चतुर नायिका का वर्णन। एक दिन राम के मृगया से लौटते समय सीता को अहिल्या के तरने का स्मरण होने पर चरण छूने का वर्णन।

(८) पृ० ३०—३२ तक—दूती द्वारा अपने मुख को चन्द्रमा की उपमा दिया जाना सुनकर रोष प्रगट करने का वर्णन। सीता द्वारा राम को महीपति कहे जाने के निषेद का कारण। प्रीतम के पत्र में अहि, शिवादि का चित्र लिखकर भेजने का कारण, चित्र द्वारा पत्रो भेजकर चंदनादि मांगना। पिय गमन पर नायिका के शोक प्रकाशित न करने का कारण। भाव पंचाशिका का विषय।

No. 416(*b*). Vrinda Satasai, by Vrinda Kavi of Jodhapur Raja. Substance—Country-made paper. Leaves—40. Size —9½ × 6¼ inches. Lines per page—36. Extent—720 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of composition—1761 Samvat or A. D. 1704. Date of manuscript—1905 Samvat or A. D. 1848. Place of deposit—Ṭhākura Guruprasāda Simha, village Guthawa, Baharāich.

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ वृन्द सतसई लिख्यते ॥ दोहा—श्री गुरुनाथ प्रभावतें होत मनोरथ सिद्ध। घनतें ज्यों तरु बेलि दल फूल फलन की वृद्धि ॥ १ ॥ किये वृन्द प्रस्तार के दोहा सुगम बनाय। उक्ति अर्थ दृष्टान्त करि दृढ़ के दिये बताय ॥ २ ॥ भाव सरस समुझत सबै भले लगैं इहि भाय। जैसे अवसर को कही बानी सुनत सुहाय ॥ ३ ॥ नीको पै फीको लगै बिन अवसर की बात। जैसे बरनत युद्ध में रस शृंगार न सुहात ॥ ४ ॥ फीको पै नीको लगै कहिए समय विचार। सब को मन हरषित करै ज्यों विवाह में गारि ॥ ५ ॥

End—बड़ेन की सम्पति सकल लघु विलसंत दनन्त। दधिमल घन घन जल धरा धर जल जग विलसन्त ७०१ जेहि जेतो लिहिये तितो देत दई पहुंचाय। मक्कर सारे के मिले जैसे सक्कर भाय ॥ २ ॥ जिय सन्तोष विचारिये। रे होत सु लिख्यो नसोच। बल गुर कांच कथीर सों मानत रलो मरीच ॥ ३ ॥ जथा जोग सब मिलत हैं जो विधि लिख्यो अंकूर। बल गुर भोग गंवारनी रानी

पान कपूर ॥ ४ ॥ समैसार दोहानि को सुनत होय मन मोद । प्रगट भई यह सतसई भाषा वृन्द विनोद ॥ ७०५ ॥ इति श्री वृन्द सतसई संपूर्ण समाप्तम् ॥ संवत् १९०५ श्रावण कृष्ण षष्टम्यां ८ ॥ २ ॥

Subject.—नीति के फुटकर दोहे ७०५ हैं ।

No. 447. Pancha Kalyankapūjā, by Vrindābana of Kāsī. Substance—Country-made paper. Leaves—250. Size—$9\frac{1}{2} \times 4\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—9. Extent—1,970 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Śrī Jaina Mandira (Barā), Bārābanki (Oudh).

Beginning—श्रों नमः सिद्धेभ्यः ॥ श्रों नमो नेकांत वादिने जिनाय ॥ दोहा ॥ बन्दैां पांचों पदम गुरु सुर गुरु वंदत जास । विघ्नहरन मंगल करन पूरन परम प्रकाश ॥ चैाबोसैा जिनपति नैमा नमैा शारदा माय । शिव मग साधक साधु नमि रच्यो पाठ सुखादय ॥ जै जिनंद सुखकंद नमस्ते ॥ जय जिनंद जित कंद नमस्ते ॥ जय जिनंदवर बोध नमस्ते ॥ जय जिनन्द जित कोध नमस्ते ॥ १ ॥ पाप ताप हर इन्दु नमस्ते । अर्हवरन जुत बिंदु नमस्ते ॥ शिष्टाचार विशिष्ठ नमस्ते इष्ट मिष्ट उत्कृष्ट नमस्ते ॥ २ ॥ पर्म धर्म वर शर्म नमस्ते । मर्म भर्म घन घर्म नमस्ते ॥ दृग विशाल वर भाल नमस्ते हृदि दयाल गुन माल नमस्ते ॥ शुद्ध बुद्धि वर वृद्ध नमस्ते । वीतराग विज्ञान नमस्ते ॥ चिद्विलास धृत ध्यान नमस्ते ॥ ४ ॥ स्वच्छ गुणां बुधिरत्न नमस्ते । सत्व हितंकर यत्न नमस्ते ॥ कुनय करि मृगराज नमस्ते । मिथ्या खगवर बाज नमस्ते ॥ ५ ॥

End—श्री वीर जिनेसा नमित सुरेसा नाग नरेसा भगति भरा । वृन्दावन ध्यावै विघन नसावै छिन पावै शिव शर्म वरा ॥ ७ ॥ महार्घं आशीर्वाद ॥ दोहरा छंद ॥ श्री सनमति के जुगल पद जो पूजै धरि प्रोति । वृन्दावन सो चतुर नर लहै मुकत नवनोत ॥ सुनिये जिनराज तिलोक धनो । तुम मे जितने गुन हैं तितनो ॥ कहि कैान सकै मुख सों सब ही । ति पूजत हैा गह अधर्म यही ॥ १ ॥ रिषभदेव को आदि अंत श्री वरधमान जिनवर सुखकार तिनके चरण कमल कौ पूजै जो प्रानी गुनमाल उचार ॥ ताके पुत्र मित्र धन जीवन सुख समाज गुग मिलै अपार । सुर पद भोग भोग चको है अनुकम लहै मोक्ष पद सार ॥ २ ॥

इति श्री वरधमान चोबोसो प्रथक २ पंच कल्यानक पूजा वृन्दाबन कृत सम्पूर्ण ॥ २४ ॥

Subject—(१) पृ० १—१८ तक—मंगलाचरण। नमस्कार, समुच्चय चौबीसी जिन पूजा कथन। आदिनाथ पूजा वर्णन।

(२) पृ० १८—४९ तक—श्री अजितनाथ पूजा वर्णन। श्री संभवनाथ जी पूजा का वर्णन श्री अभिनंदननाथ पूजा वर्णन।

(३) पृ० ४९—८० तक—सुमतिनाथ पूजा वर्णन। श्री पद्म प्रभु की पूजा का वर्णन। श्री सुपार्श्वनाथ पूजा वर्णन।

(४) पृ० ८१—१११ तक—श्री चन्द्रप्रभु पूजा वर्णन। पुष्पदन्त जिनेश्वर की पूजा का वर्णन। श्री शीतलनाथ जी की पूजा का वर्णन।

(५) पृ० ११२—१४० तक—श्रेयांशनाथ पूजा वर्णन। श्री वास पूजा बीर जिन पूजा वर्णन। श्री विमलनाथ पूजा वर्णन।

(६) पृ० १४१—१८० तक—श्री अनंतनाथ जी की पूजा का वर्णन। श्री धर्मनाथ की पूजा का वर्णन। श्री शांतिनाथ पूजा का वर्णन। श्री कुंथनाथ जी की पूजा वर्णन।

(७) पृ० १८१—२१२ तक—श्री अरहनाथ जी की पूजा का वर्णन। श्री मल्लिनाथ जी की पूजा का वर्णन मुनि सुव्रतनाथ पूजा का वर्णन। श्री नेमीनाथ जी की पूजा का वर्णन।

(८) पृ० २१३—पृ० तक—श्री नेमनाथ जी की पूजा का वर्णन श्री पार्श्वनाथ पूजा कथन। श्री वर्द्धमान जी जिन पूजा वर्णन पूजा का फल, कवि का नाम, जनम तथा सहायका दिन नाम :— काशी जी के काशीनाथ नन्दूजो अनंतराम। मूलचंद आढ़त सुराम आदि जासियो दो। सजन अनेक तहाँ धर्म चंद जी को नंद वृन्दावन अग्रवाल गोल गोति वान्दियो।

No. 448. Dhyāna Mañjari, by Vrindābana Śaraṇadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—10 × 5 inches. Lines per page—30. Extent—83 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1972 Samvat or A. D. 1915. Place of deposit—Nimbārka Pustakālaya Bābā Mādhava Dāsaji Mahanta, Nāna Pārā, Baharāich.

Beginning—श्री सर्वेश्वरो जयति॥ श्रीमद्भगवते निम्बार्काचार्याय नमोनमः श्री वृन्दावन शरण देवजू कृत ध्यान मंजरी लिख्यते॥ रोला छन्द॥ श्री गुरुचरण सरोज हरन भव मंगलकारी। बन्दन करि धरि ध्यान ध्यान

बरनौ पिय प्यारी ॥१॥ रवि फल भारन फूल भूल तरु बेलि छहं दिस। मंजु कुंज अलि पुंज गुंज सुनिये जितही तित ॥२॥ आवत धीर समीर तीर जमुना जल परसै॥ अमल कमल मकरंद सकल दिसि सुमन न बरसै॥ कोक कारिका पढ़त रहत जित पिक सुक कारो॥ दम्पति तेहि अनुसार करत क्रीड़ा सुख कारी॥ कुसुम सेन पर परम चैन पावें मिलि दोऊ॥ बैठे करत विनोद मोद भरि औरन कोऊ॥

दोहा—प्रथमहि प्यारी को करत सिख नख बरनन चार।
जाहि सुनत मोहि देहुगे पिय रिझि अपनो हार॥

End—लाल बजाव बेनु बीन लै बाल बजावत। मिले करत दोउ गान तान सों तान मिलावत॥ रीझ परस्पर पुनि निसंक ह्वै लेत अंक भरि॥ प्रेम बिवस ह्वै जात मधुर अति अधर पान करि॥ देखि परस्पर रूप होत दुन-नित दोउ मोहन॥ याही ते दिन रैन कबहुं छूटत नहिं गोहन॥ करत विविध श्रृंगार अलौकिक कहत न आवै। तदपि सुमति अनुसार भक्त कहि कै सचु पावै॥ ताते सिखनख ध्यान कह्यो मैं रसिक जनन हित। कंठ पाठ करि राख यहि सुमिरन करिहौ नित॥ दोहा॥ हाव भाव लावन्य अति अगिनित गिने न जाहि। निरखत सचु पावे सखी दुरि दुरि कुंजन माहि॥ जानहु को यह ज्ञान है ध्यान रसिक जन प्रान। पान करैं जो पान यह सो न छुवै कछु आन॥ श्री वृन्दावन धाम रुचि श्यामा श्याम सुअंग। जन्म जन्म वृन्दावनहिं दीजो निज जन संग॥ इति श्री वृन्दावन शरण देव जु कृता ध्यान मंजरी समाप्ता॥

Subject—श्री कृष्ण का ध्यान।

No. 449. Jyotisha Chakra of Vyāsadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—11 × 5½ inches. Lines per page—30. Extent—280 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1894 Samvat or A. D. 1837. Place of deposit—Bhaiyā Mahipāla Simhaji, village Payāgapura, post office Payāgapura, district Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ ज्योतिष चक्र लिख्यते॥ नाम नक्षत्राग्रह तिथि जान। संगति वेद करव परिमान वसु।८। गुन।३। बन।७। हित करिये तंत्र। ताते जनिये गर्भ का अंत॥ विषम पुत्र सम जानु कुमारी। सुन्न रहे तेहि मृतक बखानो॥ रवि गुरु भौम पुत्र उतपन्या सोमे सुक्रे बुध भै कन्या॥ भोरे मारे सनि जो आवे। अगम जनाइ के जीय नसावे॥ इति कन्या पुत्र जन्म॥

कट पति हस्त कोठे परमान। वाकर चूकर त्रिगुन बयान, एक छांड़ि ओ वसु ते हरै। कहै व्यास ऐसे गृह करै॥ तादा नृपति नपुंसक तसकर। भोग विचक्षन घमै दलिद्र धनाढ्य॥ तिथि कर दून वार सम लेव सहित नक्षत्र एक करि लेव तोन के भागे रहै हुलास जल थल चंदा वसे पकास। थले वसै पड़गे लोहा तीनि लोक मह जोगिन वसै कहै व्यास ऐसे वृझि करै।

End—चूल्हा चक्र—

ईसान ३	पूरब ३	अग्नि ३	सु ३ म ५	श २
उत्तर ३	मध्य ३	दक्षिन ३	सु ३	बृ० १
वाइव ३	पछ्छ ३	नैरित्य ३	रा ४ बृ ७	च २ क १

जावत भात भुकतानी द्विवर्षेधि मुने च संख्या नथा वहो ३ भूता ५। गुना ३। पश्चि ४। सेताव ७। नैन २। पृथ्वी १। इन्दु १। कमात करै हानि मुभे मुध्यंच कथितं चक्रं कर भूषनं पिंडे न वा ९। कं ९। गर्ड। नम्र।२। पत्रि ३। नद ८। नाम ८। नागै ८। गुन तक्रे। विभाजिते नाग। २॥ नगांक। ७॥ ९॥ सूर्ज १२॥ नगाछे १७। तिथ्या १५। कृ २७॥ यमानुमिः १२०॥ इति युगादि याम भुवेदा पंचकः १।४ ४।४।४।४।३।३। कलस्ते पकं मातः। इति ग्रह प्रवेस॥

१	४	४	४	४	४	३	३
प	प	शु	श्री	व	प	शु	शु

लिषा संवत १८९४ मुन्नू शुक्ल॥ आगे का पृष्ठ फट गया है।

Subject—इस पुस्तक में कन्या पुत्र जन्म। जोगिनी चक्र, विशोत्तरी। सप्त दिवस का विचार भूमि चक्र दिकशूल चक्र महामारी भूमि चक्र, क्षिप्र-पानी भूमि चक्र, निरामय भूमि चक्र, गोरी भूमि चक्र। जीव नरजीव खेल चक्र जय विजय भूमि चक्र। चार काल घटे दिसा प्रमान। शनिकाल चक्र हाक जीव निर्जीव विचार, शिकार विचार, सूर्य काल विचार, नाड़ी चक्र, संघट चक्र, सप्त सलाका चक्र, अकाल सुकाल चक्र, दिन घटी वार्ता, जीव पक्ष मृत्यु पक्ष। घोर काला चक्र, सर्वतोभद्र चक्र, दुर्गफल। दशा राहु चक्र,

जाई स्थायी विचार चक्र चतुरूप। पंच स्वरा चक्र। सर्व दिशा वायु सुरभिक्ष दुर्भिक्ष भूमि कंप विचार। संक्रांति विचार। अमावस रिक्ष वास का विचार, कुप चक्र। मेघर चक्र। चूल्हा चक्र, कर भूषन चक्र, ध्वजादि ग्राम चक्र ग्रह प्रवेस चक्र अंत में केवल लेखक का नाम और संवत है शेष पृष्ट फट गये हैं।

No. 450 Sevaka Bāni, by Vyasa Miśra of Gokula (Muttra). Substance—Country-made paper. Leaves—182. Size—5½ × 3½ inches. Lines per page—6. Extent—575 Anushṭup ślōkas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—1843 Samvat or A. D. 1786. Place of deposit—Paṇḍita Śyama Bihārijī Misra, Golāganj, Lucknow.

Beginning—अथ श्री सेवक बानी लिख्यते ॥

दुपदो छंद ॥ राग धनाश्रिरी ॥ श्री हरिवंश चन्द्र शुभनाम ॥ सब सुख प्रेम रस धाम ॥ जाम घटी विसरै नहीं। यह जुपरो मुहि सहज स्वभाव ॥ श्री हरवंश नाम रस ज्याव ॥ नाम सुहड़ मव रतन कों नाम रटत चाई सब साहि ॥ दुह सुबुद्धि कृपा करि मोहि ॥ पाइ सुमन माला रचौ ॥ नित्य जुकंठ सु पहिरौ तास ॥ जस बरनौ हरिवंश बिलास ॥

श्री हरिवंशहि गाइहौं ॥ श्री बृन्दावन वैभव जितौ। बरनत बुद्धि प्रमाने कितौ ॥ तितौ सबै हरिवंश को। सखी सखा श्यो कहौं बिवेर ॥ तौ मेरे मन को अवसेर ॥ देरि सकल प्रभुता कहौं ॥

End—काहे कों डरति भामिनो हौं जुकहति निज बात। नैकु बदन सनमुख करौं छिन छिन कलप सिरात ॥ ५ ॥ वे चितवत विधु बदन तन तु निज चरन निहारति ॥ वे मृदु चिबुक प्रलोवहों तु कर सो कर टारति ॥ ६ ॥ बचन अधीन सदा रहै रूप समुद्र अगाध। प्रान रवन सौं कत करति बिनु आगत अपराध ॥७॥ चितयो कृपा करि भामिनो लोने कंठ लगाइ। सुखसागर पूरित भए देखत हियो सिराइ ॥८॥ सेवक सरन सदा रहे प्रनत नहीं विश्राम। बानी श्री हरिवंश को कै हरिवंशहि नाम ॥ ९ ॥ इति श्री सेवक बानी संपूरन ॥ शुभ संवत १८४३ मितो माह सुदी २ ॥ इति ॥

Subject—

हरिवंश नाम महिमा वर्णन। छं० १--१० तक।

भक्त का उपदेश वर्णन। छं० ११—१४ तक।

हित हरिवंश को केलि वर्णन। छं० १५—१७ तक।

हरिवंश का यश वर्णन। छं० १८—२५ तक।

हरिवंश नाम प्रताप वर्णन । छं० २६--३५ तक ।

हरिवंश की वाणी की महत्ता वर्णन । पृ० ३६--४३ तक ।

हित हरिवंश की प्रशंसा कथन । पृ० ४४--५४ तक ।

हरिवंश के शरण में सुख की प्राप्ति । छं० ५५—५८ तक ।

हरिवंश स्तुति । छं० ५९--७३ तक ।

हरिवंश का सौंदर्य वर्णन । छं० ७४—८२ तक ।

हरिवंश क्रीड़ा व महिमा वर्णन । छं० ८३—९५ तक ।

हरिवंश जी का प्रेम वर्णन । छं० ९६—१०५ तक ।

हरिवंश की कृपा वर्णन । छं० १०६—११५ तक ।

हरिवंश के भजन से ही सम्पूर्ण फल मिल सकते हैं । छं० ११६—१२४ तक ।

श्याम श्यामा मिलन वर्णन । छं० १२५—१४० तक ।

राधाकृष्ण विहार वर्णन व स्तुति कथन व सर्व फलदाता वर्णन । छं० १४१—१६४ तक ।

सेवक वाणी को प्रभाव व महिमा वर्णन । छं० १६५--१८० तक । इति ।

APPENDIX III

Extracts from the works of unknown Authors

APPENDIX III

No. 451. Ārjā of 20 leaves on Astrology. Deposited with Gaṅgāprasāda Pāṇḍe of Asókapura, Post Office Paṭṭi, District Pratapagaḍha (Oudh)

No. 452. Ashṭāvakr edānta kī Bhāshā of 15 leaves. Dated in Samvat 1920 or A. D. 1863. Deposited with Thākura Raṇadhīra Simhaji Jamidār, Village Khāpura, Post Talab Baksi, District Lucknow.

Beginning :—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ अष्टावक्र वेदान्त की भाषा लिख्यते ॥ दोहा ॥ ज्ञान प्रकाशिहि कहौ प्रभु मुक्ति केहि विधि जानि । पुनि वैराग्यहि सो कहौ तत्व लहौं सब झानि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ श्री गुरुवाच । जो तोहि तात मुक्ति की इच्छा । विषवत विषय जानपर इच्छा ॥ क्षमा आर्जव सत संतोष । इन पंचामृत पावै मोष ॥ २ ॥ दोहा ॥ पृथिवी वायुङ जल नहीं अग्नि प्रकाशहि नाहि । इनको साखी रूप है तू चेतन घन माहि ॥ ३ ॥

End :—दोहा ॥ कहा प्रवृत्ति निवृत्ति पुनि बंध मुक्त कछु नाहि । निर्विकार कूटस्थ है अचल सदा अप माहि ॥ १२ ॥ कहां शास्त्र उपदेश है गुरु शिष्य कोऊ नांहि । पुरुषारथ कासों कहौं निर उपाधि शिव मांहि ॥ १३ ॥ एक कहां अरु द्वैत है पूर्न है नांहि कठोर । कहौ कहां लौ बात यह मो तै कछु न और ॥ १४ ॥ इति [illegible] प्रकरणं ॥ २० ॥ इति श्री अष्टावक्र संपूर्ण ॥ ४ ॥

No. 453. As'vamedha Chapeṭikā of 5 leaves Dated in Samvat 1934 or A. D. 1877. Deposited with Umāsankara Dube of Hardoi.

Beginning :—अश्वमेध का करें मनोरथ घर में परे सनाका हैं । बातन में हों पर करैया करवैया न देखा काहैं । अश्वमेध का घोड़ा पकड़ै या हम भा बड़े लड़ाका हैं । अश्वमेध को यज्ञ नहीं यह मेटति वेद की शाका हैं । अश्वमेध कहि सबहि व नावैं बंधा चाहित क्या का हैं । रामानन्दी तिलक लगावैं करते कामु दगा का हैं । राम चन्द्रमा दोनु लगावैं देखे बड़े कजा कहैं पाते यज्ञ अश्वमेध नहि यह मेटत वेद कि शाका है । प्रथमैं यज्ञ राम ने कीन्हौं जिनको अब तक शाका है दूसरि यज्ञ पांडवन कीन्हौ लोमैं कृपा पिनाका है । तीसरि फिरि जनमेजय कीन्हौ तबते मंचा मनाका है । तातें यह अश्वमेध यज्ञ नहि मेटत वेद का शाका है ।

No. 454. Atariyādeva kī Kathā or a prayer to the deity of intermittent fever. Dated in Samvat 1883 or A. D. 1826. Deposited with Paṇḍita Madhusūdanajī Vaidya, Village Old Sitāpur, post office Sitāpur (Oudh).

No. 455(*a*). Aushadhi-Saṅgraha of 135 leaves on medicines. Deposited with Paṇḍita Rādhorāma, of Āmamaū, Post Office Gaḍavārā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

No. 455(*b*). Aushadhi-Saṅgraha of 318 leaves. Deposited with Bābū Rudranārāyaṇa, of Pratāpagaḍha (Oudh).

No. 456. Aushadhiyā on medicines. Four leaves. Deposited with Paṇḍita Rāmaprasāda Pāṇḍe of Ghurahā, Post Office Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

No. 457(*a*). Aushadhiyā-kī-Pustaka. Leaves—20. Deposited with Paṇḍita Gorelāla Gopālaprasāda Upādhyāya, Village Sirasāganja, District Mainapurī.

Beginning :—अथ चांदी मारण विधि ।

एक चांदी को पत्र सोधि लेइ टूका टूका करिकै एक कुलिया मा राधि लेइ उस कुलिया में चिचरा को रस भरि देइ वजन पैसा भरि चांदी तौ पैसा भरि पाउ भर चाँदी तो पाउ भरि रस देइ औ नौसादर दुइ मासे भरि देइ तब कुलिया माटी ते संपुट करै तब गोइठा में धरिकै दुइ प्रकार की आंच देइ शीतल परै तब निकारि लेइ भस्म होइहि ॥

End :—योगेश्वर चूर्णम् ॥ पारा पै० एक ताम्र को हरताल पै० १ हिंगुर पैसा १ सोना मापी पैसा भरि मुरदासंख पै० १ लोंग पै० १ जावित्री पै० १ मिरचि पै० १ सोंठि पैसा १ पीपरि के मूल सों षाइ सन्निपात जाइ ॥ अफीम सों षाइ कफ मिटै लहसुन सो षाइ तौ सर्व वायु जाइ ॥ इति योगेश्वर चूर्णम् ।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक—जुर ।

(२) पृ० ७ से पृ० २२ तक—चांदी, अभ्रक, सुवर्ण तथा रांगा मारने की विधि, गर्भ होने की विधि, योनि संकोचन विधि, अंजन विधि, अंड-वृद्धि चिकित्सा, पुष्टि की दवाई ।

(३) पृ० २३ से पृ० ४० तक—धातु पुष्टि की औषधि, प्रमेह स्तंभन की दवा, लवङ्गादि चूर्ण, गर्भ जाने की बत्ती, प्रसूति दवा, धन्वन्तरि मत, योगेश्वर चूर्ण ।

No. 457(*b*). Aushadhiyo-ki-Pustaka on medicines. Leaves-41. Deposited with Paṇḍita Tārāchanda Munīma, Shop Murlidhara Mahādevaprasāda, Village Sirasāganja, District Mainapuri.

No. 457(*c*). Aushadhiyō-ki-Pustaka. Leaves—13, Deposited with Paṇḍita Gorelāla Gopālaprasāda Upādhyāya, Village Sirasāganja, District Mainapuri.

Beginning :—अथ रस ॥ अग्नि दीपक के विधि ॥ सेंधव टंक ४ हींग टंक ४ मायफर टंक ४ विष टंक २ सोहागा टंक ४ निबु कागदी के रस से घरल करै पहर ४ गोली बनावे चना प्रमान नित खाइ क्षुधा लागै ॥ अथ साधारन तामरस के विधि ॥ पारा टंक १ गंधक टंक १ सज्जी टंक १ निबुवा के रस से घरल करै पहर २ गोलो बधि रतो १ नित खाय क्षुधा लागै ॥ सुमान के विधि ॥ सोने के पत्र बनावै फिर ताता कै के तेलमा बुझावे बार ७ सेहुड़ के दुध मा बुझावै बार ७ फिर सोसा तोला एक मोम तोला १ स्वर्न तोला १ औटावे कचनार तर ऊपर खरिया मैं धरै गंधक तोला ४ पारा तोला ४ तर ऊपर धरै पाँच देइ पहर ४ चारि सोना बरै ॥

End :—संखिया सुमिल मारने को विधि।

सुमिल संखिया १ धो सुमिल थैलो मा डारिकै तौ आटा के भीतर भरै तौ ठंढो लगावै ॥ गाय कुम्हाटा ल्यावै बाढ़ा तै तेहिमा सुमिल डारि कै फिरि आटा कै ठंढो देय फिरि गोरि आय तेहि के पत्तो पान के साथ खाइ चाउर ४ वाई जूड़ो जाइ परमेह जाइ गाई के दुध मा खाय रतो १ परमेह के दाप जाय बंद होय वा गोल्ला एक दिन रावि कै फोरै ॥

Subject :—पृ० १ से पृ० १४ तक—क्षुधा लगने की औषधि। सोना और हरताल मारने की विधि। ज्वरांकुश बनाने की विधि, भैरव रस की विधि। रस साधारण की विधि, आनन्द भैरव की विधि, पारा मारने की विधि।

(२) पृ० १५ से पृ० २६ तक—तामा मारने की विधि, अभ्र गोली बनाने की विधि, अभ्र गोली लघु बनाने की विधि, भूत छोड़ने की विधि, रांगा मारने की विधि, पैसा मारने की विधि, सीसो मारने की विधि, संखिया सुमिल मारने की विधि।

No. 458. Ava-Pada. Leaves—21. Dated in Samvat 1874 or A.D. 1817. Deposited with Paṇḍita Rāmakumāraji of Chilabilāraṅgitapura, Post Office Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशाय नमः॥ अथ पद लिख्यते ॥

॥ अथ पद ॥

प्रथम चारि अक्षर पासे के चहु ओर लिख्यते ॥ पीछे पासा हाथ लेना ॥ अपने इष्ट देवता को चिंता करना ॥ पीछे पासा बार तीन मंत्र सेती मंत्रना ॥ पासा डालना ॥ तिसका फल जो कछु होइ सो आगेती कहै ॥

॥ अथ मंत्र ॥

ओं त्रिपुर लाहो अव लोहि मे मंथा चौर कार्य चिंति पिनि श्री निसि भागे गुरु मंदिरे स्वाहा ॥ इति पासा डालन मंत्रः ॥

अथ अ अ अ

अहो पूछन हार तुमको एक बल है परमेस्वर का ॥ तुम्हारे शत्रु बहुत हैं पर तुम्हारा सुष होवइगा ॥ बहु कार्य सिद्धि होवइगा ॥ निश्चय सेती ॥ १ ॥

End :— (द ब ब)

अहो पूछन हार तु जो कार्य चिंतवत कार्य है ॥ सो कार्य संतोषकर होइगा ॥ ६४ ॥

(द ब य)

अहो पूछन हार तेरे चितवे कार्य बहुत दिन गय है कष्ट जाइगो सुष होवेगो लाभ भो है ॥ आरोग्यता होवेगो भलाई है सही श्रेष्ठ ॥ ६५ ॥

(द द अ)

अहो पूछन हार जो कार्य चितवत है तु कहीं जाति नाहीं ॥ स्थिर चित कर पहिले तो तो को बहुत कष्ट भयो है ॥ इहां मन वांछित होइ कछु धर्म देषगा ॥ इष्ट देवता को पूजाकर तद कार्य सिद्ध होइगा श्रेष्ठ सही जानना ॥ ६६ ॥ इति श्री प्रकरणं चतुर्थं समाप्ते ॥ इति श्री गर्ग ऋषि विरचितायां पासे के चलो संवत् १८७४ ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ४२ तक—पासे का मन्त्र तथा प्रयोग की विधि, पासे का तीन बार डालने का आदेश और पड़े पासों में निकले अक्षरों का फलादेश कथन ।

No. 459. Bārahо Rāsi-ko Janma. Leaves—6. Dated in Samvat 1863 or A.D. 1809. Deposited with Umāsankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—श्री गणेशायनमः । लिख्यते बारहो राशि को जन्म । आदित्यवार जे जन्महि ते सूर्य होहिं । सोमवार जे जन्महि ते पंडित होहि ॥ मंगल के जे जन्महि ते सुरपति होहिं । बुधवार जे जन्म ते धनपाको होहि ॥ गुरुवार जे जन्महि

ते स्वरपति होहिं। सुकवार जे जन्महिं ते सुखे न होहिं॥ सनीश्चर जे जन्महिं ते क्षनो वृत्ति होहिं॥ इतिवार सानी जन्म मरवनो भरनी जे जन्महि दिन ८ मास ४ बायुर्बल वर्ष ९० सुपमोत्त मित्रै कृत्तिका मा जन्महिं दिन ९ मास १ वर्ष ३२ बायुर्बल वर्ष १०० रोहिणी में जे जन्महि मास ९ वर्ष १० बायुर्बल वर्ष १०० सर्प हाथ मोत्त॥ मृग सिरा जे जन्महि दिन ८ मास ६ वर्ष २७ बर्बल वर्ष ६७ नाग मीत्तु घरद्रा जे जन्महि दिन ११ बायुर्बल ० पांड रोग मोत्तु॥

End :—पुनर्वसु मा जे जन्महि दिन ७ मास ४, वर्ष ५ उपरांत वर्ष ६० बायुर्बल वर्ष ९० सर्प हाथमोत्तु। पुष्य जे जन्महिं दिन ९ मास १ वर्ष २७ तथा वर्ष बायुर्बल ६० सुप मोत्त घश्लेषा मा जे जन्महि दिन १२ मास ४ वर्ष १९ तथा वर्ष २५ बायुर्बल वर्ष १०० घोरे हाथ मीत्तु। पूर्वा में जे जन्महिं दिन ५ मास २० बायुर्बल वर्ष ९९ पानी मा मोत्तु॥

उत्रामा जे जन्महि दिन ४ मास ४ वर्ष १६॥

(इसके पश्चात् पृष्ठ खंडित हो गए हैं)

Subject :—बारह राशियों में जन्म होने का फल॥

No. 460. Baitālapachisi. Leaves—86. Dated in Samvat 1782 or A. D. 1725. Deposited with Śri Mannūlālaji Pustakālaya, Murārapura (Gayā).

Beginning:—फकीर सौंव पाळे परजा सब शत्रुन को अंत उये पुंज है। अकबरः सुनी तम कहुं सोमः फकीर सिंब निज परिन को कोवो नगर जनु कोयः माथी पाल ताके भयः पोथु जश लाज जहाजः मोज देन को भोजशोः बड़े गरीब नेवाज॥

॥ कवित्त॥

कंजहित मुदित कुमुद घनहित मुख सकुचित रदित शधो मुख घनम है। हंस चंचरीक कवि पंडित मधुर बोल मंडित बिलोकत करत गुन गान है॥ युगज उलूक मुक मूक चंव गिरि कंद में रहत न टरत करत वे प्रमान है। तारे चोर कुटिल कलंकी च द छये भोगनपत फकीर सौंव सूरज समान है॥

End :—रानी लै निज कन्यका, गई भाजि बन घोर।
चला चंदरी को नृपति, घाइ गयो तिहि ठौर॥
सिव सैन्य भूप के, सुत चँद्र विक्रम नाम।
दोउ मिलि सिकार जो गए, कानन गये शीतल धाम॥
चंद्रावति कन्या सहित को रूप देखो जाय।
काम शर लागे दोउ के गिरो तब मन छाय॥

चंद्रावती को चंड विक्रम गह्यो तब निज पानि।
रूपवती को लहि तब लह्यो शीघ्र पैठव आनि॥
निज निज भवन मै सुरति केली सुचि मुदित दिन रैन।
राज भार समर्पि मंत्रिहि बैठे सुचित सुचैन॥
यह कही कथा बैताल परिगो निपट संसै भवन।
यह दुनो नाना के सुतन्ह ते भए नाता कवन॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० २ तक—खंडित।

(२) पृ० २ से पृ० १२ तक—ग्रंथ निर्माण कारण व ग्रंथ रचना काल—

लोचन[२] वसु[८] मुनि[७] भू[१] बरस, माघ शुक्ल शशिवार।
तिथि वसंत की पंचमी, भयेउ ग्रंथ अवतार॥

प्रतिष्ठानपुर के राजा का वन में आकर साधु को तप करते देखना और भय खाकर तप भंग करने को वेश्याएं भेजना।

(३) पृ० १३ से पृ० १६ तक—खंडित।

(४) पृ० १७ से पृ० ४० तक—राजा विक्रम और तेली की कथा, प्रेत-तेली का बारम्बार कोई न कोई कथा राजा को सुनाना। इस प्रकार संभावती की कथा वर्णन करना।

(५) पृ० ४१ से पृ० ४६ तक—खंडित।

(६) पृ० ४७ से „ ५७ तक—चौथी कथा।

(७) पृ० ५८ से „ ७० तक—पांचवीं कथा।

(८) पृ० ७१ से „ ७६ तक—छठवीं कथा।

(९) पृ० ७७ से „ १५२ तक—सातवीं कथा से चौबीसवीं कथा तक। शेष खंडित।

No. 461. Bhagavadgītā-kī-Bālabodhanī-Ṭīkā. Leaves—176. Dated in Samvat 1857 or A. D. 1810. Deposited with Ṭhākura Vrajabhūshaṇasiṃha, Village Jhukavārā, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः॥ श्री परात्पर गुरु स्वरूपायः निर्विकाराय नित्य शुद्ध बुद्धि चिदानंद बोध स्वरूपायः॥ श्री वासुदेवाय नमः॥ श्लोक॥ श्री भगवद्गीता गीर्वाणो ज्ञानामिच्छन्नर्थं लोकानां चाहिताथि सु कृतं भाषा च टिप्पनं॥ १॥ एक समै दस्यन करिकै पृथ्वी भाराक्रांत प्रति व्याकुल होत भई तब ब्रह्मा रुद्र आदि देकै समस्त देवता नारद मुनि सहित गमन करत भये जहां श्री भगवान क्षीर सागर निवासी यहां जाय कै पास होत भये तब ब्रह्मा वेदरिचा वेद

मंत्र घंग सहित अन्य नाना प्रकार अत्यन्त उच्चेस्वर करिके अति आर्तवंत हो के मुनि देवता सहित ब्रह्मा स्तुति करत भये ॥ तब श्री परमात्मा देवतनि के निमित्त-अपने भक्त की रक्षा के हेत अति आर्त जानिके स्तुति सुनि के तहां प शब्द प्रगट भयो, भो ब्रह्मा किमार्थं आगतः तब ब्रह्मा पृथ्वी का सब वृतांत कहत भये तब श्री भगवान सर्वज्ञः सर्व जानते थे पुनः शब्द उपजत भया भो ब्रह्मा श्रृणु मृत्यु लोक के विषे जादव कुल मथुरा स्थान देवकी के ग्रह हम आनि के औतरेंगे। ×

× × × ×

× × × ×

End :—

यथाक्षार समुद्रेषु पकाणे वेतु सर्वथा।

तथा धेनु मते केत क्षीर मेकंतु पकतः ॥ १ ॥

तथा देह मनेकेन आत्मामे कोपि कथ्यते एवं ज्ञान मनेकेन विवेको मेक उच्यते ॥ २ ॥ अंतः शुद्धि न श्रुद्धांति वास मुरे शुद्धता तृष्णा मगश्रमेन संकल्पो नैव शाम्यते ॥ ३ ॥ आदौ व्यास कृतं ग्रंथ मूलं सत शत तथा तुलसी आचार्य कंप्रोक्तं श्लोकं षट सहसकं ॥ ४ ॥ कृष्ण वृक्ष समुत्पन्नं गोता नाम हरीतकीं नरा किमर्थ वदन्ति किलोमल विरचने ॥ ५ ॥ श्री भगवद् गीता मध्ये अष्टादश अध्याय विषै श्री भगवान अर्जुन प्रति ज्ञान सार जोग सार क्रिया कर्म सार भक्ति सार सर्व शास्त्र सार वेदको दोहन यथा प्रकार कहत भये हैं ते श्री परमात्मा अखंड परम ब्रह्म वक्ता श्रोता सर्व प्रति मंगल ददातु सुभ कल्याण मस्तु संवत् १८६७ साके १७३२ ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० २५ तक—प्रथम अध्याय। अर्जुन को उभय पक्ष की सेना देखकर विषाद उत्पन्न होने का वर्णन।

(२) पृ० २५ से ६४ तक— द्वितीय अध्याय।
ब्रह्मज्ञान तथा आत्म बोध।

(३) पृ० ६४ से पृ० ८८ तक—तृतीय अध्याय।
कर्मयोग वर्णन।

(४) पृ० ८८ से पृ० १०७ तक—चतुर्थ अध्याय।
सन्यास कर्म निर्णय, ज्ञान निर्णय, ब्रह्म निर्णय, यज्ञ निर्णय।

(५) पृ० १०७ से पृ० १२२ तक—पंचम अध्याय।
ध्यान योग व ज्ञान साधन विधि।

(६) पृ० १२२ से पृ० १४५ तक—षष्ट अध्याय।
कर्म व ज्ञान न्याय, साधन विधि, योग न्याय, पूर्वक संस्कार न्याय, योग की महिमा तथा अंतरात्मा की धारणा।

(७) पृ० १४६ से पृ० १५९ तक — सप्तम अध्याय।

विभूति ज्ञान, विधिन्याय तथा देवता उपासना विधि।

(८) पृ० १६० पृ० १७२ तक—अष्टम अध्याय।

उत्तरायण व दक्षिणायनों सूर्य की गति, ब्रह्म अहोरात्रि, कल्प संख्या प्रमाण

(९) पृ० १७३ से पृ० १९३ तक—नवम अध्याय।

परमात्मा की योग शक्ति, बल स्वरूप, मुक्ति साधन लक्षण, प्रकृति-पुरुष संबंध।

(१०) पृ० १९४ से पृ० २१० तक—दसवाँ अध्याय।

विभूति ज्ञान, अध्यात्म विद्या और सर्व विषय, एक ब्रह्म।

(११) पृ० २११ से पृ० २३७ तक—ग्यारहवाँ अध्याय।

विराट रूप दर्शन।

(१२) पृ० २३८ से पृ० २४९ तक—बारहवाँ अध्याय।

विश्वरूपी परमात्मा, ब्रह्म अक्षर स्वरूपी भगवान की उपासना, सगुण निर्गुण उपासना।

(१३) पृ० २५० से पृ० २७० तक—तेरहवाँ अध्याय।

प्रकृति-पुरुष निरूपण, सृष्ट्युत्पत्ति तथा कारण बीजरूप सांख्य ज्ञानादि वर्णन।

(१४) पृ० २७१ से पृ० २८१ तक—चौदहवाँ अध्याय।

त्रिगुण निर्णय, गुणातीत से गुण साधने का विधान।

(१५) पृ० २८२ से पृ० २९३ तक—पन्द्रहवाँ अध्याय।

अक्षय वृक्ष व वैराट तरु निर्णय, निर्गुण स्वरूप कथन।

(१६) पृ० २९४ से पृ० ३०४ तक सोलहवाँ अध्याय।

दैव तथा आसुरी ज्ञान मार्ग। संत असंत के लक्षण। शास्त्र प्रमाण कार्याकार्य वर्णन।

(१७) पृ० ३०५ से पृ० ३१७ तक—सत्रहवाँ अध्याय।

त्रिगुण की श्रद्धा, दान, यज्ञ, जप-तप, साधन न्याय सत सुमार्ग और अज्ञान अविवेक दोनों का न्याय, त्रिविधि ब्राह्मण और ओंकार विधिन्याय का वर्णन।

(१८) पृ० ३१८ से पृ० ३५२ तक—अठारहवाँ अध्याय।

ज्ञानसार, योग सार, क्रिया सार, कर्म साधन तथा भक्ति सार वर्णन।

No. 462. Bhagavāna ke Dasau Avatāra. Leaves—8. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning:—अब भगवान रामचन्द्र के दसौ औतार लिख्यते।

दो०—श्री पति गौरि गनेश को सुमिरत बारमबार। नारायन के चरित पुनि बरनौ दस औतार ॥ चौ० ॥ मच्छ रूप धरि वेद लै आयो। ब्रह्म विरंचि मुदित मन भायो। बरनन करत जो जग सुष चारी जै राधावर कुंज विहारी ॥ १ ॥ दूसर तन धरि कूरम बनिकै। मथेउ सिंधु कर मंदिर धरि कै॥ लीन्हेउ चौदह रतन निकारी। जै राधावर कुंज विहारी ॥ २ ॥ शूकर रूप धरेउ बनवारी। दैतन का तुम हतेउ मुरारी। लै धरनो पुनि भापुसवारी जै राधाकुंजविहारी ॥ ३ ॥ नर-सिंघ होइ जन राषेउ ताही। परगट भयो हरि षंभा माही। निकसत डारेउ चीदर बिदारी ॥ जैराधा बर कुंज विहारी ॥ ४ ॥ श्रीपति बावन रूप बनायो। बलि के द्वारे मांचन आयो। भेटे बन के इंद्र भिषारी जैराधावर कुंज विहारी ॥ ५ ॥

End:—परसु राम होइ जगत जसु कीन्हा। पिर्थवी जीति द्विजन का दीन्हा ॥ दूसर कोई न भयो धनुधारी ॥ जै राधावर कुंज विहारी ॥ ६ ॥ रामरूप होइ बहुत जस कीन्हा रावन कुलहि मारि जसु लीन्हा। दीनबन्धु प्रभु असुर संहारी ॥ जै राधावर कुंजविहारी ॥ ७ ॥ पर ब्रह्म औतरे गुसाईं। नन्द सुवनमे कुंवर कन्हाई। जाको ध्यावत व्रज की नारी जैराधावर कुंज विहारी ॥ ८ ॥ जगन्नाथ जगदीस कहायो। बोध रूपधरि मीन पुजायो ॥ सुरमुनि अस्तुति करत तुम्हारी। जैराधावर कुंज विहारी ॥ ९ ॥

× × × × × × × × ×

प्रात समय जे पढ़ैं नरनारी। कटै पाप तन तेज प्रचारी ॥ जै राधावर कुंज विहारी। × × × × × × × ×

दो०। पढ़ैं सुनै चित लायकै मन चित सो करि ध्यान। ताके सकल मनोरथ सिद्ध करैं भगवान।

Subject:—दस अवतारों का वर्णन ॥

No. 463. Bhajana-Saṅgraha. Leaves—12. Deposited with Paṇḍita Satyanārāyaṇa Tripaṭhī of Bāṇḍā, Post Office Gaḍavārā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री राम जी ॥

राम को ध्वजा फहरानो अब देखो राम को ध्वजा फहरानो-टेक-
डरकत ढाल फरकत नेजा गर्द उड़ी असमानां ॥
लछमन वीर बालि सुत अंगद हनुमान अगवानो ॥ १ ॥
कहत मन्दोदरि सुन पिया रावन त्रिभुवन पति सो ठानो।
जा सागर को मर्म करत है तापर शिला तिरानां ॥ २ ॥

तिरिया जाति बुद्धि को थोछी उनहूं को करति बड़ाई।
ध्रुव मंडल से पकरि मंगाऊं वे तपसी दोऊ भाई ॥ ३ ॥
जरत अग्नि में कूदि परत हैं कोट गिनै नहिं खाई ॥ ४ ॥
मेघ नाद से पुत्र हमारे कुंभ कर्ण बल भाई।
एक बेर सन्मुख ह्वै लडिहौं युग युग हेत बड़ाई ॥ ५ ॥
कहत मंदोदरि सुनु पिय रावन तू मेरो एक न मानी।
रैनि के। स्वप्न ऐसा भयो है सो कि लंक जराई ॥ ६ ॥
अग्र के स्वामी गढ़ लंका घेरो अजहूं न चेता अभिमानी ॥ ७ ॥

End:—

राम जन्म सुनि अपने पति सों हंसि डाढ़िन यों बोली हो।
जाहु कंत राजा दशरथ के दान कोठरी खोली हो ॥ टेक ॥
तुमके। देई अंग के। बागो श्रैार दक्षिणा भरि झोली हो।
हमको लीजो नथ दिाख के। गहनो पटरसुआ को चोली हो ॥ १ ॥
साज सहित इक घोड़ा लीजो गैया दुध पचोई हो।
सहज अमारी हाथी लीजो, हथिनी अधिक अमोली हो ॥ २ ॥
लीजो कन्त कहार समेत इक, हमन चढ़न के। डोली हो।
सोलह वर्ष को सुन्दरि लीजो, टहल करन के। गोरी हो ॥ ३ ॥
सेज सहित एक पलंगा लीजो, श्रोर पानन को डोलो हो।
बीरो करि करि हमहिं खवावै लीजो सुघर तमोली हो ॥ ४ ॥
जन्म जन्म काहू के आगे बहुरिन माडो बोलो हो।
जन गोविंद रघुबीर यांचि के भये हैं अयाचक ढोलो हो ॥ ५ ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० १६ तक-रावण तुलसी संवाद (अग्र व तुलसी), रामचरण महिमा (तुलसी), जगदीश-विनय (माधोदास), राम का सैान्दर्य वर्णन (रामसेवक), धनुष-भंग (तुलसी), राम की शोभा (हरि आनंद), लंका विजय के पश्चात राम का अवध में आगमन (रामानन्द), विनय-राम (तुलसी), कृष्ण-विनय (चन्द्रसखी), दाऊ की शिकायत माता से (सूर), गीता की महिमा (हृषीकेश), नाम महिमा (नामदेव), राम की भक्तवत्सलता का वर्णन (सेवादास), चैाकी हनुमान जी की (बालानन्द)।

(२) पृ० १७ से पृ० २४ तक—कृष्ण का भोजन करना (परमानन्द), युगल मूर्ति भोजन (सिवासखी), सीता राम भोजन (तुलसी) श्याम श्यामा पांसा खेलने का वर्णन (परमानन्द), शयन एवं विलास (नरहरि), विनय (सूर), कवि की चैाकी (तुलसी), राम जन्मोत्सव (कमलानन्द), राम जन्मोत्सव में डाढ़िन का हक मांगना (गोविन्द)।

No. 464. Bharatamilāpa. Leaves—10. Deposited with Mahanta Mohanadāsa. (The book was found with) Svāmī Pītāmvarādāsa, Village Sonāmaū, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—अथ भरत मिलाप प्रारंभ: ॥ दोहा ॥

सुरस चरन मनि यह, मन मैं बहुत उछाह ।
राम कथा कछु गावैं, जाको गुन अगाह ॥ १ ॥

चौपाई ॥ रामचंद्र वन को याना, राजा दशरथ बहु पछताना ॥
रामचंद्र छाड़ा स्थाना, दौरे नगर सकल परिवाना ॥
रोवैं सकल नगर नरनारी, राम लछमन बिन अधिउजारी ॥
रचि रांच कैकई पत्र लिषावा, दूत हाथ नैहार पठाया ॥
जाय दूत भरत के पासा, अवधपुरी कर भयौ निरासा ॥
चोप दूत विदा तब भयेउ, अंतर वास जोजन शत गयेउ ॥
जहाँ भरत सत्रहन यह गयेउ, जाय दूत दंडवत कयेउ ॥
कहिये दूत अवध कुसलाई, कैसे कौशिल्या पुरराई ॥
घर घर राज नीति ठकुराई, कैसे राम लछमन दोउ भाई ॥
तिनके पुत्र भये अनुरागी, विधि का लिये भये वैरागी ॥

End:—चवदह वरष राम नहिं आई, अस कहि लोगन बोध कराई ॥
कौशिल्या पै गे दोउ भाई, भरथहि देषि कौशिल्या धाई ॥
सुत निकट परे मुर्छाई । हाथ उठाइ अंक मह लाई ॥
नारि पकरि बहु विधि समझाई । नहिं आये लछिमन रघुराई ॥
तब पादुक सिर लीन चढ़ाई । राम लषन सीता दुष पाई ॥
वाद विधाता सेज वनाई । हमहु रहयपुर वाहर जाई ॥
वन कुस सिज्या परी पुटाई । वैस आसन प्रभु मन लाई ॥
आगे पादुका धरि सिर नाई । .... ॥
निस दिन पूजन ताको करहीं, अवधि अधार अगोचर रहहीं ॥

दोहा :—भरथ मिलाप कथा, सरदा सों कवि गाई ।
जो नर सुनहि जो गावहि, जन्म जन्म अघ जाई ॥
इति श्री भरत मिलाप संपूर्णम् ।

Subject:—पृष्ठ १ से पृ० २० तक—भरत के पास दूत का जाना, भरत का संदेह, कुशल पूछना, अवध आगमन तथा अत्यन्त विषाद करना, कैकई का उपालंभ, कौशिल्या तथा गुरु इत्यादि का भरत को प्रबोध, भरत का वन में राम के पास जाना, लछमन का सन्देह, राम का निश्चय, भरत-मिलाप, भरतादि

द्वारा राम को लौटाने का प्रयास, उनका न लौटना और चरण पादुका लेकर भरत को राज-काज के लिये अयोध्या लौटाना।

No. 465(a). Bhūgola. Leaves—29. Deposited with Rājā Avadhesasiṁha, Raïsa and Tallukedāra of Kālākānkara, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री मते रामानुजाय नमः ॥ अथ भूगोल लिख्यते भाषा कथयामि। पहिले आकाश उपजा। आकाश से वायु उत्पन्न हुआ। वायु से तेज भा। तेज से जल भा। जलसे ब्रह्मांड भा। सो ब्रह्मांड ईस्वर की कृपा ते फूटि आधा भा। ब्रह्मांड के मध्य में जल विष्णु उत्पन्न भा। ता परमेश्वर के नाभी कमल में ब्रह्मा उत्पन्न भे। ब्रह्मा ने पृथ्वी को घटन कोन ऊँचाइ ४९ कोटि जोजन को प्रमाण है। ताके मध्य में सुमेर पर्वत है। चैारासी लक्ष योजन ऊंचा ताके सोरह हजार जोजन पृथ्वी में जाहिरा ॥ बीस हजार जोजन मध्य में चकला। जव का दाना जैसा तैसा मध्य में मोटा। तरुला भाग पतला सुमेरु पर्व है

× × × × × × × × ×

Middle :—आकाश प्रमाण

अै पद्म षड्वालिश निषर्व अेानहत्तरि अर्बुद सतावन कोठि पैंतालिश लाष पंचावन हजार पांच से जोजन आकाश प्रमाण है।

ग्रह नक्षत्र विचार।

भूमि लोक से त्रिस लक्ष जोजन सूर्य लोक। बहत्तरि हजार जोजन विस्तार। सूर्य लोक से उपर लक्ष जोजन चन्द्र लोक। अठासी हजार जोजन विस्तार। चन्द्र लोक से लक्ष जोजन विस्तार मंगल लोक है। मंगल लोक से एक लक्ष जोजन ऊपर तिरसठ हजार जोजन विस्तार शुक्र लोक है।

× × × × × + × × +

End :—कलयुग व्यवस्था

चार लाख बतिस हजार कलयुग प्रमाण। मानुष्य प्रमाण हस्त ॥ ३ ॥ सूर्य पर्व एक हजार। चन्द्र पर्व दु हजार। तीर्थ गंगाजी। देवी चामुंडा ॥ पाप। १८। पुन्य। २। स्त्री प्रर्थ्याहपार ॥ २१ ॥ मानुष्यावर्ल। १२०। बीज बोवनवार ॥ १ ॥ छेदन। २। ध्यान चन मह। राजा शालि वाहन। ताके पुत्र। कुमार। ताके पुत्र ईष्वं। ताके पुत्र ब्रह्मा × × × × × × ×

चारिउ बरन तुरक ठकुराई। छोटी वस्तु महंगी। बड़ी वस्तु सस्ती। धर्म करने वाले दुखी। पापी लोभी लंपट छुगुल इनसों सब सों प्रीति ऐसा कलजुग में परमेश्वर की भक्ति युक्त मनुष्यन को बाधा थोर होवै। परिणाम में धर्म सदा सहाय है ॥

इति कलजुग बरनने भूगोल संपूर्णम् ॥ मिती चैत्र नवम्यां। रविवासरे।

Subject :—(१) पृ० १ से ५ तक पृथ्वी इत्यादि की उत्पत्ति पृथ्वी के नव खंड सत द्वीप।

(२) पृ० ६ से ९ तक पाताले कूर्म विचार, पृथ्वी का कूर्म, पृथ्वी के आठ पर्वत, चौदह जमीं के नाम।

(३) पृ० १० से १५ तक आकाश प्रमाण ग्रह नक्षत्र विचार ईश्वर के ध्यान का निरूपण।

(४) पृ० १६ से पृ० १९ तक वंशावली देश विचार।

(५) पृ० २० से २७ तक सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलयुग की व्यवस्था।

No. 465(*b*). Bhūgol-Purāṇa. Leaves—7. Deposited with B. Rāma Manohara Bichpuriyā, Purāni-Basti, Katni Murwārā, District Jabbalpur (C. P).

Beginning :—भोगोल पुरान लिषा है॥

तंयदि यदि ऐसा एक ब्रह्मांड गोल वरने॥ ब्रह्मांड विस्न सियया तपो यथा॥ आकास ते वायु उतपंति बाद ते तेज उतपंति तंजते॥ ब्रह्मांड फुटि कुट को भये॥ ता जल मधे विष्णु रहे हे॥ विष्णु के नाभि कमल के विषे ब्रह्मा रहे हे॥ सो ब्रह्मांड थांट कोय हैं॥ पंचास कोटी जो जन उचो हे॥ सोरह सहस्र जो जन धरती मधें गड़ो हैं॥ बीस सहस्र जोजंन उपर बिस्तार हैं॥ सरवा के पलंकार सुमेरु। पर्वतु हे॥ ता सुमेर पर्वत को अस्ट श्रृंग हेमा वतो श्रंग लील श्रंग मालि वंतो श्रंग जाम वंतो श्रंग॥ नव निधि श्रंग॥ उच्च मान श्रंग॥ मदो श्रंग॥ एवं अस्ट श्रंग हे॥ ऐक ऐक श्रंग कितनो अंतर हे ऐक ऐक लक्ष जो जंन आपस मधें कुस्यांमय अंतर है॥

× × × ×

End.—कौन कौन राजा भये॥ राजा सालि वाहन॥ १॥ राजा सक्तिकुमार राजा हरिश्चंद्र॥ ३॥ राजा आईच॥ ४॥ राजा प्रहस्त॥ ५॥ राजा इंद्र॥ ६॥ राजा अजं जात॥ ७॥ राजा महीपालु॥ ८॥ राजा गंध्रव सेनि॥ ९॥ राजा बिकमाजीत॥ १०॥ राजा महीफतु॥ ११॥ राजा बिमक॥ १२॥ राजा हरिपु॥ १३॥ राजा बिकमा चकु॥ १४॥ राजाभोज॥ १५॥ ता उपरांत नरपंती हेती पतसाही कौन कौन॥ गोरीस्यबुदीन॥ १॥ अलाउदीन॥ २॥ नसीर उदीन॥ ३॥ लोह ठाय मैहे मूद॥ ४॥ बडो महमूद॥ ५॥ सुजे साही॥ ६॥ तिमिर लिंग पात साही॥ ७॥ बबर साही॥ ८॥ हिमाउ साहि॥ ९॥ अकबर साहि॥ १०॥ जहांगीर॥ ११॥ साहि जिहां॥ १२॥ औरंगजेब॥ १३॥ श्री वेद व्यास भाखितं भोगोल पुरान समाप्तं॥ ॥

Subject :—भूगोल का संक्षिप्त वर्णन।

No. 465 (c). Bhūgola Pramāṇa. Leaves—7. Deposited with Thākura Chandrikā Baksa Siṁhaji Jamīdār, Village Khānipura, Post Office Tālāba Baksi, District Lucknow.

Beginning :—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पृथवी भुगोल प्रमाण लिखते । यथा आकाशते वायु उत्पन्न वायु ते तेज उत्पन्न पानी पृथवी अष्ट उत्पन्न ब्रह्माण्ड कोटि द्वि थंभु भये तेहि जल मध्ये विश्नु रहत है विश्नु की नाभि कमल मध्य ब्रह्मा उत्पन्न भये सो ब्रह्मा उवाच किये है पचास कोटि योजन पृथ्वी प्रमाण है पृथ्वी मध्ये सुमेरु परवत है चैारासी योजन उच्च है सोरह योजन पृथ्वी मध्य गड़ो है विस सहस्र योजन यिव विस्तार है सेर थाको आकार सुमेरु है ता सुमेरुके अष्ट सृंग हैं कवन कवन शृंग है हेमवंत शृंग १ नील शृंग २ श्वेत शृंग ३ उच्च शृंग ४ मालिवंत शृंग ५ गंध मदन शृंग ६ महा शृंग ७ एवं अष्टा गति पर्वत ऐक ऐक शृंग कौनना अन्तर है अपना ते ऐक ऐक लक्ष योजन अंतर है ता सुमेर मध्ये पर्वत सुवर्ण मय है आकाश मंदिर है वैदुर्य मणि मुक्ता मय है महा गण गंधर्व पक्ष मुनि परि आत है मालि मान राजा बैठे हैं वैकुंठ महा पुरुष प्रधान पदायक है इति सुमेर विषे शृंग है ।

End :—एक लक्ष योजन १००००० बृहस्पति लोक है अट्ठासी सहस्र योजन ८८००० बृहस्पति लोक को बिंब विस्तार है बृहस्पति मंडल को परि एक लक्ष योजन १००००० बुध मंडल है तीस सहस्र योजन ३०००० बुध मंडल को बिंब विस्तार है बुध मंडल परि एक लक्ष योजन १००००० शनि मंडल है अट्ठासी सहस्र योजन ८८००० शनि मंडल को बिंब विस्तार है शनि मंडल ऊपर येक लक्ष योजन १००,००० राहु मंडल है अठासी सहस्र योजन ८८००० राहु मंडल को बिंब विस्तार है राहु मंडल ऊपर ऐक लक्ष योजन १००००० केतु मंडल है येक सहस्र योजन १००० बिंब विस्तार है केतु मंडल को शनि मंडल कृष्न वर्ण है ताते राहु नाहा दृपि परत है केतु मंडल ऊपर ऐक लक्ष योजन १००००० सप्त ऋषिन को मंडल हैं भिन्न भिन्न साती ऐक ऐक लक्ष योजन १,००,००० अपना अपना मां अंतर है तीस सहस्र योजन ३०,००० बिंब विस्तार है सप्त ऋषि मंडल को । राम राम कृष्न राम राम कृष्न राम राम ।

Subject :—आकाश, वायु, तेज, पानी आदि की उत्पत्ति, ब्रह्मांड ब्रह्मा, पृथ्वी आदि की उत्पत्ति पृथ्वी में सुमेरु पर्वत और उसके शृंगों के नाम व जंबू वृक्ष आदि का वर्णन, पृथ्वी खंड, द्वीप, सप्त द्वीप प्रमाण, सात समुद्र पृथ्वी के रक्ष पालक, अमरावती का विस्तार, यमपुरी, यम नाम, कुबेर पुरी, कुबेर नाम, सूर्य लोक, चंद्र लोक, नक्षत्र लोक, उनका विस्तार बिम्ब विस्तार, दूरी आदि आदि वर्णित हैं ।

No. 466. Bihārīsatasai-kī-Tīkā. Leaves—150. Deposited with Babū Jayamaṅgalarāya, B.A., L.T., Gajīpura City.

Beginning:—सारे जगत के नास करन बारे नगरवन। सो विज तो एक ॥ अनेक जगे बर सने घोट सम जुरिकै इकठे हो के एक साथ हो बरसनने लगी ॥ जब श्री गिरधनै गिरको करपे धारन करिके सुरपत जो है इन्द्र ताको गर्व अत्यंत हर्ष सो हरयौ ये गिरधरनाव भयौ। इहां काकलिंग अलंकार है। काकलिंग सामर्थता। इहां सामर्थता दिखाई ॥ १२ ॥

दोहा। डिगत पांय डिगलात गिर लखि सब ब्रिज बेहाल।

कंप किसोरी दरसिकै धरे लजाने लाल ॥ १३ ॥

इहां सात्युक भाव है श्री राधा जी के दरसतो भयो यह सपी सपी सो कह्यो। पिया दरस सात्विक भयो कर कांपत इह हेत गिरन गिरे ब्रज जन डरत। लखि हरि लाजत चेत। जब निरषो सातुक किया ह्रिया अंग के मांहि। तब सुलजाने हरिवर मति सुपोत लगि जाहि ॥

End:—और ध्यान को पावन लगै जो करै लोक सिधार गीता में यह बचन है यहै अर्थ निर्धार। वारता। यह बात ठीक है राजा प्राक्रम हीन कैां दबावे रोग देह बलहीन को दबावै। पाप ध्यान बल हीन कैां दबावै ग्यानो को नहीं यह दीपका अलंकार है। उपमा अरु उपमेयको इक पद लागे अनने। इत दीपक सो दबाव पद लख्यो सबही थल मांनि ॥ ६४२ ॥

दोहा—बड़े न हुजे गुनन बिनु बिरद बडाई पाय।

कहत धतूरे सो कनिक गहनो गह्यो न जाय ॥ ६४३ ॥

यह प्रस्ताविक है नालायक को बडाई कोई करै सो बृथा उहा कहनो यह भाव को बड़ाई पायकै बड़े नहीं होत। काहु बिरद नै बड़ाई करो झूठो गुन पैसे पैसे और गुन को रहे न।

Subject:—श्रृंगार रस बर्नन तथा अलंकार।

बिहारी के दोहों पर अलंकार सहित ब्रज भाषा मिश्रित टीका गद्य में की गई है। किसी किसी दोहे की टीका पद्य में भी है।

No. 467. Charachā-Sphuṭikā. Leaves—41. Deposited with Śrī Jaina Mandira, Kaṭara Medanipura, Post Office Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—अथ महावीर पुरान से चरचा स्फटिक लिख्यते ॥

प्रथम कुरना धरि मकै अहंत। दूजे सोलहि थावर जंत ॥

तीजे कपोल जानि तिर अंच, चैाथे पीत मनुष्य पद संच ॥ १ ॥

पंचम पद्म स्वर्ग गति लहै। षष्टम शुक्ल मय सिवगहै।
षष्ट लेश्या भेद विचार, सुनहु भव्य मिथ्या व निवार ॥ २ ॥
धारत द्वद न त्यागै कदा, धर्म विवर्जित क्रोधो सदा।
दया रहित परपंची होइ, लेश्या कृष्ण जासु अंग गोय ॥ ३ ॥
मंद बुद्धि परमादो सुणै। निष्ठुर वचन भनै बहु घणै।
है परपंचो कामी घोर। लेश्या नील तासु को धोर ॥ ४ ॥
शोक करै घह दुष्ट सुभाव। पर निंदा निज थुतिव चराव।
इच्छा लुब्ध कु गुरु को सेव। यह कपोल घनो को भेव ॥ ५ ॥

End :—हस्तपिता उपजै फिर धाय।
वृक्ष रूप क्रम-क्रम चढ़ि जाय ॥
जेहि प्रकार कालहि घट जान।
तेहि समान बढ़तो उनमान ॥
॥ दोहा ॥
या विधि जिन मुष कमल रुचि,
ज्ञान पियूषहि पीय।
वम्यो मोह मिथ्यात्व विष,
गौतम विप्र सुधीय ॥
काल लब्धि को निकट लहि,
भाव संवेग बढ़ाय।
विश्व भोग तन लक्ष्मी,
भयो विरक्त सुभाव ॥
संपूर्ण।

Subject :—जैन धर्म के आचरणों पर उपदेश :—

(१) पृ० १ से पृ० १२ तक—षट लेश्या वर्णन, प्रत्येक लेश्या का लक्षण तथा उदाहरण, भव्याभव्य वर्णन, गुण स्थान भेद कथन, स्त्री देह में निगोद वर्णन, अनादि मिथ्यात्व कथन, पचीस दूषण वर्णन। मिश्रित गुण स्थान, वृत गुण स्थान, अवृत गुण स्थान, सत्तावन प्रकृति विधि, बारह व्रत कथन, पंच अनोवृत।

(२) पृ० १२ से पृ० ३७ तक—चार शिक्षा वृत कथन। द्वादश तप, सामयिक प्रतिमा वर्णन, दश प्रकार सम्यक्त वर्णन। सम्यक महात्म्य, मूल गुण वर्णन, श्री महावीर जी के भावांतर वर्णन, त्रयपत्र वर्णन।

(३) पृ० ३८ से पृ० ८२ तक—ग्यारह प्रतिमाओं का वर्णन, प्रतिमाओं के अनुसार उनके धारण करने वालों के पद। पात्रों के अनुसार दान-विधान। सम्यक् दर्शन-कथन। अष्टाङ्ग सम्यक् ज्ञान कथन। त्रयोदश चरित्र कथन,

(श्रावकधर्म) —मुनिधर्म वर्णन, चार प्रकार के ध्यान का वर्णन, उनके भेदोपभेद, तत्त्व निरूपण, अनाहत मंत्र, प्रणव मंत्र, चंद्र रेखा मंत्र, अन्य मंत्र, रूपस्थादि ध्यान वर्णन। अवसर्पिणी तथा उत्सर्पिणी कथन। ग्रंथ समाप्ति ॥

No. 468. Chaudaha-Vidhāna. Leaves—9. Dated in Samvat 1892 or A. D. 1835. Deposited with Radhāvallabha, Village Khairābāda, Post Office Rajepura, District Unnāva (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः अथ चैादह विधान लिख्यते ॥ प्रेम को प्रकाश कैसो आनंद को कंद जैसो। आनंद को कंद कैसो जैसो श्री मदन है ॥ श्री जू को मदन कैसो अमल कमल जैसो कैसो है कमल उदित जैसो मदन है उदित मदन कैसो मोहन सरूप जैसो मोहन सरूप कैसो तुमको कदन है ताको कदन कैसो सोभै सुधाधरि जैसो सुधाधरि कैसो जैसे प्यारी को वदन है ॥ १ ॥ द्वै विधान ॥ सत्या असत्य मान जैसो पुन्य पाप ज्ञान तैसो संत को असंत जैसे धनी निधन सों। उदो अथोर आन देषि गुनी निरगुनी ऊंच ज्यों विशेषहु सो मेघ ज्योंदौं नाना गन सों ॥ सुभी सुम दुष दुष अमल ज्यों ज्यों कलुष सनमुष ज्यों विमुष सो है प्रभुजन सों ॥ सीतल तपत भाती मिलन विछोह काजै तैसदो दिपावै मिलो साथा भूत मनसों ॥ तृतीय विधान ॥ अति रस रसे प्रिया प्रीतम विलोकि थल जल थल न्यारे न्यारे करै देषि भगनी ॥ चकवाक जल तीर सुथर सरीर चीर निसाकर चांत जुदे कीने घोर नगनी मीन जल करै केल प्रभुत अधिक मेल चंदो विलोर सह हारे दुष दगनी ॥ चंद्रमा चकोर दुह पोर फोर डारै मोर मन मोर आत्मा को त्योंदौ नाथ ठगनी ॥ ३ ॥

End :—द्वादस विधान। चांद, वन, तम, भौर, कुहू, मषतून, चोर, छांह, कादि, पुंछ मोर, काजर, अमन जल, कारे, भारे, मदा, मत्त, रैन, कोने, मैन, भ्रात, मृद, निरदोष, सखि, प्रभूति, कलित कल, विषी घटा, पुंज, गुंज, मर, घर, डर, कूआ, सुमिल, भुवन भुज, नौ रविके मंडल, फनों, वन, निस, पशु, नभ, तार, श्याम, अच्छर, दोह, छुव, स्वच्छ, सोहैं कांचियल ॥ त्रतिय दस विधान ॥ मृग, मीन, हय, नट, कंज, अलि, बान, भट, मोह, दीप, उडिचल, खंजन, चकोर हैं ॥ सिसु, जल, ढच, मधु, मृद, मत्त, सिखि चंद, चित, चोर हैं ॥ मोत, चीत, सिसु, घन, पुंज, स्याम, पंथ रत, विषो, जोत, नवनीत, चाहैं चहुंमोर हैं ॥ थल, केल, रित, रस, पांव, मीन, मधु, अलि, कूर, भेद, तेज, फंसि, नेही, मीन जोर हैं ॥ चतुर दस विधान ॥ चक्र तूंबा, दाना, गिर, कुंभ, नारियल, लड्डू, मठ, गुच्छा, गेंद, भव, कंज, तयो है। सर, बोनो, हिम, हरु, सुधा, मठ, पक बर, चित्र, चपा, काम, स्वम, राव, ध्यान, भयो है ॥ निस रूप, चिंत, पक्ष,

भरे, मोती, लता, चक्र, रति, मधु, केल, चिप, लछ, स्वता, पंथी, हैं ॥ सिधु, प्रेम, पुष्ट, स्वंग, अग्य, मत्त, रस, रत्त मोद, गंध गोल, नाग, मूढ़े, सिद्धि, भयो हैं ॥

१४ विधान संज्ञा संपूर्ण समाप्तः सम्वत १८९२ वि० ॥

Subject :—रस आदि कवित्त पृथक पृथक वर्णन ॥

No. 469. Chitrakūta Mahātma. Leaves—10. Deposited with Mahanta Mohanadāsa, (the book was found with) Bābā Pītāmvaradāsa, Village Saunāmaū, Post Office Pariyāvā, District Prātāpagadha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशाय नमः ।

दोहा :—प्रथम गुरुन के चरन रज, बंदौं बारहि बार ।
जा सुमिरे प्रभु पाइये, उतरौ नर भव पार ॥ १ ॥
चरन सरन गुरु देव के, जब लगि पायो नाहि ।
सघनि विपिनि निज माधुरी, क्यौं परसै मन माहि ॥ २ ॥
चित्र कूट गुन कहन को, कोनौ मन उछाह ।
जनक नंदनी कृपा बिनु, कैसे होइ निवाह ॥ ३ ॥
एक पाया विश्वास गहि, करनि कथा मति मोरि ।
चित्र कूट निज धाम को, काहु न पायो थोर ॥ ४ ॥
महा अगम दुर्लभ कठिन, चित्र कूट निज भौन ।
जनक नंदनी कृपा बिनु, कहि धौं पावे कौन ॥ ५ ॥
सब प्रकार गुन हीन हौं, यहै सोच मन मोहि ।
जनक नंदनी कृपा बिनु, जो कछु होइ सो होइ ॥ ६ ॥

End :—प्रगट भई जिहि ठौर तें, शुभ गोदावरि गंग ।
मानौं गिरि तनु धारिकै, बैठो प्रांन पतंग ॥ १०० ॥
गंगा मज्जन करत जे, ते बड़भागी लोग ।
बन के बासी संत जे, हैं सब दरसन जोग ॥ १ ॥
माथे तिलक विराजहीं, गर तुलसी की माल ।
राम चरन मै रति रहै, धरै न दूजे ख्याल ॥ २ ॥
पंगु चहत गिरि वर चढ्यो, कैसे पावहुं पार ।
कृपा होइ रघुवीर की, सहजहि चढ़े पहार ॥ ३ ॥
जो गावै सोवै सुनै, चित्र कूट सु विलास ।
राम कृपा ता संत को, रघुबर पुजवै आस ॥ ४ ॥

इति श्री चित्रकूट महात्म्य संपूर्ण शुभ मस्तु ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ३ तक—मंगलाचरण, चित्रकूट की महत्ता तथा फल, उसकी प्राप्ति के उपाय, जनकनंदिनी के चरणों की महत्ता, कवि का दैन्य आदि। (२) पृ० ४ से पृ० १६ तक—चित्रकूट की विशदता का वर्णन उसके वन सरितादि की शोभा, चित्रकूट-स्थित राम के आवास का वर्णन। चित्रकूट के वन का तप के लिये उपयुक्त होने तथा भक्ति करने का फल। (३) पृ० १७ से पृ० १९ तक—संसार की निस्सारता तथा उसके परित्याग का कथन, भक्ति महात्म्य, चित्रकूट की भक्ति का कथन, चित्रकूट महात्म्य के पठन-पाठन का फल।

No. 470. Dānalilā Leaves—5. Deposited with Paṇḍita Rāmasvarūpa Sarmā, Paṇḍita-ka-Puravā, Mauja Bhadhu, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ दान लीला लिख्यते ॥ दोहा ॥

एक समय श्री राधिका, सब मिलि कीन्ह विचार।
हिल मिल चलिये जमुन तट, हरि संग करहिं विहार ॥
दही मटुकिया सीस पै, चलो सकल ब्रज बाल ॥
जब देखिहैं यह वेष मो, तब छेरिहैं नंदलाल ॥
पंथ हमारो रोकि कै, हंसि कै कहैं मुरारि।
हाथ लकुट द्वादश तिलक, महिमा अमित अपार ॥
जब कहि है मन हरष युत, दान देहु ब्रज नारि।
तब हम हरि सों झगरि हैं, बातन विविध प्रकार ॥

End :—

अरुन नयन हुइ गये, सुनत उपजो रिस भारो।
तनक दही के काज दास, तुम करत हमारो ॥

सुनहु सखा देखत कहा, दधि लूटहु बरजोरि।
सीस मटुकिया फोरि कै जू लेहु हार उर तोरि ॥
ऐसो को जग माहि हार छुइ सकै हमारो।
दही मटुकिया फेरि किते फिरि बचै बिचारो ॥
सो मन अपने समुझि के, छोड़हु गैल हमारि।
मोहन सासु रिसाइ है। जो घर मैं देव बताई ॥
इति श्री दान लीला समाप्तं शुभम् ॥

Subject :—कृष्ण दानलीला वर्णन।

No. 471. Dasa-Avatāra. Leaves—2. Deposited with Paṇḍita Bhāgirathiprasāda of Usakā, Post Office Kaudhaura, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—प्रथमै लीन्ह मीन अवतारा ।
अघथो पै इह संषा सुर मारा ॥
सुक सारद नारद उठि धाय ।
ब्रह्मा वेद चारि मुख गाय ।
दुसरे कमल रूप अवतारा ।
जोगथ वान प्रभु कोटिक मारा ॥
सहस मुष सब हरि गुन गाय ।
पुरंदर पुर मे भरता धाये ॥ २ ॥

End :—नवऐं बद्ध रूप अवतारा ।
परसोत्तम पुर मे जै जै कारा ॥
षसिला मा मगहा सुर मारा ।
जीन पत्र के कीन्ह उबारा ॥ ९ ॥
दसवें अकलंक अवतारा ।
गहा सँभारि जहं जै जै कारा ॥
प्रजा विनासी सगहो मारा ॥
भरथ पंड के भार उतारा ॥ १० ॥
दस अवतार की आरती गैये ।
सुर भक्त मिस फल पैये ॥
सात सुकृत परविंद बनाये ।
इति श्री दसै अवतार संपूरन ॥

Subject :—दश अवतार वर्णन ।

No. 472. (*a*). Dharma-Saṁvāda. Leaves—32. Dated in Samvat 1901 or A. D. 1844. Deposited with Vaidya Rāma-bhūshaṇa, Village Kāmatāpūra, Post Office Etaujā, District Lucknow (Oudh).

Beginning :— औं श्रीगणेशायनमः ॥ अथ धर्म संवाद लिषते ॥ औं-द्वापर विषे कथा होत भई नगर हस्तिनापुर दिल्ली के निकट ता विषे गुरा काल पूछत भई । घेर राजा जनमेजय राजा परीक्षितदा बेटा पांडव दा पोता ॥ हे बैशम्पायन जी ॥ राजा धर्म धेर पुत्र युधिष्ठिर इसका मिलाप और कर होइ है ॥ सो तुम कृपा करके कहो ॥ बैशम्पायनवाच ॥ राजा का वचन सुनकर श्री व्यास देव जी का शिष्य सु है बैशंपायन सो कथा कहता भया ॥ हे राजा तू सुन एक समय सु है देवता एक इन्द्र एक विनायक एक सरस्वती एक गंगा जी एक जमना जी एक गंधर्व एक वन स्वोई सब एकत्र बैठे थे तहां जाइ प्राप्ति

भई पाई । नारद जी हु है विषे नाइ करके नमस्कार करते भया ॥ यह वचन करवेलागो ॥ नारदेर वाच ॥ नारद जी कहते हैं जुदेवता के बीच शंकर जी का नाम है यह ब्रह्मा विस्नु महादेव है तो मृत्यु लोक विषे राजा युधिष्ठिर है । धर्म धर्म का पुत्र है जिसकी त्रलोक विषे कीरति आवती है ॥ सो एसा राजा न कोई हुवा है और न आगे होइगा ॥

End :—अतीतो वाच । हेराजा जो मै सति कहिया है मेरे ताई दोष नाहीं देना ॥ मेरे ताई दोष नाहीं देना ॥ असाढ़ मैं कातिक मैं सावन मे वैसाख मैं असनान दान करै हे राजा जो पंचो है ॥ जुधिष्ठिरोवाच ॥ हे अतीत तू जो है सो मेरा देह है मै जहां सों आवे जाणि ॥ मेरा जो गुन था गइया पर मैं सुफला होइया ॥ तेरा दरसन करके ॥ यह तो अतिथ देव है तेरा चंडाल का रूप मेरे घर विषे आइया है हे अतीत इकेता तू इंद्र है इकता ब्रह्मा है अथवा विस्नु है तू जो है चांडाल का रूप धार करे मेरा पिता आया है ॥ धरमो वाच ॥ हे पुत्र नाम धन है सवना शास्त्र व जानने वाला है हे राजा मैं तेरा पिता है यह तू पुत्र है हे राजा तू सति जानु हे राजा तू साधु है तेरा जन्म धन है तेरा बंस धन है तेरा कुल धन है तेरा जस मैं सुणिया सो स्वर्ग विषे तौं तेरा दरसन करने तेरे घर विषे आया हैा ॥ जिस अर्थ जोग पुन करदा है सो देवता तेरे घर विषे आया हों ॥ जुधिष्ठिरोवाच ॥ आजु मेरा जन्म सुफल है आजु मेरी तपस्या सुफल है आज मेरा जन्म भी धन है तेरा दरसन कीता है मै पाप ते मुक्ति होइया हे आर जिाने शोभ कर्म है तिना ते मुक्ति होइया है ॥ धर्मो वाच ॥ हे राजा जो तेरी पारवल बहुत होवै । हे पांडव पुत्र तू चिरंजीव होइ है संवाद करके यह राजा धर्म देव-लोक विषे प्रापति भया धर्म करके सत्रु भी दूर होता है ॥ धर्म करके ग्रह भी दूर हो जाता है जिथ्थे धर्म उथ्थे दया है ॥ इति श्री धर्म संवाद संपूर्ण शुभम मिती चैत्र सुदी तेरस संवत १९०१ विक्रमी जे राम राम राम राम राम राम राम राम ॥ वि०

Subject :—नारद वैशंपायन का संवाद, धर्मराज युधिष्ठिर की महिमा का वर्णन ॥ ॥

No. 472 (*b*). Dharmasambāda. Leaves—32. Dated in Samvat 1767 or A. D. 1710. Deposited with Paṇḍitā Rāmanātha Misra, Village Imaliyā, Post Office Sadārapura, District Sitāpur (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ धर्म संवाद लिष्यते ॐ द्वापर विषे कथा होती भई नगर जो है हस्तिनापूर दोलों के पास ते विषे शुभ काल

पूछता भई। ॐ राजा जन्मेजय राजा परोछित का बेटा पांडवा दा पोता है वैशंपायन जो। राजा धर्म पर पुत्र युधिष्टिर इसका मिलाप क्यों कर होइ है सो तुम कृपा करके कहो ॥ वैशंपायन उवाच। राजा का वचन सुनि कर श्री व्यासदेव जी का शिष्य जु है वैशंपायन सो कहत भया कथा। हे राजा तू सुन ॥ एक समै जु है देवता घर इंद्र घर मुनीश्वर घर ब्रह्मा घर शिव घर विश्नु घर सूरज घर चंद्रमा घर विनायक घर सरस्वती घर गंगा जी घर गंधर्व घर बनस्पती है सब एकत्र बैठे थे तहां जाइ प्रापति भई था ॥ नारदा जी जु है रिषी जाइ करिके नमस्कार करते भइया ॥ घर वचन करबे लागे ॥ नारदो वाच ॥ नारद जी कहते हैं जु देवता के बीच शंकर जी का नाम है घर ब्रह्मा विश्नु महादेव है तो मृत्युलोक विषे राजा युधिष्टिर है धर्म धर्म का पुत्र है जिसका त्रिलोक विषे कीरत गावती है सो ऐसा राजा ना काेइ होइदा घोर न होइगा ॥

End :—युधिष्टिरो वाच ॥ हे पतीत तू जो है मेरा देह है मै कहां सो पावैगामि ॥ मेरा जोगु वृथा गइया ॥ पै मैं सुफला होइया ॥ तेरा दरसन करके घर तो प्रतिष देव है तेरा चंडाल का रूप मेरे घर विषे घाइया हैा हे पतीत इकेता तू इंद्र है इकेता तू ब्रह्मा है घथवा विश्नु है जो तू है चंडाल का रूप धार कर मेरा पिता घाया है ॥ धर्मो वाच ॥ हे पुत्र नाम धन है सब ना शास्त्र तू जानने वाला है हे राजा मैं तेरा पिता हैं घर तू पुत्र है हे राजा तू सति ज्ञान है राजा तू साच है तेरा जन्म धन्य है तेरा बंस धन्य है तेरा कुल धन्य है तेरा जस मैं सुणिया था सो स्वरग विषे मैं तेरा दरसन करबे तेरे घर विषे घाया हो जिस घर्थ जोम पुन्य करदा है सो देवता तेरे घर विषे घाया है। युधिष्टिरो वाच ॥ घाज मेरा जन्म सुफल है घाज मेरी तपस्या सुफल है घाज मेरा जन्म भी धन है तेरा दरसन कीना है मै घाप ते मुकि होइया घोर जितने लोभ कर्म हैं तिना से मुकि होइया है ॥ धर्मोवाच ॥ हे राजा जो तेरी घारबल बहुत होवै। हे पांडव पुत्र तू चिरंजीव हुइ है। संवाद करके घर राजा धर्म देव लोक विषे जाइ प्रापति भया ॥ धर्म करके सत्रु भी दूर होता है जिथ्थे धर्म उथ्थे दया है ॥ इति श्री धर्म संवाद संपूर्णम् शुभ मस्तु लिषत बनवारी लाल पाठक फैतेपुर निवासी संवत् १७६७ वि० ॥ राम राम राम राम राम राम राम ॥ श्री शंकर की जैय होय ॥

Subject :—महाराज युधिष्ठिर घोर धर्म का संवाद ॥

No. 472(*c*). Dharmasamvāda. Leaves—30. Dated in Samvat 1772 or A. D. 1715. Deposited with Rāyalāla, Village Ramuāpura, Post Office Dhaurahara, District Kheri (Oudh)

Beginning :—ॐ श्री गणेशायनमः ॥ अथ धर्म संवाद लिख्यते श्री द्वारा-पुर विषै कथा होत भई ॥ नगर जो है हस्तिनापुर तिनो के पास ता विषै एक समय पूछता भई। ये राजा जनमेजय राजा परीक्षत का बेटा पाँडवों का पोता है वैशंपायन जी राजा धर्म अरु पुत्र युधिष्ठिर इनका मिलाप क्यों कर होइ है ॥ सो तुम कृपा करके कहो ॥ वैशंपायन उवाच ॥ राजा का वचन सुनि करि श्री व्यासदेव जी का शिष्य जु है वैशंपायन सो कथा कहत भया ॥ हे राजा तू सुन। एक समय जो है देवता अरु इंद्र अरु मुनीश्वर अरु ब्रह्मा अरु रिष्य अरु विष्नु अरु सूरज अरु चंद्रमा अरु विनायक अरु सरस्वती अरु गंगा जी अरु जमुना जी अरु गंधर्व अरु वनस्पती ई सब एकत्र बैठे थे तहाँ आय प्रापति भई था नारद जी जो है रिषी आइ करके नमस्कार करते भये अरु वचन करने लागे। नारदोवाच ॥ नारद जी कहते हैं जो देवता के बीच शंकर जी का नाम है अरु ब्रह्मा विष्नु महादेव है तो मृत्यु लोक विषै राजा युधिष्ठिर है धर्म धर्म का पुत्र है जिसका त्रैलोक विषै कीरत गावतो है सो ऐसा राजा न कोई हुआ है न कोई होवेगा ॥

End :—युधिष्ठिरोवाच। हे पतीत तू जो है सो मेरा देह है मैं जु हों सो पावै जानि ॥ मेरा जो गर्व था गया। पर मैं सुफल होइया तेरा दरसन करके अरु तो पतित देव है तेरा चंडाल का रूप है मेरे घर विषै आया है हे पतीत इकेला तू इंद्र है इकेला ब्रह्मा है अथवा विष्नु है तू जो है चंडाल का रूप धार करे मेरा पिता आया है ॥ धर्मोवाच ॥ हे पुत्र नाम धन है धन है सब ना शास्त्र जानने वाला है हे राजा मैं तेरा पिता अरु तू पुत्र है हे राजा तू सत ज्ञान है राजा तू साध है तेरा जन्म धन है तेरा धर्म धन्य है तेरा कुल धन्य है तेरा जस मैं सुनि था सो स्वर्ग विषै मैं तेरा दरशन करने तेरे घर विषै आया हों ॥ जिन अर्थ आप मन कर रहा है सो देवता तेरे घर विषै आया है युधिष्ठिरो-वाच ॥ आज मेरा जन्म सुफल है आज मेरी तपस्या सुफल है आज मेरा जन्म भी धन है तेरा दरशन कीता है मैं पाप ते मुक्त हुआ हूँ और जितने लोक कम हैं तिनाते मुक्त हुआ है। धर्मोवाच ॥ हे राजा जो तेरी आग्यल बहुत होवै हे पांडव पुत्र तू चिरंजीव हुट है ॥ संवाद करके अरु राजा धर्म देव लोक विषै जाइ प्रापति भया। धर्म करके सत्र भी दूर होता है धर्म करके अह भी दूर होता है जिये धर्म उधे दया है ॥ इति श्री धर्म संवाद संपूर्णम् फाल्गुन मास शुक्ल पक्षे द्वादश्याम संवत १६७२ वि० ॥

Subject :—महाराज युधिष्ठिर और धर्म का संवाद ॥

No. 472(d). Dharmasaṁvāda. Leaves—30. Deposited with Mannilāla Gaṅgāputra Tivārī, Village Misarikhā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning:—ॐ श्री गणेशायनमः ॥ अथ धर्म संवाद लिख्यते ॥ जे द्वापुर विषे कथा होत भई । नगर जु है हस्तिना पुर दिल्ली के पास ति विषे गुरु कोल पूछत भई । यो राजा जनमेजय राजा परीछित दा बेटा ॥ पांडवा दा पोत्रा ॥ हे वैशंपायन जो राजा धर्म अरु पुत्र जुधिष्ठिर इस का मिलाप क्यों कर होइ है ॥ सो तुम कृपा करके कहु ॥ वैशंपायन उवाच ॥ राजा का वचन सुनि करि श्रीव्यास देव जी का शिष्य जु है वैशंपायन सो कथा कहत भया ॥ हे राजा तू सुन ॥ एक समै जु है देवता अरु इंद्र अरु मुनीश्वर अरु ब्रह्मा अरु रिष्य अरु विष्नु अरु सूरज अरु चंद्रमा अरु विनायक अरु सरस्वती अरु गंगा जी ॥ अरु जमुना जी ॥ अरु गंधर्व, अरु वनस्पती ॥ ए सब एकत्र बैठे थे तहां जाइ प्रापति भईया ॥ नारद जी जु है रिषी । जाइ करि के नमस्कार करते भइया ॥ अरु वचन करने लागी । नारदो वाच ॥ नारद जी कहते है जु देवता के बीच शंकर जी का नाम है । अरु ब्रह्मा विष्नु महादेव है तो मर्त्य लोक विषे राजा जुधिष्टर है । धर्म धर्म का पुत्र है । जिसका त्रिलोक विषे कीरति गावती है । सो ऐसा राजा न कोई आगे होइआ है । न कोई होवेगा । कैसा है राजा जुधिष्टर । सत्यवादी है ।

End:—जुधिष्टिर वाच ॥ हे अतीत तू जो है सो मेरा देह है मैं जहां सो पावे आखि । मेरा जो सुख था गइया ॥ पर मैं सुफला होइआ तेरा दरसन करके ॥ अरु तो अतिथ देव है ॥ तेरा चंडाल का रूप मेरे घर विषे आइया है । हे अतीत इकेला तूं इंद्र है ॥ इकेला ब्रह्मा है अथवा विष्नु है । तू जो है चंडाल का रूप धार कर मेरा पिता आया है ॥ धर्मो वाच ॥ हे पुत्र नाम धन है धन है ॥ सगला शास्त्र तू जानने वाला है । हे राजा मै तेरा पिता हूं अरु तू पुत्र है । हे राजा तू सत जान । हे राजा तू साथ है तेरा जन्म धन है । तेरा वंस धन है । तेरा कुल धन है तेरा राज समै सुखियांसो स्वरग विषे मैं तेरा दरसन करने तेरे घर विषे आया हूं । जिस अर्थे जोग धन करता है सो देवता तेरे घर विषे आया है ॥ जुधिष्टिरो-वाच । आज तेरा जन्म सुफल है । आज तेरी तपस्या सुफल है । आज तेरा जन्म भी धन है । तेरा दरसन को ता है । मै पाप ते मुक्त होइया ॥ और जितने लोग कर्म है । तिना ते मुक्ति होइया । धर्मो वाच ॥ हे राजा जो तेरी आरबल बहुत होवे । हे पांडव पुत्र तू चिरंजीव होइ है । संवाद करके अरु राजा धर्म देव लोक विषे जाइ प्रापित भया । धर्म करके सत्रु भी दूर होता है ॥ धर्म करके ग्रह भी दूर होता है । जिवे धर्म उप दया । इति

Subject:—धर्म उपदेश ।

No. 472(c). Dharmasaṁvāda. Leaves—21. Dated in Saṁvat 1897 or A. D. 1840. Deposited with Ṭhakura Vijayaba-

hādura Simha of Saitāpura, Post Office Gaḍavara, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ अथ धर्म संवाद कथा मध्यदेश भाषा टीका लिख्यते ॥ जन्मेजय उवाच ॥ जन्मेजय नामा राजा वैशम्पायन ऋषि के पास पूछते थे द्वापर युग विषे उत्पन्न हुवे हस्तिनापुर विषे महा बलवंत जन्मेजय नामा गुरु वैशम्पायन ऋषि के पास पूछते थे ॥ १ ॥

जन्मेजय उवाच ॥ द्वापरे च समुत्पन्नै नगरे हास्तिनापुरे । गुरुं पृच्छौ राजा जन्मे जयो महाबलः ॥ १ ॥ कथं चिना गुरुयेण धर्म राजा युधिष्ठिरः एव सर्वे प्रकारेण कथमम्व महामुने ॥ २ ॥

धंन धर्म दिनादेह काव बिना ॥ धर्मराजा जो है युधिष्ठिर ते किस तरह से पूछते थे सर्व प्रकार सें हे महामुने मेरो वैशंपायन ऋषि विस्तार पूर्वक मेरे पास कहो ॥

॥ २ ॥

End:—देवलोको गतोयन्नं पांडुमाश्चिरजि विनः
धर्मेण हन्यते व्याधिदर्मेण हन्यते ग्रह ः ॥ ११८ ॥
धर्मेण हन्यते शत्रु यतोधर्मस्ततो जयः
यः पठेद्धर्म संवादं श्रृणुयाद्वा समाहितः ॥
सर्वे पाप विनि मुक्तः परमं समाप्नुयात ॥ ११९ ॥

धर्मराज देव लोके गच्याः स्वर्ग लोक को जावे थे पांडव चिरजीव होय धर्म से पद मोन होवे धर्म सेः शत्रु वस होति है जहां धर्म होता है तहां जय होता है जो मनुष्य धर्म संवाद का पाठ करता है सो मनुष्य जो मनुष्य सुनता है सर्व पाप विनिर्मुक्तो सर्व पाप से मुक्त होय के परम पद को प्राप्त होता है ॥ मनमें निश्चय करके कथा को श्रवण करै संपूर्ण तद फल होता है ॥

इति धर्म संवाद सत्य तिलकं कथायाः भाषा टीका समाप्ताः संवत् १८९७ शाके १७६२ चैत्रमास षष्ठायमां तिथौ बुधवासरे प्रथम प्रहरे द्वादशारे चतुर्थ प्रहरे लिखितं शुभम् समा समा समा समाप्तम् समाप्तम् । * *

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० १८ तक— प्रस्तावना, धर्म का चांडाल रूप धारण करना । हस्तिनापुर जाना व चांडाल और भीम संवाद, चांडाल शब्द को व्याख्या, भीम का आश्चर्यान्वित होकर युधिष्ठिर को संवाद देना ।

(२) पृ० १९ से पृ० २६ तक— युधिष्ठिर के सन्मुख चांडाल द्वारा पुनः चांडाल शब्द को व्याख्या और जीवन का मूल तत्व समझाना ।

(३) पृ० २६ से पृ० ४२ तक—वर्ण की व्याख्या और महत्तादि का वर्णन।

No. 473. Dohāsāra. Leaves—21. Dated in Samvat 1913 or A.D. 1856. Deposited with Bābū Sudarsánasiṁha Raīsa and Tāllukedāra of Sujākhara, Post Office Lakshmīkāntaganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

श्री गणेशायनमः ॥ अथ दोहा सार ॥

Beginning:— ॥ दोहा ॥

नयन निकट कज्जल बसै, पै दरपन दरसाय।
त्यों साधुन सत संग बिनु, नाहिन और उपाय ॥ १ ॥
सबहीं घट में राम है, ज्यों गिरि सुत में ज्योति।
ज्ञान गुरु चकमक बिना, कैसे परगट होति ॥ २ ॥
है हिय में पैयत नहीं, करियत बहुत उपाइ।
जैसे अपनी देह की, छांह गही नहि जाइ ॥ ३ ॥
करि घूंघट जग मोहई, बहुतक लाय लोग।
दरसन जिन्है देषाइयो, जेते दरसन जोग ॥ ४ ॥
अलप एक बहुवेष धरि, घट घट रह्यो समाइ।
सायनि प्रगट्यो अधिक अति, ताते लष्यो न जाइ ॥ ५ ॥
घट घट में राधारमन, यामें नहीं विवेक।
जैसी फूटी आरसी, षंड षंड मुष एक ॥ ६ ॥
जब सुझ्यो तब अंध ते, अब अंधे तब सुझ।
इतके भये न उत्त के, आव सम को बूझ ॥ ७ ॥
रामँ नाम को लेस नहि, रह्यो विषय लपटाइ।
घास चरै पसु आप मुष, गुर गुलियाये पाइ ॥ ८ ॥

End:—घरो घरी घरियार की, टु कछु समु भयो चित्त।
आयु घटै जोवन घसै, यह समुझावै मित्त ॥
बहुत घटो थोरो रह्यो, ताहो मांझ घटाइ।
याको इतनो पर कहा, को काहू के जाइ ॥
हम परदेशी पाहुने, दिन दिन औरै गांव।
मर पुजु जानें आपुनो, हू है कौने ठांव ॥
कहि काल्ह कैसो बने, काल धरो सिर केस।
ना जानो कद मारि है, का घर का परदेस ॥

दाम संचि लै लखिनी, उदै चलितै राज।
सूसन जे निज मरन है, ते धकै नहिं काज॥
क्यों छूटै इहि लाज परि, कित कुरङ्ग अकुलाइ।
ज्यों ज्यों सुरभि भगौ चहै, त्यों त्यों उरझति जाइ॥
जुमला गुड़ी उड़ावतो, मनको करतो डोरि॥
धारे लहरि जु प्रेम को, चित कमला कित बोरि॥

इति दोहासार समाप्तम् शुभ मस्तु दशघत् गोपाल लाल कायस्थ संमत् १९१३ सन १२६३॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—शान्ति सम्बन्धी दोहे। (तुलसीदास जो के बनाये हुए)। सान्त्व-भाव, जेष्ठा। लगन। नेत्र। प्रेम लगन भाव। बिहारी रहीम, महमद कुतुब, रसलीन, कबीर, जानिल, तुलाराम, संमन आदि कवियों की कवितायें।

(२) पृ० ९ से पृ० ४० तक—अङ्ग भाव (कटि) रोमावली, कुच, अलक, तिलक, संग भाव, नव भाव, दूती के वचन नायिका से सखी वचन नायिका के प्रति, रसतके भाव, नायिका भाव, नैन विरह भाव, साधारण विरह भाव, मिलन भाव, मन प्रकृति भाव, सज्जन एवं दुर्जन भाव, शठ भाव, कपट भाव, शिक्षा भाव, ज्ञान भाव, प्रस्ताव भाव, स्फुट भाव, मन शिकार भाव, हास्य भाव, चातक, चकोर, भ्रमर, पतङ्ग, चन्द्रोदय, मन विश्वास एवं गूढ़ भाव।

(३) पृ० ४० से पृ० ४२ तक—चौबोला भाव, विरोध भाव, वैराग्य भाव।

No. 474. Drashṭāntasāra-ke-doha. Leaves—12. Dated in Samvat 1891 or A.D. 1834. Deposited with Pṇḍita Lakshmī-kānta Kothīval of Basu āpura, Post Office Lakshmīkānta-ganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning.—श्री गनेसायनमः॥ अथ दृष्टान्त सार के दोहा लिख्यते॥

जो जाको भति प्रिय लगै। सो तिहि करत बषान।
जैसे विष कौ विषमयी। मानत अमृत समान॥ १॥
कहा होत उद्यम किये। जो प्रभु नहि अनुकूल।
जैसे निपजे खेत को। सलभ करत निरमूल॥ २॥
जाही ते कछु पाइयत। ताको करियत आस।
पाली सरवर पर गये। कैसे मिटत पियास॥ ३॥
जो जाको होइ के रहै। सो तिहि पुरवत आस।
स्वात बुंद बिनु सकल घन। चातक मरत पियास॥ ४॥

रस अनरस समुझै नहीं । पढ़ै प्रेम की गाथ ।
बिच्छू मंत्र न जानहीं । सर्पहि डारत हाथ ॥ ५ ॥

End:—जहां बसै गुनवंत नर । ताकी सोभा हाेति ।
जहां धरै दीपकु तहां । निश्चय करै उद्दोति ॥१०४॥
भले बुरे को एक सो । मूढ़न के परतीत ।
गुंजा सम तौलत कनक । तुला पला की रीति ॥१०५॥
सेवक साहिब के बढ़ैं । बढ़ैं बढ़ाई चाज ।
जेता ऊंचे जल बढ़ैं । तेता बढ़ै सरोज ॥१०६॥
धनी होत निरधन कहुं । निरधन तै धनवान ।
बढ़ी होति निसि सिसिर रितु । ज्यौं ग्रीषम दिनमान ॥१०७॥
जहां सनेही सो रहत । भ्रमत भ्रमत मनु धाइ ।
फिरत कटोरी मंत्र की । चोर हिये ठहराइ ॥१०८॥

इति श्री दृष्टान्त सार के दाेहरा संपूर्ण ॥ फगुन सुदी ५ संवत् १८९१ ॥
॥ मुकाम इन्द्रगढ़ ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० २४ तक—दृष्टान्त संबंधी १०८ दाेहाें का संग्रह ॥

No. 475. Dvādaśa Rāśi Vichāra. Leaves—8. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning:—श्रीमते रामानुजाय नमः अथ बृहस्पति कौ द्वादश रासि को विचार । मेषरासि गुरु आवा ॥ पारवती पूछे महादेव कहै ॥ सने को लछन मेष रासि गुरु ॥ वर्षा हाेइगी दिन ४९ ॥ आसाढ़ दिन ११ ॥ श्रावन दिन १८ ॥ भाद्र दिन १२ ॥ अस्वन दिन ५५ कातिक ३ एन वर्षा उचिते माघ चिकि होइगी दिन ३५ सबन महंगे हाेइगे बैसाख जेष्ठ असाढ़ श्रावण भाद्रपद असनी का कार्तिक चना दाम ५ पसेरी होम दाम—५ पैतालिस दाम ५ पसेरी जाड़ रही १६ दाम ५ पसेरी इति मेष रासि गुरु लक्षण समाप्तं । अथ वृष रासि गुरु लक्षणमाह यदि पूछे पार्वती कहै महादेव कहै समै के लक्षन बरखा हाेइगी दिन ६३ आसाढ़ दिन ५ श्रावन दिन २५ भादो दिन १५ अस्वनदिन ८ कार्तिक दिन ३ पैाखदिन ४ एवं बरखा उच्यते ॥ समैा मालव के देसा हाेइगो असोहनी हाेगा बाबनु महवा होइगो अस्वन में चिकी हाेइगी मजीठ टंक ३ तीनि पसेरी हाेइगी कपास सेतिस दाम ३१ पसेरी मजगज टंक ३ गज हाेइगी हरदी टंक ३ अपसरै हाेम पोर वस्तु सरवस्त हाेइगी ।

End:—अथ कुंभ रासि गुरु उच्यते । यदि पूछति पारवती कहै महादेव समै का लक्षनु बरखा हाेइगी दिन ५५ आसाढ़ दिन ९ श्रावन दिन २५ भादोदिन ५

आस्वन दिन ५ कार्तिक दिन ५ पुष दिन ३ मंतु महतो होइगो गेहू दाम १५ पसेरी १५ टेलु टंक सेर। कांसो तांबो महगो होइगो सोनो मासो १ गजो टंक एकइ होयगो इति कुंभरासि गुरुमाह। अथ मीन रासि गुरु उच्यते यदि पूछति पारवती कहै महादेव समै को लछनु बरखा होइगो दिन ४५ आसाढ़ दिन १० श्रावन दिन २५ भाद्र दिन २ आस्वन दिन ३ कार्तिक दिन ५ पुष दिन १५ इति बरखा। खंड खंड के लोग डोलेंगे उत्तर देस नरपति परेंगे मन सासतु छाडेंगे। बहुत लोग सन्तुष्ठ हेंगे। पनको दुकाल होइगो। उत्तर देस परजा गिरहिगे मीन मै हनुमन नाटक को मतो कहतु है। तेहि ते सुख देखतहो बनै कंहु देखन होइ न सुना होइ।

इति वृहस्पति कांड समाप्तं ॥ १२ ॥

श्रीमते रामानुजायनमः

No. 476. Ekādaśī Mahāphala. Leaves—12. Deposited with Lāla Gajādhara Prasāda, Village Kuraḍihā, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—अथ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री स्याम चरण दास जो सहाय ॥

श्री गुरु गनेश जो को सिर नाऊं। तो इकादसी चरित सुनाऊं ॥
सावधान ह्वै सुनियो भाई। कहै सुनै जो मुक्ति दिवाई ॥
रुकमांगद राज पघटाई। ऐसो ग्यास जगत में पाई ॥
सूरज वंशी राजा भयो। मनों धर्म फल ऊपर छायो ॥
पंचा नगरी तासु दुहाई। छटा घेर हर पर्म सुहाई ॥
सुषी लोग सब होवे जामें। दुष दालिद्र पावै नहिं जामें ॥
परजा सुषी धर्म सब करैं। आनंद मंगल सबदिन सरैं ॥
एक समय बसंत रितु आई। ले राजा कों अति लगी सुहाई ॥
रानो सहित बाग में गये। फूले तरुवर देषे नये ॥

× × × ×
× × × ×

End:—चलि के अवधे सुर गये, जहं बैठे देव अलेष।
कपट बांहि महि लई नारायन, करि ब्राह्मण को भेष ॥
एक पुत्र बिनु जग अंधियारो, डूबे राज तुम्हार।
गया पिंड को भरिहै राजा, को करै पित्र को काज ॥
छांड़ि वित्र मेरो बांहि, धर्म कित नार लगावै।
मांगि दच्छिना लेउ, और तेरे मन भावै ॥

देखो सत्य डिगाम कैं, ध्यान दूजो भाव।
तब प्रभु धरो चतुर्भुज मूरति, दरसन दये बनाय ॥
जो या कथा सुनै अरु गावै, नरक लोक नहिं जाव।
धनि रानी अमरावती, धनि रुक्मांगद राव ॥
क्यों न अजुध्या तरैई, जहं रुक्मांगद राज।
इकदशी प्रताप तें, पायो बैकुंठ को बास ॥

अथ इकादसी महाफल ॥

Subject:—पृ० १ से पृ० २३ तक—एकादशी महाफल। मंगलाचरण। सूर्यवंशी राजा रुक्मांगद के राज्य का सुख वैभव वर्णन। राजा का सपत्नीक बसन्त ऋतु में अपनी वाटिका में जाकर सुखानुभव करना। रानी का माली को सब पुष्पों को राजप्रसाद में पहुंचाने की आज्ञा। माली का एक भी पुष्प न लेआकर, चोरी की कथा सुनाना। राजा का क्रोधित होकर उसे दंड देने की आज्ञा। दूसरे दिन माली का एक स्त्री द्वारा पुष्पों की चोरी की सूचना देना। दूसरे दिन राजा का रंभा को जा पकड़ना और उसका सब समाचार सुनना। एक रजक-स्त्री के एकादशी को अनशन व्रत (क्रोध से) करने के पुण्य से रंभा का विमान स्वर्ग पर चढ़ जाना देखकर उक्त व्रत पर राजा की श्रद्धा। सब प्रजा सहित राजा का व्रत करना। सुर, देव तथा यम का प्रलाप। मोहिनी का व्रत भंग करने का प्रण करके राजा के राज्य में आना और उसका छलना। एकादशी व्रत का मोहिनी द्वारा निषेध। राजा का परिताप, मोहिनी का उसके पुत्र का शीश मांगना। पुत्र का प्रसन्नता-पूर्वक स्वीकृति देना। भगवान का विप्र वेश में प्रवेश। राजा का सत्य से न डिगना। भगवान का प्रसन्न होकर चतुर्भुज रूप दिखाना। राजा की प्रशंसा। एकादशी कथा श्रवण फल।

No. 477. Gaṇeśavrata-Kathā. Leaves—14. Dated in Samvat 1870 or A. D. 1813. Deposited with Seṭha Maganirāma Saudāgara, District Kherilakhimapura (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ दो० ॥ बंदि चरण अरबिंद के हरिहर गिरजहि मनु लाइ। सैल सुता सुत की कथा कहौं सुनौ चितु लाई ॥ दो० ॥ राम कृष्ण भ्रातन सहित श्री गुरु कामिनि निज धाम। बुद्धि बढ़ावत सकल मिलि पुनि पुनि करौं प्रणाम ॥ कथा कहौं गणनाथ की पार उतारौ वोर। बुधि हीन निज जानि कै सुमिरौं तनय समीर ॥ युधिष्ठिरो वाच ॥ चौ० ॥ सुनहु कृष्ण देवन के देवा। निगम सेष विधि पाव न भेवा ॥ कैसे प्रभु तुम दीन

दयाला। सदा करहु दासन प्रतिपाला॥ विपत हमारि विलोकहु स्वामी। कृपा सिंधु तुम अंतर जामी॥ छल कीन्हो कुरु जोधन राजा। जीति लियो मांह राज समाजा॥ अनुज समेत सुवति संग लाये। कानन फिरत दुसह दुष पाये। तेहित प्रभु विनवैा करजोरी। केहि विधि पाउब राज वहोरी॥ श्री कृष्णो-वाच॥ कृष्ण कहा सुनु वचन नरेशा। तुव हित लागि कहैां उपदेशा॥ पूजहु गणपति कहं चित लाई। जेहि पूजे सब दुख मिटि जाई॥ विघन हरन है आकर नामा। तेहि पूजे पैहो विश्रामा॥ दोहा॥ कृष्ण वचन सुनि धर्म सुत बोले पद सिर नाइ। गणपति को है नाथ मोहि कहिये कथा बुझाय।

End:—दोहा॥ यहि विधि द्वादस मास को कही भूप मनु लाइ। विधि सो पूजहु गणपतिहि सर्व संकट मिटि जाइ। चौ०॥ यह सुनि धर्म तनय सिर नावा। हरि पद की रज नेत्र लगावा॥ जेहि विधि कहेउ कृष्ण व्रत रीती तेहि विधि राजा कीन्ह सप्रीती॥ गणपति की भइ कृपा अपारा। मारि सत्रु कीन्हा संहारा॥ सुष सो राज्य मही पर कीन्हा। सब गणपति की दया लषि लीन्हा॥ जो गणेश को व्रत चित लावै। मन वांछित फल सो नर पावै॥ रिद्धि सिद्धि धन धेनु अपारा। धरनि धाम सुष संपति दारा॥ नारी पुरुष करै व्रत कोई। सकल सिद्धि फल पावै सोई। जो यह कथा सुनै जो गावै अंत काल सुर पुर सुष पावै। इति श्री भविष्योत्तर पुराणे अंग कृते भाषा विरचिते कृष्ण युधिष्ठर संवादे हर गौरी सुत गणेश व्रत समाप्त शुभ मस्तु आश्विन मासे कृष्ण पक्षे तिथैा चैाथि लिषतं पोथक श्री पाल मिश्र संकल दो। संवत १८५० वि०॥ श्री राम राम राम सीताराम॥ श्री गणेशायनमः सदा गंगा जी की जैय हो॥ श्री कृष्णायनमः॥

Subject:—गणेश जी की उत्पत्ति, महिमा और व्रत फल वर्णन।

No. 478. (a) Garbhagitā. Leaves—32. Dated in Samvat 1767 or A.D. 1710. Deposited with Paṇḍita Rāmanātha Misra, Village Imaliyā, Post Office Sadārapur, District Sītapur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ अथ गर्भ-गीता लिष्यते॥ अर्जुनोवाच॥ ॐ अर्जुन श्री कृष्ण भगवान पास पूछता है॥ श्री कृष्ण जी उत्तर देता है श्री कृष्ण जी की आज्ञा है जो कोई गर्भ गीता का पाठ सुनै प्रेम सहित तिसके निकट जम किंकर आवे नहीं वचन है श्री कृष्ण भगवान जी का श्री अर्जुन संवाद करते हैं पुन्य पाप विचारते हैं जो कोई इहु वचन पाठ सुनै कमावै पर रहते रहै तो मुक्ति होइगा॥ श्लोक॥ गर्भवासं जरा मृत्यु किमर्थं भ्रमते नरः किमर्थं रहिते जन्म कथं कस्य जनार्दन॥ टीका॥ अर्जुन पूछता है श्री कृष्ण जी गर्भ के विषे जो प्राणी दोष ते आवता है तब उसको जरा

मृत्यु का दोष लागता है अरु यह कौन अर्थ है जिस अर्थ ते जन्म रहत होइ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ श्री कृष्ण जी कहता है हे अर्जुन यह जो मानुष है सो अंध मूढ़ है संसार मी प्रीति करति नाना बहुत प्रीति है आठ पहर उसही प्रीति माल लोभ रहत है ॥

End:—श्री भगवानुवाच ॥ हे अर्जुन गुरु के वचनो ते विमुष है सो कुत्ते को बराबर है कोई गुरु के वचनो को मानता नाहीं सो वैस्नो नाहीं ॥ जगत पर धोपी चंद है जो कोई गुरु के धर्म ते विमुष है सो मेरा भगत नाहीं ॥ हे अर्जुन जो कोई गुरु मुष होइ कर राम नाम सि-रेगा सत गोत्र वो एकअसी पितरों तारेगा ॥ औ जो मेरा भगत नित प्रति करेगा सो वैकुंठ जायगा ॥ हे अर्जुन अधोगत मनुष्य को शरीर को कूकर भी नाही खातो है ॥ और पितरों को पिंड भी श्राद्ध दिये ना पावै ॥ जो उन पुरुष को स्वर्ग लोक के कर्म किया होइ तौ भी स्वर्ग ना पावै ॥ हे अर्जुन ब्राह्मण क्षत्री वैस्य सूद्र अरु होर लोक भी गुरु देषिया बिना सो बार बार जन्म पावैगो ॥ हे अर्जुन भगत बारंबार न ते ऊपर हैं प्रधान अरु केशव नारायण तैंतिस कोटि देवता के ऊपर प्रधान है एक भवना व्रता के ऊपर हर दिन एकादशी प्रधान है मह ना में बहुत निष्काम है मेरा निवास इना में है ॥ अदीषत मानुष पुन्न पुन करैगा ता पशु की जुनि में पावता है जो कुछ दान पुन करै सो जोनि मे पावता है ॥ अर्जुनुवाच ॥ हे श्री कृष्ण भगवान जो गुरु जो देष्या कैसा होता है तिसका फल कृपा करके कहो ॥ अरु तामिये उत्तम कौन है और गुरु कैसो वाक्य जगत को करो है अरु सेवा पूजा का फल कौन है अरु वैसनो भगति की क्रिया भगत रहत कैसी होती है ॥ उसके भिन्न भिन्न दुर्मति कौन है ॥ श्री भगवानुवाच ॥ धन्य तेरी ज्ञान रूप को है औ वैस्नो धर्म तेरा तुमको भावना है ॥ अरु देषीया दो अक्षर है अरु जे हरि हरि सदा जपीये ॥ हे अर्जुन वैसनो अस नाम कारके ॐ नमोनारायणाय ॥ श्री मंत्र एक मन होइ कर जो सो मेरा भगत है ॥ सो बैकुंठ को प्राप्त होता है ॥ सो मेरा भगत जानना अरु साधु भगत छोड़ कर मनुष के गर्भ बास होता है हे अर्जुन मनुष की देह मे साढ़े तीन करोड़ रोमावली हैं तब लग नरक में जाता है इह गीता गर्भ है ॥ इति श्री भगवत गीता सूत्र निपस्त ब्रह्म विद्यायां जोग शास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन संवादे गर्भ गीता संपूर्णम् लिषतं बनवारी लाल पाठक पैतेपुर निवासी असाढ़ बदी २ सवत् १९६७ वि०

Subject.—गर्भ, जन्म, मरण, सुख दुख आदि वर्णन ॥

No. 478 (*b*). Garbhagita. Leaves—32. Dated in Samvat 1872 or A.D. 1815. Deposited with Vaidya Rāmabhuṣaṇa, Village Kāmatāpura, Post Office Etaujā, District Lucknow (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ ओं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ गर्भ गीता लिख्यते ॥ अर्जुनुवाच ॥ ओं अर्जुन श्री कृष्ण भगवान पास पूछता है ॥ श्री कृष्ण जी उत्तर देता भया कि श्री कृष्ण जी की आज्ञा है जो कोई इस गर्भ गीता का पाठ सुने प्रीत लाइके तिनके निकट जम किंकर आवे नाही वचन है श्री कृष्ण जी का श्री कृष्ण अर्जुन संवाद करते हैं पुन्य पाप विचारते हैं जो कोई इहु वचन पाठ सुने कमावैं प्रन रहते रहै सो मुक्ति होइगा ॥ अर्जुन वाच सलोक ॥ गर्भ वासं जरा मृत्यु किमर्थः भ्रमते नरः किमर्थे रहिते जन्म कथ स्वत्य जनार्दन ॥ टीका ॥ अर्जुन पूछता है श्री कृष्ण जी गर्भ के विषे जो प्रानी दोष ते आवता है। तव उसको जरा मृत्यु का दोष लागता है अरु यह कौन अर्थ है। तिस अर्थ ते जन्म रहत होए ॥ श्री भगवानु वाच ॥ श्री कृष्ण जी कहता है हे अर्जुन इह जो मानुष सो अंध मूढ़ है संसार मो प्रीति करत नाल बहुत प्रीति है अठ पहर उस ही प्रती नाल लोभ रहत है ॥

End :—हे अर्जुन ब्राह्मण खत्री वैश्य शूद्र अरु होर लोक भी गुरु गुरु देषिया विना सो वार वार जन्म पावेगी है अर्जुन भगत वारे वार न ते ऊपर है प्रधान अरु केशव नारायण तैतीस कोटि देवता के ऊपर प्रधान है अरु सब पूजा के ऊपर हरि दिन एकादशी प्रधान है मैं इनमें बहुत निष्काम है ॥ मेरा निवास इसमें है अदीषत मानुष कछु पुन करैगा तापशु की जूनि मे आवता है ॥ जो कुछ दान पुन करे सो जोति मैं आवता है अर्जुन वाचा ॥ हे श्री कृष्ण जी भगवान जो गुरु जी देख्या कैसा होता है ॥ तिसका फल कृपा करके कहो श्रोर जाप विषे उत्तम कौन है श्रोर गुरु कैसो वाक्य जगत के करो है अरु सेवा पूजा का फल कौन है अरु वैष्णव भगत की करिया जगत रहत कैसो होतो है उससे भिन्न भिन्न दुर्मत कौन है श्री भगवानु वाच ॥ हे अर्जुन धन्य तेरो ध्यान रूप को अरु वैष्णव धर्म तेरा तुमको भावता है ॥ अरु देषिया दो अक्षर है अरु जे हरि हरि सदा जपिये हे अर्जुन वैष्नों अस्नान करिके ऊं नमो नारायणाय श्री मंत्र एक मन होकर जपे ॥ सो मेरा भगत है ॥ सो वैकुंठ को प्राप्त होता है। सो मेरा भगत जानता है अरु साधु भगत छोड़ के मनुष के गर्भ वास होता है हे अर्जुन मानुष की देह में साढ़े ३ करोड़ रोमावली है ॥ तत लग नरक में जाता है यह गीता गर्भ है ॥ इति श्री भगवत गीता सुपनिषं ब्रह्म विद्यायां जाेग शास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन संवादे गर्भ गीता सपूर्ण समाप्तम शुभ्म लिषतं पं० देवाराम श्रावण शुक्ला सप्तमी संवत् १८७२ वि० ॥

Subject :—श्री कृष्ण जी का अर्जुन को ज्ञान उपदेश वर्णन ॥

No. 478 (c). Garbhagita. Leaves—32. Deposited with Pandita Mannilalaji Gangaputra Tivari, Village Misrikha, District Sitapur (Oudh).

Beginning :—ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ गर्भ गीता लिख्यते ॥ अर्जुनवाच ॥ ॐ अर्जुन श्री कृष्ण भगवान पास पूछता है ॥ श्री कृष्ण जी उत्तर देता है ॥ श्री कृष्ण जी के आज्ञा है ॥ जो कोई इस गर्भ गीता को पाठ सुनै प्रीत लाय के तिसके निकट जम किंकर आवे नाहीं ॥ वचन है श्री कृष्ण जी का ॥ श्री कृष्ण अर्जुन संवाद करते हैं ॥ पुन्य पाप विचारते है जो कोई यह वचन पाठ सुनै कमावै अरु रहते रहै सो मुक्ति होयगा ॥ अर्जुन वाच ॥ सलोक ॥ गर्भ वासे जरा मृत्यु किमर्थं भ्रमते नरः ॥ किमर्थं रहिते जन्म कथंकस्य जनार्दन ॥ १ ॥ टीका ॥ अर्जुन पूछता है श्री कृष्ण जी गर्भ के विषे जो प्रानी दोष ते आवता है तब उसको जरा मृत्यु का दोष लागता है ॥ और यह कौन अर्थ है ॥ तिस अर्थ ते जन्म रहत होई ॥ श्री भगवानोवाच ॥ श्री कृष्ण जी कहता है ॥ हे अर्जुन इह जो मनुष्य है सो अंध मूढ़ है ॥ संसार भी प्रीति करति नाल बहुत प्रीत है ॥ अठ पहर उसही प्रीत नाल लोभ रहत है ॥ जैसे इहु कर्म किया है । अरु आसा भी करते है कि वांछि तव है ॥ जो इहु कर्म किया है अर इहु व रोगे । अरु और मागते क्या मागते है । लक्ष्मीराज और जोवना बहुत मानते है अरु एना करमो करके गरभ विषे आवता है ॥

End :—भगवानोवाच ॥ हे अर्जुन जो गुरु के वचनो से विमुष है ॥ सो कुत्ते को बराबर है ॥ अरु जो कोई गुरु के वचन को मानता नाहीं सो वैस्नो नाहीं ॥ जगत पर घोपोचंद है । जो कोई गुरु को धर्म ते विमुष है सो मेरा भगत नाहीं ॥ हे अर्जुन जो कोई गुरु मुष होइकर राम नाम सिमरेगा सत गोत्र और एकोतर सो पितरो तारेगा ॥ और मेरी भक्ति नित प्रति करेगा । सो वैकुंठ जायगा । हे अर्जुन अधोगत मनुष्य को शरीर को कूकर भी नाही पाती है ॥ और पितरों का पिंड भी श्राद्ध विषे ना पावै । जो उस पुरुष को स्वर्ग लोक के कर्म किया होय तो भी स्वर्ग ना पावै । हे अर्जुन ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र अरु चार लोक भी गुरु दीषिया बिना सो बार बार जन्म पावेगा ॥ हे अर्जुन भगत बारंबार नते ऊपरे है प्रधान । अरु केसव नारायण तैंतीस कोटी देवता के ऊपर प्रधान है । अरु सवजा व्रता के ऊपर हरि दिन एकादशी प्रधान है ॥ मैंहुना मै बहुत निष्काम हे ॥ मेरा निवास इना मैं है । अदोषत मानुष कछु पुन करेगा । तो पसु को जोन मैं पावता है ॥ जो कुछ दान पुन करै सो जोनि मैं पाता है ॥ अर्जुनवाच ॥ हे श्री कृष्ण भगवान जो गुरु जो दीष्या कैसा होता है ॥ तिसका फल कृपा करके कहो अरु आ विषे उत्तम कौन है । अरु गुरु कैसी वाक्य जगत को करी है ॥ अरु सेवा पूजा का फल कौन है ॥ अरु वैस्नोभगत को करिया जगत रहत कैसी होती है ॥ उससे भिन्न भिन्न दुमति कौन है ॥ श्री भगवानोवाच ॥ हे अर्जुन अब तेरी ज्ञान रूप को अरु वैस्नो धर्म तेरा तुमको भावना है अरु

देषीया दे। चक्षर है। चरु जे हरि हरि सदा जपिये। हे चर्जुन वेश्नो चसना करिके उों नमो नारायणाय श्री मंत्र एक मन होइ कर जपै सो मेरा भगत है॥ सो वैकुंठ को प्रापत होता है सो मेरा भगत जानना॥ चरु साधू भगत छोड़ के मनुष के गर्भ वास होता है॥ हे चर्जुन मनुष का देह में। साढ़े तीन करोड़ रोमावली है तब लग नरक में जाता है॥ इह गीता गर्भ है॥ श्री इति भगवत गीता सुपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्ण चर्जुन संवादे गर्भ गीता संपूर्णम् शुभम्।

Subject :—गर्भवास पाकर कौन दुख चौर कौन सुख भोगता है, कौन किस कर्म से नरक व मोक्ष प्राप्त करता है, चादि प्रश्न श्री कृष्ण जी ने चर्जुन को समझाया है।

No. 479. Garuḍa-Purāṇa. Leaves—75. Deposited with Lālā Gangotrī Prasāda, Village Ālhāpurā, Post Office Pariyāvā, District Prātāpagadha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः गरुड़ जी श्री भगवान जी सों पूछत भये श्रीभगवत के प्रसाद करिके तीन्यौ लोक वैकुंठ चादि दै सचर चचर जीव संपूर्ण देखे उत्तम स्थान मध्यम स्थान चधम स्थान प मैंने संपूर्ण देषे कछु देषन को चभिलाषा रही नहीं॥ १॥ पाताल तै लैके सप्त लोक पर्यंत संपूर्ण देषे—जम लोक का दर्सन कीनों नहीं॥ श्लोक॥

भगवत प्रशादात् वैकुंठ त्रैलायां सचराचरं मयाविलोकितं।
मयाविलोकितं सर्वे उत्तम चधम मधिमा॥ पातालात् सत्यंतः पुरामार्ग्यं
विना यमो भूर्लोक सर्वे लोकानां प्रभुः सर्वं जंतम्॥

पृष्ठ—१५०

End :—

एक तै। हरि कै। नाम भागीरथी कही मै गंगा जी कै। नाम चीरु विप्र संसार में ये तीनि वस्त सार है ये तीन्यो वात तरण तारण हैं॥ १५॥ मंगलं भगवान विष्णु मंगलं गरुड़ध्वजं मंगलं पुंडरी काक्षं मंगलाय तनो हरि॥ १६॥

× × × ×

जिनके लक्ष्मी नारायण दमोदर हृदै में विराजे हैं तिन पुरुषन को सदा जै है सदा लाभ्य है तिनको कबहु हारि चावे नहीं सदा जनारदन सहाय रहत हैं॥ १८॥ या कथा के सुनेते पुस्तक की पूजा कीजे भेट यथाशे गऊदान दीजे मुद्रिका दीजे चथवा चौरौ पुस्तक की पूजा कीजे॥ १९॥ जे प्राणी भगवद् भाव सों सुनै गरुड़ पुराण की कथा सुनै तिनको चायु हुवै जम लोक मार्ग कां देषे नहीं नर्क में पैर नहीं सर्व पापन ते छूटै नित्यानंद होय॥ २०॥

सूत जी..

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० ५ तक——प्रथम अध्याय–गरुड़ भगवान संवाद, वृषोत्सर्ग वर्णन।

(२) पृ० ८ से पृ० १४ तक——द्वितीय अध्याय जीवित क्रिया विधि अर्थात् जीवन काल में धर्म, दाता पूजनादि का विधान।

(३) पृ० १४ से पृ० १९ तक——तृतीय अध्याय। प्रेत वाक्य वर्णन, पिंडदान। एकदशाह, त्रयोदशाह आदि कर्मों के दिन निश्चय करने की विधि।

(४) पृ० २० से २८ तक——चतुर्थ अध्याय। प्रेतों की यममार्ग पुरी का वर्णन। यमदूत तथा प्राणियों का वार्तालाप तथा प्राणियों के कृत कर्मों का दिग्दर्शन।

(५) पृ० २९ से पृ० ३४ तक—पंचम अध्याय। ग्यारहवें दिन के पिंडदान का फल तथा शैयादान का विधान। त्रयोदशाह की विधि, नरकों के नाम और पाप कर्मों के अनुसार उनकी प्राप्ति का कथन।

(६) पृ० ३५ से पृ० ३९ तक—षष्टमोध्याय। पाप तथा कर्मानुसार फल की प्राप्ति (यमलोक वर्णन)।

(७) पृ० ४० से पृ० ४६ तक—सप्तमोध्यायः। प्रेत का निवास स्थान, प्रेत लोकान्तर प्रेत के आने का स्थान तथा उनके कर्मभोगों का वर्णन। प्रेत योनि प्राप्ति का कारण तथा उनके भोजनादि का कथन।

(८) पृ० ४७ से पृ० ५१ तक—अष्टमोध्यायः। कलियुग में नियत सौ वर्ष पूरी भी आयु न होने का कारण। अवस्था भेद वर्णन। पांच वर्ष तक की अवस्था के पापों में फंसने-भोगने का विधान। गर्भ तथा गर्भ से बाहर आते ही मरने वाले जीव की अन्त्येष्टि का विधान।

(९) पृ० ५२ से पृ० ५७ तक—नवमोध्यायः। षट् कर्म सपिंडी कर्म तथा वर्ष दिन तक पिंड दान करने का वर्णन। स्त्री के सती होने का फल।

(१०) पृ० ५८ से पृ० ६४ तक—दशमोध्याय। मनुष्य की क्रिया का कथन तथा उसके संबंध में परलोक सुख वर्णन। बभ्रुवाहु का आख्यान (राजा के प्रति प्रेत की स्तुति)।

(११) पृ० ६५ से पृ० ६९ तक—एकादशमोध्याय। उक्त आख्यानान्तर्गत प्रेत श्राद्ध वर्णन।

(१२) पृ० ७० से पृ० ७३ तक—द्वादशमोध्याय। दान महात्म्य वर्णन।

(१३) पृ० ७४ से पृ० ७८ तक—त्रयोदशमोध्यायः। शरीर भेद वर्णन।

(१४) पृ० ७९ से पृ० ८७ तक—चतुर्दशमोध्यायः। जीव उत्पत्ति वर्णन।

(१५) पृ० ८८ से पृ० ९४ तक—पंचदशमोध्यायः । यम लोक वर्णन ।

(१६) पृ० ९५ से पृ० १०० तक—षष्टदशयाध्यायः । धर्म अधर्म के लक्षण तथा पिंड प्रदान वर्णन ।

(१७) पृ० १०१ से पृ० १०४ तक—सप्त दशमोध्यायः । शैयादान की महिमा का वर्णन ।

(१८) पृ० १०५ से पृ० १११ तक—अष्ट दशमोध्यायः । दाह संस्कार विधान तथा सूतक लगने का कथन । श्राद्ध-दानादि कथन तथा मिसति ।

(१९) पृ० १११ से पृ० ११८ तक—नवदशमोध्याय वर्णन । अनशन व्रत वर्णन तथा घट दान का नियम श्रोर दान दिये जाने वालों की गणना । दान किसको दिया जाय, दानग्राही का लक्षण ।

(२०) पृ० ११९ से १२३ तक—एका बिंसतिमोध्यायः । कैसा फलदान करने तथा कैसा तीर्थ करने से मोक्ष होता है । किस प्रकार का दान करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है ।

(२१) पृ० १२३ से पृ० १२७ तक—द्वाविंसति अध्यायः । सूतक निर्णय, चारों वर्णों में किस प्रकार सूतक लगता है (शुद्धाशुद्ध वर्णन) ।

(२२) पृ० १२८ से १३६ तक—त्रिंसमोध्यायः । (मोक्ष वर्णन) अकाल मृत्यु तथा अन्य प्रकार की मृत्युओं का वर्णन ।

(२३) पृ० १३६ से १३९ तक—चतुर्विसतिमोध्याय । वस्त्र विधि वर्णन ।

(२४) पृ० १४० से पृ० १४५ तक—पंच विंसतिमोध्यायः । सुकृत करने वाले के फलादि का वर्णन । पापियों की योनि प्राप्ति का विधान ।

(२५) पृ० १४५ से पृ०........तक—वैतरणी नदी के विस्तारादि का वर्णन । गोदान विधि, गरुड़ पुराण श्रवण विधि ॥

No. 480. Garuḍapurāṇa-Bhāsā. Leaves—72. Dated in Samvat 1924 or A. D. 1867. Deposited with Paṇḍita Murlidhara Dube, Village Laharapura, District Sitāpur (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ।। अथ गरुड़ पुराण लिष्यते ।। श्री भगवान सोई संसार विषै वृक्ष रूपी सदा विराजते हैं कैसा वावृक्ष को धर्म मूल है वेद स्कंद पुराण शाखा है क्रतफुल है मोक्ष फल है ऐसा वृक्ष स्वरूपी भगवान हैं तिनके चरणारविन्द की सदा जय रहो ॥ हे वैकुंठ नाथ तुम्हारे प्रसाद कहे ते कृपा ते

तोनो लोक देखे हैं । उत्तम स्थान भुर्लोक, भुवलोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जन-लोक, तपलोक, सत्य लोक, पद्मलोक अतल वितल सुतल तलातल रसातल महातल पाताल मध्यम मनुष्य लोक ते सब देखे हैं ॥ पृथ्वी ते ऊपर सत्य लोक तांई है प्रभु मैं सर्व लोक देखे एक सब पुरो विना सो मनुष्य लोक के प्रचुर कह भांति यमलोक को जाते हैं ॥ मनुष्य देह सर्व योनि में श्रेष्ठ है भुक्ति मुक्ति को दाता है पुन्य आत्मा जोव है जिन मनुष्य देह पाई है सो मनुष्य समान न भूत न प्राणी कोई न हुवो न कोई होनहार हो । गावंति देवता मनुष्य जन्म को महिमा गावत हैं अनेक जन्म के पुन्य के प्रभाव करिके मनुष्य देह पाई है ते धन्य हैं सो फल स्वर्ग लोक को दाता है और मोक्ष को देनहारा है ऐसा मनुष्य देह है ॥

End :—हे गरुड़ जैसे धर्म को जीत है पाप जीते नहीं । सत्य की जीत है असत्य जीते नहीं । क्षमा की जीत है क्रोध की जीत नहीं जैसे विष्णु भगवान की सदा जीत रहे असुरन की सदा हार है उनको सदा लभ्य है निश्चै करिके । एक ते हरिगंगा भागीरथी ब्राह्मण ये तोन वस्तु संसार विषे सार हैं । जिनके मन में पुंडरीकाक्ष भगवान को नाम है सो मनुष्य सदा पवित्र है । मंगल रूपी भगवान को नाम है जिनके मन में पुंडरीकाक्ष श्री गरुड़ध्वज बसे हैं उनके सदा मंगल है सूत जो सैानकादिकान सें कहत हैं ऐसा वचन श्री भगवान को वचन सुनि के गरुड़ जी के मन में बहुत हरष उपज्यो तब तीन प्रदक्षिणा कीनो । गरुड़ जी ने भगवान की बानी सुनि के गरुड़ जी को ज्ञान बहुत उपजो या कथा को सुनि के ऐसो यह प्रेम को कथा श्रवण करैं जिनको यम लोक को भय कबहू ब्यापे नहीं श्री भगवान गरुड़ को संवाद है यों कथा सूत जी ने नैमिषारन तिषै ८८००० हजार रिषीश्वरन को शैानिकादिकन को सुनावत हैं या कथा को चितु लाय के हेत करिके सुनो जाके सर्व पाप जात रहैं । और दया उपजै धर्म करिके जय रहे सहस्र अश्वमेधयज्ञों को बराबर पुन्य है और सेवक रैा वाजपेय यज्ञों को बराबर यज्ञों को फल है करवाने वालों को और कथा के सुनने मात्र करिके संपूर्ण धर्म करि दिया उन मनुष्यों ने निश्चय करिके सच जानियो इति श्री गरुड़ पुराणे प्रेत कल्पे अष्टादशके साहस्र्यं संहितायां उत्तर खंडे कृष्ण वैनतेय संवाद जन्म देष सूचनो नाम चतुर त्रिंशोध्याय संवत् १९४७ पैाष सुदो चतुर्दश्याम शुभम् या दृष्टं पुस्तकं दृष्टवा तादृशं लिष्येत मया यदि शुद्धम शुद्ध वा ममदोषो मदीयते ॥ लिषा मरलीधर पंडित

Subject :—गरुड़पुराण भाषा (मनुष्य के मरने पर क्या होता है या उसकी गति किन कर्मों से क्या होनी चाहिये)

No. 481. Garuḍapurāṇa-Saṭīka. Leaves—84. Deposited with Paṇḍita Mahāvīra Pāṇḍe, Village Sagarāmapura, Post Office Madhauganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ गरुड़ पुराण सटीक लिख्यते ॥ श्री गरुड़ोवाच ॥ धर्म दृढ़ बद्ध मूला वेद स्कंध पुराण शाखाढ्य कृत कुसुमी मोक्ष फलो मधुसूदन पादपो जयति ॥ १ ॥ तार्क्ष्य उवाच ॥ भगवत् प्रसादा-द्वैकुंठं त्रैलोक्यं सचराचरम् मया विलोकितं सर्वं भूत मध्यमध्यम् ॥ २ ॥ भूर्लो-कात सत्य पर्यंत पुरं याम्य विना प्रभो भूर्लोकात्सर्वं लोकानां प्रचुर सर्व जंतुषु ॥ ३ ॥

टीका ॥ श्री भगवान सोई संसार विषै वृक्ष रूप्यो सदा विराजैं हैं कैसो ता वृक्ष को धर्म मूल है वेद स्कंद है पुराण शाखा है कृत फूल है मोक्ष फल है ऐसो वृक्ष स्वरूपी भगवान है तिनके चरणारविंद को सदा जय रहै ॥ १ ॥ हे वैकुंठनाथ तुम्हारे प्रसाद कहते कृपाते तीनों लोक के देषे हैं—उत्तम स्थान भूर्लोक १ भुवर्लोक २ स्वर्ग लोक ३ महर्लोक ४ जन लोक ५ तपलोक ६ सत्यलोक ७ मध्यम । नीचे के लोक अतल १ वितल २ सुतल ३ तलातल ४ रसा-तल ५ महातल ६ पाताल ७ मध्यम ८ मनुष्य लोक ते सर्व देषे हैं ॥ २ ॥ पृथ्वी ते ऊपर सत्यलोक ताई हे प्रभु मैं सर्व लोक देषे एक यमपुरी बिना सो मनुष्य लोक के प्रचुरः कइ भाँति यम लोक कूं जात हैं ॥ ३ ॥

End :—अपवित्रःपवित्रोवा सर्वावस्थांगतोपिवा यस्मरेत् पुंडरी काक्षं सर्वाह्यायं तरशुचि ॥ ३७ ॥ मंगलं भगवान विष्णुं मंगलं गरुड़ध्वजं मंगलं पुंडरी काक्षं मंगलाय तनो हरी ॥ ३८ ॥ श्री सूत उवाचः ॥ इति विष्णु वच श्रुत्वागरुड़ो हृष्ट मानसः तं विष्णु त्रिपरिक्रम्य ज्ञान वान सम जायतः ॥ ३९ ॥ यस्य मरण मात्रेण धर्म त्रयच दायानि भगवान गरुड़ पाख्याने कथा पापहरा परा ॥ ४० ॥ अश्वमेध सहस्राणि वाजपेय शतानिच कथा श्रवण मात्रेण सर्व धर्म कृता निते ॥ ४१ ॥ इति

टीका.—मंगल भगवान को नाम है जिनके मन से पुंडरीकाक्ष श्री गरुड़ध्वज बसे हैं उनके सदा मंगल है ॥ ३८ ॥ जिनके मन में पुंडरीकाक्ष भगवान को नाम हैं सो मनुष्य सदा पवित्र है ॥ सूत जी सौनकादिकन सूं कहत हैं ऐसो वचन श्री भगवान को सुनि गरुड़ जी के मन में बहुत हरष उपज्यो। तब तीनि प्रदाक्षिणा कीन्हीं गरुड़ जी को भगवान की वाणी सुनिके गरुड़ जी के ज्ञान बहुत उपज्यो या कथा कूं सुनि के ॥ ३९ ॥ ऐसो यह प्रेत की कथा श्रवण करै तिनको यमलोक को भय कबहू व्यापै नहीं । श्री भगवान गरुड़ को संवाद है । जो कथा सूत जी ने नैमषारण्य विषैं अठासी सहस्र ऋषि स्वरन कूं सौनकादिकन कूं

सुनावत हैं या कथा कूं चित लायकें हेत करके सुने आके सब पाप जात रहैं और दया उपजे धर्म करिके जय रहै अय होय ॥ ४० ॥ सहस्र अश्वमेध यज्ञों को बराबर पुन्य है और सैकरों वाजपेय यज्ञों को बराबर फल है—करवाने वाले कूं, और कथा के सुनने मात्र करिकें संपूर्ण धर्म कर दिया उन मनुष्यों ने निश्चै करिके सच जानिये ॥ इति श्री गरुड़ पुराणे प्रेत कल्पे टीकायां अष्टादशोक सहस्रं संहितायां उत्तर खंड कृष्ण वैनतेय संवादे जन्म देव सूचनो नाम्न चड खिंशोध्याय ॥ ३४ ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ७ तक—प्रथम अध्याय।
व्रतोत्सर्ग करने का आदेश, उसका फल और करने के अधिकारी।

(२) पृ० ७ से पृ० १६ तक—द्वितीय अध्याय।

दानादि क्रिया जो अपने हाथ से अथवा संबंधियों के हाथ से कराई जाय; चेत में अथवा अचेत में कराई जाय उसका फल। उत्सर्ग विधि, पिंड दान विधान, यमलोक के मार्ग में पड़ने वाले पुर। मार्ग में पितृ का पश्चात्ताप।

(३) पृ० १६ से पृ० २१ तक—तृतीय अध्याय।

मासिक श्राद्ध का फल, सौरिपुरादि पितृ के विश्राम स्थान, उनको भयंकरता तथा उससे विमुक्त होने के लिये भिक्षादि क्रियाओं का विधान।

(४) पृ० २१ से पृ० २५ तक—चतुर्थ अध्याय।

वैतरणी इत्यादि के दुःख तथा उनसे विमुक्त होने के उपाय।

(५) पृ० २६ से पृ० २९ तक—पंचमोध्याय।

दान के पदार्थों का वर्णन; बड़े-बड़े इकीस नरकों के नाम; पापी की परिभाषा, और उनके लिये पिंडादि विधान।

(६) पृ० ३० से पृ० ३२ तक—षष्टमोध्यायः।
प्रेत कथन, चित्रगुप्त के मंदिर का वर्णन, शुभाशुभ कर्म फल।

(७) पृ० ३३ से पृ० ४१ तक—सप्तमोध्याय संस्थापन)
प्रेत वास वर्णन अथवा उनके द्वारा अनेक प्रकार की पीड़ाएं तथा प्रेत योनि पाने का कारण।

(८) पृ० ४१ से पृ० ४६ तक—अष्टमोध्याय।

प्रेतों के लक्षण, उनको मुक्ति का विधान, नारायण बलि का फल व विधान।

(९) पृ० ४७ से पृ० ५० तक—नवमोध्यायः।
मनुष्य के भिन्न कर्मों के कारण अल्प अथवा अधिक होने का कारण।

(१०) पृ० ५१ से पृ० ५३—दशमोऽध्यायः ।
सूतक के लिये पुराण विधान ।

(११) पृ० ५४ से पृ० ५९ तक—एकादशमोऽध्यायः ।
दीप दानादि विधान । पुत्र निषेध ।

(१२) पृ० ५९ से पृ० ६७ तक—द्वादशमोऽध्यायः ।
सपिंडि सति महिमा ।

(१३) पृ० ६८ से पृ० ७१ तक—त्रयोदशोऽध्यायः ।
ऊर्द्ध देह क्रिया, बभ्रुवाहन राजा का आख्यान ।

(१४) पृ० ७१ से पृ० ७७ तक— चतुर्दशमोऽध्यायः ।
ऊर्द्ध क्रिया का विधान, प्रेति योनि पाने का कारण ।

(१५) पृ० ७८ से पृ० ८२ तक—पंचदशमोऽध्यायः ।
कपिला दान तथा यज्ञोपवीत धारण फल; मृत्यु के समय के दान ।

(१६) पृ० ८२ से पृ० ८६ तक— षष्टदशमोऽध्यायः ।
विविध दानों के विविध फल, शरीर वर्णन ।

(१७) पृ० ८७ से पृ० ८९ तक—सप्तदशमोऽध्यायः ।
शुभपुराण वर्णन ।

(१८) पृ० ९० से पृ० ९३ तक—अष्टदशमोऽध्यायः ।
शरीर विपत्ति वर्णन ।

(१९) पृ० ९४ से पृ० ९८ तक—एकोनविंशोऽध्यायः ।
स्त्री के गर्भ का वर्णन, शरीर वर्णन ।

(२०) पृ० ९९ से पृ० १०२ तक—विंशोऽध्यायः ।
संतोत्पत्ति लक्षण ।

(२१) पृ० १०२ से पृ० १०७ तक—एकविंशोऽध्यायः ।
यमपुरी, पुण्य वर्णन ।

(२२) पृ० १०८ से १११ तक—द्वाविंशोऽध्यायः ।
यम मार्ग कथन ।

(२३) पृ० १११ से पृ० ११६ तक—त्रय विंशोऽध्यायः ।
शय्यादान कथन ।

(२४) पृ० ११७ से १२१ तक—चतुर्विंशोऽध्यायः ।
सपिंडो कारण ।

(२५) पृ० १२२ से पृ० १२९ तक—पंचविंशोध्यायः ।
श्राद्ध विधान, प्रेत पंचक दोष, सूतक वार्ता वर्णन ।
(२६) पृ० १३० से पृ० १३४ तक—षटविंशोध्यायः ।
पितृ निर्णय वर्णन ।
(२७) पृ० १३४ से पृ० १३८ तक—सप्तविंशोध्यायः ।
शालिग्राम महिमा वर्णन ।
(२८) पृ० १३८ से पृ० १४१ तक—अष्टविंशोध्यायः ।
कुंभदान महात्म्य, तथा कुंभदानादि पात्र वर्णन ।
(२९) पृ० १४१ से पृ० १४५ तक—एकोनत्रिंशोध्यायः ।
नारायण बलि विधि कथन ।
(३०) पृ० १४५ से पृ० १४९ तक—त्रिंशोध्यायः ।
नारायण बलि त्रयोदश पदादि का वर्णन ।
(३१) पृ० १४९ से पृ० १५१ तक—एकत्रिंशोध्यायः ।
वृषोत्सर्ग विधि ।
(३२) पृ० १५२ से पृ० १५७ तक—द्वात्रिंशोध्यायः ।
वृत्ति सूतक वर्णन ।
(३३) पृ० १५७ से पृ० १६१ तक—त्रयत्रिंशोध्यायः ।
वैतरणीदान विधि ।
(३४) पृ० १६१ से पृ० १६८ तक—चतुस्त्रिंशोध्यायः ।
कृष्ण वैनतेय संवाद, ग्रन्थदेव स्तवन ।

No. 482. Ghoḍoṅ kā Ilāja. Leaves—90. Deposited with Paṇḍita Rāghavarāma, Teacher, Primary School, Āmāmaū, Post Office Gaḍavārā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—

पृष्ठ ५

चार बरस की उम्र तक घोड़े से काम न लेना चाहिये क्योंकि उस समय काम करने से जवानी में अच्छा काम नहीं कर सकते । सिर्फ लगाम का उनको अभ्यास कराना चाहिये ।

दूसरा अध्याय

जिन्स घोर कुम्मैत का बयान ॥ जिनके नाम नीचे लिखे जाते हैं वे घोड़े असली होते हैं—जैसे अमरबी, ताज़ी, अरबी, खुरासानी, इराकी, यमन, तुर्क,

तातार, खुतन, ख़दन, चीन, मा चीन, तूरान, काबली, काशमीरी, ईरानी और मरायल और जो हिंद में हैं वे ये हैं—काठियावाड़, भोटिया, रंगपुर, घोड़ा घाट, जहां कि छोटी खूंटी का होता है और इसकी ये आदतें हैं कि जब तक तुमे खबरदार न करले तब तक न कानों को दवावे न दांतों से काटे न पुछंग मारे ॥

End :—

॥ तेंतिसवां नुकता ॥

जो घोड़ा मुंह ज़ोरी करे उसका इलाज ॥ चिरचिरे को जला फिर इसकी का पानी मिला दहाने को पांच छे बार बुझावे ॥ दूसरी ॥ लकड़ी का बाल मंगा कर बुठीके होवे उन्हें गुलाब में घोल कर फिर उसी गुलाब में दहाने को सात बार बुझावे फिर उसी लगाम को लगावैं ॥

॥ चौतीसवां नुकता ॥

जो घोड़ा दो पैरों से खड़ा हो जावे उसका इलाज ॥ सवार को चाहिये कि तर कपड़ा अपने पास रक्खे जब घोड़ा खड़ा होवे तब पानी कान में निचोड़ देवे ॥ दो चार दफा ऐसा करने से आदत छूट जाती है ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ४ तक—प्रथम अध्याय लुप्त।

(२) पृ० ५ से पृ० ३८ तक—किस्म तथा कुम्मैत की पहिचान, अन्य रंगों के घोड़ों की पहिचान, घोड़ों के सौन्दर्य की पहिचान, शकलों की पहिचान, दोषों की पहिचान आदि।

(३) पृ० ३९ से पृ० ८६ तक—बीमारी के भेदों का वर्णन, बीमारियों की पहिचान; बात, पित्त और वायु की पहिचान; मूत्र परीक्षा, आंख की बीमारी तथा उनका इलाज, मुख संबंधी रोगों का इलाज, कोलास बामनी का इलाज, सुर्फा और सोना बंद आदि का इलाज, बेल बद नाम और खिनाम का इलाज।

(४) पृ० ८७ से पृ० १२२ तक—अकरम का इलाज, पट्ठे फड़कने, शाप करने, वीरहड्डी, इन्दमाल, बजरहड्डी, जानुप, हड्डे, मोतड़े, पुत्तक और चकयल का इलाज, बैजा और काने का इलाज, रसौली, सुम सम्बन्धी बीमारियां—खुर्दगाह, कमर व पीठ के रोगों तथा सूजनों का इलाज, लिंग व दुम संबंधी रोगों की बीमारियां, खुजली वगैरह अन्य प्रकार के इलाज नाक, दांत और ज़बान सम्बन्धी रोगों के इलाज, कुरकुरी का इलाज, तप का इलाज।

(५) पृ० १२३ से पृ० १७० तक—दुआ और तावीज़ घोड़ों के बांधने, छोड़ने और खिलाने पिलाने सम्बन्धी कुछ आदेश। हाज़मे आदि के चूरन व मसाले, कुछ जुलाब और दस्त बंद करने के नुसखे। बच्चे लेने और हमल क़ायम करने की तरकीब, मालिश करने की तरकीब, मरहम बनाना।

(६) पृ० १७१ से पृ० १८० तक—दलालों को बोलो ग्रैार हिकमत।

(७) पृ० १८० से पृ०............तक—लुत।

No. 483. Gitā Gadyānuvāda. Leaves—96. Deposited with Paṇḍita Durgā Prasāda Tivārī, Bandha (Varipāl).

Beginning :—चैापुत्र ॥ सोई तनै महारथी पांडवनको तरफ़ के हैं ग्रव हमारो कोइ कहैं ते तुम सुनहु ॥ संजय उवाच ॥ तब संजय रोषो सुर राज धृत राष्ट्र सुनों कहत हैं ॥ के सुनै हो राजा कौरोवन का स्याम्या यिषें सब दल म्यारा छोड़नो जुरत भये ॥ छत्र धारो मुकट बंद राजा जर जोधनको तरफ जुरैहैं कुर छेत्र विषै ॥ तिनमें महारथो कहो जत है ॥ ते तुम सुनहु ॥ तब राजा जर जोधन ग्रद राजा दुस्सासन ग्रैार भग दंत राजा ग्रैार राजा करन ग्रैार राजा कोरत ग्रद राजा वरम ग्रद राजा संल। ग्रद राजा भोषम पितामह ग्रद दोना चारज गुद सो इतने महारथी जर जोधन की तरफ़ भये ॥

End:—रात बादो काहूलों हेत वैह न करै बन तप॥ साचैा बोलै जाके बोले ग्रैार कैा काज होइ ग्रपुन पढ़ै ग्रैार पै पढ़ावै सो बन रूप तप कहावै॥ ग्रथ मान तप ॥ मन प्रसन्न इन्द्री वस्य॥ सत्य बादो मैानसैा रहिजै तासैा मान तप कहावै ॥ राजसो कहियतु है ॥ श्रद्धा कोनै फल कैाऊन बांछो ये सातु कमाव तप कहिये ॥ ग्रपने तपकी बड़ाई करै दंभ लालचो सुताकैा राजसो तप कहिये॥ ग्रथ तामसो तपु॥ हठ धर्म कोजै ग्रैार कैा दुख होइ ग्रपने सरोर कैा सुख होइ सो तामसो तप कहावै ग्रथ तोनि भांति कं दान क ... . इति॥

No. 484. Grahaṇo-ki-Pothī. From Samvat 1927 to Samvat 2012. Leaves—32. Dated in Samvat 1928 or A. D. 1871, Samvat 1931 or A. D. 1874. Deposited with Paṇḍita Badriprasāda, Village Navinagara, Post Office Laharapura, District Sitāpur (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ श्री पार ब्रह्मसच्चिदानंदायनमः ॥ सर्व चन्द्र ग्रहण लिख्यत। संवत् १९२९ वि० से संवत् २०१२ वि० तक॥

चंद्र ग्रहण

संवत् १९२९ शाके १७९४ वैशाष १५ बुधे ५८। ५७। १०८ चक्र ३२ बारवि: १।१०।११।४५ म: ५७। २८ चंद्र ७।१०।११। ४५।८।३४।३९। राहु १।२१।११।२८ व्य. ११।११।००।१७ भुज १०।५९।४३ शर १७।१६६० चं।

चि० ११ । १६ । कु २९ । ११ मा. म. २० । १३ ग्रास २ । ५७ स्पर्श । ५६ ।
१० मोक्ष १ । ४ च४ ४ । द. आ४. २ । ५७ । ५ । ५४

सूर्य ग्रहण

संवत् १९२९ वि० शाके १७९४ उक्ट ३० गुरौ ४ । ४४. १२३ चक्र ३२ रविः
१ । ३३ । ३५३ । ५७ । १३ चद्द । १२३ । ३ । ५३।७४ । ३ । २१ ॥ राहु १ । २०
२७ । ४ । व्यः २ । ३६ । ४१ लंबन ३ । ३१ । सू. स्पष्ट शरद । २४ द. सू. वि. १० ।
२४ चं वि. १० । ३ मा. म १० । १३ । ग्रास ३ । ४९ स्पर्श ५८ । ३९ मोक्ष. २ ।
४० व ४. ३ । २४ उत्त भाशा. ४ । ४४ । ४ । १६

End :—

सूर्य ग्रहण

संवत् २० १२ साके १८७७ भाषास्य ३० सं० मो० ११ । ३८४. २३ । ३९
च रविः २ । ४ ।४२ । ५२ गतिः । ५७ । २ चं. २ । ४ । ४२ । ५२ गट । ५ । २ रा. ।
८ । ३ । ९ । ६ ॥ व्य. गु. । ६ । १ । ३ । २ । ४६ वि मोन । ६९ । ९ लं. २ । ३५
सु. स्य. ८ शर ५ । १३ वा न्य सू. वि० १० । २१ चं. वि. ११ । ३१ मा. स्प. १ ।
५७ मा. ५ । ४४ वि. २ । १६ स्प. । ५ । ५१ मोक्ष १२ । ३९ व. ४ २ । ५८ उत्त
भा. ५ । ३६ ॥

चंद्र ग्रहण

संवत् २०१२ शाके १८७७ कार्तिक १५ भौमे. ३९ । १८ ४ २५. १ चक्र ३९
रविः ७ । ७ ३१ । ४६ । ५६. । ५५ चं. १ । १३ । १० । ५६ म. ८४९ । ४७ राहु ७ ।
२४ । ३२ । २५ स्यः १७ । १८ । ३८ । २० भुज ११ । २१ । ३९ । शर १७ । ५१ मा.
चं. ११ । २९ कुं २९ । २३ मा. २० । २६ मा. २ । ३५ वि २ । १७ स्प. ३७ ।
२१ । मोक्ष ४१ । ५५ बल. १ । ३७ उ. भा. शां २ । ५ ॥

इति ग्रहणावली संपूर्णम् समाप्तः लिषतं हरदोई निवासी पंडित आसोराम
सं० १९३१ वि. ।

Subject :—संवत् १९२९ वि० से सम्वत् २०१२ तक के सूर्य और चंद्र
ग्रहण वर्णन ।

No. 185. Grahaṇo ki-Pustaka. From Samvat 1929 to Samvat 2012. Leaves—40. Dated in Samvat 1928 or A. D. 1871—Samvat 1934 or A. D. 1877. Deposited with Paṇḍita Gaṅgāvishṇu Jyotishī, Village Banthara, District Unnāva (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः । श्री पार ब्रह्म सच्चिदा नंदायनमः । सूर्य चन्द्र ग्रहण लिख्यते ॥ चन्द्र ग्रहण संवत् १९२९ शाके १७९४ वैसाष १५ बुधे ५९ । ५८ । १०८ चक्र ३२ ता रवि १ । १० । ११ । ४५ ग. ५७ । २७ चन्द्र ७ । १० । ११ । २७ ॥ ८३४ । २९ राहु । १ । २१ । ११ । २८ ·ग· । ११ । १९ । ०० । २७ भु· १० । ५९ । ४३ शर १७ । १६ । द· चं · वि· ११ । १६ कु· २९ । ११ म· चं· २० । १३ ग्रास ३ । ४९ स्पर्श ५८ । २९ मोक्ष २ । ४७ चं ड ३ । २४ उत्त पाशा २ । ५७ । ५ । ५४ ।

सूर्य ग्रहण संवत १९२९ शाके १७९४ ज्येष्ठ कृष्ण ३० गुरो ४ । ४५ १९३ चक्र ३२ रविः १ । २३ । ३५३५७ । १३ चं· १ । २३ । ३ । ५२ । ७४ । ३ । २१ रा· १ । २० । २७ । ४ व्यय २ । ३६ । ४९ । लंबन ३ । २१ क्र स्पष्टशर ६ । ३४ द· स वि १० । २४ चं· वि· १० । ३८ प्रा· म १०५ । २३ । ग्रास ३ । ४९ स्पर्श ५८ । ३९ मोक्ष २ । ४७ व· ड ३ । २४ उत्त ४ । ४४ ४ । १६

End :—(चंद्र ग्रहण) संवत २०११ वि· शाके १८७६ षषाढ़ १५ बुधे । ३४ । ४२ चक्र ३९ रवि २ । २९ । २६ । १४ गतिः ५७ । चं· ८ । २२ । २६ । १४ गति ७७९ । ५३ रा । ८ । २१ । ७ । ४७ व्यगुः ६ । ८ । १८ । २७ शर १३ । २ याम्य चं० वी १० । ३२ । कु २८४४ मा म १८ । ३८ ग्रा० ५ । ३६ स्थि· ३ । २० स्प० ५६ । ५८ मो० ३ । ३८ च० ४१ । १ द· पाशां ४ । १८ ग्रस्तास्तम् ॥

(चंद्र सूर्य ग्रहण)

सं० २०१२ शाके १८७७ षषाढ़ ३० सोमे ११ । ३८४·२३ । ३९ चं० वि· २ । ४ । ४२ । ५२ । ग· ८५० । २ रा· ८ । ३ । ९ । ६ । व्यगु ॥ ६ । १ । ३ । २ । ४६ त्रि भोन ६९ ल· ९ । २ । ३५ सू· स्प· ८ शर ५ । १३ याम्य स वि· १० । ११ चं· वि· ११ । ३१ मा· ग्रं· १० । ५७ ग्रा· ५ । ४४ स्थि· २ । २६ स्प ५ । ५१ मो· १२ । ३९ चं ड २ । ५८ उत्त· पा· ५ । ३६ ॥

(चंद्र ग्रहण)

सं० २०१२ शाके १८७७ कार्तिक १५ भौमे ३९ । १८ ३· २५ । १ चक्र ३९ रवि ७ । ७ । ३१० । ४६ । ५६० । ५५ चं· १ । १२ । १० । ५६ ग· व ४९ । ४७ राहु ७ । २४ । ३२ । २५ व्य· १७ । १८ । ३८ । २० भुज ११ । ३१ । ३९ । शर १७ । ५१ या चं वि ११ । २९ । कु· २३ मा· २० । २६ ग्रा २ । ३५ स्थिर २ । १७ स्प· ३७ । २१ मो० ४१ । ५५ कु· ल· १ । ३७ उ· पाशा २ । ५ ॥ इति श्री लोकोपकारार्थं कृत ग्रहणा वली समाप्त मिती माघ सुदी १५ सं· १९३४ वि० ।

Subject :—संवत् १९२९ से संवत् २०१२ वि तक सूर्य ग्रहण वर्णन ॥

No. 486. Haratāla Śodhana. Leaves—8. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—हरतार लेइ ताकको पांच पन सूत एक पल यहि विधि घालु। खल डारि घसि कलो करै एक पहर ज्यो चलि बरराइ ॥ ता पाछे गोवो के पान नीर काढ़ि कै छान ॥ वास सो बररै यहि भांति बारह पहर आर जब बोति। बहुरि सुपै कै सीसो भरै। मुद्रा कै पुनि सुधन धरै। यंत्र बालुका में सो धरै। आगि पहर है मदो करै पुनि चढ़तो चढ़तो देइ आगि। सोइ पहर रैन दिन जानि आठ पहर जो छो वैन को देसे सीसो सीतल होइ। तब सीसो देखिये उतारि सातु पासे डारि लागै नारि। लोजै फोरि कहरो फारि फिरि वाढो रस खल बहोरि परछै फेरि पाछिलो मर जाद। संक्या तैसो कहाे है यादि।

End :—याको है पन्द्रह को आगि पुनि ओषधि उडि लागै नारि। बहुरि पलकै ग्यारह जाय ग्यारह यह आंगि दे काम। इहि विधि पहर व भाखो चोदह सोसो देखाइ। यहि विधि तार तन सिंध जो होइ चोदह दिन तंदुल भरि खाइ नासै कुष्ट बुरी बताई। तोन्यो ज्वर तेह संव्यपात ॥ अपस्मार छिन लागै आत और बात चोरासी जाइ आप ते सब नासे तेते। जे सुभ कर्म होइ ते तने। सबे स्वेत हार के विधनै जो तहरि वेडै हरतार ते नीचे छूटै करतार ॥१॥ छेहसार तार टंक चालोस। धात्रो गंधक मासे २० दोऊ बांटि जु रस कै धरै। घृत सान कै चदिया करै। घुपरि लुहेडा धरिये माहि दस पल घृत मैं लिये ताहि। पागो घरो द्वै मदो करै पुनि उताकै सोमी भरै। आवरातैा दोसे हरतार तब उतरि कै पानो घालु। ताल केरिया नाम याके खाये बाढ़ै काम तेह सम्य चोरासी वा पोर वैगैर रक्त विकार ॥२॥ अथराग विधि महा-रागु भरिये पेसे सामानि के बरनै तैस। रागु परिया देइ चढ़ाइ ॥ तामैं दे ऊजवाइनि आइ। डाब लकरिय हा दै सो पहर द्वै मै भस्म जो होइ। पेसो भांति मंगल जानि पेसेई अपिलो की छाकाटि २ के खपरा घालि उजल मांहि होइ गो यंगु या खाये वनिता सो रगु। राग पत्र कोजै पातरै। सोय व चिथरन मोछै धरै पुरत परन है वेडै बैसे गेद करैं राग पल ५ चियारा पल २० ।

Subject :—हडगल के शोधने की विधि।

No. 487. Hastarekhāvichāra. Leaves—3. Deposited with Rāmaprasāda Murāu, Village Purāviśrāmadāsa, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning :—श्री मते रामानुजायनमः

पर्वा तः से प्रवक्ष्यामि हस्त रेषा विचारणं ॥ दक्षिणे पुरुष स्वैव वामे वाम कर-स्तथा ॥ १ ॥ स्त्रियो कांतव सामुद्र कर रेषा शुभा सु शुभं स्त्री पुरुषो वापि

सामुद्रिक लक्षणं जथा ॥ २ ॥ जस्य मीन समा रेषा करम सिद्धि श्च जायते धना-ढ्यस्तु सविज्ञेयो बहु पुत्रै न संशयः ॥ ३ ॥ तुला ग्राम तथा वज्रं कर मध्ये च दृश्यते तस्य वनिज्य सिद्धिस्या स्पृहयस्य न संसयः ॥ ४ ॥ पद्म चापादि खड्गं च अष्ट कोणादि स्त्रियो पुरुषो वापि धनाढ्यस्य सुखी नरः ॥ ५ ॥ शंख चक्र ध्वजा कारो गदा कारोच दृश्यते सर्वं विद्या प्रदानेन बुद्धिमान नरो भवेत् ॥ ६ ॥

सात आदि यरु अंत दस, इतन शंख लषाय।
राजा कहिये दास को, चढ़े निशान बजाय ॥ १ ॥

एक सोप धन वंत नर, चारो ताही जानि।
चारहु ते जो अधिक है, महा तेज सो मानि ॥ २ ॥

पहुंचा रेखा एक राजा गति जानिए।
पहुंचा रेखा दोय वकता बषानिए।
पहुंचा रेखा तीन महा सुषधाम है।
पहुंचा रेखा चारि दरिद्री नाम है ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

हरियर नष जा पुरुष को, सो पापी तिय जानि ॥
सदा दुखी वह नर रहै, सामुद्रिक मत मानि ॥ ४ ॥

जासु पुरुष को सुरुष नष, तेजवंत सो होइ।
महा दुखी सो जानिए, असित रंग नष कोइ ॥ ५ ॥

× × × ×
× × × ×

Subject :— (१) पृ० १ से पृ० २ तक—संस्कृत में हस्तरेखा का फलाफल वर्णन।

(२) पृ० २ से ३ तक—हिन्दी भाषा में उक्त विषय का पद्यानुवाद।

(३) पृ० ३ से ४ तक—संस्कृत में कन्या तथा स्त्री की हस्तरेखाओं के फलाफल का वर्णन।

(४) पृ० ५ में—मणिबंध नामक हस्तचित्र।

No. 488. Hitopadesa. Leaves—54. Deposited with Rāmagopāla Vaidya Muraū of Alikātāla, Post Office Pariyavā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—

दोहा—भावी मिटै न भाव को, कारन कहेन पाय।
नील कंठ मागे फिरें, अहि सोवत हरि आय ॥

विद्या वित यह आयुबल, मरन जन्मये पांच।
गर्भनये विधि लिषत है, नर नारिन के सांच।
अनहोनी होनी नहीं, होना होय रहे न।
यह चिंता विष हर बड़ो........दये....न।

॥ चौपाई ॥

जो कारज को आतम होई। यहि विधि बचन कहैनो सोई॥
आरजन करत आयु बललाई। ताको संपति रहै न जाई॥
येक चाकुगत रथनहि होई। पुरषा रथ धन लहै न कोई॥
पूर्व जन्म कियौ सो धर्मा। सोई भाग्य कहावै कर्मा॥
ताते भाग्य चहौ अनुकूल। जतन करौ पुरुषारथ मूल॥
ज्यौं माटी करता कर लेइ। कोन्हौं चहै सोइ करि देई॥
यह उपषान लोग सब गावै। जैसा करै सोतैसा पावै॥

॥ दोहा ॥

भाग्य भरोसे मंद कह, पुरषारथ तजरोष।
जतनकिहे जौ ना मिलै, तो वै है निज दोष॥

End:— पृष्ठ—१०८

राजा कहो कथा यह कैसो। बायस कहो सुनौ है जैसो॥
कहुं येक बन पन्नग रहै। मंद बिसर्प नाम तेहि कहै॥
सो असक्त मधु ठेठि न सकै। परवौ ताल तीरहि सब तकै॥
देषि दूरि दादुर कह्यो। क्यों चरिवर अब सन तुम गह्यो॥
कहो सांपु सुनि दादुर जैसे। मंद भाग मेरो यह है....॥
पुनि दादुर सादर ह्वै कहो। कहौ कहा मनमें तुम गहौ॥
वृथा कहन पन्नग तब लई। जो अपने सुभाव ते भई॥
बसे ब्रह्म पुर कौड़िय नाम। ब्राह्मन ब्रह्म तेज को धाम॥
बीस वर्ष को वाको बालक। मद काटा सब गुन को पालक॥
बहुन मुये किये द्विज सोक। आये सुनि सब बंधन लोक॥

रन में दुष में दुर्भिष में,
राज दुआर मसान।
आड़ै बैर विरोध में,
टिकै सो बंधु प्रमान॥

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० २ तक—लुप्त ।

(२) पृ० ३ से पृ० ६ तक राजा का विष्णु शर्मा से अपने पुत्र के मूर्खत्व को समझाकर उसके विद्याध्ययन संबंधी प्रस्ताव को रखना। विष्णु शर्मा की स्वीकृति तथा बालक को विभिन्न कथाओं का सुनाना। राजनीति की कथा सुनाने की प्रतिज्ञा।

(३) पृ० ६ से पृ० ३८ तक मित्र लाभ की कथा। वायस, कपोत, मृग तथा चूहे की मित्रता के लाभ की कथा।

(४) पृ० ३८ से पृ० ६८ तक—सुहृद भेद। वृषभराज तथा मृगराज की कथा।

(५) पृ० ६८ से पृ० ९६ तक—विग्रह की कथा, तृतीय प्रबन्धः—चित्रवर्ण मोर तथा राजहंस की कथा।

(६) पृ० ९७ से पृ० १०८ तक—संधि कथा वर्णन (अपूर्ण)।

(७) पृ० १०९ से आगे—लुप्त।

No. 489. Hori. Leaves—20. Deposited with Paṇḍita Lakshmikānta Koṭhivāla of Basuāpura, Post Office Lakshmīkāntaganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :— होरी ॥

साँच चलो तुम ल्हामगे जग होरी मचि रही है भारी ॥
किम पापंद लये कर में डफ है बढ़ै बढ़की तारी ॥
त्रिगुन तार तमूरा बाजे आस त्रिगुना मतिधारी ॥
पाप पुन्य दोउन पिचकारी छोड़त हैं बारी बारी ॥
जे नल सन सुप होकर पेठे तिनकों छींट लगी कारी ॥
लोभ मोह अभिमान भरे ले गंगा ऊपर डारी ।
राजापरजा जोगी तपसी भीजि रहो सबही सारी ॥
कुबुधि गुलाल डार मुष मोड़ी काम कला पुटरो मारी ॥
छुप लुग पेलन मैं चलि आई काहु सौं नाहीं हारी ॥
जड़ चेतन दो रूप सम्हारे एक कनक दुजे नारी ॥
पांच पचीस लये संग अबला हंसि हंसि गावत है गारी ॥
चुनुरा मन दै फगुवा छूटे मूरष को लागत प्यारी ॥
चरनदास सुषदेव कहत हैं निरगुन ग्यान गलो न्यारी ॥

End :— ॥ होरी ॥

होरी पेलत कुंज बिहारी हेर हो बिहारी ॥
सघन कुंज बन सोवत केट झुरि आई ब्रजनारी ॥

हंसि मुसिक्यात कहत प्रीतम सौं खेलहु फाग खिलाड़ी ॥
खिलाड़ कहावत भारी ॥ चोवा चंदन अतर अरगजा ॥
कुम कुम केसर गारी अबीर गुलाल लिये भर झोरी ॥
कर कंचन पिच कारी चले सनमुष बनवारी ॥
तकि और चोट करत कुम कुम की भिजवत अंगरंग सारी ॥
मानहु जलद घटा भर भादौं बरसत अति सुष कारी ॥
संग सब गोप कुमारी ॥
भद्रा नंद मगन मनमें हंसि राधा सुमति विचारी ॥
गहि किन लेहु बेगि मन मोहन भाजे नहिं आदि मुरारी ॥
करौ बस मैं हितकारी ॥ छलकर कपट गहे नंद मगन ल्याई झुंड मझारी॥

बेंदी सिर हग अंजन आड़ो निरंजन मांग सम्हारी ॥ नचावत दै दै तारी ॥ फगुवा लेव कहत हरि हंसि हंसि जो मन चाह तुम्हारी ॥ दरस बरस चाहत हरि अंतर कोविद चास तुमारी करहु कबहुं मति न्यारी ॥

Subject :—

पृ० १ से ४० तक—विविध सन्तों द्वारा रची गई होलियों का संग्रह ।

No. 403. Hridaya Prakāśa. Leaves—16. Dated in Samvat 1779 or A. D. 1722. Place of deposit B. Rāma Manohara Bichpuriyā, Purāni Bastī, Katni Murwārā, Jubbulpore (C. P.).

Beginning :—श्री जुगल कीशोरराय नमः श्री हिदे प्रकाश ग्रंथ लिषिते ॥

दोहा—इंदं साहि के सुतसय ॥ प्रेम चंद आनंद ॥
तिनके भुव भागोल हुव ॥ तिनको चंपति नंद ॥ १ ॥
चंपति संपति जक्त को ॥ लीन्हे दीन्हे दान ।
गाडे दाबे मुलक सब ॥ साहनि सुकरि थान ॥ २ ॥
चंपत के छत्र शालउव ॥ तासुन अपरं पार ॥
मारन कलि अयांन कौ ॥ भयो ज्युं बुध अवतार ॥ ३ ॥
प्रान नाथ सनाथ कीय ॥ छत्र शाल सुत जान ॥
हिदें हिदें शाहे कें ॥ दीन्ही भकि निदान ॥ ४ ॥
अथ सत गुरु श्री देव चंद बरनंन ॥ दोहा ॥
डमर कोट इह नगर है ॥ दिसा पछिम सुभ थान ॥
दया धरम अति नरन कें ॥ संत लेत विसराम ॥ ५ ॥
का यथ कुल में प्रगट हुव मत्तू महता जानि ॥
श्री देव चंद तिनकें भव ॥ धाम वासना घानि ॥ ६ ॥

End :—बेद कहत बुध ध्यान कूं , देषत लगत भयान ।
अति गमीर महरो कह्यो , काहूतें नहीं जान ॥ २५२ ॥
यह समवा सों कहत हैं, सब पर एकइ इष्ट ।
विसद भाव तातें कहैं । सब के बोयक ईष्ट ॥ २५३ ॥
अद्वैता कहते दूसरे । दूसर सोहन और ।
ताकूं जैसा ध्यान है । ताकों यल तिहि ठौर ॥ २५४ ॥
× × × ×
संवत सत्रे से सहि । प्रगट उनासी साल ।
वसंत पंचमी माघ को , पूरन ग्रंथ कृपाल ॥ २५६ ॥
माया पुरी मुकाम है , सब विधि अधिक अनूप ॥
ताही मैं दस दिसन के , वसत पर्म को भूप ॥ २५७ ॥
संपूरन शुभ मस्तु रचो लिष्यों जो ग्रंथ बनाई ॥
प्रेम नेम श्री कृष्ण पन श्री हरदेस गुन गाई ॥ २५८ ॥
ग्रंथ सपूरन ॥ श्री श्री श्री बाबा बेनीदास के चेला ।
श्री श्री श्री बाबा लालदास ॥ तिनके चरन रज श्री बाबा
स्याम दास कृपा तिनको ॥ लोषत गवं संपुरन समा पतस ॥ २५९ ॥

Subject:—सृष्टि निरुपण तथा आत्म ज्ञान का उपदेश ॥

No. 491. Indrajāla. Leaves—12. Deposited with Ṭhākura Badrisiṁha, Jamīdāra, Village Khānīpura, Post Office Talābabakai, District Lucknow.

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ इन्द्र जाल लिष्यते: असुनी नक्षत्र पाइ सुनु वार बारहि बारवोजस जो अंगुल लाऊ कलार घर धरि आऊ । तुरत विनिसि मद जाय ७ अंगुल जो द्वादस जान । करि लेहु सुजान प्रमाण ॥ पटवा के घर धरि आवै तब पटवा कमिर आई । कह इन्द्रजाल सुनु भाइ सुनि लेहु कविन को राइ । भरनी नक्षेत्र करील अंगुल एक कील घर न ऊका बीच मध्य भलाई । तब नऊका पार न जाइ । यह गुप्त मंत्र विचित्र सुनु राघु अपने चित्त कृतिका नक्षत्र मद नाई । जम्बू को लकडो लायू, कैतिको करै उपाइ । नहि ताव आवै सुद कछु न लागै हाथ ॥

End :—आषाढ़ नक्षत्र कह अम्बक बांदा लाइ । कटिबांधै नर अपने गुल्म बवासीर जाइ । अब सुनु श्रवन नक्षत्र कह वर बस बांदा मित्र बाँझ पियन कह दोजिये गर्भ धरै सुनु नित ॥ २९ ॥ सुनहु धनिष्ठा कर अब भेवर । मुनि सन विहंसि कहहि हरषिया जब कर बांदा बहु सुख आया । बूढतौ रिाव गुजासन मन माषा बाधै हाथ धनी मुनि होई । जानै चतुर मनुष्य जो कोई । और रोहणी

कर भेद बतावै। सुनु मुनि तुम सन कछुन दुरावै ॥ महुवा कर चादा ले चावै सिउ राखो कह चानि जगावै ॥ कटि बांधो को लै जबहो। भ्रम न होय सुनहु मुनि तबहो ॥ दोहा ॥ उत्रा नक्षत्रहि चानिये। पीपर बांदा सोय।

ले बांधे कह चानि नर रक्षा मोहन होय ॥ चनुरावा

No. 492. Indrajāla (Mantrāvalī). Leaves—43. Deposited with Paṇḍita Vindheśvarī Prasāda Miśra, Teacher, Saṁskṛita Pāṭhaśāla, Village Goṇḍa, Post Office Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री गनेस जी सहाये श्री सरस्वती जी सहाये श्री काली जी सहाये। श्री पोथी इन्दर जाल मंत्रा वलो लिख्यते ॥ मंत्र जपने को विधि ॥ इन्ह मन्त्रों का जब कोई मनुष्य किया चाहे ते। उसको चाहिये कि पहिले अपना बन्दोबस्त इस तरह से करे कि जहां मंत्र जपे उस स्थान में दूसरे मनुष्य को न आने दे और अपने चारों तरफ धूप दीपक और अतर मीठा रक्खे फूल पान और इस मंत्र को पढ़के अपने ऊपर फूंकले और तीन लकीर खैंचले और जब तक मंत्र को जपे आसन से न उठे और न किससे बोले और न उस कुंड लकीर से बाहर निकले फिर मंत्र का जब जप पुरा हो जाये उस वक्त जो वीर बोले तो उसका उत्तर देना चाहिये।

मंत्र

हांथ बसे हनुमंत भैरों बसे लिलार जो हनुमत टीका करै मोहै जग संसार ॥ जो आपे मारमार करंता सो दीपै पीथल सेवा हनुमंत वीर पंडादे रहे महम्मदा वीर छाती तोड़े उगनो घा वीर मारन्त समंत करे नारायन सोंघ वीर प्रगट साजे भैरों वीर को आनकोरतो रहे जो हमारे ऊपर घाव घाले उलट हनुमंत वीर उसी को मारे जल बांधु थल बांधु बांधु अंतर तावा मन बांधु तन बांधु बांधु कुटुम और काया चेत चेतरे आनो हनुमंत वीर धावा ताइ तरफ सवाई तपे लोहा कच पड़े घाइ लाल चक चं की असमान छाया। हांक ललकार हनुमंत की अगिनि पानी हो जाय महाराजाधिराज बाब साहिब सत्य के पुत धर्म के नाती तुम्हारा हो आसरा है

End :— ॥ राज वसी करनम् ॥

ॐ नमो भास्कराय त्रैलोक्या तमने पढ़के महीपते मम वस्यं कुरु कुरु स्वाहा

॥ विधि ॥

हुग के पुष्प रविवार को लाये इस मंत्र को पढ़िके पुष्प जो राजा को चढ़ावे तो बसो होवे ॥ इति ॥

श्री पोथी इन्द्रजाल संपूरन समाप्त जो पत्र में देखा सो लिखा मम दोष न दीजिये पंडित जन सो विनती मोर टूटल अच्छर लेव समझाई॥ दसखत हे देयाल-दास का मोकाम कलकत्ता जान बजार केरो स्कूल स्ट्रीट ११ नंबर दोकान के मालिक पंचमराम कुरमी॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ९ तक—मंत्र जपने की विधि। बला से बचने का मंत्र और उसकी तरकीब। वीर सिद्ध करने का मंत्र तथा उसकी विधि। चौकी मोहमदा वीर की और उसकी तरकीब। इस चौकी के उपयोग। चौकी लोकावीर, विधि तथा उपयोग सहित।

(२) पृ० ९ से पृ० १८ तक—चोरों का अंजोरा, विधि तथा उपयोग सहित। भैरों की चौकी। जिन्नों तथा नबियों की हाजरात। नाहर चोर तथा बिच्छू आदि बांधने का मंत्र। मुठी पार की चौकी। चौकी हनुमन्त वीर, डाकिनी आदि बकराने (तलगने) का मंत्र। मंत्र सर्व सुख दाता। सर्वोपरि मंत्र-तंत्र। मंत्र देह रक्षा का। मंत्र इन्द्रजाल।

(३) पृ० १९ से पृ० ४० तक—रसायन का मंत्र। ऋद्धि-सिद्धि का मंत्र पृथ्वी में धरा धन दीखने का मंत्र, पृथ्वी खोदने का मंत्र तथा तरकीब। मंत्र देह रक्षा का आप। मार्ग में सांप, चोर, नाहर से बचने का मंत्र। मार्ग बाघ के बांध देने का मंत्र, आफत टलने का मंत्र। हल बंधन का मंत्र। मेघ स्तंभन मंत्र। उत्तम पास होने का मंत्र। दरिद्रता नाश करने का मंत्र। रोजी प्राप्ति का मंत्र। किये कराये के उतारने का मंत्र। रक्षा मंत्र। समस्त पीड़ा का मंत्र। दांतों के कीड़ों का मंत्र। नेत्र की फूली कटने का मंत्र। नेत्र की रोशनी करने का मंत्र। नेत्र दुखने का मंत्र। नेत्र रोग का मंत्र। पेट की पीड़ा का मंत्र। दाढ़ की पीड़ा का मंत्र। प्लीहा का मंत्र, पसली पीड़ा का मंत्र। गर्भ स्तंभन मंत्र। बवासीर का मंत्र। अन्न पचने का मंत्र। आधा सीसी का मंत्र। जहर उतरने का मंत्र। नगरा का मंत्र। बिच्छू का, बावले कुत्ते काटने का मंत्र। गाय भैंस के कीड़ों का मंत्र। सांप काटने का मंत्र। मार्ग में आराम पाने का मंत्र।

(४) पृ० ४१ से पृ० ६४ तक—पशु का कीड़ा झाड़ने का मंत्र, पैर थकने का मंत्र। शत्रु मुख बंधन मंत्र। सर्व मोहनी मंत्र। सुई छेदने का मंत्र। बवासीर फूटने का मंत्र। बाजीगर के तमाशे का मंत्र। कड़ाही बांधने का मंत्र। हांडी में आग न लगने का मंत्र। तुपक बांधने का मंत्र। तलवार बांधने का मंत्र। घर बांधने का मंत्र। घाव पुरने का मंत्र। घानी बांधने का मंत्र। भानमती के अन्य खेल। अग्नि बुझाने का मंत्र। जंत्र मंत्र और तंत्र तीनों के दूर करने की तरकीब। रोजी मिलने तथा धन की वृद्धि होने का मंत्र। रोजी व धन बढ़ने का मंत्र। वृद्धि कारक मंत्र। लक्ष्मीजी का मंत्र। कमच्छा का मंत्र। कुबेर का मंत्र (ध्यान

सहित)। मनसा सिद्ध करने का मंत्र। व्यापार सिद्ध करने का मंत्र या व्यापार के द्वारा धन प्राप्ति का मंत्र। उपद्रव नाशक मंत्र। उपद्रव नाशक मंत्र छंट कारिणो। सहदेई कल्प मंत्र। विद्या का मंत्र। पढ़ी हुई विद्या न भूलने का मंत्र। मंत्र उच्छिष्ट गणपति। स्वप्न में कृष्ण का मंत्र। कुश्ती जीतने का मंत्र। कीर्तिवीर्य का मंत्र। रुद्र का मंत्र। गणपति का मंत्र। कर्ण पिशाचिनी का मंत्र।

(५) पृ० ६४ से पृ० ८६ तक—यन्त्र बंध की विधि। दस मंत्र संस्कार। बटुक मंत्र। सरस्वती मंत्र। छुवा बड़ी का सर्वोपरि मंत्र। बगला मुखी मंत्र। (न्यास, ध्यान तथा मंत्र सहित)। ज्वालामुखी का मंत्र। महालक्ष्मी का मंत्र। नजर का मंत्र। मूठ थामने का मंत्र। भूतादिक दोष निवारण मंत्र। गंडा बनाने का मंत्र। पक्षियों का खलल दूर करने का मंत्र। किये कराये की रक्षा का मंत्र। भूतादिक दोष निवारण का अन्य मंत्र। ज्वर मंत्र। नकसीर थामने का मंत्र। आंख दुखने का मंत्र। सर्प काटे का मंत्र। मृगी का मंत्र। दांत के कीड़े का मंत्र। आधा सीसी का मंत्र। बनवासी की रक्षा का मंत्र। जादू उतारने का मंत्र। राज वशीकरण।

No. 493. Indrajala-Vidya. Leaves 22. Deposited with Paṇḍita Bhālachandrajī Miśra of Śitalanaṭolā, Post Office Malihābāda, District Lucknow.

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ अथ इन्द्रजाल विद्या लिख्यते॥ दोहा॥ इन्द्रजाल विद्या कहौं सुनियों चतुर सुजान। मारन मोहन बसि करन और उचाटन जान॥ १॥

चतुर होइ सो करै नर करै सो चूके नाहि। चूकि जाइ तौफेरि नहि बचै न याही ताही॥ २॥ चौपाई॥ विद्या इन्द्रजाल को करै धीरज धरै नयन मैं हरै॥ मारन मोहन सबै करावै। अपुहि आय बचै औ बचावै॥ फेरि उच्चन विद्या छाड़ि चले। कोइक फुल बन रितु मैं फलै। बसी करन उचाटन जानै॥ कोई पैठ पतालहि पावै। कोई बाधे सर्ग उठावै॥ कोई करै दिवाना सोई। सब काने देवे कोई बाग बगीचा देवै॥ कोई जाइ दर्वसो पैवै॥ कोई जल ऊपर जो धावै। कोई बनरिक फल जो पावै॥

End:—अथ श्री के मंत्री करने की विधि॥ जो कोई इसी मान करै जब तब ऐसो विधि कीजै॥ आदित वार शनिश्चर हो वे कच्चे डोरा लीजै। फिर चिरौटा लगा लगावे संगत करै जो जबही॥ तब डोरा मैं गांठ दई है औ बेर लड़ी जो तबही॥ वह डोरा को धूप देइ कर भामिन महि पदचावै॥ वह डोरा डाला मे डारै जब यह कामिनि जावै॥ लहंग नधत छूटि परै जब कोटि जतन

कर वावै ॥ वह महाँ वधै वधाये कवहु सवद गुरु का साधै छोटि फेरि जार डोरा को लहगा बांधि जो पावै ॥ ऐसा जतन दूजे से न कहिये घाप जाइ कर धावै ॥ मंत्र मूत प्रेत का हनुमंता चलधंता गाव कंधा माथे वज्रक कोठा घलो हाको लठो सुने की घानो हुक फिरै हनुमंत वृत घो भोम मार भूत मार प्रेत मार डाकनो साकनो मार बड़ा वीर मसान मार पाताल मार जो न मारै ता माता अंजनो दुध पिवा हराम करै मउवा कलाहल घपनो कपाट पुजालो जै घपाना घलध्याय न धंन घ को ॥ इति इन्द्रजाल ॥

Subject :—मारन विधि, घन्य मारन विधि, मारनविधि मंत्र, मोहन मंत्र, उच्चाटन मंत्र, वशीकरन मंत्र, काल भैरव इन्द्रजाल, सिद्धि सिद्धि विधि, कोठी फरन विधि, घलोप मंजन, दोवाना करने की विधि, वैरो का दवा देना, स्त्री को जुवतइकंगो, दरियाव भोतर पैठने की विधि, पानी में नाव थमने की विधि, मर्द वशीकरन, स्त्री को नंगो करने की विधि ॥

No. 494. Jantramantra. Leaves—11. Deposited with Paṇḍita Ramākānta 'Prakāśa', Village Baṇḍā Gaḍavārā, District Pratāpagaḍh (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ ॐ ह्रों ह्रौं ह्रीं ह्रौं ह्रः ॥ वा वा दि नि ॥ सरस्वती मम बुद्धि प्रकास कुरु कुरु स्वाहा ॥ घनेन मंत्रेण सहस्र जाप्यं करोति ॥ तद सांस होम ॥ दसांस त पहा दसांस मार्जसा ॥ सर्वे सिद्धि भवति ॥ जराम्बुं तु सनि भवति वग वाचस्य प्रतिमः भवतिमः भवति प्रति दिनः घष्टो-त्तर १८ ॥ माप्यं कुरु इति सरस्वती मंत्रः ॐ भुर्भुवः ह्रीं क्लीं सो सो फट स्वाहा ॥ घासन उपदेश मंत्र ॥ कृष्णायनमः ॐ ह्रों ह्रों सब इचंद्रमा मैं सुत्र मन छते ध्याः पापायः रञ्जितांभ्यः स्वाह ॥ जप्य घपोत्तर सत श्रों भ्रों श्री श्री ततः ममः नामः स्वाहा तीनि वेर पढ़े चारों दिसा ताके घाऊ पवेस होइगा ॥

End :—सात सरिसो तेरह राइ नैा सव योगिनि देषि डेराय चंदा दै चंदा देषि मुष धोवै सूर्य घस्त करै मसान जो जो मोका चित्त-वैसो सो पावै त्रास सभा वइठि कै बोले दाय जिहि मारो-नरसींह के धाप जोगनी माता ईश्वर उवाच मेरी सक्ति गुरु की पाव सरना ॥ देवी सहाय ॥ घगर चंदन कस्तूरी गोरोचन चूर कपूर सो भोजपत्र पर लिष मनोरथ पूर्ण होय ॥

× × ×

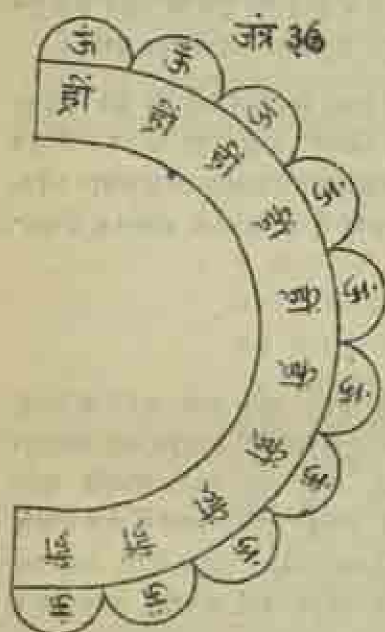
× × ×

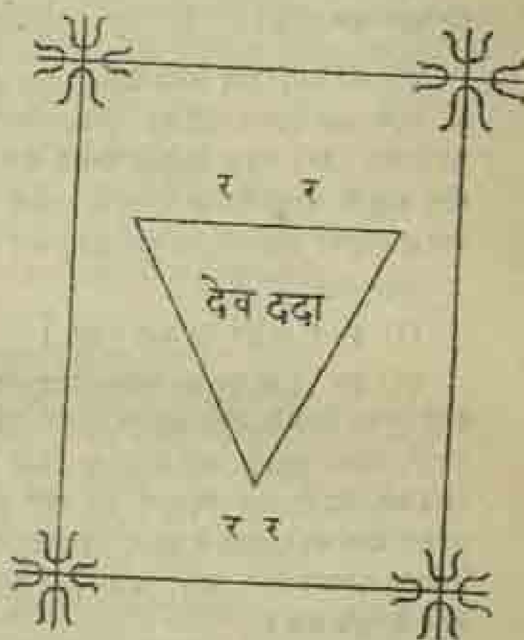
Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ९ तक—सरस्वती मंत्र, वगद्राक मंत्र, जंत्र (बालक के गले में बांधने के लिये) गर्भस्तंभन, स्त्री वशीकरण, पंद्रहा जंत्र ।

(२) पृ० १० से पृ० २२ तक-बांब का मंत्र, घर्म कुमारी का मंत्र, अर्जुन दस नाम, गौ को व्याधि का मंत्र, उच्चाटन विधि, पिशाच मंत्र, गर्भस्तंभन ।

No. 495. Jantrāvalī. Leaves—33. Deposited with Paṇḍita Vindheśvarīprasāda, Teacher, Saṁskṛita Pāṭhaśālā, Village Gauḍā, Post Office Mādhoganja, District Prātapagaḍha (Oudh).

Beginning :—





मूल नक्षत्र रविवार को इस जंत्र को भोजपत्र में अष्टगंध सो लिख के स्त्री के बायें हाथ में बाँध दे तो गर्भ स्थित रहे गर्भ नहीं गिरे पुत्र होय ।

इस जंत्र को कागपंख से भेड़े के रुधिर से मसान के कोयले से मुरदे के कफ़न पर लिखे वा मसान के बांस पर लिखे ।

विधि—पुरब को पुश्त करके चैाराहे के राह में सात अंगुर नीचे गाड़दे तो दोनों मित्र में लड़ाई होगी । उच्चाटन होगा ।

End :—

जंत्र १२३

७६	७३	२	८
७	३	८०	७९
८२	७७	९	१
४	६	७८	८१

इस जंत्र को माली बाग़ में गाड़े तो बाग सुख जावे।

जंत्र १२४

५९	६६	२	८
७	३	६३	६२
६५	६०	९	१
४	६	६१	६४

जंत्र बकरी के दूध में लिखे जब पुष नक्षत्र होवे तो वह बकरा नाचे।

इति श्री पोथी इन्द्र जाल चौथा भाग जंत्रा वलो सम्पूरन भई जो पत्र में देषा सो लिषा मम दोष न दोजिये पंडित जन सो बिनती मोर टूटा चछर लेव सव जोरी सन १३०१ साल महीना बैसाष वदी मोकाम कलकत्ताः जौन बजार प्रोत-मार बाबू के कोठी का दरवाज़ा के सामने दोकान है दोकान के मालिक पंचम-रामतु दसषत दयाल दास का सम्पुरन।

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० २० तक—शुम।

(२) पृ० २१ से पृ० ३२ तक—राज सभा में मान पाने, सर्व कार्य के सिद्ध होने, कुत्ता भौंकने, मट्टी फोड़ने, ढोल फोड़ने, भूत भगाने, दुकान का व्यवहार बढ़ाने, बिक्री बढ़ाने, सर्व मनोरथ सिद्ध होने, ताप बंद होने, सम्पूर्ण कार्य सिद्धर्थ, ऊंट ही ऊंट दिखाई देने, सर्व काम सिद्ध होने, स्वप्न में भूत देखने, घावरा रोग जाने, स्वप्न में बन्दर ही बन्दर देखने, सर्व काज सिद्ध होने, गया पशु लौटाने, घावरा रोग जाने, कमान का रोदा न चढ़ने, सर्प न खाने, तथा भय न होने के लिये मंत्र॥

(३) पृ० ३३ से पृ० तक—मनोवांछा सिद्ध होने, भूत बाधा न होने, बोध होने, हनुमान देव को प्रसन्न करने, वचन सिद्ध होने, बुद्धि अधिक होने, मन चीता काज होने, शत्रु के यहां क्लेश कराने, काली देवी का प्रसन्न करने, सर्व कारज सिद्धि होने, विद्या बुद्धि होने, डर न लगने, अंबिका देवी के प्रसन्न होने, शत्रु का चित्त उच्चाटन होने, चक्रवर्त्ती वश में करने, नज़र लगने, भूख बहुत होने, कामना जागने, पाई वस्तु पाने, ज्वर जाने, मनोकामना सिद्ध होने, प्रेत का भय

न होने, धड़क बायु जाने, मनचीता कारज होने, सर्व कामना सिद्ध होने, बुद्धि नष्ट करने, अति सुख प्राप्त होने तथा भूतादिक दोष दूर करने के लिये मंत्र ॥

(४) पृ० ५१ से पृ० ६६ तक—ऋद्धि-सिद्धि होने, वृक्ष में फल अधिक आने, बैरी को कष्ट न देने, शत्रु से विजय पाने, आपस में लड़ाई कराने, स्मशान जगाने, मनुष्य को मस्त करने, बैरी को हानि पहुंचाने, आपस में झगड़ा कराने, चूहों के कपड़े न फाड़ने, स्त्री के पुत्र होने, भूत-भय विनाश होने, सब देवताओं के प्रसन्न करने, कुए में जोतने, सभा में सन्मान पाने, शत्रु के शरीर में दुख करने, सर्प न आने, सर्व कार्य की सिद्धि, अधिक भोजन करने, बाग में फूल बहुत आने, बिच्छू उतारने, भूत प्रेतादिक का भय न होने, किसी तरह की बाधा न होने, बाग सुखाने, तथा बकरा नचाने के लिये मंत्र ।

No. 496. Joganidisāvichāra. Leaves—4. Deposited with Paṇḍita Rāmaprasāda Pānde of Ghurahā, Post Office Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—अथ जोगनी दसा को विचार ॥

जन्म नक्षत्र ते आदि दै । अश्वन ते गुन लेय ।
त्रै लोचन है मिश्र के । ते इकत्र करि लेय ॥
तामें अष्टम भाग हर । बांको लेइ विचार ।
सेष अंस बांको बचै । दसा लेइ ठहराइ ॥२॥
एक अंस को मंगला । जुगल पिंगला जान ।
तीनि अंस धन्या रहै । चारिहु भ्रमरी मान ॥
पंचम नीको भद्रका । षष्टम उलका जान ॥
सप्त अंस सिधा रहै । अष्टम संकट मान ॥
अष्ट दरसा छत्तीस हीं । अवध द्वार अनुमान ॥
अपने अपने फल करै । अंतर दसा प्रमान ॥

End:— ॥ चन्द्रमा को वासे ॥

पंचम जन्म तीसरो सीस ॥ षष्ठम नमों नगि मे पीठ ॥ अष्ट सातौ दसौ एकादस हृदै मनोजै ॥ दुजो चौथौ हस्त निवास ॥ येहि विधि मनौ चन्द कौ वास ॥ अथ फल ॥ माथे चंद्रमा द्रव्य बढ़ावै । हिरदै चद्रमा सदा सुष पावै ॥ पाइन कर कर पीठ निरास । हस्त चन्द्रमा पुजवै आस ॥

× × × ×

Subject :—(१) पृ० १ से पृ° ८ तक—जोगनी दशा विचार एवम् चन्द्रमा का वास ॥ चक्र ॥

No. 497. Jyotisha Leaves—46. Deposited with Paṇḍita Bāsudeva of Kamāsa, Post Office Mādhauganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :— ॥ छंद गीतिका ॥

अज मीन घटिका तीनि के पल जानिये। इकतालिसा वृष कुंभ वेद बखानिये।
पल होत तेरह शालिशा——मिथुन मकरहि बान वेदहि दंहु वल ये जानिये
कर्क धन सर बवा हि स सहो ये करि मानियै ॥
सिंह अलि मैं पांच घटि पैतालिसौ पल होत है।
कन्यका अरु तुला पांचे पैतिसौ पल कहत हैं।
यह भुक्ति वेद बखानि भाषत छंद है यह गीतिका।
गनक लोग विचारिहैं मन मानि ऐसो रीतिका ॥

× × × ×

चन्द्र मित्र रवि बुध कहे और सकल समभाव।
शत्रु कोऊ इनके नहीं ऐसा कह्यो प्रभाव ॥२॥
मंगल के यह मित्र हैं, सूर्य चन्द्र गुरु पूर ॥
शुक्र सनिश्चर सम कहै, बुधहि शत्रु कह क्रूर ॥३॥
बुध को मित्र बखानिये, सूर्य शुक्र दुइ जानि।
मंगल अरु शनि समहि, चन्द्रहि शत्रु बखानि ॥४॥

End :— ॥ भाषा कवित्त ॥

चन्द्र ले शोधित तीनि नक्षत्र दिवाकर रिक्षन एक न नीको।
दुइ बंचे भ्रम पंथ करै धन शून्य बचै सब सिद्धि घनीको ॥
बैरी मुंड कर रुंड करै कर बालक खंभ जदा कदली को।
यह चक्र विलोकि के दयर करै मघवानहि रच्छत ताहि घरी को ॥
॥ इति डाक चक्रम् ॥
॥ दोहा ॥

रवि नक्षत्र को आदि दै शसि नक्षत्र लौ भोग।
भाग भागिये सात कौ कहिये भादर जोग ॥
बचे तीनि क्षा सम करय शुम्भे शात कलेश।
बान (५) बेद (४) ससि (१) जो बचे तव कीजो परवेश ॥
॥ इति दयर चक्रम् ॥

× × × ×

॥ इति सुत चक्र चक्रम् ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ९ तक—राशि मेलनम्, द्वादश राशयः। लग्न मुक्ति प्रमाण, लग्न प्रमाण, राशीश, राशीस चक्र, उच्च ग्रह जानना, चन्द्रबल, ख्योनि, सिद्धि-योग, चन्द्रवास फलम्, भद्रा, कर्कच योग, जमघंट, वर्ज्यानि, वर्षप्रीतिः। नाड़ी दोषः। योनि दोष और शत्रु, बुध पंचक, रविबल, गुरुबल, (विवाह प्रकरण)।

(२) पृ० १० से पृ० २२ तक—वधू प्रवेश, द्विरागमन, गर्भाधान, सीमन्त पुंसनकर्म, प्रसूतास्नान, नाम करण, निष्कासन अन्नप्राशन, चूडाकर्म, कर्णवेध, बुधयन्त्र, विद्यारंभः, हल प्रवाह, बीजोप्तिः, भूमिशयन, पाटः सूर्य क्षौत द्वार चक्रम्, कूपचक्र, सेवा या प्रवास विचार, राशि राशिके भीतर, द्वार विचार, नवान्नम्, शस्य रोपणाकर्ण मर्दन, चूलिका परिधानम्, पंचक रोगोस्नान, सर्वांक यात्रा, दिग्शूलम्, तत्काल यात्रा, तत्काल चन्द्रविचार, नक्षत्र के उत्तम, मध्यम तथा नष्ट होने का विचार, एक मासे पंच वार फलम्, शुक्रोदय फल, हुताशन फल, धाम वास फल, मूल वृक्ष फल।

(३) पृ० २२ से पृ० ४० तक—वार पृथिकि, योगन्यास मूल विचार, मूल वृति विचार, शुक्रोदय फल, हुताशन फल, संक्रांति फल, रोहिणी चक्र नर चक्रम्, गोचर फल, नित्य क्षौरः राज्याभिषेकः, भैषज्य कर्म, नरवाहन, गृहदानम्, गुरु विचार, पंचमी फल, पूर्णमास्यांफलम्, राशिग्रह योगफल ग्रहोदय राशि फल, नक्षत्र गुरु फल, एकराशौ ग्रह भुक्तिः, होम विचार, वर्षा नक्षत्र के वाहन, स्त्री पुरुषो नपुंसक जाग विचार, वर्षाज्ञान, गर्भज्ञान, छींक विचार, दिग-शूलेन वारणम्। कंडा रखने का विचार।

(४) पृ० ४० से पृ० ५८ तक—जातक भाषा, लग्न का रंग, लग्न प्रमाण जानना, राशि तत्व, लग्न उदय ज्ञान, राशिनाम, क्रूर ग्रह, उच्च ग्रह, नीच ग्रह, ग्रहबल, नैसर्गिक बल, सूर्यादि ग्रह स्वरूप, चन्द्र फल, भौमफल, बुधफल, गुरुफल, शुक्रफल, शनिफल, शनिद्वार जानना, राहु फल, कौन ग्रह किस उमर में क्या फल देता है। गर्भ विचार, भवन द्वार जानना, दीपक भेद, यात्रा लग्न विचार।

(५) पृ० ५९ से पृ० ६४ तक—शकुनं ग्रामादिषि, सम्वत् फल, काक फल, काक वाक्य परीक्षा, त्रिदंडी चक्र।

(६) पृ० ६४ से पृ० ९२ तक—शिवा मुहूर्त, कोटादि संबंधी ४३ चक्र, अन्य विचार, ग्राम सुप्त जाग्रत विचार, कोट जाति विचार, मोट बन्धा चक्र, टाक चक्र, द्वार चक्र, सप्त चन्द्र चक्र।

No. 498. Kakaharā-me-Śrīmahādevaji-ka-Vyāha. Leaves—2. Dated in Samvat 1925 or A.D. 1868. Deposited with Paṇḍita Rājārāma, Village Narahā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ककहरा में श्री महादेव जी का विवाह वरननं ॥ गनपति सुमिरि ककहरा कोजे चौतिस अक्षर पर कहि दीजे ॥ कहत ककेहरा एक सुदेसा । गिरिजा व्याहन चले महेशा ॥ खाय लगायेहमक लोने भांग धतूर पत्नाना कोने ॥ गले महल सपुंछ सिर गंग ॥ भूषन भसम लगाये अंगा ॥ घर नाहि दूसर भूत बराती । चले चरात विजया की पाती ॥ नाम एक ईसहि सुन राजा । करत निहाल गाल के बाजा ॥ चन्द्र लिलाट जटा छिटकारे ॥ लोचन तीन लोक उजियारे ॥ छांड़े गृह कैलास सोहाये । व्याहन वेन महेश मंगाये ॥ जतन न कोन्ह वेल को थानो । साने सोंग मढ़ायो पानो ॥ झालरि नाग मोतिन को माला । थनी वेल जो शंकर पाला ॥ नाथ हाथ अपने पहिराये । कंचन से खुर नोन मढ़ाये ॥ टेरत भूत भिखावन थानो । वेल चढ़े आवें शिव दानो । ठाढ़े सुर मुनि देषि तमासा डोगंवर वाधंवर पासा ॥ डैकिउ वेल चलावे हुको का वरनो सामा हर जू को ॥ ढोल नफोर भेरि वह डंका । वेल चढ़े आवैं शिव वंका ॥ नांदुर व्याल वेल विष भसन । चढ़ हिमंचल थान सलक्षन ॥

End :—माने सोच सबा जनि कोई । करम लिषा तब पावा सोई ॥ अव हि बरात द्वारहि आई । विसुका वेल वाव मरराई ॥ राजत गिरिजा देषि तमासा । सखिन सोच हिमवान हुलासा ॥ लगे पांव हिमवान पधारे । मोतिन चौक आनि वैठारे ॥ वारिके मानिक कोन्ह निछावरि । संकर गौरि दोन्ह सत भांवरि ॥ सो संपति शिव दीन्ह लुटाई । अचल कोन्ह हिमिवानहि जाई ॥ पवरि भई देवन सब जाना । गौरो व्याह कोन्ह हिमवाना ॥ सो संपति शिव जग के दानी । चरन टेकि ले दीन्ह भवानी ॥ हरषे देव सुमन वर्षांये । ब्रह्मा विष्नु तमासे आये ॥ दो० ॥ क्षेम कुशल रचना रची शिव गौरो को व्याह । मुक्ति दान मोहि दाजिये प्रभु तुम्हारो मैं दास ॥ इति श्री ककहरा शिव गौरो व्याह संपूर्ण संवत् १९२५ मिती जेष्ट बदी पंचमी शिवायनमः ॥

Subject :—शिवजी का विवाह वर्णन ॥

No. 499. Kālachakra. Leaves—4. Deposited with Paṇḍita Vāsudevasahāya of Kamāsa, Post Office Madhauganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥

मेष रासि जो जन्म होइ ॥ रवि क्षेत्र जसवंत होइ ॥ कोप वंत होइ ॥ विते वांस मित्र होइ ॥ सुन्दर वंत होइ ॥ चपल होइ ॥ सिष्टान भोगी होइ ॥ कष्ट वर्ष ६ ॥ १५ ॥ ३१ ॥ ३५ ॥ ६७ ॥ ७५ ॥ जेष्ट मासे शुक्ल पक्षे मंगर वासरे तिथि पंचमी ५४ डं पहरे प्रान त्यज्येत् ॥ १ ॥ वृष राशिजे १ जन्म होइ ॥ मिस्त भाग वंत होइ ॥ कष्टमास ॥ १२ ॥ १७ ॥ ३४ ॥ ५३ ॥ १०० ॥ असाढ़े मासे कृष्ण पक्षे चित्रा नक्षत्रे सतमी तिथि शुक्र वासरे प्रथम प्रहरे प्रान त्यज्येत् ॥ मिथुन राशि जो जन्म होइ ॥ कष्ट मासे वर्ष ॥ ४ ॥ १० ॥ १४ ॥ १८ ॥ जीवे वर्ष ८६ ॥ श्रावण मासे कृष्ण पक्षे अश्वनी नक्षत्रे एकादशी गुरु वासरे प्रथम प्रहरे प्रान त्यज्येत् ३ ॥

End :—उत्तर षाढ़ दिन ४ मास ८ वर्ष १४ वर्ष ८० ते जीवे १०० राजा हाथ मृत्यु ॥ श्रवण दिन ३ मास ३ वर्ष ४९ ते जीवे वर्ष ८० रोग हाथ मृत्यु ॥ धनिष्ठा दिन १२ मास १ वर्ष ३० ते जीवे वर्ष १०१ लोह हाथ मृत्यु ॥ शत भिषा दिन १४ मास ९ वर्ष ४० वर्ष ५० ते जीवे वर्ष ३ ते जीवे वर्ष ३५ विष हाथ मृत्यु ॥ उत्तर भाद्र पद दिन ४ मास २ वर्ष ९ वर्ष ११ वर्ष १५ ते जीवे वर्ष ६० सुख मृत्यु—

॥ इति काल चक्रं ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ५ तक—जन्म राशि के हिसाब से कष्टादि पड़ने और मृत्यु दिवस का परिचय। (जन्म-राशिक आयुः बलं)

(२) पृ० ५ से पृ० ८ तक—जन्म के नक्षत्र से अवस्था की सीमा निर्धारित करना।

No. 500. Kalikāla-Varṇana. Leaves—7. Deposited with Paṇḍita Vishṇubharose, Village Belāmaū, Post Office Aja-gaina, District Unnāva (Oudh).

Beginning :—देव मंदिर दिया न बाती गोर न पै उजियाला। भूम देव विप्रन को देख्यौं कीड़ो देत कसाला। रांड़न के भोजन को सिनो ऊपर पान मसाला। साधुन को नहीं चून नून छुको लेठै देव दिवाला। चतुर नरन को बद सूरत को कूरन के घर बाला। मूरख बैठे मौज उड़ावे पर बीनन पग छाला। भूपति क्षमा करत नीचन पै कर अनीत पत पाला। अवर और कल काल जाल को गुन को चले न चाला ॥ मुसलमान सीता पति सुमिरै हिंदू मुख कह ताला। मुसलमान मीसो कर टेरें हिंदू भातक साला ॥ दोम दोम कर जात मदारन दाब कांब मैं लाला ॥ पूजत प्रेत गुरैया बाबा छोड़े देव विसाला ॥ अधरम प्रगट भयो

भूतल मैं धसि गो धरम पताला ॥ ३ ॥ नित्रपति मुच्छ तुच्छ करि भारत उपपति हित प्रति पाला । विधवा इगन कोर भर काजर अंग आभरन जाला । मुलकट कंचुक कसत सुजन पर उर पर धर बन माला । अधरम धरम प्रगट भयो भूतल धंसि भयो धरम पताला ॥ ४ ॥

End :—एकै साहु एकरि रिनिया को लूठ लेत घर साला । एकै रिनियां बांध पोटरो देत साहु को वाला ॥ जोर जोर पंचन को स्यावत मानत बात न आला । अधरम प्रगट भयो भूतल मैं धंसिगो धरम पताला ॥ १ ॥ पर सुष देष सुनत सिर काटत पुत्र सोग सो साला । औरन को दुष देष देष सुष मनो प्रगट भयो लाला ॥ ऐसो कुमति भई लोगन की चलत कपट को चाला । अधरम धरम प्रगट भयो भूतल धंसि भयो धरम पताला ॥ २ ॥ लपट झपट घर घर पट पट कर बरत कपट को ज्वाला । मारन उलट पलट घट घट कर विकट प्रगट कल काला ॥ दुर्जन चटक मटक अति चटकत सुरजन पटक पताला । अधरम धरम प्रगट भयो भूतल धंसिभयो धरम पताला ॥ ४ ॥ संन्यासी राखे दुज दासी नित प्रति वेद उचाला । एकहि ब्रह्म सकल घट पूरन यामें पाप न झाला । धर्म शास्त्र में थापो दासी भोगत सब घर वाला । अधरम धरम प्रगट भयो भूतल धंसि भयो धरम पताला ॥ त्याग करत अंगुर दाखन को गुलर पै हित पाला । पर निंदा पर पूरत पंडित मंडित करत कुचाला । पुत्र पाठ की बात न बोलत दिये रहत मुष ताला अधरम धरम प्रगट भयो भूतल धंसि भयो धरम पताला ॥ ६ ॥

Subject :—कलिकाल को दशा का वर्णन ॥

No. 501. Kathā-Saṅgraha. Leaves—72. Deposited with Paṇḍita Rāmaratna Śukla, Village Dariyābāda, District Unnāva (Oudh).

Beginning :—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ कथा संग्रह लिष्यते । पहिली कथा एक साहूकार पोवड़ों का राजा समय के फेर में पड़ अपना धन सब खो बैठा और लगा निपट दुख पाने और उदासा रहने निदान उसके जी में यह सोच आया कि जो मै किसी महा पुरुष या सिद्ध के पास जाऊं तो यह दुख मिटे क्यों कि सुना भी है कि साधू के दर्शन से व्याधा जाती है यह विचार कर एक जोगी के पास गया । वह उससे कुछ कहने न पाया कि उसने अपने जोग से इसका मनोर्थ जान कर के कहा ॥ दोहा ॥ सुख दुख पति दिन संग है मेटि सकै नहिं कोय । जैसे छाया देह को न्यारी नेकन होय ॥ यह उत्तम उत्तर पाय वह विचारा घोर घर अपने घर आया ॥

(२) कथा। एक अंधा बैरागी काशी के बीच मणिकर्णिका घाट पर बैठा ग्रहण में दही पेड़े खा रहा था कि देख कर किसी पंडित ने पूछा सूरदास जी यह क्या करते हो बोला महाराज दही पेड़े खाता हूं कहा ग्रहण में उत्तर दिया बाबा मेरे गुरु दया से सदाही ग्रहण है यह सुन कर पंडित हंस कर चुप हो रहा॥

End:—एक बूढ़ा बटोही ग्रीष्म की रितु में तपन की प्रचंड किरणों से निपट कष्ट पाकर लाठी टेकता चला जाता था मार्ग में एक युवा घोड़ा चढ़ा आ निकला बूढ़े को देख कर उसे दया हुई बोला बाबा मैं युवा पुरुष हूं शीत घाम सब सह सकता हूं तुम बूढ़ापन के कारण बहुत थके अब इस घोड़े पर चढ़ो मैं पीछे पीछे चला जाऊंगा उसकी इस करुणा बातों से मगन हो बूढ़ा उसके घोड़े पर चढ़ा और युवा पीछे पीछे चलने लगा वह बहुत दूर न गया था कि युवा ने पुकार कर कहा कि अरे बूढ़े निलज्ज घोड़े पर से उतर क्या तूने अपना घोड़ा पाया है और सारा दिन उस पर चढ़ा चला जाता है बूढ़ा लज्जित होकर उतर पड़ा और धीरे धीरे चलने लगा थोड़ी दूर गया था कि इसको कष्ट देख कर फिर उसके जी में दया आई और बहुत सी बिनती कर उसे फिर घोड़े पर चढ़ाया थोड़ी दूर जाते उसे फिर उसी भांति उतारा निदान तीन चार बार उसे इस प्रकार उतारने चढ़ाने से उसने पूछा बाबा तुम्हारे पिता का नाम क्या बोला सैय्यद हुब्बी उसने पूछा तुम्हारी महतारी का नाम क्या बोली जोरा पर वह कुल अंतो नहीं उसको ब्याह करने से हमारे कुल में कलंक लगा यह सुनते ही बूढ़े ने कहा हां बाबा अब मैं समझा कि चढ़ावं हुब्बा और उतारे जोरा अब आप सिधारिये मैं गिरते पड़ते चला जाऊंगा॥

Subject:—एक सौ कथाओं का संग्रह जिसमें हंसी आदि का वर्णन है॥

No. 502. Kavitāvalī-Aragaja. Leaves—18. Deposited with Sudarśanasiṁha Raisa and Tällukedāra of Sujakhara, Post Office Lakshmikāntaganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ कवित्त॥

नभते सुर सुमन झरैं किन्नरादि गान करैं मान तान मोद भरैं सर वन सिंगार भो। सरभो बिलोकन को लोकन को हर निहार सव सिंधु सव निराधार के अधार भो॥ दोष दुसह दर निहार चार दान दीनन को दंपति जुग चरन सरन को न पतित पार भो। माधो मधुमास सुकुल पच्छ सुच्छ नैामी तिथि प्रगटे वसिराम स्याम स्यामा अवतार भो॥ १॥

बाजत बधाई सुखदाई दुदु राज द्वार,
अवध नगर जनको नगर जै जै जयकार भो।
शोक छोक भो विशोक संतन मन परम तोष,
निकसि भयो राम रोष जल थल उजियार भो॥
होन लागे राम रंग भक्ति ध्यान को प्रसंग,
देवन्ह चतिवार भयो हलन धरनि भार भो।
माधो मधु मास सुकुल पच्छ सुच्छ नौमी तिथि,
चाली बलिराम श्याम श्यामा औतार भयो॥२॥

End :—खेलत हैं फागु भरो लाल के सोहाग वाल,
फेंके करसों गुलाल संग लाज खोवतो।
कान्ह ह्वै चकोर भोर टारि रंगी वाको चोर,
सुन्दर उरोज ढांपि अंचल सों गोवतो॥
ताको कुच कारो मारो वासों पिचकारी लगी,
सिसकि समेटि (समेटि) सखी वाको छवि जोवतो॥
मानो चक्र तुंड सुंड गंग तीर कूद पैठि,
धार झुंड झुंड पूजि शंभु शिया धोवतो॥

खेलत हैं फागु स्याम स्यामा अनुराग भरे,
डफ करतार सैस मृदंग लो रह्यो है छाइ।
गावत राग धुंधुरि मचावे ग्वाल भमके,
भमकि भूमि काम रति को लजाइ॥
घुंघुटि उघारि कान्ह कर सो गुलाल मल्यो,
वाल मुख इन्दु लगी शोभा सपि दरसाइ।
अधर को विहाइ मेघ कारे चलगाइ मानो,
भौम विच दैके कंज चंद सों मिल्यो है आइ॥

ग्वाल के जाये कहां पावे इत मान ये तो,
गर्भ तो वहावे यो कहावत अहीर हठो हो॥
जाति के कुपाये पोति नाहीं मिलति रावरो,
बावरो भये कहैं लीन्हे हाथ लट्ठी हो॥
जानो बूझो बात को का करत हो सयानो।
करी बूझा पानो वो चलायो यार भठ्ठो हो।

Subject :—(१)पृ० १ से पृ० १२ तक-राम अवतार एवं कृष्णावतार, सीता राम की शोभा देखकर मोह, युगुल मूर्ति की महत्ता, ब्रज स्तुति, रामरूपवर्णन

(प्रेमसखी द्वारा) दीनता स्तुति (मधर्याविहारी) । कृष्ण की शोभा (तोष) ॥ विरह वर्णन (तोष) । कोमलता (प्रेमसखी) । गंगा की प्रशंसा जड़ता, महावीर युद्ध वर्णन । अङ्गद पदारोपण । स्वप्न (तोष) । रावण मन्दोदरी संवाद । महारानी जी के दर्बार का वर्णन (भूषण) । रावण अङ्गद संवाद । शिवराज प्रशंसा (भूषण) । चंद्रिका महत्व (निधान कवि) । नैन प्रशंसा (सर्वेस कवि) । गाजीपुरी ध्यान की प्रशंसा । भंगवानी की बुराई (गोकुल) । राम बिसराने का रूपक द्वारा फल बड़ाई । नायिका की शोभा । "मरेया" की ठकुराइन (गैरों को प्रशंसा) । (२) पृ० १३ से पृ०........तक विरह वर्णन (भूषण) । गुजरी का संयोग वर्णन, रघुवीर का बल वर्णन । मुद्रिका पात । लंका दाह । जैसिंह राजा का पावेट । चौकवी, चौदिसा, स्तुति, भरत हनुमान संवाद (संजीवनी लाते समय हनुमान कवि द्वारा) ।

No. 503. Kavitta. Leaves—5. Deposited with Paṇḍita Ramākānta Śūkla of Puravāgarībadāsa, Post Office Gaḍavārā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—कवित्त ॥

कासी मैं बास करौ जुग चारि लौं, द्वारिका जाइकै देह मढ़ावौं ।
बाँहि चढ़ाय दिगंबर है। सबरी सब छुधाकौ छाहिनो ध्यावौं ॥
यज्ञ भने मुष एकै जपै। कर कंचन कोटि सुमेर लुटावौ ।
पाउ सौं पाँयिकै जूझि मरै हरिनाम भजे बिनापार न पावै ॥

सीताराम जानतु हैा सीताराम मानतु हैं ।
सीताराम पूजति हैं जपत सीताराम हैं ।
सीताराम ही को प्रभु सीताराम कौ प्रनाम ।
सीताराम ही के ध्यान धरै अभिराम हैं ॥
श्रीपति सुजान सीताराम मैं बसत प्रान
नाम सीताराम जू कौ लेत आठौ जाम हैं ।
मेरे जान सीताराम कामना कल पतरु
सीताराम जू की सौंह सीताराम कौ गुलाम हैं ॥

तिसना बिलासिन के बसना बसैगे ।
रसना रिझा जिन स्वाद बदना भनै रहौ ।
कहत प्रजेस मद मोह मतवारिन के ।
मद कौ कहत करि ममिता हदै रहौ ॥
क्रोध लोभ मोह ज्यौं गुलाम पति भारत के ।
तजि कै पवास रहै सुबानि भने रहौ ।

मेरे तन मेरे मन मेरे धन मेरे धाम।
मेरे राम मेरे हियो सदन बने रहो ॥३॥

End:—सहज मैं सोले अंग जुरे चरवो ठेम।
राजत कुबोले किनै छाउनसहत है।
झूठ नाहीं बोले डोर-डोर नाहीं डोले।
भलो मुख सो छै सदा जस को चहत है॥
सुनै रागरंग रंग बाँधत सुरंग कवि।
कवि पंडितन संग लैय चरचा चहत है।
आनंद उछाह सदारहत चित चाह जामे
इतने सुभाव जाके ठाकुर कहत है ॥१॥

छप्पै

केहरि वन नहि चरहि सूर रन छिन नहिं संकहि।
सतोवन फिर महत कहि दानि करि होइ रंकहि॥
गुर नहिं गोपहि म त्र जंत्र नहि चलहि मरन पर।
इजत धमर नहिं तजहि अघम नहि पावहि सुरपुर॥
यह कर्म रेव विचलय चलय सतरतन अरु गुनगनहिं।
लछुपाल जाल संकहि रमल नहिं मराल क कर चुनहिं॥

Subject:—

(१) पृ० १ से पृ० १० तक—ब्रह्म, पजेष्टा, तुलसी, आदि कवियों के शान्तिरस एवं नीति संबंधी कुछ कवित्त।

No. 504 (a). Kavitta-Saṅgraha. Leaves—15. Deposited with Paṇḍita Satyanārayāṇa Tripāṭhi of Bandā, Post Office Gaḍavārā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :— ॥ कवित्त ॥

गोरे गोरे गाल पै गुलाब दार नाम सो हैं
बिजली झमाकदार दोनों कान झलकै।
बेंदी भाल माथ हू पै करत सिगार गोरो,
मथवा के मोती जस चन्द्रमा से लरकै॥
नाक हू को नथिया बुलाक में झमाक करे।
झुलनी को मोती गोरो घोठ दापै झलकै।
इतना बयान करि गदई के ऊपर को,
पार हू बयान कछु धंग संग करहीं ॥१॥

॥ सवैया ॥

नाम बड़ो धन धाम बड़ो जस कीरति हू जग में पसरो है ।
द्वार अनेक गयंद झुमे उपमा कछु इन्द्र से नाहिं घटो है ॥
सुख साज अनेकन पाय मनोहर फूले रहैं मन ही मन में है ।
तुलसी जग जीवन भक्ति बिना जस सुन्दरि नारि की नाक कटी है ॥

End :—

तात को सोच न मात को सोच, न सोच पिता सुरधाम गये को ।
सीय हरै को तो सोच नहीं, नहिं सोच हमैं वन माहिं रहे को ॥
बन्धु बिछोह को सोच नहीं, नहिं सोच जटायू के पंख जरे को ।
केवल सोच यही तुलसी, एक दास विभीषण बांह गहे को ॥
सुगन्ध लगाय के ऊबि मरो, प्रिय जानत हो तनको सुकुमारी ।
हार चमेली को नोक लगै, प्रिय लाज करौं पहिरौं तन सारी ॥
और अभूषण क्या धरो, प्रिय लागत पांव महावर भारी ॥
मेरे सुभाव को जानो नहीं, रसखान कपूर मुलायम ताड़ी ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १० तक—नायिका की शोभा वर्णन, भक्ति बिना मनुष्य की दशा, धनुष यज्ञ, राम एवं सीता के सुयोग का वर्णन, राम को देखकर सीता का प्रेम और सखियों का परिहास । माखन लीला । राम मल्लाह संवाद ।

(२) पृ० १० से पृ० १३ तक—लुप्त ॥

(३) पृ० १४ से पृ० ३० तक—उपदेश, धनुषयज्ञ, 'बात' का महत्व । समस्या पूर्ति "तरवा के तरे छौ" "दाह बुतात नहीं" । 'र' कार और 'म' कार का महत्व । "स्वप्नदर्शन" समस्या "धमरमार गऊर बजायो है" "नारि हँसे तो भंसैना" "छुनतो कोटि कारण क ढ़ि धरो है" 'छुनतो यहि कारन काढ़ि धरो है" "लक्ष्मण को शक्ति लगने पर राम का मनस्ताप" सुकुमारता का वर्णन ।

No. 504(B). Kavittasaṅgraha. Leaves—40. Deposited with Paṇḍita Ramākānta Tripāthi, Village Banda, Post Office Gaḍavara, District Pratapagaḍha (Oudh).

Beginning:—धामन दे घुरवा त्रिविध पवन आवन दे कुंजन में ललित लतान को । कूकन दे कोकिला पुकारन दे चात्रकन बोलन दे सजनी सुभाय सुजान को ॥ दामिनी जाति कातरी कामिनी में जागन दे बरसन दे इन्द्र झुमड़ि घटान को । आयो मन भावन सो रस बरसावन मो सावन में गावन देहगी बनतान को ॥३॥

पावस प्रबल पीउ पीवै न रटत जीव ; दसहू दिसान के संदेस सब आयरी । मोहन बतातो मन कैसे कठिन करौं , यद्यपि वितीत भई आली बरस आयरी ॥ मोरन को सोर सुनि कोकिलान को रटन दिन , पपोहा को टेर सुनि मदन जगायरी ॥ बूंदा आई बरसात गगन महरात , बैरी आये बादर विदेसो क्यों न आयरो ॥४॥

End :—विधि ने बढ़ाई दई नाहि लषि आवै कोऊ । ताको तू दया करि मया के रसढरियो । धन दौजा जस लिजो जीवन यहो है सुख , दैके सबै दुख दोनन के हरियो ॥ चिन्ता मनि कहै जो ये गांठ को न दीजो जाइ, ...तोऊ एक उपकार करियो । आपने कहेते जो आगठे को भलो होइ तो , जीभ के हलायबे को काहिलो न करिये ॥

कवित्त :—चोप कर विरंचि रूप रासि कैसो कोक कोक........

....

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० २५ तक—विप्रलम्भ शृङ्गार संबंधी कवित्त।

(२) पृ० २६ से पृ० ५० तक—संयोग शृङ्गार के कवित्त, तथा दोनों प्रकार के सम्मिलित छन्द, विविध नायिका भेद सम्बन्धी कुछ छंद ।

(३) पृ० ५० से पृ० ८० तक—ऋतु संबन्धी छन्द । विविध छन्द (गंगाजी की प्रशंसा तथा वीर रस के कुछ छंद) ।

No. 505. Kavittasāra by Manirāma. Leaves—25. Deposited with Umāshaṇkar Dube, Research Agent, District Hardoi.

Beginning :—श्री गणेशायनमः

गेहूर के गामी तुम स्वामी सत्यभामा जी के अन्तर के जामी तुम मिटैहो दुख धाइ कै । तुम तो रघुवीर धीर जानौ सबही को पीर भीर परे चोगहू बहाइ दीन्हीं वानि कै । कहत मनीराम गज ग्राहिसों उबार लीन्हीं अलप निरंजन सब तेरो जस गाइकै । नंद के कुमार नेक हेरौ प्रभु मेरो वार ऐसे हो बितैहो को चितैहो चित्त लाइकै । जैसो करो तू करो के कलेस मैं जैसो करो गति गोतम नारि को । गीध औ व्याध को जैसो करो फिरि जैसो करो सधना वो चमार को भेंटिय बार बरार कहा अवतार न हो आपने प्रतिपालको । तारि हौ नाहिं जो मोहि कहु उड़ि कीरति जैहे दसो अवतार को ।

End :—मेघ नहि मानत ए विरह के नगाड़े देत ठेहीं बुलवाइ यहां पवन विचारे को । प्यारे करि मोहिये न कोप मदन साम्के लिखतो संदेस मैं तो नन्द

के दुलारे को। कहै पदुमाकर कोकिला को केतो हकीकत कोयल बंधवाइ लैहो पंख उखारे को। प्यारे को कैसो समीप करि पावती तो पीय २ करतो पपीहा है मारे को। सवैया—ससुरे को तुम कोन पयान हमैं कल कैन परै नित प्यारो। चैन परै न घरी पल एक रहै निस वासर याद तुम्हारो। प्रान पियारो तुम्हारे लिये बदनामी भई पर यारी न छारो। भाखत गंग पसाद कहै तुम प्रीत लगाइ कै कीन्ह तयारो।

Subject:—(१) किसी पार्त्त मनुष्य का भगवान से अपनी दशा सुधारने के लिये प्रार्थना।

(२) जप, तप, व्रत आदि से रहित मनुष्य का ईश्वर की शरण आना।

(३) जनक जी के धनुष भंग का प्रसंग।

(४) नैमिषारण्य महात्म्य पर कवित्त।

(५) अयोध्या महात्म्य वर्णन

(६) सीताहरण, राम विरह, लक्ष्मण शक्ति

(७) नायिका का विरह वर्णन। किसी पुरुष का स्त्री के प्रति प्रेम।

No. 505. Kerala—Praśnadivākara. Leaves—2. Deposited with Paṇḍita Śivamaṅgalaprasāda Miśra of Udayapura, Post Office Aṭhehā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—पंचाङ्ग के लाभ खर्च एकत्र करे एक कम करके आठ का भाग दे, एक बचे तो लाभ, दे मे सुख तीन मे क्लेश चार मे रोग, पांच मे शोक तथापि वाद छै मे आदर सात मे जीत आठ मे हानि॥

प्रश्न कर्त्ता मुकद्दमा मे हार जीत का प्रश्न करे तो यदि आते समय दाहिनी ओर बैठ कर पूछे तो जीत बायें हार और सन्मुख भला होनो चाहिये॥ अमुक वस्तु खरीदने से लाभ होगा या हानि (उत्तर) नाम अक्षर मे ३ से गुणा करे वस्तु नाम अक्षर जोड़े एक और मिलावै दे पर भाग देवे एक मे लाभ दे तथा शून्य मे हानि होयगो॥

End:—अमुक मात मे मंदो या सस्तो उत्तर—महीना को संक्राति दिन तिथि के अंक जुक करि ३ पर भाग दे शेष एक मध्यम भाव दे सस्तो शून्य महंगो होना चाहिये॥

संक्रांत	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
अंक	३	२२	२३	२५	१९	१७	२२	१२	१६	१९	२३	२५
दिन	र	चं	मं	बु	गु	शु	श					
अंक	२१	१५	१३	२	१३	१४	०					
तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अंक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तिथि	१३	१४	३०	१५								
अंक	१३	१४	३०	१५								

इति प्रश्न दिवाकर समाप्तम् ।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ३ तक—

बारहों राशि के वार्षिक लाभ हानि का विचार । मुकद्दमें, क्रय विक्रय में लाभ हानि । गर्भ विचार प्रश्न । मास की मंहगी सस्ती का हाल ।

No. 507. Kerala—Praśnasaṅgraha. Leaves—4. Deposited with Paṇḍita Śivamaṅgala Miśra, Village Udayapura, Post Office Aṭhehā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—

ओ३म्

है	द	अ	ब	ध
दा	ज्ञं	ह	तो	ये
मो	दी	ओ	वी	ई
दो	ओ	ही	ती	क

ध—जिस बात की निस्वत विचार करने हो और हैरान हो, रोजगार को उत्पत्ति के लिये परदा गैब से खोला होगा ।

ब—एक आदमी की बेवफाई का ख्याल करके दिल में परेशान हो, अब खराब दिन निकल गये दिल का विचार पूरा होगा।

ञ—तरक्की रोज़गार आय व्यय का ख्याल लगा है बांदियों से भय है, नेकी का बदला बदी से मिलता है हो तीन महीने में फायदा होगा।

End :—

हो—दुनिया दारी के कामों में तुमको तकलीफ उठाना पड़ता है शत्रुओं व कर्ज़ख्वाहों ने नाक में दम कर दिया है सब काम १ साल के अन्दर अन्दर दुरुस्ती पर आजायेंगे।

तो—जिस कार्य्य के लिये कोशिश करते हो तुरन्त मुराद पूरी होगी और कोई मनुष्य तुम्हारी मदद करेगा।

क—जिस तरफ यात्रा करने का इरादा रखते हो वहां पर रोज़ कार में लाभ और हर तरह से आराम पाओगे परन्तु नशीली वस्तुओं से परहेज़ रक्खो।

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० ७ तक—बीस अक्षरों का एक कोष्ठ तथा उसमें अंकित प्रत्येक अक्षर का फल।

No. 508. Khela. Leaves—2. Dated in Samvat 1933 or A. D. 1876. Deposited with Paṇḍita Vindheśvarī Prasāda Miśra, Teacher, Sanskrit Paṭhaśālā, Village Gaṇḍā, Post Office Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥

१—बनते बनि आवत सखी। मोहन मदन गुपाल।
मोर मुकुट लखि थकि रहीं। कमल लिये कर लाल॥
२—चित में चम्पा को विटप। फूल्यो अति इर आय।
मन भावन में पैठि कै। गुथो माल बनाय॥
३—ऋतु बंसत आप सखी। कोकिल कहत सुनाय।
फूल्यो टेसू सघन वन। देषत मन मद भाय॥
४—मोहन मूरति सांवरो। लाल लकुट लें हाथ।
फूल विराजत सेवती। कुंजमाल के साथ॥
५—फूलन लागी केतकी। सुंदर सुखद सुवास।
चहुँ ओर गुंजत मधुप। नेकुं न छाडत पास॥

६—मोहन मूरति श्याम को। निरखि निरखि दर मैन।
नरगस को निरखन लगो। सुमन श्रवन को नैन॥

End :—२८—लालन के माथे बनो। पंक सो समनो पाग।
मोहो सब ब्रज की बधू। गुल सोसन के राग॥

२९—गुल बंसत फूलन लग्यो। देखति सखिन समेत।
मानहु शोभा ते भरो। सखि सोभा बढ़ि देत॥

३०—गुल सब्बो के हाथ में। सुंघत नन्द किशोर।
सहस सरूप धारिश्र नयन। चितवति र........॥

३१—गुलदावदी सघन बन। घेरि धाय चहुं वोर।
नन्द लाल को निरखि कै। हरषि रहेव मन मोर॥

श्री दसरथायनमः श्री राधा कृष्णायनमः श्री शिव श्री संवत् १९३१ सन १२८३ मिती वैषाख वदी २ बार मंगर॥

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० ४ तक—इकत्तोस दोहों में से प्रत्येक दोहे में राधा तथा कृष्ण का संबंध स्थापित रखते हुए एक एक पुष्प का वर्णन।

No. 509. Lekhā Pahāḍa. Leaves—44. Deposited with Gosvāmiji, C/o Paṇḍita Badri Nāth Bhatta, Husainganj, Lucknow.

Beginning :—

एक दंतं महावीजं नमो करम पानये।
सिद्धन्तु सर्व कार माने वुं पसाद मनेश्वर॥

१	११	२१	३१	४१	५१
२	१२	२२	३२	४२	५२
३	१३	२३	३३	४३	५३
४	१४	२४	३४	४४	५४
५	१५	२५	३५	४५	५५
६	१६	२६	३६	४६	५६
७	१७	२७	३७	४७	५७
८	१८	२८	३८	४८	५८
९	१९	२९	३९	४९	५९
१०	२०	३०	४०	५०	६०
५५	१५५	२५५	३५५	४५५	५५५
१/५	३/५	५/५	७/५	९/५	११/५

Middle :—तुलसी टेरत कहत हैं सुनोयो संत सुजान ।
हेम दान गज दानते बड़ा दान सन मान ॥

११	११	१२१	२१	२१	४४१	३१	३१	९६१	४१	४१	१६८१
१२	१२	१४४	२२	२२	४८४	३२	३२	१०२४	४२	४२	१७८५
१३	१३	१६९	२३	२३	५२९	३३	३३	१०८९	४३	४३	१८४९
१४	१४	१९६	२४	२४	५७६	३४	३४	११५६	४४	४४	१९३६
१५	१५	२२५	२५	२५	६२५	३५	३५	१२२५	४५	४५	२०२५
१६	१६	२५६	२६	२६	६७६	३६	३६	१२९६	४६	४६	२११६
१७	१७	२८९	२७	२७	७२९	३७	३७	१३६९	४७	४७	२२०९
१८	१८	३२४	२८	२८	७८४	३८	३८	१४४४	४८	४८	२३०४
१९	१९	३६१	२९	२९	८४१	३९	३९	१५२१	४९	४९	२४०१
२०	२०	४००	३०	३०	९००	४०	४०	१६००	५०	५०	२५००
२४८५			६५८५			१२६८५			२०६८५		
४९/३५			१३१/३५			१५३/३५			४१५/३५		

End :—इतनेनि मिलि लंका विग्रहो। सोरह लाख रामपै रहे १६००००० नो डबरा एक एक डबरा में ३२२८४२५०१४४ एक एक कंगुरापै इतने इतने बैठे ॥ नो डबरा एक एक डबरा में नैा नैा भैंसि एक एक भैंसि पै नैा नैा बगुला एक एक बगुला के मोहों में नैा नैा माछरी डबरा ९ भैंसि ८१ बगुला ७२९ मछरी ६५६१ सुवा एक फुरामैंते बोल्यैा मारे हमके सुवा तुम कितेक हो ॥ हम सु हमदो हमते दुने घागे हमते स्रोंड़े पाछैं तू घावे पुरे सो है जाहि ॥

इलके २२ दुने ४४ घागे स्रोंड़े ३३ पाछे यह एकु मिल्यो पुरे सो भये १०० ॥

इति

Subject :—प्रारंभमें गिनती एका, ग्यारह, एक ईसा, एक तोला के दस दस पहाड़े का वर्णन पृ० १९ से ३० तक सवाया, ड्योढ़ा, ढय्या, हुंठा, ग्रौं चा का वर्णन पृ० ३१ से ४२ तक बड़ा ग्यारह ग्रैार बड़ा एका के भिन्न भिन्न पहाड़े पृ० ४३ से ५४ तक पैाना, छटांक व सेर को लिखावट का वर्णन, श्राना पाई का वर्णन पृ० ५५—५८ तक चार के १६ करे वर्णन, पानी को बूंदैं, बाल, सुई, काजर, लंका युद्ध डाबरमें भैंस बगुलादि ग्रैार वृक्ष पर तोतों का गणित संबंधी प्रैाक्षिक वर्णन पृ० ५९—६२ तक ।

इति

No. 510. Mahādeva Vivaha. Leaves—9. Dated in Samvat 1893 or A. D. 1836. Deposited with Umāsankara Dubey, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—अथ महादेव विवाह लिख्यते ।

चै०—कहत ककहरा नगर सदेसा । गिरिजा व्याहन चले महेसा ॥
पाय लागइ डमरू सुर कीन्हा । भांग धतूर पजाना लीन्हा ॥
गरे नाग सिर पैं सुर गंगा । भूषन भस्म चढ़ाये अंगा ॥
घर नहि दूसर भूप बराती । चले चवाति बिजै की पाती ॥
नाम लेतु ईसुर अस राजा । करत निहाल गाल के बाजा ॥
चन्द लिलार जटा फटकारे । लोचन तीनि लोक उजियारे ॥
छाड़ा गिरि कैलाश सुहावा । वाहन बैल महेश मंगावा ॥
जात न कहो बैल की बानी । सोने सींग मढ़े दो आनो ॥
झक झालरि मज मोतिन माला । धन्य बैल सेव संकर पाला ॥
नाथ हाथ अपने पहिराई । कंचनसे खुर देत मढ़ाई ॥
टेरैं भुव मिहावन बानी । चला मस्त योगी शिवदानी ॥

End :—

थमी बरात द्वार पै आई । बिजुका बैल बाबु गररई ॥
खबरि भई सिवसंकर आये । सब सखियन मिलि मंगल गाये ॥
धांवति चलो देखन सहेली । पारवती का छोंड अकेली ॥
नारि चढ़ीं चैाहद्दा ऊंचे । देखि सरूप नैन मे नीचे ॥
पाछेक काहु हेवंचल कीन्हा । गैारा रूप डिगंबर लीन्हा ॥
फांसी दै तुम तजहु भवानी । सखिनसोच गैारा मुसक्यानी ॥
मन मा सोच करौ जनि कोई । कर्म लिखा वह पावा सोई ॥
लेलकि पांड हेमवान पुकारो ॥ मोतिन चैाक तहां बैठारो ॥
वह मोतिन की करें निछावरो ॥ संकर गैारा फिरैं सत भांवरि ॥
हरषे देव फूल बरषाये ॥ ब्रह्मा बिष्णु तमासे आये ॥

दे०—छकित करैं सब आरती ॥ छकित भयो कैलास ॥
मुक्ति दान अबदोजिये । हरि चरनन की आस ॥

इति श्री महादेव विवाह सम्पूर्ण समापितं सुभमस्तु ॥

Subject :—

(१) विवाह के लिये गमन करते समय महादेव जी के वेश और साथ की सामग्रियों का वर्णन ।

(२) महादेव जी के वाहन की शोभा का वर्णन ।

(३) हिमांचल नगरी के वासियों का बारात देखने के लिये शीघ्रतापूर्वक आना । युवतियों का शंकरजी के स्वरूप का देखकर शोच करना ।

(४) पार्वती को प्रसन्नता । स्त्रियों का समझाना ॥

(५) शिव पार्वती का विवाह संस्कार । ब्रह्मा विष्णु आदि देवों का बारात देखने के लिये आगमन ।

(६) देवताओं द्वारा आकाश से पुष्प वृष्टि ।

No. 511. Mahūrtavichāra. Leaves—12. Deposited with Rāmaprasāda Murāū, Village Viśramadāsa-kā-Puravā, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्रीगणेशायनमः करण भगण दोषम् वार संक्रांति दोषं कुतिथि कुलिक दो मया मद्धि दोषम् राहु केत्वादि दोषं हरति सकल दोषं चन्द्रमा सन्मुखस्थात् ॥ १ ॥ मघा विशाखा कृत्तिका । आदि शिव मरणो मूल । स्वान सर्प इनमा डसे । मानहुं जम हनो त्रिसुन ॥ २ ॥ रामनाम घर भोग विलासा । सोता शोक करै बनवासा ॥ पश्चिमन लक्ष जोति गृह आवे । हनूमान कछु खबरि जनावे ॥ नौमी प्रतिपदा शनि सोम प्रतिकाल श्रवण घट तुला लग्न परवत जाइये ॥ पंचक सोम पंचमी गुरु दिन मध्यान्ह काल ते रासि मीना तिकर्कं दक्षिण बराइये । षष्टी भृगुमान भौम भूत पुष्य रोहिणी संध्या घन में पहरि पश्चिम न जाइये ॥ द्वैज दिन रवि शशिच भौम मकर निशार्द्ध मकर कुंभ कन्या नहिं उत्तर सिधारिये ॥

End :—जो कोई पौर्णिमा को भूमि कंपै वा दिन में तारा टूटै उल्का पात व वज्र पात होय वा चंद्र सूर्य ग्रसै वा केतु उदय होय इन्द्र धनुष करै तौ सब वस्तु महंगी होंय ग्रहण में अवश्य । इत्युत्पाताः ॥ बुधः शुक्र समीपस्थः करोधि कार्षं वां महीं ॥ नयो इंतर्गतो भानुः समुद्र मार्ग शोष येत् ॥ बुधे तिजो बुध शुक्र समीप होइ तौ पृथ्वी भर में जल वर्षै ग्रह ज्योतिन के बीच में सूर्य आनि परै तौ समुद्र के जल को भी सोष लेइ ॥

Subject :—पृ० १ से पृ० ९ तक—सर्प काटने का विचार, मात्रा विचार लग्न प्रमानम्, नक्षत्र विचार, भद्रा वर्णन,

(२) १० से पृ० १८ तक—विवाह विचार, होम कर्मवयग्नि विचार,

(३ पृ० १९ से पृ० २४ तक—यात्रा तिथि विचार, उत्पात विचार।

No. 512. Manihārina-Bhesha-kī-Pothī. Leaves—5. Deposited with Paṇḍita Mathurāprasāda Miśra, Village and Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ मनहारिन भेष की पोथी लिख्यते ॥

एक समै ब्रज चंद नंद सुत मन में यहै बिचारी ।
करिके भेष बिसाति नारि को छलिये राधा प्यारी ॥
कौनपाप को लहंगा पहिरे बसन जरकसी सारी ।
अंगिया लाल श्याम अंगन को अति छवि है तो न्यारी ॥
मोतिन को पहिरे नक बे झालरदार बनाई ।
मानों बिरचि बिरंचि आपको गहने को सुघराई ॥
कानन करन फूल अति सोहे माथे बेंज जराऊ ।
ता ऊपर अति लसत चंदनी मोतिन मांग भराऊ ॥
कंठ लसत दुलरी औ तिलरी गज मुकत को हारा ।
मानौ जुगल सुमेर के ऊपर धसो गंग को धारा ॥
गरे हुवाल माल कंचन की अरु पहिरे पग चारी ।
मानौं काम आपने ऊपर रुचि रुचि चित्रित संवारी ॥

End :—

परस परस घुंघरून लौं करिके................ ।
लखि के पदुम कदम अस लागे ऐसा भेष बनायो ॥
बिरजा सखी सवन ते चंचल छिन भर रही न साती ।
हाथ पकरि मनहारिन जु के आइय खोलिन छाती ॥
हंसिके परे तुरतहि दोऊ उलटे लगे मंजीरा ।
दांत अंगुरिया दई राधिका धन्य धन्य बलवीरा ॥
मेरे काज लाज तजि मोहन एता परिश्रम कीन्हों ।
नारि भेष धरि आये मोहन बड़ो बड़प्पन दीन्हों ॥
जाको जपत शेष अज शंकर सुर मुनि जिते बड़ेरे ।
ते मोहन तुम बने फिरत हो ब्रज वनितन के चेरे ॥
तुम तो तीन लोक के स्वामी श्री पति अंतर जामी ।
ताप तीनि छत होत हो श्री कृष्ण सहस के नामी ॥
आनंद कंदन के नंद नंदन जगवंदन गुन रासी ।
जाको ध्यान धरत सुर नर मुनि जोगी जन सन्यासी ॥

× × × ×

× × × ×

इति श्री मनिहारिन भेष की पोथी संपूर्ण ।

Subject :—श्री कृष्ण का मनिहारिन भेष में राधा को छलना । स्त्री वेष-धारी कृष्ण के नख-शिख का वर्णन । बिरजा सखी द्वारा वृषभान-भवन में

पहुंचना ग्रैार राधिका से मिलना तथा राधा के प्रश्न पर ग्रपना पूरा पता बताना। विविध ग्रलंकारों से राधा को विभूषित कर प्रेमालाप करना। विरला सखी द्वारा छातियों पर बांधे मंजीरों का खींचा जाना। कृष्ण का कपट रूप प्रगट होना तथा राधा द्वारा कृष्ण की विनती ग्रैार नवलकुंज में मिलने का वादा। कृष्ण का घर ग्राकर भोजन कर शयन करना।

No. 613. A collection of Manohara-Kahāni. Leaves—72. Dated in Samvat 1939. Deposited with Ṭhākura Śivasiṁha, Village Vikramapura, Post Office Oyala, District Kheri (Oudh).

Beginning :—श्रीगणेशायनमः ग्रथ मनोहर कहानी लिख्यते ॥ कहानी ॥ एक साहूकार पोतड़ों का रईसा समय के फेर में पड़ ग्रपना धन सब खो बैठा। ग्रैार लगा निपट दुख पाने ग्रैार उदासी रहने। निदान उसके जी में यह सोच ग्राया कि जो मैं किसी महा पुरुष वा सिद्ध के पास जाऊं तो यह दुख मिटे क्योंकि सुना भी है कि एक साधु के दर्शन से व्याधि जाती है यह विचार चला चला एक जोगी के पास गया यह उससे कुछ कहने न पाया कि उसने ग्रपने जोग से इसका मनोर्थ जान कर कहा ॥ दो॰ ॥ सुख दुख प्रतिदिन संग है मेटि सकै नहिं कोय जैसे छाया देह की न्यारी नेक न होय। यह उत्तम उत्तर पा वह विचारा धीर्य धर ग्रपने घर ग्राया ॥ १ ॥ एक ग्रंधा वैरागी काशी के बीच मणिकर्णिका घाट पर बैठा ग्रानन्द में दही पेड़े खा रहा था कि देखकर किसी पंडित ने पूछा सूरदास जी यह क्या करते हो बोला महाराज दही पेड़े खाता हूं कहा ग्रानन्द में—उत्तर दिया मेरे गुरु की दया से सदा ही ग्रानन्द है। यह सुन पंडित हंसकर चुप हो रहा ॥ २ ॥

End :—एक बूढ़ा बटोही ग्रीष्म की रितु में तपन की प्रचंड किरणों से निपट कष्ट पाकर लाठी टेकता चला जाता था। मारग में एक युवा ग्रश्वारूढ़ ग्रा निकला बूढ़े को देखकर उसे दया हुई बोला ग्रजी मैं युवा पुरुष हूं शीत घाम सब सह सकता हूं तुम बूढ़ा पन के कारण बहुत थके ग्रब इस घोड़े पर चढ़ो मैं पीछे पीछे चला ग्राऊंगा उसकी इस करुणा वाणी से मगन बूढ़ा उसके घोड़े पर चढ़ा ग्रैार युवा पीछे पीछे पैदल ग्राने लगा वह बहुत दूर न गया था कि युवा ने पुकार कर कहा ग्ररे बूढ़े निलज्ज घोड़े पर उतर क्या तू ने ग्रपना घोड़ा पाया है जो सारा दिन उस पर ग्रारूढ़ चला जाता है बूढ़ा लज्जित होकर उतर पड़ा ग्रैार धीरे धीरे चलने लगा थोड़ी दूर गया था कि इसका कष्ट देख फिर उसके जी में दया ग्राई ग्रैार बहुतसी विनती कर इसे फिर घोड़े पर चढ़ाया थोड़ी दूर

जाते उसे फिर इसी भांति उतारा निदान दो तीन बार उसे इस प्रकार चढ़ाने उतारने से बुढ़े ने पूछा बावा तुम्हारे पिता का नाम क्या है बोला सैयद इसी पूछा तुम्हारो महतारी का नाम क्या उसने कहा बीबी जोरा पर वह कुलवती नहीं उसको ब्याह करने से हमारे कुलमें कलंक लगा यह सुनतेही बूढे ने कहा हां बावा अब मैं समझा कि चढ़ावें इसको और उतारे जोरा अब आप सिधारिये मैं गिरते पड़ते चला जाऊंगा ॥ इति मनोहर कहानियां संपूर्ण समाप्तः लिखतं गिरधारी लाल वैश्य बजाज गंज टैना ॥ संवत १९३९ माद्र पद कृष्ण पक्षे षष्टमयाम् ।

Subject :—१०० मनोहर कहानियों का संग्रह ।

No. 514. Mantra. Leaves—4. Deposited with Pandita Rāmasvarūpa Miśra of Arjunapura, Post Office Antu, District Pratapagadha (Oudh).

Beginning :—॥ श्रीराम ॥

ऊं नमो आदेश गुरु को डाकिनी सिहारी किने मारी ।
यती हनुमान ने मारी कहां जाय तुवकी किनो ने देखो ।
यती हनुमान ने देखी सातवें पाताल मई सातये पाताल से कौन पकड़ लाया, यती हनुमन्त पकड़ लाया यती हनुमन्त वीर पकड़ लाय के एक ताल दे एक कोठा तोड़ा दो ताल दे दो कोठे तोड़े तीन ताल दे तीन कोठे तोड़े चार ताल दे चार कोठे तोड़े पांच ताल दे पांच कोठे तोड़े छः ताल दे छः कोठे तोड़े सातवां कोठा खोल देखे तो कौन-कौन खड़े हैं । डाकिनी सिहारी भूत प्रेत ले यती हनुमंत तेरे झाड़े से चले । ऊं नमो आदेश गुरु को गुरु की शक्ति मेरी भुक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचः ॥

End :—उक्त मन्त्र को १००० सहस्र बार जप करै गुगल के भैागुल तुरें के फूल की ३०० शत आहुती करै दो और मैनफल को राख को रुई में मिलाकर बाती बनाओ यह बाती तेल भरे दीपक में जलाकर उस दीपक को पुजा करो तदनन्तर आठ या दश वर्ष की अवस्था उत्तम वर्ण देवगण वाले पवित्र बालक (लड़का तथा लड़की) को दीपक के सन्मुख बिठलाकर आप भी पवित्रता से मन्त्र के जप के संकल्प का जल मैनफल पर डालदो और दीपक के सन्मुख इस मन्त्र को लिख के निम्न लिखित यंत्र को पुजा करो तथा बालक को हथेली में यह दिखाकर मैनफल की राख तेल में मिलाके बालक को हथेली पर लगादो और पुजित यंत्र उसके गले में दक्षिण हस्त में बांधकर उससे कहो कि तू अपनी हथेली में देखताजा फिर उससे जो पूछो वह अपनी हथेली में देखकर जो कुछ कहै सो

सत्य जानो ।

॥ यन्त्र ॥

१	८	३	८
५	६	३	५
७	२	१	२
७	४	५	४

यह विधि उड्डीश में लिखी हैं ।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ७ तक—हनूमान का मंत्र, हो यन्त्र, मन्त्र से प्रथम सन्ध्या की भांति करन्यासादि । मंत्र-सिद्धि करने की विधि ।

No. 515. Mantraprayoga-Saṅgraha. Leaves—14. Deposited with Paṇḍita Śiva Kaṇṭha Dube, Village Deudārapura, District Kheri (Lakhimapura) (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मंत्र प्रयोग संग्रह लिख्यते ॥ मंत्र आपनी देह रक्षा को । ॐ नमो लोह का लोड़ा जहां डाकी कुड़ी हमारा पिंड पैठा ईश्वर कुंचो ब्रह्मा ताला हमारा पिंड का श्री हनुवंत रखवाला ॥ या मंत्र को पढ़ि के कहां रहो कुछ चिंता याको देह में नहीं उपजै । सत्त सही है ॥ बवासीर को मंत्र ॥ उमतो उमतो चल चल स्वाहा ॥ लाल सूत में तीन गांठ देकर २१ मंत्र पढ़ के पांव के अंगुठा सों बांधे ॥ दस रोग का गंडा ॥ परवत ऊपर परवत श्रैार परवत ऊपर फटिक सिला फटिक सिला पर अंजनी जिन जाया हनुमंत नेहला टेहला काख की काख लाई ॥ पीछे को अदीठ कान की कनफेड़ दान को अद कंठ की कंठ माला । घुटने का डहरु डाड़ की डड़मल पेट की तापतिल्ली कीया इतने को दूर करै ॥ अजमंत नाहर भै माता अंजनी का दूध पिया हुआ हराम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फूरो मंत्र ईश्वरो वाचा ॥ सत्य नामा आदेश गुरु का विधि ॥ सात शनीश्चर हनुमान का पूजन धूप दीप नैवेद्य आदि करे १०८ प्रति दिन जाप स्त्री पास नहीं जाय फिर होली दिवाली ग्रहन में १०८ जापकर वला अदीठ कनफड़ अद कंठमाला डाड़ सब राख से झाड़ै डहरु के आक के ताप तिल्ली छुरी से भाड़ै हनुमान का पसाद बटवा दिया करै ॥

End :—किये कराये उतारिवा को मंत्र ॥ ॐ नमो आदेश गुरु कोऊ अपर केश बिकट मेष संमति प्रहलाद राखे पाताल राखे पाव देवी जंघा राखे कालका मस्तक राखे महादेव यह पिंड प्रास को छेदे तो देव दानाव भूत प्रेत अंकभो

खेकणी गंडलोय ते जती एक पहर वा द्वै पहर सांभ को सवारा का किया को कराया को उलटि वाहो पिंड पर परे इस पिंड की रक्षा श्री नरसिंह जी करै ॥ सब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा ॥ कोढ़नगरा को मंत्र ॥ ॐ नमो आदेश गुरु को आदि नगरा ते चली रानी सहस कोटि लाष च्यारि कोटि काली कावरी सब एक उन्हार मंदिर माहि घर करै पशा ने बहुत सतावै ॥ दुहाई जती हनुमंत की हमारो गली में आवै तो लंका से कोट समुद्र सो पारै जे कोढ़ा नगरे रहै तो जती हनुवंत वीर की दुहाई शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ॥ विधि ॥ तिल काले पर ७ मंत्र पढ़ि कोढ नगरा पै नापि जै दिन ७ तथा १४ कोढ़ नगरो जाय ॥ ताप तिल्ली को मंत्र ॥ ॐ नमों हुलास परवत जहां सुरह गाय सुरह गाय के पेट मे बच्छा बच्छा का पेट में तिल्ली तिल्ली दया दया तिल्ली कटे सर कहा वडे फोया कटे हरो फुरो । पाठ पंक्ता करके छुरी के फलरा सों झाड़ दीजै सरक डा बडे छुरी को छोह कटै ॥

Subject :—हर प्रकार के रोगें के मंत्र और वशीकरण आदि मंत्र का वर्णन ।

No. 516 (*a*). Mantra-Saṅgraha. Leaves—16. Deposited with Bābā Jhabbūdāsa of Badasāhanagara, Post Office Lucknow (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अपनो देह रक्षा को मंत्र ॥ ॐ नमो लोह का लोहा जहां ताको कुंडा हमारा पिंड पैठा ईश्वर कुंची ब्रह्मा ताला हमारा पिंड का श्री हनुमंत रखवाला ॥ या मंत्र को पढ़ि के कहीं रहो कुछ चिंता वाकी देह न रै उपजै सत सही ॥ ववासीर को मत्र । -उमती उमती चल चल स्वाहा लाल सूत में तीन गांठ देकर २१ मंत्र पढ़ के पांव के अंगुठा से बांधे ॥ दस रोग का मंत्र ॥ पर वत ऊपर पर वत और परवत ऊपर फटक सिला फटक सिला पर अंजनी जिन जाया हनुमंत नेह ला टेहला कारव को करव लाई । पीछे को अदीठ, कान की कनफेड़ रान की वद कंठ का कंठ माला छुटरने का बहरू वाढ़ा की दढ़ मूल पेट की ताप तिल्ली फोया इतने को दुर करै अस्मत मावन्ही माता अञ्जनी का दूध पिया हुआ हराम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचः सत्य नामा आदेश गुरु का । विधि । सात शनिश्चर हनुमान का पुजन धूप दो नई वैद्यादि करे १०८ प्रति दिन जाप श्री पास नहो जाय फिर दोलो यादिवाली ग्रहण में १०८ जाप का अला पदोठ कनफेड़ वद गंड माला डाढ़-मल राम मे झड़े बहरू को नाक ने ताप तिल्ली को छुरी से झाड़े हनुमान का परशाद बटवा दिया करै ॥

End :—सभा मोहिनी ॥ काल्हु मुष धो करूं सलाम। मेरो आंखों में सुरमा बसे जो देषे सो पांव पड़े। दोहारं श्री मुल आजम दस्तगीर की छू विधि। सवालाष गेहु पै १२५००० मंत्र पढ़के वांको आटा करावै श्री षांड मिलाय हलवा बनावे फिर जो मुल आजम दस्तगीर को वस्ते नियाज दिलाके आपही पाय जब किसी सभा मे जाय सुरमा पर सात बार मंत्र पढ़कर लगाय जाय सब सभा वश में होय ॥ सभा मोहनी सिन्दूर। हथेली तो हनुमान बसे भैरों बसे कपाल नारसिंह की मोहनी मोहै सब संसार ॥ मोहन रे मोहनता बीर सब बीरन में तेरे शिर सब की दृष्टि बांधि दे माहि तेल सिंदुर चढ़ावो तोहि तेल सिन्दूर कहां ते आया कै लाल परवत से आया कौन लाया अजनी का हनुमंत गौरी का गणेश काला गोरा तोतला तीनो बसे कपाल छुटा तेल सिन्दूर का दुसमन गया पताल दुहाई का मियां सिन्दूर को हमें देषि शीतल होइ जाइ हमारी भक्ति गुरु को शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचः सत्यनाम आदेश गुरु को। विधि ॥ सात शनिश्चर वा रविवार दीपक ८ तेल करके लोबान देवे मिठाई भोग धरै १०८ जप फूल पात करके पूजा करै सिद्ध हो जाय तो पीछे जहां जाय सिन्दूर पै सात बार मंत्र पढ़ माथे पै लगाया जाय राजा गुस्सा हो जाय दंड देवे को बुलावै तो देषते ही शीतल हो जाय जिस सभा मे जाय वहां के सब मनुष्य आदर भाव करैं अरु प्रीति से सन्मान करैं ॥

Subject :—हर प्रकार के ३०० मंत्र झाड़े रोग आदि के वर्णन ॥

No. 516 (*b*). Mantra-Saṅgraha. Leaves—10. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning:—आसमोनी पास मोहनी मस्तक मोहनी जन्म सभा की जिह्वा बांधो मोहनी मन मोहनी हरादायो हनुमंत विराजे कपाले भैरों श्री श्री सिंदूर को दृष्टि देषु पताले ॥ १ ॥ आगे ॥ तुमही से माता तुमही से पिता तुमही हस्त रहेगो ये अगिन या पानी परेतो कार शाय सोता सोता राम राहाय सर सुवर पागिनि सो बला रक्षा करै गुरु गोरष अवधूत मेरी भगती गुरु को शकती फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा ॥ २ ॥ धूल धूली मैं रोयायु चंद्र सुवद सूर्य ॐ ठकायह देह पानी पानी पड़ते मानी होत उचाट लागु ३॥ देषंत के चवला गुचलंत के पगला गुरु हन्ता के पाटल गुमारंता के हस्त लागु लागु नल गु काहक राजा श्री त्रिपुरारी कोटि यक्षा वेगी लागु ॥ कंवरु देस कमख्या दोनो अंह बसे असमाइल जोगी असमाइल जोगी जोगी वाड़ी बाड़ी न फूल हंसे न बिगसे न फूल सुषे न कुम्हिलाइ जो सुंघे फूल की बास सो आवे हमरे पास ॥

End :—मंत्र सांप मारक। उत्तर दिसि कारो बादरो त्यहि मध्य ठाठ काल पुरुष एक हाथ चक्र एक हाथ गदा मारो सत खंड लाइ। गदा मारो सत पाल लाइ औ हर २ निर्विष शिवाज्ञ। अन्यच्च। थिर पवन जिहि विस नासै तेहि देखि थरहर कांपै संसर्जा वाच विसमो अदिष्ट घटै नहीं विश॥ यहि मंत्र कुमकै वालु गाछै माथ तत्काल निर्विष होइ॥ अव बंधन मारै क मंत्रः॥ अटा ऊपर का नार है॥ ॐ नमः शिवाय शिव विचित्र सा पुनः कामा मोटे पनिया परै पोठे ॐ नमः शिवाय विचित्रा आम्यान हरि जमावै क मंत्र कुव मास को परो डंक कापा को करार गये न तो निम छोहि काम आत गिध उड़ इ घर बाहर पठावहि ठावनो नाच मारो वहाक खंडा न कै पड़ो उठी ठोठो भइ लागु पर महसर उड़ुरे खंड कहा हगरिमव पंजरन्द ला कठी काइरं हाकवे पा वैना मायो गिनि डेग उठे विहास दिरै सात समुद्र माझै पड़ो कविष खाइ ओवघरा आमंत्रो रहि हि जमावै जोगिनि पाथतो लागु २ परमेश्वर उड़रे डंक॥

No. 517 (a). Mantra-ki-Pustaka. Leaves—5. Deposited with Mahanta Santadāsa of Mauja Sagarāmapura, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॐ पश्चिम देसते चलो हनुमंत वीर भूत छोकहि सो संसार लिज्ञा पहिरे है वजरंग बंदर छूटे भुरे अंगक्ति सैन पवन को पूत वे बांधे कलजुगकपूत श्री राम पर वीरा पावो देव सुत सव वांधि मंगाये अलु करै अलुवायु खलुकरै खलु वांधु वलु करै शुदि दे पाउ देषो हनुमंत देव तेरे या मंत्र को या शक्ति गोइ के गरि धारे नै नारो वहत्तरि कोठाते वांधि महं कारि अपने है याछेन करै तो वहिन भांजी को सज्जा पांउ धरे राजा रामचन्द्र कहरि जान।

End :—मन्त्र पान का।

ॐ कामरु देस कामषा देवी तिनने भेजे चारि पान पहिलो पान रातो माता दुजो पान विरह को माता तीजो पान मोरो घडर चउथो पान मिलावेइ जोड़ा जो कोउ थाइ हमारो पान सो आवै हमारे पास न राति कल न दिन सुख फिर फिर देषै हमारो मुष कालो गुदरो कालो राति जाइ वैठि अमुक को पाट सोवत होइ जगाइ ल्याउ वैठ होइ चटपटी लाउ ठाढ़ होइ चलाइ ल्याउ न अवे मुख रुधिर को धार दोहाइ ईश्वर महादेव को दोहाइ नरसुग जोगी को दोहाई एस मैला जोगी को।

Subject :—हनुमान का मंत्र, ब्रह्मराक्षस छुड़ाने का मंत्र, चोर जानने का मंत्र, मोहन मंत्र, कार्य सिद्धि का मंत्र, पोले उतारने के दो मंत्र, वाघ मारने का मंत्र, गोला का मंत्र, विक्षिप्त का मंत्र, वशीकरण फूल का मंत्र।

No. 517 (*b*). Mantro-ki-Pustaka. Leaves—4. Deposited with Paṇḍita Vindheśvariprasāda Miśra, Teacher, Sanskṛita Pāṭhaśālā, Village Gaṇḍā, Post Office Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ आपको देह रक्षा को मंत्र ॥ ओं० नमो लोह को कोड़ा जहांडा को कुड़ो हमरा पिंड पैठा ईश्वर कूंची ब्रह्मा ताहमा हमारा पिंड का श्री हनुमन्त रखवाना या मंत्र को पढ़िके कहीं रहे कुछ चित देह मे नहीं उपजे । सत्य सही ॥

॥ बवासीर को मंत्र ॥

उमती उमती चल चल स्वाहा ।

लालधागा मे तीन गांठ देकर २१ मंत्र पढ़िके पांव के अंगुठे बांधे ।

दुरा रोग को झाड़ना

परवत उपर परवत वौर परवत ऊपर फटिक सिला फटिक सिलापैं अंजनी जन आया हनुमन्त नेहं लाट हला क्रोध की कांचलाई पीठी की घटी ठकान की कन फिर रान की मद कंठ की कंठमाल घुटरने का डमरू डाढ़ की डाढ़ शूलपेट की तापतिल्ली की या इतने को दूर करे मसानतातर मुख माता अंजनी का दूध पिया हुआ हराम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच सत्यनाम आदेश गुरु का ।

End :—॥ वैरी जेर करबे को मंत्र ॥

ओं नमो वली या वली वहका चसा कुलुफ उसका बाजू कुलुफ दुशमन को जेर हमको खेर ॥

॥ विधि ॥

२१ दिन पूजा हनुमान जी के करै मंगल से १०८ जप करै जप करै धूप दीप नैवेद्य करके मंगल को मंगल १०८ जप करै धूल राखै जहां वैरी बैठा होय रत को चुकटी पै ३ या ७ बार मंत्र पढ़के वैरी की तरफ फूंके ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ५ तक—अपनी देह रक्षा का मंत्र और उसकी विधि । ताप-तिल्ली का मंत्र । उसकी सिद्धि की विधि, डाढ़ के दर्द क मंत्र । गर्भ रक्षा का मंत्र ।

(२) पृ० ५ से पृ० ८ तक—नेत्र की पीड़ा का मंत्र । डमरू पसली व वायु का मंत्र । उसको सिद्धि करने की विधि तथा प्रयोग । विष उतारने का मंत्र । सभा मोहनी मंत्र ।

No. 518. Moti-Binaule-kā-Jhagaḍā. Leaves—8. Dated in Samvat 1933 or A.D. 1876. Deposited with Paṇḍita Devatādīna Miśra, Village Sulatānapura, Post Office Thānā, District Unnāva (Oudh).

Beginning:—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ मोती विनौळे का झगड़ा लिख्यते ॥ ख्याल ॥ बड़े बड़ाई कभी न करते छोटे मुख से कहैं वचन । अपने मन में सभी बड़े हैं मोती विनौळे लगे लड़न ॥ रहूं सिंध के बीच समुन्दर सीप दीप हो रहो आला । पड़ो बूंद स्वाती की मोती नित प्रति हुआ निर आला ॥ चातुर ने करी चाह बड़ी हिकमत से मुझको निकाला ॥ दिया जौहरी हाथ दलहर अद बिस का मैंने टाला ॥ चातुर के मन बसा तुरत मगवा मुझ को वाला ॥ सोने का किया साथ यार मुखड़े पर रहता रखवाला ॥ ऐसो धरन से रहूं तुझे क्या कहूं तू आजा मेरी सरन । अपने मनमें सभी बड़े हैं मोती विनौळे लगे लड़न ॥ ख्याल ॥ जवाब विनौला ॥ कहै विनौला सुन भाई मोती क्यों करता है बड़ाई । फूलों में सिरदार फूल मेरो दुनियां में है उजलाई ॥ दो दो बांधत शस्त्र पहनते वस्त्र कहलाते सिपाई । सब के कूं ढकूं अदब में रखूं कौन क्या लुगाई ॥ सब के सारे काम लाज में रखूं शरम भलमनसाई । क्या गरीब क्या तालेवर में सब रहो मेरी अवाई ॥ ऐसो धरन से रहूं तुझ से क्या कहूं तू आजा मेरी सरन अपन में सभी बड़े हैं मोती विनौळे लगे लड़न ॥

End :—ख्याल जवाब मोती का ॥ कहै ओ मोती सुनरे विनौळे मैं अनमोल बड़ा सिरदार । क्या अमीर क्या राजा बादशाहि बैठे गळे में माला हार । जोड़ी ज्योति जगमगी कच हरी भरा हुआ सारा दरबार । पैसे के दो सेर विनौळे मंगा कूड़े रखवा दिये द्वार ॥ मैं कहता हूं सुन वे विनौळे अब भी तू होजा लाचार ॥ जिद तू अपनी छोड़ दे हमसे नहीं तो मारूंगा पैजार ॥ जिद अपनी को छोड़ विनौळे आजा तू तो मेरी सरन । अपने मन में सभी बड़े हैं मोती विनौळे लगे लड़न ॥ जवाब विनौळे का ॥ कहै विनौला सुन वे मोती चुपका रहो तू मुरखो के । नंगी घड़ी करदे औरत कपड़े छीन लेवे तन के ॥ मोती के बाळे कानों में हाथों में गजरे सोने के । देख तो वे अच्छी लगे हैं बिना विनौळे कपड़े के । जब तक तुम पर आब है मोती तब तक तुम हो रुपये के । जब पानी ढल जाय तुम्हारा फिर नहि कोई मतलब के ॥ बड़ी नहीं तुम मे टकसाया चमकता था जिस दिन । अपने मनमें सभी बड़े हैं मोती विनौळे लगे लड़न ॥ ऐसो धरन से रहूं तुमसे क्या कहूं तू आजा मेरी शरन । अपने मन में सभी बड़े हैं मोती विनौळे लगे लड़न ॥ इति श्री मोती विनौळे का झगड़ा संपूर्ण समाप्तः संवत् १९३३ कार दसहरा ॥ श्री शंकराय नमः ॥

Subject :—मोती और बिनौले को अपनी अपनी बड़ाई का वर्णन.

No. 519. Mushṭikapraśna. Leaves—2. Dated in Samvat 1784 or A.D. 1827. Deposited with Paṇḍita Śivakaṇṭha Dube. Village Devadārapura, District Kheri (Lakhimapura) (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मुष्टिक प्रश्न लिष्यते ॥ लग्न को केन्द्री बृहस्पति तथा शुक होय तौ जीव चिंता कहिये ॥ मं. वृ. कुंभ, सिंह इन ऊपर केंद्री कुल थके होय तौ धातु चिंता कहिये ॥ मं. ३ कुं ११ कं. ६ म. १० इनमो कोई लग्न होय अरु बुध तथा शनि थको होय तौ मूल चिंता कहिये ॥ ३ वृ ॥ २ ध. ८ तु. ७ मि. १२ ॥ कु ४ ॥ चं. वृ. शु. सो जो इनको दृष्टि होय अथवा स्थित होय तौ जीव चिंता कहिये ॥ ४ बुध लग्न थे ५ अरु ९ ॥ ५ । शुक को दृष्टि होय अरु ॥ ६ ॥ शुक होय तौ मूल चिंता कहिये ॥ चंद्रमा केंद्रि बुध होय कं सूर्य को दृष्टो होय तौ गुंज मूल बतैये ॥ चंद्रमा को केन्द्र शुक देषत होय तौ फल चनका कहिये कपालु पत्रादिक कहिये ॥ ७ ॥ बुध ॥ ७ ॥ तथा बृहस्पति होय तौ मिर्च फल तथा धातु स्वाद पीत होय ॥ ८ ॥ शुक चंद्रमा तथा शनि । ७ । वे होय लग्न ते तौ जायफल धातु शूल श्रुति कहिये ॥ शुक चंद्रमा शनिश्चर जो ७ वे होय तोनि वस्तु होय धातु मूल मृतिक ॥ १० बुध ॥ मं. ॥ रा. ॥ श. ११ तथा ९ होय तौ सुगंध को फुल कहिय ११ ॥ बु. । वृ. शु. जो ये पांचो होय तथा ॥ १० ॥ स्थान को देषतो होय तौ केला को फल कहिये ॥

End :—१२ ॥ राहु के० बु० शु० जो ६ होय तथा स्थान को देषत होय तौ कल्वो फल कहिये । शु. वृ. मं. जो छठो होय तौ तीन वर्ण को वस्तु कहिये ॥ वृ ३ श. १० बु० होय तौ पाटंबर वस्त्र लग्न कुं. चै. श. देषति होय तौ फल मूल छदन सुपेद होय १६ चंद्रमा मे. बु. जो १० वारहे होय तौ एक स्वेत पीत वस्त्र होय ॥ १७ । मे. श. केंद्र लग्न को देषत होय तौ धौहोय धूम्र धुवां रुरोपो वस्त्र होय ॥ चंद्रमा केंद्री होय तौ स्वेत वस्त्र होय । चंद्रमा भवन शुक होय तौ रुपे को मुद्रा कहिये ॥ बुद्ध केंद्री होय तथा केंद्री को देषति होय तौ फल मूल तुल्य महा हरो वस्तु होय ॥ वृ. ७।९ तौ रक्त शुक्ल स्वर्ण युक्त वस्त्र जोर्ण होय सूर्य ४।१० होय तथा लग्न १।७ लग्न को देषत होय तौ मुक्ता फल युक्त वस्त्र होय ॥ जो केतु होय तौ विद्रुम होय मंगल केन्द्री को देषति होय तौ लाल विद्रुम होय ॥ केंद्री शनि होय तौ लोहा कार होय राहु केंद्री होय तौ सर्पाकार होय ॥ बुध ३।५ । होय राहु सूर्य को दृष्टि होय तौ सब गुण तथा देषति होय तौ स्वेत छदन जानिये ॥ मंगल शुक ९।५ होय तौ मृतिका कहिये सूर्य केंद्री होय बुधे ९

होय ५ मंगल होय तौ मूड़ो मों फल कहिये ॥ बुध ५।८ चंद्रमा शुक्र देषत होय तौ कालो को फल कहिये ॥ सूर्य ६ मंगल ९ होय तौ तिल मसुरी एक कारी करखुर कहिये ॥ शुक्र ११ होय तौ गेहूं जौ कहिये ॥ इति श्री मुष्टिक प्रश्न समाप्तम् शुभंभूयात ॥ लिषतं भोलानाथ त्रिपाठी स्वपठनार्थ नेरी के वोच संवत् १७८४ चैत शुक्ल नैामी ॥

Subject :—ज्योतिष द्वारा मुष्टिक वर्णन ॥

No. 520. Nāḍī Parikshā. Leaves—50. Deposited with Paṇḍita Jagannāth Bajapei, Village Mākhī, Post Office Nevaṭani, District Unnāva (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नाड़ी परिक्षा लिष्यते ॥ दो० ॥ गुणमन सरस्वती सुमिरिये शुद्ध चित्त हित मानि । प्रगट परिक्षा जीव की लहियो चतुर सुजान ॥ चौ० ॥ पित्त वाति पुनि श्लेष्म जानि । दूषी धमनी गाह पिछानि कटुक तिक्त पुनि उष्ण को पानो । त्रिधारक्ष त द्रुग विधि जाणो ॥ काऊ मूल सम चंचल नाड़ी । पित्त प्रकोपे चलै उघाड़ी ॥ दूध दही विस्वा गुड़ षाय । तिसमें ऐसा भाव जगाय ॥ प्रात समै पुनि पाणी पीवे । तिसकी नाड़ी पित्त घर धीवे । षीर परवूरा संपूर्ण शाली । मिष्ठ ध्यार मल पित्त पषाली पीत संपिनी षाय सनि पाती । वात वस्तु षायी होय षाती ॥ चलती चलती फुलिंग ज्यों कूदे । कारे मात्र षांधा जिमिल्हू दे ॥ सैाफ़ सभी धनियां मंघियां ॥ मिस्री गरी सब लीजे भषियां ॥ पित नाड़ी इम कफ घर तासे । सो जाणि ज्यैा वैद उलासे ॥ हंस सरो षाहि ज्यों जव षावे । फिर पीछे पित के घर जावे ॥ पाणी सरदो मरदो ऐसो । कफ नारीड़ा लक्षण कैसो ॥ वटेट मति रो धमणो जाणो । वात प्रकोपे सीतल पाणी ॥ सोम्र चढ़ै पुनि सीतल उपजावै । वात पित्त का भेद लषावै ॥ मूप प्रकोपै चंचल है चाले ॥ एक वष्म को जानै समांडे ॥

End :—चतुर्थ ज्वर को नसवार । वूंदात ॥ पत्र मगधिया के ग्रहो रसको दे नसवार । जुर चतुर्थ ना रहे माष्यो वृन्द मंझार ॥ पुनः । ममूव कटाली मूल ले रवि नहि उगे सूर । गुगल धूप दे बांधिये अतीव ज्वर जाय पंभूर ॥ पुनः ॥ दूधक मूल जो षंग्रहो बुध रवि दिन के षार कंठ बांधो धूप दै अतीव ज्वर जाय निरधार ॥ पुनः एकान्तरादिक को मंत्रा या उतरे कूठे ममूच नाम सो मृत सस्मैति श्लोक कंद धातु मुंचल्ये कादिक ज्वर षविधि ॥ काला तिल घट पाणी इमै मंत्रसो मंत्र नित्य ज्वर के नामे वाहिर जाग तिलको ढेरी कीजे पाणी को धारा चोफिरदं दह दीजे कहो है सुषिद्ध तीमें नित्य ज्वर जाय । जाति धर्म

फढि करि उडि मरि आवै फिर पोछा ने चोडैं नहो ॥ इति मिथ्य ज्वर आय ॥ मस्तक पीड़ा छिद छिक ये ज सीत ज्वर जोइ ॥ सीत ज्वर को चूर्ण सन्निपात कलिकात ॥ चौ० ॥ पीपल मूल औ पीपल पिता । सुनि चव्यक टांक करि मिता ॥ पांच टांक भांगो जाथे । सोल टांक चिरायता घाथे ॥ गुड़ पुरानो साढ़ा पांच बीस खिर साढो लेनी । का पोस टांक तीन चूर्ण छे प्रातें ज्वरं सीता नन रहै इम पाति ॥

Subject :—वैदक वर्णन ॥

No. 521. Nākshatra Prakāsa. Leaves—15. Dated in 1883 or A. D. 1826. Deposited with Umāsankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—श्रावणी श्रवण बादरो महो डुलंतो जोय । श्रावण पहलो पंचमी जो नहीं उठे ब्याल । कुवा जे पोल माल वेटू जासी मोसाली । श्रावण पहिलो पंचमी के बादल के बीज । कान फाड़ो रखो कथा राखे भातर बीज । चाथि नवमी चौदश्या जै संकरण पडाइ । परमणों जे भा मनो छना भंग कराइ । जेठी पर्व अमावस्या रवि थाढे तो जोई । बीजे शशिहर दमसे स्वानेर कहसी मोद । तुरर तो उत्तम समो माघे मध्यम काल जो शशि दक्षिण धायवै तोरो अतु काल । श्रावण वदो एकादसी जेतो रोहिणि होइ । तेता समौ परषि जे विरला जाण कोइ । कृतिका तोर फिटबेटा रोहिणी तोर सुकाल तेते घाव मृगासिर तो पड़ै दुकाहर काल । जेष्ठ सुदिवा निर्जला जेतो घटो का का होई सातै मामज दोजियेठ मरता फल होई । वेतु बरते बरसै अपार ब्यारी वचतो पति वनमार । पंचै पंचल गुपिरिवाई । छन्दो मा मेहज थाई ।

End:—चादि भरणी असलेष मधा तिहुं उजाधां रस तिनि पा । सात नक्षत्रा का कहो । जै सिर वै सैभाला । शर सोषै परयो करै । योन सूद असराल । पूल्यो गल्यो परि यागठी ॥ मळोज पंचक मूल । पुर्वापाढ़ धेड़ कसो तो निपजै सातु त । चैत बीता बैशाष अड्डसो । तिथि नषित्र जोरई रै भौसो तिथि तो पर्वत दासे । नक्षिन बधे तो पाल विनासै । तिथिवार होइस समतुला तो पृथ्वी फूलै सो वन फूला चय वैज सर सात दिवस बरसै जुपन जल चति होर जु पुर । भोग बुलातो सो हो गया तू क्यों सतो नाह । पार भरभे छे महली छवि स चतु- राधा ॥

No. 522. Nāmarāsi Lakshaṇa. Leaves—20. Deposited with Paṇḍita Vāsudeva Pānde, Village Kamāsa, Post Office, Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—दवा गुरु की ॥ अथ लिख्यते नाम रासी के लक्षण ॥ मेष रासी पुरुष की अच्छी सुरती होयगी ॥ महीना भादों का अच्छा शुभ होयगा ॥ वार आदित को शुभ होयगा ॥ कंवर में पीर होयगी ॥ ताको इलाज ॥ गुलाब और पासकंद ॥ व कालो मिरच ॥ व सोंठि ॥ सब को बराबर करिके पीसि के ॥ गोली बनावै गरम पानी से खाइ तौ आराम होयेगा ॥ जो चन्द्रमा देषै तो वह महीना खुसी में बीतेगा ॥ देही पतरी होयगी ॥षरच बेकदर करैगा ॥ लोहू एकबार गिरैगा ॥

स्त्री वृष रासि होय तो पहिले स्त्री मर जायगी ॥ दूसरी स्त्री के लरिका होयगा ॥ लरिका नव होयगे ॥ लरकी पांच होयगी इतनी संतान होयगी ॥ तीस में लरिका दोय जीवेगा ॥ लरिकी दोय जीवेगी ॥ और सब आखिर हो जावेंगे। तीस में एक लरिका तालेश्वर बहुत होयगा ॥ और बड़े आदमी के पास जाय तौ दाहिने बैठे तौ बड़ी पदवी पावेगा ॥ अलप बरस ग्यारा ॥ ११ ॥ में होयगी ॥ अलफ बरष ॥ १५ ॥ में होयगी ॥ ऊंचा से गिरेगा ॥ बरस बीस ॥ २० ॥ में उपद्रो उतारन होयगा ॥ बरस चालीस में अलफ भारी होयगी ॥ आगे उमरि बरस नवे ॥ ९० ॥ जीवेगा ॥ अंश राषै तो सुखी होयगा ॥

End :—४४३ ये सकुन धर्म नहीं थांय पण धर्मन नीहाली थसे। बीच में विरोध उपजसे छे माटे तुसा बघ रहे जो बीज का मामला अथ से विचारि काम कर जो महनो पूजा करजो दुख टल से तोल (तिला) इन्ही ऊपर छे: ऐसकुन तु काम थी पामी से मई वस्तु आवसे पाछी एक मास येक बरस माहठोछे व्यापार माल अथ से राजा श्री येन मान थसे तुमन मा संतोष राखे जे ये निशानी ये निशानी तारी इन्ही ऊपर तोलछे ॥ प्रश्नावली समाप्त ॥ गुरुदया ॥

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० ३ तक—मेष राशि के पुरुष तथा स्त्री के लक्षण। कमर की पीड़ा की औषधि व उनके पास रखने के लिये एक यंत्र।
(२) पृ० ३ „ „ ६ „—वृषराशि के पुरुष तथा स्त्री के लक्षण व यंत्र।
(३) पृ० ६ „ „ ९ „—मिथुन राशि के पुरुष „ „ „ „ ।
(४) पृ० ९ „ „ १० „—कर्क राशि के पुरुष का लक्षण, औषधि व यंत्र।
(५) पृ० १० „ „ १२ „—सिंह राशि के पुरुष तथा स्त्रीके लक्षण तथा यंत्र।
(६) पृ० १२ „ „ १३ „—कन्या „ „ „ „ औषधि ।
(७) पृ० १४ „ „ १६ „—तुला „ „ „ „ „ ।
(८) पृ० १६ „ „ १७ „—वृश्चिक „ „ „ „ „ ।
(९) पृ० १७ „ „ १९ „—धन „ „ „ „ „ ।

(१०) पृ० १९ से पृ० २० तक—मकर राशि के पुरुष तथा स्त्री के लक्षण तथा यंत्र।
(११) पृ० २१ ,, ,, २२ ,, —कुंभ ,, ,, ,, ,, ,, ।
(१२) पृ० २३ ,, ,, २४ ,, —मीन ,, ,, ,, ,, ,, ।
(१३) पृ० २५ ,, ,, ४० ,,—शकुनावली फल सहित ।

No. 523. Onāmāsi, Bārahakhaḍi, Pañchapāṭi, Dhāturūpa and Laghuchāṇakya Rājniti. Leaves—18. Deposited with Gosvāmiji, C/o Paṇḍit Badri Nāthji Bhatta, Husainganj, Lucknow.

Beginning :—सिद्धि श्री गणेशायनमः ॥
ॐ नामा सीधं ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ
ओ औ अं अः ॥ का खा गा घं ना ॥ च छा जा झं ञ ॥
टा ठा डा ढं णा ॥ त था दा धं ना ॥ पा फा बा भं मा ॥
जा रे ला वा सं षे सा हा ॥ लं क्षो दा ॥
क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः ।
ष षा षि षी षु षू षे षै षो षौ षं षः ।
ग गा गि गी गु गू गे गै गो गौ गं गः ।
घ घा घि घी घु घू घे घै घो घौ घं घः ।

Middle :—
पठकः पाठकश्चैव ये चान्ये शास्त्र चिन्तकाः ।
सर्वे व्यसनिनो मूर्खा यः क्रिया वान्सपंडितः ॥ ७ ॥
परोप देशे कुशला हृदयन्ते बहुवो नरा ।
स्वभाव नतु वर्तते सहस्रे स्वपि दुर्लभा ॥ ८ ॥
हतं ज्ञानं क्रिया हीनं हता श्चाज्ञानिनो नरा ।
हतं निर्नायक सैन्यं अभर्तार स्त्रियो हता ॥ ९ ॥
केचिद् ज्ञानतो नष्टा केचिन्नष्टा प्रमादतः ।
केचिद् ज्ञानावलेपेन केचिन्नष्टै स्तु नाशिका ॥ १० ॥
अप्रिय वचन दारिद्रे प्रिय वचनाढ्यौ स्वदार पति तुष्टे ।
परि परिवाद निवृत्ते क्वचित्क्वचिन्मंडिता वसुधा ॥ ११ ॥
इति लघु चाणक्ये राज नीति शास्त्रे द्वितीयो ध्यायः ॥ १२ ॥

End :—
पंचैतान्यपि सृज्यंते गर्भस्यस्यैव देहिन ।
आयु कर्म च वित्तं च विद्या निधनमेव च ॥ ७

लिखिता चित्र गुप्ते ललाटे इर मालिका ।
तां देवोपि न शक्नोति अस्पिय्य लिखितं पुनः ॥ ८ ॥
भावितव्य यथा येन नासौ भवति चान्यथा ।
नीयते तेन मार्गेन सुखं वा तत्र गच्छति ॥ ९ ॥
स तत्र यद्दा रव्येव बलाद्वैन नीयते ः ।
संसार विष वृक्षस्य द्वै फले अमृतोपमे ॥ १० ॥
काव्यामृत रसास्वादः संगमः सज्जने सहः ।
वने रने शत्रु जल अग्नि मध्ये महार्णवे पर्वत मस्तकेवा ।
सुप्तं प्रमत्तं विषयस्थितं वा रक्षन्ति पुन्यानि पुराकृतानि ॥ ११ ॥
इति लघुचा नाइके राज नीति शास्त्रे षष्टमो ध्याय समाप्ता ः ॥

इति

Subject :—पृ० १—२—थोनम तथा बारह खड़ी संपूर्ण

पृ० ३ से ५ तक—सिद्धों वरनाको प्रथम पाटी संध्ये सूत्र वर्णन द्वितीय से पंचम पाटी तक वर्णन ।

पृ० ५—६—धातु रूप वर्णन ।

पृ० ७—१८ तक—प्रार्थना राजनीति शास्त्र प्रथम अध्याय से षष्ट अध्याय तक भिन्न भिन्न विषयोंपर श्लोक वर्णन ।

इति

No. 524. Padamāvata. Leaves—144. Deposited with Paṇḍita Krishṇa Vihārī Misra, Model House, Aminābāda Park, Lucknow.

Beginning :—नहीं होता ये सब कहते हैं अकसर । मज़ोंहा जो कुम का सैदरां खुसकर ॥ तमाशा कर बघर से बाग कूं जामै । गुलो गुंचे के साथ इस दिल कु बैलामै ॥ हमरी पातर अयके साल गुलसन । भरे हैं कैसे ये फूलों से दामन ॥ दिले आस्क से वो देता निसा है । जहां लाला है बोर आवेर वा ॥ गुले चंपा खिलाया बन खिला है । तेरी चंपा कलो से खुसनुमा है ॥ गुलों के बीच मैनू बैठा दाना । रखा हो मुशक्लि चुं जाममोना ॥ है सपे सवज पर गुंचे नमूदार । तेरे तोते के जैसे सुरख मिनकार ॥ वहा चेहरे को कर गुल के मुकाबिल । कि जामें फूल इसके गुल अनादिल ॥ चिरागे गुल नहो क्यों कर मला गुल । तेरे आगे है गुल चुं समै काकुल अगर न रगसे तू आंखें लड़ावे ॥ उस नजरों में नहो मिल के आवै ॥ नरज सब माहरू आने फिदा बाज़ । चमन के बस कमेयो तुम्हारे दाज़ ॥ नसो आसा जुबाने मसल हतकार । ना कहतो थो सपुन बजुज

गुल जार ॥ लवे हर सोले वो बरसाथ बंगेज । न रहता कुछ हरफ गुल मानिंद ॥ गुल रेज़ पदम भी चाहती थी उनको प्यार । हुई तैयार सकसत पास पातर ॥

End:—पदम को रखा उसमें खास पोशाक । फिरे वेताब करके चुस्त चालाक । चले दिल्ली को जान बाद ले संग । बजाहर सुले ले किन परदे में जंग ॥ वे साहरत हो सबी सहरो नगर । पदम रानी है चाली है साह घर में ॥ रतन से हाथ उठाकर बादले जान । हुआ चाहे सह के घर मुसलमान ॥ वई सुरत जा हिन्दुस्तान में चाये । थोर उसका खास डोला साथ लाये ॥ रखी पोशाक उसमें थी मुयत्तर । मगर कुर बाम होते जिसके ऊपर ॥ हजारों गिर्द डोले उसके बाहम ॥ कि है इसमें परस्ता राम हमदम ॥ वई सुरत गरज वो फौज मक्कार ॥ फरोदाई लबदरया चूं इकबार ॥ खबर जल्दी से सुलता को सुनाई ॥ कि पदमावत हुजूरी में है चाई ॥ हमे इसके मुद स वसही भरती । पसन्न चादाब है ये चर्ज करती ॥ मैं कुफरे काफरों से हूं गुरेजां । फकं ठलकोन तरीके दोनो इमान ॥ रतन को कीजिये रुखसत कदोदम । कुछ उससे हमको कहना है कहे हम ॥ मुझे कहना है जो कुछ कह सुनाऊं । फिर बंदगी में सह की चाऊं ॥ गुलामाने वफा जो सब चाये । उसे जो लामे वैसे ही जामे ॥ यकीन पेसाहो सुन के साह कू चाया । न पैराहन मैं फिर फुला समाया ॥ कहाले जाओ जल्दी से रतन कू । दिखाइेा जाके वह रसके चमन कू । मेरी जान बसे यही कहियो बसद सोक । कवेहद तेरे मिलने का है बस शोक ॥ हिदायत को खुदाने तुमको जाना । कि तू होने को चाई है मुसलमान ॥

Subject :—रानी पदमावती का हाल बर्णन ॥

No. 525. Panchānga Darpaṇa. Leaves—10. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning:—दोहा (इस दोहे को रचयिता ने पुनः शुद्ध करके लिखा है)।

(बिन सताब्द को चब्द में द्वादश भाग जो लेह। सेष माहिं भू हीन करि) बिन सताब्द को चब्द में लै द्वादस को भाग। एक हीन यदि भाद्र तक जन्म बृहस्पति लाग ॥ १ ॥ सात जोरि संवत् लिये लै बारह के भाग। जन्म समय सब जनन के हहैा बृहस्पति लाग ॥ सके ७८ जोरि कै सन ईस्वी बखानु। सन ५७ जोग ते सम्वत् विक्रम मानु। पुरसन हिजरी फसली जानु। हिजरी मोहर्रम से मानु। चादि कुवार बदी से साजु। चारंभित फसली को चाजु। इस्वी सन पंचबमाखी ५८२ घटै हिजरी सन सुद्ध लखै पलटै तिथि संवत घट बंतालिस ६४९ हीं। हरिये हिजरी कहिये तबहीं। हिजरी सन में १० दूरि करै। फसली सन यों हिये मांझ धरे फसली सन को बहु चाजु चलो। चहिये चपनी समझ सुमलो।

End :—

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	शरीर पीड़ा १५ व०	धन दुःख धन नाश	निरोगी २०	देह दुःख १४ धन	बहु क्रोध २ पुत्र पीड़ा	शत्रुनाश ३६ में लाभ	दुष्ट स्त्री ४१ संतति थोड़ी	नेष्ट ५७ वर्षे श्रेष्ठ	दुर्बुद्धि ३६ से श्रेष्ठ	दुः कर्मी ४/२१ श्रेष्ठ ४२	राज मैत्री ३२ पु० सु०	दुष्ट स्वभाव २८
चन्द्र	कांति सुख २७ राजस	बहु संपत्ति ३७	कीर्ति-वान ५ लाभ	सुभोगी २२ पुत्र	बहु पुत्र ६ [illegible]	अल्प कोपी ७ उदास्व	स्त्री २ रूपवती सुपुत्र १५	नेष्ट ६ क्लेशित	धर्मबुद्धि २०	प्रति कीर्ति ४२	धनवान २० श्रेष्ठ	काना व रोगी ३०
मंगल शनि राहु केतु	रक्त की पी० पु० में	दुःख प्राप्त धनना १२	दुष्ट बुद्धि १३	बहु दुःख मातृ पीड़ा ८	संतति हीन मातृ पीड़ा ५	शत्रुनाश २४ सुख	दुष्ट स्त्री संतति थोड़ी २७	नेष्ट २२	पितृनाश १४ वर्षे	सख्य भीति २७	धनदः ४५	हानिद ७५
बुध	कांतिदः १० वर्षे	धनदायी २६ सुख	धनदायी २२ भ्रातृ पीड़ा	पुत्र लाभ २२	मातृ हानि २६	शत्रु से मृत्यु २१	स्त्री दाता १९	द्रव्यहा १४	मातृदः १९	द्रव्यम् १९	धन लाभ ७५	स्त्री हानि ७५
बृह-स्पति	विशेष बुद्धि ८	धनदः ३२	मित्र समागम २०	बंधु तनय लाभ १२	मामा को अरिष्ट ७	शत्रु म० ४०	स्त्री लाभ १२	महाव्याधि ३१	पितृअ-रिष्ट १५	द्रव्यार्जन १५	द्रव्यार्जन १६	व्यय कृत १५
शुक्र	परदा-रमा १७	धन लाभ दः ६०	तीर्थ दाता ४	बंधु सौख्यदा ५	लाभ कृत ६	शत्रु क्षांत प्रद ४१	स्त्री लाभ १४	पराक्रमः १५	लक्ष्मी प्रदः १५	बहु सौख्यं ४	बहु सौख्य ४	धन ५

Subject:—किसी का ग्रह बताने के हेतु उसका गत वर्ष और जन्म संवत् ज्ञात करना।

(२) उपर्युक्त संवत् और वर्ष ज्ञात होने पर पंचांग दर्पण चक्र द्वारा उसका फलादिक बतलाना

(३) नक्षत्रादि की घड़ी, वार तिथि आदि जानकर कुंडली के कौन २ ग्रह किस राशि में हैं उसको बतलाना।

(४) बृहस्पति १९ महीना शनि २॥ वर्ष, राहु-केतु १॥ वर्ष एक राशि पर रहते हैं। राहु केतु का सदा वक्री रहना।

(५) मस्तक रेखा तथा कर रेखाओं को देखकर जन्म कुंडली के ग्रह बताना।

(६) पंचांग दर्पण चक्र

No. 526. Panchayajñavidhi. Leaves—4. Deposited with Thākura Badrīnātha Siṁha, Village Kharauhi, Post Office Mānadhātā, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ अथ पंच यज्ञ विधि॥ गोग्रास।
सुरभिर्माता सुरभिः पिता सुरभिः पितृ तारिणी॥ गोग्रास ग्मयादत्तं सुरभे प्रति गृह्यताम्॥ १॥

× × × ×

प्रथम चक्र बनावै जिसका द्वारा पूर्व रखै ऐसा चार कुट वाला चक्र करे। इस चक्र के पूर्वादि दिशा ईशान्यादि विदिशा कल्पना करे प्रथम ईशान दिशा में काष्ठ पात्र रखै तिसमें जल जल में॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा × × × इन मंत्रों से तीन जगह जुदा जुदा भाग धरे × × × × आदि॥

End:— × × ×
× × × ×

इन मंत्रों से अग्नि में पंच आहुति करै॥ अग्निविसर्जन करे॥ ॐ गच्छ गच्छ सुर श्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर॥ यत्र ब्रह्मा दयो देवा स्तत्र गच्छ हुताशन॥ इति हुत यज्ञ पंचम॥

इति पंच यज्ञ विधि समाप्त॥

Subject:—पृ० १ से पृ० ८ तक—गोग्रास, हन्तकारं, अतिथि पूजन, अप सव्यम्, स्नान बलि और वैश्वदेव कर्म विधि।

No. 527. Philanāmā. Leaves—144. Dated in Samvat 1939 or A. D. 1882. Deposited with Mahārājā Library, Pratāpagadha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ अथ अध्याय पहिलो। हाथी को होसियार करना वा दौराना। दवाई॥ मदार के कोपल, पलाश्त के जरि। कंदल के जरि रस के पानी इन सब चीजों को मिलाय के के तथा ठंडा के के पिलावै तो हाथी मस्त हो जावै थोरे दिन में॥ १॥

दुसरी दवा॥ २॥

कलोरा पैसा भर॥ २५॥ पहिले हाथी को नहवाइ के कलोरा पीसि के पांच दफा चक्की दहिने हाथ से फेरै और एक नांद में चार सेर पानी डाले और तीन पाव मैदा के दुइ रोटी बनावे और दवा रोटी में डालि के पकावे और आधी राति का पिलावै और सोने न देवै और सवेरे फेरने का पूरब तरफ लेजाइ और पानी में न जाने पावै तौ मस्त हो जावै॥ २॥

End:—एक से एक कुवां के पानी एक से एक पेड़ के पत्ती गोहूं के आध सेर कच्चा भूसो एक बरतन में डालि के पिलावै और नागा न करै करनो बदफा हो जावै अगर कछु पिलाया होइ तौ इग्यारह अंडे मुरगी के पीसि के थो एक घुटकी भर दिया करै तो करनो व असरन करै औ जायज होवै तमाम शुद॥

इति *

मि० पूस बदी १२ सन १२८९ फ० मुताबिक पहिलो १ जनवरी सन १८८२ इसवी रोज रविवार मुकाम लखनोऊ मे लिषा गया॥

द० इन्द्रजीत सिंह समवन्स साकीन गोंड़ा पास के जैस प्रति पाया वैसा लिषा शायद कछु भूल चूक होय तौ चतुरो सुधारि लिजिएगा॥ और माफ करिये॥

Subject:—हाथियों के अनेक रोगों को खिलाने तथा लगाने की औषधियां।

पृ० १—३० हाथी का मस्त करना, होसियार करना, दौराना आरन वा पाचन की दवा।

पृ० ३०—३६ अनेक तरह के जुलाब।

पृ० ३६—४० पेचिस व बाई आदि की दवाइयां।

पृ० ४०—४६ जहरबाद आदि की दवाइयां।

पृ० ४६—५२ रस का हन व आमासय आदि की दवा।

पृ० ५२—५८ बिसर, नस्त वा कादवत वगैरः की दवा।

पृ० ५८—६४ दांत, नाखून, हुडावा, लड़का आदि की दवाइयां।

पृ० ६४—८२ पलका, नाखूना, जाला, फूला, सफेदी, आदि आंख की बीमारियों की दवा।

पृ० ७२—८२ तक—मरहम घाव, खाजन, बमनी, नासूर आदि की दवा ।

पृ० ८२—८४ पीठ, कपोल आदि की सूजन की दवा ।

पृ० ८४—९२ कांडी आछोव या तल वांस और की दवा ।

पृ० ९२—९४ रस मैली या खुर या मस्ती या चमड़े का सख़ होजाना ।

पृ० ९४—१०२ अग्नि घाव या दाह ।

पृ० १०२—१०४ बाल बढ़ाना, बाल सफेद करना ।

पृ० १०४—११२ ज्वर व ललारी आदि की दवा वासा वाव व बोरव की दवा ।

पृ० ११२—१४४ धोरज धरना हाथ का और फुटकर दवाइयाँ ।

No. 528. Piyūsha-Pravāha. Leaves—190. Deposited with Paṇḍita Bhagavatiprasāda Triguṇāyata of Taradahā, Post Office Paṭṭi, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—अथ फुनक सूजन गर्दई के भीतर होति है तीने के पहिचान यह है—कि पानी पियत की पानी नकुरा की राह से बहत है और कबो कबो गर्दई गोड़मा रगरत है और गर्दई छुअइ नाहीं देत कबो कबो सूजन ऊपर ऊपर देखाई देत है बहुधा ई रोग कनार के पाछे होत है ॥ इलाज कपड़ा कै गद्दी बनाइ के गरम पानी मा भेइ के बाँधे ॥ अथवा बजरी औ रोठी बराबरि कूटि कै पोटरी बनाइ कै क ॥ अथवा नीम एकै पाती मकोइ कै पाती पीसि कै अमिलतास का गूदा मिलाइ के गरम गरम लगावै ॥ अथवा यह दवा लगावै कि पाका नरम होइ कै फूटि जाय पियाज पीसि कै तूतिया मिलाइ कै लगावै ॥ अथवा भैंसा का गोबर नमक साँभरि आदमी का पेसाब मा घुरै कै लगावै ॥ अथवा मैन फल मेथी आमा हरदी घी कुमारी का गूदा बराबरि पीसि कै लगावै ॥

End :—बरगद कर नरम पात महुआ कर बोकला जामुनि कर बोकला छोय हर्रा कै छाली हरदी सब बराबरि पीसि कै महीन लेप करै तो बरमो रोग जाय ॥ अथवा ॥ जंगी हर्रे ८ पैसा भरि खैर सपेद १ पैसा भरि नीला-थोथा १ पैसा भरि सब महीन पीस १०० नेबुआ के रस मा खरल करै और १ रत्ती भरि कै गोली बनाइ नित एक गोली दहिउ के साथ खाय तौ बरमो रोग जाय ॥ अथवा ॥ नीला थोथा १ भाग खैर २ भाग मुरदार संग २ भाग सुपारी

के राखी २ भाग सब महीन पीसि कै गरमी मा घुरकावै तो गरमी रोग अच्छा होय ॥ अथवा ॥ पारा १ टंक और सार १ टंक अकर कड़ा २ टंक महत ३ टंक सब महीन पीसि कै ७ गोली बनाइ कै १ गोली रोज जल के साथ खाइ तौ सब प्रकार की गरमी जाइ ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ५२—खंडित ।

(२) पृ० ५२ से पृ० १२० तक—घोड़ों की चिकित्सा—गले की सूजन, तालू की सूजन जीभ के दाने, लगाम की रगड़ आदि, खांसी, हांसी, दम, शूल, अध कुरकुरी, २१ प्रकार की कुरकुरी का लक्षण, सदावर्त शूल, पतरावत शूल, रक्त मेन शूल, काम दुःख शूल, महावरण शूल, पाता वरण शूल, भूमिवरक शूल, कासावरत शूल, मुक्तावर्त शूल, कलाकर लदग शूल, कसावत शूल, पसवरत शूल, अजीर्ण शूल, सर्वकम शूल, उदार्त शूल, अंजन शूल, मायावरत शूल, लीद बंद होने, पेट से कुराकुर आवाज आने, पेट में पड़ी जोंक, पेट की सूजन, कम पानी पीने, पेशाब में खून आने, बहुत पेशाब आने, गुमनाम, पीठ, की सूजन। थन की सूजन, घोड़े की तंग, बेगहड़ी ओगीरा, आनुआ, दामिनी, चकावरि, पुस्तक, कफगीरा, उदय करन वाद, गज चरण, सुम की पुतरी से पानी बहने, रस उतारने, सुम भीतर होने, भनक बाई, अहरवाद, अंडे की सूजन, अग्निबाई, देह की गुरथी, रकत पित्ती, ज्वर, सन्निपात ज्वर, वात ज्वर, पित्त ज्वर, कफ ज्वर, सीत ज्वर, लंघान ज्वर, घोड़े के ज्वर, जोड़े के वाद की औषधि, मस्ती से भरने की दवा, चांदनी मारने, बाल काले या लाल करने की तरकीब, सितारा मिटाने की तरकीब, भोला मारने तथा सांप काटने के इलाज ।

(३) पृ० १२१ से पृ० १३७ तक——ऊंटों की बीमारियां । खारिश की दवा, ऊंट के लिये हाजमें का मसाला, दौड़ाने का मसाला, लद् ऊंट के निरोग रहने की औषधि, कपाली, मुंह के छाले तथा खांसी का इलाज, बंगली, सूजन, अफरा पेट का दर्द, पेट का गहराना, पेशाब बन्द होने, जानुआं, भोला, पीछे वाले पैर की सूजन, सरदी से जकड़ने, ऊंट के मरने, ताव खाने, खाते-पीते भी दुबला होने, बाई, कांपने, रस्सी तुड़ाने, मिट्टी खाने, चोट लगने, नासूर, कीड़ा, जख्म, खारिश, किटी तथा किलनी के लक्षण और औषधियां ।

(४) पृ० १३८ से पृ० २१३ तक—हाथी की चिकित्सा । हाथी के सदा निरोग रहने, धारन सुखदेव, हाजमा, धारन भोजन, धारन अजीर्ण, मोटे होने, दौड़ने तथा तेज चलने, दल का रोग, फूली, माड़ा, जाला, नासूर, कोइली जवन, अजीर्ण, कै कराने, मरोड़, पेट के कीड़े और आंव गिरने का इलाज। जुलाब, दस्त बंद करने, पिछले अंग के दाहिने बायें खिचने, आनुआं, पैर

को कड़ी सूजन, खाजन, नाखुन गिरने, रंग उतरने, मिट्टी खाने, जहरबाद, गले का जहरबाद, सन्निपात, बाई जकड़ने, ताव आने, चमड़ा कड़ा होने, जखम होने, नासूर, तालू, थूथन और पीठ की सूजन, पीठ का जखम, मस्ती आदि की औषधियां। हाथी नहाने की विधि, दांत साफ करने, दांत फड़ने दांत टूटने, कीड़ा पड़ने, सड़ने आदि का इलाज।

(५) पृ० २१४ से पृ० २२० तक—बैल तथा भैंस की चिकित्सा रोगों का लक्षण तथा इलाज, जुआ पड़ने, कंधे की सूजन, पलान आदि से हुई सूजन, तरकीब, बाघी, डंकराने, गर्भवती होने, दूध बढ़ाने की औषधि तथा गऊ की साधारण बीमारियों में पूजा का विधान।

(६) पृ० २२१ पृष्ट २२३ तक—बकरी और भेड़ की दवा। खुड़े, मुंह सड़ जाने, पेट फूलने, जखम होने आदि की दवायें।

(७) पृष्ठ २२४ से पृष्ठ २२७ तक—कुत्ते बिल्ली की दवा। सरदी की बीमारी, ऐसे जखम की दवा जो चाटने की जगह पर न हो। किलनी लगने आदि के इलाज॥

(८) पृ० २२८ से पृ० २५० तक—चिड़ियों की दवा॥ आमिष और निरामिष भोजी चिड़ियों का इलाज। सरदी, सिरदर्द, आंख के रोग, फूली, जाला, पानी बहना, पलक की फुन्सी, पलक की खुजली, आंख का नासूर, नाखुन तथा पंजा फटने, नाखून टेढ़ा होने, पंजे के मस्से, मुंह तथा कंठ के रोग, मुंह की सूजन, सरदी से तालू खुजलाना, गर्मी की खांसी, सिर में गर्मी चढ़ने, दाना न पचने, वमन में कीड़े गिरने, कलेजे पर सूजन होने, अन्दर में कीड़े पड़ने बवासीर, पांव की गांठ की सूजन, करीच के जूं, देह पर बाल खड़े होने, खारिश तथा सूजन की दवा।

(९) पृष्ठ २५१ से पृ० २६७ तक—मुर्गे की दवा। कबूतर, बटेर आदि की दवायें।

सोप रोग, दीवाना होने, ताकत कम होने, पंचवाय, लड़ाई का घाव। कबूतर के रोग, सोप की दवा। बटेर का जुलाब। तोते की दवा, कम बोलने और सरदी की दवा। बुलबुल की दवा, ज्यादा लड़ने की शक्ति होने की दवा। कर्रा, बाज तथा शिकरा का इलाज। गुनाल चश्म की दवा, शिकरा की दवा, परिवाल कच्ची करने, मुंह से तामा गिरने का इलाज। स्याह चश्म की दवा अर्द या तिवरमुती का इलाज। तीतर की दवा।

(१०) पृ० २६८ से पृ० ३८० तक—आदमी का इलाज। ज्वर लक्षण, औषधि, सर्व ज्वर चूर्ण, सर्व ज्वर रस, तिजारी की दवा, चौथिया ज्वर

को दवा, सर्व सन्निपात लक्षण; संधिक लक्षण, भग्नेत्र ज्वर का लक्षण, प्रान्तिक सन्निपात, चित्त-भ्रम सन्निपात, कंठ कुब्ज, प्रलाप, सन्निपात, शीतांग सन्निपात, अभिन्यास सन्निपात, जिह्वक सन्निपात, उन्माद सन्निपात, तंद्रिक सन्निपात, कर्णक सन्निपात आदि की औषधियां और लक्षण। सर्वसन्निपात की दवा, सर्व सन्निपात पर रस तथा काढ़ा; सन्निपात की गोली, काम ज्वर, पजांवे ज्वर। ज्वर, के दस उपद्रव—तृषा, खांसी, स्वांस, हिचकी, वमन, अतिसार, अरुचि, बद्धकोष्ट, अफरा तथा मूर्छा की औषधियां। संतत आदि—सर्व विषम, ज्वर, ज्वर का यत्न, ज्वरारि रस, विषम ज्वर पर अंजन, विषम ज्वर पर लक्षादि तैल, अतिसार रोग की उत्पत्ति तथा लक्षण, वात के अतिसार का लक्षण तथा औषधि, रक्तातिसार, गुदा पाक, आमातिसार के लक्षण, सर्व संग्रहणी का यत्न, पांडु रोग की उत्पत्ति, लक्षण तथा यत्न, मृगी रोग की उत्पत्ति; लक्षण और यत्न, वात की औषधि, अमृत गुटका; पित्त तथा कफ, की उत्पत्ति और यत्न। पिलही रोग, सुजाक तथा उसके भेद, पथरी, प्रमेह, गर्मी, विसर्प आदि रोगों के यत्न

(११) पृ० ३८१ से पृ०..................लुप्त ॥

No. 520. Pothī-Praśna. Leaves—27. Dated in Samvat 1848 or A. D. 1791. Deposited with Paṇḍita Śyāmasundara Pānde of Brāhmaṇapura, Post Office Paṭṭi, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning.—श्री रामचन्द्राहि पूछहु।

१—विवाह होइना अवसि कै घर बैठ ॥

२—वस्तु गई पै घर के मानुष के भेद सैां ॥

३—झगड़ा जिनि करहु निह फल है ॥

४—परने जिनि जाहु निह फल है ॥

५—गांउ गया आयत है धन सहित ॥

६—मित्र करहु मिताई भल होइद ॥

७—गई वस्तु पैवेहु भेद लगाये रहहु ॥

८—राजा राज पावेगा किछु दिन मा ॥

९—संतति एक होइहै भागीवंत ॥

१०—विद्या पावहु गे पढ़े के बहुत दिन महनत करहु ॥

End:—गंगेवहि पूछहु।

१—धारा कर्म जन करहु अशुभ है ॥

२—औषध लिहे हानि है जिनि लेहु ॥

३—रोगिया ब्राह्मन जिवाये नीक होइ है ॥
४—अर्थ रोजिगार किहे प्राप्त होइ है ॥
५—ब्यापार जिनि करहु मूर मा हानि है ॥
६—यात्रा सुफल होइह करहु ॥
७—चामर राषहु मुद्दैन रहि है ॥
८—वेश्या लावहु आनंद होइ है ॥
९—चोरी ते बड़ा दुःष होइह जनि जाहु ॥
१०—पैठो करहु लहना होइहि ॥
इति पोथी प्रसम्ब के सम्पूर्णम् सुभ समाप्ते ॥
जो प्रति देषा सो प्रति लिषा दोस मम न दीयते ॥
मिति सावन बदी १३ बार बुधवार संवत् १८४८ सन ११९८

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० २० तक—प्रश्न कोष्ठ।

(२) पृष्ठ २१ से पृष्ठ ५४ तक—प्रश्नों के उत्तर। नई वस्तु पाने, संग्राम करने, सानी करने, चिंता करने, गांव चलने, बंदी बांधने, रोगी अच्छा होने, बगीचा लगाने, रोजगार करने ऋण लेने, नौकर रखने, उधार देने, तीर्थ करने, राजा के राज पाने, अर्थ प्राप्त होने, विद्या पढ़ने, यात्रा करने, संतति होने आदि प्रश्नों के उत्तर ॥

No. 530. Pothī Ramalasaguna. Leaves—9. Deposited with Paṇḍita Syāmasundara Pānde of Brāhmaṇapura, Post Office Paṭṭi, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गनेस आय नेमः ॥ अथ पोथी रमल सगैन ॥१११॥ येह सगुन अच्छा है जो काम चाहोगे सो होयगा झगरा मा है ब्यवपार मा लाभ होयगा तेरे दिन अच्छे हैं गे ॥ काम मनोरथ सो होयगा—तेरी दाहिनी भुजा पर तिल है ॥ सो देष लेना ॥ ११२ ॥ येह सगुन मध्यम है ॥ दूसरे काम विचार के करना ॥ कुल देव की पूजा करो ॥ तुम्हारी स्त्री झूठ बोलती है ॥ सो विचार लेना ॥

॥ ११३ ॥ येह सगुन का फल सुनो ॥ ध्यान लाभ होइगा ॥ चित्त की चिंता मिटैगी ॥ तेरे दिन बुरे हैं सो गए ॥ अब तेरे दिन अच्छे हैं ॥ तुम विश्वास मानो ॥ तेरे दाहिने भुजा पर तिल है ॥ सो देष लेना ॥

End :—॥ ४४२ ॥ येह सगुन किछु धरम करना तब काम सिद्धि होगा आछुतें दिन नियत गए हैं विचारि कै करना अब अच्छा होगा तुम्हारे सरीर में पुसी नाहीं होत है ॥

४४२ ॥ पेह सगुन भाव से बड़ा है यह है मध्यम है दिसा निवन हैं अलदी नहीं छोड़ेगो काम विचारि के करना गुरु देवता के पूजा करहु ताके बलते भल हैगा ॥ ४४३ ॥ पेह सगुन से वायुम में विगार है काम नहीं करना जे काम विचारे है सो वह सिद्धि न होय गुरु नारायन का पूजा करना ॥ तेरी इन्द्री पर तिल है सो देष लेना ॥

Subject :—पृ० १ से पृ० १८ तक—रमल के पासों के अंकों के अनुसार प्रश्नों का उत्तर ॥

No. 531. Pothi-Sarvaguṇa. Leaves—21. Dated in Samvat 1874 or A. D. 1817. Deposited with Paṇḍita Panchamarāma Pāṭhaka of Rāmapura-gadhauli, Post Office Sagarāmagaḍha, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—पोथी सर्व गुन की

स्रो पै जो भो ताकी विधि—जा ठोर होइ ता ठोर अपने आप पाछि लगावे नीको होइ ॥

दूजी विधि—कोरे बसने मे कचूर मेले तब मथै जब मिलि जाइ तब तहाँ लेप करै तत्काल नीको होइ ॥

छाया वे आइ ताकी विधि ॥ श्री वैद को तेल कड़वा सेर एक ले अवटी पाछे वाको फेरि उतारै जुरि होइ तब ऊपर ते हरताल मेले टांक दुई तब हांडो मुदे भलि के बाफ बाहेर न आइ तब ऊपर ते सेकु करै ता छेक के पेंडे पानी डारै सयरो के उतारै तब बासन में करै तब तेल हाथ मो लगावै स्रना जो आइ जहाँ विवेक होइ तहाँ पीछे पानी काढ़ै तब लेपु करै—

End :—

धातु करत बहु बल धरत, मोहि पूछै जो कोइ।
पय समान तिहुं लोक में ओर न औषधि होइ ॥ १ ॥
रति के समै जो पय पिवे, घटै न बल तेहि अंग।
विरहिन की रति रुचि मिटे, चोगुन बढ़ै अनंग ॥

॥ धातु बंध ॥

मारो लोहा टाक दश लोहि सम लीजिए मिश्री उर्जे समान सो चूरन कीजिये दिवस पकेल प्रात उठि षाइ वेहै हि बीज न वेगि धातु नहि आइ है ॥ इति सर्वगुन ग्रंथ: समाप्त: संवत् १८७४ भाद्र मासे कृष्ण पक्षे चतुर्दश्यां, बुधवासरे समाप्ति मिदमागम् ।

Subject :—विविध रोगों की औषधियां।

(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—स्त्री पैजी भैसा की विधि, छाया न जाइ ताको विधि, पसीना न आवे ताको विधि, अंग सुवास होइ ताको विधि, कोढ़ो को विधि, गुल्म जाने को विधि, अग्नि दीपिका, त्रिफलादि चूर्ण, शंख चूर्ण, स्तंभन विधि, विदारी कंद, गर्भ रहने की विधि, स्त्री के दूध न होइ ताको विधि, गर्भ न होय ताको विधि, प्रति मत के दवा मून, स्त्री कच्चा लोह व छैता की विधि, देवदारु पुड़िया, स्त्री की पुष्टि विधि, ऋतु होने की विधि, गर्भ होने की विधि, स्त्री के सादाग, बाल स्याह विधि।

(२) पृ० ९ व १० लुप्त। पृ० ११ से पृ० २२ तक—सेंदुवा विधि, खाज, इन्द्री फुलाव, शिरोक्ति, पांव की बरौनी जमने की चिकित्सा, तिमिरेका, ज्वरांकुश तिजराका, सम ज्वर अंतरिया के, माथे की पीड़ा, नासूर की औषधि, रतौंद विधि, फीनहि विधि, रुसौंविधि, विर्लाचका, पेट पीड़ा, देह गंध, दांत जमने के समय की चिकित्सा, बालक की प्यास, मृगी, तिजरा महल्या, ज्वरहर, ज्वर लाक की विधि, कलेजे की पीड़ा, मस्तक की पीड़ा, कुत्ता काटे की दवा बीछी मारे की दवा, सांप काटे की दवा, रक्त विकार, वशीकरण, केशनाशन, ज्वर-र्क्त अतिसार, आमातिसार, मंगलाष्टक लेप, सन्निपात, दाह की औषधि, मूत्र-कृच्छ, पंच सम चूर्ण, पुष्टि की औषधि, शूल गज केशरि गुटका, छर्दि की औषधि, कुष्ट की औषधि।

(३) पृ० २३ से पृ० ३२ तक:—तांबा मारण विधि, गंधक शोधन, बिदुंक लाद की औषधि, कुवति कारक औषधि, धर्तकपारी की औषधि, वायु व्यथा, तेज मंद के धोरो दिन को फुला; बहुमूत्र की औषधि, दुवर की औषधि, थंमन की विधि, बीछी उतरे ताको विधि, घाव बांधनो होइ ताको विधि, मरद होइ ताको विधि, मुख सुवास होइ ताको विधि, पुरुष दोष विधि, गर्भ मे मरा बालक होइ ताको विधि, धाकादि सर्व विद्या की विधि, दांत उगने में बालक को दुख होवै उसको विधि।

(४) पृ० ३३ से पृ० ४२ तक—दूध बहुत होने की विधि, काया कल्प की विधि, खड्ग न लगे ताको विधि, जुवा जीते ताको विधि, चोर के नाम निकालने को विधि, अनाज बहुत आय ताको विधि, बवासीर जाने की विधि, मंदसेन की विधि, मोहन मंत्र, सुधासागर की विधि, मुख का चूर्ण, मदन मोद के बर विधि, प्रमेह का यत्न, मूत्रकृच्छ, रोग विधि, रोम सातन, पलीत विधि, घाव का इलाज, स्तंभन विधि, धातु वेध।

No. 532. Praśnachaura. Leaves—3. Dated in Samvat 1945 or A. D. 1888. Deposited with Paṇḍitā Rāmakaraṇa Pānde of Puresanātha, Post Office Paṭṭī, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ प्रश्न चैारः ॥१॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ १२ ॥ १० दिन बली जानब ॥ दिन सूं लग्ने रात्रि चैार जानब ॥ दिवा चैार ॥ ६ ॥ ७ ॥ ५ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ११ दुवोसरो डंड चेतनो लग्न में दिवा चैार जानब ॥ लग्न चैाथि वोति होइ तो परै दिन चढ़े जानब ॥ मित्र ॥ सू० च'० ॥ वृ ॥ मं० ॥ मित्र ॥ चंद्र को शुक ॥ बु० ॥ शु० ॥ शत्रु शुक्र को ॥ चं० । सू० सत्रुनि के सूर्य शत्रु पास मा जानब ॥

End :—अथ वस्तु मिलन को परीक्षा ॥ अंध नेत्र धनिष्ठा पुष्य ॥ रोहिनी ॥ पूर्व भाद्र पद ॥ विष्णुषा ॥ उत्रा फाल्गुणी ॥ रेवती इति ॥ अंधा लमा जाइतो वस्तु जल्दी मिलै ॥ अथ मंदाक्षं ॥ आरद्रा ॥ मघा पूर्व भाद्र पद ॥ चित्रा ॥ ज्येष्ठा ॥ अभजित् ॥ भरनी ॥ इन नक्षत्र मा जाइ तैा दूरि सुनि परै बड़ो मसक्कात सो मिलै ॥ अथ दिव्य लोचनं ॥ स्वांती पुनर्वसु ॥ श्रवण ॥ कृतिका ॥ उत्रभाषद मूल ॥ पूर्वा का इनमा जाइ तो ना मिलै ॥ इति मध्याक्षं नक्षत्रन समाप्तमसंवत् १९४५ के मि० फा० ब० १४ श्री रामदास मिश्र ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ३ तक—चोरी के समय का विचार, दिशा का विचार, जिस स्थान में वस्तु रक्खी हो उसका विचार चोर की जाति तथा वर्ण का विचार, स्वामी से चोर का संबंध विचार (२) पृ० ४ से पृ० ६ तक—चोर के नाम का तथा उसके निवास का विचार, वस्तु मिलने की परीक्षा ।

No. 533. Praśna Phala. Leaves—64. Deposited with Nāgarī Prachāriṇī Sabhā, Kāśī and Paṇḍit Durgā Prasāda Baudha, Post Baripal, District Unnāva.

Beginning :—

चिंता मिटै को प्रश्न	उधार देवो को प्रश्न
१ बह राजहि पूछो	१ बाल्म ऋषिहि पूछो
२ नर वाहेन पूछो	२ अगस्त ऋषिहि पूछो
३ भागीरथहि पूछो	३ प्रहलादिहि पूछो
४ स्वामि कार्तिके पूछो	४ बल दवै पूछो
५ राजा सगरै पूछो	५ श्री भगवानहि पूछो
६ यशोदाहि पूछो	६ मारो चहि पूछो

७ चित्रांगदहि पूछौ

८ हरि चन्द्रहि पूछौ

९ चन्द्रो दादिहि पूछौ

१० रोहितास्वहि पूछौ

७ वशिष्टहि पूछौ

८ पुलस्तहि पूछौ

९ पुलद नादै पूछौ

१० घाने वहै पूछौ

Subject :—चिन्ता मिटने, उधार देने जुआ खेलने, मद्द घेरने, साथ चलने, पानी बरसने, चाकरी मिलने, नाउ चढ़ना का प्रश्न—पृ० १-४ तक। बन्दी छूटे, डेरा भय, ग्रह स्थापन, फायदा प्रश्न मित्र मिले, चौपाय लेनेका, विवाह संतान, यात्रा, पढ़ना, रोज़गार, भेद करना, खेती करना, बीज बोना, नष्ट वस्तु प्राप्त, रोगी प्रश्न पृ० ८—१२ तक, घर घराई का प्रश्न, गांउ चलेका प्रश्न, चौपवि करना, परिचय करना, द्रोह करना, गढ़ गढ़ेका प्रश्न, तीर्थ करना घर रहना, घोड़ा लेना, आगम, चोरी, सगाई, बटेर, ब्योहार प्रश्न—पृ० १३ से १९ तक। गंगा, भीम सेन, हनूमान, युधिष्ठिर, राजा सगर, पुलाली, नर पाप, चित्रांगद सुग्रीव, चन्द्रोदय, अर्जुन कथन वर्णन–पृ० २० से ३१ तक। वासुदेव, लक्ष्मण, नल, व्यास ऋषि, हरिश्चन्द्र, बलना, नरवान, भगवान, मारीच, अंगद, उपंत्र, रावन, सहस्रार्जुन, नल, रामचन्द्र, बलि, वशिष्ट अगस्त, पुलदन, जामवन्त वर्णन पृ० ३२ से ५१ तक। भागीरथी, नकुल, स्वामि कार्तिक, रोहितास, प्रहलाद, धानेव सहदेव, वस्र, सुग्रीव, शत्रुघ्न और कुम करण का वर्णन पृ० ५५ से ६४ तक

End:—कुंभ करण उवाच०

१ थोरा मति लेहु लाभु ना होना।

२ यहि गांव बसौ लाभ होई

३ बीज बए लाभु थोड़ा है कष्ट बड़ा है।

४ आगुम आई चिंता मति करौ

५ मित्र करौ लाभु होई

६ रोज़ि गारमा लाभ होई

७ नष्ट वस्तु पै हौ चिन्ता मति करौ

८ संतान को फल होई चिन्ता मति करौ

९ विद्या पढ़ौ अपढ़िहै

१० ब्योहरे ते फल थोड़ा है कष्ट है।

इति

No. 534. Praśna-Sabhākāraja. Leaves—20. Dated in Samvat 1872 or A. D. 1815. Deposited with Rājā Avadhdesa-siṁha, Raīsa and Tālukedāra of Kālākākara, District Pratapa-gaḍha (Oudh).

श्री राम जी

Beginning :—सहाःदे श्री हनुमान जी सहाय

श्री प्रस्तुती

श्री रामचन्द्र क्रिपाल भजुमन हरन भै भो दारुनं ।
नव कंज लोचन कंज मुष कर कंज पद कंजारुनं ॥
भजि दीन बंधु दिनेस दानौ भुषन दंदु निकदनं ।
रघुवीर आनंद कंद कोसल चंद दसरथ नंदनं ॥
भागु हेतु दीन दयाल देखु कृपाल पदवुद सुंदरः-भुत कहावै के प्रश्न ।

१ मारीच	२ बलीनाह	३ भगवान	४ पुलस्ती	५ परजुन
६ हनुमान	७ मारीच	८ अगस्त	९ सहसैरजन	१० परजुन

॥ अगस्त उवाच ॥

End :—१—इस घर सो लाभ नहीं है ।

(२) ब्यवार दीजे मिलैगा विग्रह से ।
(३) यह छुटेगा बड़ा जोर सो ।
(४) जुआ में हारोगे थोरा ।
(५) भुत बड़े दिक्र सो छुटेगा ।
(६) मै हर मो संका बड़ा है ।
(७) सगाई करो मरोगे जल्दी सों ।
(८) परचै कीजै लाभ होइगा ।
(९) मैत्र सिखावो विरोध माने ।
(१०) गाँव चलने को भला है ।

इति श्री पोथी प्रश्न सभ काराज के सु पुरनः सुभ मस्तुः श्रीरस्तु । लिखतं रामसुख ब्राह्मण संवत् १८७२ बैसाख वदी ५ सनी वासरे ।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १६ तक—स्तुति, प्रश्न-चक्र, भूत छुड़ाने का चक्र ग्रैार प्रश्न, मिताई करने का प्रश्न। पशु खरीदने का प्रश्न। परदेश से ग्राने का प्रश्न। व्यौपार, सगाई, मैन्डर, साथ चलना, वंदमुक्त, नष्ट वस्तु प्राप्त, रोगी निरोग, खेती, बीज बपन, सुवास, आपदा, साथ करना, वासा, चाकरी, नाम मड़ें जुआ खेलना, घर लेना, व्याह करना, संतान, यात्रा, बालकोत्पत्ति, रोजगार, चित्त चिंता, उधार देना, शिकार, घर रहने, ग्राम चलने का परिचय, रोहाई देना, प्रहर्षी ग्रह, तीर्थ यात्रा, नवीगृह प्रवेश, चोरी करने तथा घोड़ा खरीदने के प्रश्न चक्र।

(२) पृ १६ से पृ० ४० तक—उपरोक्त चक्रों के फलाफल।

No. 535. Premabodha. Leaves—144. Dated in Samvat 1750 or A. D. 1693. Deposited with Paṇḍita Gopālaprasāda Upādhyāya of Sirasāganja, District Mainapuri, U. P.

Beginning :—

मन मनसा जब प्रेम को धारै। चंचल गति बहु सकल बिसारै॥
चित में प्रेम बसै जब आइ। तन मन की सब सुधि बिसराइ॥
प्रेम अगिनि जा घट महिं जागै। कुमादक सब ता तन ते भागै॥
प्रवाह प्रेम को जेहि घट बहै। ज्ञान फूंस तहँ नाहीं रहै॥
जोग बैराग सन्यास को। चंचल गति रखमाहि।
प्रेम धर्मनि के जरत ही। होय सबनि को दाह॥
प्रेम पवन जिहि घटहि बढ़ाई। अग्यान पान ज्यों सब उडि जाई॥
प्रेम भानु जेहि सरहि प्रकासे। अज्ञान तिमिर छिन माहि बिनासे॥
प्रेम प्रतीत जावै मन भावै। × × ×॥
जिसु तन प्रेम बसै है आइ। दुष सुष मन के गए हिराइ॥
प्रेम पिपासा जिन मुष पाय। सहज तिया गति सो मन नहि भाय॥

End :—

पोथी पूरन सत गुरु करी। दास दुवारे पूरी परी॥
पाच सहस चौपई यामैं। चोदस अधिक दोहरा तामैं॥
सोरठा भूलना बाहर नाहीं। ज्यौं पात फूल फल तरवर माहि॥
प्रेमबोध पोथी को नाम। पढ़त सुनत रहै सुष बिश्राम॥
प्रेम महोदधि पैठि कै, जो कोइ गोता लेइ।
हरि रतन अमोलक हाथ तिसु, सहजे सत गुरु देइ॥
पोथो पूरन भई। जो देखा सो लिषा॥
भूल चूक वकसि लेना। वाह गुरुजी॥ वाह गुरुजी॥

Subject :—(१) पृ० १..................नष्ट ॥
(२) पृ० २ से पृ० १२ तक—प्रेम का वर्णन, ग्रंथ प्रतिज्ञा ।
(३) „ १२ से „ २० तक—कबीर जी को परचो ।
(४) „ २० से „ ३० तक—धन्ने जी को परचो ।
(५) „ ३० से „ ३७ तक—त्रिलोचन जी को परचो ।
(६) „ ३७ से „ ५७ तक—परचो नामदेव जी को ।
(७) „ ५७ से „ ६७ तक—जैदेव जी को परचो ।
(८) „ ६८ से „ ८१ तक—रैदास जी को „
(९) „ ८२ से „ १०० तक—मीरा जी को „
(१०) „ १०० से „ ११५ तक—कर्माबाई की „
(११) „ ११५ से „ १५० तक—पीपे जी को „
(१२) „ १५० से „ १६२ तक—सेन जी को „
(१३) „ १६२ से „ १८३ तक—सधने जी को „
(१४) „ १८३ से „ १९७ तक—वाल्मीक जी को „
(१५) „ १९७ से „ २१७ तक—सुखदेव जी को „
(१६) „ २१७ से „ २३० तक—बधिक जी को „
(१७) „ २३० से „ २५० तक—ध्रुव जी को „
(१८) „ २५० से „ २८८ तक—प्रह्लाद जी को „

ग्रंथ निर्माण काल ।

संवत् सत्रह से पंचास । सुकुल एकादस मगसर मास
पोथी पूरन सत गुरु करी । दास दुयोर पूरी परी ॥
ग्रंथ के विवर्णित छन्दों की संख्या

No. 536. Prem-Prabodha Prem-Parachayī. Leaves—104. Dated in Samvat 1780 or A. D. 1723. Deposited with Ananda-Bhavana Pustakālaya, Visavā, District Sītāpur (Oudh).

Beginning:—दो० ॥ दो० नमो परमातमा पुरि रहो सब अंग । आदि मध्य पुनि अंत एकुता को जगत तरंग ॥ सोरठा ॥ प्रतिम प्रेम प्रेमायो पुरो त्रिकुटी जेन्ह रचो बहु विधि रचना थापी । पेले प्रेमी होय करि । ॥ चौ० ॥ प्रेम रूप धरि अग मंह पेले ॥ चारि प्रेम प्रेमी को मेले ॥ प्रेम बचन कछु कहन न आवे । उपजे प्रेम तब पीतम पावे ॥ प्रथम हिये को कय अकेला । कियो प्रगास प्रेम को बेला ॥ पुरुष प्रकोश्रो रुप धरि आयो भोतर सुत्र प्रेम का पायो ॥ प्रतिम प्रेमी पुरुष प्रकोशो । प्रेम तहां सुखतामह वेशो ॥ दो० ॥ पार ब्रह्म अपरंपरा आतम

धन धको गिरवान ॥ प्रतिम प्रेमी होईके बेठे परम निधानु ॥ मैं चाहीं लिषीं प्रेम को बाता । पातुभरी कागज गरिजाता ॥ प्रेम वचन कछु मनों उचारीं । तरको करेजा आदि पुकारीं । प्रेम की सुरति जबै मन पावै । तन मन सकल विसरि तब जावै ॥ प्रेम की बात कान जब परै । मन पाथर पोला जिमि गरै ॥ प्रेम उचर रसना जब आवै । गद् गद् होइ कछु कहन न आवै ॥

End :—द्विवो उठाय मांतु यहु आये । रोम कमन धघर फटिकाये । रोदन करत मुप बात न पावे । माता देपि बहुत दुप पावे ॥ कहे माता मुभ किने दुपाया । मुप सिर चूमि छाती लैयावा ॥ धुभले होइ कोरं कहहो प पाना । मंत्रेह को कहो सब वपाना ॥ सुनत वचन ते न वरिसा आयो । उठे की तेउ सब सुत को भायो ॥ दो० ॥ रेसुत कोई वासना तुम्हले यांई वहि ठैर । विना भगती भगवान को आदर होत न तोर ॥ वासना राजधर थाई उपजाना ॥ विन भगतो न पइहै ऊंच थाना ॥ तें भगती न करी हरि को चितलाई । नहीं तनमें होई हरि कोरत नाई । विन हरि भगती अब हो जा कोई । तौलु दुइ लोकन आदर होई ॥ जो मान महत्व बड़ोया चाहीं । तौ हरि चरना चित अपना लावीं ॥ माता उपदेश ध्रुव चित पाया । होई दिढ़ता वैराग जनावा ध्रुव कहत है मातु सो मैं हरि भगती करेऊं जो पदवी कोने न पाइया मैं पाहो को लेउं ॥ कही माता को ग्रह को त्यागा हरि की भगती को मनु अनुरागा । फिरत फिरत बाग महि आया । तहं सप्त रिषि को दरसन पावा । अपूर्ण (आगे पृष्ट नहो हैं)

Subject :—भगवान की प्रेम भक्ति उदाहरण स्वरूप ध्रुव की कथा । कबीर, रैदास, नामदेव, आदि की परचई ।

No. 537 (*a*). Putanāvidhāna. Leaves—5. Deposited with Paṇḍita Vasudeva Sahāya of Kamāsa, Post Office Mādhauganja, District Pratapagaḍha (Oudh)

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पुतना विधान लिख्यते ॥ प्रथम मास गर्भ रक्षा कमलं कुरइया तगर समभाग गृहीत्वा शीतल जलेन पिष्ठा पिवेत्

× × ×

जातानां प्रथम वर्षे लक्षण ॥ ग्रोवा पृष्ठि टेढ़ी होइ लार यावे गात्र में उद्वेग होइ आहार कै अनिष्ठा होइ ॥ धावनी ग्रहो नाम तस्य प्रतीकारः सद्यः वालकं गृहीत्वा मजीठ धवई का फुल लोध्र हरताल चन्दन जल सों वांटि के लेपन करव ततो मुंचित पूतना ॥ अथ द्वितीय रचि कै कास होइ । बहुत गात्र शोष होई भी पनो नाम ग्रहो ते के ग्रहते पते लक्षण होइ ॥ अथोपचारः ॥ चिचिरा उर्द पिपरामूर

चिरायता चारि चोज़ छेरी के दुध में पीसि के लेप करव पाछे ते दुध देइ बकरा के सींग रोम उरिद समेत तो सुंचित पूतना ॥

End :—॥ अथ एकादश वर्षकम् ॥

दक्षिणा नाम राक्षसी तेके ग्रहे ते एते लक्षण होई नेत्र रोग होई अनेक प्रकार के गात्र में उद्वेग होई निष्ठुर वचन बोलै कबहु कै देरै तस्य प्रतीकारः ॥

कोदइ लावा चवरा पुरी मासु उलेइ कैं मछरी कमल के फूल केसरि त्रि रात्रि बलि देव स्नान पंच गव्य पंच पल्लव धूप छग अंश रोम के तो सुंचति पूतना ॥

अथ द्वादश वर्षकम् ॥

वायसी नाम महाराक्षसी तेके ग्रेह ते एते लक्षण होइ ॥ मुष लाल होइ सर्व गात्र शिथिल होई मुष छुपाई ॥ तस्य प्रतीकारः ॥ रक्त माल्य गंध फूल के बलि देई अनुक्त मंत्री पूर्ववत न तो सुंचति पूतना ॥ इति श्री पूतना विधान बाल तंत्रे बाल चिकित्सा भाषा समाप्तः ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक—प्रथम मास गर्भ रक्षा, द्वितीय मास से दशवें मास तक गर्भ रक्षा का विधान। जातक के प्रथम वर्ष का लक्षण (प्रथम दश रात्रि तक, पुनः प्रथम मास से लेकर बारहवें मास तक)।

(२) पृ० ६ से पृ० ९ तक—प्रथम वर्ष से लेकर दशवें वर्ष तक पूतना से बालक की रक्षा का विधान ॥

No. 537 (*b*). Pūtanāvidhāna Sangraha. Leaves—8. Dated in Samvat 1942 or A. D. 1885. Deposited with Paṇḍita Rāmaprasāda Pānde of Ghurahā, Post Office Mādhoganj, District Pratapagaḍha (Oudh).

Beginning :— × × × नाम सो बालकु को आनि ग्रसै ताके लछन ॥ बार बार भुंभुआइ दाहिनो पांव कँपै बार बार दुध डारै रा तैा मुख होइ ॥ ताको विधि ॥ पीर मुर्गी ो मदिरा दक्षिण दिशा में डारि आवै तैा बालकु नीकैा होइ ॥ तीसरे मास को पोतना ॥ रुद्र नाम आन ग्रसै ताके लछन ॥ रोवै बहुत स्वांस चढ़ै रकत नेत्र होइ चिते कै हंसै ताको विधि ॥ उरद ढसोये सेंदुर चंदन मिठुरी मदरी बासन में धरै दछिन दिशा डार आवै तैा बालक नीको होय ॥

End :—नवई वर्ष भोग नाम पूतना आनि ग्रसै ताके लछन ॥ छुर छिरद होय रकत विकार हाथ पांव डारै औार पटके माथो पिराय नींद न आवै रात पेसाब होय नींद रात के होय ताको उपचार चाउर खिचरी दही रोटी कवा

को पंचो महरा बरा वरद के कौरा कारे वसन मे धरे सब वस्तं रात के चोपट तरे धर धावे तो बालक नीका होय ॥ इति पूतना बिचार संपूरन ॥ मिती कुवार बदी ३ रविवार संवत् १९४२ द० हरप्रसाद मोझे ब्रानो ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १६ तक—१ मास लेकर ९ वर्ष तक के बालक पर बाधायें करनेवाली पूतनाओं के लक्षण और उनसे सुरक्षित रखने के उपाय।

No. 538. Rādhānāma-Mādhurī. Leaves—4. Dated in Samvat 1873. Deposited with Rāmasvarūpa Śukla, Post Office Bisavā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning :—श्री राधा रमन जो सहाय ॥ थाय राधा नाम माधुरी लिष्यते । बृन्दावन रानी श्री राधा । मोहन मन मानी श्री राधा ॥ जय नित्य विहारनि श्री राधा । वृज सुष विस्तारनि श्री राधा ॥ कीरति की कन्या श्री राधा । सबही विधि धन्या श्री राधा । अथ रास विलासन श्री राधा । नित कुंज विहारनि श्री राधा ॥ हरि वन वनमाला श्री राधा । श्री दामा अनुजा श्री राधा । वृष दिन मनि तनुजा श्री राधा । रसिकन को स्वामिनि श्री राधा । करुनानिधे नामनि श्री राधा । बंसी वट वासिन श्री राधा । संगति प्रकासिन श्री राधा । गोपी सबौं मधि श्री राधा । जय स्याम सजीवन श्री राधा । आनंद रस पोषनि श्रीराधा । आनंद रसायनि श्री राधा । पीतम सुष दायनि श्री राधा ॥ अनुराग सुबेली श्री राधा ॥ सोभाग्य नवेली श्री राधा । सरसोरुह लोचन श्री राधा । हरि विरह विमोचन श्री राधा । बृन्दावन वासनि श्री राधा । श्री कृष्ण उपासनि श्री राधा । श्रंगार सुधानिधि श्री राधा । प्रेमावधि सब विधि श्री राधा । ललितादिक प्यारी श्री राधा ॥

End :—जग बंदन बंदित श्री राधा । निसि जाग रसाजित श्री राधा ॥ सुष सेज विराजति श्री राधा । वृज चंद चकोरी श्री राधा । वृषभान किसोरी श्री राधा । वृज मोहन मोहनि श्री राधा । अभिलाषन दोहनि श्री राधा । वृन्दावन सोभा श्री राधा ॥ कोका तरु गोमा श्री राधा । अति सुघर स्वरूपनि श्री राधा । माधुरी अनपनि श्री राधा । श्री कृष्ण कर्षन श्री राधा । आनंद घन वर्षनि श्री राधा । दिव्यांशु केशी श्री राधा । अति मंजुल केशी श्री राधा । अभिसार प्रवषा श्री राधा । अत्यंत प्रसंषा श्री राधा । कल केलि परावधि श्री राधा । रस रीति रही सुधि श्री राधा । इति श्री राधा नाम माधुरी संपूर्णम् संवत १८७३ वि० लिषतं मन्नलाल ब्राह्मण पाठनार्थं महारानी श्री लक्ष्मी जी ॥

Subject:—यह छोटी पुस्तक आदि, अंत, मध्य में सम्पूर्ण हो गई इसलिये इसकी व्याख्या नहीं की गई।

No. 539. Radha Svami. Leaves—41. Deposited with Umāśaṅkar Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning:—शब्द दूसरा—घट कपट दूर कर भाई ॥ टेक ॥ सच्चा भाव चरन में राखो प्रीत प्रतीत बढ़ाई ॥ १ ॥ मुंह के कहे काज नहिं होगा—जब लग मन में प्रेम न आई । वाचक सूर कहे अपने को रिन रन देखे न रत बढ़ाई ॥ ३ ॥ वैरी सनमुख होत कदाचित ऐसे भागे खोज न पाई । छाया तिमिर बुंद पर ऐसो अपनी गति को बूझ न लाई ॥ ५ ॥ जैसे मूसा बिल का सूरा बिल्ली का भय चिन्तन समाई बिल में बैठे बातें मारें बिल्ली को हम मार गिराई । बिल्ली बिल पर आन पुकारी । आओ सूरमा बड़े सिपाही ॥ ८ ॥ सुनकर म्याउं म्याउं घबराये इक इक भागे खबर न पाई । ऐसे ज्ञानी वाचक जगमें निज बैराग को करत बड़ाई ॥ १० ॥ मान हो न माया बूझे मन जानें हम त्याग कराई । धन वालों को ढूंढत डोलें काहू के उपदेश समाई ॥ जो संयोग बने कहीं ऐसा विषय पदारथ होता जाई । ते भोगें पूरे बन कहवें मन का धर्म सुनाई अथवा प्रारब्ध सिर डालें तरह २ की बात बनाई ।

End:—सुरत सम्वाद

प्रश्न १ ला—अब सुरत पूछे स्वामी से भेद कहो तुम अपना भोले बात तुम्हारा कौन लोक में यहां आये तुम कौन मौज में ॥ २ ॥ देश तुम्हारा कितनी दूर खोजे सुरत न पावे मूर ॥ ३ ॥ मैं बिछड़ी तुमसे कहो कैसे । देश पराये आई जैसे ॥ ४ ॥ मेरा हाल मिल कर गायो । देश आपना मोहि लिखायो ॥ ५ ॥ मन तन संग पड़ी मैं कबसे । दुख पाये बहुतक मैं जब से ॥ ६ ॥ क्यों भूली मैं देश तुम्हारा आप पड़ी परदेश निहारा ॥ ७ ॥ पाताल वसेलोकि मृत्यु लोक में स्वर्ग बसा कि ब्रह्म लोक में ॥ ८ ॥ विष्णु लोक वैकुंठ धाम में इन्द्र पुरी या शिव मुकाम में ॥ ९ ॥ कृष्ण लोक या राम लोक में । चार खान चर अचर शोक में ॥ १० ॥ क्यों मोहि डाला काल लोक में । अति भर मायाहर्ष सोगमें ॥ १२ ॥ अब क्यों आये मोहि चितावन रूप धरा तुम अति मन भावन । मैं दासी तुम चरन निहारे भेद देव तुम अपने सारे ।

उत्तर अंग पहिला—तब हंस शब्द स्वामी बोले हो सुरत तुम मैं कहु खोले जो तू पूछे भेद हमारा । कहुं सभी अब कर विस्तारा ।

Subject:—शब्द द्वितीय—शारीरिक कपट आदि दूर करके प्रेम करने का उपदेश । झूठी बातें बनानेवाले वैरागियों और सन्यासियों का अधः पतन । संसारिक लोग दुनियां के सभी कामों को तो आवश्यक समझते हैं परन्तु वे भक्ति मार्ग से विमुख रहते हैं ।

शब्द तृतीय—प्रेम के सन्मुख विद्या को गौणता। केवल पुस्तकों का ज्ञाता होने से ही अनुभव नहीं प्राप्त हो सकता। प्रेम ही से सब कुछ अनुभव होता है। विद्या के बलवानों का अभिमानी होना।

वचन पचीसवां। शब्द पहिला १—वेदान्त मत को असिद्ध करना और राधा के विश्वास पर दृढ़ता।

शब्द दूसरा—वेदान्त और ज्ञान आदि का भ्रम। सुरत शब्द में प्रेम।

शब्द तीसरा—जाग्रत सुषुप्ति और तुरीय अवस्था का दुख सुख।

वचन छब्बीसवां—प्रश्न १—सुरत और स्वामी का परस्पर वार्तालाप, एक दूसरे के अस्तित्व के सम्बंध में।

No. 540. Rājulapachisi. Leaves—16. Deposited with Paṇḍita Rāmasvarūpa Misra of Paṇḍitakā-Puravā, Village Baudhū, Post Office Sagarāmagaḍha, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—॥ अथ राजुल पचीसी लिष्यते ॥

प्रथमहि सुमिरौं आदीं राई। पुरि सारद मनाइ स्यौ जीवडे ॥ बंदौं अपने गुर के पाइ। राजमती जू के गुन गाइस्यौं जीव वे ॥ गाऊं मंगल राजुल पचीसी। नेमि जिन ब्याहन चले देषि पसुवनि दया उपजी छोड़ि सब वन को चले ॥ गिर-नारि गढ़ पट जाइ कै प्रभु जैन दच्छा धदरी ॥ राजुल तप कर जोरि विनवै बाप सैा विनती करी ॥ १ ॥ नावे वे मुझ गिर नारि पठाऊ। मैं मुष देषौ नाथ दा दीवडे ॥ वा वे वे मुझ गिर नारि पठाऊ। मैं वा वे वे मञ्जु हिऊँ माहा चावा ॥ अपने पीय के साथ दा जीव वे। हुवाऊं माहा साथ दा संसार सकाल असार है ॥ पिय पुत्र भाई बहिन यह सब मोह का जाल है। यह जानि असरन सरन सकल वा वे अहे गनीहय कथदा। छिन कर्म छिन जाइगा हुयाई माहा साथ दा। अबवे यह संसार असार तातें रहिय। मौन गहि जीवडे ॥ बाबे वेचहु गति दुःख अपार ॥२॥

End :—माइरी वह घर मेरा नाहिं ॥ काया घर मेरा संग दे जीव वे ॥ माइरी इन सब लोगन महि कोइन मेरा संग है जीव वे। कोइ न मेरा संग बा वे ॥ मेरो परिवार और है जीव वे ॥ छिमा माता पिता धीरज रत पिया सिर मौर है। भाई विवेक सुवहि कहन ना सुमति मेरि सहेलिरी ॥ संग मन मन कुटंबु रेता ॥ तुकेरा कहै जु अकेलीया ॥ माइरी लु चुकराऊ। अब मैली निह है सोह दो जीव वे ॥ बैठि नगर वन माहिं कै जिनहु पिय मोहिदी जीवडे ॥ संगरि षोडस कलइ करली द्वादस अंग अंग भूषन। अष्ट कर्म निल बैठी माला............ ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १६ तक—नेमिनाथ का विवाह के समय पशुओं पर दया करके विवाह का विचार छोड़कर बीच ही से चला जाना। उनकी मनोनीता स्त्री का उनपर मोहित होकर उन्हीं के पास जाकर तप करने की इच्छा प्रगट करना, पिता से संसार की असारता और मोक्षादि के विषय में समझा कर गिरिनार पर भेजने की प्रार्थना करना, पिता का विरोध, पुत्री का समर्थन, पिता का माता से आज्ञा लेने के विषय में प्रस्ताव, पुत्री का माता से विदा मांगना, माता का विरोध, पुत्री का अपने प्रस्ताव का समर्थन। शेष लुप्त।

No. 541. Rāmachandra-kī-Bārāmāsī. Leaves—9. Dated in Samvat 1928 or A. D. 1871. Deposited with Thākura Gayādīna Simha of Noharahasanapura, Post Office Rakhahā, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning :—श्री गनेसायनमः॥ श्री पोथी रामचन्द्र की बारह मासी लिष्यते॥

चैत हिरना लषो हरी नै चांप ले ठाड़े भये॥ तुम रहो लछन जानकी ढिग आपु मारन कैा चले॥ बन बीच हिरना फिरत भाजत रूप छिपि छिपि जात है॥ ताने सरासन बान रघुबर छलो छल करि जात है॥

दो० ॥ कहाँ मातु श्री जानकी, सुनु लछिमन बलवीर।
हिरना ने कछु छल कियो, दथ्यो प्रभु रन धीर॥ १॥
बैसाष बन बन फिरत लछिमन राम को षोजन चले॥

दसकंध मन मह ए बिचारि अब तो छल बल है भलो लैके उदासि लछन श्री राम कैा कहं पाइ हैं॥ बन बीच सुनी जानुकी मन कैान बिधि समुझाई हैं॥

दो० ॥ उतते आवत हरि मिले, लछिमन बन मैं लीन।
सुनी छाड़ी जानुकी, कहो तात कह कीन॥

End :—फागुन में सब जन फागु षेले लंक में षटमर परी॥ एक इन्द्रजीत बलवान आया राम सन मुष लो लरी॥ अट घोर लच्छन तोर तानैं बरनी सो बरनी मिले। मति मंद है दसकंध कैा सुत पे च सकी हानि दई॥ हनुमान अब सजीवन लाए तात को जीवन भयो॥ वह सक्ति सुरपुर कों सिघारी सीस ढूंढ़त भयो॥ भुज बीस बोल्यो गरजि कै मैं सबहि अब मैं मारि हैं॥ हनुमान अरु नल नील अंगद क्षार मैं करि डारिहैं॥ रघुबीर ने जब तीर तानो छोड़ि रावन पै दयो॥ श्री राम के परताप तै वह असुर सुरपुर को गयो॥

दो० ॥ असुर मारि सीता लई, भगतन कैा सुष दीन।
तुलसीदास ए कहत है, राज बिभीषन दीन॥

इति श्री बारह मासो संपूरन समाप्तम् शुभ मस्तु संवत् १९२८ मास भादौं सीता सुदी १२ ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १८ तक—रामचन्द्र जी के वनवास का हरण से रावण वध तक का द्वादश मास के संबंध से वर्णन ।

No. 542. Rāmagitā-kī-Tikā. Leaves—14. Deposited with Thākura Brajabhūshana Simha, Village Jhukavārā, Post Office Pariyavā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अध्यात्म रामायण । उत्तर कांड में शंकर जी के प्रश्न पर लिखो मैं उत्तर कांड में श्री लक्ष्मण जी के प्रश्न पर श्री राम जी ने आप दया करके रामगीता कही ॥ अथ श्री राम गीतायाँ टीका लिख्यते । अत् सीताजी के त्यागते उपरान्त श्री रघुत्तम मूल प्रथम श्लोक ।

ततो जगन्मंगलात्मना विधाय रामायन कीर्ति मुत्तमम् । चचार पूर्वा चरितं रघुत्तमो राजर्षि वर्य्यै रपि सेवितं जथा ॥ १ ॥ टीकार्थ । मुत्र है जो श्री राम तिन, अपनी मंगल मूर्ति करके रामायण नाम की कीर्ति कही प्रबस्य कैसा है उत्तम है काहेते जो शंकर जी और बालमीकादिक को कहत हैं तिसि कीर्ति को जगत में फैलाय करके दास भनि कीर्ति को पढ़त हैं सुनते ही अनायास मुक्ति हो जावगी फिरि भी अपने वंश में बड़े जे सगर दलीप रघु तिन करिकै चरित्र कहिये किये जो कर्म कैसे कर्म प्रजा पालन कथा श्रवण सध्या वंदन आदि गुरु भक्ति पूर्वक तिन कर्म को आप भी सावधान होकर कहत भये कैसे जैसे वेनिराज ऋषियों में श्रेष्ट हैं जिस भाँति तिन्होने जिस भाँति किये आप भी करते भये ।

End :—यों अब श्री रामचन्द्र जी गीता के पाठ का फल कहते हैं । हे लक्ष्मण यह जो विज्ञान है इसको जो कोई श्रद्धा करिके पाठ करै और गुरु जो पढ़ावन हार है तिस विषै पहिले भक्ति करै कि मुझ पर गुरु ने बड़ा अनुग्रह किया जो मैं राम गीतार्थ तत्व को जाना । यासों भावना गुरु भक्ति कही है तिसकर युक्त होकर पढ़ै यह मैं नियम है या पर श्रुतिः यस्य देवे पराभक्ति यथा देवे तथा गुरौ तस्यैति कथिताह्य र्थाः प्रकाशं ते महात्मकः इति श्रुति । × × × × इति श्री अध्यात्म रामायणे उमा महेश्वर संवादे उत्तर कांडे श्लोक टीकायाँ राम गीता नामो पंचमोऽध्यायः ॥

दो०:—भाषा टीका यह करि राम वाक्य अनुसार ।
ज्यों का त्यों ही वाक्य पढ़ि लिख्यों अर्थ सुविचार ॥
अति दुर्लभ है संस्कृत कैसे जानों जाय ।
याते भाषा कर दई टीका सुगम से पाय ॥

सुभ संवत् १९२४। वसंत रितु माघ मासे कृष्ण पक्षे तृतीया मंगल वासरे लिषतं × × × लिखो (भा) स्याम दास विष्णु प्रीति अर्थं ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० १७ तक—प्रस्तावना, वर्णाश्रम धर्म का वर्णन, तत्त्वज्ञानोत्पत्ति रीति, आत्म ज्ञान, कर्म भेद, कर्म विधान, माया निरूपण, समुच्चयवादी कथन, तत्वदर्शी का रहन, वाक्यार्थ निरूपण, स्थूल तथा सूक्ष्म शरीर का वर्णन और गुणात्मिका बुद्धि की अवस्थाओं का वर्णन।

(२) पृ० १७ से पृ० २८ तक—जगत त्याग का आदेश, अध्यास, ब्रह्म निरूपण, अविद्या-विनाश विधि, ब्रह्म की सर्व व्यापकता, उपराम विधि, समाधि से पूर्व की अवस्थाएं, विलायत का विधान, जीवन मुक्ति के लक्षण, राम गीता के पाठ का फल।

No. 543. Ramala. Leaves—16. Deposited with Paṇḍita Bhāgīrathīprasāda of Usakā, Post Office Kanḍhaura, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—पृष्ठ २ ॥

११३ ॥ यह सगुन अच्छा है कुटुंब वृद्धि मंगल होइगा ॥ प्रश्न ॥ अर्थ लाभ होयगा कोई संग होइगा मित्र मिलै पुत्र फल होइगा आज से महीना तीनि मे बहुत अच्छा होइगा अपने इष्ट और गुरु की पूजा करना मन का मनोरथ होइगा निसानी तुम्हारी स्त्री के पेट पर तिल है देषि लेना ॥

११४ ॥ यह सगुन अच्छा है कुछ बड़ा लाभ होइगा कुल देवता पूजा करी धन लाभ होइगा सत्रुन सो मिलाप होइगा जेहिते—तुम्हारो मिलाप बीच रहो सो मिलैगा धन लाभ होइगा चिंता मिटैगी निसानी तुम्हारे अंगपर तिलहै देषि लेना ॥

End:—पृष्ठ १६ ॥

४४१ ॥ यह सगुन धर्म सो सिद्धि होइगा पर यतन करना काम निरफल उचटि गया है धन की हानि बहुत भई है दूसरा काम विचारना नाहीं मैं अच्छा है निसानी तुम्हारे सिर का सुष नाहीं है।

४४२ ॥ यह सगुन का फल सुनौ कामना ही होयगी धन हानि होइगा ॥ पुत्र सों विरोध होइगा ॥ तुमको जीव का बड़ा जोषिम है ताते सवाधान रहना दूसरा काम करोगे तिससे भला होइगा सो विचार के काला ग्रह की पूजा करना तिसतें कलेस मिटैगा निसानी तेरी इन्द्री परतिल है देषि लेना।

४४३ ॥ यह सगुन काफल × × ×

Subject:—१,२,३, तथा ४ के चक्रों से बनो (११३ से ४४२ तक) संख्याओं के पासे द्वारा प्राप्त फलाफल का वर्णन।

No. 544. Ramala Prasna. Leaves—9. Deposited with Umaśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—श्री मते रामानुजाय नमः।

अनंतर संसार के कारन जानिवे के कारन रमल प्रश्न करो सो नारायन सिद्ध करै नीक व बिकार जानन जोग सुद्ध चित्त सो कै कहै पाति ४ बुंदन की करै द्वै को तरह देइ जा एकु रहै तेहि की कुंडली करै जा द्वै रहै ते। मंद करै पाइ करै येही तरह से चार पाति बूंदन की करै इन चरित्र से बनती नीरै तीन एक ठठ करै और सकल देखै यह सकल देखै पहिलो सकल ०।।। दूसरी सकल ।०.० तीसरी सकल ०।०। चउथी सकल ।।। पचइ सकल ००।० सकल छठि ०॥० सकल सतइ ।।।० सकल पठइ ।०॥ सकल नवइ ॥०। सकल दसइ ००॥ सकल ग्यरहा ॥०० सकल बारहो ०००। सकल तैरहो ०।०० सकल १४ ।००० सकल १५ ।००। सकल १६, ०००० सकल १७, ०।।। श्री भगुवानुवाच ॥ अनतर तेरे दिन नीक आये जा कछु तुम चहव सो सब भल होइ चउ जहां कउनौ काज के जाव सो सिद्धि होइ मन आनन्द होइ लूटि मिले नाही ते। कछु पदा पावै। पुत्र सुख देखै ॥ सबते सनेह अधिक होइ। अस्थान छुटै पहिले को जगह में दुख है अह छुटे सुख होइ ॥

End :—०।०० श्री भगवानुवाच जानुको नारान की कृपा है सर्व काज प्राप्ति होइ देव के धनके विदेस भला है मने कामनु सुफल होइ दुसमन जेर होइ सकल कामना सफल होइ। ००० श्री भगवानुवाच यह प्रश्न भलो है सर्व कारज तार भलाइ मा मिलि उठे। विदेस सुफल नीक सायति है अनंद होइ ।००। श्री भगवानुवाच यह प्रश्न सुभ है। नारायन अधिक ते उत्तम करै सकल कामना सुफल होइ सत्रु क्षय होइ ०००० श्री भगवानुवाच यह प्रश्न भलो है सब कारज सुफल होइ। जेहि विधि चाहसि सोइ होइ विदेस भला होइ ताप सहित घर आवे कन्या व पुत्र का सुफल होइ कुछ चहांस सो होय।

सकल १५—रोगी मिटै सुखु अनाश्रित होय। परमेश्वर की कृपा।

Subject :—शुभ नाम फल वर्णन।

No. 545(a). Ramalasāra Praśnāvalī. Leaves—8. Deposited with Late Paṇḍita Baijanātha, Village Śirakhorē, Post Office Gaḍavārā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रमलसार प्रश्नावली ॥ इसके देषने को यह रीति है कि एक पांसा काठ का बनाइले श्रोर उसमें संख्या के एक से लेकर चार तक अंक लिखे ॥१॥२॥३॥४॥ श्रोर पहिले प्रश्न पूछने वाला अपने मनमें विचार ले जिस मनोर्थ के लिये डाले तब तीन बार पांसे को फेंके अब उस्में जो अंक तीनि वार मे पड़े उन अंकों को क्रम से जोड़ ले जैसा प्रश्न का उत्तर आवे उसको समझ लेह ॥

१११—अहो पूछनहार पुरुष सकुन उत्तम है ॥ तुम्हारा कारज सिद्ध होयगा ॥ सब कामना सिद्धि होयगी श्रोर इस ग्राम में ही अर्थ पावेगा श्रोर तुमको व्योपार मे लाभ होयगी । यही चित मे चढ़ैगा परंतु श्री गुरुदेव की पूजा करना अवश्य कार्य होगा ॥

End :—३२३ ॥ उत्तम तुमको अर्थ लाभ सैाभाग्य मिलेगा श्रोर तुम्हारे वैरी का नाश होगा श्रोर धन धान्य की वृद्धि होयगी ॥ इष्ट मित्र से लाभ होगा श्रोर तुम्हारे दुष नाश होगा परन्तु तुम श्री सत्यनारायण की पूजन करना ॥ सकुन तुमको सामान्य है ॥ ३२४ ॥ उत्तम तुमको षेती में अर्थात् व्यापार मे वहुत लाभ होगी श्रोर मनो कामना पूर्ण होगी श्रोर धन सुष मिलना श्रोर तुमको मार्ग में भय होगा श्रोर चिन्ता दूर होगी परंतु हनुमान जी का पूजन करना शुभ है ॥

Subject :—१११ से ३२४ के अङ्कों का (पासों द्वारा) फल ।

No. 645(b). Ramalasāraprasnavāli. Leaves—24. Dated in Samvat 1936. Deposited with Paṇḍita Śivaratana Pande, Village Rāmanagara, Post Office Misarikha, District Sitāpur (Oudh).

Beginning :—अथ रमल सार लिष्यते । इस रमल सार प्रश्नावली के देखने की यह रीति है कि एक पांसा काठ का बनावे उसमें संख्या के एक से लेकर चार तक अंक लिखै १–२–३–४ प्रथम प्रश्न पूछने वाला अपने मनमें विचार लेवे जिस मनोरथ के लिये डारै तब तीनि बार पांसे को फेंके तब उसमें जो अंक तीन बार में परै उन अंकों को क्रम से जोड़ ले जैसा प्रश्न का उत्तर आवै उसको समझ ले ॥ इति ॥

१११ अहो पूछन हार पुरुष सकुन उत्तम है सो तुम्हारो कारज सिद्धि होइगो श्रोर इस ग्राम में ही अर्थ पावेगा ॥ श्रोर तुमको व्यापार में लाभ होयगा यही चित्त में चढ़ैगा परंतु श्री गुरु देव की पूजा करना अवश्य कार्य होगा ॥ ११२ ॥ मध्यम इस काम के करने में लाभ नहीं श्रोर चिंता बहुत होगी

मत करना औ सपने में असुभ देखै तौ ब्योपार में लाभ नहीं होय इस काम को छोड़ और कुछ करना ॥ ११३ ॥ उत्तम तुम को ठिकाना अच्छा मिलेगा और चिन्ता दूर होगी विघ्न मिटेगा सुख होगा और कल्याण मंगल होवगा और बड़ाई सुनोगे जा गवन करौ तौ सिद्ध होगा ये काम अवश्य करना चाहिये ।

End:—४३३ तुम्हारे मन में चिंता है सो काम मत करना तुमको दुख होगा औरका घर और पूजा करे तो नारायण की कृपा होगी सगुन मध्यम है ॥ ४३४ ॥ तुम्हारे शरीर में क्लेश है अथवा भाई बंधु से मन मिन रहते हो और जो मन में काम विचारा है सो होगा और सर्व कामना पूर्ण होगी सगुन उत्तम है ॥ ४४१ ॥ तुमको फल प्राप्त होगा और कोई उपाय करे डरे मत बड़ा लाभ होगा औ तुमने विचारा है सो मनोरथ सिद्धि होगा सगुन उत्तम है ॥ ४४२ ॥ उस काम के करने में तुमको सुख न मिलेगा और चिंता बहुत है और राय का डर है परंतु इसमें लाभ है देर से होगी श्री शिव जी के मंदिर में एक दीपक का प्रकाश सगुन शुभ को मध्यम है ॥ ४४३ यह काम अशुभ है और इसमें चिंता होगी काम बिगाड़ होगा सो जो तुम नवग्रह पूजा अथवा धर्म करौ तौ बड़ा कल्याण लाभ होगा ॥ यह सगुन मध्यम है ॥ ४४४ तुमको ब्योपार में लाभ होगा और मन में चिंता होगी अर्थात् बंद पावोगे कुछ दिन पीछे तुमको सुखदाई फल मिलेगा और सकल कामना सिद्धि होगी परन्तु श्री राम नाम की गोली बना कर जल में डाल अथवा जीवों को चुगावै तौ महा सुखदाई फल मिलेगा यह सगुन तुमको महा श्रेष्ट है ॥ इति श्री रमलसार प्रश्नावली संपूर्ण समाप्तः संवत १९३६ लिषतं बेनीराम तिवारी जेठ मासे कृष्ण पक्षे ११ दशौ ॥ श्री राम श्री राम श्री राम ॥

Subject :—शुभ अशुभ प्रश्न विचार ।

No. 546. Ramalasaguna. Leaves—8. Deposited with Paṇḍita Bhāgirathiprasāda of Usakā, Post Office Kandhaur, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रमल सगुन लिख्यते ॥ १११ ॥ यह सगुन से जीत होगा ॥ मन चीता है सो पावेगा ॥ सगुन में जोता है नवा बेपार होगा ॥ बेपार में लाभ होयगा तुम्हारे दिन अच्छा है मनको मनोरथ सुफल होयगा ॥ निसानी तेरी भुजा पर तिल है जान लेना ॥ ११२ ॥ यह सगुन मध्यम है दूसरा काम चेते हो यह काम सुगम नहीं है यह महीना तुमको पोनस मन जाता है ॥

End :—पृष्ट १६ ॥

३१४ ॥ यह सगुन से तेरा कल्यान होगा मंगल होगा धन लाभ होगा ॥ तथा अवर काम सब सिद्ध होगा मन में चिन्ता करना मनते उपकार है तेरा भला होगा निसानी तेरे वाहा के धन बड़ा है घर में तेरे सा देषि लेना ॥

३२१ ॥ यह सगुन से मन में चिंता है दिन मध्यम है यह काम सिद्धि नहीं होइगा जैसा तुम दुरो करना यह काम करोगे तो अजस होइगा घर में कलेस होइगा ॥ एक महीने तक चिंता होगा अवकास पोछे होगा ॥ कोई बात को उताइलो होगो ॥ परमान लाभ होगो निसानो कोई तेरे संतान नहीं है ॥

Subject:—पृ० १ से पृ० १६ तक १,२,३,४ अंकों से बनी संख्याओं के अनुसार फल-कथन।

No. 547. Ramala-Sākunvanti. Leaves—32. Deposited with Paṇḍita Chandrikāprasāda Bhatta of Sakarauli. Post Office Mohanagañja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रमल शकुनवन्ती लिख्यते ॥ १११—शकुन उत्तम है ॥ उछाह काम संतति लाभ होइ ॥ वांछित फल होइ ॥ चितव्य मनोरथ सिद्धि होइ ॥ चिंता मिटैगो ॥ धन सिद्धि होइ ॥ दान पुन्य करना ॥ शकुन अच्छा है ॥ फल उत्तम है ॥ महा लक्ष्मी को कृपा है ॥ पाठ करना ॥ तंदुल दान करना ॥ घर को पीड़ा आयगो ॥ सपना होत है ॥ पर मालुम परता नहीं ॥ हाथ मध्ये निशानो तिल को है ॥ इति श्री प्रथम ॥ शकुन संपूर्णः ॥ श्री रामायनमः ॥ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ११२—शकुन मध्यम है ॥ सत्य चलना ॥ अनेक कारज करता कष्ट होत है ॥ ए काम करता विघ्न होइ ॥ जोव का दुष उपजै ॥ तुमार दुशमन तुम पर ईरखा करता है। उसे वो काम नहीं होता ॥ ये काम करता दुष उपजे ॥ हृदय मधे बड़ी चिंता है ॥ शरीर मधे कोई गुप्त पीड़ा है ॥ संतान विरोध है ॥ पन ग्रह शान्ति करना ॥ शुभ होगा ॥ विश्वास रखनां ॥ देव वचन सत्य है ६ ६ ६ ६ ६ ६

End:—४४३ ॥ सगुन उत्तम है।

अर्जुनोवाच ॥ तेरे सरीर पीड़ मिटै ॥ घरमा मंगल काम होइ विरोध मिटै ॥ तेरो भाग्य उदय है ॥ सज्जन मोठे ॥ सुप होइ ॥ जो उदास होत है ॥ महावीर की पूजा करवाना ॥ उदासो मोटै ॥ कीर्ति मिष्टान्न मिठै ॥ तुमार सेर बढ़ै ॥ शरीर का वायु का उपद्रव ॥ सा मिटै ॥ सुषेतो लहै ॥ ४४४ ॥ शगुन उत्तम है।

धर्मराज वाच ॥ परमेश्वर को कृपा से कार्य सोधो ॥ धीरज रखना ॥ तुमार भाग्य उदय आगे बहुत है ॥ आप पराक्रम पासो होयगा ॥ तुमरे घरमा सब कुशल है ॥ गयो धन मोठै ॥ उदासो चिंता बहुत है ॥ गनपति पूजा करौ ॥ आनंद होइ ॥ पुत्र लाभ ॥ सज्जन मोठै ॥ तुमारि इंदी तिल है सा जानव ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० १८ तक—१११, ११२, ११३, ११४, १२१, १२२, १२३, १२४, १३१, १३२, १३३, १३४, १४१, १४२, १४३, १४४, संख्याओं के फल।

(२) पृ० १८ से पृ० ३३ तक—२१२, २१३, २१४, २२१, २२२, २२३, २२४, २३१, २३२, २३३, २३४, २४१, २४२, २४३, २४४ संख्याओं के फल।

(३) पृ० ३३ से पृ० ४८ तक—३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४ संख्याओं के फल।

(४) पृ० ४९ से पृ० ६४ तक—४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४ संख्याओं के फल।

No. 548. Ramalāsāraphālanāmā. Leaves—13. Deposited with Tārāchanda Munima, C/o Messrs. Mahādevaprasāda Murlīdhara, Sirasāganja, Mainapurī.

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ श्री रामचन्द्रायनमः ॥ रमल सार फाल नामा शहनशाह फरांस ने नैपोलियन बोनापार्ट ने अ चनामवर अजीम उलसान बहादुर ने फिरंच जबान में निहायत मेहनत से तैयार किया इसके बगैर यह कोई काम न करता था ॥ हमने इसका तर्जुमा हिन्दी जबान में किया इसमें अपने प्रश्न का सच्चा जवाब मिलता है ॥ सवाल से जवाब निकालने का कायदा ॥ इसमें कुल मतलब देने वाले सोलह सवाल हैं वह नीचे लिखे जायंगे इनमें से कोई सवाल करे तो ईश्वर की तरफ ध्यान करके मन में राम नाम कहता हुआ चार सतरों में बिन्दियां अनगिनती देता जाय मगर गिने नहीं × × × × × × ×

End:—अबा बात तो (ट)

दोस्तों में खुशी के साथ दिन गुजरेंगे।
आज का दिन अच्छा नहीं है॥
बाज या फत व कोनो नहीं।
इस औरत के एक लड़का होगा॥
औहदेदार साहब दौलत मिलेगा।
इस शख्स के साथ ब्याह करने से बेशक तुम्हारी आदमानी का जमाना आयेगा।
इस शख्स को तुमसे मोहब्बत तो बहुत है मगर छुपाता है।
बे अंदेशा सफर करो।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक—मूल ग्रंथ के निर्माण तथा उसके अनुवाद का संक्षिप्त परिचय। सवाल से जवाब निकालने का क़ायदा, मनहूस तारीख़ों की सूची, सोलह प्रश्न तथा उनके जवाबों का नक़्शा।

(२) पृ० ७ से पृ० २५ तक—अलिफ़ (الف) की तख़्ती से लेकर ये (ی) की तख़्ती तक जवाबात।

No. 549. Rambhāsuka Samvāda. Leaves—22. Deposited with Umaśankara Dube, Research Agent. Hardoi.

Beginning :—तीर्थ तीर्थ विषे निर्मल चित्त वृन्द ब्राह्मण लोग रहते हैं तिनके समूह में वेदान्त की चर्चा होती है, तिस वाद विवाद में ब्रह्म बोध होता है और उस बोध में ईश्वर का साक्षात हो जाता है ॥ ३ ॥ रम्भा कहने लगी कि हे मुनिराज ! घर २ में चलने वाली हेमलता स्वर्ण के समान सुन्दरी स्त्री फिरती है तिसके मुख पूर्ण चन्द्रमा के समान हैं तहाँ मुखरूप चन्द्रमा पर दो नेत्र मछलियों की तरह जो दीखते हैं तिन पर कामदेव का प्रचार होता है ॥ ४ ॥ शुकदेव जी कहते भये कि हे रम्भा तूने तुच्छ स्त्रियों की क्या बड़ाई करी। देखो जगह २ मुनियों के बैठने की भूमि है तहाँ वेदी २ के ऊपर सिद्ध और गन्धर्व लोगों की सभा होती है वहाँ सभा २ में किन्नर किन्नरियों का गायन होता है और गीत २ में रामचन्द्र के गुण गण गाये जाते हैं ॥ ५ ॥ रम्भा कहती भयी कि हे ऋषिवर ! जिस स्त्री के स्तन बड़े कठोर हैं जिसके देह में चन्दन लगाया हुआ है। चलायमान आँखों वाली जवान सुन्दर सुभाव वाली ऐसी नारी जिसने प्रेम से आलिंगन नहीं करी उस नर का जीना व्यर्थ हुआ।

End :—शुक मुनि कहने लगे कि हे रम्भा अपवित्र देह वाली पतित स्वभाव वाली देह से प्रगल्भा वाली वञ्चकर लोभ सहित सुभाव वाली झूठ बोलती हुई ऐसी नारी का भोग जिस मनुष्य ने किया उसका जीवन व्यर्थ है। रम्भा बोली हे मुनी पतला और त्रिवली युक्त पेट वाली हंस सरीखे चाल वाली मद से भरी भई सुन्दरता व सौभाग्य से युक्त अधिक चञ्चल ऐसी मनोहर स्त्री जिसने इच्छापूर्वक रमणसमय में नहीं भोगी है उस मनुष्य का जीवना व्यर्थ है ॥ ३६ ॥ शुकदेव मुनि कहते भये हे रम्भे संसार में सद्भाव और ईश्वर की भक्ति से रहित चित्त को चुराने वाली हृदय में दया नहीं रखने वाली ऐसी पापिनी का भोग जिसने योगाभ्यास छोड़के आलिंगन करी उस नर का जीवन व्यर्थ गया। रम्भा कहने लगी कि जिस मनुष्य में पुरुषपना नहीं है तो बहुत अच्छी सेज बनाई तो क्या सुन्दर स्त्री है तो क्या वसन्त ऋतु है क्या भया पूर्णमासी रात्रि विषे चन्द्रमा खिल रहा है तो क्या भया अर्थात् जिसने स्त्री संग नहीं किया

उसका पुरुषार्थ व ऐश्वर्य वृथा है। शुक मुनि कहने लगे कि हे रम्भे जो विष्णु भगवान के चरणों में मन नहीं लगा तो सुरूप शरीर, यौवन, वाली स्त्री, सुमेरु समान धन होने से क्या भया।

Subject:—(१) शुक मुनि द्वारा अपने पक्ष की पुष्टि में तीर्थों की महिमा, वेदान्त की चर्चा और ईश्वर के साक्षात्कार आदि का कथन।

(२) रम्भा का स्त्रियों की उपमा हेमलता और चन्द्रमा, मछली इत्यादि से देकर उनकी शोभा वर्णन करना।

(३) शुकमुनि द्वारा स्थान २ पर रामचन्द्र की भक्ति की महिमा दिखलाना।

(४) रम्भा का यह कथन कि जिसने सब प्रकार सुन्दर स्त्रियों का उपभोग नहीं किया उसका जीवन व्यर्थ व्यतीत हुआ।

(५) शुक मुनि का पुनः ईश्वर के ध्यान को ही जीवन की सार्थकता सिद्ध करना।

(६) रम्भा का पुनः विषयोपभोग की महत्ता सिद्ध करना।

(७) शुकदेव जी द्वारा श्री कृष्ण भगवान का ध्यान ही सच्चा आनन्द बतलाया जाना।

(८) रम्भा का पुनः अपना पक्ष समर्थन।

(९) श्रीकृष्ण की भक्ति पर शुकदेव जी की अटल निष्ठा और यह दिखलाना कि विषय सुख क्षणिक और नाशवान हैं।

No. 550. Rasanirūpaṇa. Leaves—21. Deposited with Paṇḍita Sripati Lālaji Dube, Village Bamaraulikatāra, Post Office Khāsa, District Agra.

Beginning:—श्री राम। प्रथम रस रूपी ईश्वर है तिनको प्रणाम करना। वेद रस रूपी भगवान को कहत हैं। भगवान सब रस के कारन हैं॥ भगवान सबे रस के कारण हैं। काहे तें कि सर्व भूत प्रानी के अंतः करन में बैठके सब जीवन के मन को हृयुग्म मव अष्ट दल कमल पर फेरत हैं। अब जैसे जैसे दलन पेर मन जात है तब तैसो अभिलाष याहि उपजत है। पुन सो अभिलाष जब स्थिरो भूत होत है तब याहि स्थायी भाव कहत हैं। पुनि सोई स्थायी भाव जब इन्द्रियन द्वार ह्वै के बाहर प्रगट होय कै अपने कर्मन को करतु है तब याहि रस कहतु है॥ अर्थात् सर्व रस के कारन ईश्वर हैं। इति वस्तु निर्देशो पुरुष निर्देशः॥

End:—नायिका नायक के निकट आवे तब उत्तम प्रकार से बैठै ताहि स्थिति कला कहिये। सो स्थिति कला दोय प्रकार की कहिये॥ छवि स्थिति

१ रस स्थिति २ छवि स्थिति ल० । नायक के सन्मुख विनय पूर्वक बैठे ताहि छवि स्थति कहिये । रस स्थिति ल० ॥ नायक के वाम भाग विषय अपने हाथ तें नायक को हाथ पकर कै अथवा अपनी भुजा को नायक के स्कंध विषय रष कै बैठि ताहि रस स्थिति कहिय ॥ २ ॥ अथ घूंघट कला ल० नायक के सन्मुष जब आवै तब प्रथम घूंघट युक्त अधो मुषी हायकै बैठि ताहि घूघट कला कहिये ॥ ३ ॥ घूंघट उद्घाटन कला ल० ॥ जब अपने मुष के देषवे की रुचि नायक को जानै तब शनैः शनैः मुष को उघारै प्रथम नेत्र उघारै पुनः आधो वदन उघारै या प्रकार ताहि घूंघट उद्घाटन कला कहिय ॥ ४ ॥ लज्जाकला ल० जब मुष उघारै तब लज्जा युक्त नीची दृष्टि रषै ऊंची दृष्टि न करै ताहि लज्जा कला कहिय ॥ ५ ॥

Subject :—पृ० १ से पृ० १० तक—वस्तु निर्देष, पुरुष निर्देश, प्रकृति निर्देष, रस निर्देश, रस सामग्री, आलम्बन, अनुसंचारी या व्यभिचारी भाव, भावों का वर्णन, सात्विक भाव, भाव निर्देश, भावाभास, रस भेद वर्णन।

(२) पृ० ११ से २४ तक—शृंगार रस वर्णन, शृंगार रस की प्रशंसा—(प्रथम तथा द्वितीय प्रकरण) नायिका भेद वर्णन, विषयालम्बन, विषयालम्बन के अधिकारी तथा अधिकारियों के भेद, नायक तथा नायिका भेद, नायक के गुण तथा गुणादि के भेद, नायक के ४८ भेदों का वर्णन, पुनः उनके तीन तीन भेद, प्रत्येक के दस-दस भेद करके १४४० भेदों का वर्णन।

(३) पृ० २४ से ४२ तक नायिका के गुण, नायिका के भेद (२४०० भेद), उद्दीपन विभाव, उद्दीपन के भेदों के भेद, मनोविकार लक्षण, अंग गुणादि वर्णन। वयः संधिनी नायिका वर्णन, नायिका के अन्य भेद, नायिकाओं की कलाएं और उनके भेद आदि ॥

No. 551. Ravikathā. Leaves—39. Deposited with Paṇḍita Rāmasvarūpa of Paṇḍita-kā-Purava, Post Office Sagarāmagaḍha, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—अथ रवि कथा लिष्यते।

रिसह नाह विनऊं जिनंद। जा प्रसाद चितु होइ अनंद॥
विनऊं अजित विनासै पापु। दुष दालिद्द हरै संतापु॥
संभव नाथ तनी थुति करौ। जा-प्रसाद बहु पुरवरि तरौ॥
अभि नंद तुम सेवहु वर वीर। जा प्रसाद आरोग्य सरीर॥
सुमति देव जिन पदम सुपास। बहु विधि नयन करौ प्रविलास॥
चंदा प्रभु जो विनऊं तोहि। हरै कलंक देहि जसु मोहि॥
पुहुप दंत सीतल सेवा करौ। पुनि श्री आंस स्वामी मन धरौ॥

End :—

इहि रवि कथा को बहु छेव । लायो समा को जिन वर देव ॥
जिहि भविजन कौकुरौ योद भाऊं । करि सिधि सिव पुरी को राउ ॥
मोह इमाल जिहि वस कोयो । राग द्वेष तजि संजम लीयो ॥
प्रक्षर प्रमत्त निर्मल होइ रह्यो । सोनत देव गोटि कूं त्यो ॥
वर दिन हूंडो रच्यौ पुरानु । थोड़ो बुधि मैं कियो बखानु ॥
प्रधिक हीन जो प्रक्षत होइ । बहुरि संवारौ मुनिवर होय ॥

× × × ×

× × × ×

वामानं दनि पार्श्व जिनि, निस दिन सुमिरौ सोइ
इन्दु तनै सुख भोगि कैं, पावै मोक्ष सु होइ ॥

इति रवि कथा समाप्ता शुभं भवतु मंगलं ददातु ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १० तक—मंगलाचरण, ग्रंथ निर्माण प्रतिज्ञा, कथा प्रारंभ, बनारस के राजा श्रीपाल का वर्णन, उसके राज्य में रहनेवाले कोटिध्वज का वर्णन, कोटिध्वज का ऐश्वर्य तथा दान इत्यादि का वर्णन, उनकी स्त्री को सात पुत्र होने का वर्णन तथा उनके पुत्र रवि की कथा। सबसे छोटे पुत्र गुनधर की महत्ता, कथा श्रवण फल।

(२) पृ० १० से पृ० ३५ तक—कथा की निंदा करने वालों के कुफल, मुनीश्वरों का आगमन तथा धर्म फल वर्णन। मतिसागर की गुनसुंदरी को मुनि का रवि व्रत का उपदेश, रवि व्रत का फल, अपने घर आकर परियों को बुलाकर व्रत की महत्ता सुनाना और उनकी बुराई करना, गुनसुंदरी का दुःखित होना मतिसागर की लक्ष्मी का विनाश, गुनधर का पिता को समझाना, अपने पेट भरने के लिये बाहर जाने का कथन, ताग ग्रहण, सप्त व्यसन वर्णन, अन्य शिक्षायें गुणधर का अयोध्या पहुंचना, वहां के सेठ बलभद्र से भेंट, सेठ का गुणधर को भंडारी नियुक्त करना, वाणिज्यार्थ उसे धन देना।

(३) पृ० ३६ से पृ० ४० तक—मतिसागर का दुखित होकर पारियान्या मुनि के पास आना और अपने भविष्यके संबंध में पूछना, मुनि का दुख दूर होने और पुत्र का पुनः लाभ सहित लौटने का कथन। पारसनाथजिनेन्द्र के सेवन की आज्ञा, आज्ञा पालन पर उसको अतुल धन होना।

(४) पृ० ४० से पृ० ७८ तक—गुणधर का भूखा होना, अपार संपत्ति की प्राप्ति होना, भिन्न २ प्रकार के दुखों में फंसना, राजा की प्रसन्नता और उसके

साथ राजकुमारी का पाणिग्रहण, बहुत दहेज मिलना, कुछ दिन बाद अपने कुटुम्ब से मिलने की इच्छा प्रगट करना, पार्श्वनाथ की पूजा का फल, कवि परिचय ।

> अग्रवारै पै कोयो बखानु । जननी नगर पैाहि नगर ठांव ।
> गगह गैात्तु मन्न् कैा पूतु । माउ भगति कर घत संजुक्त ॥
> जबहि यह करम सच्यो करन मति भई । तब यह धर्म कथा निर्मेर ॥

No. 552. Saguna Navsudisa-ko. Leaves—11. Deposited with Paṇḍita Śāligrāma Dikshita of Jāmū, Post Office Saṇḍilā, District Hardoi.

Beginning :—रवि उत्तर दशा फलं ॥दो०॥ रवि ग्रह में प्रहन को कहो जो हुतो सुभाउ पंडित पंडित हो इनहि जो समुझि के पेतु बनाउ ॥ चो० ॥ आइब सोमवार का बोहै ॥ जो सुभ माघा पेतहि आेठे कोई नाति न कारजु करै ॥ यो कोउ सो निर्मूल परै ॥ ब्याहन गये जो दैजो पावै ॥ मूठो लावनु हाथहि आवै ॥ का दुलहिनि वै सगरी कहिवो ॥ प्रेतु पाइकै चुप किन रहिवो । जो पै ब्याहे आवत होई ॥ दुलहिन संभ बांझ कहि बोई ॥ पेन सगुन गैान कह करै ॥ एक जनो लंघन कै परै ॥ कै पेंडा भूलेगो कोर ॥ आइमिले कै विछुरनु होई ॥ पैंडे पूछे सगुन अपार ॥ कहिवो कोऊ काहिकै उपकार गये ते पालो परै सिकार । जो पावै तो लोथरि सिवार ॥ चलु रगु विगरै साई ॥ तिय पशु पखिसु बधे मरै कोइ ॥ आगो लगी एकै घस जरैं बादल होइ की बूंदो परै ॥ दो० ॥ अपने ग्रह शशिवार को कहो पहे निबंधु ॥ सुगम समुझि जो नाचले सो जग में अंधु ॥ चो० ॥ सोमवार घर पावै बुध ॥ सुभ माघा है कछु कवि ध्वद्व ॥ छत्री बाम्हन को काजु न होई ॥ जो पै करै अलप कहि बोई ॥

चो०—नान्हे सुरिक काज नहि करही ॥ बहुतु न होइ न पालो परही ॥ रगु चाहु अबल कुगर रातैा । मछरो मांस गाठ अबहो तो ॥ पावै नायहि नान्हो कोइ ॥ कै सिकार नान्हे को होइ ॥ जो बिगरै ते नान्हो मरै । पानो पवन घास फुनि बरै ॥

End :—दो०—सैारे बिगरै जानि यह काजु प्रकासहि केतु । केतु काजु कोना कहो क्षत्री द्विजु को होय ॥ चो०—किस हुये तजो होइ फेकार ॥ असुभ मे सुभ सुभ मे वेकार ॥ हाकिम चढ़ै गाउ भाजो चहै ॥ ऐसे सगुन फेरि कै रहै । बोसि लहै जो कहउ चलावै ॥ ऐसे सगुन जिये फिरि आवै ॥ जूझसि कारकैा बोरन के रंग । के स्याम सुभ हेतु शनि के रंग ॥ शनि घर रवि अचल कै बखानै ॥ शनि घर सोमु आगे ते जानै ॥ लोला हरो चाहु पो अबरसु । पो तह चढ़ु

हावो रुक है पसु ॥ शनि के घर में मंगल आवे। कारो कुम इतु चोर बोलावें। शनि घर बुधुनो लोपै हारो। सुत्पा पक्कर सुमठि हापरो ॥ पोडु बोड लो लो फुनि कहे सिकार गये सूकर को महे। जो शनिवर बोहके आवे। ते पै प्रबल गुरेगु बतावे। केतु चकास सुमाषा होई। सभी द्विजु करै काज्ञु न होई ॥ सूद तुरिकु को कारज भलो। गाड मनि पाल आवै चलो ॥ नान्हो मूठ धरे कछु पावे ॥ सूद तुरकि पहुनोइ मिलावै ॥ करतु परै ऊपर फक फको। जूझहि रुद लराइ होइ–मेढा मास मास कहि वोई। कै लोह रुपिये के पैसा। कै कछु आग सगुन है पैसा। बिगरे चोर केत को धाम। क्षत्रिय ब्राह्मन करै न काम। उहद बहु करार मजराहो ॥ लखि करि पानि तहा ठहराहो। बिगरै सुधरै हु है कुछ आगे सब फकार कै सुचु। इति सगुन नवो दिशा को समाप्त—

Subject:—रवि-उतर दिशा के फल का वर्णन करते हुए सोमवार के दिवस का शकुन कहता है कि इस समय में कोई जाति शुभ कार्य न करे, व्याहादि कार्य न करे क्योंकि ये उस समय निर्मूल हो जाते हैं। सोमवार को घर में बृहस्पति के आने पर भी कोई शुभ काम ब्राह्मण या क्षत्रिय को न करना चाहिये। सोमवार के घर बुध के जाने पर सब कार्य करना चाहिये। इसमें कार्य की सिद्धि होती है।

पूर्व राहु के घर बृहस्पति के जाने पर जिस कार्य का विचार किया जावे वह पूरा होता है। परन्तु राहु के घर शुक्र के जाने पर केवल क्षत्री और ब्राह्मण आदि के कार्य सिद्ध होते हैं। ईशान दिशा—राहु के घर शनि के जाने पर क्षत्रिय ब्राह्मण आदि का कार्य नहीं सिद्ध होता तुरकों आदि नीच जातिये का कार्य बनता है।

जब चन्द्रमा शनि के गृह में आवे उस समय सब जातियों को अपना २ कार्य करना चाहिये; पुत्रोत्पत्ति, कहीं से शुभदायक समाचार आना ये सब बातें इस काल में प्राप्त होती है।

आग्नेय—शुक्र के घर आग्नेय—विचार इस काल में ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य ये कार्य न करें परन्तु शूद्र और तुर्क आदि जातियां अपने अपने धर्म का अनुसरण करें।

दक्षिण—बृहस्पति, बुध और भोम की एकता में किसी को शुभ कार्य न करना चाहिये। इसमें घर की सम्पत्ति नष्ट होती है। गोत्र और समाज में झगड़ा होना, बुरे ग्राम में आगमन इत्यादि बातें संभव होती हैं॥

नैऋत्य—बुध के घर मंगल के जाने पर चोरों को अपने कार्य में सिद्धि प्राप्ति होती है।

पश्चिम—भौम के घर चन्द्रमा के आने पर शूद्र आदि निम्नजातियों को सफलता होती है।

वायव्य—सोमवार के घर सूर्य के आने पर कोई अच्छा शब्द सुनने में आता है। ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य आदिकों के घर पाहुने आते हैं।

No. 553. Sagunauti. Leaves—5. Deposited with Paṇḍita Vindheśvariprasāda Miśra, Teacher, Sanskṛita-Pāthaśālā, Village Gauḍā, Post Office Madhoganja, District Pratapagaḍha (Oudh).

Beginning:—अथ सगुनाटी लिख्यते ॥

॥१११॥ यह सगुन अच्छा है जो काम चाहोगे सो पावोगे झगरा मिटैगा व्यापार में लाभ होयगा ॥ तेरा दिन अब अच्छा आवैगा मनोरथ सुफल होगा निस्सन्देह तेरे दाहिने भुजा पर तिल है सो देखि लेना ॥

॥११२॥ यह सगुन मध्यम है दुस्मन तुमको लखै है चित्त में को काम नहीं होगा उग्रहो दिन तुमार समाचीन है फूल छै देवी का पुजा करो चिंता चित्त की मिटैगी तुम्हारी को झूठ बालती है सो विचारि लेना ॥

॥११३॥ यह सगुन का फल सुनो स्थान लाभ होगा चिन्ता चित्त की मिटैगी पुत्र प सुफल होगो दिन तुमारे बुरा रहा है सो गये अब तेरा अच्छा है तुम विश्वास मानो तेरे दाहिने यङ्ग पर तिल हैं सो देख लेना ॥

End:—

॥४४१॥ यह सगुन से भाई को चिन्ता है मद्धिम है दिन अच्छा है धीरज रखना ॥

॥४४२॥ यह सगुन बेकार है धन हानि होगी भय होगा काम विचारि के करना तुमे सुख नहीं है सोच है सो विचारि लेना ॥

॥४४३॥ यह सगुन अच्छा है सोच मिटैगी धन प्राप्ति होगी पुत्र लाभ होगा। तेरो छाती पर तिल है देखि लेना ॥

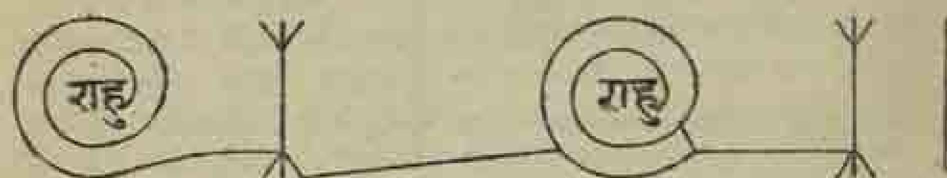
॥४४४॥ येह सगुन से काम नहीं होगा आपुस में विरोध होगा तेरे जी में चिन्ता है दूसरा काम करो तो बड़ो सुखी होगो तेरी इन्द्री पर तिल है सो विचारि लेना ॥

॥ इति सगुनौटी संपूर्णम् ॥

Subject:—(१) पृ० १ से लेकर १० तक—१११ आदि १, २, ३, ४, के अंकों से बनी हुई तीन अंकों वाली संख्याओं के अनुसार सगुनों के फलों का वर्णन।

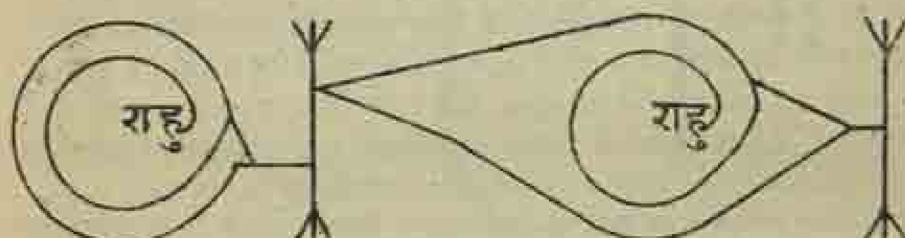
No. 554. Sagunavati. Leaves—26. Deposited with Paṇḍita Bhagavanādatta of Benipura, Post Office Maḍhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—अथ भाषा सोसो कर यंत्र



भाषा सोसो कर जंत्र ॥ ● ॥



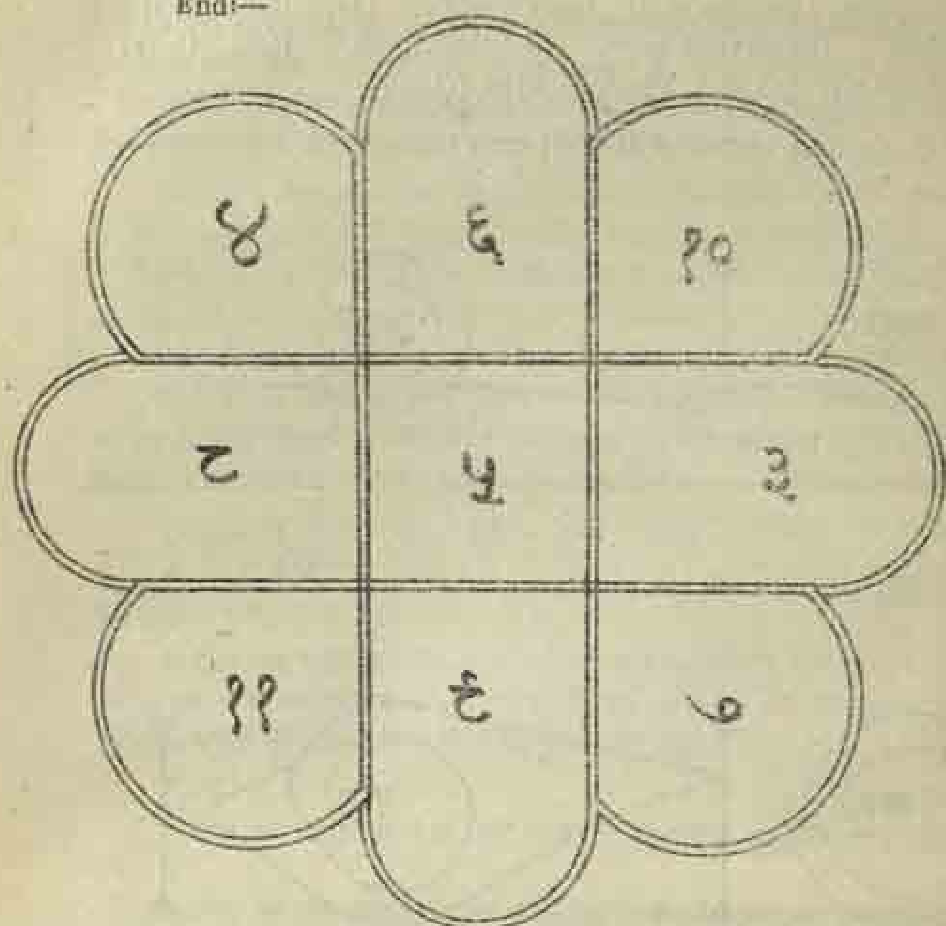


१	८	४	५
१	८	७	१२
८	१०	३	६
७	१२	१३	६

राहो को पेदो जंत्र लिखिवं
लिपि कै दिपावै गर्भ पंडित होइ

....

End:—



चारि ४ दश १० कोइ आगम पावै ॥ = ॥
आठ ८ पाँच ५ फल सांचे पावै ॥ = ॥
तीन ३ ग्यारह ११ भुजै राज ॥ = ॥
नौ ९ छा ६ सतरह १७ होइ अकाज ॥ = ॥
इति सगुन वता सिद्धिः ॥ = ॥ ॥ =

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक शुरु ।

(२) पृ० ७ से पृ० २० तक—गर्भ मोक्ष, बीसा यंत्र, आधा बीसा का यंत्र, गर्भ स्तंभन, इन्द्रियदृढ़ करण, झगड़े में जीतने, मूठ रोग नाश, वशीकरण तथा संग्राम विजय करने के यंत्र ।

(३) पृ० २१ से पृ० ३० तक—लुप्त।

(४) पृ० ३१ से पृ० ४३ तक—आकर्षण, लक्ष्मी लाभ, सर्व कार्य सिद्धि, राजा वशीकरण, राज सम्मान, वशीकरण, चौसा मंत्र, पुत्र होने, बंध्या प्रसव करण, काक प्रश्न, सर्व सिद्धि ज्वर नाश, पाप मोचन। अन्तरा करण तथा दसों के अन्य दो मन्त्र।

(५) पृ० ४३ से पृ० ५२ तक—बंदी मोक्ष, तिजारी, प्रजा मोहन कामिनी वशीकरण, जुआ जीतने, शत्रु नाशन, भूत-प्रेत विनाशन, संग्राम में गरुड़ वेग प्राप्त करने, राजद्वारा सम्पूर्ण वशीकरण, सर्वकार्य सिद्ध करने, मृगी रोग नाशन, सर्वकार्य सिद्ध करने, तिजारी दूर करने, सगुनवती तथा सगुनवती सिद्धि यन्त्र।

No. 555. Śakuna-Kuśaguna Parikshā. Leaves—4. Deposited with Paṇḍita Gunnā Village Bahurājapura, Post Office Puravā, District Unnāva (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ अथ शकुन कुशकुन परीक्षा लिख्यते जो मनुष्य अपने घर से किसी कार्य को चले। उसको मार्ग में पानी से भरा हुआ वर्तन मिले अथवा निरधुंय अथवा धुंआ से रहित अग्नी मिले अथवा मछली की डलिया लिये आगे से लिये आता हो अथवा कोई रोटी लिये आगे से आता हो वा दूध आगे से लिये आता हो अथवा दही से मटकी भरी वा और किसी वर्तन से भरा दही लिये आता हो ये शगुन शुभ हैं। जिस काम को जाता होय वह अवश्य सिद्धि होय॥ और किंतु रोगी के निवृत्यार्थ दूत वैद्य को बुलाने जावै तो ये शगुन मध्य हैं और येही शगुन जो वैद्य को मिलैं तो शुभ हैं रोगी अच्छा होय॥ जो मनुष्य किसी कार्य को घर से निकले मार्ग में कन्या अथवा सर्व श्रृंगार से भूषित पतिव्रता स्त्री मिले वा ब्राह्मण स्नान किए हुए मिले वा किसी राजा का दर्शन मिले वा गुरु मिले वा पान आगे से भरा लाता होय वा अन्न भरा आता होय तो ये शगुन शुभ है सिद्धि के दाता हैं कार्य वेग सिद्धि होय॥

End:—जो चिड़िया हरे पेड़ से उड़ के घरती पर आय के अथवा किसी खेत में भायक दाना चुगे अथवा कृमि चुगने लगे अथवा धरती में अथवा पेड़ वा पत्थर में चोंच घिसने लगे अथवा अच्छे प्रकार बैठी होय आनंदित होय उत्तर पूर्व वा पश्चिम को मुह किये बैठी होय और हरे वृक्ष पर अथवा फूले हुए वृक्ष पर बैठी होय और दाहिनी ओर मिले अथवा हरे पेड़ पर से उड़के दूसरे फूले हुए पेड़ पर आ बैठे। और पत्ती फूलादि खाने लगे तो यह शगुन अच्छे हैं मन के चीते कार्य सिद्धि होय हैं॥ और जो बटोही घर से चले और जंगल में पहुंचे और महारी का जोड़ा लड़ता मिले अथवा बेरी या बबूल के पेड़ पर बैठा होय अथवा जवासे के खेत में ज़मीन पर बैठा होय अथवा सुखी बैठा

देखे वा पांच चार इकठी होके लड़ती देखे अथवा सामने से उड़ जावे ग्रैार कोल्हू ग्रादि पर जा बैठे ग्रथवा चिल्लाती हुई ग्राकाश को उड़ती चली जावे ग्रैार फिर दृष्टि न ग्रावै यह शकुन खोटे हैं जो बटोही ग्रैसे शकुन पाय ग्रागे जायगो तो दंगा फ़िसाद होगो कार्य बिगड़ जायगो ग्रैार जो घर को लौटेगो तो शुभ है ॥ जो ग्रैसे कुशकुन होंय ग्रैार घर को ना लौट सके तो वहाँ ठहर कर देवता को पूजे ग्रथवा सूर्य नारायण को जल चढ़ावे गुरु मंत्र का जप करें ग्रैार श्रद्धानुसार दान करे तो कुशकुन का प्रभाव जाता रहै तो कार्य भी सिद्धि होगा ॥

Subject:—देश परदेश यात्रा ग्रादि में जो शुभ शकुन तथा ग्रपशकुन ग्रादि होते हैं उनका वर्णन ॥

No. 556. Samantasāra-Vachanāvali. Leaves—73.—Dated in Samvat 1953 or A.D. 1896. Deposited with Paṇḍita Santaprasādaji Śarmā, Village Mirjā-kā-Bāga, Post Office Pratāpagaḍha, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning.—श्री सीतारामाय नमः ग्रथ विचित्र वचन श्री राम भजन के ग्रसंख जीव मोह माया की निद्रा में सूते पड़े हैं कोई पुरुष इस निद्रा ते जाग है तो जागा है तिसके हृदे में परमेश्वर के भजन रूपी खेत जमा है तिस परम भजन रूपी खेत का फल श्री रामदरशन है पर भजन रूपी खेत पर रक्षा भली भाँति चाहिये जैसे ग्रनाज के खेत के ऊपर राखो राखते हैं जिससे पशु न खाय जावे ऐसे ही भजन का खेत भी रक्षा लायक है भोग रूपी पशु ग्रहंकार रूप चोर संकल्प रूपी पक्षी दंभ रूपी शूकर प्रयोजन रूपी हरिन इन सब दुश्मन से रक्षा किया चाहिये ग्रैार जिन्होंने रक्षा नहीं किया तिनका खेत उजड़ जाता है ॥ १ ॥

End:—साईं साथ प्यार इतना कर जितना सुष चाहता हो ग्रैार पाप इतना करो जितनी नरक की ग्रांच सहने की शक्ति होय विश्व में बिस्तार इतना कर जितने दिन रहना होय ॥ ९४ ॥ जितना है तितना कछु जेता कछु तेता कर मन ग्रपने को बंधन में राख जो राखेगा तो मन तुभको बांध के चाहे जहां पटकेगा ॥ ९५ ॥ जो मन को जीता तो प्रभु के समीप रहेगा। जो मन न जीता तो सदा प्रभु से दूर रहेगा ॥ ९६ ॥ मन का कहा न मानना रोके रहना बड़ा बैरी है एकांत वास सदा संत संग भोजन ग्रनुमान जागृत करते रहना तब इन रहस्य वचन का स्वाद होयगा पंडित वाचक ज्ञानी विरागहीन न इहन देना मन में मनन करना सदा २ ॥ ९७ ॥

इति श्री सर्व श्रुति स्मृति संहिता संत समंतसार। श्री वचनावली श्री ग्रमोलानन्द शरण ने लिख दिया। शुभ मस्तु ॥ मिति ग्रासाढ़ बदी ९ सम्वत् १९५३

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ३० तक—भजन रूपी खेती की रक्षा का आदेश। परमेश्वर के करन कारन होने का वर्णन। ईश्वर की रचना की महत्ता। हृदय के शुद्ध होने का उपाय, मनुष्य के उपकारी ४ पदार्थ, भक्तों की पहिचान, भगवान को क्या पसन्द है। सूरमा, गरीबी, उत्तम पुरुष, परी, निश्चयवान, विद्वान, संत, और प्रभुप्रिय के लक्षण। सत्संग की आवश्यकता, जीव और परमेश्वर के मध्य के पांच पर्दों का वर्णन। गुरुमत का रूप, मोह-बंध से हानि, स्थूल तथा सूक्ष्म कुटुम्ब का विवरण। सूक्ष्म कुटुम्ब का स्वरूप परम संतों के पांच चिन्ह। पांच प्रकार का मांस और चार प्रकार की निद्रा के त्याग का कथन। जिज्ञासुओं के तीन उत्तम लक्षण। जीवों की आयु का नाश होने के पांच कारण, साधु सुकृति का फल, सावधानी से रहने का उपदेश, मोक्षप्रद दस 'स' कार, पांच दुर्लभ पदार्थ। जीवन का मूल्य, कामादिक की प्रबलता, मन तथा इन्द्रियादिक की प्रचंडता, संत का रहस्य।

(२) पृ० ३१ से पृ० १०० तक—माया का मूल, धीरज, संतोष, विराग तथा सेवकाई का स्वरूप, सधन की कथा, बंधन से छूटने का उपाय। कर्म मिथ्या चेष्टा है। शुकदेव का आख्यान, गुरुमुख का स्वरूप। सत्संग की महिमा, मन-रोग के वैद्य संत हैं। संतोच्चरित प्रभु की विनतियां, अभक्तों के दंड का विधान। संतलोम का संबंध। माया के त्याग का वर्णन। ब्रह्म की प्राप्ति का विधान। परमेश्वर तथा जीव का स्वरूप। गुरुमुख और मनमुख का लक्षण, विषय त्याग। जिज्ञासु के दस लक्षण। रामरूपी अशरफी के ग्रहण का उपदेश, संतों के वचनों का महात्म्य, चौरासी का कष्ट। भक्ति संबंधी कुछ उपदेश, जगत के मिथ्यात्व का वर्णन। भक्त अभक्तों की परीक्षा, माया का स्वरूप, ज्ञान तथा ध्यान का स्वरूप, भजन का स्वरूप, प्रारब्ध।

(३) पृ० १०१ से पृ० १४६ तक—संतों की प्रतीति, प्रीति, भाई अर्जुन जी की साखी, इन्हीं की दूसरी साखी। तीसरी साखी। दर्शनभक्त की साखी। सूरमा का लक्षण, साखी, भक्तों का आख्यान। विवेक तथा अविवेक, मनुष्य के षट्-लक्षण, विचार पदार्थ, शुद्ध बुद्धि का लक्षण। शरणागत के मुख्य चिन्ह। मन के भेदी, कुछ उपदेश। अभिमान के मान के आगे पड़ने वाले तीन पर्दे। पापियों की प्रीति के छै पदार्थ। संसार की आठ उत्तम वस्तुएं। साखियां। धर्म का तत्व, फकीरी क्या है। संतों के ग्रहण करने योग्य बालकों के चार गुण, स्नानादि ग्रहणीय गुण। मन को जीतने का उपाय।

No. 557. Samarasāra. Leaves—18. Dated in Samvat 1793 or A.D. 1736. Deposited with Paṇḍita Rāmasvarūpa Miśra of

Paṇḍita-kā-Puravā, Mauja Bhaddhū, Post Office Sagarāmagaḍha, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—परमात्मानम् प्रणम्य ॥
सकल सृष्टि श्रंकु पोषक रजन पालक सुष दाइ ।
जै दायक पति पवल के हूजे सरन सहाइ ॥ १ ॥
दोन सहाई सुरपति सेनापति सिरताज ।
चित को चिंता मेटि कै कोजे सिद्धि सुकाज ॥ २ ॥

× × × × ×
× × × × ×

ताको राह बिचार की कटपय देत दिषाइ ।
इन चौ वरननि सुमिरि जो निरषै ध्यानु लगाइ ॥ ६ ॥
कट दस दस हन प सरहै य वरन वसु निरधारु ।
प्रति अक्षर निज ठैार मत क्रम तें अंक विचारु ॥ ७ ॥

End:—पहुंचा छोन न देषई, हाथु धरे सिर जोइ ।
ताको डर नहिं मोच को रस मासनि लों होइ ॥ १३५ ॥
माथे पर अंगुलि अवे कदली सुमन समान ।
आभा लाल धराइ तो भै नहि रंच प्रमान ॥ १३६ ॥
अंबु सलिल में जो तिरै तो न मरै नरु सोइ ।
जो भाषत हैं नेमु करि देव मुनी सब कोइ ॥ १३७ ॥
चिन्ह आयु निज काय लषि निहचै करैन ठानु ।
मुख्य रेष के सगुन हैं इन सम आन न जानु ॥ १३८ ॥

इति श्री समर सार समाप्तं ॥ शुभ मस्तु ॥ सम्वत् १८२६ कार्तिक वदी सप्तमी शनि वासरे ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० ८ तक-मंगलाचरण, गुरु स्थान कथन:—
मिश्र अजोध्या नगर के, अमत गुरु घनस्याम ।
विद्या के सागर महा, ज्यौं गनपति मतिधाम ॥
तिनही की परसादु लहि, ज्योतिष अगम अगाध ।
"समरसार" भाषा करौं, छमियो बुध अपराध ॥
ग्रन्थ निर्माण काल—
गुन निधि परवत सीतकर, जब संवत सुष साज ।
ज्येष्ठ असित तिथि तीज रवि, भयो ग्रन्थ सोराज ॥

संख्याज्ञान, जय पराजय, चिंता, वरुण स्वर, राशि स्वामी, ग्रह स्वर राशि स्वरभ स्वरज्ञानम् । द्वादश वार्षिक, स्वर वार्षिक, स्वर पवन, स्वरपद स्वर मास, स्वर पवन, स्वर कथनम्, ऋतु स्वर वर्णन ।

(२) पृ० ८ से पृ० १६ तक—मात्रा स्वर, जीव स्वर, पिंड स्वर, जोग स्वर, अंतरोदय, भू-बल, रविहत दिशा, चन्द्रहत दिशा, केतुहत दिशा, राहु बल, जोगिनी बल, जोगिनी नाम । राहु युत जोगिनी बलम् ।

(३) पृ० १७ से पृ० ३६ तक—काल कथनम्, तत्कालज्ञानम्, दिन अतीत ज्ञानम्, वार प्रवृत्ति, होरा, पहर लक्षण, लगन प्रमाण, वास्तु सूनं, सकाल, राहु कलानल, तात्कालिक, जीव पक्ष कथनम्, नाम ज्ञानाय शकुनत पशु चक्र, हंसचार, दलपति फलं, स्वास फल वाह प्रमाण कथनम्, स्वरबलं, रतिविधि, द्यूतक्रीड़ा, समेर चौपचानि, कोट चक्रम्, सर्वतोभद्र चक्रम्, साध्यासाधक, मद्रा चार पुत्र संबंधी प्रश्न ।

No. 558. Sāmudrika. Leaves—10. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning:—नाभी लक्षण नाभी गंभीरी बाहु जो सदा होइ धनवन्त । सुन्दर नाभी पुरुष को सुख देखावे अंत ।

अथ हस्त रेखा लक्षण

अब सुनु कहौं हस्त को रेखा । जैसा भाउ जहां मैं देखा । च्यारि प्यादु रेखा होइ हाथा । बहुते बनो जब है तेहि साथा । मंछरूप रेखा देखरावै । पावै सोधि हाथ जह लावै । फुटम्दे रूप जो रेखा होई । ता कहं चोर कहै सब कोई । कै शशी के आंकुस रेखा होइ सुर सो धनवन्त देषा । चौपटी रेखा जेहो होइ । महा सुरोचा कहिवै सोई । दो०—तिलटी रेखा हाथ मैं हिन्दुहि तुरक कराइ । जोई तुरक के हाथ मैं निश्चै धाइ सो पाइ । अथ पुरुष लक्षण वर्णन—कोमली मुरली अंग सों । वंकट भौंह विशाल सो लोचन लाल चमहों । थोरे काम कला बहुत सुख पावइ । चौल वंत गुन वंत सो चतुर कहावइ । रूपवन्त प्रति चतुर विनोद रागरस गीत अरथ सों हेतु रहै चीत प्रेम बंधा । लघु भोजन लघु रोप दान दीन भावइ । कामीनी पतर सलाइ सो रूप रिझावई । प्रति लघु प्रति न विशाल शोभ धाम अंग होइ । मधु वानी मधु भोजन सुन्दर रूपते ही ।

End:—अथ अंग प्रमाण लक्षण—बावन अंगुल अंग पुरुष जो जानिये सो बावन औतार देव करि मानिये । राजपुत्र जो होई औ बलो बावन फेरे ।

चारो वीस अंगुल पुरुष जानु दुष्ट सो होइ । मन कपटो अप रचार वो भेद न पावे कोइ । नवे अंगुल पुरुष जो लहिये । तीस बर्ष आवेदा कहिये । चौ

अंगुल का होइ प्रवाना। अधिक बय होइ अनुमाना। सो अंगुल ऊपर जो गनै। अंगुल साथ बरष दश मनै। होइ दहोतरो सैको काया। तौहु चाहि अधिक बढ़ि मास्ता। सात बष ताको अधिकाई। अंगुल पाछे लेहु गनाई। बोसा सौ तजौ ऊपर बढ़ै। होइ चिरंजो आगम पढ़ै।

हिरदै लक्षण—दोष पइयन नर भारी होइ। मद्दा धनाढी पुर्ष है सोइ बांइ दोस पइयन है भारी। मिले नारि तेहि प्रेम पियारी। हदै समान धरन जो होई। सेवा करै जगत सब कोई। दुर्बल हिया दारिद का माइ। मोटा हो आवरष सो आइ।

Subject :—(१) नाभि लक्षण।

२—हस्त रेखा लक्षण।

३—पुरुष की चार जातियों के लक्षण।

४—चित्रिनी स्त्री लक्षण।

५—हस्तिनी लक्षन।

६—नख लक्षण तथा चरण की उंगलियों के लक्षण।

७—जानु लक्षण, पंजर लक्षण।

८—इंद्रिय लक्षण।

९—अंग प्रमाण लक्षण।

१०—हृदय लक्षण।

No. 559. Saṅgraha. Leaves—6. Deposited with Thākura Bidriprasāda, Village Kharauhī, Post Office Mānadhātā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—अब तो मिलनो कठिन है। पांवन पड़ी जंजीर।
परबस प्यारे हम भई। काउ करै ततबीर ॥ १ ॥
मित्र तुम्हारे मिलन को। चाहत है चित नित।
तन नहिं मिल्यो तो का भयो। मन मिलि आवत नित ॥ २ ॥
सोरठा:—प्यारे तुम जिन जानियो। हम सन प्रोति गई।
अमर बेल ज्यों वक्ष पर। बाढ़त नित्त नई ॥ ३ ॥
तुम बिछुरत छिन मो मरों। कहा जियौं बिनु तोहि।
तव मूरति मन में बसै। वही जियावत मोहि ॥ ४ ॥
End :—सांचो कहैा हमसों मनमोहन, काके कहे तुम पीति तजी है।
आंखिन देखि बिना नहिं चैन सो, प्रीति की रीति कहां बिसरी है॥
का कहौं मोहो सों चुक भई, तुमरे चित को जो चाह घटी है।
मैं कपटी कि मो तू कपटी कि तो, यह कपटी जोहि ऐसो ठटी है ॥ १ ॥

फोकी लगै चलि नीको सु फूल यथा सुचि सुभ्र सुगंध विना ।
तन मांहि पोसाक न सोहत है दीप बंदी यथा कटि बंध विना ॥
बीर सरीर न सोहत है भुज दंडव उन्नत कंध विना ।
कविता वनिता नहि सोहत यें वर भूषण छंद प्रबंध विना ॥ २ ॥

Subject:—पृ० १ से पृ० ४ तक—पत्र संबंधी दोहे ।
पृ० ४ से पृ० १२ तक—पत्र तथा विवाह संबंधी दोहे ।

No. 560 (*a*). Sāragitā. Leaves-20. Deposited with Paṇḍita Mannilāa Gaṅgāputra Tivāri, Village Misrikha, District Sitāpur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः अथ सार गीता लिष्यते ॥ अर्जुन उवाच, अर्जुन श्री कृष्ण भगवान जी सो प्रश्न करे है कि परमेश्वर जी उंकार का महात्म और अस्थान। तिसके सुनने को मेरे वांछा है ॥ तुम कृपा करके निरुपण करहु ॥ श्री भगवान वाच ॥ हे अर्जुन तुके बहुत भला प्रश्न किया है ॥ अब ओंकार का महातम विस्तार कर कहता हीं तूं श्रवण करो। यहि गीता सार हैं। ब्रह्मा विष्णु महेश्वर यहु इसके रष्या करने हारा है। और अगन वायु सूरज यहु इसके देवता है ॥ गायत्री जगती त्रिष्ट यहु तीनों इसके छंद हैं ॥ और अगन अस्थान है तहां चारों वेद हैं। रिग्वेद। युजर्वेद। सामवेद। अथर्वण वेद ॥ चारों वेद कारन हैं। अब इनका उतपति कह हों। ओंकार ते इनके उत्तपत्ति है रिग्वेद का नील वरण। युजर्वेद का पीत वरण है। साम वेद का स्वेत वरण है। अथर्वण का रक्त वरण है। ओंकार नाम अषर सक्त है अरु मकार के लोक है। ओंकार अषर परम तत्व है अरु इसुर वेद कमल विषे बसे हैं। पृथ्वी अग्नि रिग्वेद है अरु ब्रह्मा भुवलोक यहो चारो अकार अषर के साथ है ॥

End:—सर्व शास्त्र मयी गीता। सर्व धर्म मयो दयः। सर्व तीर्थ मयो गंगा ॥ सर्व देव मयो हरि जो कोई इसका एक सलोक एक चरण आधा चरण पाठ करे है सो संसार के अंध कुप ते मुकि होई श्री कृष्ण भगवान जी के अम्रित वचन है। अचनों ते भला फल सार गीता कोनी है। रे मनुषो तिस फल को तुम क्यों नहीं खाते पापों के अग्यानो को वरेचन करन हारी है ॥ बारंबार भली भांति सदा सर्वदा गीता का पाठ कीजे। अथवा श्रवण कीजे ॥ और शास्त्र का विस्तार श्री कृष्ण के निमित्त कीजे ॥ कमल नाभ जो है श्री कृष्ण कृपा निधान। श्री नारायण जी तिनको मुष कमल ते निकसी है। अरु श्री मुष वाक्य है। गंगा, गीता, गायत्री, गुरु, गोविंद। इन पंचो राग करै। सो पुनर्जन्म को न पावै ॥ जो कोई इस सार गीता का यथा शक्ति अभ्यास करन न जाणे

अरु पाठ मात्र करै सो भी विस्नु के विः्मान जाइ प्राप्त होइ । इसके आगे क्या कहो । इति श्री भगवद्‌गीता ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन संवादे सार गीता सम्पुर्ण है ।

Subject:—ओंकार का महत्व, रुप, ध्यान आदि जानने के प्रश्न श्री कृष्ण जो ने अर्जुन को समझाया है ॥

No. 560 (*b*). Saragita. Leaves—21. Dated in Samvat 1767 or A.D. 1710. Deposited with Paṇḍita Rāmanātha Misra, Village Imaliyā, Post Office Sadārapura, District Sitapur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सार गीता लिप्यते ॥ अर्जुन उवाच ॥ अर्जुन श्री कृष्ण भगवान जी से प्रश्न करे है कि हे परमेश्वर जी उंकार का महातम रुप ध्यान तिसके सुनने को मेरे वांछा है तुम कृपा करके निरुपण करहु ॥ श्री भगवानुवाच हे अर्जुन तु के बहुत भला प्रश्न किया है अब ओंकार का महातम विस्तार कर कहता हू ॥ तु श्रवण करो यहि गीता सार है ब्रह्मा, विस्नु, महेश्वर यह इसके रष्या करने हारा है ॥ और अगन वायु सुरज यह इसके देवता हैं ॥ गायत्री जगती त्रिष्टम् यह तीनों इसके छंद हैं और अगन प्रस्थान है तहां चारोवेद हैं ॥ रिगवेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वण वेद ॥ चारो वेद कारन ॥ अब इनका उतपति कह हों ॥ ओंकार ते इनको उतपति है रिग्वेद का नील वरण है यजुर्वेद का पति वरण है । सामवेद का स्वेत वरण है अथर्वण का रक्त वरण है ओंकार नाम अक्षर सक है अरु मकार के लोक हैं ओंकार अक्षर परम रुप है अरु इस हृद कमल विषे बसे है पृथ्वी अग्नि रिगवेद है अरु ब्रह्मा भुव लोक ये चारों अकार अक्षर के साथ है ॥

End:—जो कोई एक बार सार गीता के अर्थ जल विषै वासना न करि के पाठ करै सो संसार के अंध कुपते मुक्ति होइ ॥ समस्तस्तोत्रों ते उत्तम है और जिन को बदाती है अरु वांछला को दाती है अरु श्री नारायण मई है सर्व सास्त्र मई गीता सर्व धर्म मयादया ॥ सर्व तीर्थ मयो गंगा सर्व देव मयो हरि ॥ सो जो कोई इसका एक स्लोक एक चरण आधा चरण पाठ करे है अरु श्री नारायण जी का ध्यान धरे है सो संसार के अंध कूप ते मुक्ति हो ॥ श्री कृष्ण भगवान जी के प्रस्तुत वचन हैं ॥ वचनो ते भला फल सार गीता को ती है रे मनुषो तिष फल को तुम क्यां नहीं पाते ॥ पापों के अज्ञान को वरेचन करन हारी है वारंवार भली भांति सदा सर्वदा गीता का पाठ कीजै अथवा श्रवण कीजै और सास्त्र का विस्तार श्री कृष्ण को निमित्त कीजै ॥ कमल नाभ जो है श्री कृष्ण कृपा निधान श्री नारायण जी तिन को मुष कमल ते निकसी है अरु

श्री मुष वाक्य है गंगा गीता गायत्री गुरु गोविंद इन्ह पंचो राग करे सो पुनर्जन्म को न पावे जो कोई इस सार गीता का जथा शक्ति अभ्यास करन न जाये यह पाठ मात्र करे जो भी विश्नु के विद्मान जाइ प्रापति होइ ॥ ३ ॥ इसके आगे क्या कहो ॥ इति श्री भगवत गीता (सार गीता सूप निषत्सु ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन संवादे सार गीता संपूर्णम् लिषतं वन वारी पाठक फैतेपुर निवासी जेष्ट शुक्ल दशमी संवत १८६७ वि० राम राम राम राम राम ॥

Subject:—भगवद्गीता का सार ॥

No. 560(*c*). Srisāragita. Leaves—21. Dated in Samvat 1872 or A.D. 1815. Deposited with Vaidya Rāmabhūshana, Village Kāmatapura, Post Office Etauja, District Lucknow (Oudh).

Beginning:—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ सार गीता लिष्येत ॥ अरजुन उवाच अरजुन श्री कृष्ण भगवान जी को प्रश्न करे है कि हे परमेश्वर जो ओंकार का महातम और रूप और असथान तिस के सुनवे को मेरे वांछा है तुम कृपा करके निरूपण करहु । श्री भगवानु वाच ॥ हे अरजुन तुमने बहुत भला प्रश्न किया है अब ओंकार का महातम विसतार कर कहता हूं ॥ तूं श्रवण करो ॥ यही गीता सार है ॥ ब्रह्मा विश्नु महेश्वर ये इसके रष्या करने हारा हैं और अगन वायु सूरज यह इसके देवता है ॥ गायत्री जगती त्रिष्टप यह तीनों इसके छंद हैं और अगन असथान हैं तहां चारो वेद है ॥ रिग्वेद ॥ युजुर्वेद ॥ अथर्वण वेद ॥ चारों वेदों कारन है ॥ इनका उतपत कह हौं रिग्वेद का नील वरण है युजुर वेद का पीत वरण है ॥ सामवेद का स्वेत वरण है अथर्वण का रक्त वरण है ऊंकार नाम अषर सक है अक मकार के लोक है ओंकार अषर परम रूप है और इस हृदे कमल विषे वसे हैं ॥

End:—सर्व सास्त्र मयो गीता सर्व धर्म मयो दयः सर्व तीर्थ मयो गंगा सर्व देव मयो हरिः ॥ जो कोई इसका एक श्लोक एक चरण आधा पाठ करे है अरु श्री नारायण जी का ध्यान करे सो संसार के अंध कूप ते मुक्ति होई । श्री कृष्ण भगवान जी के अमृत वचन हैं ॥ वचनों ते भला सार गीता की ती है रे मत प्रीति सफल को तुम क्यों नहीं रषाते ॥ पापों के प्रमान को वरेचन कर नहारी है ॥ वार वार भलो भांति सदा सर्वदा गीता का पाठ कीजै ॥ अथवा श्रवण कीजै ॥ और सास्त्र का विस्तार श्री कृष्ण के निमित्त कीजे कमल नाभ जो है श्री कृष्ण श्री कृपा नियान श्री नारायण जो तिनको मुष कमल ते निकसो है अरु श्री मुष वाक्य हैं ॥ गंगा गीता गायत्री गुरु गोविंद इहु पांचों राग करै ॥ सो पुनर्जन्म को न पावै जो कोई इस सार गीता का जथा शक्ति अभ्यास करन न जावे अरु

पाठ मत्र करै सो भी विश्नु के विद्यमान जाई प्रापति होई है इसके आगे क्या कहीं इति श्री भगवतीत्म स्यनिषत्सु ब्रह्म विद्या या योग शास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन संवादे सार गीता संपूर्णम समाप्तम शुभम् लिषतं देवी राम शर्मा माव शुक्ल पंचमी संवत् १८२७ वि० ॥

Subject:—अर्जुन का श्री कृष्ण भगवान से ओंकार का महात्म्य, ध्यान और स्थान पूछना और श्री कृष्ण भगवान का तीनो प्रश्नों के उत्तर अर्जुन को समझाना ॥

No. 661 Sārgaṅgadhara Samhitā. Leaves—137. Deposited with Rāmagopāla Murāi, Vaidya, of Alikātāla, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—

> होय कोल को करष जु चक्ष । जानि पान मानिक पर लक्ष ॥
> किंचित यानक कुरतर लेषे । निंदुक षोड़श कापिच देषे ॥
> कवल ग्रह सुंदर वर जाना । हंस चरन सो बरन वषाना ॥
> और विडालय इहि को मानै । इतने नाम अधेला जानै ॥ १० ॥
> होय कर्ष को पैसा लेष । नाऊ सुक अष्टका येक ॥
> होय सुक को टका सो जानो । वेल षोड़सी मूढ़ वषानो ॥ ११ ॥
> पट प्रकुंच चातुर्थ क ले उ । अष्ठ टका को नाउ कहेऊ ॥
> टका होय को प्रसरित नाउ । दुजो पसरित आनो लाउ ॥ १२ ॥
> चार टका को नाम कहि मान । जलद कुंडव सुताको जान ।
> अष्ट मान तासो कहत अर्ध सराव बमान ॥ १३ ॥
> कहत सुरायक अरु मानिका अहप कहिये येष ।
> आह टका को नाउ कहि बुध जन जानि विशेष ॥ १४ ॥

End:—

पृष्ठ २७३ व २७४

> अक्षी पय त्रिफला रस ल्याय । सुरमा को तातो करवाय ॥
> सात-सात बेरहि बुझाय, आजे नेत्र रोग सब जाय ॥
> नेत्रन दोष मिटो जब होय, तब जल मैं भिजवे पुनिसोय ॥
> फेरि नेत्रन को डारे धोय । अरु जो दोष कछू पुनि होय ॥
> धोके भाव चाकर चार । बेहर लगै न होय विकार ॥
> =०=
> अकला मधु घृत समरानोर । सोठ मूत्र गोयो रहि छोर ॥
> अलाका राना को तपवाय । इन सब में लोजै तपयाय ॥

बड़े सलाका घाति जाय। नेत्र रोग सब नीको होय॥

× × × × ×

× × × × ×

Subject:—(१) पृ० १ से ४ तक—सुत।

(२) पृ० ५ से १७ तक—अध्याय ३। कुछ पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या तथा रोगी परीक्षा अथवा रोग परीक्षा। नाड़ी परीक्षा।

(३) पृ० १७ से पृ० २० तक—अध्याय चौथा, दीपन-पाचन।

(४) पृ० २१ से २९ तक—पांचवां अध्याय। शरीर भेद, सप्त धातु, सप्त त्वचा, कलादिस कथन।

(५) पृ० ३० से पृ० ३४ तक—छठवां अध्याय। आहार पाक कथन।

(६) पृ० ३५ से पृ० ४४ तक—सातवां अध्याय। पित्त से चौवास रोग। दांतों की जड़ के तेरह रोगों का वर्णन। कर्णमूल के पांच रोग। चौरानवे नेत्र रोग। संध्य के नौ रोग, सुवेज-पुत्तरी के तेरह रोग, कलि तिल के पचास रोग। नासस्रात रोग। आठ कुष्ट रोग। स्त्री नाम रोग। योनि रोग बीस, गर्भ के आठ रोग, बालक के बारह रोग। (रोग विष उपविषं वर्णन)

प्रथम खंड

(७) पृ० ४४ से पृ० ५० तक—पुट पाक कल्प अध्याय, ९। सुरस पुटपाक तुंडल अल। तोतुर पाक। दाड़िम पुटपाक, रु सो पुट पाक।

(८) पृ० ५० से पृ० ७२ तक—बात ज्वर पर गुडचादि, नवादि, कासम आता, कट फलादि, पर्पटादि, बीज पुरादि, मुनि आदि, लघु नक्ष्यादि, परवध, गुर चादि, दसमल सन्निपात अभियाद सन्नपात अष्टादश मूल कथन, कटु फलादि, गदाय का जीर्न ज्वर, बृहती, क्षुद्रादि शीत ज्वर, सुस्तादि शीतज्वर गुवादि तृतीय ज्वर, चतु भद्रका, त्रिफलादि, रक्तापंचक, महारक्तादि क्वाथ, हरीत काथ, बीरतरुवाद, पलादि, दारावदा, नीला दाघ, अन्न दाख पंचक, बर नाह, समर गुझार, तेल लघु मजिष्टादि, पथ्य विबंध, वासादि, पटोलाद, प्रमथ्या, जूष, पान कल्पना, अन्नपान विधि, क्षीरपान, खिचड़ी, पथ्त्र वागु, विलेपी, यसगुन माड—

(९) पृ० ७२ से पृ० ७४ तक—दसवां अध्याय॥

फाट कल्पना, मधुप फाट, पसतार, लघु मधुक पाठ, मथफाटक, खर्जूराद माथ, मसुराद माघ, (जब सत्य मथ)

(१०) पृ० ७४ से पृ० ७६ तक—ग्यारहवां अध्याय॥

हिम कल्पना, अमृतादि हिम, नीलाम्य लाद हिम, धनादि हिम,

(११) पृ० ७६ से पृ० ८० तक—बारहवां अध्याय।

पिसलो वर्धमान, रसोनकल्क।

(१२) पृ० ८० से पृ० १०१ तक—तेरहवाँ अध्याय।

चुरन कल्क, मधु पिप्पली, ऊषकादि चूर्ण, त्रिधन चूर्ण, षट्क चूर्ण, त्रिसुगंध चतुर्जात चुरन, जीवनी, पंचलवन, लघु सुदर्शन चुर्ण, मुस्तादि चुर्ण, हरत क्याद चूर्ण, गंगाधर चूर्ण, कपितारका चूर्ण, वृहदादि मास्टक, लवगाध चूर्ण, महाधने चूर्ण, नारायण चूर्ण, पंचसम चूर्ण, रघुनारायण लवणमशादि चूर्ण, पाठादि चूर्ण, अजमोदादि चुर्ण, हिंगादि चूर्ण, जवान खांड चूर्ण, तालो साद चूर्ण, शीत बलादि चुर्ण, लवण भास्कर, पंचागरिष्ठ, षड्वर्गधादि, करमद, वर्धमान पीपर,

(१३) पृ० १०२ से पृ० १४० तक—पाग कल्पन, चौदहवाँ अध्याय। गुटिका, बहुसंजोग गुन, गुनाद गुटिका, संजीवन, वोषध, अथारक, मगन पिंडी। मंडर वटिका, चंदोक गुटिका जोगराज गुग्गुल, कैशोगद गुग्गुल, त्रिफला गुगर, गोक्षुरादि गुगर, त्रिफलादि मोदक, कचनार गुग्गुठ (पकाधिकार)—सुलाब पाक, सेवती पाक, गोखरू पाक, करेला पाक, शुंठी पाग, जायफर पाग, गुगर पाक, कसरुवा पाक, जीरा पाग, अभिमादि पाक, कामदेव गुटिका, चोब चीनी पाग, पीपर पाग, सुपारी पाक, अद्रक पाक, अमृत पाक, दाड़िमा पाक, हरदी पाक, नारियल पाक, कुचला पाक, भिलवा पाक, हरंदी पाक गोखरू पाक, कुमड़ा पाग, करेला पाक, पिप्पली पाक।

(१४) पृ० १४१ से १४६ तक—पन्द्रहवाँ अध्याय, अवलेह कल्पना, कंटका अवलेह, च्यवन प्राश अवलेह, कुष्मांड अवलेह, अगत हरितकादि अवलेह, कटजाता अवलेह।

(१५) पृ० १४७ से पृ० १५८ तक—सोलहवाँ अध्याय, धित कल्पना, क्षीर षटपलघृत, चगेरी घृत, मधुरादि घृत, कामदेव घृत, पान कल्पना, अमृतादि घृत, महा सकघृत, कोमो साद तैल, जातो फल घृत, पदघृत, त्रिफलादि घृत, मयूरघृत, त्रिफलादि घृत, पंचन घृत।

(१६) पृ० १५६ से पृ० १६६ तक सत्रहवाँ अध्याय। तैल कल्पना—लक्षादि तैल, नारायण तैल, बाला तैल, प्रसारिणी तैल, माषादि तैल, सतावर तैल, कासीसादि तैल, विदावल तैल (अर्क)। मिरचादि तैल, नीम बीज तैल, मधु आर्घा तैल। कुटजाद तैल, दारुनोल तैल, भृंगराज तैल, हरमेदादि तैल, करनमूल हिंगतैल, बिल्वादि तैल, क्षार तैल, विडादि तैल, ब्राह्मी तैल, कुष्टादि तैल, वज्र तैल, करवीरादि तैल,

(१७) पृ० १६७ से पृ० १७५ तक—अठारहवाँ अध्याय, संधान आसव अरिष्ट कल्पन—संधाय, कल्प, वार्ता, आसव, उशीर आसव, पीपरा सव, लोह आसव कुटजारिष्ट, विडंग अरिष्ट, देवदारु अरिष्ट, खदिरादिरिष्ट, अमृताअरिष्ट बब्बुरारिष्ट, द्राक्षारिष्ट, रोहितकारिष्ट,। दशमूलारिष्ट,

(१८) पृ० १७६ से पृ० १८६ तक—उन्नीसवां अध्याय, धातु सोधन क्षार कल्पना, धात सोधन मारन विधि, सोना मारन विधि, रुपामारन विधि, ताम्र मारन विधि, जस्ता मारन, सीसा मारन, राग मारन, लोह मारन, उप धातु, (सानामाषी रुपा माखी, अभ्रक सुरमादि) मारन विधि। सुरमा, मनसिल हरताल, पारासोधन विधि, धात निरजीव करण, होरामास वेत ऋतु मारन, मणि मारन, सर्व रत्न मारन, शिलाजित सोधन, मंडूर करण,

(१९) पृ० १८७ से पृ० २१५ तक—बीसवां अध्याय। पारा मारन, ज्वरांकुश रस, शीत ज्वरारि रस, लुरंधी गुटिका, लोक नाथ रस, मृगांग पोटली रस, हेम पोटली रस, महा ज्वरांकुश रस, लोचकारनो रस, पंच वक्रो रस, उन्मत्त रस, इच्छाभेदी रस, अभ्रका रस, सुज वत्री रस, हंस पोटली रस, त्रिवक्र रस, महातालेश्वर रस, कुष्ट कुठारा नाम रस, उदयादित्योरसः। वन्हिरस, विद्याधर रस, शूल गज केसरी, अग्नि हेडी रस, अजीर्ण कंटकारो रस, मंथान भैरवरस, वातनाशन रस, कनक सुंदरी रस, सन्निपात भैरव रस, अहनो कपाट रस, वज्र महनो कपाट रस, मदन (कामदेव) रस, कंदर्थ सुन्दरी रस, लोक रसायन।

मध्यम खन्ड समाप्त

(२०) पृ० २१५ से पृ० २१९ तक—इकीसवां अध्याय, स्नेह कल्पना,
(२१) „ २२० „ „ २२४ „—बाइसवां अध्याय स्वेद विधि कल्कनाम अध्यायः—स्वेद विधि, द्रुवस्वेद।
(२२) „ २२४ „ „ २२८ „—तेइसवां अध्याय—वमन विधि
(२३) „ २२८ „ „ २३२ „—चौबिसवां अध्याय—विरेचन विधि।
(२४) „ २३२ „ „ २३९ „—पचीसवां अध्याय—नास विधि।
(२५) „ २४० „ „ २४२ „—छब्बीसवां अध्याय—धूम्रपान विधि।
(२६) „ २४२ „ „ २५६ „—सत्ताइसवां अध्याय—गंडूष करणं। अश्चोतन, पिंठो, कल्क, चर्ण, अवलेह।
(२७) „ २५७ „ „ २५६ तक—अट्ठाइसवां अध्याय, लेपन विधि, विष हरण। लेप, हाथी दांत बार के लेप, कर्मवश।
(२८) „ २५७ „ „ २६१ „—उन्तीसवां अध्याय, रुधिर मोक्षन।
(२९) „ २६२ „ „ २७४ „—तीसवां अध्याय, नेत्र प्रसाद कर्म, तर्पन विधि, पुटपाक, अंजन, वर्त्तोलेखन, लेपनी वर्त्ती, रोपनो रस क्रिया, लेहनी रस क्रिया, मृदुचूर्ण अंजन, नेत्र काम प्रसाद चूर्ण, मुक्ता प्रसाद चूर्ण,
(३०) „ २७५ „ „ „—स्तुत

No. 562. Sārasaṅgraha. Leaves-44. Deposited with Rājā Avadhesasimha Raisa and Tallukedara: of Kālākākara, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री गनेस जो सहाये ॥ श्री सरस्वती सहाय ॥ सोसा लाय तामें राखु । उत्तम हो इनपर ई भांग ॥ यह कैसे के जानै पंतु वेला ॥ थाली उबै पंतु ॥ यपरा लेले इनो वागु इह जानै तष्टो को भागु चौथे हिसा सोसा परै ॥ तो मोंसे को तोरा करै ॥ अब कहिहौं तिन कि मरजादो जरइं हरइं जैसो वादो ॥ कुंदन कैसा पंच वचनि पुनि सोसि गठो जानि ॥ ३० ॥ कहुं तरके चोवन पैस । चारि पासरै चालिस कंस लोह । ताम्बु पुत्रा चालोस । और रंग जान पवतोस तष्टो छयालोस गाने कहो चैसाला सपान को मानो । अठतालोस त्रुप पर सनो ॥ पारो सतरो मैक छुगार ॥ नौयत तेन मरजाद कहो । रस रतनागर ते करो सहो ॥ वापर एक निकुतम हई । एक श्वानि सुनि लोजे सोई ॥ ३२ ॥

End:—मूखे वेर पापरो आनि । चुनो जोरो हरद बखानि ॥ पांचो करथ करथ पर आनि । कर वो तेल चारि पल आनि पोषद् वांठि मेलि जै माहा । पर रखवार उठै जो वहां ॥ जिते वग्न चोनारो तनै । सात घोस मे भागे घने ॥

इति मल्हम मंजिष्टादि

पुर वो पुगी फल चारि । थे पार पासरे क्वालि जानियो । और वांटि ले घट के पान । पल पल सोरो शाप सुजान ॥ चूनो सोप पैस्या ॥ ……………

Subject:—(१) रंगों का वर्णन, बूटियों के नाम, शोधन विधि, पारा शोधन विधि, स्वर्ण मक्षिका शोधन विधि, नैनियां सुमल शोधन विधि, फिटकरी शोधन, सुरमा शोधन, पपरा शोधन, औषधि नाम। अनशोधे धातु से औगुन, धातुओं के गुण गमन तथा इंगुरादि गुण पठारह कष्टों को औषधि, शंख द्राव काढ़न विधि—पृ० १—२९ तक।

(२) महासंख द्राव, तांबे धोवनो, बंग विधि, सारमारन की विधि, शीशा मारण की विधि, हरताल विधि, कांति रस विधि कनक सुंदरी रस, मुनि वल्लभ रस, कुसुम भवगंम—पृ० २९—४८ तक।

(३) संखिया हरताल विधि, कनक खपरिया विधि, कुटोरस विधि, विटो विधि गंधक, हेम रस विधि रूप राज विधि, इंगुर मारन विधि. नागेश्वर रस विधि—पृ० ४८—६५ तक।

(४) नागेश्वर रस विधि, महिमंडल रस विधि, क्षोध्द वर्द्धमान रस कंचन रस विधि, संपुट, मानरस, रघुपति कल्यान कामेश्वर गुटका, मदन पाग गुटका, कुष्ट केहरी, बसुधा निधि। बुद्ध घनो विधि मंजिष्टादि मरहम आदि वर्णन—पृ० ६६—८० तक।

No. 563. Śatasamvatsara-Phala. Leaves—30. Dated in Samvat 1769 or A.D. 1712. Date of manuscript—Samvat 1769 or A.D. 1712. Deposited with Umāsaṅkara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—सम्वत् १७६९ विक्रम नाम सम्वत्सरे चन्द्र स्वामी मेह घणा। समौमलैा घृत तेल सुऊगा। लोक सुषी। समौ भलैा। चैत्र वैशाष मुहंगा जेष्ठ भूमि कंप घजमेरि राजय लक्ष्मी। उपद्रव। वलटी माटी उपरि हो इसी लोक कोजसी म्लेछउजेड देसही दुराज गरज सी॥ घसाढ़ दुकाल श्रावण सुकाल भादव मेघ घणा ऊार मास सर्वं भला इति ६९ फलं॥ संवत् १७७० वर्षे वृष नाम संवत्सरे मंगल स्वामी दुर्भेक्ष होसी। राजपीड़ा। घन घल्प मार वारि दुर-भक्ष। रैारव वरतो लोक घसत होसी। पूर्व सुकाल। मध्य देसि मडो वरि में वाहिरैा दुकाल। घाप मै घाप लागसी चैत्र वैसाष मंदु। ज्येष्ठ घसाढ़ श्रावणि फरको भादवे वर्षा मंद। घासोज होक २ छत्रसी भुषा धान मगये रोजी २१ लहमी प्रजा कष्ट। कातो मागशिर मलैा पोस माह फागुन फरका इति ७० फलं संवत् १७७१ वर्षे चित्र भानु नाम संवत्सरे बुधस्वामी। लोक सुषी मेघ घणा सजल होसी। घनसत्ता। जे घन लेतो वहिनै टोटो। मास ४ उ।रांति सुकाल। चैत्र वैशाष मंदो।

End:—सम्वत् १८८० वर्षे राक्षस नाम संवत्सरे। चन्द्र स्वामी। सर्वं जनसी। घनघणा नदी फुली मालवै दुकाल। चैत्रादि मास ज्योत्री। घसाढ़ श्रावण फरका। भादवादि मास ४ मध्यम मार्ग शिर रस कस सुऊगा पोस माह महाजन पीड़ा। फागुन छुटसी राजविरोध घणा। माह देस भजसी। चित्र कोट राजपल्ट सी रुंडमुंड मेदिनी मृतुप्या मनुष्य लागसी। चैत्र वैशाष मंदा ज्येष्ठ विपत। घसाढ़ मेघ घल्प। श्रावणी पुरकि। भादवारै पाछिलै पाषि किंचित् वर्षा सर्वत्र होसी। मार्ग सिर पोस मंद। माह॥ फागुण महगाई। इति १०० फलं॥ श्रीः॥

इति सैा संवत्सरी फलं सम्पूर्णं समाप्तं श्रो रस्तु॥ शुभं भवतु॥ श्रीः॥ संवत् १९२९ मितो वैशाष सुदी ३॥

No. 564. Śāvara Mantra Śāstra. Leaves—43. Deposited with Umāsankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—श्री गणेशायनमः। घादमंत्रः॥ गुरु सत्य बिस्मिल्लाह। काफ क्यों मो घावनकार घादि गुरु सृष्टि करतार वेद न हरता वही एको घाइ जुग चारि तीनि लोक चारि वेद पंच पांडव छव मारग सात समुद्र घठ वसु नवग्रह दश रावन ग्यारह रुद्र बारह रासि तेरह मोल चैादह भुवन पंद्रह तिथि चारि षाति चारि बर्णन पांचभूत चैारासी घात्मो लष जीव श्रनोनि

अष्ट कुली नागा तेंतीस कोटि देवता चकाहु पताहु मूर्ति मंडल राति दिन पहर घरी दंडु पलु जाम महा रघु सापा घरते हो जो कछु फलाने के पिंड देवन होइ देवदानव भूत प्रेत राषा सुमुषो कुम्हाडु की तारा बादिता देवा बाडोठो मूठो चपिनो भुपिनो मिलनो बिडनो फेरो दिठोरो गाहिनो नाई का पेलाई । धेनो भूल वायु सूलनह सुरन हरवा डहरवा दद्रु गरहु कर कर्त्तापिचो मूत्र कृच्छ्र पठारह प्रमेह गोला फोटो बहुरुघा बहो गार्घा नासो कुठो छुओ कुंवोरो भिरिगो वमन बाद हंरिया सुनवा सुरपैल गंडल कवाड चोट फेट फेदि वाकि ताला पालगा पाव पोतो लांघ्या उलंघ्य बाट घाटक बाहर निसार पैसार सांपू सकार कथनहु प्रकार दोहाइ गुदवार चाम नारि अर्थ मंत्र जहां हंसो दोहाई सलेमान पैगम्बर को तुरंतु तुरंमविलाई पढो पोनि पाहिना लरिस वालाघ पैगम्बर को वज्र छाप नवनेव चौरासो सिद्ध ।

End :—मंत्र सांप का । भूलि मिलि कंव घंटा मन्नाइ अन्है विषमधा महादेव विधि बायर कत्ता विषा समपात कल पेहि के विष लई चलि धेनु धंग सुंके तब धावे ओ मैं पाई सान सराई देउ थाप गाठ बैठाइ थाग्द चन्द्रमा सोरह जोन जागता महादेव के दोहाई गौरा पार्वतो लोहा चमारिनि के दोहाई यहं मंत्र पढ़िके जहां काटे तहा गोह तरके धूरि मंगे कुराके देव । मंत्र धंधना छुटावे क ॥ छुरंत वेवगो पसरंत विषा पसरहु चारिहु दिशा ॥ २ ॥

अग्नि बंधन मंत्रः अथ अग्नि ज्वर लंते पर जरै जरै महेस कथा भा ब्रह्मा विष्नु महेस तोनो चले केदार तीनि चलते हो । चढ़ैा आगि छोड़े परै तुषार मे से हाथ का धार जरै हनुमान जलो कसेत वन जरै ॥१॥ कालो नागिनि किम फिलंति पाकति धनुष कंत पढ़ो तेल मंतर से दोउ पानो तोनि नसि घते हराई हनुमंत था मैं स तेल कराहो प तेल था मम्रापि सोता सती को लाप दोहाई मंत्र ठाहुम बनाइ कपार पर छुरै वारन धरै ॥ मंत्र लगावै को युक्ति ॥ पिसान सुवा सेर ते कर महादेव बनावे तेहि वाद चावहि लिपर जाय ॥ अथ मारणम् ॥ यो भूतो भैरव मम मे मम भादाय पक्ष पतारि पुविष्टा व लक्ष्मलश्राय छुप संपुट ।

Subject:—प्रथम प्रकाश–आदि मंत्र, आत्मकृष्क मंत्र, प्रेतादि प्रयोग, धनुष बंधन मंत्र, अग्नि स्तंभन, और तैल स्तंभन आदि मंत्रों का वर्णन ।

द्वितीय प्रकाश—ज्वर झाड़ने का प्रयोग, सौंधी निवारण प्रयोग, दांत झाड़ने की विधि ।

तृतीया प्रकाश—गोमहिष्यादि दुग्ध वर्धनमंत्र, स्त्री गर्भधारण, गर्भरक्षा बाल रक्षा, और मक्षिका संजीवनी आदि प्रयोगों और मंत्रों का वर्णन है ।

चतुर्थ प्रकाश—विशोपशमन, कुक्कुर काटने पर मंत्र प्रयोग, बिच्छू मंत्र सर्प प्रयोग, सांप, मुख, नेत्र, आदि झाड़ने के मंत्र ।

पंचम प्रकाश—मोहिनी प्रयोग, स्त्री वशीकरण, मारण प्रयोग, कटोरा चलाने के मंत्र।

षष्टम प्रकाश—ज्वर, अजीर्ण, शिर पीड़ा, कर्ण व्यथा, शिषा बंधन, मारण, वंशोत्पत्ति करण आदि मंत्रों का वर्णन।

No. 565. Siddhānta. Leaves—16. Deposited with Pandita Rāmasvarūpa Śarmā, Pandita-kā-puravā, Maujā Bhadhu, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning :—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ अथ सिद्धांत लिष्यते ॥

ॐ अब आगे श्री गुरु राम नंद अवधूता।

सेल्ही सिंगी जग अंगोटा पत्र पांवड़ी दंडक छोटा ॥

रोलो रंडा चवर अढानी। दीनी अलष काम अहदानी ॥

कुवजा कड़ा सुमरनी माला। भेष की लाज भगवान रखने वाला ॥
साकरी संथ गुदरी तू भी बाजे मोचंग मुरली पंखी अचला टोपी मोर कलंगी ये रावे साधू बहु रंगी ॥ पांच सांकरी गोरष धंदा। साधू सूरति कर राषे बंधा ॥ कड़िया का दंड बाइबंद अजरा ॥ बटुवा सुई सुई का धागा। चोला अलगा सीवन लागा ॥ थैला काला डोरा ये साधू का चोला। पट्ट कुहाड़ी फरसी गुपती। देषो परघट नहीं छिपती ॥

End :— ॥ चूला चेति मंत्र ॥

ॐ सब्द का पात्र अंत्र का चूला। रसोई करै जानकी माई ॥

सात समुद्र जल अठारे भार नास, पत्तों लकड़ी आनी ॥

सिव प्रधान ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवता जिनसे हित सनेह ॥
रिधोजारे बंत पुर नाओेड दूर गनेस जो उजंत आवे जर मरे सो बैकुंठ प्राप्त होय। मंथ पढ़े चूला चेतावे। सो संत परमपद पावे ॥

॥ इति चूला चेताने का मंत्र ॥

हो लक्ष्मी माई सत्त की सवाई। चढ़े भंडार करै सहाई।

रिद्धि सिद्धि बटैला राज रामचन्द्र की दुहाई ॥

अब पूरजा महादेव की पूरे गनेस। सिद्धी आदि बंत की बानी ॥

आकास देवी पाताल कूवा लक्ष्मी आइ भंडार किया ॥

लक्ष्मी गई सुख के पास। हम रहे सबु के पास ॥
सात समुन्द जल ले आवे। अठारभार बनास पाती लकड़ी आनो ॥ ब्रह्मापती अग्नी ॥ पत्ती ले चेतानो ॥ लक्ष्मी गई ब्रह्मा के पास आठ पहर चौसठि बीर भंडार किया तीन लोक का उदर भरा। पढ़ि मंत्र भंडार चेताने। सो संत परंपद पावे।

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक—गुरु रामदास की पंच मात्रा।

(२) पृ० ७ से पृ० १५ तक—आभूषण मंत्र, श्री मंत्र, अलकी मंत्र, सनकादिक मंत्र, कुंची मंत्र।

(३) पृ० १६ से २४ तक—निरंजन तारक मंत्र। सिन्दूर चढ़ावन मंत्र। वैराग्य बीज मंत्र। अमर बीज मंत्र। ब्रह्म तारक मंत्र, जटा मंत्र।

(४) पृ० २४ से पृ० ३२ तक—मरघटी मंत्र, कामधेनु मंत्र, चूल्हा चेतने का मंत्र, लक्ष्मी मंत्र। भंडार चेतने का मंत्र।

No. 566. Śikshāśatārdha. Leaves—7. Dated in Samvat 1925 or A.D. 1868. Deposited with Paṇḍita Rājarāma, Village Narahā, District Sītāpur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ अथ शिक्षा शतार्ध लिख्यते॥ दोहा॥ कहिये बात प्रमान की ज्यों की त्यों दरसाय। बिन सोचे भाखै वचन फिरि पाछे पछिताय॥ करत अनीती दुष्ट नर रहत अडर जग माहिं॥ अवस दुर्दसा होति है यह बाको मति नाहिं॥ सुधरो कारज आप के करत भंग जो कोई। जितने वो कारज करैं वाको एक न होय॥ जो झुट झुट बातें करै वाको सब सुनि लेई। अशुभ बात को छांड़ि के शुभ मन में धरि देइ। आगो पीछो सोचिये वासो चतुर कहाय। बिन सोचे जो कोउ करै निश्चै धोखो खाय॥ निबल सहायक हुजिये जो वह सांचो होय। सबल चोर सब होत है धर्म न देवै कोय॥ प्राण जाय जाते रहै मिथ्या दीजे त्यागि। जो असत्य बोले मनुष्य लागै कुल को दाग॥ बिपता काहू पै परै तब कीजे उपकार। कबहुं न कबहुं आपनो कारज देय सभांरि॥ कबहुं न मांगै मित्र सो कछु वस्तु यह जान। जो जन मांगत है अवस कौन होत है मान॥ दुर्जन अप सो आप के पेटो जाय सुनाय। शब हंसि के सुनि लीजिये क्रोध शीघ्र मिटि जाय॥ नीच आयके जो संमुख पड़ि जाइ। तौ चुप के ह्वै बैठिये बल तुरंत घटि जाय॥ परनारी को देखिबो चतुरन को नहिं काम। तेज घटत सब अंग को पावत अपजस धाम॥ नीच चोर ओछेन को कबहुं न कीजे संग। वा संगति से आपनी होत प्रतिष्ठा भंग॥

End:—मीत मीत में कहत कछु राखै मन के माहिं। जैसे पानी दूध में मिलि के निकसत नाहिं॥ जो आप को शिक्षा कहे सुनिये कान लगाय। हेत हूं के बात को अपने चित ठहराय॥ जो तुम जानौ मीत सों प्रीति किये दुख होय। तौ कबहु मति कीजिये वाको संगत कोय॥ ओछे जन को प्रीति को बरनन करौं बखानि। बरत बबूला नीर में ताको प्रीतिहि जानि॥ जो आप सो रिपुता करै ताको मन मति देव। अपनो भेद नहि दीजियो वाको मन हरि लेव॥

जो पाये। या जगत में जीव धारि के देह। पालन सब को ईश यह करिके पित सम नेह ॥ जो पाये। या जगत में झूठ न बोले कोय। झूठ पाप को मूल है ताको फल दुख होय ॥ प्रातहि उठि के ईश को धरो चित्त में ध्यान। धन कीरति यश जस बढ़े हिय सो उपजै ज्ञान ॥ सकल सृष्टि में आय के करै कोऊ उपकार। वाके मन प्रभु या बसै होय जाम उद्धार ॥ मिथ्या को सांचो किये मिथ्या तेहि पछिताहि। जैसे घाव पुरे हुए तासु पोज ना जाय ॥ जैसो हो वैसो कहो मत कहो कछु बढ़ाय। जाते जन सन पाय ले झूठ कहि नाहि बुलाय। प्रभु में चित लगाय के करै पुन्य अरु दान। यही दान फल दान है जग में हो जस मान ॥ काहू सो लड़िबों नहीं आपिन राखै लाज ॥ बनै आप सो तो कछु करि दीजै पर काज ॥ परसु काज को जो करै यही वाक्य दृढ़ मान। दिन दिन प्रति संपति बढ़े हो सहाय भगवान। मित्र जानि के मित्र सों कहै मित्र कछु आय भलो बुरो जो हो कछु राखो वाह छिपाय ॥ काहू सो वैर न करो राखो सब सों प्रीति। उत्तम जन जो जगत में उनको यह है रीति ॥ पंडित पद पाके करै जो अधरम को बात। ताको उपमा यो लखो दोप आंधरे हाथ ॥ इति शिक्षा सतार्थ समाप्त शुभ मस्तु मितो माघ बदी १३ संवत् १९२५ ॥ श्री शिवायनमः ॥

Subject :—५० शिक्षापद दोहे।

No. 567. Śodhaka-Paṭala. Leaves—36. Deposited with Bābū Tribenīprasāda, Sub-Court Inspector, Davariyā, Gorakhapura.

Beginning:—अथ सोधक पटलभाषा विधि शुभ उपार्जन अतः लक्षण जो हाड़ निकलवाना होय अथवा पानी निकलवाना होय अथवा देवता भूत जो चोज जमीन से निकलवाना होय ताको विधि ॥ मंजू का बाबा केरा के काठ चोतो कैाड़ो सादो कैाड़ो दश गंदा ॥

॥ विधि ॥ कोल के पांच ईटा पांच पोर के पांच खूंटा अंबेरा के पांच पत्ता पीपर के सेमर के बर पीपरि गभारी पाकड़ो पांच खूंटा करके सेन्दुर गुग लोहा हरदी तीन वस्तु जनेऊ करुआ नरियर कपूर ॥

End :—प्रथम ॥ १ ॥ गर्भ के महीना जानने कोरो प्रश्न लगने से शुक्र जितनी राशि पर है उतना महीना गर्भ के स्थित जानो। और ग्यारहवें दशवें भाव में है तो पंचम भाव से रखना ॥ १ ॥ गर्भ का कुशल जानना। यदि पंचम भाव का स्वामी तथा शुभ ग्रह पंचम भाव को न देखता है अथवा ना युक्त है और पाप ग्रह देखता है या युक्त है तो गर्भ का पतन कहना अन्यथा नहीं ॥ २ ॥

प्रश्नकर्ता के। चाहिये कि प्रथम मकान गिन वावे फिर ४ उसमें जोड़ लेना ताके पंच गुना कर लेना फिर २५ बढ़ाकर लेना ताके ५ का भाग देना जो लब्धो पावे इसमें एक युक्त करना उतना ही प्रमाण जानना ॥

Subject:—पृ० १ से ६ तक—ज्योतिष ग्रंथ ग्रहण से फलित तथा तंत्र का ज्ञान हाड़ और द्रव्य इत्यादि भूगर्भ का हाल जानना। ६—११ तक—जल साधन दूत परीक्षा, मकान परीक्षा, मकान शकुन परीक्षा, भय का ज्ञान, अग्नि भय ज्ञान, भय की शांति के उपाय, यंत्र चालीसा, बहु यंत्र। पृ० ११—१४ तक—द्रव्य निकलवाने की विधि बादशाही अथवा बलिदानी द्रव्य की शांति का उपाय, यंत्र बीसा, यंत्र तीसा, यंत्र चालीसा, यंत्र पचासा, यंत्र ७० । २० । ९० । १०० । ११० यंत्र २० । ४२ । ३८ । ३६ । ४६ । ३४ । ७२ । ५२ । (इन यंत्रों से अनेक प्रकार के भय की शांति होती है। यंत्र पटलका समूह १३,२०० यंत्र कपूर के राम नाम के अंका प्रश्न करने की विधि वर्णन आठ प्रकार के मंत्रों का समूह। दोष शांति के मंत्र नक्षत्र परीक्षा तिथि परीक्षा दिन परीक्षा, तथा शुभा शुभ फल देखना पाप ग्रह चक्र, पाप ग्रह से फल निकालने की विधि।

अंक जानने की विधि अनेक प्रकार की बीमारियों की शांति के यत्न, यंत्र चक्र, गर्भ का महीना जानने की विधि—

No. 568. Subhākhita-Dohā. Leaves—28. Dated in Samvat 1917 or A.D. 1860. Deposited with Lālā Prabhūdayāla of Ālamanagara, Post Office Lucknow (Oudh).

Beginning:—अथ सुभाषित दोहा लिख्यते ॥ अलप थकी फल दे घना उत्तम पुरुष सुभाय। दूध भरै तृण को चरै ज्यों गोकुल की गाय ॥ जेता का तेता करै मध्यम नर सनमान। घटै बल नहि रंचहू अधम कोयरै धान ॥ दीजे जेता ना मिले अधम पुरुष को दान। जैसे फूटे घट भरो मिले अल्प पचवान ॥ भला किये करि है बुरा दुरजन सहज सुभाय। पय पाए विष देत है फणी महा दुखदाय ॥ सहै निरादर दुर वचन दन्डमार अपमान। चोर चुगुल पर दार रत छीम वार अज्ञान ॥ अमर हरि सेवा मानुष की कहाबात ॥ जो नर शील संतोष गुन करै न पर की घात ॥ अगनि चोर भूपति विपति हरत रहै धनवान। निरधन नींद न शंकले मानै काको हान ॥ एक चरण जो नित पढ़ै तो काढ़ै अज्ञान ॥ पनिहारी को नेज ज्यों सहज कटै पाषान ॥ पतिव्रता सत पुरुष की यही रीति नहि जाव। भूष सहै दारिद सहै करै न हीन उपाय ॥

End:—विद्या दिये कुशिष्य को करै सुगुरु अपकार। लाय कढ़ायो आमआ पोसे के अधिकार ॥ ना जाने कुल शील के ना कीजे विश्वास। दास

मात जाते दुखी ताहि न रखिये पास ॥ मक्षिका जोगी भूमि पति बानर वहि मांजार । इनते राखे मित्रता परे प्राण उर भार ॥ पट पनही बहु खीर जो औषधि बीज अहार । ज्यों लाभै त्यों लीजिये कीजे दुष परिहार ॥ नृपति निपुन क्यों न प्रजा की हान ॥ धन कमाय अन्याय का बृष दश थिरता पाय । रहै कदा षोड्स बरस तो समूल नस जाय ॥ गाड़ो जो तरु उदधि बन कट कूप निरराज । दुर विष में नो जीवका सो बो करै इलाज ॥ जाते कुल शोभा लहै सो सपूत वर एक । भार बहे के टूं चरे गरधव भए अनेक ॥ दूध रहित घंटा सहित गाय मोल क्या पाय । त्यों मूरष बाठो पाकर नाहि सुघर हो जाय ॥ कोकिल प्यारो बैन ते पति अनुगामी नार । नर वर विद्या जुत सुवर तप वर क्षमा विचार ॥ दुर वसन नर दुत गुण भूपति हेत मिलाय । हाक नृप राजि केतकी बास प्रगट हुइ जाय ॥ इति श्री सुभाषित दोहों का संग्रह संपूर्ण ॥ लिषा बैद्यनाथ त्रिपाठी संवत १९०५ वि० फाल्गुन कृष्णदाई शुक्र ॥

राम राम राम राम राम राम राम ॥

Subject :—शिक्षापद दोहे ॥

No. 569. Sukabahatri. Leaves—87. Dated in Samvat 1931. Deposited with Paṇḍit Rāmanārāyanadattaji Śastri, Village Jñaṇapuratera, Post Office Lakhimapura, District Kherī (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शुक बहत्तरी (शुक प्रभावती संवाद) लिप्यते ॥ प्रणम्य शारदां देवीं दिव्य ज्ञान समन्वितां ॥ मन चित्त विनोदार्थं क्रियते शुक बहत्तरोम ॥ १ ॥ एक पृथ्वी के बिषे चन्द्र कला नाम नगर है । वहां राजा विक्रमसेन राज करता था तहां हरदत्त नाम सेठी बसता ताको सुर सुंदरी स्त्री ताको पुत्र मदन ताको रतनसेन की बेटी प्रभावती से ब्याह किया सो रूप लावन्य युक्ता से ब्याह किया मदनसेन आसक्त हुआ दमभर जुदा न होता पिता मन में चिंता करता पुत्र व्यापार नहीं करता स्त्री से आसक्त रहता है इससे क्षय रोग होगा यह समझकर चिंता करने लग्यो इस हेतु में जो बात प्रगट भई सो कहते हैं ॥ चित्त दे सुनो एक विदेशी ब्राह्मण विक्रम नाम का था सो वह गंधर्व पर्वत को गयो उस पर्वत पर एक सिद्ध महातपस्वी तप करते देखा जाके दंडवत कियो तब सिद्ध ने बहुत आगत स्वागत किया तब ब्राह्मण ने कहा एक वस्तु जो अपूर्व हो सो दीजिये किस वास्ते कि जो पृथ्वी पटन रहते है । कथा वार्ता बिन चित्त लगता नहीं और जो देसे दिगीश्वर के पास से भी नहीं पाऊं

तो कहां से पाऊंगा जो रिषि को सेवा करै तो बिहतर है सो निरफल नहीं। ॥ श्लोक ॥ अमोघा वासरे विद्युत अमोघं निशि गर्जितं-अमोघा च सतां वाणी अमोघं सिद्ध दर्शनम्। आगे और ऐसा ब्राह्मण ने कहा तब सिद्धि ने ध्यान किया उस समय एक सुवा एक सारो सिद्धि के दृष्टि आई उन दोनों को जन्मान्तर की बातें जानबे में आई कि ये दोनों गंधर्व हैं कोई रिषोश्वर के साप से सुवा योनि पाई है और रिषोश्वर अनुग्रह किया जो पृथ्वी के विषै मनुष्य भाषा किया प्रभावती आगे रात्रि को उपदेश करै अब यह सुवा गंधमादन पर्वत पर जायगा तब शरीर को छोड़ेगा फिर गंधर्व हो जावेगा अब शुक अपना शरीर बेचै मुहर ५०० को तो या ब्राह्मण को दिवावै तो पाप ते छूटै ऐसे सुवा सुवती को देव-रिषि ने कहा कि अरे शुक तू इस ब्राह्मण के संग जा और मुहरों का दान कर तेरा भला होगा इतना शुक सुन हाथ पर जा बैठा तब रिषि ने उस ब्राह्मण से कहा अय ब्राह्मण तू इसे ले जा जो कोई तुझे ५०० मुहर दे उसे दीजो मेरी आज्ञा से तेरा भला होगा ऐसा कहा तो ब्राह्मण उस सुवा को ले आज्ञा मांग चला ॥

End :—प्रभावती अपने पति सो बोली कि हे स्वामी तुम्हारे गये पीछे एक घड़ी मोको विरह उपज्यो तब एक दूती आई और मोको प्रबोधो तब मेरे भी मन में यह आई कि और पुरुष से भोग कीजै यह विचार कर सिंगार कर मैं चलीती समय सारी ने रोका बुरा लगा सो मैंने मार दई ता पीछे सुक सों पूछी शुक ने ७२ दिन कथा कह दिन बिताये और धर्म राख लिया मैं शुक के प्रताप सों रही ये कहीं तब मदन सेन सुक से कही कि सुक तुम सों चतुर कोई नहीं और तुम्हारे ही प्रताप सों मोको प्रज्ञा प्राप्त भई इस तरह कह तब वे शुक बोला मदन सेन तुम अपने पिता पास जाकर मोको आज्ञा मांगो सो मैं घर जाऊं क्योंकि मैं गंधर्व हूं रिषोश्वर के श्राप से शुक भया हूं तब मदनसेन पिंजरा ले सेठ के पास गया और पिंजरा दे के सब हाल कहा तब सेठ ने सुक से कहा कि उदास क्यों हो शुक ने कहा कि तुम्हारे पास रह कर कोई उदास न होगा अब मुझे आज्ञा दो आज्ञा पा विदा भया पर्वत को गया देह छोड़ गंधर्व भया और स्त्री पुरुष दोनों स्वर्ग में भोग करने लगे यहां मदनसेन और प्रभावती भोग करने लगे। इति श्री शुक बहत्तरी अर्थात शुक प्रभावती संवाद संपूर्ण समाप्तः लिषतं ब्याली-राम गिरि संवत् १९२१ माघ मासे कृष्ण पक्षे दशम्याम (श्री राम राम राम)

Subject :—(शुक और प्रभावती संवाद) चन्द्रकला नगरी का राजा विक्रमसेन था। वहां हरदत्त नाम का एक सेठ रहता था। जिसके कि सुरसुन्दरी नाम की स्त्री और मदनसेन एक पुत्र था। मदनसेन को रत्नसेन की बेटी प्रभावती ब्याही थी। जब कि मदनसेन देशाटन के लिये गया था प्रभावती पर

पुरुष से सम्भोग करने के लिये रवाना हुई परन्तु सारो ने उसे मना किया। उसको प्रभावती ने मार दिया फिर शुक से आज्ञा मांगी शुक नहीं न कर अपनी बुद्धिमानी से उसे प्रति दिन एक एक किस्सा सुना कर सान्त्वना देता रहा इस प्रकार ७२ दिन व्यतीत हो गए। ७२ वें दिन प्रभावती का पति आ गया। प्रभावती ने शुक की बड़ाई करते हुए सब वृतान्त सुनाया। मदनसेन भी बहुत प्रसन्न हुआ। शुक ने मदनसेन से कहा कि आप मुझे अपने पिता से आज्ञा दिला दीजिये तो मैं अपने लोक चला जाऊं। मैं गन्धर्व हूं ऋषीश्वर के श्राप से शुक हुआ था और अब समय खतम हो गया है। इस पर मदनसेन ने अपने पिता से सब हाल कह सुनाया और पिता ने शुक को छोड़ दिया। शुक पर्वत में जा देह छोड़ गंधर्व हुआ और स्वर्गलोक में अपनी स्त्री के साथ भोग विलास करने लगा। यहां प्रभावती और मदनसेन भी अपने दिन आनन्द से काटने लगे।

इसमें ७२ कथाएं अलग २ दी हुई हैं।

No. 570. Svargārohinī. Leaves—26. Deposited with Munshī Śivadhārī Lāla, Manjā Mamarejapura, Post Office Beniganja, District Hardoi.

Beginning:—श्री गणेशायनमः। श्री गुरु चरण कमलेभ्योनमः अथ स्वर्गारोहिणि लिख्यते। चौ० ॥ पारवती सुत सुमिरौं तोही। ग्यान बुद्धिवर दीजै मोही। सुमिरि सारदहि सुमति विचारी। करहु कृपा जन हुए बलिहारी। निशदिन मैं गुरु चरण मनावै। कथा कर पन्डव गुन गावैं। अठारह पर्व भारत के भयऊ। तापर अंत कथा यह ठयऊ। इसकर नाम सुनहु चित लाई। स्वर्गारोहिणि अति प्रिय भाई। सुनिये अमृत कथा प्रिय बानी। जिसमें मुक्ति मुक्ति की खानी। गुरु गोविंद के लागौं पाया। चितै सुदृष्टि करहु कछु दाया। द्वापर अंत आइ नियराना। तब अस पांडव कीन्ह पयाना सोइ कथा मैं बरनि सुनावै। अब तो कछु गोविंद जस गावै। राम नाम कलि नर्क नसावन सब के ऊपर है जग तारन। संख चक्र धर सारंगपानी। सुमिरो देव रमापति जानि।

End:—जब लगि राज्य जोग्य होइ जनमै तो पुत्र तुम्हार।
तब लगि राज लेहु तुम मानहु कहा हमार ॥ १७ चौपाई ॥
सुनि के परीक्षित रोवन लागे। परे ब्रह्म भ्रम करम अभागे ॥
मैं नहिं जानौ राज को भेवा। बिन महाहु अधविच सेवा ॥
सुनु राजा मैं कछु नहिं जानौ ॥ कह लगि अपनो कर्म बखानौ ॥
तुम मोरे तात निरंजन देवा। ना जानौ जग और को भेवा ॥
कह मोहि छांड़ि के चले भुवारा। कहा पाप तुम करो चंडारा ॥

दो०—कहै परीक्षित तात यह सुनु सात दोष के राज। राज पाट धन धरती मोरे कौने काज। १८॥ चौ०—राजा कहै भीम सुनु भाई तुम ही पाट देउ बैठाई। भीम कुंवार को पाट प्रधाना है कान्या सिंगासन थाना।

Subject:—१—अयोध्या मथुरा काशी आदि की महिमा—गंगा महात्म्य। वैशंपायन का जनमेजय के यहाँ आगमन।

२—वैशम्पायन का पांडवों की कथा जनमेजय को सुनाना—महाभारत का युद्ध, युधिष्ठिर का राज सिंहासन पर बैठना।

३—युधिष्ठिर का भाइयों के मारे जाने पर पश्चात्ताप। कृष्ण के पास पांचों भाइयों का आगमन।

४—कृष्ण का पाण्डवों को उपदेश—कलि कथा।

५—केदार यात्रा के लिये कृष्ण का पाडवों को उपदेश, परीक्षित को राज्य कार्य सौंपकर पांचों भाइयों की यात्रा।

No. 571. Svarodaya. Leaves—6. Dated in Samvat 1917 or A. D. 1860. Deposited with Thākura Brajabhūshaṇa Siṁha of Jhukavārā, Post Office Pariyava, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री रामायनमः॥ नाभी के ठिकाने कंद है तहां ते सकल नाड़ी उपजति है यहां रात्र के मध्ये २१,६०० तिनकी नाड़ी॥ ७२,०००॥ तिन विषे दश उर्ध्व॥ दश अर्द्ध॥ दो दो तिरीछे है॥ ऐसी नाड़ी चौविस श्रेष्ट है तिनके श्रेष्ट १०॥ ऊर्ध्व॥ अर्द्ध॥ १॥ तिन विषे तिनकी मध्य मार्ग को बवरि है। एक इड़ा नाड़ी बाम, नाड़ी चंद्र की है। दूसर पिंगला नाड़ी सूर्य की है तीसर सरस्वती सुष्मना हय॥ मध्य नाड़ी अग्नि की है॥ क्षन वाम क्षण दक्षिण है॥

End:—पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश॥ १५०॥ १२०॥ ९०॥ ६०॥ ३०॥ यह श्वास की मर्य्यादा है॥ एक स्वर की नाड़ी पंच घटी प्रमाण है॥ एक नाड़ी पंच तत्त्व वरत हैं॥ इति स्वरोदयमतम्॥ लिष्यतं लाला सीताराम माघ सुदी १॥ संवत् १९१७॥ श्री चित्रकूट सीतापुर ग्रामे॥ ....

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० ३ तक—नाड़ी का वर्णन। चन्द्र कर्म, सूर्य कर्म, पक्ष विचार, वार विचार, संक्रान्ति विचार।

(२) पृ० ३ से पृ० ५ तक—पुनः वार विचार, स्वविचार, युद्ध विचार, पंच तत्त्व भेद।

(३) पृ० ५ से पृ० ६ तक—मैथुन विचार, तत्त्व विचार, प्रश्न विचार।

(४) पृ० ६ से पृ० ९ तक—पुनः तत्त्व विचार, आयु विचार, रोग संबंधी प्रश्नों का विचार। काल-ज्ञान विचार।

(५) पृ० ९ से ११ तक—नाड़ी-प्रवाहनादि क्रिया का वर्णन। अष्ट दल प्रमाण। तत्त्व भेद।

No. 572. Tikārirajya-kā-Itihāsa. Leaves—39. Deposited with Mannūlāla Pustakālaya, Gaya.

Beginning:—श्री मतेरामानुजायनम् ॥

॥ दोहा ॥

सुमिर समीर कुमार पद। श्री गुरु पद युग कंज।
परम भागवत नृपति को। कहौं चरित प्रति मंजु ॥ १ ॥
मिथिला अवधि प्रवासते। प्रकटे निर्मल इन्दु।
कीकट अमल अवास में। वरषो अमिय रस स्यंद ॥ २ ॥
सिव हर रजधानी बड़ो। तिरहुत देस पुनीत।
भातृ पक्ष में प्रगट भये। जनु ध्रुव भई सुनीत ॥ ३ ॥
माता मुत हरषित भये। राधा मोहन साहि।
जैथर वंशी धन्य मैं। ध्रुव सम नाती जाहि ॥ ४ ॥
दिये दान द्विज पोलि के। रतन खजाने खोलि।
किये निछावर गुनिन को। भूषन वसन अमोल ॥ ५ ॥

End:—परम पुनीत कार्तिक मास जिसमें श्री वैकुंठ का खुला दरवाजा रहता है श्री सीताराम जी के ध्यान मेरे मन को मग्न करके अपनी माता श्री मन्महारानी इन्द्रजीत कुंवरि साहिब से कहा माता जू मैं श्री सीताराम जी के नित्य पारषद हूं प्रभु आज्ञा से श्री महाराज हित नारायण सिंह जी बहादुर का परलोक बनाने के लिये पृथ्वी तल में अवतार धारण किया था सिवाय उनके परलोक बनाने के हम अपने माता पिता के और हजूर के परलोक नहीं बना सके अब मैं श्री सीताराम जी के धाम में जाता हूं।

\+ × ×

Subject:—पृ० १ से पृ० १० तक—मंगलाचरण, राजकुमार रामकृष्ण का जन्म, उनकी जन्मकुंडली तथा नामकरणादि संस्कारों का वर्णन, श्रीकान्तजी से विद्या पढ़ना और गुरु मंत्र लेना तथा तत्त्वज्ञान का श्रीगणेश।

(२) पृ० १० से पृ० २३ तक—कुमार का सीता कुंड को गमन, श्री राघवदासजी परमहंस से भेंट तथा प्रश्नोत्तर। कुमार का युक्तिपूर्वक प्रश्नोत्तर में अपनी योग्यता प्रकाशित करना, गुरु का संक्षेप में ज्ञान प्रदान कर घर को लौटा देना।

(३) पृ० २३ से पृ० ३६ तक—कुमार का टिकारी आना और महारानी की ओर से दीवानी करना, राजा हित नारायणसिंह का उन्हें दत्तक पुत्र मान लेना

ग्रौर युवराज की प्रार्थना पर उन्हें धर्मोपदेश देना; मालों के सदृश राजा के सात धर्म; मन्त्री ग्रौर राजा के पारस्परिक व्यवहार तथा उक्त पदाधिकारियों के लक्षण।

(४) पृ० ३७ से पृ० ७८ तक—राजनीति सम्बन्धी प्रश्नोत्तर, राजा का मंत्रियों की बुद्धि की परीक्षा लेना, अठारह प्रकार के व्यवहार का वर्णन। पंच वर्ग का चिन्तन, सरकारी खिलग्रत प्राप्त होना, महाराज का प्रजा ग्रौर अपने छोटे दामाद को उपदेश देना।

No. 573(*a*). Vaidyaka. Leaves—120. Deposited with Paṇḍita Dīnanātha Miśra of Fatehpura Chaurāsī, Post Office Saphipura, District Unnāva (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ अथ सप्त धातु सोधव मारणं माह॥ प्रथम धातु नां संख्या माह॥ स्वर्ण रौप्यंच ताम्रंच रंगं यशद मेव च शीसं लोहं च सप्त एते तवः कथिता बुधैः॥ सोना, रूपा, तांबा, रांगा, जस्ता, सीसा, लोहा॥ अथ शोधनं च। एक तोला सोने का कंटक वेधी पत्र भाठ करै येही भांति रूपे का ग्रौर सबकुं गरम करै पहिले तिल के तेल मा बुझावै वार ३ पुन। गाई के माठा मा बुझावे वार तीन। कुरथी के काढ़ा मा बुझावे वार तीन पुनः गोमूत्र मा बुझावे वार तीन तब साती धातु सुद्ध होय॥ अथ मारण माहा। पारा टंक १ गंधक शुद्ध टंक २ इन दोनों को कजरी करै पीछे मदों के रस ते घंटे घरी व तब सोधा सोना का चूर्ण टंक तीन सु कजरी मा मिलावे निबुग्रा के रस मा मिलाइ कै एक घरी घोटै जब गाढ़ा हो जाइ तब एक टिकरी बनाइ कै घामें मा सुषाय डारै तब सराब संपुट में राखि के सेधी सो मुंदि कै कपरौटी करै गज पुट पांच तरे देह तौ भस्म होइ॥

End:—अथ बाजी करण। कामेश्वर चूर्ण॥ गोषरू, केवांच २। ककड़ी के बीज १। शतावरी १। विदारी कंद का चर्ण २। खीरा के बीज २ असगंध २ कुसे के जरि का बकला १२ मूसरी गुरिच कै मेदा रक्त चंदन तज पत्रज इलाइची पीपरि ग्रांवरा लवंग नाग केसरि यह सब अधेला भरि सब का चूर्ण करै। वरि ग्रारा के जड़ के काढ़ा को सात भावना देइ। सेमर के काढ़ा को सात भावना देइ फेरि कुश कास सिरसा के जरि के काढ़ा कर सात भावना देइकै सुरै डारै फेरि समान चीनी डारि कै अधेला भरि रोज खाय ऊपर से गाय का दूध एक पाव पीवै तौ रति की बड़ी शक्ति होय। मूत्रकृच्छ्र मूत्रा घात प्रमेह जाय। इय तुल्य पटा काम होय॥ गत वीर्य को ग्रौषधि॥ चिकनी सुपारी दहिको दस टका भरि गाय का दूध ८० टका भरि गोघृत ४ टका भरि चांद

५० टका भरि गुजराती इलायची गुलसकरी को अरि का बकला बरी पारा के जड़ को बकलो पीपरी जावत्री सूंठि सुगंध वाला मोथा त्रिफला बंस लोचन शतावरी केवांच के बीज छुहारा तोपुर मगरैला बेर को गुदा जटा मासी सौफ असगंध लवंग ये सब टका टका भरि कपूर रसा, सेंदुर बंग नागेश्वर अबक यह सब एक एक पैसा भरि प्रथम सुपारी बारीक कतर कर के मन्दाग्नि ते पाक करै जब बारीक खोहा होइ घी मद्ध डारै कढ़ारै उतारि के शक्कर मिलावै फेरि काष्टादि मिलावै तब एक घोड़ा बासन मा मिलावे प्रातःकाल एक पैसा भरि खाय तो बहुत पुष्टि होय वीर पराक्रम होय ॥

Subject:—वैद्यक वर्णन ॥

No. 573(*b*). Vaidyaka. Leaves—30. Deposited with Paṇḍita Śitalaprasāda Dikshita, Village Sikari, Post Office Tambaura, District Sitāpur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अरप इनाइ का गुन ॥ अरप इनाइ तोले १ अरप कदवा तोरई का मासे ३। अरप मिर्च का मासे ४ अरप पीपरि का मासे १ इनको मिलाइ पीवै उन्माद नासै ॥ खसा जुर नासे उद्वेग नासे सुकजुर जाइ। प्रमेह नासे, सन्निपात नासै, छाती का सूल नासै विषमज्वर नासै। पेट का सूल नासै। भूष होइ अग्नि खुले, सोथा नासै, येते रोग नासै। अरप सौफ का गुन ॥ अरप सौफ का तोले १ दाष तोला १ ताके बीज निकारि डारै इनको मिलाइ पीवै तब मल को झरि जाइ। पेट का सूल जाइ अरप सौफ का तोला १ सहत तोला १ पीवै अतिसार जाइ छर्दि नासे भूष लागै अग्नि खुले सन्निपात नासै पेसाब खुले दालि चाउर पथ करै ॥ अरप जीरा का अरप जीरा तोला १ मिर्च मासे ६। अरप मिर्च का मासे ३। इनको मिलाय पीवै लय जुर नासै गर्मी नासै परमेह नासै ऐते रोग नासै पट बयाला मनै।

End:—अथ तेल महातम। तिल का तेल सेर ४। आमा हरदी पाव सेर सिंधिया बाहर टंक २० सफेदी घुघुची टंक २० छीम को जर पाव भर गुमा को जर पाव से ठठौना मदार को जर पाव सेर सिंभोटा को जर पाव सेर इदानी को जर आध पाव कठेर को जर आध पाव मुरवारी को जड़ पाव सेर वाइ मुरको आध पाव अजमाइन आध पाव इन सब को तेल में औटे जब पाकि तब उतारि लेइ जितनो यह तेल होइ उतनो रेंडी का तेल लेइ तितनो महुवा को तेल लेइ। तीनों को मिलावे जोमु देइ तब लगावे जो कमर वाइ से रहि गई हो सो नीक होइ जाकी पीठि कुबर निकरि आया होई सो नीक होई जाको कमर टेढ़ी हो गई हो सो नीक होइ। पाज पाई जाय और पेमन वाई जाय रापिन

वाइ जाइ । नटो टेढो हो गई होइ सो नीक होइ चौरंग वाइ जाइ गठिया वाइ जाइ प्रसूत जाइ संधि सेधि को वाई जाइ झोला वाइ जाइ सर्व अंग वाइ जाइ येते रोग जाइ ।

Subject :—अनिल रोग और उनको ओषधियां, अर्क तथा चटनी के गुण और उनके बनाने को विधि ।

No. 574. Vaidyaka-Pharāsīsa. Leaves—20. Dated in Samvat 1840 or A. D. 1783. Deposited with Paṇḍita Śivadulāre, Village Varanāpura, Post Office Visva, District Sītāpur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वैद्यक फरासीस ग्रंथ लिख्यते ॥ प्रथम नमस्कार के दोहा ॥ प्रथम गवरि गनेस सरस्वति आग्या पाऊं हो अवीन मति हीन बरनि करि सके कहा लो तुम गुन अपरंपार ॥ व्याप रहे त्रिभुवन जहां लों फरासीस ने विचार के भेद कहे ताके भेद सुनी । गुरु आग्या बिन कछु न होइ चारि रितु प्रगट करि कहे अब सुनो जिमि के सब भेद ॥ अथ रितु विचार बरन ॥ शरीर में चार कोठा है । एक कोठा में अग्नि है तहां ते छुधा लगत है प्रथम जल को कोठा ताके में रग है सो ऊपर को चली । दुसरे कोठा में अन्न रहत है । तिसरे में जाय के भस्म होत है । चौथे में मल संचत है । दो नीचे को चले एक दाहिनी तरफ़ एक बाईं तरफ नीचे की पवन को तरफ आई । बाईं तरफ के बाईं के रग में चार अंकुर फुटे । एक नीचे को एक बाईं तरफ एक दाहिनी तरफ एक ऊपर को चली दाहिनी तरफ की बाईं रग में ते चारि अंकुर फुटे । एक नीचे को गई एक बाईं तरफ गई एक ऊपर को गई । दो रगें तिन में ते दो दो फुटी दो दाहिनी को दो बाईं को ॥

End:—अथ सीत ते गरमी जुर । तरे पेसाब कांसे के सो रंग होय तामें सरबत के सो रंग मिल्यो होय तो सीति ते गरमी विकार जानिये ॥ ताके लछन ॥ पेट में दर्द होय नीचे के आधे अंग पसीना आवे ॥ छाती में दर्द होय सिर दुखे उबक होय हाथ पांव जरे आंखो सुरख होय अतीसार होय स्वांस होय कफ डारै पेट में दरद होय छाती भरी रहे । उबक हाड़ फुटन होय ॥ अथ मल ते वाय ॥ पेसाब को तेल केसा रंग होय तामें भूरा रंग मिलो होय तो मल ते वाय विकार जानिये ॥ ताके लछन ॥ भ्रम होय सिर दुखे आंखी अफरा होय माथे पसीना आवे उबक होय ॥ अथ सित ते मल जुर जो पेसाब कांसे केसा रंग होय तामें तेल केसा रंग मिल्यो होय तो सीत ते मल विकार जानियो ॥ ताके लछन ॥ मल बंद होय पेट में शूल होय हाथ पांव में जलन होय ज्वर होय हाड़ फुटन होय तो

मल ते शुक्र जानिये ॥ अथ शुक्र ते मल जुर ॥ जो पेशाब को रुपे के सो रंग होय तौ मेलने कैसो रंग मिलो होय तौ शुक्र ते मल विकार जानिये ॥ ताके लक्षन ॥ अब लोह बेठे उचक होय मल चढ़ि आय चल हिन होय दाह जुर होइ चित्त भ्रम होय ॥ जितना पाया उतना लिपा पुस्तक विच पाया । लेखक रामनाथ शुक्र संवत् १८८० वि० पुस्तक प्रति उत्तम वैठक जानिवे के लिये है ॥

Subject :—रोगों के नाम, उत्पन्न होने के चिन्ह और लक्षण आदि ।

No. 575. Vaidyakasāra-Saṅgraha. Leaves—31. Dated in Samvat 1891 or A.D. 1834. Deposited with Paṇḍita Tārāchanda Munima, C/o Messrs. Murlidhara-Mahādevaprasāda, Sirasāganja, Mainapuri.

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वैद्यक सार संग्रह लिष्यते ॥

दो०—गज मुख मोदक सुभग अति, एक रदन भ्रम वन्द ।
भाल बाल विध अतुल से, सुमिरौं गिरिजानंद ॥

किया पाठ पागनो ॥ सोंठि टंक १० पीपर टंक १० ओरा टंक २ तज पत्र टंक १५ धना टंक १५ नागर मोथा टंक १५ नागकेसर टंक १० इन्द्र जव टंक १० मोचरस टंक १० लाल मषाना टंक १० सेत मुसरी टंक १० स्याह मुसरी टंक १० दालचिनी मुहरेठी टंक १० लोध टंक १० लाइची बड़ी टंक ५ लोंग टंक ५ कबाबचीनी मस्तंगी टंक ५ वंस लोचन टंक ५ सालम मिश्री टंक ५ छुहारे टंक ५ गिरी २० बादाम १० लोध टंक १० लाइचो बड़ी टंक ५ लोंग टंक ५ कबाब चीनी मस्तंगी टंक ५ वंसलोचन टंक ५ सालम मिश्री टंक ५ छुहारे टंक ५ गिरी २० बादाम १० दाने पोस्त टंक २० दाख टंक १० चिरौंजी टंक २० षकर करा टंक २ मिरच टंक ५ गोषरु टंक १० सहत टंक २० गिलोय टंक ५ करेष के बीज टंक ५ कौंच के बीच टंक ५ उसीर सत टंक २० सतावर टंक २० सेमर को मुसरा टंक २० मषाने टंक १५ षांड़ ८ सेर घी गाय का सेर १० ता पीछे पाठा को छीलि कतरा कर बीजा निकारि डारे तब पाग उतारि लेइ तब सिराये पाछे औषधि डारे मिलाय कै तब कोरी हांड़ी मिलाय दे तब कोरी हांड़ी मे कपूर लगाइ तामे राखै तब सकारे सांझ षाइ ज्वर सई धाम बात जाय महाबल करे ॥ इति पाठा पाग ॥

End:—औषधि स्वेत दाग ॥ कुटकी पल १ बड़ी पल हड १ तालीस पल १ बावचो पल १ बांटि बासी जल में गोलो करे बासो पानी में लगावे स्वेतदाग जाइ ॥

पाने को ॥ कुटकी पल ४ हर्रैपल २ बहेरापल २ आयफर २५ हरज वा पल १ वासी पानी सों पीस गोली बांधै चना प्रमान नित्य षाइ ॥ बासे पानी मैं चना का रोटी पथ्य पलोमी दाग जाइ ॥ लेप पुनर्नवा को जड़ १ अफीम १ सोंठि १ देवदारु १ बाट गोली मूल सों लेप करै ॥ ऊपर तमाषू के पात बांधै ॥ इति ॥ वैद्यक सार संग्रह ग्रंथ समाप्तं ॥ मिः पौष शुक्ल पक्ष तिथि सप्तम्यां भौम वासरे संवत् १८९१ समाप्तं ॥

Subject :—पृ० १ से पृ० १० तक—मंगलाचरण, काढ़ा पित्तज्वर, गर्मी का इलाज,फूलों तथा धुंध का अंजन। धातु क्षीण की दवा, क्रिया सार की दवा खांसी को सदर कफ को। कसीसादि घृत, मूत्र स्तंभ, घाव का मरहम। रक्त कुष्ट की औषधि, नेत्र संबंधी रोगों की औषधियां, पुष्टि कर्त्ता गुटका, लवंगादि चूर्ण, सफरो चिकित्सा। रक्तातीसार औषधि, बाल्य धुष चूर्ण।

(२) पृ० १० से पृ० ३६—नेत्रों का लेप, सतावार तैल, नारायण तैल, गर्मी को पुष्टि कर्त्ता औषधि। दन्त रसना तथा नेत्र संबधी चिकित्सा। ज्वर। प्रसूत कार्य उपचार। कुछ रस तथा क्रियाएं व गुटका। ज्वर लक्षण। काल ज्ञान परीक्षाएं (३) पृ० ३७ से पृ० ६२ तक—लंकेश्वर, गर्भस्थिति। कुष्मांड पाक, मुसलापार गुण। वज्रक्षार विधि, कूकर काटने की दवा, भगंदर की दवा, प्रदर तथा स्तंभन उपचार, बद की औषधि, अवाचार विधि, धातु पुष्ट की औषधि, कुष्मांड घृत, कचनार गुग्गल, पथ्यादि गुग्गल, शुंठि पाक, नारि के लिये पाक, सौभाग्य सुंठि, धान्य काष्ट, सन्निपात उपचार, दाद आदि की औषधि, धातुओं का शोधना, औषधि कुष्ट.

No. 576. Vaidyaka-Saṅgraha. Leaves—112. Deposited with Paṇḍita Durgādīnaji Dīkshita, Village Sikāri, Post Office Tambaura, District Sitāpur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ अथ कान की दवा बकुरी के फूल को मैदा दुइ रत्ती कान में डारै। तो आराम होइ कान का बहव बंद होइ ॥ बांसे की घुन मैदा कै कै दुइ रत्ती कान में डारै तौ कान की चिलकवी मिटै औ बहव बंद होइ। औ जो कान में फुरिया होइ तौ कौड़ी को भसम डेढ रत्ती गंगालिया के रस में मासा भरे में घोरि कै डारै ॥ तौ आराम होइ। ५ सफेदो घुघची पैसा भरि कर तेल में जारि के बनाइ छोटि कै कान मां दुइ रत्ती डारै बाई कै कै बहति होइ व चिलकति होइ वा पिराति होइ तौ आराम होइ रोज ३, ४ में। गगन धूरि दुइ रत्ती कान में डारै तौ कान बहव मिटै फुरिया होइ तौ अच्छो होइ आद ३। ४ रोज मां ॥ लोल को पत्तो कनेर के फूल सफेद पियाज सफेद इनके अर्क सम कै कै बकरी के दुध के साथ कान में डारै तौ बहव व पीरा मिटै ॥

End:—ईंगुर विधि ईंगुर ले आवै जितना चहै पीसि कै मैदा करै लोहे को कटोरो मैं मैदा धरै कागदी नोबू का रस एक बासन मों निचोरै तौ कटोरो मैं डारै जेहि मा मैदा बूड़ि रहै कटोरी मैं इतना डारै लोहे की तिगुडिया तेहि पर कटोरी धरै तरे कोइला को आंच देइ जैसे दिया की जोति तैसी अगिन करै जब नीबू को रसु जरि जाइ तौ और डारै इहि भांति चारि पहर आंच देइ। पिचरी की भांति एक होइ एक अंगुसी लोहे की तेहिते मैदा चलावै ॥ तौनु उतारि तौनु तीन और मा धरै जो पाकि जाइ तौ ऊपर ते डारि कै पकावे उतारु और सब पकै एक करै जो चारि पहर मा न पकै तो और हुई फेरि यहि भांति स आंच देइ तिगोडिया के पास पास बंद करै पवन न लागै जब ईंगुर तैयार होइ तब केसर मिलावै जावत्री लौंग इलायची जायफर ककरहा केवांच के बिया द ल चिनो लाल मखाने उटंगन के बीज पलगो कबाच चीनी ये सब मस मैदा करै सहत मैं सानै गोली झरबेरिया के बेर की मौताद ईंगुर तैयार कर हुइ रत्ती गोली प्रति डारै जब ईंगुर अगिन पर ते उतारै तनिक मलोदर डारि देइ इलाज सांझ सबेरे खाइ बूढे जवान होई कामी बिना नारि न रहै १० नारि से भोग करै टेढा मोटा लिंग मोटा होइ। भूष बहुत लगै नामर्द से मर्द होइ।

Subject:—वैद्यक, रोग औषधि नाड़ी परीक्षा आदि।

No. 577. Vandimochana-Kathā. Leaves—14. Deposited with Pandita Nakachhedarāma Misra, Village Dhanaurā, Post Office Gaḍavārābājāra, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्रीराम जी ॥ स्वामी बैजनाथ जी सहाई। श्री पोथी वन्दीमोचन कथा। स्तुति ॥

श्री आदि भवानी कल्यानी श्री सुर संघारिनी नामा जी ॥
तीनि भुवन जेहि भ्रमता है कन्या सो वरदाई वषाजी ॥
सो बर दायिनी त्रिभुवन दाता सिद्धि करैं मम काम जी ॥
आदि कुमारी सिंह असवारी जाहि भजे श्रीरामजी ॥
महिमा बन्दी अगम अपारा मुष से बरनो न जाए जी ॥

॥ चौपाई ॥

गाढ़ परे जहं मोहं का बन्दी। काज कैलाश थे छन्दी ॥
निश्चय होउ सहाय जो। नारद मुनि से कहै वषाने ॥
बन्दी माई सुमिरौं तोहो। सुमिरत गाढ़ छुड़ावहु मोहीं ॥
नाम तुम्हार है बन्दी माई। आपन जन पर होहु सहाई ॥

तीनि लोक लेत जब नामा । धन लक्ष्मी देहीं सो बस्मा ॥
तीनि लोक ठनाइ सिर जवही । नाम धारई बन्दी तवही ॥
सुर गन्धर्व नाग मुनि देवा । सकल करी बन्दी के सेवा ॥
महिमा बन्दी के अगम अपारा । गाढ़ परे तहं करे उचारा ॥
जो बन्दी पर धुर धरे जो ध्याना । गाढ़ के पुरविल लेके पाना ॥
गायना जो ध्यान शील गुनखानी । बन्दी देवता आदि भवानी ॥

End:—

॥ चैापाई ॥

रक्त बीज असुरन के राजा । तुरितै आये तहं सहित समाजा ॥
चहुं दिशि घेरि जन बांधा । वर्षे न जाइ देई दल बाधा ॥
लागे होन तहां रन भारी । भोराहि असुर पर चलो वयारी ॥
तब बन्दी त्रिशूल चलाई । लाख सेना मारि गिराई ॥
बूंद एक रुधिर महि परई । कोटिक वीर तहां औतरही ॥
इहि विधि लरत बहुत दिन बीता । तीन भुवन तब भये भीता ॥
क्रुद्ध देखि वसुधा अकुलानी । सेना असुर कछु बरनि न जानी ॥

× × × ×
× × × ×

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—मंगलाचरण, बंदी देवी का महत्त्व। कथापाठ का फल। श्रवण का फल। कमलापति राजा का निपुत्री होना। शिवजी का काशी की बन्दी देवी के पूजन का आदेश और राजा का सपत्नी जाकर बन्दी की पूजना और वर पाना।

(२) पृ० ८ से पृ० १२ तक—बन्दी के समाज का वर्णन। बन्दी की महिमा। बन्दी का पूजन विधान। पूजा का फल। बन्दी के विविध रूप और अधिकार।

(३) पृ० १२ से पृ० १६ तक—स्तुति। ब्राह्मण भोजनादि। राजा के दो पुत्रों का होना। राजा का उत्सव करना। राजा का पुत्र तथा रानी के साथ बन्दी के दर्शनों को आना। जोगनी, भूत, पिशाचादि का गाना बजाना। बन्दी का पूर्व इतिहास। अहिरावण का राम को ले जाकर बलिदान करने का विचार। राम का बन्दी का स्मरण और देवी का पाताल जाना।

(४) पृ० १७ से पृ० १८ तक—बन्दीका राम से अपनी स्तुति सुनकर प्रसन्न होना। बन्दी के प्रताप से हनुमान का आ जाना, युद्ध करना और राम का छूट जाना।

(५) पृ० १९ से पृ० २८ तक—चन्दी की शोभा वर्णन, उनकी स्तुति। देवताओं का असुरों से तंग आकर चन्दी की वन्दना करना। देवों के समाज और असुरों का युद्ध। देवों की विजय। देवों की स्तुति।

No. 578. Vedānta-ke-Praśna. Leaves—6. Deposited with Babu Rām Manohar Bichpuriyā, Purāni Basti, Katni-Murwārā, District Jubbulpur (C.P).

Beginning :—श्री परमात्मने नमः ॥ अथ वेदांत के प्रश्न लिष्यते ॥ श्री वेदांत मधे ऐसे कहो है ॥ जो कछु दृष्ट विषे ॥ देषीयत है ॥ अरु कानन विषे सुनियत है ॥ अरु जो कछु चित विषे मन विषें ॥ ध्यान कीजियत है ॥ अरु सब्द मात्र वस्तु मात्र जो है ॥ सो सब तीनो काल मिथ्या है ॥ अरु स्वप्न है ॥ याको साक्षि ॥ दृश्य ते श्रूयते वद्य तस्मर्पितैः चान्तरैः इद असत्यमेवतत्सर्वं यथा स्वप्न मनोरथं ॥ १ ॥ वेदान्त विषें ऐसा ये कहो है की जो कछु मन चित्त विषे ॥ सब्द मात्र वस्त मात्र सो सब चिदनंद ब्रह्म है ॥ याकि साक्षि ॥ अस्ति भांति ते चान्तरैः शदाः तत्तत्वतस्ब्रह्म सचिदानंद मव्य वं ॥ २ ॥ अब या प्रश्न को अर्थ ऐसे प्रकार सो ॥ विचार कै लीजे ॥ जो पहले तो सब मिथ्या कहो फेर वाही सो सचिदानंद ब्रह्म कह्यो ॥ अरु असत मिथ्या कबहू सत न होइ ॥ और सत ब्रह्म कबहू मिथ्या न होई ॥ यह तो अगादि विरुद्ध है ॥ ताते ए दोउ वचन वेदांत के सत करने ॥ अरु विधि मुष करके विख्यान करनो ॥

End :—श्री आत्म बोध मधे ऐसे कहो है ॥ जो तीनि प्रकार की सृष्टि है ॥ एक तो जीव की ॥ एक ईश्वर की ॥ एक ब्रह्म की ॥ तामे ऐसा कहो है ॥ जीव सिष्ट है सो स्वप्न है ॥ अरु ईश्वरी सिष्ट है सो चैादा लोक ब्रह्मांड प्रकृति आदि लो ॥ अरु जो ब्रह्म की सष्टि है सो सचिदानंद रूप है ॥ ब्रह्म समान है ॥ उक्तंच आत्म बोधे ॥ त्रिधा सृष्टि ॥ पुरा प्रोक्ता जीव ईश्वरी ब्रह्मनिस्तथास्वप्न जीव सिष्टिः स्यात जाग्रति ईश्वरी मताः ब्रह्म मितगता प्रोक्ताः सचिदानंद लक्षंन इति विचित्या वस्तुत्वः ॥ ज्ञात्वा चोश्रि भिवो भवेत ॥ ३२ ॥

अब या प्रश्न को अर्थ ऐसे प्रकार सों जो लीजे ॥ जो जीव सिष्ट तो स्वप्न तें कहो ॥ अरु ईश्वरी सिष्ट प्रकृति के आदि लोलय करि सब संसार कहो ॥ अरु ब्रह्म कि सिष्टि तद गत ब्रह्म समान है ॥

लिषिते संपूर्ण परसन ॥

Subject :—वेदान्त सम्बन्धी कुछ प्रश्न और उनके उत्तर ॥

No. 579. Vidhavā-Vivāha Khaṇḍana. Leaves—10. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—श्री गणेशायनमः श्री हरिः ओं। प्रिय पाठक वृन्द। आज जिस निन्दित कर्म के कोलाहल को सुनकर महात्मा सज्जन सनातन धर्मी भाइयों का चित्त व्याकुल हो जाता है और जिसको असिद्धता दिखलाने के लिये लेखनी हाथ में लेनी पड़ी है वही विधवा विवाह शब्द और विधवा विवाह विषय खंडन मेरे सामने है और जिससे समस्त हिन्दु सन्तानों का प्रकटित संबन्ध है लेख लिखते हुये लेखनी कांपती है। शरीर में रोमांच हो रहा है। कारण यह है कि विधवा शब्द के साथ विवाह शब्द का योग कैसे और क्यों कर हो सका है यही एक बड़े आश्चर्य की तो बात है जिस पर विधवा-विवाह यह कैसा कलुषित और अनमेल सम्बन्ध है। हा!

जिस कुरीति को प्राचीन ऋषि मुनियों ने पाशविक धर्म कहकर महापाप बतलाया है और जिसे व्यभिचार तथा दुराचार से तुलना की है हाय! उसी कुरीति को आज कुछ अज्ञानी काम पीड़ित व्यभिचारियों ने भारतवर्ष के पुनरुद्धार का एक मात्र शुद्धोपाय तथा अव्यर्थ महौषधालय समझ रक्खा है।

End :—मंत्र—उदीर्ष्व नार्यभिजीवलोकं गतासुमेतमुपशेष एहि हस्त ग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभि सम्बभूथ ॥ यजु० ॥

अब देखिये इस उपरोक्त मंत्र के द्वारा कैसा अर्थ का अनर्थ बतलाकर स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके अनुयायी तथा विधवा विवाह के पक्षपाती लोगों ने भ्रमात्मक भावार्थ निकाला है कि हे नारी! तू इस मरे हुए पति के साथ जा लेट रही है उठ। और जीते हुये मनुष्यों के भीड़ के सन्मुख आ! और किसी विधवा का हाथ पकड़ने वाले तथा पुनर्विवाह की इच्छा करने वाले पति की पत्नी हो बस अब क्या अर्थ हो गया यजुर्वेद की एक श्रुति के द्वारा खुल्लम खुल्ला कपोल कल्पित अर्थ करके विधवा विवाह का प्रमाण सब के सामने वेदोक्त दिखला दो। इसी प्रकार स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने भी इसी से मिलता जुलता भावार्थ कर दिखाया है परन्तु है यह बात बड़ी हंसी के योग्य देखिये जो शेङ् स्वप्ने धातु के मध्यम पुरुष का एक वचनान्त पद है उसे सप्तम्यान्त पद मानकर मन माना कपोल कल्पित अर्थ लिख मारा है यहां तो व्याकरण शास्त्र को टांग ही तोड़ दी गई है।

Subject :—

पृष्ठ १—'विधवा' शब्द के साथ 'विवाह' शब्द का योग अनुपयुक्त है।
पृष्ठ २—प्राचीन ऋषि मुनियों के मत के प्रतिकूल है।

पृष्ठ ३—विषय। विवाह अप्रामाणिक और अन्याय है।

,, ४—मंत्रों का उलटा अर्थ।

,, ५—विवाह, कामवासना के तृप्त्यर्थ नहीं वरञ्च सम्पूर्ण संस्कारों में एक संस्कार समझकर किया जाता है। और सभी संस्कार एक बार होते हैं इसलिये विवाह संस्कार भी एक ही बार होना चाहिये (यहाँ पर विधवा विवाह असिद्ध होता है)।

पृष्ठ ६—ईश्वरचन्द्र विद्यासागर तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा अर्थ का अनर्थ।

पृष्ठ ७—विधवा विवाह के कारण सामाजिक कुरीतियाँ।

पृष्ठ ८—रोग रोकने से और बढ़ता है, उसके मूल को ही नाश करने के उपाय सच्चे हैं। अतएव कुरीतियों के ही निवारण से वास्तविक मन्तव्य सिद्ध हो सका है। अन्यथा विधवा विवाह आदि मिथ्योपचारों से व्यभिचारों की केवल वृद्धि होगी।

पृष्ठ ९—भारत की प्राचीन सामाजिक व्यवस्थाओं का ही पालन करने से उन्नति हो सकती है।

पृष्ठ १०—मनु, पाराशर आदि स्मृतियों, शास्त्रों, काव्यों, ऐतिहासिक ग्रन्थों से कहीं भी विधवा विवाह प्रामाणिक नहीं सिद्ध किया गया है।

No. 580. Vṛindāvana-Bhāshya. Leaves—32. Dated in Samvat 1890. Deposited with Ṭhākura Rāmapāla Siṁha, Village Datagava, Post Office Baratāla, District Sītāpur (Oudh).

Beginning :—राग बिहार ॥ रास में नृत्य करत नवारी। मुदित मनोहर रंग बढ़ावत संग वृषभान दुलारी। मोर मुकुट मकरंद विराजत नाक बुलाक सुतारी ॥ कर मुरली कर काछनी कटि काछे अलकें घुंघर वारी ॥ राधाजू के शीश चंद्रिका नीलाम्बर अरु सारी ॥ ताथीना ताथीना थीन धाना बसत पखावज ताल वाल बीन गति न्यारी ॥ ठनन ठनन नन नूपुर की धुनि झनन झनन झनकारी ॥ थेई थेई थेई नाचत दोऊ मिलि विहंसि विहंसि मुसकारी ॥ चरन दास रस देव दया सें सो पावे दरश मुरारी ॥ (चरन दास कृत)

राग कल्यान ॥ आज संमारत नाहिन गोरी ॥ फूली फिरत मत्त करणी ज्यों सुरति समुद्र के कोरे। आलस बलित अरुण घूसर मुख प्रगट करत मुख चोरी ॥ पिय पर करुण अमीरस बरषत अधर अरुणता थोरी ॥ बांधत भृंग उरज अंबुज पर अलकनि बुद्धि किशोरी। संभ्रम किरचि किरचि कछुकि बद सिथिल भई कटि

घोरी ॥ देत यसीस निरषि जुवती जिनके प्रीत न थोरी ॥ जै श्री हत चातु हरिवंश विविनि भूतल पर संतति चविचल जोरो ॥ २ ॥ (हित हरि बंश कृत)

End :—येह जा ब्रदय की क्षाये मो रचना वचन अनेक । बनै न स्याम शरीर बिन विधि अभ्यो वर्ष लग एक ॥ प्रीति डोरि खैंचे जबहि यो नहि बायो जाय । तबहिं बुद्धि बल आपनो अस छंदवनि रच्यो बनाइ ॥ भादो की कारी निशा जन्म भयो रस जोग घोरहु सो मन रुचे लाल रस गोरस को भोग ॥ सखिन खिलौना करि रच्यो पाग भावतो कंथ भोजन सुविधि करावहि रचै कैातुक रचित अनंत ॥ चोपर सुविध खिलावहिं झगड़ावहिं रचि चोज झलक जो आवत लाल के देखो बदन जुमतक मनोज ॥ इग आलस आलस जुम न आलस फूलति चैन । धवल महल आइ के सखि तहां करावत सैन ॥ पनडब्बा सैारभ के भोजन धरि रस पान । चरण पलोटत रूप हित अति को उभावत या स्याम ॥ श्री हरि वंस प्रसाद बल बरनी विविध पलाग वृन्दावन हित वरनि सुख माने जुगल सुहाग ॥ (हित हरिवंश)

रेखता ॥ चल देखिये प्यारी पनघट पै भोर छाई ॥ टेक ॥ बिछिया जड़ाऊ गहना सुन्दर सुनार लाई । पहुंची जड़ी रतन से दीखत है मन लुभाई । चल देख दुलरी है पास उसके सोभा कही न जाई । सुन्दर जड़ाऊ आरसी देखन को मुख बनाई । चल देखिये है भांति भांति नग भो कहां तक कहु मैं गाई । ऐसी सुनारिन नैनन देखी कभी न भाई ॥ चल दे० ॥ बिधना ने सोच कर के विधि से उसे बनाई ॥ कहता है अब हजारी राधा है नग की भाई ॥ इति श्री रहस वृन्दावन अर्थात् वृन्दावन भाष्य समाप्तः लिखा रामचरन संवत् १८९० वि० चैत्र शुक्ल १ ॥ (हजारी कृत)

Subject :—नागलीला, बाह्मण लीला, जोगीलीला मनिहारिन लीला, चुरिहारिन लीला, चिसातिन लीला, मालिन लीला,

No. 581. Vyavahāra-Darśana. Leaves—110. Dated in Samvat 1904 or A. D. 1847. Deposited with Thākura Haribakshasiṁha Raisa, Village Kuthariyā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री मते रामानुजायनमः ॥ अथतः ॥ श्री रामचन्द्रजी पति कमल भृस्तस्य पत्नी च शुभं ॥

जयति श्री भक्त राजी विमल मतिकर : ॥ श्री पिया दास ईश जयति श्री धूमकेतु मधुर नखद चाउ श्रान तामि सुदारी ॥ जयति श्री चाज बलभोर

जयति मनुनृप: शुद्ध धर्म प्रचारो ॥ १ ॥ अथमनु याज्ञ बलक्या अनु सारेण व्यवहार पादो निरूप्यते ॥ व्यवहारान्नृप: पश्येद्विद्वद्भिः ब्राह्मणै सह ॥ धर्म शास्त्रानुसारेण कोध लोभ विवर्जित ॥ १ ॥

राज्याभिषेक जुक जो है राजा तौका प्रजा पालन धर्म विना दुष्ट को दंड दोन्हे नहीं ह्वै सकै श्रोर दुष्ट सुष्ठ विना व्यवहार देषे नहीं जानि परै तेहिते पंडितन को लैके राजा रोज रोज। व्यवहार देषै व्यवहार कोन कहावै को दुई बादी वाद करत हैं तौनेमा जो झूंठ कहत है तौने को निरनै करके जोन साच कहत है तैान का स्थापन करव सो व्यवहार धर्म शास्त्र के अनुआरते कोध लोते विवार्जित ह्वै के राजा देषै इहां कोध ते विवार्जित ह्वै के राजा देषै इहां कोध ते विवर्जित कहिनते हिते मत्सर मदई आइगे श्रोछो अते विवर्जित कहिन तेहि ते काम मोह यहो आइगै ॥ १ ॥

End :—जो राजा को मरजो के अनुसार तें पंडित लोग अन्यथा निआउ करै तो पंडित राजा दोहुन का दंड चाहो श्रे राजा आपन दंड वरुनाय देइ देया संकल्प केके ब्राह्मन काढ़े दरै श्रोर जोने वादी का न्याय ज्ञान केके सुद्ध ह्वै गाहे श्रे वाके रि न्याउ के उजर करै है तो वाको फिरि न्याय क के हराय कै इन दंड लेइ जो असुद्ध देषि परै तो केरि शुद्ध के देई श्रे जो कोनो राजा के नियाउ दुसरे राजा के यहां जाय तै वहो राजा निआउ देषै श्रे जो राजा अन्याय के कै जो कछु दंड लेइ तो जेती द्रव्य होइ तेकर तीस गुना द्रव्यन का संकल्प कै ब्राह्मन का देइ श्रे जैसो दंड लोन्हेसि होइ लेकर बहोरि देइ।

मिती पूस बदी १३ सोमिकास, सं० १९०४ के साल।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १६ तक—ब्योहार दरशन का प्रकरण—वादी के आगे प्रतिवादी से उत्तर लेने का वर्णन।

(२) पृ० १५ से २४ तक—प्रार्थना पर प्रार्थना सुनने का प्रकरण। दुष्ट साक्षी का लक्षण।

(३) पृ० २४ से पृ० ३६ तक—लेख साक्ष भोग्य दिव्य का प्रकरण बहुत दिनों भुकि जो न खुली हो उसका प्रकरण॥

(४) पृ० ३६ से ६० तक—ग्रहण पाती का हाल न खुला हो तो उसका वर्णन। एक स्थान का न्याय दूसरे स्थान पर सुनने का वर्णन। पिता, पुत्र, स्वामी, चाकर इत्यादि के अपराध का वर्णन। रुपा, सोना, गाय,। भैंस (कोई वस्तु)

को कोऊ पावै उसका वर्णन। धरोहर पावै उसका वर्णन। ऋण दान का प्रकरण। आमनि का प्रकरण। दास बैठाने का वर्णन।

(५) पृ० ६१ से पृ० ११८ तक—गहन वर्णन बैयाना का प्रकरण साक्षी का प्रकरण। व्यभिचार में साक्ष का प्रकरण, झूठ साक्षी का प्रकरण। लेख का प्रकरण। दिव्य का प्रकरण। हिस्सा का प्रकरण।

(६) पृ० ११९ से पृ० १४० तक—बारह प्रकार के पुत्रों का वर्णन। गुरु चेले के हिस्से का वर्णन। संसृष्टि विभाग का प्रकरण। जो हिस्से के अधिकारी नहीं हैं। उनका वर्णन। स्त्री धन का प्रकरण। तिलक चढ़ाके अन्य स्थान में काम करे उसका कथन। कन्या का धन भाई पावे उसका वर्णन। सीमा विभाग किसान और बाहिर का प्रकरण। किसी की चीज कोई बेचे उसका वर्णन। दान दे के लौटा ले उसका वर्णन।

(७) पृ० १४० से पृ० १८० तक—मोल लेके बहोरै उसका प्रकरण, सेवा चाकरी करके, अंगीकार करके न करै तो उसका प्रकरण। जो संमति करके न करै तो उसका प्रकरण। राजा के सब जातियों के धर्म्मों के पालन का वर्णन। बाजी लगाइ के जुवारी और चिड़िया इत्यादि की लड़ाई का वर्णन। मार पीट तथा दंगा फसाद और साहस का प्रकरण।

(८) पृ० १८० से २१० तक—साहस के तुल्य जो अपराध है उसका प्रकरण। वैद्य का प्रकरण। राजा की आज्ञा विना कैदी को छोड़ दे उसका वर्णन। अच्छी वस्तु में बुरी वस्तु मिला कर बेचे उसका वर्णन। बाजार भाव का कथन। जङ्गम स्थावर बिकने का विवरण। साझे में उद्यम करै उसका वर्णन। चोरी का प्रकरण। गर्भपात कराने का वर्णन। स्त्री संग्रहण का प्रकरण।

(९) पृ० २१० से पृ० २२० तक—स्त्री पुरुष के विरोध का प्रकरण। राजा किसी को कुछ दे और लिखने वाला और कुछ लिख दे उसका वर्णन। हुत सामग्री खिलाने का वर्णन। सवारी में धक्का लगने का वर्णन। जो कोई राजा के शत्रु की बड़ाई करै उसका वर्णन। राजा की निंदा करै उसका वर्णन। राजा का भंडार काटे उसका वर्णन। ज्योतिषी राजा को बुरे ग्रह बतला कर उसकी शान्ति का यत्न करै उसका वर्णन। न्याय में अन्यथा करै उसका वर्णन।

No. 582 (a). Yantravālī. Leaves—20. Deposited with Paṇḍita Bhagavānadatta of Benipura, Post Office Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥
जेनहृतं गृहं क्षेत्रं कलत्र धन पुत्रकं ।
उच्चाटन वधः कुयात् दुष्ट दंडो विधीयते ॥

× × × × ×

१०	२	८
४	७	९
६	११	३

यह यंत्र लायवार कागद ऊपर लिखि कै एक ठौर नदी मा कि तलाव मा बहोरि कै डारि देइ लाय जब पूजै तब पूजै हुति करै जब से पत्र लिखै तब लहि चाउर गोहु घृत न पाइ ॥ २० ॥ मंत्र ताज १००००० ॥

॥ ॐ ह्रीं शिवायनमः ॥ इ यंत्र गोरोचन से लिखै ॥

End:—

ॐ क्लीं श्रीं श्रीं स्वाहा	६६६	४४६	११३७	२२२२	४४८
	१४६३	४०७४	५०६	४४४०	५५५४
	३११२	६६४०	२२३०	५५७१	५५४४
	४४४२	५७४	६७४	४२४	४४४

तीनि पुरुष का नाम लिखि कै पिछवारे मेई के तरे गाड़े तो उच्चाटन होइ ॥ मेहावर से लिखि के दुश्मन के पछवारे गाड़ि देइ तो काम सिद्धि होइ ॥ मसि से लिखै पीपर पत्र पर जर जाइ कागद पर लिखे बाहे बांधै तिजारो जाइ एक हाथै पानी मरै पीपर पत्र पर यंत्र लिखै चारि बार धोवै वाही पानी से मुख छाटा मारै भूत भागै भोज पत्र मेहावर तेके राम लिखै पेट बधे गर्भ रहै पानी सों लिखै ई पिआई छह सिर दुख जाइ ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० १४ तक—बीसा मंत्र, पन्द्रह का मंत्र, भूत लगने का यंत्र, सर्व दुःख निवारण यन्त्र, मोहन यंत्र, कार्य सिद्धि मंत्र, मूस निवारण यंत्र, टोना निवारण यंत्र, चारि विजय मंत्र, सकल सिद्धि यंत्र, बुद्धि होने का मंत्र, मोहन यंत्र, वशीकरण सर्व सिद्धि तथा मोह जाल यंत्र ।

(२) पृ० १५ से पृ० ४० तक—माथा सीसी, शंका छूटने, प्रेत नाशक, बालक जिलाने, बहु भोग करने, स्त्री पुरुष वशीकरण, बांझ के बालक होने,

स्त्री वशीकरण, गर्भ रहने का, राजा वशीकरण, कर्ण व्याधि निवारण, मृगी नाशक, वशीकरण, बालक रोदन, उच्चाटन, वशीकरण, दुश्मन का मूढ़ नेत्र बंद होइ। दुश्मन का उच्चाटन होइ। अलिम मंत्र और उसका फल।

No. 582(*b*). Yantrāvaligrantha. Leaves—8. Deposited with Paṇḍita Gunnā, Village Bahurājapura, Post Office Puravā, District Unnāva (Oudh).

Beginning:—अथ यंत्रा वली ग्रंथ लिष्यते॥

यह यंत्र बीसा का इतवार के दिन केसर से भोज पत्र पर लिखे और तांबे में मढ़ाय कर पगड़ी में राखै तो दुश्मन का जोर अपने उपर नहीं चलै॥ (१)



यह यंत्र इतवार के दिन गोरोचन से भोजपत्र पर लिखै और बीमार घोड़े के गले में बांधे तो सात दिन में अच्छा होय॥ (२)

दः	क्रीः	कः	भः
क्षः	सः	गः	रः
धः	धः	चः	कः

यह यंत्र इतवार के दिन गोरोचन से लिखे भोजपत्र पर और दाहिने हाथ में बांधे स्त्री वश्य होय चार मास के भीतर परन्तु स्त्री को रोज दिखाया जाय॥ (३)

कः	प्रः	जः	रः
क्षः	टः	कः	जः
सः	घः	ढः	चः

यह यंत्र जिसके लड़का मर मर जाते हों उसके गले में बांध दे तो लड़का जीते रहैं परन्तु इतवार को मर जाते हों तो उसका मंत्र है॥ (४)

ह्रौंः	ह्रौंः	ह्रौंः	ह्रौंः
ह्रौंः	ह्रौंः	ह्रौंः	ह्रौंः
ह्रौंः	ह्रौंः	ह्रौंः	ह्रौंः
ह्रौंः	ह्रौंः	ह्रौंः	ह्रौंः

End:—चार प्रकार के १५ के यंत्र की विधि। जिस मनुष्य का जैसा मिजाज हो सो उसी प्रकार के यंत्र का लेखन करै और मेषादि १२ राशि चार प्रकार के मिजाज पर बांटी गई है सो अपनी राशि मिला कर मिजाज पहिचाने॥

(१) खाकी

८	१	६	वृष
३	५	७	कन्या
४	९	२	मकर

(२) बादी

८	३	४	मिथुन
१	५	९	तुला
६	७	२	कुंभ

(३) आबी

२	७	६	कर्क
९	५	१	वृश्चिक
४	३	८	मीन

(४) आतशी

४	९	२	धन
३	५	७	मेष
८	१	६	सिंह

संपूर्ण॥

Subject:—यंत्र वर्णन॥

No. 583. Yntra-Vidhi. Leaves—2. Deposited with Bābu Rām Manohar Bichpuriyā Purānī, Basti, Katni Murwārā, District Jubbulpur (C.P.).

॥ श्रीगनेस जू॥

॥ दोहा॥ नेत्र पक्ष श्रुतिचार सर, गुन रस ससि वसु जान।
नौ कोठा के जंत्र कौ यह विधि भर बुध वान॥

८	१	६
३	५	७
४	९	२

॥ दोहा ॥ द्विग सर नग द्रुग वसु सिव तेरा ग्रह तिथि श्रुति रस सिगार।
द्विग सर गुन नग ब्रह्म मनु रवि ग्रर जंत्र सम्हार ॥ १ ॥

१४	१	१२	७
११	८	१३	२
५	१०	३	१६
४	१५	६	८

End:— जंत्र २५०

३	४	५४	५३	१४	१३	५९	६०
२	१	५५	५६	१६	१५	५८	५७
३१	३२	४२	४१	१८	१७	३९	४०
३०	२९	४३	४४	१९	२०	३८	३७
५१	५२	६	५	६२	६१	११	१२
५०	४९	७	८	६३	६४	१०	९
४७	४८	२६	२५	३४	३३	२३	२४
४६	४५	२७	२८	३५	३६	२२	२१

Subject:—कुछ जंत्र श्रैार उनकी विधि।

No. 684. Yuddha-Dipaka. Leaves—7. Deposited with Mannulala Pustakalaya, Gaya.

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ अथ युद्ध दीपक प्रारंभते ॥

दो०—मुरे बिंदु युग सेन जिमि, जुरे तार फिर सेर।
फुरे शक्ति नाशक कुरे, तुरे घरे हो हेर ॥१॥

हते वृद्ध मते सेष युग फालक मते यशोप।
दहन दहन युगद्दा अनुज बातनु तजे न लेष ॥२॥

कद सोये लषि सिन्धु ढिग मरे योग कर आनि।
हरये कोशप सार कर करे दोऊ जुग मानि ॥३॥

भ्र. सहाय हर करि युगल योग कंबु भू साधु।
बहुय अद्भुत लखि रुचिर पर गुद रहे अगाधु ॥४॥

परतम वितक जह मे चिन्तक वृद समीप।
मे अन्धक लषि शुद्ध मति गे बंचक सम लीप ॥५॥

End:—

निमम मांस सारंग रट, स्वांती घट एक बुन्द।
हो चाहत बिन कारन अब गृह चलि पमा हो बद्ध ॥ ११५ ॥

कपि ले मंदिर बस इहां नयन पुरदा बार०।
सखा इते वत पितु वचन भरत सनेह सह्हार ॥ ११६ ॥

लूट न बहुत शमा जमा बागेय पाछे पाप।
कपि इच्छा अति काल हर बड़ अपमान जनाए ॥ ११७ ॥

द्विज भुज तेज मु पुबय मुनि भेव द्रु राम रजाए।
शत उत्तर बदा दश लखी दीपक युद्ध शहाए।

इति श्री युद्ध अभि प्राय दीपक समाप्तः ॥

॥ शुभं भूयात् ॥

Subject:—सिन्धु तट से लङ्का के युद्ध तक रामायण का सूक्ष्म वर्णन।

No. 585. (Unknown.) Leaves—153. Place of Deposit Jairāmasiṁha, Village Haripura, Post Office Manadhāta, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning:—श्री रामजी ॥ श्री गणेशायनमः ॥ तप गरमी का इलाज ॥ कमल गट्टा के गूदा पांच मासे ॥ खपरा मासे ४ मुनक्का मासे ४ धनिया मासे २ सपेद जीरा मासे २ खस मासे २ कुलफे का बीज मासे २ दालचिनी मासे २ संदल मासे २ सब का आध सेर पानी में अवटावे जब तब सोर गरम पीवै

॥ पुनः ॥ पीत पापरा तोला भरि मुनक्का तोला भरि दोनों मिलाइ राखै बिहनि छानि कै पीवै ॥ पुनः ॥ ककरा का बोया मासे दुइ ॥ पीरा का बिया मासे दुइ ॥ कासनी मासे चारि ॥ सौंफ मासे तीनि ॥ सब को पीसि कै देइ पैसा भरि पीवै ॥ चीनी मिलाइ कै पीवै ॥

End:— ॥ मुत्रातिसार को इलाज ॥

मुर्रे के बोकलाइ की बुकनी ऽ१ चीनी सेर ऽ१। तीखुर ऽ– बड़ी इलायची के दाना ऽ– स्याह मुसरि ऽ– सतवंच नागोरी ऽ– पुराव दुइ पैसा भरि चूरन के दुवौ जुन पाइ जल से वा गाइ के दूध के साथ वा पोइलेइ— × ×

× × × × ×

× × × × ×

गोहन में कवनौ बयारि धाडु बोगेन्ह (वगैरह?) होयत हई अंत्र नगारा पर लिपिके घतवार मंगर के बजाइ देय



Subject:—पृ० १ से पृ० ५० तक—तापों की चिकित्सा, अठारह प्रकार के शूल व सन्निपात की औषधियां, बुखार के अन्य भेदों की चिकित्सा, दस्त तथा आंव आदि की औषधियां, कुपच आदि की औषधियां।

(२) पृ० ५१ से पृ० १४० तक—शीतला, वायु, आदि की औषधियां, सुपारी पाग, पुष्टि का माजून, बहुमूत्र, गर्मी, तथा सुजाक की औषधियां, मांडा फूली का इलाज, प्रमेह का इलाज, स्तंभन का इलाज, पीनस तथा मुंह के फफोलों की औषधियां, शरीर के दर्द की औषधि।

(३) पृ० १४१ से पृ० २०० तक—कुष्ठ, कान से कम सुनने, पांडु, पेट संबंधी, जलन, खुजली, शीतला पेट में घाव, कुत्ता काटने आदि की औषधियां। बम्हीवटी के गुण आंव, सिर दर्द, दशमूल आदि की तरकीब।

(४) पृ० २०१ से पृ० २८० तक—रांगा मारने की विधि, गर्भ रहने, नमर्दी, पुष्टई, सर्व प्रकार के सांपों की औषधि, शीत वायु, पित्त वायु, खांसी, बुखार आदि

को औषधियां, लाक्षादि तैल, सुदर्शन चूर्ण, कांच गिरने की औषधि । पेट सम्बन्धी रोगों का इलाज, सुरमा बनाने की विधि, वशीकरण मंत्र, बवासीर का मंत्र, सुजाक व चिनंग को औषधियां,

(५) पृ० २८१ से पृ० ३०६ तक—रक्तविकार संबंधी औषधियां, जुलाब, घाव, कांख, को औषधियां, अंजन बनाना, पन्द्रह बद हजारा जंत्र । कुछ अन्य मंत्र ।

No. 586. (Unknown.) Leaves—134. Deposited with Rāmaprasāda Murau, Village Puravāviśrāmadāsa, Post Office Pariyavā, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning:—अथ समुद्र फल के गुननों अनुपान सो षाइ ॥ ताको छेरी के मूत के पुट ७ ॥ गोमूत्र के ७७ ॥ आंवरे के रस के पुट ३ ॥ निगुंडी के रस के पुट ३ ॥ धतूरे के रस के १ ॥ पुट मांजी को पुट १ ॥ तब रोज सत्ताइस २७ सिद्धि होइ ॥ ताको अनुपान षाने बने ॥ मूठो सों षाइ तो अस्थंमनु होइ ॥ छेरी के मूत सों अंजनु करै तो फूली जाइ बात मिट जाइ ॥ छेरी के मूत सो नासु दीजै तो आधा सोसी जाइ औ षाइ तो षई जाइ ॥ ४ ॥ छेरी के मूत सों षाइ तो सूमी जाइ ॥ ५ ॥ वा रतौंद जाइ वा कपाल शूल जाइ । छेरी के मूत सों अंजनु करे तो गेदन निकसे ॥ छेरी को क्वाथ सो षाइ तो कहिलो जाइ ॥ आमरे के रस सों षाइ तो पित्त अस्लेषम जाय ॥ वा काननि बहिरो सुनै औैर वायु गोला जाइ ॥ नीबू के रस सों षाइ तो हड़ फूटन जाइ ॥

× × × ×
× × × ×

End:—औषधि धातु पुष्ट की ॥ सेंमर की छालि ॥ २५ ॥ मिश्री दोनैं ॥ २५ ॥ ताल मषाने ॥ १२ ॥ सिघोर २५ कौंच के बीज तेज बल २५ उटंगन के बीज २५ अकरकरा २५ बहरै को बकुली २५ लहसोर २५ गूलरि की छालि २५ गुषरू २५ ब्रह्मडंडी २५ संषा हुली २५ दूधी २५ मिर्चै १२ पीपरि १२ षांड १ सोठ ३॥। दूध ३ बजफरी २५ ॥ ॥ अथ जुलाब ॥ सोठि २५ निसोत २५ सनाइ २५ नोन सोधो २५ पानी सोटिकोया बांधे ॥ घाम में सेकै टिकिया जुवे २५ इलाज्ञ सोज अगता बंद कैा ॥ कसाइ का ॥ छुहारे ५। मिश्री ५। पाषान भेद ५। दाना इलायची गुजराती के १। १२ ॥ रूप रसु तेरे बहुत ॥ इकठो ॥ जुदी जुदी पीसै ॥ आधुसेर गाइ के दूध सें तोरा १ भरि षाइ ॥ षुराक दूध चावर, मिश्री दारि षाइ ॥ इलाज्ञ दूसरो ॥ अमिली चोयको षाटो)१। मोचरस २५ दारु हरदी २५ मैदा लकरी २५ गोषरू २५ सुरवारे को..............................

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० २..............लुप्त।

(२) पृ० ३ से पृ० ५४ तक—समुद्र फल और मूड़ी के गुण तथा अनुपान, नाड़ी विचार, ज्वर का लक्षण, कुछ काढ़ों के नुसखे, नाना प्रकार के चूर्ण, कई प्रकार के तेलों के बनाने की विधि, खाज, दद्रु आदि चर्म रोग विनाशक औषधियां, कुछ रस तथा धातु विकार एवं धातु नष्ट संबन्धी औषधियां।

(३) पृ० ५५ से १३५ तक—पुष्टि कारक औषधियां, नामर्दी दूर करने तथा ताकत बढ़ाने वाली औषधियां, मरहम, पाग, स्वरभेद औषधियां, मोतियाबिन्द आदि नेत्र विकार संबन्धी औषधियां, घोड़ों तथा बैलों का इलाज, बुलबुल आदि दो चार पक्षियों का इलाज।

(४) पृ० १३६ से पृ० २०० तक,—प्रमेह की औषधियां, सिंगरफ आदि के शोधने तथा तांबे आदि के मारने की विधि, कुछ रस, सुखी का लेप, बन्धेज का इलाज, गर्भ सम्बन्धी इलाज, कुष्ठ की औषधि, शीतला का इलाज, धातु विकार तथा अधूत वायु आदि की औषधियां, कुछ लाभकारी चूर्ण तथा पुष्टि की औषधियां, इन्द्री जुलाब,

(५) पृ० २०१ से पृ० २४४ तक—ज्वरादि की व्याधि दूर करने के यंत्र गर्मी आदि का इलाज, चौदह विद्याओं, बारह आभूषणों सोलह श्रृंगारों के नाम, सांप काटने का मंत्र, संग्रहणीकोत नामक रोगों तथा कुछ अन्य रोगों की औषधियां।

(६) पृ० २४५ से पृ० २६८ तक—श्वास का इलाज, अजवाइन का अर्क, पीनस आदि का इलाज, विविध रोगों की औषधियां।

(७) पृ० २६९ से पृ०..............तक लुप्त।

I—INDEX OF AUTHORS

The figures refer to the serial numbers given in Appendices I and II.

D

F

G

H

II—INDEX OF BOOKS

The figures refer to the serial numbers given in Appendices I, II and III.

B

L

M

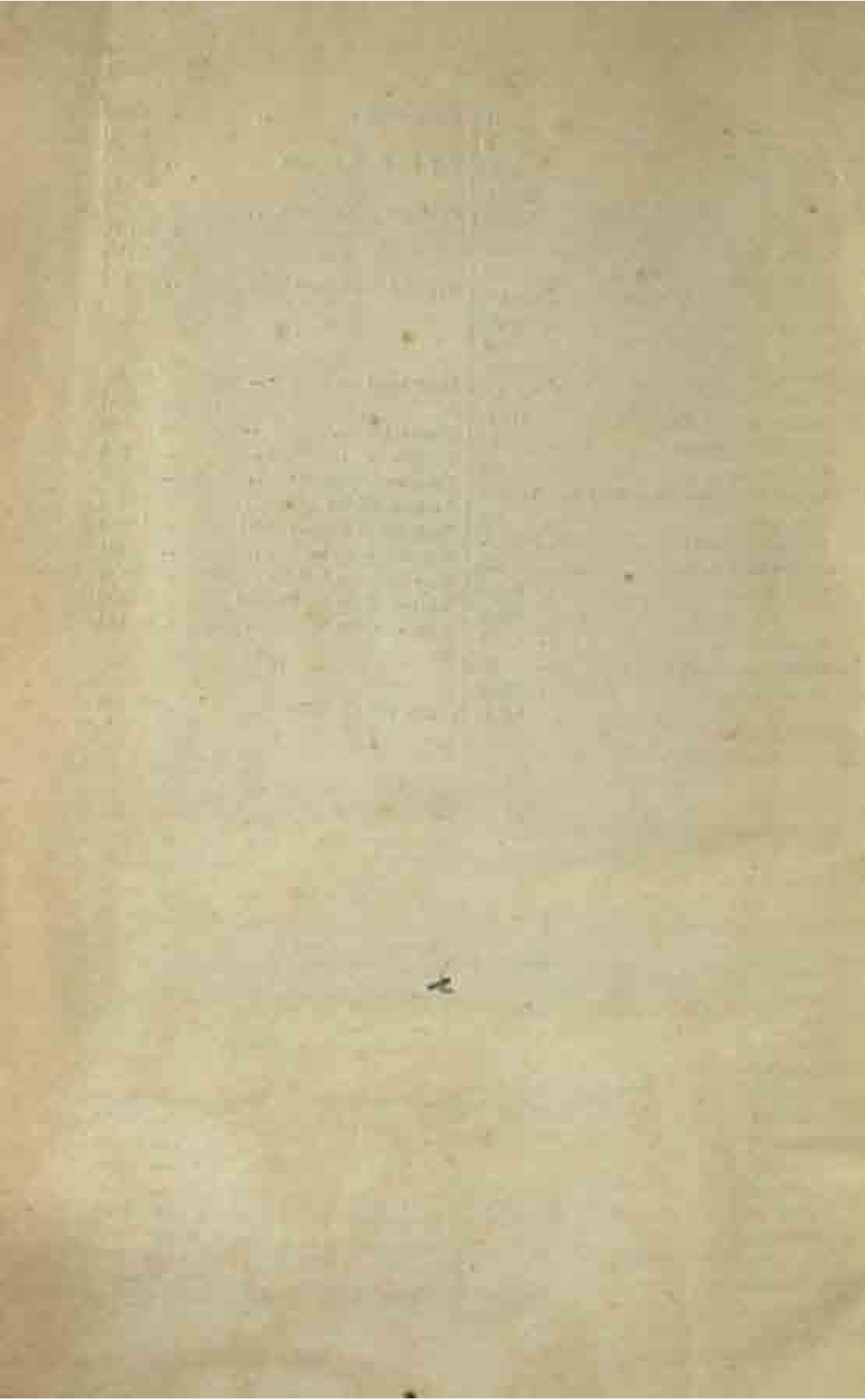
N

O

P

R

S





See Vol I

